जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराज

विरचितया अनगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं

हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवादसहितम्-

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

SHREE GNĀTĀDHARMA KATHĀNGA SOOTRAM

द्वितीयो भाग.

नियोजक

सस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि-
पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराज

प्रकाशक

दिल्लीनिवासि — लालाजी — किशनचदजी — सा -
जौहरी- प्रदत्त- द्रव्यसाहाय्येन अ० भा० श्वे०
स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुखः श्रेष्टि-
श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदय.
मु० राजकोट

प्रथमा-आवृत्ति	वीर-सवत्	विक्रम-सवत्	ईसवीसन
प्रति १२००	२४८९	२०२०	१९६३

मूल्यम्-रू० २५-०-०

મળવાનુ ઠેકાણુ
શ્રી અ. ભા. શ્વે સ્થાનકવાસી
શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
રાજિયા કૂવા રોડ, ગ્રીન લૉજ
રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર)

Published by
Shri Akhil Bharat S S
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W Ry, India

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञा,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥

हरिगीतछन्द

करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते है तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान मे यह लायगा ॥ १ ॥

मूल्य ३ २५=००

१ आवृत्ति प्रत १२००
वि सवत् २४८९
वक्रम सवत् २०१९
ख्रिस्ती सन १९६३

मुद्रक
मणिलाल छगनलाल शाह
नवप्रभात प्रिन्टिंग प्रेस,
धीकाटा रोड : अमदावाद-

दिल्लीनिवासी श्रीमान् लालाजी किशनचदजी सा, जौहरीजी के वश का सक्षिप्त जीवन

परिचय

भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली मे श्री नेमीचदजी चौरड़िया का जन्म हुआ। आप बहुत होनहार व्यवसायी और धर्मप्रेमी थे। आप बत्तीसों शास्त्र के ज्ञाता थे। आप जैन एव वैदिक साहित्यके भी ज्ञाता थे। आपके पास अनेक प्राचीन हस्तलिखित ग्रथों के अतिरिक्त धार्मिक साहित्य का विशाल भडार था। अल्प वय मे ही आप स्वर्गारोहण कर गये। आपके सब से छोटे पुत्र श्री कपूरचदजी चारडिया भी आप ही की भाति निर्भीक उत्साही कर्मशील एव धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाले थे। बीमारी की अवस्था मे भी आपने सामायिक जो कि आप का नित्य नियम था, कभी नहीं छोडा। मृत्यु के अतिम दिन तक आपने सामायिक व्रत की आराधना की थी। लाला कपूरचंदजी ने अपने व्यापार को बहुत बढाया था। दिल्ली के गणमान्य व्यक्तियों मे आपका नाम था। अनेक वर्षों तक आप समाज के प्रेसीडेन्ट रहे। आपके नेतृत्व मे दिल्ली श्री सघ ने बहुत उन्नति की।

आपके सुपुत्र श्री किशनचदजी चौरडिया भी आप ही की भाति उद्योगी, विवेकवान एव श्रद्धालु श्रावक है। प्रतिदिन सामायिक, व हर सप्ताह आयंबिल अथवा उपवास का तप करते है और अनेक प्रकार के धार्मिक नियम पालते हैं। धार्मिक प्रवृत्तियों मे सदा दिलचस्पी से भाग लेते है। स्थानीय सघ की कार्यकारिणी के आप सदस्य है।

लाला किशनचदजीकी धर्मपत्नी श्रीमती नगीनादेवी चारडिया प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री, एव अनेक धार्मिक व सामाजिक सस्थाओं से सबध रखनेवाली है और बडी श्राविका है, आपका धार्मिक ज्ञान बहुत गभीर है। आप विचक्षण बुद्धिवाली एव साहित्यप्रेमी हैं। आपके निजी पुस्तकालय मे अनेक अमूल्य हस्त लिखित ग्रथों के अतिरिक्त लगभग पाच हजार पुस्तको का सग्रह है। शास्त्रों का स्वाध्याय करना आपका दैनिक नियम है। अनेक महासतीजी महाराज भी आपके धार्मिक ज्ञान का लाभ उठाते है।

श्रीमती नगीना देवी के पिता लाला धन्नोमल सुजती दिल्ली के प्रसिद्ध रईसों मे से थे। [illegible] धर्म के प्रति [illegible] एव [illegible]

मरी हुई थी। अनेक दीक्षाएँ आपने कराई। तन, मन, धन से साधु-यों की सेवा करने में आपको अपूर्व आनद मिलता था। आपका स्वर्गवास ी ही हो गया था।

स्व. लाला धन्नोमलजी की धर्मपत्नी एव श्रीमती नगीनादेवीजी की माता फूलमतीजी महाराज साहब को जैनदीक्षा अगीकार किये हुए ३१ वर्ष हो है। आप वयोवृद्ध, सरलस्वभावी, घोरसयमी (कठिन सयम पालने वाले) है, ो चौथे आरे की बानगी ही हो। अनेक वर्षों से आप दिल्ली मे स्थि ास किये हुए है। आपके सदुपदेश से दिल्ली के अनेक व्यक्ति अपनी शास्त्रो रसमिति के सदस्य बने है।

श्रीमती नगीना देवीकी भाति उनकी पुत्री सुश्री विजयकुमारी बडी निर्भीक युत्पन्नमति, एव धार्मिक रुचि वाली हैं। आपके सुपुत्र सरलस्वभाव विनयशील महताबचद भी बड़े धर्मनिष्ठ, समाजसेवी, विनयवान एव सुशिक्षित नवयुवक हैं।

श्रीमती नगीनादेवीके दो पुत्रियाँ और भी हैं। एक-सुश्री विनयकुमारी, ासका विवाह जोधपुरनिवासी श्रीमान् हुक्मचदजी साहब जैन एडवोकेट के सुपुत्र ो जिनेन्द्रकुमारजी जैन एडवोकेट से हुआ है। चि० अनिलकुमार जैन, जिनका वन इस पुस्तक मे है-इन्हीं के सुपुत्र है। श्री अनिलकुमार अपनी समिति के दस्य हैं। दूसरी पुत्री सुश्री विमलकुमारी का विवाह दिल्लीनिवासी प्रसिद्ध ांग्रेसी कार्यकर्ता स्व० श्री मुकुन्दलालजी जौहरी "कोमीनारा" (यह उपनाम धान मत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने उ ह दिया था) के सुपुत्र श्री हुक्मचदजी ौहरीके साथ हुआ है। श्रीमती विमलकुमारी भी अपनी समितिकी सदस्या हैं।

परपरा से ही चौरडिया परिवार धार्मिक प्रवृत्तियों मे रुचि रखनेवाला रहा ; और चुस्तस्थानकवासी हैं। तन मन व धन से समाज व धर्म की खूब सेवा करता आया है, यही सदा से इस परिवार का कर्तव्य रहा है।

॥ ॐ शाति. ॥

ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र के दूसरा भाग की विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ
	अध्ययन–५	
१	पाचवे अध्ययन की अवतरणिका	१
२	द्वारावति नगरी का वर्णन	२–७
३	नदनवन-उद्यानका वर्णन	७–८
४	कृष्णवासुदेवका वर्णन	९–१०
५	स्थापत्यापुत्र गाथापतिका वर्णन	११–१२
६	अरिष्टनेमीअर्हंतप्रभुका समवसरण	१४–१६
७	समवसरणमे कृष्णका आगमन आदिका वर्णन	१७–२३
८	स्थापत्यापुत्र गाथापतिके निष्क्रमणका वर्णन	२४–५८
९	शैलकराजका वर्णन	५८–६२
१०	सुदर्शनसेठका वर्णन	६३–१११
११	शुकपरिव्राजकके दीक्षाग्रहणका वर्णन	११२–११५
१२	स्थापत्यापुत्रके निर्वाणका निरूपण	११६–११७
१३	शैलकराजके चरित्रका वर्णन	११८–१६७
	छट्ठा अध्ययन	
१४	महावीरस्वामीका समवसरण	१६८–१६९
१५	इन्द्रभूतिका जीवकेविषयमे प्रश्न	१७०–१७७
	सातवां अध्ययन	
१६	धन्य सार्थवाहके चरित्रका वर्णन	१७८–२३४
	आठवा अध्ययन	
१७	आठवे अध्ययनका अवतरण	२३५
१८	बलराजके चरित्रका वर्णन	२३६–२४०
१९	बलराजके दीक्षाग्रहणका वर्णन	२४०–२४२
२०	महाबल आदिछह राजाओंके=चरित्रका वर्णन	२४३–२८२
२१	प्रभावतीदेवीके दोहदका वर्णन	२८३–२८८
२२	तीर्थंकरके जन्मनिमित्त दिशाकुमारि आदिका उत्सवकरनेका वर्णन	२८९–२९२
२३	मोहगृहके निर्माणका वर्णन	२९३–२९६

पुत्तलिकानिर्माण आदिका वर्णन	२९७–३००
ति के स्वरूपका वर्णन	३००–३२०
चारित्रका वर्णन	३२१–३३४
रित्रमे तालपिशाचका वर्णन	३३४–३५०
चरित्रमे अरहन्नक श्रावकके चरित्रका वर्णन	३५०–३७२
चरित्रका वर्णन	३७२–३८५
पति रुक्मी राजाकेचरित्रका वर्णन	३८५–३९६
" शख " राजाकेचरित्रका वर्णन	४९७–४१०
राजके चारित्रका वर्णन	४१०–४३५
राजाके चरित्रका वर्णन	४३५–४५७
ोके युद्धका वर्णन	४५७–४६१
केयुद्धका वर्णन	४६६–४७१
गरीके निरोधका वर्णन	४७१–४८०
मितपुत्तलिका का वर्णन	४८०–४९१
ाओंके जातिस्मरणहोनाआदिका वर्णन	४९१–५०१
ानके दीक्षावसरका निरूपण	५०२–५१५
वान् के दीक्षोत्सवका वर्णन	५१५–५३९
आदि छहों राजाओके दीक्षाग्रहणआदिका वर्णन	५४०–५५२
नववां अध्ययन	
ारकके चरित्रका वर्णन	५५३–६५५
दशवा अध्ययन	
वृद्धि और हानिकानिरूपण	६५६–६६७
ग्यारहवा अध्ययन	
क आराधक और विराधकत्वहोनेका कथन	६६८–६७८
बारहवा अध्ययन	
कके विषयमें सुबुद्धिका दृष्टात	६७९–७२७
तेरहवा अध्ययन	
अध्ययनके सबधका निरूपण	७२८–७३०
णिआरभकका निरूपण	७३१–७८८
समाप्त	

आद्यमुरब्बी श्री—

बीचमें बैठे हुए

लालाजी किशनलालजी सा. जौहरी

खडे हुए इनके सुपुत्र—

चि. महेतावचन्दजी सा जैन

छोटे—अनिलकुमार जैन (दोयत्ता)

२४ मणिनिर्मितपुत्तलिकानिर्माण आदिका वर्णन	२९७–३००
२५ कोसलाधिपति के स्वरूपका वर्णन	३००–३२०
२६ अङ्गराजके चारित्रका वर्णन	३२१–३३४
२७ अङ्गराज चरित्रमें ताम्पिशाचका वर्णन	३३४–३५०
२८ अङ्गराजके चरित्रमे अरहन्नक श्रावकके चरित्रका वर्णन	३५०–३७२
२९ अङ्गराजके चरित्रका वर्णन	३७२–३८५
३० कुणालाधिपति रुक्मी राजाकेचरित्रका वर्णन	३८५–३९६
३१ काशिराज "शख" राजाकेचरित्रका वर्णन	४९७–४१०
३२ अदीनशत्रु राजके चारित्रका वर्णन	४१०–४३५
३३ जितशत्रु राजाके चरित्रका वर्णन	४३५–४५७
३४ छहराजाओंके युद्धका वर्णन	४५७–४६१
३५ कुम्भराज केयुद्धका वर्णन	४६६–४७१
३६ मिथिलानगरीके निरोधका वर्णन	४७१–४८०
३७ सुवर्ण निर्मितपुत्तलिका का वर्णन	४८०–४९१
३८ छओं राजाओंके जातिस्मरणहोनाआदिका वर्णन	४९१–५०१
३९ मल्लीभगवानके दीक्षावसरका निरूपण	५०२–५१५
४० मल्लीभगवान् के दीक्षोत्सवका वर्णन	५१५–५३९
४१ जितशत्रु आदि छहों राजाओंके दीक्षाग्रहणआदिका वर्णन	५४०–५५२
नववां अध्ययन	
४२ माकदीदारकके चरित्रका वर्णन	५५३–६५५
दशवां अध्ययन	
४३ जीवोंके वृद्धि और हानिकानिरूपण	६५६–६६७
ग्यारहवा अध्ययन	
४४ जीवोंके आराधक और विराधकत्वहोनेका कथन	६६८–६७८
बारहवा अध्ययन	
४५ खातोदकके विषयमें सुबुद्धिका दृष्टात	६७९–७२७
तेरहवा अध्ययन	
४६ तेरह अध्ययनके सबंधका निरूपण	७२८–७३०
४७ नन्दमणिकारभवका निरूपण	७३१–७८८
समाप्त.	

૧૬	શેઠ મીશ્રીલાલજી જેવતરાજજી લુણીયા ચડાવલવાળા	અમદાવાદ	૫૫૦૨
૧૭	શેઠ રામજીભાઈ રામજી વીરાણી અને સમરતબેન રામજી વીરાણી ટ્રસ્ટ	રાજકોટ	૫૦૦૧
૧૮	એક જૈન ગૃહસ્થ	અમદાવાદ	૫૪૨૫
૧૯	શેઠ મુળચદજી જવાહીરલાલજી બરડીયા	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૨૦	શેઠ મુકુદચદજી બાલીયાના સ્મરણાર્થે હા શેઠ મોહનલાલજી બાલીયા (પાલીવાળા)	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૨૧	બા પ્ર શ્રી વિનોદમુનિના સ્મરણાર્થે હા શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ	રાજકોટ	૫૦૦૦
૨૨	શ્રી શામજી વલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રી કેશવલાલ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૨૩	શ્રીમતિ મણીબાઇ વ્રજલાલ પારેખ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા પારેખ વ્રજલાલ દુર્લભજી	રાજકોટ	૫૨૫૧

નોટ —ધાટકોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ મહેતા તરફતી અમદાવાદમા પાલડી બસ સ્ટેન્ડ પાસે પ્લોટ ન ૨૫૦ વાળી ૬૯૮ ચો વાર જમીન સમિતિને ભેટ મળેલ છે અને જેનુ રજીસ્ટર તા ૨૩–૩–૬૦ ના રોજ થઇ ગયેલ છે

મુરબ્બીશ્રીઓ—૨૮

(ઓછામા ઓછી રૂા. ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	વકીલ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોઠારી હા કહાનદાસભાઈ તથા વેણીલાલભાઈ કોઠારી	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	રાજકોટ	૩૫૦૪
૩	મહેતા ગુલાબચદ પાનાચદ	રાજકોટ	૩૨૮૯।।–।।
૪	મહેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ધાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલાબચદ	જામનગર	૩૧૦૧
૬	લલ્લુભાઈ ગોરધનદાસ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ હા શેઠ વાડીલાલ લલ્લુભાઇ	અમદાવાદ	૨૫૦૦
૭	નામદાર ઠાકોર માહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ—૨૩

(ઓછામા ઓછી રૂા ૫૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાંતિલાલ મગળદાસભાઇ જાણીતા મીલમાલીક	અમદાવાદ	૧૫૦૦૦
૨	શેઠ હરખચંદ કાળીદાસભાઈ વારીયા હા શેઠ લાલચંદભાઈ, નગીનભાઈ, વૃજલાલભાઇ તથા વલ્લભદાસભાઈ	ભાણવડ	૧૦૦૦
૩	કોઠારી જેચંદ અજરામર હા હરગોવિંદભાઈ જેચંદભાઇ	રાજકોટ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઈ જીવણભાઇ	બારમી	૫૦૦૧
૫	સ્વ પિતાશ્રી છગનલાલ શામળદાસના સ્મરણાર્થે હા શ્રી ભોગીલાલ છગનલાલભાઇ	ભાવસાર અમદાવાદ	૫૨૧૧
૬	સ્વ શેઠ દિનેશભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ કાંતિલાલ મણીલાલ જેશીંગભાઇ	અમદાવાદ	૫૦૦૦
૭	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હ શેઠ ચીમનલાલભાઇ શાંતિલાલભાઈ તથા પ્રમુખભાઇ	અમદાવાદ	૬૦૦૧
૮	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૯	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા માતુશ્રી કડવીબાઇ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૦	શેઠ પોપાલાલ પીતાંબરદાસ	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૧૧	શાહ રંગજીભાઇ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૧૨	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હ શેઠ દુર્લભજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૩	શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હ શ્રીમતિ મણીકુવરબેન દુર્લભજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૪	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઇ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રી છોટાલાલ શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૫	સ્વ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હ. ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ અને કુટુંબીજનો	અમદાવાદ	૫૦૦૦

સહાયક મેમ્બરો--૧૩૨

(ઓછામા ઓછી રૂા ૫૦૦ ની રકમ આપનાર)

નમ્બર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા ગુલાબાઈ વેલશીભાઈ	વઢવાણ શહેર	૭૫૦
૨	શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઇ	જોરાવરનગર	૭૦૦
૩	શેઠ રતનશી હીરજીભાઈ હા ગોરધનભાઈ	જામજોધપુર	૫૫૫
૪	ખાટવીયા ગીરધર પરમાણુંદ હા અમીચંદભાઇ	બાબીજાળીયા	૫૨૭
૫	મોરબીવાળા સંઘવી દેવચંદ જેણુશીભાઈ તથા તેમના ધર્મપત્ની બા સૌ મણીબાઇ તરફથી હા મુળચંદ દેવચંદ સંઘવી	મલાડ	૫૧૧
૬	વોરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા ચંપાબેન ગોસલીયા	,,	૫૦૨
૮	શાહ મનહરલાલ મણુજીવનદાસ	મુબઈ	૫૦૧
૯	શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦	શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	,,	૫૦૧
૧૧	શેઠ શીવલાલ ડમરભાઇ (કરાચીવાળા)	લીંબડી	૫૦૧
૧૨	કામદાર તારાચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૧
૧૩	મ્હેતા મોહનલાલ કપુરચંદ	,,	૫૦૦
૧૪	શેઠ ગોવિંદજીભાઇ પોપટભાઇ	રાજકોટ	૫૦૦
૧૫	શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૧
૧૬	સ્વ પિતાશ્રી નથાજીના સ્મરણાર્થે હા વેણીચંદ શાતિલાલ (જાખુમાવાળા)	મેઘનગર	૫૦૧
૧૭	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ ઠાકરશી કરશનજી	થાનગઢ	૫૦૦
૧૮	શેઠ તારાચંદ પુખરાજજી	ઔરંગાબાદ	૫૦૦
૧૯	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ	,,	૫૦૦
૨૦	મ્હેતા મુળચંદ રાઘવજી હા મગનલાલભાઇ તથા દુર્લભજીભાઈ	ધ્રાફા	૭૫૦
૨૧	શેઠ હરખચંદ પુરુષોત્તમ હા ઇન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫૦૦
૨૨	શેઠ કેસરીમલજી વસ્તીમલજી ગુગલીયા	મલાડ	૫૦૧
૨૩	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા બાટવીયા અમીચંદ ગીરધરભાઇ	બાબીજાળીયા	૫૦૧।
૨૪	શ્રી બીમજીભાઇ બાવાભાઇ કુલચંદભાઈ ગુલાબચંદભાઈ નાગરદાસભાઈ જમનાદાસભાઇ	મુબઈ	૫૦૧

૮	શેઠ લહેરચદ કુવરજી હા શેઠ ન્યાલચદ લહેરચદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૯	શાહ છગનલાલ હેમચદ વસા હા મોહનભાઈ તથા મોતીલાલભાઇ	મુબઇ	૨૦૦૦
૧૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ હા શેઠ ચદ્રકાન્ત વીકમચદ	મોરબી	૧૯૬૩
૧૧	મ્હેતા સોમચદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૨૦૦૦
૧૨	મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઇ	જામનેધપુર	૧૫૦૨
૧૩	દોશી કપુરચદ અમરશી હા દલપતરામભાઈ	જામનેધપુર	૧૦૦૨
૧૪	બગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૧૦૦૨
૧૫	શેઠ માણેકલાલ ભાણજીભાઈ	પોરબદર	૧૦૦૧
૧૬	શ્રીમાન ચદ્રસિહજી સાહેબ મ્હેતા (રેલ્વે મેનેજર)	કલકત્તા	૧૦૦૧
૧૭	મ્હેતા સોમચદ નેણસીભાઇ (કરાચીવાળા)	મોરબી	૧૦૦૧
૧૮	શાહ હરીલાલ અનોપચદ	ખભાત	૧૦૦૧
૧૯	મોદી કેશવલાલ હરિશ્ચદ્ર	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૦	કોઠારી છબીલદાસ હરખચદ	મુબઇ	૧૦૦૧
૨૧	કોઠારી રંગીલદાસ હરખચદ	ભાવનગર	૧૦૦૦
૨૨	શાહ પ્રેમચદ માણેકચદ તથા અ સૌ સમરતબેન	અમદાવાદ	૧૦૦૩
૨૩	શેઠ કરમશી જેઠાભાઈ સોમૈયા હા અ સૌ સાકરબેન	મુબઈ	૧૦૦૦
૨૪	શેઠ પોપટલાલ ચત્રભુજ કોઠારી	સુરેન્દ્રનગર	૧૦૦૧
૨૫	શ્રી સ્થા જૈન લીબડી સપ્રદાયના ક્ષમાગુણ નિધિ પૂજ્ય શ્રી લાધાજી સ્વામીના શિષ્ય પ્રખર પડિત રત્ન શ્રી ઉત્તમચદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે પૂજ્ય લાધાજી સ્વામી પુસ્તકાલય તરફથી હા શેઠ જેશીંગભાઈ પોપાલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૦
૨૬	શ્રીમતિ આશાબેન હંસરાજ સુરાણા	મુબઇ	૧૦૦૧
૨૭	શાહ શાતિલાલ માણેકલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૮	શ્રીયુત વીકુમાર C/o મહેતાબચદ જૈન	દિલ્હી	૧૦૦૧

૫૨	શેઠ છોટુભાઇ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાળા	મુબઇ	૫૦૧
૫૩	પારેખ રતિલાલ નાનચંદ ભોરખીવાળા તરફથી તેમના પિતાશ્રી નાનચંદ ગોવિંદજીના સ્મરણાર્થે તથા તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ વસંત બહેનના અઠ્ઠાઇતપ નિમિત્તે હા ભુપતલાલ રતિલાલ	અમદાવાદ	૫૫૨
૫૪	સ્ત્ર શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની શીવકુવરબાઇ તરફથી હા રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ શાહ	અમદાવાદ	૫૧૧
૫૫	શ્રીમાન નાથાલાલ માણેકચંદ પારેખ	(માટુગા)	૫૦૧
૫૬	શ્રી લીંબડી સંપ્રદાયના ગચ્છાધિપતિ પૂ આચાર્ય મહારાજ શ્રી લાધાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા શેઠ જેસીંગભાઈ પોપાલાલ (મહારાજ શ્રી છોટાલાલજી સદાનંદીના ઉપદેશથી)	અમદાવાદ	૫૦૧
૫૭	સ્ત્ર શ્રી વિનયમુર્તિ શ્રી લક્ષ્મીચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે હા શેઠ જેસીંગભાઇ પોપાલાલ (મહારાજશ્રી છોટાલાલજી સદાનંદીના ઉપદેશથી)	અમદાવાદ	૫૦૧
૫૮	બા બ્ર પ્રભાવતીબેન કેશવલાલ ઉજ્જૈનવાળા તરફથી તેમની દીક્ષા પ્રસંગે	વીરમગામ	૫૫૧
૫૯	શેઠ શ્રીયુત હરજીવનદાસ રાયચંદ હા છબીલદાસ હરજીવન	અમદાવાદ	૫૦૧
૬૦	શેઠ પોપટલાલ હંસરાજ તથા દિવાળીબેનના સ્મરણાર્થે હા શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૮૨
૬૧	અ સૌ લીલાવતીબેન ઇશ્વરલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૬૨	ઝેમાણી પ્રભુદાસ ભણુજી	કલકત્તા	૫૫૧
૬૩	શેઠ લક્ષ્મણદાસ તેજરામ	અમદાવાદ	૫૦૧
૬૪	શ્રી સ્થા જૈન મોટા સંઘ	રાજકોટ	૫૦૧
૬૫	શેઠ ચાંદમલ હીરચંદ	નાસિક સીટી	૫૦૧
૬૬	ઝવેરી માણેકચંદજી પન્નાલાલ છજલાણી હા ધનવંતીબેન તથા કિરણબેન	દિલ્હી	૫૦૧
૬૭	શેઠ હંસરાજજી પૂર્ણમલજી કાકરીયા	ગોગેળાવ	૫૦૧
૬૮	શ્રી શ્વે સ્થા જૈન સભા	કલકત્તા	૫૦૧
૬૯	શેઠ તેજસિંહજી ફતેલાલજી છાજેડ	ઉદેપુર	૫૦૧
૭૦	શેઠ રતનચંદ લક્ષ્મીચંદ	મુબઇ	૫૦૦

૨૫	શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ	મુંબઇ	૫૦૧
૨૬	સ્વ કાંતિલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ બાલચંદ સાકરચંદ	,,	૫૦૧
૨૭	કામદાર-રતીલાલ દુર્લભજી (જેતપુરવાળા)	,,	૫૦૧
૨૮	શાહ જયંતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ	૫૦૧
૨૯	વોરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ	,,	૫૦૧
૩૦	શેઠ ગુલાબચંદ ભુદરભાઈ તથા કસ્તુરબેન હા ભાઈ અનોપચંદ	બારશેડ	૫૦૧
૩૧	મહાન ત્યાગી બેન ધીરજકુંવર ચુનીલાલ મહેતા	ધ્રાફા	૫૭૧
૩૨	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ	ધ્રાફા	૫૦૧
૩૩	શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ	રાજકોટ	૫૦૧
૩૪	શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા શ્ર સૌ નંદકુંવરબેન	જામનગર	૫૦૩
૩૫	શેઠ દેવચંદ અમરશી (બેન ધીરજકુંવરની દીક્ષા પ્રસંગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૩૬	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ (બેન ધીરજકુંવરની દીક્ષા પ્રસંગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૪૭	વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ શાહ	વીરમગામ	૫૦૧
૩૮	મહેતા શાન્તિલાલ મણીલાલ હા કમળાબેન મહેતા	અમદાવાદ	૫૫૬
૩૯	શ્રીયુત લાલચંદજી તથા શ્ર સૌ ધીસાબેન	,,	૫૦૧
૪૦	શેઠ મોહનરાજજી મુકુનચંદજી બાલીયા	,,	૫૦૧
૪૧	સ્વ શેઠ ઉકાભાઈ ત્રીભોવનદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની લક્ષ્મીબાઈ ગીરધર તરફથી હા મરઘાબેન તથા મગુબેન	અમદાવાદ	૫૦૧
૪૨	પારેખ જયંતીલાલ મનસુખલાલ રાજકોટવાળા હ વિનુભાઇ	,,	૫૦૧
૪૩	શ્રી-સ્થા જૈન સંઘ	વાકાનેર	૫૦૧
૪૪	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ	બોટાદ	૫૦૧
૪૫	શેઠ ગુદડમલજી શેષમલજી નેવર	(બરાર) પીપળગાવ	૫૦૧
૪૬	સ્વ તુરખીયા લહેરચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની જીવતીબાઈ તરફથી હા ભાઇ જયંતીલાલ તથા પુનમચંદભાઈ	વડોદરા	૫૦૧
૪૭	શાહ અચલદાસ શુકનરાજજી હા શુકનરાજજી	અમદાવાદ	૫૦૧
૪૮	ભાવસાર બોડીદાસ ગણેશભાઈ	ધ્રાંગધ્રા	૫૦૧
૪૯	શ્ર સૌ હીરાબેન માણેકલાલ મહેતા	ધાટકોપર	૫૦૧
૫૦	મહેતા શાંતિલાલ મગનલાલ તથા શ્ર સૌ પદમાવતી શાંતિલાલ મહેતા	અમદાવાદ	૫૦૦
૫૧	શેઠ હીરાચંદજી વનેચંદજી કટારીયા	હુબલી	૫૦૧

૮૮ શ્રીમાન લાલાજી કપુરચદજીના ણેાયગના ધર્મપત્ની શ્રીમતી વસતદેવી હા લાલા રામલજી હેમચદજી તરફથી (મહાસતી શ્રી સુદર્શનાશ્રીજી તથા ફૂલ મતિજી મહાદેવીના ઉપદેશથી)	દિલ્હી	૫૦૧
૮૯ સ્વ મહાસતીજી શ્રી દ્રૌપતાદેવીજી મ સા ના સ્મરણાર્થે શ્રી એસ એસ જૈન મહિલા મ ધ તરફથી (અનેક ગુણાલ કૃત મહાસતીજી શ્રી મેાહનદેવીજી મ સા ની પ્રેરણાથી)	દિલ્હી	૫૦૧
૯૦ સ્વ લક્ષ્મીચદજીના સ્મરણાર્થે નગિનાદેવી સુજતીના તરફથી હા સ ઘવી હેમતકુમાર જૈન	દિલ્હી	૫૦૧
૯૧ સ્વ પિતાશ્રી લાલા ઝવેરી ધનેામલજી સુજન્તીના સ્મરણાર્થે હા શ્રીમતી નગીનાદેવી	દિલ્હી	૫૦૧
૯૨ લાલાજી કસ્તુરચન્દજી ખુશાલચન્દજી સ ચેતી હા જ્ઞાનચદ્રજી અલવર		૫૦૧
૯૩ સ્વ પૂજ્ય પિતાશ્રી દુર્લભજી સેામચદ દફ્તરી હા જૌરીશકર દુર્લભજી દફ્તરી	મુબઈ	૫૦૦
૯૪ શેઠ સેામચદ જેઠાલાલ ચેાલાણી હા ચુનીલાલભાઇ જેડીયાવાળા	મુબઇ	૫૦૬
૯૫ શેઠ ફેાજલમલજી સુલતાનસિહજી ેારદીયા	અમદાવાદ	૫૦૧
૯૬ શેઠ છ ાનલાલ શામજી વીરાણી તથા શ્રીમતી વૃજકુવરબેન છગનલાલ વીરાણી ટ્રસ્ટફ ડ તરફથી શેઠ છગનલાલભાઇના સ્મરણાર્થે	રાજકેાટ	૫૦૧
૯૭ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક મ ધ હા પ્રમુખ બ સીલાલ કટારીયા	હિ ગણુઘાટ	૫૦૧
૯૮ લાલાજી રામલાલજી રેાશનલાલજી (અનેક ગુણાલ કૃત મહાસતીજી મેાહનદેવીના ઉપદેશથી)	દિલ્હી	૫૯૧
૯૯ સ્વ મહેતા મ ગળજી મણીલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની ગુણવ તીબેન મહેતા	પાડેચેરી	૫૫૧
૧૦૦ બાટવીયા વનેચ ૬ અમીચ ૬ (મહાવીર ટેક્ષટાઇલ સ્ટેાર્સ) બે ગલેાર		૫૫૩
૧૦૧ શ્રીયુત તારાચ ૬ ગેલડા ટ્રસ્ટ	મદ્રાસ	૫૦૧
૧૦૨ શેઠ ગુલરાજજી પુનમચ ૬જી મહેતા	કીસનગઢ	૫૫૧
૧૦૩ શેઠ અગરમલજી ત્રીકમચ ૬જી	ઈદેાર સીટી	૫૫૧

૭૧	શાહ ઉમરશી ભીમશીભાઇ (સ્વ પિતાશ્રી ભીમશીભાઇ તથા માતુશ્રી પાલાબાઈતથા ધર્મપત્ની પાનબાઇના સ્મરણાર્થે)	મલાડ	૫૫૨
૭૨	શાહ શામલાલભાઇ અમરસીભાઇ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭૩	મહેતા ચન્દ્રકાન્ત નોતમલાલ	મુબઈ	૫૦૧
૭૪	શેઠ ભીખચદ્ર લાલચદ્ર	પીપલગામ	૫૦૧
૭૫	મેન મોડ્રનીબેન મહેતા	મુબઇ	૫૦૧
૭૬	શ્રીમતી મોધીબેન નવલચદ શાહ હા મોતીબેન	લીમડી (સૌરાષ્ટ્ર)	૫૦૧
૭૭	શ્રીમતી વિમલાજી સૂરજમલ મહેતા	બેલગામ	૫૦૧
૭૮	ઉદાણી નિહાલચદ્ર હાકેમચદ્ર વકીલ બી એ એલ એલ બી	રાજકોટ	૫૦૧
૭૯	સ્વ કોઠારી મગનલાલજી કુન્દનમલજીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની રાજકુવરબેન	સતારા	૭૫૧
૮૦	શેઠ મોહનલલજી મછાલાલજી હા રમણીકલાલ (પૂ મુનિશ્રી કતેચદ મ ના શિષ્ય પ મુનિશ્રી કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી)	જયપુર	૫૦૧
૮૧	શેઠ કનૈયાલાલજી સોહનલાલજી કાવેડિયા	ધારડી	૫૦૧
૮૨	શેઠ પ્રતાપમલજી કપુરચદજી સાઢેરાવાળા (પૂજ્ય કતેચદજી મ ના શિષ્ય મિશ્રીલાલજી મ ના શિષ્ય ચાદમલજી મ ના ઉપદેશથી)	અમદાવાદ	૫૦૧
૮૩	શ્રીમાન લાલાજી રોશનલાલજી સમન્દરલાલજી	બડોત	૫૦૧
૮૪	શ્રીમાન ભૂરમલજી દલીચદજી સાકરિયા (પૂ મ શ્રી સ્વામીદાસજીના સપ્રદાય પૂ મ શ્રી કતેચદજી મ ના શિષ્ય પ મુનિશ્રી કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી	સાઢેરાવ	૫૦૧
૮૫	સ્વ ગૌરીશકર કાળીદાસ દેસાઇના સ્મરણાર્થે હા ભૂપતલાલ ગૌરીશકર	ઇદોર	૫૦૧
૮૬	શેઠ શ્રી નરભેરામભાઇ હસરાજભાઇ કમાણી	જમશેદપુર	૫૦૧
૮૭	સ્વ મહાસતીજી શ્રી ધનદેવીજી મ સા ના સ્મરણાર્થે સ્વ ખૂબચદજી સખલાલના ધર્મપત્ની શ્રીમતી જયદેવી તરફથી (મહાસતીજી શ્રી સુદર્શનાબતીજી તથા કુલબતીજીના ઉપદેશથી)	દિલ્લી	૫૦૧

૧૨૩	શેઠ ઝુમરલાલજી-સીરોયા	ઉદેપુર ૫૦૧
૧૨૪	શેઠ મનસુખલાલ ત્રીભોવનદાસ	કોયમ્બતુર ૫૦૧
૧૨૫	શ્રી દશા શ્રીમાળી સ્થા જૈન સઘ	જમશેદપુર ૫૦૧
૧૨૬	શ્રી જૈન રત્ન પુસ્તકાલય	જોધપુર ૫૦૧
૧૨૭	શેઠ અજીતમલ કનૈયાલાલ	અમદાવાદ ૫૦૦
૧૨૮	શેઠ વસ્તીમલજી જોરાવરમલજી ભુરટ	હુબલ્લી ૫૦૧
૧૨૯	શેઠ ચાદમલજી હરખચદજી કોઠારી હા. અમાબેન મુળચદજી	અમદાવાદ ૫૦૧
૧૩૦	બાટવીયા ગુલાબચદ લીલાધર	બાબરીજળીયા ૫૦૨
૧૩૧	જૈન લક્ષ્મીબાઇ પુર્વમલ મહેતા	પાલનપુર ૫૦૧
૧૩૨	શ્રીવીર વર્ધમાન પુસ્તકાલય હા. શેઠ હીરાલાલજી ગણેશલાલજી	કુવારીયા ૫૦૧

૫૮૨-લાઈફ મેમ્બરો

અમદાવાદ તથા પરાઓ

નંબર	નામ	રૂપિયા
૧	શેઠ ગીરધરલાલ કરમચદ	૨૫૧
૨	શેઠ છોટાલાલ વખતચદ હા. ફકીરચદભાઇ	૨૫૧
૩	શાહ કાંતિલાલ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૪	શાહ ચોપટલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૫	શેઠ પ્રેમચદ સાકરચદ	૨૫૦
૬	શાહ રતીલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૭	શેઠ લાલભાઈ મંગળદાસ	૨૫૧
૮	સ્વ૰ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે, હા. કાનજીભાઈ અમૃતલાલ દેસાઈ	૨૫૧
૯	શાહ નટવરલાલ ચકુલાલ	૨૫૧
૧૦	શાહ નરસિંહદાસ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૧૧	શાહ બીપીનચદ્ર તથા ઉમાકાંત ચુનીલાલ ગોપાણી	૩૦૧
૧૨	શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આઠકોટી-સ્થા જૈન ઉપાશ્રય હા. વહીવટ કર્તા શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	૨૫૧

૧૦૪ કાનુગા બીંગડમલજી મુલતાનમલજી
કુચાડ ગઢસીયાણાવાળા — અમદાવાદ ૫૦૧

૧૦૫ લાલાજી નવરતનચંદજી ચોરડીયાના ધર્મપત્ની
શ્રીમતી રાજકુમારીબેન — દિલ્હી ૫૦૧

૧૦૬ શેઠ ચીમનલાલ રૂષભચંદ — અમદાવાદ ૫૦૧

૧૦૭ શેઠ કાનજી ભીમાણી ટ્રસ્ટ — કલકત્તા ૫૦૧

૧૦૮ શેઠ ગીરધરલાલ હંસરાજ કામાણી — ,, ૫૦૧

૧૦૯ અનેક ગુણાલંકૃત મહાસતી મોહનદેવીજીના ઉપદેશથી
સ્વધર્મી બંધુઓ તરફથી — દિલ્હી ૫૦૧

૧૧૦ સ્વ વિનચંદજી પારેખના સ્મરણાર્થે લાલા
પૂર્ણચંદજી રતનચંદજી પારેખની વતી હ
શ્રીમતી પ્રેમાદેવી (શાંત સ્વભાવી મહાસતીજી
કુલકુવરબાઈના ઉપદેશથી) — દિલ્હી ૫૦૧

૧૧૧ શ્રીમતી બદામબાઈ મીશ્રીલાલજી લુણિયા ચડાવલવાળા — અમદાવાદ ૫૦૧

૧૧૨ શેઠ ભરતકુમાર મણીલાલ દલાલ — ,, ૫૫૧

૧૧૩ શાહ હરખચંદ અમરચંદ — ,, ૫૦૧

૧૧૪ શાહ જગજીવનદાસ વન્દ્રાવનદાસ — ,, ૫૦૧

૧૧૫ શેઠ હંસરાજ લક્ષ્મીચંદ કામાણી જૈનભુવન — કલકત્તા ૫૦૧

૧૧૬ પૂ દાદાજી સ્વ કપુરચંદજી તથા દાદીજી
કેસરબેન ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે હા લાલા
કુલચંદજી અને શ્રીમતી ચીમલકુવરી ઝવેરીની
વતી શ્રીમતી નગીનાદેવી (મહાસતીજી
કુલમતીજીના ઉપદેશથી) — દિલ્હી ૫૦૧

૧૧૭ શેઠ નગીનદાસ છોટાલાલ — અમદાવાદ ૫૦૧

૧૧૮ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ શેઠ ગણેશમલ ગુલાબચંદ — બરોડા ૫૦૧

૧૧૯ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ — ભટેસર ૫૦૧

૧૨૦ શ્રી સરાક જૈન વિદ્યાલય — કુમારડી ૫૦૧

૧૨૧ ગાંધી ભુરાલાલ નાનચંદ — મુબઇ ૫૦૧

૧૨૨ શ્રીમાન હિંમતસિંહજી સાહેબ ગલુંડીયા
એડીસનલ કમિશ્નર અજમેર ડીવીઝનવાળાના
ધર્મપત્ની બા સૌ ભાણેકકુવરબેન તરફથી
હા ભુરાલસિંહજી ગલુંડીયા — જયપુર ૫૦૧

૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા જૈન સ ઘ હા શેઠ મણીલાલભાઇ ૨૫૦
૪૦ ભાવસાર છોટાલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૪૧ ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલ ૨૫૧
૪૨ અ સૌ બેન જીવીબેન રતિલાલ હા ભાવસાર રતિલાલ હરગોવિંદદાસ ૨૫૧
૪૩ ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા ૨૫૧
૪૪ સ ઘવી બાલુભાઇ કમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નીઓ અ સૌ
ચ પાબેન તરફથી તથા વસ તબેન તરફથી ૨૫૧
૪૫ અ સૌ વિદ્યાબેન વનેચ દ દેસાઇ વર્ષિતપ તથા અઠાઇ પ્રસ ગે
હા ભુપેન્દ્રકુમાર વનેચ દ દેસાઇ ૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ ૨૫૧
૪૭ અ સૌ સરસ્વતીબેન મણીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૪૮ અ સૌ કકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની) ૩૦૯
૪૯ અ સૌ સવિતાબેન (જયતીલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની) ૨૫૧
૫૦ અ સૌ સુનદાબેન (રમણુલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની) ૨૫૧
૫૧ શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા વાગમલજી રૂગનાથજી ૩૦૧
૫૨ શેઠ મણીલાલ બોઘાભાઇ ૨૫૧
૫૩ પટવા સુમેરમલજી અનોપચ દજી જોધપુરવાળા ૩૦૧
૫૪ સ્વ માણેકલાલ વનમાળીદાસ શેઠના સ્મરણાર્થે
હા રમણુલાલ માણેકલાલ ૨૫૧
૫૫ સ્વ શાહ ધનરાજજી બેમરાજજીના સ્મરણાર્થે
હા કનૈયાલાલ ધનરાજજી ૩૦૧
૫૬ શ્રી સારગપુર દ આ કો સ્થા જૈન સ ઘ
હા શાહ રમણુલાલ ભગુભાઇ ૨૫૧
૫૭ દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મીબાઇ લહેરચ દના
સ્મરણાર્થે હા દોશી મનહરલાલ કરશનદાસ મુળીવાળા ૨૫૧
૫૮ શાહ પુનમચ દ ફતેચ દ ૨૫૧
૫૯ શ્રીયુત ચતુરભાઈ ન દલાલ ૫૨૧
૬૦ શ્રીયુત અમૃતલાલ ઈશ્વરલાલ મહેતા ૨૫૧
૬૧ શાહ જાદવજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમુલખભાઇ ૨૫૧
૬૨ અ સૌ બેન લાભુબેન મગનલાલ
હા શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઇ વઢવાણ રાહેરવાળા ૩૦૧

૧૩ શ્રી છીપાપોળ હરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા જૈન સઘ
હા શેઠ ચદુલાલ ગચરતલાલ ૨૫૧
૧૪ શાહ ચીનુભાઈ બાલાભાઈ C/o શાહ બાલાભાઇ મહાસુખલાલ ૨૫૧
૧૫ શાહ ભાઈલાલ ઉજમશી ૨૫૧
૧૬ શ્રી સુખલાલ ડી શેઠ હા ડો કુ સરસ્વતીબેન શેઠ ૨૫૧
૧૭ શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ કાંતિલાલ જીવણલાલ ૨૫૧
૧૮ મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ ૨૫૧
૧૯ શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ ૨૫૧
૨૦ શ્રી છકોટી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ પોપાલાલ પિતાબરદાસ ૨૫૧
૨૧ દેસાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા ભાઈલાલ અમૃતલાલ ૨૫૧
૨૨ શાહ નવનીતરાય અમુલખરાય ૨૫૧
૨૩ શાહ મણીલાલ આશારામ ૨૫૧
૨૪ શેઠ ચીનુભાઈ સાકરચદ ૨૫૧
૨૫ શાહ વરજીવનદાસ-ઉમેચદ ૨૫૧
૨૬ શાહ રજનીકાન્ત કસ્તુરચદ ૨૫૧
૨૭ સઘવી જીવણલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૨૮ શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ ભાગભાવાળા ૨૫૨
૨૯ અ સૌ બેન રતનબેન નાદેચા હા શેઠ ધુલજી ચપાલાલજી ૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા ૨૫૧
૩૧ શ્રી સરસપુર હરીયાપુરી આઠ કોટી સ્થા જૈન ઉપાશ્રય
હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૩૨ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા સાદડીવાળા ૨૫૧
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહરલાલજી તથા પૂજ્ય ચાચાજી હજારીમલજી
બરડીયાના સ્મરણાર્થે હા સુળચદ જવાહરલાલજી બરડીયા ૨૫૧
૩૪ સ્વ ભાવસાર બબાભાઇ (મગળદાસ) પાનાચદના સ્મરણાર્થે
હા. તેમના ધર્મપત્ની પુરીબેન ૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી રવજીભાઇ તથા સ્વ માતુશ્રી સુળીબાઈના સ્મરણાર્થે
હા કકલભાઇ કોઠારી ૪૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ ૨૫૧
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચદ જાખડાવાળા હા પાર્વતીબેન ૨૫૧
૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચદ રાજસીતાપુરવાળા ૨૫૧

૮૬ ભાવસાર કનુભાઈ સાકરચંદ ૨૫૧
૮૭ શેઠ ભેરૂમલજી સાહેબ જોધપુરવાળા ૨૫૧
૮૮ સ્વ ઓનાણી વર્ધમાન રામજીભાઇ કુંદણીવાળાના સ્મરણાર્થે
હ. શાંતિલાલ વર્ધમાન ૨૫૧
૮૯ સ્વ કચરાભાઈ લહેરભાઇના સ્મરણાર્થે
હ. શાંતિભાઇ કચરાભાઇ ૨૫૧
૯૦ એક સ્વધર્મી બન્ધુ હ. શાહ ગીખભદાસજી જયતીલાલજી ૨૫૧
૯૧ અ સૌ સરસ્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઈ શાહ
(સદ્ગત દી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૯૨ ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ (દરીયાપુરી સંપ્રદાયના પૂ તપસ્વી
મહારાજશ્રી માણેકચંદજીના શિષ્ય મુનિશ્રી મગનલાલજી
મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
૯૩ બેન જેકુવર વ્રજલાલ પારેખ ૨૫૧
૯૪ શેઠ પુનમચંદજી જવાહીરલાલજી બરડીયા ૨૫૧
૯૫ અ સૌ લીલાવતી ધીરજલાલ મહેતા
હે ડો. ધીરજલાલ ત્રીકમલાલ મહેતા ૩૦૧
૯૬ શેઠ રાજમલજી ધામીલાલજી કોઠારી કોશીથલવાળા ૨૫૧
૯૭ શેઠ ચુનીલાલ ભગવાનજી હે રતીલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
૯૮ ભાગ્યવતી અરવીંદકુમાર હે અરવીંદકુમાર સકરાભાઇ ભાવસાર ૨૫૧
૯૯ અ સૌ ચંચળબેન મનસુખલાલ
હ. મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા ૨૫૧
૧૦૦ સ્વ આસીબાઈ તથા વસતીમલજી ભોમાજીના સ્મરણાર્થે
હ. શેઠ મીશ્રીમલજી દેવચંદજી ઓસવાલ કેરૂવાળા ૨૫૨
૧૦૧ સ્વ શેઠ કીશનમલજી માડોતના સ્મરણાર્થે
હ. શીરેમલજી કીશનમલજી મોજતવાલા ૨૫૧
૧૦૨ સ્વ શેઠ વકતારમલજીના સ્મરણાર્થે
હ. શેઠ ધીસાલાલજી મુકનરાજજી શીયારીયા (જોધપુરવાલા) ૨૫૧
૧૦૩ શાહ મહાસુખલાલ ભાઇલાલ (સદ્ગત દી પંડિત મુનિશ્રી
છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૧૦૪ અ સૌ કાન્તાબેન કાળીદાસ હે કુમાર બુકબાઈન્ડીંગ વર્કસ ૨૫૧
૧૦૫ સ્વ હિંમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે
તેમના સુપુત્રો મેસર્સ દ્વારકાદાસ એન્ડ બ્રધર્સ તરફથી ૩૫૧

૬૬૩ અ સૌ બેન વિદ્યાબેન ગોરધનદાસ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૬૬૪ દોશી કુલચંદ સુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે
હા દોશી છબીલદાસ કુલચંદભાઈ ૨૫૧
૬૬૫ લાલાજી રામકુવરજી જૈન ૨૫૧
૬૬૬ શેઠ છોટાલાલ ગુલાબચંદ પાલનપુરવાળા ૨૫૧
૬૬૭ શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ ૨૫૧
૬૬૮ સંઘવી સુર્યકાન્ત ચુનીલાલના સ્મરણાર્થે
હા સંઘવી જીવણલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
૬૬૯ ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય ૨૫૧
૬૭૦ મહેતા મુળચંદ મગનલાલ ૨૫૧
૬૭૧ વૈદ્ય નરસિંહદાસ સાકરચંદના ધર્મપત્ની રેવાબાઈના સ્મરણાર્થે
હા હરીલાલ નરસિંહદાસ ૨૫૧
૬૭૨ શાહ કુલચંદભાઈ મુલચંદ હા હેસમુખભાઈ કુલચંદભાઈ ૨૫૧
૬૭૩ શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી બરડીયા ૨૫૧
૬૭૪ શાહ લલ્લુભાઈ મગનભાઈ ચુડાવાળા હે જશવંતલાલ લલ્લુભાઈ ૩૦૧
૬૭૫ કુમારી પુષ્પાબેન હીરાલાલ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૬૭૬ શાહ મણીલાલ ઠાકરશી હે કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા
(ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૬૭૭ કુમારી નલીનીબેન જયંતીલાલ ૨૫૧
૭૮ સ્વ ઉમેદરામ ત્રીભુવનદાસના ધર્મપત્ની કાશીબાઇના સ્મરણાર્થે
હા શાંતિલાલ ઉમેદરામ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૭૯ સ્વ ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની દીવાળીબાઇના
સ્મરણાર્થે હે રતીલાલ માણેકલાલ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૮૦ મહેતા દેવીચંદજી ખુબચંદજી ધોકા ગઢસીયાણાવાળાના
સ્મરણાર્થે હે મહેતા ચુનીલાલ હરમાનચંદ ૨૫૧
૮૧ ઘાસીલાલજી મોહનલાલજી કોઠારી હે લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર ૨૫૧
૮૨ સ્વ શેઠ નાથાલાલ રતનાભાઇ મારફતીયાના સ્મરણાર્થે પુનાબેન
તરફથી હે કરશનભાઇ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
૮૩ શાહ મણીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
૮૪ ભાવસાર જયંતીલાલ ભોગીલાલ ૨૫૧
૮૫ ભાવસાર રમણલાલ ભોગીલાલ ૨૫૧

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઇ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સ ઘ હા ગાડાલાલ ભીખાલાલ ૨૫૧

અજમેર

૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ ડુગરવાલ ૨૫૧

અલવર

૧ શ્રીમતી ચપાદેવી ઠે બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી ૨૫૧
૨ શેઠ ચાદમલજી મહાવીરપ્રસાદ પાલાવત ૨૫૧
૩ શ્રીયુત ઋષભકુમાર સુમતિકુમાર જૈન ૨૫૧

આસનસોલ

૧ ભાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
મણીબાઈ તરફથી હા રસિકલાલ, અનિલકાત, તથા વિનોદરાય ૨૫૧

આટકોટ

૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણજી ૩૮૧

આણદ

૧ શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનસુખલાલભાઈ ૨૫૧

આકોલા

૧ શેઠ કચનલાલ રાઘવજી અજમેરા ઠે. મેસર્સ અજમેરા બ્રધર્સ એન્ડ
કુ (પૂ સદાનદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧

ઈગતપુરી

૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચદ જૈન ૨૫૧

ઇન્દોર

૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેસાઇ જેતપુરવાળા
(અ સૌ બેન વિદ્યાબેનનાવધી તપ નિમિત્તે)
હા અરવિદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર ૨૫૧
૨ શ્રીયુત ભાઈલાલ છગનલાલ તુરખીયા ૨૫૧

ઉદયપુર

૧ શેઠ રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧
૨ શ્રીમતી મોહિનીબાઇ ઠે રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧

૧૦૬ અ સૌ કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે
હા ભાવસાર નાગરદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૧૦૭ શ્રી ઉમેદચંદ હાકરશી ઠે યુ ટી ગોપાણી એન્ડ મન્સ ૩૫૧

૧૦૮ પૂ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧

૧૦૯ શાહ શાંતીલાલ મોહનલાલ ૨૫૧

૧૧૦ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા પ્રભુદાસ મહેતા ૨૫૧

૧૧૧ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા શાહ ભુરાલાલ કાળીદાસ ૨૫૧

૧૧૨ સ્વ પિતાશ્રી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે
હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧

૧૧૩ શેઠ પરસોતમદાસ અમરસીના ધર્મપત્ની સ્વ કુસુમબેનના
સ્મરણાર્થે તથા અ સૌ સવીતાબેનના માસખમણના નિમિત્તે
હા શેઠ સોમચંદ પરસોતમદાસ (પોર્ટ સુદાનવાળા) ૩૦૧

૧૧૪ શ્રીમાન મેરાવરમલજી ધર્મચંદજી કુંગરવાલ
રાજી કાકેરડાવાળા (મુનિશ્રી માગીલાલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

૧૧૫ કે ધનજીભાઈ પરમોતમદાસ ૨૫૧

૧૧૬ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૧૭ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૧૯ શેઠ ગેરિલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧

૧૨૦ શેઠ કનૈયાલાલજી સુરાણા પીપલોદાવાળા ૨૫૨

૧૨૧ કામદાર વાડીલાલ રતીલાલ (સાબરમતી) ૨૫૨

૧૨૨ કુમારી ચંપાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર ૨૮૦

૧૨૩ કુમારી ઉષાબેન જયંતીલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૪ કુમારી ચંદ્રાબેન જયંતીલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૫ કુમારી જયશ્રી રમણલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૬ શાહ કાન્નાભાઈ અંબાલાલ ૩૫૧

૧૨૭ બરડીયા ચાંદમલજી જવાહીરલાલજી ૨૫૧

૧૨૮ શ્રી વીજયદાન સુરેશ્વરજી જ્ઞાનમંદીર પૌષધશાળા ૩૫૧

૧૨૯ શેઠ પાનાચંદ ઝવેરચંદ સારંગપુર ઉપાશ્રય ટ્રસ્ટ
હ વકીલ બાબુભાઈ હીંમતલાલ ૩૫૧

૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરસોતમદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન શ્વે સ્થા (ગુજરાતી) સંઘ ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
૨ ડો મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડો રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે
હા મારફતીયા ચકુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરસોતમદાસના સ્મરણાર્થે
હા ઘેલાભાઇ તથા આત્મારામભાઇ ૨૫૧
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
૭ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઇ ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સંઘ
હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઇ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧
૨ પાર્વતીબેન હે જેસીંગભાઈ ઇશ્વરલાલભાઇ ૨૫૧

કરજણ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ મીયાગામ કરજણ ૨૫૧

કઠોર

૧ સ્થા જૈન સંઘ જેસીંગભાઇ પોચાલાલ તરફથી
(માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)
હા ઠાકોરભાઇ રાયચંદ ૨૫૧

કન્નાસગઢ

૧ શ્રી શ્વે સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ દેવચંદ અમુલખભાઇ ૨૫૧

કલ્યાણ

૧ સંઘવી ઠાકરશીભાઇ સંઘજીના સ્મરણાર્થે
હા શાહ હીંમતલાલ હરખચંદ ૨૫૧

૬ અ સૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહેાતલાલજી નાહરનાં
ધર્મપત્ની હા. શેઠ રણજીતલાલજી મેાતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧
૪ શેઠ છગનલાલજી બાગ્રેચા ૨૫૧
૫ શેઠ મગનલાલજી બાગ્રેચા ૨૫૧
૬ સ્વ શેઠ કાળુલાલજી લેાઢાના સ્મરણાર્થે
હા. શેઠ દેાલતસિંહજી લેાઢા ૨૫૧
૭ સ્વ શેઠ પ્રતાપમલજી સાંખલાના સ્મરણાર્થે
હા. પ્રાણુલાલ હીરાલાલ સાંખલા ૨૫૧
૮ શેઠ ભીમરાજજી થાવરચંદજી બાફણા ૨૫૧
૯ શ્રીયુત સાહેબલાલજી મહેતા ૨૫૧
૧૦ શેઠ પન્નાલાલજી ગણેશલાલજી હીંગડ ૨૫૧
૧૧ શેઠ દીપચંદજી પન્નાલાલજી લેાઢા ૨૫૧
૧૨ શેઠ કસ્તુરચંદજી નાગમલજી ૨૫૧
૧૩ શ્રી યુ એલ કેાઠારી ૩૦૧
૧૪ બાબુ પરશુરામ છગનલાલજી શેઠ ૨૫૦
૧૫ શેઠ કનૈયાલાલ કાગલાલજી જૈન ૨૫૧
૧૬ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સંઘ આમડ ૩૫૧

ઉપલેટા

૧ શેઠ જેઠાલાલ ગેારધનદાસ ૨૫૧
૨ સ્વ બેન સંતેાકબેન કચરા હા. ચેાતમચંદભાઈ, છેાટાલાલભાઇ
તથા અમૃતલાલભાઇ વાલજી (કલ્યાણવાળા) ૨૫૧
૩ શેઠ ખુશાલચંદ કાનજીભાઈ હા. પ્રતાપભાઈ ૨૫૧
૪ દેાશી વીઠ્ઠલજી હરખચંદ ૨૫૧
૫ સંઘાણી મુળશંકર હરજીવનભાઇના સ્મરણાર્થે હા. તેમના પુત્રેા
જયંતીલાલ તથા રમણીકલાલ ૨૫૧

ઉમરગાવ રેાડ

૧ શાહ મેાહનલાલ પેાપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

એડન કેમ્પ

૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા. રાયચંદભાઇ, પેાપટલાલભાઈ તથા રસીકલાલભાઈ ૨૫૧

ખંભાત

૧ શેઠ માણેકલાલ ભગવાનદાસ ૨૫૧
૨ શેઠ ત્રીભોવનદાસ મગળદાસ ૨૫૧
૩ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ ૨૫૧
૪ શાહ ચકુલાલ હરીલાલ ૨૫૧
૫ શાહ સાકળચંદ મોહનલાલ ૨૫૧
૬ શાહ શંકરાભાઇ દેવચંદ ૨૫૧
૭ શાહ સુખલાલ દોલતચંદ ૨૫૧
૮ ગાધી બાપુલાલ મોહનલાલ ૨૫૧
૯ મેન લલિતા માણેકલાલ ૨૫૧

ભાંધીધામ

૧ શાહ મોરારજી નાગજી એન્ડ કંપની ૨૫૧

ગુદાલા

૧ શાહ માલશી ઘેલાભાઈ ૨૫૧

ગુલાબપુરા

૧ શ્રી સ્થા જૈન વર્ધમાન સંઘ
હ માગીલાલજી ઉકારમલજી ધનોપવાળા ૨૫૧
૨ શ્રી ઓસવાલ પચાયત હ ગુલાબચંદજી ચોરડીયા ૨૫૧

ગોંડલ

૧ સ્વ ભાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસના ધર્મપતિ કમલબાઇ
તરફથી હા માણેકચંદભાઈ તથા કપુરચંદભાઈ ૨૫૧
૨ પીપળીયા લીલાધર દામોદર તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
લીલાવતી આકરચંદ ડોઠારીના બીજા વર્ષીતપની ખુશાલીમા ૩૦૧
૩ કામદાર જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા
હરીલાલ જુઠાલાલ કામદાર ૩૦૧
૪ સ્વ ડોઠારી કૃપાશંકર માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની પ્રભાકુવરબેન ૨૫૧
૫ ડોઠારી ગુલાબચંદ રાયચંદ રંગુનવાળા ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુંદણી–(આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧
૨ પટેલ ખીમજી, જેઠાભાઈ વાઘાણી (તેમના સ્વ સુપુત્ર રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

કોમ્પાલા

૧ સ્વ શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ ખોકરાવાળાના સ્મરણાર્થે
હ તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ, શેઠ ૨૫૧
૨, શ્રીમતી હીરાબેન, રતીલાલ નાનચંદ શેઠ ખોકરાવાળા ૨૫૧

કુશળગઢ

૧ શેઠ ચંપાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

કોલ્હાપુર

૧ વકીલ મણીલાલ બેગારભાઈ
હા હરીલાલભાઈ ૨૫૧

ખારાઘોડા

૧ સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા
સ્વ અ. સૌ બેન જમકુબાઈ તથા લીલાબાઈના
સ્મરણાર્થે હા નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૨ સ્વ શેઠ ઓધડલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હા ભાઈચંદ ઓધડભાઈ ૨૫૧

ખીચન

૧ શેઠ કીસનલાલ પૃથ્વીરાજ માલુ ૩૫૨

ખુરદારોડ

૧ શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી બેડવાળા ૩૦૦
૨ શેઠ નરસિંહદાસ શાંતિલાલજી ખોરલાવાળા
(મુનિશ્રી ચારિત્રવિજયજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

જામખંભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારણજી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા મહેતા રણછોડદાસ પરમાણંદ	૨૫૧
૩ સંઘવી પ્રાણલાલ લવજીભાઇ	૨૫૧

જામનગર

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી	૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ	૨૫૧
૩ ડો સાહેબ પી પી શેઠ	૨૫૦
૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧

જુનાગઢ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઇ હા હરીલાલભાઇ (હાટીના માળીયાવાળા)	૨૫૧

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ ખાવનજી જેઠાભાઇ	૨૫૧
૬ શેઠ વ્રજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

જેતપુર

૧ કોઠારી ડાલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨ સૌ જૈન સુરજકુવર વેણીલાલ કોઠારી	૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા નરભેરામભાઇ (જસાપુરવાળા)	૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ	૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ	૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની જણકબેન તરફથી હા શાંતિલાલભાઈ ગોડલવાળા	૨૫૧

૬ જસાણી રૂગનાથભાઈ નાનજી હા નીલાચુલભાઇ ૨૫૧
૭ માસ્તર હકમીચ૬ દીપચ૬ શેઠ ૨૫૧

ગોદીયા

૧ સ્થા જૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચ૬ છોટાલાલ (શેઠ પોપટલાલભાઈ તરફથી) ૨૫૦

ગોધરા

૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ છગનલાલ ૩૦૧
૨ સ્વ પ્રેમચ૬ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા શાહ ચુનીલાલ પ્રેમચ૬ ૩૦૧

ઘટકણ

૧ શાહ ચદુલાલ કેશવલાલ ૨૫૧

ઘોડવડ (થાણા)

૧ મહેતા ગુલાબચ૬ ગભીરમલજી ૩૦૦

ઘોડનદી

૧ શેઠ ચદ્રભાણ શોભાચ૬ ગાદીયા ૨૫૧

ચુડા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા રતીલાલ મગનલાલ ગાધી ૨૫૧

ચોટીલા

૧ શાહ વનેચ૬ જેઠાલાલ શ્રી સ્થા જૈન સઘને ભેટ ૩૦૧

ચારભુજારોડ

૧ શેઠ માગીલાલજી હીરાચ૬જી બાબેલ ૩૦૧

જમશેદપુર

૧ દોશી ઝવેરચ૬ વલમજી ૨૫૧

જલેસર (બાલાસોર)

૧ સઘવી નાનચ૬ પોપટભાઇ થાનગઢવાળા ૨૫૧

જયપુર

૧ શ્રીમાન શેઠ શીરેમલજી નવલખાના ધર્મપત્ની બ સૌ પ્રેમલતાદેવી ૨૫૧

જસવતગઢ

શ્રીમાન સુન્દરલાલજી નેમીચ૬તલેસર ૨૫૧

જામખંભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારણજી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા મહેતા રણછોડદાસ પરમાણંદ	૨૫૧
૩ સંઘવી પ્રાણલાલ લવજીભાઇ	૨૫૧

જામનગર

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી	૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ	૨૫૧
૩ ડો સાહેબ પી પી શેઠ	૨૫૦
૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧

જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઇ હા હરીલાલભાઇ (હાટીના માળીયાવાળા)	૨૫૧

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા મહેતા પોપટલાલ ભાવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ ભાવનજી જેઠાભાઇ	૨૫૧
૬ શેઠ વ્રજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

જેતપુર

૧ કોઠારી ડોલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨ અ સૌ બેન સુરજકુવર વેણીલાલ કોઠારી	૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા નરભેરામભાઇ (જસાપુરવાળા)	૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ	૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ	૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની જબકબેન તરફથી હા શાંતિલાલભાઈ ગોંડલવાળા	૨૫૧

નેમ્પુર

૧ શેઠ નવરતમલજી ધનવતસિંહજી	૨૫૦
૨ શેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપમલજી સામસુખા	૨૫૧
૩ શેઠ પુખરાજજી પદમારાજજી ભડારી	૨૫૧
૪ શેઠ વસ્તીમલજી આનદમલજી સામસુખા	૨૫૧

નોરાવરનગર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ ચંપકલાલ ધનજીભાઇ	૨૫૧

ઝરીયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ કનૈયાલાલ બી મોદી	૨૫૧

ડોંડાયચા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	૨૫૦

ઢસા

૧ ઢસાગામ સ્થા જૈન સંઘ હા એક સદ્‌ગૃહસ્થ તરફથી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા બગડિયા નરસિંગદાસ જેઠાલાલ (ઢસા જકશન)	૨૫૧

તાસગાંવ

૧ સ્વ ચુનીલાલજી કુગડના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની ઢોકુબાઈ તરફથી હા શેઠ રામચદજી	૩૫૧

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઇ કરશનજી	૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઇ પાશવીરભાઈ હા સુખલાલભાઇ	૨૫૧
૪ હસામેન અરવીંદ હા ભાઇ રવીચદ માણેકચદ	૩૫૧

દહાણુરોડ

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓધડ અધાર (કરાચીવાળા)	૨૫૧

દાહોદ

૧ શેઠ માણેકલાલભાઇ બેગારજી	૨૫૧

દીલ્હી

૧ લાલાજી પૂર્ણચદજી જૈન (સેન્દ્રલ બેકવાળા)	૩૫૧

૨ શ્રીયુત કીશનચદજી મહેતાણચદજી ચોરડીયા
-હા શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીયુત મહેતાણચદ જૈન ૨૫૧
૩ અ સૌ સજ્જનબેન ઈદરમલજી પારેખ ૨૫૧
૪ લાલાજી મીઠનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૫ લાલાજી ગુલશનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
૬ બેન વિજયાકુમારી જૈન ઠે મહેતાણચદ જૈન
(વયોવૃદ્ધ સરલ સ્વભાવી કુલમતીજી મહાસતીજીની પ્રેરણાથી) ૨૫૧
૭ શ્રીમાન લાલાજી રતનચદજી જૈન ઠે આઇ સી હોઝીયરી ૨૫૧
૮ સ્વ શ્રી લાલાશ્રીચદજી ડુગરીયાના સ્મરણાર્થે રાજસ્થાન ન્યાયાધિકારી
હુકમચદજી જૈનના સુપુત્ર જીતેન્દ્રકુમાર વકીલના સુપુત્ર અનિલકુમાર
તરફથી ભેટ હા વિનયકુમારી ૩૫૧
૯ સ્વ લાલાજી ચપાલાલજી ગોરડીયાના સ્મરણાર્થે લાભચદજી
તથા હીરાલાલજી તરફથી હા શાતદેવી ૩૫૧
૧૦ એક સદ્‌ગૃહસ્થ તરફથી હા મહેતાણચદજી જૈન ૩૦૧
૧૧ એક સ્વધર્મી બધુ તરફથી હા વિજયાકુમારીજૈન ૩૦૧
૧૨ બાબુ નિરજનસિહજી જૈન ૨૫૧

ધ્રાફા

૧ શેઠ મણીલાલ જેચદભાઈ ૨૫૧

ધાર

૧ શેઠ સાગરમલજી પનાલાલજી ૨૫૧

ધ્રાગધ્રા

૧ ભાવદીક્ષિત અ સૌ રૂપાળીબેન હિમતલાલ સ ઘવીની તપશ્ચર્યાર્થે
સ ઘવી ચીમનલાલ પુરશોતમદાસ સ ઘવી તરફથી ૩૦૫
૨ સ ઘવી નરસિહદાસ વખતચદ ૩૦૧
૩ શ્રી સ્થા જૈન મોટા સ ઘ હા મગળજી જીવરાજ ૨૫૧
૪ ઠક્કર નારણદાસ હરગોવિંદદાસ ૨૫૧
૫ કોઠારી કપુરચદ મગળજી ૨૫૧

ધોરાજી

૧ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ ૩૫૧
૨ અ સૌ બચીબેન બાબુભાઇ ૨૫૧

૭ ધી નવસૌરાષ્ટ્ર ઓઈલ મીલ પ્રા લીમીટેડ ૨૫૧
૪ સ્વ રાયચદ પાનાચદના સ્મરણાર્થે હા ચીમનલાલ રાયચદ શાહ ૩૦૧
૫ ગાધી પોપટલાલ જેચદભાઈ ૨૫૦
૬ દેસાઈ છગનલાલ ડાહ્યાભાઇ લાઠવાળાનાં ધર્મપત્ની દિવાળીબેન તરફથી હા કુમારી હસુમતી ૨૫૧
૭ એક સદ્ગૃહસ્થ હા મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ ૨૫૧
૮ શેઠ દલપતરામ વસનજી મહેતા ૨૫૧
૯ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાન કચરાભાઇના તથા ચિ હસાના સ્મરણાર્થે હા પટેલ દલીચદ ભગવાનજી ૩૦૧
૧૦ મહેતા હેમચદ કાળીદાસ જામખભાળીયાવાળા ૨૫૧

ધ ધુકા

૧ શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઇ ૨૫૧
૨ સ્વ ગુલાબચદભાઇના સ્મરણાર્થે હા વોરા પોપટલાલ નાનચદ ૨૫૧
૩ શ્રી ચત્રભુજ વાધજીભાઈ વસાણી ૨૫૧

ધુલીયા

૧ શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હા શેઠ કનૈયાલાલ છાજેડ ૨૫૧

નડીયાદ

૧ શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઇ ૨૫૧

નારાયણ ગામ

૧ શેઠ મોતીલાલજી હીરાચદજી ચોરડીયા ઓરીવાળા ૨૫૧

નદુરબાર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સ ઘ હા શેઠ પ્રેમચદ ભગવાનલાલ ૨૫૧

નાગોર

૧ શ્રીપાલભાઇ એન્ડ કુ સાગરમલજી લુકડ ડેરવાળા તરફથી ૨૫૧

નાગપુર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સ ઘ ૨૫૧

પાલનપુર

૧ લોકાગચ્છ સ્થા જૈન પુસ્તકાલય હા કેશવલાલ જી શાહ ૨૫૧

પાણસણા

૧ સ્થા જૈન સ ઘ હા શાહ છોટાલાલ પુજાભાઇ ૨૫૧

પાલેજ

૧ સ્વ મનસુખલાલ મોહનલાલ સ ઘવીના સ્મરણાર્થે
હા ભાઇ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

પાંતીજ

૧ સ્થા જૈન સ ઘ હા શ્રીયુત અ બાલાલ મહાસુખરામ ૨૫૦

પૂના

૧ શેઠ ઉત્તમચ દજી કેવળચ દજી ધોકા ૨૫૧

ફાલના

૧ મહેતા પુખરાજજી હસ્તીમલજી સાદડીવાલા ૪૦૧
૨ મહેતા કુ દનમલજી અમરચ દજી સાદડીવાલા ૨૫૧

બગસરા

૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવજી રાયડીવાળા
હા માનસ ધ પ્રેમચ દ શાહ ૨૫૧
૨ સ્વ માતુશ્રી જબકુબાઇના સ્મરણાર્થે
હા દેસાઈ વૃજલાલ કાળીદાસ ૨૫૧

બરવાળા–ઘેલાશા

૧ સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની સુરજબેન મોરારજી ૨૫૧

બદનાવર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સ ઘ હા. મિશ્રીલાલ જૈન વકીલ ૨૫૧

બાલોતરા

૧ શાહ જેઠમલજી હસ્તીમલજી ભગવાનદાસજી ભણુસારી ૨૫૧

બીદડા

૧ શાહ કાનજી શામજીભાઇ ૨૫૧

બીકાનેર

૧ શેઠ લેરૂદાનજી શેઠીયા ૨૫૪

બેરાળ

૧ શેઠ ગાગજી કેશવજી (જ્ઞાનભંડાર માટે) ૨૫૧

બેલારી

૧ શ્રી રથા જૈન સંઘ હ શેઠ હસ્તીમલજી રાંકા ૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો રથા જૈન સંઘ હ મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

બેગલોર

૧ શેઠ કીશનલાલજી કુલચંદજી સાહેબ ૨૫૧
૨ બંજમેરા છોટાલાલ માનસિંગ ૩૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની છગલબેન ૨૫૧

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચન્દ્ર નરસિંહદાસ સાણંદવાળા ૨૫૧
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

ભાણવડ

૧ શેઠ જેચંદભાઇ માણેકચંદભાઈ ૩૫૨
૨ સંઘવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧
૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧
૪ શેઠ રામજી જીણાંભાઇ ૨૫૧
૫ શેઠ પદમશી ભીમજી ફોફરીયા ૨૫૧
૬ ફોફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ સૌ શાતાબેન વસનજી ૨૫૧
૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભગવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના
ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર (શુ

ભાવનગર

૧ સ્વ કુવરજી ભાવાભાઇના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચંદ કુવરજી ૩૦૧

ભાદરણ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા પટેલ ધુલાભાઇ ઝવેરભાઇ ૨૫૧

ભીલવાડા

૧ શ્રી શાંતિ જૈન પુસ્તકાલય હા ચાંદમલજી માનમલજી સંઘવી ૨૫૧
૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રીલાલજી ૩૦૧

ભીમ

૧ ચંપકલાલજી જૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ છોગામલજી માગીલાલજી ૨૫૧

ભુમાવળ

૧ શેઠ રાજમલજી નંદલાલજી ચેરીટેબલટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોજગ

૧ જ્ઞાન મંદિરના સેક્રેટરી શાહ કુવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચંદજી મહેતા ૨૫૧
૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચંદ ૨૫૧
૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચંદ ૨૫૧
૪ મહેતા બાપાલાલ ભાઈચંદ ૨૫૧

મનફરા

૧ સ્થા છકોડી સ્થા જૈન સંઘ ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચંદજી જશવંતગઢવાળા
હા પૂનમચંદજી શેરમલજી બોલ્યા ૨૫૧

માનકુવા

૧ સ્વ મહેતા કુવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની
કુવરબાઇ હરખચંદ (માનકુવા સ્થા જૈન સંઘ માટે) ૨૫૧

બીકાનેર

૧ શેઠ બેરૂદાનજી શેઠીયા ૨૫૪

બેરાળ

૧ શેઠ ગાગજી કેશવજી (જ્ઞાનભંડાર માટે) ૨૫૧

બેલારી

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ શેઠ હુજારીમલજી હસ્તીમલજી રાકા ૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો સ્થા જૈન સંઘ હ મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

બેગલોર

૧ શેઠ કીશનલાલજી કુલચંદજી સાહેબ ૨૫૧
૨ અજમેરા છોટાલાલ માનસિંગ ૨૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની છબલબેન ૨૫૧

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચન્દ્ર નરસિંહદાસ સાણંદવાળા ૨૫૧
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

ભાણવડ

૧ શેઠ જેચંદભાઇ માણેકચંદભાઈ ૨૫૨
૨ સંઘવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧
૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧
૪ શેઠ રામજી જીર્ણાભાઇ ૨૫૧
૫ શેઠ પદમશી ભીમજી ફોફરીયા ૨૫૧
૬ ફોફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ સૌ શાતાબેન વસનજી ૨૫૧
૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભગવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના
ધર્મપત્ની ત્રિવાળીબેન લીલાધર (ગુંદાવાળા)

ભાવનગર

૧ સ્વ કુવરજી આવાભાઇના સ્મરણાર્થે હા શાહ લલુરચ૬ કુવરજી ૩૦૧

ભાદરણ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા પટેલ ધુલાભાઇ ઝવેરભાઇ ૨૫૧

ભીલવાડા

૧ શ્રી શાતિ જૈન પુસ્તકાલય હા ચાદમલજી માનમલજી સઘવી ૨૫૧
૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રીલાલજી ૩૦૧

ભીમ

૧ ચપકલાલજી જૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ દોગામલજી માગીલાલજી ૨૫૧

ભુસાવળ

૧ શેઠ રાજમલજી નદલાલજી ચેરીટેબલટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોજા

૧ જ્ઞાન મદિરના સેક્રેટરી શાહ કુવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચદજી મહેતા ૨૫૧
૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચદ ૨૫૧
૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચદ ૨૫૧
૪ મહેતા બાપાલાલ ભાઈચદ ૨૫૧

મનફરા

૧ સ્થા છકોડી સ્વા જૈન સઘ ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચદજી જશવતગઢવાળા
હા પૂનમચદજી શેરમલજી બોલ્યા ૨૫૧

માનકુવા

૧ સ્વ મહેતા કુવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની
કુવરબાઇ હરખચદ (માનકુવા સ્થા. જૈન સઘ માટે) ૨૫૧

માંડવી

૧ શ્રી સ્થા છકોટી જૈન સઘ હા મફેતા ચુનીલાલ વેલજી ૨૭૭

માડવા

૧ શ્રી માડવા સ્થા જૈનન સઘ
હ અ સૌ કચનગૌરી રતીલાલ ગોસલીયા (ગઢડાવાળા) ૨૫૧

માલેગાંવ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ ફતેલાલ માલુ જૈન ૨૫૧

માગરોલ

૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ નાનજી ૨૫૦
૨ દોશી ગીરધરલાલ જેઠાલાલ ૨૫૦

મુબઈ તથા પરાઓ

૧ શાહ શ્રી પિતાશ્રી ફુદનમલજી મોતીલાલજી મુથાના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ મોતીલાલજી જુહારમલજી (અહમદનગરવાળા) ૨૫૧
૨ વર્ધમાન સ્થા જૈન સઘ હ કામદાર રૂપચદ શીવલાલ (અધેરી) ૨૫૧
૩ અ સૌ કમળાબેન કામદાર હ કામદાર રૂપચદ શીવલાલ (અધેરી) ૨૫૧
૪ સ્વ માતુશ્રી કડવીબાઇના સ્મરણાર્થે હ તેમના પૌત્ર
હકમીચદ તારાચદ દોશી (અધેરી) ૨૫૧
૫ શાહ હરજીવન કેશવજી ૨૫૧
૬ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ સૌ કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧
૭ સઘવી હિંમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૮ વોરા પાનાચદ સઘજીના સ્મરણાર્થે
હ ત્રબકલાલ પાનાચદ એન્ડ બ્રધર્સ ૨૫૧
૯ શાહ રામજી કરશનજી થાનગઢવાળા ૨૫૧
૧૦ સ્વ જટાશકર દેવજીભાઇ દોશીના સ્મરણાર્થે
હ રણછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશકર દોશી ૩૦૧
૧૧ ચેલાણી વલભજી નરભેરામ હ નરસીંહદાસ વલભજી ૨૫૧
૧૨ કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧
૧૩ ત્રીભોવનદાસ માનસિંગભાઈ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે
હ શાહ હરખચદ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૧૪ ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડિયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧

૧૫ સ્વ પિતાશ્રી શામળજી કલ્યાણજી ગોડલવાળાના સ્મરણાર્થે હા વૃજલાલ શામળજી બાવીસી		૩૦૧
૧૬ શાહ રવિચંદ સુખલાલભાઇ (દાદર)		૩૫૧
૧૭ સ્વ આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ આશારામ વતી જશવંતલાલ શાંતિલાલ		૨૫૧
૧૮ ગાંધી કાંતીલાલ માણેકચંદ		૨૫૧
૧૯ શાહ રવજીભાઇ તથા ભાઈલાલભાઈની કુા (કાંદીવલી)		૨૫૧
૨૦ અ સૌ લાધુબેન હા રવજીભાઇ શામજી		૨૫૧
૨૧ સ્વ માતુશ્રી માણેકબાઇના સ્મરણાર્થે હા શેઠ વલભદાસ નાનજી		૩૦૧
૨૨ એક સદ્‌ગૃહસ્થ હા શેઠ સુંદરલાલ માણેકલાલ		૨૫૧
૨૩ શેઠ ખુશાલભાઇ બેગારભાઈ		૨૫૦
૨૪ શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા		૨૫૧
૨૫ સ્વ માતુશ્રી ગોમતીબાઇના સ્મરણાર્થે હા શાહ ચોપટલાલ પાનાચંદ		૨૫૧
૨૬ કોટેચા જયંતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચંદ જુનાગઢવાળા		૨૫૧
૨૭ ચોરા ઠાકરશી જસરાજ		૨૫૧
૨૮ કોઠારી સુખલાલજી પુનમચંદજી	(ખારેડ)	૨૫૧
૨૯ અ સૌ બેન કુંદનગૌરી મનહરલાલ સંઘવી	,,	૨૫૧
૩૦ કોઠારી રમણીકલાલ કસ્તુરચંદભાઈ		૨૫૧
૩૧ દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા દલીચંદ અમૃતલાલ દેસાઈ		૨૫૧
૩૨ સ્વ ત્રીભોવનદાસ વ્રજપાળ વીછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે હા હરગોવિંદદાસ ત્રીભોવનદાસ અજમેરા		૨૫૧
૩૩ તેજાણી કુબેરદાસ પાનાચંદ		૨૫૧
૩૪ શેઠ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાવેડીયા (સાદડીવાલા)		
૩૫ શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ બાલાતવાળા હા ભાઇ જેઠાલાલ નેમચંદ		૨૫૧
૩૬ શાહ કોરશીભાઇ હીરજીભાઈ		૩૦૧
૩૭ દડિયા અમૃતલાલ મોતીચંદ	(ઘાટકોપર)	૨૫૧
૩૮ દોશી ચત્રભુજ સુંદરજી	,,	૪૦૧
૩૯ દોશી જુગલકિશોર ચત્રભુજ	,,	૪૦૧

૪૦ દોશી પ્રવિણચંદ્ર ચત્રભુજ (ઘાટકોપર) ૩૮૧
૪૧ શેઠ મનુભાઈ માણેકચંદ હા ઝાટકીયા નરશેરામ મોર રજી ,, ૨૫૧
૪૨ શાહ કાંતીલાલ મગનલાલ ,, ૨૫૧
૪૩ શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ ઘાટકોપર ૨૫૧
૪૪ શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઇ ૨૫૧
૪૫ શાહ શીવજી માણેકભાઇ ૨૫૧
૪૬ મેસર્સ સવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કું હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ ૨૫૧
૪૭ શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી (વેરાવળવાળા) ૨૫૧
૪૮ મહેતા રતીલાલ ભાઇચંદ ૨૫૧
૪૯ શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા ૨૫૧
૫૦ બેન્ક ઓફ કેશરભાઇ ચકુલાલ જેસીંગભાઈ શાહ ૨૫૧
૫૧ પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ માયલાવાળાના ધર્મપત્ની અ સૌ
ચંચળબાઇના સ્મરણાર્થે હા સારાભાઇ ચીમનલાલ ૨૫૧
૫૨ ધી ભરીના મોડર્ન હાઈસ્કુલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા શાહ મણીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧
૫૩ મહેતા મોટર સ્ટોર્સ હા અનોપચંદ ડી મહેતા ૨૫૧
૫૪ શેઠ રસીકલાલ પ્રભાવકર મોરબીવાળા તરફથી તેમના
માતુશ્રી મણીબેનના સ્મરણાર્થે ૩૦૧
૫૫ શ્રીયુત જસવંતલાલ ચુનીલાલ વોરા ૨૫૦
૫૬ શાહ કુવરજી હંસરાજ ૨૫૧
૫૭ દડીયા જેસીંગલાલ ત્રીકમજી ૨૫૧
૫૮ મોદી અમૈચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા ડોસાભાલ અમૈચંદ ૨૫૧
૫૯ શાહ જેઠાલાલ ડામરશી ધ્રાગધ્રાવાળા હા શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ ૨૫૦
૬૦ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જસાણીના સ્મરણાર્થે
હા લક્ષ્મીચંદભાઇ તથા કેશવલાલભાઈ ૩૫૧
૬૧ સ્વ પિતાશ્રી શાહ અંબાલાલ પુરુષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે
હા શાહ બાપાલાલ અંબાલાલ ૨૫૧
૬૨ સ્વ કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની ઝવેરબેન
ભગનભાલ વતી જયંતીલાલ કસ્તુરચંદ ભરકરીયા (ચુડાવાળા) ૨૫૧
૬૩ શેઠ ડુંગરશી હંસરાજ વીસરીયા ૨૫૧
૬૪ શાહ રતનશી મેણુશીની કુ ૨૫૧
૬૫ શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા ૨૫૧
૬૬ શાહ ચકુલાલ કેશવલાલ ૨૫૧

૬૭ સ્વ પિતાશ્રી વીરચંદ જેસીંગ, શેઠ નગતરવાળાના સ્મરણાર્થે
હા કેશવલાલ વીરચંદ ૨૫૧
૬૮ ચકુલાલ કાનજી મહેતા ૨૫૧
૬૯ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સંઘ
હા કેશરીમલજી અનોપચંદજી ગુગલીયા (મલાડ) ૨૫૧
૭૦ સ્વ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા શાહ કાનજી પતુભાઈ ,, ૨૫૧
૭૧ અ સૌ પનબાઈ હા શેઠ પદમશી નરસિંહભાઇ ,, ૨૫૧
૭૨ સ્વ નાગશીભાઇ જેપાલના સ્મરણાર્થે રામજી નાગડા ,, ૩૦૧
૭૩ સ્વ ગોડા વણારશી ત્રીભોવનદાસ મરસેંડીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા જગજીવન વણારશી ગોડા ,, ૨૫૧
૭૪ સ્વ કાનજી મુળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીબાઇના
૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા જયંતિલાલ કાનજી ,, ૨૫૧
૭૫ શાહ પ્રેમજી માલશી ગંગર ,, ૨૫૧
૭૬ શાહ વેલશી જેસીંગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપત્ની
સ્વ નાનબાઇના સ્મરણાર્થે ,, ૩૦૧
૭૭ સ્વ પિતાશ્રી રાયશી વેલશીના સ્મરણાર્થે
હા શાહ દામજી રાયશીભાઇ ,, ૩૦૧
૭૮ શાહ વરજીવનભાઇ શીવજીભાઇ ,, ૨૫૧
૭૯ શાહ ખીમજી મુળજી પુંજ ,, ૨૫૧
૮૦ અ સૌ સમતાબેન શાંતિલાલ હ શાંતિલાલ ઉજમશી શાહ ૨૫૧
૮૧ સ્વ કેશવલાલ વછરાજ ડોઢારીના સ્મરણાર્થે સુરજબેન તરફથી
હા તનસુખલાલભાઇ ,, ૨૫૧
૮૨ સ્વ પિતાશ્રી હંસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે
હા દેવશી હંસરાજ કચ્છ બીદડાવાળા ,, ૨૫૧
૮૩ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજી (બોરીવલી) ૨૫૨
૮૪ શેઠ ત્રંબકલાલ કસ્તુરચંદ લીમડી અજરામર સ્વામિ ડારને ભેટ (ભાદુગા) ૨૫૧
૮૫ અ સૌ બેન રજનગૌરી ઠે શાહ ચકુલાલ લક્ષ્મીચંદ ,, ૨૫૧
૮૬ શાહ નટવરલાલ દીપચંદ તરફથી તેમના ધર્મપત્ની
અ સૌ સુશીલાબેનના વર્ષીતપની ખુશાલીમા ,, ૨૫૧
૮૭ દોશી ભીખાલાલ વૃજલાલ પાળીયાદવાળા ,, ૨૫૧
૮૮ શાહ ગોપાળજી માનસંગ ,, ૨૫૧

૮૯ દોશી મુલચદ માણેકચદ — માટુંગા ૨૫૦
૯૦ શેઠ ચપકલાલ ચુનીલાલ દાદભાષાળા — ,, ૨૫૧
૯૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સ ધ
હ શાહ રવિચદ સુખલાલ — (દાદર) ૨૫૧
૯૨ શાતીલાલ ડુગરશી અદાણી — ,, ૨૫૧
૯૩ શાહ કરશન લધુભાઇ — ,, ૨૫૧
૯૪ ફ્રીસનલાલ સી મહેતા — (શીવ) ૨૫૧
૯૫ માતુશ્રી જીવીબાઇના સ્મરણાર્થે
હ. શામજી શીવજી કચ્છ ગુદાળાવાળા — (ગોરેગાવ) ૨૫૧
૯૬ સ્વ શાહ રાયશી કચરાભાઇના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
નેણબાઇની વતી હ જેઠાલાલ રાયશી — મુંબઇ ૨૫૧
૯૭ સુશીલાબેન શકરાભાઈ ઠે નવીનચદ્ર વસ તલાલ શાહ — (વીલેપાર્લે) ૨૫૧
૯૮ બેન ચદનબેન અમૃતલાલ વારિયા — ૨૫૧
૯૯ સ્વ કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે
હ સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા) — ૩૦૧
૧૦૦ શાહ ત્રીભોવન ગોપાળજી તથા અ સૌ બેન કસુંબા
ત્રીભોવન (થાનગઢવાળા) — (શીવ) ૨૫૧
૧૦૧ અ સૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની) — (દાદર) ૨૫૧
૧૦૨ ભાવસાર દીનુભાઇ ભોગીલાલ — ,, ૨૫૧

મુળી

૧ શેઠ ઉજમશી વીરપાળ હ શેઠ કેશવલાલ ઉજમશી — ૩૦૧

મોરબી

૧ દોશી માણેકચંદ ચુંદરજી — ૩૫૧

મોમ્બાસા

૧ શ્રીયુત નાથાલાલ કી મહેતા — ૨૫૧
૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ — ૨૫૦

મહેસાણા

૧ શાહ પદમશી સૂરચદના સ્મરણાર્થે હ શીવલાલ પદમશી — ૨૫૧

યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સુરજમલજી–બે કર્સ ૨૫૦

રતલામ

૧ અનેક ભક્તજનો તરફથી હ શ્રીમાન કેશરીમલજી ઽક
(શ્રી કેવળચદ મુનિશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

રાણપુર

૧ શ્રીમતી માતુશ્રી સમરતબાઇના સ્મરણાર્થે
હ. ડો નરોત્તમદાસ ચુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧
૨ સ્વ પિતાશ્રી લહેરાભાઇ ખીમજીના સ્મરણાર્થે
હ શેઠ કાળીદાસ લહેરાભાઇ વસાણી ૩૦૧

રાણાવાસ

૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચદજી હા બાબુ રીખબચદજી ૩૦૧

રાયચુર

૧ સ્વ માતુશ્રી મોઘીબાઈના સ્મરણાથે
હ શાહ શીવલાલ ગુલાબચદ વઢવાણવાળા ૨૫૧
૨ કાળુરામજી ચાદમલજી સચેતી ૨૫૧

રાજકોટ

૧ વાડીલાલ ડાઈગ એન્ડ પ્રિન્ટીગ વર્કસ ૪૦૦
૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચદ ચીત્તલીયા ૨૫૧
૩ શેઠ મનુભાઈ મુળચદ (એન્જીનીયર સાહેબ) ૨૫૧
૪ શેઠ શાતિલાલ પ્રેમચદ તેમના ધર્મપત્નીના વર્ષીતપ–પ્રસગે ૨૫૧
૫ શેઠ પ્રભુરામ વીઠ્ઠલજી ૨૫૧
૬ બેન સર્યુબાળા નૌતમલાલ જસાણી (વર્ષીતપની ખુશાલી) ૨૫૧
૭ મોદી સૌભાગ્યચદ મોતીચદ ૨૫૧
૮ બદાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
સમરતબેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે ૨૫૧
૯ દોશી મોતીચદ ધારશીભાઇ ૨૫૧

૧૦ કામદાર ચકુલાલ જીવરાજ (ભાગભાવાળા) ૨૫૦
૧૧ કેમાણી ઘેલાભાઈ સવચંદ ૨૫૧
૧૨ કંકતરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૧
૧૩ સ્વ મહેતા દેવચંદ પુરૂષોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની
હેમકુવરબાઇ તરફથી હ જયતીલાલ દેવચંદ મહેતા ૨૫૧
૧૪ પારેખ શીવલાલ ગુલાબાઈ મોમ્બાસાવાળા હ અ સૌ કચનબેન ૨૫૨

૨૫૨

૧ પૂજ્ય વાલજીભાઈ ન્યાલચંદભાઇ ૨૫૧

રામપુરા

૧ શેઠ તેજમલજી મનોહરલાલજી બેકર ૩૫૧

રાવટી

૧ શેઠ મીયાચંદજી જુહારમલજી કટારિયા ૩૫૧

લખતર

૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ ૨૫૧
૨ ભાવસાર હરજીવનદાસના સ્મરણાર્થે
હ ત્રીભોવનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે
હ ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧
૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧
૫ શાહ જાદવજી ઓધડભાઇના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ જાદવજી ૨૫૧
૬ દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
સમરતબેન તરફથી હ જયતીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

લાલપુર

૧ નેમચંદ સવજી મોદ્દી હ ભાઇ મગનલાલ ૨૫૧
૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ તથા જેસીંગભાઈ ૨૫૧

લાકડીયા

૧ શ્રી લાકડીયા સ્થા જૈન સંઘ હ શાહ રતનસી કરમણ ૨૫૧

લીંબડી (સૌરાષ્ટ્ર)

૧ શાહ ચકુભાઇ ગુલાબચંદ ૨૫૧

લીબડી (પચમહાલ)

૧ શાહ કુવરજી ગુલાબચદ	૨૫૧
૨ છાજેડ ધાસીરામ ગુલાબચદ	૨૫૧૫
૩ શેઠ વીરચદ પન્નાલાલજી કરણાવટ	૨૫૧
૪ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ શાહ શાતિલાલ ગુલાબચદ	૩૫૧

લોનાવાલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મુલચદજી મુથા	૨૫૧

લુધીયાના

૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર જૈન દીલ્હીવાળા	૨૫૧

વઢવાણ શહેર

૧ શેઠ દીલીપકુમાર સવાઇલાલ ઠે શાહ સવાઈલાલ ત્રભકલાલ	૨૫૧
૨ કામદાર મગનલાલ ગોકલદાસ હ રતીલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩ સઘવી મુળચદ ભેચરભાઇ હ જીવણલાલ ગફૂલદાસ	૨૫૧
૪ શેઠ કાતિલાલ નાગરદાસ	૨૫૧
૫ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ	૨૫૧
૬ સઘવી શીવલાલ હીમજીભાઇ	૨૫૧
૭ શાહ દેવશીભાઇ દેવકરણ	૨૫૧
૮ વોરા ડોસાભાઈ લાલચદ સ્થા જૈન સઘ	૨૫૧
હ વોરા નાનચદ શીવલાલ	૨૫૧
૯ વોરા ધનજીભાઇ લાલચદ સ્થા જૈન સઘ	
હા વોરા પાનાચદ ગોબરદાસ	૨૫૧
૧૦ દોશી વીરચદ સુરચદ હા દોશી નાનચદ ઉજમશી	૨૫૧
૧૧ સ્વ વોરા મણીલાલ મગનલાલ હ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ	૨૫૧
૧૨ શાહ વાડીલાલ દેવજીભાઇ	૨૫૧
૧૩ કામદાર ગોધનદાસ મગનલાલના ધર્મપત્ની	
અ સૌ કમળાબેન રગુનવાલા	૨૫૧
૧૪ શ્રી વૃજલાલ સુખલાલ	૨૫૧

વડોદરા

૧ કામદાર કેશવલાલ હિમતરામ પ્રોફેસર	૨૫૧

૨ વકીલ મણીલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
૩ સ્વ પિતાશ્રી ફકીરચદ પુજાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા શાહ રમણલાલ ફકીરચદ ૨૫૧

વડિયા

૧ શેઠ ભવાનભાઇ કાળાભાઇ પચમીયા ૨૫૧

વલસાડ

૧ શાહ ખીમચદ મુલજીભાઇ ૨૫૧

વાણી

૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની સ્વ ચચળબેન
તથા પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા ૨૫૧

વટામણ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા પટેલ ડાહ્યાભાઈ હલુભાઇ ૨૫૧

વડગાવ

૧ શેઠ માણેકચદજી રાજમલજી બાફણા ૨૫૧

વાકાનેર

૧ ખ ઢેરીયા કાતીલાલ નથકલાલ ૨૫૧
૨ દફતરી ચુનીલાલ પોપટલાલ મોરબીવાળા
હા આણલાલ ચુનીલાલ દફતરી ૨૫૧

વીછીયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા અજમેરા રાયચદ વજપાળ ૨૫૧

વીરમગામ

૧ માસ્તર વીઠલભાઇ મોદી ૨૫૧
૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચદ ૨૫૧
૩ શાહ મણીલાલ જીવણલાલ શાહપુરવાળા ૨૫૧
૪ શાહ અમુલખ નાગરદાસના ધર્મપત્ની અ સૌ જૈન લીલાવતીના
વર્ષિતપ નિમિત્તે હા શાહ કાતિલાલ નાગરદાસ ૩૦૦
૫ સ્વ શેઠ ઉજમશી નાનચદના સ્મરણાર્થે
,, હા ચુનીલાલ નાનચદ

૬ સ્વ શેઠ મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ આગઘોડાવાળાના સ્મરણાર્થે
તેમના પુત્રો તરફથી હ ખીમચંદભાઇ ૨૫૧
૭ સ્વ શેઠ હરિલાલ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે હા અનુભાઈ ૨૫૧
૮ સઘવી જેચંદભાઇ નારણદાસ ૨૫૧
૯ સ્વ શાહ વેલશીભાઇ માકરચંદ કત્રાસગઢવાળાના સ્મરણાર્થે
હ ચીમનલાલભાઈ ૨૫૧
૧૦ પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાતીવાળા (મોડીબેનના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
૧૧ શાહ નારણદાસ નાનજીભાઈના પુત્ર વાડીલાલભાઈના ધર્મપત્ની
અ સૌ નારંગીબેનના વર્ષિતપ નિમિત્તે હ શાતિલાલ નારણદાસ ૨૫૧
૧૨ સ્વ છબીલદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
કમળાબેન તરફથી હ મન્નુલાકુમારી ૨૫૧
૧૩ શ્રી સ્થા જૈન શ્રાવિકા સઘ હ રબાબેન વાડીલાલ ૨૫૧
હ ડો હિમતલાલ સુખલાલ ૨૫૧
૧૫ શાહ મુળચંદ કાનજીભાઈ હ શાહ નાગરદાસ ઓધડભાઇ ૨૫૧
૧૬ શેઠ મોહનલાલ પિતાબરદાસ હ ભાઈ કેશવલાલ તથા મનસુખલાલ ૨૫૧
૧૭ શ્રીમતી હીરાબેન નથુભાઇના વર્ષિતપ નિમિત્તે
હ નથુભાઇ નાનચંદ શાહ ૩૦૧
૧૮ શેઠ મણીલાલ શીવલાલ ૨૫૧
૧૯ સ્વ મણીયાર પરસોતમદાસ સુંદરજીના સ્મરણાર્થે
હ સાકરચંદ પરસોતમદાસ શાહ ૨૫૧
૨૦ સ્વ મોહનદાસ ધુલાભાઇના સ્મરણાર્થે હ તેમના ધર્મપત્ની
નાથીબાઈ તરફથી હ શકરલાલ તથા શાતિલાલ ૨૫૧

વિજયનગર

૧ શ્રી વર્ધમાન શ્વે સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ
હ છોટુમલ અજીતસિંહ ૨૫૧

વેરાવળ

૧ શાહ કેશવલાલ જેચંદભાઈ ૨૫૧
૨ શાહ ખીમચંદ સૌભાગ્યચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ શેઠ મદનજી જેચંદભાઇના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
લાડકુવરબાઈ તરફથી હ ધીરજલાલ મદનજી ૨૫૧

૪ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ' શાહ શોભેચંદ કરશંનજી ૨૫૧
૫ શાહ હરકિશનદાસ કુલચંદ કાનપુરવાળા ૨૫૧

સરા

૧ શ્રી સરા સ્થા જૈન સંઘ હ દોશી પાનાચંદ સોમચંદ ૨૫૧

સાણંદ

૧ શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હ શાહ ચીમનલાલ હીરાચંદ ૩૦૧
૨ અ સૌ. ચંપાબેન હ૰ દોશી જીવરાજ લાલચંદ ૨૫૧
૩ પટેલ મહાસુખલાલ ડાસાભાઇ ૨૫૧
૪ શાહ સાકરચંદ કાનજીભાઇ ૨૫૧
૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી સંઘવી લીંબડીવાળાના સ્મરણાર્થે
" હ૰ વાડીલાલ મોહનલાલ ઠોહારી ૨૫૧
૬ પારેખ નેમચંદ મોતીચંદ મુળીવાળાના સ્મરણાર્થે
" હ૰ પારેખ ભીખાલાલ નેમચંદ ૨૫૧
૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણાર્થે હ૰ જયંતીલાલ નારણદાસ ૨૫૧
૮ શાહ કસ્તુરચંદ હ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૯ શેઠ મોહનલાલ માણેકચંદ ગાંધી ચુડાવાળા તરફથી
તેમના ધર્મપત્ની મ૰છાબેન લલ્લુભાઇના સ્મરણાર્થે ૩૦૧
૧૦ સંઘવી કાન્તીલાલ હરખચંદ ૩૦૧
૧૧ શાહ ભીખાલાલ નાગરદાસ ૨૫૧

સાલમની

૧ દોશી ચુનીલાલ કુલચંદ ૨૫૦

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનમીયા ૨૫૧

સાસવડ

૧ ચંદનમલજી મુથાના ધર્મપત્ની અ૰ સૌ૰ રંગુબાઇ મુથા તરફથી
હ૰ અમરચંદજી મુથા ૨૫૧

સિંગાપુર

૧ હોશી વનેચંદ વછરાજ ૨૫૧

સુરત

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ રતિલાલ લલ્લુભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી કલ્યાણચંદ ગાણેકચંદ હેડાલાવાળા ૨૫૧
૩ શ્રી હરીપુરા છકોટી સ્થા જૈન સંઘ હા ખાણુલાલ છોટાલાલ ૨૫૧

સુરેન્દ્રનગર

૧ શેઠ ચાપશીભાઇ સુખલાલ ૨૫૧
૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ કેશવલાલ મુળજીભાઇના ધર્મપત્ની અમરતબાઇના સ્મરણાર્થે
હા ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ ૨૫૧
૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ ૨૫૧
૬ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ ૩૦૧

સુવઈ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદ્ગત દી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી
મહારાજના ઉપદેશથી સુવઈ સ્થા જૈન સંઘ જ્ઞાન ભંડારને ભેટ ૨૫૧

સેવાલીયા

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ
હા એન્જીનીયર સાહેબ અમૃતલાલ જેઠાલાલ ૨૫૧

સંજેલી

૧ શાહ લુણાજી ગુલાબચંદભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ ૨૫૧

સોજત

૧ અ. સૌ. ધીસાબેન લાલચંદ મહેતા (ફતેહનગર સંઘને ભેટ) ૩૫૧

હાંગીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઇ હા પ્રકાશચંદ્ર અમુલખભાઇ ૩૦૧
૨ સ્વ જૈન ચંદ્રકાંતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ ૩૦૧

૪ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હ' શાહ શોભેચંદ કરશનજી ૨૫૧
૫' શાહ હરકિશનદાસ કુલચંદ કોનપુરવાળા ૨૫૧

સરા

૧ શ્રી સરા સ્થા જૈન સંઘ હ. દોશી પાનાચંદ સોભચંદ ૨૫૧

સાણંદ

૧ શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હ શાહ ચીમનલાલ હીરાચંદ ૩૦૧
૨' એ સી. ચંપએન હ૦ દોશી જીવરાજ લાલચંદ ૨૫૧
૩ પટેલ મહાસુખલાલ' રોસાભાઇ ૨૫૧'
૪' શાહ સાકરચંદ કાનજીભાઇ ૨૫૧
૫' પુરીબેન ચીમનલાલ' કલ્યાણજી સંઘવી લીંબડીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા વાડીલાલ મોહનલાલ ઠોકારી' ૨૫૧
૬' પારેખ નેમચંદ' મોતીચંદ' મુળીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા' પારેખ ભીખાલાલ નેમચંદ ૨૫૧
૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણાર્થે હા જયંતીલાલ નારણદાસ ૨૫૧
૮' શાહ કસ્તુરચંદ હ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૯' શેઠ મોહનલાલ માણેકચંદ ગાંધી ચુડાવાળા તરફથી'
તેમના ધર્મપત્ની' મછાબેન' લલ્લુભાઇના' સ્મરણાર્થે ૩૦૧
૧૦ સંઘવી કાન્તીલાલ હરખચંદ ૩૦૧
૧૧ શાહ ભીખાલાલ નાગરદાસ ૨૫૧

સાલભની

૧ દોશી ચુનીલાલ કુલચંદ ૨૫૦

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનમીયા ૨૫૧

સાસવડ

૧ ચંદનમલજી મુથાના ધર્મપત્ની અ સૌ ૨ શુભાઇ મુથાં તરફથી
હા અમરચંદજી મુથા ૨૫૧

સિંગાપુર

૧ દોશી વનેચંદ વછરાજ ૨૫૧

સુરત

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ રતિલાલ લલ્લુભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી કલ્યાણચંદ આણંદજી હડાલાવાળા ૨૫૧
૩ શ્રી હરીપુરા છકોટી સ્થા જૈન સંઘ હા ભાણુલાલ છોટાલાલ ૨૫૧

સુરેન્દ્રનગર

૧ શેઠ ચાપશીભાઇ સુખલાલ ૨૫૧
૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ કેશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપત્ની અમરતબાઇના સ્મરણાર્થે
હા ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ ૨૫૧
૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ ૨૫૧
૬ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ ૩૦૧

સુવઈ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદ્ગત દી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી
મહારાજના ઉપદેશથી સુવઈ સ્થા જૈન સંઘ જ્ઞાન ભંડારને ભેટ ૨૫૧

સેવાલીયા

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ
હા એન્જીનીયર સાહેબ અમૃતલાલ જેઠાલાલ ૨૫૧

સંજેલી

૧ શાહ લુણાજી ગુલાબચંદભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ ૨૫૧

સોજત

૧ અ. સૌ. ધીરાબેન લાલચંદ મહેતા (કૃતેહનગર-સંઘને ભેટ) ૪૫૧

હારીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઇ હા પ્રકાશચંદ્ર અમુલખભાઇ ૩૦૧
૨ સ્વ જૈન ચંદ્રકાંતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ ૩૦૧

હાટીના માળીવા

૧	શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઇ	૨૫૦
૨	શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે હા તેમના નાનાણેન અ સૌ મંજુલાણેન ભગવાનદાસ	૨૫૧

*

'તા ૧-૧-૬૨ થી તા૰ ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં નવા મેમ્બરો

આદ્ય મુરબ્બીશ્રી

રૂા ૫૦૦૧	શેઠ મહેતાબચંદ જૈન	દિલ્હી

મુરબ્બીશ્રી

રૂા ૧૦૦૧	શેઠ ત્રીભોવનદાસ જગજીવનદાસ	મુંબઈ
,, ૧૦૦૧	શેઠ મહેતાબચંદ ચોરડીયા તથા વિજયાકુમારી બહેન	દિલ્હી

તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીના મેમ્બરોની સંખ્યા

૨૪	આદ્ય મુરબ્બીશ્રી
૩૦	મુરબ્બીશ્રી
૧૩૨	સહાયક મેમ્બરો
૫૮૪	લાઇફ મેમ્બરો
૫૧	બીજા ક્લાસના જુના મેમ્બરો
૮૨૧	

સમિતી વતી સૌ દાતાઓનો આભાર માનું છું

રાજકોટ તા ૧૫-૩-૬૩

લી સેવક,
સોકશેચંદ ભાઈચંદ શેઠ
મંત્રી

શ્રી અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતી

રાજકોટ

શાસ્ત્રોની ટૂંકી માહિતી.

ગયા સત્તરમા વાર્ષિક રિપોર્ટમા બતાવેલ ૨૧ શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થયા પછી નીચે મુજબ વધુ કામકાજ થયેલ છે

૧ હાલમા ભગવતી ભાગ બીજો, સમવાયાંગ સૂત્ર તથા પ્રશ્ન વ્યાકરણ એમ ત્રણ સૂત્રો પ્રસિદ્ધ થયા છે

૨ ભગવતી ભાગ ૩ જો બહાર પડવાની તૈયારીમા છે

૩ ભગવતી ભાગ ૪ થો તથા ૫ મો હાલમા છપાય છે

૪ જ્ઞાતા સૂત્ર ભાગ ૧ લો, ૨ જો તથા ૩ જો છપાય છે

૫ કુલ્લે લગભગ ૩૦ સૂત્રો પૂજ્ય ગુરુદેવે લખીને પૂરા કરેલા છે તેમાના છપાયા વગરના જે સૂત્રો બાકી છે તેનું અનુવાદનુ તેમજ સંશોધનનુ કેટલુક કામ ચાલુ છે અને કેટલુક બાકી છે

૬ નિશીય સૂત્ર, સૂર્ય પન્નતી તથા ચંદ્ર પન્નતી સૂત્ર એ બાકી રહેલા ત્રણ સૂત્રો લખવાનુ કામ અત્યારે ચાલે છે

આવા આગમ શાસ્ત્રોના મહત્ત્વ કાર્યમા જ્ઞાનદાનના શોખીનો, દાનવીરો બનતી મદદ મોકલાવે તેમ વિનતિ કરવામા આવે છે

હાટીના માળીવા

૧	શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઇ	૨૫૦
૧	શ્રીમતી આનદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે હા તેમના નાનાબેન અ સૌ મજુલાબેન ભગવાનદાસ	૨૫૧

*

તા. ૧-૧-૬૨ થી તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં નવા મેમ્બરો

આદ્ય મુરબ્બીશ્રી

૧	૫૦૦૧ શેઠ મહેતાબચદ જૈન	દિલ્હી

મુરબ્બીશ્રી

૧	૧૦૦૧	શેઠ ત્રીભોવનદાસ જગજીવનદાસ	મુંબઇ
,,	૧૦૦૧	શેઠ મહેતાબચદ ચોરડીયા તથા વિજયાકુમારી બહેન	દિલ્હી

તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીના મેમ્બરોની સખ્યા

૨૪	આદ્ય મુરબ્બીશ્રી
૩૦	મુરબ્બીશ્રી
૧૩૨	સહાયક મેમ્બરો
૫૮૪	લાઇફ મેમ્બરો
૫૧	બીજા કલાસના જુના મેમ્બરો
૮૨૧	

સમિતી વતી સૌ દાતાઓનો આભાર માનુ છું

લી સેવક,
સોકરચદ લાઇચદ શેઠ
મત્રી

રાજકોટ તા. ૧૫-૩-૬૩

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

श्रीवीतरागाय नमः

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल-व्रति-विरचितया

अनगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृत

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

(द्वितीयो भाग.)

॥ अथ शैलकाख्य पञ्चमाध्ययनम् ॥

अभिहित कूर्मकाख्य चतुर्थमध्ययन तत्राऽगुप्तेन्द्रियस्य नरकादिप्राप्ति गुप्तेन्द्रियस्य तु निर्वाणादि प्राप्तिर्भवतीत्युक्तम् । इह पञ्चमाध्ययने तु-पूर्वमप्रतिसली नेन्द्रियोऽपि यः पश्चात् सलीनेन्द्रियो भवति स आराधको भवतीत्युच्यते, इत्येव पूर्वेण सहास्य सम्बन्धः । जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिन पृच्छति-'जइ णं भंते !' इ०

पाँचवाँ अध्ययन प्रारम्भ ।

कूर्मक (कच्छप) नामका चतुर्थ अध्ययन कह दिया गया है । उस में अगुप्तेन्द्रियवाले साधु साध्वी आदि के नरकादि की प्राप्ति तथा गुप्तेन्द्रियवाले साधु साध्वी आदि के लिये निर्वाण आदि की प्राप्ति होती है यह कहा गया है । अब इस पंचम अध्ययन में यह कहा जायगा की जो पहिले अप्रतिसलीन इन्द्रियवाला (अगुप्तइन्द्रिय) होता है और बाद में फिर नही सलीनइन्द्रियवाला (गुप्तइन्द्रियवाला) बन जाता है तो वह आराधक होता है इस तरह पूर्व अध्ययन के साथ इसका सबन्ध है । जम्बू स्वामी सुधर्मा स्वामी से पूछते है कि—

—પાચમુ અધ્યયન—પ્રારભ.—

કૂર્મક (કાચબો) નામે ચોથુ અધ્યયન પુરુ થઈ ગયુ છે, તે અધ્યયનમા અગુપ્તેન્દ્રિયવાળા સાધુ સાધ્વી વગેરે ને નરક વગેરેની પ્રાપ્તિ તેમજ ગુપ્તેન્દ્રિય વાળા સાધુ સાધ્વીઓને નિર્વાણ વગેરેની પ્રાપ્તિ થાય છે આ વાત કહેવામા આવી છે પાચમા અધ્યયન મા એ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવશે કે જે પહેલા અપ્રતિ સલીન ઈન્દ્રિયવાળો (અગુપ્તેન્દ્રિય) હોય છે, અને ત્યારબાદ તે સલીન ઇન્દ્રિય વાળો (ગુપ્તેન્દ્રિયવાળો) થઈ જાય છે ત્યારે તે આરાધક હોય છે આ રીતે ચોથા અધ્યયનનો સબધ છે જબૂ સ્વામી, સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે-' जयाण भते ! ઇત્યાદિ ॥

સમિતિને મદદ કરવા તથા મેમ્બર થવાના

નિયમો

૧ રૂા ૫૦૦૧) પાચ હજાર એક ભરનાર સદ્‌ગૃહસ્થ આધસુરબ્બીશ્રી તરીકે દાખલ થઈ શકે છે તેમના નામથી એક સૂત્ર પ્રસિદ્ધ કરવામા આવે છે તેમ જ તેઓશ્રીનુ જીવનચરિત્ર અને ફોટો શાસ્ત્રમા છપાય છે તેમને બબે કોપી દરેક શાસ્ત્રની મળે છે

૨ રૂા ૧૦૦૧) એક હજાર એક ભરનાર વ્યક્તિ મુરબ્બી તરીકે ગણાય છે અત્યારે ફક્ત ૮૦ આવા મેમ્બરો દાખલ કરવાનો ગઈ કમીટીએ ઠરાવ કરેલ છે, પાછળથી મેમ્બરો દાખલ કરી શકાય તેમ નથી રૂા ૧૦૦૧) ભરનારને રૂા ૧૨૦૦) ની કિમત ઉપરના શાસ્ત્રો ભેટ મળે છે માટે જેમને દાખલ થવુ હોય તેમણે ઢીલ ન કરવી

૩ ૨૫૧) વાળા તથા ૫૦૧) વાળા મેમ્બરો હવે લેવાનું બધ છે

૪ દાખલ થયેલા મેમ્બરોની ફીમાથી, શાસ્ત્રો ભેટ આપતા સમિતિને જે નુકશાની વેઠવી પડે છે તે બધ પૂરી કરવા માટે મેમ્બરો પાસેથી તેમજ અન્ય વ્યક્તિ તરફથી પાચ વર્ષ સુધી ભેટની રકમ મેળવવામા આવે છે જે રકમ ઓછામા ઓછી રૂા ૨૫) ની હોવી જોઈએ, અને તે રકમ પાચ વર્ષ સુધી દર વર્ષે હપ્તાથી મોકલી શકાય છે

રાજકોટ તા ૧૫-૩-૬૩
મગળવાર

સાકરચદ ભાયચદ શેઠ
મત્રી

समये 'बारवई' द्वारावतीनाम द्वारकाऽपरनाम्नी नगर्यासीत्, सा कीदृशी इत्याह-'पाईणपडीणायया' प्राची प्रतीच्यायता प्राचीतः प्रतीच्यामायता पूर्वस्या दिशः समारभ्य पश्चिमाया दिशि दीर्घेत्यर्थः। 'उदीणदाहिणवित्थिन्ना' उदग् दक्षिणविस्तीर्णा उत्तरस्या दिशः समारभ्य दक्षिणस्यां दिशि विस्तीर्णा, 'नवजोयणवित्थिन्ना' नवयोजनविस्तीर्णा, 'दुवालसजोयणायामा' द्वादशयोजनायामा=द्वादशयोजनदीर्घा, 'धणवइमइनिम्मिया' धनपतिमतिनिर्मिता धनपतिः=कुवेरस्तस्य मत्या=बुद्धया निर्मिता, 'चामीयर-पवर-पागार-णाणामणि-पचवन्न-कवि-सीसग-सोहिया' चामीकरप्रवरप्राकारनानामणिपञ्चवर्णकपिशीर्षक शोभिता,चामीकरस्य प्रवर' प्राकारस्तस्य यानि नानामणिपञ्चवर्णकपिशीर्षकानि तैः शोभिता, सुवर्णमयप्रकृष्टप्राकारस्य यानि चन्द्रकान्तादिविविधमणिमयानि पञ्चवर्णानि कपिशीर्षकाणि 'कगुरा' इति भाषाप्रसिद्धानि, तैः शोभिता 'अलयापुरि-

है-(तेण कालेण तेण समएण बारवईनाम नयरी होत्था) उस समय और उस काल में द्वारावती नामकी नगरी थी (पाईण परीणायया) यह नगरी पूर्व दिशासे पश्चिम दिशा तक लंबी थी और (उदीणदाहिण वित्थिन्ना) उत्तरदिशा से लेकर दक्षिण दिशा तक विस्तर्ण थी। (नवजोयणवित्थिन्ना) नौ योजन का इसका विस्तार था (दुवालसजोयणायामा) १२ बारह योजन की यह लंबी थी। (धणवइमइ निम्मिया) धनपति— कुबेर ने इसे अपनी बुद्धि से बनाया था (चामीयर पवर पागारणाणामणि पचवन्न कविसीसग सोहिया) इसका जो प्राकार (दिवार) था वह सुवर्ण से निर्मित हुआ था। तथा इसके जो कगूरे थे वे पचवर्णवाले नाना मणियो से बनाये गये थे। अत. प्राकार और उसके कगूरों से यह नगरी बड़ी सुहावनी लगती थी। (अलयापुरी सकासा)

છે, (तेण कालेण तेण समएण बारवइ नाम नयरी होत्था) તે કાળે અને તે સમયે દ્વારાવતી નામે નગરી હતી (पाईण परीणायया) આ નગરી પૂર્વથી માંડીને પશ્ચિમ દિશા સુધી લાંબી અને (उदीण दाहिण वित्थिन्ना) ઉત્તર દિશાથી માંડીને દક્ષિણ દિશા સુધી પહોળી હતી (नव जोयणवित्थिन्ना) નવ યોજન સુધી તે નગરીનો વિસ્તાર હતો (दुवालसजोयणायामा) બાર યોજન લાંબી તે લાંબી હતી (धणवइमइनिम्मिया) ધનપતિ-કુબેરે આ નગરી ને પોતાની બુદ્ધિથી બનાવી હતી (चामीयरपवरपागार - णाणामणि - पचवन्नकविसीसगसोहिया) તે શહેરનો કોટ (પાકાર) સોનાથી બનાવવામાં આવેલો હતો તેના કાંગરાઓ પાંચ રંગના અનેક મણિઓ વડે બનાવવામાં આવ્યા હતા કોટ અને કાંગરાઓથી તે નગરી શોભતી હતી (अलयापुरीसकासा) અલકાપુરી (કુબેરનગરી)

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं च-उत्थस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ सू० १ ॥

टीका—' जइ ण ' इत्यादि । यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण चतुर्थस्य ज्ञाता ययनस्य अयम्=उक्तरूप, अर्थ प्रज्ञप्त, पञ्चमस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थ प्रज्ञप्तः इति । सर्वं सुगमम् ॥ १ ॥

श्री सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामिनमाह—

मूलम् एव खलु जबू ! तेणं कालेणं तेण समयेणं बारवई नाम नयरी होत्था, पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविस्थिन्ना नवजोयणविस्थिन्ना दुवालसजोयणायामा धणवइमइनिम्मिया चामीयरपवरपागारणाणामणिपचवन्नकविसीसगसोहिया अलया-पुरिसकासा पमुइयपक्कीलिया पच्चक्ख देवलोयभूया ॥सू०२॥

टीका—' एव खलु ' इत्यादि । ' एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन्

' जइण भते ! ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(जइण भते !) हे भदत ! यदि (समणेण भगवया महावीरेण) श्रमण भगवान महावीर ने (चउत्थस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते) चतुर्थ ज्ञाताध्ययन का यह उक्त रूप अर्थ प्रज्ञप्त (प्ररूपित) किया है तो—(पचमस्स ण भते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते) पचम ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? " १ "

' एव खलु जबू ! ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(एव खलु जबू) हे जबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार

ટીકાર્થ–(जइण भते !) હે ભદન્ત ! જો (समणेण भगवया महावीरेण) શ્રમણભગવાન મહાવીરે (चउत्थस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते) ચોથા જ્ઞાતા-ધ્યયનનો પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે, ત્યારે (पचमस्स ण भते ! णायज्झ यणस्स के अट्ठे पण्णत्ते) પાચમા અધ્યયનનો શો અર્થ બતાવ્યો છે ? । "सू १"॥

एव खलु जबू, ? ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ–(एव खलु जबू !) હે જબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આપ્રમાણે

कीदृश इत्याह—तुङ्गः=अत्युन्नतः, 'गगणतलमणुलिहतसिहरे' गगनतलमनुलिह-च्छिखरः आकाशप्रदेशमनुस्पृशति शृङ्ग यस्येत्यर्थ 'णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लि-परिगए' नानाविधगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगत =नानाविधागुच्छादयः परिगताः= सर्वत समुद्भूता यत्र सः, गुच्छगुल्मलतावल्लीशब्दा. पूर्वं व्याख्याता, 'हसमि-गमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए' हसमृगमयूरक्रौञ्चसारस-चक्रवाकमदनसालकोकिलकुलोपपेत हसादि-कोकिलान्ताना कुलैः वृन्दैः उपपेतः =युक्तः। अत्र-मदनशालः=सारिकाविशेष, अन्ये प्रसिद्धा.। 'अणेगतडकडग-विवरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे' अनेकतटकट विवरोज्झरप्रपातप्राग्भार-शिखरप्रचुरः, अनेके तटाः कटकामेखलाश्च यत्र स तथा, विवराणि = कन्दराश्च, उज्झरकाः=निर्झराः पर्वतात् पतनशीला जलप्रवाहाश्च, प्रपाताः=तटरहितनिराधार-स्थानानि च, अथवा प्रपाताः=गर्ताश्च, प्राग्भाराः=ईषदवनताः पर्वतभागाश्च, शि-

---

पौरस्त्य दिग्विभाग में-ईशान कोण में-रैवतक नाम का एक पर्वत था (तुंगे गगणतलमणुलिहतसिहरे) यह बहुत ऊँचा था। इस की चोटी आकाश तल को छूती थी (णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगए) नाना प्रकार के गुच्छों से, गुल्मो से लताओं से और वल्लियों से यह सर्व प्रकार से युक्त था। इन गुच्छादि शब्दो का अर्थ पहिले लिखा जा चुका है। (हसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए) हंस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक सारिका—मैना और कोयल इन के समूहो से यह उपेत—युक्त था। (अणेग तडक डगविवरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे) अनेक तटों से अनेक कट-को (मेखला) से, अनेक कंदराओं से, अनेक उज्झरको से, निर्झरनों से—पर्वतों से गिरते हुए जल प्रवाहों से, अनेक प्रपातो से—तटरहित निराधारस्थानों से अथवा गर्तो से कुछ कुछ झुके हुए अनेक पर्वत

કે ઈશાન કોણમા રૈવતક નામે પર્વત હતો (तुंगे गगणतलमणुलिहतसिहरे) તે બહુજ ઉંચો હતો તેના શિખરો આકાશને સ્પર્શતા હતા (णाणाविहगुच्छ गुम्मलयावल्लिपरिगए) અનેક જાતના ગુચ્છો, ગુલ્મો, લતાઓ અને વલ્લીઓ થી તે ઢકાએલો હતો ગુચ્છ વગેરે શબ્દોના અર્થો પહેલા સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે (हसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए) હંસ, હરણા, મોર, ક્રૌંચ, સારસ, ચક્રવાક મેના અને કોયલોના સમૂહોથી તે યુક્ત હતો (अणेगतडकडगविवरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे) અનેક તટો મેખલા ઓ (કટકો) અનેક કંદરાઓ, અનેક ઉજ્ઝરકો-(ઝરણાઓ) પર્વતો ઉપરથી નીચે વહેતા પાણીના પ્રવાહો, અનેક પ્રપાતો-તટ વગરના નિરાધાર સ્થાનો

सकासा ' अलकापुरीसकाशा = कुबेरनगरीसदृशी ' पमुइयपक्कीलिया ' प्रमुदित-प्रक्रीडिता ' पमुइय ' प्रमुदिताः=प्रमोदयुक्ताः, ' पक्कीलिया ' प्रक्रीडिताः विविध क्रीडनपराः लोका यत्र सा, पच्चक्ख देवलोयभूया ' प्रत्यक्ष देवलोकभूता प्रत्यक्षी-भूतदेवलोकवत् प्रतीयमानेत्यर्थ ॥ २ ॥

मूलम्–तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था, तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगए हसमिगमयूर-कोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए अणेगतडकडग-वियरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघचारण-विज्जाहरमिहुणसविचिन्ने निच्छच्चणए दसारवरवीरतेल्लोक्कबल-वगाणं, सोमे सुभगे पियदसणे सुरूवे पासाईए ॥ सू०३॥

टीका—' तीसे ण ' इत्यादि । तस्या खलु द्वारावत्या नगर्याः बहिरुत्तर-पौरस्त्ये दिग्भागे 'रेवतगे' रैवतको नाम ' पव्वए ' पर्वतः ' होत्था ' आसीत्, स

अलकापुरी (कुबेर की नगरी जैसी सुन्दर होती है ठीक वैसी ही यह भी सुन्दर थी (पमुइयपक्कीलिया) इस में निवास करनेवाले जन सदा हर्षित रहते थे और विविध प्रकार की क्रीडाओ में तत्पर रहते थे (पच्चक्ख देवलोयभूया) इसलिये प्रत्यक्ष में यह नगरी देवलोक के समान प्रतीत होती थी । सूत्र " २ "

' तीसेण बारवईए ' इत्यादि

टीकार्थ–(तीसेण बारवईए नयरीए बहिया) उस द्वारावती नगरी के बाहिर (उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था) उत्तर

જેવી સુંદર હોય છે તેવી જ તે નગરી પણ સુંદર હતી (पमुइयपक्कीलिया) તેમા રહેનારા નાગરિકો હમેશા પ્રસન્ન રહેતા હતા, અને જાત જાતની રમતો (ક્રીડાઓ) મા વ્યસ્ત રહેતા હતા (पच्चक्ख देवलोयभूया) તેથી આ નગરી પ્રત્યક્ષ દેવલોક જેવી લાગતી હતી ॥ સૂત્ર "૨" ॥

' तीसे ण बारवईए ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तीसे ण बारवईए नयरीए बहिया) તે દ્વારવતી નગરીની બહાર (उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगनामपव्वए होत्था) ઉત્તર પૂર્વ દિશામા એવો

कीदृश इत्याह—तुङ्गः=अत्युन्नतः, ' गगणतलमणुलिहतसिहरे ' गगनतलमनुलिह-च्चिउखरः आकाशप्रदेशमनुस्पृशति शृङ्ग यस्येत्यर्थ 'णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लि-परिगए ' नानाविधगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगत =नानाविधागुच्छादयः परिगताः= सर्वत समुद्भूता यत्र सः, गुच्छगुल्मलतावल्लीशब्दा. पूर्वं व्याख्याता, ' हसमि-गमयूरकोचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए ' हसमृगमयूरक्रोञ्चसारस-चक्रवाकमदनसालकोकिलकुलोपपेत हसादि-कोकिलान्ताना कुलैः वृन्दैः उपपेतः =युक्तः । अत्र-मदनशालः=सारिकाविशेष, अन्ये प्रसिद्धाः । ' अणेगतटकडग-विवरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे ' अनेकतटकटक विवरोज्झरप्रपातप्राग्भार-शिखरप्रचुरः, अनेके तटाः कटकामेखलाश्च यत्र स तथा, विवराणि = कन्दराश्च, उज्झरकाः=निर्झराः पर्वतात् पतनशीला जलप्रवाहाश्च, प्रपाताः=तटरहितनिराधार-स्थानानि च, अथवा प्रपाताः=गर्ताश्च, प्राग्भाराः=ईषदवनताः पर्वतभागाश्च, शि-

---

पौरस्त्य दिग्विभाग में-ईशान कोण में-रैवतक नाम का एक पर्वत था (तुंगे गगणतलमणुलिहतसिहरे) यह बहुत ऊँचा था। इस की चोटी आकाश तल को छूती थी (णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगए) नाना प्रकार के गुच्छों से, गुल्मो से लताओं से और वल्लियों से यह सर्व प्रकार से युक्त था। इन गुच्छादि शब्दो का अर्थ पहिले लिखा जा चुका है। (हसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइल्ल कुलो-ववेए) हस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक सारिका—मैना और कोयल इन के समूहो से यह उपेत—युक्त था। (अणेग तडक डगविवरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे) अनेक तटों से अनेक कट-को (मेखला) से, अनेक कदराओं से, अनेक उज्झरको से, निर्झरनो से—पर्वतो से गिरते हुए जल प्रवाहों से, अनेक प्रपातो से—तटरहित निराधारस्थानो से अथवा गर्तो से कुछ कुछ झुके हुए अनेक पर्वत

કે ઈશાન કોણમા રૈવતક નામે પર્વત હતો (तुंगे गगणतलमणुलिहतसिहरे) તે બહુજ ઉચો હતો તેના શિખરો આકાશને સ્પર્શતા હતા (णाणाविहगुच्छ गुम्मलयावल्लिपरिगए) અનેક જાતના ગુચ્છો, ગુમ્બો, લતાઓ અને વલ્લીઓ થી તે ઢકાએલો હતો ગુચ્છ વગેરે શબ્દોના અર્થો પહેલા સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે (हसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइल्लकुलोववेए) હંસ, હરણા, મોર, ક્રોંચ, સારસ, ચક્રવાક મેના અને કોયલોના સમૂહોથી તે યુક્ત હતો (अणेगतडकडगविवरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे) અનેક તટો મેખલા ઓ (કટકો) અનેક કંદરાઓ, અનેક ઉજ્ઝરકો-(ઝરણાઓ) પર્વતો ઉપરથી નીચે વહેતા પાણીના પ્રવાહો, અનેક પ્રપાતો-તટ વગરના નિરાધાર સ્થાનો

वराणि=शृङ्गाणि पर्वतोपरितनप्रदेशाश्च, प्रचुराणि=अधिकानि यत्र स तथा, तत्' कर्मधारयः। ' अच्छर-गण-देव संघ-चारण-विज्जाहर मिहुण-संविचिन्ने ' अप्सरोगण-देवसघ-चारण-विद्याधरमिथुन-सविचीर्ण'-अप्सरसा गणाश्च, देवस घाश्च, चारणा' गगनगमनलब्धिमन्तो मुनिविशेषा', विद्याधराणा मिथुनानि च तैः सविचीर्णः=आसेवित , ' निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाण ' नित्य क्षणकः- दशार्हवरवीरपुरुषैस्त्रैलोक्यबलवता, दशार्हाः=समुद्रविजयादयः दश, तेषु मध्ये वरास्त एव वीरा धीरपुरुषा' ते चामी-त्रैलोक्यादपि बलवन्त , अतुलबल-नेमिनाथ युक्तत्वात् तेषा - नित्यक्षणकः=नित्योत्सवस्थानम्', तेषा सर्वे उत्सवा स्तत्र भवन्तीति भावः। दशदशार्हाणां नामानि यथा-

" समुद्दविजयो[1] अक्खोभो[2] थिमिओ[3] सागरो[4] हिमवं[5]।
अयलो[6] धरणो[7] पूरणो[8] अभिचंदो[9] वसुदेवो[10]त्ति " ॥१॥ इति ॥

भागों से तथा अनेक शिखरों से यह प्रचुर था अर्थात् ये तट, कटक आदि इस में अधिक थे। (अच्छरगणदेवसघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) अप्सराओ के गणो से, देवसघों से गगन में गमन करने की लब्धि युक्त मुनि विशेषों से, और विद्याधरों के मिथुनों से यह सदा सेवित रहता था। (निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोकबलवगाण) समुद्र विजयादिक दश दशार्हों के बीच में उत्तम धीरवीर पुरुषों का जो की अतुल बलधारी नेमिनाथ से युक्त होने के कारण तीन लोक से भी बलवान थे यह नित्योत्सव का स्थान था। उन के समस्त उत्सव यही होते रहते थे। दश दशार्हों के नाम इस प्रकार है— १, समुद्र विजय २, अक्षोभ ३, स्तिमित ४, सागर

અથવા ગર્તો, થોડા આગળના ભાગથી નમતા અનેક પવત ભાગો તેમજ ઘણા શિખરોથી તે પ્રચુરરૂપથી યુક્ત હતો એટલે કે તટ, કટક વગેરે તે પર્વતમા પુષ્કળ પ્રમાણમા હતા (अच्छरगणदेवसघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) અપ્સરાઓના ગણોથી, દેવસંઘોથી ગગન માર્ગે ગમન કરતા મુનિ વિશેષોથી, અને વિદ્યાધરોના યુગલોથી તે પર્વત સદા સેવિત રહેતો હતો (निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेल्लोकबलवगाण) સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હોમાં ઉત્તમ ધીર વીર પુરુષોનો-કે જેઓ અતુલ બળશાળી નેમિનાથથી યુકત હોવાને કારણે ત્રણે લોકથી બળવાન હતા-આ નિત્યોત્સવ માટેનુ સ્થાન હતુ તેમના બધા ઉત્સવો અહીં જ થતા હતા દશ દશાર્હોના નામો આ પ્રમાણે છે-૧ સમુદ્રવિજય, ૨ અક્ષોભ ૩ સ્તિમિત, ૪ સાગર, ૫ હિમવાન, ૬ અચલ,

पुनरसौ पर्वतः ? कीदृश ? इत्याह—' सोम्मे ' सौम्यः=मनोहरः, सुभगः=आनन्दजनकः प्रियदर्शनः=दृष्टिसुखद , सुरूपः=शोभनाकृतिकः, प्रासादीय'-अत्र-प्रासादीय इत्यनन्तर दर्शनीयः, अभिरूप', प्रतिरूप इति त्रयाणा पदानां सग्रहः प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीयः=नयनानन्दजनकत्वेन पुन पुन' प्रेक्षणीयः अभिरूपः=सुन्दराकृतिकः । यद्वा-अभि=प्रतिक्षण नव नवमिवरूप यस्य सोऽभिरूपः । प्रतिरूपः-प्रतिविशिष्टम् असाधारण रूप यस्य स प्रतिरूपः, उत्कृष्टरूपवानित्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्-तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामते एत्थ ण नदणवणे नाम उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नदणवणप्पगासे पासाईए ४, तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था दिव्वे वन्नओ ॥ सू०४ ॥

५, हिमवान ६ अचल, ७ धरण, ८ पूरण ९, अभिचद्र, १० वसुदेव ! (सोम्मे) यह पर्वत बड़ा मनोहर था (सुभगे, पियदसणे, सुरूवे, पासाईए) सुभग था—आनन्दजनक था, प्रिय दर्शन या दृष्टि को सुखप्रद था, सुरूप था- शोभन आकृति से सपन्न था, प्रासादीय था, दर्शनीय था, अभिरूप था प्रतिरूप था । दर्शकजन के मन को मोदित करनेवाला होने से प्रासादीय, नयनो को आनन्दजनक होने से दर्शनीय, सुन्दर आकृतिवाला होने से अभिरूप अथवा इसका रूप हर एक क्षण में नवीन नवीन जैसा प्रतीत होता था इसलिये अभिरूप और असाधारणरूप सपन्न होने के कारण प्रतिरूप था । सूत्र " ३- "

---

૭ ધારણ, ૮ પૂરણ, અભિચદ્ર, ૧૦ વસુદેવ, (सोम्मे) આ પર્વત અત્યત રમણીય હતો (सुभगे, पियदसणे, सुरूवे, पासाइए) સુભગ હતો, પ્રિયદર્શી હતો એટલે કે આખોને ગમે એવો હતો સુરૂપ હતો, પ્રાસાદીય હતો, દર્શનીય હતો અભિરૂપ હતો, પ્રતિરૂપ હતો જોનારાઓના મનને પ્રસન્ન કરનાર હોવાથી પ્રાસાદીય, આખોને આનન્દ આપનર હોવાથી દર્શનીય, સુદર આકારવાળો હોવાથી અભિરૂપ અથવા તો તેનુ રૂપ દરેક ક્ષણે નવુ નવુ લાગતુ હતુ તેથી તે અભિરૂપ હતો, અસાધારણ રૂપ સપન્ન હોવાને કારણે તે પ્રતિ રૂપ હતો ॥ સૂત્ર ૩ ॥

खराणि=शृङ्गाणि पर्वतोपरितनप्रदेशाश्च, प्रचुराणि=अधिकानि यत्र स तथा, तत्' कर्मधारयः। ' अच्छर-गण-देव संघ-चारण-विज्जाहर मिहुण-सविचिन्ने ' अप्सरोगण-देवसघ-चारण-विद्याधरमिथुन-सविचीर्ण'-अप्सरसा गणाश्च, देवसंघाश्च, चारणाः गगनगमनलब्धिमन्तो मुनिविशेषा', विद्याधराणा मिथुनानि च तैः सविचीर्णः=आसेवित, ' निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाण ' मित्य क्षणकः- दशार्हवरवीरपुरुषैस्त्रैलोक्यबलवता, दशार्हा.=समुद्रविजयादयः दश, तेषु मध्ये वरास्त एव वीरा धीरपुरुषाः ते चामी-त्रैलोक्यादपि बलवन्त, अतुलबलनेमिनाथ युक्तत्वात् तेषा - नित्यक्षणकः=नित्योत्सवस्थानम्', तेषा सर्वे उत्सवास्तत्र भवन्तीति भावः। दशदशार्हाणां नामानि यथा-

" समुद्दविजयो अक्खोभो थिमिओ सागरो हिमवं।
अयलो धरणो पूरणो अभिचदो वसुदेवोत्ति " ॥१॥ इति ॥

भागों से तथा अनेक शिखरों से यह प्रचुर था अर्थात् ये तट, कटक आदि इस में अधिक थे। (अच्छरगणदेवसघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) अप्सराओं के गणों से, देवसघों से गगन में गमन करने की लब्धि युक्त मुनि विशेषों से, और विद्याधरों के मिथुनों से यह सदा सेवित रहता था। (निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोकबलवगाण) समुद्र विजयादिक दश दशार्हों के बीच में उत्तम धीरवीर पुरुषों का जो की अतुल बलधारी नेमिनाथ से युक्त होने के कारण तीन लोक से भी बलवान थे यह नित्योत्सव का स्थान था। उन के समस्त उत्सव यही होते रहते थे। दश दशार्हों के नाम इस प्रकार है— १, समुद्र विजय २, अक्षोभ ३, स्तिमित ४, सागर

અથવા ગર્તો, થોડા આગળના ભાગથી નમતા અનેક પર્વત ભાગો તેમજ ઘણા શિખરોથી તે પ્રચુરરૂપથી યુક્ત હતો એટલે કે તટ, કટક વગેરે તે પર્વતમા પુષ્કળ પ્રમાણમા હતા (अच्छरगणदेवसघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) અપ્સરાઓના ગણોથી, દેવસંઘોથી ગગન માર્ગે ગમન કરતા મુનિ વિશેષોથી, અને વિદ્યાધરોના યુગલોથી તે પર્વત સદા સેવિત રહેતો હતો (निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेल्लोक्कबलवगाण) સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હોમા ઉત્તમ ધીર વીર પુરુષોનો-કે જેઓ અતુલ બળશાળી નેમિનાથથી યુકત હોવાને કારણે ત્રણે લોકથી બળવાન હતા-આ નિત્યોત્સવ માટેનુ સ્થાન હતુ તેમના બધા ઉત્સવો અહીં જ થતા હતા દશ દશાર્હોના નામો આ પ્રમાણે છે-૧ સમુદ્રવિજય, ૨ અક્ષોભ ૩ સ્તિમિત, ૪ સાગર, ૫ હિમવાન, ૬ અચલ,

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्ह दसाराण, बलदेवपामोक्खाणं पचण्ह महावीराण, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्ह रायसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धुट्ठाण कुमारकोडीण, संबपामोक्खाण सट्ठीए दुद्दतसाहस्सीण, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीण, महासेनपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीण, रुप्पिणीपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं,रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाण गणियासाहस्सीण, अन्नेसि च बहूण इसरतलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढ गिरिसागरपेरतस्स दाहिणड्ढभरहस्स य बारवईए नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू- ५॥

टीका—' तत्थ णं ' इत्यादि। तत्र तस्या खलु द्वारावत्या नगर्या ' कण्हे नाम ' कृष्णो नाम वासुदेव. राजा=त्रिखण्डाधिपति परिवसति। स खलु तत्र ' समुद्दविजयपामोक्खाण ' समुद्रविजयप्रमुखाना दशाना ' दसाराण ' दशार्हाणा बलदेवप्रमुखाना ' पचण्ह ' पञ्चाना महावीराणाम्। उग्रसेनप्रमुखाना षोडशाना

' तत्थ ण बारवईए नयरीए ' इत्यादि

टीकार्थ-(तत्थ ण बारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी मे (कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खड के अधिपति राजा रहते थे (सेण तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण) वे वहा समुद्र विजय आदि दश दशार्हों का (बलदेव पामोक्खाण

' तत्थण बारवईए नयरीए ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तत्थण बारवईए नयरीए) તે દ્વારાવતી નગરીમાં (कण्हे नाम वासुदेवे राया परिवसइ) કૃષ્ણ વાસુદેવ નામે ત્રણે ખંડના અધિપતિ રાજા રહેતા હતા (से ण तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण) ત્યા સમુદ્ર વિજય વગેરે દશાર્હોનો (बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण) બળ

टीका—' तस्स ण ' इत्यादि । तस्य खलु रैवतकस्य अदूरसामन्ते अत्र खलु नन्दनवन नामोद्यानमासीत् तत् कीदृशमित्याह-'सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे ' सर्वर्तु कपुष्पफलसमृद्धम् सर्वेषाम् ऋतूना पुष्पै. फलैश्च समृद्ध = समन्वितम् , ' रम्मे ' रम्य=रमणीय ' नदनवनमकाश' नन्दनवनतुल्यम् , मासादीयम् ४, तस्य खलूद्यानस्य ' बहुमज्झदेसभाए ' बहुमध्यदेशभागे ' सुरप्पिए नाम ' सुरप्रिय नाम, ' जक्खायययणे ' यक्षायतनम् ' होत्था ' आसीत् तत् कीदृशमित्याह—' दिव्वे ' दिव्य=रम्य, वर्णकः=वर्णनग्रन्थोऽन्यत्राभिहितः । अन्यत् सुगमम् ॥ सू० ४ ॥

मूलम्—तत्थ ण बारवईए नयरीए कण्हे नाम वासुदेवे

' तस्सण रेवयगस्स '—इत्यादि ।

टीकार्थ—(तस्स ण रेवयगस्स) उस रैवतक पर्वतके (अदूरसामते) न बहुत दूर और न पास किन्तु उचित स्थान पर (एत्थण नदणवणे नामं उज्जाणे होत्था) यहां एक नदन वन नाम का उद्यान था (सव्वो उय पुप्फफलसमिद्धे) यह समस्त ऋतुओं सबन्धी पुष्पों और फलों से समृद्ध रहता था । (रम्मे णदणवणप्पगासे) नदनवन के जैसा था । (पासाइए ४) दर्शक जन के मन को प्रमोदित करने वाला था । सुभग प्रियदर्शन आदि और भी विशेषण इसमें लगा लेना चाहिये यही बात " पासाईए " के साथ रहे हुए यह ४ पद सूचित करता है । (तस्स ण उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नाम जक्खाययणे होत्था दिव्वे वन्नओ) उस उद्यान के ठीक बीचो बीच के स्थान मे सुरप्रिय नाम का यक्षायतन था । यह दिव्य था । इसका और वर्णन दूसरी जगह किया हुआ है । सूत्र " ४ "

(तस्सण रेवयगस्स) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(तस्स ण रेवयगस्स) રૈવતક પર્વતથી (अदूर सामते) અત્યત દૂર પણ નહિ તેમજ અત્યત નજીક પણ ન કહેવાય તેમ (एत्थण नदणवणे नाम उज्जाणे होत्था) ત્યા ' નદનવન' નામે એક ઉદ્યાન હતુ, (सव्वोउय पुप्फफलसमिद्धे) તે બધી ઋતુઓના પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ (रम्मे णदण वणप्पगासे) નદનવન જેવુ હતુ (पासाइए) દર્શકોના મનને હર્ષિત કરનાર હતુ (पासाइए ४) પદની આગળ ચાર નો આકડો મૂકયો છે તે એમ સૂચવે છે કે સુભગ પ્રિયદર્શન વગેરે બીજા પણ વિશેષણો અહીં સમજવા જોઇએ (तस्स ण उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नाम जक्खाययण होत्था दिव्वे वन्नओ) તે ઉદ્યાનની બરાબર વચ્ચે સુરપ્રિય નામે યક્ષનુ આયતન હતુ તે દિવ્ય હતું તેનુ વર્ણન અન્યત્ર કરવામા આવ્યુ છે ॥ સૂ "૪" ॥

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराणं, उग्गसेण-पामोक्खाणं सोलसण्ह रायसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धुट्ठाण कुमारकोडीण, सचपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दतसा-हस्सीण, वीरसेणपामोक्खाण एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, महासेनपामोक्खाण छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीण, रुप्पिणी-पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं,रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणंगसेणापामोक्खाणं अणे-गाण गणियासाहस्सीण, अन्नेसिं च बहूण इसरतलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढ गिरिसागरपेरतस्स दाहिणड्ढभरहस्स य बारवईए नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू- ५॥

टीका—' तत्थ ण ' इत्यादि । तत्र तस्यां खलु द्वारावत्यां नगर्यां ' कण्हे नाम ' कृष्णो नाम वासुदेव. राजा=त्रिखण्डाधिपति परिवसति । स खलु तत्र ' समुद्दविजयपामोक्खाण ' समुद्रविजयप्रमुखानां दशानां ' दसाराणं ' दशार्हाणां बलदेवप्रमुखाना ' पचण्ह ' पञ्चानां महावीराणाम् । उग्रसेनप्रमुखानां षोडशाना

' तत्थ ण बारवईए नयरीए ' इत्यादि

टीकार्थ-(तत्थ ण बारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी में (कण्हे नाम वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खड के अधिपति राजा रहते थे (सेण तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराणं) वे वहा समुद्र विजय आदि दश दशार्हों का (बलदेव पामोक्खाणं

' तत्थण बारवईए नयरीए ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तत्थण बारवईए नयरीए) ते द्वारावती नगरीमां (कण्हे नाम वासुदेवे राया परिवसइ) કૃષ્ણ વાસુદેવ નામે ત્રણે ખંડના અધિપતિ રાજા રહેતા હતા (से ण तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण) त्यां समुद्र विजय वगेरे दश [illegible] (बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण) બળ

टीका—' तस्स ण ' इत्यादि । तस्य खलु रैवतकस्य अदूरसामन्ते अत्र खलु नन्दनवन नामोद्यानमासीत् तत् कीदृशमित्याह-'सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे ' सर्वर्तु कपुष्पफलसमृद्धम् सर्वेषाम् ऋतूना पुष्पैः फलैश्च समृद्ध = समन्वितम् , ' रम्मे रम्य=रमणीय ' नदनवनप्रकाश' नन्दनवनतुल्यम् , प्रासादीयम् ४, तस्य खलूद्या 'नस्य ' बहुमज्झदेसभाए ' बहुमध्यदेशभागे ' सुरप्पिए नाम ' सुरप्रिय नाम ' जक्खायतणे ' यक्षायतनम् ' होत्था ' आसीत् तत् कीदृशमित्याह—' दिव्वे दिव्य=रम्य, वर्णकः=वर्णनग्रन्थोऽन्यत्राभिहितः । अन्यत् सुगमम् ॥ सू० ४ ॥

मूलम्—तत्थ ण बारवईए नयरीए कण्हे नाम वासुदेवे

' तस्सण रेवयगस्स '—इत्यादि ।

टीकार्थ-(तस्स ण रेवयगस्स) उस रैवतक पर्वतके (अदूरसामते) : बहुत दूर और न पास किन्तु उचित स्थान पर (एत्थण नदणवणे ना उज्जाणे होत्था) यहाँ एक नदन वन नाम का उद्यान था (सव्वो उ पुप्फफलसमिद्धे) यह समस्त ऋतुओं सबन्धी पुष्पों और फलों : समृद्ध रहता था । (रम्मे णदणवणप्पगासे) नदनवन के जैसा था (पासाइए ४) दर्शक जन के मन को प्रमोदित करने वाला था । सुभ प्रियदर्शन आदि और भी विशेषण इसमें लगा लेना चाहिये यही बा " पासाईए " के साथ रहे हुए यह ४ पद सूचित करता है । (तस्स उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नाम जक्खायतणे होत्था दि वन्नओ) उस उद्यान के ठीक बीचो बीच के स्थान में सुरप्रिय नाम व यक्षायतन था । यह दिव्य था । इसका और वर्णन दूसरी जगह कि हुआ है । सूत्र " ४ "

(तस्सण रेवयगस्स) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(तस्स ण रेवयगस्स) રૈવતક પર્વથી (अदूर सामते) અત્યંત દૂર પણ નહિ તેમજ અત્યંત નજીક પણ ન કહેવાય તેમ (एत्थण नदणवणे नाम उज्जाणे होत्था) ત્યા ' નદનવન' નામે એક ઉદ્યાન હતુ, (सव्वोउय पुप्फफलसमिद्धे) તે બધી ઋતુઓના પુષ્પો અને ફૂલોથી સમૃદ્ધ (रम्मे णदणवणप्पगासे) નદનવન જેવુ હતુ (पासाइए) દર્શકોના મનને હર્ષિત કરના હતુ (पासाइए ४) પદની આગળ ચાર નો આકડો મૂક્યો છે તે એમ સૂચવે છે કે સુભગ પ્રિયદર્શન વગેરે બીજા પણ વિશેષણો અહીં સમજવા જોઇએ (तस्स ण उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नाम जक्खायतण होत्था दिव्वे वन्नओ) તે ઉદ્યાનની બરાબર વચ્ચે સુરપ્રિય નામે યક્ષનુ આયતન હતું તે દિવ્ય હતુ તેનુ વર્ણન અન્યત્ર કરવામા આવ્યુ છે ॥ સૂ. "૪" ॥

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं रायसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, महासेनपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं,रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं इसरतलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढगिरिसायरपेरंतस्स दाहिणड्ढभरहस्स य बारवईए नयरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू- ५॥

टीका—' तत्थ णं ' इत्यादि। तत्र तस्यां खलु द्वारावत्यां नगर्यां ' कण्हे नाम ' कृष्णो नाम वासुदेवः राजा=त्रिखण्डाधिपतिः परिवसति। स खलु तत्र ' समुद्दविजयपामोक्खाणं ' समुद्रविजयप्रमुखानां दशानां ' दसाराणं ' दशार्हाणां बलदेवप्रमुखानां ' पंचण्हं ' पञ्चानां महावीराणाम्। उग्रसेनप्रमुखानां षोडशानां

' तत्थ णं बारवईए नयरीए ' इत्यादि

टीकार्थ-(तत्थ णं बारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी में (कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खंड के अधिपति राजा रहते थे (सेणं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं) वे वहां समुद्र विजय आदि दश दशार्हों का (बलदेव पामोक्खाणं

' तत्थणं बारवईए नयरीए ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तत्थणं बारवईए नयरीए) તે દ્વારાવતી નગરીમાં (कण्हे नाम वासुदेवे राया परिवसइ) કૃષ્ણ વાસુદેવ નામે ત્રણે ખંડના અધિપતિ રાજા રહેતા હતા (से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं) ત્યાં સમુદ્ર વિજય વગેરે દશાર્હોનો (बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं) બળ

राजसहस्राणा=षोडशसहस्रप्रमिताना राज्ञाम्। प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अर्धचतुर्थानां कुमारकोटीना=सार्धत्रिकोटिसख्यकाना यादवकुमाराणाम् । शाम्बप्रमुखानां षष्ट्या दुर्दान्तसाहस्रीणा=षष्टिसहस्रसख्यकाना शाम्बादीना दुर्दान्तानाम्। वीर सेन प्रमुखानामेकविंशत्या वीरसाहस्रीणा=एकविंशतिसहस्रप्रमाणाना वीरसेना दीना वीराणाम्। महासेनप्रमुखाना षट्पञ्चाशतो बलवत् साहस्रीणा=षट्पञ्चा-शत् सहस्रप्रमिताना महासेनादीना बलवताम्। रुक्मिणीप्रमुखाना द्वात्रिंशतो महिलासाहस्रीणा=रुक्मिण्यादीनां द्वात्रिंशत्सहस्रप्रमितानां महिलानाम्। अनङ्गसेना प्रमुखानामनेकासां गणिकासाहस्रीणाम्=अनङ्गसेनादीनामनेकसहस्रसख्यासमितानां गणिकानाम् अन्येषां च बहूना राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठिसेनापतीनां, यावत् सार्थवाहप्रभृतीना वैताढ्यगिरिसागरपर्यन्तस्य च, दक्षिणार्धभरतस्य च, द्वारावत्याः द्वारकायाः नगर्याश्च, आधिपत्य यावत् – अत्र यावच्छब्दा

पचण्ह महावीराण) बलदेव प्रमुख पाच महावीरोका उग्रसेन प्रमुख १६ सोलह हजार राजाओं का प्रद्युम्न प्रमुख ३॥, साढे तीन करोड़ यादव कुमारों का (संब पामोक्खाण सट्ठीए दुद्दत साहस्सीणं) ६०साठ हजार दुर्दान्त शाम्ब आदिकों का (वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाहस्सीणं) २१इक्कीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरोका (महासेना पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) ५६छप्पन हजार बलिष्ठ महासेन आदिकों का (रुप्पिणीपामोक्खाण बत्तीसाए महिला साहस्सीण) ३२ बत्तीस हजार रुक्मिणी प्रमुख महिलाओं का (अणगसेणापामोक्खाण अणेगाणं गणिया साहस्सीण) अनगसेना प्रमुख अनेक हजार गणिकाओं का निवास था। (अन्नेसिंच बहूण इसर तलवर जाव सत्थवाहपभिईणवे-यड्ढगिरिसायरपेरतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स य बारवइए नयरीए

હેવ પ્રમુખ પાચ મહાવીરોનો, ઉગ્રસેન પ્રમુખ સોળ હજાર રાજાઓનો, પ્રદ્યુમ્ન પ્રમુખ સાડા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોનો (સબપામોક્ખાણ સટ્ઠીએ દુદ્દતસાહસ્સીણ) સાઈઠ હજાર દુર્દાન્તસાબ વગેરે નો (વીરસેણપામોક્ખાણ એકવીસાએ વીરસાહસ્સીણં) એકવીશ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોનો (મહાસેન પામો ક્ખાણ છપ્પન્નાએ બલવગ સાહસ્સીણ) છપ્પન હજાર બળવાન મહાસેન વગેરેનો (રુપ્પિણી પામોક્ખાણ બત્તીસાએ મહિલાસાહસ્સીણ) બત્રીસ હજાર રુકિમણી પ્રમુખ મહિલાઓનો (અણ ગસેણાપામોક્ખાણ અણેગાણ ગણિયાસહાસ્સીણ) અને અત ગસેના પ્રમુખ હજારો ગણિકાઓનો નિવાસ હતો (અન્નેસિંચ, બહૂણ ઇસર તલવર જાવ સત્થવાહપભિર્ઈણં વેયડ્ઢગિરિસાયરપેર તસ્સ ય દાહિણડ્ઢ ભરહસ્સ ય બારવઇ

दय पाठोऽनुसन्धेयः-' पोरेवच्च ' पालयन् विहरति = आस्तेस्म । पौरपत्य पुरवासिनामग्रसरत्व. ' सामित्त ' स्वामित्व, ' भत्तित्त ' भर्तृत्व, महत्तरगत्त ' महत्तरकत्व, 'आणाईसरसेणावच्च' आज्ञेश्वर सैनापत्य 'करेमाणे' कुर्वन् इति ॥५॥

मूलम्-तत्थ णं वारवईए नयरीए थावच्चा णाम गाहावइणी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया, नीसेण थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तएण सा थावच्चागाहावइणी त दारय सातिरेगअट्ठवासजायय जाणित्ता सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेइ, जाव भोगसमत्थ जाणित्ता वत्तीसाए इब्भकुलवालियाण एगदिवसेणं पाणि गेह्णावेइ वत्तीसओ दाओ जाव वत्तीसाए इब्भकुलवालियाहि सद्धिं विपुले सद्दफरिसरसरूववन्ने गधे जाव भुजमाणे विहरइ ॥ ६॥

टीका—' तत्थण इत्यादि । तत्र=तस्यां खलु द्वारावत्या नगर्यां ' थावच्चा-

---

आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ) अन्य और भी अनेक राजेश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठीसेनापतियों का यावत् सार्थवाह आदिकों का, वैताढय गिरिएव सागर पर्यन्त दक्षिणार्ध भरत का तथा द्वारका नगरी का आधिपत्य पौरपत्य, स्वमित्व, भर्तृत्व महत्तरकत्व, आज्ञेश्वर सेनापत्य करते हुए रहते थे अर्थात् द्वारका नगरीमें कृष्ण वासुदेव राज्य करते थे। सूत्र " ५ "

'तत्थ वारवईए नयरीए ' इत्यादि ।

टीका-(तत्थणं वारवईए नयरीए) उस द्वारका नगरी में (थावच्चा-

नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाण विहरइ) અને બીજા પણ ઘણા રાજેશ્વરો, તલવરો, માડલિકો, કૌટુંબિકો શ્રેષ્ઠી સેનાપતિઓ સાર્થવાહ વગેરે ઉપર વૈતાઢય ગિરિ અને સમુદ્ર સુધીના દક્ષિણ ભારતનુ, નગરીનુ આધિપત્ય પૌરપત્ય, ભર્તૃત્વ મહત્તરકત્વ આજ્ઞેશ્વર સેનાપતિત્વ કરતા રહેતા હતા એટલેકે દ્વારકા નગરીમા કૃષ્ણ વાસુદેવ રાજ્ય કરતા હતા ॥ સૂત્ર ૫ ॥

(तत्थण वारवईए नयरीए इत्यादि ।

टीकार्थ-(तत्थण वारवईए नयरीए) ते द्वारका नगरीमा (थावच्चा णाम गाहा

राजसहस्राणा=षोडशसहस्रप्रमिताना राज्ञाम्। प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अर्धचतुर्थानां कुमारकोटीना=सार्धत्रिकोटिसख्यकानां यादवकुमाराणाम् । शाम्बप्रमुखानां षष्ठ्या दुर्दान्तसाहस्रीणा=षष्टिसहस्रसख्यकाना शाम्बादीना दुर्दान्तानाम्। वीर सेन प्रमुखानामेकविंशत्या वीरसाहस्रीणा=एकविंशतिसहस्रप्रमाणाना वीरसेना दीना वीराणाम्। महासेनप्रमुखाना षट्पञ्चाशतो बलवत् साहस्रीणा=षट्पञ्चा शत् सहस्रप्रमिताना महासेनादीना बलवताम्। रुक्मिणीप्रमुखाना द्वात्रिंशतो महिलासाहस्रीणा=रुक्मिण्यादीना द्वात्रिंशत्सहस्रप्रमिताना महिलानाम्। अनङ्गसेना प्रमुखानामनेकासा गणिकासाहस्रीणाम्=अनङ्गसेनादीनामनेकसहस्रसख्यासमितानां गणिकानाम् अन्येषां च बहूना राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठिसेनापतीनां, यावत् सार्थवाहप्रभृतीना वैताढ्यगिरिसागरपर्यन्तस्य च, दक्षिणार्धभरतस्य च, द्वारावत्याः द्वारकायाः नगर्याश्च, आधिपत्य यावत् – अत्र यावच्छब्दा

पचण्ह महावीराण) बलदेव प्रमुख पाच महावीरोका उग्रसेन प्रमुख १६ सोलह हजार राजाओं का प्रद्युम्न प्रमुख ३॥, साढे तीन करोड़ यादव कुमारों का (संब पामोक्खाण सट्ठीए दुद्दत साहस्सीण) ६०साठ हजार दुर्दान्त शाम्ब आदिकों का (वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाहस्सीण) २१इक्कीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरोका (महासेना पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) ५६छप्पन हजार बलिष्ठ महासेन आदिकों का (रूप्पिणीपामोक्खाण बत्तीसाए महिला साहस्सीण) ३२ बत्तीस हजार रूक्मिणी प्रमुख महिलाओं का (अणगसेणापामोक्खाण अणेगाणं गणिया साहस्सीण) अनगसेना प्रमुख अनेक हजार गणिकाओं का निवास था। (अन्नेसिंच बहूण इसर तलवर जाव सत्थवाहपभिईणवेयड्ढगिरिसागरपेरतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स य बारवइए नयरीए

દેવ પ્રમુખ પાચ મહાવીરોનો, ઉગ્રસેન પ્રમુખ સોળ હજાર રાજાઓનો, પ્રદ્યુમ્ન પ્રમુખ સાડા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોનો (સબપામોક્ખાણ સટ્ઠીએ દુદ્દતસાહસ્સીણ) સાઈઠ હજાર દુર્દાન્તસાણ વગેરે નો (વીરસેણપામોક્ખાણ એકવીસાએ વીરસાહસ્સીણં) એકવીશ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોનો (મહાસેન પામોક્ખાણ છપ્પન્નાએ બલવગ સાહસ્સીણ) છપ્પન હજાર બળવાન મહાસેન વગેરેનો (રુપ્પિણી પામોક્ખાણ બત્તીસાએ મહિલાસાહસ્સીણ) બત્રીસ હજાર રુકિમણી પ્રમુખ મહિલાઓનો (अणगसेणापामोक्खाण अणेगाण गणियासहास्सीण) અને અનગસેના પ્રમુખ હજારો ગણિકાઓનો નિવાસ હતો (अन्नेसिंच, बहूण इसर तलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढगिरिसायरपेरतस्स य दाहिणड्ढ

जातम्, किंचिदधिकाष्टवर्षजातं ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते 'क लायरियस्स' कलाचार्यस्य समीपे उपनयति, यावत् सर्वा कलाः शिक्षयति मेघ कुमारवद् द्वासप्ततिकला अनेन शिक्षिता इत्याशय । भोगसमर्थं यौवनवयः समागमेन विषयभोगयोग्यताऽपन्नं ज्ञात्वा द्वात्रिंशता 'इब्भकुलबालियाण' इभ्यकुल बालिकानाम् महाधनाढ्यसार्थवाहाना द्वात्रिंशत्संख्यकन्यानाम् एकदिवसेन एकस्मिन्नेव दिने पाणिं ग्राहयति पाणिग्रहण कारयति । द्वात्रिंशद्धायः द्वात्रिंशद् हिरण्यकोट्यः द्वात्रिंशत् सुवर्णकोट्यः इत्यादिरूपो मेघकुमारवदायोऽवगन्तव्य । यावत् तदनन्तर स्थापत्यापुत्रः द्वात्रिंशता इभ्यकुलबालिकाभिः सार्धं विपुलान् शब्दस्पर्श रसरूपवर्णगन्धान् विषयान् यावद् भुञ्जान अनुभवन् विहरति=आस्तेस्म ॥सू०६॥

इस के उस स्थापत्य गाथा पत्नीने उस अपने पुत्र को आठवर्ष से कुछ अधिक जब जाना तब शुभ तिथि करण दिवस नक्षत्र एव मुहूर्त्त में (कलायरियस्स) कलाचार्य के पास (उवणेइ) भेजदिया (जाव भोग समत्थ जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाण एगदिवसेण पाणिं गेह्ा-वेइ) यावत् मेघकुमार की तरह उस स्थापत्य पुत्र ने ७२बहत्तर कलाओ को सीखलिया। यौवनवय के समागमन से विषय भोग की योग्यता विशिष्टइससे जानकर बाद मे उस स्थापत्यागाथापत्नीने उसका वैवाहित सस्कार एकही दिनमे ३२ महाधनाढय सार्थवाहों की कन्याओं के साथ करवादिया। (बत्तीस ओदाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरूवगधे जाव भुजमाणे विहरइ) ३२बत्तीस हिरण्य कोटि३२ बत्तीस सुवर्ण कोटि इत्यादि रूपदहेज इसे मेघकुमार की तरह मिला। इसके बाद स्थापत्य पुत्र ने ३२ उन इभ्यकुल बालिकाओ के साथ

ગાથા પત્નીએ પોતાના પુત્રને આઠવર્ષ થી થોડો મોટો થયેલો જાણીને શુભ તિથિ, કરણ, દિવસ, નક્ષત્ર અને મુહૂર્ત્તમા (कलायरियस्स) કલાચાર્યની પાસે (उवणेइ) મોકલ્યો (जाव भोगसमत्थ जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाण एगदिवसेण पाणिं गेण्हावेइ) મેઘકુમારની જેમ તે સ્થાપત્ય પુત્રે પણ બોત્તેર કલાઓ શીખી લીધી જ્યારે તે યુવાવસ્થા સંપન્ન થઈને વિષયોપ ભોગને લાયક થયો ત્યારે ગાથાપત્નીએ એકજ દિવસમા તેનુ લગ્ન બત્રીસ મહાધનાઢય સાર્થવાહોની કન્યાઓની સાથે કરાવડાવ્યુ (बत्तीस ओदाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरूवगधे जाव भुजमाणे विहरइ) બત્રીસ હિરણ્ય કોટિ, બત્રીસ સુવર્ણ કોટિ વગેરે દહેજ મેઘકુમારની જેમજ તેને પણ મળી ત્યાર પછી સ્થાપત્ય પુત્ર બત્રીસ કુલીનકુળ બાળાઓની

णाम ' स्थापत्या नाम ' गाहावइणी ' गाथापत्नी परिवसति । सा कीदृशीत्याह-आढ्या=धनधान्यादि परिपूर्णा, यावत् अपरिभूता-अन्यैः परिभवितुमशक्या, तस्याः खलु स्थापत्यायाः गाथापत्न्याः पुत्रः ' थावच्चापुत्ते णाम ' स्थापत्यापुत्रो नाम सार्थवाहदारकोऽभूत् । स कीदृश इत्याह-सुकुमारपाणिपाद' यावत् सुरूपः अत्र यावच्छब्दकरणादयपाठोऽनुसन्धेयः--' अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे, लक्खण वंजणगुणोववेए, माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगे, ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे इति एतानि पदानि प्रागेव व्याख्यातानि ततः खलु सा स्थापत्या गाथापत्नी त दारक ' सातिरेगअट्ठवासजायय ' सातिरेकाष्टवर्ष

णाम गाहावइणी परिवसइ) स्थापत्य नामकी गाथा पत्नी रहती थी । (अड्ढाजाव अपरिभूया) यह धन धान्य आदि से परिपूर्ण यावत् अपरिभूत अन्य व्यक्तियों द्वारा परीभवित अशक्य थी । (तीसेण थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चा पुत्ते णाम सत्थवाहदारए होत्था) उस स्थापत्य गाथापत्नी का पुत्र था जिस का नाम स्थापत्य पुत्र था। वह सार्थवाहदारक कहलाता था । (सुकुमालपाणिपाएजाव सुरूवे) इसके हाथपैर सुकुमार थे । यावत् यह अच्छे रूपवाले थे । यहा यावत् शब्द से " अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे, लक्खणवंजणगुणोववेए, माणुम्माणपमाण पडिपुण्णसुजायसव्वंग सुंदरंगे ससि सोमाकारे कंते, पियदंसणे " इस पाठ का सग्रह हुआ है । इनपदों का अर्थ इसिले कहा जा चुका है (तएण सा थावच्चा गाहावइणी त दारय सातिरेग अट्ठ वासजायय जाणित्ता सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि)

વઇણી પરિવસઇ) સ્થાપત્ય નામે એક ગાથાપત્ની રહેતી હતી (અઢ્ઢાજાવઅપરિભૂયા) તે ધનધાન્ય વગેરેથી પરિપૂર્ણ તેમજ બીજી કોઈ વ્યક્તિથી પરાભૂત ન થાય એવી હતી (તીસેણ थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णाम सत्थवाहदारए होत्था)

जातक, किंचिदधिकाष्टवर्षजात ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते 'क लायरियस्स' कलाचार्यस्य समीपे उपनयति, यावत् सर्वा कलाः शिक्षयति मेघ कुमारवद् द्वासप्ततिकला अनेन शिक्षिता इत्याशय । भोगसमर्थं यौवनवयः समागमेन विषयभोगयोग्यताऽपन्न ज्ञात्वा द्वात्रिंशता 'इब्भकुलबालियाण' इभ्यकुल बालिकानाम् महाधनाढ्यसार्थवाहाना द्वात्रिंशत्सख्यकन्यानाम् एकदिवसेन एकस्मिन्नेव दिने पाणिं ग्राहयति पाणिग्रहणं कारयति । द्वात्रिंशद्धायः द्वात्रिंशद् हिरण्यकोट्य द्वात्रिंशत् सुवर्णकोट्यः इत्यादिरूपो मेघकुमारवदायोऽवगन्तव्य । यावत् तदनन्तर स्थापत्यापुत्रः द्वात्रिंशता इभ्यकुलबालिकाभिः सार्धं विपुलान् शब्दस्पर्श रसरूपवर्णगन्धान् विषयान् यावद् भुञ्जान अनुभवन् विहरति=आस्तेस्म ॥सू०६॥

इस के उस स्थापत्य गाथा पत्नीने उस अपने पुत्र को आठवर्ष से कुछ अधिक जब जाना तब शुभ तिथि करण दिवस नक्षत्र एव मुहूर्त्त में (कलायरियस्स) कलाचार्य के पास (उवणेइ) भेजदिया (जाव भोग समत्थ जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाण एगदिवसेण पाणिं गेह्ण-वेइ) यावत् मेघकुमार की तरह उस स्थापत्य पुत्र ने ७२बहत्तर कलाओ को सीखलिया। यौवनवय के समागमन से विषय भोग की योग्यता विशिष्टइसे जानकर बाद मे उस स्थापत्यागाथापत्नीने उसका वैवाहित सस्कार एकही दिनमे ३२ महाधनाढय सार्थवाहों की कन्याओं के साथ करवादिया। (बत्तीस ओदाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरूवगधे जाव भुजमाणे विहरइ) ३२बत्तीस हिरण्य कोटि३२ बत्तीस सुवर्ण कोटि इत्यादि रूपदहेज इसे मेघकुमार की तरह मिला। इसके बाद स्थापत्य पुत्र ने ३२ उन इभ्यकुल बालिकाओ के साथ

ગાથા પત્નીએ પોતાના પુત્રને આઠવર્ષ થી થોડો મોટો થયેલો જાણીને શુભ તિથિ, કરણ, દિવસ, નક્ષત્ર અને મુહૂર્ત્તમા (કલાયરિયસ્સ) કલાચાર્યની પાસે (उवणेइ) મોકલ્યો (जाव भोगसमत्थ जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाण एगदिवसेण पाणिं गेण्हावेइ) મેઘકુમારની જેમ તે સ્થાપત્ય પુત્રે પણ બોત્તેર કલાઓ શીખી લીધી અને યુવાવસ્થા સંપન્ન થઈને વિષયોપભોગને લાયક થયો ત્યારે ગાથાપત્નીએ એકજ દિવસમા તેનુ લગ્ન બત્રીસ મહાધનાઢય સાર્થવાહોની કન્યાઓની સાથે કરાવડાવ્યુ (बत्तीस ओदाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरूवगधे जाव भुजमाणे विहरइ) બત્રીસ હિરણ્ય કોટિ, બત્રીસ સુવર્ણ કોટિ વગેરે દહેજ મેઘકુમારની જેમજ તેને પણ મળી ત્યાર પછી સ્થાપત્ય પુત્ર બત્રીસ કુલીન બાળાઓની

मूलम्—तेणं कालेण तेण समएणं अरहा अरिट्ठनेमी सो चेव वण्णओ दसधणुस्सेहे नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे अट्ठारसहि समणसाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंदनवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संयमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ परिसा निग्गया धम्मो कहिओ ॥ ७ ॥

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये अर्हन् अरिष्टनेमिर्द्वाविंशतितमस्तीर्थंकरः समवसृत इति भावः, स एव वर्णक. = अन्यतीर्थकराणा यो वर्णकः 'आइगरे तित्थगरे' इत्यादि रूप कथितः स एवारिष्टनेमिभगवतोऽपि वर्णको वो-य इत्यर्थः, नवर—'दसधणुस्सेहे' दशधनुरुत्सेधः=दश

विपुल शब्द रूप गधरस और स्पर्श पाचो इद्रियों के विषयों को यावत् भोगते हुए अपना समय आनन्द के साथ व्यतीत करदिया ॥सूत्र"६"

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (अरिहा अरिट्ठनेमी) उस द्वारावती नगरी में बावीसवें तीर्थंकर अर्हत नेमीनाथ भगवान् आये (सो चेव वण्णओ) अन्यतीर्थकरो का जैसा "आइगरे तित्थगरे" इत्यादिरूप से वर्णन किया गया है उसी प्रकार का वर्णन

સાથે પુષ્કળ રાજ્ય, સ્પર્શ, રૂપ વર્ણ અને ગધ રૂપ પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયો ને ભોગવતા પોતાનો વખત સુખેથી પસાર કરવા લાગ્યો ॥ સૂત્ર "૬" ॥

तेण कालेण तेण समएण ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ–(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (अरिहा अरिट्ठनेमी તે દ્વારકા નગરીમા બાવીસમા તીર્થંકર અર્હંત નેમીનાથ ભગવાન પધાર્યા (सो चेव वण्णओ) "आइगरे तित्थगरे" ના રૂપમા જેમ બીજા તીર્થંકરોનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તે પ્રમાણેજ અરિષ્ટનેમિ પ્રભુનુ વર્ણ। પણ જાણી

धनु परिमित उत्सेध उच्छ्रायो यस्य सः, पुनः कथ भूतोऽसावित्याह-'नीलु प्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे ' नीलोत्पलगवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाशः नीलोत्पल = नीलकमल, गवल=माहिष शृङ्ग गुलिका=नीली, यद्वा-गवलगुलिका =माहिषशृङ्गस्य त्वग्भागेऽपसारिते सति तदन्तरालवर्तिनी गुलिका 'अतसी' अलसी नाम्नाप्रसिद्धो धान्यविशेषस्तस्य कुसुम=पुष्प, तेषा प्रकाश इव प्रकाशो वर्णो यस्य स तथा, अष्टादशभिः श्रमणसाहस्रीभि अष्टादशसहस्रपरिमितैः श्रमणैः मुनिभिः सार्धं सपरिवृतः चत्वारिंशता आर्यिकासाहस्रीभि'=चत्वारिंशत्सहस्रपरिमिताभिरार्यिकाभिः साध्वीभिः सार्धं सपरिवृतः, पूर्वानुपूर्वी=पूर्व्यानुपूर्व्या तीर्थ करपरपरया चरन्=विहरन् यावत् यत्रैव द्वारावती नगरी वर्तते यत्रैव रैवतकपर्वतः यत्रैव नन्दनवन नामोद्यानमस्ति, यत्रैव सुरप्रियस्य यक्षस्य यक्षायतन, यत्रैव,

---

इन अरिष्टनेमि प्रभुका भी जानना चाहिये। परन्तु उनके वर्णन की अपेक्षा इनके वर्णन में इतनी विशेषता है कि ये (दसधणुस्सेहे,नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे) इनके शरीर की ऊँचाई दश धनुष की थी। शरीर का वर्ण नीलकमल के गवल-माहिष केशृग के अन्दरभाग जैसा गुलिका-नील के जैसा अथवा गवल तुलिका-त्वग्भाग के दूर करने पर तदन्तरालवर्तिनी महिष शृग की गुलिका के-अलसी के पुष्प के वर्ण के समान था। (अट्ठारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जिया साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नदनवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ) ये अर्हनअरिष्टनेमि प्रभु १८अढारह हजार श्रमणों के साथ और ४०चालीस हजार आर्यिकाओं के साथ २ पुर्वानुपूर्वी से-तीर्थकर

લેવુ જોઇએ ફક્ત અરિષ્ટનેમિ ભગવાન ની વિષે આટલુ વિશેષ સમજવુ જોઇએ કે-(दसधणुस्सेहे नीलुप्पलगवलगुलियअयासि कुसुमपप्पगासे) તેમનુ શરીર દશ ધનુષ જેટલુ ઊંચુ હતું તેમના શરીરનો રંગ નીલ કમળ ગવલભહિષના શીંગડાના મધ્યભાગ જેવો, ગુલિકા-નીલ જેવો, અથવાતો ગવલ ગુલિકા-ઉપર ની ચામડીને ઉપાડી લીધાપછી તેની અદરના ભહિષના શીંગડાની ગુલિકા અને અલસીના પુષ્પના રંગ જેવો હતો (अट्ठारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धि सपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जिया साहस्सीहिं सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुविं चरमाणे जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपवए जेणेव नदनवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ) અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ અઢાર હજાર શ્રમણોની સાથે અને ચાલીસ હજાર આર્યિકા

अशोकवरपादपः=अशोकनामा महावृक्षः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'अहापडिरूव' यथाप्रतिरूप=मुनिजनकल्पानुसारम् अवग्रह=स्थित्यर्थं वसतेराज्ञां अवगृह्य =गृहीत्वा सयमेन तपसा चात्मान भावयन् वासयन् विहरति=आस्तेस्म। तदा वनपालक समागत्य कृष्णाय वासुदेवाय वर्धापनिका मदत्ता। परिषन्निर्गता= द्वारावती नगरी निवासिनां जनाना परिषत् समूहः निर्गता अरिष्टनेमिर्भगवन् समागत इति श्रुत्वा त वन्दितु द्वारावतीनगरीतो निःसृतेत्यर्थः। सा परिषद् भगवन्त वदित्वा धर्म श्रोतु भगवतः पुरोऽवस्थिता धर्मः कथितः अरिष्टनेमिना भगवता धर्मकथा कथिता ॥ सू-७ ॥

परपरा के अनुसार-विहार करते हुए यावत् जहां वह द्वारावती नगरी थी उसमे जहा रैवतक पर्वत था-नदनन नामका उद्यान था। उसमें भी जहा सुरप्रिययक्ष का यक्षायतन था ओर उस में भी जहां अशोक का उत्तम वृक्ष था, वहां पधारे (उवागच्छित्ता अहापडिरूव उग्गह ओगिण्हित्ता सयमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ) आकर के उन्हों ने मुनिजन के कल्पानुसार वनपाल से वसति की आज्ञा प्राप्त की-और प्राप्त कर वे वहा तप और सयम से आत्मा को भावित करते हुए विराजमान हो गये उस समय वनपालकने आकर के कृष्ण वासुदेवको वधाई दी।(परिसा निग्गया धम्मो कहिओ) द्वारावतीनगरी के समस्त जनों का समूह-(अरिष्टनेमि भगवान आये हुए है) ऐसा सुनकर उनको वदना करने के लिये द्वारावती नगरी से निकले।

એની સાથે પૂર્વાનુ પૂર્વીથી-એટલે કે તીર્થંકર પરપરા ને અનુસરતા વિહાર કરતા જ્યા તે દ્વારવતી નગરી હતી, જ્યા રૈવતક પર્વત હતો, જ્યા નદનવન નામે ઉદ્યાન હતુ અને તેમા જ્યા સુરપ્રિય યક્ષનુ યક્ષાયતન હતું અને તેમા પણ જ્યા અશોકનુ શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ હતુ ત્યા પધાર્યા (उवागच्छित्ता अहापडिरूव उग्गह ओगिण्हित्ता सयमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ) ત્યા પધારીને મુનિ જનોચિત પ્રણાલિકા મુજબ વનપાલક પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને આજ્ઞા મેળવીને ત્યા તપ અને સયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિરાજ્યા તે વખતે વનપાલકે કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે જઇને તેમને શુભ સમાચારો આપ્યા (परिसा निग्गया धम्मो कहिओ) દ્વારવતી નગરીન બધા નાગરીકોએ "અરિષ્ટનેમિ ભગવાન અત્રે પધાર્યા છે" એવુ સાભળીને તેમની વદના કરવામાટે

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीरमहुरसद्द कोमुदीयं भेरि तालेह, तएणं ते कोडुंविय पुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु-एव सामी ! तहत्ति जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अतियाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता त मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं कोमुदियं भेरिं तालेंति । तओ णिद्धमहुरगंभीरपडिसुएणं पिव सारएइण वलाहएणं पिव अणुरसियं भेरीए ॥सू० ८॥

टीका-'तएण' इत्यादि । ततः=तदनन्तर, खलु स कृष्णो वासुदेवोऽनया भगवानरिष्टनेमिः समागत इत्येव रूपया कथया = वनपालकथितया कथया 'लद्धट्ठे' लब्धार्थः लब्धः=प्राप्तः, भगवदागमनरूपोऽर्थो येन स तथा, सन् कौडुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवा-

---

भगवान को वदना कर वे सब धर्म सुनने की अभिलाषा से भगवान के सामने बैठ गये । प्रभुने उन्हें धर्म का उपदेश दिया । " सूत्र " ७ "

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव ने (इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे) वनपाल के मुख से अरिष्ट नेमि प्रभुका आगमन रूप अर्थ विदित कर (कौडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) कौडुम्बिक

સાભળવાની ઇચ્છાથી તેમની સામે બેસી ગયા પ્રભુએ પણ તેમને ઉપદેશ આપ્યો ॥ સૂત્ર "૭" ॥

तएण से कण्हे वासुदेवे ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર બાદ (से कण्हे वासुदेवे) કૃષ્ણ વાસુદેવે (इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे) વનપાલકના મોથી અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પધરામણીની વાત

दीत्-भो देवानुप्रियाः 'खिप्पामेव' क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव सुधर्मायां सभायांगत्वा 'मेघोघरसियं' मेघौघरसितां=मेघौघानां मेघसमूहानां रसितमिव रसित ध्वनिरिव ध्वनिर्यस्यारतां गम्भीरा=सा द्रां 'महुरसद्द' मधुरशब्दां 'कोमुइय' कौमुदिकां उत्सवसूचनासमये वादनीया कौमुदिका नाम्नी श्रीकृष्णवासुदेवस्य भेरी तां, भेरिं= दुन्दुभिं 'ताडेह' ताडयत=वादयत। ततः=तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो हृष्टाः यावत् हर्षवशविसर्पद् हृदया मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा 'एवं स्वामिन् तथेति' यावत् 'हे स्वामिन् एवमेव तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति। प्रतिश्रुत्य आज्ञा स्वीकृत्य कृष्णस्य वासुदेवस्यान्तिकात्=समीपात् 'पडिनिक्खमंति' प्रतिनिष्क्रामन्ति=निसरन्ति। प्रति-

---

पुरूषोंको बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया सभाए सुहम्माए) भो देवानुप्रियो! तुम लोग शीघ्र ही सुधर्मा नाम की सभा मे जाकर (मेघोघरसियं गभीरमहुरसद्द कोमुदीय भेरिं ताडेह) मेघोके समूह जैसी सान्द्र मधुर शब्दवाली कौमुदिक नामकी भेरी को कि जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती है बजाओ। (तएणं ते कौडुंबियपुरिसा कण्हेण वासुदेवेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तहत्ति जाव पडिसुणेति) कृष्णवासुदेव की इस प्रकार आज्ञा सुनकर वे कौटुम्बिक पुरूष अधिक हर्षित एवं सतुष्ट हूए और मस्तक पर अजलि रखकर हे स्वभिन्! जैसी आपकी आज्ञा है हम वैसा ही करेगे ऐसा कहकर उन्होंने उनकी आज्ञा स्वीकार कर ली (पडिसुणित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति) आज्ञा स्वीकार कर

સાભળીને (कौडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दाविता एवं वयासी) બોલાવીને તેમણે કહ્યુ-(खिप्पमिव भो देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए) હે દેવાનુપ્રિયો! સત્વરે તમે સુધર્મા નામની સભામા જઈને (मेघोघ रसिय गभीरमहुरसद्द कोमुदीय भेरि ताडेह) મેઘસમૂહના ગર્જન જેવી સાન્દ્ર મધુર શબ્દવાળી તેમજ ઉત્સવના વખતે વગાડવામા આવતી કૌમુદિક નામની ભેરી ને વગાડો (तएणं ते कौडुंबिय पुरिसा कण्हेण वासुदेवे ण एवं वुत्तासमाणा हट्ठ जाव मत्थए अंजलि कट्टु एवं सामी! तहत्ति जाव पडिसुणेति) કૃષ્ણ વાસુદેવની આવી આજ્ઞા સાભળીને કૌટુબિક પુરુષો ખૂબજ હર્ષિત અને સતુષ્ટ થયા, તથા મસ્તકે અજલિ રાખીને કહેવા લાગ્યા,—"હે સ્વામિન્! આપની જેવી આજ્ઞા છે, તે પ્રમાણેજ અમે કરીશુ આમ કહીને તેઓએ તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી "पडिसुणित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति

निष्क्राम्य यत्रैव सुधर्मासभा, यत्रैव कौमुदिका भेरी, विद्यते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तां मेघौघरसिता=गम्भीरा मधुरशब्दा कौमुदिका भेरीं ताडयन्ति=वादयन्ति। ततः = तदनन्तर ' निद्धमहुरगभीरपडिसुएणपिव ' स्निग्धमधुरगम्भीर प्रतिश्रुतेनैव-स्निग्ध=हृदयहर्षजनक मधुर गम्भीर प्रतिश्रुत=प्रतिध्वनिर्यस्य स तथा, तेनैव केन ? ' सारइएण ' शारदिकेन शरत्कालसमुद्भूतेन ' वलाहएण पिव ' वलाहकेनेव=मेघेनेव ' अणुरसिय ' अनुरसितम्-अनुगर्जित भेर्या, शारदिकमेघगर्जितवद् भेरीध्वनिर्जात इत्यर्थः ॥ सू०८ ॥

मूलम्-तएण तीसे कोमुइयाए भेरियाए तालियाए समाणीए वारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिन्नाए दुवालसजोयणायामाए सिंवाडगतियचउक्कचच्चरकंदरदरी विवरकुहरगिरिसिहर नगरगोउरपासायदुवारभवणदेउलपडिसुयसयसहस्स संकुलं करेमाणे वारवइ नयरि सब्भितर वाहिरिय सव्वओ समंता से

फिर वे कृष्ण वासुदेव के पास से चलदिये। (पडिनिक्खमित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी-तेणेव उवागच्छति) चलकर वे उस सुधर्मा सभा में जहा वह कोमुदिक नामकी भेरी रखी हुई थी वहां गये, (उवागच्छित्ता त मेघोघरसिय गभीरमहुरसद्दकोमुदिय भेरिं तालेंति) वहा जाकर उन्होंने उस मेघो के समूह जैसी सान्द्र गभीर मधुर शब्द वाली कौमुदिक भेरी को बजाया (तओ णिद्धमहुरगभीरपडिसुएण पिव सारइण वलाहएण पिव अणुरसिय भेरीए) बजते ही उस भेरी की ध्वनी शरत्कालीन मेघ की गर्जना के समान हुई। ॥सू-८॥

મતિ” આજ્ઞા કાર્યા બાદ તેઓ કૃષ્ણની પાસેથી બહાર નીકળ્યા” “ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवागच्छति-” અને ત્યાથી તેઓ સુધર્મા સભામા જ્યા કૌમુદિક નામની ભેરી મૂકેલી હતી ત્યા ગયા “ उवागच्छित्ता त मेघोघरसिय गभीर महुरसद्द कोमुदिय भेरि तालेति” ત્યા જઈને તેમણે મેઘસમૂહના જેવી સાન્દ્ર ગભીર અને મધુર શબ્દવાળી કૌમુદિક ભેરીને વગાડી “तओ णिद्धमहुरगभीरपडिसुएण पिव सारइण वलाहएण पिव अणुरसिय भेरीए ” તે ભેરીમાથી શરદ ઋતુના મેઘની જેમ ગભીર સાન્દ્ર ધ્વનિ ચોમેર પ્રસરી ગયો ॥ સૂ ૮ ॥

सद्दे विप्पसरित्था । तएणं बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणिया सहस्साइं कोमुदियाए भेरीए सद्दं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ० जाव ण्हाया आविद्ध वग्घारियमल्लदामकलावा अहतवत्थचंदणोक्खित्तगायसरीरा अप्पेगइया हयगया एव गयगया रहसीया संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था ।

तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दसदसारे जाव अंतियं पाउब्भमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउरंगिणी सेणं सज्जेह, विजय च गधहत्थिं उवट्ठवेह । ते वि तहत्ति उवट्ठवेंति, जाव पज्जुवासंति ॥सू०९॥

टीका-' तएण तीसे ' इत्यादि । ततः खलु तस्यां कौमुदिकाया भेर्या ताडितायां सत्यां द्वारावत्या नगर्यां नवयोजनविस्तीर्णायां द्वादशयोजनायामायां ' सिंघाडगतियचउक्कचच्चर ' कदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउर पासाय दुवार

' तएणं तीसे कोमुइयाए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तीसे को मुइयाए) उस कौमुदी (भेरियाए ताडियाए समाणीयाए) भेरी के बजने पर (बारवइए नयरीए न वजोजन वित्थिन्नाए) द्वारावती नगरी के कि जो नव ९ योजन विस्तीर्ण (चौडी) तथा (दुवालसजोयणायामाए) १२ बारह योजन लबी थी-(सिंघाडगतिय चउक्क चच्चरकदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभ-

---

" त एण तीसे कोमुइयाए " ध्त्यादि ॥

टीकार्थ-"तएण" त्यार ખાદ " तीसे कोमुइयाए " તે કૌમુદી " भेरियाए ताडियाए समाणीए" ભેરીને " 'बारवइए' नयरीए नवजोजन विस्थिन्नाए " 'નવ યોજન વિસ્તાર' પામેલી 'તેમજ " दुवालसजोयणाए " બાર યોજન લાબી "सिंघाडगतियचउक्कचच्चरकंदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभवण-

भवणदेउलपडिसुयसयसहस्ससकुल ' शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरकन्दरादरीविवर-कुहरगिरिशिखरनगरगोपुरप्रासादद्वारभवनदेवकुलप्रतिश्रुतशतसहस्रसकुला शृङ्गाटकादि देवकुलान्ताः शब्दाः प्रसिद्धाः, तेषु प्रतिश्रुताना प्रतिध्वनीना यानि शतसहस्राणि तैः सकुला = परिपूर्णा वा तथाविधा कुर्वन् द्वारावतीं नगरीं ' सब्भितरबाहिरिय ' साभ्यन्तरबाह्या सर्वतः-समन्तात् स शब्दः=भेरी शब्दः ' विप्पसरित्था ' विप्रासत्=विशेषेण प्रसृतः ।

ततः खलु द्वारावत्या नगर्यां नवयोजनविस्तीर्णाया द्वादशयोजनयामाया समुद्रविजयप्रमुखा दशदशार्हा-यावत् गणिकासहस्राणि अत्र यावच्छब्दादयमर्थोऽवगम्यते—बलदेवप्रमुखा पञ्च महावीराः, उग्रसेनादयः षोडशसहस्रप्रमिता राजान सार्धत्रिकोटिसख्यका यादवकुमाराः, षष्टिसहस्रसख्यकाः साम्बादयो दुर्दान्ताः, वीरसेनप्रमुखा एकविंशति सहस्रप्रमितावीराः, महासेनादयः षट्पञ्चाशत् सहस्रप्रमाणा बलवन्तः, तथा-रुक्मिणीप्रमुखा द्वात्रिंशत्सहस्रपरिमितामहिला अनङ्गसेनादयोऽनेकसहस्रसख्यका वाराङ्गनाश्चेति । कौमुदीकायाभेर्याः शब्द श्रुत्वा

वण देउलपडिसुयसयसहस्ससकुल करे माणे बारवइ नयरिं सब्भितरबाहिरिय सव्वओ समता से सद्दे विप्पसरित्था) शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, कदरा, दरी, विवर, कुहर, गिरीशिखर, नगर, गोपुर, प्रसादद्वार, भवन, देवकुल, इन सब स्थानो में लाखों प्रति ध्वनियां उठी उन लाखों प्रति-वनियों से उस द्वारावती नगरीं को भीतर बाहिर सब प्रकार से सब तरफ से परिपूर्ण करता हुआ वह भेरी का शब्द बहुत जल्दी इधर उधर फैल गया। (तएण बारवईए नयरीए नव जोयणवित्थिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणियासहस्साइ कोमुदियाए भेरीए सद्द सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जावण्हाया) इस के बाद ९ नव योजन चौड़ी और १२ बारह योजन लंबी उस द्वारावती नगरी में समुद्रविजय आदि दश दशार्हों

देउलपडिसुयसयसहस्ससकुल करेमाणे बारवइ नयरि सब्भितरबाहिरिय सव्वओ समता से सद्दे विप्पसरित्था " દ્વારાવતી નગરીના શૃંગાટક ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, કદરા, દરી વિવર, કુહર, ગિરિશિખર, નગર, ગોપુર, પ્રાસાદ દ્વાર, ભવન દેવકુળ આ બધા સ્થાનોમા લાખો પડઘાઓ પડયા ભેરીનો ધ્વનિ સેકડો પડઘાઓથી દ્વારાવતી નગરીની અંદર બહાર ચોમેર પૂર્ણ રૂપે પ્રસરીને બધે વ્યાપ્ત થઈ ગયો. " तएण बारवईए नयरीए नव जोयणवित्थिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणियासहस्साइ कोमुदियाए भेरीए सद्द सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव ण्हाया " ત્યાર બાદ નવ યોજન પહોળી અને બાર યોજન લાંબી દ્વારાવતી નગરીમા સમુદ્ર વિજય

निशम्य=हृदयेऽवधार्य हृष्टास्तुष्टा यावत् स्नाताः 'आविद्धवग्घारियमल्लदामकलावा' आविद्धवग्घारियमाल्यदामकलापा आविद्धः परिधृत 'वग्घारियमल्लदामकलावा' प्रलम्बित पुष्पमाल्यमुक्तादि हाराणा कलापो यैस्ते प्रलम्बितपुष्पमाला मुक्तादि हारधारिण इत्यर्थः। 'वग्घारिय' इति देशीशब्दः प्रलम्बितार्थकः। अहतवत्थचंदणोक्किन्नगायसरीरा' अहतवस्त्रचन्दनोत्क्लिन्नगात्रशरीरा-अहतवस्त्राणि चन्दनोत्क्लिन्नगात्राणि येषु तानि तथाभूतानि शरीराणि येषा ते तेषा शरीराणि नूतनवसनयुक्तानि चन्दनानुलिप्तावयवकानि आसन्नित्यर्थ। नूतनवसनचन्दनानुलेपधारिण इति यावत्। अप्येकके=अप्येके=केचन हयगताः अश्वारूढाः एव=एके

ने यावत् गणिका साहस्र ने भेरी के शब्द को सुनकर और उसे हृदय में अवधारित कर बहुत ही अधिक हर्ष से एव सतोष से युक्त हो स्नान किया-स्नान कर (आविद्धवग्घारियदामकलावा) उन्हों ने लबी २ पुष्प मालाओ से युक्त मुक्तादि हारो को पहिरा "वग्घारिय" शब्द प्रलम्बित अर्थ का वाचक देशीय शब्द है। (अहतवत्थ चदणोक्किन्नगायसरीरा) नवीन २ वस्त्रों से एव चदन के लेप से शरीर को सज्जित किया। "जाव गणियासहस्साइ" में जो (यावत्) पद आया है-वह इस बात को कहता है कि समुद्र विजय आदि दश दशार्हों के साथ (बलदेव प्रमुख, पाचमहावीरो ने उग्रसेन आदि १६सोलह हजार राजाओंने, ३॥ सढे तीन करोड यदव कुमारोने, ६०साठ हजार दुर्दान्त शाम्बादिकोंने २१इक्कीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरों ने, ५६छप्पन हजार बलवत महासेनादिकोने तथा रुक्मिणी प्रमुख ३२ बत्तीस हजार महिलाओंने

વગેરે દશ દશાર્હોએ અને ગણિકા સાહસ્રોએ ભેરીનો અવાજ સાભળીને અને તેને હૃદયમા અવધારિત કરીને બહુજ હર્ષ તેમજ સતોષ યુક્ત થઈને સ્નાન કર્યું, સ્નાન કરીને "आविद्धवग्घारियदामकलावा" તેમણે લાબી લાબી પુષ્પમાળાઓ વાળા મોતી વગેરેના હારો ધારણ કર્યા વગ્ઘારિય શબ્દ પ્રલમ્બિત (લટકતી) અર્થને સૂચવનાર દેશીય શબ્દ છે "अहतवत्थ चदणोक्किन्नसरीरा" નવા નવા વસ્ત્રો તેમજ ચદનના લેપોથી પોતાના શરીરને તેમણે શણગાર્યું "जाव गणियासहस्साइ" મા જે "यावत्" શબ્દ છે, તે એમ સૂચવે છે કે સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હોની સાથે બળદેવ પ્રમુખ પાચમહાવીરોએ, ઉગ્રસેન વગેરે સોળ હજાર રાજાઓએ સાડા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોએ, છ હજાર દુર્દાન્ત શામ્બાદિકોએ એકવીસ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોએ, છપ્પન હજાર બળવાન મહાસેન વગેરેએ તેમજ રુકિમણી પ્રમુખ બત્રીસ હજાર મહિલાઓએ પણ તેમની જેમ હર્ષિત અને સતુષ્ટ થઈને સ્નાત

केचिद् गजगताः गजारूढाः, रहसीयासदमाणीगया' रथशिबिकास्यन्दमानीगता केचिद् रथारूढाः, केचित् 'सदमाणीगया' स्यन्दमानीगताः स्यन्दमानी=पाल खीनाम्ना प्रसिद्धो वाहनविशेषः, तामारूढाः, अप्येके=केचित् पादविहारचारेण 'पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता' पुरुषवगुरापरिक्षिप्ताः पुरुषवृन्देन युक्ताः सभूय कृष्णस्य वासुदेवस्यान्तिके प्रादुर्बभूवुः समागताः। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः समुद्रविजयप्रमुखान् दशदशार्हान् यावत् अन्तिक प्रादुर्भवतः समागतान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टोऽतिशयेन प्रमुदित कृष्णवासुदेव कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा चैव वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-भो देवानुप्रिया'! क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, चतुरङ्गिणीं

भी उनके जैसा ही हर्षित एव सतुष्ट हो सब कुछ किया। (अप्पेगइया हय गया एव गयगया रहसिया संदमाणीगया) इनमें कितनेक घोडो पर बैठकर कितनेक हाथियोंपर बैठकर, कितनेक रथोंपर बैठकर कितनेका शिबिका, स्यन्दमनी-पालखी-पर बैठकर (अप्पेगइयापायविहरचारेण पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता) कितनेक अनेक पुरुषो से युक्त होकर पाद विहार चारीगण-पैदल ही (कण्हस्स वासुदेवस्स अतिय पाउब्भवित्था) कृष्ण वासुदेव के पास प्रादुर्भूत हुए-आ गये। (तएण से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दस दसार जाव अतिय पाउब्भमाणे पासइ) इस तरह जब उन कृष्ण वादेवने समुद्रविजय आदि दश दशार्हों को यावत् अपने पास में प्रादुर्भूत हुआ देखा तो (पासित्ता) देखकर (हट्ठ तुट्ठ जाव कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ) हर्षित हो यावत् कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा

કર્યું, અને સ્નાન પછી પોતાના શરીરને વસ્ત્રો, લેપો તેમજ હારો વગેરેથી થી શણગાર્યા अप्पेगइया हयगया एव गयगया रहसीया सदमणीगया" આમાથી કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર સવાર થઈને કેટલાક હાથીઓ ઉપર બેસીને કેટલાક રથોમા બેસીને કેટલાક શિબિકા, અને પાલખીમા બેસીને "अप्पेगइया पायविहरचारेण पुरिसवग्गुरा परिक्खिता" કેટલાક અનેક માણુસોની સાથે પગે ચાલીને "कण्हस्स वासुदेवस्स अतिय पाउब्भवित्था" કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે હાજર થયા "तएण से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दसदसार जाव अतिय पाउब्भमाणे पासइ" આ રીતે કૃષ્ણવાસુદેવે સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હો વગેરે તે પોતાની પાસે ઉપસ્થિત થયેલા જોયા અને "पासित्ता" જોઈને "हट्ठतुट्ठ जाव कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ" હર્ષિત થઈને કૌટુણિક પુરુષોને બોલાવ્યા "सद्दावित्ता एव वयासी" બોલાવીને તેમણે આ પ્રમાણે કહ્યુ "खिप्पा

गजाश्वरथपदातियुक्तां सेनां सज्जयत, विजय = विजयनामानं च गन्धहस्तिनम् 'उवट्ठवेह' उपस्थापयत=मण्डनादिना सुसज्जीकृत्य समानयत। तेऽपि=कौटुम्बिन पुरुषा अपि, कृष्णवासुदेवाज्ञां श्रुत्वा 'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा तथैवोपस्थापयन्ति=आनयन्ति, यावत् पर्युपासते ॥ सू० ९ ॥

मूलम्-थावच्चापुत्ते वि णिग्गए जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ, जहा मेहस्स तहा चेव णिक्खमणं जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वेणं कालगए ॥ सू० १० ॥

छाया-थावच्चापुत्रोऽपि निर्गतः यथा मेघस्तथैव धर्मं श्रुत्वा निशम्य येनैव थावच्चा गाथापत्नी तेनैव उपागच्छति, उपागत्य पादग्रहणं करोति, यथा मेघस्य तथा चैव निष्क्रमणं यावत् सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीत्य बहुभिः चतुर्थषष्ठाष्टम यावत् विचित्रैः तपःकर्मभिः आत्मानं भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा षष्टिं भक्तानि अनशनया छित्त्वा आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः आनुपूर्व्या कालगतः ॥ सू० १० ॥

तएणं सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता महत्थं महग्घं महरियं रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गिण्हित्ता मित्त जाव सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवरपडिदुवार-

---

(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया। चाउरंगिणी सेण सज्जेह) भो देवानुप्रियों। तुम लोग शीघ्र ही चतुरंगिणी सेना को सज्जित करो (विजय च गंधहत्थिं उवट्ठवेह) और विजय नाम के गंध हस्ती को वेष भूषा से मंडित कर उपस्थित करो (ते वि तहत्तिउवट्ठवेंति) उन कौटुम्बिकपुरुषों ने भी कृष्ण वासुदेव की आज्ञा सुन (तथास्तु) ऐसा कहकर वैसा ही किया यावत् उनकी पर्युपासना की ॥ सू-९ ॥

मेव भो देवाणुप्पिया! चउरंगिणी सेणं सज्जेह" हे देवानुप्रियो! तमे सत्वरे चतुरंगिणी सेना तैयार करो "विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह" अने विजय नामक गंधहाथीने सुंदर वेषभां सज्ज करीने उपस्थित करो "ते वि तहत्ति उवट्ठवेंति जाव पज्जुवासंति" ते कौटुंबिक पुरुषोओ कृष्ण वासुदेवनी आज्ञा सांभळीने (तथास्तु) आम कहीने तेमनी आज्ञा मुजब कर्यु अने तेमनी पर्युपासना करी ॥ सूत्र ९ ॥

देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्धावित्ता तं महत्थं महग्घं महरियं रायरिहं पाहुडं उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी ॥ १० ॥

टीका—' थावच्चापुत्ते वि ' इत्यादि । अथ स्थापत्यापुत्रोऽपि निर्गतः = भगवन्तमरिष्टनेमिं वदितु स्वगृहान्निःसृत इत्यर्थ । यथा मेघ =मेघकुमार-, तथैव धर्मं श्रुत्वा निशम्य, यत्रैव स्वजननी स्थापत्या गाथापत्नी वर्तते, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य पादग्रहण करोति मातुश्चरणयो पततिस्मेत्यर्थः। यथा मेघस्य=मेघकुमारस्य मव्रज्यार्थं निवेदना मार्थनाऽभूत् तथैव स्थापत्यापुत्रस्य निवेदना मातुरन्तिकेऽभवदित्यर्थ ।

' थावच्चापुत्ते वि णिग्गए ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(थावच्चापुत्ते वि णिग्गए) स्थापत्यापुत्र भी भगवान अरिष्टनेमि प्रभुके वदना करनेके लिये अपने घरसे निकला (जहा मेहे तहेव धम्म सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ, जहामेहस्स तहा चेव णिवेयणा) जिस प्रकार मेघकुमोर ने धर्म का श्रमण किया था उसी प्रकार स्थापत्या पुत्र ने प्रभु अरिष्टनेमी भगवानके पास धर्मोपदेश सुना और सुनकर जहा अपनी माता स्थापत्या गाथापत्नी थी वहां गया । जाकर उसने उसके दोनो चरण पकड लिये–उसके दोनो चरणोमें वह गिर गया– ओर जिस प्रकार प्रव्रज्या के लिये मेघ कुमार ने प्रार्थना की थी उसी

“ थावच्चापुत्ते वि णिग्गए ” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ–“थावच्चापुत्त वि णिग्गए” સ્થાપત્યા પુત્ર પણ ભગવાન અરિષ્ટનેમિને વદન કરવા માટે પોતાને ઘેરથી નીકળ્યો. “जहा मेहे तहेव धम्म सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ, जहामेहस्स तहाचेव णिवेयणा” મેઘ કુમારે જેમ ધર્મનુ શ્રવણ કર્યું હતુ તેમજ સ્થાપત્ય પુત્રે પણ પ્રભુને અરિષ્ટનેમિ ભગવાનની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળ્યો. અને સાભળ્યા પછી ત્યા તેની માતા સ્થાપત્યા ગાથા હતી ત્યા ગયો. જઇને તેણે માતાના બને પગ પકડી લીધા તે તેના પગોમા આળોટી ગયો અને જેમ મેઘકુમારે પ્રવ્રજ્યા માટે પોતાના માતાપિતાને વિનતી કરી હતી તેમજ તેણે પણ કરી

यदा स्थापत्या गाथापत्नी स्वपुत्र 'नो संचाएइ' नो शक्नोति अस्य 'आघवित्तए' इत्यादिना सम्बन्धः । विषयानुलोमाभि = विषयानुकूलाभिः-वाग्भिश्च, तथाहि – विषयभोग एव मनुष्यलोके साराश्चस्तदर्थमेव सर्वे जनाः प्रवर्तन्ते उक्तञ्च—

" यदि रामा यदि च रमा, यदि तनयो विनयधीगुणोपेतः ।
तनये तनयोत्पत्तिः, सुरवरनगरे किमाधिक्यम् ॥ १ ॥ "

तथा—विषयप्रतिकूलाभिः विषयाः = कामभोगास्तत्प्रतिकूलास्तत्प्रतिषेधेन सद्भावनिस्तपः सयमास्तत्सम्बन्धिनीभिः लक्षणया विषयप्रतिकूलसम्बन्धिरूपोऽर्थः प्रतिबोध्यते । तपः सयमादिक खलु वालुका कवलवन्निरास्वादम् असिधारो परिगमनमिव सिक्थकदन्तैलेहमयचणकचर्वणमिवकरेण दीप्ताग्निशिखाग्रहणमिव मेरुगिरितोलनमिव सुदुष्कर भुजाभ्या समुद्रतरणमिवातिदुष्करमित्येव तपः सयम-भयोद्वेगकारिणीभिर्वाग्भिरित्यर्थः । वह्वीभिराख्यापनाभि = वहुविधैराख्यानैः सामान्यतः कथनैश्च, प्रज्ञापनाभिः=विशेषतः कथनैश्च, सज्ञापनाभि सबोधनाभिः

प्रकार से इसने भि कि (जाहे णो सचाएइ विसयाणुलोमाहिं य पडीकू-लाहिं य बहूहिं आघवणाहिं य पन्नवणाहिं य सन्नवणाहिय विन्नवणाहि य आघवित्तएवा ४) स्थापत्या गाथापत्नी ने उसे विषयानुकूल तथा विषयों के प्रतिकूल आदि वचनों द्वारा खूब २ समझाया-परन्तु वह उन विषयानुकूल विषय प्रतिकूल अनेक विध आख्यानो द्वारा-सामान्य कथनो द्वारा-प्रज्ञापनाओ द्वारा विशेष कथनो द्वारा सज्ञापनाओं द्वारा -सबोधन पूर्वक कथनों द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा तुम ही इस वृद्धावस्था में मेरे लिये आधार भूत हो इत्यादिरूप प्रेमसहित दीन वचनों द्वारा उसे सामान्यरूप से समझाने के लिये विशेष रूप से समझाने के लिये, विज्ञापित करने के लिये सज्ञापित करने के लिये समर्थ नहीं हुई-

---

"जाहे णो सचाएइ विसयाणुलोमाहि य पडिकूलाहिय, बहूहिं आयवणाहि य पन्न वणाहिय सन्नवणाहि य विन्नवणाहिय आघवित्तए वा" ४ स्थापत्य गाथा पत्नीओ पोताना पुत्र विषयानुकूळ तेमज विषयोने प्रतिकूळ ओवी घणी वातो कहीने पूण समजाव्यो, पण ते विषयानुकूळ विषयप्रतिकूळ अनेक आख्यानो वडे, सामान्य कथनो वडे, प्रज्ञापनाओ वडे, विशेष कथनो वडे, सज्ञापनाओ वडे, सबोधन पूर्वक कथनो वडे, विज्ञापनाओ वडे, (तमेज आ घडपणमा मारो आधार छो) वगेरे प्रेमयुक्तदीन वचनो वडे पोताना पुत्रने ते सामान्य रूपथी समजाववा माटे, विशेष रूपथी समजववाने माटे, विज्ञापित करवाने माटे सज्ञापित करवा माटे समर्थ थई शकी नहि एटले के आख्यान वगेरे चार जातना

सबोध्य कथनैश्च, विज्ञापनाभिः त्वमेव ममास्या वृद्धावस्थायामाधारोऽसि अवल म्बनमसीत्यादि रूपेण सप्रेमदीनवचनेन पुनः पुनर्विज्ञप्तिपूर्वककथनैः, अत्र-विषया नुकूलाभिराख्यानादिरूपाभिश्चतुर्विधाभिर्वाग्भिस्तथा विषयप्रतिकूलाभिराख्याना-दिरूपाभिश्चतुर्विधाभिर्वाग्भिरिति भावः । ' आघवित्तए वा' आख्यातु वा, प्रज्ञा-पयितु वा, विज्ञापयितु वा सज्ञापयितु वा। यदा स्थापत्या स्वपुत्रमाख्यानादिभिः प्रतिबोधयितु प्रव्रज्यातो निवर्तयितु न शक्नोति स्मेति सक्षिप्तार्थ । तदा सा ' अकामिया चेव ' अकामिकैव=अनिच्छावत्येव स्थापत्यापुत्रस्य-स्थापत्यापुत्र-नाम्नः स्वतनयस्य निक्खमणमणुमन्नित्था ' निष्क्रमणमन्वमन्यत = अनिच्छया प्रव्रज्याग्रहणार्थमाज्ञा प्रदत्तवतीत्यर्थ ।

ततः=तदनन्तर खलु सा स्थापत्यागाथापत्नी आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्यु-त्थाय, ' महत्थ' महार्थं=महाप्रयोजनक, ' महग्घ ' महार्घं=बहुमूल्यक, 'महरिह' महार्हं=महता श्रेष्ठपुरुषाणा योग्य, ' रायरिह ' राजार्हं=राज्ञा योग्य, 'पाहुड ' प्राभृतम्=उपहार ' भेट ' इति भाषा प्रसिद्ध गृह्णाति, गृहीत्वा मित्र-यावत् संपरि-वृता=अत्र यावच्छब्देन-ज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनैरित्यस्य सग्रहः यत्रैव

अर्थात् आख्यान आदि चतुर्विधवचनों द्वारा जो कि विषयानुकूलता तथा विषयप्रतिकूलता के प्रदर्शक थे जब वह स्थापत्या गाथापत्नी उसे समझाने एव प्रव्रज्या से निवर्तित करने के लिये असमर्थ हुई (तहे अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणमणुमन्नित्था) तब उसने विना इच्छा के ही स्थापत्यापुत्र को प्रव्रज्या गृहण करनेकी आज्ञा दे दी (तएण सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेइ) बाद में वह स्थापत्या अपने आसन से स्थान से- उठी- (अब्भुट्ठित्ता महत्थ महग्घ महरिह रायरिह पाहुण गेण्हइ) उठकर उसने महार्थसाधक, श्रेष्ठ पुरूषो के, तथा राजा-ओं के योग्य बहुत कीमती- उपहार लिया- (गिण्हित्ता) लेकर वह (मित्तजाव सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स) मित्र आदि परिजनों

વચનો દ્વારા કે જેઓ વિષયને અનુકૂળ તેમજ વિષયને પ્રતિકૂળ હતા સ્થાપ ત્ય પત્ની સમજાવીને પ્રવ્રજ્યા લેતા પોતાના પુત્રને અટકાવવામા સમર્થ થઈ શકી નહિ "तहे अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणमणुमन्नित्था" ત્યારે તેણે ઇચ્છા ન હોવા છતા પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરવાની તેને આજ્ઞા આપી ત્યારે સ્થાપત્યા પછી પોતાના આસનેથી ઉભી થઈ (अब्भुट्ठित्ता महत्थ महग्घ महरिह रायरिह पाहुण गेण्हइ) ઉભી થઇને મહાર્થસાધક, ઉત્તમ પુરૂષોને તેમજ રાજાઓને યોગ્ય બહુ કિંમતી ભેટ લીધી (गिण्हित्ता) લઇને તે (मित्त जाव सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स) મિત્ર વગેરે પરિજનોની સાથે

यदा स्थापत्या गाथापत्नी स्वपुत्र 'नो सचाएइ' नो शक्नोति अस्य 'आघवित्तए' इत्यादिना सम्बन्धः । विषयानुलोमाभि = विषयानुकूलाभिः-वीग्भिश्च, तथाहि – विषयभोग एव मनुष्यलोके साराशस्तदर्थमेव सर्वे जनाः प्रवर्तन्ते उक्तञ्च—

" यदि रामा यदि च रमा, यदि तनयो विनयधीगुणोपेतः ।
तनये तनयोत्पत्तिः, सुरवरनगरे किमाधिक्यम् ॥ १ ॥ "

तथा—विषयप्रतिकूलाभिः विषयाः = कामभोगास्तत्प्रतिकूलास्तत्प्रतिषेधेन सद्भाविनस्तपः सयमास्तत्सम्बन्धिनीभिः लक्षणया विषयप्रतिकूलसम्बन्धिरूपोऽर्थः प्रतिबोध्यते । तपः सयमादिक खलु वालुका कवलवन्निरास्वादम् असिधारो परिगमनमिव सिक्थकदन्तैलेोहमयचणकचर्वणमिवकरेण दीप्ताग्निशिखाग्रहणमिव मेरुगिरितोलनमिव सुदुष्कर भुजाभ्यां समुद्रतरणमिवातिदुष्करमित्येव तपः सयम-भयोद्वेगकारिणीभिर्वाग्भिरित्यर्थः । बहीभिराख्यापनाभि = बहुविधैराख्यानैः सामान्यतः कथनैश्च, प्रज्ञापनाभिः=विशेषतः कथनैश्च, सज्ञापनाभि सबोधनाभिः

प्रकार से इसने भि कि (जाहेणो सचाएइ विसयाणुलोमाहि य पडीकू-लाहि य बहूहिं आघवणाहिं य पन्नवणाहिं य सन्नवणाहिय विन्नवणाहि य आघवित्तएवा ४) स्थापत्या गाथापत्नी ने उसे विषयानुकूल तथा विषयों के प्रतिकूल आदि वचनों द्वारा खूब २ समझाया-परन्तु वह उन विषयानुकूल विषय प्रतिकूल अनेक विध आख्यानो द्वारा-सामान्य कथनो द्वारा-प्रज्ञापनाओ द्वारा विशेष कथनो द्वारा सज्ञापनाओं द्वारा -सबोधन पूर्वक कथनों द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा तुम ही इस वृद्धावस्था में मेरे लिये आधार भूत हो इत्यादिरूप प्रेमसहित दीन वचनो द्वारा उसे सामान्यरूप से समझाने के लिये विशेष रूप से समझाने के लिये, विज्ञापित करने के लिये सज्ञापित करने के लिये समर्थ नही हुई-

---

"जाहे णो सचाएइ बिसयाणुलोमाहि य पडिकूलाहिय, बहूहिं आयवणाहि य पन्न वणाहिय सन्नवणाहि य विन्नवणाहिय आघवित्तए वा" ४ स्थापत्य गाथा पत्नीओ पोताना पुत्र विषयानुकूळ तेमज विषयोने प्रतिकूळ ओवी घणी वातो कहीने भूण समजाव्यो, पण ते विषयानुकूळ विषयप्रतिकूळ अनेक आख्यानो वडे, सामान्य कथनो वडे, प्रज्ञापनाओ वडे, विशेष कथनो वडे, सज्ञापनाओ वडे, सबोधन पूर्वक कथनो वडे, विज्ञापनाओ वडे, (तमेज आ घडपणमा मारो आधार छो) वगेरे प्रेमयुक्तदीन वचनो वडे पोताना पुत्रने ते सामान्य रूपथी समजववा माटे, विशेष रूपथी समजववाने माटे, विज्ञापित करवाने माटे सज्ञापित करवा माटे समर्थ थई शकी नहि ओटले के आख्यान वगेरे चार जातना

मूलम्–एवं खलु देवाणुप्पिया! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नाम दारए इट्ठे जाव सेणं ससारभयउव्विग्गे इच्छइ, अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए, अहण्णं निक्खमणसक्कारं करेमि, इच्छामि णं देवाणुप्पिया! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउडचामराओ य विदिन्नाओ, तएणं कण्हे वासुदेवे थावच्चा गाहावइणीं एव वयासी–

अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए सुनिव्वुया वीसत्था, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि, तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी–मा ण तुमे देवाणुप्पिया! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि णं देवाणुप्पिया! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गहिए, केवल देवाणुप्पियस्स अह णो संचाएमि वाउकायं उवरिमेण गच्छमाणं निवारित्तए, अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जे किंचिवि आवाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति तं सव्व निवारेमि॥११॥

टीका–'एव खलु' इत्यादि। एवम् = अमुना प्रकारेण, खलु निश्चये हे देवानुप्रिय! ममैकः=एक एव पुत्रः स्थात्यापुत्रो नाम दारक अङ्गजात, इष्ट

'एस खलु देवाणुप्पिया' इत्यादि।

टीकार्थ–(देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय! (एव खलु) मैं आप के पास इसलिये आई हूँ– कि (मम एगे पुत्ते थावच्चा पुत्ते नाम दारए) मेरा

(एस खलु देवाणुप्पिया इत्यादि)।

ટીકાર્થ–(देवाणुप्पिया!) હે દેવાનુપ્રિય! (एव खलु) હુ, આપની પાસે એટલા માટે આવી છુ–કે (मम एगे पुत्ते थावच्चा पुत्ते नाम दारए) મારો સ્થા-

कृष्णवासुदेवस्य 'भवणवरपडिदुवारदेसभाए' भवनवरप्रतिद्वारदेशभागः भवनवरस्य प्रधानप्रासादस्य प्रतिद्वारं बृहद् द्वारान्तरालवर्तिलघुद्वार तस्य देशभागोऽस्ति, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सा प्रतीहारदेशितेन द्वारपालप्रदर्शितेन मार्गेण यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सा करतलपरिगृहीतदशनखा मस्तके अञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन च वर्धापयति, वर्धापयित्वा तन्महार्थं महार्घं महार्हं राजार्हं प्राभृतम् उपनयति=कृष्णवासुदेवस्याभिमुखे स्थापयति, उपनीय = उपहार कृष्णवासुदेवस्याग्रे निधाय, एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् = उक्तवती ॥ सू० १० ॥

से युक्त होकर जहा कृष्ण वासुदेव के (भवणवरपडिदुवारदेसभाए तेणेव उवागच्छइ) प्रधान प्रासाद का बडे दरवाजे अन्दर लघुद्वार का देश भाग था वहा गई (उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएण मग्गेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) वहा जाकर द्वारपाल द्वारा प्रदर्शित मार्ग से होकर वह जहा कृष्ण वासुदेव थे वहा गई (उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेइ) वहा जाकर उसने दोनों हाथो को अजलि रूप में जोड़कर और उस मस्तक पर रख कर जय विजय शब्दो का उच्चारण करते हुए उन्हें वधाई दी (वद्धावित्ता त महत्थ महग्घ महरिह रायरिह पाहुड उवणेइ) वधाई देकर उसने फिर महार्थसाधक महार्घ महतों योग्य एव राजाओं के लायक उस भेट को राजाके समक्ष रख दिया । (उवणित्ता एव वयासी) रख कर फिर उनसे ऐसा कहा— सूत्र " १० "

કૃષ્ણ વાસુદેવના (भवणवरपडिदुवारदेसभाए तेणेव उवागच्छइ) જ્યા પ્રધાન મહેલ ના મુખ્ય દરવાજાની અદરના લઘુદ્વારનો દેશ ભાગ હતો ત્યા ગઈ (उवागच्छित्ता, पडिहारदेसिएण मग्गेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) ત્યા જઈને તે દ્વારપાલવડે બતાવવામા આવેલા માર્ગથી જ્યા કૃષ્ણ વાસુદેવ હતા ત્યા ગઈ (उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेइ) ત્યા જઈને તેણે પોતાના હાથોને અજલીના આકારે બનાવીને તેમને જય વિજય શબ્દો બોલતા કૃષ્ણ વાસુદેવને વધાવ્યા (वद्धावित्ता त महत्थ महग्घ महरिह रायरिह पाहुड उवणेइ) વધાવ્યા પછી સ્થાપત્યાએ મહાર્થસાધક મહાર્થ-મોટા માણસોને યોગ્ય-અને રાજાઓને લાયક તે ભેટને તેમની સામે મૂકી (उवणित्ता एव वयासी) મૂકીને તેણે તેમને કહ્યુ ॥ સૂ-૧૦ ॥

इति सम्बन्धः । अहं खलु स्वयमेव स्थापत्यापुत्रस्य निष्क्रमण सत्कार करिष्यामि । ततः खलु स कृष्णवासुदेवश्चतुरङ्गिण्या सेनया सह विजय=विजयनामान गन्धहस्तिरत्नं यस्य गन्ध समाघ्राय पलायन्ते गजाः परे । दूरूढ =समारूढः सन् यत्रैव स्थापत्याया गाथापत्न्या भवन वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च स्थापत्यापुत्रम् एव = वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—देवानुप्रिय ! त्व मुण्डो भूत्वा मा खलु मव्रज, दीक्षाग्रहण मा कुरु इति सम्बन्धः। हे देवानुप्रिय ! त्व खलु विपुलान् =बहुतरान् मानुष्यान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् = शब्दादिविषयानुभवान्

गाहावइणीं एव वयासी) स्थापत्या गाथापत्नी की इस बात को सुनने के बाद कृष्णवासुदेव ने स्थापत्यागाथापत्नी से इस प्रकार कहा— (अच्छा ही ण तुम देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था, अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कार करिस्सामि) हे देवानुप्रिये ! तुम इस विषय में निश्चिन्त होकर- स्वस्थ और विस्वस्थ होकर- बैठो, मैं स्वय स्थापत्या पुत्र का निष्क्रमण सत्कार करूँगा। (तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीए सेणाए विजय हत्थिरयण दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ) ऐसा कहने के बाद वे कृष्ण वासुदेव चतुरगिणी सेना के साथ विजय नामके हस्ति रत्न पर आरूढ हो कर जहा स्थापत्यागाथापत्नी का भवन था वहा गये। (उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी) जाकर उन्होंने स्थापत्या पुत्र से इस प्रकार कहा- (माण तुमें देवाणुप्पिया ! मुडे भवित्ता पव्वयाहि) हे देवानुप्रिय ! तुम मुण्डित होकर दीक्षा ग्रहण मत करो

गाहावइणीं एव वयासी) સ્થાપત્યા ગાથાપત્ની આવાતને સાભળીને કૃષ્ણાવાસુદેવે સ્થાપત્યાગાથાપત્નીને કહ્યુ (अच्छा ही ण तुम देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कार करिस्सामि) હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ વિષે નિશ્ચિત, સ્વસ્થ અને વિસ્વસ્થ રહેા હુ જાતે સ્થાપત્યાપુત્રનેા નિષ્ક્રમણ ઉત્સવ કરીશ (तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीए सेणाए विजय हात्थिरयण दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ) ત્યાર પછી કૃષ્ણાવાસુદેવ ચતુરગિણી સેનાની સાથે વિજયનામના ઉત્તમ હાથી ઉપર સવાર થઇ તે જ્યા સ્થાપત્યગાથાપત્નીનુ ભવન હતુ ત્યા ગયા (उवागाच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी) ત્યા જઇને તેમણે સ્થાપત્યા પુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યુ-(माण तुमे देवाणुप्पिया ! भवित्ता पव्वयाहि) હે દેવાનુપ્રિય ! મુડિત થઈ ને તમે દીક્ષા સ્વીકારેા નહિ (मुजाहि ण देवाणुप्पिया !

वल्लभः यावत्=अत्र यावच्छब्देनाय पाठोऽनुसन्धेयः-कान्तः=कमनीयः, प्रियः=प्रीतिकारकः, मनोज्ञः = हृदयावस्थितः, उदुम्बरपुष्पदर्शनमिव दुर्लभः, वर्तते, स मम पुत्रः खलु ससारभयोद्विग्नः सन् इच्छति अर्हतोऽरिष्टनेमेः समीपे यावत् प्रव्रजितुम् । अहं खलु निष्क्रमणसत्कार दीक्षोत्सवं करोमि, हे देवानुप्रिय ! हे स्वामिन् ! अहमिच्छामि खलु स्थापत्यापुत्रस्य निष्क्रामतः = दीक्षाग्रहण कुर्वतः छत्रचामराणि=छत्रचामरमुकुटादीनि वितीर्णानि भवद्भिः प्रदत्तानि भवन्तु इति, अहमेतदर्थं भवतां समीपे समागता यत् तस्मै छत्रचामरादीनि भवन्तो वितरन्तु इति भावः ।

तत खलु कृष्णवासुदेवः स्थापत्यागाथापत्नीमेवमवादीत् । हे देवानुप्रिये ! त्व खलु सुनिर्वृता=स्वस्था, विस्वस्था=विशेषतः स्वस्था, सुधीरा, आस्स्व=तिष्ठ,

---

एक ही अङ्गजात स्थापत्य पुत्र नाम का पुत्र है। वह (इट्ठे जाव सेण ससारभयउव्विग्गे) मुझे वल्लभ हैं। यावत् शब्द से इस पाठ का यहा सग्रह हुआ है- वह बहुत अधिक कमनीय है प्रीतिकारक है, मनोज्ञ है, मेरे हृदय में स्थान किये हुए है। और उदम्बर पुष्प के दर्शन के समान दुर्लभ है। वह मेरा पुत्र ससारभय से उद्विग्न होकर (इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए) अर्हत् अरिष्ट नेमि प्रभु के पास दीक्षित होना चाहता है (अहण निक्खमणसक्कार करेमि, इच्छामिण देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तम उडचामराओ य वि दिन्नाओ) सो मै उसका दीक्षोत्सव करना चाहती हूँ। इसलिये हे देवानुप्रिय ! मै आपसे यह चाहती हूँ कि आप मुझे उस निमित्त-निष्क्रमण स्थापत्य पुत्र की दीक्षोत्सव के निमित्त छत्र, चामर और मुकुट आदि दे देवें। (तएण कण्हे वासुदेवे थावच्चा

પત્યાપુત્ર નામે એકનો એક પુત્ર છે તે (इट्ठे जाव सेण ससार भय उव्विग्गे) મને પ્રિય છે અહીં (यावत्) શબ્દથી આપાઠનો સગ્રહ થયેા છે-તે ખૂબજ કમનીય (ઈચ્છવાયેાગ્ય) છે, પ્રીતિકારક છે, મનેાજ્ઞ છે, મારા હૃદયમા તે સ્થાન પામેલેા છે તેમજ ઉમરડાના પુષ્પના દર્શનની જેમ તે દુર્લભ છે તે સ સારના ભયથી વ્યાકૂળ થઇ (इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए) અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુથી દીક્ષિત થવા ચાહે છે (अहण्ण निक्खमणसक्कार करेमि, इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्त मउडचामराओ य विदिन्नओ) હુ તેનેા દીક્ષાનેા ઉત્સવ ઉજવવા ઈચ્છુ છુ એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! આપ મને તે ઉત્સવ નિમિત્ત નિષ્ક્રમણ-સ્થાપત્યાપુત્રના દીક્ષોત્સવ માટે છત્ર ચામર અને મુકુટ વગેરે આપેા (तएण कण्हे वासुदेवे थावच्चा

मूलम्–तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेण एवं वुत्ते समाणे कण्ह वासुदेव एव वयासी–जइ णं तुम देवाणुप्पिया! मम जीवियतकरण मच्चु एज्जमाण निवारेसि जर वा सरीर-रूवविणासिणिं सरीर वा अइवयमाण निवारेसि, तएण अह तव वाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुज-माणे विहरामि ॥ सू० १२ ॥

टीका—' तएणं से थावच्चापुत्ते ' इत्यादि । तत खलु स स्थापत्यापुत्र' कृष्णवासुदेवेनैव मुक्तः सन् कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्–हे देवानुप्रिय ! यदि खलु त्व मम " जीवियतकरण " जीवितान्तकरण जीवनविनाशकारक, ' मच्चु ' मृत्यु=मरणदु'ख, ' एज्जमाण ' एचमानन्=आगच्छन्त, निवारयसि, ' जर वा'

कारण इस का यह है कि मेरे राज्य में तुम्हें कुछ भी कष्ट नही होगा। मैं सदा तुम्हारी सहायता करता रहूँगा। क्यों व्यर्थ में परम कष्ट साध्य दीक्षा ग्रहण करते हो– छोडो इसे। सूत्र " ११ "

' तएण से थावच्चापुत्ते कण्हे ण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते कण्हे ण वासुदेवेण) कृष्णवासुदेव के द्वारा इस प्रकार कहे गये उस स्थापत्यपुत्र ने (कण्ह वासुदेव एव वयासी) कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा–(जइण तुम देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चु एज्जमाण निवारेसि जर वा सरी-ररूवविणासिणि सरीरवा अइवलमाण निवारेसि) हे देवानुप्रिय ? यदि आपमेरे जीवन का अन्तकरने वाली आते हुए मृत्यु को मुझ से दूर

રાજ્યમા રહેતા તમને કોઈ પણ જાતની તકલીફ થશે નહિ હુ મેશા હુ તમારી મદદ માટે પડખે ઉભોછુ શુ કામ વ્યર્થ કષ્ટ સાધ્ય–કઠણ–દીક્ષા ગ્રહણ કરવા તૈયાર થયા છો છોડી આ લપને ! સૂત્ર " ૧૧ "

(तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण इत्यादि) ।

ટીકાર્થ–(त एण) ત્યાર પછી (से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण) કૃષ્ણવાસુદેવ વડેઆ રીતે કહેવાએલા સ્થાપત્યા પુત્રે, (कण्ह वासुदेव एव वयासी) કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ-(जइण तुम देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चू एज्जमाण निवारेसि जर वा मरीररूवविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवा-रेसि) હે દેવાનુપ્રિય ! જો તમે મારા જીવન નો નાશ કરનાર મૃત્યુ તે

मम बाहुच्छाया परिगृहीतः=बाहुच्छायां समाश्रित सन् 'भुजाहि' भुङ्क्ष्व, आसेवस्व पुन पुनर्विपयावादसुखेन विहरन् गृहे तिष्ठेत्यर्थः। केवल तव देवानुप्रियस्याह नो सहनोमि वायुकायमुपरितो गच्छन्त निवारयितुम्, वायुपर्शव्यतिरेकेण प्रतिकूलतया तव शरीरस्य स्पर्शने कोऽपि समर्थो नास्तीति भाव। अन्य खलु देवानुप्रियस्य यत् किंचिदपि आबाधां वा ईषत् पीडा वा व्याबाधां वा विशेषपीडा वा उत्पादयति, तत्सर्वं निवारयिष्यामीत्यर्थः। मम राज्ये तव किमपि दुःख नो भविष्यति, साहाय्य ते करिष्यामि, अल परमकष्टसाध्येन दीक्षा ग्रहणेनेति भाव ॥ सू-१२॥

(-भुजाहि ण देवाणुप्पिया! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छाया परिग्गहिए) हे देवानुप्रिय! मेरी बाहुच्छाया में रहते हुए तुम तो विपुल मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगो को भोगो। (केवल देवाणुप्पियस्स अहं णो सचाएमि वायुकाय उवरिमेण गच्छमाण निवारित्तए) हे देवानुप्रिय! प्रतिकूल होकर तुम्हारे शरीर को मेरी छत्रच्छाया में रहते हुए कोई स्पर्श तक भी नहीं कर सकता है- परन्तु वायुकाय को तुम्हारे ऊपर से जाते हुए मुख में रोकने की शक्ति नहीं है। अर्थात् वायु के सिवाय और किसी प्राणी में ऐसी शक्ति नहीं है जो मेरी छत्रच्छाया में रहे हुए तुम्हें विरुद्ध बन कर स्पर्श तक भी कर सके। (अण्णे ण देवाणुप्पियस्स जे किंचि वि आबाह वा वाबाह वा उप्पाएति त सव्व निवारेमि) वायुकाय के सिवाय यदि कोई दूसरी व्यक्ति देवानुप्रिय तुम्हारे लिये थोड़ी सी भी किसी भी प्रकार की पीडा या विशेष पीड़ा उत्पन्न करेगा तो वह सब मैं निवारित करता रहूंगा।

विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छाया परिग्गहिए) હે દેવાનુપ્રિય! મારી બાહુચ્છાયા મા રહેતા તમે મનુષ્યભવના પુષ્કળ કામ ભોગ ભોગવો (केवल देवाणुप्पियस्स अहं णो सचाएमि वायुकाय उवरिमेण गच्छमाण निवारित्तए) હે દેવાનુપ્રિય! મારી છત્ર છાયામા રહેતા તમને પ્રતિકૂળ થઈને કોઈ સ્પર્શવાની પણ હિમ્મત કરશે નહિ ફક્ત વાયુકાયને કે જે તમારી ઉપર થઈને પસાર થાય છે-રોકવાની તાકાત મારામા નથી એટલે કે પવન સિવાય બીજા કોઇ પણ પ્રાણી ની એવી હિમ્મત નથી કે મારી છત્ર છાયામા રહેતા, પ્રતિકુળ થઈને તમારો સ્પર્શ પણ કરી શકે (अण्णे ण देवाणुप्पियस्स जे किं वि विआवाह वावाबाह वा उप्पाएति त सव्व निवारेमि) વાયુકાયના સિવાય બીજી વ્યક્તિ તમને થોડી કે વધારે પીડા આપશે તો તેને હું મટાડીશ મારા

मूलम्–तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे कण्ह वासुदेव एव वयासी–जइ णं तुम देवाणुप्पिया! मम जीवियतकरण मच्चु एज्जमाण निवारेसि जर वा सरीर-रूवविणासिणिं सरीर वा अइवयमाण निवारेसि, तएण अह तव वाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुज-माणे विहरामि ॥ सू० १३ ॥

टीका—' तएण से थावच्चापुत्ते ' इत्यादि । ततः खलु स स्थापत्यापुत्र· कृष्णवासुदेवेनैव मुक्तः सन् कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्–हे देवानुप्रिय ! यदि खलु त्व मम " जीवियतकरण " जीवितान्तकरण जीवनविनाशकारक, ' मच्चु ' मृत्यु=मरणदु ख, ' एज्जमाण ' एचमानन=आगच्छन्त, निवारयसि, ' जर वा '

कारण इस का यह है कि मेरे राज्य में तुम्हें कुछ भी कष्ट नही होगा। मैं सदा तुम्हारी सहायता करता रहूँगा। क्यों व्यर्थ मे परम कष्ट साध्य दीक्षा ग्रहण करते हो– छोडो इसे। सूत्र " ११ "

' तएण से थावच्चापुत्ते कण्हे ण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते कण्हे ण वासुदेवेण) कृष्णवासुदेव के द्वारा इस प्रकार कहे गये उस स्थापत्यपुत्र ने (कण्ह वासुदेव एव वयासी) कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा–(जइण तुमं देवाणुप्पियो मम जीवियतकरणमच्चु एज्जमाण निवारेमि जर वा सरी-ररूवविणासिणि सरीरवा अइवलमाण निवारेमि) हे देवानुप्रिय ? यदि आपमेरे जीवन का अन्तकरने वाली आते हुए मृत्यु को मुझ से दूर

રાજ્યમા રહેતા તમને કોઇ પણ જાતની તકલીફ થશે નહિ હુ મેશા હુ તમારી મદદ માટે પડખે ઉભોછુ શુ કામ વ્યર્થ કષ્ટ સાધ્ય-કઠણ-દીક્ષા ગ્રહણ કરવા તૈયાર થયા છો છોડી આ લપને ! સૂત્ર " ૧૧ "

(तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण इत्यादि) ।

ટીકાર્થ–(त एण) ત્યાર પછી (से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण) કૃષ્ણવાસુદેવ વડેઆ રીતે કહેવાએલા સ્થાપત્યા પુત્રે, (कण्ह वासुदेव एव वयासी) કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ–(जइण तुम देवाणुप्पिया मम जीविय तकरणमच्चू एज्जमाण निवारेसि जर वा मरीररूवविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवा-रेसि) હે દેવાનપ્રિય ! જો તમે મારા જીવન નો નાશ કરનાર મૃત્યુ તે

नरा वा=वृद्धावस्था वा शरीररूपविनाशिनी, शरीर वा (वर्तमानशरीर) 'अइवयमाणं' अतिपतन्तम्=आत्मनः सकाशात् सर्वथा वियुज्यमान निवारयसि, ततस्तदा खलु अह तव बाहुच्छाया-परिगृहीतः भुजबलमाश्रितः सन् विपुलान् मानुष्यान् काम-भोगान् भुञ्जानो विहरामि=गृहे वत्स्यामीत्यर्थः।

ससाराऽऽसक्तस्य जरामरणादि दुःखक्षयो न भवतीति संसारस्वरूपमिह सक्षेपेण निरूप्यते-आत्मकल्याणार्थी जनः खल्वेव विभावयति—

एतत् खलु ससारसुख तुच्छम्, अस्मिन् ससारे कर्मवशवर्तिन' प्राणिन केवल मरणाय जायन्ते, म्रियन्तेऽपि जननायैव, यावन्तः कामभोगास्ते क्षणभङ्गुरा

कर सकते हो तथा शरीर के स्वरूप को विनाश करनेवाली आती हुई जरावस्था को निवारण कर सकतें होवें या नियमत. आत्मा के साथ सर्वथा वियुज्यमान इस शरीर को आप रोक सकते होवें (तएण अह तव बाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कमभोगे भुजमाणे विहरामि) तो मैं आपकी भुजच्छाया का सहारालेकर विपुल मनुष्यभव-सम्बधी कामभोगों को भोगता हुआ घर मे रह सकता हूँ! ससार में आसक्त हुए प्राणी के जरा मरण आदि के दु खो का क्षय नहीं होता है इसलिये ससार का स्वरूप सक्षेप से यहाँ निरूपित कियाजाता है जो आत्मकल्याण के अर्थी मोक्षाभिलाषी जन होते हैं वे इस प्रकार से विचार करते है-यह सासारिक सुख तुच्छ है। इस ससार में कर्म वशवर्ती हुए प्राणी केवल मरण प्राप्त करने के लिये ही जन्मते हैं और जन्म धारण-करने के लिये ही मरते है। जितने भी कामभोग

મારાથી દૂર કરી શકો છો, તેમજ શરીરના સ્વરૂપને નષ્ટ કરનાર ઘડપણને મટાડી શકો છો, આત્માથી વિયોગ પામતા આ શરીરને તમે વિયુકત થવા નહિ દો (तएण अह तव बाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे विहरामि) તે હુ તમારી બાહુઓની છાયામા રહીને પુષ્કળ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતા ઘરમા જ રહી શકુ તેમ છુ સ સારમા આસક્તિ રાખનાર પ્રાણીના જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે દુ ખો નો ક્ષય થતો નથી તેથી અહી ૂકમા સ સારના સ્વરૂપ વિષે ચર્ચા કરવામા આવે છે જે આત્મ કલ્યાણ ને જ ખનાર મોક્ષાભિલાષી જન હોય છે, તેઓ આ પ્રમાણે વિચાર કરે છે આ સ સારનુ સુખ નગણ્ય છે આ સ સારમા કર્મ વશ થઈને જીવ નારા પ્રાણીઓ ફક્ત મરણ પ્રાપ્ત કરવામાટે જ જન્મ પામે છે, અને જન્મ મેળવવા માટે જ મૃત્યુને ભેટે છે સ સાર ના જેટલા કામ ભોગો છે તે

आस्रवरूपा विपदा पदानि सन्ति । लोकवर्तिनः सर्वेऽपि पदार्था सिकताकण वत् परस्परमसबद्धाः, तेषा भोगोऽपि जीवस्य बन्धनाय पुनः पुनर्मोहजननाय भवति । मोह खलु महागर्तस्तत्राज्ञानिनो जीवा निरर्थकमेव निपतन्ति । एतस्मिन् सुखाभासे ससारे ममकः सम्बन्ध । अज्ञानरजन्या विवेकदृष्टौ मोहवृतायां सत्यां पञ्चेन्द्रियत्रयो विंशति विषय तदीय शतद्वयाधिकचत्वारिंशद्विकाररूपास्तस्करा आत्मगुणरूपाणि धनान्यपहरन्ति । यथा पथिकेभ्यो न रोचते निर्जला भूमि-स्तथा ममेद ससारसुख ममोदाय न प्रभवति । यथा वा-शैलशिखरावस्थितपाद-पानां मूलानि वायुर्विशीर्णयति, तथोन्मूलयति भोगोऽपि जीवाना मनासि, यथा

हैं-वे सब क्षणभगुर हे तथा इसकेद्वारा ही जीव नवीन कर्मों का आस्रव करता है-इसलिये ये आस्रवरूप हे-विपदाओ के स्थानभूत है। इस लोक में जितने भी पदार्थ हैं वे सब बालु के कण के समान परस्पर में असबद्ध हैं। इनका भोग भी जीव के लिये नवीन नवीन कर्मों का बधदाता होता है और बार २ मोहका जनक होता है। मोह एक बड़ा भारी गर्त (खड्डा) है। इसमें आत्मज्ञान से रहितहुए प्राणी निरर्थक ही गिरते रहते हैं। इस असारससार में मेरा किस से क्या नाता है। अज्ञान रात्रि में विवेकदृष्टि के मोहाच्छादित होने पर पाचो इन्द्रियों के २३, विषय और इन विषयों के भी २४०, विकार रूप तस्कर (चौर) आत्म गुण रूप धन का अपहरण करते रहते है। जिस तरह पथिक जनों के लिये निर्जल भूमि नहीं रुचती है उसी प्रकार मुझे यह ससार सुख नही रुचता है। अथवा जैसे पर्वत की चोटी पर रहे हुए वृक्षो की जड़ों

સર્વે ક્ષણુ ભગુર છે, તેમજ એમના વડે જ જીવ કર્મોનો આસ્રવ (કર્મનુ આત્મામા દાખલ થવુ) કરે છે એટલા માટે આ બધા આસ્રવરૂપ છે અને વિપત્તિઓનુ સ્થાન છે આ જગતમા જેટલા પદાર્થો છે તેઓ સર્વે રેતીના કણાની જેમ પરસ્પર અસબદ્ધ છે એમનો ઉપભોગ પણ નવા નવા કર્મોના બધનમા પ્રાણીને ફસાવનાર છે તે વાર વાર મોહજનક હોય છે મોહ (અજ્ઞાન) જાને એક મોટો ખાટો (ગર્ત) છે આત્મજ્ઞાન વગરના પ્રાણીઓ વ્યર્થ આમા પડયા કરે છે આ નિસાર જગતમા મારો કોની સાથે કેવો સબધ છે ? અજ્ઞાન રાત્રિમા જ્યારે વિવેકની દૃષ્ટિ અજ્ઞાનથી ઢકાઈ જાય છે ત્યારે પાચ ઈન્દ્રિયોના ત્રેવીસ વિષયો અને આ વિષયોના પણ બસો ચાલીશ વિકાર રૂપી ચોર (તસ્કર) આત્મગુણ રૂપી ધન ને ચોરતા રહે છે જેમ મુસાફરોને નિર્જળ પ્રદેશ ગમતો નથી તેમ જ મને પણ આ સસાર સુખ સારુ લાગતુ નથી જેમ પર્વતો પર રહેલા વૃક્ષોના શિખરો મૂળ પવન વિશીર્ણ (છિન્નવિચ્છિન્ન) કરી નાખે છે તેમજ સસાર

जरा वा=वृद्धावस्था वा शरीररूपविनाशिनी, शरीर वा (वर्तमानशरीर) 'अइवयमाणं' अतिपतन्तम्=आत्मनः सकाशात् सर्वथा वियुज्यमान निवारयसि, ततस्तदा खलु अहं तव बाहुच्छाया-परिगृहीतः भुजबलमाश्रितः सन् विपुलान् मानुष्यान् कामभोगान् भुञ्जानो विहरामि=गृहे वत्स्यामीत्यर्थः ।

ससाराऽऽसक्तस्य जरामरणादि दुःखक्षयो न भवतीति संसारस्वरूपमिह सक्षेपेण निरूप्यते-आत्मकल्याणार्थी जनः खल्वेव विभावयति—

एतत् खलु ससारसुख तुच्छम् , अस्मिन् ससारे कर्मवशवर्तिनः प्राणिन केवल मरणाय जायन्ते, म्रियन्तेऽपि जननायैव, यावन्तः कामभोगास्ते क्षणभङ्गुरा

कर सकते हों तथा शरीर के स्वरूप को विनाश करनेवाली आती हुई जरावस्था को निवारण कर सकतें होवें या नियमत आत्मा के साथ सर्वथा वियुज्यमान इस शरीर को आप रोक सकते होवें (तएण अहं तव बाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे विहरामि) तो मैं आपकी भुजच्छाया का सहारालेकर विपुल मनुष्यभव-सम्बन्धी कामभोगों को भोगता हुआ घर मे रह सकता हूँ। ससार में आसक्त हुए प्राणी के जरा मरण आदि के दुःखो का क्षय नहीं होता है इसलिये ससार का स्वरूप सक्षेप से यहाँ निरूपित कियाजाता है जो आत्मकल्याण के अर्थी मोक्षाभिलाषी जन होते हैं वे इस प्रकार से विचार करते हैं-यह सासारिक सुख तुच्छ है। इस ससार में कर्म वशवर्ती हुए प्राणी केवल मरण प्राप्त करने के लिये ही जन्मते हैं और जन्म धारण-करने के लिये ही मरते है। जितने भी कामभोग

ભારાથી દૂર ૩રી શકેા છેા, તેમજ શરીરના સ્વરૂપને નષ્ટ કરનાર ઘડપણુને મટાડી શકેા છેા, આત્માથી વિયેાગ પામતા આ શરીરને તમે વિયુકત થવા નહિ દેા (तएण अहं तव बाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे विहरामि) તે હુ તમારી બાહુઓાની છાયામા રહીને પુષ્કળ મનુષ્ય ભવના કામભેાગેા ભેાગવતા ઘરમા જ રહી શકુ તેમ છુ સ સારમા આસક્તિ રાખનાર પ્રાણીના જરા (ઘડપણુ) મરણુ વગેરે દુઃખેા નેા ક્ષય થતેા નથી તેથી અહી ટૂકમા સ સારના સ્વરૂપ વિષે ચર્ચા કરવામા આવે છે જે આત્મ કલ્યાણુ ને જ ખનાર મેાક્ષાભિલાષી જન હેાય છે, તેઓ આ પ્રમાણે વિચાર કરે છે આ સ સારનુ સુખ નગણ્ય છે આ સ સારમા કર્મ વશ થઈને જીવનારા પ્રાણીઓ ફક્ત મરણુ પ્રાપ્ત કરવામાટે જ જન્મ પામે છે, અને જન્મ મેળવવા માટે જ મૃત્યુને ભેટે છે સ સાર ના જેટલા કામ ભોગેા છે તે

काष्ठं घुण इव मृत्युः शरीरमुत्खनति । मृत्युतक्षाः श्वासोच्छ्वासकृकचेन शरीरवृक्षं छिनत्ति । मृत्यु खलु रागद्वेषविषज्वालाव्याकुलतया तृषार्त इवाऽऽयुष्यजलं पिबति । यथा तैलयन्त्रं तिलान् निष्पीडयति, तथा मृत्यु. प्राणिनां शरीराणि निष्पीड्य नाशयति । स लोकत्रयवर्तिनः प्राणिनः क्षोभयति । मृत्योरागमनात् प्रागेव षण्मासतः सुराणामपि कल्पतरुपुष्परचितमाला मुकुलयति, चेतांसि तेषां शोकसागरे निमज्जयति । मूर्छान्धकारं पश्यन् मृत्युरूप उलूको धावन् समायाति ।

हिमानीव कमलवनानि जरा पञ्चेन्द्रियाणि विकृतानि कुर्वती शिथिलयति । सा भक्षितविषवत् त्वरितमेव शरीरं संहरति । भार्याऽपि जरावस्थ पुरुषम्–' अय-

---

काष्ठको घुन की तरह मृत्यु मेरे शरीर को घुना रही है । मृत्युरूपी बढई श्वासोच्छ्वासरूप आरे से इस शरीररूप वृक्ष को रात दिन काट रहा है। यह मृत्यु रागद्वेषरूप विषकी ज्वाला से व्याकुल जैसी बना हुआ तृषार्त की तरह आयुरूपीजल को पी रहा है जैसे तैल यन्त्र-कोल्फू-तिलो को पेल डालता है उसी प्रकार मृत्यु प्राणियोके शरीर को निष्पीडित कर डालता है। ऐसा तीन लोक मे कोई भी प्राणि नही है जो इस मृत्युसे क्षुभित न हो रहा हो। मृत्युके आगमन के छहमास के पहिले से देवताओ की भी कल्पवृक्षो के पुष्पो की रचित माला कुम्हला जाती है उनका मन शोक सागर मे इस कारण से डूब जाता है। मूर्च्छारूपी अधकार को देखकर मृत्युरूपी उलूक दौडता हुआ आ जाता है। हिम सतति (हिम समूह) जिसतरह कमल वनो को विकृतकर शिथिलकर देती है उसी तरह जरावस्था भी पचेन्द्रियों को विकृत कर शिथिल कर

नी જેમ મૃત્યુ મારા શરીરને નષ્ટ કરી રહ્યા છે મૃત્યુ રૂપી સુથાર શ્વાસો શ્વાસ રૂપી કવત વડે શરીર રૂપી વૃક્ષને રાત દિવસ કાપી રહ્યો છે આ મૃત્યુ રાગદ્વેષ રૂપી વિષની જવાળા થી વ્યાકુળ થઈને તરસ્યાની પેઠે આયુષ્ય જળને પી રહ્યુ છે જેમ વાણી તલેાને પીલી નાખે છે તેમજ મૃત્યુ પ્રાણીઓના શરીરોને નિષ્પ્રાણ બનાવીને નષ્ટ કરીનાખે છે ત્રણે લોકમા એવું કોઈ પ્રાણી મને દેખાતુ નથી કે જે મૃત્યુથી ક્ષોભ પામતુ ન હોય મૃત્યુના છ મહિના પૂર્વે દેવોની પણ કલ્પ વૃક્ષના પુષ્પોની માળાઓ ચીમળાઈ જાય છે તેમનુ મન શોક સાગરમા ડૂબી જાય છે મૂર્છા રૂપી અધારાને જોઇને મૃત્યુ રૂપી ઘુવડ દોડતા આવે છે ઝાકળો જેમ કમળ વનોને નષ્ટ કરી નાખે છે, શિથિલ બનાવીદે છે તેમજ ઘડપણ પાચે ઇન્દ્રિયોને વિકૃત કરીને

पुरातनास्तरव स्वकोटरस्थानलेन दह्यमाना अन्ते निपतन्ति तद्वदिह जीवाः कषायानलेन परितप्ता अशान्ता अन्ते नरकादौ निपतन्ति । अहमपि समारदावा नलेन परितप्तान्तःकरणः क्वापि विषयसुखे शान्तिं न पश्यामि । समति मामकी नमन्तःकरणं जन्मजरामरणदुःखपाषाणै परिपूर्णं वर्तते, तस्मात् साश्रुमुक्तकण्ठ च रोदन कर्तुकामोऽपि न रोदिमि, इमे हि स्वजना रुदन्त मामवलोक्य रोदिष्यन्ति । तस्मादसारेऽस्मिन् समारे प्रव्रज्यैव मम शरणम् । अपर चैवमसौ मृत्युजरास्वभाव विभावयति—

को वायु विशीर्ण कर देती है उसी तरह सासारिक भोग भी जीवोंके मन को विशीर्ण करदिया करता है अपने कोटर में अवस्थित अग्नि से जैसे पुराने वृक्ष जलकर अन्त में जमीन पर गिर पडते हैं उसी तरह इस ससार में कषायरूपअग्निसे परितप्त होकर अशान्त हुए ये जीव भी अन्त में नरकादि दुर्गतियों मे जाकर गिरजाते हैं। मै भी ससार दावानल से परितप्त अन्तःकरण होकर किसी भी वैषयिकसुख में शान्ति नही देख रहा हूँ। इस समय मेरा अन्त करण जन्म जरा और मरण के दुःख रूप पाषाणों से परिपूर्ण बना हुआ है। अतः मैं चाहता हूँ कि मै गला फाड २ कर खूब जोर २ से रोऊँ परन्तु नही रो सकता हूँ। कारण ये मेरे पीछे लगे हुए जो जन हैं वे मुझे रोता देख-कर रोने लग जावेंगे । इस लिये सार विहीन इस ससार मे कोई शर ण भूत मेरे लिये है तो वह एक प्रव्रज्या ही है। मृत्यु और जराके स्वभाव को यह आत्म कल्याणार्थी इस प्रकार से विचारता है—

ના ભોગો પણ જીવોના મનને વિશીર્ણ (જીર્ણ) કરી નાખે છે પોતાની બખોલમા સળગતો અગ્નિ જેમ જુના વૃક્ષોને બાળીને છેવટે જમીન દોસ્ત કરી નાખે છે, તેમજ આ સસારમા કષાય રૂપ અગ્નિમા સતપ્ત થઇને અશા ન્ત થયેલા જીવો પણ અન્તે નરક વગેરે દુર્ગતિઓમા જઈને પડે છે સસાર દાવાનળથી સતપ્ત થયેલુ મારૂ મન કોઇ પણ વિષય સુખમા શાતિ જોતુ નથી અત્યારે મારૂ મન જન્મ જરા (ઘડપણ) અને મરણના દુ ખ રૂપી પથ્થરોથી પરિપૂર્ણ થઇ ગયુ છે એથી મને તો એમ થાય છે કે હુ મોટેથી બૂમો પાડી પાડીને ખૂબ રડુ પણ મારાથી રડાતુ પણ નથી કેમકે મારા સ્વજનો મને રડતો જોઇને પોતે પણ રડવા માડશે એટલે નિ સાર જગતમા મારો કોઇ આધાર છે તો તે પ્રવજ્યા જ કહી શકાય મૃત્યુ અને ઘડપણની ભયકરતા વિષેનો વિચાર તે સ્થાપત્યાપુત્ર કહે છે "લાકડામા ઊંધઇ

समाधिरूपः कल्पतरुत्पद्यते च । वैराग्यजलाऽऽगमनमार्गरूपा नालिका तत्र सद्भावना । ज्ञानदर्शनरूपाणि तत्र पुष्पाणि, स्वर्गापवर्गरूपाणि फलानि । देवलोके यत् सुखं, यच्च सिद्धावस्था प्राप्तस्यानन्तसुखं, तदेव तत्फलरसः, इति ॥ सू० १२ ॥

मूलम्–तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्तेसमाणे थावच्चापुत्तं एव वयासी–एएण देवाणुप्पिया ! दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं, तएणं मे थावच्चापुत्ते कण्ह वासुदेव एव वयासी जइण एए दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का जाव नन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएण त इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अन्नाणमिच्छत्त अविरइकसायसचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए ॥ सू० १३ ॥

टीका—' तएण से कण्हे ' इत्यादि । ततः=तदनन्तर खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्यापुत्रेणेत्थमुक्तः सन् स्थापत्यापुत्रम् एव=वक्ष्माणप्रकारेण अवादीत्–

समाधि रूप कल्पतरू उत्पन्न होता है और बढता है । वैराग्यरूप जल के आने के लिये मार्गरूप नाली के समान वहा सद्भावना है । ज्ञान रूप वहाँ पुष्प हैं। स्वर्ग एव अपवर्ग (मोक्ष रूप इसके फल है देवलोक में जो सुख है तथा सिद्धावस्था प्राप्त जीव को जो अनन्त सुख है वही सब इसके फलों का रस है ॥ सू० १२ ॥

' तएण से कण्हे वासुदेवे ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे उन कृष्ण वासुदेव ने (थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे) स्थापत्या पुत्र के इस प्रकार कहने पर (एव वयासी) उससे ऐसा कहा–(एएण देवाणुप्पिया !

જળના સિંચનથી સમાધિરૂપી કલ્પતરુ ઉત્પન્ન થાય છે અને વધે છે વૈરાગ્યરૂપી પાણીને લાવવામાટે સદ્ભાવનાઓરૂપી નાળી છે જ્ઞાન દર્શન જ ત્યા પુષ્પ છે દેવલોકમાનુ સુખ તેમજ સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત જીવને જે અનત સુખ છે તેજ આ બધા ફળોનો રસ છે ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

(तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥)

टीकार्थ—(तएण) त्यार पछी (से कण्हे वासुदेवे) કૃષ્ણ વાસુદેવે (थावच्चा पुत्तेण एव वुत्ते समाणे) स्थापत्या पुत्रनी आ वात साभळीने (एव वयासी)

मुष्टु ' इति मन्यते, पुत्रादयोऽपि नादियन्ते । जराज्वाला-श्वासकासधूमैर्जीवं व्याकुलयन्ती यस्मिन् शरीरे प्रज्वलति, तद् भस्मसाद् करोति। जरा खलु सर्वापदामास्पदं प्रबलानलशिखेव सकलसुखमनोरथविनाशिनी । अहमधिकेन मृत्यु जरादि संसारस्वभावचिन्तनेन । मृत्युजरानलप्रतप्तस्य मम निष्क्रमणमेव शरण भविष्यति, यतः—

संसारमहारण्ये मनुष्यदेहः खलु समाधिरूपस्य कल्पतरो क्षेत्रम्। तच्च विशिष्ट पुण्यपुञ्जरूपहलेन कृष्टम् । निष्क्रमण तस्य वृक्षस्य बीजम् । वैराग्यजलाभिषेकेण

डालता है । भक्षित विष की तरह तुरत ही शरीर को नष्ट कर देती है भार्या भी जरावस्थापन्नपुरुष को " यह उष्ट्र है " ऐसा मानने लगती है। पुत्रादिक उसका अपमान करने लगजाते है। वे इसका जरा भी सन्मान नही करते। यह जरारूपी ज्वाला श्वास कासरूपी धूम से जीव को व्याकुल करती हुई जिस शरीर मे प्रज्वलित होजाती है उसे भस्मसात ही कर डालती है। यह जरावस्था समस्त आपत्तियो का एक स्थान है। प्रबल अग्नि की ज्वाला के समान समस्त सुखों के मनोरथो को नाश करने वाली है। मृत्यु, जरा, आदि रूप संसार के स्वाभाव के चिन्तवन से अब बस रहो। मृत्यु तथा जरा रूप वह्नि की शिखा से प्रतप्त हुए मुझे तो अब निष्क्रमण (दीक्षा) ही एक शरण भूत होगा। कारण संसाररूप इस गहनवन मे यह मनुष्य देह समाधि रूप कल्पवृक्ष का क्षेत्र है। यह विशिष्ट पुण्य पुजरूप हल से जोता गया है। निष्क्रमण (दीक्षा) उस वृक्ष का बीज है वैराग्यरूप जल के सिंचन से

શિથિલ કરીનાખે છે આધેલા વિષની જેમ તે શરીરને જલ્દી નષ્ટ કરે છે પત્ની પણ ઘરડા પુરુષને 'આ ઉટ છે' એમ માને છે પુત્ર વગેરે પણ તેમને તિરસ્કારે છે તેઓ થોડુપણ તેમનુ સન્માન કરતા નથી આ ઘડપણની જવાળા શ્વાસ, કાસરૂપી ધુમાડાથી જીવને વ્યાકુળ કરીને જે શરીરમા સળગી ઉઠે છે તેને ભસ્મીભૂત કરી નાખે છે ઘડપણ બધી આફતોનુ એકમાત્ર સ્થાન છે વિકરાળ અગ્નિની જવાળાઓની પેઠે બધા સુખોનો તેમજ મનોરથોનો મૃત્યુ નાશ કરનારુ છે મૃત્યુ ઘડપણ વગેરે ના સ્વભાવ વાળા આ જગત વિષે મારે હવે કઈ વિચાર કરવો નથી મૃત્યુ તેમજ ઘડપણ રૂપી અગ્નિની જવાળાઓથી સતપ્ત થયેલા મારામાટેતો હવે નિષ્ક્રમણ એટલે કે - દીક્ષાગ્રહણ કરવી-જ શરણ ભૂત થશે કેમકે સંસારરૂપી ભયકર વનમા આ મનુષ્ય શરીર સમાધિ રૂપી કલ્પવૃક્ષનુ ક્ષેત્ર છે આ વિશિષ્ટ પ્રકારના ઉત્તમ પુણ્યરૂપી હળથી ખેડવામા આવ્યુ છે નિષ્ક્રમણ (દીક્ષા) તે વૃક્ષનુ (કલ્પવૃક્ષનુ) બી છે વૈરાગ્યરૂપી

समाधिरूपः कल्पतरुत्पद्यते च । वैराग्यजलाऽऽगमनमार्गरूपा नालिका तत्र सद्भावना । ज्ञानदर्शनरूपाणि तत्र पुष्पाणि, स्वर्गापवर्गरूपाणि फलानि । देवलोके यत् सुखं, यच्च सिद्धावस्थां प्राप्तस्यानन्तसुखं, तदेव तत्फलरसः, इति ॥ सू० १२ ॥

मूलम्–तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एव वुत्तेसमाणे थावच्चापुत्त एव वयासी–एएण देवाणुप्पिया ! दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं, तएणं मे थावच्चापुत्ते कण्ह वासुदेव एव वयासी जइण एए दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का जाव नन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएण तइच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अन्नाणमिच्छत्त अविरइकसायसचियस्स अत्तणो कम्मक्खय करित्तए ॥ सू० १३ ॥

टीका—' तएण से कण्हे ' इत्यादि । ततः=तदनन्तरं खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्यापुत्रेणेवमुक्तः सन् स्थापत्यापुत्रम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्–

समाधि रूप कल्पतरू उत्पन्न होता है और बढता है । वैराग्यरूप जल के आने के लिये मार्गरूप नाली के समान वहा सद्भावना है । ज्ञान रूप वहाँ पुष्प हैं। स्वर्ग एव अपवर्ग (मोक्ष रूप इसके फल है देवलोक में जो सुख है तथा सिद्धावस्था प्राप्त जीव को जो अनन्त सुख है वही सब इसके फलों का रस है ॥ सू० १२ ॥

' तएण से कण्हे वासुदेवे ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे उन कृष्ण वासुदेव ने (थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे) स्थापत्या पुत्र के इस प्रकार कहने पर (एव वयासी) उससे ऐसा कहा–(एएण देवाणुप्पिया !

જળના સિંચનથી સમાધિરૂપી કલ્પતરુ ઉત્પન્ન થાય છે અને વધે છે વૈરાગ્યરૂપી પાણીને લાવવામાટે સદ્ભાવનાઓરૂપી નાળી છે જ્ઞાન દર્શન જ ત્યા પુષ્પ છે દેવલોકમાનુ સુખ તેમજ સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત જીવને જે અનત સુખ છે તેજ આ બધા ફળોનો રસ છે ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

(तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥)

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યાર પછી (से कण्हे वासुदेवे) કૃષ્ણ વાસુદેવે (थावच्चा पुत्तेण एव वुत्ते समाणे) સ્થાપત્યા પુત્રની આ વાત સાભળીને (एव वयासी)

हे देवानुप्रिय ! एते मृत्युजरादयः खलु दुरतिक्रमणीयाः=दुःपरिहरणीया, दुर्निवारा इत्यर्थः । एयमेवार्थं स्पष्टीकुर्वन्नाह—' णो खलु सक्का ' इत्यादि । नो खलु शक्या सुबलिकेन अनन्तबलवता देवेन=तीर्थंकरेणाऽपि, यद्वा—महाबलवता केनापि देवेन, दानवेन वा निवारयितुं निवर्तयितुं नो खलु शक्याः, मृत्युजरादय इत्यन्वयः । देवो वा दानवो वा मृत्युजरादीन रिपून् वारयितुं समर्थो नास्तीत्यर्थः । नान्यत्रात्मन कर्मक्षयेण आत्मसचितसकलकर्मक्षय विनाऽन्योपायेन मृत्युजरादि परिहारो नैव भविष्यतीति भावः ।

ततः खलु स स्थापत्यापुत्रः कृष्णवासुदेवमेवमवादीत्—यदि खलु एते दुरतिक्रमणीया नो खलु शक्या'-यावत्—यावत्करणादत्र—' सुबलिकेन देवेन दान-

---

दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएण) हे देवानुप्रिय ! ये मृत्यु जरा आदि दुरतिक्रमणीय हैं दुःपरिहरणीय हैं। इसका निवारण करना संसारावस्था जीव के लिये सर्वथा अशक्य है। इसी अर्थ को सूत्रकार स्पष्ट करते हुए कह रहे हैं कि सुबलिक अनन्त बल के स्वामी तीर्थंकर देव भी अथवा महाबलवान कोई भी देव या दानव इन मृत्यु जरा आदि को को निवारण करने के लिये सामर्थ्य शाली नहीं हो सके हैं। केवल आत्म संचित सकल कर्मों का क्षय ही एक ऐसा उपाय है जो इनका निवारण कर सकता है। इनके सिवाय और कोई दूसरा उपाय नहीं है। (तएणं से जावच्चापुत्ते कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) कृष्ण वासुदेव की इस बात को सुनकर स्थापत्यापुत्र ने तब उन से इस प्रकार कहा— (जइणं एए दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का जाव न-

---

तेभणे કહ્યું (एए ण देवाणुप्पिया ! दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिणा वि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएण) હે દેવાનુપ્રિય ! આ મૃત્યુ વગેરે દુરતીક્રમણીય છે સંસારમાં રહેતા પ્રાણીને માટે તેનું નિવારણ અશક્ય છે " સૂત્રકાર અહીં એજ અર્થને સ્પષ્ટ કરતા કહે છે કે સુબલિક એટલે કે અનન્ત બળશાળી તીર્થંકર દેવ અથવા તો મહાબળવાન કોઇ દેવ કે દાનવ પણ આ મૃત્યુ ઘડપણ વગેરે ને દૂર કરવાનું સામર્થ્ય ધરાવી શકયા નથી ફકત આત્મ સંચિત સકળ કર્મોનો ક્ષયજ એક માત્ર ઉપાય છે કે જે આ મૃત્યુ ઘડપણ વગેરેનુ નિવારણ કરી શકે એના સિવાય બીજા કોઇ ઉપાય અમને દેખાતા નથી (तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) કૃષ્ણ વાસુદેવની આ વાત સાભળીને સ્થાપત્યા પુત્રે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું (जइणं एए दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का जाव नन्नत्थ

वेन वा निवारयितुम् ' इति पूर्वोक्तपाठस्य सग्रहः । अन्यत्रात्मनः कर्मक्षयेण, तद्=तस्मात्, हे देवानुप्रिय ! ' अन्नाणमिच्छत्त अविरइ-कसायसचियस्स ' अज्ञानमिथ्यात्वाविरतिकषायसञ्चितस्य=अज्ञानम्—ज्ञानावरणीयोदयजनितात्मपरिणामरूप संशयविपर्ययादिरूपम् मिथ्याज्ञान, मिथ्यात्व=मिथ्यात्वमोहनीयोदयजनितात्मपरिणामरूप तत्त्वार्थाश्रद्धान कुदेवादिषु सुदेवादिबुद्धिर्वा, अविरतिः=विरतेर्विपरीताऽविरति, अनिवृत्ति हिंसादि पापस्थानेभ्यो परिणामाभाव, सावद्य प्रवृत्तिरित्यर्थः । कषाया =क्रोधमानादय, तैः सचितस्य युक्तस्य आत्मनः कर्म क्षय ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्मणा नाश कर्तुमिच्छामि खलु इत्यन्वय ॥ सू० १३ ॥

अप्पणो कम्मक्खएण त इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अन्नाणमिच्छत्त अविरइकसाय सचियस्स अत्तणो कम्मक्खय करित्तए) यदि ये जन्म जरा आदि दुरतिक्रमणीय हैं इन्हें दूर करने के लिये सुबलिक देव दानव भी समर्थ नहीं हैं केवल कर्म क्षय ही इनकी निवृत्ति का उपाय है-जब ऐसी बात है तो हे देवानुप्रिय ! मैं ज्ञानावरणीय के उदय से जनित आत्म परिणामरूप अज्ञान से-संशय विपर्यय आदि रूप मिथ्या ज्ञान से-मिथ्यात्व मोहनीय के उदय से जनित तत्त्वार्थ अश्रद्धा न रूप आत्मपरिणाम से-अथवा कुदेव आदि में सुदेव आदि की विपरीताभिनिवेश रूप बुद्धि से हिंसादिक पापस्थानो से अनिवृत्ति रूप परिणाम से सावद्य कार्यो में प्रवृत्ति से क्रोध मान आदि रूप कषायों से सचित किये गये इन ज्ञानावरणीय आदि रूप आठ प्रकार के कर्मो को क्षय करने की इच्छा कर रहा हूँ । सूत्र " १३ '

अप्पणो कम्मक्खएण त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! अन्नाणमिच्छत्त अविरइ कसाय सचियस्स अत्तणो कम्मक्खय करित्तए) જો એ જન્મ જરા (ઘડપણ) વગેરે દુસ્તી ક્રમણીય છે, એમનાથી મુક્તિ મેળવવાની સુબલિક દેવ દાનવ પણ સામર્થ્ય ધરાવતા નથી ફક્ત કર્મ-ક્ષય જ એમની નિવૃત્તિનો ઉપાય છે, ત્યારે હે દેવાનુપ્રિય ! હું જ્ઞાનાવરણીયના ઉદયથી જનિત આત્મપરિણામરૂપ અજ્ઞાનથી સંશય વિપર્યય વગેરેના મિથ્યા જ્ઞાનથી, મિથ્યાત્વ મોહનીય ના ઉદયથી જનિત તત્ત્વાર્થ અશ્રદ્ધાન રૂપ આત્મ પરિણામથી, અથવા તો કુદેવ વગેરેમાં સુદેવ વગેરેની વિપરીતાભિનિવેશરૂપ બુદ્ધિથી, હિંસાવગેરે પાપના સ્થાનોથી, અનિવૃત્તિરૂપ પરિણામથી, સાવદ્ય કામોમાં પ્રવૃત્તિથી ક્રોધ, માન વગેરે કષાયોથી સંચિત કરવામાં આવેલા જ્ઞાનાવરણીય વગેરે ના આઠ પ્રકારના કર્મોનો ક્ષય ચાહું છું ॥ સૂત્ર ૧૩ ॥

मूलम्—तएण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया! वारवइए नयरीए सिंघाडगतियग चउक्कचच्चर जाव हत्थिखधवरगया महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ उग्घोसणं करेह—

एवं खलु देवानुप्पिया! थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं इच्छइ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुवियमाडविय इब्भसेट्ठि- सेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्त पव्वयतमणुपव्वयंति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ, पच्छातुरस्सवि य से मित्तनाइ। नियगसबधि परिजणस्स जोगखेम वट्टमाण पडिवहति त्तिकट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसति ॥सू०१४॥

टीका—'तएण से कण्हे' इत्यादि। तत खलु स कृष्णनामा वासुदेवः स्थापत्यापुत्रेणैवमुक्त सन् कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्रियाः। यूय गच्छत द्वारवत्या नगर्या

'तएण से कण्हे वासुदेवे' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्ण वासुदेव जब (थावच्चा पुत्तेण) स्थापत्या पुत्र के द्वारा (एव वुत्ते समाणे) इस प्रकार कहने पर उन्हों ने (कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—

(तएण से कण्हे वासुदेवे) ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારબાદ (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણ વાસુદેવને જ્યારે (थावच्चापुत्तेण) સ્થાપત્યા પુત્રે (एव वुत्त समाणे) આ રીતે કહ્યુ ત્યારે તેમણે (कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता,

शृङ्गाटकत्रिक चतुष्कचत्वरेषु यावत्-महापथेषु=राजमार्गेषु 'हत्थिक्खधवरगया' हस्तिस्कन्धवरगता गजस्कन्धारूढा महता महता शब्देन उद्घोषयन्तः २ ब्रुवन्त उद्घोषणं कुरुत । तदुद्घोषणस्वरूपमाह-'एव खलु' इत्यादि ।

एव खलु हे देवानुप्रियाः ! अय स्थापत्यापुत्र संसारभयोद्विग्नः भीतो जन्ममरणेभ्य' अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुमिच्छति, तद् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिया' ! य. कश्चित् खलु-राजा वा युवराजो वा देवी=राज्ञी वा राजकुमारो वा ईश्वरो वा तत्रवरो वा कौटुम्बिकमाडम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति-

(गच्छह ण देवाणुप्पिया बारवइए नयरीए सिंघाडग तियग चउक्कच च्चरजाव हत्थिखधवरगया महया महया सद्देण उग्घोसेमाणा२ उग्घोसणा करेह) हे देवानुप्रियो । तुम जाओ और द्वारावती नगरी के शृंगाटक, त्रिक,चतुष्क, चत्वर यावत्-आदि-महापथोंमे-राजमार्गों में- हाथी के स्कन्ध पर चढे हुए तुम सब लोग बडे जोर २ बोलते हुए ऐसी घोषणा करो (एव खलु देवानुप्पिया । थावच्चा पुत्ते ससार भउव्विग्गे भीए जम्म मरणा ण इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडेभवित्ता पव्वइत्तए) हे देवानुप्रियों ! सुनो-यह स्थापत्यापुत्र संसार के भय से उद्विग्न तथा जन्ममरण से भयभीत होकर अर्हंत अरिष्टनेमिप्रभु के पास मुडित बन दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा कर रहा हैं-(त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुबिय माडबिय इब्भसेट्ठिसेणावइ सत्थवाहे वा थावच्चापुत्ते पव्वयतमणुपव्वयति तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ) सो हे देवानुप्रियो ! जो कोई राजा,

एव वयासी) અને બોલાવીને તેમને કહ્યું-(गच्छह ण देवाणुप्पिया ! बारवइए नयरीए सिंघाडगतियगचउक्कचच्चर जाव हत्थिखधवरगया महया महया सद्देण उग्घोसेमाणा २ उग्घोसण करेह) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને દ્વારવતી નગરીના શૃંગાટક ત્રિક ચતુષ્ક, ચત્વર વગેરે મહાપથોમા, રાજમાર્ગોમા હાથી ઉપર સવાર થયેલ તમે બધા મોટા સાદે આમ ઘોષિત કરો-(एव खलु देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्भमरणाण इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) હે દેવાનુપ્રિયો! સાભળો આ સ્થાપત્યાપુત્ર સસારભયથી વ્યાકુળ તેમજ જન્મ અને મૃત્યુથી ભયત્રસ્ત થઇને અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પાસે મુડિત થઇને દીક્ષાગ્રહણ કરવાની ઇચ્છા રાખે છે (त जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा जुवरा या वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरेवा कोडुबिय माडबिय इब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहेवा थाव च्चापुत्त पव्वयतमणुपव्वयति तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ) તો હે

मूलम्—तएण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एव वुत्ते समाणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया! वारवइए नयरीए सिंघाडगतियग चउक्कचच्चर जाव हत्थिखधवरगया महया महया सद्देण उग्घोसेमाणा २ उग्घोसणं करेह—

एवं खलु देवानुप्पिया ! थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं इच्छइ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुवियमाडविय इब्भसेट्ठि- सेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्त पव्वयतमणुपव्वयाति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ, पच्छातुरस्सवि य से मित्तनाइ । नियगसबधि परिजणस्स जोगखेम वट्टमाण पडिवहति त्तिकट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसति ॥सू०१४॥

टीका—' तएण से कण्हे ' इत्यादि । तत खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्यापुत्रेणैवमुक्त सन् कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्रिया' । यूय गच्छत द्वारवत्या नगर्यां

' तएण से कण्हे वासुदेवे ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्ण वासुदेव जब(थावच्चा पुत्तेण) स्थापत्या पुत्र के द्वारा (एव वुत्ते समाणे) इस प्रकार कहने पर उन्हों ने (कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरूषों को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—

(तएण से कण्हे वासुदेवे) ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારબાદ (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણ વાસુદેવને જ્યારે (थावच्चापुत्तेण) स्थापत्या પુત્રે (एव वुत्त समाणे) આ રીતે કહ્યુ ત્યારે તેમણે (कौडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता,

शृङ्गाटकत्रिक चतुष्कचत्वरेषु यावत्-महापथेषु=राजमार्गेषु 'हत्थिक्खधवरगया' हस्तिस्कन्धवरगता गजस्कन्धारूढा. महता महता शब्देन उद्घोषयन्तः २ ब्रुवन्त उद्घोषणं कुरुत । तदुद्घोषणस्वरूपमाह-'एव खलु' इत्यादि ।

एव खलु हे देवानुप्रियाः ! अय स्थापत्यापुत्र ससारभयोद्विग्नः भीतो जन्ममरणेभ्यः अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुमिच्छति, तद् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिया ! यः कश्चित् खलु-राजा वा युवराजो वा देवी=राज्ञी वा राजकुमारो वा ईश्वरो वा तलवरो वा कौटुम्बिकमाडम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति-

(गच्छह ण देवाणुप्पिया बारवइए नयरीए सिंघाडग तियग चउक्कचच्चरजाव हत्थिक्खधवरगया महया महया सद्देण उग्घोसेमाणा२ उग्घोसणं करेह) हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और द्वारावती नगरी के शृगाटक, त्रिक,चतुष्क, चत्वर यावत्-आदि-महापथोमे-राजमार्गों में- हाथी के स्कन्ध पर चढे हुए तुम सब लोग बडे जोर २ बोलते हुए ऐसी घोषणा करो (एव खलु देवानुप्पिया ! थावच्चा पुत्ते ससार भउव्विग्गे भीए जम्म मरणा ण इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे देवानुप्रियों ! सुनो-यह स्थापत्यापुत्र ससार के भय से उद्विग्न तथा जन्ममरण से भयभीत होकर अर्हंत अरिष्टनेमिप्रभु के पास मुडित बन दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा कर रहा है-(त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुबिय माडबिय इब्भसेट्ठिसेणावइ सत्थवाहे च थावच्चापुत्ते पव्वयतमणुपव्वयति तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ) सो हे देवानुप्रियो ! जो कोई राजा,

एव वयासी) અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ-(गच्छह ण देवाणुप्पिया ! बारवइए नयरीए सिंघाडगतियगचउक्कचच्चर जाव हत्थिखधवरगया महया महया सद्देण उग्घोसेमाणा २ उग्घोसण करेह) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને દ્વારવતી નગરીના શૃગાટક ત્રિક ચતુષ્ક, ચત્વર વગેરે મહાપથોમા, રાજમાર્ગોમા હાથી ઉપર સવાર થયેલ તમે બધા મોટા મોટા શબ્દે આમ ઘોષિત કરો-(एव खलु देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्ममरणाण इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) હે દેવાનુપ્રિયો આ સાભળો આ સ્થાપત્યાપુત્ર સસારભયથી વ્યાકુળ તેમજ જન્મ અને મૃત્યુથી ભયત્રસ્ત થઇને અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પાસે મુડિત થઈને દીક્ષાગ્રહણ કરવાની ઇચ્છા રાખે છે (त जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा जुवरा या वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरेवा कोडुबिय माडबिय इब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहेवा यावच्चापुत्त पव्वयतमणुपव्वयति तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ) તો હે

सार्थवाहा स्थापत्यापुत्र प्रव्रजन्तमनुप्रव्रजति स्थापत्यापुत्रेण सह यः कोऽपि निष्क्रमण कर्तुमिच्छति तस्मै खलु कृष्णवासुदेव 'अणुजाणइ' अनुजानाति, आज्ञा ददाति। 'पच्छाउरस्सवि' पश्चादातुरस्यापि च-पश्चात् आतुरस्य=द्रव्याद्यभावाद् दुःखितस्य तस्य=तत्सम्बन्धिनः मित्रज्ञातिनिजकसम्बन्धिपरिजनस्य 'जोगखेम' योगक्षेम अलब्धलाभो योग लब्धपरिरक्षण क्षेम तयोः समाहारद्वन्द्व योगक्षेम वर्तमान प्रतिवहति ये प्रव्रज्याया प्रवृत्ता भविष्यन्ति, तत्सम्बन्धिमित्रादीना यत् खलु योगक्षेमरूपकार्यं कर्तव्यतया वर्तते, तत् सर्वं कृष्णवासुदेवः सपादयिष्यतीत्यर्थ। इति कृत्वा इत्येव विज्ञापन मनसि निधाय घोषणा=वार्तारूपा, घोषयत ययेय वार्ता द्वारावतीनगरी निवासिना सर्वेषा कर्णगता भवेत्,

---

युवराज, देवी, राज्ञी, राजकुमार ईश्वर, तलवर, कौटुम्बिक, माण्डविक, इभ्यश्रेष्ठी, सेनापति अथवा सार्थवाह स्थापत्यापुत्र के साथ दीक्षा लेना चाहते हो उसलिये कृष्णवासुदेव आज्ञा प्रदान करते हैं (पच्छातुरस्स विय से मित्तनाईनियगसंबंधिपरिजणस्स जोगखेम वट्टमाण पडिवहति त्ति कट्टु घोसेह जाव घोसति) जो दीक्षा लेनेवाले के कुटुंबी जन किसी भी प्रकार से दुःखी होंगे तो उनके सबधी मित्र, ज्ञाति, निजक, सबधी परिजन के योग क्षेम को भी कृष्ण वासुदेव करेंगे तात्पर्य इसका यह है कि जो जन प्रव्रज्या में प्रवृत्त होंगे उनके सम्बन्धी मित्रादिको का जो कर्तव्यतया योग-अलब्ध का लाभ, क्षेम-लब्ध का परिरक्षण रूप कार्य होगा वह सब कृष्ण वासुदेव सपादित करेगा " इस प्रकार की इस घोषणा को हे देवानुप्रियो ! तुम अपने चित्त में अच्छी तरह धारण कर जिस प्रकार यह बात द्वारावती नगरी

દેવાનુપ્રિયો ! જે કોઇ રાજા, યુવરાજ, દેવી, રાજકુમાર, ઈશ્વર, તલવર કૌટુંબિક, માડંબિક ઈભ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ કે સાર્થવાહ સ્થાપત્યાપુત્રની સાથે દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ચાહે છે તેમના માટે કૃષ્ણ વાસુદેવ દીક્ષા સ્વીકારવાનિ આજ્ઞા પ્રદાન કરે છે (पच्छातुरस्स वि य से मित्तनाईनियगसबधिपरिजणस्स जोगखेम वट्टमाण पडिवहति त्ति कट्टु घोसण घोसेह जाव घोसति) દીક્ષાલેનાર કુટુંબીઓ જો તેમની દીક્ષાબાદ ગમેતે પ્રકારે દુઃખી હશે તો તેમના સબંધી, મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક સબંધી પરિજનોનુ યોગક્ષેમ પણ કૃષ્ણ વાસુદેવ કરશે આનો ભાવાર્થ એ પ્રમાણે છે કે જે માણસો પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરશે તેમના સબંધી મિત્ર વગેરેનુ જે કર્તવ્યતયાયોગ-અલબ્ધનો લાભ, ક્ષેમ-લબ્ધનુ પરિરક્ષણરૂપ કાર્ય થશે-ને બધુ કૃષ્ણ વાસુદેવ પુરૂ કરશે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ ઘોષણાને તમે સારીપેઠે ચિત્તમા ધારણ કરો જેથી દ્વારાવતી નગરીના દરેકે દરેક માણસ

तथोच्चैः स्वरेण दुन्दुभ्यादिवाद्यैः सह भाषण कुरुतेत्यर्थः । यावद् घोषयन्ति । कृष्णवासुदेवस्यादेशानुसारेण आदेशकारिणः पुरुषाः द्वारावत्यां नगर्यां घोषणा कृतवन्त इत्यर्थः ॥ सू० १४ ॥

मूलम्—तएण थावच्चापुत्तस्स अणुराएण पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुह ण्हाय सव्वालंकारविभूसिय पत्तेय २ पुरिस-सहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समाणं मित्तणाइपरिवुड थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भूय, तएण से कण्हे वासुदेवे पुरि-ससहस्समतिय पाउब्भवमाण पासइ, पासित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी—

जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहि (कलसेहि) ण्हावेइ, ण्हावित्ता जाव अरहतो अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडा-गातिपडाग पासइ, पासित्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पच्चोरुहइ ॥ सू० १५ ॥

टीका—'तएण' इत्यादि । स्थापत्यापुत्रस्य अनुरागेण=स्नेहेन पुरुषसहस्र निष्क्रमणाभिमुख स्नात सर्वालङ्कारविभूषित प्रत्येक प्रत्येक पुरुषसहस्रवाहिनीषु

के समस्त मनुष्यो के कर्ण गोचर हो सके इस तरह से बडे २ जोर से दुदुभि आदि बाजो के साथ करो । इस तरह कृष्णवासुदेव की इस आज्ञा को उन आदेश कारीपुरुषो ने प्रमाणभूत मान कर उसे द्वारावती नगरी मे घोषित करके सुना दिया । सूत्र "१४"

'तएण थावच्चा पुत्तस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (थावच्चापुत्तस्स अणुराएण) स्थापत्य पुत्र के अनुराग से (पुरिससहस्स) १ हजार पुरुष (निक्खमणाभि

સુધી આ વાત સારી રીતે પહોચી રહે તમે મોટેથી દુદુભિ વગેરે વાજાઓ વગાડો અને આ વાતની ઘોષણા કરો કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞાને કૌટુંબિક પુરુષોએ સપ્રમાણ માનીને દ્વારાવતી નગરીમા તેની ઘોષણા કરી ॥ સૂત્ર ૧૪॥

(तएण थावच्चापुत्तस्स इत्यादि)

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારબાદ (थावच्चापुत्तस्स अणुराएण) સ્થાપત્યાપુત્ર પ્રત્યે વિશેષ પ્રેમ હોવાને કારણે (पुरिस सहस्स) એક હજાર પુરુષો (निक्ख

शिविकासु दुरूढ=समारूढ सत् मित्रज्ञातिपरिवृत स्थापत्यापुत्रस्य अन्तिके समीपे प्रादुर्भूतम् उपस्थितम्। तत खलु स कृष्णवासुदेवोऽन्तिके 'पाउब्भवमाण' प्रादुर्भवत् पुरुषसहस्र पश्यति, दृष्ट्वा कौटुम्बिकपुरुषान्आदेशकारिण' पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-यथा मेघस्य निष्क्रमणाभिषेक, तथैव 'सेयापीएहिं' श्वेतपीतै. जलपूर्णैहैम्यसुवर्णमयैः कलशैः कृष्णवासुदेवः दीक्षोत्सुक पुरुषसहस्रसहित-स्थापत्यापुत्र स्नपयति, स्नपयित्वा यावदलङ्कारविभूषित कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनी शिविकामारोह्य कृष्णवासुदेव द्वारावतीनगरीम यभागेन गत्वा अर्हतोऽरिष्टनेमेः छत्रोपरिछत्र छत्रत्रय, पताकातिपताका=पताकोपरिपताका पुरुषसहस्रै सह पश्यति। 'विज्जाहरचारणे' विद्याधरान्=

मुह) निष्क्रमण के सन्मुख हो गये अर्थात् दीक्षित होने के लिए तैयार हो गये (ण्हाय) उन्होंनेस्नात करके (सव्वालकरविभूसिय) सब प्रकार के अलकारो से अपने २ शरीर को विभूषित किया (पत्तेय २पुरिससहस्सवाहिणीसु सिबियासु दुरूढ समाण मित्तणाइपरिवुड) बाद में मित्रा दि परिजनो से युक्त हुआ प्रत्येक व्यक्ति उन मेसे १ हजार पुरूषों को वहन करनेवाली शिविकापर आरूढ होकर (थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भूय) स्थापत्या पुत्र के पास आया । (तएण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समतिय पाउब्भवमाण पासइ) जब कृष्ण वासुदेव ने पुरुष सहस्रको स्थापत्यापुत्र के पास आया हुआ देखा तो (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) देखकर उन्होने कौटुम्बिक पुरूषों को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा—(जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेया पीएहिं ण्हावेइ, ण्हावित्ता जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्त पडागाइपडाग पासइ – पासित्ता

मणाभिमुह) निष्क्रमण (दीक्षा) माटे तैयार थई गया (ण्हाय) तेओ नहाया, (सव्वालकरविभूसिय) બધી જાતના ઘરેણાઓથી તેમને પોતાના શરીર શણગાર્યા (पत्तेय २ पुरिससहस्सवाहिणीसु सिबियासु दुरूढ समाण मित्तणाई परिवुड) ત્યાર બાદ મિત્ર વગેરે પરિજનોની સાથે તેઓમાથી દરેક દીક્ષાર્થી એક હજાર પુરુષો વહન કરે એવી પાલખી ઉપર સવાર થઇને (थावच्चा पुत्तस्स अतिय पाउब्भूय) સ્થાપત્યા પુત્રની પાસે આવ્યો (तएण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समतिय पाउब्भवमाण पासइ) કૃષ્ણવાસુદેવે જ્યારે એકહજાર પુરુષોને સ્થાપત્યાપુત્રને ત્યા આવેલા જોયા (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) તેમણે કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને તેમને કહ્યુ (जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्त पडागाइपडाग पासइ पासित्ता विज्जा

चारणश्रमणान् यावत्–अत्र 'जभए य देवे ओवयमाणे' इत्यादि पाठोऽनुसन्धेयः, जृम्भकदेवाश्च गगनादवतरतः पश्यति, दृष्ट्वा शिबिकात 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति अवतरति ॥ १५ ॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्त पुरओ काउं जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेस सव्वं तं चेव आभरण० तएणं से थावच्चागाहावइणा हसलक्खणेणं पडगसाडएण आभरणमल्लालकारे पडिच्छइ, हारवारि धारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाति असूणि विणिम्मुचमाणी २ एव वयासी–

विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सिबियाओ पच्चोरुहइ) जिस प्रकार मेघ कुमार का निष्क्रमणाभिषेक (दीक्षाका उत्सव) हुआ था उसी प्रकार जलपूर्ण श्वेतपीतकलशो द्वारा – रूप्यसुवर्णके घटों द्वारा कृष्णवासुदेव ने दीक्षा के उत्सुक – हजार पुरुष सहित स्थापत्यापुत्र का अभिषेक किया। अभिषेक कर के फिर उन्होने उसे सर्व प्रकारके अलकारोसे विभूषित किया। विभूषित करके फिरवे उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिविका पर आरूढ कराकर द्वारावती नगरी के ठीक बीचो बिच से होकर लेचले। चलते २ जब उन्हो ने अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के छत्रोपरिछत्र–तीन छत्रों को और पताको परिपताकाको पुरुषवृन्दो के साथ देखा–तथा विद्याधरों को चारण श्रमणो को आकाश से उतरते हुए जृभक देवो को देखा– तो देख कर वे शिविका से नीचे उतरे ॥ सू० १५ ॥

હારચારણે જાવ પાસિત્તા સિબિયાઓ પચ્ચોરુહઇ) જેમ મેઘકુમારનો નિષ્ક્રમણાભિષેક થયો તેમજ જળથી પરિપૂર્ણ સફેદ પીળા કળશો વડે તેમજ ચાદી સોનાના ઘડાઓ વડે કૃષ્ણવાસુદેવે દીક્ષાર્થી સ્થાપત્યા પુત્ર તેમજ તેની સાથેના એક હજાર પુરુષોનો અભિષેક કર્યો અભિષેક પછી તેમણે તેને બધા ઘરેણાઓથી શણગાર્યો શણગાર્યા બાદ તેઓ પુરુષ સહસ્ત્ર વાહિની પાલખી ઉપર સ્થાપત્યા પુત્રને બેસાડીને દ્વારાવતી નગરીની બરાબર વચ્ચે ના માર્ગે થઈને ચાલ્યા જતા જતા જ્યારે તેઓએ અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુના છત્ર ઉપર છત્ર આમ ત્રણ ઉપરા ઉપરી છત્રો, પતાકાની ઉપર પતાકાઓને તેમજ પુરુષ સમાજને જોયો અને વિદ્યાધરોને ચારણ શ્રમણોને આકાશમાર્થી નીચે ઉતરતા, તે જ જૃભકદેવોને જોયા ત્યારે જોઇને તેઓ પાલખી ઉપરથી નીચે ઉતરી પડયા ॥૧૫॥

शिविकासु दुरूढ=समारूढ सत् मित्रज्ञातिपरिवृत स्थापत्यापुत्रस्य अन्तिके समीपे प्रादुर्भूतम् उपस्थितम्। तत खलु स कृष्णवासुदेवोऽन्तिके 'पाउब्भवमाण' प्रादुर्भवत् पुरुषसहस्र पश्यति, दृष्ट्वा कौटुम्बिकपुरुषान्आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-यथा मेघस्य निष्क्रमणाभिषेक, तथैव 'सेयापीएहिं' श्वेतपीतै. जलपूर्णैरूप्यसुवर्णमयैः कलशैः कृष्णवासुदेवः दीक्षोत्सुक पुरुषसहस्रसहित-स्थापत्यापुत्र स्नपयति, स्नपयित्वा यावद्वस्त्रालङ्कारविभूषित कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकामारोह्य कृष्णवासुदेव द्वारावतीनगरीम यभागेन गत्वा अर्हतोऽरिष्टनेमे' छत्रोपरिछत्र उत्पश्य, पताकातिपताका=पताकोपरिपताका पुरुषवृन्दै सह पश्यति। 'विज्जाहरचारणे' विद्याधरचारणान् विद्याधरान्=

मुह) निष्क्रमण के सन्मुख हो गये अर्थात् दीक्षित होने के लिए तैयार हो गये (पहाय) उन्होंनेस्नात करके (सव्वालकरविभूसिय) सब प्रकार के अलकारो से अपने २ शरीर को विभूषित किया (पत्तेय २पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समाण मित्तणाइपरिवुड) बाद में मित्रा दि परिजनो से युक्त हुआ प्रत्येक व्यक्ति उन मेंसे १ हजार पुरुषों को वहन करनेवाली शिबिकापर आरूढ होकर (जावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भूय) स्थापत्या पुत्र के पास आया। (तएण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समतिय पाउब्भवमाण पासइ) जब कृष्ण वासुदेव ने पुरुष सहस्रको स्थापत्यापुत्र के पास आया हुआ देखा तो (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) देखकर उन्होने कौटुबिक पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा—(जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेया पीएहिं ण्हावेइ, ण्हावित्ता जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडाग पासइ – पासित्ता

मणाभिमुह) નિષ્ક્રમણ (દીક્ષા) માટે તૈયાર થઇ ગયા (ण्हाय) તેઓ નહાયા, (सव्वालकरविभूसिय) બધી જાતના ઘરેણાઓથી તેમને પોતાના શરીર શણગાર્યા (पत्तेय २ पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समाण मित्तणाई परिवुड) ત્યાર બાદ મિત્ર વગેરે પરિજનોની સાથે તેઓમાથી દરેક દીક્ષાર્થી એક હજાર પુરુષો વહન કરે એવી પાલખી ઉપર સવાર થઇને (थावच्चा पुत्तस्स अतिय पाउब्भूय) સ્થાપત્યા પુત્રની પાસે આવ્યો (तएण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समतिय पाउब्भवमाण पासइ) કૃષ્ણવાસુદેવે જ્યારે એકહજાર પુરુષોને સ્થાપત્યાપુત્રને ત્યા આવેલા જોયા (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) તેમણે કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને તેમને કહ્યુ (जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडाग पासइ पासित्ता विज्जा

चारणश्रमणान् यावत्-अत्र 'जभए य देवे ओवयमाणे' इत्यादि पाठोऽनुसन्धेय', जृम्भकदेवाश्च गगनादवतरतः पश्यति, दृष्ट्वा शिबिकात ' पच्चोरुहइ ' प्रत्यवरोहति अवतरति ॥ १५ ॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेस सव्व तं चेव आभरण० तएणं से थावच्चागाहावइणा हसलक्खणेणं पडगसाडएण आभरणमल्लालकारे पडिच्छइ, हारवारिधारच्छिन्नमुत्तावलिप्पगासाति अस्सूणि विणिम्मुचमाणी २ एव वयासी-

---

विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सिबियाओ पच्चोरुहइ) जिस प्रकार मेघ कुमार का निष्क्रमणाभिषेक (दीक्षाका उत्सव) हुआ या उसी प्रकार जलपूर्ण श्वेतपीतकलशो द्वारा - रूप्यसुवर्णके घटों द्वारा कृष्णवासुदेव ने दीक्षा के उत्सुक - हजार पुरुष सहित स्थापत्यापुत्र का अभिषेक किया। अभिषेक कर के फिर उन्होने उसे सर्व प्रकारके अलकारोसे विभूषित किया। विभूषित करके फिरवे उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिविका पर आरूढ कराकर द्वारावती नगरी के ठीक बीचो बिच से होकर लेचले। चलते २ जब उन्हो ने अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के छत्रोपरिछत्र-तीन छत्रों को और पताको परिपताकाको पुरुषवृन्दो के साथ देखा-तथा विद्याधरों को चारण श्रमणो को आकाश से उतरते हुए जृभक देवों को देखा-तो देख कर वे शिविका से नीचे उतरे ॥ सू० १५ ॥

हरचारणे जाव पासित्ता सिबियाओ पच्चोरुहइ) જેમ મેઘકુમારનો નિષ્ક્ર મણાભિષેક થયો તેમજ જળથી પરિપૂર્ણ સફેદ પીળા કળશો વડે તેમજ ચાંદી સોનાના ઘડાઓ વડે કૃષ્ણવાસુદેવે દીક્ષાર્થી સ્થાપત્યા પુત્ર તેમજ તેની સાથેના એક હજાર પુરુષોનો અભિષેક કર્યો અભિષેક પછી તેમણે તેને બધા ઘરેણાઓથી શણગાર્યો શણગાર્યા બાદ તેઓ પુરુષ સહસ્ર વાહિની પાલખી ઉપર સ્થાપત્યા પુત્રને બેસાડીને દ્વારાવતી નગરીની બરાબર વચ્ચે ના માર્ગે થઈને ચાલ્યા જતા જતા જ્યારે તેઓએ અર્હત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુના છત્ર ઉપર છત્ર આમ ત્રણ ઉપરા ઉપરી છત્રો, પતાકાની ઉપર પતાકાઓને તેમજ પુરુષ સમાજને જોયો અને વિદ્યાધરોને ચારણ શ્રમણોને આકાશમાર્ગથી નીચે ઉતરતા, તે જ જૃભકદેવોને જોયા ત્યારે જોઇને તેઓ પાલખી ઉપરથી નીચે ઉતરી પડયા ॥૧૫॥

जइयव्वं जाया ! घडियव्व जाया ! परिक्कमियव्व जाया ! अस्सि च णं अट्ठे णो पमाएयव्व जामेवादिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० १६ ॥

' तएणं से कण्हे ' इत्यादि ।

टीका—ततः खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्यापुत्रं पुरतः ' काउ ' कृत्वा यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः, तत्रैवोपागच्छति अवमुञ्चति । उपागत्य शेषं सर्वं तदेव शेषम्=आदक्षिणप्रदक्षिणादिकं सर्वं चरितं यत् खलु मेघकुमारस्य, तदेवात्र वाच्यम् । स्थापत्यापुत्रोऽर्हतोऽरिष्टनेमेः समीपादीशानकोणदिग्भागे स्वयमेव ' आभरणमल्लालङ्कारे ' आभरणमाल्यालङ्कारान् ' ओमुयइ ' अवमुञ्चति अवतारयति । ततः खलु सा स्थापत्यागाथापत्नी हंसलक्षणेन हंसस्वरूपेण शुक्लवर्णेन ' पडगसाडएण ' पटशाटकेन पृथुलवस्त्रेण आभरणमाल्यालङ्कारान् प्रतीच्छति प्रतिगृह्णाति ।

तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्णवासुदेवे (थावच्चा पुत्तं) स्थापत्या पुत्र को (पुरओकाउं) आगे करके (जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमि तेणेव उवागच्छइ) जहां अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु थे वहां गये (उवागच्छित्ता सेसं सव्वं तं चेव आभरण०) वहां जाकर उन्हों ने प्रभु की आदक्षिण प्रदक्षिणा पूर्वक वंदना की। मेघकुमार ने दीक्षा अगीकार करते समय जो कुछ किया वह सब वहां स्थापत्या पुत्र ने भी किया बाद मे स्थापत्या पुत्रने अरिष्टनेमि प्रभु के पास से ईशानकोण में जाकर स्वय ही अपने माला और अलकारो को उत्तारा (तएणं से) इस समय वहां उपस्थित रही हुई उसकी माता गाथा पत्नी ने हंस के जैसी शुक्लवर्णवाली अपनी पटशाटिका में उनअवता-

---

(तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि) ॥

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારબાદ (से कण्हे वासुदेवे) કૃષ્ણવાસુદેવ (थावच्चा पुत्तं) સ્થાપત્યા પુત્રને (पुरओ काउं) આગળ રાખીને (जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ હતા ત્યાં ગયા (उवागच्छित्ता सेसं सव्वं तं चेव आभरण०) ત્યાં જઈને તેમણે પ્રભુની આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણની સાથે વંદના કરી મેઘકુમારે દીક્ષા વખતે જે કંઈ કર્યું હતું તે બધું સ્થાપત્યાપુત્રે પણ કર્યું ત્યાર બાદ સ્થાપત્યાપુત્રે અરિષ્ટનેમી પ્રભુની પાસેથી ઈશાન ખૂણામાં જઈને જતે જ માળા અને ઘરેણાંઓ ઉતાર્યા, (तएणं से) તે વખતે તેની માતા સ્થાપત્યાગાથાપત્ની ત્યાં હતી તેમણે હંસ જેવી સ્વચ્છ સફેદ

' हारवारिधारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइ ' हारवारिधाराछिन्नमुक्तावली प्रकाशानि ' असूणि ' अश्रूणि ' विणिम्मुचमाणी २, विनिर्मुञ्चन्ती २ मुक्ताहारजलधारा विकीर्णमुक्तावत्स्वश्रुबिन्दून पुनः पुनर्निपातयन्तीत्यर्थः, एव=वक्ष्यमाण प्रकारेण अवादीत्-यतितव्य जात !=हे पुत्र ! सयमाराधनार्थं यत्न कुरु, घटितव्य जात ! हे वत्स ! सयमे सलग्नोभव, पराक्रमितव्य जात !=हे जङ्ग ! सयमप्रतिकूलान् आलस्यादीन वारयितु कायादिबल प्रदर्शय, अस्मश्च अर्थे ' णो पमाएयव्व ' नो प्रमादितव्यम्=प्रमादस्य वशे कदापि मा भू, इत्युक्त्वा = इति कथयित्वा, स्थापत्यापुत्रस्य माता स्थापत्या गाथापत्नी यस्यादृशः सकाशात् प्रादुर्भूता=आयाता तस्यामेवदिशि प्रतिगता ॥ सू० १६ ॥

रित माला अलकारों को लेकर रख लिया। रखते समय वह (हार वारिधार छिन्न मुत्तावलिप्पगासाइ असूणि विणिम्मुचमाणी २ एव वयासी) हारवारिधारा और छिन्नमुक्तावली के समान आसुओ को बार २ बहाती जाती थी। इसी स्थितिमें बनी हुई उस स्थापत्या गाथा पत्नी ने फिर अपने पुत्र से उस प्रकार कहा-(जइयव्व जाया ! घडियव्व जाया ! परिक्कमियव्व जाया ! अस्सिचण अट्ठे णो पमाएयव्व जामेव दिसिपाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया) हे पुत्र ! सयम की आराधना के लिये तुम प्रयत्न शील रहना। हे पुत्र ! तुम सयम में सलग्न रहना। हे पुत्र सयम के प्रतिकूल आलस्य आदिको को निवारण करने के लिये अपने शारीरिक आदि बल को प्रस्फुरित करते रहना। इस सयम रूप अर्थमें हे बेटा ? तुम कभी भी एक्षण भी प्रमादके वशवर्ती मत होना। ऐसा कहकर वह माता स्थापत्यागाथा पत्नी जिस दिशा से आई थी उसी दिशा मे वापिस चली गई ॥ सू० १६ ॥

સાડીમા તે ઉતારેલી માળા અને ઘરેણાઓ વગેરે લઈ લીધા માળા એને ઘરેણા ઓ સાડીમા મૂકતી વખતે (हारवारिधारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइ असूणि विणिम्मुचमाणी २ एव वयासी) તેની આખોમાથી નીકળતા આસુ ઓ હાર પાણીની ધારા અને છિન્ન મુક્તવળીની જેમ સતત ટપકી રહ્યા હતા આમ આસુઓની આખોથી સ્થાપત્યાગાથા પત્ની પોતાના પુત્રને કહેવા લાગી-(जइयव्व जाया ! घडियव्व जाया ! परिक्कमियव्व जाया अस्मि च ण अट्ठे णो पमाएयव्व जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया) હે પુત્ર ! સયમની સાધના માટે તમે સદા સાવધ રહેજો હેવત્સ ! સયમની સાધના માટે પ્રતિકૂળ આળસ્ય વગેરેના નિવારણ માટે પોતાના શારીરિક બળ પ્રસ્ફુરિત કરતા રહે જો આ સયમની સાધનામા તમે કોઇ પણ વખતે પ્રમાદ કરતા નહિ આ પ્રમાણે સબોધીને સ્થાપત્યાપત્ની રથાથી પોતાને ઘેર પાછી વળી સૂત્ર ॥ ૧૬ ॥

मूलम्—तएणं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहि सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ जाव पव्वइए। तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते इरियासमिए भासासमिए जाव विहरइ, तएणं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ चउद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि जाव चउत्थेणं विहरति।

तएणं अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स त इब्भाइयं अणगारसहस्ससीसत्ताए दलयइ, तएणं से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइ अरह अरिट्ठनेमि वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते तुब्भेहि अब्भणुन्नाउ समाणे सहस्सेण अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिआ। तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेण उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बहिया जणवयविहार विहरइ॥ सू० १७॥

'तएणं से थावच्चापुत्ते' इत्यादि।

टीका—तत' तदनन्तर खलु स स्थापत्यापुत्रः पुरुषसहस्रेण सार्धं स्वयमेव

'तएणं से थावच्चा पुत्ते' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से थावच्चा पुत्ते) उस स्थापत्या पुत्रने पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय करेइ) उन एक हजार दीक्षित पुरुषोके साथ अपने केशोका पचमुष्टी लोंच किया-(जाव पव्वइए) यावत्

(तएणं से थावच्चा पुत्ते) ઇત્યાદિ॥

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારબાદ (से थावच्चापुत्ते) સ્થાપત્યા પુત્રે (पुरिससहस्सेहि सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ) દીક્ષા પામેલા એક હજાર પુરુષોની સાથે પોતાના વાળનુ પાચ મુષ્ઠી લુચન કર્યું (जाव पव्वइए) અને૨

पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति कृत्वा च यावत् प्रव्रजितः सहस्रपुरुषैः सह स्थापत्यापुत्रो ऽर्हदरिष्टनेमेः समीपे चत्वारिमहाव्रतानि उच्चारितवान्। ततस्तदनन्तरं स स्थापत्यापुत्रः ' अणगारे ' अनगारः द्रव्यतो भावतश्च मुनिर्जातः, स कीदृश इत्याह-'इरियासमिए ' ईर्यासमित ईर्यासमितिः यतनापूर्वक गमन, तया समन्वित, यथा कथमप्यन्यजीवविराधना न स्यात्तथोपयोगपूर्वकगमनवानित्यर्थः, ' भासासमिए ' भाषासमितः भाषासमितियुक्त यावत् विहरति=यावच्छब्देन ' एषणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिए " इत्यादि वाच्यम्। एषणासमित,=एषणासमितियुक्तः निर्दोषभिक्षाग्रहणशील, आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमितः= भाण्डामात्राद्युपकरणानाम् आदाने ग्रहणे निक्षेपणायां स्थापने च या समितिस्तया युक्त, उच्चारप्रस्रवण

प्रव्रजित होकर उसने सहस्र पुरुषोंके साथ अरिष्टनेमि प्रभुके समीप फिर पचमहाव्रतोंका उच्चारण किया। इस तरह वे स्थापत्यापुत्र अब द्रव्य और भाव दोनों रूपसे अनगारावस्थापन्न बन गये। यही बात (तएण से थावच्चा पुत्ते अणगारे जाए) इन पदो द्वारा व्यक्त की गई है। (ईरियासमिए, भासासमिए जाव विहरइ) वे यतना पूर्वक चलने लगे ईर्या समिति से युक्त बन गये- जिस तरह किसी भी अन्य जीव की विराधना न हो इस तरह उपयोग पूर्वक चलने लगे भाषा समिति आदि समिति से युक्त हो गये। यहा यावत् शब्द से एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेल्लजल्लसिंघाणपरिट्ठावणीया समिए " इन अवशिष्ट समितियों आदि का ग्रहण हुआ है। निर्दोष भिक्षा लेना एषणा समिति है। भाण्डामत्रादि उपकरणों के आदान में ग्रहण में और निक्षेपण में उपयोग पूर्वक प्रवृत्ति करना

પ્રવ્રજિત થઈ ને તેણે એક હજાર પુરુષોની સાથે અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની સામે પચ મહાવ્રતોનુ ઉચ્ચારણ કર્યું આ રીતે તે સ્થાપત્યા પુત્ર દ્રવ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ અનગાર અવસ્થાપન્ન થઈ ગયા આ વાત (तएण से थावच्चापुत्ते अणगारे जाए) આ પદો વડે પ્રકટ કરવામા આવી છે તેઓ કેવા અણગાર થયા તે નીચેના સૂત્રથી બતાવે છે (ईरिया समिए, भासा समिए, जाव विहरइ) ઈર્યાસમિતિથી યુક્ત થઈ ગયા એટલે કોઈપણ જીવને વિરાધના (કષ્ટ) થાયનહિ એવી રીતે જતનથી ચાલવા લાગ્યા તે ભાષાસમિતિ વગેરે સમિતિથી યુક્ત થઈ ગયા ' यावत् શબ્દથી (एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चार पासवण खेलजल्लसिंघाणपरिट्ठावणीया समिए) આ સમિતિઓ વગેરેનુ ગ્રહણ થયુ છે નિર્દોષ ભિક્ષા સ્વીકારવી 'એષણા-સમિતિ' છે ભાંડામત્રાદિ ઉપકરણોના આદાન એટલે ગ્રહણમા અને નિક્ષેપણ મૂકવામા ઉપયોગ પૂર્વક-પ્રવૃત્તિ કરવી તે

मूलम्—तएण से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहि सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ जाव पव्वइए । तएण से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते इरियासमिए भासासमिए जाव विहरइ, तएण से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराण अंतिए सामाइयमाइयाइ चउद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि जाव चउत्थेण विहरति ।

तएण अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइय अणगारसहस्ससीसत्ताए दलयइ, तएण से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइ अरह अरिट्ठनेमि वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते तुब्भेहि अब्भणुन्नाउ समाणे सहस्सेण अणगारेण सद्धिं बहिया जणवयविहार विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिआ ! तएण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धि तेण उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बहिया जणवयविहार विहरइ ॥ सू० १७ ॥

' तएण से थावच्चापुत्ते ' इत्यादि ।

टीका—तत' तदनन्तर खलु स स्थापत्यापुत्र' पुरुषसहस्रेण सार्ध स्वयमेव

'तएण से थावच्चा पुत्ते' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से थावच्चा पुत्ते) उस स्थापत्या पुत्रने पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय करेइ) उन एक हजार दीक्षित पुरुषोंके साथ अपने केशोंका पचमुष्टी लोच किया-(जाव पव्वइए) यावत्

(तएण से थावच्चा पुत्ते) ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારબાદ (से थावच्चापुत्ते) સ્થાપત્યા પુત્રે (पुरिससह स्सेहि सद्धि सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ) દીક્ષા પામેલા એક હજાર પુરુષોની સાથે પોતાના વાળનુ પાચ મુષ્ઠી લુચન કર્યું (जाव पव्वइए) અને२

रहित अनास्रव', हिंसादिवर्जितः, अममः, ममत्वरहित , अकिंचन द्रव्यभावपरिग्रहवर्जितः छिन्नग्रन्थ', स्नेहरहित', निरुपलेपः-द्रव्यभावलेपवर्जित., कांस्यपात्रमिव मुक्ततोयः तोयरूपस्नेहरहितत्वात् , शङ्खइव नीरञ्जनः रागसम्बन्धरहितत्वात्, जीवइवाप्रतिहतगति. सर्वदेशविहारित्वात्, जात्यकनकमिव जातरूप निरतिचारसंयमपालकत्वात् , गगनमिव निरालम्बनः देशग्रामकुलाद्यालम्बनरहितत्वात् , आदर्शफलक इव प्रकटस्वभावः दर्पणवत् स्वच्छस्वभावत्वात , वायुरिव अप्रतिबद्धः क्षेत्रादिषु प्रतिबन्धरहितत्वात्, शारदसलिलमिवशुद्धहृदय =शरदृतुजलवन्निर्मलहृदयः

से वर्जित हुए-परिनिर्वृत हो गये-मनवचनकाय के सन्ताप से रहित बन गये। अनास्रव- हिंसादि पापो से रहित हो गये, ममता भाव से रहित हो गये, अकिंचन हो गये, द्रव्य और भावरूप परिग्रह से मुक्त बन गये। स्नेह रहित हो गये निरुपलेप हो गये द्रव्य भाव लेप से रहित हो गये। तोय जलरूप स्नेह से रहित होने के कारण कांस्य पात्र की तरह वे मुक्ततोय बन गये। राग के सम्बन्ध से रहित होने के कारण वे शंख की तरह निर्मल हो गये। सर्व देश में विहारी होने के कारण वे जीव की तरह अप्रतिबध विहारी बन गये। निरतिचार संयम के पालक होने के कारण वे शुद्धसुवर्ण की तरह वे जातरूप हो गये। देश, ग्राम आदि के आलम्बन से रहित होने के कारण वे गगन की तरह निरालम्ब हो गये। दर्पण की तरह स्वच्छ स्वभाव से युक्त होने के कारण वे प्रकट स्वभाव हो गये। क्षेत्रादिकों में प्रतिबन्ध रहित

સંતાપથી રહિત થયા અનાસ્રવ-હિંસા વગેરે પાપકાર્યોથી રહિત થયા, મમતા ભાવથી રહિત થયા, અકિંચન થયા, તેમજ દ્રવ્ય ને ભાવના પરિગ્રહથી મુક્ત થયા, સ્નેહરહિત થયા, નિરુપલેપ થયા, દ્રવ્ય ને ભાવ લેપથી રહિત થયા, તોય (પાણી) રૂપ સ્નેહ વગર હોવાને કારણે તે કાંસ્યપાત્રની જેમ મુક્ત તોય ' થયા રાગના સંબંધ થી રહિત હોવા બદલ તે શંખની જેમ નિર્મળ થયા સર્વ દેશોમા વિહાર કરનાર હોવાથી તે જીવની જેમ અપ્રતિહત ગતિવાળા (જેની ગતિ ક્યાય રોકાય નહિ ૬ એવા) થયા નિરતિચાર સંયમ ને પાળનાર હોવા થી તે શુદ્ધ સોનાની જેમ જાત રૂપ થયા, દેશ, ગામ વગેરે ના આલંબન થી રહિત હોવા બદલ તે આકાશની પેઠે નિરાલંબ થયા અરીસાની જેમ નિર્મળ સ્વભાવના હોવાથી તે ' પ્રકટ સ્વભાવ ' વાળા થયા, ક્ષેત્ર વગેરેમા પ્રતિબંધ વગરના હોવાથી તે પવનની જેમ અપ્રતિબદ્ધ વિહારી થયા, કષાયો

श्लेष्मजल्लशिङ्घाणपरिष्ठापनिकासमितः उच्चारादीना परिष्ठापनिकासमितः = उत्सर्जने शास्त्रोक्तविधिमवृत्ति, तया युक्त इत्यर्थः । स मनः समित वच समित कायसमित., मनोगुप्तः वचनगुप्तः कायगुप्त गुप्तेन्द्रियः इन्द्रियाणामसत्मवृत्तिनिवर्तनात् गुप्तब्रह्मचर्यः अक्रोधः अमानः अमायः अलोभ अतएव शान्तः, प्रशान्तः प्रशमभावसम्पन्नः, उपशान्तः, कषायकारणवर्जित. परिनिर्वृतः, योगत्रयसन्ताप-

इसका नाम भाण्डामत्रानिक्षेपणा समिति है तथा उभयकाल प्रतिलेखना करना उच्चार, प्रस्रवण, श्लेष्म, जल्ल शिङ्घाण इनके परिष्ठावन करने में शास्त्रोक्त विधि के अनुसार प्रवृत्ति करना यह उच्चार प्रस्रवण श्लेष्म जल्ल शिंघाण परिष्ठापनिका समिति है। इसी तरह वे स्थापत्यानगार मनः समिति से, वचन समिति से कायसमिति से मनोगुप्ति से वचन गुप्ति से कायगुप्ति से युक्त हो गये तथा इन्द्रियों की असत् विषयो में प्रवृत्ति के निवर्तन से, गुप्तेन्द्रिय हो गये। मन, वचन और काय से पूर्ण ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले होने से गुप्त ब्रह्मचारी हो गये क्रोध कषाय से सर्वथा रहित होने से अक्रोध मान कषाय के अभाव से अमान, मायाकषाय के अभाव से अमाय, लोभकषाय के अभाव होने से अलोभ परिणति वाले बन गये। इसी लिये वे शान्त प्रशान्त प्रशम भाव सपन्न, उपशान्त- कषायों के कारणों

ભાંડામત્રાનિક્ષેપણા સમિતિ છે, તેમજ બને કાળમા પ્રતિ લેખના કરવી આ ચોથી સમિતિ છે ઉચ્ચાર, પ્રસ્રવણ શ્લેષ્મ, જલ્લ, શિંઘાણ એમનુ પરિષ્ઠાવન કરવામા શાસ્ત્રમા કહ્યા મુજબ પ્રવૃત્તિ કરવી આ ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ શ્લેષ્મ જલ્લ શિંઘાણ પરિષ્ઠાપનિકા સમિતિ છે આ સમિતિથી પણ તેઓ યુક્ત હતા આ રીતે સ્થાપત્યા નગાર મન સમિતિથી, વચન સમિતિથી, કાય સમિતિથી, મનોગુપ્તિથી કાય ગુપ્તિથી યુકત થયા તે ઈન્દ્રિયોની અસત વિષયોમા પ્રવૃત્તિના નિવર્તનથી ગુપ્તેન્દ્રિય થયા તે મન વચન અને કાય (શરીર) થી પૂર્ણ બ્રહ્મચર્યનુ પાલન કરનાર હોવા બદલ ગુપ્ત-બ્રહ્મચારી થયા તે સપૂર્ણ રીતે ક્રોધ-કષાય વગર હોવા બદલ અક્રોધ માન કષાયના અભાવથી અમાન, માયા કષાયના અભાવથી અમાય, લોભ-કષાયના અભાવથી અલોભ પરિણતિવાળા થયા એટલા માટે જ તે શાત, પ્રશાત પ્રરામભાવ સપન્ન, તેમજ ઉપશાત કષાયો ના કારણોથી વર્જિત થયા-પરિનિર્વૃત થયા-મન, વચન,અને કાયાએ ત્રણ યોગના

सूर्यइव दीप्ततेजाः परेषा क्षोभकत्वात्, सागर इव गम्भीरः उदारहृदयत्वात, मन्दरइवाप्रकम्प' परीषहोत्सर्गैरविचलितत्वात्, वृषभइव जातस्थामा गृहीतभारपारगत्वात्, सिंह इव दुर्धर्षः उपसर्गमृगैः पराजेतुमशक्यत्वात, वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविसहः शीतोष्णादिसर्वसहत्वात्, सुहुताशन इव तेजसा ज्वलन् तेजोलेश्यादिलब्धिमत्वात्, तस्य स्थापत्यापुत्रानगारस्य न कुत्रापि प्रतिबन्धो भवति। प्रतिबन्धो द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदाच्चतुर्विधः, तत्र द्रव्यतः-सचित्ताचित्तमिश्रेषु, क्षेत्रतो ग्रामनगराऽरण्यादिषु, कालतः-समयावलिकादिषु, भावतः क्रोधभयहास्यादिषु। स

से युक्त हो गये। दूसरे जीवों को क्षोभ करने वाले तेज से सम्पन्न होने के कारण ये सूर्य की तरह दीप्त तेजवाले बन गये। उदार होने से सागर की तरह इन का हृदय गभीर हो गया। परीषह और उपसर्गो से अविचलित होने के कारण ये सुमेरू की तरह अप्रकप बन गये। गृहीत भार को पार लगाने के कारण वृषभ की तरह ये विशिष्ट शक्ति शाली हो गये। उपसर्ग रूपी मृगों से पराजेतु अशक्य होने के कारण ये सिंह की तरह दुर्धर्ष बन गये। शीत उष्ण आदि सब सहन करने के कारण ये वसुधरा (पृथिवि) की तरह सर्व स्पर्शसह बन गये। तेओ लेश्यादि लब्धि सपन्न होने के कारण ये जाज्वल्यमान हुताशन (अग्नि) की तरह विशिष्ट तेजसे चमकने लगे इन स्थापत्या पुत्र मुनिका कहीं पर भी प्रतिबन्ध नहीं था। यह प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा चार प्रकार का कहा गया है। द्रव्य की अपेक्षा सचित्त, अचित्त तथा मिश्र वस्तुओं में, क्षेत्र की अपेक्षा ग्राम,

---

ક્ષોભ પમાડન ૨ તેજથી યુક્ત હોવાથી તે સૂર્યની પેઠે દીપ્ત તેજ વાળા થયા Cદાર હતા તેથી સાગરની જેમ તેમનુ હૈયુ ગભીર થઇ ગયુ પરીષહો અને ઉપસર્ગોના આકરા પ્રહારોથી પણ તે વિચલિત થતા નહિ તેથી સુમેરુ પર્વત ની જેમ તે અપ્રકપ થયા સ્વીકારેલા કર્તવ્યોના ભારને છેક સુધી પાર લઈ જવા માટે તે બળદ ની જેમ અવિશેષ શક્તિ શાળી થયા ઉપસર્ગ રૂપી હરણો થી પરાજિત ન થવાથી તે સિંહની પેઠે દુર્ધર્ષ થયા ઠંડી, ગરમી વગેરે બધુ સહન કરવાથી તે વસુ વરા (પૃથિવી) ની જેમ સર્વ સ્પર્શ થયા તેજો લેશ્યા વગેરેની સિદ્ધિ યુક્ત હોવાથી તે સળગતા અગ્નિ ની જેમ અવિશેષ તેજથી પ્રકાશિત થયા સ્થાપત્યાપુત્ર પ્રતિબધ રહિત થયા આ પ્રતિબધ દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવની અપેક્ષાએ ચાર પ્રકારનો છે દ્રવ્યનીઅપેક્ષાએ સચિત્ત, અચિત્ત તેમજ મિશ્ર વસ્તુઓમા, ક્ષેત્રની દૃષ્ટિએ ગામ, નગર, અરણ્ય (વન)

कषायोपशमितत्वात्, पुष्करपत्रमिवनिरुपलेपः=भोगाभिलाषरूपलेशवर्जितत्वात्, कूर्मइव गुप्तेन्द्रियः वशीकृतेन्द्रियत्वात्, खड्गिविषाणमिव एकजातः खड्गी= वन्य जन्तुविशेष 'गेंडा' इतिभाषाप्रसिद्ध. तस्य विषाण शृङ्ग तद्वदेकजात स्वात्मावलम्बितत्वात्, विहगइव विप्रमुक्तः पक्षिवत् सन्निधिवर्जितत्वात्, भारण्डपक्षीव अप्रमत्तः=भारण्डपक्षिणो हि एकोदराः पृथग्ग्रीवा अन्योन्यफलभक्षिणो जीवद्वयरूपा भवन्ति, ते च सर्वदा चकितचित्तास्तिष्ठन्ति, तद्वत् प्रमादरहितत्वात् कुञ्जरइव शूरः कर्मशत्रु पराजेतु दृढोत्साहवत्त्वात्, चन्द्रइव सौम्यलेश्यः शुभपरिणामवत्त्वात्,

---

होने के कारण वे वायु की तरह अप्रतिबद्ध विहारी बन गये। कषायों के उपशमित हो जाने से शरत् काल के जल के समान वे निर्मल हृदय से युक्त हो गये। भोगाभिलाष रूप लेप से रहित होने के कारण वे पुष्कर (कमल) पत्र की तरह निरूपलेप हो गये। कच्छप की तरह वे अपनी इन्द्रियों को गुप्त करने वाले होने से गुप्तेन्द्रिय बन गये। केवल अपनी आत्मा के ही अवलम्बन करने वाले होने से वे गेंडाहाथी के विषाण की तरह एक जात हो गये। सन्निधि से वर्जित होने के कारण पक्षी की तरह वे विप्रमुक्त हो गये। भारण्ड पक्षी की तरह वे अप्रमत्त रहने लगे। ये भारण्ड पक्षी एक उदरवाले होते है, ग्रीवा इसकी पृथक् होती है, अन्योन्य फल भक्षी होते हैं-दो जीव होते है। ये सर्वदा चकित चित्त रहा करते है। कर्मरूप शत्रु को पराजित करने के लिये दृढ उत्साह सपन्न होने के कारण ये कुञ्जर (हाथी) की तरह शूर बन गये। शुभ-परिणामो से युक्त होने के कारण ये चन्द्रमण्डल की तरह सौम्य लेश्या

ના ઉપશમનથી શરદ ઋતુના પાણીના જેમ તે સ્વચ્છ હૃદયવાળા થયા, ભોગ વિલાસ રૂપ લેપથી રહિત હોવાથી પુષ્કર કમળપત્ર ના જેમ નિરુપલેપ થયા કાચબાની જેમ તે પોતાની ઇન્દ્રિયોને ગુપ્ત કરનાર હોવાથી ગુપ્તેન્દ્રિય થયા કેવળ પોતાના આત્માને જ અવલંબ આપનાર હોવાથી તે ગેંડા હાથીના વિષાણ (શીંગડા) ની જેમ એક જાત થયા સનિધિ વગર હોવાથી પક્ષી ની જેમ તે વિપ્રમુક્ત થયા ભારંડપક્ષીની જેમ તે અપ્રમત્ત (મદ વગર) રહેવા લાગ્યા, આ ભારંડ પક્ષી એક પેટ વાળા હોય છે તેમની ડોક પૃથક્ હોય છે અન્યોન્ય ફળ ભક્ષી હોય છે-તેમજ બે જીવ હોય છે તે હમેશા શકિતચિત્ત રહે છે તે સ્થાપત્યાપુત્ર કર્મના શત્રુને પરજિત કરવા માટે દૃઢ ઉત્સાહ સપન્ન હોવાથી કુંજર (હાથી) ની જેમ શૂર થયા શુભ પરિણામોથી યુક્ત હોવાથી તે ચંદ્રમંડળ ની જેમ સૌમ્ય લેશ્યા વાળા થયા બીજા જીવોને

सूर्यइव दीप्ततेजाः परेषा क्षोभकत्वात्, सागर इव गम्भीरः उदारहृदयत्वात्, मन्दरइवाप्रकम्प' परीषहोत्सर्गैरविचलितत्वात्, वृषभइव जातस्थामा गृहीतभारपारगत्वात्, सिंह इव दुर्धर्षः उपसर्गमृगै' पराजेतुमशक्यत्वात्, वसुन्धरेव सर्वस्पर्शसहः शीतोष्णादिसर्वसहत्वात्, सुहुताशन इव तेजसा ज्वलन् तेजोलेश्यादिलब्धिमत्वात्, तस्य स्थापत्यापुत्रानगारस्य न कुत्रापि प्रतिबन्धो भवति। प्रतिबन्धो द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदाच्चतुर्विध', तत्र द्रव्यतः-सचित्ताचित्तमिश्रेषु, क्षेत्रतो ग्रामनगराऽरण्यादिषु, कालत.-समयावलिकादिषु, भावत' क्रोधभयहास्यादिषु। स

से युक्त हो गये। दूसरे जीवों को क्षोभ करने वाले तेज से सम्पन्न होने के कारण ये सूर्य की तरह दीप्त तेजवाले बन गये। उदार होने से सागर की तरह इन का हृदय गभीर हो गया। परीषह और उपसर्गों से अविचलित होने के कारण ये सुमेरुकी तरह अप्रकप बन गये। गृहीत भार को पार लगाने के कारण वृषभ की तरह ये विशिष्ट शक्ति शाली हो गये। उपसर्ग रूपी मृगों से पराजेतु अशक्य होने के कारण ये सिंह की तरह दुर्धर्ष बन गये। शीत उष्ण आदि सब सहन करने के कारण ये वसुधरा (पृथिवि) की तरह सर्व स्पर्शसह बन गये। तेओ लेश्यादि लब्धि सपन्न होने के कारण ये जाज्वल्यमान हुताशन (मग्नि) की तरह विशिष्ट तेजसे चमकने लगे इन स्थापत्या पुत्र मुनिका कहीं पर भी प्रतिबन्ध नही था। यह प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा चार प्रकार का कहा गया है। द्रव्य की अपेक्षा सचित्त, अचित्त तथा मिश्र वस्तुओं में, क्षेत्र की अपेक्षा ग्राम,

---

ક્ષોભ પમાડનર તેજથી યુક્ત હોવાથી તે સૂર્યની પેઠે દીપ્ત તેજ વાળા થયા ઉદાર હતા તેથી સાગરની જેમ તેમનુ હૈયુ ગભીર થઇ ગયુ પરીષહો અને ઉપસર્ગોના આકરા પ્રહારોથી પણ તે વિચલિત થતા નહિ તેથી સુમેરુ પર્વત ની જેમ તે અપ્રકપ થયા સ્વીકારેલા કર્તવ્યોના ભારને છેક સુધી પાર લઈ જવા માટે તે બળદ ની જેમ સવિશેષ શક્તિ શાળી થયા ઉપસર્ગ રૂપી હરણો થી પરાજિત ન થવાથી તે સિહની પેઠે દુર્ધર્ષ થયા ઠડી, ગરમી વગેરે બધુ સહન કરવાથી તે વસુધરા (પૃથિવી) ની જેમ સર્વ સ્પર્શ થયા તેને લેશ્યા વગેરેની સિદ્ધિ યુક્ત હોવાથી તે સળગતા અગ્નિ ની જેમ સવિશેષ તેજથી પ્રકાશિત થયા સ્થાપત્યાપુત્ર પ્રતિબધ રહિત થયા આ પ્રતિબધ દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવની અપેક્ષાએ ચાર પ્રકારનો છે દ્રવ્યનીઅપેક્ષાએ સચિત્ત, અચિત્ત તેમજ મિશ્ર વસ્તુઓમા, ક્ષેત્રની દૃષ્ટિએ ગામ, નગર, અરણ્ય (વન)

समतृणमणिलोष्टकाञ्चन', समसुखदुःखः, इहलोकपरलोकाऽप्रतिबद्ध', जीवित मरणकाङ्क्षा वर्जित, संसारपारगामी कर्मनिर्वातनार्थमभ्युत्थित, एव च खलु मोक्षमार्गे विहरति । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽर्हतोऽरिष्टनेमेस्तथारूपाणां स्थविराणान्तिके सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अधीते, अधीत्य च बहुभिर्यावच्चतुर्थेन=चतुर्थभक्तादिनाऽऽत्मान भावयन् विहरति ।

नगर, अरण्य आदिको में काल की अपेक्षा समय आवलिकआदिकों में भाव की अपेक्षा क्रोध, भय, तथा हास्यादिको में, उन स्थापत्या पुत्र को किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध नही था। उन की दृष्टि में तृण, मणि, लोष्ट और कांचन समान थे। सुख और दुःख समान थे। इह लोक और परलोक से वे अप्रतिबद्ध थे। जीविताशसा और मरणा शसा से वे रहित बन चुके थे। ससार से रहित हो चुके थे कर्मो के नाश करने में ही उनका पुरुषार्थ लगा हुआ था। इस तरह वे समिति आदि को से समित हो कर मुक्ति के मार्ग मे सावधान होकर विचरण करने लगे। (तएण से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहा रूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ) धीरे २ उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु के तथा-रूप स्थविरो के पास सामयिक आदि चौदह पूर्वों का अध्ययन भी कर लिया (अहिज्जित्ता बहूहिं जाव चउत्थेण विहरइ) उनका अध्ययन करके फिर उन्होने चतुर्थ भक्तादि तपस्या से अपने को भावित किया

વગેરેમા, કાળની અપેક્ષાએ સમય આવલિકા વગેરેમા, ભાવની દૃષ્ટિએ ક્રોધ, ભય તેમજ હાસ્ય વગેરેમા તે સ્થાપત્યા પુત્રને કોઈપણ જાતનો પ્રતિબંધ હતો નહિ તેના માટે તો તૃણ, મણિ, લોષ્ટ (માટીનુ ઢેકુ) અને કાચન (સોનુ) આ બધા સરખા જ હતા સુખ દુઃખ બને સરખા હતા ઇહ લોક અને પર લોકથી તે અપ્રતિબદ્ધ (સ્વતંત્ર) હતા જીવિતાશા તેમજ મરણાશા થી તે રહિત થયા સંસારના વિષયોથી રહિત થઈને કર્મોના વિનાશમાજ તેઓ પુરુષાર્થ સલગ્ન હતા આ પ્રમાણે તે સ્થાપત્યાપુત્ર સમિતિ વગેરેથી સમિત થઈને મુક્તિમાર્ગમા સાવધાન થઈને વિચરણ કરવા લાગ્યા (तएण से थावच्चा पुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जइ) ધીમે ધીમે સ્થાપત્યા-પુત્ર અનગારે અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પાસે થી તેમજ તથારૂપ સ્થવિરોની પાસેથી સામયિક વગેરે ચૌદપૂર્વોનુ અધ્યયન પણ કર્યું (अहिज्जित्ता बहूहि जाव चउत्थेण विहरइ) અધ્યયન કર્યા બાદ સ્થાપત્યા પુત્રે ચતુર્થ ભક્ત વગેરે તપસ્યાથી પોતાના આત્માને ભાવિત કર્યો

ततः खलु अर्हन्तरिष्टनेमि स्थापत्यापुत्रस्यानगारस्य त=सहागत 'इब्भाइय' इभ्यादिकम् इभ्यश्रेष्ठिसेनापतिप्रभृतिकम् अनगारसहस्र शिष्यतया ददाति। स्थापत्यापुत्रेण सह ये सहस्रपुरुषा दीक्षा गृहीतवन्तस्ते सर्वे तस्यैव शिष्याः कृता इति भावः। ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारोऽन्यदा कदाचित् अर्हन्तमरिष्टनेमिं व दते वाचा स्तौति, नमस्यति, कायेन मणमति वन्दित्वा नमस्कार च कृत्वा एवं =वक्ष्यमाणप्रकारेणअवादीत्—

इच्छामि खलु भदन्त ! हे भगवन् युष्माभिः 'अब्भणुन्नाए' अभ्यनुज्ञातः सन् आज्ञा प्राप्य सहस्रेणानगारेण साधं वहिः द्वारावती नगरीतो वहिर्निःसृत्य जनपदविहार देशे ग्रामानुग्रामविचरण, विहर्तुं=कर्तुम्, भवदाज्ञया देशे विहार कर्तुमिच्छामीत्यर्थः। हे देवानुप्रिय यथासुख=विहरेत्यर्थः।

यावत् शब्द से उक्त अर्थ लिया गया है। (तएण अरिहा अरिट्ठनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स त इब्भाइय अणगारसहस्स सीसत्ताए दलयइ) इसके बाद अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु ने उन अनगार स्थापत्या पुत्र के लिये उनके साथ आये हुए उस, इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति आदि अनगार सहस्र को शिष्यरूप से दे दिया। (तएण से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइ अरह अरिट्ठनेमिं वदइ नमसइ) इसके बाद उन स्थापत्या पुत्र ने किसी समय अर्हंत अरिष्टनेमि को वदना की और उन्हे नमस्कार किया- (वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) वन्दना नमस्कार करके फिर उन्हो से उन्होंने ऐसा कहा- (इच्छामि ण भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाये समाणे सहस्सेण अणगारेण सद्धिं वहिया जणवयविहार विहरित्तए) भदत ! यदि आपकी आज्ञा हो तो मै इन हजार अनगारों को साथ लेकर द्वारावती नगरी से बाहिर जनपद विहार करना चाहता हूँ।

'यावत्' शब्दथी उक्त अर्थ नो संग्रह थयो छे (तएण अरिहा अरिट्ठनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स त इब्भाइय अणगारसहस्स सीसत्ताए दलयइ) त्यार पछी अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभुओ अनगार स्थापत्यापुत्रने तेमनी साथे आवेला अने प्रव्रज्या ग्रहण करेला इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति वगेरे अनगार सहस्र ने शिष्य रूपे आप्या (तएण से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइ अरह अरिट्ठनेमि वदइ नमसइ) त्यार बाद स्थापत्या पुत्रे कोइ वखत अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभुने वदन तेमज नमस्कार कर्या (वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) वदन अने नमस्कार करीने तमणे तेमने विनती करी-(इच्छामि ण भंते ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाये समाणे सहस्सेण अणगारेण सद्धि वहिया जणवयविहार विहरित्तए) हे भदंत ! तमारी आज्ञा थाय तोहु एक हजार अनगारो नी साथे द्वारावती

तत खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारसहस्रेण सार्धं तेनोदारेण=प्रधानेन-षड्-जीवनिकायरक्षणपरत्वात्, उग्रेण=तीव्रेण परीषहोपसर्ग सहिष्णुत्वात्, प्रयत्नेन=यतनाप्रधानत्वात् बहिर्जनपदविहार विहरति ॥ १७ ॥

मूलम्–तेण कालेणं तेण समएणं सेलगपुरे नामं नगरं होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, सेलए राया, पउमावइ देवी, मंडुए कुमारे जुवराया। तस्स णं सेलगस्स पथगपामोक्खा पंचमंतिसया होत्था, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए पारिणामियाए उववेया रज्जधुर चिंतयंति, थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे राया णिग्गतो धम्मकहा, धम्म सोच्चा जहाण देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरन्नं जाव

(अहासुह देवाणुप्पिया ! तएण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धिं तेण उरालेण उग्गेण पयत्तेण पग्गहिएण बहिया जणवयविहार विहरइ) प्रभु ने उनसे कहा-यथासुख देवानुप्रिय ! प्रभु की इस प्रकार आज्ञा प्राप्त कर वे स्थापत्यापुत्र षट्जीवनिकाय की रक्षा करने मे तत्पर होने के कारण उदार, परीषह और उपसर्गो को सहन करने के कारण उग्र, यतना प्रधान होने के कारण प्रयत्न और भगवान् की आज्ञा को प्रधान रूप से अगीकार करने के कारण प्रगृहीत ऐसे १ एक हजार शिष्यों को साथ लेकर वहा से बाहिर देशों में विहार किया। सूत्र " १७ "

નગરીની બહાર જનપદ વિહાર કરવા ચાહુ છુ (अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएण से थावच्चव अणगारसहस्सेण सद्धिं तेण उरालेण उग्गेण पयत्तण पग्गहिएण बहिया जणवयविहार विहरइ) પ્રભુએ તેને કહ્યું-હેદેવાનુપ્રિય સુખેથી વિહાર કરો. આ રીતે સ્થાપત્યાપુત્રે આજ્ઞા મેળવીને ષટ્જીવનિકાયના રક્ષણમા સદા તૈયાર હોવાથી ઉદાર, પરીષહ અને ઉપસર્ગોને સહન કરવાથી ઉગ્ર, યતના પ્રધાન હોવાથી, પ્રયત્ન અને ભગવાનની આજ્ઞા પ્રધાન રૂપથી સ્વીકારવાથી પ્રગૃહીત એવા એક હજાર શિષ્યોની સાથે ત્યા થી બહારના દેશોમા વિહાર કર્યો ॥ સ–૧૭ ॥

पव्वइया, तहाणं अहं नो सचाएमि पव्वइत्ताए, अहन्न देवाणुप्पियाण अंतिए पचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाव अहिगयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरामि। पथगपामोक्खा पंचमंतिसया समणोवासया जाया, थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू० १८॥

'तेण कालेण' इत्यादि।

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये शैलकपुर नाम नगरमासीत्। नगराद् बहिः सुभूमिभाग नामोद्यानम्। तस्मिन् नगरे शैलको नाम राजाऽभूत्। पद्मावतीदेवी=पद्मावतीनाम्नीदेवी पट्टराज्ञो। मण्डूकुमारो युवराजोऽभवत्। तस्य खलु शैलकस्य राज्ञः पान्थकप्रमुखाः पञ्चशतानि मन्त्रिणः अमात्याः आसन्, कीदृशास्ते मन्त्रिण इत्याह-'उप्पत्तियाए' औत्पत्तिक्या शास्त्राभ्यासादि निमित्त विनैव सद्भाविनी तथाविधक्षयोपशमजन्या मति रौत्पत्तिकी तया, 'वैणइयाए' वैनयिक्या=विनय-

---

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (सेलगपुरे नाम नगर होत्था) शैलक पुर नाम का नगर था (सुभूमिभागे उज्जाणे सेलए राया पउमावइ देवी मुडए कुमारे जुवराया) उस में सुभूमि भाग नाम का उद्यान था। शैलक पुर राजा का नाम शैलक था। उसकी पट्टरानी का नाम पद्मावती था। मंडूक नाम का इसका युवराज कुमार था। (तस्स ण सेलगस्स पथगपामोक्खा पच मतिसयहोत्था) इस शैलक राजा के पांथक प्रमुख पाँचसौ मन्त्री थे। (उप्पत्तियाए वेणइयाए, कम्मियाए, परिणामियाए, उववेया रज्जधुर चिंत-

---

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (सेलगपुरे नाम नगर होत्था) शैलક પુર નામે નગર હતુ (सुभूमिभागे उज्जणे सेलए राया पउमावइ देवी मुडए कुमारे जुवराया) ત્યા સુભૂમિ ભાગ નામે ઉદ્યાન હતુ શૈલક પુરના રાજાનુ નામ શૈલક હતુ પદ્માવતી તેની પટરાણી હતી મડૂક નામે તે રાજાનો યુવરાજ હતો (तस्स ण सेलगस्स पथगपामोक्खा पचमत्तिसय होत्था) આ શૈલક રાજાને પાયક પ્રમુખ પાચસો મત્રીઓ હતા (उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए परिणामियाए उववेया रज्जधुर चिंतयति) આ

पासको जात । श्रमणोपासकाना धर्म. सविस्तरमुपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसजीवनी टीकाया वर्णितस्तत एव विज्ञेयः । यावत् ' अहिगयजीवाजीवे ' अधिगत जीवाजीवः, जीवाजीवस्वरूपाविज्ञः, यावत् यथा परिगृही तैस्तपःकर्मभिरात्मानं भावयन् विहरति । पान्थकप्रमुखाः पञ्चशत मन्त्रिणः श्रमणोपासका जाता द्वादशव्रतधारिणः श्रावका अभूवन् । स्थापत्यापुत्रः बहिः=शैलकपुर नाम्नो नगराद् बहिर्जनपदविहार विहरति=करोति स्म ॥ १८ ॥

द्वारा अभ्यनुज्ञात होकर शैलक राजा ने १२ बारह प्रकार का गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया-वे श्रमणोपासक बन गये। श्रमणोपासकों के धर्म का विस्तार पूर्वक वर्णन हमने उपासकदशाग सूत्र की अगार धर्मसजीवनी नाम की टीका में किया है। सो वहा से जान लेना चाहिये। जीव और अजीव का क्या स्वरूप है इस बात को भी वे जानने वाले बन गये। अनेक प्रकार की तपश्चर्या भी वे करने लगे। इस तरह यथा परिगृहीत तप कर्मों द्वारा वे अपने आपको भावित करते हुए रहने लगे। (पथगपामोक्खा पचमतिसया समणोवासया जाया-थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहार विहरइ) राजा के जो पाथक प्रमुख पांचसौ मन्त्री थे- वे भी श्रमणोपासक बन गये- १२ व्रत धारी हो गये - स्थापत्यापुत्र अनगार उस शैलकपुर नगर से बाहर जनपद में विहार कर गये ! सूत्र " १८ "

સુખ થાય તેમ કરો આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા અનગારથી આજ્ઞાપિત થયેલા શૈલક રાજાએ બાર પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મો સ્વીકાર્યા અને તેઓ શ્રમણોપાસક થયા શ્રમણોપાસકોના ધર્મોનુ સવિસ્તર વર્ણન અમે ઉપાસકદશાગસૂત્રની અગાર ધર્મ સજીવની નામની ટીકામા કર્યુ છે જિજ્ઞાસુ જન તેમાથી જાણી શકે છે જીવ અને અજીવના સ્વરૂપ વિષેનુ જ્ઞાન પણ શૈલક રાજાને થઈ ગયુ અનેક જાતની તપસ્યાઓ તેઓ કરવા લાગ્યા આ રીતે યથાપરિગૃહીત તપ કર્મો વડે પોતાની જાતને ભાવિત કરતા રહેવા લાગ્યા (पथगपामोक्खा पचमतिसया समणोवासया जाया थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहार राजाना पाथक प्रमुख पाचसो मत्री हुता तेओ पण श्रम थ्या बार व्रत धारी थइ गया त्यार बाद स्थापत्या पुत्र अहार बीजा जनपदोमा विहार करवा माटे

मूलम्–तेणं कालेणं तेण समएणं सोगंधिया नाम नयरी होत्था, वन्नओ, नीलासोए उज्जाणे वन्नओ, तत्थ ण सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए।

तेणं कालेणं तेण समएणं सुए नामं परिव्वायए होत्था, रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसट्ठितंतकुसले सखसमए लद्धट्ठे पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलय दसप्पयारं परिव्वायगधम्म दाणधम्म च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पन्नवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए, तिदंडकुंडियछत्तछलुयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं सपरिवुडे जेणेव सोगंधियानयरी जेणेव परिव्वायगावसहसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता संखसमणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तएणं सोगंधियाए णयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ। एव खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागए जाव विहरइ, परिसा निग्गया सुदसणो निग्गए, तएण से सुए परिवायए तीसे परिसाए सुंदसणस्स य अन्नेसिं च बहूण सखाणं धम्मं परिकहेइ–एव खलु सुदंसणा अम्ह सोयमूलए धम्म पन्नत्ते, सेऽविय सोए दुविहे पन्नत्ते त जहा–दव्वसोए य, उदएण मट्टियाए य, भावसोए दव्वेहि य मतेहि य, जन्न अम्हं देवाणुप्पिया किंचि असुइ भवामो, त सव्व सज्जो पुढवीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ. तओ त असुई सुई भवइ, एव खलु जीवा

पासको जात । श्रमणोपासकानां धर्म. सविस्तरमुपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसंजीवनी टीकाया वर्णितस्तत एव विज्ञेयः । यावत् ' अहिगयजीवाजीवे ' अधिगत जीवाजीवः, जीवाजीवस्वरूपाविज्ञः, यावत् यथा परिगृही तैस्तपःकर्मभिरात्मानं भावयन् विहरति । पान्थकप्रमुखाः पञ्चशत मन्त्रिण' श्रमणोपासका जाता द्वादशव्रतधारिणः श्रावका अभूवन् । स्थापत्यापुत्रः बहिः=शैलकपुर नाम्नो नगराद् बहिर्जनपदविहार विहरति=करोति स्म ॥ १८ ॥

द्वारा अभ्यनुज्ञात होकर शैलक राजा ने १२ बारह प्रकार का गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया-वे श्रमणोपासक बन गये। श्रमणोपासकों के धर्म का विस्तार पूर्वक वर्णन हमने उपासकदशाग सूत्र की अगार धर्मसजीवनी नाम की टीका मे किया है। सो वहा से जान लेना चाहिये। जीव और अजीव का क्या स्वरूप है इस बात को भी वे जानने वाले बन गये। अनेक प्रकार की तपश्चर्या भी वे करने लगे। इस तरह यथा परिगृहीत तप कर्मों द्वारा वे अपने आपको भावित करते हुए रहने लगे। (पथगपामोक्खा पचमतिसया समणोवासया जाया-थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहार विहरइ) राजा के जो पाथक प्रमुख पाचसौ मत्री थे- वे भी श्रमणोपासक बन गये- १२ व्रत धारी हो गये - स्थापत्यापुत्र अनगार उस शैलकपुर नगर से बाहर जनपद में विहार कर गये। सूत्र " १८ "

સુખ થાય તેમ કરો આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા અનગારથી આજ્ઞાપિત થયેલા શૈલક રાજાએ બાર પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મો સ્વીકાર્યા અને તેઓ શ્રમણોપાસક થયા શ્રમણોપાસકોના ધર્મોનુ સવિસ્તર વર્ણન અમે ઉપાસકદશાગસૂત્રની અગાર ધર્મ સજીવની નામની ટીકામા કર્યુ છે જિજ્ઞાસુ જન તેમાથી જાણી શકે છે જીવ અને અજીવના સ્વરૂપ વિષેનુ જ્ઞાન પણ શૈલક રાજાને થઈ ગયુ અનેક જાતની તપસ્યાઓ તેઓ કરવા લાગ્યા આ રીતે યથાપરિગૃહીત તપ કર્મો વડે પોતાની જાતને ભાવિત કરતા રહેવા લાગ્યા (પથગપામોક્ખા પચમતિસયા સમણોવાસયા જાયા થાવચ્ચાપુત્તે બહિયા જણવયવિહાર વિહરઇ) રાજાના પાથક પ્રમુખ પાચસો મત્રી હતા તેઓ પણ શ્રમણોપાસક તેમજ બાર વ્રત ધારી થઇ ગયા ત્યાર બાદ સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર શૈલકપુર નગરથી બહાર બીજા જનપદોમા વિહાર કરવા માટે નીકળી પડયા ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

स कीदृश इत्याह-आढ्यः विभवशाली, यावत् अपरिभूतः=केनापि पराभवितुमशक्यः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुको नाम परिव्राजक आसीत् । सकीदृश इत्याह "रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसट्ठितंतकुसले" ऋग्वेद यजुर्वेदसामवेदाथर्ववेदषष्ठितन्त्र-कुशलः सर्ववेदसर्वतन्त्रनिपुण इत्यर्थः,'सखसमये लब्धट्ठे' साख्यसमये लब्धार्थः सांख्यशास्त्राभिमतसकलतत्त्वार्थाभिज्ञः' पञ्चयमपञ्च नियमयुक्त, तत्र=अहिंसा सत्यास्तेदब्रह्मचर्यापरिग्रहाः पञ्चयमाः, शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणि-

---

का नगर सेठ रहता था। यह विशेष विभूतिशाली था और अपरिभूत था-कोई भी व्यक्ति इसका तिरस्कार (अपमान) नही कर सकता था। (तेण कालेण तेण समएण सुए णाम परिव्वायए होत्था) उसी काल और उसी समयमें शुक नाम का परिव्राजक था (रिउव्वेय, जजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सट्ठितंतकुसले, सख समए लद्धट्ठे पचजम पच्च नियमजुत्त सोयमूलग दसप्पयारपरिव्वायगधम्म दाणधम्मच सोयधम्म च तित्थाभिसेयच आघवमाणे पण्णवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए) यह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद षष्टितन्त्र इनमें कुशल था-निपुण था। सांख्य सिद्धान्त प्रतिवादित सकल तत्वों के अर्थका ज्ञाता था। पचयम और पचनियम से युक्त तथा शौच मूलक दश प्रकारके परिव्राजक धर्मका दान रूपधम का शौच रूप धर्मका तीर्थाभिषेकका उपदेश देता था उसका प्रचार करता था। अहिंसा,सत्यअस्तेय ब्रह्मचर्य और परिग्रह ये पाच यम हैं। शौच सन्तोष तप स्वाध्याय, ईश्वरप्रणि-

---

શેઠ રહેતો હતો. તે ખૂબજ ઐશ્વર્ય સપન્ન અને અપરિભૂત હતો. કોઈ પણ વ્યક્તિ તેમનો તિરસ્કાર ન કરી શકતી હતી (तेण कालेण तेण समएण सुए णाम परिव्वायए होत्था) તે કાળે અને તે સમયે એક શુક નામે પરિવ્રા જક હતો (रिउव्वेय, जजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सट्ठितंतकुसले, सख समए लद्धट्ठे पचजमप चनियमजुत्त सोयमूलग दसप्पयारपरिव्वायगधम्म दाणधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च आघवेमाणे पण्णवेमाणे धाउरत्तवत्थ पवरपरिहिए) તે ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ, અથર્વવેદ તેમજ ષષ્ઠિતત્રમા કુશળ હતો, નિપુણ હતો સાખ્યસિદ્ધાન્તમા કહેલા બધા તત્ત્વોનો તે જાણ નાર હતો તે પાચ યમ તેમજ પાચ નિયમ થી યુક્ત હતો તે શૌચમૂલક દશ જાતના પરિવ્રાજક ધર્મનો, દાનરૂપ ધર્મનો શૌચરૂપ ધર્મનો તીર્થાભિષેક (તીર્થસ્નાન) નો ઉપદેશ આપતો હતો અને પોતાના ધર્મનો પ્રચાર કરતો હતો. અહિંસા, સત્ય અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય અને પરિગ્રહ એ પાચ 'યમ' છે

जलाभिसेय पूयकप्पाणे अविग्घेणं सग्गं गच्छति, तएणं से सुदंसणे सुयरस अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठ सुयरस अंतिए सोयमूलय धम्मं गिण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपरिग्गहेणं परिलाभेमाणे जाव विहरइ। तएणं से सुए परिव्वायगे सोगंधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता बहिया जणवय विहारंविहरइ ॥ सू० १९ ॥

" तेण कालेण " इत्यादि।

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौगन्धिका नाम नगरी आसीत् वर्णक सौगन्धिकानगर्या वर्णन औपपातिकसूत्रोक्त चम्पानगरीवद् वाच्यम् नीलाशोक सुद्यान-नीलाशोकनामकमुपवन तत्रासीत्। वर्णक-अस्योद्यानस्य वर्णन पूर्ववद् बोध्यम्। तत्र खलु सौगन्धिकाया नगर्या सुदर्शनो नाम नगर श्रेष्ठी प्रतिवसति।

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यदि ॥

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय मे (सोगधिया नाम नगरी होत्था) सौगधिका नाम की नगरी थी-(वन्नओ) इस नगरी का वर्णन औपपातिक सूत्र मे जिस प्रकर चपानगरी का वर्णन किया गया है उसी तरह का जानना चहिये। (नीलासोए उज्जाणे) इस नगरी मे उद्यान था जिसका नाम नीलाशोक था। (वन्नओ) पूर्वकी तरह इस उद्यान का वर्णन जान लेना चाहिये। (तत्थ ण सोगधियाए नयरीए सुदसणे नाम नयरसेट्ठी परीवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए) उस सौगधिका नगरी मे सुदर्शन नाम

तेण कालेण तेण समएणं इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (सोगधिया नाम नगरी होत्था) સૌગધિકા નામે નગરી હતી (वन्नओ) ઔપપાતિક સૂત્રમા જે પ્રમાણે ચપાનગરીનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તે પ્રમાણેજ અહીં પણ જાણી લેવુ જોઈએ, (नीलासोए उज्जाणे) આ નગરીમા એક ઉદ્યાન હતુ જેનુ નામ નીલાશોક હતું (वन्नओ) પહેલાની જેમ આ ઉદ્યાનનુ વર્ણન પણ જાણી લેવુ જોઈએ (तत्थण सोगधियाए नयरीए सुदसणे नाम नयरसेट्ठी परीवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए) તે સૌગધિકા નગરીમા સુદર્શન નામે નગર

यत्रैव सौगन्धिका नगरी यत्रैव परिव्राजकावसथः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकावसथे भाण्डकनिक्षेपं करोति=त्रिदण्डादीन्युपकरणानि स्थापयति, कृत्वा सांख्यसमयेन सांख्यसिद्धान्तानुसाराचारेण आत्मानं भावयन् विहरति।

ततः खलु सौगन्धिकायां नगर्यां शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरेषु यावद् राजपथेषु बहुजनोऽन्योन्यस्य परस्परम्-एवमाख्याति - कथयति, एवं खलु शुको नाम परिव्राजक इह अस्यां सौगन्धिकायां नगर्यां इदमागतः=समागतः यावदात्मानं भावयन् विहरति। परिषन्निर्गता। सुदर्शनोऽपि निर्गतः। ततः खलु स

आश्रम था वहां आया। (इवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता सएणं समणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भाडों को रख दिया। और रख कर सांख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति चालू रखता हुआ ठहर गया। (तएणं सोगंधियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) इसके बाद उस सौगंधिका नगरी में शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत् राजमार्ग में अनेक जन परस्पर में इस प्रकार बात चीत करने लगे (एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागए जाव विहरइ) बधुओ! शुक नाम का परिव्राजक इस अपनी सौगंधिका नगरी मे अभी २ आया है।- वह सांख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति रखता हुआ परिव्राजकाश्रम में ठहरा हुआ है। इस बात से परिचित होकर (परिसा निग्गया, सुदंसणो, निग्गओ, तएणं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स

સૌગંધિકાનગરી હતી અને જ્યાં પરિવ્રાજકોનો આશ્રમ હતો ત્યાં આવ્યો (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता सएणं समणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) તે પરિવ્રાજકોના આશ્રમમાં પહોંચીને તેને પોતાની બધી વસ્તુઓ મૂકી દીધી અને ત્યાં સાંખ્યસિદ્ધાન્તને અનુસરીને પોતાના ધર્મનો પ્રચાર કરતો રહેવા લાગ્યો (तएणं सोगंधियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) ત્યારબાદ સૌગંધિકા નગરીમાં શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક ચત્વર અને રાજમાર્ગમાં ઘણા માણસો આ રીતે વાતો કરવા લાગ્યા-(एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागए जाव विहरइ) મિત્રો ! આપણી આ નગરીમાં શુક નામે એક પરિવ્રાજક હમણાં જ આવ્યો છે સાંખ્યસિદ્ધાંત અનુસાર તે પોતાની પ્રવૃત્તિઓ આચરતો પરિવ્રાજક આશ્રમમાં રોકાયો છે આ વાતની જાણ થતા જ (परिसा

धानानि पञ्चनियमाः तैर्युक्तम् शौचमूलक दशप्रकार=यमनियमसमेलनेन दशविध परिव्राजकधर्म दानधर्म=दानरूप धर्म च शौचधर्म=मृद्वारिजनित शौचरूप धर्म च तीर्थाभिषेक=गङ्गादि तीर्थोदकस्नानं च आख्यापयन् प्रख्यापयन प्ररूपयन् प्रज्ञापयन्' धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए' धातुरक्तवस्त्रप्रवरपरिहितः=गैरिकधातुरक्तवस्त्र प्रवरपरिधानः, गैरिकरक्तवस्त्रधारीत्यर्थ, ' तिदड-कुडिय - छत्त - छलय - कुस-पवित्तय-केसरी हत्थगए ' त्रिदण्ड-कुण्डिका-छत्र-षट्पना-लकाङ्कुश-पवित्रक-केसरी हस्तगतः, त्रिदण्डादीनि सप्त हस्तगतानि यस्य स तथा, तत्र त्रिदण्ड=मनोवाक्कायदण्डत्रयपरिज्ञानार्थ दण्डत्रय, कुण्डिका=कमण्डलुः, छत्र, प्रसिद्ध, षट्नालक = त्रिकाष्ठिका, अङ्कुशः - प्रसिद्धः-वृक्षपल्लवच्छेदनार्थ, पवित्रक= ताम्रमयमङ्गुलीयक, केसरी = चीवरखण्ड, परिव्राजकसहस्रेण सार्ध सपरिवृत

धान ये पाच नियम है। मिट्टी और पानी से शुद्ध करना इसका नाम शौच है। गगा आदि तीर्थके जलमें स्नान करना इसका नाम तीर्थाभिषेक है। इन बातों को आख्यापन-कथन करता हुआ प्रख्यापन प्ररूपणा करता हुआ यह शुक जिन वस्त्रों को पहिरता था वे गैरिक धातु से रगे हुए थे। अर्थात् गैरिक धातु से रगे हुए वस्त्रों को ही यह पहिरता था। (तिदडकुडिय, छत्त छलुयकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे जेणेव सोगधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ) मन, वचन और काय इन तीन दडो के परिज्ञान के लिये यह दण्ड त्रय का धारी था। कमण्डलु, छत्र, त्रिकाष्टिका, अकुश, ताम्रमय अगुलीयक, (अगूठी) और चीवर खड ये सब उस के हाथ में थे। १ एक हजार साधु मडल से यह परिवृत था। सो जहा वह सौगधिका नगरी थी और उस में भी जहा परिव्राजकों का

શૌચ, સતોષ, તપ, સ્વાધ્યાય, ઈશ્વરપ્રણિધાન એ પાચ નિયમો છે માટી અને પાણીથી શુદ્ધ કરવુ તે શૌચ કહેવાય છે ગગા વગેરે તીર્થ જળોમા નાહવુ તે તીર્થાભિષેક કહેવાય છે આ યમ નિયમોનુ આખ્યા વચન તેમજ પ્રરૂપણા કરતો તે શુક પરિવ્રાજક ગૈરિક (ગેરુઆ) વસ્ત્રો પહેરતો હતો એટલે કે ગેરુ થીરગેલા વસ્ત્રો જ તે પહેરતો હતો (तिदड कुडिय, छत्त, छलुय कुसप वित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं सपरिवुडे जेणेव सोगधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ) મન, વચન અને કાય આ ત્રણ દડોના પરિજ્ઞાન માટે તે દડત્રય (ત્રણદડ) ધારણ કરતો હતો કમડળુ છત્ર, ત્રિકાષ્ટિકા, અકુશ તાબાની વીટી અને ચીવરખડ આ બધા તેના હાથ મા હતા એક હજાર સાધુઓ તેની માથે હતા તે કરતો ફરતો જ્યા

यत्रैव सौगन्धिका नगरी यत्रैव परिव्राजकारामस्य, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकारामस्य भाण्डकनिक्षेपं करोति=त्रिदण्डादीन्युपकरणानि स्थापयति, कृत्वा सांख्यसमयेन सांख्यसिद्धान्तानुसाराचारेण आत्मानं भावयन् विहरति।

ततः खलु सौगन्धिकाया नगर्या शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरेषु यावद् राजपथेषु बहुजनोऽन्योन्यस्य परस्परम्-एवमाख्याति - कथयति, एवं खलु शुको नाम परिव्राजक इह अस्यां सौगन्धिकायां नगर्यां इदमागतः=समागतः यावदात्मानं भावयन् विहरति। परिषन्निर्गता। सुदर्शनोऽपि निर्गतः। ततः खलु स

आश्रम था वहां आया। (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता सयं समणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भाडों को रख दिया। और रख कर सांख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति चालू रखता हुआ ठहर गया। (तएणं सोगंधियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) इसके बाद उस सौगंधिका नगरी में शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत् राजमार्ग में अनेक जन परस्पर में इस प्रकार बात चीत करने लगे (एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागए जाव विहरइ) बहुओ! शुक नाम का परिव्राजक इस अपनी सौगंधिका नगरी मे अभी २ आया है।- वह सांख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति रखता हुआ परिव्राजकाश्रम में ठहरा हुआ है। इस बात से परिचित होकर (परिसा निग्गया, सुदंसणो, निग्गए, तएणं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स

સૌગંધિકાનગરી હતી અને જ્યાં પરિવ્રાજકોનો આશ્રમ હતો ત્યાં આવ્યો (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता सयं समणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) તે પરિવ્રાજકોના આશ્રમમાં પહોંચીને તેને પોતાની બધી વસ્તુઓ મૂકી દીધી અને ત્યાં સાંખ્યસિદ્ધાન્તને અનુસરીને પોતાના ધર્મનો પ્રચાર કરતો રહેવા લાગ્યો (तएणं सोगंधियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) ત્યારબાદ સૌગંધિકા નગરીમાં શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક ચત્વર અને રાજમાર્ગમાં ઘણા માણસો આ રીતે વાતો કરવા લાગ્યા-(एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागए जाव विहरइ) મિત્રો ! આપણી આ નગરીમાં શુક નામે એક પરિવ્રાજક હમણાં જ આવ્યો છે સાંખ્યસિદ્ધાંત અનુસાર તે પોતાની પ્રવૃત્તિઓ આચરતો પરિવ્રાજક આશ્રમમાં રોકાયો છે આ વાતની જાણ થતા જ (परिसा

शुकः परिव्राजकस्तस्या परिषद सुदर्शनस्य च अन्येषा च बहूना जनाना पुरस्तात् साख्याना=साख्यमतानुयायिनां धर्मं परिकथयति-हे सुदर्शन ! एव वक्ष्यमाण प्रकारेण खलु अस्माक शौचमूलको धर्मः प्रज्ञप्तः, तदपि च शौच द्विविध प्रज्ञप्त तद्यथा-द्रव्यशौच च, भावशौच च। द्रव्यशौच च उदकेन=जलेन मृत्तिकया च भवति। भावशौच 'दब्भे हि य' दर्भैश्च, 'मते हि य' मन्त्रैश्च भवति। हे देवानुप्रिय ! यत् खलु अस्माक किंचित्=करचरणकमण्डलु प्रभृति अशुद्ध भवति तत् सर्वं 'सज्जो पुढवीए' सद्यः पृथिव्या=शुद्धनवीनमृत्तिकया, आलिप्यते अनुलिप्त क्रियते, ततः पश्चात् शुद्धेन=पवित्रेण, वारिणा=जलेन प्रक्षाल्यते ततस्तदशुद्ध उपहत वस्तु शुद्ध भवति। एव खलु जीवाः 'जलाभिसेयपूयप्पाणो' जला-

---

य अन्नेसिंच बहूण सखाण धम्म परिकहेइ) नगर निवासी परिषद् उसके पास जाने के लिये अपने २ घर से निकली। सुदर्शन भी निकला इसके बाद उस शुक परिव्राजक ने उस आगत परिषद् को सुदर्शन सेठ को तथा और भी एकत्रित हुए अनेक मनुष्यों को साख्यों के धर्म का उपदेश दिया। उसमें उस ने इस प्रकार कहा (एव खलु सुदसणा अम्हं सोयमूले धम्मे पण्णत्ते) हे सुदर्शन हमारा धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त हुआ है (से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते) वह शौच भी दो प्रकार का कहा हुआ है- (दव्वसोए य भावसोए य) १ द्रव्य शौच २ भाव शौच। (दव्वसोएय उदएण मट्टियाए य) जल और मिट्टी से द्रव्य शौच होता है। (भावसोए दब्भेहिं य मते हिं य) भावशौच दर्भ और मन्त्रों से होता है। (जन्न अम्ह देवाणुप्पिया ! किंचि असुइ भवइ त सव्व

निग्गवा, सुदसणो निग्गए तएण से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स य अन्नेसिं च बहूण सखाण धम्म परिकहेइ) નાગરીકોની પરિષદ તેની પાસે જવા પોત પોતાને ઘેરથી નિકળી સુદર્શન પણ પોતના ઘેરથી ત્યા જવા માટે બહાર નીકળ્યો ત્યાર પછી શુક પરિવ્રાજ કે ઉપસ્થિત થયેલી નગરીકો ની પરિષદ સુદર્શન તેમજ બીજા એકઠા થયેલા માણસોની સામે સાખ્યધર્મ નો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ આપતા શુક પરિવ્રાજકે આ પ્રમાણે કહ્યુ (एव खलु सुदसणा अम्ह सोयमूले धम्मे पण्ण) હે સુદર્શન ! અમારો ધર્મ શૌચ મૂલક પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે (सेविय सोए दुविहे पण्णत्ते) શૌચના બે પ્રકાર છે (दव्वसोए य भावसोए य) ૧, દ્રવ્ય શૌચ, ૨, ભાવ શૌચ (दव्वसोए य उदएण मट्टियाए य) અને માટીથી દ્રવ્ય શૌચ થાય છે (भावसोए दब्भेहं य मतेहिं) દર્ભ અને મત્રોવડે થાય છે (जन्न अम्हें

भिषेक पूतात्मानः=जलेनाभिषेकः स्नान, तेन पूतः शुद्ध आत्मा येषा ते, माणिनः ' अविग्घेण ' अविघ्नेन प्रतिबन्धरहितेन ' सग्ग ' स्वर्ग गच्छन्ति। ततः खलु स सुदर्शनः शुकस्य शुकनाम्नः परिव्राजकस्य अन्तिके=समीपे धर्मं= शौचमूलक शुकोक्तधर्म, श्रुत्वा ' हट्ठे , हृष्टः प्रमुदितः सन् शुकस्यान्तिके शौच मूलक धर्मं गृह्णाति। साख्यमत स्वीकुरुतेस्म शुक परिव्राजकस्य पर्युपासको जातः, शुकमेव धर्माचार्यत्वेन मन्यतेस्म, धर्मं गृहीत्वा स सुदर्शनः परिव्राजकान् प्रतिदि वस विपुलेन निस्तीर्णेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाऽऽहारेण, तथा वस्त्र

सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) हे देवानुप्रिय ! जो भी हमारा कोई कर चरण, कमण्डलु आदि- अशुचि हो जाती है उसे पहिले शुद्ध नवीन मृत्तिका से हम माज लेते हैं और बाद में पवित्र जल से धो लेते हैं- (तओ त असुई सुई भवइ, एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणे अविग्घेण सग्ग गच्छति) इस तरह वह अशुचि पदार्थ शुचि-पवित्र हो जाता है। इसी प्रकार जीव भी जलाभिषेक से जलस्नान से पवित्रात्मा बन कर बहुत जल्दी विना किसी रुकावट के स्वर्ग को पहुँच जाते है। (तएण से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा हट्ठे सुयस्स अतिए सोयमूलय धम्म गिण्हइ) इस प्रकार वे सुदर्शन शुक के पास धर्म का श्रवण कर बहुत अधिक हर्षित हुए। बाद में उन्होंने शुक से शौच मूलक धर्म अगीकार कर लिया। (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइम-साइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभेमाणे जाव विहरइ) शौचमूलक धर्मं

देवाणुप्पिया ? किं चि असुइ भवइ त सव्व सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुध्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) હે દેવાનુપ્રિય ! અમારા હાથ, પગ કમ-ડળુ વગેરે અપવિત્ર થઇ જાય છે તો પહેલા તેને નવીન માટીથી અમે ઉટકી એ છીએ અને ત્યાર પછી શુદ્ધ પાણી થી સાફ કરી લઇએ છીએ (तओ त असुई सुई भवइ एव खलु जीवा जलाभिसेय पूयप्पाणे अविग्घेण सग्ग गच्छति) એ પ્રમ ।તે અપવિત્ર પદાર્થ પવિત્ર થઈ જાય છે આ રીતે જીવ પણ પાણીથી સ્નાન કરી । પવિત્રાત્મા થઇને સત્વરે કોઈ પણ જાતના અટ કાવ કે મુશ્કેલી વગર આગે પહોચી જાય છે (तएण से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा ह सुयस्स अतिए सोयमूलय धम्म गिण्हइ) આ રીતે તે સુદર્શન નગર શેઠ શુકની પાસેથી ધર્મનુ શ્રમણ કરીને ખૂબજ હર્ષ પામ્યા અને તેની પાસેથી તેમણે શૌચ મૂલક ધર્મ સ્વીકાર્યો (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभे माणे जाव विह-

शुकः परिव्राजकस्तस्या परिषद सुदर्शनस्य च अन्येषा च बहूनां जनाना पुरस्तात् साख्याना=साख्यमतानुयायिनां धर्मं परिकथयति-हे सुदर्शन ! एव वक्ष्यमाण प्रकारेण खलु अस्माक शौचमूलको धर्मः प्रज्ञप्तः, तदपि च शौच द्विविध प्रज्ञप्तं तद्यथा-द्रव्यशौच च, भावशौच च। द्रव्यशौच च उदकेन=जलेन मृत्तिकया च भवति। भावशौच 'दब्भे हि य' दर्भैश्च, 'मते हि य' मन्त्रैश्च भवति। हे देवानुप्रिय ! यत् खलु अस्माक किंचित्=करचरणकमण्डलु प्रभृति अशुद्ध भवति तत् सर्वं 'सज्जो पुढवीए' सद्यः पृथिव्या=शुद्धनवीनमृत्तिकया, आलिप्यते अनुलिप्त क्रियते, ततः पश्चात् शुद्धेन=पवित्रेण, वारिणा=जलेन प्रक्षाल्यते ततस्तदशुद्ध उपहत वस्तु शुद्ध भवति ! एव खलु जीवाः 'जलाभिसेयपूयप्पाणो' जला-

---

य अन्नेसिंच बहूण सखाण धम्म परिकहेइ) नगर निवासी परिषद् उसके पास जाने के लिये अपने २ घर से निकली। सुदर्शन भी निकला इसके बाद उस शुक परिव्राजक ने उस आगत पर्षिपद् को सुदर्शन सेठ को तथा और भी एकत्रित हुए अनेक मनुष्यों को साख्यों के धर्म का उपदेश दिया। उसमें उस ने इस प्रकार कहा (एव खलु सुदसणा अम्हं सोयमूले धम्मे पण्णत्ते) हे सुदर्शन हमारा धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त हुआ है (से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते) वह शौच भी दो प्रकार का कहा हुआ है- (दव्वसोए य भावसोए य) १ द्रव्य शौच २ भाव शौच। (दव्वसोएय उदएण मट्टियाए य) जल और मिट्टी से द्रव्य शौच होता है। (भावसोए दब्भेहिं य मते हिं य) भावशौच दर्भ और मन्त्रों से होता है। (जन्न अम्ह देवाणुप्पिया ! किंचि असुइ भवइ त सव्व

निग्गवा, सुदसणो निग्गए तएण से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स य अन्नेसिं च बहूण सखाण धम्म परिकहेइ) નાગરીકોની પરિષદ તેની પાસે જવા પોત પોતાને ઘેરથી નિકળી સુદર્શન પણ પોતના ઘેરથી ત્યા જવા માટે બહાર નીકળ્યો ત્યાર પછી શુક પરિવ્રાજ કે ઉપસ્થિત થયેલી નગરીકો ની પરિષદ સુદર્શન તેમજ બીજા એકઠા થયેલા માણસોની સામે સાખ્યધર્મ નો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ આપતા શુક પરિવ્રાજકે આ પ્રમાણે કહ્યુ (एव खलु सुदसणा अम्ह सोयमूले धम्मे पण्ण) હે સુદર્શન ! અમારો ધર્મ શૌચ મૂલક પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે (सेविय सोए दुविहे पण्णत्ते) શૌચના બે પ્રકાર છે (दव्वसोए य भावसोए य) ૧, દ્રવ્ય શૌચ, ૨, ભાવ શૌચ (दव्वसोए य उदएण मट्टियाए य) પાણી અને માટીથી દ્રવ્ય શૌચ થાય છે (भावसोए दब्भेहि य मतेहिं य) ભાવ શૌચ દર્ભ અને મંત્રોવડે થાય છે (जन्न अम्हें

भिषेक पूतात्मानः=जलेनाभिषेकः स्नान, तेन पूतः शुद्ध आत्मा येषा ते, प्राणिनः ' अविग्घेण ' अविघ्नेन प्रतिबन्धरहितेन ' सग्ग ' स्वर्ग गच्छन्ति। ततः खलु स सुदर्शनः शुकस्य शुकनाम्नः परिव्राजकस्य अन्तिके=समीपे धर्म= शौचमूलक शुकोक्तधर्म, श्रुत्वा ' हट्ठे , हृष्टः प्रमुदितः सन् शुकस्यान्तिके शौच मूलक धर्म गृह्णाति। सांख्यमत स्वीकुरुतेस्म शुक परिव्राजकस्य पर्युपासको जातः, शुकमेव धर्माचार्यत्वेन मन्यतेस्म, धर्म गृहीत्वा स सुदर्शनः परिव्राजकान् प्रतिदि वस विपुलेन निस्तीर्णेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाऽऽहारेण, तथा वस्त्र

सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) हे देवानुप्रिय ! जो भी हमारा कोई कर चरण, कमण्डलु आदि- अशुचि हो जाती है उसे पहिले शुद्ध नवीन मृत्तिका से हम माज लेते हैं और बाद में पवित्र जल से धो लेते हैं- (तओ त असुई सुई भवइ, एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणे अविग्घेण सग्ग गच्छति) इस तरह वह अशुचि पदार्थ शुचि-पवित्र हो जाता है। इसी प्रकार जीव भी जलाभिषेक से जलस्नान से पवित्रात्मा बन कर बहुत जल्दी विना किसी रुकावट के स्वर्ग को पहुँच जाते है। (तएण से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा हट्ठे सुयस्स अतिए सोयमूलय धम्म गिण्हइ) इस प्रकार वे सुदर्शन शुक के पास धर्म का श्रवण कर बहुत अधिक हर्षित हुए। बाद में उन्होंने शुक से शौच मूलक धर्म अगीकार कर लिया। (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइम साइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभेमाणे जाव विहरइ) शौचमूलक धर्म

देवाणुप्पिया ? किं चि असुइ भवइ त सव्व सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुध्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) હે દેવાનુપ્રિય ! અમારા હાથ, પગ કમ- ડળુ વગેરે અપવિત્ર થઇ જાય છે તો પહેલા તેને નવીન માટીથી અમે ઉટકી એ છીએ અને ત્યાર પછી શુદ્ધ પાણી થી સાફ કરી લઇએ છીએ (તઓ त्त असुई सुई भवइ एव खलु जीवा जलाभिसेय पूयप्पाणे अविग्घेण सग्ग गच्छ ति) એ પ્રમ । તે અપવિત્ર પદાર્થ પવિત્ર થઈ જાય છે આ રીતે જીવ પણ પાણીથી સ્નાન કરી । પવિત્રાત્મા થઇને સત્વરે કોઈ પણ જાતના અટ કાવ કે મુશ્કેલી વગર સ ાગે પહોચી જાય છે (तएण से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा ह सुयस्स अ तिए सोयमूलय धम्म गिण्हइ) અ રીતે તે સુદર્શન નગર શેઠ શુકની પાસેથી ધર્મનુ શ્રમણ કરીને ખૂબજ હર્ષ પામ્યા અને તેની પાસેથી તેમણે શૌચ મૂલક ધર્મ સ્વીકાર્યો (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभे माणे जाव विह-

प्रतिग्रहेण प्रतिलाभयन् सत्कारयन समानयन् यावद् विहरति=विचरति । ततस्तदनन्तर खलु स शुकः परिव्राजकः सौगन्धिकाया नगर्या निर्गच्छति, निर्गत्य च बहिर्जनपदविहार विहरति=करोतिस्म ॥ १९ ॥

मूलम्-तेण कालेण तेण समएणं थावच्चापुत्तस्स समोसरण, परिसा निग्गया सुदसणो वि णिग्गओ, थावच्चापुत्तं वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-तुम्हाणं किं मूलए धम्मे पन्नत्ते ? तएणं थावच्चापुत्ते सुदसणेण एव वुत्ते समाणे सुदसण एव वयासी-सुदसणा अम्हाणं विणयमूले धम्मे पन्नत्ते सेवि य विणए दुविहे पन्नत्ते त जहा-अगारविणए अणगार विणए य, तत्थ णं जे से अगारविणए से णं चत्तारि अणुव्वयाइं सत्त सिक्खावयाइ, एक्कारस उवासगपडिमाओ । तत्थण जे से अणगारविणए से ण चत्तारि महाव्वयाइ, त जहा-सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण सव्वाओ

अगीकार करके उन्होंने फिर अशन पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चारों प्रकार के आहार से और वस्त्र के प्रदान से उस शुक परिव्राजक को लाभान्वित किया सत्कारित किया,-सन्मानित किया। (तएण से सुए परिव्वायगे सोगधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ) इसके बाद वह शुक परिव्राजक सौगधिका नगरी से निकला और निकल कर बाहर अन्य देशों की ओर विहार कर गया। "सू-१९"

રૂ૬) શૌચ મૂલક ધર્મ સ્વીકારીને તેમણે શુક પરિવ્રાજકને અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચારે પ્રકારના આહારો તેમજ વસ્ત્રો અર્પાને લાભાન્વિત કર્યો અને સન્માન કર્યું (तएण से सुए परिव्वायगे सोगधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ) ત્યાર પછી શુક પરિવ્રાજક સૌગ ધિકા નગરીથી બહારના બીજા દેશો તરફ વિહાર કરવા નીકળ્યા ॥સૂ૦ ૧૯॥

अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादसणसल्लाओ वेरमण, दसविहे पच्चक्खाणे चारस भिक्खुपडिमाओ इच्चेएणं दुविहेण विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणा भवति ॥ सू० २० ॥

(तेण कालेण) इत्यादि

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौगन्धिक्यां नगर्यां थावच्चापुत्रस्य समवसरणमागमनमभूत्, तदा परिषन्निर्गता = सौगन्धिका नगरी निवासिनो लोकाः स्थापत्यापुत्र वन्दितु निर्गता', सुदर्शनोऽपि=सुदर्शनाम्ना नगरश्रेष्ठी अपि, निर्गतः, तत्रागत्य थावच्चापुत्र वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नत्वा च एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे भगवान् ! युष्माक किं मूलको धर्मः प्रज्ञप्तः ? ततस्त-

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) उस कल और उस समय मे उस सौगन्धिकानगरी में विहार करते हुए (थावच्चापुत्तस्स समोसरण) स्थापत्यापुत्र अनगार का आगमन हुआ। (परिसा निग्गया,सुदसणो वि णिग्गओ) स्थापत्यापुत्रका आगमन सुनकर सौगधिका नगरीके निवासी जन उनको वदना करनेके लिये चले सुदर्शनसेठ भी चला। (थावच्चापुत्त वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) उसने वहाँ पहुचकर स्थापत्या पुत्र अनगारको वचन से स्तुति करने रूप वदना की तथा काय से उन्हे नमन किया। वदना नमस्कर करके फिर उसने उनसे इस प्रकार

તેણ કાલેણ તેણ સમએણ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેણ તેણ સમએણ) તે કાળે અને તે સમયે તેજ સૌગધિકા નગરીમા વિહાર કરતા (થાવચ્ચા પુત્તસ્સ સમોસરણ) સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર આવ્યા (પરિસા નિગ્ગયા સુદસણા વિ णिग्गओ) સ્થાપત્યાપુત્રને આવ્યાની જાણ થતા જ સૌગધિકા નગરીના નાગરિકો તેમને વદન કરવા નીકળી પડયા સુદર્શન શેઠ પણ તેમને વદન કરવા નીકળ્યા (थावच्चापुत्त वदइ, नमसइ वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी) ત્યા પહોચીને તેમણે સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર ના વચનથી સ્તુતિ કરીને વદન કર્યા તેમજ કાયાથી નમીને તેમને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને સુદર્શન શેઠે તેમને વિનતી કરી (तुम्हाण

दनन्तर खलु स्थापत्यापुत्रः सुदर्शनेनैवमुक्तः सन् सुदर्शनमेवमवादीत्-

हे सुदर्शन ! अस्माक धर्म' दुर्गतौ पततो जन्तून् धरति रक्षति शुभस्थान प्रापयति इति धर्मः आचार , विनयमूलः=विनयति अपनयति नाशयति सकल-लक्लेशकारकमष्टविध कर्म यः स विनय कर्मापनयनसमर्थश्चारित्रलक्षणोऽनुष्ठान विशेषः स एव मूल कारणं यस्य स तथा,-उक्त च-

कर्मणा द्राग् विनयनाद् विनयो विदुषां मत ।
अपवर्ग फलाढ्यस्य मूल धर्मतरोरयम् ॥ १ ॥ इति ।

चारित्रमाश्रित्य लब्धस्थितिक इत्यर्थ , यद्वा विनयो विनीतता द्रव्यभावाभ्यां नम्रता तन्मूलकः, प्रज्ञप्तः=तीर्थकरै प्ररूपितः । सोऽपि च विनयो द्विविधः तद्यथा-

---

कहा (तुम्हा ण कि मूलए धम्मे पन्नत्ते) हे भगवान ? आपका धर्म किं मूलक प्रज्ञप्त हुआ हैं । (तएण थावच्चापुत्ते सुदसणेण एव वुत्ते समाणे सुदसण एव वयसी) इस प्रकार सुदर्शन सेठ के द्वारा इस प्रकार पूछे गये स्थापत्यापुत्र अनगार ने उससे इस प्रकार कहा (सुदसणा अम्हाण विणयमूले धम्मे पन्नत्ते) हे सुदर्शन हमारा धर्म-विनय मूलक प्रज्ञप्त हुआ है । दुर्गतिमे जाने से जो प्राणियो को बचाता है और शुभ स्थान में उन्हे पहुँचाता है उसका नाम धर्म-आचार है । सकल क्लेशोंका दाता जो अष्ट प्रकार का कर्म है उसे जो नाश करता है उसका नाम विनय है। ऐसा विनय चारित्र रूप अनुष्ठान विशेष है । यह विनय ही धर्म का मूल कारण कहा गया है-कहा भि है जिसके द्वारा जीव झटिति कर्मो का नाश कर देता है तथा अपवर्ग रूप फल से युक्त हुए जो धर्मरूपी वृक्षका मूल है-वही विनय है । ऐसा विनय चारित्र रूप ही माना गया है

किं मूलए धम्मे पन्नत्ते) હે ભગવાન ! આપના ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો શુ છે (तएण थावच्चापुत्त सुदसणेणं एव वुत्त समाणे सुदसण एव वयासी) સુદર્શન શેઠના આ પ્રશ્નને સાભળીને થાપત્યાપુત્ર અનગારે જવાબમા તેમને કહ્યુ (सुदसणा अम्हाण विणयमूले धम्मे पन्नत्ते) હે સુદર્શન ! અમાગ ધર્મનો આધાર વિનય મૂલક છે દુર્ગતિમા જતા પ્રાણીઓને જે અટકાવે છે અને શુભસ્થાનોમા તેમને લઈ જાય છે તે ધર્મ-આચાર કહેવાય છે સમ સ્ત ક્લેશોને ઉત્પન્ન કરનાર આઠ પ્રકારના કર્મોનો જે નાશ કરે છે તેનુ નામ ' વિનય ' છે એવુ જ વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ છે આ વિનય જ ધર્મનુ મૂળ કારણ છે કહ્યુ છે કે જેના વડે જીવ જલદી કર્મોનો નાશ કરે છે તેમજ અપવર્ગ (મોક્ષ) રૂપી વૃક્ષનુ જે મૂળ છે તે 'વિનય' જ છે આવો વિનય ચારિત્ર રૂપ જ ગણાય છે (से विय विणए दुविहे पण्णत्ते) તે વિનય

अगारविनयोऽनगारविनयश्च। तत्र खलु य स अगारविनयः स खलु चतवारिअणुव्रतानि, सप्त शिक्षाव्रतानि, एकादशोपासकप्रतिमा. । अगारविनयविषये सविस्तर वर्णनमुपासकदशाङ्गटीकायामगारधर्मसजीवन्या द्रष्टव्यम् , तत्र चतुर्विंशतितमतीर्थकर श्री महावीरशासनत्वेन आनन्दगाथापतिवर्णने पञ्चाणुव्रतानि पञ्चमहाव्रतानि वर्णितानि । अत्रारिष्टनेमेर्द्वाविंशतितमतिर्थंकरशासनचतुर्थव्रतस्य परिग्रहविरमण-

(से वि य विणये दुविहे पण्णत्ते) वह विनय भी दो प्रकार का प्रज्ञप्त हुआ है। (तजहा) वह इस प्रकार से-(अगारविणए अणगारविणए) १ अगार विनय-दूसरा अनगार विनय। ये दो भेद चारित्र पर विनय को लक्ष्य में रखकर किये गये है। जब विनय का अर्थ विनीतता-नम्रता होती है उस समय द्रव्य की अपेक्षा नम्रता और भाव की अपेक्षा नम्रता इस तरह भी उसके दो भेद हो जाते हैं (तत्थ ण जे से आगारविणए सेण चत्तारि अणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ एक्कारसउवासगपडिमाओ) अगारविनय चार अणुव्रत सात शिक्षाव्रत तथा ११ उपासक प्रतिमा रूप है। इस विषयका विस्तृत वर्णन उपासक दशांगकी टीका अगारधर्म सजीवनी मे किया गया है अतः यहविषय वहा से जानलेना चाहिये। विशेष केवल इतना ही है-वहा चौवीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का शासन होने से उपासक दशाङ्गसूत्र मे आनन्दगाथापति के वर्णन में पाच अणुव्रत और पाच महाव्रत कहे गये है किन्तु यहां बाईसवें तीर्थंकर श्री अरिष्टनेमि भगवान के शासन में चौथे व्रत का

ના પણ બે પ્રકાર કહેવામા આવ્યા છે (त जहा) તે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે (अगारविणए अणगारविणए) १, આગાર વિનય, २, અનગાર વિનય આ બન્ને વિનયના પ્રકારો ચારિત્ર ગત વિનયને અનુલક્ષીને જ કરવામા આવ્યા છે જ્યારે વિનય શબ્દનો અર્થ 'વિનીતતા' (નમ્રતા) થાય છે ત્યારે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ નમ્રતા તેમજ ભાવની અપેક્ષાએ પણ નમ્રતા આ રીતે પણ તેના બે ભેદ થાય છે (तत्थ ण जे से अगारविणए से ण चत्तारि अणुव्वयाइ सत्त सिक्खावयाइ, एक्कारसउपासगपडिमाओ) આગાર વિનય પાચ અણુવ્રત સાત શિક્ષાવ્રત તેમજ અગિયાર ઉપાસક પ્રતિમા રૂપ છે આ વિષે સવિસ્તર માહિતી ઉપાસક દશાગસૂત્રની અગારધર્મસજીવની ટીકામા આપેલી છે જિજ્ઞાસુ જનોએ ત્યાથી જાણી લેવુ જોઇએ વિશેષ કેવળ એટલુ જ છે કે ત્યા ચોવીસમા તીર્થંકર શ્રી મહાવીર સ્વામીનુ શાસન હોવાથી આનન્દ ગાથાપતીના વર્ણનમા પચ અણુવ્રત અને પાચ મહાવ્રત કહેલા છે પરતુ અહી બાવીસમા તીર્થંકર શ્રી અરિષ્ટનેમી ભગવાનના આસનમા ચોથાવ્રતનો

दनन्तर खलु स्थापत्यापुत्रः सुदर्शनेनैवमुक्तः सन् सुदर्शनमेवमवादीत्-

हे सुदर्शन ! अस्माक धर्मः दुर्गतौ पततो जन्तून् धरति रक्षति शुभस्थान प्रापयति इति धर्मः आचार, विनयमूलः=विनयति अपनयति नाशयति सकल-लक्लेशकारकमष्टविध कर्म यः स विनय कर्मापनयनसमर्थश्चारित्रलक्षणोऽनुष्ठान विशेषः स एव मूल कारण यस्य स तथा,-उक्त च-

कर्मणा द्राग् विनयनाद् विनयो विदुषां मत ।
अपवर्ग फलाढ्यस्य मूल धर्मतरोरयम् ॥ १ ॥ इति ।

चारित्रमाश्रित्य लब्धस्थितिक इत्यर्थ, यद्वा विनयो विनीतता द्रव्यभावाभ्यां नम्रता तन्मूलक', प्रज्ञप्तः=तीर्थकरै प्ररूपितः । सोऽपि च विनयो द्विविधः तद्यथा-

---

कहा (तुम्हा ण कि मूलए धम्मे पन्नत्ते) हे भगवान ? आपका धर्म किस मूलक प्रज्ञप्त हुआ हैं। (तएण थावच्चापुत्ते सुदसणेण एव वुत्ते समाणे सुदसण एव वयसी) इस प्रकार सुदर्शन सेठ के द्वारा इस प्रकार पूछे गये स्थापत्या पुत्र अनगार ने उससे इस प्रकार कहा (सुदसणा अम्हाण विणयमूले धम्मे पन्नत्ते) हे सुदर्शन हमारा धर्म-विनय मूलक प्रज्ञप्त हुआ है। दुर्गतिमे जाने से जो प्राणियो को बचाता है और शुभ स्थान में उन्हे पहुँचाता है उसका नाम धर्म-आचार है। सकल क्लेशोंका दाता जो अष्ट प्रकार का कर्म है उसे जो नाश करता है उसका नाम विनय है। ऐसा विनय चारित्र रूप अनुष्ठान विशेष है। यह विनय ही धर्म का मूल कारण कहा गया है-कहा भि है जिसके द्वारा जीव झटिति कर्मो का नाश कर देता है तथा अपवर्ग रूप फल से युक्त हुए जो धर्मरूपी वृक्षका मूल है-वही विनय है। ऐसा विनय चारित्र रूप ही माना गया है

કિં મૂલए धम्मे पन्नत्ते) હે ભગવાન ! આપના ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો શું છે (तएण थावच्चापुत्त सुदसणेणं एव वुत्त समाणे सुदसण एव वयासी) સુદર્શન શેઠના આ પ્રશ્નને સાભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે જવાબમા તેમને કહ્યુ (सुदसणा अम्हाण विणयमूले धम्मे पन्नत्ते) હે સુદર્શન ! અમાગ ધર્મનો આધાર વિનય મૂલક છે દુર્ગતિમા જતા પ્રાણીઓને જે અટકાવે છે અને શુભસ્થાનોમા તેમને લઈ જાય છે તે ધર્મ-આચાર કહેવાય છે સમ સ્ત કલેશોને ઉત્પન્ન કરનાર આઠ પ્રકારના કર્મોનો જે નાશ કરે છે તેનુ નામ ' વિનય ' છે એવુ જ વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ છે આ વિનય જ ધર્મનુ મૂળ કારણ છે કહ્યુ છે કે જેના વડે જીવ જલદી કર્મોનો નાશ કરે છે તેમજ અપવર્ગ (મોક્ષ) રૂપી વૃક્ષનુ જે મૂળ છે તે 'વિનય' જ છે આવો વિનય ચારિત્ર રૂપ જ ગણાય છે (से विय विणए दुविहे पण्णत्ते) તે વિનય

ष्ठानाः=मोक्षपदावस्थिता भवन्ति । लोकाग्रे सिद्धिपदे प्रतिष्ठान स्थितिर्येषा ते तथा सिद्धा भवन्ति ॥ २० ॥

मूलम्–तएण थावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी–तुब्भेणं सुदसणा ! किं मूलए धम्मे पन्नत्ते ? अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते जाव सग्गं गच्छंति, तएण थावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी–सुदसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग महं रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा तएण सुदंसणा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ सोही ? णो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव सुदसणा ! तुब्भपि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादसणसल्लेणं नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही, सुदसणा ! से जहा णामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकय वत्थ सज्जियाखारेणं अणुलिपइ, अणुलिपित्ता पयण आरुहेइ आरुहित्ता उण्ह गाहेइ, गाहित्ता ततो पच्छा सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा से णूणं सुदसणा ! तस्स रुधिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स सुद्धेण वारिणा

लोयग्गपइट्ठागा भवति) इस प्रकार द्विविध विनयमूलक धर्म की की आराधना से जीव क्रम २ से अष्ट विध कर्मो की प्रकृतियो को खपाकर लोकके अग्र भागमें विराजमान हो जाते है ।–सिद्ध पदके भोक्तावन जाते हैं । सूत्र॥२०॥

लोयग्गपइट्ठाणा भवति) આ રીતે વિનયના બને પ્રકારો જે ધર્મના મૂળ છે એવા ધર્મની આરાધના કરવાથી જીવ ધીમે ધીમે અનુક્રમે કર્મોની આઠ જાતની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરીને લોકના અગ્રભાગે સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે, તેઓ સિદ્ધપદને ભોગવનાર થાય છે, ॥ સૂ–૨૦ ॥

व्रतेऽन्तर्भावात् चाउज्जामो धम्मो इति वचनात् चत्वारि अणुव्रतानि, चत्वारि महाव्रतानि आसन् इति विशेषः । तत्र खलु यः सोऽनगारविनयः स खलु पञ्च महाव्रतानि, तद्यथा-सर्वस्मात् प्राणातिपाताद् विरमण१, सर्वस्माद् मृषावादाद् विरमण२, सर्वस्माद् अदत्तादानाद् विरमण३, सर्वस्मात् परिग्रहाद् विरमण। सर्वस्माच्च रात्रिभोजनाद् विरमण, यावन्मिथ्यादर्शनशल्याद् विरमण, दशविध प्रत्याख्यान द्वादशभिक्षुप्रतिमा., इत्येतेन द्विविधेन, विनयमूलकेन धर्मेण 'अणुपुव्वेण' अनुपूर्व्येण क्रमेण 'अट्ठकम्मपगडीओ' अष्टकर्मप्रकृतीः ज्ञाना वरणीयाद्यष्टकर्मप्रकृतीः 'खवेत्ता' क्षपयित्वा 'लोयग्गपइट्ठाणा' लोकाग्रमति

पाचवें परिग्रहविरमणव्रत में अन्तर्भाव होने से 'चाउज्जामो धम्मो' इस वचन से चार अणुव्रत और चार महाव्रत कहे गये हैं।

(तत्थ ण जे से अणगारविणए से णं चत्तारि महव्वयाइ त जहा) इसी तरह जो अनगार विनय है वह चार महाव्रत रूप है जैसे (सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण, सव्वाओ भोयणाओ वेरमण जाव मिच्छादसणसल्लाओ वेरमण) समस्त प्राणातिपात से विरमण, समस्त मृषावाद से विरमण समस्त अदत्तादान से विरमण, समस्त परिग्रह से विरमण होना इन चार प्रकार के महाव्रतरूप तथा समस्त रात्रि भोजन से विरमण यावत् मिथ्यादर्शन शल्य से विरमण होना इन रूप तथा (दसविहे पच्चक्खाणे बारसभिक्खुपडिमाओ दस विध प्रत्याख्यान रूप और १२ बारह भिक्षु प्रतिमा रूप है (इच्चेएणं दुविहेण विणयमूलएण धम्मेण अणुपुव्वेण अट्ठ कम्मपगडीओ खवेत्ता

પાચમા પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતમા અન્તર્ભાવ હોવાથી "चाउज्जामो धम्मो" એ વચનથી ચાર અણુવ્રત અને ચારમહાવ્રત કહ્યા છે (तत्थ ण जे से अणगार विणए से ण चत्तारिमहव्वयाइ त जहा) આ રીતે જ અનગાર વિનય પણ ચાર મહાવ્રત રૂપ છે જેમકે (सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण सव्वाओ अदिन्नदाणाओ वेरमण सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण सव्वाओ राइ भोयणाओ वेरमण जाव मिच्छादसणसल्लाओ वेरमण) સકળ પ્રાણાતિપાતથી વિરમવુ સકળ મૃષાવાદ (असत्यभाषण) થી વિરમવુ, સકળ અદત્તાદાનથી વિરમવુ, અને સકળ પરિગ્રહોથી વિરમવુ આ ચાર જાતના મહાવ્રત રૂપ છે રાત્રિ ભોજનથી વિરમવુ યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી વિરમિત થવુ, (दसविहे पच्चक्खाणे बारसभिक्खुपडिमाओ) દશવિધ પ્રત્યાખ્યાનરૂપ અને બાર પ્રતિમારૂપ છે (इच्चेएणं दुविहेण विणयमूलएण धम्मेण अणुपुव्वेण अट्ठ कम्मपगडीओ खवेत्ता

ष्ठानाः=मोक्षपदावस्थिता भवन्ति । लोकाग्रे सिद्धिपदे प्रतिष्ठान स्थितिर्येषा ते तथा सिद्धा भवन्ति ॥ २० ॥

मूलम्–तएण थावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी–तुब्भेण सुदसणा ! किं मूलए धम्मे पन्नत्ते ? अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते जाव सग्ग गच्छंति, तएण थावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी–सुदसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा तएणं सुदसणा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ सोही ? णो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव सुदसणा ! तुब्भंपि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादसणसल्लेणं नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही, सुदसणा ! से जहा णामए केइ पुरिसे एगं मह रुहिरकय वत्थ सज्जियाखारेणं अणुलिपइ, अणुलिपित्ता पयण आरुहेइ आरुहित्ता उण्ह गाहेइ, गाहित्ता ततो पच्छा सुद्धेणवारिणा धोवेज्जा से णूण सुदसणा ! तस्स रुधिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स सुद्धेण वारिणा

लोयग्गपइट्ठागा भवति) इस प्रकार द्विविध विनयमूलक धर्म की की आराधना से जीव क्रम २ से अष्ट विध कर्मो की प्रकृतियो को खपाकर लोकके अग्र भागमे विराजमान हो जाते है ।–सिद्ध पदके भोक्ताबन जाते हैं । सूत्र॥२०॥

लोयग्गपइट्ठाणा भवति) આ રીતે વિનયના બને પ્રકારો જે ધર્મના મૂળ છે એવા ધર્મની આરાધના કરવાથી જીવ ધીમે ધીમે અનુક્રમે કર્મોની આઠ જાતની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરીને લોકના અગ્રભાગે સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે, તેઓ સિદ્ધપદને ભોગવનાર થાય છે, ॥ સૂ–૨૦ ॥

पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ? हंता भवइ, एवामेव सुदंसणा ! अम्हंपि पाणाइवायवेरमणेणं अत्थि सोही, जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही, तएण से सुदंसणे सबुद्धे थावच्चापुत्त वदइ, नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामिणं भंते ! धम्म सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ॥ सू० २१ ॥

(तएण थावच्चा०) इत्यादि ।

टीका- ततः खलु स्थापत्यापुत्रः सुदर्शनमेवमवादीत्-तव खलु सुदर्शनः किं मूलको धर्मः प्रज्ञप्तः ? एव स्थापत्यापुत्रेण पृष्टः सन् सुदर्शनो वदति-' अम्हाण ' इत्यादि । हे देवानुप्रिय ! अस्माक शौचमूलो धर्मः प्रज्ञप्त', यावत् स्वर्ग गच्छन्ति अत्र यावच्छब्देन-' सेऽवि य सोए दुविहे पन्नत्ते त जहा दव्वसोए य भाव तएण थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं थावच्चापुत्ते) इस प्रकार कहनेके बाद स्थापत्यापुत्र अनगार ने पुनः (सुदसण एव) सुदर्शन से इस प्रकार कहा-(तुब्भेण सुदसणा कि मूलए धम्मे पन्नत्ते हे सुदर्शन ! तुम्हारा धर्म कि मूलक प्रज्ञप्त हुआ है (अम्हाण देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) तब सुदर्शनने कहा हे देवानुप्रिय ! हमारा धर्म शौचमूलक प्रज्ञप्त हुआ है । (जाव सग्ग गच्छति) इस सुदर्शन के कथन " मैं स्वर्ग जाते हैं " यहा तक का पाठ लगा लेना चाहिये-जैसे-"सोवियसोए दुविहे पन्नत्ते तजहा

' तएण थावच्चा पुत्ते ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(तएण थावच्चापुत्ते) (सुदसण एव) આ રીતે ઉપદેશ આવતા સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે ફરી, (सुदसण एव) સુદર્શનને સંબોધતા કહ્યુ-(तुब्भेण सुदसणा ! किं मूलए धम्मे पन्नत्ते)હે સુદર્શન તમારા ધર્મનુ મૂળ શુ પ્રજ્ઞપ્ત થયુ છે? (अम्हाण देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) જવાબ આપતા સુદર્શને કહ્યુ "હે દેવાનુપ્રિય ! મારા ધર્મનુ મૂળ શૌચ (પવિત્રતા) છે" એટલેકે મારો ધર્મ શૌચ મૂલક सग्ग गच्छति) 'यावत्' સ્વર્ગમા પહોચે છે " સુદર્શનના કથનમા [illegible] જોઇએ જેમ " सो वि य सोए दुविहे पन्नत्ते त जहा

सोए य इत्यादि एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेण ' इति पर्यन्त वाच्यम् । ततः खलु स्थात्यापुत्र सुदर्शनमेवमवादीत्-सुदर्शन ! तद् यथानामकः कश्चित् पुरुष एक महद् ' रुहिरकय ' रुधिरकृत शोणितलिप्त वस्त्र रुधिरेण चैव= शोणितेनैव 'धोवेज्जा' धावयेत् प्रक्षालयेत् तदा खलु सुदर्शन ! तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य प्रक्षाल्यमानस्यास्ति=भवन्ति काचित् ' सोही ' शोधि शुद्धिः निर्मलता, ' णो इणट्ठे समट्ठे ' नायमर्थः समर्थ =रुधिरलिप्त वस्त्र रुधिरेणैव प्रक्षालित सन् पवित्र भवतीत्ययमर्थः समर्थो न भवति मामाणिकी बुद्धिमुपगन्तु न शक्नोतीत्यर्थः । हे सुदर्शन ! एवमेव ' तुब्भपि ' तवापि ' पाणाइवाएण ' प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शनशल्येन नास्ति शोधि', सुदर्शन ! अथ यथानामकः कश्चित् पुरुषः

दव्वसोए य भावसोए य " इत्यादि से लेकर " एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेण " (तएण थावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी) इस प्रकार सुदर्शन का कथन सुनकर स्थापत्यापुत्र अनगारने उस सुदर्शन से इस प्रकार कहा-(सुदसणा ! से जहानामए केइपुरिसे एग महं रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा तएण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही !) हे सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक बडे भारी रुधिर लिप्त वस्त्र को रुधिर से ही धोवे तो रुधिर (खून) से प्रक्षाल्यमान उस वस्त्र की शुद्धि होती है जैसे (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थित नही होता-रुधिर से लिप्त हुआ वस्त्र रुधिर से धोने पर साफ-शुद्ध होता है-जैसा यह अर्थ प्रामाणिक बुद्धि द्वारा मान्य नही होता है (एवामेव सुदसणा तुब्भपि पाणाइवाएण जावमिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही)

દવ્વસોએ ય ભાવસોએ ય " અહીથી " एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेण " અહી સુધી સુદર્શનનુ કથન સમજવુ જોઇએ (तएणं थावच्चा पुत्ते सुदसण एव वयासी) આ રીતે સુદર્શનની શૌચ મૂલક ધર્મ વિષેની વાત સાભળીને સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ-(सुदसणा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एग महं रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा तएण सुदसणा ? तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही ?) હે સુદર્શન ! કોઇ પુરુષ લોહીવાળુ મોટુ લૂગડુ લોહીથી જ સાફ કરે તો તે લોહીથી સાફ કરેલુ લૂગડુ શુ શુદ્ધ થશે ! (णो इणट्ठे समट्ठे) જેમ લોહી વાળુ લૂગડુ લોહીથી સ્વચ્છ થાય જ નહિ આ વાત પ્રામાણિક બુદ્ધિથી ગમે તેને કરીએતો પણ સાફ થાય જ નહિ (एवामेव सुदसणा ? तुब्भपि पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही) તે રીતે સુદર્શન ! તારી પણ

पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ? हंता भवइ, एवामेव सुदसणा ! अम्हंपि पाणाइवायवेरमणेणं अत्थि सोही, जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही, तएणं से सुदसणे सवुद्धे थावच्चापुत्त वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-इच्छामिण भंते ! धम्म सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ॥ सू० २१ ॥

(तएण थावच्चा०) इत्यादि ।

टीका- तत. खलु स्थापत्यापुत्रः सुदर्शनमेवमवादीत्-तव खलु सुदर्शनः किं मूलको धर्मः प्रज्ञप्तः ? एव स्थापत्यापुत्रेण पृष्टः सन् सुदर्शनो वदति-' अम्हाण ' इत्यादि । हे देवानुप्रिय ! अस्माक शौचमूलो धर्मः प्रज्ञप्तः,यावत् स्वर्गं गच्छन्ति अत्र यावच्छब्देन-' सेऽवि य सोए दुविहे पन्नत्ते त जहा दव्वसोए य भाव तएण थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं थावच्चापुत्ते) इस प्रकार कहनेके बाद स्थापत्यापुत्र अनगार ने पुनः (सुदसण एव) सुदर्शन से इस प्रकार कहा-(तुब्भेण सुदसणा कि मूलए धम्मे पन्नत्ते हे सुदर्शन ! तुम्हारा धर्म कि मूलक प्रज्ञप्त हुआ है (अम्हाण देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) तब सुदर्शनने कहा हे देवनुप्रिय ! हमारा धर्म शौचमूलक प्रज्ञप्त हुआ है । (जाव सग्ग गच्छति) इस सुदर्शन के कथन " मैं स्वर्ग जाते है " यहा तक का पाठ लगा लेना चाहिये-जैसे-"सोवियसोए दुविहे पन्नत्ते तजहा

' तएण थावच्चा पुत्ते ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(तएण थावच्चापुत्ते) (सुदसण एव) આ રીતે ઉપદેશ આપતા સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે ફરી, (सुदसण एव) સુદર્શનને સમોધતા કહ્યુ-(तुब्भेण सुदसणा ! किं मूलए धम्मे पन्नत्ते)હે સુદર્શન તમારા ધર્મનુ મૂળ શુ પ્રજ્ઞપ્ત થયુ છે? (अम्हाण देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) જવાબ આપતા સુદર્શને કહ્યુ "હે દેવાનુપ્રિય ! મારા ધર્મનુ મૂળ શૌચ (પવિત્રતા) છે" એટલેકે મારો ધર્મ શૌચ મૂલક છે (जाव सग्ग गच्छति) 'यावत्' સ્વર્ગમા પહોચે છે " સુદર્શનના કથનમા અહી સુધી લેવુ જોઇએ જેમ " सो विय सोए दुविहे पन्नत्ते त जहा

सोए य इत्यादि एत्र खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेण ' इति पर्यन्त वाच्यम् । ततः खलु स्थात्यापुत्र सुदर्शनमेवमवादीत्-सुदर्शन ! तद् यथानामकः कश्चित् पुरुष एक महद् ' रुहिरस्य ' रुधिरकृत शोणितलिप्त वस्त्र रुधिरेण चैव= शोणितेनैव 'धोवेज्जा' धावयेत् प्रक्षालयेत् तदा खलु सुदर्शन ! तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य प्रक्षाल्यमानस्यास्ति=भवन्ति काचित् ' सोही ' शोधि शुद्धिः निर्मलता, ' णो इणट्ठे समट्ठे ' नायमर्थः समर्थ =रुधिरलिप्त वस्त्र रुधिरेणैव प्रक्षालित सन् पवित्र भवतीत्ययमर्थः समर्थो न भवति प्रामाणिकी बुद्धिमुपगन्तु न शक्नोतीत्यर्थः । हे सुदर्शन ! एवमेव ' तुब्भपि ' तवापि ' पाणाइवाएण ' प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शशल्येन नास्ति शोधिः, सुदर्शन ! अथ यथानामकः कश्चित् पुरुषः

दव्वसोए य भावसोए य " इत्यादि से लेकर " एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेण " (तएण थावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी) इस प्रकार सुदर्शन का कथन सुनकर स्थापत्यापुत्र अनगारने उस सुदर्शन से इस प्रकार कहा-(सुदसणा ! से जहानामए केइपुरिसे एग महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा तएण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही !) हे सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक बडे भारी रुधिर लिप्त वस्त्र को रुधिर से ही धोवे तो रुधिर (खून) से प्रक्षाल्यमान उस वस्त्र की शुद्धि होती है जैसे (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थित नही होता-रुधिर से लिप्त हुआ वस्त्र रुधिर से धोने पर साफ-शुद्ध होता है-जैसा यह अर्थ प्रामाणिक बुद्धि द्वारा मान्य नही होता है (एवामेव सुदसणाऽ तुब्भपि पाणाइवाएण जावमिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही)

દવ્વસોए य भावसोए य " અહીથી " एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेण " અહી સુધી સુદર્શનનુ કથન સમજવુ જોઇએ (तएणं थावच्चा पुत्ते सुदसणमेव वयासी) આ રીતે સુદર્શનની શૌચ મૂલક ધર્મવિષેની વાત સાભળીને સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ-(सुदसणा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एग महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा तएण सुदसणा ? तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही ?) હે સુદર્શન ! કોઇ પુરુષ લોહીવાળુ મોટુ લૂગડુ લોહીથી જ સાફ કરે તો તે લોહીથી સાફ કરેલુ લૂગડુ શુ શુદ્ધ થશે ! (णो इणट्ठे समट्ठे) જેમ લોહી વાળુ લૂગડુ લોહીથી સ્વચ્છ થાય જ નહિ આ વાત પ્રામાણિક બુદ્ધિથી ગમે તેને કરીએતો પણ શુદ્ધ થાય જ નહિ (एवामेव सुदसणा ? तुब्भपि पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही) તે રીતે સુદર્શન ! તારી પણ

एक महद् रुधिरकृत वस्त्र ' साज्जियाखारेण ' सर्जिकाक्षारेण सज्जीनाम्ना मसि द्धया क्षारमृत्तिकया ' अणुलिंपइ ' अनुलिंपति अनुलिप्य ! ' पयण ' पचन पाकस्थान ' आरुहेइ ' आरोहयति रुधिरलिप्त वस्त्र क्षारमृत्तिकानुलिप्त कृत्वा क कस्मिंश्चिम् मृन्मयादिपात्रे निधाय तत्पात्र चुलिकोपरिस्थापयतीत्यर्थः । आ ' उण्ह गाहेइ' उष्ण ग्राहयति उष्णीकरोति ग्राहयित्वा तत पश्चात् शुद्धेन वारिणा धावयेत्, हे सुदर्शन ! स नून तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य सर्जिकाक्षारेण अनुलि-प्तस्य पचनमारोहितस्योष्ण ग्राहितस्य शुद्धेन वारिणा ' पक्खालिज्जमाणस्स ' प

इसी तरह हे सुदसण ? तुम्हारी भी प्राणातिपात से यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से शुद्धि नही होती है। जैसे उस शोणितलिप्त वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि नही होती है। (सुदसणा ? से जहाणामए केइपुरिसे एग महं रुहिरकयवत्थं सज्जियाखारेण अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता पयण आरुहेइ, आरुहित्ता उण्हे गाहेइ, गाहित्ता तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा से णूण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स सुद्धेण वारिणा पक्खलिज्जमाणस्स सोही भवइ) शुद्धि का प्रकार इस तरह है सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक महान रुधिरलिप्त वस्त्र को साजी खारसे, अनुलिप्त कर कीसी मिट्टि के बर्तन मे रख उसे चूलेपर रखता है-रखकर फिर उसे गर्म करता है-गर्म कर उसके बाद उसे फिर शुद्ध जल से प्रक्षालित करता है तो हे सुदर्शन ! निश्चय से

પ્રાણાતિપાત થી કે યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી શુદ્ધિ થતી જ નથી જેમ કે લોહીથી ખરડાએલા લૂગડાની શુદ્ધિ લોહી વડે જ થતી નથી (સુદસણા ? સે જહા ણામએ કેઇ પુરિસે એગ મહ રુહિરકયવત્થ સજ્જિયાખારેણ અણુલિંપઇ, અણુલિંપિત્તા પયણ આરુહેઇ, આરુહિત્તા ઉણ્હે ગાહેઇ, ગાહિત્તા તઓ પચ્છા સુદ્ધેણ વારિણા ધોવેજ્જા સે ણૂણ સુદસણા ! તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાખારેણ અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્સ ઉણ્હ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ સુદ્ધેણ વારિણાપક્ખા લિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવઇ) હે સુદર્શન ! લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ આ પ્રમાણે થાય જેમ કે સૌ પહેલા લોહીભીના વસ્ત્રને માણસ સાજીખાર ના પાણીમા બોળીને માટીના વાસણમા મૂકીને તેને ચૂલા ઉપર ચઢાવે છે અને નીચે અગ્નિ પ્રકટાવીને તેને ઊનુ કરે છે અને ત્યાર બાદ લૂગડાને શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરી નાખે છે તો તે નિશ્ચિત પણે સાજીખારમા બોળવાથી

क्षाल्यमानस्य 'सोही' शोधिर्भवति । हन्त ! भवति । एवमेव सुदर्शन ! अस्माकमपि 'पाणाइवायवेरमेण ' प्राणातिपातविरमणेन यावत् मिथ्यादर्शनशल्यविरमणेना स्ति शोधिः, आत्मन पवित्रता भवति, यथा वा तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य यावत् शुद्धेन वारिणा प्रक्षाल्यमानस्यास्ति शोधिः । वस्त्ररूपोऽयमात्मा रुधिररूप प्राणातिपाताद्यष्टादशपापस्थानोपलिप्तः सम्यक्त्वरूपया क्षारमृत्तिकयाऽनुलेप प्राप्य शरीरभाण्ड जिनरूपस्थविरकल्परूपपचनस्थानोपरी संस्थाप्य तपोऽग्निना परितापितः सयमरूपशुद्धजलेन प्रक्षालितः सन् निर्मल स्वच्छदर्पणवत्प्रकाशमानो भवति नान्यथेत्यर्थः । ये तु प्राणातिपातादि परायणा जीवा' शुद्धचर्य शृङ्गारिज नित शौच जलाभिषेक च कुर्वन्तः सन्ति, तान् प्रति दयन्ते खलु जीवाजीवतत्त्ववे दिनो विद्वांस'—अहो ! प्राणातिपातादि सेवनजनित ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्म-मलनिरन्तरलेपानुलेपसग्रहपरायणा अपि इमे जीवा पुनः प्राणातिपातादिभिरेव-शुद्धिमिच्छन्ति अहो ! कीदृशो मोहस्य महिमा वरीवर्ति ।

उस रुधिरलिप्त वस्त्र की सर्जिका खार से अनुलिप्त होने पर, पाकस्थान पर रखे जाने पर गर्म किये जने पर, और शुद्ध जल से प्रक्षालित हो जानेपर शुद्धि होती है ? (हता भवइ) हां होती है (एवामेव सुदंसणा ! अम्ह पि पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेण अत्थि सोही) तो इसी तरह हे सुदर्शन ! हमारी भी प्राणातिपातविरमण से यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के विरमण से शुद्धि होती है अर्थात् आत्मा की पवित्रता होती है। (जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही) जैसे उस रुधिरलिप्त वस्त्र को यावत् शुद्ध जल से प्रक्षालित करने पर शुद्धि हो जाती है। (तएण

ચૂલા ઉપર ચઢાવીને ગરમ, કરવાથી તેમજ શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરવા થી સ્વચ્છ થઈ જાય છે કે નહિ (હતા ભવઇ) સુદર્શને જવાબમા કહ્યુ " સ્વચ્છ થઇ જાયછે " (एवामेव सुदंसणा ! अम्हेवि पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छा दसणसल्लवेरमणेण अत्थिसोही) તો આ પ્રમાણે જ પ્રાણાતિપાત વિરમણથી યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યના વિરમણથી શુદ્ધિ થાય છે એટલે કે એમનાથી આત્મા પવિત્ર થાય છે (जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही) જેમ કે લોહીભીના લૂગડા સાબુથાર તેમજ શુદ્ધ પાણીથી શુદ્ધ થઇ જાય છે (तएण से सुदंसणे सवुद्धे यावन्चापुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) આ રીતે ઉપદેશ અપાએલા સુદર્શન શેઠે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગરને વિનતી કરતા કહ્યુ ' હે ભગવાન ! શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મના આરાધક તમને ધન્ય છે " આ રીતે કહીને તેમને વદન તેમજ નમસ્કાર

एक महद् रुधिरकृत वस्त्र ' साज्जियाखारेण ' सर्जिकाक्षारेण सज्जीनाम्ना प्रसिद्धया क्षारमृत्तिकया ' अणुलिंपइ ' अनुलिंपति अनुलिप्य ! ' पयण ' पचन पाकस्थान ' आरुहेइ ' आरोहयति रुधिरलिप्त वस्त्र क्षारमृत्तिकानुलिप्त कृत्वा क कस्मिंश्चिम् मृन्मयादिपात्रे निधाय तत्पात्र चुलिकोपरिस्थापयतीत्यर्थः । आरोह ' उण्ह गाहेइ' उष्ण ग्राहयति उष्णीकरोति ग्राहयित्वा तत पश्चात् शुद्धेन वारिणा धावयेत्, हे सुदर्शन ! स नून तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य सर्जिकाक्षारेण अनुलिप्तस्य पचनमारोहितस्योष्ण ग्राहितस्य शुद्धेन वारिणा ' पक्खालिज्जमाणस्स ' प्र

इसी तरह हे सुदर्शन ? तुम्हारी भी प्राणातिपात से यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से शुद्धि नही होती है। जैसे उस शोणितलिप्त वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि नही होती है। (सुदसणा ? से जहाणामए केइपुरिसे एगं महं रुहिरकयवत्थं सज्जियाखारेण अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता पयणं आरुहेइ, आरुहित्ता उण्हे गाहेइ, गाहित्ता तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा से णूण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स सुद्धेण वारिणा पक्खलिज्जमाणस्स सोही भवइ) शुद्धि का प्रकार इस तरह है सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक महान रुधिरलिप्त वस्त्र को साजी खारसे अनुलिप्त कर कीसी मिट्टि के बर्तन में रख उसे चूलेपर रखता है–रखकर फिर उसे गर्म करता है–गर्म कर उसके बाद उसे फिर शुद्ध जल से प्रक्षालित करता है तो हे सुदर्शन ! निश्चय से

પ્રાણાતિપાત થી કે યાવત્ મિથ્યાદર્શન રાલ્યથી શુદ્ધિ થતી જ નથી જેમ કે લોહીથી ખરડાએલા લૂગડાની શુદ્ધિ લોહી વડે જ થતી નથી (સુદસણા ? સે જહા ણામએ કેઇ પુરિસે એગ મહ રુહિરકયવત્થ સજ્જિયાખારેણ અણુલિંપઇ, અણુલિંપિત્તા પયણ આરુહેઇ, આરુહિત્તા ઉણ્હે ગાહેઇ, ગાહિત્તા તઓ પચ્છા સુદ્ધેણ વારિણા ધોવેજ્જા સે ણૂણ સુદસણા ! તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાખારેણ અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્સ ઉણ્હ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ સુદ્ધેણ વારિણાપક્ખલિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવઇ) હે સુદર્શન ! લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ આ પ્રમાણે થાય જેમ કે સૌ પહેલા લોહીભીનાં વસ્ત્રને માણસ સાજીખાર ના પાણીમા બોળીને માટીના વાસણમા મૂકીને તેને ચૂલા ઉપર ચઢાવે છે અને નીચે અગ્નિ પ્રકટાવીને તેને ઊનુ કરે છે અને ત્યાર બાદ લૂગડાને શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરી નાખે છે તો તે નિશ્ચિત પણે સાજીખારમા બોળવાથી

दृष्टान्तकी योजनाइस प्रकार दार्ष्टान्तमे करनी चहिये-वस्त्र के जैसा यह अत्मा है रुधिरके जैसे प्राणातिपातादिक १८अठारह पापस्थान हैं। इन से यह मलीन हो रहा है। क्षार मृत्तिका जैसा सम्यक्त्व है। सो जब यह आत्मा इस सम्यक्त्व रूप क्षार मृत्तिका से अनुलिप्त हो जाता है और अपने शरीर रूप भाडको जिनकल्प तथा स्थविर कल्प रूप पचन स्थान पर स्थापित करता है तप, रूप अग्निसे अपने आपको तपाता है तब यह स्वच्छ दर्पणकी तरह प्रकाशमान होने लगता है। इस शुद्धि मार्ग के अतिरिक आत्माकी शुद्धि और किसी मार्ग से नही हो सकती है। जो प्राणातिपातादिकोंमें परायण बने हुए जीव शुद्धिके लिये मृत्तिका एव जल का उपयोग करते हैं और उससे आत्माकी शुचिता मनते है गगादि तीर्थोंमें स्नान करने से पापोंकी निवृत्ति होना मानते हैं उनके प्रति जीव और अजीवके स्वरूपको जाननेवाले विद्वज्जन सदय हो कर कहते हैं की देखोतो सही यह कैसीमोह की प्रबल महिमा है जो प्राणातिपात आदि सेवन से जनित ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्ममल के निरन्तर लेपानुलेप के सग्रह करने में परायण बने हुए भी

આ ઉક્ત દૃષ્ટાન્ત દૃષ્ટાન્તિક રૂપે આ રીતે સમજવુ જોઈએ-આ આત્મા વસ્ત્ર રૂપે છે પ્રાણાતિપાત વગેરે અઢાર પાપસ્થાનો લોહીની જેમ છે એમનાથી આત્મા મલિન થઈ રહ્યો છે સાજીખારના રૂપમા સમ્યક્ત્વ છે, જ્યારે આત્મા સમ્યક્ત્વ રૂપ સાજીખારથી અનુલિપ્ત થાય છે અને પોતાના શરીર રૂપી વાસણને જિનકલ્પ તેમજ સ્થાવિરકલ્પરૂપ પચન સ્થાન (ચૂલા) ઉપર મૂકે છે તપ રૂપ અગ્નિ વડે શરીર રૂપી વાસણને તપાવે છે ત્યારે તે સ્વચ્છ દર્પણ ના રૂપમા પ્રકાશિત થાય છે આત્માની શુદ્ધિનો આ જેવણ એકજ માર્ગ છે કે જેનાથી આત્મશુદ્ધિ ચોક્કસ પણે સભવિત થાય છે એના સિવાય બીજા કોઈ ઉપાયથી આત્મ-શુદ્ધિ થવી અસભવિત છે જે પ્રાણાતિપાત વગેરેમા લીન થયેલા જીવો શુદ્ધિને માટે માટી અને પાણીનો ઉપયોગ કરેછે, અને તેમનાથી આત્મ શુદ્ધિ માને છે-ગગા વગેરે તીર્થ સ્થાનોમા સ્નાન કરવાથી પાપો નષ્ટ થાય છે એમ માને છે તેમના પ્રત્યે જીવ અને અજીવના સ્વરૂપને જાણનારા વિદ્વાનો સદય થઈને કહેછે-જુઓ તો ખરા, અજ્ઞાનનો આ કેવો પ્રબળ મહિમા છે ? કે જેઓ પ્રાણાતિપાત વગેરેના સેવનથી જનિત જ્ઞાનાવરણીય વગેરે આઠ પ્રકારના કર્મ રૂપી જળને હમેશા લેપાનુ

ततः स्थापत्यापुत्रवचनश्रवणानन्तर खलु स सुदर्शनः सबुद्धः सम्यक्त्वमारूढः सन् स्थापत्यापुत्र वन्दते श्रुतचारित्रलक्षणसद्धर्ममाराधनेन धन्योऽसि भगवन्नित्यादिवाक्येन स्तौति इत्यर्थः । नमस्यति स्वापकर्षं बोधयन् श्रद्धेयवचनतया गुरुभावेन विनय प्रकटयन् कायेन प्रणमतीत्यर्थः । वन्दित्वा नत्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-इच्छामि खलु भदन्त ! हे भगवान् ! धर्मं=विनयमूलक भवदुक्तश्रुतचारित्रलक्षण श्रुत्वा ज्ञातुम्, जीवाजीवपुण्यपापास्रवसवरनिर्जराबन्धमोक्षरूपाणितत्वानि सम्यक् सर्वथा वेत्तुमित्यर्थः यावत्-यावत् करणादत्र धर्मश्रवणजीवाजीवादितत्त्वज्ञानानन्तर श्रावकधर्मस्वीकारेण, श्रमणोपासको जात , स कीदृश इत्याह -अधिगतजीवाजीवो यावत् प्रतिलाभयन् सत्कारयन् समानयन् विहरति ॥२१॥

से सुदसणे सबुद्धे थावच्चा पुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) इस प्रकार सबोधित हुए सुदर्शन सेठने स्थापत्यापुत्र अनगार की हे भगवान् श्रुतचारित्र रूप धर्म के आराधन करने वाले होने से आपको धन्य है इत्यादि वचनो द्वारा वदना की नमस्कार किया। वदना नमस्कार कर फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा (इच्छामि ण भते ! धम्म सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए-अहिगया जीवा जीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ) हे भदत ! विनय मूलक श्रुतचारित्र रूप धर्म को सुनकर में जीव, अजिव, पुण्य, पाप, आस्रव, सवर, निर्जरा एव मोक्ष इन तत्त्वों को जानना चाहता हूँ। इस प्रकार वह धर्म-श्रवण और जीवाजीवादितत्त्वो के बाद श्रावक धर्मस्वीकार कर श्रमणोपासक बन गया। श्रमणोपासक बनकर फिर उसने स्थापत्यापुत्र अनगार का आहार आदि प्रदान कर सत्कार किया-सन्मान किया।

કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને વિનતિ કરી -(इच्छामि ण भते ! धम्म सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए अहिगय जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ) હે ભદત ! વિનયમૂલક શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મની વાત સાભળીને હુ હવે જીવ, પુણ્ય, પાપ, આસ્રવ, સવર, નિર્જરા, બધ અને મોક્ષ આ આ તત્ત્વોને સ્પષ્ટ રૂપે સમજવાની ઈચ્છા રાખુ છુ આ પ્રમાણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ના મોઢેથી આ બધા જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વો વિષે સાભળીને શેઠ શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારીને શ્રમણોપાસક થઇ ગયા શ્રમણોપાસક થઈને શેઠે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને આહાર વગેરે અર્પીને સત્કાર કર્યો સન્માન કર્યુ

तएण से सुदसणे सुयेणं परिव्वायएणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिव्वायग एवं वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स णं अतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने ॥ सू० २२ ॥

टीका—तएण इत्यादि–ततस्तदनन्तर खलु तस्य शुकस्य परिव्राजकस्य 'इमीसे कहाए' अस्याः कथायाः 'लद्धट्ठस्स' लब्धार्थस्य=ज्ञातार्थस्य सतः 'अयमेयारूवे' अयमेतद्रूपः वक्ष्यमाणरूपः 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिक आत्मगतोविचारः, यावत् समुदपद्यत=प्रादुर्भूतः–एव खलु सुदर्शनेन शौचमूल धर्म 'विप्पजहाय' विप्रजहाय=परित्यज्य विनयमूलो धर्मः 'पडिवन्ने' प्रतिपन्नः स्वीकृतः । तत्=तस्मात् श्रेय खलु मम सुदर्शनस्य दृष्टिं=दर्शन जिनप्रवचने श्रद्धान 'वामेत्तए' वमयितु त्याजयितु पुनरपि शौचमूलकं धर्ममाख्यातुम्, सुदर्शनस्य यद् विनयमूल

'तएण तस्स सुयस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (तस्स सुयस्स) उस शुक परिव्राजकको जब (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) यह ससचार विदित हुआ सुदर्शन से श्रमणोपासक बन गया–यह खबर मिली–तब (अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) उस के मनमें यह प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ (एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणय मूले धम्मे पडिवन्ने) सुदर्शन शौच मूलक धर्मका परित्याग कर विनयमूलक धर्म कोस्वीकार लिया है, (त सेय खलु मम सुदसणस्स दिट्ठिवामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्मे आघवित्तए) सो अब मुझे

'तएण तस्स सुयस्स' इत्यादि ।

ટીકાર્થ (तएणं) ત્યાર બાદ (तस्स सुयस्स) શુક પરિવ્રાજકે જ્યારે (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) આ વાત સાભળીકે સુદર્શન શેઠ શ્રમણોપાસક થઇ ગયાછે ત્યારે (अयमेवारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) તેના મનમા વિચાર સ્ફુર્યો–(एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) કે સુદર્શન શેઠે શૌચ મૂલક ધર્મ ત્યજીને વિનય મૂલક ધર્મ સ્વીકાર્યો છે (त सेय खलु मम सुदसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्मे आघवित्तए) તો હવે મારે સુદર્શનની વિનય મૂલક ધર્મ ઉપરથી શ્રદ્ધા મટા

मूलम्–तएणं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, एव खलु सुदसणेणं सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने, तं सेय खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ, संपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भडनिक्खेव करेइ, करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पविरलपरिव्वायगेहि सद्धिं सपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झ मज्झेणं सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव उवागच्छइ ।

तएण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ, पासित्ता नो अब्भुट्ठेइ, नो पच्चुग्गच्छइ णो अढाइ नो परियाणाइ नो वदइ तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण से सुए परिव्वायए सुदसण अणब्भुट्ठिय० पासित्ता एव वयासी–तुमं णं सुदसणा ! अन्नदा मम एज्जमाण पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वदसि इयाणिसुदसणा ! तुम मम एज्जमाण पासित्ता त कस्स णं तुमे जाव णो वदसि सुदसणा ! इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवन्ने ।

ये जीव पुनः उन्ही प्राणातिपातादिको के सेवन से अपनी शुद्धि की कामना कर रहे हैं॥ सूत्र २१ ॥

લેપને સગ્રહવામા લીન થયેલા એ જીવો ફરી તેજ પાણાતિપાત વગેરેના સેવનથી પોતાની શુદ્ધિ ઇચ્છે છે ॥ સૂત્ર “ ૨૧ ” ॥

तएणं से सुदसणे सुयेणं परिव्वायएणं एव वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिव्वायगं एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी थावच्चापुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स णं अतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने ॥ सू० २२ ॥

टीका—तएण इत्यादि–ततस्तदनन्तर खलु तस्य शुकस्य परिव्राजकस्य 'इमीसे कहाए' अस्याः कथाया. 'लद्धट्ठस्स' लब्धार्थस्य=ज्ञातार्थस्य सतः 'अयमेयारूवे' अयमेतद्रूपः वक्ष्यमाणरूप' 'अज्झत्थिए' आ यात्मिक आत्मगतोविचारः, यावत् समुदपद्यत=प्रादुर्भूतः–एव खलु सुदर्शनेन शौचमूल धर्म ' विप्पजहाय ' विप्रजहाय=परित्यज्य विनयमूलो धर्म. 'पडिवन्ने' प्रतिपन्नः स्वीकृतः । तत्=तस्मात् श्रेय खलु मम सुदर्शनस्य दृष्टिं=दर्शन जिनप्रवचने श्रद्धान ' वामेत्तए ' वमयितु त्याजयितु पुनरपि शौचमूलक धर्ममाख्यातुम् , सुदर्शनस्य यद् विनयमूल-

' तएण तस्स सुयस्स ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (तस्स सुयस्स) उस शुक परिव्राजकको जब (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) यह समचार विदित हुआ सुदर्शन से अमणोपासक बन गया–यह खबर मिली–तब (अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) उस के मनमें यह प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ (एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणय मूले धम्मे पडिवन्ने) सुदर्शन शौच मूलक धर्मका परित्याग कर विनयमूलक धर्म कोस्वीकार लिया है, (त सेय खलु मम सुदसणस्स दिट्ठिवामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्मे आघवित्तए) सो अब मुझे

' तएण तस्स सुयस्स ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ (तएणं) ત્યાર બાદ (तस्स सुयस्स) શુક પરિવ્રાજકે જ્યારે (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) આ વાત સાભળીકે સુદર્શન શે० શ્રમણોપાસક થઇ ગયાછે ત્યારે (अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) તેના મનમા વિચાર સ્ફુર્યો–(एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) કે સુદર્શન શેઠે શૌચ મૂલક ધર્મ ત્યજીને વિનય મૂલક ધર્મ સ્વી કાર્યો છે (त सेय खलु मम सुदसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्मे आघवित्तए) તો હવે મારે સુદર્શનની વિનય મૂલક ધર્મ ઉપરથી શ્રદ્ધા મટા

कधर्मविषयक श्रद्धान तदपनीय पुनरपि त शौचमूलके धर्मे स्थापयितु ममोचितमि त्यर्थः । ' त्तिकट्टु ' इतिकृत्वा=इद मनसि धृत्वा, एवम्=उक्तप्रकारेण ' सपेहइ ' सप्रेक्षते विचारयति, 'सपेहित्ता' सप्रेक्ष्य इत्येव मनसि विचार्य, परिव्राजकसहस्रेण सार्धं यत्रैव सौगधिकानगरी यत्रैव परिव्राजकावसथः=परिव्राजकानामावसथ आश्रम तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकावसथे भाण्डनिक्षेपम् त्रिदण्डाद्युपकरणानां स्थापन करोति, कृत्वा धातुरक्तवस्त्रपरिहितः गैरिकारागरञ्जितवस्त्रधारी प्रविरल-परिव्राजकैः कतिपयपरिव्राजकाश्रमात् ' पडिनिक्खमइ ' प्रतिनिष्क्रामति=निः सरति । प्रतिनिष्क्रम्य निःसृत्य सौगन्धिकाया नगर्याः 'मज्झ मज्झेण' मध्यमध्येन मध्यम-ध्यभागेन यत्रैव सुदर्शनस्य गृह, यत्रैव सुदर्शनस्तत्रैवोपागच्छति ।

यही योग्य है कि मैं सुदर्शन की विनय मूलक धर्मकी दृष्टिको हटाकर उसे समझाकर स्थापित करूँ । (त्तिकट्टुएव सपेहेइ ऐसा मनमें धारण कर उसने पूर्वोक्तरूप से उसे समझाने का विचार किया-(सपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं जेणेव सोगधिया नगरी जेणेव परिव्वायगा वसहे तेणेव उवागच्छइ) विचारकर वह फिर परिव्राजक सहस्र के साथ जहा वह सौगधिका नगरी और उस मे भी जहां परिव्राजकाश्रम था वहा आया । (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भडनिक्खेव करेइ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भाँडोको रख दिया (करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं सपरिवुडे परिव्वायगवसहीओ पडिनिक्खमई) रखकर फिर वह गैरिक धातु से रगे हुए वस्त्रो को पहिरे हुए कुछेक परिव्राजको के साथ २ उस परिव्राजकाश्रम से बाहर निकला (पडिनिक्खमित्ता सोगधियाए

ડીને ફરી શૌચ મૂલક ધર્મપ્રત્યે તેની શ્રદ્ધા જમાવવી જોઇએ (त्ति कट्टु एव सपेहेइ) આ રીતે મનમા વિચાર કરીને તેણે પહેલાની જેમ તેને સમજાવવાનો વિચાર કર્યો (सपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं जेणेव सोगधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ) વિચાર કરીને તે ફરી એક સહસ પરિવ્રાજકોની સાથે જ્યા તે સૌગધિકા નગરી અને તેમા પણ જ્યા પરિવ્રાજ કાશ્રમ હતો ત્યા આવ્યો (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भडनिक्खेव करेइ) આવીને તેણે પોતાની બધી વસ્તુઓ ત્યા મૂકી (करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं सपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमई) મૂકીને તે ગેરિકધાતુથી રગાએલા વસ્ત્રો પહેરીને થોડા પરિવ્રાજકોને સાથે લઇને આશ્રમની બાર નીકળ્યો (पडिनिक्खमित्ता सोगधियाए नयरीए मज्झ मज्झेण

ततः खलु स सुदर्शनस्त शुकमेजमानम् आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा 'नो अब्भुट्ठेइ' नो अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थान न करोतिस्म 'नो पच्चुग्गच्छइ' नो प्रत्युद्गच्छति अभिमुख न गच्छति, 'नो आढाइ' नो अद्रियते आदर न कुरुते 'नो' परियाणाइ' नो परिजानाति=आगमन नानुमोदयति, नो वन्दते न स्तौति, 'तुसिणीए सचिट्ठइ' तूष्णीकः सतिष्ठति।

ततः खलु स शुक परिव्राजकः सुदर्शनमनभ्युत्थित दृष्ट्वा एवमवादीत्–त्व खलु सुदर्शन! अन्यदा अन्यस्मिन् समये मामेजमान दृष्ट्वा अभ्युत्तिष्ठसि यावद्–

नयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव उवागच्छइ) बाहर निकल कर सौगधिका नगरी के ठीक बीचो बीच से होकर जहा सुदर्शन का घर और उसमे भी जहा सुदर्शन था वहा गया (तए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ) सुदर्शन ने आते हुए परिव्राजक को देखा (पासित्ता नो अब्भुट्ठेइ, नो पच्चुग्गच्छइ, णो आढाइ णो परियाणाइ नो वदइ, तुसिणीए सचिट्ठइ) परन्तु देखकर वह उठा नही उसके सामने नही गया, उसका आदर नही किया, उस के आगमन की उसने सराहना नही की। स्तुति भी नही की केवल चुपचाप बैठा रहा। (तए ण से सुए परिव्वायए सुदसण अणब्भुट्ठिय० पासित्ता एव वयासी) जब शुक ने ऐसा देखा अर्थात् सुदर्शन को नही उठा हुआ, सामने नही आया हुआ, आदि रूप से देखा तो देखकर उसने उससे इस प्रकार कहा– (तुम ण सुदसणा! अन्नया मम एज्जमाण पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वदसि इयाणि सुदसणा! तुम मम

જેણેવ સુદસણસ્સ ગિહે જેણેવ સુદસણે તેણેવ ઉવાગચ્છઇ) બહાર નીકળીને સૌગધિકા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઇને જ્યા સુદરાનનુ ઘર અને તેમા પણ જ્યા સુદર્શન હતો ત્યા ગયો (તએણ સે સુદસણે ત સુય એજ્જમાણ પાસઇ) સુદરાને પણ પરિવ્રાજકને આવતા જોયા (પાસિત્તા નો અબ્ભુટ્ઠેઇ, નો પચ્ચુગચ્છઇ, ણો આઢાઇ, ણો પરિયાણાઇ, નો વદઇ, તુસિણીએ સચિટ્ઠઇ) પરતુ જોઇને તે ઉભા થયા નહિ, સ્વાગત માટે તેની સામે ગયા નહિ, તેને આદર આપ્યો નહિ, તેના આગમનની તેમણે સરાહના કરી નહિ, તેની સ્તુતિ પણ કરી નહિ ફક્ત તેઓ ચુપચાપ પોતાની જગ્યાએ બેસી જ રહ્યા (તએણ સે સુए परिव्वायए सुदसण अणब्भुट्ठिय० पासित्ता एव वयासी) શુક પરિવ્રાજકે શેઠને સત્કાર માટે પોતાની સામે નહી આવતા જોઇને કહ્યુ–(तुम ण सुदसणा! अन्नया मम एज्जमाण पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वदसि इयाणि

कधर्मविषयक श्रद्धान तदपनीय पुनरपि त शौचमूलके धर्मे स्थापयितु ममोचितमित्यर्थः। ' त्तिकट्टु ' इतिकृत्वा=इद मनसि धृत्वा, एवम्=उक्तप्रकारेण ' सपेहेइ ' सप्रेक्षते विचारयति, 'सपेहित्ता' सप्रेक्ष्य इत्येव मनसि विचार्य, परिव्राजकसहस्रेण सार्धं यत्रैव सौगधिकानगरी यत्रैव परिव्राजकावसथः=परिव्राजकानामावसथ आश्रम तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकावसथे भाण्डनिक्षेपम् त्रिदण्डाद्युपकरणानां स्थापन करोति, कृत्वा धातुरक्तवस्त्रपरिहितः गैरिकारागरञ्जितवस्त्रधारी प्रविरलपरिव्राजकैः कतिपयपरिव्राजकाश्रमात् ' पडिनिक्खमइ ' प्रतिनिष्क्रामति=निःसरति। प्रतिनिष्क्रम्य निःसृत्य सौगन्धिकाया नगर्या 'मज्झ मज्झेण' मध्यमध्येन मध्यमध्यभागेन यत्रैव सुदर्शनस्य गृह, यत्रैव सुदर्शनस्तत्रैवोपागच्छति।

यही योग्य है कि मैं सुदर्शन की विनय मूलक धर्मकी दृष्टिको हटाकर उसे समझाकर स्थापित करूँ। (त्तिकट्टुएव सपेहेइ ऐसा मनमें धारण कर उसने पूर्वोक्तरूप से उसे समझाने का विचार किया-(सपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं जेणेव सोगधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ) विचारकर वह फिर परिव्राजक सहस्र के साथ जहा वह सौगधिका नगरी और उस मे भी जहां परिव्राजकाश्रम था वहा आया। (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भडनिक्खेव करेइ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भाँडोको रख दिया (करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं सपरिवुडे परिव्वायगवसहीओ पडिनिक्खमई) रखकर फिर वह गैरिक धातु से रगे हुए वस्त्रों को पहिरे हुए कुछेक परिव्राजको के साथ २ उस परिव्राजकाश्रम से बाहर निकला (पडिनिक्खमित्ता सोगधियाए

ડીને ફરી શૌચ મૂલક ધર્મપ્રત્યે તેની શ્રદ્ધા જમાવવી જોઇએ (त्ति कट्टु एव सपेहेइ) આ રીતે મનમા વિચાર કરીને તેણે પહેલાની જેમ તેને સમજાવવાનો વિચાર કર્યો (सपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं जेणेव सोगधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ) વિચાર કરીને તે ફરી એક સહસ્ર પરિવ્રાજકોની સાથે જ્યા તે સૌગધિકા નગરી અને તેમા પણ જ્યા પરિવ્રાજકાશ્રમ હતો ત્યા આવ્યો (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भडनिक्खेव करेइ) આવીને તેણે પોતાની બધી વસ્તુઓ ત્યા મૂકી (करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं सपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमई) મૂકીને તે ગેરિકધાતુથી રગાએલા વસ્ત્રો પહેરીને થોડા પરિવ્રાજકોને સાથે લઇને આશ્રમની બાર નીકળ્યો (पडिनिक्खमित्ता सोगधियाए नयरीए मज्झ मज्झेण

ततः खलु स सुदर्शनस्त शुकमेजमानम् आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा 'नो अब्भुट्ठेइ' नो अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थान न करोतिस्म 'नो पच्चुग्गच्छइ' नो प्रत्युद्गच्छति अभिमुख न गच्छति, 'नो आढाइ' नो अद्रियते आदर न कुरुते 'नो' परियाणाइ' नो परिजानाति=आगमन नानुमोदयति, नो वन्दते न स्तौति, 'तुसिणीए सचिट्ठइ' तूष्णीकः सतिष्ठति।

ततः खलु स शुक परिव्राजकः सुदर्शनमनभ्युत्थित दृष्ट्वा एवमवादीत्–त्व खलु सुदर्शन! अन्यदा अन्यस्मिन् समये मामेजमान दृष्ट्वा अभ्युत्तिष्ठसि यावद्–

नयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव उवागच्छइ) बाहर निकल कर सौगधिका नगरी के ठीक बीचो बीच से होकर जहा सुदर्शन का घर और उसमें भी जहा सुदर्शन था वहा गया (तए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ) सुदर्शन ने आते हुए परिव्राजक को देखा (पासित्ता नो अब्भुट्ठेइ, नो पच्चुग्गच्छइ, णो आढाइ णो परियाणाइ नो वदइ, तुसिणीए सचिट्ठइ) परन्तु देखकर वह उठा नही उसके सामने नहीं गया, उसका आदर नही किया, उस के आगमन की उसने सराहना नही की। स्तुति भी नहीं की केवल चुपचाप बैठा रहा। (तए ण से सुए परिव्वायए सुदसण अणब्भुट्ठिय० पासित्ता एव वयासी) जब शुक ने ऐसा देखा अर्थात् सुदर्शन को नही उठा हुआ, सामने नही आया हुआ, आदि रूप से देखा तो देखकर उसने उससे इस प्रकार कहा– (तुम ण सुदसणा! अन्नया मम एज्जमाण पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वदसि इयाणि सुदसणा! तुम मम

જેણેવ સુદસણસ્સ ગિહે જેણેવ સુદસણે તેણેવ ઉવાગચ્છઇ) બહાર નીકળીને સૌગધિકા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઈને જ્યા સુદર્શનનુ ઘર અને તેમા પણ જ્યા સુદર્શન હતો ત્યા ગયો (તએણ સે સુદસણે ત સુય એજ્જમાણ પાસઇ) સુદર્શને પણ પરિવ્રાજકને આવતા જોયા (પાસિત્તા નો અબ્ભુટ્ઠેઇ, નો પચ્ચુગચ્છઇ, ણો આઢાઇ, ણો પરિયાણાઇ, નો વદઇ, તુસિણીએ સચિટ્ઠઇ) પરતુ જોઈને તે ઉભા થયા નહિ, સ્વાગત માટે તેની સામે ગયા નહિ, તેને આદર આપ્યો નહિ, તેના આગમનની તેમણે સરાહના કરી નહિ, તેની સ્તુતિ પણ કરી નહિ ફક્ત તેઓ ચુપચાપ પોતાની જગ્યાએ બેસી જ રહ્યા (તએણ સે સુए परिव्वायए सुदसण अणब्भुट्ठिय० पासित्ता एव वयासी) શુક પરિવ્રાજકે શેઠને સત્કાર માટે પોતાની સામે નહી આવતા જોઈને કહ્યુ–(तुम ण सुदसणा! अन्नया मम एज्जमाण पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वदसि इयाणि

अत्र यावच्छब्देन-' पच्चुग्गच्छसि ' आढासि, परिजाणासि ' इति वाच्यम्, वन्दसे, इदानी सुदर्शन ! त्व मामेजमान दृष्ट्वा यावद् नो वन्दसे, अभ्युत्थानादिक करोषीत्यर्थः तत्कस्य खलु त्वया सुदर्शन! अयमेतद्रूपो विनयमूलधर्मः प्रतिपन्नः हे सुदर्शन ! मम धर्मं परित्यज्य त्वया कस्य धर्मः स्वीकृत इत्यर्थः ।

ततः खलु स सुदर्शनः शुकेन परिव्राजकेनैवमुक्त. सन् आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय करतलपरिगृहीत-शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा शुक परिव्राजकमेव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-एव खलु देवानुप्रिया' ? अर्हतोऽरिष्टनेमेः अन्तेवासी=शिष्य. स्थापत्यापुत्रनामाऽनगार यावद्-पूर्वानुपूर्व्यां चरन् ग्रामानुग्राम

एज्जमाण पासित्ता जाव णो वदसि त कस्स ण तुमे सुदसणा इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) सुदर्शन ! जब तुम किसी समय मुझे आता हुआ देखता था तो देखकर उठता था- यावत् वदना करता था। परन्तु अब इस समय सुदर्शन ! तुम मुझे आता हुआ देखकर यावत् उठे नही तुमने मेरी वदना नही की। तो हे सुदर्शन ! तुमने किसका यह इस रूप विनय मूलक धर्म स्वीकार कर लिया है। (तएण से सुदसणे सुकेण परिव्वायएण एव वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल० सुय परिव्वायग एव वयासि) इस प्रकार शुक परिव्राजक के द्वारा कहा गया वह सुदर्शन अपने स्थान से उठा और उठकर उसने दोनो हाथो को अजलि रूप में कर और उसे मस्तक पर रख उससे इस प्रकार कहा कि (एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहाओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी थावच्चा पुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ) हे देवानुप्रिय ! अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु के

सुदसणा ! तुम मम एज्जमाण पासित्ता जाव णो वदसि त कस्स ण तुमे सुदसणा इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) હે સુદર્શન ! પહેલા તુ ગમે ત્યારે મને આવતા જોતો ત્યારે સ્વાગત માટે ઉભો થતો અને સામે આવીને વદન વિગેરે કરતો હતો પણ અત્યારે મને જોઈને તુ ઉભો થયો નથી તેમજ તે મને વદન પણ કર્યો નથી હે સુદર્શન ! તે આ કેવાપ્રકારનો વિનયમૂલક ધર્મ સ્વીકાર્યો છે ? (तएण से सुदसणे सुकेण परिव्वायएण एव वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता करयल० सुय परिव्वायग एव वयासी) શુક પરિવ્રાજકની વાત સાભળીને સુદર્શન પોતાના સ્થાનેથી ઉભો થયો અને ઉભો થઈને બન્ને હાથની અજલીને મસ્તકે મૂકીને તેને કહ્યુ-(एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहाओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी थावच्चा पुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इहचेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ) હે દેવાનુપ્રિય !

द्रयन् सुख सुखेन विहरन् , इति सम्बन्धः । इह=सौगन्धिकानगर्यामागतोऽस्ति, इहैव अस्यामेव नगर्यां बहिर्भागे नीलाशोके नीलाशोकनाम्नि उद्याने विहरति, तस्य= स्थापत्यापुत्रस्य खलु अन्तिके=समीपे विनयमूलो धर्मः प्रतिपन्नः मया स्वीकृत । यदा स्थापत्यापुत्र इहागतस्तदाऽहमपि वदितु तत्रगतस्तदा तदुपदिष्टधर्मकथा श्रुत्वा विनयमूलमार्हत्तधर्म समीचीन विज्ञाय स एव धर्मः स्वीकृतो मयेतिभाव ॥२२॥

मूलम्–तएणं से सुए परिव्वायए सुदसणं एव वयासी–त गच्छामो सुदसणा ! तव धम्मारियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतिय पाउब्भवामो इमाइ च णं एयारूवाइ अट्ठाइं हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो, त जइणं मे से इमाइ अट्ठाइ जाव वागरइ, तएण अह वदामि नमसामि अहमेसे इमाइ अट्ठाइं जाव नो से वाकरेइ, तएण अह एएहि चेव अट्ठेहि हेउहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं-करिस्सामि ॥ सू० २३ ॥

अतेवासी स्थापत्या नाम के अनगार मुनि परपरा के अनुसार चलते हुए, ग्रामानुग्राम विहार करते हुए सुख पूर्वक इस सौगधिका नाम की नगरी में आये और अब वे नीलाशोक नाम के उद्यान में ठहरे हुए हैं । (तस्सण अतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) उनके पास मैंने विनय मूल धर्म समीचीन समझ कर स्वीकार कर लिया है । तात्पर्य इसका यह है कि मैं भी उनको वदना करने के लिये गया था । उन के मुख से जब मैंने धर्मकथा सुनी तब मुझे उनका सिद्धान्त निर्दोष युक्ति शास्त्र से अविरुद्ध प्रतीत हुआ अतः मैने उनसे उनके उस धर्म को अगीकार कर लिया है । सूत्र ॥ २२ ॥

અહંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુના અતેવાસી (શિષ્ય) સ્થાપત્યાપુત્ર નામના અનગાર મુનિ પરપરાને અનુસરતા એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતા સૌગધિકા નગરીમા સુખેથી આવ્યા અને હમણા નીલાશોક ઉદ્યાનમા ઉતર્યા છે (તસ્સ ણ અતિએ વિણયમૂલે ધમ્મે પડિવન્ને) તેમની પાસે મે સારી પેઠે સમજીને વિનય મૂલક ધર્મ સ્વીકાર્યો છે તાત્પર્ય એ છે કે હુ પણ તેમને વદન કરવા ગયો હતો તેમના શ્રીમુખથી મે ધર્મકથા સાભળી મને તેમના સિદ્ધાન્તો નિર્દોષ તેમજ શાસ્ત્ર સમ્મત લાગ્યા એથી મે તેમની પાસેથી આ ધર્મ સ્વીકાર્યો છે ॥ સૂત્ર ૨૨ ॥

' तएण से सुए ' इत्यादि ।

टीका-ततः खलु स शुकः परिव्राजकः सुदर्शननामकं श्रेष्ठिनम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-तत्=तस्मात् गच्छामः खलु सुदर्शन ! तव धर्माचार्यस्य स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भवामः । ' इमाइं च ' इमान् अनन्तरमेव वक्ष्यमाण तया सनिकृष्टान्, च शब्दादन्यांश्च खलु एतद्रूपान्=वक्ष्यमाणस्वरूपान्, अर्थान्= अर्थमाणत्वाद् अधिगम्यमानत्वादर्थाः भावा वक्ष्यमाणयात्रा यापनीयादयस्तदन्ये हेतून्=अन्वयव्यतिरेकलक्षणहेतुना ज्ञायमानत्वाद् हेतुरूपास्तान्, प्रश्नान्=प्रश्नविषयत्वात् प्रश्नरूपास्तान्, कारणानि=कारण तत्साधकयुक्तिरूपम्, उपपत्तिमात्र तद्विषयत्वाद् कारणानि तानि, व्याकरणानि=समर्थ व्याख्यायमानत्वात् व्याकरणानि च तानि पृच्छामः' । तद्=तस्माद् यदि खलु मम स स्थाप

'तएण से सुए' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सुए)उसशुक (परिव्वायए) परिव्राजक ने (सुदंसण एवं वयासी) सुदर्शन से ऐसा कहा-(तं गच्छामो णं सुदंसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो) तो हे सुदर्शन ! मैं यहाँ से-अब तुम्हारे धर्माचार्य स्थापत्यापुत्र के पास जाता हूँ । (इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेउइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो तं जइणं मे से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरइ, तएणं अहं वंदामि नमंसामि, अहमे से इमाइं अट्ठाइं जाव नो से वागरेइ तएणं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिणं वागरणं करिस्सामि) और इस प्रकार के इन अर्थों को, हेतुओं को, प्रश्नों को कारणों को, व्याकरणों को, उनमें पूछूंगा, यदि वे मेरे इन अर्थों का यावत् व्याकरणों प्रश्न

' तए णं से सुए इत्यादि '

ટીકાર્થ (तएण) ત્યારબાદ (से सुए) શુક (परिव्वायए) પરિવ્રાજકે (सुदंसण एवं वयासी) સુદર્શનને આ પ્રમાણે કહ્યું-(तं गच्छामो णं सुदंसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो) હે સુદર્શન ! તો હવે અહીંથી હું ઝીધો તારા ધર્મગુરુ સ્થાપત્યાપુત્રની પાસે જઉં છું (इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेउइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो तं जइणं मे से इमाइं, अट्ठाइं, जाव वागरइ तएणं अहं वंदामि, नमंसामि, अहमेसे इमाइं अट्ठाइं जाव नो से वागरेइ तएणं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निरुप्पट्ठपसिणं वागरणं करिस्सामि) તેમની સાથે હું અર્થો, હેતુઓ, પ્રશ્નો, કારણો, અને વ્યાકરણે [illegible] તે મારા અર્થો, હેતુઓ—પ્રશ્નો,

त्यापुत्रः इमान् अर्थान् यावद् व्याकरोति=मम प्रश्नाना समीचीन समाधान करिष्यति ततस्तदनन्तर खलु अह वन्दे=वन्दिष्ये, नमस्यामि=नमस्करिष्यामि । अथ मम स इमान् अर्थान् यावद् व्याकरणानि नो व्याकरोति=न स्पष्टीकरिष्यति, ततस्तदा खलु अहम् एतैरेव अर्थैर्हेतुभिः 'निप्पट्ठपसिणवागरण' निःस्पष्टप्रश्नव्याकरण=निः स्पष्टानि अव्याख्यातानि प्रश्नव्याकरणानि प्रश्नोत्तराणि येन स तथा तम्, प्रश्नोत्तरकरणासमर्थं करिष्यामि ॥ २३ ॥

मूलम्–तएणं से परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी–जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं ते अव्वाबाहं पि ते, फासुयं विहारं ते ?।

तएणं से थावच्चापुत्ते सुएण परिव्वायगेण एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वयासी—सुया ! जत्तावि मे जवणिज्जंपि मे अव्वाबाहंपि मे फासुय विहारंपि मे, ॥

तएणं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वयासी–किं भंते ! जत्ता ! ॥

सुया ! जन्नं मम णाणदंसणचरित्ततवानियमसंजममाइएहिं जोएहिं जयणा से तं जत्ता ।

से किं तं भंते ! जवणिज्जं ?।

विशेष का अच्छी तरह से समाधान कर देंगे तो मैं उन्हें नमस्कार करूँगा। यदि वे मेरे इन अर्थों से लेकर व्याकरणों तक की बातों का कोई ठीक २ स्पष्टी करण नहीं करेंगे। तो मैं उन्हे उसी समय इन्हीं अर्थ हेतुओं द्वारा प्रश्नोत्तर करने में असमर्थ कर दूगा ॥ सू० २३ ॥

કારણો તેમજ વ્યાકરણો વિનાના પ્રશ્નો ના સારી પેઠે સમાધાન કરશે તો હુ તેમને વદન કરીશ અને જો તે માગ અર્થો વ્યાકરણો વગેરે ના વિષે સારી રીતે સ્પષ્ટી કરણ નહિ કરી શકે તો હુ તેમને તરત જ પ્રશ્નોત્તર કરવામા

' तएण से सुए ' इत्यादि ।

टीका-ततः खलु स शुकः परिव्राजकः सुदर्शननामक श्रेष्ठिनम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-तत्=तस्मात् गच्छामः खलु सुदर्शन ! तव धर्माचार्यस्य स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भवामः । ' इमाइ च ' इमान् अनन्तरमेव वक्ष्यमाण तया सन्निकृष्टान्, च शब्दादन्यांश्च खलु एतद्रूपान्=वक्ष्यमाणस्वरूपान्, अर्थान्= अर्थ्यमाणत्वाद् अधिगम्यमानत्वादर्थाः भावा वक्ष्यमाणयात्रा यापनीयादयस्तदन्ये हेतून्=अन्वयव्यतिरेकलक्षणहेतुना ज्ञायमानत्वाद् हेतुरूपास्तान्, प्रश्नान्=प्रश्नविषयत्वात् प्रश्नरूपास्तान्, कारणानि=कारण तत्साधकयुक्तिरूपम्, उपपत्तिमात्र तद्विषयत्वाद् कारणानि तानि, व्याकरणानि=सप्रमाण व्याख्यायमानत्वात् व्याकरणानि च तानि. पृच्छाम' । तद्=तस्माद् यदि खलु मम स स्थाप

'तएण से सुए' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सुए)उस शुक (परिव्वायए) परिव्राजक ने (सुदसण एव वयासी) सुदर्शन से ऐसा कहा-(त गच्छामो ण सुदसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो) तो हे सुदर्शन ! मैं यहाँ से-अब तुम्हारे धर्मचार्य स्थापत्यापुत्र के पास जाता हूँ । (इमाइ च ण एयारूवाइ अट्ठाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ अट्ठाइ जाव वागरइ, तएण अह वदामि नमसामि, अहमे से इमाइ अट्ठाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) और इस प्रकार के इन अर्थो को, हेतुओ को, प्रश्नों को कारणो को, व्याकरणों को, उनमे पूछूगा, यदि वे मेरे इन अर्थों का यावत् व्याकरणो प्रश्न

' तए ण से सुए इत्यादि '

ટીકાર્થ (तएण) ત્યાર બાદ (से सुए) શુક (परिव्वायए) પરિવ્રાજકે (सुदसण एव वयासी) સુદર્શનને આ પ્રમાણે કહ્યું (त गच्छामो णं सुदसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो) હે સુદર્શન ! તો હવે અહીંથી હું ચાલ્યો તારા ધર્મગુરુ સ્થાપત્યાપુત્રની પાસે જઉં છું (इमाइ च णं एयारूवाइ अट्ठाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ, अट्ठाइ, जाव वागरइ तएण अह वदामि, नमसामि, अहमेसे इमाइ अट्ठाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) તેમની સાથે હું અર્થો, હેતુઓ, પ્રશ્નો, કારણો, અને વ્યાકરણો ના વિષે ચર્ચા કરીશ, જો તે મારા અર્થો, હેતુઓ, પ્રશ્નો,

पन्नत्ता, तं जहा—सहजायया सहवड्ढियया सहपसुकीलियया, ते णं समणाणं निग्गथाण अभक्खेया, तत्थ णं जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पन्नत्ता, त जहा सत्थपरिणया य असत्थ परिणया य, तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते समणाणं निग्गथाण अभक्खेया, तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, त जहा फासुगा य अफासुगा य, अफासुया णं सुया । नो भक्खेया, तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पन्नत्ता, । जहा--जाइया य अजाइया य, तत्थ णं जे ते अजाइया ते अभक्खेया तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता, लद्धा य अलद्धा य, तत्थ णं जे ते अलद्धा ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते लद्धा ते समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया, एएणं अट्ठेणं सुया । एव वुच्चंति—सरिसवया भक्खेया वि, अभक्खेया वि, एव कुलत्था वि भाणियव्वा, नवर इम णाणत्त—इत्थि कुलत्था य धन्नकुलत्था य इत्थि कुलत्था तिविहा पन्नत्ता त जहा—कुलवधूयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ य, धन्नकुलत्था तहेव, एव मासा वि, नवरं इम नाणत्त--मासा तिविहा पन्नत्ता, त जहा- कालमासा य अत्थमासा य, धन्नमासा य, तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालसविहा पन्नत्ता त जहा-सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया

सुया ! जवणिज्जे दुविहे पन्नत्त, तजहा इंदियजवणिज्जे य नो इंदियजवणिज्जे य से किं तं इंदियजवणिज्जे ? ।

सुया ! जन्नं ममं सोइंदिय–चक्खिदिय–घाणिदिय–जिब्भिंदिय फासिंदियाइ निरुवहयाइ वसे वट्टंति, से तं इंदियजवणिज्जं ।

से किं तं नो इंदियजवणिज्जं ? ।

सुया ! जन्न कोहमाणमायालोभा खीणा उपसंता नो उदयति से तं नो इंदियजवणिज्जे ।

से किं त भते ! अव्वाबाहं ?

सुया जन्न मम वाइयपित्तिय सिंभिय सन्निवाइया विविहा रोगायंका णो उदीरेंति से तं अव्वाबाहं ।

से किं तं भते फासुयविहारं ? ।

सुया ! जन्न आरामेसु वा उज्जाणेसु वा देवकुलेसु वा सभासु वा पव्वएसु वा इत्थीपसुंपडगविवज्जिएसु वसहीसु पाडिहारिय पीठफलगसेज्जासथारय उग्गिण्हित्ताण विहरामि,से त्त फासुयविहार ।

सरिसवया ते भंते ! कि भक्खेया अभक्खेया ? ।

सुया ! सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेणं भंते एव वुच्चइ ? सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

सुया ! सरिसवया दुविहा पन्नत्ता, त जहा- मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया य, तत्थ ण जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा

भते ! ' हे भदन्त ! ते तव यात्रा वर्तते ? ' जवणिज्ज ते ' यापनीय ते तव वर्तते ?, ' अव्वाबाह पि ते ' अव्याबाधमपि ते वर्तते ?, ' फासुयविहार ते ' प्रासुक विहारस्ते तव वर्तते ? ।

ततस्तदनन्तर स स्थापत्यापुत्रः शुकेन परिव्राजकेनैव मुक्तः सन् शुक परिव्राजकमेवमवादीत्-हे शुक ! ' जत्ता वि मे ' यात्राऽपि मे ममाऽस्ति, ' जवणिज्जपि मे ' यापनीयमपि मे ममाऽस्ति, ' अव्वाबाहपि मे ' अव्याबाधमपि मे मम वर्तते, ' फासुयविहार पि मे ' प्रासुक विहारोऽपि मे ममाऽस्ति ।

ततस्तदनन्तर खलु स शुकः स्थापत्यापुत्रमेवमवादीत् ' किं भते ! जत्ता ' का भदन्त यात्रा हे भदन्त ! का=किं स्वरूपा तव यात्रा ? ।

स्थापत्यापुत्र अनगार था वहा गया । (उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी) वहा जाकरउसने स्थापत्यापुत्र से ऐसा कहा-(जत्ताते भते ! जवणिज्ज ते अव्वाबाह पि ते फासुयविहार) तो हे भदत ! आपकी यात्रा है क्या ? आपके यापनीय है क्या ? आपके अव्याबाध है क्या ? आपके प्रासुक विहार है क्या ? (तएण से थावच्चापुत्ते सुएण परिवायगेण एव वुत्ते समाणे सुय परिव्वायग एव वयासी) इस प्रकार शुक परिव्राजक से पूछे गये उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने उस-शुक परिव्राजक से ऐसा कहा-(सुया ! जत्ता वि मे, जवणिउज्जपि मे अव्वाबाहपि मे फासुयविहारपि मे) हे शुक हमारा यात्रा भी है, यापनीय भी है हमारा अव्याबाध भी है हमारे प्रासुक विहार भी है। (तएण से सुए थावच्चापुत्त एव वयासी) जब स्थापत्यापुत्र अनगार ने शुक परिव्राजक से इस प्रकार कहा-तब उसने स्थापत्यपुत्र अनगार

(उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी) त्या જઈને તેણે स्थापत्यापुत्र ने કહ્યુ-(जत्ता ते भते ! जवणिज्जते अव्वाबाह पि ते फासुयविहार) હે ભદન્ત ! શુ તમારી યાત્રા છે ? યાપનીય છે ? આવ્યાબાધ છે ? તમારે પ્રાસુક વિહાર છે ? (तएण से थावच्चापुत्ते सुएण परिव्वायगेण एव वुत्ते समाणेसुय परिव्वायग एव वयासी) શુક પરિવ્રાજકની આ વાત સાભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે શુક પરિવ્રાજકને કહ્યુ-(सुया ! जत्ता वि मे जवणिज्जवि में अव्वाबाहपि में फासुयविहार पि में) હે શુક ! અમારી યાત્રા પણ છે, યાપનીય પણ છે, આવ્યાબાધ પણ છે અને અમારે પ્રાસુક વિહાર પણ છે (तएण से सुए थावच्चापुत्त एव वयासी) જ્યારે સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારે શુક પરિવ્રાજકને આ પ્રમાણે કહ્યુ, ત્યારે સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારે તેમને કહ્યુ-(किं

एगे भव दुवे भव अणेगे भव अक्खए भव अव्वए भव अवट्ठिए भव अणेगभूयभावभविएवि भव ? ।

सुया ! एगे वि अह दुवेवि अहं जाव अणेगभूयभाव भविएवि अह ।

से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ एगे वि अहं जाव अणेग-भूयभविएवि अह !

जण्णं सुया! दव्वट्ठयाए एगे अह नाणदसणट्ठयाए दुवेवि अह पएसट्ठयाए अक्खएवि अहं अव्वएवि अहं अवट्ठिए वि अह उवओगट्ठयाए अणेगभूयभाव भविएवि अहं।

एत्थ णं से सुए सबुद्धे थावच्चापुत्तं वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी--इच्छामि णं भते! तुब्भ अंतिए केवलि-पन्नत्त धम्म निसामित्तए, धम्मकहा भाणियव्वा ॥सू० २४॥

'तएण से सुए' इत्यादि-

टीका- ततस्तदनन्तर स शुक परिव्राजकसहस्रेण सुदर्शनेन श्रेष्ठिना च सार्धं यत्रैव नीलाशोकनामोद्यान यत्रैव स्थापत्यापुत्र नामाऽनगार आसीत्, तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य स्थापत्यापुत्रमेव=वक्ष्यमाणप्रकारेणाऽऽदीत्- 'जत्ता ते

'तएण से सुए' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सुए) वह शुक परिव्राजक (परिव्वा यगसहस्सेण सुदसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चा पुत्तो अणगारे तेणेव उवागच्छइ) १ एक हजार परिव्राजको के-और सुदर्शन के साथ जहा नीलाशोक उद्यान तथा उसमें जहा

'तएण से' सुए' ઇત્યાદિ !'

ટીકાર્થ (तएण) त्यार आद (से सुए) शुક પરિવ્રાજક (परिव्वायगसहस्सेण सुदसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ) એક હજાર પરિવ્રાજકો અને સુદર્શન શેઠની સાથે જ્યા નીલાશોક ઉદ્યાન હતો અને તેમા જ્યા સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર હતા ત્યા ગયો

परिणामः, तपः=अनशनादिकं द्वादशविधम्, नियमः=द्रव्यक्षेत्रकालभावतोऽभिग्रह ग्रहणमुत्तरगुणरूपम्, सयमः=चारित्रग्रहणेनैव सयमे मतिबोधिते पुनःसयम पदोपादानादुभयकालप्रतिलेखनरूप, कालचतुष्टा ये स्वाध्यायादिकरणरूपश्च सयमो ग्राह्यः। आदिपदाद् ध्यानावश्यकादिः तत्र ध्यान=धर्म-यानादि, आवश्यक षड्विध तेषु, 'जोएहिं' योगेषु मनोवाक्कायव्यापारेषु, ' जयणा ' यतना प्रवृत्ति', सैषा यात्रा मम वर्तते। नान्या शत्रुजयादियात्रा वीतरागमार्गे वर्तते इत्यर्थः।

एवमेव भगवतीसूत्रेऽष्टादशशतकस्य दशमोद्देशके भगवता सोमिल ब्राह्मणाय प्रोक्तम्—

शुक्लो वदति–'से किं तभते जवणिज्जं' अथ किं तद् भदन्त ! यापनीयम् ?।

चारित्र मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से अथवा क्षय से जो स्थूल तथा सूक्ष्म प्राणातिपात आदि पापों सेनिवृत्ति रूप आत्मा का परिणाम होता है वह चारित्र है। तप–अनशन आदि के भेद से १२ प्रकार का है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भाव को लेकर उत्तर गुणरूप जो नाना प्रकार के नियम–अभिग्रह–ग्रहण से ही सयम भी ग्रहीत हो जाता है—फिर भी जो यहां सयम का स्वतत्र ग्रहण किया गया है वह " उभय काल में प्रतिलेखना करना और काल चतुष्टय में स्वाध्याय करना इस रूप सयम है, यह वाक्य इस अर्थ को सूचित करता है। आदि पद से "ध्यान आवश्यक" ये ग्रहीत हुए है। धर्म यान आदि का नाम ध्यान तथा आवश्य करने योग्य कर्तव्य का नाम आवश्यक है। यह आवश्यक छ प्रकार है। इन ज्ञानादिकों मे तथा योगों मे जो यतना है यही यात्रा है–अन्य कोई यात्रा नही है यह बात भगवती सूत्र में भगवान् ने अठारहमॉ शतक के

પ્રાણાતિપાત વગેરે પાપો થી નિવૃત્તિ રૂપે આત્મા નો પરિણામ થાય છે તે ચારિત્ર છે તપ, અનશન વગેરેના ભેદથી બાર પ્રકારનુ છે

દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભવની સાથે ઉત્તર ગુણ રૂપ જે અનેક જાતના નિયમ–(અભિગ્રહ) ગ્રહણથી જ સયમનુ પણ ગ્રહણ થઈ જાય છે, છતા એ અહી જે સયમનુ સ્વતત્ર રૂપે ગ્રહણ કરવામા આવ્યુ છે, તે બને વખત પ્રતિ લેખના કરવી અને કાલ ચતુષ્ટયમા સ્વાધ્યાય કરવો તે ' સયમ ' છે, આ વાકય એજ અર્થ અહી સુચવે છે, આદિપદ વડે " ધ્યાન આવશ્યક " પદોનુ સૂચન થાય છે ધર્મ વિષે ધ્યાન વગેરે ' ધ્યાન ' કહેવાય છે, તેમજ આવશ્યક રૂપે કરવા યોગ્ય કર્તવ્યનુ નામ 'આવશ્યક' છે આ આવશ્યકના છ પ્રકારો છે અજ્ઞાનાદિકો વગેરેમા તેમજ યોગોમા જે યતના છે તેજ યાત્રા છે બીજી કોઇપણ જાતની યાત્રા છે જ નહિ આ વાત " ભગવતી સૂત્ર " ના અઢારમા શતકના દશમા ઉદ્દેશકમા ભગવાને સોમિલ બ્રાહ્મણને કહી છે,

शुकस्य प्रश्नं श्रुत्वा स्थापत्यापुत्रो वदति-' सुया ' इत्यादि । हे शुक ! 'जन्न यत् खलु मम ' णाणदंसणचरित्ततवनियमसंजममाइएहिं ' ज्ञानदर्शनचारित्र तपोनियमसंयमादिकेषु ज्ञान=ज्ञानावरणीयस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा प्रादुर्भूतो जीवाजीवादि तत्त्वनिर्णयलक्षणआत्मपरिणामः, दर्शन=दर्शनमोहनीयस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा ऽऽविर्भूतस्तत्त्व श्रद्धानरूपआत्मपरिणामः, चारित्र=चारित्रमोहनीयस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा जातः स्थूलसूक्ष्मप्राणातिपातादि विरमणलक्षण आत्म

से इस तरह पुनः पूछा (किं भंते जत्ता) हे भदन्त ! यात्रा शब्द का अर्थ क्या है ? (सुया जन्न मम णाणदंसणचरित्त तवनियम संजमाइएहिं जोएहिं जयणा से त जत्ता) स्थापत्यापुत्र अनगार ने कहा है शुक ? ज्ञानदर्शन, चारित्र, तप, नियम, संयम, आदिकों में एवं मन वचन और काय इनके व्यापारो में जो हमारी यतनाचार पूर्वक प्रवृत्ति है वही यात्रा है-और ऐसी यात्रा हमारी आनंद के साथ हो रही है । अन्य शत्रुंजयादि तीर्थों की यात्रा वीतराग मार्ग में नही है । ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से, अथवा क्षय से जीवअजीव आदि तत्त्वों के विषय में जो उनके स्वरूप आदि का निर्णय रूप आत्म परिणामउत्पन्न होता है वह ज्ञान है ।

दर्शन मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से अथवा क्षय से, जीव के जो तत्त्व श्रद्धान रूप आत्म परिणाम होता है वह दर्शन है ।

भंते जत्ता) હે ભદંત ! યાત્રા શબ્દનો અર્થ શું છે (सुया जन्न मम णाण दंसणचरित्ततवनियमसंजममाइएहिं जोएहिं जयणा से त जत्ता) સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે કહ્યું-હે શુક ! જ્ઞાન દર્શન, ચારિત્ર, તપ, નિયમ, સંયમ, વગેરેમા અને મન, વચન અને કાયાના વ્યાપારોમા જે અમારી જતન પૂર્વક આચરણ કરવાની પ્રવૃત્તિ છે, તેજ યાત્રા છે, અને એ યાત્રા અમારી સુખેથી પસાર થઈ રહી છે, શત્રુંજય વગેરે તીર્થોની યાત્રા વીતરાગ માર્ગને અનુસરનારાઓ માટે નથી જ્ઞાનાવરણીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જીવ અજીવ વગેરે વિષયમા જે તેમના સ્વરૂપ વગેરેના નિર્ણય રૂપ આત્મ પરિણામ ઉત્પન્ન થાય છે તે જ્ઞાન છે

દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જીવતા જે તત્ત્વ શ્રદ્ધાન રૂપ આત્મપરિણામ હોય છે તે દર્શન છે

ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જે સ્થૂલ તેમજ સૂક્ષ્મ

शुकः पृच्छति-'से किं' इत्यादि । अथ किं तद् नोइन्द्रिययापनीयम् । स्थापत्यापुत्र आह-' सुया ' इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु क्रोधमानमाया लोभाः क्षीणा क्षय प्राप्ता., उपशान्ता उपशम प्राप्ताःसन्तो नो उदयन्ते=नोदीर्यन्ते, नो इन्द्रिययापनीय नोइन्द्रिय मनस्तस्य विकाराः कषाया इह नो इन्द्रियशब्देन गृह्यन्ते, तेषा यापनीय वशीकरण ममास्ति ।

शुको वदति-' से किं ' इत्यादि. । अथ किं तद् भदन्त अव्याबाधम् ? । स्थापत्यापुत्र आह-' सुया ! ' इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु मम वातिक पैत्तिकश्लैष्मिकसान्निपातिका= ! वातिकाः वातप्रकोपजनिता पैत्तिकाः प्रकोप समुद्भवाः, श्लैष्मिकाःकफप्रकोपप्रभवा', सान्निपातिका.=वातपित्त श्लेष्मणा समूह'सन्निपातः, तत्र भवाः विविधा ' रोगायका ' रोगातङ्काः=रोगाश्चातकाश्चेति

इन्द्रिय यापनीय है । (से किं त नो इंदियजवणिज्जे) भदत ! नो इन्द्रिय यापनीय का क्या अर्थ है ? (सुया जन्न कोह माण माया लोभा खीणा उवसंता नो उदयंति से त नो इंदियजवणिज्जे) हे शुक जो क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाये क्षयावस्थापन्न होकर या उपशम अवस्थावाली होकर उदय में नही आ रही है यही नो इन्द्रिय यापनीय है। नो इन्द्रियका अर्थ मन होता है । मन के विकार ये क्रोध, मान, माया, और लोभ ये चार कषाये हैं । इसलिये ये नो इन्द्रिय शब्द से गृहीत हुए है । यापनीय शब्द का अर्थ वश करना हैं । ये सब कषायें मेरे वश मे हो रही हैं - यही नो इन्द्रिय यापनीय मेरे वर्त रहा है। (से किं भंते अव्वाबाह) भदत ! अव्याबाध का तात्पर्य क्या है ? (सुया जन्न मम वाइयपित्तिय सिंभियसन्निवाइया

ઇન્દ્રિય યાપનીય છે (से किं त नो इंदियजवणिज्जे) હે ભદંત ! નો ઇન્દ્રિય યાપનીયનો શો અર્થ થાય છે (सुया जन्न कोहमाण मायालोभा खीणा उवसंता नो उवयंति से त नो इंदियजवणिज्जे) હે શુક ! ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે કષાય ક્ષય પામીને અથવા તો ઉપશમિત થઈને ફરી ઉદય પામતી નથી એજ નો ઇન્દ્રિય યાપનીય છે નો ઇન્દ્રિય એટલે મન, અને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે મનનાજ વિકારો છે એથી આ બધાનો ઇન્દ્રિય શબ્દથી ગૃહીત થયા છે યાપનીય શબ્દનો અર્થ વશ કરવુ છે આ બધા કષાયો મારે વશ થયેલા છે એજ નોઇન્દ્રિય યાપનીયને હુ વર્તી રહ્યો છુ (से किं भंते अव्वाबाह) હે ભદંત ! અવ્યાબાધ નો શો અર્થ છે ? (सुया जन्न मम वाइयपित्तियसिंभियसन्निवाइया विविहा

स्थापत्यापुत्रः कथयति-हे शुक ! यापनीय द्विविधं प्रज्ञप्त, तद् यथा इन्द्रिययापनीय नोइन्द्रिय यापनोय च ।

शुको ब्रूते-अथ किं तद् इन्द्रिययापनीयम्. ? ।

स्थापत्यापुत्रः समाधत्ते-' सुया ! इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् कारणात् खलु मम श्रोत्रेन्द्रि-चक्षुरिन्द्रिय-घ्राणेन्द्रिय-जिह्वेन्द्रि-स्पर्शेन्द्रियाणि निरुपहतानि वशे वर्तन्ते, तद् इन्द्रिययानीम्=इन्द्रियाणा वशीकरण मम वर्तते. । ' त ' इतिवाक्यालङ्कारे, एवमन्यत्रापि ।

दशमेंउद्देशक में सोमिल ब्राह्मण से कही है । (से किं त भते जवणिज्ज) हे भदत! यापनीय शब्द का क्या अर्थ है ? (सुया ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते त जहा-इदियजवणिज्जे य णो इदियजवणिज्जे य) इस प्रकार शुक परिव्राजक के पूछने पर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उसे समझाया कि हे शुक ! यापनीय दो प्रकार का कहा हुआ है —जैसे १ इन्द्रियोपनीय २ नो इन्द्रिय यापनीय । (से किं त इदियजवणिज्ज) इन्द्रिय यापनीय का क्या स्वरूप है इस प्रकार शुक के पूछ ने पर स्थापत्या पुत्र ने कहा (सुया ! जन्न मम सोइदिय चक्खिदिय जिब्भिदिय फासिंदियाइ निरुवहयाइ वसे वट्टति, से त इदियजवणिज्ज) शुक ! श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणइन्द्रिय, जिह्वाइन्द्रिय, स्पर्शनइन्द्रिय निरुपहत बन कर जो मेरे वश में हो रही हैं यही इन्द्रिय यापनीय है अर्थात् विना किसी बाधा के अपने विषयो को ग्रहण करने में समर्थ होने पर भी ये पाचो इन्द्रियां जो मेरे वश में वर्त रही हैं यही

(से किं त भते जवणिज्ज) હે ભદન્ત ! યાપનીય શબ્દનો અર્થ શુ છે ? (सुया ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते त जहा इदियजवणिज्जे य णो इदिय जवणिज्जे य) શુકપરિવ્રાજકના પ્રશ્નને સાભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેને સમજાવતા કહ્યુ કે-હે શુક ! યાપનીયના બે પ્રકારો કહ્યા છે (૧) ઇન્દ્રિય યાપનીય અને (૨) નો ઇન્દ્રિય યાપનીય (से किं त इंदियजवणिज्ज) ઇન્દ્રિય યાપનીયનુ સ્વરૂપ શુ છે ? શુક પરિવ્રાજકના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા સ્થાપત્યા પુત્રે કહ્યુ-(सुया ! जन्न मम सोइदिय चक्खिदिय जिब्भिदियफासिदियाइ निरुवहयाइ वसे वट्टति, से त इदियजवणिज्ज) હે શુક ! શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુ ઇન્દ્રિય ઘ્રાણ ઇન્દ્રિય, જિહ્વા ઇન્દ્રિય, સ્પર્શ ઇન્દ્રિય, નિરુપહત થઇને મારા વશમા થઇને તેજ ઇન્દ્રિય યાપનીય છે અટલે કે કોઇપણ જાતન વાધા વગર વિષયોને ગ્રહણ કરવાની તાકત હોવા છતા એ પાચે ઇન્દ્રિયો મારે વશ થયેલી છે તેજ

शुकः पृच्छति–'से किं' इत्यादि । अथ किं तद् नोइन्द्रिययापनीयम् । स्थापत्यापुत्र आह–' सुया ' इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु क्रोधमानमाया लोभाः क्षीणा क्षय प्राप्ता', उपशान्ता उपशम प्राप्ताःसन्तो नो उदयन्ते=नोदीर्यन्ते, नो इन्द्रियापनीय नोइन्द्रिय मनस्तस्य विकाराः कषाया इह नो इन्द्रियशब्देन गृह्यन्ते, तेषा यापनीय वशीकरण ममास्ति ।

शुको वदति–' से किं ' इत्यादि. । अथ किं तद् भदन्त अव्याबाधम् ? । स्थापत्यापुत्र आह–' सुया ! ' इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु मम वातिक पैत्तिकश्लैष्मिकसान्निपातिका= ! वातिकाः वातप्रकोपजनिता पैत्तिकाः प्रकोप-समुद्भवा', श्लैष्मिकाःकफप्रकोपभवा', सान्निपातिका.=वातपित्त श्लेष्मणा समूहःसन्निपातः, तत्र भवाः विविधा ' रोगायका ' रोगातङ्काः=रोगाश्चातकाश्चेति

इन्द्रिय यापनीय है । (से कि त नो इदियजवणिज्जे) भदत ! नो इन्द्रिय यापनीय का क्या अर्थ है ? (सुया जन्न कोह माण माया लोभा खीणा उवसता नो उदयनि से त नो इदियजवणिज्जे) हे शुक जो क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाये क्षयावस्थापन्न होकर या उपशम अवस्थावाली होकर उदय मे नही आ रही है यही नो इन्द्रिय यापनीय है। नो इन्द्रियका अर्थ मन होता है । मन के विकार ये क्रोध, मान, माया, और लोभ ये चार कषाये हैं । इसलिये ये नो इन्द्रिय शब्द से गृहीत हुए है । यापनीय शब्द का अर्थ वश करना हैं । ये सब कषायें मेरे वश में हो रही हैं – यही नो इन्द्रिय यापनीय मेरे वर्त रहा है। (से किं भते अव्वाबाह) भदत ! अव्याबाध का तात्पर्य क्या है ? (सुया जन्न मम वाइयपित्तिय सिंभियसन्निवाइया

ધન્દ્રિય યાપનીય છે (से कि त नो इदियजवणिज्जे) હે ભદ્દત ! નો ધન્દ્રિય યાપનીયનો શો અર્થ થય છે (सुया जन्न कोहमाण मायालोभा खीणा उवसता नो उदयति से त नो इदियजवणिज्जे) હે શુક ! ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે કષાય ક્ષય પામીને અથવા તો ઉપશમિત થઈને ફરી ઉદય પામતી નથી એજ નો ધન્દ્રિય યાપનીય છે નો ધન્દ્રિય એટલે મન, અને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે મનનાજ વિકારો છે એથી આ બધાનો ધન્દ્રિય શબ્દથી ગૃહીત થયા છે યાપનીય શબ્દનો અર્થ વશ કરવુ છે આ બધા કષાયો મારે વશ થયેલા છે એજ નોધન્દ્રિય યાપનીયને હુ વર્તી રહ્યો છુ (से कि भते अव्वाबाह) હે ભદ્દત ! અવ્યાબાધ નો શો અર્થ છે ? (सुया जन्न मम वाइयपित्तियसिंभियसन्निवाइया विविहा

द्वन्द्वः रोगा दाहज्वरादयः, आतङ्काः शीघ्रघातिनः शूलादयः नो उदीयन्ते,तद् अव्याबाध=व्याबाधाना शरीरपीड़ानामभावः मम वर्तते. ।

शुकः पृच्छति-'से किं ' इत्यादि । अथ कोऽसौ भद त' प्रासुक विहारः ।?

स्थापत्यापुत्रो वदति-'सुया ' इत्यादि । हे शुक ! यत् यस्मात् खलु आरामेषु=उपवनेषु, उद्यानेषु पुष्पप्रधानेषु राजगृहेषु, देवकुलेषु व्यन्तरायतनेषु, सभासु परिषत्सु ' पवएसु ' पर्वतेषु इदमुपलक्षण तेनाष्टादशस्थानेषु इत्यर्थ । स्त्री-पशुपण्डकविवर्जितासु वसतिषु प्रातिहारिक=पुनः समर्पणीय, पीठफलकशय्यास-

---

विविहा रोयायका नो उदीरेंति से त अव्वाबाह से किं त भंते फासुयविहार आरामेसु उज्जाणेसु देवउलेसु, सभासु, पव्व-एसु, इत्थी पसुपडग विवज्जियासु वसहीसु पाडिहारिय पीठफलग सथारय उग्गिण्हित्ता ण विहरामि सेत्त फासुयविहार) शुक ! जिस कारण से वात, पित्त और कफ से जनित तथा इन तीनों के सन्निपात से जनित जो विविध प्रकार के दाहज्वर आदि रोग शीघ्र घातक शूलादिक आतक मुझे उदित नही हो रहे हैं यही अव्याबाध मेरे वर्त रहा है । व्याबाध शब्द का अर्थ शारीरिक पीडा है- और इस का अभाव इस समय मेरे में वर्त रहा है । यही अव्याबाध का स्वरूप है । हे भदन्त ! प्रासुक विहार का क्या स्वरूप है ? उत्तर-हे शुक ! जिस कारण मैं उपवनो मे पुष्प प्रधान राजकीय बनो में देवघरों में अर्थात् व्यन्तरायतनो में परिषदो में पर्वतों में उपलक्षण से अठारह स्थानों में, स्त्री, पशु, पडक-नपुसकों से विहीन वसतिओ में मठों में

रोयाय का नो उदीरेति से त अव्वाबाह से किं त भते फासुयविहार आरामेसु उज्जाणेसु देवउलेसु सभासु पव्वएसु इत्थी, पसुपडगविविज्जियासु वसहीसु पाडिहारिय पीठफलगसेज्जासथारय उग्गिण्हित्ताण विहरामि से त्त फासुयविहार) હે શુક ! વાત, પિત્ત અને કફથી જન્મતા તેમજ આ ત્રણેના સન્નિપાતથી ઉદ્ભવતા અનેક દાહજ્વર વગેરે, રોગો શીઘ્રઘાતક શૂળ વગેરે આતક મારા શરીરમા ઉદ્ભવતા નથી એજ અવ્યાબાધ મારામા વર્તી રહ્યો છે અવ્યાબાધનુ સ્વરૂપ એજ છે શુકે સ્થાપત્યાપુત્રને બીજો પ્રશ્ન કર્યો -હે ભદત ! પ્રાસુક વિહારનુ સ્વરૂપ શુ છે ? તેનો ઉત્તર આપતા સ્થાપત્યા પુત્ર કહે છે-હે શુક ! હુ ઉપવનોમા, પુષ્પ પ્રધ ન રાજકીય વનોમા, દેવ ઘરોમા એટલે કે વ્યતરાયતનોમા, પરિષદોમા પર્વતોમા-ઉપલક્ષણથી અઢાર સ્થાનોમા સ્ત્રી, પશુ,પડક, નપુસક વગરની વસ્તીઓમા મઠોમા પ્રાતિહારિક

स्तारकमनगृह्य=याचित्वा विहरामि=विचरामि, स प्रासुकविहारः । 'त' इति वाक्यालङ्कारे । शुक पुनरप्युपहासार्थं पृच्छति-'सरिसवया' इत्यादि । हे भदन्त! 'सरिसवया' ते तव किं भक्ष्या, उत अभक्ष्याः किम् ? स्थापत्यापुत्र' समाधत्ते -'सुया!' इत्यादि । हे शुक ! 'सरिसवया' सरिसवयशब्दार्थाः भक्ष्या अपि, अभक्ष्या अपि, 'सरिसवया' इति पदस्यार्थभेदाद् भक्ष्या अभक्ष्या भवन्तीति भावः । शुकः पुनराह-'से केणट्ठण' इत्यादि । भदन्त ! हे भगवन् तत् केनार्थेन एवमुच्यते-'सरिसवया' भक्ष्या अपि, अभक्ष्या अपीति ।

स्थापत्यापुत्रो वदति-'सुया!' इत्यादि । 'सरिसवया' सरिसवयशब्दवोध्या अर्था द्विविधा प्रज्ञप्ता, तद् यथा 'मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया य'

प्रातिहारिक- पुनः समर्पणीय- पीठ, फलक, शय्या सस्तारक को याचित कर विचरण करता हूँ- यही मेरा प्रासुक विहार है । उपहास करने के अभिप्राय से पुन शुक परिव्राजक पूछता है कि (सरिसवया ते भंते किं भक्खेया अभक्खेया ?) भदत ! "सरिसवय" तुम्हारे सिद्धान्तानुसार भक्ष्य हैं या अभक्ष्य है ? (सुया सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि) स्थापत्या पुत्र ने कहा- शुक! सरिसवय भक्ष्य भी हैं और अभक्ष्य भी हैं। (से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ सरिसवया भक्खेया नि अभक्खेया वि) शुक ने उनसे पुन' पूछा भदत ! आप यह किस अर्थ की अपेक्षा लेकर ऐसा कहते हे कि सरिसवय भक्ष्य भी हैं और अभक्ष्य भी हैं । (सुया सरिसवया दुविहा पन्नत्ता तजहा मित्त सरिसवया धन्नसरिसवया) स्थापत्यापुत्रने उसे समझाया कि शुक ! सरिसवय

-એટલે કે યાચના કરેલી વસ્તુ કે જે પાછી અપાય જેમકે પીઠ, ફલક, શય્યા સસ્તારકની યાચના કરી ને વિચરૂ છુ એજ મારો પ્રાસુક વિહાર છે શુક પરિવ્રાજક ઉપહાસના અભિપ્રાયથી ફરી પ્રશ્ન કરે છે કે (સરિસવયા તે भंते किं भक्खेया अभक्खेया !) હે ભદત ! 'સરિસવય' તમારા શાસ્ત્ર પ્રમાણે ભક્ષ્ય છે કે અભક્ષ્ય ? (सुया सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि) स्थापत्या પુત્રે તેના ઉત્તરમા કહ્યુ-હે શુક ! 'સરિસવય' ભક્ષ્ય પણ છે અને અભક્ષ્ય પણ છે (से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ सरिससवया भक्खेया वि अभक्खेया वि) શુકે તેમને ફરી પ્રશ્ન કર્યો-કે હે ભદત ! તેમ 'સરિસવય' તે ભક્ષ્ય તેમજ અભક્ષ્ય કયા અર્થની અપેક્ષાએ કહી રહ્યા છો (सुया सरिसवया दुविहा पन्नत्ता त जहा मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया) स्थापत्यापुत्रे तेने समજાવતા કહ્યુ કે હે શુક ! 'સરિસવય' શબ્દનો અર્થ બે રીતે થાય છે ?

मित्र सदृशवयस, धान्यसर्षपकाश्च । ' सरिसवया ' इत्यस्य द्विविधोऽर्थः सदृशवयस सर्षपकाश्चेति । तत्र सदृशवयसो मित्ररूपा सर्षपकास्तु धान्यरूपा इति भावः। तत्र खलु ये ते मित्र सदृशवयसः=मित्ररूपाः समानवयसस्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः प्रतिबोधिताः तद् यथा-' सहजायया ' सहजातका समानकालजन्मानः, ' सहवड्ढियया' सह वर्धितकाः समानकाले वृद्धिं प्राप्ताः, 'सह पसुकीलियया' सह पासु क्रीडितकाः सहैव धूलिक्रीडाकारिणश्चेति । ये सर्वे मित्ररूपाः सदृशवयस्का' खलु श्रमणाना निर्ग्रन्थानामभक्ष्याः भोक्तु न कल्पन्ते । तत्र खलु ये ते धान्यसर्षप-

---

दो प्रकारसे प्रज्ञप्त हुआ है—१ मित्रसरिसवय दूसरा धान्य सरिसवय—। सरिसवय शब्द की ' सदृशवय " और सर्षपक " इस प्रकार संस्कृत छाया होती है। जब सदृशवय—समान आयुवाले मित्रजन —ऐसा छायार्थक "सरिसवय" पद लिया जाता है—तब उस पक्ष के अनुसार सरिसवय अभक्ष्य है ऐसा अर्थ बोध होता है—तथा सर्षपक छायार्थक जब सरिसवय पद लिया जाता है तब " सरिसवय " भक्ष्य भी है ऐसा अर्थबोध होता है। इसी विषय को अधिक और स्पष्ट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं कि- (तत्थ णं जे ते मित्त सरिसवया ते तिविहा पन्नत्ता, जहा- सहजायया, सहसवड्ढियया, सहपसुकीलियया ते णं समणाण निग्गथाण अभक्खेया) इनमें जो मित्र सरिसवय हैं वे तीन प्रकार के प्रज्ञप्त हुए हैं- जैसे सहजातक, सहवर्धितक, सहपासुक्रीडितक अपने साथ जिनका जन्म हुआ हैं वे सहजातक हैं। अपने साथ २ जो वृद्धि को प्राप्त हुए हैं वे सहवर्धित हैं। तथा जो

મિત્ર, સરિસવય, ૨ ધાન્ય, ' સરિસવય ' શબ્દની સંસ્કૃત છાયા ૧, સદૃશવય, અને ૨, સર્ષપક બે રીતે થાય છે જ્યારે સરિસવય નો 'શદૃશવય' (સર ખી આયુષ્ય ધરાવનારા મિત્ર જન) આવો અર્થ ગ્રહણ કરવામા આવે છે ત્યારે ' સરિસવય ' અભક્ષ્ય છે આવો અર્થ જણાય છે તેમજ ' સરિસય ' પદ સર્ષપક (સરદિયુ) અર્થમા લેવાય છે ત્યારે તે ભક્ષ્ય છે આવો પણ અર્થ થાય છે એજ વાતને વિશેષ સ્પષ્ટ કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે (तत्थणं जे त मित्त सरिसवया ते तिविहा पन्नत्ता, त जहा-सहजायया, सहसवड्ढियया, सहपसुकीलियया तेण समणाण निग्गथाण अभक्खेया) આમા જ્યારે સરિસવય શબ્દનો અર્થ મિત્ર હોય છે, ત્યારે તેના ત્રણ પ્રકાર સમજવા જોઇએ જેમકે ૧, સહજાતક, ૨, સહવર્ધિતક, અને ૩, સહપાસુક્રીડિતક આપણી સાથે જન્મ લેનાર સહજાતક કહેવાય છે આપણી સાથે મોટા થનાર સહવર્ધિત

कास्ते द्विविधा=द्विप्रकारा प्रज्ञप्ता, तद् यथा शस्त्र परिणताश्च। तत्र खलु ये ते अशस्त्रपरिणताः सचित्तास्ते श्रमणानां निर्ग्रन्थानामभक्ष्याः अखाद्या. तत्र खलु ये शस्त्रपरिणताः शस्त्रपरिणत्याऽचित्तास्ते द्विविधा प्रज्ञप्ताः, तद् यथा-प्रासुकाश्च अप्रासुकाश्च। अप्रासुकाः खलु हे शुक! नो भक्ष्या=अखाद्याः। तत्र खलु ये ते प्रासुकास्ते द्विविधा. प्रज्ञप्ता', तद् यथा-' जाइया य अजाइया य ' याचिताश्च, अयाचिताश्च। तत्र खलु-ये ते अयाचितास्ते अभक्ष्याः अखाद्या। तत्र खलु ये ते याचितास्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद् यथा एषणीयाश्च अनेषणीयाश्च। तत्र खलु

साथ २ धूलि मे खेले हैं वे सह पासु क्रीडितक है। ये सब श्रमण निर्ग्रन्थो को अभक्ष्य है। (तत्थण जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पण्णत्ता, तजहा सत्थपरिणया य असत्थ परिणया य) जो धान्य सरिसवय है वे दो प्रकार के हैं-जैसे १ शस्त्र परिणत २ अशस्त्र परिणत- (तत्थ ण जे ते असत्थ परिणया ते समणाण णिग्गथाण अभक्खेया तत्थण जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता त जहा फासुगाय अफासुगाय) इन में जो अशस्त्र परिणत सचित्त- धान्यसरिसवय है वे श्रमण निर्ग्रन्थो को अभक्ष्य है- अखाद्य हैं। जो शस्त्र परिणत अचित्त है वे प्रासुक और अप्रासुक के भेद से दो प्रकार के हैं (अफासुयाण सुया णो भक्खेया तत्थण जे ते फासुया ते दुविहा पन्नत्ता त जहा जाइयाय अजाइया य तत्थण जे ते जाइया ते दुविहा पन्नत्ता त जहा एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य) इन मे जो अप्रासुक धान्य सरिसवय हे वे हे शुक खाने

કહેવાય છે, તેમજ જેઓ એકી સાથે માટીમા રમતા રમતા મોટા થયા છે તેઓ સહપાસુક્રીડિતક મિત્ર કહેવાય છે શ્રમણ નિર્ગ્રંથો માટે આ બધા અભક્ષ્ય છે (तत्थण जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा सत्थ परिणयाय असत्थ परिणयाय) ધાન્ય એટલે કે જે અનાજના રૂપમા સરિસવય (સરિયુ) છે તેના બે પ્રકાર છે-૧ શસ્ત્ર પરિણત, ૨, અશસ્ત્ર પરિણત, (तत्थण जे ते असत्थपरिणया ते समणाण णिग्गथाण अभक्खेया तत्थण जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णता त जहा-फासुगाय अफासुगाय) આમા જે અશસ્ત્ર પરિણત-' સચિત્ત ' ધન્ય સરિસવય છે તે શ્રમણ નિર્ગ્રંથો માટે અભક્ષ્ય છે, અખાદ્ય છે તેમજ શસ્ત્રપરિણત-અચિત્ત છે તે પ્રાસુક અને અપ્રાસુક આમ બે પ્રકારના છે (अफासुयाण सुया णो भक्खेया-तत्थ ण जे ते फासुया ते दुविहा पन्नत्ता त जहा जाइयाय अजाइयाय तत्थण जे ते जाइया ते दुविहा पन्नत्ता त जहा एसाणिज्जाय अणेसणिज्जाय) આમાથી આ પ્રાસુક ધાન્ય સરસિયુ (સરિસવય) છે, તે અખાદ્ય છે પ્રાસુક ધા ય સરસિયા (સરિસવય) ના બે

ये ते ' अणेसणिज्जा ' अनेषणीयास्ते खलु अभक्ष्याः । तत्र खलु ये ते ' एसणिज्जा ' एषणीया , ते द्विविधा प्रज्ञप्ताः-तद् यथा-लब्धाश्च अलब्धाश्च । तत्र खलु ये तेऽलब्धास्ते अभक्ष्याः । तत्र खलु ये ते लब्धास्ते श्रमणाना निर्ग्रन्थाना भक्ष्याः हे शुक ! एतेनार्थेन=उक्तरूपेण अर्थेन उक्तार्थमादायेत्यर्थ , एवमुच्यते ' सरिसवया ' सरिसवयशब्दवाच्या अर्था भक्ष्या अपि अभक्ष्या अपीति ।

'एव कुलत्था वि भाणियव्वा' एवउक्तप्रकारेण कुलत्था अपि भणितव्याः, ' नवेर' विशेष. इद नानात्व स्त्रीकुलस्थाश्च धान्यकुलत्थाश्च । स्त्रीकुलस्था स्त्रिविधा

योग्य नही हैं। प्रासुक धान्य सरिसवय दो प्रकार के हैं जैसे याचित और अयाचित । इन में भी जो अयाचित हैं वे अभक्ष्य हैं- श्रमण निर्ग्रन्थों को खाने योग्य नही है । याचित एषणीय और अनेषणीय के भेद से दो प्रकार के हैं (तत्थण जे ते अणेसणिज्जा ते ण अभक्खेया) इन मे जो अनेषणीय धान्य सरिसवय हैं वे अखाद्य हैं । (तत्थण जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता लद्धाय अलद्धाय, तत्थ ण जे ते अलद्धा, ते अभक्खेया, तत्थ ण जे ते लद्धा ते समणाण निग्गथाण भक्खेया) जो एषणीय सरिसवय हैं वे लब्ध और अलब्ध के भेद से दो प्रकार के हैं- अलब्ध अभक्ष्य और लब्ध श्रवण निर्ग्रन्थो को भक्ष्य हैं । (एए ण अट्ठेण सुया एव वुच्चति- सरिसवया- भक्खेया वि अभक्खेया वि एव कुलत्था वि भाणियव्वा) हे शुक! सरिसवय पद के इन पूर्वोक्त अर्थों को लेकर ऐसा मैं कहता हूँ कि सरिसवय भक्ष्य भी हैं और अभक्ष्य भी हैं । इसी तरह " कुलत्था " के विषय में भी ऐसा ही समझना चाहिये । (णवर इम नाणत्त) परन्तु इस मे इस तरह विशेषता

પ્રકાર છે-યાચિત અને અયાચિત, આમા અયાચિત સરિસવય અભક્ષ્ય ગણાય છે શ્રમણ નિર્ગ્રંથો આહારમા અયાચિત સરિસવયનો પ્રયોગ કરતા નથી (तत्थण जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता लद्धा य अलद्धाय, तत्थण जे ते अलद्धा, ते अभक्खेया, तत्थण जे ते लद्धा ते समणाण निग्गथाण भक्खेया) એષણીય (ઇચ્છનીય) સરિસવયના લબ્ધ અને અલબ્ધ બે પ્રકારો છે નિર્ગ્રંથોને માટે અલબ્ધ સરિસવય (સરશિયુ) અભક્ષ્ય છે અને લબ્ધ સરિસવય ભક્ષ્ય છે (ए ए ण अट्ठेण सुया एव वुच्चति सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि एव कुलत्था वि भाणियव्वा) હે શુક! આ પ્રમાણે સરિસવય ને પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કરતા તેને ભક્ષ્ય અને અભક્ષ્ય આમ બને રીતે કહી શકાય આ રીતે ' કુલત્થા ' ના વિષે પણ સમજી લેવુ જોઇએ (णवर इम नाणत्त)

प्रज्ञप्ताः,तद्यथा कुलवधूका इतिच कुलमातृका इतिच, कुल दुहितर इतिच। धान्य कुलत्थास्तथैव.।

एव मासाः मापा अपि, नवरं विशेषः-इद नानात्वम् मासा मापा स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-कालमासाश्च अर्थमापाश्च धान्यमापाश्च। तत्र खलु ये ते काल मासास्ते खलु द्वादशविधाः प्रज्ञप्ता', तद्यथा-श्रावणो यावद् आषाढः, ते खलु अभक्ष्याः। अर्थमापा द्विविधाः-हिरण्यमापाश्च, सुवर्णमापाश्च, ते खलु अभक्ष्या धान्यमापास्तथैव ॥

है- (इत्थी कुलत्था य धन्न कुलत्था य) एक स्त्री कुलस्था दूसरी धान्य कुलस्था। तात्पर्य इसका- कुलत्था की छाया कुलस्था है- इसका अर्थ स्त्री कुलस्था और धान्य कुलस्था है। कुलथी जात का अन्न विशेष जो होता है वही यह धान्य कुलत्था से ग्रहण हुआ है। (इत्थी कुलत्था तिविहा पन्नत्ता त जहा कुल वधूयाइ य कुल माउयाइ य, कुल धूयाइय) इन में जो कुलत्था का वाच्यार्थ स्त्री कुलस्था है वह तीन प्रकार का हैं जैसे- १ कुलवधू २ कुलमातृ का ३ और कुल दुहिता (लड़की) (धन्न कुलत्था तहेव) धान्यकुलत्था अर्थ का निरूपण धान्य मरिसवय के समान जानना चाहिये। (एव मासा वि नवर इम नाणत्त- मासा तिविहा पन्नत्ता, त जहा- काल मासाय, अत्थ मासाय, धन्न मासाय, तत्थ ण जे ते काल मासा ते ण दुवालसविहा पन्नत्ता, त जहा- सावणे जाव आसाढे ते ण अभक्खेया, अत्थ मासा दुविहा हिरन्न मासा सुवण्ण मासा य तेण अभक्खेया धन्न मासा तहेव) इसी तरह "मासा"

આનુ સ્પષ્ટીકરણ એવી રીતે કે (इत्थी कुलत्थाय धन्नकुलत्थाय) એક સ્ત્રી કુલસ્થા અને બીજુ ધાન્ય (અનાજ) કુલત્થા ની છાયા 'કુલસ્થા' થાય છે તેના બે રીતે અર્થ સમજી શકાય છે સ્ત્રી ને પણ કુલસ્થા કહેવાય છે અને કુલસ્થા એક જાતનુ કઠોળ પણ હોય છે તેને 'કળથી' કહે છે (इत्थीकुलत्था तिविहा पन्नत्ता त जहा कुलवधूयाइय कुलमाउयाइ य कुल धूया इय) સ્ત્રી કુલસ્થાના ત્રણ પ્રકાર છે જેમ કે-(૧) કુળ વધૂ, (૨) કુળ માતૃકા, અને (૩) કુળ દુહિતા (દિકરી) (धन्नकुलत्था तहेव) ધાન્યાર્થવાચી કુલસ્થા શબ્દનુ નિરૂપણ ધાન્ય મરિસવની જેમ સમજવુ જોઇએ (एव मासा वि नवर इम नाणत्त मासा तिविहा पन्नता त जहा-काल मासाय, अत्थमासाय, धन्नमासाय तत्थण जे ते कालमासा तेण दुवालसविहा पन्नत्ता त जहा सावणे जाव आसाढे तेण अभक्खेया अत्थमासा दुविहा हिरन्न मासा सुवण्णमासाय तेण अभक्खेया पन्नमासा तहेव) આ પ્રમાણે જ 'માસ' શબ્દ વિષે પણ

स्थापत्यापुत्रस्य तत्वज्ञानजिज्ञासया शुकः पृच्छति-' एगे भव ' इत्यादि. । ' एगे भव ' एको भवान् ? अय भावः-आत्मान एकत्वस्वीकारे श्रोत्रादि विज्ञानानामवयवाना चात्मऽनेकतोपलब्ध्या एकत्व दूषयिष्यामीति. ।

' दुवे भव ' द्वौ भवान्न् ? अयमाशयः- आत्मनो द्वित्वाभ्युपगमेऽहमित्येकत्वविशिष्टार्थस्य द्वित्वविरोधेन द्वित्व दूषयिष्यामीति । ' अणेगे भव ' अनेको भवान् ? -आत्मानोऽनेकत्वस्वीकारेऽहमित्येकत्वविशिष्टार्थस्यानेकत्वविरोधेनानेकत्व दूषयिष्यामीति भावः । ' अक्खएभव ' अक्षयो भवान ? ' अव्वएभव ' अव्ययो भवान् , ' अवट्ठिए भव' अवस्थितो भवान् , आत्मान्त्य इति भवता स्वीक्रियते इतिपक्षत्रयाभिप्राय' ।

शब्दाभिधेय के विषय में भी जानना चाहिये । किन्तु विशेषता इस प्रकार है-मास तीन तरह के हैं-जैसे-कालमास अर्थमाप,धान्यमाष इन मे जो कालमास हैं वे १२बारह प्रकार है । जैसे श्रावण मास से लेकर आषाढ मास तक। ये सब अभक्ष्य हैं । हिरण्य मापा और सुवर्णमाषा के भेद से अर्थ माप दो प्रकार हैं । ये भी अभक्ष्य हैं । धान्यमाष के विषय मे धान्यसरिसव के समान प्ररूपणा जाननी चाहिये । अब स्थापत्या पुत्र अनगार से शुक परिव्राजक तत्त्वज्ञान की जिज्ञासा से प्रश्न करता है कि- (एगे भव दुवे भव अणेगे भव अक्खए भव अव्वए भव अवट्ठिए भव अणेगभूयभावभविए वि भव ?) आप एक कैसे हैं ? अर्थात् आत्मा में यदि एकत्व माना जावे तो श्रोत्रादि विज्ञानों एव अवयवो की अपेक्षा जो उसमे अनेकता की उपलब्धि होती है उस से उसमें एकता नही बनती है । यहा " भव " आत्मा का बोधक है

વિશેષાર્થી જાણવા જોઇએ ' માસ ' શબ્દનો અર્થ ત્રણ રીતે થાય છે જેમ કે કાળ માસ, (૧) અર્થ માષ, (૨) ધાન્ય માષ, (૩) કાળ વાચક માસ (મહિના) ના શ્રાવણ થી માંડીને આષાઢ સુધી બાર પ્રકારો છે આ બધા અભક્ષ્ય છે હિરણ્યમાષ અને સુવર્ણ માષ આ બને અર્થમાષના બે પ્રકારો છે એ પણ અભક્ષ્ય છે અનાજના રૂપમા જે ધાન્ય માષ (અડદ) છે તેના માટે ધાન્ય સરિસવની જેમજ નિરૂપણ સમજવુ જોઇએ શુક પરિવ્રાજક તત્ત્વજ્ઞાનની જિજ્ઞાસાથી તેમને પ્રશ્ન કરે છે કે (एगे भव दुवे भव अणेगे भव अक्खए भव अव्वए भव अवट्ठिए भव अणेगभूयभावभविए वि भव ?) તમે એક છો, એ કેવી રીતે ? એટલે કે આત્મા મા જો એકત્વ મનાય તો શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનો અને અવયવોની અપેક્ષાએ તેમા અનેકતા ઉપલબ્ધ હોય છે તેથી આત્મામા એકત્વ સિદ્ધ થતું નથી અહીં ' ભવ ' શબ્દ આત્મ

'अणेगभूयभावभविए वि भव' अनेक भूतभावभविकोऽपि भवान् ? अनेके अशा अवयवाभूता =अतीताः, भावा वर्तमाना भविका =भाविनश्च यस्य स तथा, आत्मा अनित्य इति पक्षो भवता स्वीक्रियत इत्यर्थः। अनयोर्नित्यानित्यक्षयोरेकत-

---

आत्मा एक है- इस सिद्धान्त को लेकर शुक स्थापत्या पुत्र अनगार से कहता है कि यह आत्मा का एकत्व पक्ष युक्ति सगत नही बैठता है कारण श्रोत्रादि इन्द्रियों से जो भिन्न २ विज्ञान उत्पन्न हुए हैं एव जो भिन्न अवयवों की उपलब्धि होती है उस से आत्मा में एकत्व बाधित होता है। इसी तरह यदि आत्मा में द्वित्व माना जावे तो यह भी पक्ष युक्ति युक्त प्रतीत नही होता है कारण " अह ' अह " इत्याकार-रूप जो आत्मा में एकत्व की प्रतीति होती है उससे एकत्व विशिष्ट अर्थ की ही प्रतीति होती है इसलिये इस प्रतीति से उस में द्वित्व (दो) का विरोध आता है। " अणेगे भव " आत्मा को अनेक भी इसी लिये मानना युक्ति सगत प्रतीति नही होती है कि उस में फिर ' अह ' अह ' इत्याकारक एकत्व प्रतीति नही बन सकती है। इस प्रतीति से उस में एकत्व (एकपन) का ही मान होता है अनेकता के साथ इस प्रतीति का विरोध है। इसलिये यह पक्ष भी दूषित ठहरता है। ' अक्ख-ए भव' आत्मा अक्षय है 'अव्वए भव' अव्यय है अवट्ठिए भव आत्मा

ને માટે છે આત્મા એક છે આ સિદ્ધાન્તને વિષે શુક પરિવ્રાજક સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારને કહે છે કે આત્મા વિષે એકત્વપક્ષ યુક્તિ સ ગત લાગતો નથી કારણ કે શ્રોત્ર વગેરે ઇન્દ્રિયો થી જે જુદી જુદી જાતના વિજ્ઞાનો ઉ પ ન્ન થયા છે અને જે જુદા જુદા અવયવોની ઉપલબ્ધિ થાય છે તેથી આત્મા મા એકત્વ બાધિત થાય છે આ રીતે જ જો આત્મામા દ્વિત્વ માનવામા આવે તો આ વાત પણ ઉચિત લાગતી નથી, કેમકે ' અહ ' ' અહ ' આ રીતે જે આત્મામા એકત્વની પ્રતીતિ થાય છે તેથી આત્મા એકત્વ વિશિષ્ટ છે એ અર્થ જ સ્પષ્ટ થાય છે આ રીને આત્મામા દ્વિત્વ વિષે પણ વાધો ઉભો થાય છે " અણેગે ભવ " આત્માને અનેક પણ માની ન રાકાય કેમકે તેમા પછી ' અહ ' ' અહ ' આ જાતની એકત્વની પ્રતીતિ સભવિત થઈ શકતી નથી એનાથી તેમા એકત્વની જ પ્રતીતિ થાય છે આ રીતે અનેકતા ની સાથે આ પ્રતીતિ નો વાધો ઉભો થાય છે આ પ્રમાણે આ પક્ષ પણ સદોષ જ કહેવાય (अक्खए भव) આત્મ અક્ષય છે (अव्वए भव) અવ્યય

रपक्षपरिग्रहोऽन्यतर दूषयिष्यामीत्याशयः । स्थापत्यापुत्रो वदति-'सुया' इत्यादि । हे शुक ! एकोऽप्यहम्, द्वावप्यहम्, यावत्-अनेकभूतभावभविकोऽप्यहम्। पुनः शुकः पृच्छति-' से केणट्ठेण भते !' इत्यादि । तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते -एकोऽप्यह यावत्-अनेकभूतभावभविकोऽप्यहम् ?

अवस्थित है, नित्य है ' अणेगभूयभावभविए वि अव ' अनेक भूत, भाव और भविक पर्यायों वाला है अनित्य है भूत शब्द का अर्थ अतीत, भाव का अर्थ वर्तमान एव भविक का अर्थ भविष्यत-कालीन है-अर्थात् आत्मा के भूत पर्याय रूप अश वर्तमान पर्याय रूप अश तथा भविष्यत काल में होने वाले पर्याय रूप अश उस के अवयव रूप है-। इससे- आत्मा में अनित्यता सिद्ध होती है । इस तरह शुक ने स्थापत्या पुत्र अनगार के इन समस्त पक्षों को दूषित किया । नित्य पक्ष अनित्य पक्ष साथ विरुद्ध पड़ता है और अनित्य पक्ष नित्य पक्ष के साथ विरुद्ध पडता है इत्यादि । अब स्थापत्यापुत्र अनगार स्याद्वाद सिद्धान्त के अनुसार उत्तर देते हैं । (सुया एगे वि अह दुवेवि अह जाव अणेगभूयभाव भविएवि अह) हे शुक ! मैं एक भी हूँ, दो भी हूँ, यावत् अनेक भूत भाव भविक पर्यायों वाला भी हूँ (से केण ट्ठेण भते एव वुच्चइ, एगे वि अह जाव अणेगभूयभावभविए वि

છે (अवट्ठिए भव) આત્મા અવસ્થિત છે નિત્ય છે, (अणेगभूयभावभविए वि भव) અનેક ભૂત, ભાવ અને ભાવિક પર્યાય વાળો છે અનિત્ય છે, ભૂત શબ્દનો અર્થ ભૂતકાળ છે ભાવ શબ્દનો અર્થ વર્તમાનકાળ અને ભાવિક શબ્દનો અર્થ ભવિષ્ય કાળ થાય છે, એટલે કે આત્માના ભૂત પર્યાય અશ, વર્તમાન પર્યાય અશ તેમજ ભવિષ્યમા થનારા પર્યાય રૂપ અશ તેના (આત્માના) અવયવ રૂપ છે એથી આત્મમા અનિત્યતા સિદ્ધ થાય છે આ રીતે શુક પરિવ્રાજકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારના બધા પક્ષોને સદોષ સિદ્ધ કર્યા, આત્મા વિષે નિત્ય અને અનિત્ય આમ બને પક્ષો એક બીજાથી વિરૂદ્ધ છે આ પ્રમાણે જ અનિત્યપક્ષ નિત્યપક્ષ ની સાથે વિરુદ્ધ છે સ્થપત્યાપુત્ર અનગાર સ્યાદ્વાદ સિદ્ધાન્ત મુજબ શુકપરિવ્રાજકને જવાબ આપતા કહે છે—(सुया एगे वि अह दुवेवि अह जाव अणेगभूयभाविभाविएवि अह) હે શુક ! હુ એક પણ છુ, હુ બે પણ છુ, અને હુ અનેક ભૂત, ભાવ તેમજ ભવિક પર્યાય વાળો પણ છુ (से केणट्ठेण भते एव वुच्चइ, एगे वि अह जाव अणेगभूय भावभविए वि अह) શુકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને કહ્યુ કે હે ભદન્ત !

अथ स्थापत्यापुत्र स्याद्वादमवलम्ब्योत्तर करोति 'जण्ण सुया !' इत्यादि। यत् खलु हे शुक ! ' दव्वट्ठयाए एगे अह ' द्रव्यार्थतया एकोऽहम् । द्रव्यत्वेनामेकोऽस्मि जीवद्रव्यस्य एकत्वात्, न तु प्रदेशाभिप्रायेण ।

' नाणदसणट्ठयाए दुवेवि अह ' ज्ञानदर्शनार्थतया द्वावप्यहम्। ज्ञानदर्शनार्थद्वयाभिप्रायेण द्विस्वभावकोऽहमस्मीत्यर्थः । द्वावप्यहमित्यनेन अनेकोऽपि भवानितिप्रश्नस्याप्युत्तर प्रदत्तम्, उक्तरीत्या द्विस्वभावकत्वाम् श्रोत्रादिविज्ञानानामवयवानां चात्मनोऽनेकत्वाच्च । यथा एको देवदत्त एकस्मिन्नेवकाले पितृत्वपुत्रत्वभ्रातृत्वादीननेकान् स्वभावान् प्राप्नोति ।

अह) सो भदत ! आप ऐसा किस अर्थ को लेकर कह रहे है कि मैं एक भी हूँ यावत् अनेक भूत भाव भविक पर्यायो वाला भी हूँ हे शुक ! ऐसा जो मैं कह रहा हूँ सो किस अर्थ की अपेक्षा को लेकर कह रहा हूँ यह सुनो (जण्ण सुया ! दव्वट्ठयाए एगे अह णाणदसणट्ठयाए, दुवेवि अह, पएसट्ठयाए, अक्खए वि अह अव्वए वि अह अवट्ठिए वि अह उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अह) मैं एक हूँ ऐसा जो मेरा कहना है वह हे शुक ! द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा है। (द्रव्यार्थिक नय का विषय एक अखण्ड द्रव्य होता है। अत उस दृष्टि से मै द्रव्य को एक होने की वजह से एक हूँ। प्रदेशों की अपेक्षा से एक नही हूँ। ज्ञान, दर्शन की अपेक्षा से मैं दो रूप भी हूँ दो स्वभाववाला भी हूँ। आत्माका लक्षण उपयोग है। यह उपयोग ज्ञान और दर्शन की अपेक्षा से दो प्रकार का है। इस दृष्टि से मे एक होता हुआ भी दो रूप हूँ। इस कथन से मै अनेक भी हूँ इस प्रश्न

તમે કયા આધારે કહી રહ્યા છો કે હુ એક પણ છુ અનેક પણ છુ અને હુ અનેક ભૂત, ભાવ અને ભવિક પર્યાય વાળો પણ છુ ? સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર શુક પરિવ્રાજક ને જવાબ આપતા કહેવા લાગ્યા કે—(जण्णं सुया ! दव्वट्ठयाए एगे अह णाणदसणट्ठयाए दुवेवि अह पएसट्ठयाए अक्खए वि अह अव्वए वि अह अवट्ठिए वि अह उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए विअह) હે શુક ! "હુ એક છુ" મારૂ આ કહેવુ દ્રવ્યાર્થિક નયની અપેક્ષાઓથી છે દ્રવ્યાર્થિક નયનો વિષય એક અખડ દ્રવ્ય હોય છે, દ્રવ્ય એક હોવાથી, આ દૃષ્ટિએ હુ એક છુ, પ્રદેશોની અપેક્ષાથી હુ એક નથી જ્ઞાન દર્શનની દૃષ્ટિએ મારા બે રૂપ પણ છે હુ બે જાતના સ્વભાવવાળો પણ છુ આત્માનુ લક્ષણ ઉપયોગ છે જ્ઞાન અને દર્શનની દૃષ્ટિએ ઉપયોગના બે પ્રકાર થાય છે આમ હુ એક રોવા છતા પણ બે રૂપ વાળોછુ આથી ' હુ

'पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं अव्वए वि अहं अवट्ठिए वि अहं' प्रदेशार्थतया-अक्षयोऽप्यहम् असंख्यातानामात्मप्रदेशानामेकस्यापि केनापि प्रकारेण क्षयाऽभावात्। अव्ययोऽप्यहम्-केनापि प्रकारेणैकस्याप्यात्मप्रदेशस्य नाशाभावात्।

का भी उत्तर हो जाता है। इस तरहसे मानने पर भी वहा अहं प्रत्यय होने में कोई बाधा नही आती है। और उक्तरीति से आत्मा में द्वित्व भावना आने पर उसमें श्रोत्रादि विज्ञानों की तथा अवयवो की अनेकता भी विरुद्ध नही पड़ सकती है। यह विरुद्धता तो आत्मा में एक स्वभावता मानने पर ही आती है। मूल में एक होने पर भी अनेक स्वभाव की मान्यता बाधित नही होती है। जैसे देवदत्त एक पदार्थ में पितृत्व, पुत्रत्व, भ्रातृत्व आदि अनेक स्वभाव एक ही काल में होते हुए प्रतीति होते हैं। एक आत्मा के असंख्यात प्रदेश शास्त्रकारों ने कहे हैं। इन में से कोई भी ऐसा प्रदेश नही है जिसका किसी भी प्रकार से क्षय हो सके अतः इस प्रदेश की अपेक्षा से मैं आत्मा अक्षय हूँ। इसी तरह एक भी आत्मा के प्रदेश का किसी भी तरह से नाश नही हो सकने के कारण मैं आत्मा अव्यय हूँ। अव्यय शब्द का जो किन्ही २ ने ऐसा अर्थ किया है कि कितनेक प्रदेशों का व्यय नही होता है सो वह आगम से विरुद्ध पड़ता है कारण इस

અનેક છુ' એ પ્રશ્નનો ઉત્તર પણ પુષ્ટ થાય છે આ માન્યતાથી ત્યા 'અહ ની પ્રતીતિમા કોઇપિણ જાતનો વાધો જણાતો નથી અને આ રીતે આત્મામા દ્વિત્વભાવની સ્થાપન થી તેમા શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનોની તેમજ અવયવોની અને કતામા પણ કોઇ પણ જાતનો વિરોધ જણાતો નથી આત્મામા એક સ્વભાવતા માનવામાજ આ વાધો ઊભો થાય છે આ પ્રમાણે મૂળ રૂપે એક હોવા છતા પણ અનેક સ્વભાવની માન્યતા કોઇ પણ રીતે બાધિત થતી નથી જેમકે દેવદત્ત આ એક પદાર્થમા પિતૃત્વ પુત્રત્વ ભ્રાતૃત્વ વગેરે ઘણા સ્વભાવોની પ્રતીતિ એકજ કાળમા થાય છે એક આત્માના અસંખ્યાત પ્રદેશો શાસ્ત્રકારો એ કહ્યા છે આ અસંખ્યાત પ્રદેશોમાથી કોઇ પણ એવો પ્રદેશ નથી કે જેનો કોઇપણ રીતે નાશ થઇ શકે એથી આ પ્રદેશની અપેક્ષાએ હું 'આત્મા' અક્ષયછુ આ રીતે આત્માના એક પણ પ્રદેશનો ગમેતે સંજોગોમા કોઇપણ રીતે નાશ નહિ થવાથી હું 'આત્મા અવ્યયછુ અવ્યય શબ્દનો અર્થ' કોઇ એ એવી રીતે કર્યો છે કે 'કેટલાક પ્રદેશો નો વ્યય થતો ન હોય તે અવ્યય' તો આ અર્થ આગમથી વિરુદ્ધ છે કારણકે આ અર્થને માનવાથી 'કેટલાક પ્રદેશોનો નાશ થાય છે' આવો અર્થ પણ નીકળે છે 'ત્રિકાળમા

यत्तु-अव्ययः क्रियतामपि च व्ययाभावादित्युक्त, तदागमविरुद्धम्-क्रियतामपीत्युक्त्या क्रियताना नाशोभवतीत्यर्थस्यापि बोधापत्तिसभवात्। अवस्थितोऽप्यहम्-असख्यातप्रदेशवत्त्व कदाचिदपि न विनश्यति तेन मम स्वरूपमविचल सदाऽवस्थायीत्यर्थः। तस्मान्नित्यस्वरूपोऽप्यहमस्मीति भावः। शिष्यबुद्धिनिर्मलीकरणार्थमेकस्मिन्नेवार्थेऽनेकपर्यायशब्दाना प्रयोग'।

' उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अह ' अनेकभूतभावभविकोऽप्यहम्। अनेके विषयभेदाद् बहुविधा उपयोगा भूता:=अतीताः, भवना' वर्तमाना, स्तथा भविकाः=भाविनश्च यस्य स तथा, अतीतकाले बहव -उपयोगा' श्रोत्रादि

प्रकार के कथन में " कितनेक प्रदेशों का नाश होता है " ऐसा अर्थ भी हो जाता है। असख्यात प्रदेशों से युक्त पना आत्मा में त्रिकाल में भी नष्ट नही होता है अत यह असख्यात प्रदेशों से युक्त रहने रूप जो आत्मा का स्वरूप है उससे यह आत्मा अविचल है सदा अवस्थित है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मै नित्य स्वरूप वाला हूँ। मै अक्षय हूँ, अव्यय हूँ, अवस्थित हूँ ऐसे जो ये सब पर्याय शब्द एक ही आत्मा रूप अर्थ में प्रयुक्त किये गये हैं वे शिष्य की बुद्धि को निर्मल करने के लिये प्रयुक्त हुए है ऐसा जानना चाहिये। " उव ओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अह " यहा अनेक शब्द विषय भेद की अपेक्षा अनेकविध उपयोगों का वाचक हैं ये अनेकविध उपयोग जिस के पहिले हो चुके हैं तथा वर्तमान मे जिस में हो रहे है और भविष्य में जिस में होंगे अर्थात् अतीतकाल में श्रोत्रादि विज्ञान रूप उपयोग जिस में उत्पन्न हुए है, नष्ट हुए हैं, वर्तमान काल मे भी जिस में

પણ આત્મામા અસ ખ્યાત પ્રદેશોનો યુક્ત ભાવ નષ્ટ થતો નથી એટલા માટે અસ ખ્યાત પ્રદેશોથી યુક્ત રહેનારૂ આત્માનુ સ્વરૂપ છે તેનાથી આ આત્મા અવિચળ છે હુ મેરા અવસ્થિત છે એનાથી એ સ્પષ્ટ થાય છે કે હુ નિત્ય સ્વરૂપ વાળો છુ હુ અક્ષય છુ હુ અવ્યય છુ હુ અવસ્થિત છુ. અને આ બધા એક અર્થ વાચક પર્યાય શબ્દો આત્મા રૂપ અર્થમા પ્રયુક્ત કરવામા આવ્યા છે, તે શિષ્યની બુદ્ધિને નિર્મળ બનાવવા માટેજ, આમ સમજી લેવુ જોઇએ (उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अह) અહીં જે અનેક શબ્દ છે તે વિષય ભેદની અપેક્ષાથી અનેક વિધ ઉપયોગોનો વાચક છે આ અનેકવિધ ઉપયોગો જેના પહેલા થઈ ગયા છે, વર્તમાન કાળમા જેમા થઈ રહ્યા છે અને ભવિષ્યમા જેમા થશે એટલે કે શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાન રૂપ જેમા ભૂતકાળમા ઉત્પન્ન થયા છે, વર્તમાન કાળમા પણ જેમા

विज्ञानरूपा उत्पन्ना विनष्टाश्च वर्तमानकालेऽपि उत्पद्यन्ते विनश्यन्ति च, तथा भविष्यत् काले उत्पत्स्यन्त विनशिष्यन्ति च, त उपयोगा आत्मनः=कथञ्चिदभिन्नास्तेनानेकभूतभावभविकोऽप्यहमस्मीत्येवमनित्यपक्षोपि मम दोषाय नास्तीत्यर्थः। यत्तु-अत्रभावाः सत्ताः परिणामा वा इति व्याख्यात तदयुक्तम्-

अतीताना भाविना च भावानामनेकान्वयितयाऽतीतार्थकभूतशब्दात् प्रागेव प्रयोक्तव्यस्य भावशब्दस्य तदनन्तर प्रयोगो न सगच्छते अपि च-तन्मतेऽतीत भविकाना भावान्वयितया ततः पूर्वत्र वा सहैव प्रयोक्तव्ययोरतीतभविकशब्द-

उत्पन्न होते हैं नष्ट होते हैं तथा भविष्यत् काल में जिस में उत्पन्न होंगे और नष्ट होंगे वे उपयोग आत्मा से कथंचित् अभिन्न हैं। अतः इस उपयोग की अपेक्षा मैं आत्मा अनेक भूत, भाव, भविक वाला भी हूँ इस तरह आत्मा में अनित्यता भी आ जाती है सो यह अनित्यता का पक्ष भी हमारे लिये दोषावह नही होता है। यहा पर जो किन्ही २ ने भाव शब्द का अर्थ सत्ता या परिणाम इस रूप से किया है वह ठीक नहीं है। भाव शब्द यहा वर्तमान कालार्थ का ही वाचक है सत्ता या परिणाम का वाचक नही। कारण जो अतीत और भावी भाव होते है वे अनेकार्थान्वयी होते हैं इसलिये अतितार्थक भूत शब्द से पहिले ही प्रयोक्तव्य भावशब्द का उस के बाद प्रयोग करना सगत प्रतीत नही होता।

अपिच- सत्ता या परिणामवादियों के मत मे अतीत और भविष्यत् भावों को भावान्वयी होने के कारण अतीत और भविष्यत्

ઉત્પન્ન થયા છે નષ્ટ થયા છે તેમજ ભવિષ્ય કાળમા પણ જેમા ઉત્પન્ન થશે અને નાશ પામશે તે ઉપયોગો આત્માથી કથચિત અભિન્ન છે એટલા માટે આ 'ઉપયોગની અપેક્ષાએ હુ ' આત્મા ' ઘણા ભૂત, ભાવ અને ભાવિક વાળો પણ છુ આ રીતે આત્મામા અનિત્યતા પણ આવી જાય છે તો આ અનિત્ય ભાવનો પક્ષ પણ અમારા માટે સદોષ કહી શકાય નહિ કેટલાક ભાવ શબ્દનો અર્થ સત્તા કે પરિણામ પણ કરે છે તે ઉચિત નથી અહી ભાવ શબ્દ ફક્ત વર્તમાન કાળનો વાચક છે સત્તા કે પરિણામ અર્થનો વાચક નથી કારણ કે જે અતીત અને ભાવી ભાવો હોય છે તે અનેકાર્થાન્વયી હોય છે, અથી અતીતાર્થક ભૂત શબ્દની પહેલા જ પ્રયુક્ત કરવામા આવેલા ભાવ શબ્દનો તેના પછી પ્રયોગ કરવો ઉચિત લાગતો નથી વળી સત્તા કે પરિણામ વાદીઓના મતે અતીત અને ભવિષ્ય ભાવો ભાવાન્વયી હોવા બદલ

योर्भावशब्दव्यवधानेन प्रयोगो न सगच्छते, तस्माद् भावशब्दोऽत्र वर्तमानकालार्थपर इत्येव भगवदाशयोऽवगम्यते ।

अत्र:=अस्मिन् स्थाने स्थापत्यापुत्रस्य वचनानि श्रुत्वा स शुकः सबुद्धः सम्यग्बोध प्राप्तः सन् स्थापत्यापुत्रमनगार वन्दते स्तौति, नमस्यति प्रणमति; वदित्वा नत्वा चैवमवादीत् हे भदन्त । इच्छामि खलु युष्माकमन्तिके केवलिप्रज्ञप्त धर्मं निशामयतु=श्रोतुम् ।

(भूत, भविक) ये दोनों शब्द भाव के पहिले या भाव के बाद साथ २ प्रयुक्त होने चाहिये भाव शब्द से व्यवहित होकर प्रयुक्त नही होने चाहिये परन्तु यहां तो वे दोनों शब्द भाव शब्द से व्यवहित् होकर ही प्रयुक्त हुए है इसलिये भावशब्द यहा वर्तमान कालार्थ परक है ऐसा ही भगवान् का आशय ज्ञात होता है । (एत्थ ण से सुए सबुद्धे थावच्चा पुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, एव वयासी, इच्छामिणं भते ! तुब्भे अतिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामित्तए धम्मकहा भाणियव्वा) इस स्थान में स्थापत्यापुत्र अनगार के वचनों को सुनकर वह शुक परिव्राजक सम्यक् बोध को प्राप्त हो गया और उसने फिर उन स्थापत्यापुत्र अनगार को वदना की स्तुति की उन्हे नमस्कार किया । वदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगा हे भदत ! मैं आप से केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनना चाहता हूँ । शुक परिव्राजक की इस प्रकार प्रार्थना सुन कर स्थापत्या पुत्र ने उसे धर्म

અતીત અને ભવિષ્ય (ભૂત, ભાવિ૬) આ બને શબ્દો ભાવ પહેલા કે ભાવ પછી સાથે સાથે પ્રયુક્ત થવા જોઇએ ભાવ શબ્દથી વ્યવહિત (યુક્ત) થઇને પ્રયુક્ત થવા ન જોઇએ પણ અહી તો તે બને શબ્દો ભાવ શબ્દની વ્યવહિત (યુક્ત) થઇને જ પ્રયુક્ત થયા છે એથી અહી ભાવ શબ્દ વર્તમાન કાળનો અર્થ બતાવે છે ભગવાનનો અભિપ્રાય એવોજ જણાય છે (एत्थण से सुए सबुद्धे थावच्चापुत्त वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी इच्छामिण भते ! तुब्भे अतिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामित्तए,धम्मकहा भाणियव्वा) આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારના વચનો સાભળીને શુક પરિવ્રાજકને સમ્યકત્વબોધ થયો અને તેણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને વદન કર્યા સ્તુતિકરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યો વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેમને કહ્યુ કે હે ભદત ! હુ તમારા શ્રી મુખથી કેવલી પ્રજપ્ત ધર્મ ને સાભળવાની ઈચ્છા રાખુ છુ શુક પરિવ્રાજક ની આવી વિનતી સાભળીને સ્થાપત્યાપુત્રે તેને ધર્મકથા સભળાવી કેથા

विज्ञानरूपा उत्पन्ना विनष्टाश्च वर्तमानकालेऽपि उत्पद्यन्ते विनश्यन्ति च, तथा भविष्यत् काले उत्पत्स्यन्त विनशिष्यन्ति च, त उपयोगा आत्मनः=कथञ्चिदभिन्ना स्तेनानेकभूतभावभविकोऽप्यहमस्मीत्येवमनित्यपक्षोपि मम दोषाय नास्तीत्यर्थः। यत्तु-अत्रभावा. सत्ताः परिणामा वा इति व्याख्यात तदयुक्तम्-

अतीताना भाविना च भावानामनेकान्वयितयाऽतीतार्थकभूतशब्दात् प्रागेव मयोक्तव्यस्य भावशब्दस्य तदनन्तर मयोगो न सगच्छते अपि च-तन्मतेऽतीत भविकाना भावान्वयितया ततः पूर्वत्र वा सहैव प्रयोक्तव्ययोरतीतभविकशब्द-

उत्पन्न होते हैं नष्ट होते हैं तथा भविष्यत् काल में जिस में उत्पन्न होंगे और नष्ट होंगे वे उपयोग आत्मा से कथचित् अभिन्न हैं। अतः इस उपयोग की अपेक्षा मैं आत्मा अनेक भूत, भाव, भविक वाला भी हूँ इस तरह आत्मा में अनित्यता भी आ जाती है सो यह अनित्यता का पक्ष भी हमारे लिये दोषावह नही होता है। यहा पर जो किन्ही २ ने भाव शब्द का अर्थ सत्ता या परिणाम इस रूप से किया है वह ठीक नहीं है। भाव शब्द यहा वर्तमान कालार्थ का ही वाचक है सत्ता या परिणाम का वाचक नही। कारण जो अतीत और भावी भाव होते हैं वे अनेकार्थान्वयी होते हैं इसलिये अतितार्थक भूत शब्द से पहिले ही प्रयोक्तव्य भावशब्द का उस के बाद प्रयोग करना सगत प्रतीत नही होता।

अपिच- सत्ता या परिणामवादियों के मत मे अतीत और भविष्यत भावों को भावान्वयी होने के कारण अतीत और भविष्यत्

ઉત્પન્ન થયા છે નષ્ટ થયા છે તેમજ ભવિષ્ય કાળમા પણ જેમા ઉત્પન્ન થશે અને નાશ પામશે તે ઉપયોગો આત્માથી કથચિત અભિન્ન છે એટલા માટે આ ઉપયોગની અપેક્ષાએ હુ 'આત્મા' ઘણા ભૂત, ભાવ અને ભાવિક વાળો પણ છુ આ રીતે આત્મામા અનિત્યતા પણ આવી જાય છે તો આ અનિત્ય ભાવનો પક્ષ પણ અમારા માટે સદોષ કહી શકાય નહિ કેટલાક ભાવ શબ્દનો અર્થ સત્તા કે પરિણામ પણ કરે છે તે ઉચિત નથી અહી ભાવ શબ્દ ફક્ત વર્તમાન કાળનો વાચક છે સત્તા કે પરિણામ અર્થનો વાચક નથી કારણ કે જે અતીત અને ભાવી ભાવો હોય છે તે અનેકાર્થાન્વયી હોય છે, અથી અતીતાર્થક ભૂત શબ્દની પહેલા જ પ્રયુક્ત કરવામા આવેલા ભાવ શબ્દનો તેના પછી પ્રયોગ કરવો ઉચિત લાગતો નથી વળી સત્તા કે પરિણામ વાદીઓના મતે અતીત અને ભવિષ્ય ભાવો ભાવાન્વયી હોવા બદલ

' तएणसे इत्यादि. ।

टीका—ततस्तदनन्तर खलु स शुकः परिव्राजक स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य एव वक्ष्यमाण प्राकारेणावादीत्-इच्छामि खलु भदन्त ! परिव्राजक-सहस्रेण सार्धं सपरिवृतो देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुम् । भवतां समीपेऽहं परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्चनेन मुण्डो भूत्वा दीक्षा ग्रहीतुमिच्छामीत्यर्थः । ततः स्थापत्यापुत्रोऽवादीत्-हे देवानुप्रिय यथासुख यावत्= ईप्सित कार्ये दीक्षाग्रहणरूपे विलम्ब मा कुरु, इत्येवमुक्तः सन् शुकः परिव्राजकः यावत्

तएण से सुए परिव्वायए इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्वायए) परिव्राजकने (थावच्चापुत्तस्स अतिए धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगार के मुखसे श्रुत चारित्र रूप धर्मका श्रवण कर (णिसम्म) उसे हृदय मे अवधाँरित कर (एव वयासी) उन से इस प्रकार कहा— (इच्छामिणं भंते । परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदन्त । मैं आप देवानुप्रिय के पास इन १ एक हजार परिव्रज्को के साथ २ मुडित होकर दीक्षित होना चाहता हूँ (अहासुह जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदडय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजक की इस भावना को जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उससे कहा हे देवाणुप्रिय । तुम्हे जैसे सुख हो वैसा करो— इच्छित कार्य जो दीक्षा ग्रहण है उसमें तुम

(तएण से सुए परिव्वायए इत्यादि)

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યાર બાદ (से सुए) શુક (परिव्वायए) પરિવ્રાજકે (थावच्चा पुत्तस्स अतिए धम्म सोच्चा) સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારના શ્રી મુખ થી શ્રુત્ર ચારિત્ર રૂપ ધર્મનુ શ્રવણ કરીને (णिसम्म) તેને સારી પેઠે હૃદયમા અવ ધારિત કરીને (एव वयासी) તેમને આ રીતે કહ્યુ- (इच्छामि ण भंते ! परिव्वायगसाहस्सेण सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्व इत्तए) હે ભદંત ! તમારી પાસેથી એક હજાર પરિવ્રાજકોની સાથે હુ મુડિત થઇને દીક્ષિત થવા ચાહું છુ (अहासुह जाव उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए तिडडय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ एडित्ता सयमेव सिह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) શુક પરિવ્રાજકની દીક્ષિત થવાની ઇચ્છા સાભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેમને કહ્યુ 'હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમ ગમે તેમ કરો. ઇચ્છિત કાર્યમા એટલે કે દીક્ષાગ્રહણ કરવામા મોડુ કરો નહિ આ રીતે

अथ स्थापत्यापुत्रो धर्मकथा कथयतिस्म । ननु कीदृशी धर्मकथा भगवतोपदिष्टेति जिज्ञासायामाह-' धम्मकहा भाणियव्वा ' इति । धर्मकथा भणितव्या औपपातिकसूत्रोक्ता धर्मकथाऽत्र वाच्या सा चोपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसञ्जीवनीटीकाया मया विस्तरतो व्याख्याता ततोऽवगन्तव्या ॥ २४ ॥

मूलम्-तएणं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्म सोच्चा णिसम्म एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए, अहासुहं जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ, उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए सामाइयमाइयाइं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ । तएणं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्स सीसत्ताए वियरइ । तएणं से थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइय ॥ सू० २५ ॥

कथा सुनाई । किस प्रकार की धर्मकथा स्थापत्या पुत्र ने शुक परिव्राजक को सुनाई सो यह कथा औपपातिक सूत्र में वर्णित हुई है । वही कथा यह समझनी चाहिये । उपासकदशांगसूत्र की जो अगारधर्मसञ्जीवनी टीका है उसमें मैंने इस कथा को विस्तार से व्याख्यात किया है । सूत्र ॥ २४ ॥

પત્યાપુત્ર અનગારે જે ધર્મકથા શુક પરિવ્રાજકને કહી સંભળાવી તેનું વર્ણન "ઔપપાતિક સૂત્ર" માં કરવામાં આવ્યું છે જિજ્ઞાસુઓએ તે ત્યાંથી જાણી લેવી જોઇએ " ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર " ની અગારધર્મસંજીવની ટીકામાં પણ મેં આ કથાનું સવિસ્તર વર્ણન કર્યું છે ॥ સૂત્ર ' ૨૪ " ॥

' तएणसे इत्यादि. ।

टीका—ततस्तदनन्तर खलु स शुकः परिव्राजक स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य एव वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्-इच्छामि खलु भदन्त ! परिव्राजक-सहस्रेण सार्धं सपरिवृतो देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुम् । भवतां समीपेऽह परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्चनेन मुण्डो भूत्वा दीक्षा ग्रहीतुमिच्छा मीत्यर्थः । ततः स्थापत्यापुत्रोऽवादीत्-हे देवानुप्रिय यथासुख यावत्= ईप्सित कार्ये दीक्षाग्रहणरूपे विलम्ब मा कुरु, इत्येवमुक्त' सन् शुकः परिव्राजकः यावत्

तएण से सुए परिव्वायए इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्वायए) परिव्राजकने (थावच्चापुत्तस्स अतिए धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगार के मुखसे श्रुत चारित्र रूप धर्मका श्रवण कर (णिसम्म) उसे हृदय मे अवधाँरित कर (एव वयासी) उन से इस प्रकार कहा— (इच्छामिणं भते । परिव्वायगसहस्से ण सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदन्त । मैं आप देवानुप्रिय के पास इन १ एक हजार परिव्रजको के साथ २ मुडित होकर दीक्षित होना चाहता हूँ (अहासुह जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदण्डय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजक की इस भावना को जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उससे कहा हे देवाणुप्रिय । तुम्हे जैसे सुख हो वैसा करो—इच्छित कार्य जो दीक्षा ग्रहण है उसमें तुम

(तएण से सुए परिव्वायए इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त्यार माद (से सुए) शुक (परिव्वायए) परिव्राजके (थावच्चापुत्तस्स अतिए धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगारना श्री मुख थी श्रुत चारित्र રૂપ ધર્મનુ શ્રવણ કરીને (णिसम्म) तेने सारी पेठे हृदयमा अवधारित करीने (एव वयासी) तेमने आ रीते कहुं- (इच्छामि ण भते ! परिव्वायगसाहस्सेण सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदत ! तमारी पासेथी એક હજાર પરિવ્રાજકોની સાથે હું મુડિત થઇને દીક્ષિત થવા ચાહું છું (अहासुह जाव उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए तिदण्डय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ एडित्ता सयमेव सिह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजकनी दीक्षित थवानी इच्छा સાભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેમને કહ્યું 'હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમ ગમે તેમ કરો ઇચ્છિત કાર્યમા એટલે કે દીક્ષાગ્રહણ કરવામા મોડુ કરો નહિ આ રીતે

अथ स्थापत्यापुत्रो धर्मकथा कथयतिस्म । ननु कीदृशी धर्मकथा भगवतोपदिष्टेति जिज्ञासायामाह-' धम्मकहा भाणियव्वा ' इति । धर्मकथा भणितव्या औपपातिकसूत्रोक्ता धर्मकथाऽत्र वाच्या सा चोपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसञ्जीवनीटीकाया मया विस्तरतो व्याख्याता ततोऽवगन्तव्या ॥ २४ ॥

मूलम्-तएणं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए, अहासुहं जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ, उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए सामाइयमाइयाइं चउदसपुव्वाइं अहिज्जइ । तएणं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरइ । तएणं से थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमइ,' पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू० २५ ॥

कथा सुनाई । किस प्रकार की धर्मकथा स्थापत्या पुत्र ने शुक परिव्राजक को सुनाई सो यह कथा औपपातिक सूत्र में वर्णित हुई है । वही कथा यहां समझनी चाहिये । उपासकदशांगसूत्र की जो अगारधर्मसञ्जीवनी टीका है उसमें मैंने इस कथा को विस्तार से व्याख्यात किया है । सूत्र ॥ २४ ॥

પત્યાપુત્ર અનગારે જે ધર્મકથા શુક પરિવ્રાજકને કહી સંભળાવી તેનું વર્ણન "ઔપપાતિક સૂત્ર" માં કરવામાં આવ્યું છે જિજ્ઞાસુઓએ તે ત્યાંથી જાણી લેવી જોઇએ " ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર " ની અગારધર્મસંજીવની ટીકામાં પણ મે આ કથાનું સવિસ્તર વર્ણન કર્યું છે ॥ સૂત્ર ' ૨૪ " ॥

' तएणसे इत्यादि. ।

टीका—ततस्तदनन्तर खलु स शुकः परिव्राजक स्थापत्यापुत्रस्यान्तिकं धर्मं श्रुत्वा निशम्य एव वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्—इच्छामि खलु भदन्त ! परिव्राजकसहस्रेण सार्धं सपरिवृतो देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुम् । तत्र समीपेऽहं परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्चनेन मुण्डो भूत्वा दीक्षा ग्रहणं कर्तुमित्यर्थः । ततः स्थापत्यापुत्रोऽवादीत्—हे देवानुप्रिय यथासुखं मा प्रतिबन्धं कार्ये दीक्षाग्रहणरूपे विलम्ब मा कुरु, इत्येवमुक्तः स शुकः परिव्राजक

तएणं से सुए परिव्वायए इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सुए) उस शुक परिव्राजकने (थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा) स्थापत्यापुत्र के मुखसे श्रुत चारित्र रूप धर्मका श्रवण कर (निसम्म) उसे हृदय में अवधारित कर (एवं वयासी) उन से इस प्रकार कहा भंते । परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदन्त । मैं आप देवानुप्रिय के हजार परिव्रजको के साथ २ मुण्डित होकर (अहासुहं जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एगंते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ, जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजक जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उत्तर जैसे सुख हो वैसा करो—इत्यादि

(तएणं से सुए परिव्वायए इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्यार बाद (से सुए
पुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा)
चारित्र રૂપ ધર્મનું શ્રવણ
ધારિત કરીને (एवं वयासी
परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं
इत्तए) હે ભદંત ! તમા
થઇને દીક્ષિત થવા
तिदंडयं जाव धाउरत्त
जेणेव थावच्चापुत्ते
સાથળીને સ્થાપ
તેમ કરો ઇત્યાદિ

ની અહાર થઇ
૨૫ ॥

उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गत्वा त्रिदण्डिका यावत् त्रिदण्डादीनि सप्तोपकरणानि यावत् गैरिकधातुरक्तानि वस्त्राणि चैकान्ते एकान्तप्रदेशे ' एडेइ ' एडति=त्यजति एडित्ता=त्यक्त्वा ' सयमेव सिहं उप्पाडेइ ' स्वयमेव स्वहस्तेनैव शिखां जटारूपात् उत्पाटयति=लुञ्चति ।

यत्तु-दीपिकाकारेण कस्तूरचन्द्रगणिना-यतिना ' सयमेव वसहिं उप्पाडेइ ' इति स्वकपोलकल्पित मूल प्रदर्श्य, दीपिकायां-'स्वयमेव=स्वहस्ताभ्यामेव परिव्राजकवसतिः त्रिदण्डिकाना निवासार्हं यन्मठ तामुत्पाट्यतिस्म समूल विनाशितवानित्यर्थः " इत्युक्त, तदसमीचनम्-हस्तलिखितेषु मुद्रितेषु च प्राचीनपुस्तकेषु तदुक्तमूलपाठानवलोकनेन, सर्वत्र 'सिहं' इत्येव पाठस्य दर्शनेन च उत्सूत्र म-

---

विलम्ब मत करो-इस प्रकार स्थापत्यापुत्र के कहने पर उस शुक परिव्राजकने ईशान कोण मे जाकर अपने त्रिदडिका आदि सात उपकरणो को तथा गैरिक धातु से रक्त हुए वस्त्रो को एकान्त स्थान मे रख दिया उन्हें छोड दिया—और छोडकरफिर अपने आप अपनी जटारूप शिखा का उत्पाटन किया। दीपिका कार कस्तूर चन्द्र जी गणिने (सयमेव वसहिं उप्पाडेइ " एसा कपोलकल्पित मूल पाठ दिखा कर दीपिका में जो ऐसा लिखा है कि उसने अपने हाथो से त्रिदण्डिकों के निवास योग्य मठ को समूल उखाड डाला " यह ठीक नही है कारण ऐसा पाठ हस्त लिखित एव मुद्रित हुई प्राचीन प्रतियो मे देखने में नही आता है। वहां तो "सिहं" यही पाठ लिखा हुआ मिलता है। इस तरह से अपनी कपोलकल्पना से पाठ को कल्पित कर रखना यह उत्सूत्र प्ररूपणा है अपनी शिखा को उत्पाटित कर—लुञ्चितकर-वह शुक परिव्राजक

સ્થાપત્યા પુત્રની આજ્ઞા સાભળીને શુક પરિવ્રાજકે ઈશાન કોણમા જઇ ને પોતાના ત્રિદ ડ વગેરે સાત ઉપકરણો તેમજ ગેરૂ રગના વેસ્ત્રોને એક તરફ મૂકી દીધા એટલે કે આ બધી વસ્તુઓનો તેણે સદાને માટે ત્યાગ કરી દીધો એના પછી તેણે જટા રૂપ પોતાની શિખાનુ લુચન કર્યું દીપિકાકાર કસ્તૂર ચ દ્રજી ગણિએ " સયમેવ વસહિ ઉપ્પાડેઇ " આવો કપોલકલ્પિત મૂળ પાઠ બતાવતા દીપિકામા એ પ્રમાણે લખ્યુ છે કે તેણે (પરિવ્રાજકે) પોતાના હાથોથી ત્રિદ ડિકોના નિવાસ (મઠ) ને સમૂળ નષ્ટ કરી નાખ્યો હતો આ વાત ઠીક કહી શકાય નહિ કેમ કે આ જાતનો પ ઠ હસ્તલિખિત તેમજ મુદ્રિત (છપાએલી) જૂની પ્રતોમા જોવા મળતો નથી તે પ્રતોમા તો ' सिहं ' પાઠજ લખેલો મળે છે આવી રીતે પોતાની કપોલકલ્પના મૂલક અસત્ય વાતોથી પાઠકોને ભ્રમમા મૂકવાના પ્રયાસો કરવા તે બરોબર " ઉત્સૂત્રપરૂ

रूपणा जनितानन्तसंसारित्वापत्तेः । उत्पाट्य यत्रैव स्थापत्यापुत्रोऽनगारस्तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य मुण्डोभूत्वा यावत् प्रव्रजितः दीक्षां गृहीतवान् । सामायिकादीन्येकादशाङ्गानि चतुर्दशपूर्वाणि अधीतेस्म । तदा-शुकस्य सार्यभूताः सहस्रपरिव्राजका अपि दीक्षा गृहीतवन्त । ततस्तदनन्तर खलु स्थापत्यापुत्रोऽनगार सहस्र तदानी दीक्षितान् सहस्रमनगारान् शुकस्य शिष्यतया वितरति, दत्तवान् । ततः खलु स स्थापत्यापुत्र सौगन्धिकाया नगर्याः नीलाशोकात् नीलाशोकना मकाद्युद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति, निर्गच्छतिस्म, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनपदविहार देशमध्ये विहार विहरति करोतिस्म ॥ २५ ॥

जहा स्थापत्यापुत्र अनगार विराज मान थे वहा गया-(उवागच्छित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए समाइयमाइयाइं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ) जाकर वह मुंडित हो उनके पास दीक्षित हो गया । सामायिक आदि ग्यारह अङ्गो को और चतुर्दश पूर्वोको उसने उनके पास पढा । शुक के साथ रहे हुए उन १ हजार परिव्राजको ने भी भगवती दीक्षा धारण करली । (तएण थावच्चा पुत्ते सुयस्स अणगारसहस्स सीसत्ताए वियरइ) स्थापत्यापुत्र अनगार ने इन १ एक हजार साधुओ को शुक परिव्राजक का शिष्य बना दिया । (तएण से थावच्चापुत्ते सोगंधिओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमइ,पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ) इसके बाद स्थापत्यापुत्र अनगार उस सौगधिका नगरी से, नीलाशोक उद्यान से निकले और निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने लगे ॥ सू० २५ ॥

પણ " ૮ છે પોતાની શિષ્યાનુ લુચ્ચન કરીને શુક પરિવ્રાજક જ્યા સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર હતા ત્યા ગયા (उवागच्छित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए समाइयमाइयाइं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ) ત્યા જઈને મુડિત થઈને તેમની પાસેથી દીક્ષા મેળવી લીધી સામયિક વગેરે અગિયાર અંગો નો તેમજ ચતુર્દશ પૂર્વોનો તેણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર પાસે રહીને અભ્યાસ કર્યો શુક ની માથે રહેનારા એક હજાર પરિવ્રાજકોએ પણ ભાગવતી દીક્ષા સ્વીકારી લીધી (तएण थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्स सीसत्ताए वियरइ) સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તે એક હજાર સાધુઓને શુક પરિવ્રાજકના જ શિષ્યો બનાવ્યા (तएण से थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ) ત્યાર બાદ સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર સૌગંધિકા નગરી અને નીલાશોક ઉદ્યાનની બહાર થઈને બીજા જનપદ (દેશ) મા વિહાર કરવા નીકળ્યા ॥ સૂત્ર ૨૫ ॥

मूलम्-तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धिं संपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ, दुरुहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने, तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता जाव केवलवरनाणदंसणसमुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव पहीणे ॥ सू० २७ ॥

टीका-'तएणं से' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारसहस्रेण सार्धं सपरिवृतो ग्रामानुग्रामं विहरन् यत्रैव पुण्डरीकं पुण्डरीकनामकं पर्वतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पुण्डरीकं पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहति-आरोहति, दूरुह्य 'मेघघणसन्निगासं' मेघघनसन्निकाशं मेघानां घन समूहस्तद्वत् कालवर्णं 'देवस-

---

तएणं से थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते) ये स्थापत्यापुत्र अणगार सहस्सेणं सद्धिं सपरिवुडे) हजार अनगार के साथ२ ग्रामानुग्रामविहार करते हुए (जेणेव पुंडरीए पव्वए) जहां पुंडरीक पर्वत था (तेणेव उवागच्छइ) वहां आये (उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ) वहां आकर वे उस पुंडरीक पर्वत पर धीरे २ चढे (दुरूहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने तएणं से थावच्चापुत्ते ।' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तएणं) त्यारબાદ(से थावच्चापुत्ते) स्थापत्यापुत्र (अणगारसहस्सेण सद्धिं सपरिवुडे) એક હજાર અણગારની સાથે એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતા (जेणेव पुंडरीए पव्वए) જ્યાં પુંડરીક પર્વત હતો (तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં આવ્યા (उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ) ત્યાં પહોંચીને તેઓ પુંડરીક પર્વતપર ધીમે ધીમે ચઢવા માંડયા (दुरूहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने) ચઢીને તેમણે

न्निमाय ' देवसनिपात=निर्वाणाद्युत्सवसमये यत्र देवा समागत्य मिलन्ति, देवा ना सनिपातः समिलन यत्र त ' पुढविसिलापट्टय ' पृथिवीशिलापट्टक प्रतिलेख यित्वा यावत् ' पाओवगमण णुवन्ने ' पादपोपगमनमनुप्राप्त. सहस्रशिष्यै सह पादपोपगमनसस्तारक कृतवान्। तत खलु स स्थापत्यापुत्रो बहूनिवर्षाणि सामान्य परियाग ' श्रामण्यपर्याय=चारित्रपर्याय ' पाउणित्ता ' पालयित्वा मासिक्या सलेखनया षष्टिभक्तानि अनशनेन छित्त्वा यावत् – केवलवरज्ञानदर्शने सति ' समुप्पाडेत्ता ' समुत्पाद्य अन्तसमये केवलज्ञाना केवलदर्शन च समाप्य ततः पश्चात् सकलकर्मक्षये सिद्धः मुक्ति प्राप्तः यावत् बुद्धो मुक्त. सर्वदु ख प्रहीणः जन्मजरामरणादिदु'खरहितो जात ॥ २६ ॥

गमण णुवन्ने) चढकर उन्हों ने मेघ समूह के समान कृष्ण वर्णवाले तथा निर्वाण आदि के उत्सव के समय जहां देव एकत्रित होते हैं ऐसे पृथिवी शिलापट्टक पर प्रतिलेखना कर यावत् पादपोपगमन सथारा धारण कर लिया। साथ के उन १ हजार साधुओं ने भी पादपोपगमन सथारा ले लिया। (तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्न परियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव पहीणे) इस तरह उन स्थपत्यापुत्र अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन करके एक मास की सलेखना से साठ भक्तो का अनशन द्वारा छेदन कर यावत् अन्त समय मे केवल ज्ञान केवल दर्शन प्राप्त कर लिया। उन्हें प्राप्त कर फिर वे सकल कर्मों के क्षय होने पर सिद्ध बन गये। यहा यावत् शब्द से बुद्ध मुक्त सर्व दुःख प्रहीण जन्मजरा मरणादि दु ख रहितो जाता " इन पदों का सग्रह हुआ है ।सू० २६॥

ભગવાન નેમીનાથની આજ્ઞા લઈને તેમના નિર્વાણ વગેરેના ઉત્સવના વખતે દેવો જ્યાં એકઠા થાય છે એવી શિલાપર પ્રતિલેખના કરીને પાદપોપગમન સંથારો સ્વીકાર્યો તેમની સાથે એક હજાર સાધુઓએ પણ (तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओपच्छा सिद्धे जाव पहीणे) આ રીતે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને એક મહિનાની સલેખનાથી સાઈઠ ભક્તોનું અનશન વડે છેદન કરીને છેવટે કેવળ જ્ઞાન કેવળ દર્શન મેળવ્યું ત્યાર બાદ બધા કર્મો ક્ષય થયા ત્યારે તેમને સિદ્ધ પદ મળ્યું અહીં જે 'यावत्' શબ્દ આવ્યો છે તેથી (बुद्ध मुक्त सर्वदुःखप्रहीण जन्म जरामरणादिदु खरहितो जात) આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે ॥ સૂ ૨૬ ॥

मूलम्-तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धि संपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ, दुरूहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने, तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता जाव केवलवरनाणदंसणसमुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव पहीणे ॥ सू० २७ ॥

टीका-'तएणं से' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारसहस्रेण सार्धं सपरिवृतो ग्रामानुग्राम विहरन् यत्रैव पुण्डरीकः पुण्डरीकनामकः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पुण्डरीकं पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहति-आरोहति, दूरुह्य 'मेघघणसन्निगासं' मेघघनसन्निकाशं मेघानां घनं समूहस्तद्वत् कालवर्णं 'देवसं

तएणं से थावच्चापुत्ते इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते) ये स्थापत्यापुत्र अणगार सहस्सेणं सद्धिं सपरिवुडे) हजार अनगार के साथ२ ग्रामानुग्रामविहार करते हुए (जेणेव पुंडरीए पव्वए) जहां पुंडरीक पर्वत था (तेणेव उवागच्छइ) वहां आये (उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ) वहां आकर वे उस पुंडरीक पर्वत पर धीरे २ चढे (दुरूहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओव

'तएणं से थावच्चापुत्ते' इत्यादि॥

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારબાદ (से थावच्चापुत्ते) સ્થાપત્યાપુત્ર (अणगारसहस्सेण सद्धिं सपरिवुडे) એક હજાર અણગારની સાથે એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતા (जेणेव पुंडरीए पव्वए) જ્યાં પુંડરીક પર્વત હતો (तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં આવ્યા (उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ) ત્યાં પહોંચીને તેઓ પુંડરીક પર્વતપર ધીમે ધીમે ચઢવા માંડયા (दुरूहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने) ચઢીને તેમણે

निर्वाय ' देवसन्निपात=निर्वाणाद्युत्सवसमये यत्र देवा समागत्य मिलन्ति, देवा ना सन्निपातः समिलन यत्र त ' पुढविसिलापट्टय ' पृथिवीशिलापट्टक प्रतिलेख यित्वा यावत् ' पाओवगमण णुवन्ने ' पादपोपगमनमनुप्राप्त. सहस्रशिष्यै सह पादपोपगमनसस्तारक कृतवान्.। तत खलु स स्थापत्यापुत्रो बहूनिवर्षाणि सामान्न परियाग ' श्रामण्यपर्यायः=चारित्रपर्याय ' पाउणित्ता ' पालयित्वा मासिक्या सलेखनया षष्टिभक्तानि अनशनेन छित्वा यावत् – केवलवरज्ञानदर्शने सति ' समुप्पाडेत्ता ' समुत्पाद्य अन्तसमये केवलज्ञाना केवलदर्शन च समाप्य ततः पश्चात् सकलकर्मक्षये सिद्धः मुक्ति प्राप्तः यावत् बुद्धो मुक्त. सर्वदु ख प्रहीणः जन्मजरामरणादिदुःखरहितो जात ॥ २६ ॥

गमण णुवन्ने) चढकर उन्हों ने मेघ समूह के समान कृष्ण वर्णवाले तथा निर्वाण आदि के उत्सव के समय जहा देव एकत्रित होते हैं ऐसे पृथिवी शिलापटक पर प्रतिलेखना कर यावत् पादपोपगमन सथारा धारण कर लिया। साथ के उन १ हजार साधुओं ने भी पादपोपगमन सथारा ले लिया। (तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्न परियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव पहीणे) इस तरह उन स्थपत्यापुत्र अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन करके एक मास की सलेखना से साठ भक्तो का अनशन द्वारा छेदन कर यावत् अन्त समय मे केवल ज्ञान केवल दर्शन प्राप्त कर लिया। उन्हें प्राप्त कर फिर वे सकल कर्मों के क्षय होने पर सिद्ध बन गये। यहा यावत् शब्द से बुद्ध मुक्त सर्व दुःख प्रहीण जन्मजरा मरणादि दु ख रहितो जाता " इन पदो का सग्रह हुआ है ।सू० २६॥

મેરૂ સમૂહ જેવી કાળી તેમજ નિર્વાણ વગેરેના ઉત્સવના વખતે દેવો જ્યા એકઠા થાય છે એવી શિલાપટ્ટ પ્રતિલેખના કરીને પાદપોપગમન સથારો સ્વીકાર્યો તેમની સાથે એક હજાર સાધુઓએ પણ (तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओपच्छा सिद्धे जाव पहीणे) આ રીતે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે ઘણા વર્ષા સુધી શ્રાવણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને એક મહિનાની સલેખનાથી સાઈઠ ભક્તોનુ અનશન વડે છેદન કરીને છેવટે કેવળ જ્ઞાન કેવળ દર્શન મેળવ્યુ ત્યાર બાદ બધા કર્મો ક્ષય થયા ત્યારે તેમને સિદ્ધ પદ મળ્યુ અહી જે 'यावत्' શબ્દ આવ્યો છે તેથી (बुद्ध मुक्त सर्वदुखप्रहीण जन्म जरामरणादिदु खरहितो जात) આ પદોનો સગ્રહ થયો છે ॥ સૂ ૨૬ ॥

मूलम्—तएण से सुए अन्नया कयाइं जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए परिसा निग्गया सेलओ निग्गओ धम्म सोच्चा देवाणुप्पिया! पथगपामोक्खाइ पंच मंतिसयाइ आपुच्छामि मंडुयं च कुमार रज्जे ठावेमि, तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारयं पव्वयामि, अहासुहं, तए णं से सेलए राया सेलागपुरं नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएण से सेलए राया पथगपामोक्खे पंच मतिसए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! मए सुयस्स अंतिए धम्म णिसंते सेविय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए अहण देवाणुप्पिया! ससारभयउव्विग्गे जाव पव्वयामि, तुब्भ णं देवाणुप्पिया! कि करेह कि ववसाह कि वा ते हियइच्छति?,

तएण ते पथगपामोक्खा सेलग राय एव वयासी—जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया! ससारभउव्विग्गा जाव पव्वयह अम्हाण देवाणुप्पिया! किमन्ने आहारे वा आलबे वा अम्हेऽवि य णं देवाणुप्पिया! ससारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामो, जहा देवाणुप्पिया! अम्ह बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा णं पव्वतियाण वि समणाण बहुसु जाव चक्खुभूए।

तएण से सेलगे पथगपामोक्खे पचमतिसए एव वयासी

जइणं देवाणु०तुब्भे ससार जाव पव्वयह त गच्छह णं देवा० सएसु २ कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुबमज्झे ठावेत्ता पुरिससहस्स वाहिणिओ सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवहत्ति, तहेव पाउब्भवति ।

तएणं से सेलए राया पच्च मतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुबिय पुरिमे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मडुयस्स कुमारस्स महत्थ जाव रायाभिसेय उवट्ठवेह० अभिसिचइ जाव राया यावद् विहरइ ॥ सू० २७ ॥

टीका—ततस्तदनन्तर खलु स शुकोऽन्यदा=अन्यस्मिन् काले, कदाचित् कस्मिंश्चित् समये यत्रैव शैलकपुर नाम नगर यत्रैव सुभूमिभाग=सुभूमिभागनामकम् उद्यान ' तेणेव समोसरिए ' तत्रैव समवसृत. समागत । परिषन्निर्गता=शैलकपुर नगरनिवासिना जनानासहतिः शुकनामाऽनगार समागत श्रुत्वा त वन्दितु शैलक पुरनगराद्बहिर्नि सृतेत्यर्थ । शैलकोऽपि निर्गतः शैलकनामा नृपोऽपि शुकमनगार वन्दितु नगराद्बहिर्नि.सृत' । निर्गत्य यत्रैव शुकोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छति। अथ

'तएणं से सुए' इत्यादि

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से सुए)वे शुक अनगार(अन्नया कयाइ) किसी एक समय (जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए) जहा शैलकपुर नाम का नगर और उस में भी जहा सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहा विहार करते २ आये (परिमा निग्गया सेलओ निग्गओ, धम्म सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पथगपामोक्खाइ पचमतिस

(तएण से सुए ઈત્યાદિ।

ટીકાર્થ—' तएण) ત્યારબાદ (से सुए) શુક અનગાર (अन्नया कयाइ) કોઇ એક વખતે (जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए) જ્યા શૈલક પુર નામે નગર અને તેમા પણ જ્યા સુભૂમિ ભાગ નામે ઉદ્યાન હતુ ત્યા વિહાર કરતા કરતા આવ્યા (परिसा निग्गया सेलओ निग्गओ धम्म सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पथगपामोक्खाइ पचमतिसयाइ आपु

शुकनाम्नाऽनगारेण धर्मकथा कथिता। परिषत् प्रतिगता। ततः शैलको राजा-धर्मं श्रुत्वा यावत्-सबुद्धः शुकमेवमवादीत्-देवानुप्रिय! पाथकप्रमुखाणि पञ्च मन्त्रि शतानि पञ्चशतसख्यकान् पाथकादीन् मन्त्रिणः आपृच्छामि, मण्डूकं च कुमार स्वपुत्र राज्ये स्थापयामि, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डोभूत्वाऽगारादन गारता प्रव्रजामि=स्वीकरोमि। शुक आह-यथासुख=प्रव्रज्याग्रहणे विलम्बो न करणीय इत्यर्थः। ततः खलु स शैलको राजा शैलकपुर नगरमनुप्रविशति, अनुपवि-श्य यत्रैव स्वक=निज गृह यत्रैव बाह्या 'उट्ठाणसाला' उपस्थानशाला=सभा

याइ आपुच्छामि मडुयच कुमारे रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अतिए मुडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि) इनका आगमन सुनकर शैलकपुर नगर निवासी जनों का समूह उनके वदना करने के लिये नगरसे बहार निकला। शैलकपुर राजा भी निकले। ये सब चलकर वहा आये जहा वे शुक अनगार विराज मान थे। शुक अन गार ने सब को धर्म कथा सुनाई। सुनकर सबलोग वापिस चले गये। शैलक राजा धर्म का उपदेश सुनकर यावत् प्रतिबुद्ध हो गया। उसने शुक अनगार से इस प्रकार कहा—देवानुप्रिय! मैं पाथक प्रमुख पाच सौ मन्त्रियो से पूछलेता हूँ और अपने पुत्र मडूक कुमार को राज्यमे स्थापित कर देता हूँ। बाद में मैं देवानुप्रिय आपके पास मुडित होकर अगार अवस्था से अनगार अवस्था धारण करलूगा। (अहासुह तएण से सेलए राया सेलगपुर नयर अणुपविसइ, अणु

च्छामि मडुयच कुमारे रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि) તેમનુ આગમન સાભળીને શૈલક પુરના નાગરિકોના સમૂહો તેમની વદના કરવા માટે બહાર નીકળ્યા શૈલક પુરના રાજા પણ વદન માટે બહાર જવા નીકળ્યા તેઓ બધા જ્યા શુક પરિવ્રાજક વિરાજમાન હતા ત્યા પહોચ્યા શુક પરિવ્રાજકે બધાને ધર્મકથા સભળાવી ધર્મકથા સાભળી ને બધા પોત પોતાને સ્થાને જતા રહ્યા ધર્મ કથા સાભળીને શૈલક રાજા ને બોધ થયો તેમણે શુક અનગારને વિનતી કરતા કહ્યુ કે-" દેવાનુપ્રિય ! હુ મારા પાચસો મત્રીઓને પૂછી લઉ છુ અને મારા પુત્ર મડુક કુમારને રાજ્યસિહાસને બેસાડી દઉ ત્યાર પછી તમારી પાસે મુડિત થઈને હુ અગાર અવસ્થા ત્યજીને અનગાર અવસ્થા ધારણ કરીશ (अहासुह तएण सेसेलए राया सेलगपुर नयर अणुपविसइ अणुपवि

स्थान, तत्रैवोपागच्छति. उपागत्य सिंहासने 'सन्निसन्ने' सन्निषण्ण =उपविष्टः ।-तत खलु स शैलको राजा पान्थकप्रमुखाणि पञ्चमन्त्रिशतानि=पञ्चशतसख्यकान् पान्थकादीन् मन्त्रिण शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रियाः ! मया शुकस्य=शुकनाम्नोऽनगारस्यान्तिके=समीपे धर्म =श्रुतचारित्रलक्षण ' णिसते ' निशान्तः=श्रुतः, सोऽपि च धर्मः ' इच्छिए ' इष्ट =वाञ्छितः, ' पडिच्छिए ' प्रतीप्सितः=ग्रहीतुमभिलषितः ' अभिरुइए ' अभिरुचितः=प्रत्यात्मप्रदेशे रुचिविषयीभूत., अह खलु हे देवानुप्रिया ! ' ससारभयउव्विग्गे ' ससारभयोद्विग्न जन्मजरामरणेष्टवियोगानिष्टसयोगादिभयोद्विग्नः सन् यावद् प्रव्रजामि=दीक्षा ग्रहिष्यामि । हे देवानुप्रिया. ! यूय किं करिष्यथ किं व्यवसायिष्यथ=कीदृश व्यवसायमुद्यम करिष्यथ, किंवा युष्माकं हृदयेप्सित इति, भवता मनोगतोविचार कीदृशो वर्तते इत्यर्थ । ततः खलु ते

पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठानसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएण से सेलए राया पथगपामोक्खे पचमतिसए सद्दावेइ) शैलक राजा के इस प्रकार के विचार सुन कर शुक अनगार ने उनसे कहा-यथा सुख-अर्थात् शुक-अनगार की इस तरह दीक्षा ग्रहण करने मे अनुमति प्राप्त कर शैलक राजा वहा से शैलक पुर नगरमे आये। आकर वे जहा अपना घर और जहा अपनी बाहिर उपस्थानशाला सभास्थान-था वहा गये-वहा जाकर उन्होंने सिहासन पर बैठकर पांचसौ पांथक प्रमुख मन्त्रियों को बुलाया-(सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया मए सुयस्स अतिए धम्मे णिसते से विय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए, अभिरुइए अह ण देवाणुप्पिया ! ससारभयउविग्गे जाव पव्वयामि तुब्भे ण

सित्ता जेणेव मए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठानसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएण से सेलए राया पथगपामोक्खे पचमतिसए सद्दावेइ) શૈલક રાજાના આ જાતના વિચારો સાભળીને શુક અનગારે તેમને કહ્યુ-" यथासुख " એટલે કે તમને જેમા સુખ મળે તે કરો શુક પરિવ્રાજકની દીક્ષા ગ્રહણ કરવાગાટેની અનુમતિ મેળવીને શૈલક રાજા ત્યાથી શૈલકપુર નગરમા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ સીધા પોતાના મહેલની અદર ઉપસ્થાનશાળા એટલે કે સભામાન હતુ ત્યા પહોચ્યા ત્યા જઈને તેમણે સિહાસન ઉપર બેસીને પાચસો પાચક પ્રમુખ મત્રીઓને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए सुयस्स अतिए धम्मे णिसते से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए अह ण देवाणुप्पिया ! ससारभयउविग्गे जाव पव्व-

पान्थकप्रमुखा पान्थकादयो मन्त्रिणः शैलकं राजानमेवमदन यदि खलु यूय देवानुप्रिया ! संसारभयोद्विग्नाः यावत् प्रव्रजत=प्रव्रजिष्य, तर्हि अस्माकं हे देवानुप्रिय !=हे राजन् ! कोऽन्य आधारः=आश्रयो वा, आलम्ब=दुःखादौ पतितां-धारकः वा भविष्यति, यतोऽस्माकं भवानेवशरणम् , इत्यर्थः । वयमपि च खलु हे देवानुप्रिय ! संसारभयोद्विग्ना यावद् भवद्भि सार्धमेव प्रव्रजामः=दीक्षा ग्रही-

देवाणुप्पिया ! किं करेह किंववसह, किं वा ते हियइच्छति ?) बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवाणुप्रियो ? मैंने शुक अनगार के पास श्रुतचारित्र रूप धर्म का उपदेश सुना है-वह मुझे बहुत अच्छा लगा है। मेरी इच्छा उसे ग्रहण करने की हो रही है हर एक आत्मप्रदेशमें वह मेरी रुचिका विषयभूत बन गया है। हे देवानुप्रियो ! मैं संसार के भय से जन्म जरा मरण इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग आदि के डर से इस समय उद्विग्न हो रहा हूँ अतः मैं संयम धारण करूँगा। अतः हे देवानुप्रियो ! तुम क्या करोगे , कैसा उद्यम करोगे-आपलोगों का मनोगत विचार कैसा क्या हो रहा है ? (तएणं ते पंथगपामोक्खा सेलगं राय एवं वयासी) राजा की इस प्रकार वाणी सुनकर उन पांथक प्रमुख पांचसौ मन्त्रियों ने उस शैलक राजा से इस प्रकार कहा-(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयह, अम्हाणं देवाणुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलंबे वा अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयामो) हे देवानुप्रिय ! यदि आप संसार भय से

यामि तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! किं करेह किं ववसह किंवाते हियइच्छति !) બોલાવી ને રાજાએ તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મે શુક અનગાર પાસેથી શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાભળ્યો છે તેનાથી હુ બહુજ પ્રભાવિત થયો છુ શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મને સ્વીકારવાની મારી તીવ્ર ઇચ્છા છે, મારા આત્માના પ્રત્યેક ભાગમા શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મ વ્યાપ્ત થઇ ગયો છે હે દેવાનુપ્રિયો ! હુ સસારના ભયથી જન્મ જરા (ઘડપણ) ઇષ્ટજનનો વિયોગ, અનિષ્ટ સયોગ વગેરેની બીકથી અત્યારે વ્યાકુળ થઇ રહ્યો છુ તેથી હુ સયમ ધારણ કરીશ હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શુ કરશો ? તમે શો ઉદ્યોગ કરશો ? આ વિષે તમારા મનમા કઇ જાતના વિચારો આવવા માડ્યા છે ? (तएणं ते पंथगपामोक्खा सेलगं राय एवं वयासी) રાજાની વાણી સાભળીને પાથક પ્રમુખ પાચસો મત્રીઓએ શૈલકરાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું—(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयह अम्हाणं देवाणुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलंबे वा अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयामो)હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જો સસાર ભયથી ભય

प्यामः। हे देवानुप्रिय ! हे स्वामिन्! यथाऽस्माकं बहुषु कार्येषु=राज्याधिकृत-कार्येषु च कारणेषु=राज्यरक्षणोपायेषु च यावत्-तथा - खलु भवद्भिः सार्धं प्रव्रजितानामपि श्रमणानां बहुषु यावत् कार्यादिषु चक्षुर्भूतः। यथाऽस्माकमधिकृतेषु भवान् विश्रामस्थान, राज्यकार्येषु भवानेव नेत्रतुल्यो नेताऽस्ति तथा चारित्र पालनकार्येष्वपि भवानेव नेताभविष्यतीतिभावः।

उद्विग्न हो कर दीक्षित होना चाहते हैं तो हे देवानुप्रिय! अब हमलोगों का और कौन आपके सिवाय दूसरा आधार हो सकेगा कौन दुःखादिक के समय हमलोगों के लिये आलम्बन देने वाला होगा, क्यों कि हमारे लिये तो आपही एक शरण भूत है। अतजब आप दीक्षित होना चाहते है तो हम लोग भी ससार भय से उद्विग्न हो कर आप के साथ ही दीक्षा सयम धारण करेंगे। (जहा देवाणुप्पिया! अम्ह बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहाण पव्वतियाणवि समणा णं बहुसु जाव चक्खुभूए) हे देवानुप्रिय! जोस तरह आप हमलोगों के लिये अनेक राज्याधिकृत कार्यो मे अनेक कारणों मे-राज्य सरक्षण के उपायो में-चक्षुभूत रहे हैं उसी तरह आपके साथ प्रवृजित हुए हमलोगों के चारित्र पालन कार्य में भी आप ही नेता रहेंगे। (तएण से सेलगे पथगपामोक्खे पचमतिसए एव वयासी) मन्त्रि मडल की इस प्रकार बात सुनकर उस शैलक राजा ने उन पांथक प्रमुख पाचसौ मन्त्रियों से इस प्रकार कहा.-

---

ત્રસ્ત થઈને દીક્ષા મેળવવાની ઈચ્છા રાખેાછેા તેા તમારા સિવાય અમારા બીજો કેાણ આધાર હશે ? આકૃતના વખતે અમને આશ્રય આપનાર કેાણ થશે ? અમારે માટે તેા તમે જ શરણ રૂપ છેા, એટલે જ્યારે તમે દીક્ષિત થવાની ઈચ્છા રાખેા છેા ત્યારે અમે લેાકેા પણ આસસારથી કંટાળી ગયા છીએ તમારી સાથે અમે પણ ચેાક્કસ દીક્ષા સયમ ધારણ કરીશુ (जहा देवाणुप्पिया! अम्ह बहुसु कज्जेसु य कारणेसुय जाव तहाण पव्वतियाणवि समणाण बहुसु जाव चक्खुभूए) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જેમ અહીં અમારા માટે ઘણા ગજવહીટના કામેામા ઘણા કારણેામા-રાજ્ય સરક્ષણ વિષેના ઉપાયેામા ચક્ષુભૂત રહ્યા છે તેથી અમારી સાથે પ્રવ્રજિત થઈને પણ અમે લેાકેા ચારિત્રપાલન કાર્યમા પણ તમે જ અમારા નેતા થએા એવી અમારી ઈચ્છા છે, (तएण से सेलगे पथगपामोक्खे पचमतिसए एव वयासी) મત્રીઓ આ જાતના વિચારેા સાભળીને શૈલક રાજાએ તે પાથક પ્રમુખ પાચસેા

ततः खलु स शैलकः पा यकप्रमुखं पञ्चमन्त्रिशत=पञ्चशतसाख्यकान् पान्थका दीन् मन्त्रिण', एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-यदि खलु ह देवानुप्रियाः ! यूय ससारभयोद्विग्नाः यावत् प्रव्रजत प्रव्रजिष्यथ दीक्षा ग्रहीष्यथ, तत् तर्हि गच्छत खलु हे देवानुप्रियाः ! स्वकेषु स्वकेषु कुटुम्बेषु ज्येष्ठान् पुत्रान् कुटुम्बम ये स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविकाः दुरूढाः आरूढाः सतो ममान्तिक प्रादुर्भवतेति । तथैव प्रादुर्भवन्ति=ते पञ्चशतानि मन्त्रिण' स्व स्व ज्येष्ठपुत्र कुटुम्ब म ये स्वस्थाने स्थापयित्वा शिविकामारूढा. सन्तः शैलकनृपस्य समीपे उपस्थिता अभूवन्नित्यर्थ. ।

ततः खलु स शैलक राजा पञ्चमन्त्रिशतानि=पञ्चशतानि मन्त्रिणः प्रादुर्भवतः= समागतान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टः कौटुम्बिकपुरुषान् = आज्ञाकारिणः पुरुषान्

(जइण देवाणु० तुब्भे ससार जाव पव्वयह त गच्छह ण देवाणु० सएसु २ कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुटुंबमज्झे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिओ सीहाओ दुरूढा समाणा मम अन्तिय पाउब्भवह त्ति तहेव पाउब्भवति) हे देवानुप्रिय ! यदि आप लोग ससार भय से उद्विग्न हैं और यावत् प्रव्रजित होना चाहते है तो जाओ और अपने २ कुटुम्बो मे अपने २ स्थानों पर ज्येष्ट पुत्रो को स्थापित करके पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ हो कर फिर मेरे पास आजाओ इस प्रकार राजा के कथन को सुनकर उनसबने अपने २ कुटुम्बों में अपने २ स्थान पर अपने २ ज्येष्ट पुत्रों को स्थापित किया-और बाद मे फिर वे सबके सब शैलक राजा के पास में पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ हो कर उपस्थित हो गये । (तएण से सेलए राया पचमतिसयाइ पाउब्भवमाणाइ पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता

મંત્રીઓને આ પ્રમાણે કહ્યું-(जइण देवाणु० तुब्भे ससार जाव पव्वयह त गच्छह ण देवाणु० सएसु २ कुडुबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुबमज्झे ठावेत्ता पुरिससहस्स वाहिणिओ सीहाओ दुरूढा समाणा मम अतिय पाउब्भवह त्ति तहेव पाउब्भवति) હે દેવાનુપ્રિયો ! બરોબર જો તમે સંસારભયથી સંત્રસ્ત હો તો જાઓ અને પોતપોતાના કુટુંબોમા પોતાના સ્થાને જ્યેષ્ઠ પુત્રો ને મૂકીને પુરુષસહસ્રવાહિની પાલખીઓમા બેસીને મારી પાસે આવો આ રીતે રાજાનુ કથન સાભળીને તેઓ બધા પોતપોતાને સ્થાને જ્યેષ્ઠ પુત્રોને મૂકીને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓમા સવાર થઇ રાજાની પાસે આવ્યા (तएण से सेलए राया पचमतिसयाइ पाउब्भवमाणाइ पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुबिय

शब्दयति, आह्वयति । शब्दयित्वा=आहूय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-क्षिप्रमेव =शीघ्रमेव भो ! देवानुप्रिया ! मण्डूकस्य कुमारस्य महार्थं=महाप्रयोजनकं यावत्-राज्याभिषेकं 'उवट्ठवेह' उपस्थापयत कुरुत । 'अभिसिंचति' अभिषिञ्चन्ति, ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषाः सुवर्णरजतकलशैर्मण्डूककुमारं स्नापयित्वा सर्वालङ्कार विभूषितं कृत्वा, तस्य राज्याभिषेकं कुर्वन्ति स्मेत्यर्थः । यावद् मण्डूको राजा जात विहरति=आस्ते ॥ सू० २७ ॥

मूलम्-तएणं से सेलए राया मंडुयं राय आपुच्छइ, तएणं से मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुरं नगरं आसित्त समज्जिओवलित्तं गंधोदयसित्तं गंधवट्टिभूतं करेह य कारवेह य,

एवं वयासी) इसके बाद उस शैलक राजा ने जब उन पाचसौ मन्त्रियो को अपने समीप उपस्थित हुआ देखा-तो देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न एव सतुष्ट हुआ और उसी समय उसने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया-बुलाकर उनसे कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह०, अभिसिंचइ जाव राया यावत् विहरइ) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही मंडुक कुमार का महार्थ साधक-महाप्रयोजन भूत-यावत् राज्याभिषेक करो । उन्हो ने उसका राज्याभिषेक किया अर्थात् सुवर्ण रजत के कलशो से मंडूक कुमार का अभिषेक कर और उसे समस्त अलकारो से विभूषित कर राज्य पद में अभिषिक्त किया। इस तरह मंडूक कुमार राज्य पदासीन हो गया ॥ सूत्र २७ ॥

પુરિસે સદ્દાવેઇ સદ્દાવિત્તા એવ વયાસી) ત્યાર બાદ પોતાના પાચસો મત્રીઓને આવેલા જોઇને રાજા ખૂબજ પ્રસન્ન થયા અને સતુષ્ટ થયા રાજાએ તરત જ પોતાના કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स-कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह अभिसिंचइए जाव राया यावद् विहरइ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે મંડુક રાજકુમારનો મહાર્થસાધક મહાપ્રયોજન ભૂત-રાજ્યાભિષેક કરો. કૌટુબિક પુરુષોએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ મંડુક રાજકુમારનો રાજ્યભિષેક કર્યો એટલે કે તેઓએ સોના રૂપાના કળશોથી મંડુક કુમારનો અભિષેક કર્યો અને બધા અલકારોથી તેને શણગારીને રાજ્ય સિંહાસન ઉપર બેસાડયો ॥ સૂત્ર " ૨૭ " ॥

करित्ता य कारवित्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं से मडुए राया दोच्चपि कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो ! सेलगस्स रन्नो महत्थ जाव निक्खमणाभिसेय जहेव मेहस्स तहेव, णवर पउमावतीदेवी अग्ग केसे पडिच्छइ । सच्चेव पडिग्गह गहाय सीय दुरूहति, अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ जाव विहरइ, तएण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइं पच्च अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरइ, तएण से सुए अन्नया कयाइ सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ, तएण से सुए अणगारे अन्नया कयाइ तेणं अणगारसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम विहरमाणे जेणेव पोडरीए पव्वए जाव सिद्धे ॥ सू० २८ ॥

'तएण से सेलए' इत्यादि ।

टीका-तत स शैलको राजा मण्डूक राजानमापृच्छति, हे देवानुप्रिय ! अह दीक्षा ग्रहीष्यामीती । तत खलु स मण्डूको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् आदेश कारिण पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव वक्ष्यमाणप्रकारे

'तएण से सेलए राया' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सेलए राया) उस शैलक राजा ने (मडुय राय आपुच्छइ) मडूक राजा से पूछा कहा कि हे देवानुप्रिय ! मैं दीक्षा सयम लूगा (तएण से मडुए राया कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ)

(तएण से सेलए राया) इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्यार બાદ (से सेलए राया) शैलक राजाએ (मडुय राय आपुच्छइ) मडूक राजाने કહ્યુ-કે હે દેવાનુપ્રિય ! હુ દીક્ષા ગ્રહીકરીશ (तएण से मडुए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ) त्यार પછી मडूक राजाએ कौटुम्बिक

णावादीत् क्षिप्रमेव शीघ्रमेव भो देवानुप्रियाः शैलकपुर नगरम् 'आसित्तसम-ज्जिओवलित' आसिक्त समार्जितोपलिप्त=आसिक्तम् जलेनाऽऽर्द्रीकृत, समार्जित समार्जन्या कचवराद्यपसारणेन सशुद्ध', उपलिप्त गोमयादिना सलिप्त, गन्धोदकसिक्त पुनर्गन्धोदकेन प्रसिक्त गन्धवर्तिभूत अगरवर्तिरूप सुगन्धमय यूय कुरुत, अन्यैश्च कारयत कृत्वा च कारयित्वा च 'एयमाणत्तिय' एतामाज्ञप्तिका=एता ममाज्ञा प्रत्यर्पयत = मदादिष्ट कार्य सर्वं सपादितमस्माभिरित्यावेदयतेत्यर्थ. । तत खलु स मण्डुको राजा 'दोच्चपि' द्वितीयमपि द्वितीयवारमपि कौटुम्बिक-पुरुषान्=आदेशकारिण : पुरुषान् शब्दयति= आह्वति. शब्दयित्वा एवमवादीत्-

---

इसके बाद मडुक राजा ने कौटुबिक पुरुषो को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उन से ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुर नगर आसित्त समज्जिओवलित्त गधवट्टिभूत्त करेह्य कारवेह्य) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही शैलकपुर नगर को जल से छिडको- सिंचित करो, कचवर आदि के अपनयन से उसे साफ करो, गोमयादि से उसे लीपो गधोदक से उसे वार २ सिक्त प्रसिक्त करो गधवर्त्तिरूप करो- सुगधमय करो, तथा दूसरो से कर वाओ । (करित्ता कारवित्ता य एयमाणत्ति य पच्चप्पिणह) कर के और करा के पीछे हमें इस आज्ञा के पालन की खबर दो हमने आप की आज्ञानुसार सब कार्य सपादित कर दिया है- ऐसा पीछे हमे समाचार दो (तएण से मडुए राया दोच्चपि कौडुबियपुरिसे सद्दा-वेइ, सद्दावित्ता एव वयासी) इसके बाद मडूक राजा ने दुबारा भी

પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुर नगर आसित्तसमज्जिओवलित्त गधवट्टिभूत करेह्य कारवेह्य) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શૈલકપુરને પાણીથી સત્વરે સિંચિત કરો કચરો વગેરે સાફ કરીને, છાણ વગેરેથી લીપો તેમજ સુવાસિત પાણીથી વારવાર તેને સિંચિત કરો અને તેને ગધવર્તિ એટલે કે ધૂપસળીની જેમ સુવાસિત બનાવો તેમજ બીજાઓથી સુવાસમય બનાવડાવો (करित्ता कारवित्ताय एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) આ પ્રમાણે જાતે કરીને અને બીજાઓની પાસેથી કરાવડાવીને કામ પુરૂ થયાનુ અમને જણાવો (तएण से मुडए राया दोच्च पि कौडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी) ત્યાર બાદ મડૂક ગજાએ બીજી વખત કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને

करित्ता य कारवित्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं से मडुए राया दोच्चपि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो ! सेलगस्स रन्नो महत्थ जाव निक्खमणाभिसेय जहेव मेहस्स तहेव, णवरं पउमावतीदेवी अग्ग केसे पडिच्छइ । सच्चेव पडिग्गह गहाय सीय दुरूहति, अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ जाव विहरइ, तएण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच्च अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरइ, तएण से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ, तएण से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोडरीए पव्वए जाव सिद्धे ॥ सू० २८ ॥

'तएण से सेलए' इत्यादि ।

टीका-तत स शैलको राजा मण्डुक राजानमापृच्छति, हे देवानुप्रिय ! अह दीक्षा ग्रहीष्यामीती । तत खलु स मण्डुको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् आदेश कारिण पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव वक्ष्यमाणप्रकारे

'तएण से सेलए राया' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सेलए राया) उस शैलक राजा ने (मडुय राय आपुच्छइ) मडूक राजा से पूछा कहा कि हे देवानुप्रिय ! मैं दीक्षा सयम लूगा (तएण से मडुए राया कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ)

(तएण से सेलए राया) इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) त्यार બાદ (से सेलए राया) शैलक राजाએ (मडुय राय आपुच्छइ) मडुक राजाने कहुं-के हे देवानुप्रिय ! हु दीक्षा अगीकारीश (तएण से मडुए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ) त्यार पछी मडुक राजाએ कौटुंबिक

'पडिग्गह' पतद्ग्रह पात्र गृहीत्वा शिविका दूरोहन्ति । आरोहन्ति अम्बधाऽऽदयः रजोहरणपात्रादिक शैलकराजा तन्मन्त्रिणोऽपि शिविकामारोहन्तिस्मेत्यर्थ । अवशेषं तथैव, यथा मेघकुमारः श्रीमद्वीरस्वामिनोऽन्तिके प्रव्रज्या गृहीतवान् ' तथैव शुकस्य समीपे शैलकनृपेण प्रव्रज्या गृहीता, तदा-शैलकनृपस्य मन्त्रिणोऽपि पञ्च शतसङ्ख्यकाः पान्थकप्रमुखास्तथैव प्रव्रज्या गृहीतवन्त इत्यर्थः । यावत्-गृहीत्वाच सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीतेस्म । अधीत्य च बहुभिश्चतुर्थभक्तादिभिस्त पोभिः यावत्-आत्मान भावयन् विहरति । तदनन्तर स शुकः शैलकस्याऽनगा रस्य तानि पान्थक प्रमुखाणि पञ्चाऽगारशतानि=तान् पान्थकप्रमुखान् पञ्चशत-संख्यकाननगारानित्यर्थः, शिष्यतया वितरति ददातिस्म ।

ने अपने वस्त्राञ्चल में लिया था। (सच्चेव पडिग्गह गहा य सीयं दुरुहति अवसेस तहेव, जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) शैलक राजा उसके मन्त्री तथा उसकी अम्बधात्रादि ये सब के सब रजोहरण एव पात्रादिकों को लेकर शिविका (पालखी) मे आरूढ हो गये। जिस प्रकार मेघकुमारने श्री महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या ग्रहण की थी उसी प्रकार शुक अनगार के पास शैलक नृपने भी प्रव्रज्या धारण की। नृपके साथ २ उस के पाथक प्रमुख पाच सौ मन्त्रियोंने भी वही पर दीक्षा ग्रहण की यावत् दीक्षा ग्रहण करने के बाद उस शैलक-राज ऋषिने सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया। (अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ, तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरइ) अध्ययन करने के बाद उन्हों ने फिर अनेकविध चतुर्थ भक्त आदि की तपस्या की बाद मे शुक अनगार ने उन शैलक अनगार के

પટરાણી પદ્માવતી દેવીએ શૈલક રાજાના વાળા ચાર આગળ છોડીને આગળના વાળાને પોતાના વસ્ત્રાચળમા લીધા (सच्चेव पडिग्गह गहाय सोय दुरुहति अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ) શૈલકરાજા તેમના મત્રીઓ તેમજ શૈલક રાજાની અમ્મધાત્રી વગેરે બધા રજોહરણ અને પાત્રો વગેરે લઈને પાલખીમા સવાર થઈ ગયા ભગવાન મહાવીરની પાસે જેમ મેઘકુમારે પ્રવ્રજ્યા લીધી હતી તેમજ શુક અનગારની પાસે શૈલક રાજાએ પ્રવ્રજ્યા સ્વીકારી રાજાની સાથે તેમના પાચસો પાથક પ્રમુખ મત્રીઓ એ પણ ત્યા જ દીક્ષા લીધી , દીક્ષા લીધા બાદ શૈલક રાજાએ સામયિક વગેરે અગિયાર અગોનુ અધ્યયન કર્યુ (अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जावविहरइ, तएण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरई) અધ્યયન પછી તેમણે અનેક જાતના ચતુર્થભક્ત વગેરેની તપસ્યા કરી શુક અનગારે શૈલક અનગારને પાથક પ્રમુખ પાચસો અન

क्षिप्रमेवभो । शैलकस्य राज्ञो महार्थ=महाप्रयोजनक मोक्षफलक यावत् निष्क्रमणाभिषेकम्=दीक्षोत्सवम् उपस्थापयत=कुरुत, यथा मेघस्य मेघकुमारस्य प्रथमाध्ययने निष्क्रामणाभिषेको वर्णित तथैव=तद्वदत्रापि वाच्य इत्यर्थः । मण्डूकनृपाऽऽज्ञया कौटुम्बिकपुरुषाः शैलकनृपस्य निष्क्रमणाभिषेक मेघकुमारवत् कृतवन्त इति भावः नवर तत्रैतावान् भेदः यत्-पद्मावती देवी पद्मावती नाम्नी राज्ञी शैलकनृपस्य स्व भार्या, अग्रकेशान् = अग्रभूतान् केशाग्रभागरूपान चतुरङ्गुलवर्जितान् नापितकर्तितान् केशान् प्रतीच्छति=वस्त्राञ्चले गृह्णाति, मेघकुमारस्य तु स्वमाता धारिणीदेवी केशान् गृह्णातिस्मेतिभावः सच्चेवा तदिव=तद्वत् = मेघकुमारवदित्यर्थः,

---

कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया, और बुलाकर उन से ऐसा कहा (खिप्पामेव भो सेलगस्स रन्नो महत्थ जाव निक्खमणाभिसेय जहेव मेहस्स तहेव- णवर पउमावती देवी अग्गकेसे पडिच्छइ) तुम लोग शीघ्र ही शैलक राजा का मोक्षफल साधक यावत् निष्क्रमणाभिषेक दीक्षोत्सव- मेघकुमार के दीक्षोत्सव की तरह करो । मेघकुमार का दीक्षोत्सव जैसा प्रथम अध्ययन में वर्णित किया है वैसा ही यहा पर भी समझ लेना चाहिये । इस प्रकार मडूक राजा की आज्ञा सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषो ने शैलक राजा का दीक्षोत्सव मेघकुमार के दीक्षोत्सव की तरह अच्छी तरह से किया । उसमें और इसमें केवल इतना ही भेद रहा कि इस दीक्षोत्सव में पद्मावती देवी जो शैलक राजा की मुख्य रानी थी उसने उसके नापित कर्तित चतरगुलवर्जित अग्र केशों को अपने वस्त्राञ्चल में लिया और मेघकुमार के दीक्षोत्स में मेघकुमार के नापित कर्तित चतुरगुलवर्जित केशों को उस की माता धारिणी देवी

બોલાવીને તેમને કહ્યું-કે (खिप्पामेव भो सेलगस्स रन्नो महत्थ जाव निक्खमणा मिसेय जहेव मेहस्स तहेव णवर पाउमावती देवी अग्गकेसे पडिच्छइ) તમે મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમ મોક્ષદાયક શૈલક રાજાનો દીક્ષોત્સવ ચોલે પ્રથમ અધ્યયનમા મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવ વિષે જેમ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેમ જ અહી પણ સમજવુ જોઇએ આ રીતે મડૂક રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ કૌટુબિક પુરુષોએ મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમજ સરસ રીતે દીક્ષોત્સવ ઊજવ્યો મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવમા અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમા તફાવત આટલોજ સમજવો કે-મેઘરાજાના દીક્ષોત્સવ વખતે જ્યારે તેમના માતા ધરિણીદેવીએ ચાર આગળ છોડીને બાકીના બધા નાપિત વડે કપાએલા વાળો પોતાના અચળામા લીધા હતા, અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમા તેમના

'पडिग्गह' पतद्ग्रह पात्र गृहीत्वा शिविका दूरोहन्ति । आरोहन्ति अग्रधात्र्यादयः रजोहरणपात्रादिकं शैलकराजा तन्मन्त्रिणोऽपि शिविकामारोहन्तिस्मेत्यर्थः । अत्रोपं तथैव, यथा मेघकुमारः श्रीमद्वीरस्वामिनोऽन्तिके प्रव्रज्या गृहीतवान ' तथैव शुकस्य समीपे शैलकनृपेण प्रव्रज्या गृहीता, तदा-शैलकनृपस्य मन्त्रिणोऽपि पञ्च शतसख्यकाः पान्थकप्रमुखास्तत्रैव प्रव्रज्या गृहीतवन्त इत्यर्थः । यावत्-गृहीत्वाच सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीतेस्म । अधीत्य च बहुभिश्चतुर्थभक्तादिभिस्त पोभिः यावत्-आत्मान भावयन् विहरति । तदनन्तर स शुकः शैलकस्याऽनगारस्य तानि पान्थक प्रमुखाणि पञ्चाऽनगारशतानि=तान् पान्थकप्रमुखान् पञ्चशतसंख्यकाननगारानित्यर्थः, शिष्यतया वितरति ददातिस्म ।

ने अपने वस्त्राञ्चल में लिया था । (सच्चेव पडिग्गह गहाय सीय दुरुहति अवसेस तहेव, जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) शैलक राजा उसके मन्त्री तथा उसकी अग्रधात्रादि ये सब के सब रजोहरण एव पात्रादिकों को लेकर शिविका (पालखी) मे आरूढ हो गये । जिस प्रकार मेघकुमारने श्री महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या ग्रहण की थी उसी प्रकार शुक अनगार के पास शैलक नृपने भी प्रव्रज्या धारण की । नृपके साथ २ उस के पाथक प्रमुख पाच सौ मन्त्रियोंने भी वही पर दीक्षा ग्रहण की यावत् दीक्षा ग्रहण करने के बाद उस शैलक राज ऋषिने सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया । (अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ, तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरइ) अध्ययन करने के बाद उन्हों ने फिर अनेकविध चतुर्थ भक्त आदि की तपस्या की बाद मे शुक अनगार ने उन शैलक अनगार के

પટરાણી પદ્માવતી દેવીએ શૈલક રાજાના વાળો ચાર આગળ ઓઢીને આગળના વાળોને પોતાના વસ્ત્રાચળમા લીધા (सच्चेव पडिग्गह गहाय सोय दुरुहति अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ) શૈલકરાજા તેમના મત્રીઓ તેમજ શૈલક રાજાની અગ્રધાત્રી વગેરે બધા રજોહરણ અને પાત્રો વગેરે લઈને પાલખીમા સવાર થઈ ગયા ભગવાન મહાવીરની પાસે જેમ મેઘકુમારે પ્રવ્રજ્યા લીધી હતી તેમજ શુક અનગારની પાસે શૈલક રાજાએ પ્રવ્રજ્યા સ્વીકારી રાજાની સાથે તેમના પાચસો પાથક પ્રમુખ મત્રીઓ એ પણ ત્યા જ દીક્ષા લીધી , દીક્ષા લીધા બાદ શૈલક રાજાએ સામયિક વગેરે અગિયાર અગોનુ અધ્યયન કર્યુ (अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जावविहरइ, तएण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरई) અધ્યયન પૂરી તેમણે અનેક જાતના ચતુર્થભક્ત વગેરેની તપસ્યા કરી શુક અનગારે શૈલક અનગારને પાથક પ્રમુખ પાચસો અન

ततः खलु स शुकः शुकनामानगार, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले शैलकपुरानगरात् सुभूमिभागादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति=प्रतिनिर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य=प्रतिनिर्गत्य बहिः= बाह्ये जनपदविहार विहरति । ततस्तदनन्तर खलु स शुकोऽनगारोऽन्यदा कदाचित्-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले तेन=पूर्वोक्तेन स्वशिष्येण अनगारसहस्रेण साधं सपरिवृतःपूरानुपूर्व्यां तीर्थंकरगणधरपरम्परया चरन् ग्रामानुग्राम विहरन् यत्रैव पुण्डरीक=पुण्डरीकनाम्नामसिद्धः पर्वतः यावत् तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीक पर्वतमारुह्य पृथिवीशिलापट्टक प्रतिलेख्य

लिये पांथक प्रमुख आदि ५०० सौ अनगारों को शिष्य रूप से वितरित कर दिया। (तएण से सुए अन्नया कयाइ सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ,) इस के बाद किसी एक समय वे शुक अनगार शैलक पुर नगर से और उस सुभूमिभाग नाम के उद्यान से निकले और निकल कर उन्हों ने वहा से बाहर जनपदों की ओर विहार कर दिया। (तएण से सुए अणगारे अन्नया कयाइ तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं सपडिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे) ग्रामानुग्राम विहार करते २ वे किसी एक समय उस अपने शिष्य अनगार सहस्र के साथ तीर्थंकर, गणधर परंपरा के अनुसार चारित्र की आराधना करते हुए जहा पुंडरीक नाम का प्रसिद्ध पर्वत था वहां आये वहां आकर उन्हों ने वहां के पृथिवी शीलापट्टक की प्रतिलेखना की प्रतिलेखना कर के फिर उन्हों ने उस

गारोने शिष्य રૂપે આપ્યા (तएण से सुए अन्नया कयाइ सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ) ત્યાર બાદ કોઈ એક વખતે શુક અનગાર શૈલકપુરના સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનથી બહાર નીકળીને ત્યાથી બહારના બીજા જનપદોમા વિહાર કર્યો (तएण से सुए अणगारे अन्नया कयाइ तेण अणगारसहस्सेण सद्धिं सपडिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे) શુક પરિવ્રાજક એક ગામની બીજે ગામ વિહાર કરતા કરતા કોઈ વખતે પોતાના એક હજાર અનગાર શિષ્યોની સાથે તીર્થંકર, ગણધરોની પરપરાને અનુસરતા ચારિત્રની આરાધના કરતા કરતા જયા પુડરીક નામે પ્રસિદ્ધ પર્વત હતો ત્યા ગયા પહોચીને તેમણે ત્યા પૃથિવી શિલાપટ્ટકની પ્રતિલેખના કર્યા પછી તેમણે તેના ઉપર પોતાના એક હજાર શિષ્યોની સાથે પાદપોગમન

सहस्रशिष्यैःसह पादपोपगमनमस्तारक कृतवान्, ततः खलु स शुको बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा केवलवरज्ञानदर्शने समुत्पाद्य सकलकर्मक्षये सति सिद्धः -मुक्तिं प्राप्त इत्यर्थः ॥ २८ ॥

मूलम्–तएणं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिअतेहि य पतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहिय उण्हेहि य कालातिक्कतेहि य पमाणाइक्कतेहि य णिच्चं पाणभोयणेहि य पयइसुकुमालयस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया, उज्जला जाव दुरहिया सा कडुयदाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे यावि विहरइ, तएणं से सेलए तेणं रोयायकेण सुक्के जाए यावि होत्था, तएणं से सेलए अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ, परिसा निग्गया मंडुओ वि निग्गओ सेलय अणगारं जाव वंदइ, नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पज्जुवासइ, तएण से मंडुए राया सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्कं भुक्कं जाव सव्वाबाह सरोगं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–अह णं भंते ! तुब्भं अहापवत्तेहिं तिगिच्छएहि अहापवत्तेणं ओसहभेसज्जेण भत्तपाणेणं तिगिच्छं आउट्टावेमि, तुब्भे णं भंते मम जाणसालासु समोसरह फासुअ

पर अपने सहस्र शिष्यों के साथ २ पादपोपगमन संथारा किया। इस तरह उन शुक अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का परिपालन कर के अन्त समय में केवलज्ञान केवल दर्शन प्राप्तकर सकल कर्मों के क्षय होने पर मुक्ति को प्राप्तकर लिया। ॥ सू० २८ ॥

સંથારો કર્યો આ રીતે તે શુક પરિવ્રાજકે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પરિપાલન કરીને છેવટે કેવળજ્ઞાન કેવળ દર્શન મેળવીને બધા કર્મો જ્યારે નાશ પામ્યા ત્યારે મુક્તિ મેળવી ॥ સૂત્ર “ ૨૮ ” ॥

एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारग ओगिण्हित्ताणं विहरइ, तएणं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रन्नो एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, तएणं से मंडुए सेलयं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २९ ॥

टीकार्थ—' तएणं तस्स ' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु तस्य शैलकस्य राजर्षेस्तैः=अनगारधर्मानुसारेण प्राप्तैः ' अंतेहिं ' अन्तैः=वल्लचणकादिभिः, ' पंतेहिं, प्रान्तैः=पर्युषितैः, ' तुच्छेहिय ' तुच्छैः अल्पैश्च ' लूहेहिय ' रूक्षैः अन्नि

' तएणं तस्स सेलगस्स ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं)इसके बाद (पयइ सुकुमालयस्स सुहोचियस्स) प्रकृति सुकुमार तथा सुखोपभोग के योग्य (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स) उस शैलक राजऋषि के (सरीरगंसि) शरीर में (तेहिं अंतेहिं य पंतेहिं य तुच्छेहिं य लूहेहिं अरसेहिं य विरसेहिं य सीएहिं य, उण्हेहिं य कालाइक्कंते हिं य पमाणाइक्कंते हिं य, णिच्चं च पाणभोयणे हिं य) अनगार धर्म के अनुसार प्राप्त हुए अन्त प्रान्त, तुच्छ, रूक्ष, अरस, विरस, शीत, उष्ण, तथा कालातिक्रान्त (असमय मे) नित्य पान भोजन आहार करने से (वेयणा पाउब्भूया) वेदना प्रकट हुई। वल्ल चणक आदि का नाम अंत हैं। पर्युषित (वासी) अन्न का नाम प्रान्त है। अल्प आहार का नाम तुच्छ है। स्निग्धता (घृतादि) रहित आहार का

(तएणं तस्स सेलगस्स इत्यादि)

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યાર બાદ (पयइ सुकुमालयस्स सुहोचियस्स) શરીરની પ્રકૃતિ સુકુમાર તેમજ આરામ ભોગવવા યોગ્ય (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स) રાજ ઋષિ શૈલક (सरीरगंसि) ના શરીરમા (तेहिं अंतेहिंय पंतेहिं य तुच्छेहिं य लूहेहि अरसेहिं य विरसेहिंय सीएहिं य उण्हेहिंय कालाइक्कंतेहिय पमाणाइक्कंतेहिय, णिच्च पाणभोयणेहिंय) અનગાર ધર્મ મુજબપ્રાપ્ત થયેલા અન્ય, પ્રાત, તુચ્છ, રૂક્ષ, અરમ, વિરસ, શીત, ઉષ્ણ તેમજ અમમય (કાલાતિક્રાત) મા હમેશા પાન, ભોજન (આહાર) કરવાથી (વેયણા પાઉન્ભૂયા) વેદના થવા વાગી બલ ચણક (ચણા) વગેરે ' અંત ' કહેવાય છે વાસી આહાર નુનામ ' પર્યુષિત ' છે થોડા આહારનુ નામ તુચ્છ છે સ્નિગ્ધતા (ઘી રહિત) વગર આહાર રુક્ષ કહેવાય છે હિંગ વગેરેના વઘાર વગરના આહારને

ग्धैश्च, 'अरसेहिय' अरसो हिङ्ग्वादिव्यागार रहितैश्च, 'विरसेहिय' विरसै. पुराणत्वाद् विगतरसैश्च 'सीयेहिय' शीतैः शीतलैश्च 'उण्हेहिय' उष्णैश्च 'कालातिक्कतेहिय' कालातिक्रान्तै क्षुधापिपासा कालेष्वप्राप्तैश्च 'पमाणाइक्कतेहिय' प्रमाणातिक्रान्तैश्च बुभुक्षापिपासाऽननुकूलैश्च=बुभुक्षापिपासा यत्प्रमाणा वर्तते, तामतिक्रान्तैः तन्निवारणाऽसमर्थैः स्वल्पलब्धैरित्यर्थः। नित्यपानभोजनैश्च प्रतिदिवस प्राप्तैरन्नपानैश्च नित्य प्रतिकूलपानभोजन कुर्वतइति भाव। प्रकृतिसुकुमारकस्य स्वभावकोमलस्य, सुखोचितस्य=सुखार्हस्य, लेशतोऽपि क्लेशासहस्येत्यर्थः, शरीरे वेदना=व्याधिः प्रादुर्भूता=उत्पन्ना,सा वेदना कीदृशीत्याह-उज्जला=दु खातिशयेन ज्वलयाग्निवज्जाज्वल्यमाना यावत्-अत्र यावत्करणेन-विउला, पगाढा, इत्यनयोः

नाम रूक्ष है। हिंग आदि के वघार से रहित हुए नीरस आहार का नाम अरस है। पुराने नीरस अन्न के घने हुए आहार का नाम विरस आहार है। घनाकर रखे हुए शीतल-ठडे-आहार का नाम शीत है। गरम २ का नाम उष्ण है। क्षुधा पिपासा के समय में नही प्राप्त हुए आहार का नाम कालातिक्रान्त है। अथवा क्षुधा पिपासा के अनुसार नही प्राप्त हुआ आहार भी कालातिक्रान्त कहा जाता है। जितनी भूख लगी हो,जितनी प्यास लगी हो उतने आहार पानी का नही मिलना थोडा सा मिलना इससे शरीर में अशक्ति आदि उत्पन्न हो जाती है। अनगार अवस्था मे साधु को अनुकूल आहार पानी नही मिलता है। अतः प्रतिकूल आहार पानी के सेवन से शरीर मे विविध प्रकार की बाधाएँ उपस्थित हो जाती है। ऐसा ही राजऋषि शैलक अनगार के लिये हुआ। उनके शरीर

અરસ કહે છે જૂના થઈ ગયેલા અનાજનો આહાર બનાવવામા આવે તે 'વિરસ' નામે ઓળખાય છે બહુ વખત પહેલા બનાવીને મૂકી રાખેલા ઠંડા થઇ ગયેલા આહારને 'શીત' કહેવામા આવે છે એકદમ ગરમ આહારને ઉષ્ણક હે છે ભૂખ અને તરસના વખતે અહાર ન મળે તેને કાલાતિક્રાત કહેવાય છે અથવા ભૂખ અને તરસને ચેાગ્ય આહાર ન મળવેા તેને પણ કાલાતિક્રાત કહેવાય છે ભૂખ અનેતરસના પ્રમાણમા આહાર અને પાણી મળે નહિ થેાડા પ્રમાણમા મળે તેા એનાથી શરીરમા શિથિલતા આવી જાય છે અનગાર અવસ્થામા સાધુને અનુકૂળ આહાર પણી મળતુ નથી એથી પ્રતિકૂળ આહાર પણીના સેવનથી શરીર અનેક રીતે નબળુ થઈ જાય છે રાજઋષિ અનગારની હાલત પણ આવી જ

एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासथारग ओगिण्हित्ताण विहरइ, तएणं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रन्नो एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ, तएणं से मडुए सेलयं वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २९ ॥

टीकार्थ—' तएण तस्स ' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु तस्य शैलकस्य राजर्षेस्तैः=अनगारधर्मानुसारेण प्राप्तैः ' अंतेहि ' अन्तैः=वल्लचणकादिभिः, ' पंतेहि, प्रान्तैः=पर्युषितैः, ' तुच्छेहिय ' तुच्छैः अल्पैश्च ' लूहेहिय ' रूक्षैः अस्नि

' तएण तस्स सेलगस्स ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं)इसके बाद (पयइ सुकुमालयस्स सुहोचियस्स) प्रकृति सुकुमार तथा सुखोपभोग के योग्य (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स) उस शैलक राजाऋषि के (सरीरगंसि) शरीर में (तेहिं अंतेहिं य पंतेहिं य तुच्छेहिं य लूहेहिं अरसेहिं य विरसेहिं य सीएहिं य, उण्हेहिं य कालाइक्कंते हिं य पमाणाइक्कंते हिं य, णिच्च पाणभोयणे हिं य) अनगार धर्म के अनुसार प्राप्त हुए अन्त प्रान्त, तुच्छ, रूक्ष, अरस, विरस, शीत, उष्ण, तथा कालातिक्रान्त (असमय मे) नित्य पान भोजन आहार करने से (वेयणा पाउब्भूया) वेदना प्रकट हुई। वल्ल चणक आदि का नाम अंत हैं। पर्युषित (वासी) अन्न का नाम प्रान्त है। अल्प आहार का नाम तुच्छ है। स्निग्धता (घृतादि) रहित आहार का

(तएण तस्स सेलगस्स इत्यादि)

ટીકાર્થ–(तएण) त्यार બાદ (पयइ सुकुमालयस्स सुहोचियस्स) शरीरनी प्रकृति सुकुमार तेमज आराम भोगववा योग्य (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स) राज ऋषि शैलक (सरीरगंसि) ना शरीरमा (तेहिं अंतेहिंय पंतेहिं य तुच्छेहिं य लूहेहि अरसेहिं य विरसेहिंय सीएहिं य उण्हेहिंय कालाइक्कंतेहिय पमाणाइक्कंतेहिंय, णिच्च पाणभोयणेहिंय) अनगार धर्म मुजबप्राप्त थयेला अन्य, प्रात, तुच्छ, रूक्ष, अरस, विरस, शीत, उष्ण तेमज असमय (कालातिक्रांत) मा हमेशा पान, भोजन (आहार) करवाथी (वेयणा पाउब्भूया) वेदना थवा वागी अल्ल चणक (चणा) वगेरे ' अंत ' कहेवाय छे वासी आहार नुनाम ' पर्युषित ' छे थोडा आहारनु नाम तुच्छ छे स्निग्धता (घी रहित) वगर आहार रुक्ष कहेवाय छे हिंग वगेरेना वघार वगरना आहारने

कस्मिंश्चित् काले पूर्वानुपूर्व्या चरन् यावत्-यत्रैव शैलकपुर नामनगर यत्रैव सुभूमिभाग नामोद्यान तत्रैवोपागच्छति उपागत्यच यावद् सयमेन तपसा स्वात्मान भावयन् विहरति। परिषन्निर्गता मण्डूकोऽपि निर्गतः, यत्र शैलकोऽनगारस्तत्रागत्य शैलकमनगार यावद् वन्दते नमस्यति, वदित्वा नत्वा स मण्डूकः पर्युपास्ते=सेवते स्म।

ततः खलु स मण्डूको राजा शैलकस्यानगारस्य शरीर शुष्क रूक्ष यावत्-सव्याबाध=पीडित सरोग=रोगाक्रान्त पश्यति दृष्ट्वा एवमवादीत्-अहं खलु भदन्त!

खाने पीने की रुचि जाती रही। (तएण से सेलए तेण रोगायकेण सुक्के जाए यावि होत्था तएण से सेलए अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ) इससे वे शैलक अनगार उस रोग से-सामान्य ज्वरादि व्याधि से, आतग से-प्रबलतर मस्तक शूलादि शीघ्रघातक व्याधि से-सूख गये-बिलकुल दुबले पतले शरीर वाले हो गये। किसी एक समय पूर्वानुपूर्वी से विहार करते हुए ये जहां शैलक पुर नगर और उसमें भी जहा सुभूमि भाग नाम का उद्यान था वहां आये। तप और सयम से अपने आत्माको भावित करते हुए ये वहा ठहर गये। (परिसा निग्गया मडुओ वि निग्गओ, सेलय अणगारे जाव वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, पज्जुवासइ) जनता वदना करने के लिये आई मंडूक भी आया। सबने शैलक राजऋषि को वदना की नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके मडूक राजा ने उन की सेवा की। (तएण से मडुए राया सेलयस्स अणगा-

---

ગમેા થઈ ગયેા હતેા (तएण से सेलए तेण रोयायकेण सुक्के जाए यावि होत्था तएण से सेलए अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ) તેથી શૈલક અનગાર સામાન્ય રોગથી આતક એટલે કે સખ્ત રોગથી સૂકાઈ ગયા સાવ દૂબળા થઈ ગયા કોઈ વખતે પૂર્વાનુ પૂર્વી થી વિહાર કરતા શૈલક અનગાર શૈલક પુર નગરના સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનમા આવ્યા, અને તપ અને સયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા તેઓ ત્યા રોકાયા (परिसा निग्गया मडुओ वि निग्गओ सेलय अणगारे जाव वदइ, नमसइ वदित्ता, पज्जुवासइ) તેમને વદન કરવા માટે નાગરીકોની પરિષદ નગરની બહાર નીકળી ત્યા પહોચીને બધા નાગરિકોએ શૈલક રાજઋષિને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને મડૂક રાજાએ તેમની સેવા કરી (तएण से मडुए राया सेलयस्स अणगारस्स सरीरय सुक्क भुक्क जाव

सग्रहः। विपुला-विस्तीर्णा आत्मप्रतिप्रदेशव्यापिनी, प्रगाढा प्रवर्धमाना तीव्रतरा, अतएव-दुरध्यासा=दुःसहा। वेदनायाः परिणाम प्रदर्शयति—' कडुयदाह ' इत्यादि। ' कडुयदाह पित्तज्जरपरिगयसरीरे, कण्डूकदाहपित्तज्वरपरिगतशरीरः= कण्डूकेन=कण्डूत्या, दाहेन हृदयकरचरणनयनज्वलनेन पित्तज्वरेण च परिगत व्याप्त शरीर यस्य स तथा, चापि विहरती=आस्ते। ततः खलु स शैलकस्तेन रोगातङ्केन रोगेण सामान्येन व्याधिना, आतङ्केन प्रबलतरेण व्याधिना, च शुष्को जात श्चाप्यासीत्। ततः खलु स शैलक 'अन्नया कयाइ' अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन्

में जो वेदना उत्पन्न हुई वह (उज्जला जाव दुरहिया) बहुत अधिक दुःखातिशय से वर्धित थी अतः प्रलय कालीन अग्नि की तरह शरीर को जला रही थी। यहा यावत् शब्द से " विउला पगाढा " इन पदो का सग्रह हुआ है। आत्मा के प्रति प्रदेश में व्याप्त होने से वह वेदना विपुल थी तथा तीव्रतर थी बहुत अधिक दिन प्रतिदिन बढने से वह प्रगाढ थी। इसलिये दुरध्यासथी बड़ी तकलीफ के साथ वह सहन करने योग्य थी। इस वेदनाजन्य शरीर में क्या २ परिणाम हुआ इस बात को सूत्रकार (कडुय दाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे) इन पदों द्वारा प्रकट करते हैं वे कहते हैं कि उन राजऋषि शैलक अनगार का शरीर कडुयन-खुजली- के दाहसे और पित्तज्वर से व्याप्त हो गया। हृदय में, हाथों में, चरणो में और नेत्रों में उनके जलन होने लग गई। पित्तज्वर से पित्त में अधिकाधिक गर्मी आ गई- इस से लिया हुआ आहार उन्हें नही पचता और वमन द्वारा वह बाहिर निकल जाता

થઇ ગઇ તેમના શરીરમા (उज्जला जाव दुरहिया) વેદના ખૂબજ થવા માંડી હતી તેથી પ્રલયના અગ્નિની જેમ તેમના શરીરમા બળતરા થતી હતી અહીં 'यावत्' શબ્દ થી (विउला पगाढा) આ પદોનો સગ્રહ થયેા છે આત્મા ના બધા પ્રદેશોમા વેદના વ્યાપ્ત થઇ હતી તેથી તે 'तीव्रतर' હતી દિવસે દિવસે વેદના વધતી જ જતી હતી તેથી તે 'प्रगाढ' હતી એટલા માટે જ વેદના દુરધ્યાસ એટલે કે બહુ કષ્ટથી સહ્ય હતી વેદનાને લીધે રાજ ઋષિના શરીરની હાલત કેવી થઈ તે સૂત્ર કાર અહીં સ્પષ્ટ કરતા કહે છે (कडुय दाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे) કે તે રાજઋષિ અનગારનુ શરીર કડૂયન-ખર જવાની પીડાથી અને પિત્તના જવરથી વ્યાપ્ત થઈ ગયુ તેમની છાતીમા હાથોમા, પગોમા અને આખોમા બળતરા થવામાડી પિત્તજવર થી પિત્તમા ગરમીનુ પ્રમાણ વધી જવાથી કરેલા આહારનુ પાચન થતું નહિ અને તે ઊલટી થઈને બહાર નીકળી જતો હતો ખાવાપીવા તરફ તેમને સાવ અણ

स्वीकृतेस्म । ततस्तदनन्तर स मण्डूको राजा शैलक वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नत्वा च यस्यादिश प्रादुर्भूतः आगत०,तामेव दिश प्रतिगत स्वप्रासाद समाप्तः।२९।

मूलम्–तएण से सेलए कल्ल जाव जलते सभंडमत्तोवगरणमायाए पन्थयपामोक्खेहि पचहि अणगारसएहि सद्धि सेलगपुरमणुपविसइ अणु पविसित्ता जेणेव मडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासुय पीढ जाव विहरइ। तएणं से मंडुए विगिच्छए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–तुब्भे ण देवाणुप्पिया! सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं आउट्टेह, तएणं ते तेगिच्छया मडुएणं रन्ना एव वुत्ता हट्ठतुट्ठा समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जभत्तपाणेहि तेगिच्छ आउट्टेति, मज्जपाणय च से उवदिसति, तएण तस्स सेलयस्स अहापवत्तेहि जाव मज्जमाणेण रोगायके उवसंते होत्था हट्ठे मल्लसरीरे जाते ववगयरोगायंके, तएण से सेलए तंसि रोगायंकसि उवसंतसि समाणसि तसि विपुलसि असण० पाण खाइमसाइम, मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झो-

---

कह कर उस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। (तएण से मडुए सेलय वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) इसके बाद वे मडूक राजा शैलक अनगार को वदना नमस्कार कर जिस दिशा से प्रकट हुए थे–आये थे–उसी दिशा तरफ चले गये। अर्थात् वहा से अपने राज महल में वापिस आ गये ॥सूत्र २९॥

વિનતિ સાભળીને શૈલક અનગારે તેમની વિનતિને "तहत्ति" આમ કહીને સ્વીકારી લીધી (तएण से मडुए सेलय वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) ત્યાર બાદ મડૂક રાજા શૈલક અનગારને વદન અને નમસ્કાર કરીને જ્યાથી આવ્યા હતા ત્યા જતા રહ્યા એટલે કે તેઓ પોતાના રાજભવનમા ગયા ॥ સૂત્ર ૨૯ ॥

युष्माक यथाप्रवृत्तैः=यथायोग्यै रोगोपशमनसमर्थैः चिकित्सकैः वैद्यैः यथाप्रवृत्तेन =यथायोग्येन प्रासुकेन औषधभैषज्येन औषधम्-एकद्रव्यनिर्मित, भैषज्य=द्रव्य समुदायनिर्मित तेन, भक्तपानेन निरवद्यान्नपानेन, चिकित्सामाचर्तयामि कारयामि। हे भदन्त! यूय खलु मम यानशालासु रथादिशालासु समवसरत=आगच्छत तत्र सुखेन तिष्ठता प्रासुकमेषणीयं पीठफलकशय्यासंस्तारकमवगृह्य विहरति। ततः खलु स शैलकोऽनगारो मण्डूकस्य राज्ञ-एतमर्थं तथेति प्रतिशृणोति

रस्स सरीरय सुक्क भुक्क जाव सव्वावाह सरोग पासइ) इस के बाद ज्यों ही मडूक राजा ने शैलक राजऋषि के शरीर को शुष्क रूक्ष यावत् पीडित एव रोगाक्रान्त देखा तो (पासित्ता एव वयासी) देख कर उन से इस प्रकार कहा-(अहं ण भते! तुब्भ अहापवत्तेहिं तिगिच्छएहिं अहापवत्तेण ओसहभेसज्जेण भत्तपाणेण तिगिच्छ आउट्टावेमि) हे भदत! मैं आपकी यथा योग्य-रोगो पशमन करने में समर्थ-वैद्यों द्वारा-उचित प्रासुक (निर्दोष) औषध और भैषज्य से तथा निरवद्य अन्न-पान से चिकित्सा करवाना चाहता हूँ-इसलिये (तुब्भे णं भते! मम जाणसालासु समोसरह, फासुअं एसणिज्ज पीठफलगसेज्जासथारग ओगिण्हित्ता णं विहरइ) आप मेरी रथशाला में पधारे और वहा विराजे सुख शाता से वहा ठहरे, प्रासुक एषणीय, पीठफलक शय्या सस्तारक को मुनि के कल्पानुसार याचित कर लेले। (तएण से सेलए अणगारे मडुयस्स रण्णो एयमट्ठ तह त्ति पडिसुणेइ) इस प्रकार मडूक राजा के प्रार्थना करने पर उन शैलक अनगार ने उसकी "तहत्ति" ऐसा

सव्वावाह सरोग पासइ) त्यार आद मडुक राजाओ राजऋषिना शरीरने शुष्क रूक्ष यावत् पीडित तेमज रोगाक्रात जोयु तो (पासित्ता एव वयासी) जोईने तेमने आ प्रमाणे कहुं-(अहं ण भते! तुब्भ अहापवत्तेहिं तिगिच्छएहिं अहापवत्ते ण ओसहभेसज्ज ण भत्तपाणे त तिगिच्छ आउट्टावेमि) हे भदत! मारी इच्छा छे के हु रोगोने मटाडनार योग्य वैद्योनी उचित प्रासुक औषधो अने भैषज्योद्वारा तेमज निरवद्य अन्नपान थी तमारी चिकित्सा (ઇલાજ) करावडावु એटला माटे (तुब्भेण भते! मम जाणसालासु समोसरह फासुअ एसणिज्ज पीढफलगसेज्जासथारग ओगिण्हित्ताण विहरइ) तमे अमारी रथ शाळामा पधारो अने सुख शाति पूर्वक त्या रहो मुनि जनोचित प्रासुक એषणीय, पीठफलक शय्या सस्तारक त्यांथी मागी लेजो (तएण सेलए अणगारे मडुयस्सरण्णो एयमट्ठ तह त्ति पडिसुणेइ) मडुक राजनी आ प्रमाणे

राजा चिकित्सकान् वैद्यान् शब्दयति आह्वयति । शब्दयित्वा=आहूय, एव =वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-यूय खलु देवानुप्रियाः ! शैलकस्य राजर्षेः ' फासु एसणिज्जेण ' प्रासुकैषणीयेन यावत् औषधभेषजेन ' तेगिच्छ ' चिकित्सा रोगनिवारणोपायम् आवर्तयत कुरुत । ततस्तदनन्तर चिकित्सकाः वैद्या मण्डुकेन राज्ञैवमुक्ताः हृष्टतुष्टाः=प्रमुदिताः सन्तः शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः साधुकल्पैः प्रासुकैषणीयैरित्यर्थः, औषधभैषज्यभक्तपानैश्चिकित्सा=व्याधिप्रतीकारम्, आवर्तयति =करोति ' मज्जपाणय च, मद्यपानकच=मद्यस्य, निद्राकारकद्रव्यविशेषस्य पान च ' से ' तस्य=शैलकस्य उपदिशन्ति ।

कर आज्ञा लेकर ठहर गये । (तएणं से मडुए तिगिच्छए सद्दावेइ) इसके बाद मडुक राजा ने वैद्योंको बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा (तुब्भे ण देवाणुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेण जाव तिगिच्छ आउट्टेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शैलक राज ऋषि अनगार की प्रासुक एषणीय औषध भेषज से चिकित्सा करो । (तएण ते तेगिच्छया मडुएण रन्ना एवं वुत्ता हट्ठ तुट्ठा समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्ज भत्तपाणेहिं चिगिच्छ आउट्टें ति) इस प्रकार मडूक राजा द्वारा कहे गये उन वैद्यो ने हर्ष एव सतोष से युक्त होकर उन शैलक राजऋषि की यथा प्रवृत्त निर्दोष औषध भेषजों से तथा भक्त पानो से चिकित्सा करना प्रारभ कर दिया। (मज्ज पाणयच से उव दिंसति) और निद्रा कारक द्रव्य विशेष का पीना उन्हें बतला दिया । यहां यह जो मद्य शब्द प्रयुक्त हुआ है वह मदिरा अर्थ का वाचक नही हैं । किन्तु निद्रा कारक पेयद्रव्य विशेष का वाचक है । क्यों कि साधु

મેળવીને તેઓ ત્યા રોકાયા (तएण से मडुए तिगिच्छए सद्दावेइ) ત્યાર બાદ મડુક રાજાએ વૈદ્યોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ (तुब्भेण देवाणुप्पिया ! सेलयस्स फासुएसणिज्जे ण जाव तेगिच्छ आउट्टेह) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શૈલક રાજઋષિ અનગારની પ્રાસુક એષણીય ઔષધ અને ભેષજ થી ચિકિત્સા કરો (तएण ते तेगिच्छया मडुएण रन्ना एव वुत्ता हट्ठा तुट्ठा, समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं चिगिच्छ आउट्टेति) આ રીતે મડુક રાજાની વાત સાભળી ને હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થયેલા વૈદ્યો શૈલક રાજઋષિની ઉચિત ઔષધ અને ભેષજોથી તેમજ ભક્તપાનોથી ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરવા લાગ્યા (मज्जपाणयच से उवदिंसति) અને નિદ્રાવશ થઈ જવાય તેવા પદાર્થ વિશેષને પીવાની વિધિ તેમને બતાવી અહીં (मज्ज) મદ્ય શબ્દ આવ્યો છે તે મદિરા (દારુ) ના અર્થ

वग्घन्ने ओसन्ने ओसन्नविहारी एवं पासत्थे, २ पासत्थविहारी कुसीले २ कुसीलविहारी पमत्ते ससत्ते उउवद्धपीढफलगसेज्जा-सथरए पमत्ते यावि विहरइ। नो सचाएइ फासुएसणिज्जं पीढ पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणव-यविहार अब्भुज्जएण पयत्तेण, पग्गहिएण विहरित्तए॥ सू०३०॥

टीका-'तएण से' इत्यादि-ततस्तदनन्तर खलु स शैलक' कल्ये=प्रभाते यावत् तेजसा ज्वलति=सूर्ये उदिते सतीत्यर्थः 'सभडमत्तोवगरणमायाए' स भाण्डामत्रो पकरणमादाय भाण्डामत्राणि अशनपानादिपात्रादि तैः सहोपकरण रजोहरणादिकम् आदाय=गृहीत्वा, पान्थकप्रमुखैः पञ्चभिरनगारशतैः सार्धं शैलकपुरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव मण्डूकस्य यानशाला वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य प्रासुक पीठफलकशय्या सस्तारक गृहीत्वा यावद् विहरति। ततस्तदनन्तर खलु स मण्डुको

'तएण से सेलए' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सेलए) वे राजऋषिशैलक अनगार (कल्ल जाव जलते सभडमत्तोवगरणमायाए पथय पामोक्खेहिं पञ्च हिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुरमणुपविसइ) प्रातः काल जब सूर्य उदित होकर तेज से चमक ने लगा था "सभडमत्तोवगरणमायाए" भाण्डोपकरणको लेकर पाथक प्रमुख पाचसौ अनगारों के साथ शैलक-पुर नगर में प्रविष्ट हुए। (अणुपविसित्ता जेणेव मडुयस्स जाणसाला-तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट हो कर जहा मडूक राजा की यान शाला थी वहा पहुँचे-(उवागच्छित्ता-फासुय पीढ़ जाव विहरइ) पहुँच कर वहां से मुनि के कल्पानुसार एषणीय पीठ फलक शय्या सस्तारक की याचना

(तएण सेलए) ઇત્યાદિ॥

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર બાદ (सेलए) શૈલક અનગાર (कल्ल जाव जलते सभडमत्तोवगरणमायाए पथयपामोक्खेहिं सद्धिं सेलगपुरमणुपविसइ) સવારે સૂય ઉગ્ય પામ્યો ત્યારે (सभडमत्तोवगरणमायाए) ભાડોપકરણ લઈને પાથક પ્રમુખ પાચસો અનગારોની સાથે શૈલક પુર નગરમા પ્રવિષ્ટ થયા (अणुपविसित्ता तेणेव मडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छइ) પ્રવેશીને તેઓ જ્યાં મડૂક રાજાની રથશાળા હતી ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता फासुय पीढ जाव विहरइ) ત્યા પહોચીને શૈલક અનગારે મુનિ કલ્પાનુસાર એષણીય, પીઠ ફૂલક શય્યા સસ્તારકની યાચના કરી અને તે બધી વસ્તુઓ તેમજ આજ્ઞા

राजा चिकित्सकान् वैद्यान् शब्दयति आह्वयति. । शब्दयित्वा=आहूय, एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-यूय खलु देवानुप्रियाः ! शैलकस्य राजर्षेः ' फासु एसणिज्जेण ' प्रासुकैषणीयेन यावत् औषधभेषजेन ' तेगिच्छं ' चिकित्सा रोगनिवारणोपायम् आवर्तयत कुरुत । ततस्तदनन्तर चिकित्सकाः वैद्या मण्डुकेन राज्ञैवमुक्ताः हृष्टतुष्टाः=प्रमुदिताः सन्तः शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः साधुकल्प्यैः प्रासुकैषणीयैरित्यर्थः, औषधभैषज्यभक्तपानैश्चिकित्सा=व्याधिप्रतीकारम् आवर्तयति =करोति ' मज्जपाणय च, मद्यपानकञ्च=मद्यस्य, निद्राकारकद्रव्यविशेषस्य पानञ्च ' से ' तस्य=शैलकस्य उपदिशन्ति. ।

कर आज्ञा लेकर ठहर गये । (तएणं से मंडुए विगिच्छए सद्दावेइ) इसके बाद मंडुक राजा ने वैद्योंको बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा (तुब्भे णं देवाणुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं आउट्टेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शैलक राज ऋषि अनगार की प्रासुक एषणीय औषध भेषज से चिकित्सा करो । (तएणं ते तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता हट्ठ तुट्ठा समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं चिगिच्छं आउट्टेंति) इस प्रकार मंडूक राजा द्वारा कहे गये उन वैद्यो ने हर्ष एवं संतोष से युक्त होकर उन शैलक राजऋषि की यथा प्रवृत्त निर्दोष औषध भेषजों से तथा भक्त पानो से चिकित्सा करना प्रारंभ कर दिया। (मज्ज पाणयं च से उवदिंसंति) और निद्रा कारक द्रव्य विशेष का पीना उन्हे बतला दिया । यहा यह जो मद्य शब्द प्रयुक्त हुआ है वह मदिरा अर्थ का वाचक नहीं हैं । किन्तु निद्रा कारक पेयद्रव्य विशेष का वाचक है । क्यों कि साधु

મેળવીને તેઓ ત્યા રોકાયા (तएणं से मंडुए विगिच्छए सद्दावेइ) ત્યાર બાદ મંડુક રાજાએ વૈદ્યોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું (तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं आउट्टेह) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શૈલક રાજઋષિ અનગારની પ્રાસુક એષણીય ઔષધ અને ભેષજ થી ચિકિત્સા કરો (तएणं ते तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता हट्ठा तुट्ठा, समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं चिगिच्छं आउट्टेंति) આ રીતે મંડુક રાજાની વાત સાભળી ને હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થયેલા વૈદ્યો શૈલક રાજઋષિની ઉચિત ઔષધ અને ભેષજોથી તેમજ ભક્તપાનોથી ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરવા લાગ્યા (मज्जपाणयं च से उवदिंसंति) અને નિદ્રાવશ થઈ શકાય તેવા પદાર્થ વિશેષને પીવાની વિધિ તેમને સમજાવી અહીં (मज्ज) મદ્ય શબ્દ આવ્યો છે તે મદિરા (દારુ) ના અર્થ

इह मद्यशब्दो न मदिरार्थकः किंतु निद्राजनक-पानद्रव्यविशेषार्थक । साधो श्चिकित्साया प्राशुकैषणीयोषधानामेव प्रस्तुतत्वादिह मदिरायाः प्रसङ्गाभावात् साधोर्मद्यपानानधिकारित्वात् आगमेहि साधोर्मद्यपानप्रतिषेधात् मद्यपानस्य चारित्र विध्वंसकत्वाच्च, साधोः सुरापानेन साधुत्वभङ्गापत्तेश्च, यथा दशवैकालिकसूत्रे-

सुर वा मेरग वावि अन्नय मज्जग रस ।
ससक्ख न पिवे भिक्खू जस सारक्खमप्पणो ॥ अ०५, उ०२,गा०३६ ।
वड्ढई सुडिया तस्स माया मोसं च भिक्खुणो ।
आजसो य अनिव्वाण सयय च असाहुया ॥ अ५ उ०२, गा०३८।

जनों की चिकित्सा में प्रासुक एषणीय औषधियों का ही विधान है और यही कारण यहा चल रहा है। यहा मदिरा का तो कोई प्रकरण ही नही चल रहा है। दूसरे साधुओं को मद्यपान का अधिकार ही नहीं है। वे उसके शास्त्रीय मर्यादा के अनुसार अनधिकारी हैं। आगम में साधुओ को मद्यपान करने का निषेध किया गया है। कारण वह चारित्र का विध्वसक होता है। जहा चारित्र नहीं वहां साधुता कैसी सुरापान से साधुता का भग होता है यह बात आगम में स्पष्ट है- जैसे दश वैकालिक सूत्र में "सुर वा मेरग वावि अन्न वा मज्जग रस, ससक्ख न पिवे भिक्खू जस सारक्खमप्पणो" अ०५ उ०२ गा ३६ वड्ढई सुडिया तस्स माया मोस च भिक्खुणो अजसोय अनिव्वा

ને બતાવવા માટે નહિ પણ નિદ્રાવર્ગ થવાય તેવા પેટા પદાર્થ વિશેષ ને સૂચવવા માટે પ્રયુક્ત થયેા છે કેમકે-સાધુઓની ચિકિત્સામા પ્રાસુક એષણીય ઔષધીઓજ ગ્રાહ્ય સમજાય છે અહી પ્રકરણ પણ ઔષધીઓનુ જ ચાલી રહ્યુ છે મદિરા વિષે ની તેા અહી કઈ વાત જ નથી બીજી વાત એ પણ છે કે સાધુઓને મદ્યપાન નેા અધિકાર પણ નથી, શાસ્ત્રીય વિધિવિધાનની દૃષ્ટિએ તેઓ મદ્યપાનની બાબતમા અનધિકારી ગણાય છે આ ગમે તે સાધુઓને મદ્યપાન કરવાની મના કરી છે કેમકે મદ્યપાનથી ચારિત્ર નષ્ટ થાય છે જયા ચારિત્ર નથી ત્યા સાધુતાની કલ્પના કરવીજ વ્યર્થ છે દારૂ પીવાથી સાધુતા નાશ પામે છે આ વાત આગમમા સ્પષ્ટ રીતે સમજાવવામા આવી છે દા ત ' દશ વૈકલ્પિક સૂત્ર " મા સ્પષ્ટ પણે કહેવામા આવ્યુ છે કે-(सुरं वा मेरगं वा वावि अन्न वा मज्जगरस, ससक्खं न पिवे भिक्खू जस सारक्खं मप्पणो) अ प, उ २, गा ३६ वड्ढई सुडिया तस्स माया मोसच

'भिक्खू' भिक्षु' 'अप्पणो' आत्मन. स्वस्य, 'जस' यश' सयम 'सार क्ख' सरक्षन 'सुर' सुरा मदिराना 'मेरग' मेरक सरकानामधेय मद्य 'वावि' वाऽपि 'अन्न वा' अन्यद्वा=अन्यमपिमदिरजात 'मज्जग' माद्यक मदजनक रस 'ससक्ख' ससाक्षि 'न पिवे' न पिवेत् साक्षिमि कैवल्यादिभिः सहेति ससाक्षि, केवल्यादिक साक्षीकृत्येत्यर्थ । एकान्तेऽपि न पिवेदिति भावः । ३६ ॥

'तस्स' तस्य सुरापायिनः 'भिक्खुणो' भिक्षोः साधोः 'सयय' सतत 'सुण्डिया' मद्यपानविषयाऽऽसक्ति', च पुनः माया=कपट 'मोस' मृपा असत्यभाषण, च पुन' 'अजसो' अयशः अपकीर्तिः असयमश्च 'अनिव्वाण' अनिर्वाणम्-अनुपशान्ति, च पुनः 'असाहुया' असाधुता साधु पदानर्हत्व वर्तते। सर्वानर्थमूल मद्यपानमिति भावः ॥ ३८ ॥

अनयोर्विस्तृतव्याख्या दशवैकालिकसूत्रस्य मत्कृताऽऽचारमणिमञ्जूपातोऽव गन्तव्या ।

वैद्यकेऽपि-बुद्धिभ्रशकरत्वान्मद्य प्रतिपिद्धमितिगो यते। 'शालिग्रामनिघटु'

ण समय च असाहुया" अ० ५ उ०२ गाथा ३८ इन दो गाथाओ द्वारा यह कहा गया है कि जो साधु अपने सयम रूप यश की रक्षा करना चाहता है वह मदिरा मेरक-सरका तथा और भी जो मादक द्रव्य है उनका सेवन न करे। इस के सेवन करने से सेवन करने वाले में मद्यपान विषयक आसक्ति बढती है, कपट असत्य भाषण असमभाव की वृद्धी होती है और परिणामो में शान्ति नही रहती है। असाधुता जगती है-बढती है। मद्यपान समस्त अनर्थो का मूल कारण है। इन दोनो गाथाओं की विस्तृत व्याख्या मैंने दश वैकालि सूत्र के आचार मणि मजूषा में की है। वहा से जान लेनी चाहिये। वैद्यक ग्रन्थ जो शालिग्राम निघटु है उस में भी बुद्धि को ध्वस करने वाली होने के

भिक्खुणो अजसोय अनिव्वा ण समय च असाहुया) अ ५ उ २, गाथा ३८ આ બે ગાથાઓ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે કે જે સાધુઓ પોતાના સયમ રૂપ યશને રક્ષવા ચાહે છે, તે મદિરા (દારૂ) મેરક (સરકો) અને બીજા પણ કેટલાક મદક પદાર્થો છે તેમનુ સેવન કરે નહિ એમના સેવનથી સેવન કરનારમા મદ્યપાન વિષેની આસક્તિ વધે છે કપટ અસત્ય વચન અને અસયમ જેવા ભાવોની પણ વૃદ્ધિ થાય છે, અને છેવટે એનાથી જીવનમા અશાતિ ભગ થાય છે અસાધુતા (દુષ્ટતા) વધે છે ખરેખર મદ્યપાન જગતના બધા અનર્થોનુ મૂળકારણ છે ઉક્ત બને ગાથાઓની અવિસ્તર વ્યાખ્યા 'દશવૈકાલિક સૂત્ર'ની આચાર મણિ મજૂષામા આવી છે જિજ્ઞા [illegible] જાણી લેવુ જોઈએ 'શાલિગ્રામ નિઘટુ' નામે વૈદક ગ્રથમા

कथ तर्हि सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयसरक्षकस्य साधोश्चिकित्साया मद्यपानाधिकारः स्यात् ।

आचाराङ्ग सूत्रेऽपि (श्रु० २, उ० २) मद्यपानस्य सङ्कल्पेनापि साधुः प्रायश्चित्तभागी भवतीति प्रतिबोधितम् उक्त चान्यत्रापि यथा-

अज्ञानाद् वारुणीं पीत्वा सस्कारेणैव शुध्यति ।
मतिपूर्वमनिर्देश्य प्राणान्तिकमिति स्थितिः ॥ मनु० अ० ११-श्लो० १४६ ।

मदिरामज्ञात्वा यदि पिबेत् तर्हि पुनरुपनयनसंस्कारेणैव शुध्यति, नान्यथेति भाव । यदि मदिरा ज्ञात्वा पिबेत् तर्हि प्राणान्तकरणेनैव शुध्यति नान्यथेति स्थितिर्धर्मस्य मर्यादाऽस्तीत्यर्थः ।

कारण मद्यपान निषिद्ध किया है । अत. विचार ने जैसी बात है कि साधु जो तपसजम का सरक्षक होना है वह अपनी चिकित्सा कराने में मद्यपान का अधिकारी कैसे हो सकता है । आचाराङ्ग सूत्र में भी (श्रु० २ उ०२) मद्यपान करने को सकल्प भी साधुओ को त्याग देना चाहिये । यदि वह ऐसा करता है तो उसे प्रायश्चित्त का भागी बनना पड़ता है । अन्य सिद्धान्त कारों ने भी " अज्ञानात् वारुणीं पीत्वा सस्कारेणैव शुद्धयति, मतिपूर्वमनिर्देश्य प्राणान्तिक मितिस्थितिः । मनु स्मृति० अ० ११ श्लोक १४६, इस श्लोक द्वारा विषय समझाया है कि यदि कोइ अज्ञान भाव से मदिरा को पी लेता है तो वह पुन. उपनयन सस्कार से ही शुद्ध हो सकता है अन्यथा नहीं । यदि वह जानबूझ कर मदिरा का सेवन करता है तो वह अपने प्राण अर्पण कर ही शुद्ध हो

પણ મદિરાને બુદ્ધિને નષ્ટ કરનારી હોવા થકલ તેનો વિધેય સૂચ ચો છે એટલે આવી નાની સરખી વાતોતો દરેક વ્યક્તિ સમજી શકે છે તો પછી રત્નત્રયના સરક્ષક સાધુજનો પોતાની ચિકિત્સામા પણ મદિરા પ'ન કેવી રીો કરી શકે છે ? તેઓ આવુ કરેતો તેમને તેનુ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવુ પડે છે બીજા પણ શાસ્ત્રકારો મદિરાનો નિષેધ કરતા કહેછે (अज्ञानात्, वारुणीं पीत्वा संस्कारेणैव शुद्धयति । मतिपूर्वमनिर्देश्य प्राणान्तिकमिति स्थिति ॥ मनुस्मृति अध्याय ११ श्लोक-१४६ ।) આશ્લોક વડે કહેવામા આવ્યુ છે કે જો કોઇ અજ્ઞાનુમા પણ મદિરાનુ સેવન કરી જાય તો યજ્ઞોપવીત (જનોઇ) સસ્કારથી તે ફરી શુદ્ધ થાય છે અને જો તે જોણી બૂજીને મદિરાનુ સેવન કરે તો પોતાના પ્રાણોને અર્પણ કરીને એટલે કે મૃત્યુને ભેટીને જ તે શુદ્ધ થઈ શકે છે, બીજા કોઇપણ ઉપાયથી તેની શુદ્ધિ અસભવિત છે ધર્મશાસ્ત્રોનુ એજ વિધાને

अत्रत्य पूर्वापरमूलपाठसमालोचनतोऽप्यत्र मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्व न सिध्यति तथाहि-यथाप्रवृत्तैश्चिकित्सकैर्यथाप्रवृत्तेनौषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सामावर्तयामीति स्वीकृत्य मण्डूकेन शैलकानगार इत्थ प्रार्थितः-यूय खलु प्रासुकमेषणीय पीठफलकादिकमदगृह्य विहरतेति, शैलकानगारस्तथेति प्रतिश्रुत्य मण्डूकस्य यानशालाया तथैव विहरतिस्म ततोमण्डूकेन चिकित्सका आदिष्टा -प्रासुकैषणीयेन यावत् चिकित्सामावर्तयतेति ततश्चिकित्सका मण्डूकस्याज्ञानुसारेण प्रासुकैषणीयैरेषोपधादिभिश्चिकित्सा कुर्वत' साधोरकल्प्य प्रवचननिषिद्ध मण्डूकेनाप्यनादिष्ट तदाज्ञाविरुद्ध मत्र पाययितु कथ प्रवृत्ताः स्युः ! कथमपि न ।

सकता है अन्यथा नहीं। यही धर्म की मर्यादा है। यहां पर के पूर्वा पर के मूल पाठ के समालोचन से भी मद्यशब्द में मदिरा अर्थ सिद्ध नही होता है। जब मडूक राजा ने शैलक राजऋषि के समक्ष यह प्रार्थना की-कि मैं 'यथा प्रवृत्तेन औषध भैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सा आवर्तयामि' रोगोपशमन करने में समर्थ वैद्यों के द्वारा यथा योग्य निर्दोष प्रासुक औषध भैषज्य से आपकी चिकित्सा कराऊँगा आप मेरी यानशाला में प्रासुक एषणीय पीठ फलक आदि की याचना करके वहां रहें तब इस मडूक राजा की प्रार्थना को सुनकर वे शैलक अनगार 'तथेति' कहकर उसे स्वीकार कर के वहा उनकी यानशाला में आये। इनके आते ही मडूक ने वैद्यों को बुलाकर यह आदेश दिया कि आप लोग प्रासुक एषणीय आदि औषध भेषज से इनकी चिकित्सा करें। तब उन वैद्यों ने मडूक की आज्ञानुसार प्रासुक एषणीय औषध आदि से उनकी चिकित्सा करने लगे। फिर सोचने की बात है कि जब साधु

છે અહીં પૂર્વાપરના મૂળપાઠથી પણ મદ્યશબ્દથી મદિરા વિષેનો અર્થ સિદ્ધ થતો નથી જેમકે મડૂક રાજાએ શૈલક રાજ ઋષિની સામે વિનતી કરતા કહ્યુ-(यथाप्रवृत्तकै चिकित्सकैं यथाप्रवृत्तेन औषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सा आवर्तयामि) રોગોને મટાડનારા સમર્થ વૈદ્યોદ્વારા હું યથોચિત પ્રાસુક ઔષધ ભૈષજ્યથી તમારી ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરાવીશ માટે સ્થનાળામા તમે પ્રાસુક એષણીય પીઠ ફલક વગેરેની યાચના કરીને ત્યા રોકાઓ ત્યારે મડૂક રાજાની વિનતીને સ્વીકારતા ' तथेति' (માઢ) કહીને તેઓ તેમની સ્થનાળામા આવ્યા શૈલક અનગારની ચિકિત્સા માટે મડૂકે વૈદ્યોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને એમ આજ્ઞા કરી કે તમે પ્રાસુક એષણીય વગેરે ભેષજવા એમની ચિકિત્સા ગરુ કરો વૈદ્યોપણ મડૂક રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણેજ પ્રાસુ- એષણીય રેથી તેમની ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરવા લાગ્યા એની સાથે સાથે

कथ तर्हि सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयसरक्षकस्य साधोश्चिकित्साया मद्यपानाधिकारः स्यात् ।

आचाराङ्ग सूत्रेऽपि (श्रु० २, उ० २) मद्यपानस्य सकल्पेनापि साधु' प्रायश्चित्तभागी भवतीति प्रतिबोधितम् उक्त चान्यत्रापि यथा-

अज्ञानाद् वारुणीं पीत्वा सस्कारेणैव शुध्यति ।
मतिपूर्वमनिर्देश्य प्राणान्तिकमिति स्थिति. ॥ मनु० अ० ११-श्लो० १४६ ।
मदिरामज्ञात्वा यदि पिबेत् तर्हि पुनरुपनयनसंस्कारेणैव शुध्यति, नान्यथेति भाव । यदि मदिरा ज्ञात्वा पिबेत् तर्हि प्राणान्तकरणेनैव शुध्यति नान्यथेति स्थितिर्धर्मस्य मर्यादाऽस्तीत्यर्थः ।

कारण मद्यपान निषिद्ध किया है । अतः विचार ने जैसी बात है कि साधु जो तपसजम का सरक्षक होता है वह अपनी चिकित्सा कराने में मद्यपान का अधिकारी कैसे हो सकता है । आचाराङ्ग सूत्र में भी (श्रु० २ उ०२) मद्यपान करने को सकल्प भी साधुओ को त्याग देना चाहिये । यदि वह ऐसा करता है तो उसे प्रायश्चित्त का भागी बनना पड़ता है । अन्य सिद्धान्त कारों ने भी " अज्ञानात् वारुणी पीत्वा सस्कारेणैव शुद्धयति, मतिपूर्वमनिर्देश्य प्राणान्तिक मितिस्थितिः । मनु स्मृति० अ० ११ श्लोक १४६, इस श्लोक द्वारा विषय समझाया है कि यदि कोइ अज्ञान भाव से मदिरा को पी लेता है तो वह पुन. उपनयन सस्कार से ही शुद्ध हो सकता है *अन्यथा नही । यदि वह जानबूझ कर* मदिरा का सेवन करता है तो वह अपने प्राण अर्पण कर ही शुद्ध हो

પણ મદિરાને બુદ્ધિને નષ્ટ કરનારી હોવા બદલ તેનો વિધેય સૂચ વેા છે એટલે આવી નાની સરખી વાતોતો દરેક વ્યક્તિ સમજી શકે છે તો પછી રત્નત્રયના સરક્ષક સાધુજનો પોતાની ચિકિત્સામા પણ મદિરા પન કેવી રીતે કરી શકે છે ? તેઓ આવુ કરેતો તેમને તેનુ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવુ પડે છે બીજા પણ શાસ્ત્રકારો મદિરાનો નિષેધ કરતા કહેછે (अज्ञानात्, वारुणीं पीत्वा संस्कारेणैव शुद्धयति । मतिपूर्वमनिर्देश्य प्राणान्तिकमिति स्थिति ॥ मनुस्मृति अध्याय ११ श्लोक-१४६ ।) આશ્લોક વડે કહેવામા આવ્યુ છે કે જો કોઇ અજાણમા પણ મદિરાનુ સેવન કરી જાય તો યજ્ઞોપવીત (જનોઇ) સસ્કારથી તે ફરી શુદ્ધ થાય છે અને જો તે જાણી બૂજીને મદિરાનુ સેવન કરે તો પોતાનો પ્રાણોને અર્પણ કરીને એટલે કે મૃત્યુને ભેટીને જ તે શુદ્ધ થઈ શકે છે, બીજા કોઈપણ ઉપાયથી તેની શુદ્ધિ અસભવિત છે ધર્મશાસ્ત્રોનુ એજ વિધાન

किं च-मद्यपानात् पूर्वापरङ्गकाले सुखप्रसुप्तस्य शैलकस्य राजर्षेः चातुर्मासिकं प्रतिक्रमितुकामेन पान्थकेन क्षमापनार्थं शिरसा तच्चरणसम्पर्शे कृते सति स उत्थाय क्रोधाविष्टो जातः । ततोऽसौ पान्थकः शैलकानगारं वन्दमानः स्वशीर्षेण तच्चरणयोः स्पृशन् प्रार्थयतिस्म-क्षमस्व मेऽपराध, नैव पुनः करिष्ये इति । मद्यशब्दस्य निषिद्धमद्यार्थकत्वेतु-मूलसूत्रे शैलकस्य राजर्षित्विशेषण नोपपद्यते,पान्थकानगारकृत तद् वन्दनादिकं च विरुध्यते ।

किं च-मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्वस्वीकारे शैलकस्य पश्चात्तापादये सति विशुद्ध-

---

वैयावृत्ति करना भी विरुद्ध पडता है । किं च मद्य के पान करने से पूर्वापराह्नकाल में सुख से सुप्त हुए शैलक राजऋषि के, चातुर्मासि प्रतिक्रमण करने की इच्छा से जब क्षमापना याचनार्थ मस्तक से चरणो का स्पर्श किया तो वे जग गये और अचानक निद्रा भग होने से उन्हें क्रोध आ गया । पांथक ने जब उनकी यह दशा देखी तो उसने नमन करते हुए उनके चरणो को छूकर प्रार्थना की महाराज ! आप मेरे अपराध को क्षमा कीजिये आगे ऐसा अब नही करूगा । यदि मद्य शब्द को निषिद्ध मद्यार्थक-मदिरार्थक-माना जावे तो मूल सूत्र में शैलक के लिये जो राजऋषि शब्द का प्रयोग किया गया है-उन्हें जो राजऋषि के विशेषण से विशेषित किया है-वह नही बनता है और न पाथक अनगार कृत उन के प्रति वदना आदि कृत्य युक्ति सगत बैठते हैं ।-यदि यहां मद्य शब्द को मदिरार्थक स्वीकार किया जावे तो उन्हें जो पश्चात्ताप के

હોવા બદલ પાથક અનગારની તેમની માટેની વૈયાવૃત્તિ પણ ઉચિત ગણાત જ નહિ અને બીજુ કે જ્યારે મદ્યપાન કરીને પૂર્વાપરાહ્ન કાળમા શૈલક રાજ ઋષિ સુખેથી સૂતા હતા ત્યારે ચાતુર્માસિ પ્રાતિક્રમણ કરવાની ઇચ્છાથી જ્યારે ક્ષમાપના તાટે પાથકે તેમના ચરણોમા પોતાના મસ્તકનો સ્પર્શ કર્યો ત્યારે તેઓ જાગ્રત થઈ ગયા અને ઓચિંતા નિદ્રાભગ થતા તેઓ ક્રોધાવિષ્ટ થઈ ગયા પાથકે તેમને ગુસ્સે થયેલા જોઈને ફરી તેમના ચરણોમા મસ્તક નમાવીને વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે ભગવાન ! મારો ગુનો માફ કરો ફરીથી આવુ નહિ થાય જો મદ્ય શબ્દ મદિરાના અર્થને સૂચવનારો હોયતો મૂળસૂત્રમા શૈલકના માટે રાજઋષિ શબ્દનો પ્રયોગ કરવામા આવ્યો છે,તેમને રાજઋષિના વિશેષણથી સબોધવામા આ યા છે તે કેવા રીતે બને ? પાથક અનગારે તેમના પ્રત્યે ક્ષમાપના રૂપ વદન વિનય વગેરે બતાવ્યો તે પણ ઉચિત કેવી રીતે કહી શકાય ? બીજુ કે જો મદ્ય શબ્દને મદિરાના અર્થમા સ્વીકારીએ તો શૈલક અનગાર પશ્ચાત્તાપના દ્વારથી વિશુદ્ધ ચારિત્રના આરાધન

अग्रिममूलपाठावलोकनेन च मूलगुणनाशक निषिद्धमद्यमिह नैव विज्ञायते, तथाहि-चतुर्विधाऽऽहारे मद्यपाने च मूर्च्छितस्यापि शैलकस्य प्रमादद्दोषवशात् केवलं जनपदविहारानर्हता जाता, न तु मूलगुणनाशस्तस्याभूदिति विज्ञाय पान्थकप्रमुखेषु पञ्चशतानगारेषु प्रधानतया मुख्य पान्थकमनगारं तस्य वैयावृत्यकरणार्थं स्थापयित्वा पान्थकवर्जितास्ते सर्वेऽनगारा बहिर्जनपदविहार विहरन्तिस्मेति वक्ष्यते। यदि शैलकेन निषिद्धमद्य सेवित स्यात् तर्हि तस्मिन् मूलगुणरहितेऽनगारधर्मात् प्रच्युते च सति पान्थकानगारस्य तद्वैयावृत्यकरण विरुध्यते ।

मर्यादा के अनुसार अकल्प्य तथा प्रवचन निषिद्ध वस्तु के देने के लिये मडूक राजा ने उन से नही कहा तो भला वे उसकी आज्ञा के विरुद्ध मद्य उन्हें कैसे पिलाने में समर्थ हो सकते थे। तथा आगे का मूल पाठ देख ने से भी यही बात पुष्ट होती है कि मूल गुणों का विना शक निषिद्ध मद्य इस मद्य शब्द का वाच्यार्थ नहीं हो सकता है। तथा हि- "चतुर्विध आहार एव मद्यपान में मूर्च्छित बने हुए भी शैलक को प्रमाद दोष के वश से केवल जन पदो में विहार करने की ओर से ही अशक्ति आ गई है, उनके मूलगुणो का नाश नही हुआ है ऐसा समझ कर पांथक को छोड और समस्त मुनिजन वहा से बाहिरजन पदों में विहार कर गये और पाथक को वे उनकी वयावृत्ति करने के लिये छोड़ गये। ऐसा सूत्रकार आगे कहेंगें। यदि शैलक ने निषिद्ध मद्यका सेवन किया होता तो वे मूलगुणो से भी रहित हो जाते और इस तरह अनगार धर्म से रहित होने पर पांथक अनगार को उनकी

બીજી વાત એ પણ છે કે જ્યારે સાધુમર્યાદા મુજબ અકલ્પ્ય તેમજ પ્રવચન નિષિદ્ધ વસ્તુ ને આપવા માટે મડૂક રાજાએ વૈદ્યોને આદેશ આપ્યો નહિ તો વૈદ્યોની શી તાકાત કે તેઓ તેમની આજ્ઞાને ઓળગીને શૈલક અનગારને મદ્ય પીવડાવે ? તેમજ આગળના "મૂળ પાઠને" જોવાથી પણ આવાત સિદ્ધ થાય છે કે ગુણોને નષ્ટ કરનાર મદ્ય અહીં મદ્ય-શબ્દનો વાચ્યાર્થ થઈ શકે જ નહિ જેમકે- ચાર જાતના આહાર અને મદ્ય પાનમા મૂર્છાવશ થયેલા શૈલકને પ્રમાદ દોષથી ફક્ત જનપદો વિહાર કરવા માટેની અશક્તિ જ આવી ગઇ છે તેમના મૂળગુણોનો નાશ થયો નથી આવુ સમજીને જ પાથકને ત્યા મૂકીને બધા મુનિઓ ત્યાથી બીજા બહારના જનપદોમા વિહાર કરવા માટે નીકળી પડયા પાથકને શૈલકની વૈયાવૃત્તિ માટેજ મુનિઓ મૂકીને ગયા હતા આ સૂત્રકાર આ પ્રમાણે આગળ વર્ણન કરવાના જ છે હવે જો શૈલકે આગમનિષિદ્ધ મદિરાનુ સેવન કર્યું હોતતો તેઓ મૂળ ગુણોથી પણ હીન થઈ જાત અને આ પ્રમાણે અનગાર ધર્મ રહિત

किं च-मद्यपानात् पूर्वापरह्णकाले सुखप्रसुप्तस्य शैलकस्य राजर्षेः चातुर्मासिके प्रतिक्रमितुकामेन पान्थकेन क्षमापनार्थं शिरसा तच्चरणसम्पर्शे कृते सति स उत्थाय क्रोधाविष्टो जातः। ततोऽसौ पान्थकः शैलकानगारं वन्दमानः स्वशीर्षेण तच्चरणयोः स्पृशन् प्रार्थयतिस्म-क्षमस्व मेऽपराध, नैव पुनः करिष्ये इति। मद्यशब्दस्य निषिद्धमद्यार्थकत्वेतु-मूलसूत्रे शैलकस्य राजर्षित्विशेषण नोपपद्यते,पान्थकानगारकृत तद् वन्दनादिकं च विरुध्यते।

किं च-मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्वस्वीकारे शैलकस्य पश्चात्तापादये सति विशुद्ध-

---

वैयावृत्ति करना भी विरुद्ध पडता है। किं च मद्य के पान करने से पूर्वापराह्णकाल में सुख से सुप्त हुए शैलक राजऋषि के, चातुर्मासि प्रतिक्रमण करने की इच्छा से जब क्षमापना याचनार्थ मस्तक से चरणो का स्पर्श किया तो वे जग गये और अचानक निद्रा भग होने से उन्हें क्रोध आ गया। पांथक ने जब उनकी यह दशा देखी तो उसने नमन करते हुए उनके चरणो को छूकर प्रार्थना की महाराज! आप मेरे अपराध को क्षमा कीजिये आगे ऐसा अब नही करूगा। यदि मद्य शब्द को निषिद्ध मद्यार्थक-मदिरार्थक-माना जावे तो मूल सूत्र में शैलक के लिये जो राजऋषि शब्द का प्रयोग किया गया है-उन्हें जो राजऋषि के विशेषण से विशेषित किया है-वह नही बनता है और न पाथक अनगार कृत उन के प्रति वदना आदि कृत्य युक्ति सगत बैठते है।-यदि यहां मद्य शब्द को मदिरार्थक स्वीकार किया जावे तो उन्हें जो पश्चात्ताप के

હોવા બદલ પાથક અનગારની તેમની માટેની વૈયાવૃત્તિ પણ ઉચિત ગણાત જ નહિ અને બીજુ કે જ્યારે મદ્યપાન કરીને પૂર્વાપરાહ્ન કાળમા શૈલક રાજ ઋષિ સુખેથી સૂતા હતા ત્યારે ચાતુર્માસિ પ્રાતિક્રમણ કરવાની ઇચ્છાથી જ્યારે ક્ષમાપના તાટે પાથકે તેમના ચરણોમા પોતાના મસ્તકનો સ્પર્શ કર્યો ત્યારે તેઓ જાગ્રત થઈ ગયા અને ઓચિંતા નિદ્રાભગ થતા તેઓ ક્રોધાવિષ્ટ થઈ ગયા પાથકે તેમને ગુસ્સે થયેલા જોઈને ફરી તેમના ચરણોમા મસ્તક નમાવીને વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે ભગવાન! મારો ગુનો માફ કરો ફરીથી આવુ નહિ થાય જો મદ્ય શબ્દ મદિરાના અર્થને સૂચવનારો હોયતો મૂળસૂત્રમા શૈલકના માટે રાજઋષિ શબ્દનો પ્રયોગ કરવામા આવ્યો છે,તેમને રાજઋષિના વિશેષણથી ન બોધવામા આવ્યા છે તે કેવી રીતે બને? પાથક અનગારે તેમના પ્રત્યે ક્ષમાપના રૂપ વદન વિનય વગેરે બતાવ્યો તે પણ ઉચિત કેવી રીતે કહી શકાય? બીજુ કે જો મદ્ય શબ્દને મદિરાના અર્થમા સ્વીકારીએ તો શૈલક અનગાર પશ્ચાત્તાપના દ્વારા વિશુદ્ધ ચારિત્રના આરાધન

चारित्राराधनार्थं कृत प्रतिज्ञस्य कृतनिश्चयस्य तदनन्तरद्वितीयेह्नि प्रभातकाले आनुपूर्व्या ग्रामानुग्रामविहारार्थं प्रवृत्तिरपि पुनः प्रायश्चित्तग्रहणमन्तरेण नोपपद्यते। तस्मादत्र मद्यशब्दो नास्ति मदिरार्थकः। किं तु-'मज्जपाणय पीए पुव्वावरण्हकालसमयसि सुहप्पसुत्ते' इत्यग्रिममूलपाठप्रामाण्यात् निद्राजनकपानद्रव्यविशेषार्थक एवेति निश्चीयते।

तत्त्वतः पूर्वापरमूलपाठपर्यालोचनेन 'मज्जपाणय च से उपदिसति' 'जाव-मज्जपाणेण' मज्जपाणए य मुच्छिए' 'सुबहु मज्जपाणय पीए' इति-पाठाः प्रक्षिप्ता एवेति सुधियो विमर्शयन्तु।

ततस्तदनन्तर तस्य शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः प्रासुकैषणीयैर्यावत्-औषधभैषज्यैर्-अध्याहारैश्च रोगातङ्काः उपशान्ता अभूवन्, हृष्टः=प्रसन्नचित्तः, मल्लशरीरः=मल्लवत्

उदय होने पर विशुद्ध चारित्र आराधन के लिये कृत निश्चय देखा-जाता है और उसके बाद जो द्वितीय दिन प्रातःकाल में आनुपूर्व्या ग्रामा-नुग्राम विहार की उनमें प्रवृत्ति पाई जाती है वह भी नहीं घटित हो सकती है। कारण प्रायश्चित्त ग्रहण के विना ऐसी प्रवृत्ति होती नहीं है। इसलिये यहां मद्य शब्द मदिरार्थक नहीं हैं किन्तु यह "मज्ज पाणय पीए पुव्वावरण्हकालसमयसि सुहप्पसुत्ते" इस अग्रिम मूल पाठ की प्रमाणता से निद्राजनक पान द्रव्य विशेष अर्थवाला ही है ऐसा निश्चित होता है। तत्वतः विचार किया जावे तो पूर्वापर मूल पाठों की पर्यालोचना से "मज्जपाणय च से उपदिसति जाव मज्जपाणेण. मज्जपाणए य मुच्छिए, मज्जपाणए मुच्छिए, सुबहु मज्जपाणय पीए" ये सब पाठ प्रक्षिप्त ही ज्ञात होते हैं ऐसा बुद्धिमान् जन विचार करें। (तएणतस्स सेलयस्स अहापवत्तेहिं जाव मज्जणपाणेण रोयायके उवसते

માટે કૃત પ્રતિજ્ઞ દેખાય છે અને ત્યાર બાદ તેઓ બીજા દિવસે સવારે જ પૂર્વપર પરા અનુસાર એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરવાની ઇચ્છા કરે છે જો આવુ હોતતો તેમનામા આવી ઇચ્છા પણ પ્રકટ કેવી રીતે થાત ? કેમકે પ્રાયશ્ચિત્ત વગર આવુ તે કરી શકે જ નહિ એટલા માટે, અહીં મદ્ય શબ્દ મદિરાનો અર્થ સૂચવતો નથી પણ (मज्जपाणय पीए पुव्वावरण्हकालसमयसि सुहप्पसुत्ते " મદ્ય શબ્દ મૂળપાઠને અનુલક્ષી તે નિદ્રા જનક પાન દ્રવ્ય વિશેષ " અર્થ ને જ સૂચવનારો છે (मज्जपाणय च से उपदिसति जाव मज्जपाणेण मज्जपाणए य मुच्छिए मज्जपाणए मुच्छिए, सुबहुमज्जपाणय पीए) પૂર્વાપરની અપેક્ષાએ મૂળપાઠ વિષે આપણે ગભીર પણે વિચાર કરીએ તો ઉક્ત પાઠ પ્રક્ષિપ્ત જ લાગશે (तएण तस्स सेलयस्स अहापवत्तेहिं जाव मज्जणपाणेण रोया

पुष्टशरीर. जात , व्यपगतरोगातङ्कः=सर्वव्याधिरहितो जात इत्यर्थः । ततः खलु स शैलकस्तस्मिन् रोगातङ्के उपशान्ते सति तस्मिन् विपुले=अतिशये अशनपानखाद्यस्वाद्ये=चतुर्विधाऽऽहारे मद्यपानके च निद्राजनकपानद्रव्यविशेषे च मूर्च्छितः आसक्तः ग्रथितः-स्नेहरज्जुभिर्बद्धः गृद्धो=लोलुप ' अज्झोववन्ने ' अ युपपन्न,, सरसाहाराद्यधीनजीवन । ' ओसन्नो ' अवसन्नः=अवसन्न इवावसन्नः श्रान्ततुल्यः, आवश्यक-स्वाध्यायप्रतिलेखन-यानादिक्रियासु शैथिल्येन श्रान्तइवमोक्षमार्गे शि-

---

होत्था) इस प्रकार इस शैलक राजऋषि के यथा प्रवृत्त प्रासुक एषणीय यावत्-औषध भैषज्यो से और पथ्याहार से रोगातक उपशमित हो गये (हट्ठे मरुअ सरीरे जाए ववगयरोयायके, तएणं सेलए तंसि रोगायकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण० पाण खाइम साइमे मज्जपाणेण य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एव पासत्थे २ पासत्थ विहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते ससत्ते उउवद्धपीठफलकसेज्जासंथारए पमत्ते यावि विहरइ) वह प्रसन्न चित्त हो गया शरीर से भी मल्ल की तरह पुष्ट हो गये। इस प्रकार रोग और आतको से सर्वथा रहित हो गये। इस के बाद वह राजऋषि विविध प्रकार के विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार में एव मद्यपान मे आसक्त हो गये। उन में स्नेह रूपी रज्जु से बन्ध गये-गृद्ध-लोलुप-हो गये और सरस आहार के आधीन जीवन वाले बन गये। थके हुए व्यक्ति की तरह वह स्वाध्याय,

---

थके उवसंते होत्था) આ પ્રમાણે યથા પ્રવૃત્ત પ્રાસુક એષણીય યાવત્ ઔષધ ભૈષજ્યોથી અને યોગ્ય પથ્ય આહારથી શૈલક રાજઋષિના રોગો મટી ગયા (हट्ठे मल्लसरीरे जाए ववगयरोयायके, तएणं सेलए तंसिरोगायकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण०पाण खाइम साइमे मज्जपाणेणय मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एव पासत्थे २ पासत्थविहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते ससत्ते उउवद्धपीठफलगसेज्जासंथारए पमत्ते यावि विहरइ) તેઓ શરીરથી પુષ્ટ તેમજ પ્રસન્ન ચિત્ત થઇ ગયા આ રીતે રોગ અને આતકો થી તેઓએ એકદમ મુક્તિ મેળવી લીધી ત્યારબાદ તેઓ જાત જાતના પુ કળ પ્રમાણમા બનાવવામા આવેલા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર પ્રકારના આહારમા તથા મદ્યપાનમા આસક્ત થઈ ગયા તેઓ સ્નેહરૂપી દોરીથી બધાઇ ગયા ગૃદ્ધ-એટલે કે લોલુપ થઇને સરસ આહારોના સેવનમા તેઓ ટેવાઈ ગયા શ્રાન્ત વ્યક્તિની પેઠે સ્વાધ્યાય પ્રતિ

थिल इत्यर्थः । ' ओसन्नविहारी '=अवसन्नविहारी शिथिलाऽऽचारी आलस्यवशेन मन्दीभूतचरणकरण इत्यर्थः । एव=अनेन प्रकारेण ' पासत्थे ' पार्श्वस्थ'-साधुगुणाना पार्श्वे तिष्ठतीति पार्श्वस्थः ज्ञानादीना न सम्यगाराधकः । पार्श्वस्थविहारी=पार्श्वस्थाना यो विहारस्तथावर्तन पार्श्वस्थविहारः सोऽस्यास्तीति पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः=उत्तरगुणविराधनया सज्वलनकषायोदयेन च कुत्सिताऽऽचार' । कुशील विहारी=कुत्सिताचारशीलः । ' पमत्ते ' प्रमत्तः=पमाद्यतिस्म-मोहनीयादिकर्मोदयभावात् सज्वलनकषायनिद्राविकथाऽन्यतमप्रमादयोगेन सयमाराधनेषु सीदतिस्मेति प्रमत्तः । कर्तरिक्त । ' ससत्ते ' ससक्तः गौरवत्रयाश्रयेण सकीर्णाचार, ऋतुबद्धपीठफलकशय्यासस्तारके प्रमत्तश्चापि विहरति, शेषकालेऽपि कारणमन्तरेण

प्रति लेखन, ध्यान आदि मोक्ष मार्ग में भी शिथिल हो गये । अवसन्न विहारी हो गये-शिथिलाचारवाले बन गये-आलस्य के वश से चरण सत्तरी और करण सत्तरी के आराधना ढीले पड गये इस प्रकार वह पार्श्वस्थ हो गये-साधु गुणो के पास में रहने वाला बने रहे-ज्ञानादिकों का सम्यक् आरधन कर्ता वह नही रहे । पार्श्वस्थों के विहार जैसा इनका वर्ताव हो गया । उत्तर गुणों की विराधना से और सज्वलन कषाय के उदय से वह कुत्सित आचार वाले हो गये । कुशील विहारी हो गये । मोहनीय आदि कर्मो के उदय के प्रभाव से यह सज्वलन कषाय निद्रा विकथा रूप प्रमादों में से किसी एक प्रमाद के योग से सयम की आराधना करने में शिथिल परिणामी हो गये । गौरवत्रय के आश्रय से उनका आचार शिथिल हो गया । हर एक समय कारण के विना भी पीठ फलकादि का सेवन करने वाले बन गये सदा इन

લેખન ધ્યાન વગેરે ક્રિયાઓમા તેમજ મોક્ષમાર્ગમા તેઓ શિથિલ થઇ ગયા અવસન્ન વિહારી થઇ ગયા,-શિથિલ આચરણ વાળા થઈ, અળસને લીધેચરણ સત્તરી અને કાણસત્તરી રહિત થઇ ગયા આમ તેઓ પાર્શ્વસ્થ થઈ ગયા સદ્ગુણોમા રચ્યાપચ્યા બનીને રહેનારા બની ગયા જ્ઞાન વગેરેની સમ્યક્ આરાધના તેમનાથી હવે નહોતી થતી પાર્શ્વસ્થોના વિહારની જેમ તેમનુ આચરણ થઇ ગયુ ઉત્તર ગુણોની વિરાધનાથી અને સજ્વલન કષાયના ઉદયથી તેઓ કુત્સિત આચાર વાળા થઇ ગયા કુશીલ વિહારી થઈ ગયા મોહનીય વગેરે કર્મોના ઉદયને લીધે તેઓ સજ્વલન કષાય નિદ્રા વિકથા રૂપ પ્રમાદોમા થી કોઇ પણ એક પ્રમાદના યોગથી સયમને આરાધનામા શિથિલ થઇ ગયા ગૌરવત્રયના આશ્રયથી તેમનો આચાર શિથિલ બની ગયા કારણ વગર પણ તેઓ ગમે ત્યારે પીઠ ફલક વગેરે નુ સેવન કરવા લાગ્યા તેઓ હમેશા તેના ઉપર પડયા જ

पीठफलकादिसेवी सजात इत्यर्थः। 'नो संचाएइ' नो शक्नोति, अस्य विहर्तुमित्यत्रान्वयः, फासुएसणीय पीठ=पीठादिकं प्रत्यर्प्य मण्डुक च राजनमापृच्छ्य बहिर्जनपदविहार 'अब्भुज्जएण' अभ्युद्यतेन-उत्तमयुक्तेन, 'पयत्तेण' प्रदत्तेन भगवदनुज्ञातेन प्रमादरहितेन, 'पग्गहिएण' प्रगृहीतेन तीर्थंकरैरपि स्वीकृतेन; विहर्तुं=कर्तुम्। सज्वलनकषायनिद्राविकथाऽन्यतमप्रमादवशगत शैलको बहिर्जन पदविहार कर्तुमसमर्थो जात इत्यर्थः॥ ३०॥

मूलम्-तएण तेसि पथयवज्जाण पचण्ह अणगारसयाणं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण जाव पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणाण अयमेयारूव अब्भात्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एव खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्ज जाव पव्व-

पर पडा रहने लगे (नो सचाएइ फासुएसणिज्ज पीढे पच्चप्पिणित्ता मडुय च राया अपुच्छित्ता बहिया जणवयविहार-अब्भुज्जएण पयत्तेण पग्गहिएण विहरित्तए) प्रासुक एषणीय पीठ आदि को प्रत्यर्पित कर (देकर) तथा मडूकराज से पूछकर यह बाहर जनपदों में विहार करने के लिये समर्थ नही हुए। जो विहार उत्तम योग रूप उद्यम से युक्त होकर किया जाता है अर्थात् जिसमें प्रमत्त दशा नही रहती है-जिसके करने की भगवान् की आज्ञा है। तथा तीर्थंकरो ने भी जिसे किया है। तात्पर्य इसका यह है कि सज्वलन कषाय, निद्रा तथा विकथारूप प्रमादों में से किसी एक प्रमाद के वशगत होकर वहा से विहार करने के लिये असमर्थ बन गये। सूत्र ॥ ३० ॥

રહેતા હતા (नो सचाएइ फासुएसणिज्ज पीढ पच्चप्पिणित्ता मडुय च राया अपुच्छित्ता बहिया जणवयविहार अब्भुज्जएण पयत्तेण पग्गहिएण विहरित्तए) પ્રાસુક એષણીય પીઠ ફલક વગેરે પાછા આપી તેમજ મડૂક રાજાને પૂછીને બહારના બીજા જનપદો મા વિહાર કરવા માટે પણ તેઓ સમર્થ થઇ શકયા નહિ જે વિહાર ઉત્તમ યોગ રૂપ ઉદ્યમ વડે કરવા મા આવે છે, એટલે કે જેમા પ્રમત્ત દશા રહેતી નથી તેમજ જે વિહારને કરવાની ભગવાને આજ્ઞા આપી છે, અને તીર્થંકરો પણ જેને કરતા આવ્યા છે તેમા તેઓ અસમર્થ થઈ ગયા તાત્પર્ય એ છે કે આ સજ્વલન કષાય, નિદ્રા તેમજ વિકથા રૂપ પ્રમાદો માથી કોઇ પણ એક પ્રમાદના વશવર્તી થઇને ત્યાથી બહાર વિહાર કરવા સમર્થ થઈ શકયા નહિ ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

इए, विउलेणं असण० ४ मज्जपाणए मुच्छिए नो संचाएइ जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया। समणाणं निग्गथाण जाव पमत्ताणं विहरित्तए, त सेय खलु देवाणुप्पिया। अम्ह कल्ल सेलय रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पथयं अणगारं वेयावच्चकर ठवेत्ता वहिया अब्भुज्जएण जाव पवत्तेण, पग्गहियेण जणवयविहार विहरित्तए, एवं सपेहेंति, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते सेलय आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासथारय पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणित्ता पथय अणगार वेयावच्चकरं ठावति ठाविता वहिया जाव विहरति ॥ सू०३१ ॥

टीका—' तएण तेसिं ' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु तेषा पान्थकवर्जाना पञ्चानामनगारशताना=पञ्चशतानगाराणाम्, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले, एकतः सहिताना=एकत्रसमिलिताना यावत् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये= धर्मजागरिका=धर्मध्यानप्रबोधिनी कथा जाग्रता=कुर्वताम्

' तएण तेसिं पथयवज्जाण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तेसिं पथयवज्जाण पचण्ह अणगारसयाण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण जाव पुव्वावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणाण अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) उन पाचसो, पाथक अनगार वर्ज मुनियों को किसी एक समय मध्य रात्रि मे जब कि वे धर्मध्यान प्रबोधिनी कथा को एकत्र समिलित होकर

(तएण तेसिं पथयवज्जाण) ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર બાદ (तेसिं पथयवज्जाण पचण्ह अणगारसयाण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण जाव पुव्वावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणाण अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) પાચસો પાથક અનગાર વર્જ મુનિઓને કોઇ એક વખતે મધ્યરાત્રિમા જ્યારે તેઓ બધા એકઠા થઇને ધર્મધ્યાન પ્રબોધિની કથા વિષે ચર્ચા કરી રહ્યા હતા ત્યારે તેઓને આ

अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारक 'अब्भत्थिए' अभ्यर्थितः प्रवचनसंमतः यावत्-यावत् करणेन-चिंतिए, पत्थिए, मनोगए इत्येषां सङ्ग्रहः। चिन्तितः प्रार्थितः मनोगतः सङ्कल्पः= विचारः 'समुप्पज्जित्था' समुदपद्यत=अभवत्-एव अमुना प्रकारेण खलु=निश्चये शैलको राजर्षिः 'चइत्ता' त्यक्त्वा, 'रज्जं' राज्यं यावत् प्रव्रजितः= दीक्षां गृहीतवान स चेदानीं 'विउलेणं' विपुलेन अतिशयेन अशन पानखाद्यस्वाद्ये चतुर्विधाहारे निद्राजनकपानद्रव्यविषे च मूर्च्छितः=आसक्तः नो शक्नोति यावद् कुत्रापि विहर्तुम्। नो खलु कल्पते देवानुप्रियाः ! श्रमणानां यावत् प्रमत्तानां विहर्तुम्, हे देवानुप्रिया ! प्रमादिनो भूत्वा श्रमणानां संयममार्गे विहर्तुं न कल्पते, किंतु अभ्युद्यतेन इत्यर्थः। 'तं सेयं' तच्छ्रेयः=तत् तस्मात् श्रेयः खलु देवानुप्रिया अस्माकं कल्ये प्रभाते शैलकं राजर्षिमापृच्छ्य

कर रहे थे। इस तरह का प्रवचन समत चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत सकल्प-विचार उत्पन्न हुआ। (एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव पव्वइए विउलेणं असण ४ मज्जपाणे मुच्छिए नो सचाएइ जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं निग्गथाणं जाव पमत्ताण विहरित्तए) शैलक राजा ने राज्य का परित्याग कर भगवती दीक्षा अगीकार की हैं-इस तरह वे राजऋषि बने हैं-परन्तु अब वे विपुल अशन पान खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में तथा निद्रा कारक पान द्रव्य विशेष में आसक्त हो रहें हैं। कही पर भी बाहर विहार नहीं करना चाहते हैं। इस तरह हे देवानुप्रियों ! श्रमणो को प्रमत्त बनकर सयम मार्ग मे विहार करना रहना-उचित नही है। (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता

જાતનો પ્રવચન સમત, ચિંતત, પ્રાર્થિત, મનોગત સકલ્પ વિચાર ઉદ્ભવ્યો (एवं खलु सेलए रायरिसि चइत्ता रज्जं जाव पव्वइए विउलेणं ४ मज्जपाणे मुच्छिए नो सचाएइ जाव विहरित्तए नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाण निग्गथाण जाव पमत्ताण विहरित्तए) શૈલક રાજાએ રાજ્યવૈભવ ત્યજીને ભાગવતી દીક્ષા સ્વીકારી છે એથી તેઓ રાજઋષિ તરીકે પ્રસિદ્ધ થયા છે પણ અત્યારે તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય આહાર તેમજ નિદ્રાકારક પાનદ્રવ્ય વિશેષમા આસક્ત થઈ રહ્યા છે બીજે કઇ વિહાર કરવાની પણ તેઓની ઇચ્છા લાગતી નથી હે દેવાનુપ્રિયો ! આ રીતે શ્રમણોને પ્રમત્ત થઇને સયમમાગમા રહીને વિહાર કરવો યોગ્ય લાગતુ નથી (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ

'पाडिहारिय' प्रातिहारिक=प्रत्यर्पणीय, पीठफलकशय्यासंस्तारक प्रत्यर्प्य, शैलकस्यानगारस्य पान्थकमनगार 'वेयावच्चकर' वैयावृत्यकर=सेवाकारक, स्थापयित्वा बहिरभ्युद्यतेन यावद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन=सोद्यमेन प्रदत्तेन=तीर्थंकरानुज्ञापितेन, प्रगृहीतेन तीर्थंकराङ्गीकृतेन जनपदविहार इत्यस्य संग्रहः। विहर्तुम्-कर्तुम् शैलकानगारस्य वैयावृत्यार्थं पान्थकमनगार बहिर्विहर्तुमस्माकं श्रेय इत्यर्थं एवम्=उक्तप्रकारेण 'संपेहेंति' संप्रेक्षन्ते, विचारयन्ति। 'संपेहित्ता' संप्रेक्ष्य विचार्य, कल्ये यावज्जलति=सूर्ये उदिते सति शैलकमापृच्छ्य प्रातिहारिक=प्रत्यर्पणीय पीठफलकशय्यासंस्तारक 'पच्चप्पिणंति' प्रत्यर्पयन्ति प्रत्यर्प्य पान्थकमनगार 'वेयावच्चकर' वैयावृत्यकर, 'ठावेंति' स्थापयन्ति ' 'ठावित्ता' स्थापयित्वा बहिर्यावद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन प्रदत्तेन, प्रगृहीतेन जनपदविहार इत्यस्य संग्रहः, विहरन्ति। शैलकानगारस्य ये पञ्चशतसंख्यकाः पान्थकप्रमुखा अन

पाडिहारिय पीठफलगसेज्जासंथारग पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथय अणगार वेयावच्चकर ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव पवत्तेण पग्गहिएण जणवयविहार विहरित्तए) इसलिए हे देवानुप्रियों! हम लोगों को यही कल्याण कारक है कि प्रातः होते ही हम लोग शैलक राजऋषि से पूछकर और प्रत्यर्पणीय पीठ फलकशय्यासंस्तारक को रखकर वापिस देकर तथा शैलक राजऋषि की वैयावृत्ति करने के लिये पांथक अनगार को रखकर यहां से सोद्यम के साथ प्रदत्त तीर्थंकर की दी हुई आज्ञा के अनुसार प्रगृहीत तीर्थंकर की आज्ञा को अंगीकार कर ऐसा बाहिर देशों में विहार करें। (एव संपेहेंति, संपेहित्ता कल्ल जाव जलंते सेलयं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणंति, पच्चप्पिणित्ता पंथयअणगारं वेयावच्चकरं ठावंति

फलगसेज्जासंथारग पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथय अणगार, वेयावच्चकर ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएण जाव पवत्तेण पग्गहिएण जणवयविहार विहरित्तए) એટલે હે દેવાનુપ્રિયો! આપણા માટે કલ્યાણનો માર્ગ એક જ રહ્યો છે કે સવારે શૈલક રાજઋષિની આજ્ઞા મેળવીને પીઠફલક, શય્યા સંસ્તારક વગેરે પાછા આપીને શૈલક રાજઋષિની વૈયાવૃત્તિ કરવા માટે પાંથક અનગારને નીમીને ઉદ્યમપૂર્વક આપણે અહીંથી તીર્થંકરોની આજ્ઞા મુજબ તેમજ તીર્થંકરોની આજ્ઞાનુ પાલન કરતા બહારના બીજા દેશોમા વિહાર કરવા નીકળી પડીએ एव संपेहेंति संपेहित्ता कल्ल जाव जलंते सेलयं आपुच्छित्ता, पडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथयअणगारं वेयावच्चकरं ठावंति

गाराः शिष्यरूपेण सहचरा आसन् तेषु पान्थक शैलकानगारसेवार्थं स्थापयित्वा पान्थकवर्जास्ते सर्वेऽनगाराः पीठफलकादिक प्रत्यर्प्य बहिर्जनपदविहार कुर्वन्ति स्मेत्यर्थः ॥ ३१ ॥

मूलम्-तएण से पंथए सेलयस्स सेज्जासंथारयउच्चार-पासवणखेलसिंघाणमल्लओसहभेसज्जभत्तपाणएण अगिलाए विणएण वेयावडिय करेइ, तएणं से सेलए अन्नया कयाइ कत्तिय चाउम्मासियंसि विउल असण० आहारमाहारिए सुबहु मज्जपाणय पीए पुव्वावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते, तएणं से पन्थए कत्तियचाउम्मासियंसि, कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमण पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कमिउकामे सेलयं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेण पाएसु संघट्टेइ, तएण से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उट्ठेइ, उट्ठित्ता एव वयासी-संकेस णं भो एस अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जेणं मम सुहप्पसुत्त पाएसु संघट्टेइ? तएणं से पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयल०क

ठावित्ता बहियां जाव विहरति) इस प्रकार उन्होंने विचार किया-विचार करके प्रातःकाल जब सूर्य अपनी प्रभा से प्रकाशित होने लगा तब उन्होंने शैलक राजऋषि से पूछकर प्रतिहारिक-प्रत्यर्पणी पीठ फलग शय्या सस्तारक को वापिस दे दिया-वापिस देकर फिर उन्हों ने उन की वैयावृत्ति करने के लिये पाथक अनगार को रख दिया। रखकर फिर वे वहा से बाहर दूसरे देशों में विहार कर गये। सूत्र ॥ ३१ ॥

ઠાવિત્તા બહિયા જાવ વિહરતિ) આ પ્રમાણે તેઓએ વિચાર કર્યો, વિચાર કરીને જ્યારે સવારે સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે શૈલક રાજઋષિની અજ્ઞામેળવીને પ્રત્યર્પણીય એટલે કે પીઠ ફલક શય્યા સસ્તારકને પાછા સોપીને રાજઋષિની વૈયાવૃત્તિ માટે પાથક અનગારને રખા નિયુક્ત કરીને તેઓ ત્યાથી બહારના બીજા દેશોમા વિહાર કરવા નીકળ્યા ॥ સૂત્ર ૩૧ ॥

एवं वयासी-अहण्णं भंते ! पंथए कायकउस्सग्गे देवसिय पडिक्कमणं पडिक्कते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि, त खमंतु मं देवाणुप्पिया ! खमतु मेऽवराहं तुम्मणण्णं देवाणुप्पिया णाइभुज्जो एवं करणयाए त्तिकट्टु सेलयं अणगार एतमट्ठ सम्मं विणएण भुज्जो २ खामेइ ।

तएणं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएण एवंवुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं रज्ज च जाव ओसन्नो जाव उउवद्धपीठफलगसेज्जासंथारगं गिण्हित्ता विहरामि, त नो खलु कप्पइ समणाणं ओसन्नाणं पासत्थाणं जाव विहरित्तए, तं सेय खलु मे कल्ल मडुय राय आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएण अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुजएणं जाव जणवयविहारेण विहरित्तए । एव सपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं याव विहरइ ॥ सू० ३२॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि-ततस्तदनन्तर खलु स पान्थकः शैलकस्य ' सेज्जासथारयउच्चारपासवणखेलसिंघाणमल्लओसहभेसज्जभत्तपाणएण ' शय्यास्तारकोच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणमलौषधभैष्यज्यभक्तपानेन 'अगिलाए' अग्लान' सन्

'तएण से पथए इत्यादि' ॥ सूत्र ॥ ३२ ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से पथए) वह पाथक (सेलयस्स) शैलक अनगार की (सेज्जासथारयउच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणमल्ल ओसहभेसज्जभत्तपाणएण) शय्या सस्तारक के द्वारा उच्चार प्रस्रवण, खेल, जल्ल सिंघाण मल आदि की परिष्ठापना द्वारा औषध भैषज्य द्वारा, भक्त पान लाने के द्वारा (अगिलाए) विना कोई ग्लानभाव के

(तएण से पथए) ઈત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ-(तएण) त्यार आद (से पथए) पाथक (सेलयस्स) शैलर राजऋषिनी (सेज्जासथारयउच्चारपासवण-खेल-जल्ल-सिंघाणमल्ल-ओसहभेसज्जभत्तपाणएण) शय्या सस्तारक द्वारा, तेमज उच्चार प्रस्रवण, खेल, सिंधाणु मल वगेरे नी

विनयेन वैयावृत्य सेवा करोति। ततः खलु स शैलकः 'अन्नया कयाइ' अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले 'कत्तियचाउम्मासियंसि' कार्तिकचातुर्मासिके विपुलम्=अधिकम्, 'असण०' अशनपानखाद्यस्वाद्यम् 'आहारमाहारिए' आहारमाहारितः चतुर्विधाहारमतिशयेन कृत्वेत्यर्थः सुबहु 'मज्जपाणय' मद्यपानक=निद्राजनकपानकद्रव्यविशेष 'पीए' पीतः पीत्वेत्यर्थः। 'पूर्वापराह्णकालसमयंसि' पूर्वापराह्णकालसमये=दिवसस्य चतुर्थे प्रहरे सुखमसुप्तः मनोज्ञप्रणीतः भोजनातिशयेन निद्राकारकपानकद्रव्यसेवनेन च गाढ़निद्रा प्राप्त इत्यर्थः। यत्तु समाधिना सुखेन सुप्त इत्यर्थ इत्युक्तं तन्न युक्तम् प्रमादसद्भावे समाधेरसम्भवात् अमर्यादितनिद्राताः समाधेर्दूरवर्तित्वाच्च। ततस्तदनन्तरं स पान्थकः 'कत्तियचाउम्मासियंसि'

(विणएण) बडे विनय के साथ (वेयावडियं करेइ) वैयावृत्ति करने लगा। (तएणं से सेलए अन्नया कयाइ) एक दिन की बात है कि वे शैलक अनगार (कत्तिय चाउम्मासियंसि विउल असण० आहारमाहारिए सुबहु मज्जपाणय पीए पुव्ववरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते) चर्तुमासके कार्तिक महिने में बहुत अधिक अशन, पान, खाद्य, और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार कर के और निद्राकारक पानक द्रव्य विशेष को पी करके दिवस के चतुर्थ प्रहर मे सुख से सोये हुए थे। यहां पर जो कोइ २ ऐसा पाठ कहते हैं कि वे समाधि पूर्वक सुख से सोये हुए थे वह ठीक नही है। कारण प्रमाद के सद्भाव में समाधि का होना बनता नही है। अमर्यादित निद्रा और समाधि इनका परस्पर विरोध है ऐसी स्थिति में तो समाधि बहुत दूर रहा करती है। (तएणं से

પરિષ્ઠાપના દ્વારા (अगिलाए) ગ્લાનપણું જાતનો અણગમો કે ઘણા વિનાના બનીને (विणएण) ખૂબજ નમ્ર થઈને (वेयावडियं करेइ) વૈયાવૃત્તિ કરવા લાગ્યા (तएणं से सेलए अन्नया कयाइ) એક દિવસ શૈલક રાજઋષિ (कत्तियचाउम्मासियंसि विउलं असण — आहारमाहरिए सुबहु मज्जपाणय पीए पुव्ववरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते) ચાતુર્માસના કાર્તિક માસમા ખૂબજ પ્રમાણમા અશન પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહાર કરીને અને નિદ્રાકારક આપાનક દ્રવ્ય વિશેષનુ પાન કરીને સાજના છેલ્લા પહોરના વખતે સુખેથી સુતા હતા અહી 'ઘણા લોકો સમાધિ પૂર્વક સુખેથી શૈલક રાજઋષિ સૂતા હતા" એ પ્રમાણેનો પાઠ હોવાનુ કહે છે તે યોગ્ય ગણાય જ નહિ કેમકે પ્રમાદઅવસ્થામા સમાધિ થઇ શકતી નથી અમર્યાદિત નિદ્રા અને સમાધિ આ બને વચ્ચે વિરોધ છે આવી સ્થિતિમા સમાધિ થઇ શકતી જ નથી

कातिकचातुर्मासिके ' कायकाउस्सग्गे '-कृतकायोत्सर्गं ' देवसिय ' दैवसिक प्रतिक्रमण परिक्रान्तः=कृतवान् , चातुर्मासिक ' पडिक्कमिउ कामे ' प्रतिक्रमितुकामः शैलक राजर्षि ' खामणट्ठयाए ' क्षमापनार्थाय शीर्षेण मस्तकेन पादयो सघट्टयति स्पृशति । ततस्तदनन्तर खलु स शैलकः शैलकराजर्षि पान्थकेन=पान्थकानगारेण शीर्षेण पादयो' सघट्टितः संस्पृष्टः सन् ' आसुरुत्त ' आशुरुप्तः शीघ्रतिकोपयुक्तः, यावत् क्रोधानलवेगेन ' मिसिमिसेमाणे ' मिसमिसन् देदीप्यमानः ' उट्ठेइ ' उत्तिष्ठति, ' उट्ठित्ता ' उत्थाय एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् ' से ' सः ' केस ' एषः एतादृशः कोऽस्ति खलु भोः ! ' एस ' एषः ' अप्पत्थियपत्थिय ' अप्रार्थितप्रार्थकः, यावत् परिवर्जितः श्री ह्री धी रहितः, यः खलु मां

पथए कत्तिय चाउम्मासियंसि कय काउस्सग्गे देवसिय पडिक्कमण पडिक्कते चाउम्मासिय पडिक्कामिउकामे सेलय रायरिसि खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु स घट्टेइ) इसी समय पांथक अनगार ने उसी चतुर्मास के कार्तिक महीने में कायोत्सर्ग करके देवसिक प्रतिक्रमण किया । फिर चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करने की इच्छा से उसने शैलक राजऋषि के अपने कृत दोषो की क्षमा याचना निमित्त मस्तक से दोनों चरणों का स्पर्श किया । (तएण से सेलए पथएण सीसेण पाएसु स घट्टिए समाणे आसुरूत्ते जाव मिसिमिसे माणे उट्ठेइ) पाथक अनगार के मस्तक से दोनों चरणों में स्पृष्ट हुए वे शैलक राजर्षि इकदम कोप से लाल हो गये । और मिस मिसाते हुए यावत् क्रोधानल के वेग से दे दीप्यमान होते हुए-वे उठकर बैठ गये । (उट्ठित्ता एव वयासी) बैठकर इस प्रकार कहने लगे- (से केसण भो एस अप्पत्थिय पत्थिए जाव परिव-

---

(तएण से पथए कत्तियचाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसिय पडिक्कमण पडिक्कते चाउम्मासिय पडिक्कामिउकामे सेलय रायरिसि खामणट्ठयाए सीसेण पाएसु सघट्टेइ) આ વખતે ચાતુર્માસના કાર્તિક માસમા જ પાથક અનગારે કાયોત્સર્ગ કરીને દૈવસિક પ્રાતિક્રમણ કર્યું ત્યાર પછી ચાતુર્માસિક પ્રાતિક્રમણ કરવાની ઇચ્છાથી તેમણે પોતાના દોષોની ક્ષમાપના માટે શૈલક રાજઋષિના ચરણોમા પોતાના મસ્તકનો સ્પર્શ કર્યો તએણ સે સેલए પથએણ सीसेण पाएसु सघट्टिएसु समाणे आसुरुत्ते जाव मिसमिसेमाणे उट्ठेइ) પાથક અનગારના મસ્તકના બને પગોમા થયેના સ્પર્શથી શૈલક રાજઋષિ એકદમ લાલ ચોળ થઈ ગયા, અને ક્રોધ ની જવાળોમા સળગતા તેઓ ઉઠીને બેઠા થઇ ગયા (उट्ठित्ता एव वयासी) બેઠા થઇને તેઓએ આ પ્રમાણે

सुखप्रसुप्त पादयोः सघट्टयति ? ततः खलु स पा॰थकः शैल॰केनैवमुक्तः सन् भीतः =भययुक्तः त्रस्तः=उद्विग्न', त्रसितः कम्पितः करतलपरिगृहीत शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-' अहण्ण ' अह खलु भदन्त ! पान्थकः कृतकायोत्सर्ग' 'देवसिय' दैवसिक=प्रतिक्रमण प्रतिक्रान्तः । हे भदन्त ! अह खलु पान्थकनामको भवदीयशिष्यः कायोत्सर्गं कृत्वा दैनिक प्रतिक्रमण कृतवान् , अधुना चातुर्मासिक क्षमापयन् देवानुप्रियं वन्दमानः शीर्षेण पादयो' सघट्टयामि, हे देवानुप्रियाः तत् तस्माद् क्षमध्व माम् , क्षमध्व मे ममापराध, ' तुम-

---

ज्जिए) अरे ! यह कौन ऐसा हैं जो श्री ह्री से रहित बुद्धिवाला हुआ यहा विना बुलाये आ गये है और (ण मम सुहप्पसुत्त पाएसु सघट्टेइ) सुख पूर्वक सोए हुए मुझे पैरों मे स्पर्श कर रहा है । (तएण से पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयल०कट्टु एव वयासी) इस प्रकार शैलक के द्वारा कहे जाने पर वह पाथक अनगार डर गया, उद्विग्न हो गया, रोम २ उसका कप गया । उसी समय उसने दोनों हाथो की अजलि जोड कर और उसे मस्तक पर रखकर इस प्रकार कहा-अहण्ण भते पथए कयकाउसग्गे देवसिय पीडिक्कमणं पडिक्कते चाउम्मासिय खामेमाणे देवाणुप्पिय ! वदमाणे सीसेणं पाएसु सघट्टेमि) हे भदत ! मैं हूँ आपका शिष्य मैं पांथक ने कायोत्सर्ग करके दैवसिक प्रतिक्रमण कर लिया है । अब चातुर्मासिक दोषों की क्षमा कराने निमित्त हे देवानुप्रिय आपकी वदना करते हुए मैं आपके चरणों का स्पर्श किया है । (न खमतु म देवाणुप्पिया ! खमतु मेऽवराह तुमण्णं

કહ્યુ-(से केसण भो एस अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए) અરે ! આ કોણ છે ? જે શ્રી હ્રી થી રહીત મૂર્ખ બોલાવ્યા વગર જ અહી આવતો રહ્યો છે (ण मम सुहप्पसुत्त पाएसु सघट्टेइ) કે જે સુખેથી વિશ્રામ કરનારા મને પગોમા સ્પર્શ કરી રહ્યો છે (तएण से पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयल० कट्टु एव वयासी) શૈલક રાજઋષિની આ વાત સાભળીને પાથક અનગાર ડરી ગયા, ઉદ્વિગ્ન થઈ ગયા અને તેમના અણુ અણુમા ભય વ્યાપ્ત થઈ ગયો તરત જ તેઓ બને હાથોની અજલિ મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા-(अहण्ण भते पथए कयकाउसग्गे देवसियपडिक्कमण पडिवक्कते चाउम्मासिय खामेमाणे देवानुप्पिय ! वदमाणे सीसेण पाएसु सघट्टेमि) હે ભદત ! આતો હુ છુ આપનો શિષ્ય પાથક મે કાયોત્સર્ગ કરીને દૈવસિક પ્રતિક્રમણ કરી લીધુ છે ચાતુર્માસિક દોષોની ક્ષમાપના માટે તમારા ચરણોમા મે મસ્તકનો સ્પર્શ કર્યો છે (त खमतु म देवाणुप्पिया ! खमतु मेऽवराह'

ण' यूय खलु । हे देवानुप्रियाः 'णाइ भुज्जो' न भूयः एव करणाय प्रवर्तिष्ये इति कृत्वा=इत्युक्त्वा शैलकमनगारमेतदर्थं सम्यग् विनयेन 'भुज्जो भुज्जो' भूयो भूयः पुन पुनः 'खामेइ' क्षमयति शैलकस्य राजर्षे क्रोधोपशमनार्थं पुनः पुनः स्वापराध क्षमयति स्मेत्यर्थः ।

ततः खलु तस्य शैलकस्य राजर्षेः पान्थकेनैवमुक्तस्य अयमेतद्रूपो वक्ष्यमाण-रूपः यावत् सङ्कल्प समुदपद्यत=अभवत्-एवम्=अमुना प्रकारेण खलु निश्चये,अह सर्वं राज्य त्यक्त्वा च यावत् दीक्षा गृहीत्वा पुनर्विपुलाशनपानादौ मूच्छितः गृद्धः अध्युपपन्नः अवसन्नः, यावत् अवसन्नविहारी, पार्श्वस्थविहारी कुशीलः कुशीलविहारी प्रमत्तः ससक्तश्चतुर्मासापगमेऽपि ऋतुबद्धपीठफलकशय्यासंस्तारक गृहीत्वा विह-

---

देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो एव करणयाए त्ति कट्टु सेलय अणगार एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो २ खामेइ) इसलिये हे देवानुप्रिय ! आप मुझे क्षमा कीजिये । अब मै हे देवानुप्रिय ! पुनः ऐसा नही करूँगा । इस प्रकार कहकर उसने बार २ शैलक अनगार से अपने इस अपराध की बडे विनय के साथ क्षमा मागी । (तएणं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पथएण एव वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार पांथक अनगार के कहने पर उस शैलक राजर्षि के मन मे यह इस प्रकार का यावत् सकल्प उत्पन्न हुआ (एव खलु अह रज्ज च जाव ओसन्नो जाव उउ बद्धपीठफलगसेज्जासथारग गिण्हित्ता विहरामि त नो खलु कप्पइ समणाण ओसन्ना ण पासत्था ण जाव विहरित्तए)मैंने समस्त राज्यका परित्याग कर यावत् जिनदीक्षा धारण की है परन्तु अब मै पुन विपुल अशन

तुमण्ण देवाणुप्पिया ! णाइं भुज्जो एव करणयाए त्तिकट्टु सेलय अणगार एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो २ खामेइ) એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મને ક્ષમા કરો. હે દેવાનુપ્રિય ! હવેથી મારાથી આવુ કોઈપણ દિવસ થશે નહિ આ પ્રમાણે પાથક અનગારે શૈલક રાજઋષિની પેતાના ,અપરાધ બદલ વારવાર વિનમ્ર થઇને ક્ષમા યાચના કરી. (तएण तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पथएण एव वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) આ પ્રમાણે પાથક અનગારની વાત સાભળીને શૈલક રાજઋષિના મનમા આ જાતનો સકલ્પ-વિચાર સ્ફુર્યો કે (एव खलु अह रज्ज च जाव ओसन्नो जाव उउबद्धपीढफलगसेज्जा सथारग गिण्हित्ता विहरामि त नो खलु कप्पइ समणाणं ओसन्नाण पासत्थाणं जाव विहरित्तए) સકળ રાજવૈભવનો ત્યાગ કરીને મે જિનદીક્ષા મેળવી છે પણ અત્યારે ફરી હુ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન વગેરેના સેવનમા આસક્ત

रामि । तत्=तस्मात् नो खलु कल्पते श्रमणानाम् अनगाराणा ' पासत्थाण ' पार्श्वस्थाना यावत् करणेन-' ओसन्नाण कुसीलाणं पमत्ताण ससत्ताण इत्येषा सग्रह । ' अवसन्ना ' पार्श्वस्था कुशीलाः प्रमत्ताः ससक्ताश्च भूत्वाऽनगाराणा विहर्तुं न कल्पते इत्यर्थः ।

' त सेय' तच्छ्रेयः=तत तस्मात् श्रेयः खलु मे मम कल्ये प्रभातकाले मण्डूक राजानमापृच्छ्य प्रतिहारिक=प्रत्यर्पणीय, पीठफलकशय्यासस्तारक प्रत्यर्प्य पान्थकेनानगारेण सार्ध बहिः ' अब्भुज्जएण ' अभ्युद्यतेन=उत्तमसहितेन, यावत्-इह यावत् करणात्-' पव्वत्तेण, पग्गहियेण ' इत्यनयो सग्रह । ' पव्वत्तेण ' प्रदत्तेन, तीथकरानुज्ञापितेन गुरूपदिष्टेन इत्यर्थः, ' पग्गहियेण ' प्रगृहीतेन, तीर्थंकराङ्गीकृतेन, गुरुसकाशान्मयाङ्गीकृतेनेत्यर्थः जनपदविहारेण विहर्तुम् । नव-

---

पान आदि में मूर्च्छित बन रहा हूँ । उन में स्नेहरूपी रज्जु से बँध गया हूँ । लोलुप हो गया हूँ । सरस आहार आदि के अधीन मेरा जीवन हो गया है । स्वा याय प्रतिलेखन आदि आवश्यक क्रियाओ से मैं शिथिल हो रहा हूँ । मेरी चरण सत्तरी और करण सत्तरी दोनों ही आलस्य के वश से मदीभूत हो रही हैं । इसलिये मैं पार्श्वस्थ हो रहा हूँ । पार्श्वस्थों के जैसा मेरा विहार वर्ताव हो गया है । कुशील-कुत्सित आचार वाला बन गया हूँ । कुशील विहारी हो रहा हूँ । प्रमत्त दशाधीन होकर गौरवत्रय से सकीर्ण आचारवाला बना हुआ हूँ । ऋतुबद्ध पीठ फलक शय्या सस्तारक का से वी हो रहा हूँ । अतः अवसन्न, पार्श्वस्थ, कुशील प्रमत्त एव ससक्त होकर अनगार रूप से रहना यह श्रेयस्कर नही है । (त सेय खलु मे कल्ल मडुय राय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीठ

ફત થઈ રહ્યો છુ સ્નેહરૂપી દોરીમા હુ બધાઈ ગયેા છુ હુ લોલુપ થઇ ગયેા છુ મારૂ જીવન સરસ આહારને આધિન થઈ ગયુ છે સ્વાધ્યાય પ્રતિલેખન વગેરે આવશ્યક ક્રિયેામા હુ શિથિલ થઇ ગયેા છુ મારી ચરણ સત્તરી અને કરણ સત્તરી બને આળસને લીધે મદ થઇ રહી છે એથી હુ પાર્શ્વસ્થ થઇ રહ્યો છુ મારેા વિહાર અને આચરણ પણ પાર્શ્વસ્થેાની જેમ જ થવા માડયેા છે કુશીલ-એટલે કે હુ કુત્સિત આચરણ વાળેા થઇ ગયેા છુ કુશીલ-વિહારી થઈ રહ્યો છુ પ્રમત્તના જેવી દશાવાળેા હુ, ગૌરવત્રયથી સકીર્ણ આચાર વાળેા થઇ રહ્યો છુ હુ ઋતુબદ્ધ પીઠ ફલક શય્યા સસ્તારક ને સેવનારેા થઈ ગયેા છુ એથી અવસન્ન, પાર્શ્વસ્થ કુશીલ પ્રમત્ત અને સસક્ત થઇને અનગાર રૂપે રહેવુ નેશ્રેયસ્કાર નથી (त सेयं खलु मे कल्ल मडुय राय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीठफलग सेज्जा सथारय पच्चप्पिणित्ता पथण

कल्पविहारेण देशमध्ये विहार कर्तुं श्रेय इत्यर्थ । एवम्=उक्तप्रकारेण, ' संप्रेक्षते स्म मनसि विचारयतिस्मेत्यर्थः । ' संपेहित्ता ' संप्रेक्ष्य विचार्य, कल्ये यावद्विहरति । अत्र यावच्छब्देन-' जलंतेमडुय राय आपुच्छित्ता, पाडिहारिय, पीढफलग सेज्जासथारय पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणित्ता पथएण अनगारेण सद्धिं बहिया अब्भुजंजएण जाव जणवयविहारेणं ' इतिपाठस्य सग्रहः ॥ ३२ ॥

फलग सेज्जा संथारय पच्चपिणित्ता पंथएण अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुजएण जाव जणवयविहारेण विहरित्तए एव संपेहेइ, संपेहित्ता कल्ल याव विहरइ) मेरा हिततो अब इसी में हैं कि प्रात काल मडुक-राजा से पूछकर प्रतिहारिका-जो ये पीठ फलग शय्या सस्तारक हैं उन्हे पीछे देकर पाथक अनगार के साथ उत्तम योगरूप उद्यम से युक्त-अप्रमत्तदशा विशिष्ट-तीर्थकरादि द्वारा आचरित और गुरू जन द्वारा उपदिष्ट-ऐसा विहार यहा से करदूँ। अर्थात् नव कल्पित विहार से अन्य देशों मे विहार करना ही मुझे अब हितकारक है । इस प्रकार का विचार शैलक अनगार ने किया। बाद मे वे इसी विचार के अनुसार वहां से विहार कर गये। यहा यावत् शब्द से " जलते-मडुय राय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीठफलग सेज्जासथारय पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणित्ता पथएण अणगारेण सद्धिं बहिया अब्भुज्जएण जाव जणवय विहारेण " इस पाठ का सग्रह हुआ है । इसका अर्थ ऊपर लिखा जा चुका है । सूत्र ॥ ३२ ॥

अणगारेण सद्धिं बहिया अब्भुजए ण जाव जणवय विहारेण विहरित्तए एव सपेहेइ संपेहित्ता कल्ल याव विहरइ) હવે મારા પોતાને માટે તો એજ શ્રેયસ્કાર ગણાય કે સવારે મડુકરાજાને જણાવી પીઠ ફલક શય્યા સસ્તારકો સોપીને પાથક અનગારની સાથે Cત્તમ યોગરૂપ ઉદ્યમથી યુક્ત-અપ્રમત્તદશાવિશિષ્ટ -અને તીથકર વગેરે દ્વારા આચરિત અને ગુરુ જન દ્વારા ઉપદિષ્ટ વિહાર કરૂ એટલે કે નવ કલ્પિત વિહારથી બીજાદેશોમા વિહાર કરવો જ હવે અત્યારના સજોગોમા મારે માટે હિતાવહ છે આરીતે શૈલક અનગારે વિચાર કર્યો ત્યાર પછી એ વિચાર પ્રમાણે જ ત્યાથી તેઓએ બીજે વિહાર કર્યો અહીં 'યાવત્' શબ્દથી " जलते मडुय राय आपुच्छिता पाडिहारिय पीठफलगसेज्जा संथारय पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणित्ता पथएण अणगारेण सद्धिं बहिया अब्भुज्जएण जाव जणवयविहारेण) આ પાઠનો સગ્રહ થયો છે આના અર્થ પહેલા સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે ॥ સૂત્ર "૩૨" ॥

मूलम्-एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गथो वा निग्गंथी वा आयरिय उवज्झायाण अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव सथारए पमत्ते विहरइ, से ण इहलोए चेव वहूणं समणाण ४ हीलणिज्जे ससारो भाणियव्वो ॥ सू० ३३ ॥

टीका-'एवामेव' इत्यादि-एवमेव अनेन प्रकारेणैव यथा शैलको राजर्षिः प्रमादी जातस्तथैव हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माक निर्ग्रथो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके समीपे प्रव्रजितः गृहीतप्रव्रज्यः सन् अवसन्न यावत्-सस्तारके-अत्र यावच्छब्देन-अवसन्ननिहारी, पार्श्वस्थः पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः कुशीलविहारी प्रमत्तः ससक्तः ऋतुवद्धपीठफलकशय्या' इत्यन्तः पाठ' सगृह्यते। एव चावसन्नत्वादि विशिष्ट सन् ऋतुवद्धपीठफलकशय्यासस्तारके प्रमत्तः=प्रमादीभूत्वा विहरति अवतिष्ठते, स खलु इह लोके चैव वहूना श्रमणाना४ श्रमणीना श्रावकाणा श्राविकाणा

'एवामेव समणाउसो' इत्यादि।

टीकार्थ-(एवामेव) जिस तरह शैलक राजऋषि प्रमादी हुवे उसी तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गथी वा आयरिय उवज्झयाण अतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव सथारए पमत्ते विहरइ इह लोए चेव वहूण समणाण ४ हीलणिज्जे ससारो भाणियव्वो) जो कोई हमारा निर्ग्रन्थ वा निर्ग्रन्थी जन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ अवसन्न बन जाता है यावत् ऋतु बद्ध पीठ फलकशय्या सस्तारक मे प्रमत्त होकर बैठा रहता है वह इस लोक में अनेक श्रमण,श्रमणी श्रावक,श्राविकाओ द्वारा हीलनीय होता

(एवामेव समणाउसो) ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-(एवामेव) જેમ શૈલકરાજ ઋષિ પ્રમાદવશ થયા તેમ (समणाउसो) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! (जो अम्ह निगगथोवा निग्गथीवा आयरिय उवज्झयाण अतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव सथारए पमत्ते विहरइ इह लोए चेव वहूणं समाणाण ४ हीलणिज्जे ससारो भाणियव्वो) જે કોઈ અમારા નિર્ગ્રંથકે નિર્ગ્રંથી જન આચાર્ય ઉપાધ્યયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને અવસન્ન થઈ જાય છે યાવત્ ઋતુ બદ્ધ પીઠ ફલક શય્યા સસ્તારકમા પ્રમત્ત થઈને બેસી રહે છે તે આ લોકમા ઘણા શ્રમણો શ્રમણીઓ અને શ્રાવક શ્રાવિકાઓ દ્વારા

हीलनीयः निन्दनीय खिंसनीयः गर्हणीयः परिभवनीयः, भवति । परलोकेऽपि च खलु आगच्छति, प्राप्नोति बहूनि दण्डानानि 'ससारो भाणियव्वो' ससारो भणितव्यः । संसारे स परिभ्राम्यति अत्र ससारपरिभ्रमणपाठो वाच्य -यथा- 'अणाइय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टइ' अनादिकम् अनवदग्रम् अनन्त दीर्घाद्ध दीर्घकाल, दीर्घाध्वान वा दीर्घमार्ग, चातुरन्त चतुर्विभाग, चतुर्गतिक, ससारएव कान्तार दुर्गममार्ग तत्, तथा अनुपर्यटति पुनःपुन भ्राम्यतीत्यर्थः ॥ ३३ ॥

मूलम्-तएण ते पथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्न सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी-सेलए रायरिसी पंथएणं अणगारेणं सद्धिं वहिया जाव विहरइ, त सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सेलयं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेंति, सपेहित्ता सेलय राय उपसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥ सू० ३४ ॥

है, निंदनीय होता है, खिसनीय होता है, गर्हणीय होता है, परिभवनीय होता है ।तथा परलोक में भी अनेक दण्डो को पाता है । ससार में वह परिभ्रमण करता है ।

ससार परिभ्रमण सबन्धी पाठ यहा इस प्रकार से लगा लेना चाहिये। "अणाइय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरतसंसारकतार अणुपरियट्टइ" इसका भाव इस प्रकार है-ऐसा जीव अनादि अनतरूप ससार कान्तार में कि जो चतुर्गतिरूप विभाग वाला है और जिसका मार्ग या काल बहुत दीर्घ है उसमें पुनः पुनः भ्रमण करता रहता है । सूत्र ॥ ३३ ॥

હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, ખિંસનીય હોય છે, ગહણીય હોય છે, પરિભવનીય હોય છે તેમજ પરલોકમા પણ ઘણી જાતની શિક્ષાને પાત્ર થય છે તે સ સારમા પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે

સ સાર પરિભ્રમણ વિષે પાઠ અહીં આ પ્રમાણેજ જાણવો જોઈએ (अणाइय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरतसंसारकतार अणुपरियट्टइ) આનો ભાવર્થ આ પ્રમાણે છે કે-ચતુર્ગતિ રૂપ વિભાગવાળા અનાદિ અનત રૂપ સ સાર કાતારમા કે જેનો માર્ગ ખૂબજ દીર્ઘ છે વારવાર જીવ પરિભ્રમણ કરતો જરહે છે ૩૩॥

टीका-'तएण' इत्यादि-ततस्तदनन्तर पान्थकवर्जाः पञ्चअनगारशतानि=पान्थकरहिताः पञ्चशतसख्यका अनगारा एकोनपञ्चशतसख्यका अनगारा इत्यर्थः। 'इमीसे कहाए' अस्या कथाया, ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे चेति वार्तिकेन पञ्चमी। इमा कथामाकर्ण्येत्यर्थः। 'लद्धट्ठा' लब्धार्थाः प्राप्ताभिलषिताः सन्तः 'अन्नमन्न' अन्योन्य परस्पर 'सदावेंति' शब्दयन्ति आह्वयन्ति, शब्दयित्वा= आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः-शैलको राजर्षिः पान्थकेनानगारेण सार्धं बहि र्यावद् विहरति, अत्र यावच्छब्देन-अब्भुज्जएण पवत्तेण पडिग्गहिएण जणवयविहार इति पाठस्य सग्रह अस्य व्याख्या प्रागुक्ता। तत्=तस्मात् श्रेयः खलु हे देवानुप्रियाःअस्माक शैलक शैलकराजर्षिम् 'उवसपज्जित्ता उपसद्य=

'तएण ते पथगवज्जा' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएण इसके बाद (ते पथगवज्जा पच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समणा अन्नमन्न सद्दावेंति) वे पांथक वर्ज५००) सौ अनगार अर्थात् ४९९ वे साधु जो शैलक राजऋषि के शिष्य थे जब इस कथा को सुना-तो सुनकर अभिलषित अर्थ की प्राप्ति वाले बनकर उन्हो ने आपस में एक दूसरे को बुलाया-(सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर इस प्रकार विचार किया-(सेलए रायरिसी पथएण अणगारेण सद्धिं बहिया जाव विहरइ) शैलक राजऋषि पांथक अनगार के साथ बाहर जनपदों में यावत् विहार कर रहे हैं।

यहा यावत् शब्द से "अब्भुज्जएण पवत्तेणं पडिग्गहिएणं जणवय विहार" इस पाठ का सग्रह किया गया है। इन पदो की व्याख्या

(तएण ते पथगवज्जा) इत्यादि!

टीकार्थ-(तएण) ત્યાર બાદ (ते पथगवज्जा पच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्तमन्न सद्दावेंति) પાથકને બાદ કરતા બીજા ચારસો નવાણુ રાજઋષિ શૈલકના શિષ્યોઓએ જ્યારે આ બધી વિગત જાણી ત્યારે ઇચ્છિત અર્થની પ્રાપ્તિની અભિલાષા રાખતા તેઓએ એક બીજાને એક સ્થાને એકઠા થવા માટે બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને એક જગ્યાએ એકઠા થઇને તેઓ વિચાર કરવા લાગ્યા, (सेलए रायरिसी पथएण अणगारेण सद्धिं बहिया जाव विहरइ) કે શૈલક રાજઋષિ પાથક અનગારની સાથે બહાર જનપદોમા વિહાર કરી રહ્યા છે,

અહી જે (यावत्) શબ્દ છે તેનાથી (अब्भुज्जए ण पवत्तेण पडिग्ग हिएण जणवयविहार) આ પાઠનો સગ્રહ થયો છે, આ પદોની

हीलनीयः निन्दनीय खिंसनीयः गर्हणीयः परिभवनीय', भवति । परलोकेऽपि च खलु आगच्छति, प्राप्नोति बहूनि दण्डानानि 'ससारो माणियव्वो' ससारो मणितव्यः । ससारे स परिभ्राम्यति अत्र ससारपरिभ्रमणपाठो वाच्य -यथा- ' अणाइय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टइ ' अनादिकम् अनवदग्रम् अनन्त दीर्घाद्ध दीर्घकाल, दीर्घाध्वान वा दीर्घमार्ग, चातुरन्त चतुर्विभाग, चतुर्गतिक, ससारएव कान्तार दुर्गममार्ग तत्, तथा अनुपर्यटति पुनःपुन भ्राम्यतीत्यर्थः ॥ ३३ ॥

मूलम्-तएणं ते पथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्न सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी-सेलए रायरिसी पंथएणं अणगारेण सद्धिं वहिया जाव विहरइ, त सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सेलयं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए, एव संपेहेंति, सपेहित्ता सेलय रायं उपसपज्जित्ताणं विहरंति ॥ सू० ३४ ॥

है, निंदनीय होता है, खिंसनीय होता है, गर्हणीय होता है, परिभवनीय होता है ।तथा परलोक में भी अनेक दण्डो को पाता है । ससार में वह परिभ्रमण करता है ।

ससार परिभ्रमण सबन्धी पाठ यहा इस प्रकार से लगा लेना चाहिये। " अणाइय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरतसमारकतार अणुपरियट्टइ " इसका भाव इस प्रकार है-ऐसा जीव अनादि अनतरूप ससार कान्तार में कि जो चतुर्गतिरूप विभाग वाला है और जिसका मार्ग या काल बहुत दीर्घ है उसमें पुनः पुनः भ्रमण करता रहता है । सूत्र ॥ ३३ ॥

હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, ખિંસનીય હોય છે, ગર્હણીય હોય છે, પરિભવનીય હોય છે તેમજ પરલોકમા પણ ઘણી જાતની શિક્ષાને પાત્ર થય છે તે સ સારમા પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે

સ સાર પરિભ્રમણ વિષે પાઠ અહીં આ પ્રમાણેજ જાણવો જોઈએ (अणाइय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरतसमारकतार अणुपरियट्टइ) આનો ભાવર્થ આ પ્રમાણે છે કે-ચતુર્ગતિ રૂપ વિભાગવાળા અનાદિ અનત રૂપ સ સાર કાતારમા કે જેનો માર્ગ ખૂબજ દીર્ઘ છે વારવાર જીવ પરિભ્રમણ કરતો જરહે છે ॥સૂત્ર ૩૩॥

टीका-'तएण' इत्यादि-ततस्तदनन्तर पान्थकवर्जाः पञ्चअनगारशतानि=पान्थकरहिताः पञ्चशतसख्यका अनगारा एकोनपञ्चशतसख्यका अनगारा इत्यर्थः। 'इमीसे कहाए' अस्या कथाया, ल्यबलोपे कर्मण्यधिकरणे चेति वार्तिकेन पञ्चमी। इमा कथामाकर्ण्येत्यर्थः। 'लद्धट्ठा' लब्धार्थाः प्राप्ताभिलषिताः सन्तः 'अन्नमन्न' अन्योन्य परस्पर 'सद्दावेंति' शब्दयन्ति आह्वयन्ति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः-शैलको राजर्षिः पान्थकेनानगारेण सार्धं बहि र्यावद् विहरति, अत्र यावच्छब्देन-अब्भुज्जएण पवत्तेण पडिग्गहिएण जणवयविहार इति पाठस्य सग्रह अस्य व्याख्या प्रागुक्ता। तत्=तस्मात्, श्रेयः खलु हे देवानुप्रियाःअस्माक शैलक शैलकराजर्षिम् 'उवसपज्जित्ता उपसद्य=

'तएण ते पथगवज्जा' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएण इसके बाद (ते पथगवज्जा पच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समणा अन्नमन्न सद्दावेंति) वे पाथक वर्ज५००) सौ अनगार अर्थात् ४९९ वे साधु जो शैलक राजऋषि के शिष्य थे जब इस कथा को सुना-तो सुनकर अभिलषित अर्थ की प्राप्ति वाले बनकर उन्हो ने आपस में एक दूसरे को बुलाया-(सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर इस प्रकार विचार किया-(सेलए रायरिसी पथएण अणगारेण सद्धिं बहिया जाव विहरइ) शैलक राजऋषि पाथक अनगार के साथ बाहर जनपदों में यावत् विहार कर रहे हैं।

यहा यावत् शब्द से "अब्भुज्जएण पवत्तेण पडिग्गहिएण जणवय विहार" इस पाठ का सग्रह किया गया है। इन पदो की व्याख्या

(तएण ते पथगवज्जा) इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) त्यार બાદ (ते पथगवज्जा पच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्न सद्दावेंति) પાથકને બાદ કરતા બીજા ચારસો નવાણુ રાજઋષિ શૈલકના શિષ્યોઓએ જ્યારે આ બધી વિગત જાણી ત્યારે ઇચ્છિત અર્થની પ્રાપ્તિની અભિલાષા રાખતા તેઓએ એક બીજાને એક સ્થાને એકઠા થવા માટે બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને એક જગ્યાએ એકઠા થઇને તેઓ વિચાર કરવા લાગ્યા, (सेलए रायरिसी पथएण अणगारेण सद्धिं बहिया जाव विहरइ) કે શૈલક રાજઋષિ પાથક અનગારની સાથે બહાર જનપદોમા વિહાર કરી રહ્યા છે,

અહીં જે (यावत्) શબ્દ છે તેનાથી (अब्भुज्जए ण पवत्तेण पडिग्ग हिएण जणवयविहार) આ પાઠનો સગ્રહ થયો છે, આ પદોની

उपगत्य तदाज्ञामङ्गीकृत्य विहर्तुं जनपदविहारं कर्तुमित्यर्थः । एव अमुना प्रकारेण सम्प्रेक्षन्ते, परस्पर पर्यालोचयन्ति, सम्प्रेक्ष्य पर्यालोच्य शैलकं 'राय' राजानं राजर्षिमित्यर्थं उपसपद्य=उपेत्य तदाज्ञामादाय विहरन्ति ॥ ३४ ॥

मूलम्-तएणं सेलए पथगपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा । एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव विहरिस्सइ ।

एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति वेमि ॥३५॥

॥ पचम णायज्झयण समत्त ॥

पहिले कर दी गइ है । (त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सेलयं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए) इसलिये हे देवानुप्रियो ! अब हम लोगो को यही उचित-कल्याण कारक-मार्ग है कि हम सब उन शैलक राजऋषि की आज्ञा को अगीकार कर बाहर जनपदों मे विहार करें ।

(एव सपेहेंति) इस प्रकार उन्होंने विचार किया-(सपेहित्ता सेलयं राय उपसपज्जित्ताण विहरंति) विचार कर वे सब के सब शैलक राजा-राजऋषि के पास पहुँचे और उनकी आज्ञा लेकर विहार करने लगे । सूत्र ॥ ३४ ॥

વ્યાખ્યા પહેલા કરવામા આવી છે (त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सेलयं उवसपज्जित्ताण विहरित्तए) એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા માટે એજ હિતાવહ છે કે અમે બધા તે શૈલક રાજઋષિની આજ્ઞા મેળવીને બહાર ના જનપદોમા વિહાર માટે નીકળીએ

(एव सपेहेंति) આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો (सपेहित्ता सेलयं राय उपसपज्जित्ताण विहरंति) વિચાર કરીને તેઓ બધા શૈલક રાજઋષિની પાસે ગયા અને તેમની આજ્ઞા મેળવીને વિહાર કરવા લાગ્યા ॥ સૂત્ર " ૩૪ " ॥

टीका—ततस्तदनन्तर खलु ' सेलए ' शैलकराजर्षिः ' पयगपामोक्खा ' पान्थकप्रमुखाः, ' पच ' पञ्च, ' अणगारसया ' अनगारशतानि, बहूनि वर्षाणि ' सामन्नपरियाग ' श्रामण्यपर्यायं 'पाउणित्ता' पालयित्वा यत्रैव पुण्डरीकः पुण्डरीकपर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यथैव स्थापत्यापुत्रः सिद्धस्तथैव सिद्धः । मासिकीं सलेखना कृत्वा केवलीभूत्वा सिद्धा मुक्ता जाता इत्यर्थः ।

एवमेव शैलकराजर्षिवदेव, हे श्रमणा आयुष्मन्तः । योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावद् प्रमादं परित्यज्य अभ्युद्यतेन सोद्यमेन प्रदत्तेन तीर्थकरानुज्ञा

' तएणं सेलए पंथगपामोक्खा ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सेलए) वे शैलक राजऋषि और (पंथगपामोक्खा पच सय अणगारसया) पाथक प्रमुख पांचसौ अनगार (बहूणि वासाणि) अनेक वर्षों तक (सामन्नपरियाग पाउणित्ता श्रामण्य-पर्याय का पालन करके (जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छति) जहा पुडरीक पर्वत था वहा आये । (उवागच्छित्ता जहेव थावच्चा पुत्ते तहेव सिद्धा) वहा आकर स्थापत्यापुत्र अनगार की तरह १ मास की सलेखना कर केवली होकर मुक्त हो गये । अर्थात् सिद्ध हो गये ।

(एवा मेव समणाउसो जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गथी वा जाव विहरिस्सइ) इसी तरह शैलक राजऋषि की तरह-(समणाउसो) हे आयुष्मत श्रमणो ! (जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव विहरिस्सइ) जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण और निर्ग्रन्थ सा वीजन यावत् प्रमाद

(तएण सेलए पथगपामोक्खा) ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર બાદ (सेलए) શૈલક રાજર્ષિ અને (पथगपामोक्खा पच अणगारसया) પાથક પ્રમુખ પાચસો અનગાર (बहूणि वासाणि) ઘણા વર્ષો સુધી (सामन्नपरियाग पाउणित्ता) શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને (जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छति) જ્યા પુડરીક પર્વત હતો ત્યા આવ્યા (उवागच्छित्ता जहेवथावच्चा पुत्ते तहेव सिद्धा) ત્યા આવીને સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારની જેમ એક માસની સલેખના કરીને કેવળી થઈ મુક્ત થઇ ગયા એટલે કે તેઓ સિદ્ધ થયા

(एवामेव समणाउसो जो अम्म निग्गथो वा निग्गथी वा जाव विहरिस्सइ) આ પ્રમાણે શૈલક રાજઋષિની જેમ (समणाउसो) હે આયુષ્મત શ્રમણો ! (जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव विहरिस्सइ) જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અને નિર્ગ્રંથ સાધ્વી જન પ્રમાદ વગેરેને ત્યજીને સોદ્યમ પ્રદત્ત-તીર્થકરાનુજ્ઞાપિત

पितेन गुरूपदिष्टेन, प्रगृहीतेन तीर्थंकरैरङ्गीकृतेन जनपदविहारेण विहरिष्यति सो ऽनगारश्चतुर्विधसघस्यार्चनीयो वन्दनीयोभूत्वा यावत् ससारस्यान्त कृत्वा मोक्षगामी भविष्यति ॥

एव खलु जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् समाप्तेन सिद्धिगतिं गतेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=उक्तरूपोऽर्थ प्रज्ञप्त=कथित । इति ब्रवीमि=अस्य व्याख्यापूर्ववत् ॥

जो ओसन्नो य पासत्थो कुसीलो वि पमायओ ।
सवेगा उज्जमो होज्जा सिद्धो सो सेलओ जहा ॥ १ ॥
छाया-योऽवसन्नश्च पार्श्वस्थः कुशीलोऽपि प्रमादतः ।
सवेगादुद्यतश्चेत् स्यात् सिद्धोऽसौ शैलको यथा ॥ १ ॥ ३५ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां 'ज्ञाताधर्मकथाङ्ग' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां पञ्चममध्ययन सपूर्णम् ॥

का परित्याग कर सोद्यम प्रदत्त-तीर्थ करानुज्ञापित-गुरूपदिष्ट और प्रगृहीत-तीर्थ करों द्वारा अगीकृत किये गये ऐसे जनपद विहार से युक्त होगा वह अनगार चतुर्विध सघका अर्चनीय वदनीय होकर यावत् ससार का अन्त कर मोक्ष गामी होगा ।

(एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि) इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि सिद्धगति को प्राप्त कर चुके हैं इस पाच वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मै कहता हूँ " इति ब्रवीमि " इन पदों की व्याख्या पहिले की

ગુરૂપદિષ્ટ અને પ્રગૃહીત તેમજ તીર્થંકરો દ્વારા સ્વીકૃત એવા જનપદ વિહારથી યુક્ત થશે તે અનગાર ચતુર્વિધ સઘનો અર્ચનીય, વદનીય થઇને યાવત્ સસારનો અત કરીને મોક્ષપદ મેળવશે

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पचमस्स णाय ज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) આરીતે હે જબૂ ! સિદ્ધ ગતિ પામેલા ભગવાન મહાવીરે આ જ્ઞાતા અધ્યયનના પાચમા અધ્યયનનો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે આમ હું તને કહું છું ' इतिब्रवीमि " આ પદોની વ્યાખ્યા

गई व्याख्या के अनुसार ही जानना चाहिये। इस संग्रह श्लोक का अर्थ इस प्रकार है-जो प्रमाद से अवसन्न पार्श्वस्थ तथा कुशील हो जाता है वह साधु-अनगार-संवेग भाग से अपने चारित्र में उद्यम शील होकर शैलक राजऋषि की तरह सिद्ध पदका भोक्ता हो जाता है। सूत्र ॥ ३५ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता धर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का पाचवा अध्ययन समाप्त॥ ५ ॥

પહેલા કરવમા આવી છે આ સગ્રહ શ્લોકનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-કે જે પ્રમાદથી અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ તેમજ કુશીલ થઈ જાય છે, તે સાધુ (અનગાર) સવેગ ભાવથી પોતાના ચારિત્રમા ઉદ્યમશીલ થઇને શૈલક રાજ ઋષિની જેમ સિદ્ધ પદને મેળવનાર થાય છે ॥ સૂત્ર ' ૩૫ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત જ્ઞાતાધર્મકથાઙગ સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ પાચમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૫॥

अथ षष्ठमध्ययन प्रारभ्यते—

गत पञ्चमाध्ययन-समति षष्ठमारभ्यते अस्याय पूर्वेण सहामिसम्बन्धः पञ्च माध्ययने प्रमादवतोऽनर्थमाप्तिः अममादवतश्चगुणःअत्रापि तावेव दोषगुणौ कथ्ये ते इत्यनेन सम्बन्धेनायातस्येदमादिमसूत्रम् ।

मूलम्—जइणं भते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते छट्ठस्स णं भते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव सपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एव खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेण समएण रायगिहे समोसरणं परिसा निग्गया । तेणं कालेण तेणं समएण समणस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई अदूरसामते जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥सू०१॥

छठा अध्ययन का प्रारभ-

पांचवाँ अध्ययन सम्पूर्ण हो चुका है । अब छठा अध्ययन प्रारम्भ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से सबन्ध है कि पाचवे अध्ययन में जो ऐसा कहा गया है कि प्रमाद युक्त अनगार को अनेक अनर्थो की प्राप्ति होती है तथा जो प्रमाद से रहित होते है उन्हें अनेक गुणों का लाभ होता है सो इस अध्ययन द्वारा उन्हीं दोष और गुणो का कथन किया जावेगा इसी सबध को लेकर यह अध्ययन प्रारभ हुआ है । इस का आदि सूत्र यह है-(जइण भते ! समणेण इत्यादि ।

છઠ્ઠા અધ્યયનનો પ્રારભ-

પાચમા અધ્યયન પછી આ છઠ્ઠુ અધ્યયન પ્રારભ થાય છે પાચમા અધ્યયનમા આ પ્રમાણે નિરૂપણ કરવામા આવ્યુ છે કે પ્રમાદિ અનગાર ઘણા અનર્થો મેળવે છે તેમજ જે અ પ્રમાદિ હોય છે તે ઘણા ગુણો પ્રાપ્ત કરે છે તો હવે આ અધ્યયનમા તે ગુણો અને દોષોનુ કથન વર્ણવવામા આવશે પાચમા અધ્યયનની સાથે આ છઠ્ઠા અધ્યયનનો એ જ સબધ છે આ સબધને વિચારવાના ઉપક્રમથી જ આ અધ્યયન શરૂ થયૂ છે છઠ્ઠા અધ્યયનનુ પહેલુ સૂત્ર આ છે-જઇણ ભતે ! સમણેણ ઇત્યાદિ ।

टीकार्थ–' जइण भंते इत्यादि, यदि खलु भदन्त श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः षष्ठस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थ प्रज्ञप्तः एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरण, परिषत् निर्गता, तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य ३ ज्येष्ठेऽन्तेवासी इन्द्रभूतिः अदूरसामन्ते जाव धर्मध्यानोपगतो विहरति ॥सू० १॥

टीकार्थ–(भते) हे भदत (जइण) यदि (जाव सपत्तेण समणेण) मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने (पचमस्स णायज्झयणस्स) पाचवे ज्ञाता ययन का (अयमट्ठे पन्नत्ते) यह पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो (छट्ठस्स ण भते ! नायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते) उन्ही मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने छठे ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है।

(एव खलु जब्बू !) इस प्रकार जबू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उन से इस तरह कहते है कि हे जबू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–

(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण परिसा निग्गया) उस काल और उस समय में राजगृह नगर मे भगवान् महावीर का आगमन हुआ। भगवान् के आगमन की बात सुनकर राजगृह नगर से परिषद् उन को वदना करने के लिये उनके समिप पहुँची (ते ण कालेण तेण समएण) उकसाल और उस समय में (समणस्स जेट्ठे अतेवासीइ

ટીકાર્થ–(भते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (जाव सपत्तेण समणेण) મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે (पचमस्स णायज्झयणस्स) પાચમા જ્ઞાતાધ્યયનનો (अयमट्ठे पन्नत्ते) આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો (छट्ठस्स ण भते ! नायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते ?) મુક્તિ મેળવેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા જ્ઞાત વ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યા છે ? (एव खलु जबु !) જબૂ સ્વામીના આ જાતના પ્રશ્નને સાભળીને જવાબ આપતા સુધર્મા સ્વામી તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે જબૂ ! તમારા પ્રશ્ન નો ઉત્તર સાભળો।

(तेण कालेण तण समएण रायगिहे समोसरण परिसा निग्गया) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા ભગવાન મહાવીર પધાર્યા ભગવાન મહાવીર સ્વામીના આગમનની જાણ થતા તેમને વદન કરવા માટે રાજગૃહ નગરથી પરિષદ નીકળી (तण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે વખતે (समणस्स जेट्ठे जतेवासी इदभई अदूरसामन्ते जाव धम्मज्झाणोवगए

मूलम्–तएणं से इंदभूई जायसड्ढे० समणस्स एवं वयासी –कहण्णं भंते! जीवा गुरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छति? गोयमा! से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्क तुंब णिच्छिड्डु निरुवहयं दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिपइ लिपित्ता उण्हे दलयइ, सुक्कं समाण दोच्चपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ वेढित्ता मट्टियालेवेण लिपइ लिपित्ता उण्हे सुक्क समाणं तच्चपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ वेढित्ता मट्टियालेवेण लिंपइ। एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे अंतरा लिपेमाणे अंतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहि मट्टियालेवेहि आलिपइ, अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से णूण गोयमा! से तुंबे तेसिं अट्ठण्ह मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयभारियत्ताए उप्पिं सलिलमाइवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवइ। एवामेव गोयमा! जीवा वि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ समज्जिणंति, तासिं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयभारियत्ताए कालमासे काल किच्चा धरणियलमइवइत्ता अहे नरगतलं पइट्ठाणा भवंति, एव खलु गोयमा! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ सू० २ ॥

दब्भूई अणगारसामंते जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ) श्रमण भगवान् महावीर के प्रधान अंतेवासी जिनका नाम इन्द्रभूतिथा उचित स्थान परबैठे हुए धर्म ध्यान में तल्लीन थे। सूत्र–१

विहरइ) શ્રમણ ભગવાનના પ્રધાન અંતેવાસી ઇન્દ્રભૂતિ ઉચિત સ્થાને બેઠેલા ધર્મ ધ્યાનમા તલ્લીન હતા ॥ સૂત્ર ૧ ॥

टीकार्थ-ततः खलु स इन्द्रभूतिः जातश्रद्धः०श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण-अवादीत् कथं खलु भदन्त ! जीवाः 'गुरुयत्त' गुरुकत्व-अधोगमनस्वभावकत्व च 'लहुयत्त' लघुकत्व-उर्ध्वगमनस्वभावकत्व 'हव्व मागच्छइ हव्यमागच्छन्ति = भगवान् महावीरस्वामी दृष्टान्तप्रदर्शन पुरः सरमुत्तरमाह-' गोयमा ' इत्यादि । गौतम ! ' से ' अथ, ' जहानामए ' यथा-नामकः=यत्किंचिन्नामकः, एक महत् शुष्क तुम्ब निश्छिद्र=छिद्रवर्जित ' निरुवहय निरुपहत=वातादिकृतविकाररहितम्. अविशीर्णम् अविदारितमित्यर्थः दर्भैः= डाभनाम्ना प्रसिद्धैस्तृणविशेषैः, कुशै. स्वनामविख्यातैस्तृणविशेषैः, वेष्टयति, वेष्टयित्वा मृत्तिकालेपेन ' लिंपइ ' लिम्पति=लिप्त करोति ' लिंपित्ता ' लिप्त्वा ' उण्हे ' उष्णे-' सूर्यातपे ' ददाति=धारयति, शुष्क सत् द्वितीय मपि=द्वितीय

' तएणसे इदभूई जाय सड्ढे ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इनके बाद (से इदभूई जाय सड्ढे०) उन इन्द्रभूति ने कि जिन्हें प्रभु के ऊपर-अपूर्व श्रद्धा है (समणस्स३ एव वयासी) श्रमण भगवान महावीर से इस प्रकार पूछा-(कहण्ण भते ! जीवा गुरुयत्तवा लहुयत्त वा हव्वमागच्छति) हे भदत जीव कैसे भारी अधोगमन करने केस्वभाव को और कैसे लघु स्वभाववाले उर्ध्व गमन करने के स्वभाव को प्राप्तकरते है ? उनके इस प्रश्नका उत्तर भगवान् दृष्टान्त पूर्वक इस प्रकार देते हैं-

(गोयमा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एग महं सुक्क तुंब निच्छिड्ड निरुवहय दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेण लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयइ) हे गौतम ! जैसे कोई पुरुष एक बडी सी निश्छिद्र, वातादि

' तएण से इदभूई जाय सड्ढे' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર બાદ (से इदभूई जाय सड्ढे) પ્રભુ ઉપર અપૂર્વ શ્રદ્ધા ધરાવનાર ઇન્દ્રભૂતિએ (समणस्स ३ एव वयासी) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછ્યો (कहण्ण भते ! जीवा गुरुयत्त वा लहुयत्त वा हव्वमागच्छति) હે ભદન્ત ! ભારે અધોગમન કરનાર સ્વભાવને તેમજ ઉર્ધ્વગમન કરનાર લઘુ સ્વભાવને જીવ કવી રીતે મેળવે છે ? તેમના આ પ્રશ્નનો જવાબ ભગવાન મહાવીર સ્વામી દૃષ્ટાતની સાથે આ પ્રમાણે આપે છે

(गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग महं सुक्क तुंब निच्छिड्ड निरुवहय दब्भेहि कुसेहि वेढेइ वेढित्ता मट्टियालेवेण लिंपइ लिंपित्ता उण्हे दलयइ) હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ માણસ એક મોટી નિશ્છિદ્ર વાતાદિવિકાર

वारमपि दर्भैश्च कुशैश्च वेष्टयति, वेष्टयित्वा मृत्तिकालेपेन लिम्पति. । लिप्त्वा उष्णे ददाति, शुष्क सत् ततीयमपि=तृतीयवारमपि दर्भैश्च कुशैश्च वेष्टयति, वेष्टयित्वा मृत्तिकालेपेन लिम्पति । एव खलु ' एएणुवाएणं ' एतेनोपायेन, अन्तरा=मध्ये, वेष्टयन्, अन्तरा=मध्येन लेपयन , अन्तरा=मध्ये शोषयन, यावत् अष्टभिर्मृत्ति कालेपैः आलिम्पति=समन्ताल्लिप्त करोति, 'अत्थाह ' अस्ताघे=स्ताघ यावतिजले नासिका न द्युडति तावत् स्ताघ गाध, स्ताघमिति नञ्समास' तस्मिन् अगाधे ऽति गम्भीरे इत्यर्थः, अथवा-'अत्थाह ' अय देशीशब्द अगाधार्थक', आर्षत्वात् सप्तम्यर्थे प्रथमा, 'अतार' अतारे तरीतुमशक्ये, ' अपोरिसियसि अपोरुषिके= पुरुषः प्रमाणमस्येति पौरुषिक, न पौरुषिकमित्यपौरुषिक तस्मिन् पुरुषप्रमाणाद धिके, पुरुषैरगाह्ये ' उदगंसि ' उदके=जले ' पक्खिवेज्जा ' प्रक्षिपति ।

कृतविकार रहित, ऐसीपूरी-०कि जो फटी तुटी नहिं है तुषी को दर्भा से और कुशों से वेष्टित करता है, और वेष्टितकर फिरउसे मिट्टी के लेप से लपेट देता है-लपेट कर उसे धूप मे सुकाना है (सुक्क समाण दोच्चपि दब्भेहिय कुसेहिय- वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेण लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे सुक्क समाण तच्चपि दब्भेहिय कुसे हिय वेढेइ, वेढित्ता मट्टिया लेवेणे लिंपइ) जब वह अच्छी तरह शुष्क हो जाती है तब दुबारा भी वह उसे दर्भ और कुशों से परि वेष्टित करता है और परिवेष्टित कर के फिर उस पर मिट्टी का लेप करता है- लेपकर पहिले की तरह फिर उसे धूप में सूखने के लिये रख देता है । सुख जाने पर उसे पुनः तृतीय वार दर्भ और कुशों से वेष्टित करता है । वेष्टित करके फिर उस पर मिट्टी का लेप करता है (एव खलु एएण वाएण अतरा वेढेमाणे अतरा लिंपेमाणे अतरा सुक्कवे- माणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिंपइ, अत्थाहमतारमपोरिसियसि

રહિત વગર તૂટેલી તુબીને દાભ તેમજ કુશથી વીટી લે છે અને ત્યાર બાદ માટીથી તેની આસ પાસ લેપ કરે છે અને તેને તાપમા સૂકવે છે (सुक्क समाण दोच्च पि दब्भेहिय कुसेहिय वेढेइ, वेढित्ता मट्टियाले वेण लिंपइ, लि पित्ता उण्हे सुक्क समाण तच्च पि दब्भेहिय कुसेहिय वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेण लि पइ) જ્યારે તુબી સારી રીતે સૂકાઇ જાય ત્યારે બીજી વખત પણ તેને દાભ અને કુશથી વીટાળીને ફરી તેના ઉપર માટીનો લેપ કરે છે લેપ કર્યા બાદ તેને તાપમા મૂકે છે આમ સૂકાઇ ગયા બાદ ત્રીજી વખત દાભ અને કુશથી વીટાળીને માટીનો લેપ કરે છે (एव खलु एएणुवाएण अत्तरा वेढेमाणेअतरा लिंपेमाणे अतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहि आलि पइ अत्थाहमतारमपोरिसिय सि उदगसि पक्खिवेज्जा) આ

अय=नून=निश्चयेन । तत्तुम्ब तेषामष्टाना मृत्तिकालेपाना सम्बन्धाद् ' गुरु-
यत्ताए ' गुरुकतया ' भारियत्ताए ' भारिकतया दर्भकुशमृत्तिकानां भारेण भारा
क्रान्ततया, अतएव-' गुरुयभारियत्ताए ' गुरुकभारिकतया उक्त हेतुद्वयस्य
सद्भावेन शीघ्रनिमज्जनस्वभावता प्रदर्शिता उपरि सलिलमतिव्रज्य=अतिक्रम्य
परित्यज्य अधो=नीचै धरणीतलप्रतिष्ठान=पृथ्वीतल प्रतिष्ठानमाधारो यस्य तत्
भवति=भूमितलमाश्रित्य तिष्ठतीत्यर्थः ।

एवमेव गौतम ! जीवा अपि प्राणातिपातेन यावद् मिथ्यादर्शनशल्येन आनु
पुर्व्या अष्टकर्मप्रकृतिः समर्जयन्ति, तामा गुरुकतया भारिकतया गुरुकभारिक

उदगसि पक्खिवेज्जा) इस तरह के उपायसे बीच २ में वेष्टित कर बीच २ में लिपकर बीच २ मे सुका कर जब आठ बार मिट्टी के लेप से उसे वह लिस कर सुकता है और बाद मे उसे अगाध गहरे पानी में कि जो अतार तथा पुरुष प्रमाण से अधिक है डाल देता है ' अत्थाह ' यह देशीय शब्द है और इसका अर्थ अगाध होता है (से णूण गोयमा से तुबे तेसिं अट्ठण्ह मट्टियालेवाण गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरियभारियत्ताए उप्पिं सलिलमइवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवइ) तो निश्चय से हे गौतम ! वह तुमी उन आठ बार के मिट्टी के लेपो के सबब से गुरु हो जाने के कारण और ८ बार के दर्भ कुशों के भार से वजन दार हो जाने के कारण जैसे शीघ्र ही ऊपर में पानी को छोड कर नीचे पानी के बैठ जाती है (एवामेव गोयमा !) इसी तरह हे गौतम ! (जीवा वि पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण अणुपुव्वेण अट्ठकम्म पगडीओ समज्जिणंति) जीव भी प्राणातिपातया

પ્રમાણે તુબીને આઠ વખત દાભ અને કુશોથી વીટાળીને તથા આ૦ વખત માટીનો લેપ કરીને તાપમા સુકવે છે ત્યાર બાદ તેને ઉંડા ' અતાર ' તેમજ પુરુષ પ્રમાણ કરતા વધારે ઘેરા પાણીમા નાખીદે છે (અત્થાહ) આ દેશીય શબ્દ છે અને તેનો અર્થ આગાધ હોય તે (से णूण गोयमा ! से तुबे तेसिं अट्ठण्ह मट्टियालेवाण गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरियभारियत्ताए उप्पिं सलिलमइवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवइ) હે ગૌતમ ! પાણીમા નાખેલી તે તુબી આઠ વખત માટીના લેપથી ભારે થઇ જવાને કારણે તેમજ આઠ વખત દાભ તથા કુશના ભારથી ભારે થઇ જવાને લીધે પાણીમા નાખતાની સાથે જ પાણીમા નીચે જતી રહે છે અર્થાત્ ડૂબી જાય છે (एवामेव गोयमा !) આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! (जीवा वि पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण अणुपुव्वेण अट्ठकम्मपगडीओ समज्जिणंति) જીવ પણ પ્રાણાતિપાત યાવત્

उया कालमासे काल कृ-वा धरणीतलमतिक्रम्य अधो नरकतलप्रतिष्ठाना भवन्ति, नरकादौ पतन्तीत्यर्थः, एव खलु गौतम ! जीवा गुरुकत्व हव्यमागच्छति शीघ्र माप्नुवन्ति, यस्मिन्समये प्राणातिपातादिक कुर्वन्ति, तस्मिन्नेव समये गुरुत्व मा प्नुवन्तीति हव्य शब्दो द्योतयति ॥ सू०२ ॥

मूलम्—अहणं गोयमा से तुवे तासि पढमिल्लुगसि मट्टियालेवसि तिन्नंसि कुहियसि परिसडियसि इसि धरणियलाओ उप्पइत्ताण चिट्ठइ, तएणतर च णं दोच्चपि मट्टियालेवे जाव उप्पइत्ताण चिट्ठइ, एव खलु एएणं उवाएण तेसु अट्ठसु

वत् मिथ्या दर्शन शल्य से क्रम२ कर अष्टकर्मों की प्रकृतियों को उपार्जित करते रहते है । अर्थात् उन से बधते रहते हैं-(तासिं गरुयत्ताए भारियत्ताए गरुयभारित्ताए कालमासे काल किच्चा धरणियल महवइत्ता अहे नरगतलपइट्ठणा भवति, एव खलु गोयमा । जीवा गुरुयत्त हव्वमागच्छति) उन प्रकृतियो को पौद्गलिक होनेके कारण गुरु और भारी होने से ये कर्म बध वाले जीव भी गुरु और भारी हो जाते है इस लिये वे काल मास मे काल करते हैं तब धरीणितल को अतिक्रमण कर नीचे नरकतल मे प्रतिष्ठित होजाते हैं ।

इस तरह हे गौतम । जीव जिस समय प्राणातिपात आदि कर्मों को करते है उसी समय में वे गुरुत्व अवस्था को प्राप्तहो जाते हैं यहबात हव्य शब्द से द्योतित होती है । सूत्र " २ "

મિથ્યાદર્શન શલ્યથી ક્રમપૂર્વક આઠ કર્મોની પ્રકૃતિઓનુ ઉપાર્જન કરતો રહે છે એટલે કે આઠ કર્મોથી જીવ બધાતો જાય છે (तासिं गुरुयत्ताए भारित्ताए गुरुयभारित्ताए कालमासे काल किच्चा धरणियलमइवइत्ता अहे नरगतलपइट्ठाणा भवति एव खलु गोयमा ! जीवा गुरुयत्त हव्वमागच्छति) તે જ્ઞાનાવરણાદિ કર્મોની પ્રકૃતિઓ પૌદ્ગલિક છે, ગુરુ તેમજ ભારે છે, એટલા માટે તેમનાથી આ કર્મ બધવાળા જીવો પણ ગુરુ તેમજ ભારે થઈ જાય છે એથી તે જીવો કાળ માસમા કાળ કરે છે ત્યારે પૃથ્વીનુ અતિક્રમણ કરીને તેની નીચે નરક તળમા અવસ્થિત થઈ જાય છે
આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવ જ્યારે પ્રાણાતિપાત વગેરે કર્મો કરે છે તે સમયે જ તેઓ ગુરુત્વ અવસ્થા મેળવે છે આ વાત 'હવ્ય' શબ્દ થી જણાય છે ॥ સૂત્ર ૨ ॥

मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे अहे धरणियलमइव-इत्ता उप्पि सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ।

एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पि लोयग्गपइट्ठाणा भवंति, एव खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छंति, एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति वेमि ॥ सू० ३ ॥

॥ छट्ठं नायज्झयणं सम्मत्त ॥ ६ ॥

टीका—अथ खलु गौतम ! तत्खलु तस्मिन् ' पढमिल्लुगंसि ' प्रथमे मृत्तिकालेपे ' तिन्नंसि ' स्तिमिते-आर्द्रता प्राप्ते ततः ' कुहियंसि ' कथिते-विनष्टे ' परिसडियंसि' परिशटिते-बन्धनमुक्ते सति, ईषत्=स्तोक धरणीतलाद् उत्पत्य-ऊर्ध्वीभूय खलु तिष्ठति । ततोऽनन्तर च खलु द्वितीयेऽपि मृत्तिकालेपे यावदुत्प-

'अहणं गोयमा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(अहणं गोयमा) हे गौतम । जैसे (से तुंबे तंमि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसिं धरणियलाओ उप्पइत्ताणं चिट्ठइ) वह तुंबी अपने ऊपर का पहेला लेप जब आर्द्र (गिला) हो जाता है, कूथित-विनष्ट-हो जाता है-परिशटित बधन मुक्त हो जाता है तब नीचे से कुछ ऊपर को उठ जाती है (तयणतरं च णं दोच्चंपि मट्टियालेवे जाव उप्पाइत्ताणं चिट्ठइ

(अहणं गोयमा !) ઇત્યાદિ !

ટીકાર્થ-(अहणं गोयमा) હે ગૌતમ ! જેમ (से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसिं धरणियलाओ उप्पइत्ताणं चिट्ठइ) પાણીમા ડૂબી ગયેલી તુબીની ઉપરનો પહેલો લેપ જ્યારે પાણીથી આર્દ્ર થઈ જાય છે-કુથિત-નાશ-પામે છે, પરિશટિત-બધ મુક્ત થઈ જાય છે ત્યારે તે નીચેથી કઈક થોડી ઉપર આવે છે, (तयणतरं च णं दोच्चंपि मट्टियालेवे

तया कालमासे काल कृ-वा धरणीतलमतिक्रम्य अधो नरकतलप्रतिष्ठाना भवन्ति, नरकादौ पतन्तीत्यर्थः, एव खलु गौतम ! जीवा गुरुकत्व हव्यमागच्छति शीघ्र प्राप्नुवन्ति, यस्मिन्समये प्राणातिपातादिक कुर्वन्ति, तस्मिन्नेव समये गुरुत्व प्राप्नुवन्तीति हव्य शब्दो द्योतयति ॥ मू०२ ॥

मूलम्—अहणं गोयमा से तुवे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि इसिं धरणियलाओ उप्पइत्ताण चिट्ठइ, तएणंतर च णं दोच्चंपि मट्टियालेवे जाव उप्पइत्ताण चिट्ठइ, एव खलु एएण उवाएण तेसु अट्ठसु

वत् मिथ्या दर्शन शल्य से क्रम२ कर अष्टकर्मों की प्रकृतियों को उपार्जित करते रहते है । अर्थात् उन से बधते रहते हैं-(तासिं गरुयत्ताए भारियत्ताए गरुयभारित्ताए कालमासे काल किच्चा धरणियल महवइत्ता अहे नरगतलपइट्ठणा भवति, एव खलु गोयमा । जीवा गुरुयत्त हव्व मागच्छति) उन प्रकृतियो को पौद्गलिक होनेके कारण गुरु और भारी होने से ये कर्म बध वाले जीव भी गुरु और भारी हो जाते हैं इस लिये वे काल मास मे काल करते है तब धरीणितल को अतिक्रमण कर नीचे नरकतल मे प्रतिष्ठित होजाते हैं ।

इस तरह हे गौतम । जीव जिस समय प्राणातिपात आदि कर्मों को करते है उसी समय में वे गुरुत्व अवस्था को प्राप्तहो जाते हैं यहबात हव्य शब्द से द्योतित होती है । सूत्र " २ "

મિથ્યાદર્શન શલ્યથી ક્રમપૂર્વક આઠ કર્મોની પ્રકૃતિઓનુ ઉપાર્જન કરતો રહે છે એટલે કે આઠ કર્મોથી જીવ બધાતો જાય છે (तासिं गुरुयत्ताए भारित्ताए गुरुयभारित्ताए कालमासे काल किच्चा धरणियलमइवाइत्ता अह नरगतलपइट्ठाणा भवति एव खलु गोयमा ! जीवा गुरुयत्त हव्वमागच्छति) તે જ્ઞાનાવરણાદિ કર્મોની પ્રકૃતિઓ પૌદ્ગલિક છે, ગુરુ તેમજ ભારે છે, એટલા માટે તેમનાથી આ કર્મ બધવાળા જીવો પણ ગુરુ તેમજ ભારે થઈ જાય છે એથી તે જીવો કાળ માસમા કાળ કરે છે ત્યારે પૃથ્વીનુ અતિક્રમણ કરીને તેની નીચે નરક તળમા અવસ્થિત થઈ જાય છે
આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવ જ્યારે પ્રાણાતિપાત વગેરે કર્મો કરે છે તે સમયે જ તેઓ ગુરુત્વ અવસ્થા મેળવે છે આ વાત 'હવ્ય' શબ્દ થી જણાય છે ॥ સૂત્ર ૨ ॥

हव्यमागच्छन्ति शीघ्र प्राप्नुवन्ति, अस्मिन्नेव समये कर्मक्षये प्रवृत्ता भवन्ति तस्मिन्नेव समये लघुकत्व प्राप्नुवन्तीत्यर्थः ।

एव खलु जम्बूः श्रमणेन भगवता महावीरेण षष्ठस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति ब्रवीमि, शेष सुगमम् ॥ सू० ३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचस्पत्यदशभाषाकलितललितक-
लापालापक-पविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछ-
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-
व्रतिविरचिताया ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतव-
र्षिण्याख्याया व्याख्याया षष्ठमध्ययन सपूर्णम् ॥ ६ ॥

(एव खलु गोयमा ! जीवाणुयत्त हव्व मागच्छति-एव खलु जबू । समणेण भगवया महावीरेण छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ३ ॥ इस तरह हे गौतम ! जिव उर्ध्व गमन स्वभाव को शीघ्र प्राप्त कर लेते हैं-अर्थात् वे जिस समय कर्मक्षय करने में प्रवृत्त होते हैं उसी समय में वे लघुत्व स्वभाव को प्राप्त हो जाते हैं । इस प्रकार हे जबू ! श्रमण भगवान महावीरने छठे अध्ययन का यह अर्थ कहा है ।सू० ३।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता धर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का छट्ठा अध्ययन समाप्त ॥ ६ ॥

(एव खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति-एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण छट्ठस नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नते त्तिबेमि । ३ । આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવ ઉર્ધ્વ ગમનવાળા સ્વભાવને તરત જ મેળવી લે છે એટલે કે જ્યારે જીવ કર્મોના નાશ માટે પ્રવૃત્ત થાય છે, ત્યારે જ તે લઘુત્વ સ્વભાવને મેળવે છે હે જબૂ આમ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા અધ્યયનનો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ॥ સૂત્ર ૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગ સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ છઠ્ઠુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૬॥

त्य खलु तिष्ठति, एव खलु एतेन उपायेन तेषु अष्टसु मृत्तिकालेपेषु स्तिमितेषु यावत् विमुक्तबधने सति-अधो धरणीतलमतिक्रम्य=उत्पत्य उपरि सलिलतलमति ष्ठान भवति,।

एवमेव गौतम ! जीवाः प्राणातिपातविरमणेन यावत् मिथ्यादर्शनशल्य-विरमणेन आनुपूर्व्या अष्टकर्मप्रकृति क्षपयित्वा गगनतलमुत्पत्य उपरि लोकाग्रे प्रतिष्ठाना. सिद्धस्वरूपावस्थिता भवन्ति । एवं खलु गौतम ! जीवा लघुकत्व

एव खलु एएण उवाएण तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबधणे अहे धरणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ) इसी तरह द्वितीय मिट्टी का लेप जब गीला होकर नष्ट हो जाता है परिशटित (सुख) जाता है तब वह तुंबी पहिले की अपेक्षा और कुछ वहा से ऊँची उठ जाती है। इसी तरह होते २ जब उस तुंबी के वे आठों ही लेप गीले कुथित एव परिशटित हो जाते हैं तब वह तुंबी बिलकुल धरितल से उठकर ऊपर पानी में आ जाती है (एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेण अट्ठ कम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइता उप्पिं लोयग्ग पइट्ठाणा भवति) इसी तरह हे गौतम। जीव प्राणातिपात के विरमण से यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के विरमण से क्रमश अष्ट कर्मों की प्रवृत्तियो को नष्ट कर ऊपर की ओर गगनतल में उठ कर लोक के अग्रभागमें सिद्ध स्वरूप से अवस्थित हो जाता है।

जाव उप्पाइत्ताण चिट्ठइ एव खलु एएण उवाएण तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबधणे अहे धरणियल मइवइत्ता उप्पिं सलिलतल पइट्ठाणे भवइ) આ રીતે તુબડીના ઉપરનો બીજી વખતનો લેપપણ ભીનો થઇને ઓગળી જાય છે, નષ્ટ થઇ જાય છે અને પરિશટિત થઇ જાય છે ત્યારે તે પહેલા કરતા પાણીમા કઇક થોડી વધારે ઉપર આવી જાય છે આમ તુબડીના આઠે આઠ લેપ ભીના થઇને ઓગળી જાય છે ત્યારે તુબડી પોતાની મેળે જ પાણીની ઉપર તરવા માડે છે (एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेण अणु पुव्वेण अट्ठ कम्म पगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पलोयग्गपइट्ठाणा भवति)

આ પ્રમાણે જ હે ગૌતમ ! જીવ પ્રાણાતિપાત ના વિરમણથી યાવત મિથ્યા દર્શન શલ્યના વિરમણથી અનુક્રમે આઠ કર્મોની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરી ને ઉપર ગગનતળમા પહોચીને લોકના અગ્ર ભાગમા સિદ્ધ સ્વરૂપથી અવસ્થિત થાય છે

हव्यमागच्छन्ति शीघ्र प्राप्नुवन्ति, अस्मिन्नेव समये कर्मक्षये प्रवृत्ता भवन्ति तस्मिन्नेव समये लघुकत्व प्राप्नुवन्तीत्यर्थः ।

एव खलु जम्बूः श्रमणेन भगवता महावीरेण षष्ठस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति ब्रवीमि, शेष सुगमम् ॥ सू० ३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचस्पत्यदशभाषाकलितललितक-लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचिताया ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतव-र्षिण्याख्याया व्याख्यायां षष्ठमध्ययन सपूर्णम् ॥ ६ ॥

(एव खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्व मागच्छति-एव खलु जबू । समणेण भगवया महावीरेण छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ३ ॥ इस तरह हे गौतम ! जिव उर्ध्व गमन स्वभाव को शीघ्र प्राप्त कर लेते है-अर्थात् वे जिस समय कर्मक्षय करने में प्रवृत्त होते हैं उसी समय मे वे लघुकत्व स्वभाव को प्राप्त हो जाते हैं । इस प्रकार हे जबू । श्रमण भगवान महावीरने छठे अ ध्ययन का यह अर्थ कहा है ।सू० ३।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता धर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का छट्ठा अ ध्ययन समाप्त॥ ६ ॥

(एव खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति-एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि । ३ । આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવ ઉર્ધ્વ ગમનવાળા સ્વભાવને તરત જ મેળવી લે છે એટલે કે જ્યારે જીવ કર્મોના નાશ માટે પ્રવૃત્ત થાય છે, ત્યારે જ તે લઘુકત્વ સ્વભાવને મેળવે છે હે જબૂ આમ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા અ ધ્યયનનો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ॥ સૂત્ર ૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધમ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત જ્ઞાતાધર્મકથાઙગ સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ છઠ્ઠુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૬॥

अथ सप्तममध्ययनं प्रारभ्यते-

गत षष्ठमध्ययनम् साम्मत सप्तममारभ्यतेऽस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः इहानन्तराध्ययने प्राणातिपातादि क्रियावता कर्मगुरुता मोक्ता, तदभिज्ञाना कर्म लघुता ततश्चानर्थार्थमाप्तिरुपोऽर्थ इहतु प्राणातिपातादि विरति स्खलितसर क्षकाणामनर्थार्थमाप्तिः मोच्येते । तत्राद्य सूत्रमाह-

मूलम्-जइणं भंते ! समणेणं जाव सपत्तेणं छट्ठस्स नाय ज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सत्तमस्स ण भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, तत्थणं राय-

---

सातवां अध्ययन प्रारम्भ—

छठा अध्ययन सम्पूर्ण हो चुका- अब सातवां अध्ययन प्रारभ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से सबन्ध है- छठे अध्ययन में प्राणातिपात आदि करनेवाले प्राणियों मे कर्म गुरुता कही गई है और नहीं करने वालो में कर्मलघुता कही गई है- तथा इन दोनो का फल क्रमश. अनर्थ एव अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में यह कहा जावेगा कि जो प्राणातिपात आदि से विरति धारण करके भी उससे स्खलित हो जाते हैं वे जीवअनर्थ पर-परा को भोगते हैं और जो उसकी रक्षा करते हैं वे अभीष्ट-इच्छित अर्थ को प्राप्त कर लेते हैं।

સાતમુ અધ્યયન પ્રારભ

છઠ્ઠા અધ્યયન બાદ હવે સાતમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે સાતમા અધ્ય યનનો છઠ્ઠા અધ્યયનની સાથે સબધ આ પ્રમાણે છે છઠ્ઠા અધ્યયન મા પ્રાણાતિપાત વગેરે કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની ગુરૂતા કહેવામા આવી છે અને પ્રાણાતિપાત નહિ કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની લઘુતા કહેવામા આવી છે તેમજ અનુક્રમે આ બનેનુ ફળ એટલે કે અનર્થ અને અર્થની પ્રાપ્તિ થવી આ વિષે કહેવામા આવ્યુ છે હવે સાતમા અધ્યયનમા કહેવામા આવશે કે જે પ્રાણાતિપાત વગેરેથી વિરતિ ધારણ કરવા છતા તેનાથી સ્ખલિત થઇ જાય છે, તે જીવો અનર્થપરપરા ઓને ભોગવે છે અને જે જીવો તેની રક્ષા કરે છે તેઓ અભીષ્ટ-મનગમતા એટલે કે ઇચ્છિત અર્થ ને મેળવે છે

गिहे नयरे धण्णे नाम सत्थवाहे परिवसइ० अड्ढे० भद्दा भारिया अहीण पंचेंदिय० जाव सुरूवा तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था त जहा–धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, त जहा–उज्झिया भोगवइया रक्खइया रोहिणिया॥सू०१॥

टीका—'जइण भते' इत्यादि–अथ जम्बूस्वामी पृच्छति हे भदन्त ! यदि खलु श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मुक्तिसमाप्तेन षष्ठस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्त, हे भदन्त सप्तमस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एव जम्बू स्वामिना प्रश्ने कृते सति सुधर्मास्वामी प्राह एव खलुजम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन्

'जइण भते ! समणेण' इत्यादि।

टीकार्थ–(जइण भते !) जम्बूस्वामी पूछते हैं कि हे भदत ! (समणेण जाव सपत्तेण उक्खस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स ण भते नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?) श्रमण भगवान् महावीर ने जो मुक्ति को प्राप्त हो चुके हैं छट्ठे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्ररूपित किया है तो हे भदत ! सप्तम ज्ञाता-ध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? (एव खलु जम्बू !) इसका उत्तर देते हुए श्री सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामी से कहते है कि हे जम्बू ! सुनो श्रमण भगवान महावीर ने जो सातवें ज्ञाता ध्ययन का अर्थ प्ररूपित किया है– वह इस प्रकार है (तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय

'जइण भते ! समणेण' इत्यादि !

ટીકાર્થ–(જઇણ ભતે !) જબૂ સ્વામી પ્રશ્ન પૂછે છે કે હે ભ ન્ત ! (સમણેણ જાવ સપત્તેણ ઉક્ષેપ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમટ્ઠે પણ્ણત્તે સતમસ્સ ણ ભતે નાયજ્ઞ યણસ્સ કે અટ્ઠે પણ્ણત્તે ?) મુક્તિ પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા જ્ઞાતાધ્યયનનો અથ પૂર્વોક્ત રીતે રજુ કર્યા છે ત્યારે હે ભદ્દત ! તેઓશ્રીએ સાતમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? (એવ ખલુ જ બૂ !) આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે જ બૂ ! સાભળો ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે સાતમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ આ પ્રમાણે

अथ सप्तममध्ययनं प्रारभ्यते-

गत षष्ठमध्ययनम् साम्मत सप्तममारभ्यतेऽस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः इहानन्तराध्ययने प्राणातिपातादि क्रियावता कर्मगुरुता मोक्ता, तदभिज्ञाना कर्म लघुता ततश्चानर्थार्थिप्राप्तिरुपोऽर्थ इहतु प्राणातिपातादि विरति स्खलितसर क्षकाणामनर्थार्थिप्राप्तिः मोच्येते । तत्राद्य सूत्रमाह-

मूलम्-जइणं भंते ! समणेणं जाव सपत्तेणं छट्ठस्स नाय ज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सत्तमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, तत्थणं राय-

---

सातवां अध्ययन प्रारम्भ—

छठा अध्ययन सम्पूर्ण हो चुका- अब सातवा अ ययन प्रारभ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से सबन्ध है- छठे अध्ययन में प्राणातिपात आदि करनेवाले प्राणियों में कर्म गुरुता कही गई है और नहीं करने वालों में कर्मलघुता कही गई है- तथा इन दोनो का फल क्रमशः अनर्थ एव अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में यह कहा जावेगा कि जो प्राणातिपात आदि से विरति धारण करके भी उससे स्खलित हो जाते हैं वे जीवअनर्थ पर-परा को भोगते हैं और जो उसकी रक्षा करते है वे अभीष्ट-इच्छित अर्थ को प्राप्त कर लेते हैं।

સાતમુ અધ્યયન પ્રારભ

છઠ્ઠા અધ્યયન બાદ હવે સાતમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે સાતમા અધ્ય યનનો છઠ્ઠા અધ્યયનની સાથે સબધ આ પ્રમાણે છે છઠ્ઠા અધ્યયન મા પ્રાણાતિપાત વગેરે કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની ગુરૂતા કહેવામા આવી છે અને પ્રાણાતિપાત નહિ કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની લઘુતા કહેવામા આવી છે તેમજ અનુક્રમે આ બનેનુ ફળ એટલે કે અનર્થ અને અર્થની પ્રાપ્તિ થવી આ વિષે કહેવામા આવ્યુ છે હવે સાતમા અધ્યયનમા કહેવામા આવશે કે જે પ્રાણાતિપાત વગેરેથી વિરતિ ધારણ કરવા છતા તેનાથી સ્ખલિત થઇ જાય છે, તે જીવો અનર્થપરપરા એને ભોગવે છે અને જે જીવો તેની રક્ષા કરે છે તેઓ અભીષ્ટ-મનગમતા એટલે કે ઇચ્છિત અર્થ ને મેળવે છે.

१ धनपालः, २ धनदेवः, ३ धनगोपः, धनरक्षितश्चेति । तस्य खलु धन्यसार्थवाहस्य चतुर्णां पुत्राणां भार्याश्चतस्र स्नुषाः-पुत्रवध्व बभूवुः तद्यथा- १ उज्झित्ता, २ भोगवतिका, ३ रक्षिता, ४ रोहिणिकाच. ॥ सू १ ॥

मूलम्-तएणं तस्स धण्णस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एव खलु अह रायगिहे बहूण ईसर जाव पभिईणं सयस्स कुडुबस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुबेसु य मतेसु य गुज्झेसुय रहस्सेसुय निच्छएसुय ववहारे सुय आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढीपमाणे आहारे आलंबणे चक्खुमेढीभूए जाव सव्व कज्जवड्ढावए तणणज्जइ जमए गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवासियंसि वा इम्मस्स कुडुंबस्स किं मन्ने आहारे वा

हुए चार सार्थवाह दारक-पुत्र-थे (त जहा) उनके नाम ये हैं-(धणपाले, धणदेवे वणगोवे धणरक्खिए) धनपाल, धनदेव, धनगोप, धनरक्षित (तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था) उस धन्य सार्थवाह को उन चारपुत्रो की भार्याएँ पुत्रवधुए-थी (तजहा-उज्झिया, भोगवइया, रक्खइया, रोहिणिया) धनपालपुत्र की भार्या उज्झितायी १ धनदेवकी भार्याभोगवतिका थी २,धनगोपकी भार्यारक्षितायी ३, धनरक्षित की भार्या रोहिणिका थी४ ॥सू० १॥

(त जहा) તેમના નામે આ પ્રમાણે છે-(धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए) ધનપાળ, ધનદેવ, ધનગોપ અને ધનરક્ષિત (तस्सण धण्णस्स सत्थवाहस्स च उण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था) ધન્ય સાર્થવાહના આ ચારે પુત્રોને ભાર્યાઓ હતી (त जहा उज्झिया भोगवइया, रक्खइया, रोहिणिया) ધનપાળની ભાર્યા ઉજ્ઝિતા હતી ૧, ધનદેવની ભાર્યા ભોગવતિકા હતી, ૨, ધનગોપની ભાર્યા રક્ષિતા હતી ૩, ધનરક્ષિતની ભાર્યા રોહિણિકા હતી ૪. ॥ સૂત્ર ૧ ॥

समये राजगृह नाम नगरमासीत्, नगरस्य बहिः सुभूमिभाग नामकमुद्यान 'तत्थ ण' तत्र खलु राजगृहे नगरे धन्यनामा सार्थवाहः परिवसतिस्म स कीदृश, 'अड्ढे' आढ्यः बहुधनधान्य समृद्ध, तस्य भद्रानाम्नी भार्या, सा किं भूता ? अ हीनपञ्चेन्द्रियशरीरा 'जाव सुरूवा' इह यावत्करणादिद ज्ञातव्य 'लक्खण वंजण गुणोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वगसुंदरगा, ससि सोमा कारा कंता पियदसणा सुरूवा' इति एतानि पदानि व्याख्यातपूर्वाणि 'तस्स ण 'तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य पुत्राः भद्राया भार्यायां 'अत्तया' आत्मजा अङ्गजा-निजकुक्षिसभवा इत्यर्थः चत्वारः सार्थवाहदारका आसन्, तद् यथा

में (रायगिहे नाम नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था (सुभूमि-भागे उज्जाणे) वहा बाहिर में एक सुभूमि भाग नाम का उद्यान था। (तत्थ ण रायगिहे धण्णे नाम सत्थवाहे परिवसइ) उस राजगृह में धन्य नाम का सार्थवाह रहता था। (अड्ढे०भद्दा भारिया, अहीण पंचे दिय० जाव सुरूवा) यह बहुत अधिक धन धान्य से समृद्ध था। इसकी भद्रानाम की भार्या थी।

इसका शरीर अहीन पचेन्द्रियो से परिपूर्ण था। सुन्दर अगवाली थी। "यावत् शब्दसे" लक्खणवंजण गुणोववेया, माणुम्माणपमाण पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वग सुंदरगा, ससिसोमाकारा, कंता पियदसणा सुरूवा "इस पाठका सग्रह किया गया है

कोई बार पहिले इन पदो का अर्थ लिखा जा चुका है। (तस्सण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाह दारया होत्था) उस धन्य सार्थवाह के भद्रा भार्या की कुक्षी से उत्पन्न

નિરૂપિત કર્યો છે (तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (रायगिहे नाम नगरे होत्था) રાજગૃહ નામે નગર હતુ (सुभूमिभागे उज्जाणे) તે નગરની બહાર સુભૂમિભાગ નામે એક ઉદ્યાન હતુ (तत्थ ण रायगिहे धण्णेनाम सत्थवाहे परिवसइ) રાજગૃહ નગરમા ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો. (अड्ढे भद्दा भारिया अहीण पंचेंदिय जाव सुरूवा) તે ઘણો જ ધન ધાન્યથી સમૃદ્ધ હતો. ભદ્રા નામે તેની પત્ની હતી તેનુ શરીર અહીન પચેન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ હતુ તે સુદર અગોવાળી હતી 'यावत्' શબ્દથી અહી (लक्खणवंजणगुणोववेया, माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वगसुंदरगा, ससिसोमाकारा, कंता पियदसणा सुरूवा) આ પાઠનો સગ્રહ થયો છે આ પદોનો પહેલા ઘણી વખત અર્થ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે (तस्सण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था) ધન્ય સાથવાહને ભદ્રા ભાર્યાના ઉદર જન્મ પામેલા ચાર સાર્થવાહ દારકો-પુત्र-હતા.

ईश्वराः-ऐश्वर्यसम्पन्नाः 'जावइएहिं' यावत् शब्देन 'तलवरमाडंबिय कोडुंबिय इब्भ सेट्ठिसेणावइसत्थवाह' एतेषां सङ्ग्रहः, तेन तलवरमाडम्बिक कौटुम्बिकेभ्य-श्रेष्ठिसेनापति सार्थवाहप्रभृतीना 'सयस्स' स्वकस्य-निजस्य कुटुम्बस्य बहुसु 'कज्जेसु' कार्येषु-प्रयोजनेषुच पुन' 'कारणेसु' कारणेषु-कार्यजातसम्पादक हेतुषुच, 'कुडुंबेसु' कुटुम्बेषु बान्धवेषु च 'मंतेसु' मन्त्रेषु-कर्त्तव्य निश्चयार्थं गुप्तविचारेषु च 'गुज्झेसु' गुह्येषु-लज्जाया गोपनीयव्यवहारेषु च 'रहस्सेसु' रहस्येषु-प्रच्छन्न व्यवहारेषुच 'निच्छएसु' निश्चयेषु=पूर्ण निर्णयेषु च 'ववहारेसु' व्यवहारेषु च बान्धवादि समाचरितलोकविपरीतादि क्रिया प्रायश्चित्तेषु अत्र चकाराः समुच्चयार्थका एतेषु विषयेषु 'आपुच्छणिज्जे' आमन्त्रणीय' ईषत्प्रष्टुयोग्य' एकदार मित्यर्थः 'पडिपुच्छणिज्जे' परिप्रश्नीयः सर्वतो भावेन प्रष्टव्य । 'मेढी' मेधिः व्रीहियवादिकणमर्दनार्थ पशुबन्धनस्तम्भ', तत्सादृश्यादयमपि मेधिः-मेधिरूपः,

कुडुंबस्स बहुसु कज्जेसु य कारणे सु य, कुडुंबे सु य, मतेसु य, गुज्झे रहस्से निच्छए, ववहारे सु य, आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढीप माणे आहारे आलंबणे) मैं राजगृह नगर मे अनेक ऐश्वर्यशाली तलवर, माडविक कौटुंबिक इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदिजनों के तथा अपने निज कुटुम्बके प्रयोजनी भूत कार्यों मे, कार्यों के साधन भूत कारणो में बन्धुजनों के कर्तव्य को निश्चय करने के लिये प्रवृत्त गुप्तविचारो में लज्जावश गोपनीय व्यवहारो मे-प्रच्छन्नव्यवहारोमें-पूर्णनिर्णयों मे, बाधवादिजनो द्वारा समाचरित लोक विरुद्धादिकार्यो के प्रायश्चित्तों मे अर्थात् इन सब विषयो मे पूछा जाता है, ये सबलोग मेरी अच्छी तरहसे सलाह लेते हैं। मै इन सब के लिये मेधी रूप हूँ

जाव पभिईण सयस्स कुडुंबस्स बहुसु कज्जेसु य कारणेसुय, कुडुंबेसु य, मतेसुय, गुज्झे रहस्से निच्छए ववहारेसुय, आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढीपमाणे आहारे आलंबणे) રાજગૃહ નગરમા હું ઘણા ઐશ્વર્યશાળી, તલવર, માડંબિક, કૌટુંબિક, ઇભ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ વગેરેના તેમજ પોતાના કુટુંબના જ ણાસ કામોમા, કાર્યોના સાધન ભત કારણોમા મગા વહાલાના કર્તવ્યોના નિશ્ચય માટે ની ગુપ્ત મંત્રણાઓમા છુપાવવા યોગ્ય લજ્જાથી સંબંધિત ગોપનીય કાર્યોમાં-પ્રચ્છન્ન વ્યવહારોમા-પૂર્ણ નીર્ણયોમા મગા સંબંધીઓ વડે આચારથી વિરુદ્ધ અનાચરણીય કરવામા આવેલા કાર્યોમાટે ની પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિમા-એટલે કે આ બધી સામાજિકરાજનીતિક અને ધાર્મિક બાબતોમા બધા મને પૂછે છે બધા માણસો મારી સલાહ લે છે આ બધા કામો માટે હું બધી રૂપ છુ, પ્રમાણ રૂપ છુ અનાજ વગેરેની હાટણી માટે

आलवे वा पडिवधे वा भविस्सइ ?त सेयं खलु मम कल्लं जाव जलते विउल असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्गं आमतेत्ता तं मित्तणाइ णियगसयण० य चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्ग विउलेणं असणं ४ धुवपुप्फ वत्थ गधजाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्ह सुण्हाणं परिरक्खणट्ठयाए पंच२ सालि अक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किण्ह वा सारक्खेइ वा संगोवेइ वा सव्वट्ठेइ वा ? ॥ सू० २ ॥

टीका- 'तएण तस्स' इत्यादि- ततस्तदनन्तर खलु तस्य धन्यसार्थवाहस्य अ यदा कदाचित् 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये कुटुम्बजागरण कुर्वतो 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूप 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः आन्तरोपायसाध्यसुखदुःखादिरूप यावत्सकल्प 'समुप्पज्जित्था' समुदपद्यत 'एव' अमुना प्रकारेण खलु 'निश्चयेन अह राजगृहे नगरे बहूना 'ईसर'

'तएण तस्स धण्णस्स' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तस्स धण्णस्स उस धन्य सार्थवाह को (अन्नया कयाइ) किसीएक समय (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि) मध्यरात्रि के समय मे जब कि वह कुटुम्ब जागरणासे जगरहा था (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार का यह आध्यात्मिक-आंतर उपाय साध्या सुख दुःखादिरूप यावत् सकल्प उत्पन्नहुवा (एव खलु अह रायगिहे बहूण ईसर जाव पभईण सयस्स

'तएण तस्स धण्णस्स' इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર બાદ (तस्स धण्णस्स) ધન્ય સાર્થવાહને (अन्नया कयाइ) કોઇ વખતે (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि) અડધી રાત્રિના સમયે જ્યારે તે કુટુંબ જાગરણ કરતુ હતુ (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) ત્યારે આ જાતનો આધ્યાત्मिક એટલે કે આંતરિક ઉપાયથી સાધ્ય સુખદુઃખ વગેરે રૂપ યાવત્ સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો-(एव खलु अह रायगिहे बहूण ईसर

तस्मात्कारणत् 'ण णज्जइ' न ज्ञायते मया 'जं' यत् यदि 'मए' मयि 'गयसि' गते ग्रामादौ 'वा' 'चुयसि' च्युते-स्खलितेवा कर्मवशादनाचरतः स्वपदात्पतिते इत्यर्थ ' मयसि ' मृते-प्राणवियोगे सति, वा ' भग्गसि ' भग्ने-रोगादिना कुब्ज खञ्जत्वेनाऽसमर्थीभूते, वा ' लुग्गसि ' रुग्णे-रोगावस्थामाप्तेसति ' सडियसिवा ' सटिते व्याधिविशेषेण जीर्णता गते सति, वा ' पडियसि ' पतिते प्रासादादितो ग्लानभावाद्वा ' विदेसत्थसि ' देशान्तर गत्वा तत्रैव स्थिते वा 'विप्पवसियसि ' विप्रोषिते - स्वस्थानविनिर्गते-देशान्तरगमनप्रवृत्ते सति वा ' मन्ने ' अहं मन्ये

आधार, आलम्बन एव चक्षु इन पदो के साथ सूत्रकार इसी बात को और जोरदार शब्दों से समझाने के लिये उपमा वाचक भूत शब्द का प्रयोग करते हुए कहते है कि यह धन्यसार्थवाह उन सब के लिये मेधिभूत था, प्रमाणभूत था, आधारभूत था, आलबनभूत था और चक्षुभूत था। इस तरह यहां पुनरक्ति दोष का सद्भाव भी नही माना जा सकता है।

कारण पहिले कथन में उसे स्वय मेधि आदि रूप कहा गया है और इस कथन में उसे उन २ जैसा कहा गया है। इस-प्रकार पुनरुक्ति दोष का वारण हो जाता है। यह धन्य सार्थवाह समस्त ईश्वर आदि जनों के सर्व कार्यों का सपादक था-इसलिये उसे यह " सर्व कार्य वर्द्धक " कहा गया है। इस प्रकार वह धन्य सार्थवाह अपने में इन समस्त बातों का विचार करके अब आगे ऐसा विचार करता है (त ण णज्जइ ज मए गयसि वा चुयसि वा, मयसि वा भग्गसि वा, लुग्गसि वा, सडियसि

સાથે સૂત્રકાર એ જ વાતને વધારે સ્પષ્ટ કરવા માટે ઉપમા વાચક 'ભૂત' શબ્દનો પ્રયોગ કરતા કહે છે કે ધન્ય સાર્થવાહ બધાને માટે મેધિભૂત હતો, પ્રમાણ ભૂત હતો, આધાર ભૂત હતો, આલબન ભૂત હતો અને ચક્ષુ ભૂત હતો એથી અહી પુનરુક્તિ રૂપ દોષ ઉદ્ભવવાની શક્યતાથી ઉભી થતી નથી કેમકે પૂર્વ કથનમા જ તેને મેધિ વગેરે રૂપ બનાવવામા આવ્યો છે અને આ વર્ણનમા પણ તેને તે પ્રમાણે જ વર્ણવવામાં આવ્યો છે આ રીતે પુનરુક્તિ દોષનુ નિવારણ પણ થઇ જ ગયુ કહેવાય ધન્ય સાર્થવાહ બધા ઈશ્વર વગેરે લોકોના બધા કામોને પાર પમાડનાર હતો એથી જ તેને " સર્વ કાર્ય વર્દ્ધક " કહેવામા આવ્યો છે આ પ્રમાણે ધન્ય સાર્થવાહ પોતાની મેળે આ બધી વાતો વિષે વિચાર કરતો આગળ આમ વિચારે છે કે (त ण णज्जइ ज मए गय सिवा चुयसिवा मयसिवा भग्गसिवा, लुग्गसिवा, सडिय सिवा,

अर्थादेतदवलम्बनैव सर्वस्यापि कुटुम्बस्यावस्थानम् ' पमाणे ' प्रमाणम् प्रत्यक्षादि प्रमाणवद् वस्तुतत्त्वप्रतिबोधकः 'आधारे' आधार -आधारवत् कुटुम्बादीनामाश्रय ' आलवणे ' आलम्बन रज्वादिवत् विपद्गर्तपतज्जनोद्धारकतयाऽवलम्बनम् ' चक्खु ' चक्षुः नेत्र तद्वत् सकलार्थप्रदर्शि, यदुक्त (मेधि प्रमाणमाधार आलम्बन चक्षुरिति ' तदेव स्पष्टबोधार्थमौपम्यवाचिभूतशब्दसमेलनेन पुनरावर्तयति मेधिभूतः इत्यादि, यावदिति -- यावच्छब्देन (पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए) इत्येषा संग्रहो बोध्यः अर्थत पुनरुक्तिदोष वारण तु पूर्वत्र मेधिरिति आरोपित मेधित्वमानित्याद्यर्थेन बोध्यम् । सव्वकज्जवड्ढावए ' सर्व कार्यवर्धक'- सर्वेषा कार्याणा, वर्धकः=सम्पादकोऽस्मि. ' त ' तद्

प्रमाणरूप हूँ। जिस कच आदिके कणों को मर्दन करने के लिये पशु जिस स्तभ में बाधे जाते हैं उसका नाम मेधी है। मेधी के सहारे से जिस तरह पशुओं का अवस्थान रहता है उसी तरह उसके सहारे से समस्त कुटुबका अवस्थान था इसलिये इसे मेधीरूप कहा गया है। प्रत्यक्ष आदि प्रमाण जैसे वस्तुतत्व के प्रतिबोधक होते हैं उसी तरह यह भी सघ के लिये वस्तु का वास्तविक स्वरूप समझा दिया करता था अत' इसे प्रमाण रूप प्रकटकिया है। मैं ही कुटुम्ब आदिका आश्रय भूत हू, रज्ज्वादिक की तरह विपत्तिरूप खड्डे में पतित जनो का उद्धारक होनेके कारण मे उनका अवलबन रूपहूँ।

चक्षु जिस प्रकार सामने के पदार्थ का यथार्थ प्रकाशन करता है उसी तरह यह भी मनुष्यों को राय लेने पर वास्तविक वस्तु के रहस्य से परिचित करा देता था। अतः इसे यहां चक्षुरूप कहा गया है इसीलिये (चक्खु मेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए) मेधि प्रमाण,

---

બળદો જે થાભલાને બાધવામા આવે છે તેનુ નામ મેધી છે મેધી જેમ પશુઓને માટે બાસ કેન્દ્રરૂપમા રહેલો આધાર હોયછે તેમજ તેપણ બધાને માટે મેધી રૂપ હતો પ્રત્યક્ષ વગેરે પ્રમાણો જેમ વસ્તુના તત્ત્વને બતાવનારા હોય છે તેમજ ધન્યસાથવાહ પણ બધાને દરેકે દરેક વસ્તુનુ સાચુ સ્વરૂપ સમજાવતો હતો તેથી તેને પ્રમાણ કહ્યો છે કુટુબનો હુ જ આશરો છુ હુ જ ઉંડા બાડામા પડેલા માણસોનો દોરીની જેમ ઉદ્ધારક છુ એથી હુ તેમના માટે અવલબન (આધાર) રૂપ છુ ચક્ષુ જેમ સામેની વસ્તુને પ્રકાશિત કરે છે તેમજ તે પણ સલાહ માટે આવેલા માણસોને વસ્તુના સાચા રહસ્યથી વાકેફ કરતો હતો એટલા માટે જ (चक्खुमेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए) મેધિ પ્રમાણ આધાર આલબન અને ચક્ષ - પોની

मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिनः परिजनांश्च चतस्रः स्नुषा कुलगृहवर्गं च विपुलेन अशनादिना ४ वृपपुष्पवस्त्रगधादिभिर्यावत् 'सक्कारेत्ता' सत्कृत्य 'सम्माणेत्ता' सम्मान्य मधुरवचनादिना, तस्यैव मित्रज्ञत्यादेः चतसृणा स्नुपाना कुलगृहवर्गस्य पुरतः समक्ष चतसृणा स्नुपाणा 'परिवखगट्ठयाए' परीरक्षणार्थं पञ्च

आमतेत्ता) तो मेरी अब इसी में भलाई है कि मै कल सूर्योदयहोते ही प्रातःकाल सूर्य के उदय होने पर विपुल मात्रा में अशन पान, खाद्य, स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार कराकर मित्र ज्ञाति, निजक स्वजन सम्बन्धी जनों को तथा परिजनो को चारों अपनी इन पुत्र वधूओं को, इनके माता पिता आदिको को भोजनार्थ आमन्त्रित करके (त मित्तणाइ णियग सयण० य चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग विउलेण असण ४ धुवपुप्फवत्थगध जाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाण परिरक्खणट्ठयाए पच २ सालि अक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किण्ह वा सारक्खेइ वा संगोवेइ वा सवड्ढेइ वा) उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन सबधियो को परिजनों को चारो इन अपनी पुत्र वधूओ को और इनके माता पिता आदिकों को उस विपुल अशनादि से और धूप पुष्प, वस्त्र गध आदि से यावत् सत्कृत करू मधुरवचनादि द्वारा उन्हें सन्मानित करूँ। सत्कृत और सन्मानित करके बाद मे मै उन्ही मित्र ज्ञाति आदि जनो के चारो ओर अपनी इन पुत्र वधूओ के कुल गृह वर्ग के समक्ष इन चारो पुत्र

चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग आमतेत्ता) હુ કાલ સવાર થતા જ સવારે સૂર્યોદય થતા અશન, પાન, સ્વાદ્ય અને ખાદ્ય આમ ચાર પ્રકારનો વિપુલ માત્રામા આહાર તૈયાર કરાવીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક સ્વજન, સબધી તેમજ પરિજનો અને ચારે પુત્રો ચારે પુત્રવધૂઓ તથા એમના માતાપિતા વગેરેને જમવા માટે બોલાવીને (त मित्तणाइ णियगसयण य चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग विउलेण असण ४ धुव पुप्फवत्थगध जाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह सुण०ाण परिरक्खणट्ठयाए पचरसालि अक्खए दलइत्ता जाणामि तावका किण्ह वा सारक्खेइवा सगोवेइवा सवड्ढेइवा) મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સબધીઓનો, પરિજનોનો, પોતાની ચારે પુત્રવધૂઓનો, અને તેમના માતા પિતા વગેરેનો પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવવામા આવેલા અશન વગેરે ચારે પ્રકારના આહારો થી અને ધૂપ, પુષ્પ વસ્ત્ર ગધ વગેરેથી સત્કાર કરૂ તથા મધુરવાણી થી તેમનુ સન્માન કરૂ તેમની સત્કાર તેમજ સન્માનની વિધિ પૂરી કર્યા બાદ હુ મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે તથા પુત્રવધૂઓના કુટુબીજનોની સામે ચારે પુત્ર

'इमस्स' अस्य कुटुम्बस्य 'किं' क' 'आहारे' आधारः आश्रयो भूमिरिव 'वा' अथवा 'आलंबे' आलम्ब-पततो रज्जादिकमिव अथवा 'पडिबंधे' प्रतिबन्धः प्रमार्जनिका शलाकादीना परिरक्षणाय दवरकइव 'भविस्सइ' भविष्यति 'त' तद्-तस्मात् 'सेय' श्रेयः खलु निश्चये मम 'कल्ल' कल्ये-श्वः प्रभात-समये यावत्-तेजसा 'जलते' ज्वलतिसति-दिनकरे उदय प्राप्ते विपुल-प्रचुर आशन ४ 'उवक्खडावेत्ता' उपस्कार्य निष्पाद्य मित्रज्ञाति निजक स्वजन सम्बन्धिन परिजनान् चतस्रः स्नुषा 'कुलघरवग्ग' कुलगृहवर्गं, कुलघर-पितृगृह तद् वर्गं मातापित्रादिक 'आमंतेत्ता' आमन्त्र्य=भोजनार्थमाहूय 'त' तान्

वा पडियसि वा विदेसत्थसि वा विप्पवसयसि वा इमस्स कुडुबस्स किं मन्ने आहारे वा आलबे वा पडिबधे वा भविस्सइ ?) कि ऐसा मैं यदि यहा से दूसरे ग्राम आदि को चला जाऊँ, या कर्मवशात् स्वपद से च्युत हो जा , मरजाऊँ किसी रोग आदि के द्वारा कुबडा या लूला बन जाऊँ, रोग से ग्रसित हो जाऊँ, किसी व्याधि विशेष से जीर्ण शरीर हो जाऊँ किसी मकान आदि से अचानक गिरजाऊँ विदेश जाकर वहाँ रहने लगजाऊँ,अथवा यहां से विप्रोषित परदेश रहने वाला जाऊँतो ऐसी स्थिति में मुझे ऐसा कोई नही ज्ञात होता है कि जो इस मेरे कुटुम्ब का आधार होगा आलम्बनभूत होगा उसको बुहारू समार्जनी की सीकों को एकत्र बांध कर रक्षा करने वाले डोरेके सामान रक्षा करने वाला होगा। इसलिये जब मै ऐसा मानता हूँ (त सेय खलु मम कल्ल जाव जलते विउल असण ४ उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ०चउण्ह सुहाण कुलघरवग्गं

पडिय सिवा, विदेसत्थ सि वा विप्पवसय सि वा इमस्स कुडु बस्स किं मन्ने आहारे वा आलबे वा पडिब धे वा भविस्सइ ?) ने હુ અહીથી બીજે ગામ જતો રહુ કે કર્મવશાત સ્વપદ (પોતાના અધિકાર) થી ભ્રષ્ટ થઇ જાઉ કે મરણુને ભેટુ, રોગ વગેરેમા સપડાઇને કૂબડો અથવા અપ ગ થઇ જાઉ, રોગી થઈ જાઉ કોઇ વ્યાધિ વિશેષમા સપડાઇને સાવ દુર્બળ શરીરવાળો થઇ જાઉ, કોઇ મકાન ઉપરથી ઓચિંતો પડીજાઉ, વિદેશમા જઇને ત્યા રહેવા લાગુ અથવા તો અહીથી વિપ્રોષિત-પરદેશમા રહેનાર થઇ જાઉ ત્યારે એવી સ્થિતિમા મને એવી કોઈ પણ વ્યક્તિ દેખાતી નથી કે જે મારા કુટુબનો આધાર થઇ શકે, આલબન ભૂત થઇ શકે સાવરણીના છૂટાપડેલા તણુાઓને એકીસાથે બાધનાર દોરીની જેમ મારા આ કુટુબને એકી સાથે સ પીને રાખનાર તેમજ તેની રક્ષાકરનાર કોણ હશે ? જો અત્યારે આવી પરિસ્થિતિ છે તો મારો એ વિચાર છે કે—
(त सेय खलु मम कल्ल जाव जलते विउल असण ४ -

विसज्जेइ, तएणं सा उज्झिया धण्णस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पच सालि अक्खए गेण्हइ गेण्हित्ता एगतमवक्कमइ एगतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए० एवं खलु तयाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालिणं पडिपुण्णा चिट्ठति । त जया णं मम ताओ इमे पच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाण अह पल्लंतराओ अते पच सालि अक्खए गहाय दाहामि त्तिकट्टु एव सपेहेइ सपेहित्ता ते पच सालि अक्खए एगते एडेइ एडित्ता सकम्मसजुत्ता जाया यावि होत्था ॥ सू० ३ ॥

टीका–'एव सपेहेइ' इत्यादि–एव उक्तरूपेण सप्रेक्षतेमनसि विचार्यते 'सपेहित्ता समेक्ष्य–पर्यालोच्य कल्ये प्रभातसमये, यावत् तेजसा ज्वलति, सूर्य उद्गते सति मित्रज्ञाति स्वजनप्रमुखान् चतसृणा स्नुषाणा कुलगृहवर्ग च–पितृगृहसम्बन्धिमाता पित्रादीन्, आमन्त्रयति निमन्त्रयति, आमन्त्र्य विपुलमशनादिक चतुर्विधाहार उप-

'एव सपेहेइ सपेहित्ता' इत्यादि ।

टीकार्थ–(एव सपेहेइ) धन्यसार्थवाह ने इस पूर्वोक्त प्रकार अपने मन में विचार किया (सपेहित्ता) विचार करके (कल्ल जाव मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग आमतेइ आमतित्ता विउल असण ४ उवक्खडावेइ) फिर उसने प्रातकाल होते ही सूर्य के उदय हो जाने पर मित्र, ज्ञाति, स्वजन आदि को और चारों ही पुत्रवधूओ के कुल गृह वर्ग को–उनके माता पिता आदिको को आमन्त्रित किया । आमन्त्रित

એવ સપેહેઇ, સપેહિત્તા' ઇત્યાદિ !

ટીકાર્થ–(એવ સપેહેઇ) ધન્યસાર્થવાહે પૂર્વોક્ત રૂપે પોતાના મનમા વિચાર કર્યો (સપેહિત્તા) વિચાર કરીને (કલ્લ જાવ મિત્તણાઇ ચઉણ્હ સુણ્હાણ કુલઘર વગ્ગ આમતેઇ આમતિત્તા વિઉલ અસણ ૪ ઉવક્ખડાવેઇ) સવારે સૂર્યઉદયપામતા ની સાથે જ તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન વગેરેને અને ચારે ચાર પુત્ર વધૂઓના કુટુંબીજનોને તેમના માતાપિતા વગેરેને જમવા માટે આમન્ત્રિત

पञ्च सख्यकान् शाल्यक्षतान् शालिकणान् दत्वा 'जाणामि' जानामि 'ताव' तावत् निश्चयेन 'का' स्नुषा 'किह' कथ केन प्रकारेण 'सारक्खेइ' संरक्षयति सगोपयति -संवरणतः, मञ्जूषादिषु सस्थापनेन गोपन करोति. अथवा का-वधू 'संवड्ढेइ' सम्वर्धयति बहुत्वकरणतः वपनादिना ? ॥ सू० २ ॥

मूलम्-एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग आमतेइ आमंतित्ता विउल असणं ४ उवक्खडावेइ, तओ पच्छा पहाए भोयणमडवंसि सुहासण० मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गेणं सद्धि त विउल असण ४ जाव सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ पच सालि अक्खए गेण्हइ गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्हा उज्झिया त सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-तुम ण पुत्ता मम हत्थाओ इमे पच सालि अक्खए गेण्हाहि गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि । जयाणऽह पुत्ता ! तुम इमे पच सालि अक्खए जाएज्जा तयाण तुम मम इमे पच सालि अक्खए पडिदिज्जाएज्जासि तिकट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ दलयित्ता पडि-

---

धूओं की परीक्षा के निमित्त उन्हें पांच पाच शालिकणों को दूँ- और देकर यह ज्ञात करूँ कि इन मे से कौन पुत्र वधू किस तरह से इनकी रक्षा करती है, कौन पुत्र वधू इन्हे मजूषा आदि मे रखकर गुप्त रखती है और कौन सी पुत्रवधू वपनादि क्रिया द्वारा उन्हे बढाती है। सूत्र '२'

વધૂઓની પરીક્ષા માટે તેઓમાથી દરેકને પાચ પાચ શાલિકણો (ડાગરના કણો) આપુ અને આપીને એ વાતની પરીક્ષા કરૂ કે તેઓમાથી કોણ કેવી રીતે તે શાલિકણોને સાચવી રાખે છે કઇ પુત્ર વધૂ શાલિકણોને પેટી વગેરે મા મૂકીને ગુપ્ત રાખે છે ? અને કઇ પુત્રવધૂ શાલિકણો ને વાવીને તેમની વૃદ્ધિ કરે છે ? ॥ સૂત્ર ૨ ॥

एवमवदत् हे पुत्रि त्व खलु मम हस्तादिमान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृहाण, गृहीत्वाच 'अणुपुव्वेण' अणुपूर्व्या-अनुक्रमेण सरक्षन्ती सगोपायन्ती 'विहराहि' विहर । 'जया' यदा-यस्मिन् समये खलु हे पुत्रि ! अह 'तुम' तवपार्श्वे इमान् पञ्च शाल्यक्षतान् 'जाएज्जा' याचय, 'तया' तदा तस्मिन् समये खलु 'तुम' त्व मम इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'पडिदिज्जासि' प्रतिदद्याः पश्चाद् मह्य समर्पये, इतिकृत्वा-इत्युक्त्वा ज्येष्ठाया स्नुषायाः हस्ते ददाति, दत्वा च प्रतिविसर्जयति,

धन्य सार्थवाह ने अपने मित्र ज्ञाति आदि जनों के तथा उन चारो जपनी पुत्रवधूओ के कुल गृहवर्ग के सामने पांच शाल्यक्षतो को लिया और लेकर ज्येष्ठा जो पुत्रवधू थी कि जिसका नाम उज्झिका थी उसे बुलाया (सदाविन्ता एव वयासी तुम ण पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, गेण्हित्ता अणुपुव्वे ण सारक्खेमाणी सगोवेमाणी विहराहि) बुलाकर उससे ऐसा कहा-पुत्रि ! तुम मेरे हाथ से इन पांच शाल्यक्षतो को लो और लेकर इन्हे सुरक्षित रखो सम्भा लकर अच्छी तरह से रखो। (जयाण अह पुत्ता ! तुम इमे पच सालिअक्खए जाएज्जतयाण तुम मम इमे पच सालिअक्खए पडिदिज्जाएज्जासि) जब मै हे पुत्रि ! तुम से इन पाच शालि अक्षतों को मागू तब तुम मेरे लिये इन्हें पीछे देना ।

(त्तिकट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ) ऐसा कहकर उसने उस ज्येष्ठ स्नुषा के हाथ मेंउन शाल्यक्षतो को दे दिया । (दलयित्ता पडिविसज्जेइ) देकर फिर उसे विसर्जित कर दिया ।

ભેહમાનોનો સત્કાર તેમજ સન્માન થઈ ગયુ ત્યારે ધન્ય સાર્થવાહે પોત ના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે સ્વજનો તેમજ ચારે પુત્ર વધૂઓના માતાપિતા વગેરે સગાવહાલા ઓની સામે પાચ શાલિકણો (ડાગ્ના કણો) લીવા અને પોતાના સૌથી મોટા પુત્રની ભાર્યા ઉજ્ઝિકાને બોલાવી (સદાવિત્તા એવ વયાસી તુમ ણ પુત્તા ! મમહત્થાઓ ઇમે પચસાલિ અક્ખએ ગેણ્હાહિ ગેણ્હિત્તા અણુપુવ્વેણ સારક્ખેમાણી સગોવેમાણી વિહરાહિ) બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ " હે પુત્રિ ! આ પાચ શાલિકણોને તમે સ્વીકારો અને એમને સારી રીતે સભાળીને સુરક્ષિત રાખો (જયાર્ણ અહ પુત્તા ! તુમ ઇમે પચ સાલિ અક્ખએ જાએજ્જ તયાણ તુમ મમ ઇમે પચસાલિ અક્ખએ પડિદિજ્જાસિ) હે પુત્રિ ! જ્યારે હુ તમારી પાસેથી શાલીકણો માગુ ત્યારે તમે મને પાછા આપજો

(ત્તિકટ્ટુ સુણ્હાએ હત્થે દલયઇ) આમ કહીને તણે મોટા પુત્રની વધૂના

ગો ને મૂકી દીધા (દલયિત્તા પડિવિસજ્જેઇ) શાલીકણો

स्कारयति=निष्पादयति. ततः पश्चात् स्नातो भोजनमण्डपे सुखासननिषण्णः-सुखेनासने उपविष्टः सन् मित्रज्ञातिस्वजनादिभिः सार्द्धं चतसृणा स्नुषाणा च कुलगृहवर्गेणच सार्द्धं तद्विपुलमशनादिक भोजयित्वा यावत्सत्कारयति वस्त्रादिभिः समानयति मधुरवचनादिना, सत्कार कृत्वा समानयित्वा तस्य धन्यसार्थवाहस्यैव स्वमित्रज्ञाति प्रमुखाणामग्रे चतसृणा स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य पुरत पञ्चशालि क्षतान्, गृह्णन्ति गृहीत्वा ज्येष्ठा स्नुषा उज्झिका नाम्नी तां शब्दयति शब्दयित्वा

करने के बाद फिर उसने विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया।

(तओ पच्छा ण्हाए भोयण मडवम्मि सुहासण० मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गेण सद्धिं त विउल असण ४ जाव सक्कारेइ, सम्माणेइ) जब चतुर्विध आहार निष्पन्न हो चुकी तब वह स्नान करके भोजनशाला मे सुख से आसन पर उपविष्ट (बैठगया) हो गया और मित्र, ज्ञाति एव स्वजनादि को के साथ २ और अपनी पुत्रवधूओं के माता पिता आदिकों के साथ २ उस चतुर्विध भोजन की विपुल सामग्री का आहार करने के बाद में उन सबका उस ने वस्त्रादि से सत्कार किया तथा मधुरवचनादि से सन्मान किया। (सक्कारित्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ पच सालि अक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्हा उज्झिया त सद्दावेइ) जब सबका सत्कार और सन्मान हो चुका तब उस के बाद

કર્યો આમંત્રણ આપ્યા પછી ધન્ય સાર્થવાહે પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન વગેરે નો ચાર પ્રકારનો આહાર બનાવડાવ્યો

(तओपच्छाण्हाए भोयणमडवासि सुहासण मित्तणाइ चउण्हय सुण्हाण कुलघरवग्गेण सद्धिं त विउलं असण ४ जाव सक्कारेइ सम्माणेइ) જ્યારે ચારે જાતનો આહાર તૈયાર થઇ ગયો ત્યારે તે સ્નાન કરીને રસોઇ ઘરમા સુખેથી આસન ઉપર બેસી ગયો અને મિત્ર, જ્ઞાતિ અને પોતાના સ્વજનો વગેરેની સાથે તેમજ પોતાની પુત્ર વધૂઓના સગા વહાલાઓ માતાપિતાઓ ની સાથે ચારે જાતના પુષ્કળ પ્રમાણમા તૈયાર કરવા મા આવેલા આહારને જમ્યો જમ્યા પછી તેણે વસ્ત્રો વગેરે આપીને તે બધાને સત્કાર્યા તેમજ મધુર વચનોથી તે બધાનુ સન્માન કર્યું (सक्कारित्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ, चउण्हय सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ पचसालि अक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्ह उज्झिया त सद्दावेइ) જ્યારે બધા આમંત્રિત

तस्मात्-कारणात् यदा यस्मिन् समये खलु मम तात श्वसुर इमान् पञ्च शाल्यक्षतान् याचिष्यति 'तया ण' तदानी तस्मिन्नेव समये खलु अहं 'पल्लतराओ' पल्यान्तरात्-कोष्ठागारस्य यो अन्यतरा पल्यकात् 'अन्ने' अन्यान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'गहाय' गृहीत्वा 'दाहामि' दास्यामि, इति कृत्वा-इति मनसि निधाय 'एव सपेहेइ' एव सप्रेक्षते-चिन्तयति 'सपेहित्ता' सप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य 'ते' तान् श्वसुरप्रदत्तान पञ्चशाल्यक्षतान् 'एगते' एकान्ते 'एडेइ' एडति-प्रक्षिपति-पातयतीत्यर्थः 'एडित्ता' प्रक्षिप्य 'सकम्मसजुत्ता' स्वकर्म समयुक्ता-जाताचाप्य भवत् स्वगृहादिकार्यस्मरणे उद्युक्ताऽऽसीदित्यर्थः ॥सू० २॥

मूलम्-एवं भोगवतियाए वि, णवरं सा छोल्लेइ छोल्लित्ता अणुगिलइ अणुगिलित्ता जाया, एव रक्खयावि, णवरं गेण्हइ गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए० एवं खलु मम ताओ इमस्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ सद्दावेत्ता एव वयासी-तुमण्णं पुत्ता मम हत्थाओ जाव पडिदिज्जा

त्ति कट्टु पच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाण अहं पल्लतराओ अते पच सालिअक्खए गहाय दहामित्ति कट्टु एव सपेहेइ सपेहित्ता ते पंच सालि अक्खए एगते एडेइ, एडित्ता सकम्मसजुत्ता जाया यावि होत्था) जब ऐसा किसने ही पल्यक चावलो के कोष्ठागार में भरे हुए रखे हैं तो जिस समय श्वशुरजी इन पाच शाली-अक्षतों को मुझसे मा गेंगे मैं उसी समय कोष्ठागार के मध्य में से किसी एक दूसरे पल्यक से लेकर इन पाच शालि-अक्षतो को दे दूगी। ऐसा उसने विचार किया। विचार करके बादमें उसने श्वसुरप्रदत्त पाचशालि अक्षतो को एकान्त मे दिया। और डालकर फिरवह अपने घर के काम करने में लग गई ॥ सू० ३ ॥

जयाण मम ताओत्ति कट्टु पच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाण अहं पल्लतराओ अते पच सालि अक्खए गहाय दहामि त्तिकट्टु एव सपेहेइ, सपेहित्ता ते पच सालि अक्खए एगते एडेइ, एडित्ता सकम्मसजुत्ता जाया यावि होत्था) જ્યારે, ઘણા પલ્યકો ચોખા કોઠારમા છે તો જે વખતે સસરા પાચ શાલિકણો માગશે તે વખતે પાચ શાલિકણો કોઠારના પલ્યકોમાથી લઈને તેમને આપી દઈશ " આ પ્રમાણે વિચારીને સસરાએ આપેલા પાંચ શાલિકણોને મોટા પુત્રની વધૂએ એક તરફ ફેકી દીધા અને ફેકીને પોતાના ઘરકામમા પરોવાઈ ગઇ ॥ સૂત્ર " ૩ " ॥

ततस्तदनन्तर खलु सा-उज्झिका नाम्नी वधूः धन्यस्य सार्थवाहस्यैतमर्थं 'तहत्ति तथेति कृत्वा-तथास्त्विति कथयित्वा 'पडिसुणेइ' प्रतिश्रृणोति स्वीकरोति। 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य धन्यस्य सार्थवाहस्य हस्तात् 'ते' तान् पञ्चशालयक्षतान् गृह्णति गृहीत्वा 'एगतमवक्कमइ' एकान्तमपक्रामति एकान्त स्थाने गच्छति 'एगतमवक्कमियाए' एकान्तमपक्रमितायाः एकान्त गच्छन्त्या' मनसि 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूप 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिक -आत्माश्रयो या-वत्सकल्पःसमुदपद्यत एवममुना प्रकारेण खलु निश्चयेन 'तायाण' तातस्य श्वशुरस्य (तायाण) अत्र आदरार्थं बहुवचन, 'कोट्ठागारंसि' कोष्ठागारे 'बहवे' बहव -अनेकसख्यकाशालिना 'पल्ला' पल्यका -पल्यप्रमाणविशेषा तैः 'पडिपुन्ना' प्रतिपूर्णाः भृतास्तिष्ठति सार्द्धत्रयमणप्रमितानां धान्यानामेक पल्लक इत्यभिधीयते ते पल्लका बहव कोष्ठागारे भृताः सतीति भावः। 'त जया णं' तद्-

(तएण सा उज्झिया धण्णस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ) चलते समय उस ज्येष्ठ पुत्र वधू उज्झिका ने धन्य सार्थवाह के "तथास्तु" कहकर इस कथनरूप अर्थको स्वीकार करलिया (पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पच सालि अक्खए गेण्हइ) स्वीकार करके धन्य सार्थवाह के हाथ से उन पाच शालयक्षनों को फिर उसने ले लिया।

(गेण्हित्ता एगतमवक्कमइ) लेकर फिर वह वहा से एकान्त स्थान मे चली गई। (एगतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए०) वहा आकर उसने ऐसा विचार किया-(एव खलु तायाण कोट्ठागारंसि बहवे पल्लासालि ण पडिपुण्णा चिट्ठति) तात-श्वशुरजी-के कोष्ठागार में-अनेक चावलो के पल्यक भरेहुए रक्खे हैं। यहा पल्यक एक प्रमाण विशेष का नाम है। यह ३॥) मन का होता है। त जयाण मम ताओ

આપીને તેમને જવાની આજ્ઞા આપી (तएण सा उज्झिया धण्णस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ) જતી વખતે મોટા પુત્રની વધૂ ઉજ્ઝિકાએ ધન્ય સાર્થવાહને 'સારૂ' (तथास्तु) આમ કહીને તેની આજ્ઞાને સ્વીકારી (पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पच सालिअक्खए गेण्हइ) આજ્ઞા સ્વીકાર્યા પછી ધન્ય સાર્થવાહના હાથથી તેમણે પાચ શાલિકણો લઈ લીધા

(गेण्हित्ता एगतमवक्कमइ) શાલિકણો ને લઈને તે ત્યાથી એકાંત તરફ જતી રહી (एगतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए०) ત્યા એકાંત તરફ આવીને તેણે વિચાર કર્યો-(एव खलु तायाण कोट्ठागारसि बहवे पल्लासालिण पडिपुण्णा चिट्ठति) "મારા સસરાના કોઠારમા ચોખાના ઘણા પલ્યકો ભરેલા છે (પલ્યક એક પ્રમાણ વિશેષનુ નામ છે તે ૩॥ મણનુ હોય છે) (त

ध्यात्मिक-आत्माश्रेय चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत सकल्प. समुदपद्यत, एव खलु मा तात श्वसुरः ' इमस्स ' एतेषा मित्रज्ञातिप्रमुखाणा ' पुरओ ' पुरतः-समक्ष पुनश्चतसृणां स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य पुरतोऽग्रे शब्दयित्वा चैवमवादीत् वक्ष्यमाण-रीत्या मा कथितवान् त्व खलु ' पुत्ता ' हे पुत्रि ! मम हस्तादिमान् पञ्चशालि-कणान् गृहाण गृहीत्वा आनुपूर्व्या सरक्षन्ती सगोपायन्ती विहर, यावद् यदाऽह पुनर्याचेय तदा खलु त्व मह्यमिमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'पडिदिज्जाएज्जासि' प्रति-दद्याः प्रति समर्पयेः, इति कथयित्वा मम हस्ते पञ्चशालिकणा ददाति ' त-भवि-यव्व मेत्थ कारणेण ' तस्माद्भवितव्यमत्र किंचित्कारणमित्येव ' सपेहेइ ' सप्रेक्षते -पर्यालोचयति विचारयतीत्यर्थः ' सपेहित्ता ' सप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य ' ते ' तान्

उसने वे ले लिया। लेने के बाद उसे ऐसा विचार आया (एव खलु मम ताओ इमस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हा ण कुलघरवग्ग स्स य पुरओ सद्दावेत्ता एव वयासी) कि ये मेरे तात-श्वसुर-जो मुझे इस मित्र ज्ञाति-आदि मडली के समक्ष बुलाकर इसतरह कह रहे हैं (तुमण्ण पुत्ता ! मम हत्थाओ जाव पडि दिज्जाएज्जासि त्तिकट्टु मम हत्थसि पच सालि अक्खए दलयइ त भवियव्वमेत्थ कारणेण) कि " हे पुत्रि। तुम मेरे हाथसे पांच शाल्यक्षतो को लो और लेकर इन्हे सु रक्षित देखो। जब मै तुम से इन्हे पीछे वापिस मागू तो तुम इन पाचो शाल्यक्षतोको मुझे समर्पित कर देना। सो ऐसा कहकर जो ये पाच शाल्यक्षतो को मुझे दे रहे हैं तो इस विषय में कोई न कोई कारण अवश्य होना चाहिये (त्तिकट्टु एव सपेहेइ, सपेहित्ता ते पच सालि

કણોને લઇ લીધા અને ત્યાર બાદ તેને આ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો-(एव खलु मम ताओ इमस्स मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ सद्दावेत्ता एव वयासी) ' મારા સસરા પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓ ના માતાપિતા વગેરેની સામે મને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહી રહ્યા છે-(तुमण्ण पुत्ता! मम हत्थाओ जाव पडिदिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु मम हत्थसि पचसालि अक्खए दलयइ त भवियव्वमेत्थकारणेण) " હે પુત્રિ ! આ પાચ શાલિકણો તમે મારી પાસેથી લો અને લઇને એમને સભાળીને રાખો ત્યારે હુ તમારી પાસેથી શાલિકણો માગુ ત્યારે આ પાચે શાલિકણો તમે મને પાછા આપજો આમ કહીને મને આ શાલિકણો આપી રહ્યા છે તો એની પાછળ ગમેતે કારણ તો હોવુ જ જોઇએ (त्ति कट्टु एव सपेहेइ सपेहित्ता ते पचसालि अक्खए सुद्धे वत्थे बधइ ,बधित्ता रयण कर डियाए पक्खिवेइ

एज्जासि तिकट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ त भवियव्वमेत्थ कारणेणं तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ पक्खिवित्ता ऊसीसा मूले ठावेइ ठावित्ता तिसझं पडिजागरमाणी विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—एव भोगवतिकामपि-भोगवती नाम्नीं स्नुषामप्याह्वयति नवरं 'सा' भोगवती श्वशुरप्रदत्तपञ्चशालिकणरूपानक्षतान् स्वस्थाने नीत्वा 'छोल्लेइ' तुषरहित करोति 'छोल्लित्ता' निष्तुषीकृत्य 'अणुगिलइ' अनुगिलति-भक्षयति, 'अणुगिलित्ता' अनुगिल्य भक्षयित्वा 'जाया' स्वकार्यसमयुक्ता जाताचाप्यासीत्-स्वगृहकार्यकरणे लग्नाऽभवदिति भावः। एवमनेनैव प्रकारेण रक्षितामपि-रक्षितानाम्नीं तृतीया स्नुषामप्याह्वयति, आहूय तेन पचसख्याः शालिकणा दत्ताः, नवर सा तान् गृह्णाति, रम गृहीत्वा चायमेतद्रूपः 'अज्झत्थिए' आ

'एव भोगवतियाए वि' इत्यादि। सूत्र

टीकार्थ-(एव भोगवतियाए वि) उसी तरह भोगवतिका नामकी अपनी पुत्रवधू थी-उसे भी धन्यसार्थवाहने बुलाया (णवर) इसमें विशेषता केवल इतनी रही कि (सा छोल्लेइ) उसने उन शाल्यक्षतोंको अपने स्थान पर लेजाकर तुषरहित किया (छोल्लित्ता अणुगिलइ) और तुष रहित कर वहउन्हे खा गई (अणुगिलित्ता जाया) खाकर बादमें अपने काम मे लग गई। (एव रक्खिया वि) इसी प्रकार धन्यसार्थवाहने अपनी तीसरी रक्षिता नामकी पुत्रवधू को बुलाया (णवर गेण्हइ, गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए०) बुलाकर उसे भी पाच शालिकणो को दिया।

'एव भोगवतियाएवि' इत्यादि

ટીકાર્થ-(एव भोगवतियाए वि) આ પ્રમાણે ધન્યસાર્થવાહે ભોગવતિકા નામની પોતાની બીજી પુત્રવધૂને બોલાવી (णवर) ભોગવતિકાના વિષે વધારાનુ એ જાણવુ જોઇએ કે (सा छोल्लेइ) તેણે શાલિકણોને પોતાના નિવાસ સ્થાને લઈ જઈને તુષ (ફોતરા) વગરના બનાવ્યા (छोल्लित्ता अणुगिलइ) અને શાલિકણોના ફોતરા સાફ કરીને તેમને ખાઇ ગઈ (अणुगिलित्ता जाया) ખાધા પછી તે પોતાના કામમા પરોવાઈ ગઇ (एव रक्खिया वि) આ રીતે ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતાને બોલાવી (णवर गेण्हइ गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए) બોલાવીને તેમને પણ પાચ શાલિકણો આપ્યા રક્ષિત શાલિ-

वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खयनिहए करेह करित्ता वाडिपक्खेव करेह करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं संवड्ढेह । तएणं ते कोडुविया रोहणीए एयमट्ठं पडिसुणंति ते पंच सालि अक्खए गिण्हति गिण्हित्ता अणुपुव्वेण सारक्खति संगोवति विहरति तएणं ते कोडुंविया पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति करित्ता ते पंच सालि अक्खए ववति दुच्चपि तच्चपि उक्खयनिहए करेंति करित्ता वाडिपरिक्खेव करेंति करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरति ॥ सू० ५ ॥

टीका—' तएण से धण्णे ' ततस्तदनन्तर खलु स धन्यसार्थवाह ' तहेव ' तस्यैव मित्रादीन् यावच्चतुर्थीं रोहिणिका स्नुषा शब्दयति, शब्दयित्वा ' जाव ' यावच्छब्देन यथा तृतीया रक्षिका शाल्यक्षतविषये चिंतयति तथैव रोहिणिकापि

' तएण से धण्णे ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से धण्णे) उस धन्यसार्थवाह ने (तहेव मित्त जाव चउत्थिं रोहिणीय सुण्ह सद्दावेइ) उसी तरह मित्रादि परिजनों के समक्ष अपनी चतुर्थ पुत्रवधू कि जिसका नाम रोहिणी था उसे बुलाया (सद्दावित्ता जाव त भणियव्व) बुलाकर उसे पाच शाल्यक्षत देकर उन्हे सुरक्षित रखने के लिये उससे कहा ।

श्वसुर की बात सुनकर जिस प्रकार प्रास शाल्यक्षतों के विषय में तृतीय पुत्रवधू रक्षिका ने विचार किया था उसी तरह इस चतुर्थ पुत्रवधू

' तएण से धण्णे ' ઇત્યાદિ !

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યાર બાદ (से धण्णे) ધન્ય સાર્થવાહે (तहेव मित्त जाव चउत्थिं रोहिणीय सुण्ह सद्दावेइ) આ પ્રમાણે જ મિત્ર વગેરે સબંધીઓની સામે પોતાની ચોથી પુત્ર વધૂ રોહિણીને બોલાવી (सद्दावित्ता जाव त भणियव्व) બોલાવીને તેણે પાચ શાલિકણો આપીને તેઓને સુરક્ષિત રાખવા માટે કહ્યુ.

સસરાની વાત સાભળીને રોહિણીએ ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિકાએ જેમ વિચરો કર્યા તેમજ તેણે પણ આ વિષે ઘણી જાતના વિચારો કર્યા છેવટે તે

पञ्चशाल्यक्षतान् ' सुद्धे ' शुद्धे-पवित्रे ' वत्थे ' वस्त्रे ' बधइ ' बध्नाति-'बधित्ता' बध्वा ' रयणकरडियाए ' रत्नकरण्डिकाया-रत्नडिब्बिकाया ' पक्खिवेइ ' प्रक्षिपति रक्षार्थं स्थापयति ' पक्खिवित्ता ' प्रक्षिप्य स्थापयित्वा ' उसीसामूले ' उच्छीर्षकमूले-उपधानस्याधोभागे ' ठावेई ' स्थापयति ' ठावित्ता ' स्थापयित्वा ' तिसझं ' त्रिसध्य-प्रातर्मध्याह्नसायंकाललक्षणे ' पडिजागरमाणी ' प्रति जाग्रती तद्रक्षार्थं सावधानासती ' विहरइ ' विहरति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्-तएणं से धण्णे सत्थवाहे तहेवमित्त जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ सद्दावित्ता जाव तं भणियव्व एत्थ कारणेणं तं सेय खलु मम एए पच सालि अक्खए सारक्खेमाणीए सगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए तिकट्टु एव सपेहेइ संपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी – तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! एए पंच सालि अक्खए गिण्हइ गिण्हित्ता पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयसि समाणंसि खुड्डागं केयार सुपरिकम्मियं करेह करित्ता इमे पच सालि अक्खए

अक्खए सुद्धे वत्थे बधइ, बधित्ता रयणकरडियाए पक्खिवेइ, पक्खिवित्ता उसीसामूले ठावेइ, ठावित्ता तिसज्झं पडिजागरमाणी विहरइ) ऐसा जब उसने विचार किया तो विचार करके उसने उन पाच शाल्य क्षतों को शुद्ध वस्त्र मे बाधा बाधकर उन्हे फिर रत्ननिर्मित एक डब्बे मे रख दिया । रखकर उस डब्बे को उसने उसीसे-के नीचे भाग में सिरहाने के अधोभाग में रख दिया । इस तरह वह प्रातः मध्यान्ह और सायकाल में इन तीनों कालो में उसकी सभाल मे सावधान होकर रहने लगी । सूत्र " ४ "

पक्खिवित्ता उसीसा मूले ठावेइ ठावित्ता तिसझं पडिजागरमाणी विहरई) આમ વિચારીને તેણે પાચ શાલિકણોને શુદ્ધ વસ્ત્રમા બાધીને રત્ન જડેલી એક ડાબલીમા મૂકી દીધા ડાબલીમા મૂકીને તેણે તે ડાબલીને પોતાના ઓશીકાની નીચે મૂકી દીધી આ પ્રમાણે તે સવાર બપોર અને સાજ આમ ત્રણે વખત તે ડાબલીને સભાળીને રાખવા લાગી ॥ સૂત્ર ૪ ॥

'खुड्डाग' क्षुलक 'कयार' केदार=क्षेत्र क्यारा, इति भाषा प्रसिद्ध 'सुपरिकम्मिय' सुपरिकर्मित=शाल्यक्षतवपनयोग्य 'करेह' कुरुत, कृत्वा च 'इमे' इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'वावेह' वपत मरोहार्थं क्षेत्रे प्रक्षिपत, उप्त्वा=क्षेत्रे वपन कृत्वा द्वितीयमपि तृतीयमपि वार 'उक्खयनिहए' उत्खातनिहतान् क्षेत्रे जातान् पुनस्तान् वर्धनार्थं द्वित्रिवारम्-उत्पाट्य अन्यत्र क्षेत्रे समारोपितान् 'करेह' कुरुत एकस्मात् स्थानादन्यस्थाने रोपयत 'करित्ता' कृत्वा-रोपयित्वा, 'वाडिपडिक्खेव' वाटिकापरिक्षेप = प्राकाराकारेण वाटिका कुरुत कृत्वा सरक्षन्त, सगोपायन्त आनुपूर्व्या=अनुक्रमेण 'सवड्ढेह' सवर्धयत।

सुपरिकम्मिय करेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग इन पाच शालि अक्षतो को लो-और लेकर जब सर्व प्रथम वर्षाकाल के प्रारम्भ में जलराशि रूप अप्काय महा वृष्टिरूप से भूमि पर गिरे तो उस समय तुम छोटी सी एक क्यारी में शालि अक्षतो को बोने के योग्य करो (करित्ता इमे पच सालि अक्खए वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए करेह, करित्ता वाडिपक्खेव करेह करित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा अणुपुव्वेण सवड्ढेह) जब वह क्यारी अच्छी तरह से परिकर्मित हो जावे तो उसमें इन पाच शालि अक्षतों को तुम लोग बो दो।

बोकर दुबारा तिबारा उन्हे उत्खात निहत करो-अर्थात् जब वे खेत में-क्यारी में-अकुररूप से उत्पन्न हो जावे तब उन्हें वृद्धिंगत करने के लिये वहा से उखाडो और फिर दूसरी जगह-क्यारी मे उन्हें आरोपित करो। इस तरह दो तीन बार करो। करके फिर उस खेत को बाड़ी से परिवृत करो-प्राकार के आकार जैसी काटो की बाड़ से

ઙ દેવાનુપ્રિયો ! તમે આ પાચ શાલિકણો લો અને વર્ષાકાળ ના પ્રારભમા અપ્કાયમહાવૃષ્ટિ રૂપે જળ વૃષ્ટિ થાય ત્યારે તમે નાની સરખી એક ક્યારી ને આ શાલિકણો વાવી શકો તે રીતે યોગ્ય બનાવજો, (करित्ता इमे पच सालि अक्खए वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खइ निहए करेह, करित्ता वाडि पक्खेव करेह करित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा अणुपुव्वेण सवड्ढेह) ક્યારી જ્યારે સરસ રીતે તૈયાર થઇ જાય ત્યારે તેમા આ પાચે શાલિકણોને વાવજો

વાવીને બીજી અને ત્રીજી વખત ઉત્પાત નિહત કરો એટલે કે જ્યારે શાલિકણો ક્યારીમા ઊગી જાય ત્યારે તેઓના વધન માટે તે સ્થાનેથી ઉપાડીને ફરી બીજે સ્થાને રોપો આ પ્રમાણે તમે બે ત્રણ વખત કરો આમ કરીને તમે તે શાલિકણોવાળી ક્યારીની ચોમેર કાટાઓની વાડ બનાવો આ

विधिमकारेण चिन्तयति, 'त भणियव्वं' तस्माच्चिन्तितव्यमत्र किञ्चित्कारणेन मम तातेन श्वशुरेण मह्य पच शाल्यक्षता दत्ता., तत्र कोऽपि हेतुरस्ति । 'त' तद् तस्मात्कारणात् ' सेय ' श्रेय सुखकरमेतदेव खलु मम ' एए ' एतान् पञ्च शाल्यक्षतान् सरक्षन्त्याः । सगोपायन्त्याः सवर्द्धयन्त्याः इति निश्चित्य एव सप्रेक्षते=पर्यालोचयति, सप्रेक्ष्य च कुलगृहपुरुषान्=कृषिकर्मनिपुणनिजकुटुम्बपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा चैव वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्, हे देवानुप्रियाः यूय खलु एतान् पचशाल्यक्षतान् गृह्णीत गृहीत्वा ' पढमपाउसंसि ' प्रथम प्रावृषि वर्षाकालप्रारम्भसमये ' महावुट्ठिकायंसि ' महावृष्टिकाये ' निवइयंसि समाणंसि ' निपतिते सति महावृष्टिरूपेण जलराशि रूपेऽम्भसि भूमौ निपतिते सतीत्यर्थः

रोहिणीकाने भी विविधरूप से विचार किया। अन्त में इस निष्कर्ष पर वह पहुँची कि श्वसुरजीने जो ये पांच शाल्यक्षत मुझे दिये हैं— और इनकी रक्षा आदि करने के विषय में जो मुझ से कहा है सो इसमे कोइ न कोइ कारण अवश्य है। (त सेय खलु मम एए पच सालि अक्खए सारक्खेमाणीए सगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए त्तिकट्टु एव सपेहेइ) इसलिये मुझे यही सुखकर है कि मैं इन पाच शाल्यक्षतों की रक्षा करूँ इन का सगोपन और सवर्द्धन करूँ। ऐसा निश्चय कर उसने यह पूर्वोक्त रूप से विचार किया। (सपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेइ) विचार कर फिर बाद में उसने कृषिकर्म करने में निपुण अपने कुटुम्ब के पुरुषो को बुलाया। (सद्दावित्ता एव वयासी) बुला कर ऐसा कहा- (तुब्भेण देवाणुप्पिया ! एए पच सालि अक्खए गिण्हह गिण्हित्ता पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डाग केयार

એ નિર્ણય ઉપર આવી કે સસરાએ મને પાચ શાલીકણો આપ્યા છે અને તેઓની રક્ષાભાટે મને જે કઇ કહ્યુ છે તેની પાછળ કઇને કઇ કારણ તો ચોક્કસ હોવુ જ જોઇએ (त सेय खलु मम एए पच सालि अक्खए सारक्खेमाणीए सगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए त्ति कट्टु एव सपेहेइ) તો મારી એજ ફરજ છે કે હુ તેઓની રક્ષા કરૂ તેઓનુ સગોપન તેમજ સવર્દ્ધન કરૂ આ પ્રમાણે રોહિણી એ પાચ શાલિકણો ને માટે વિચાર કર્યો (सपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेइ) વિચાર કરીને તેણે કૃષિકર્મ કરવામા એટલે કે ખેતીમા ચતુર એવા પોતાના જ કુટુબના માણસોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને તેણે આ રીતે કહ્યુ-

(तुब्भेण देवाणुप्पिया ! एए पच सालि अक्खए गिण्हइ गिण्हित्ता पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेह)

मूलम्—तएणं ते सालीअणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा सवड्ढिज्जमाणा सालीजाया किण्हा किण्होभासा जाव निउरंवभूया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तएण सालीपत्तिया वत्तिया गब्भिया पसूया आगयगंधा खीराइया वद्धफला पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरियपव्वकडा जाया यावि होत्था, तएण ते कोडुंबिया ते सालिए पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं णव पज्जणएहि असियएहि लुणेति लुणित्ता करयलमलिए करेंति, करित्ता पुणति, तत्थण चोक्खाणं सूयाणं अवखडाणं अप्फुडियाण छड्डुछडापूयाणं सालीण मागहए पत्थए जाए । तएण ते कोडुबिया ते सालीणवएसु घडएसु पक्खिवंति पक्खिवित्ता

ड्ढेमाणा विहरति) જ્યારે સર્વ પ્રથમ વર્ષા કાલ ના પ્રારમ્ભ માં જલરાશી રૂપ અપ્કાય મહા વૃષ્ટિ ના રૂપ ભૂમિ પર વરસા તબ ઉન લોગો ને શાલિ વપન કે યોગ્ય એક છોટા ક્યારી બનાયા। બનાકર ઉસ મેં ઉન પાચ શાલિ અક્ષતોં કો બો દિયા। બાદ મે જબ વે અકુર કે રૂપ મે ઉત્પન્ન હો ગયે–તબ ઉન્હે મૂલસ્થાન સે ઉખાડ કર દૂસરે સ્થાન મેં આરોપિત કર દિયા। ઇસ તરહ દો તીન બાર ઉન્હે ઉખાડ઼ ઔર આરોપિત કિયા પશ્ચાત્ ઉસ ખેત કો બાડ઼ સે પરિવૃત કર દિયા। ઇસ પ્રકાર કર કે ઉન સબ ને ક્રમશઃ ઉનકી રક્ષા કી-ઉપદ્રવોં સે ઉન્હેં બચાયા ઔર ઉન્હેં બઢાયા ॥ સૂ૦૫ ॥

પ્રારભમા જ્યારે સો પ્રથમ અપ્કાય મહાવૃષ્ટિ ના રૂપમા જળ વર્ષા થઈ ત્યારે તે લોકોએ શાલિકણોને વાવવા યોગ્ય એવી એ- નાની સરખી કયારી બનાવી

નાની ક્યારી બનાવીને તેઓએ તેમા પાચ શાલિકણોને વાવ્યા જ્યારે શાલિકણો અકુરિત થયા ત્યારે તેઓએ તેમના પોતાના મૂળ સ્થાનેથી ઉપાડીને બીજા સ્થાને રોપી દીધા ત્યાર બાદ કયારીને તેઓએ કાટાની વાડ કરી લીધી આ પ્રમાણે તે લોકોએ યથાક્રમે વાવેલા શાલિકણોની રક્ષા કરી, ઉપદ્રવોથી તેમની સભાળ રાખી અને તેમનુ વર્ધન કર્યું ॥ સૂત્ર " ૫ "

ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः रोहिण्या; एतमर्थं शालयक्षतसम्बर्धनरूपमर्थं प्रति शृण्वन्ति-रोहिणी कथनानुसारेण स्वीकुर्वन्ति स्वीकृत्य च तान् पञ्च शालयक्षतान् गृह्णन्ति गृहीत्वा चानुपूर्वेण क्रमेण सरक्षन्ति सगोपायन्ति, 'विहरति' आसते । ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिकाः पुरुषाः प्रथममाषृषि महावृष्टिकाये निपतिते सति क्षुल्क केदार सुपरिकर्मित शालिवपनयोग्य कुर्वन्ति कृत्वा च तान् पच शालयक्षतान् वपन्ति द्वितीयमपि तृतीयमपि द्वित्रिवार 'उक्खय निहए' उत्खात निहतान् मूलस्थानादुत्पाट्य अन्यत्र स्थाने समारोपितान् कुर्वन्ति कृत्वा वाटिका परिक्षेप कुर्वंति कृत्वा च आनुपूर्व्या अनुक्रमेण-सरक्षन्तः-सम्यक् रक्षा कुर्वन्तः सगोपायन्तः सवर्धयन्तो विहरन्ति ॥ सू० ५ ॥

उसे घेर दो-और घेर कर उस की रक्षा करो-उपद्रवों से उसे बचावो इस प्रकार क्रमशः इन शालि अक्षतो को तुम लोग बढाओ । (तएण ते कोडुबिया रोहिणीए एयमट्ठ पडिसुणंति ते पचसालिअक्खए गिण्हंति गिण्हित्ता अणुपुव्वेण सारक्खंति सगोवंति विहरंति) रोहिणिका के इस शालि अक्षत वर्धनरूप अर्थ को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने स्वीकार कर लिया और उन पाच शालि अक्षतों को उससे ले लिया। लेकर रोहिणीका के कहने के अनुसार क्रमशः उन सब ने रक्षा की और उपद्रवों से उन्हें बचाया ।

(तएण ते कोडुबिया पढमापाउससि महा वुट्ठिकायसि णिवइयसि समाणसि खुड्डीय केयार सुपरिकम्मिय करंति, करित्ता ते पच सालि अक्खए वपंति दुच्चपि तच्चपि उक्खय निहए करेंति, करित्ता वाडि परिक्खेव करेंति, करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा सगोवेमाणा स व-

---

પ્રમાણે તમે તે વાવેલા શાલિકણોની વિવિધ રીતે સંભાળ પૂર્વક રક્ષા કરતા કરતા તેઓનુ વર્ધન કરો (तएण ते कोडुबिया रोहिणीए एयमट्ठ पडिसुणंति ते पच्च सालि अक्खए गिण्हंति गिण्हित्ता अणुपुव्वेण सारक्खेंति संगोवंति विहरंति) રોહિણીના-શાલિકણોના વર્ધન માટેના બધા સૂચનો, કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકાર્યા, અને પાચે શાલિકણોને તેમની પાસેથી લઇ લીધા- લઈને રોહિણીની સૂચના મુજબ શાલિકણો ની તેમણે ઉપદ્રવોથી રક્ષા કરી

(तएण ते कोडुबिया पढमापाउससि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डइय केयार सुपरिकम्मिय करेंति, करित्ता ते पचसालि अक्खए वपंति दुच्चपि तच्चपि अक्खए निहए करेंति, करित्ता वाडिपरिक्खेव करेंति करित्ता अणुपुव्वेण सारक्खेमाणा संगोवेमाणा सवड्ढेमाणा विहरंति) વર્ષા કાળના

'मेह निउरम्बभूया' मेघनिकुरम्बभूता अन्योन्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशात् घन निरतरच्छायरमणीयमेघाना निकुरवः समूहस्तद्वत् शोभाशालिन इत्यर्थः अतएव 'पासाईया' प्रासादीयाः दर्शकमनः प्रसन्नता हेतुत्वात् 'दरिसणिज्जा' दर्शनीयाः नेत्रानन्दकारित्वात् 'अभिरूवा' अभिरूपाः कमनीयत्वात् 'पडिरूवा' प्रतिरूपा-सर्वथा चित्तहारित्वात् । ततस्तदनन्तर खलु 'साली' शालय 'पत्तिया पत्रिता-पत्रयुक्ता जाता 'वत्तिताः-वृत्ताकारतया वर्तुला जाता नालरूपतया शाखा दिना समतया वा वृत्तभाव प्राप्ताः 'गब्भिया' गर्भिता प्रवर्धनानन्तर जातगर्भाः= अन्तः सञ्जातमञ्जरिका इत्यर्थ 'पसूयाः' प्रसूताः=निस्सृतमञ्जरिका 'आगय-गधा' आगतगन्धा.=सर्वतः प्रसरत्सुरभिगन्धाः 'खीराइया' क्षीरकिताः= समुत्पन्नदुग्धा, 'वद्धफला' 'वद्धफलाः क्षीरस्य कणरूपेण परिणामादुत्पन्नफला 'पक्का' पक्वाः कणाना परिपाकात् परिपुष्टा 'परियागया' पर्यायागता.= सर्वावयवेन पक्वावस्थामुपगताः । 'सल्लइया' शलाकिताः=शुष्कपत्रत्वेन

निकुरम्बभूया, पासाईया, दरसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा) वर्ण से वह काली हो गई आभा भी उसकी काली निकलने लगी । यावत् वह मेघ निकुरम्ब समूह जैसी हो गई ।

शाखा प्रशाखाओ के परस्पर मे प्रवेश से, सान्द्र और अन्तर रहित छाया से रमणी य मेघों के समूह की तरह वह शोभित होने लगी । जो भी कोई उसे देखता तो उसका मन आनन्द से खिल उठता । नेत्रो को उसके दर्शन से बहुत अधिक शीतलता प्राप्त होती । इस लिये वह कमनीय और प्रतिरूप बन रही थी । चित्ताकर्षक थी और बहुत अधिक मनोज्ञ थी । (तएण साली पत्तिया, वत्तिया, गब्भिया, पसूया, आगय गधा खीराइया, वद्धफला, पक्का, पडियागया, सल्लइया,

---

पत्तइया हरियपव्वकडा, जाया यावि होत्था) धीरे २ समयानुसार वह

તે શ્યામ રંગના થઇ ગયા. તેમનામાથી કાળી આભા ફૂટવા લાગી યાવત્ તે મેઘનીકુરંબ જેવા થઇ ગયા

આ રીતે વાવેલી તે ડાંગર શાખા પ્રશાખાઓના પ્રવેશથી સાદ્ર તેમજ સઘન છાયાથી રમણીય મેઘસમૂહો જેવી શોભવા લાગી જે કોઇ તેના સૌંદર્યને જોતુ ત્યારે તેનુ મન હર્ષઘેલુ થઇને નાચી ઉઠતુ હતું તેને જોવાથી નેત્રો શીતળતા અનુભવતા હતા એથી તે કમનીય અને પ્રતિરૂપ લાગતી હતી તે ચિત્તને આકર્ષનારી તેમજ ખૂબજ મનોહર હતી (तएण साली पत्तिया, वत्तिया, गब्भिया, पसूया आगमगधा, खीराइया वद्धफळा पक्कापडियागया, सल्लइया

उवलिपंति, उवलिपित्ता लंछियमुद्दिए करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठाविता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति । तएण ते कोडुंविया दोच्चंमि वासरत्तंसि पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय निवइयंसि खुड्डागं केयार सुपरिकम्मियं करेंति ते साली वढति दोच्चपि तच्चपि उक्खयणिहए जाव लुणेंति जाव चलण तलमलिए करेंति, करेत्ता पुणंति तत्थण सालीण वहवे कुडवा जाव एगदेसंसि ठावेंति ठाविता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरति। तएण ते कोडुंविया तच्चंसि वा सारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि वहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुणेंति लुणित्ता संवहति सवहित्ता खलय करेंति खलय करित्ता मलेंति जाव वहवे कुभा जाया, तएण ते कोडुंविया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवंति जाव विहरति चउत्थे वासारत्ते वहवे कुंभसया जाया ॥ सू० ६ ॥

टीका-ततस्तदनन्तर खलु ते शालय आनुर्व्या सरक्ष्यमाणाःसंगोप्यमानाः संवर्द्धयमानाः शालय ' जाया ' जाताः-निष्पन्नाः किंभूता ? किण्हा ' कृष्णा-वर्णतः श्यामाः ' किण्होभासा ' कृष्णावभासाः कृष्णच्छायाः श्यामकान्तयः यावद्

' तएण ते साली अणुपुव्वेण ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से साली) अन्य खेत में आरोपित की गई वह शाली (अणुपुव्वेण) क्रम २ से (सारक्खिज्जमाणा, संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया) उन लोगो से रक्षितकी जाकर संगोपित की जाकर बढाई गई सो खूब बढ गई (किण्हा किण्हो भासा, जाव

' तएण ते साली अणुपुव्वेण ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (ते सालो) બીજા ખેતરમા ઉપાડીને વાવેલા શાલિ કણો (अणुपुव्वेण) યથાક્રમે (सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा, संवड्ढिज्जमाणा सालीजाया) તેઓથી રક્ષિત, સંગોપિત તેમજ વર્ધિત થઇને ખૂબજ વૃદ્ધિ પામ્યા (किण्हा किण्होभासा जाव निउर वभूया, पासाईया दरसणिज्जा, अभिरूवा)

पत्रितान् यावत् शल्यकित पत्रकितान् ज्ञात्वा तीक्ष्णैः 'णवपज्जणएहिं' नवपायनकै-नवानि=नवीनानि पायनकानि=लोहकारेण तापितानि कुट्टितानि तीक्ष्णधारी कृतानि कृत्वा पुनस्तापयित्वा जले निरोलनानि येषा तानि, तैः 'असियएहिं' 'असिय' इति दात्रार्थकोऽयदेशी शब्द. दात्रैरित्यर्थः, लुनन्ति=छेदयन्ति, लवित्वा 'करतलमलिए' करतलमृदितान् कर लवर्पणेतान् कुर्वन्ति, शालिकणान् मञ्ज रीतो निस्सारयन्तीत्यर्थ' '[पुणति' ुनन्ति पलालादीनपसारयन्ति तत्र खलु=

(तएण ते कौडुंबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइय पत्तइए जाणित्तो तिक्खेहिं णवपज्जणएहिं अासिएहिं लुणेति, लुणित्ता करयलमलिए करेति, करित्ता पुणति, तत्थणं चोक्खाण सयाण अक्खडाण अप्फुडियाण छड्डुछडापूयाण सालीण मागहए पत्थए जाए) इस तरह जब वह शालि-सस्य पूर्णरूप पककर तयार हो गई और जब उन कौडुम्बिक पुरुषोंने उसे पत्रित यावत् शाल्यकित पत्रांकित-पके हुए पत्तो वाली और शालि से युक्त देखा तो उसे पूर्ण पकी हुई जानकर तीक्ष्ण नव पायनक वाले दात्रों से-हँसियोसे उन लोगो ने उसे काट लिया।

" लुहार के द्वारा जो तापित और कुट्टित कर पहिले तीक्ष्ण धारी वाले बनाये गये ये हैं और बाद में फिर तापित कर जलमे बुझाये गये हैं " यह " नव पायनक " इस शब्द का अर्थ है। यह " आसिएहिं " यह हँसिया (दात्र) वाचक देशीय शब्द हे। काटकर फिर उन्होंने उसशालि मजरी मे से हाथो से मर्दित कर शालिकणों को निकाला।

(तएण ते कौडुंबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइय पत्तइए जाणित्तो तिक्खेहिं णवपज्जणएहिं आसियएहिं लुणेंति लुणित्ता करयलमलिए करेंति, करित्ता पुणति तत्थण चोक्खाण सयाण अक्खडाण अप्फुडियाण छड्डुछडापूयाण सालीण मागहए पत्थए जाए) આ પ્રમાણે જ્યારે તે શાલિધાન્ય પૂર્ણરૂપે પરિપક્વ થઈને તૈયાર થઈ ગઈ ત્યારે કૌટુંબિક પુરુષોએ તેને પત્રિત યાવત શાલ્યકિત પત્રાકિત એટલે કે પાકેલા પાદડા વાળી જોઈ ત્યારે તેને પૂર્ણરૂપે પરિપક્વ થયેલી જાણીને તીક્ષ્ણ ધારવાળી દાતરડીથી તેને કાપી નાખી

" લુહાર વડે તપાવી તેમજ ટીપીને પહેલા તીક્ષ્ણ ધારવળા બનાવવામા આવે અને ત્યા બાદ ફરી તપાવીને પાણીમા ઠંડા કરવામા આવે તેને 'નવ પાયનક' કહેવામા આવે છે

'આસિએહિં' આ દાત્ર (દાતરડી) વાચક દેશી શબ્દ છે

ડાંગરને કાપીને તેઓએ શાલિમંજરીઓને હથેળીથી મસળીને શાલીકણો છૂટા પડયા ભૂસાને તેઓએ ત્યાથી દૂર કર્યું આ રીતે તે સ્થાન ભૂસુ

शलाकारूपेणावस्थिताः ' पत्तइया ' पत्रकिताः=पत्रयुक्ताः प्रायश क्षरणादल्प पत्राः, ' हरियपव्वकडा ' हरितपर्वकाण्डाः-हरितानि=परिपक्वतया हरितालवर्णानि आशुकानि प्रादुर्भवदङ्कुरवत्पीतवर्णानि - पर्वकाण्डानि येषा ते तथा, जाताश्चाप्य भवन् सम्पूर्णतया परिपक्वा जाता इत्यर्थः। ततः खलु ते कौटुम्बिका तान् शालीन्

शाली-धान्य-पत्र युक्त होने लगी, आकारमें गोल २ दिखलाई देने लगी। नाल के ऊपर शाखा आदि-अवयव समान रूप से नीचेकी ओर छत्तो के समान झुक गये थे इसलिये वह आकार मे गोलाकार दिखलाई देती थी। जब वह अच्छी तरह वर्धित हो चुकी तब उसमें भीतर मजरी आगई और बाहिर निकल आई। चारो ओर सुगधि उसमे से फैलने लगी।

धीरे २ उस मजरीमे दूध भी उत्पन्न हो गया। और वह दुग्ध कणरूप से परिणम गया इससे उस मजरी में अन्न भी आगये। वे अन्नके दाने भी परिपक्व हो गये सपूर्ण रूप से अच्छी तरह पककर पुष्ट हो गये। इस तरह जब वह शालि-धान्य पककर तैयार हो गई -तब उसके पत्ते शुष्क हो चले और वे शलाई के आकर में उसमें लटकने लगे। धीरे २ कुछ २ पके हुए पत्ते उसमें से क्षरित भी हो गये। इसलिए उसमें बहुत कम पत्ते लगे हुए रह गये। उसके पर्व काण्ड परिपक्व होने के कारण प्रादुर्भवित अकुर के समान पीले हो गये।

पत्तइया, हरिय पव्वकडा जाया यावि होत्था) સમય જતા યથાક્રમે તે ડાગર પાદડા વાળી થવા માડી આકારમા તે ગોળ દેખાવા લાગી ડાગરની દાડીની ઉપર નાની શાખાઓ વગેરે અવયવો સરખી રીતે છતરીના આકારમા નીચે નમેલા હતા એથી જ તે આકારમા ગોળ દેખાતી હતી જ્યારે તે સારી પેઠે મોટી થઈ ગઈ ત્યરે તેમા મજરીઓ નીકળી અને તેની સુવાસ ચોમેર પ્રસરી ગઈ

ધીમે ધીમે મજરીઓમા દૂધ ઉત્પન્ન થયુ અને યથા સમયે તે દૂધ તેમાજ કણોના રૂપમા બધાવા લાગ્યુ આમ સમય જતા શાલિકણો સ પૂર્ણ રીતે પરિપકવ તેમજ પુષ્ટ થઈ ગયા આ રીતે જ્યારે તે શાલિધાન્ય નો પાક તૈયાર થઈ ગયો ત્યારે તેના પાદડાસૂકાઈ ગયા અને તે શલાકા (સળી) ના આકારે તેમા લટકવા લાગ્યા તેમા લટકવા લાગ્યા ધીમે ધીમે પાકેલા પાદડા તેમાથી ખરવા લાગ્યા એથી ખૂબજ થોડા પાદડા તેની ઉપર રહી ગયા તેનો પર્વકાડ (છોડની બે ગાઠ વચ્ચેનો ભાગ) પરિપકવ થઈ જવાથી પ્રાદુ ર્ભવિત અકુરની જેમ પીળો થઇ ગયો હતો

चिह्नेन चिह्नितान्,मुद्रिता =नाममुद्रादिनाऽङ्कितास्तान् कुर्वन्ति, कृत्वा 'कोट्ठागारस्स' कोष्ठागारस्य एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा सरक्षन्तः सगोपायन्तो विहरन्ति ।

तत. खलु ते कौडुम्बिका द्वितीये वर्षारात्रे द्वितीयवर्षसम्बन्धि चातुर्मास्यकाले प्रथमप्रावृषि प्रावृट् प्रारम्भसमये महावृष्टिकाये निपतिते महावर्षायां सत्यां क्षुल्लक केदार ' खुपरिकम्मियं ' सुपरिकर्मित=विशिष्ट श्लक्ष्णमृत्तिकादिदानेन हलकुदालादिनोत्खननेन च संस्कारित कुर्वन्ति, कृत्वा तान् शालीन् वपन्ति 'दोच्च पि तच्चपि ' द्विरपि त्रिरपि=द्वित्रिवारमापि ' उक्खयनिहए ' उत्खातनिहतान्= उत्पाटितरोपितान् यावत् लुनन्ति, यावत् चरणतलमृदितान् कुर्वन्ति, कृत्वा पुनन्ति

से चिह्नित कर उनपर नामकी मुहर लगा दी। पश्चात् भंडार में उन्हें एक ओर रख दिया। समय २ पर वे लोग उनकी रक्षा और संभाल भी करते रहे। (तएण ते कोडुंबिया दोच्चपि वासारत्तंसि पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेंति) इसकेबाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने द्वितीय वर्ष संबन्धी चौमासा जब लगा -तब-सर्व प्रथम महावृष्टि के रूप में जल के बरस जाने पर, हल से जोत कर तथा कुदाल आदि से खोदकर एक छोटा सा खेत तैयार किया। उसमें चिकनी और नरम मिट्टी डालकर उसे बहुत ही अच्छा शालि उपजाने के योग्य बना दिया। (ते शालि वपंति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए जाव लुणेंति) बादमें उस शालीं को उसमें बो दिया।

पहिले की तरह जब वह धान्य अंकुरित हो आई तब उन्होंने उसे वहा से उखाड कर दूसरी जगह आरोपित कर दिया। इस तरह यह

મૂકી દીધા યથા સમય તેઓ તેમની સંભાળ પણ રાખતા હતા (तएण ते कौडुंबिया दोच्चंपि वासारत्तंसि पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेंति) ત્યાર પછી કૌટુંબિક પુરુષોએ બીજા વર્ષે ચોમાસાના દિવસો આવ્યા ત્યારે સૌ પહેલા મહાવૃષ્ટિના રૂપે જળવર્ષા થયા બાદ હળથી ખેડાને તેમજ કોદાળી વગેરે થી ખોદીને એક નાનુ ખેતર તૈયાર કર્યું તેમા ચીકણી અને કોમળ માટી નાખીને તેને બૂબજ સરસ શાલિ (ડાંગર) વાવવા યોગ્ય બનાવી દીધુ (ते सालीवपंति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय-निहए जाव लुणेंति) ત્યાર પછી ખેતરમા શાલિનેવાવી દીધી

પહેલાની જેમ જ્યારે શાલિના અંકુરો બહાર નીકળ્યા ત્યારે કૌટુંબિક માણસો એ તેના છોડોને ત્યાથી ઉપાડીને બીજા સ્થાને રોપી દીધા આ

तस्मिन् स्थाने ' चोक्खाण ' चोक्षाण=कचवरनिस्सारणेन स्वच्छानाम् ' सुइयाण ' शूकितानाम्=शूकयुक्तानां वपनयोग्यानामित्यर्थः ' अक्खडाण ' अखण्डानाम्=अक्षतानाम् ' अप्फुडियाण ' अस्फुटितानाम्=अत्रुटितानाम् ' छड्डछडापूयाणं ' छड्डछडापूतानाम्- ' छड-छड ' शब्दपूर्वकं सूर्पादिना शोधितानां शालीनां शालिकणानां ' मागहए ' मागधकः- मगधदेशप्रसिद्ध, ' पत्थए ' प्रस्थकः=मानविशेषो जातः, मागधप्रस्थपरिमिता शालयः सजाता इत्यर्थ ।

ततः खलु ते कौटुम्बिकास्तान् शालीन् ' नवएसु ' नवकेषु=नूतनेषु घटेषु लघुकलशेषु ' पक्खिवंति ' प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति भरन्तीत्यर्थः, उत्क्षिप्य ' उवलिंपंति ' उपलिम्पन्ति=घटमुखे पिधानकस्य गोमयादिना सयोजनेन मुख निरोधं कुर्वन्ति, उपलिप्य ' लंछियमुद्दिए ' लाञ्छितमुद्रितान् लाञ्छिता= रेखादि

उसके प्यार आदिको पलाल को-वहा से हटाया । इस तरह उसस्थान मे चोखे-कूडाकरकट निकलजाने से बिलकुल स्वच्छ हुए-शूक युक्त-वपन योग्य ऐसे अखड-अक्षत-साबित-टूटे नहीं तथा छड़ छड शब्द पूर्वक सूपादि से शोधित किये गये शालिकण निकले जो मगध देश प्रसिद्ध १ प्रस्थ प्रमाण हुए । (तएण ते कौडुबिया ते सालि णवएसु, घडएसु, पक्खिवंति पक्खिवित्ता उवलिपंति, उवलिंपित्ता लंछियमुद्दिए करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठाविता सारक्खेमाणा, संगोवेमाणा विहरंति) इस के बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोने उन शालिकणों को नवीन छोटे २ घडों में भरकर रख दिया। भरने के बाद उन घडोंका मुख ढँक दिया और उसे गोबर आदि से लीपकर बदकर दिया। बन्द करके फिर उन घडों को रेखादि चिह्न

વગેરે સાફ કરવાથી સ્વચ્છ શાલિકણો શૂક યુક્ત-વાવવા યોગ્ય, અખંડ-અક્ષત સૂપ વગેરે, થી છડ છડ શબ્દ કરાવડાવીને સાફકરેલા શાલિકણો નીકળ્યા તે શાલીકણો મગધદેશ પ્રસિદ્ધ એક પ્રસ્થ પ્રમાણ હતા (तएण ते कोडुबिया ते सालिणवएसु घडएसु पक्खिवंति पक्खिवित्ता, उवलिंपंति उवलिंपित्ता लंछियमुद्दिए करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठाविता सारक्खेमाणा, संगोवेमाणा विहरंति) ત્યાર બાદ કૌટુંબિક પુરુષોએ શાલિકણોને નવા નાના નાના કળશોમા ભરીને મૂકી દીધા

ત્યાર બાદ કળશોના મો ઢાકીને તેમને છાણ વગેરેથી લીંપીને બધ કરી દીધા કળશોને બધ કરીને રેખાઓ વગેરેથી તેમને ચિહ્નિત કરીને તેમના ઉપર નામની મહોર લગાવી દીધી ત્યાર પછી ભડારમા એક

चिह्नेन चिह्नितान्, मुद्रिता =नाममुद्रादिनाऽङ्कितास्तान् कुर्वन्ति, कृत्वा 'कोट्ठागारस्स' कोष्ठागारस्य एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा सरक्षन्तः सगोपायन्तो विहरन्ति ।

ततः खलु ते कौटुम्बिका द्वितीये वर्षारात्रे द्वितीयवर्षसम्बन्धि चातुर्मास्यकाले प्रथमप्रावृषि प्रावृट् प्रारम्भसमये महावृष्टिकाये निपतिते महावर्षायां सत्यां क्षुल्लक केदार ' खुपरिकम्मियं ' सुपरिकर्मित=विशिष्ट श्लक्ष्णमृत्तिकादिदानेन हलकुदालादिनोत्खननेन च संस्कारित कुर्वन्ति, कृत्वा तान् शालीन् वपन्ति 'दोच्च पि तच्चपि ' द्विरपि त्रिरपि=द्वित्रिवारमापि ' उक्खयनिहए ' उत्खातनिहतान्= उत्पाटितरोपितान् यावत् लुनन्ति, यावत् चरणतलमृदितान् कुर्वन्ति, कृत्वा पुनन्ति

से चिह्नित कर उनपर नामकी मुहर लगा दी। पश्चात् भंडार में उन्हें एक ओर रख दिया। समय २ पर वे लोग उनकी रक्षा और संभाल भी करते रहे। (तएण ते कोडुंबिया दोच्चपि वासारत्तंसि पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मियं करेंति। इसकेबाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने द्वितीय वर्ष संबन्धी चौमासा जब लगा -तब-सर्व प्रथम महावृष्टि के रूप में जल के बरस जाने पर, हल से जोत कर तथा कुदाल आदि से खोदकर एक छोटा सा खेत तैयार किया। उसमें चिकनी और नरम मिट्टी डालकर उसे बहुत ही अच्छा शालि उपजाने के योग्य बना दिया। (ते शालि वपंति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए जाव लुणेंति) बादमें उस शाली को उसमें बो दिया।

पहिले की तरह जब वह धान्य अंकुरित हो आई तब उन्होंने उसे वहा से उखाड कर दूसरी जगह आरोपित कर दिया। इस तरह यह

ભૂકી દીધા યથા સમય તેઓ તેમની સંભાળ પણ રાખતા હતા (तएण ते कौंडुंबिया दोच्चंवि वासारत्तंसि पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मियं करेंति) ત્યાર પછી કૌટુંબિક પુરુષોએ બીજા વર્ષે ચોમાસાના દિવસો આવ્યા ત્યારે સૌ પહેલા મહાવૃષ્ટિના રૂપે જળવર્ષા થયા બાદ હળથી ખેડાને તેમજ કોદાળી વગેરે થી ખોદીને એક નાનુ ખેતર તૈયાર કર્યું તેમા ચીકણી અને કોમળ માટી નાખીને તેને બૂબજ સરસ શાલિ (ડાંગર) વાવવા યોગ્ય બનાવી દીધુ (ते सालीवपंति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए जाव लुणेंति) ત્યાર પછી ખેતરમા શાલિનેવાવી દીધી

પહેલાની જેમ જ્યારે શાલિના અંકુરો બહાર નીકળ્યા ત્યારે, કૌટુંબિક માણસો એ તેના છોડાને ત્યાથી ઉપાડીને બીજા સ્થાને રોપી દીધા આ

तस्मिन् स्थाने ' चोक्खाण ' चोक्षाण=कचवरनिस्सारणेन स्वच्छानाम् ' सुइयाण ' शूकितानाम्=शूकयुक्तानां वपनयोग्यानामित्यर्थः ' अखंडाण ' अखण्डानाम्=अक्षतानाम् ' अप्फुडियाण ' अस्फुटितानाम्=अभ्रुटितानाम् ' छड्डछडापूयाणं ' छड्डछडापूतानाम्- ' छड-छड ' शब्दपूर्वकं सूर्पादिना शोधितानां शालीनां शालिकणानां ' मागहए ' मागधकः- मगधदेशप्रसिद्ध, ' पत्थए ' प्रस्थकः=मानविशेषो जातः, मागधप्रस्थपरिमिता शालयः सजाता इत्यर्थ ।

तत. खलु ते कौटुम्बिकास्तान् शालीन् ' नवएसु ' नवकेषु=नूतनेषु घटेषु लघुकलशेषु ' पक्खिवंति ' प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति भरन्तीत्यर्थः, उत्क्षिप्य ' उवलिंपंति ' उपलिम्पन्ति=घटमुखे पिधानकस्य गोमयादिना सयोजनेन मुख निरोध कुर्वन्ति, उपलिप्य ' लंछियमुद्दिए ' लाञ्छितमुद्रितान् लाञ्छिता= रेखादि-

---

उसके प्यार आदिको पलाल को-वहा से हटाया । इस तरह उसस्थान में चोखे-कूडाकरकट निकलजाने से बिलकुल स्वच्छ हुए-शूक युक्त -वपन योग्य ऐसे अखड-अक्षत-सासित-टूटे नहीं तथा छड़ छड शब्द पूर्वक सूपादि से शोधित किये गये शालिकण निकले जो मगध देश प्रसिद्ध १ प्रस्थ प्रमाण हुए । (तएण ते कौडुबिया ते सालि णवएसु, घडएसु, पक्खिवंति पक्खिवित्ता उवलिपंति, उवलिंपित्ता लंछियमुद्दिए करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेससि ठावेंति, ठाविता सारक्खेमाणा, सगोवेमाणा विहरंति) इस के बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोने उन शालिकणों को नवीन छोटे २ घडों में भरकर रख दिया। भरने के बाद उन घडोंका मुख ढँक दिया और उसे गोबर आदि से लीपकर बदकर दिया। बन्द करके फिर उन घडों को रेखादि चिह्न

વગેરે સાફ કરવાથી સ્વચ્છ શાલિકણો શૂક યુક્ત-વાવવા યોગ્ય, અખંડ-અક્ષત સૂપ વગેરે, થી છડ છડ શબ્દ કરાવડાવીને સાફકરેલા શાલિકણો નીકળ્યા તે શાલીકણો મગધદેશ પ્રસિદ્ધ એક પ્રસ્થ પ્રમાણ હતા (तएण ते कौडुबिया ते सालिणवएसु घडएसु पक्खिवंति पक्खिवित्ता, उवलिंपंति उवलिंपित्ता लंछियमुद्दिए करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेससि ठावेंति, ठाविता सारक्खेमाणा, सगोवेमाणा विहरंति) ત્યાર બાદ કૌટુમ્બિક પુરુષોએ શાલિકણોને નવા નાના નાના કળશોમા ભરીને મૂકી દીધા

ત્યાર બાદ કળશોના મો ઢાકીને તેમને છાણ વગેરેથી લીપીને બધ કરી દીધા કળશોને બધ કરીને રેખાઓ વગેરેથી તેમને ચિહ્નિત કરીને તેમના ઉપર નામની મહોર લગાવી દીધી ત્યાર પછી ભડારમા એક કળશોને

यावत् बहवः=गृहद्घटाः जाताः=अनेकगृहद्घटाः शालिपूर्णा अभूवन्नित्यर्थः । ततःखलु ते कौटुम्बिकाः शालीन् कोष्ठागारे प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति यावत् सगो पायन्तो विहरन्ति । चतुर्थे ' वासारत्ते=चतुर्थवर्षसम्बन्धि-चातुर्मास्यकाले वर्षि

चौमासा प्रारभ हुआ और उस में सर्व प्रथम महावृष्टि के रूप में जब जलकी वर्षा हुई तो उन कौटुम्बिक पुरुषों ने अनेक खेत सुपरिकर्मित किये उन में उस शाली को बो दिया। यावत् उसे काट लिया। जब वह सब कट चुकी तब गट्ठा के रूपमें बांधा तब मस्तक परस्कंध पर भार रूप से उसे रख कर वे सब खलिहान में ले आये। लाकर वहां उन्हों ने धान्यमर्दन के योग्य खलिहान तैयार किया। उस के तैयार हो जाने पर उस में उस शाली को फैला कर रख दिया। बाद में बैलो द्वारा उस की दॉय की। यावत् वह धान्य इतना निष्पन्न हुआ कि उससे घडे २ घडे भर गये। (तएणं ते कोडुबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवेंति, जाव विहरंति, चउत्थे वासारत्ते बहवे कुभसया जाया) इसके बाद उन लोगो ने उन धान्य को कोष्ठागार में रख दिया और समय २ उस की देखभाल करने लगे। इसी तरह जब चौथे वर्ष का चतुर्मास

આ રીતે સમય પસાર થતા જ્યારે ત્રીજી વખત વર્ષા કાળ આવ્યો અને મહાવૃષ્ટિના રૂપે પ્રથમ જળ વર્ષા થઇ ત્યારે કૌટુંબિક પુરુષોએ ઘણા ખેતરો તૈયાર કર્યા

બધા ખેતરોમા તેઓએ શાલી વાવી અને આમ સમય જતા જ્યારે તે પહેલાની જેમ પરિપકવ થઇ ગઇ ત્યારે કૌટુંબિક પુરુષોએ શાલિનો પાક કાપી લીધો જ્યારે લણણી થઇ ત્યારે ભારાઓ બાંધી માથે તેમજ બલે મૂકીને બધા ખેતરોની શાલિને બળામા લઇ આવ્યા ત્યા લાવીને તેઓએ ધાન્ય મર્દન યોગ્ય બળુ તૈયાર કર્યું તૈયાર કર્યા બાદ તેઓએ શાલિ ને પાથરી દીધી અને બળદો ફેરવીને બધુ કર્યું આ પ્રમાણે આગળની પહેલાની જેમ બધી વિધિઓ પતાવ્યા બાદ ખેતરોમાથી શાલિધાન્ય આટલુ બધુ થયુ કે જેનાથી ઘણા મોટા મોટ કળશો ભરાઇ ગયા

(तएणं ते कोडुबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवेंति, जाव विहरंति च उत्थे वासारत्ते बहवे कुभसया जाया)

ત્યાર બાદ તેઓએ શાલિધાન્ય થી ભરેલા કળશોને કોઠારમા મૂકી દીધા અને યથા સમય તેમની સભાળ રાખવા લાગ્યા આ પ્રમાણે જ ચોથા વર્ષના

तत्र खलु शालीना बहवः कुडवाः शालिगभृता बहवः कुडवा अभूवन् संजाताः, यावत् एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा संरक्षन्तः संगोपायन्तो विहरन्ति. । ततः खलु ते कौटुम्बिकास्तृतीये वर्षारात्रे महावृष्टिकाये निपतिते सति बहून् केदारान् सुपरिकर्मितान् यावद् लुनन्ति, लूनित्वा संवहन्ति=भाररूपेण तान् बद्ध्वा मस्तके स्कन्धेवा निधाय खले स्थापयितु समानयन्ति. ततोऽपनीय तान्संवहन्ति,संमुख= समानीय ' खलय ' खलक=धान्यमर्दनस्थान ' करेंति ' कुर्वन्ति शालीन् खले स्थापयन्तीत्यर्थः, कृत्वा=खले संस्थाप्य ' मलेंति ' खले प्रसार्य बलीवर्दैर्मर्दयन्ति

उत्खात (उखारना) निखात (रोपना) स्वक्रिया उन्होंने दो तीन वार की यावत् धीरे २ उसके पूर्णत पकजाने पर उन्हों ने उसे काट लिया। (जाव चरण तल मलिए करेंति, करेत्ता पुणंति, तत्थण सालीण बहवे कुडवा जाव एगदेससि ठावेंति ठाविता संरक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति) यावत् उसे अपने २ पैरों के तलियो से मर्दित किया। बाद में उसे पलालआदि के अपसारण (दूर) से साफ किया। इस तरह वहां शालियों के अनेक कुडव (घडे) उन से भर गये। यावत् उन कुडवो (घड़ो) को उन्हों ने ले जाकर पहिले की तरह भडार में एक तरफ रख दिया।

रखकर वे समय २ पर उनकी सारस भाल भी करने लगे। (तएणं ते कौडुंबिया तच्चपि वासारत्तंसि महा वुट्ठिकायंसि निवइयंमि बहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुणेंति, लुणित्ता संवहंति संवहित्ता खलय करेंति, खलयकरेत्ता मलेंति, जाव बहवे कुंभा जाया) इस तरह धीरे २ समय निकल ने पर जब तीसरी बार वर्षा काल सम्बन्धी

રીતે આ ઉત્પાત (ઉપાડવુ) નિષ્પાત (રોપવુ ની ક્રિયા તેમણે બે ત્રણવાર કરી સમય જતા યથાસમયે જ્યારે પાક તૈયાર થઇ ગયો ત્યારે તેઓએ તેને કાપી લીધો

(जाव चरण तल मलिए करेंति करेत्ता पुणंति, तत्थण सालीण बहवे कुडवा जाव एगदेससि, ठावेंति ठाविता संरक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति)

અને 'यावत्' તેને પોતાના પગોથી મર્દિત કર્યો ત્યાર પછી તેમાથી ભુસુ વગેરે સાફ કર્યું આ પ્રમાણે ત્યા શાલિઓ (ડાગર) ના ઘણા કુડવ-કળશો -ભરાઇ ગયા આ રીતે તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ પહેલાની જેમ જ શાલિથી પરિપૂર્ણ કળશોને કોઠારમા એક તરફ મૂકી દીધા યથા સમય શાલિના કળ શોની તેઓ સભાળ પણ રાખતા હતા

(तएणं ते कौडुंबिया तच्चपि व सारत्तंमि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि बहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुणेंति, लुणित्ता, संवहंति संवहित्ता खलय, करेंति, खलय करेत्ता मलेंति जाव बहवे कुंभा जाया)

हंता अत्थि । तएणं पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए पंडिनिज्जाणहि । तएणं सा उज्झिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पल्लाओ पंचसालिअक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी एएणं ते पंचसालिअक्खए–त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थसि ते पंच सालि अक्खए दलयइ । तएणं धण्णे सत्थवाहे उज्झिय सवहसावियं करेइ, करित्ता एवं वयासी–किं णं पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? । तएणं उज्झिया धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी–एवं खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल० जाव विहराहि । तएणं अहं तुब्भं एयमट्ठं पडिसुणित्ता ते पंचसालिअक्खए गेण्हामि, गिण्हित्ता एगंतमवक्कमामि । तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था–एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि० जाव सक्कसपउत्ता जाया, त ण खलु ताओ ते चेव पंच सालिअक्खए एएण अन्ने । तएणं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झितियं तस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च समुच्छियं च सम्मच्छियं च पाउवदाइं च पहाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेइ ।

तानां शालीनां बहूनि कुम्भशतानि जातानि बहूनि कुम्भशतानि शालिसंभृतानि जातानि. ॥ सू० ॥ ६ ॥

मूलम्—तएणं तस्स धण्णस्स पञ्चमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु मए इओ अईए पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पचसालि अक्खया हत्थे दिन्ना तं सेय खलु मम कल्ल जाव जलते पच सालिअक्खए पडिजाइत्तए जाव जाणामि ताव काए किण्हं सारक्खिया वा संगोविया वा सवड्ढिया जाव त्ति क एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्ल जाव जलंते विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठ उज्झिय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी—एव खलु अह पुत्ता ! इओ अईए पचमासि सवच्छरांसि इमस्स मित्तनाई० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थासि पंचसालि अक्खए दलयामि, जयाणं अह पुत्ता ! एए पंचसालि अक्खए जाएज्जा तयाणं तुम मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएसित्ति, से नूणं पुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ?,

प्रारभ हुआ तब उस समय बोई गई और वर्धित हुई उस धान्य के सैकडो कुभ तैयार हो गये । अर्थात् वह धान्य इतनी अधिक निपजी कि जिससे सैकड़ो बडे २ घडे उससे भर गये । सूत्र " ६ "

ચોમાસામા વાવવામા આવેલી શાલિથી સેકડો મોટા કળશો ભરાઈ ગયા એટલે કે શાલિ ધાન્યનો એટલો બધો સરસ પાક તૈયાર થયો કે તેનાથી સેકડો મોટા કળશો ભરાઇ ગયા ॥ સૂત્ર " ૬ " ॥

तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य जाव कसदूस विउल धण जाव साव तेज्जस्स य भडागारिणिं ठवेइ ।

एवामेव समणाउसो! जाव पच य से महव्वयाइं रक्खियाइं भवंति, से ण इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे४ जहा व सा रक्खिया ॥ ३ ॥

रोहिणियावि एवं चेव, नवर तुब्भं ताओ ! मम सुबहुय सगडीसागडं दलाह जेणं अहं तुब्भ ते पच सालिअक्खए पडिणिज्जाएमि । तएणं से धण्णे रोहिणि एव वयासी–कहं णं पुत्ता ! तुम मम ते पच सालिअक्खए सगडीसागडेण निज्जाइस्ससि ? । तएणं सा रोहिणी धण्ण एव वयासी–एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ पचमे सवच्छरे इमस्स मित्त० जाव बहवे कुभसया जाया, तेणेव कमेणं, एव खलु ताओ ! तुब्भे ते पच सालिअक्खए सगडीसागडेण निज्जाएमि। तएण से धण्णे सत्थवाहे रोहिणियाए सुबहुय सगडीसागड दलयइ । तएणं सा रोहिणी सुबहु सगडीसागड गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारं विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उब्भिदइ, उब्भिदित्ता सगडीसागड भरेइ, भरित्ता रायगिहे नगर मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ । तएण रायगिहे नयरे सिघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्ने एवमाइक्खइ – धन्नेण देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे, जस्स ण रोहिणिया सुण्हा पच सालिअक्खए सगडसागडिएण निज्जाएइ । तएण से धण्णे सत्थवाहे ते पच सालि-

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा णिग्गंथी वा जाव पव्वइएं, पंच य से महव्वयाइं उज्झियाइं भवंति सेणं इह भवे चेव बहूण समणाणं ४ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा सा उज्झिया ॥ १ ॥

एव भोगवइयावि, नवरं तस्स जाव कडतियं च कुट्टतियं च पीसतिय च, एव रुधतिय, रधतिय, परिवेसतिय च परिभायतिय च अब्भतरिय च पेसणकारि महाणसिणि ठवेइ ।

एवामेव समणाओ ! जो अम्हं समणो वा जाव पचयसे महाव्वयाइ फोडियाइ भवति से णं इह भवे चेव बहूण समणाण ४ जाव हीलणिज्जे ४ जहा व सा भोगवइया ॥ २ ॥

एवं रक्खिइयावि, नवर जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते पंचसालिअक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचसालिअक्खए धण्णस्स हत्थे दलयइ । तएण से धण्णे रक्खिइय एव वयासी–किं ण पुत्ता ते चेव एए पचसालिअक्खया उदाहु अन्ने ? त्ति । तएण रक्खिइया धण्णं सत्थवाह एव वयासी–ते चेव ताया ! एए पच सालिअक्खया णो अन्ने । कह ण पुत्ता ! एव खलु ताओ तुब्भे इओ पचमंमि जाव 'भवियव्व एत्थ कारणेणं'–ति कट्टु ते पचसालिअक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसझ पडिजागरमाणी२ विहरामि, त एएण कारणेण ताओ ! ते चेव एए पच सालिअक्खया, णो अन्ने । तएण से धण्णे रक्खिइयाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठ०

परीक्षार्थं ते पञ्च शालयक्षता हस्ते दत्ता आसन्, ' सेय ' श्रेयः=उचितम् अस्य मतियाचितुमित्यनेन सबन्धः । एव खलु मम कल्ये यावज्ज्वलति=सूर्योदये सति= प्रभाते पञ्चशालयक्षतान् ' पडिजाइत्तए ' प्रतियाचितु=प्रतिग्रहीतुम्, ' जाणामि ' जानामि=तदधुना निर्णयामि यत्- ' जाव' यावत्=यावत्सख्यकाः शालयक्षता मया दत्तास्ते ' ताव ' तावत्=तावन्परिमिताः कया स्नुषया 'किह ' कथ=केन प्रकारेण सरक्षिताः सगोपिताः सवर्द्धिता यावत् ' तिकट्टु ' इति कृत्वा इत्यभिप्राय मनसि निधाय एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण सपेक्षयति=विचारयति, सप्रेक्ष्य कल्ये यावज्ज्वलति प्रभातसमये विपुलमशन पान खाद्य स्वाद्य चतुर्विधमाहारम्, उपस्का

सवच्छरे चउण्ह सुण्हाण परिक्खणट्ठयाए ते पच सालि अक्खया हत्थे दिन्ना-त सेय खलु मम कल्लं जाव जल ते पच सालि अक्खए पडि-जाइत्तए) कि मैंने आज से गत पांचवे वर्ष मे चारों अपनी पुत्रवधूओं के उन की बुद्धि की परीक्षा के निमित्त हाथों में उन पाच पांच शालि-अक्षतों को दिया था, तो अब प्रातःकाल होते ही जब सूर्योदय हो जाय-गा-मैं उन पाच शालि अक्षतों को उनसे पीछे माग लूँ यह उचित है।

(जाव जाणामि ताव काए किण्ह सारक्खिया वा सगोविया वा सवड्ढिया जाव त्ति कट्टु एव सपेहेइ) इससे मैं यह निर्णय कर लूँगा कि जितने शालयक्षत मैंने इन्हे दिये थे वे उतने शालयक्षत किस पुत्र वधू ने किस प्रकार से सरक्षित किये हैं, सगोपित किये हैं और सव-र्धित किये हैं। इस पूर्वोक्त प्रकार से उसने विचार किया (सपेहित्ता

(एव खलु मए इओ अईए पचमे सवच्छरे चउण्हाण परिक्खणट्ठयाए ते पचसालि अक्खया हत्थे दिन्ना-त सेय खलु मम कल्लते जाव जलते पचसालि अक्खए पडिजाइत्तए)

કે આજથી પાચ વર્ષ પહેલા મે ચારે પુત્રવધૂઓને તેમની બુદ્ધિ પરીક્ષા માટે તેમના હાથોમા પાચ શાલિકણો આપ્યા હતા તો હવે સવારે સૂર્ય ઉદય પામતાની સાથે જ હુ તેમની પાસેથી પાચે શાલિકણો પાછા માગુ એ જ ઉચિત છે

(जाव जाणामि ताव काए किण्ह सारक्खिया वा सगोविया वा सवड्ढिया जाव त्ति कट्टु एव सपेहेइ)

એનાથી મને એ વાતની ખબર પડશે કે મે જેટલા શાલિકણો તેમને આપ્યા હતા તેને કઇ પુત્રવધૂએ કેવી રીતે સરક્ષિત, સ'ગોપિત તેમજ સવર્ધિત કર્યા છે આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો

अक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ताहट्ठ० पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरस्स पुरओ रोहिणियं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिजं जाव सव्वकज्जवड्ढावियपमाणभूयं ठावेइ ।

एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महाव्वया संवड्ढिया भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं० ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहा व सा रोहिणिया ।

एव खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते–त्तिबेमि ॥

॥ सत्तमं नायज्झयणं समत्त ॥ ७ ॥

टीका—' तएण तस्स ' इत्यादि । ततः खलु तस्य धन्यस्य=धन्यसार्थवाहस्य पञ्चमे सवत्सरे ' परिणममाणंसि ' परिणम्यमाने=सपूर्यमाणे सति पूर्वरात्रापररात्रकालसमये अयमेतद्रूपः– आध्यात्मिकः=आत्मनि विचार यावत् मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत– एव खलु मया ' इओ ' इतः=अद्यतनादिवसात्प्राग् अतीते पञ्चमे वर्षे चतसृणा स्नुषाणा ' परिक्खणट्ठयाए ' परीक्षणार्थाय–बुद्धि-

---

' तएण तस्स धण्णस्स ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (तस्स धण्णस्स) उस धन्य सार्थवाह को (पचमयंसि सवच्छरंसि परिणममाणंसि) पांच वर्ष जब पूर्ण हो चुके, तब (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि) मध्यरात्रि के समय में (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ (एव खलु मए इओ अईए पचमे

" तएण तस्स धण्णस्स " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યાર બાદ (तस्स धण्णस्स) ધન્ય સાર્થવાહને (पचमयंसि सवच्छरंसि परिणममाणंसि) પાચ વર્ષો જ્યારે પૂરા થયા ત્યારે(पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि) અડધી રાત્રિના વખતે (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો.

यदा खलु अहं पुत्रि ! एतान् पञ्च शालिअक्षतान् याचेय तदा खलु त्वं मदीयमान् पञ्च शालिअक्षतान् प्रतिदद्या 'इति, स नूनं पुत्रि ! अर्थः समर्थः ? उज्झिता माह- हन्त ! अस्ति=एतत्सत्यमस्ति । श्रेष्ठीमाह- 'त' तत्=तस्मात् खलु त्वं हे पुत्रि ! मह्यं तान् 'पडिनिज्जाएहि' प्रतिनिर्यातय=प्रतिसमर्पय । ततः खलु सा उज्झिता धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं सम्यक् प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव कोष्ठागारं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'पल्लाओ' पल्लात्=शालि

कुलघरवग्गस्स पुरओ तव हत्थंसि पंच सालि अक्खए दलयामि) बुलाकर उससे ऐसा कहा हे पुत्रि ! आज से गत पाँचवें वर्ष में मैंने जो इन मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों के और चारों पुत्रवधूओं के कुल गृहवर्ग के समक्ष तुम्हारे हाथ में पाच शालि-अक्षतों को दिया था। (जयाणं अहं पुत्ता एए पंच सालि अक्खए जाएज्जा) और हे पुत्रि ऐसा कहा था कि जब मैं इन पाच शालि-अक्षतो को माँगू (तयाणं तुमं मम इमे पंच सालि अक्खए पडिदिज्जाएसि त्ति) तब तुम मुझे इन पाच शालि-अक्षतो को पीछे वापिस दे देना (से णूणं पुत्ता अट्ठे समट्ठे) हे पुत्रि ! कहो यही बात कही थी न ? (हंता अत्थि) तब उज्झिताने कहा-हाँ यही बात कही थी (तण्णं पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए पडिदिज्जाएहि) तो पुत्रि ! तुम मुझे उन पाच शालि अक्षतो को अब पीछे वापिस दे दो। (तएणं सा उज्झिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ)

બોલાવીને તેણે કહ્યું કે હે પુત્રિ ! આજથી પાચ વર્ષ પહેલા મે તને આ બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો અને ચારે પુત્રવધૂઓના સગા વહાલાઓની સામે તમારા હાથમા પાચ શાલિકણો આપ્યા હતા

(जयाणं अहं पुत्ता एए पचसालि अक्खए जाएज्जा)

અને એમ કહ્યુ હતુ કે જ્યારે હુ તમારી પાસેથી આ પાચ શાલિકણો માગુ

(तयाणं तुमं मम इमे पच सालि अक्खए पडिदिज्जएसित्ति)

ત્યારે તમે મને આ પાચે શાલિકણો પાછા આપજો (से णूणं पुत्ता अट्ठे समट्ठे હે પુત્રિ ! બોલો મે તમને એજ વાત કહી હતી ને ? (हंता अत्थि) ત્યારે ઉજ્ઝિતાએ કહ્યુ- "હા એજ વાત કહી હતી" तएणं पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए पडिनिज्जाएहि) તો હે પુત્રિ ! તે પાચે શાલિકણો તમે મને પાછા આપીદો

(तएणं सा उज्झिया धण्णस्स सत्थवाहस्स, एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ)

रयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिप्रभृतीन् चतसृणां च स्नुषाणां कुलगृहवर्गेण सार्द्धं भोजयित्वा यावत्तान् सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतो 'जेट्ठ' ज्येष्ठां=ज्येष्ठपुत्रवधूम् 'उज्झिय' उज्झिताम् =उज्झितानाम्नीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्- एव खलु अहं पुत्रि ! इतोऽतीते पञ्चमे संवत्सरे अस्य मित्रादेश्चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतस्तव हस्ते पञ्च शालिअक्षतान् 'दलयामि' ददामि=दत्तवान् कथितवांश्च कल्ल जाव जलते विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेइ-उवक्खडावित्ता-मित्तनाइ० चउण्ह सुण्हाण कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठ उज्झिय सद्दावेइ) विचार कर के फिर उसने प्रातःकाल सूर्योदय होने पर विपुलमात्रा में अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्य रूप से चारों प्रकार का आहार तैयार करवाया।

जब चारों प्रकार का आहार अच्छी तरह निष्पन्न हो चुका तब उसने अपने समस्त मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के और चारों पुत्रव धूओं के कुलवर्ग के साथ भोजन किया। बाद मे उन सबका सन्मान सत्कार किया। और उन्ही मित्रादि परिजनों के एव अपनी चारों पुत्र-वधूओं के कुलवर्ग के समक्ष जेठी जो पुत्रवधू थी कि जिस का नाम उज्झिता था उसे बुलाया। (सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु अह पुत्ता! इओ अईए पचमसि सवच्छरसि इमस्स मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाण

(सपेहित्ता कल्ल जाव जलते विउल असण पाण खाइम उवक्खडावेइ उव-क्खडावित्ता मित्तनाइ चउण्ह सुण्हाण कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाइ चउण्हय सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओजेट्ठ उज्झिय सद्दावेइ)

વિચાર કરીને તેણે સવારે સૂર્ય ઉદયપામ્યા બાદ અશન, પાન બાદ્ય અને સ્વાદ્ય આમ ચાર જાતનો પુષ્કળ પ્રમાણમા આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો

ચારે જાતનો આહાર સારી રીતે તૈયાર થઇ ગયો ત્યારે તેણે પોતાના બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓના સગ વહાલાઓની સાથે ભોજન કર્યું જમ્યા બાદ તેણે બધાનો સત્કાર તથા સન્માન કર્યું ત્યારબાદ મિત્ર વગેરે પરિજનો અને ચારે પુત્રવધૂઓનાં સગાવહાલાઓની સામે તેણે મોટા પુત્રની વધૂ ઉજ્ઝિતાને બોલાવી

(सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु अहपुत्ता ! इओ अईए पचमसि सवच्छ-रसि इमस्स मित्तनाइ चउण्हय सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ तव हत्थसि पव सालि अक्खए दलयामि)

दत्-एव खलु यूय हे तात ! अतीते पञ्चमे सवत्सरे अस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणा च स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य 'जाव' यावत् पुरतः पञ्च शाल्यक्षतान् दत्वा कथितवन्तः-हे पुत्रि ! त्वमेतान् पञ्चशाल्यक्षतान् सरक्षन्ती सगोपायन्ती विहरसि । ततः खलु अह युष्माकमेतमर्थं प्रतिशृणोमि प्रतिश्रुत्य तान् पञ्चशाल्यक्षतान् गृह्णामि, गृहीत्वा-एकान्तमपक्रामामि, तत खलु तदा मम मनसि अयमेतद्रूप आध्यात्मिक'=विचार यावन्मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत एव खलु 'तायाण' एव वयासी एव खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पचमे सवच्छरे इमस्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुल० जाव विहराहि) उन पांच शालि अक्षतो को हाथ मे लेकर धन्य सार्थवाह ने उसे शपथ दिलाई-और दिलाकर उससे ऐसा पूछा पुत्रि ! कहो-ये पाच शालि अक्षत वे ही हैं या और दूसरे है ? इस प्रकार धन्य सार्थवाह के कथन को सुनकर उज्झिताने उससे ऐसा कहा हे तात ! आपने आज से गत पाचव वर्ष में मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के और अपनी पुत्रवधूओ के कुल गृह वर्ग के समक्ष पाच शालि अक्षतों को देकर ऐसा कहा था-हे पुत्रि ! तुम मेरे इन पाच शालि अक्षतों की रक्षा करती रहो-इन्हे उपद्रवों से बचाकर सुरक्षित रखो- (तएण अह तुब्भ एयमट्ठ पडिसुणेमि पडिसुणित्ता ते पच सालि अक्खए गेह्णामि गिह्णित्ता एगतमवक्कमामि-तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) मैंने आपके इस कथन को स्वीकार कर लिया था । और उन पांच शालि अक्षतों को ले लिया

सत्थवाहे एव वयासी एव खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पचमे सवच्छरे इमस्स मित्तनाइ चउण्हय सुण्हाण कुड जाव विहराहि)

તે પાચ શાલિકણોને હાથમા રખાવીને ધન્યસાર્થવાહે તેને શપથ (સમ) આપીને ફરી પૂછયુ કે હે પુત્રિ ! બોલો, આ પાચે શાલિકણો મારા આપેલા જ છે કે બીજા આ રીતે ધન્યસાર્થની વાત સાભળીને ઉજ્ઝિતાએ તેમને કહ્યુ-" હે તાત ! આજથી પાચવર્ષ પૂર્વે મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓના સગાવહાલાઓની સામે મને પાચ શાલિકણો આપતા તમે કહ્યુ હતુ કે હે પુત્રિ ! તમે મારા આ પાચ શાલિકણોની રક્ષા કરો અને એઓને ઉપદ્રવોથી બચાવો

(तएण अह तुब्भ एयमट्ठ पडिसुणेमि, पडिसुणित्ता ते पचसालि अक्खए गेण्हामि, गिण्हित्ता एगतमवक्कमामि-तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था)

મે તમારી આજ્ઞા પ્રમણે તે શાલિકણો લઇ લીધા ત્યાર બાદ હુ

कोष्ठात् पञ्च शालयक्षतान् गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव धन्य सार्थवाहस्तत्रैवोपाग च्छति, उपागत्य धन्य सार्थवाहमेवमवादीत्- एते खलु ते पञ्च शालयक्षताः, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा धन्यस्य सार्थवाहस्य हस्ते तान् पञ्च शालयक्षतान् ददाति. । तत खलु धन्य उज्झितां पुत्रवधू 'सवहसाविय' शपथशापिता = शपथयुक्तां करोति=शपथं कारयति, कृत्वा एवमवदत्-किं खलु पुत्रि ! त एव-एते पञ्च शालयक्षताः, उदाहु=अथवा अन्ये ? । ततः खलु उज्झिता धन्यसार्थवाहमेवमव-

इस प्रकार उज्झिताने उस धन्य सार्थवाह के इस कथन रूप अर्थको स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके जहा कोष्ठागार था-वहां पर गई ।

(उवागच्छित्ता पल्लाओ पच सालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ) वहा जाकर उसने शालि कोष्ठ से पाच शालि-अक्षतों को ले लिया और ले जाकर जहा धन्य सार्थवाह था वहां आई । (उवागच्छित्ता धण्ण सत्थवाह एव वयासी) आकर उसने धन्यसार्थवाह से ऐसा कहा-(एए ण ते पच सालि अक्खए त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थसि ते पच सालि अक्खए दलयइ) आपके वे पाच शालि अक्षत ये हैं । ऐसा कहकर उसने धन्यसार्थवाह के हाथ में उन पांच शालि अक्षतों को दे दिया (तएण धण्णे सत्थवाहे उज्झिय सवहसाविय करेइ करित्ता एवं वयासी-किं ण पुत्ता ! ते चेव एए पच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएण उज्झिया धण्ण सत्थवाहे

ઉજ્ઝિતાએ ધન્યસાર્થવહની આજ્ઞા સ્વીકારી અને ત્યાર પછી તે જ્યા કોઠાર હતો ત્યા- ગઇ

(उवागच्छित्ता पल्लाओ पचसालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ)

ત્યા જઇને તે શાલિકોષ્ઠમાથી પાચ શાલિકણો લઇ લીધા અને લઇને તે ધન્યસાર્થવાહની પાસે પહોચી (उवागच्छित्ता धण्ण सत्थवाह एव वयासी) ત્યા આવીને તેણે ધન્યસાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(एएण ते पचसालि अक्खए त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थसि ते पच सालि अक्खए दलयइ)

" તમે આપેલા પાચ શાલિકણો આ રહ્યા " આમ કહીને તેણે પાચે પાચ શાલીકણો ધન્યસાર્થવાહને આપી દીધા

(तएण धण्णे सत्थवाहे उज्झिय सवहसाविय करेइ करित्ता एव वयासी किं पुत्ता ते चेव एए पच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएण । धण्ण

जाज्वल्यमान उज्झिता तस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणा च स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य च पुरतस्ता तस्य=स्वस्य कुलगृहस्य 'छारुज्झियच' क्षारोज्झिका भस्मप्रक्षेपिकाम्, 'छाणुज्झिय च' छगणोज्झिका=गोमयप्रक्षेपिकाम् 'कयवरुज्झिय' कचवरोज्झिका=गृहकचवरप्रक्षेपिकाम्, 'समुच्छियच' समुक्षिका=गृहाङ्गणे जलच्छटकदायिकाम्, 'समज्जियच' समार्जिका=गृहसमार्जनकारिकाम्, 'पाओवदाइय पादोदकदायिकां=पादप्रक्षालनजलदायिकाम्, 'ण्हाणोवदाइय' स्नानोदकदायिका=स्नानार्थजलदायिकाम्, 'वाहिरपेसणकारिय वाह्यप्रेषणकारिक' वाह्यप्रेषणकार्यकारिकाम्, 'ठवेइ' स्थापयति=तादृशकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः।

माणे उज्झितिय तस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झिय च छाणुज्झिय च कयवरुज्झिय च समुच्छिय च सम्मज्जिय च पाउवदाइ च ण्हाणोवदाइ च बाहिर पेसण कारिंठवेइ) इस तरह वह धन्य सार्थवाह उज्झिताके मुख से इस कथन रूप अर्थको सुनकर और उसे हृदय में अवधारण कर शीघ्र ही कुपित हो गया। मिस मिसाने लग गया-क्रोधरूपी अग्निसे जलने लगा। उसने उसी समय उज्झिता को उस मित्र ज्ञाति आदि कों के तथा चारो पुत्र वधूओं के कुलगृहवर्ग के समक्ष अपने घर की राख डालने वाली गोबर फेंकने वाली' कूड़ाकर कट साफ करने वाली, घरके आगण में पानी छिडकने वाली घुहारु देने वाली, पाद प्रक्षालन तथा स्नान के लिये जल देने वाली, बाहर जाने का काम करने वाली बना दिया।

अर्थात् बाहिरी काम करने वाली दासी के पद पर उसे रख दिया।

पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झिय च छाणुज्झियं च कयवरुज्झिय च समुच्छिय च सम्मज्जिय च पाउवदाइ च ण्हाणोवदाइ च बाहिरपेसणकारिं ठवेइ)

આ પ્રમાણે તે ધાન્ય સાર્થવાહ ઉજ્ઝિતાના મુખેથી આ વાત સાભળીને તેને હૃદયમા અવધારણ કરીને એકદમ ગુસ્સે થઇ ગયેા

કુપિતાવસ્થામા તે ક્રોધની જ્વાળાઓમા સળગવા લાગ્યેા તેણે તેજ ક્ષણે ઉજ્ઝિતાને મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનેા તેમજ ચારે પુત્રવધૂએા ના કુળના માણસેાની સામે વરની રાખ સાફ કરનારી, છાણ સાફ કરનારી, કચરેા વગેરે સાફકરનારી, ઘરના આગણામા પાણી છાટનારી, સાવરણી થી કચરેા વાળનારી, પગ ધેાવામાટે તેમજ સ્નાનકરવા મટે પાણી તૈયાર રાખનારી અને ઘરની બહારના કામેા કરનારી બનાવી દીધી

એટલે બહારના કામ કરનારી દાસીનારૂપે ધન્યસાર્થવાહે તેની નિમણુક કરી.

तातानाम् आदरार्थं बहुवचनम् तातस्येत्यर्थः, श्वशुरस्य कोष्ठागारे बहवः पल्लाः शालीनां प्रतिपूर्णास्तिष्ठन्ति, तद् यदा खलु मम सकाशात् तात इमान् पञ्च शालिअक्षतान् याचिष्यते तदा खलु अहं पल्लतरात्=कोष्ठाभ्यन्तरात् अन्यान् पञ्च शालिअक्षतान् गृहीत्वा दास्यामि, इति कृत्वा एकान्तेऽपक्राम्य तान् प्रक्षिप्य स्वकर्मसयुक्ता=स्वकार्यसलग्ना समभवत् 'त' तत्=तस्मात् कारणात् नो खलु तात! तएव पञ्च शालिअक्षताः, किंतु एते खलु अन्ये=कोष्ठाभ्यन्तरादानीताः सन्तीत्यर्थः। तत खलु स धन्यः सार्थवाह उज्झितायाः अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'आसुरुत्ते' आशुरुप्तः=शीघ्रकोपान्वितः यावत् 'मिसमिसेमाणे' मिसमिसन्=क्रोधाग्निना

था। लेकर फिर मैं आपके पास किसी एकान्त स्थान में चली आई-वहां आते ही मुझे इस प्रकार का विचार आया—

(एव खलु तायाण कोट्ठागारसि० जाव सकम्भ सपउत्ता जाया तणो खलु ताओ ते चेव पच सालि अक्खए, एए ण अन्ने) मेरे श्वसुर जी के यहा कोष्ठागार में तो बहुत से पल्लशालियों के भरे पडे हैं-तो जिस समय श्वसुर जी इन प्रदत्त पाच शालि अक्षतों को मुझ से पीछे वापिस मागेगे तो मै दूसरे शालि कोष्ठ के भीतर से अन्य पाच शालि अक्षतों को उठाकर दे दूंगी। इस प्रकार विचार कर मैंने आपके द्वारा दिये हुए पांच शालि अक्षतों को इधर उधर डाल दिया और अपने दैनिक कार्य करने में लग गई। अत' हे तात! ये शालि-अक्षत वे पांच शालि अक्षत नही हैं-किन्तु उनसे भिन्न दूसरे ही है। (तएण से धण्णे उज्झियाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरत्ते जाव मिसि मिसे

તમારી પાસેથી એક તરફ ગઈ ત્યા આવતા જ મને વિચાર કર્યો

(एव खलु तायाण कोट्ठागारसि० जाव सकम्म सपउत्ता जाया त णो खलु ताओते चेवपचसालिअक्ख एएण अन्ने)

મારા સસરાના કોઠારમા ડાગરથી ભરેલા ઘણા પલ્યો છે તે જ્યારે પણ તેઓ મારી પાસેથી ફરી પાચ શાલિકણો માગશે ત્યારે કોઠારમાથી બીજા પાચ શાલિકણો તેમને આપીશ આમ વિચાર કરતા મે તમારા આપેલા પાચે શાલિકણોને આમ તેમ ફેકી દીધા અને ત્યાર બાદ હુ મારા હમેશાના ઘર કામમા પરોવાઈ ગઇ એથી હે તાત! આ શાલિકણો તમે જે આપેલા હતા તે નથી પણ આ તો બીજા જ છે

(तएण से धण्णे उज्झियाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरत्ते जाव मिसेमिसे माणे उज्झतिय तस्स मित्तगाइ० च उव्हय सुण्हाण कुलघरवग्गस्सय

श्रीवर्धमानस्वामीप्राह- एवमेव हे श्रमणाः ! अ युष्मन्तः । योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थीवा यावत्प्रव्रजितः सन्विहरति यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि उज्झितानि=परित्यक्तानि भवन्ति तर्हि स खलु इह भवे एव बहूना श्रमणानाश्चतुर्विधसङ्घस्य हीलनीयः,निन्दनीय', गर्हणीयः,यावत् चातुरन्तसंसारकान्तारमनुपर्यटिष्यति यथा सा उज्झिता ।

एव भोगवतिकाऽपि=भोगवतिकानाम्नी शालयष्टतमक्षिका द्वितीया पुत्रवधूरपि । नवर=विशेषस्त्वयम् तामोगवतिका तस्य=निजस्य कुलगृहस्य यावत् 'कडंतियच' कण्डन्तिकाम्=उदूखलादौ तण्डुलादीना तुषापसारणार्थं मुशलादिनाऽवघातिनीम्, 'कुट्टयतियच' कुट्टयन्तिका=तिलादिचूर्णकारिकाम्, 'पीसतियच' पेषयन्तिका=जरट्टादौ गोधूमादीना पेषणकारिकाम्, 'रूधतियच' रुन्धयन्तिकां

(एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव पव्वइए पच य से महव्वयाइ उज्झियाइ भवति, से ण इहभवे चेव बहूण समणाणे ४ जाव अणुपरियट्टिस्सट जहा सा उज्झिया) श्री वर्धमान स्वामी इसका उपसहार करते हुए कहते हैं कि हे आयुष्मत श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थी साध्वीजन दीक्षा सयम लेते समय पचमहाव्रत लेते हैं और यदि वह अपने महाव्रतों का परित्याग कर देता है तो वह उज्झिता की तरह इस भव में ही अनेक श्रमणजनों के द्वारा तथा चतुर्विध सघ के द्वारा हीलनीय होता है, निंदनीय होता है, गर्हणीय होता है-यावत् वह चतुर्गतिरूप इस ससार मे परिभ्रमण करता रहता है । (एव भोगवइया वि' नवर जाव कडतिय च, कुट्ट तिय च' पीसतिय च, एव रुधतिय च, रधतिय परिवेसतिय परिभाय

(एवामेव समणा उसो जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथीवा जाव पव्वइए पच यसे महव्वयाइ उज्झियाइ भवति, सेण इहभवे चेव बहूण समणाण ४ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा सा उज्झिया)

શ્રી વર્ધમાન સ્વામી આવિષે ઉપસહાર કરતા કહે છે કે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! અમારા જે કોઇ નિર્ગ્રંથ કે નિર્ગ્રંથી સાધ્વીજન દીક્ષા સયમ લેવાના વખતે પાચ મહાવ્રતો સ્વીકારે છે અને ભવિષ્યમા સ્વીકારેલા તે મહાવ્રતો નો પરિત્યાગ કરે છે તો તે ઉજ્ઝિતા ની જેમજ આ ભવમા ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ચતુર્વિધ સઘ વડે હીલનીય હોય છે, નિદનીય હોય છે, ગર્હણીય હોય છે-યાવત-તે ચતુર્ગતિ વાળા આ સસારમા પરિભ્રમણ કરતો રહે છે

(एव भोगवइयावि, नवर जाव कडतिय च कुट्टयतियच पीसतियच, एव

यन्त्रे चणकक्रोद्रवादीना तुषापसारिकाम्, 'रधतिय च' रन्धयन्तिकाम्=ओदनादि पाचिकाम् 'परिवेसयतिच' परिवेषणकारिकाम् 'परिभायतिय च' परिभाज यन्त्रिका=पर्वदिनादौ स्वजनगृहेषु खण्डखाद्यादीना सविभागकारिकाम् 'अब्भितरिय च पेसणकारिय' आभ्यन्तरिका च प्रेषणकारिका=गृहाभ्यन्तरप्रेषणकार्य कारिकाम् 'महाणसिणिं' महानसिकां=महानससम्बन्धिसकलकार्यकारिणी'ठवेइ' स्थापयति-गृहाभ्यन्तरकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः। श्री वर्धमानस्वामी

तिय च अब्भतरिय च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ) इसी तरह धन्य सार्थवाह ने अपने जो दूसरी पुत्रवधू भोगवतिका नाम की थी कि जिसने उन पाच शालि अक्षतों को खा लिया था उसे बुलाया-और उससे भी उज्झिता की तरह दिये हुए पाच शालि अक्षतों को वापिस मागा-उसने " वे पाच शालि अक्षत मैंने खा लिया है जब ऐसा कहा-तब उस धन्य सार्थवाहने उन मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के समक्ष और पुत्रवधूओ के कुलगृह के व्यक्तियों के समक्ष अपने घर के भीतरी काम पर रख दिया।

उसके अधीन में घर का भीतर का यह काम दिया गया-ओखली में मूशल से धान्य कूटना और चावल तैयार करना, तिल आदि का चूर्ण करना, चक्की से गेहुओ आदि पीस कर आटा तैयार करना, चना आदि की दाल बनाना तथा क्रोद्रव आदि को फर्श से दल कर उनके छिल के दूर कर उन की कुद ई बनाना ? चावल पकाना,

---

रूधतिय च रधतिय परिवेसतिय, परिभायतिय च अब्भतरिय च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ)

આ પ્રમાણે જ ધન્યસાર્થવાહે પોતાની બીજી પુત્રવધૂભોગવતીકા-જે પાચે શાલિકણો ખાઈ ગઈ હતી-તેને બોલાવી અને તેની પાસેથી પણ ઉજ્ઝિતાની જેમ પાચે શાલિકણો મા યા જવાબમા ભોગવતીકાએ જ્યારે એમ કહ્યુ "હે તે પાચે શાલિકણો હુ ખ ઇ ગ ઇ છુ ત્યારે ધન્યસાર્થવાહે તેને મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્ર વધૂઓના કુટુબીઓની સામે તેને ઘરની અદરના કામોમા તેની નિમણૂક કરી

ધન્યસાર્થવાહે ઘરના નીચે મુજબના કામો તેને સોપ્યા હતા બાહણિયા સાબેલાથી શાળ (ધા ય) બાહવી અને ચોખા તૈયાર કરવા, તલ વગેરેનો ભૂકો કરવો ઘટીમા ઘઉ વગેરે દળીને લોટ તૈયાર કરવો આખા ચણા વગેરે ની દાળ તૈયાર કરવી તથા ક્રોદ્રવ વગેરેને ઘટીથી ભરડીને તેના ફોતરા કર

माह एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे आयुष्मन्तः ! श्रमणाः ! योऽस्माक श्रमणो वा श्रमणीवा प्रव्रजित सन् विहरति, यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि 'फोडियाइ' स्फोटितानि=खण्डितानि भवन्ति तर्हि स खलु इहभवे चैव बहूनां श्रमणानां ४ चतुर्विधसघस्य हीलनीय', यावत् समारमनुपर्यटिष्यति यथा च सा भोगवतिका धन्यसार्थवाहस्य द्वितीय पुत्रवधूः ।

एव रक्षिताऽपि=रक्षितानाम्नी धन्यसार्थवाहस्य तृतीयपुत्रवधूरपि, नवर-धन्यसार्थवाहेन स्वदत्तशालक्षतान् प्रत्यर्पयितु याचिता सती यत्रैव वासगृह तत्रै

भोजन करने वालों को भोजन परोसना, स्वजन के घरों में खण्ड-खाना खाद्य आदि का विभाग करना रसोई घर का समस्त कार्य करना। (एवामेव समणाउसो जो अम्ह समणो वा जाव पञ्चय से महव्वयाइ फोडियाइ भवति से ण इह भवे चेव बहूण समणाण ४ जाव हीलणिज्जो ४ जहाव सा भोगवइया) इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो ! जो हमारा श्रमण अथवा श्रमणी जन प्रव्रजित होकर पच महाव्रतों का खडन करता है वह भोगवतिका की तरह इस भव में ही अनेक श्रमणों द्वारा तथा चतुर्विध सघ द्वारा हीलनीय होता है, यावत् अनादि अनत इस ससार में परिभ्रमण करता है। (एव रक्खिइयावि नवर जेणेव वास घरे तेणेव उवागच्छित्ता मजूस विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरडगाओ ते पच सालि अक्खए गेण्हइ) इसी तरह धन्य सार्थवाह ने अपनी तृतीय पुत्रवधू से जिस का नाम रक्षित था अपने द्वारा दिये हुए ५ शालि अक्षतों को मागा-सो वह जहा अपना वासगृह था वहा आई-

કરી તેમાથી કોઠરી બનાવવી, ભાત તૈયાર કરવા, જમનારાઓને પીરસવું સગા સબધીઓના ઘરોમા પીરસણ વગેરે મોકલવુ રસોઇઘરનુ બધુ કામ કરવું

(एवामेव समणाउसो जो अम्ह समणोवा जाव पचय से महव्वयाइ कोडियाइ भवति से ण इह भवे चेव बहूण ४ जाव हीलणिज्जो समणाण ४ जहाव सा भोगवइया)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજન પ્રવ્રજિત થઇને પાચ મહાવ્રતોનુ ખડન કરે છે તે ભોગવતીકાની જેમ આ ભવમા ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ચતુર્વિધ સઘદ્વારા હીલનીય હોય છે યાવત્ અનાદિ અનત આ સસારમા પરિભ્રમણ કરે છે

(एव रक्खिइयावि नवर जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मजूस विहाडेइ विहडित्ता रयणकरडगाओ ते पचसालि अक्खए गेण्हइ)

આ રીતે જ ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતા પાસેથી પોતે આપેલા પાચ શાલિકણો માગ્યા તે લ્યાથી પોતાના નિવાસ

वोपागच्छति, उपागत्य मञ्जूषा 'विघाडेइ' विघटयति=उद्घाटयति विघटय्य मञ्जूषाभ्यन्तरस्थात् रत्नकरण्डकात् तान् पञ्चशाल्यक्षतान् गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव धन्य. सार्थवाहस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य पञ्च शाल्यक्षतान् धन्यसार्थवाहस्य हस्ते ददाति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो रक्षिता रक्षिताभिधा तृतीयपुत्र वधूमेवमवदत्- किं खलु पुत्रि ! त एवैते पञ्चशाल्यक्षताः उदाहु- अथवा अन्ये, इति । तत खलु रक्षिता धन्य सार्थवाहमेवमवदत् त एव तात ! एते पञ्च शाल्यक्षताः, नो अन्ये धन्यः सार्थवाह आह कथ खलु पुत्रि ! रक्षितान्माह-एव खलु तात ! यूयमित पञ्चमे सवत्सरे 'जाव' यावत् सर्वेषा मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनानां पुरतः शालिसंरक्षणसंगोपनार्थं

वहा आकर उसने अपनी पेटी खोली-उस में से रखी हुई रत्न की डिबिया निकाली-निकाल कर उसमें रखे हुए पाच शालि अक्षतों को लिया (गिण्हित्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छइ) और लेकर जहा धन्य सार्थवाह थे-वह वहा आई (उवागच्छित्ता पचसालि अक्खए धण्णस्स हत्थे दलयइ) वहा आकर उसने पाच शालि अक्षतो को धन्य सार्थवाह के हाथ मे सौंप दिया। (तएण से धण्णे रक्खिइय एव वयासी) धन्य सार्थवाह ने उन्हें लेकर रक्षिता से ऐसा कहा (किंण पुत्ता ! ते चेव एए पच सालि अक्खया उदाहु अन्ने ? त्ति) हे पुत्रि ! ये पाच शालि अक्षत वे ही हैं या और दूसरे ? (तएण रक्खिइया धण्णे सत्थवाह एव वयासी ते चेव ताया ! एए पच सालि अक्खया णो अन्ने) तब रक्षिता ने धन्य सार्थवाह से कहा-हे तात ! ये पाच शालि अक्षत वे ही हैं अन्य नहीं हैं। (कह ण पुत्ता ! एव खलु ताओ तुब्भे

સ્થાને આવી ત્યા તેણે પેટી ખોલીને અદરથી રત્નજડિત ડાબલી બહાર કાઢી ડાબલીમાથી તેણે પાચે શાલિકણો લીધા (गिण्हित्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छइ) અને લઇને ધન્યસાર્થવાહ જ્યા હતો ત્યા આવી

(उवागच्छित्ता पचसालि अक्खए धण्णस्सहत्थे दलयइ)

ત્યા આવીને તેણે પાચે શાલિકણો ધાન્યસાર્થવાહને આપી દીધા (तएण से धण्णे रक्खिइय एव वयासी) ધન્યસાર્થવાહે શાલિકણો લઇને રક્ષિતાને કહ્યુ (किंण पुत्ता ! ते चेव एए पचसालि अक्खया उदाहु अन्ने ! त्ति)

" હે પુત્રિ ! આ પાચ શાલિકણો તે જ છે કે બીજા ? "

(तएण रक्खिइया धण्णे सत्थवाहे एव वयासी ते चेव ताया ! एए पच सालि अक्खया णो अन्ने)

ત્યારે રક્ષિતાએ ધન્યસાર્થવાહને કહ્યુ-" હે તાત ! આ પાચ શાલિકણો તે જ છે બીજા નહિ

पुरतः पञ्च शाल्यक्षतान् मम दत्तवन्तस्तदा मम मनसि सङ्कल्पो जातः-यद्यातः सर्वेषां पुरतः पञ्च शाल्यक्षतान् ददाति तत् ' भवियव्व एत्थ कारणेण ' ' भवितव्यमत्र केनापि कारणेन=अस्मिन् विषये किमपि कारणमवश्य विद्यते ' तिकट्टु ' इति कृत्वा इतिविचार्य तान् पञ्चशाल्यक्षतान् शुद्धे=स्वच्छे निर्मले वस्त्रे बद्ध्वा रत्नकरण्डके निक्षिप्य उच्छीर्षकमूले स्थापयित्वा ' तिसझ ' त्रिसन्ध्यं=समाहे मध्याह्ने सायंकालेवा ' पडिजागरमाणी २ प्रतिजाग्रती २= पुनः पुनर्निरीक्षमाणा

इओ पचमसि जाव (भवियव्व एत्थ कारणेण) त्ति कट्टु ते पच सालि अक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसझ पडि जागर माणी २ विहरामि) इस प्रकार रक्षिता की बात सुनकर धन्य सार्थवाह ने उससे पूछा-पुत्रि ! ये इसी तरह से अभी तक कैसे रक्खे रहे-तब रक्षिता ने कहा-सुनो मैं बताती हूँ-आपने आज से गत पाचवें वर्ष में जो ये पांच शालि अक्षत मुझे समस्त मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के तथा पुत्रवधूओं के कुलगृह वर्ग के समक्ष दिये थे उस समय मेरे मन में ऐसा विचार आया कि ये तात जो मुझे सब जनों के सामने इन पाच शालि अक्षतों को दे रहे हैं और इन की रक्षा आदि के विषय में कह रहे हैं-सो इस में कोई न कोई कारण अवश्य है-ऐसा विचार कर मैंने उन पाच शालि अक्षतों को स्वच्छ-निर्मलवस्त्र में बान्ध कर एक रत्न की डिबिया में रख दिया-और उसे अपने सिरहाने में रखकर आज तक मैं उसकी हर समय सभाल करती आ रही हूँ ।

(कहण पुत्ता एव खलु ताओ ! तुब्भे इओ पचमसि जाव ' भवियव्व एत्थ कारणेण ' त्ति कट्टु ते पचसालि अक्खए सुद्धे वत्थे जाव ति सम्म पडि जागर-माणी २ विहरामि)

આ રીતે રક્ષિતાની વાત સાભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને પૂછયુ “ હે પુત્રિ ! અત્યાર સુધી કેવી રીતે આ શાલિકણોને રાખવામા આવ્યા ત્યારે રક્ષિતાએ જવાબ આપતા કહ્યુ ‘સાભળો,હુ બધી વિગત તમારી સામે રજુ કરૂ છુ આજથી પાચ વર્ષ પહેલા બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓના કુટુબીજનોની સામે તમે મને શાલિકણો આપ્યા હતા હે તાત ! તમે મને બધા સ્વજનોની સામે પાચ શાલિકણો આપીને તેઓની રક્ષામાટે મને આજ્ઞા આપી હતી જેથી મે વિચાર કર્યો કે આમા કોઈ રહસ્ય ચોક્કસ છુપાયેલુ છે આમ વિચાર કરીને પાચે શાલિકણોને સ્વચ્છ નિર્મળ વસ્ત્રમાં બાધીને એક રત્નની ડાબલીમા મૂકી દીધા, અને તેને ઓશીકાની નીચે મૂકીને આજ (દિવસ) સુધી તેની રક્ષા કરતી રહીછુ

विहरामि=अद्यावधि तिष्ठामि तदेतेन कारणेन हे तात ! त एवैते पञ्च शालय-क्षताः, नो अन्ये । ततःखलु स धन्यः सार्थवाहो रक्षिताया अन्तिके=समीपे एतमर्थं श्रुत्वा हृष्ट तुष्ट तस्य=निजस्य कुलगृहस्य ' हिरण्णस्य ' हिरण्यस्य च= रजतस्य यावत् कास्यदूष्य विपुल यावत्स्वापतेयस्य=हिरण्यादि यावन्मात्रधनस्य ' भाण्डागारिणिं ' भण्डागाराधिष्ठात्री ' ठवेइ ' स्थापयति=सर्वधनाधिकारिणी त्वेन नियोजयतीत्यर्थ । श्रीवर्धमानस्वामी प्राह एवमेव हे श्रमणा. ! आयुष्मन्त योऽस्माक श्रमणो वा श्रयणी वा प्रव्रजितः सन् विहरति,यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि

(त एएण कारणेण ताओ ! ते चेव एए पच सालि अक्खए णो अन्ने) इस कारण हे तात ! वे पाच शालि अक्षत ये ही है, दूसरे नही है । (तएण से धण्णे रक्खिइयाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठ० तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य जाव कसदूस विउलधण जाव सावतेज्जस्स य भडागारिणिं ठवेइ) इस तरह उस धन्य सार्थवाह ने रक्षिका के मुख से इस अर्थ को सुन कर बहुत अधिक प्रसन्न और सतुष्ट होकर उसे अपने घर में जितना भी सोना चादी आदि धन था उसकी अधिकारिणि बना दिया ।

(एवामेव समणाउसो जाव पच य से महव्वयाइ भवति, सेण इह भवे चेव बहूण समणाणं ४ अच्चणिज्जे४ जहाव सा रक्खिया) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा श्रमण और श्रमणी जन प्रव्रजित होकर इतस्तत' विहरण करता है यदी उस के पाच महाव्रत

(त एएण कारणेण ताओ ! ते चेव एए पचसालि अक्खए णो अन्ने)
એટલે હે તાત ! તે પાચ શાલિકણો એજ છે, બીજા નથી

(तएण से धण्णे रक्खिइयाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठ०तस्स कुल धरस्स हिरन्नस्सय जाव कसइस विउल धणजाव तेज्जस्सय भडारगारिणि ठवेइ)
આ રીતે ધાન્યસાર્થવાહે રક્ષિકાના મુખેથી બધી વિગત સાભળીને ખૂબજ પ્રસન્ન તેમજ સતુષ્ટ થતા તેને પોતાના ઘરમા જેટલુ સોનુ ચાદી વગેરે ધન હતુ તેની અધિકારીણી બનાવી દીધી

(एवामेव समणाउसो जाव पचयसे महव्वयाइ रक्खियाइ भवति सेणं इहभवे चेव बहूण समणाग ४ अच्चणिज्जे ४ जहाव सा रक्खिया)
આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ તેમજ શ્રમણી જનો પ્રવ્રજિત થઈને આમ તેમ વિહાર કરતા રહે છે તેમ કરતા જે તેમના

रक्षितानि भवन्ति स खलु इहभवे चैव बहूना श्रमणाना४ चतुर्विधसघस्य अर्चनीय यावत् समाननीयो भवति यथा सा रक्षिता=धन्यसार्थवाहस्य तृतीया पुत्रवधूः ।

रोहिणिकाऽप्येवमेव=रोहिणिकानाम्नी धन्यसार्थवाहस्य चतुर्थपुत्रवधूरपि पूर्व वदेव विज्ञेया, नवर विशेषस्त्वम्-श्रेष्ठिना समाहूय ' मद्दत्तान् पञ्चशाल्यक्षतान् समर्पय ' इत्येव कथिता सती रोहिणिका श्रेष्ठिन मत्याह-हेतात ! यूय मम सुबहुकम्=अनेकसख्यक ' सगडीसागड शकटीशाकट शकटयः=लघुगाडिकाः शाकट=शकटसमूहः, शकटयश्च शाकट चेति समाहारे शकटीशाकटम्=अनेकगाडी शकटसमूह ' दलह ' दत्त=मयच्छत, येन शकटयादिनाऽह ' तुब्भ ' युष्माक तान्

सुरक्षित रहते है तो वह इस भव में ही अनेक श्रमणादि जनों द्वारा तथा चतुर्विध सघ द्वारा अर्चनीय होता है यावत् समान नीय होता है। जैसे वह धन्य सार्थवाह की तृतीय पुत्रवधू रक्षिता हुई है। (रोहिणियावि एव चेव नवर तुब्भे ताओ ! मम सुबहुय सगडी सागड दलाह जेण अह तुब्भ ते पच सालि अक्खए पडिणिज्जाएमि) इसी तरह धन्य सार्थवाह की चौथी पुत्रवधू रोहिणी का भी चरित्र जानना चाहिये परन्तु इसमे जो विशेषता है-वह इस प्रकार है-नव धन्यसार्थवाहने चौथी अपनी पुत्रवधू रोहिणिका को बुलाया-और बुलाकर उससे ऐसा कहा किमैने आज से गत पाचवे वर्ष जो तुझे पांच शालि-अक्षत दिये थे-उन्हे तुम वापिस मुझे आज दो-तब रोहिणिकाने उनसेकहा हे तात ! आप मेरे लिये अनेक छोटी गाडिया और बडी २ गाडिया दीजिये-कि जिनके द्वारा मै आपके उन पाच शालि अक्षतो को भर-

---

પાચ મહાવ્રતો સુરક્ષિત રહે છે તો આ ભવમા તે અનેક શ્રમણો દ્વારા અર્ચનીય હોય છે યાવત્ સન્માનનીય હોય છે, ધન્યસાર્થવાહની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતા જેમસન્માનીત થઇ તેમજ તે પણ સન્માનીત થાય છે

(रोहिणियावि एव चेव नवर तुब्भे ताओ ! मम सुबहुय सगडीसागड दलह जेण अह तुब्भ ते पच सालि अक्खए पडिणिज्जाएमि)

આ પ્રમાણે હવે આપણે ધન્યસાર્થવાહની ચોથી પુત્રવધૂ રોહિણીના ચરિત્ર વિષે પણ જાણવુ જોઇએ તેના ચરિત્રની વિશેષ વાત આ પ્રમાણે છે કે— જ્યારે ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ચોથી પુત્રવધૂ રોહિણિકાને બોલાવી અને બોલાવીને તેને એમ કહ્યુ કે આજથી પાચ વર્ષ પહેલા મે તને પાચ શાલિકણો આપ્યા હતા તે મને પાછા આપો ત્યારે રોહિણિકાએ તેમને કહ્યુ કે હે તાત ! તમે મને અનેક નાની મોટી ગાડીઓ આપો કે જેથી તમે આપેલા પાચ શાલિકણોને તેમા ભરાવીને અહી લાવુ અને તમને પાછા

पञ्च शाल्यक्षतान् 'पडिणिज्जाएमि' प्रतिनिर्यातयामि=प्रतिसमर्पयामि. । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो रोहिणीमेवमवदत्- कथ खलु हे पुत्रि ! त्व मम तान् पञ्च शाल्यक्षतान् शकटीशाकटेन 'पडिणिज्जाइस्ससि' प्रतिनिर्यातयिष्यसि=प्रतिसमर्पयिष्यसि ? ततः खलु सा रोहिणी धन्य सार्थवाहमेवमवदत्-एव खलु हे तात ! यूयम् इतः पञ्चमे सवत्सरे-अस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः पुरतः सरक्षणार्थं सगोपनार्थं पञ्च शाल्यक्षतान् मह्य दत्तवन्तः, तान् गृहीत्वा मया चिन्तितम्-अत्रकेनापि

वाकर यहा ला सकू-और आपको पीछे वापिस करसके (तएण से धण्णे रोहिणि एव वयासी) रोहिणिका की इस प्रकार बात सुनकर धन्यसार्थवाहने उससे ऐसा कहा-(कह ण पुत्ता ! तुम मम ते पच सालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाइस्ससि) पुत्रि ! किस तरह तुम मुझे वे पाच शालि अक्षत शकटी और शकट समूह में भरने लायक कर पीछे वापिस देना चाह रही हो ? (तएण सा रोहिणि धण्ण एव वयासी-एव खलु ताओ ! तुब्भे इओ पचमे सवच्छरे इमस्स मित्त० जाव वहवे कुभसया जाया-तेणेव कमेण एव खलु ताओ ! तुब्भे ते पच सालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाएमि) धन्यसार्थवाह का ऐसा कहना सुन कर रोहिणिका ने कहा-तात ! आजसे पांचवें वर्ष में आपने मुझे मित्र ज्ञाति आदिपरिजनों के समक्ष बुला कर५ पाच शालि अक्षत दिये थे-और उनके सरक्षण सवर्धन आदि विषय में आपने शिक्षा की थी।

આપી શકુ (तएण से धण्णे रोहिणि एव वयासी) રોહિણિકાની આ રીતે વાત સાભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(कहण पुत्ता ! तुम ते पचसालि अक्खए सगडीसागडेण निज्जाइस्ससि)

હે પુત્રી ! મે આપેલા પાચ શાલિકણોને તમે નાની મોટી ઘણી ગાડી ઓમા ભરાવીને કેવી રીતે આપવા માગો છો.

(तएण सा रोहिणी धण्ण एव वयासी-एव खलु ताओ ! तुब्भे इओ पचमे सवच्छरे इमस्स मित्त जाव वहवे कुभसया जाया तेणेव कमेण एव खलु ताओ तुब्भे ते पचसालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाएमि)

ધન્યસાર્થવાહનુ કથન સાભળીને રોહિણિકાએ તેમને કહ્યુ-'હે તાત ! આ જથી પાચ વર્ષ પહેલા મિત્રજ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો ની સામે મને બોલાવીને તમે પાચ શાલિકણો આપ્યા હતા અને આપતી વખતે તમે તેમના સરક્ષણ સવર્ધન વગેરેની બાબતમા સૂચનો કર્યા હતા

તમારી પાસેથી શાલિકણો લઈને મે આમ વિચાર કર્યો કે આ પાચ શાલિકણો તાતે આપ્યા છે અને તેમના સરક્ષણ તથા સવર્ધન વિષે જે

कारणेन भवितव्यमिति, तदनु पितृगृहपुरुषान् समाहूय मया वर्द्धयितुं तेभ्यस्ते पञ्च शालयक्षता दत्ताः । तै सुपरिकर्मित केदारेषु वपनादि क्रियाभिः परिवर्द्धिता जातास्ते प्रथमे वर्षे मागधप्रस्थपरिमिता शालयः । एव क्रमशो द्वितीये वर्षे शाली ना बहव कुडवाः सजाताः । तृतीये वर्षे बहवः कुम्भा । चतुर्थे सवत्सरे बहूनि कुम्भशतानि शालीना सजातानि । तेनैव क्रमेण एव खलु हे तात ! युष्माक तान् पञ्च शालयक्षतान् शकटीशाकटेन प्रतिनिर्यातयामि=समर्पयामिः । तत खलु स धन्यः सार्थवाहो रोहिणिकायै सुबहुकम्=अनेकसङ्ख्यक शकटी शाकट ददाति,।

मने उन्हें लेकर ऐसा विचार किया-कि तातने जो ये पाच शालि अक्षत दिये है और उनके सरक्षण आदि के विषय मे जो कहा है सो नियमतः इसमें कोई न कोई कारण अवश्य है-ऐसा विचार कर मैंने पितृगृह (पीयर) के पुरुषों को बुलाया-और उन्हें उन पाच सालि अक्षतों को बढाने के लिये दिया।

उन लोगों ने उन्हें लेकर सुपरि कर्मित खेतो में वपनादि क्रिया द्वारा खूब बढाया प्रथम वर्ष में वे मगधदेश प्रसिद्ध प्रस्थप्रमाण निपजे। द्वितीय वर्ष अनेक कुडव प्रमाणहोने पर हुए। तृतीय वर्ष में वे अनेक कुभप्रमाण हुए। चौथे वर्ष सैकड़ों कुभप्रमाण हुए। इस तरह आपके द्वारा दिये हुए वे पाच शालि अक्षत आज अनेक गाडी और गाड़ा प्रमाण हुए है-इसलिये मैं आपके लिये आज उन्हें अनेक गाड़ी और गाडा प्रमाण करके पीछे वापिस देरही हूँ। तएण से धण्णे सत्थवाहे रोहिणियाए सुबहुय सगडी सागड दलयइ, तएण सा रोहिणि सुबहु

કઈ મને કહ્યુ છે, જેથી શેઠશ્રી આ વાતમા કઈક રહસ્ય હોવુ જોઇએ એમ વિચાર કરીને મે પિયરના માણસોને બોલાવ્યા અને તેમને વર્ધન માટે પાચ શાલિકણો આપ્યા

તેમણે શાલિકણો લઈ લીધા, અને સુપરિકર્મિત ખેતરોમા વાવીને તે કણોની ખૂબ વૃદ્ધિ કરી પહેલા વર્ષે મગધ દેશ પ્રસિદ્ધ પ્રસ્થ પ્રમાણ જેટલા શાલિકણો થયા બીજા વર્ષે વાવવાથી ઘણા કળશો ભરાય તેટલા થયા, ત્રીજા વર્ષે બીજા વર્ષ કરતા પણ વધારે કળશો ભરાય તેટલી શાલિ થઈ ચોથા વર્ષે વાવવાથી સેકડો કળશો ભરાય તેટલી શાલિ થઈ આ પ્રમાણે તમે આપેલા પાચ શાલિકણો આજે ઘણી નાની મોટી ગાડીઓમા ભરાય તેટલા થઇ ગયા છે, તેથી જ હુ આપને તે પાચ શાલિકણો અનેક ગાડીઓમા ભરાય તેટલા પ્રમાણમા વર્ધન કરાને પાછા આપી રહી છુ

(तएण से धण्णे सत्थवाहे रोहिणियाए सुबहुय सगडी सागड दलयइ,

ततः खलु सा रोहिणी सुबहुकं शकटीशाकटं गृहीत्वा यत्रैव स्वकं कुलगृहं=पितृगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कोष्ठागाराणि=कोष्ठगृहाणि ' विहाडेइ ' विघटयति=उद्घाटयति, विघटय्य पल्लान्=शालिकोष्ठान् ' उब्भिदेइ ' उद्भिनत्ति=उन्मुद्रितान् करोति, तेषां मुद्रामपनयतीत्यर्थः, उद्भिद्य शकटीशाकटं भरति, भृत्वा राजगृहं नगरं मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव धन्यः सार्थवाहस्तत्रैवोपागच्छति. । ततः खलु राजगृहे नगरे शृङ्गाटक यावत्–महापथपथेषु बहुजनोऽन्यो न्यमेवमाख्याति

सगडी सागड गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेइ) इस तरह रोहिणिका के वचन सुनकर धन्य सार्थवाहने उसे अनेक शकटी और शकटों को दिया वह रोहिणि का उन अनेक शकटी और शकटो को लेकर जहा अपना कुलगृह था वहा पहुँची–पहुच कर उसने वहां के कोष्ठागार को उघाडा (विहाडित्ता पल्ल उब्भिदइ)–उघाड कर वहा रक्खे हुए शालि कोष्ठों को खोला उन्हें मुद्रा रहित किया–(उब्भिदित्ता सगडीसागड भरेइ) बाद में उनसे अनेक शकटी और शकटो को भरा (भरित्ता रायगिह नयर मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ) भर कर राजगृह नगर के ठीक बीचो बीच के मार्ग से होकर वह जहां अपना घर था और जहा धन्य सार्थवाह थे वहा पहुँची–(तएण रायगिहे नयरे सिंगाडग जाव बहुजणो अन्नमन्न एवमाइक्खइ, एवं

तएण सा रोहिणीं सुबहु सगडीसागड गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेई)

આ રીતે રોહિણિકાની વાત સાભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને ઘણી નાની મોટી ગાડીઓ આપી રોહિણિકા તે બધી નાની મોટી ગાડીઓને લઇને જ્યા પોતાનુ પિયર હતુ ત્યા આવી ત્યા આવીને તેણે ત્યાનો કોઠાર ઉઘાડયે (विहाडित्ता पल्ल उब्भिदइ) ત્યારબાદ ત્યા મૂકેલા શાલિના કોઠારોને ઉઘાડયા (उब्भिदित्तासगडीसागड भरेइ) અને તેમનાથી નાની મોટી ઘણી ગાડીઓને ભરી

(भरित्ता रायगिह नयर मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव घण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ)

ભરીને રાજગૃહ નગરના ઠીક મધ્ય ભાગે થઇને જ્યા તેનુ પોતાનુ ઘર અને જ્યા ધન્યસાર્થવાહ હતા ત્યા પહોચી

(तएण रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्न एवमाइक्खइ,

धन्यः=धन्यवादपात्रं खलु हे देवानुप्रियाः धन्यः सार्थवाहः यस्य खलु रोहिणिका स्नुषा=चतुर्थपुत्रवधूः पञ्च शालिअक्षतान् शकटीशाकटेन निर्यातयति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्च शालिअक्षतान् शकटीशाकटेन निर्यातितान्=समर्पितान् पश्यति दृष्ट्वा हृष्टः यावत् 'पडिच्छइ' प्रतीच्छति=स्वीकरोति, प्रतीच्य=स्वीकृत्य तस्यैव मित्रज्ञातिप्रभृते, चतसृणां च स्नुषाणां कुलगृहस्य पुरतो रोहिणिकां स्नुषां तस्य=निजस्य कुलगृहस्य=कुटुम्बस्य बहुषु कार्येषु च यावद् रहस्येषु च

देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे ते पच्च सालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाइए पासइ पासित्ता हट्ठ तुट्ठ पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्त-णाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरस्स पुरओ रोहिणिय सुण्ह तस्स कुल घरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्ज जाव सव्वक ज्ज वड्ढाविय पमाणभूय ठावेइ) जब वे गाड़ी और गाड़े भरे हुए राजगृह के मध्यमार्ग से होकर जा रहे थे-तब लोगो ने देखकर नगरमें शृंगाटक आदि मार्गों के ऊपर परस्पर इस प्रकार से बात चित करना प्रारम्भ किया " देवाणुप्रियो ! देखो धन्य सार्थवाह कितना अधिक धन्य वाद का पात्र है कि जो चतुर्थ पुत्र वधू रोहिणिका के द्वारा पाच शालि अक्षतों की गाडी और गाडो से भरकर पीछे लौटाये हुए देख रहा है। और हृष्ट तुष्ट हो उन्हें स्वीकार कर रहा है। तथा स्वीकार करके उस रोहिणिका को मित्रज्ञाति आदि परिजनों के चारो पुत्रवधूओं के कुल

धण्णेण देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे ते पचसालि अक्खए सगडीसागडेण नि ज्जाइए पासइ पासित्ता हट्ठ तुट्ठ पडिच्छइ पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हाण कूलघरस्स पुरओ रोहिणिय सुण्ह तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसुय जाव रहस्सेसुय आपुच्छणिज्ज जाव सव्वकज्ज वड्ढाविय पमाणभूय ठावेइ)

જ્યારે તે નાની મોટી ગાડીઓ રાજગૃહ નગરના મધ્યમાર્ગે થઇને પસાર થઈ રહી હતી ત્યારે નગરના શૃંગાટક વગેરેમા એકઠા થયેલા લોકો પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા " દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ ધન્યસાર્થવાહ કેટલો બધો ભાગ્યશાળી છે કે જે આજે ચોથી પુત્રવધૂ રોહિણિકા વડે પાચ શાલિકણોના ગાડાઓ અને ગાડીઓ ભરીને ફરી પાછા આવતા જોઇ રહ્યો છે અને પ્રસન્ન થઇને તુષ્ટ થઇને તેને સ્વીકારી રહયો છે તે આ બધુ સ્વીકારીને રોહિણિકાને મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓના કુટુંબી

आप्रच्छनीया यावत् सर्वकार्यवर्द्धिका प्रमाणभूता 'ठवेइ' 'स्थापयति=सर्व कुटुम्बाधिष्ठात्रीत्वेन ता नियोजयतीत्यर्थः।

एवमेव हे श्रमणाः ! आयुष्मन्तः ! योऽस्माक श्रमणोवा श्रमणीवा प्रव्रजितः सन् विहरति यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि सवर्द्धितानि भवन्ति स खलु इहभवे एव बहूनां श्रमणाना ४= चतुर्विधसघस्य अर्चनीयः-यावत् चातुरन्तसंसारकान्तार 'वीइवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=पारयिष्यति यश च सा रोहिणिका=धन्यसार्थवा हस्य चतुर्थी पुत्रवधूः। उक्तञ्च-

---

गृह वर्ग के समक्ष अपने कुटुम्ब के अनेक कार्यों में यावत् रहस्यों में पूछने योग्य यावत् समस्त कार्यों में प्रमाणभूत उसे बना रहा है।

तथा सपूर्ण कार्यों की बढाने वाली उसे मान रहा है-कारण इस का केवल यही है कि धन्य सार्थवाह ने उस रोहिणिका को अपने समस्त कुटुम्ब की अधिष्ठात्री बना दिया। (एवामेव समाणाउसो ! जाव पच य से महव्वया सवड्ढिया भवति सेण इहभवे चेव बहुण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहाव सा रोहिणिया एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेण सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयम पन्नत्ते त्ति बेमि) इस तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो! जा हमारा श्रमण तथा श्रमणीजन दीक्षित होता हुआ अपने पच महाव्रतों को बढाता रहता है वह रोहिणिका की तरह इस भवमें ही अनेक श्रमण आदि महानुभावों द्वारा तथा चतुर्विध सघ द्वारा अर्चनीय आदि होता हुआ चतु

ઓની સામે પોતાના કુટુબની ધણી બાબતોમા યાવત બીજી પણ ધણી રહસ્યની મહત્ત્વપૂર્ણ વ તોમા તેની સલાહ લઈને તેને પ્રમાણ ભૂત બનાવી રહ્યો છે

તેમજ રોહિણિકાને તે બધા કામોને સ પૂર્ણ રીતે પાર પાડનારી માની રહ્યો છે કેમ કે ધન્યસાર્થવાહે રોહિણિકાને પોતાના આખા કુટુબની અધિષ્ઠાત્રી બનાવી દીધી છે

(एवामेव समाणाउसो ! जाव पचय से महव्वया सवड्ढिया भवति से ण इह भवे चेव बहुण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहाव सा रोहिणिया एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि)

આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અભાગ શ્રમણ તેમજ શ્રમણીજન દીક્ષિત થઈને પોતાના પચમહાવ્રતોનુ વર્ધન કતો રહે છે-તે રોહિણિકાની જેમ આ જગતમા જ ઘણા શ્રમણ વગેરે મહાનુભાવો દ્વારા તેમજ ચતુર્વિધ સઘદ્વારા અચનીય હોય છે અને તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ અનાદિ

" जहसेट्ठी तह गुरुणा, जहणाइजणो तह समणसघोय ।
जह बहुया तह भव्वा, जह सालिकणा तह वयाइ ॥ १ ॥" इति

छाया—" यथाश्रेष्ठी तथा गुरवः, यथाज्ञातिजनस्तथा श्रमणसघश्च ।
यथा बन्धस्तथा भव्याः (श्रमणाः) यथा शालिकणास्तथा व्रतानि ॥ १ ॥ इति

एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष समाप्तेन सप्तमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तः अर्थ=भाव प्रज्ञप्त =प्ररूपितः । ' इति ब्रवीमि इति पूर्ववत् ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां सप्तममध्ययन सपूर्णम् ॥ ७ ॥

गति रूप इस अनादि ससार कान्तार को पारकरदेताहै। कहा भी है- श्रेष्ठी के स्थानापन्न यहा गुरुजन हैं ज्ञातिजनों के स्थानोपन्न श्रमण सघ है, बधुओं के स्थानापन्न भव्यजन है और शालिकणों के समान पाच महाव्रत है।

इस प्रकार हे जबू ! मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने इस सप्तम ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा मैं तुम से कहता हूँ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासी लालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का सातवा अध्ययन समाप्त ॥ ७ ॥

સ સાર કાતાર (જ ગલ) ને પાર થઇ જાય છે અહી શ્રેષ્ઠીના સ્થાને ગુરુ જનો છે જ્ઞાતિજનોના સ્થાને શ્રમણુસ ઘ છે સગાવહાલા ઓના સ્થાને ભવ્ય જનો છે અને શાલિકણો ના સ્થાને પ ચમહાવ્રતો છે

આ રીતે હે જ બૂ ! મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ સાતમા જ્ઞાતા ધ્યયનનો અર્થ પૂર્વોક્ત રૂપે નિરૂપિત કર્યો છે આમ હુ તમને કહી રહ્યોછુ

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગ' સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ સાતમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૭॥

॥ अथाष्टममध्ययन प्रारभ्यते ॥

उक्त सप्तमाध्ययन सम्प्रत मल्लीनामकममष्टमाध्ययनमुच्यते, एव रूपेण सहास्य सम्बन्धः-पूर्वाध्ययने ' महाव्रताना विराधनायामर्थो भवति, तथा तत्समाराधनाया शिवसुखावाप्तिरूपः परमार्थो भवती ' त्युक्तम्, अस्मिन्नध्ययने तु तेषा महाव्रतानामेव स्तोकेनापि मायाशल्येन मालिन्ये सति यथावत् स्वफलजनकत्व नास्तीति प्रतिबोध्यते, इत्येव प्रसगतः प्राप्तस्यैतस्याध्ययनस्य प्रथम सूत्रमाह—

—: अष्टम अध्ययन प्रारभ —

सातवा अध्ययन का भाव सपूर्ण हो गया है-अब मल्ली नामका अष्टम अध्ययन प्रारभ होता है। इसअध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से सबध है कि पूर्व अ-ययनमें जो यह विषय कहा गया है कि जो साधुमहाव्रतो की विराधना करता है वह अनेक अनर्थो का भोक्ता होता है और चतुर्गति ससार मे परिभ्रमण करता है जो इनकी रक्षा करता है-अच्छी तरह से आराधना करता है-वह शिव सुख प्राप्तिरूप परमार्थका भोक्ता होता है।

अब इस अध्ययन में सूत्रकार इसबातको स्पष्ट कहते हैं कि उन महाव्रतों में यादि थोडीसी भी मायाशल्य से मलिनता आजाती है तो वे यथावत् अपने फलके जनक नही होते हैं। इसीसबध से प्राप्त हुए इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है जइण भते इत्यादि

આઠમુ અધ્યયન

સાતમુ અધ્યયન પુરૂ થઈ ગયુ છે હવે મલ્લી નામે આઠમુ અધ્યયન પ્રારભ થાય છે આ અધ્યયનનો પૂર્વ અધ્યયનની સાથે સબધ એવી રીતે છે કે-સાતમા અધ્યયનમા એ પ્રકારે ચર્ચા થઇ કે જે સાધુ મહાવ્રતોની વિરાધના કરે છે તે ઘણા અનર્થોને ભોગવનાર હોય છે, અને તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ સ સારમા પરિભ્રમણ કરે છે જે પચમહાવ્રતોની રક્ષા કરે છે-સારી પેઠે તેમની આરાધના કરે છે તે શિવસુખ પ્રાપ્તિરૂપ પરમાર્થને ભોગવતા હોય છે

હવે આઠમા અધ્યયનમા સૂત્રકાર એ બાબતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરે છે કે મહાવ્રતોમા જો થોડી પણ માયા શલ્યથી મલીનતા આવી જાય તો તેમનુ ફળ સપૂર્ણ પણે મળતુ નથી એજ સબધની ચર્ચા માટેના આઠમા અધ્યયનનુ આ પહેલુ સૂત્ર છે ' जइण भते ' इत्यादि—

मूलम्—जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! के अट्ठे पण्णत्ते ? ।

एवं खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहेवासे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेण सीयोयाए महाणइए दाहिणेण सुहावहस्स वक्खारपव्वतस्स पच्चत्थिमेण पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एत्थणं सलिलावतीनाम विजए पन्नत्ते, तत्थ णं सलिलावती विजए वीयसोगानामं रायहाणी पण्णत्ता, नवजोयणवित्थिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोगभूया, तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए इंदकुभे नामं उज्जाणे, तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले नाम राया तस्स धारणीपामोक्ख देवीसहस्स ओरोहे, होत्था, तएणं सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा जाव महब्बले नाम दारए जाव उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे ॥ सू० १ ॥

टीका—श्री जम्बूस्वामी पृच्छति—' जइणं भते ! ' इत्यादि ' जइ ' यदि ' ण ' खलु ' भते ! ' हे भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण श्रीवर्धमान स्वा

टीकार्थ—(जइणं भते !) श्री जबूस्वामी सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (जइणं भते !) हे भदत ! यदि (समणेण भगवया महाविरेण जाव सपत्तेण सत्तमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स ण भते ! के

ટીકાર્થ—(जइणं भते !) શ્રી જબૂસ્વામી પૂછે છે કે (जइणं भते) હે ભદત ! જો (समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स ण भते !, के अट्ठे पण्णत्ते)

मिना यावत्- सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन सप्तमस्य ज्ञाताध्ययनस्याय मर्थः प्रज्ञप्तः, अष्टमस्य खलु हे भदन्त ! कोऽर्थ प्रज्ञप्तः ?

एव श्रीजम्बू स्वामिना पृष्टः श्री सुधर्मास्वामी त कथयति- ' एव खलु जम्बू इत्यादि । एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् समये- इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे मध्य जम्बू द्वीपे महाविदेहे वर्षे महाविदेहनामके क्षेत्रे मन्दरस्य पर्वतस्य=मेरुगिरेः 'पच्चत्थि मेण ' पश्चिमे पश्चिमाया दिशि ' निसढस्स ' निषधस्य=निषधपर्वतस्य ' वासहरप वयस्स ' वर्षधरपर्वतस्य ' उत्तरेण ' उत्तरस्मिन् उत्तरस्या दिशि ' सीयोयाए महाणइए ' शीतोदाया महानद्या. ' दाहिणे ' दक्षिणे दक्षिणस्या दिशि सुखाव

अट्ठे पण्णत्ते) श्रमण भगवान् महावीरने कि जो मोक्षको प्राप्त हो चुके है सातवें ज्ञाता ध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्ररूपित किया है तो हे भदत ! उन्होंने आठवे ज्ञाताध्ययन का क्या भाव प्रहपित किया है । (एव खलु जबू तेण कालेण तेण समएण इहेवजबू दीवे दीवे महाविदेहे वासे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण निसढस्स वासहर पव्वयस्स उत्तरेण सीयोयाए महाणइए दाहिणेण सुहावहस्स वक्खारव्वयस्स पच्चत्थिमेण पच्चत्थि मलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एत्थण सलिलावइ नाम विजए पन्नत्ते) इस प्रकार जबू स्वामी के द्वारा पूछे गये श्री सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं हे जबू । तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इसप्रकार है उस काल में और उस समय मे इस जबूद्वीप नामके द्वीप में स्थित महाविदेह नामका क्षेत्र में सुमेरूपर्वत की पश्चिमदिशामें, निषधर्वत की उत्तरदिशा मे शीतोदा म

મોક્ષ પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે સાતમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પુર્વોક્ત રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કર્યો છે તો હે ભદ્દત। તેમણે આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે

(एव खलु जबू तेण कालेग तेण समएण इहेव जबू द्वीवे दीवे महाविदेहे वासे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेण सीयो याए महाणइए दाहिणे ण सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेण पच्चत्थिमलव णसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एत्थण सलिलावइ नाम विजए पन्नत्ते)

શ્રી સુધર્મસ્વામી જબૂ સ્વામીને જવાબ આપતા કહે છે કે હે જબૂ! તમારા પ્રશ્નનનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે-તે કાળે અને તે સમયે આ જબૂ દ્વીપ નામે દ્વીપમા સ્થિત મહાવિદેહ નામે ક્ષેત્રમા સુમેરુપર્વતની પશ્ચિમદિશામા નિષિધપર્વતની ઉત્તર દિશામા, મહાનદી શીતોદાની દક્ષિણે, સુખોત્પાદક વક્ષસ્કાર પર્વતની પશ્ચિમે, પશ્ચિમ લવણ સમુદ્રની પૂર્વદિશામા સલિલાવતી નામે વિજય છે પશ્ચિમ સમુદ્રમા મળનારી મહાનદી શીતોદાની દક્ષિણ દિશામા સલિલા

हस्य सुखोत्पादकस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमे पश्चिमायां दिशि पश्चिमलवणसमुद्रस्य 'पुरत्थिमेण' पौरस्त्ये पूर्वे, अत्र अस्मिन् स्थाने खलु सलिलावती नामा विजयः प्रज्ञप्तः- पश्चिम समुद्रगामिन्याः शीतोदामहानद्या दक्षिणत. सलिलावतीनामक चक्रवर्तिना विजेतव्य क्षेत्रखण्डमासीत्, तदेव सलिलावतीविजय इत्युच्यते इत्यर्थः।

तत्र खलु सलिलावतीविजये वीतशोका नाम राजधानी प्रज्ञप्ता कथिता। सा कीदृशी- इत्याह-नवयोजनविस्तीर्णा यावत् द्वादश योजनायामा प्रत्यक्ष देवलोकभूता साक्षात् स्वर्गस्वरूपा। तस्या खलु वीतशोकाया राजधान्या उत्तर पौरस्त्ये=दिग्भागे ईशानकोणे इन्द्रकुम्भ नामोद्यानमासीत्। तत्र खलु वीतशोकाया राजधान्या बलो नाम राजाऽभूत्। तस्य बलस्य राज्ञो धारणी प्रमुख देवीसहस्रम्.

हानदी की दक्षिण दिशामें, सुखोत्पादक वक्षस्कारपर्वत की पश्चिमदिशामें, पश्चिमलवणसमुद्र की पूर्व दिशा में सलिलावती नाम का विजय है।

पश्चिम समुद्र में जानेवाली शीतोदा महानदी की दक्षिणदिशा में जो सलिलावती नामका विजय है-जिसे चक्रवर्ती जीता करते हैं। उसी का नाम सलिलावती विजय है।

(तत्थण सलिलावती विजए वीयसोया नाम रायहाणी पण्णत्ता) उस सलिलावती विजय में वीतशोका नाम की राजधानी है (नव जोयणवित्थिन्ना जाव पच्चक्ख देवलोय भा) इसका नौ योजन का विस्तार है और १२ योजन का आयाम है। यह प्रत्यक्ष में देवलोक -अमरावती-जैसी प्रतीत होती है। (तीसेण वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए इदकुभे नाम उज्जाणे) उस वीतशोका नगरी के ईशान कोण मे एक इन्द्रकुभ नामका उद्यान था। (तत्थण वीयसोगाए

વતી નામે એક ક્ષેત્ર-ખંડ-છે જેને ચક્રવર્તી સામ્રાટો જીતતા આવ્યા છે-તેનુ નામ સલિલાવતી વિજય છે

(तत्थण सलिलावती विजए वीयसोका नाम रायहाणी पण्णत्ता) सलिलावती विजयमा वीतशोका नामे એક રાજધાની છે (नव जोयण वित्थिन्ना जाव पच्चक्ख देवलोय भूया) तेनो विस्तार नव योजन जेटलो तेमज तेनो आयाम १२ (બાર) योजन जेटलो छे ते प्रत्यक्ष देवलोक-अमरपुरी-जेवी शु६२ छे (तीसेण वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरात्थिमें दिसिमाए इद कुभे नामं उज्जाणे) ते वीत शोका नगरीना ईशान કોણમા ઇન્દ્રકુલ નામે એક ઉદ્યાન હતો

(तत्थण वीयसोगाए रायहाणीए बले नाम राया, तस्स [illegible] पामोक्ख

अवरोधे=अन्तः पुरे आसन्. बलनामकस्य तस्य राज्ञो धारणीप्रमुखा एकसहस्र सख्यकाः देव्यआसन्नित्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु सा धारिणी देवी अन्यदा कदाचित्- अन्यस्मिन् कस्मिं श्चित् समये सिंह स्वप्ने स्वप्नावस्थायां दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा=जागरिता, यावद् महा• बलो नाम दारको जातः इह यावच्छब्देन-सा स्वपतृत्त भर्तुरग्रे निवेदयति, ततः स्वप्नपाठकश्रुतात् स्वप्नफलश्रुतिस्ततः सा गर्भवती जाता सपूर्णेषु मासेषु महा बल नामकः पुत्रो जात इत्यर्थो बोद्धव्यः । सा कीदृश इत्याह उन्मुक्त-यावद्

रायहाणीए बले नाम राया,तस्स धारणी पामोक्ख देवी सहस्स ओराहे होत्था) उस वीत शोका नाम की राजधानी में बल नामका राजा रहता था। उसके अन्तः पुर में धारणी प्रमुख १ हजार रानियां थी। (तएण सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ सिंहे सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा जाव महब्बले नाम दारए जाए उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे) एक दिनकी बात है कि जब धारिणी देवी अपनी शय्या में आनन्द के साथ सोयी हुईथी उस समय उसने रात्रिके पश्चिम प्रहरमें स्वप्नमें एक सिंह देखा। स्वप्न देखने के साथ साथ वह जग गई। स्वप्न का वृत्तान्त उसने अपने पतिसे निवेदित किया। उसने स्वप्न पाठकों को बुलाया और उनलोगोने स्वप्न फलका रहस्य उसे सुनाया रानीने भी वह सब सुना। वह गर्भवती हो गई। गर्भ के नो मास रात्रि सग्धे सात औरआनन्द के साथ उसके व्यतीत हुई। बाद मे महाबल नामका पुत्र उससे उत्पन्न हुआ।

देवी सहस्स ओराहे होत्था)

તે વીતશોકા નામની રાજ નીમા બલ નામે રાજા રહેતો હતો
તેના રણવાસમા ધારણી પ્ર એક હજાર રાણીઓ હતી

(तएण सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइ सिंहे सुमिणे पासित्ताण पडिबुद्धा जाव महब्बले नाम दारए जाए उम्मुक्कजाव भोगसमत्थे)

એક વખતની વાત છે કે ધારિણીદેવી પોતાની શય્યા ઉપર સુખેથી સૂતી તે સમયે રાત્રિના છેલ્લા પહોરમા તેણે સ્વપ્નમા એક સિંહ જોયો સ્વપ્ન જોતાની સાથેજ તે જાગી ગઇ, અને સ્વપ્નની વિગત પોતાના પતિને કહી સ ભળાવી સ્વપ્ન પાઠકોને બોલાવ્યા અને તેમણે રાજાને સ્વપ્નના ફળ વિષે બધી વાત કહી રાણીએ પણ સ્વપ્નના રહસ્યને સ્વપ્ન પાઠકોના મુખેથી સ ભળ્યુ તે સગર્ભા થઇ ગર્ભના નવ માસ અને સાઠા સાત દિવસો સુખેથી પસાર થયા ત્યાર બાદ યથા સમયે તેને મહાબલ નામે પુત્રનો જન્મ થયો

भोग समर्थः = उन्मुक्तबालभाव विज्ञातपरिणतमात्रः सर्वकलाकुशलो भोगसमर्थो जात इत्यर्थः ॥ सू० १ ॥

मूलम्–तएण तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरी पामोक्खाणं पचण्ह रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति, पच पासायसया पचसयदाओ जाव विहरइ, थेरागमणं, इदकुभे उज्जाणे समोसढा । परिसा निग्गया, बलो वि निग्गओ धम्म सोच्चा णिसम्म जं नवरं महब्बल कुमारं रज्जे ठावेइ जाव एक्कारसंगवी चद्दूणि वासाणि सामण्णपरियाय पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भत्तेणं सिद्धे ॥सू०२॥

टीका–ततस्तदनन्तर खलु त 'महब्बल' महाबलनामक कुमार मातापितरौ 'सरिसियाण' सदृशीना कुलेन वयसा योग्याना कमलश्रीप्रमुखाणा, पञ्चानां राजवरकन्याशतानां=पञ्चशताना राजवरकन्यानाम् एकदिवसे पाणिं ग्राहयतः, पञ्च

धीरे २ वह महाबल पुत्र बाल्यकाल को पूरा करके यौवन अवस्था को प्राप्त हुआ । अवस्थानुसार वह विकसितज्ञान वाला भी होगया सर्वकलाओं मे कुशलमति बन गया और–पचेन्द्रियों के भोग भोगने लायक भी हो गया । सूत्र " १ "

' तएण त महब्बल ' इत्यादि

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (त महब्बल अम्मापियरो) उस महा बल का माता पिताने (एगदिवसेण) एक ही दिन के भीतर (सरिसियाण कमलसिरी पामोक्खाण पचण्ह रायवरकन्नासयाण) समान कुल, वय वाली कमलश्री आदि पाचसौ श्रेष्ठ राजकन्याओ के साथ (पाणिं

સમય જતા મહાબલ બચપણ વટાવીને જુવાન થયો ઉમરના વધારાથી વધીને તે સવિશેષ વિકાસ યુક્ત જ્ઞાનવાળો ગયો તે બધી કળાઓમા કુશળ બુદ્ધિ વાળો અને પચેન્દ્રિયોના ભોગોને ભોગવવા યોગ્ય થઈ ગયો ॥ સૂત્ર " ૧ "॥

' तएण महाबल ' इत्यादि

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારબાદ (त महब्बलं अम्मापियरो) મહાબલને તેના માતા પિતાએ (एगदिवसेण) ફક્ત એક દિવસમા જ

(सरिसियाण कमलसिरीपामोक्खा ण पचण्ह रायवर कन्नासयाण)

સરખા કુળ અને સરખી આયુષ્યવાળી કમળ શ્રી વગેરે પાચસો ઉત્તમ રાજ કન્યઓની સાથે (पाणिं गेण्हावेंति) પરણાવી દીધો (पच पासाय सया पच सय

प्रासादशतानि पञ्चशतवधूना निवासार्थं पञ्चशतानि प्रसादान् कारयतः। पञ्च शतदाय =पञ्चशतप्रमितो दायः=यौतुक 'दहेज' इति भाषा प्रसिद्धः श्वसुरेण तस्मै महाबलकुमाराय प्रदत्त इत्यर्थ । स महाबलकुमारः यावद्=उपरि प्रासादे मानुष्यकान् कामभोगान् उपभुञ्जानः, विहरति=आस्तेस्म. । अथ–'थेरागमण' स्थविरागमनम्=तत्र वीतशोकाया नगर्यां स्थविराणामागमनमभूदित्यर्थः । ते स्थविराः इन्द्रकुम्भे=इद्रकुम्भनामके 'उज्जाणे' उद्याने 'समोसढा' समवसृताः–अवगृहमवगृह्यावस्थिता । परिषन्निर्गता=वीतशोकानगरी निवासीनो लोकाः स्थविराण वन्दनार्थं बहिर्निःसृता इत्यर्थ । बलोऽपि निर्गतः=बलनामा नृपोऽपि नगर्या निसृत । स्थविराणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य, राजा बलः प्रतिबुद्धः सन्नगादीत्–

गेण्हावेंति) विवाह कर दिया । (पच पासायसया पचसयदाओ) और पाच सौ प्रासाद उन ५०० पाच सौ वधूओ के निवास के लिये बनवादिये । महाबल कुमारके लिये उसके श्वसुर ने ५०० प्रमाण दहेज दिया । अर्थात् दहेज में भी वस्तुए महाबल कुमारको मिली–वे सब ५०० ५०० सौ थी । (जाव विहरइ) इस तरह वह महाबल कुमार यावत् महलो के ऊपर रहता हुआ मनुष्य भव सबधी काम भोगों को भोगने लगा (थेरागमण इदकुभे उज्जाणे समोसढा परिसा निग्गया बलो वि निग्गओ) वीतशोका नामकी उसनगरी में एक समय स्थविरो का आगमन हुआ वे सब वहा के इन्द्रकुभ नाम के उद्यान में मुनिपरपरा के अनुसार अवग्रह प्राप्तकर विराजमान हुए । नगरी के परिषद मुनि वदना के लिये अपने अपने घर से निकल कर उस उद्यान में आई । बल राजा भी आया । (धम्म सोच्चा निसम्म

दाओ) અને પાચસો મહેલ તે પાચસો નવવધૂઓ ને રહેવા માટેબનાવી દીધા મહાબલ કુમારના સસરાએ પાચસો પ્રમાણ દેજ આપ્યુ એટલે કે મહાબલકુમારને દેજમા જેટલી વસ્તુઓ મળી તે તમામ પાચસોની સખ્યાવાળી હતી (જાવ વિહરઇ) આ પ્રમાણે મહાબલ કુમાર 'યાવત' બધા મહેલોમા રહીને મનુષ્ય ભવના બધા ભોગોભોગવવા લાગ્યો

(थेरागमण इदकुभे उज्जाणे समोसढा परिसा निग्गया बलो वि निग्गओ)

એક વખતે વીતશોક નામની તે નગરીમા સ્થવિરોનુ આગમન થયુ તેઓ બધા ત્યાના ઇન્દ્રકુભના ઉદ્યાનમા મુનિપરપરાને અનુસરતા અવગ્રહ મેળવીને વિરાજમાન થયા નાગરિકોની પરિષદ પોત પોતાના ઘેરથી નીકળીને મુનિજનોની વદના માટે ઉદ્યાનમા આવી બલરાજા પણ ત્યા આવ્યા,

भोग समर्थः = उन्मुक्तबालभाव विज्ञातपरिणतमात्रः सर्वकलाकुशलो भोगसमर्थो जात इत्यर्थः ॥ सू० १ ॥

मूलम्–तएण त महब्बल अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरी पामोक्खाणं पंचण्ह रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति, पंच पासायसया पंचसयदाओ जाव विहरइ, थेरागमणं, इदकुंभे उज्जाणे समोसढा । परिसा निग्गया, बलो वि निग्गओ धम्मं सोच्चा णिसम्म जं नवरं महब्बल कुमारं रज्जे ठावेइ जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियायं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भत्तेणं सिद्धे ॥सू० २॥

टीका–ततस्तदनन्तर खलु त 'महब्बल' महाबलनामक कुमार मातापितरौ 'सरिसियाण' सदृशीना कुलेन वयसा योग्याना कमलश्रीप्रमुखाणा, पञ्चाना राजवरकन्याशतानाम्=पञ्चशतानाम् राजवरकन्यानाम् एकदिवसे पाणि ग्राहयतः, पञ्च

धीरे २ वह महाबल पुत्र बाल्यकाल को पूरा करके यौवन अवस्था को प्राप्त हुआ । अवस्थानुसार वह विकसितज्ञान वाला भी होगया सर्वकलाओं में कुशलमति बन गया और–पञ्चेन्द्रियों के भोग भोगने लायक भी हो गया । सूत्र " १ "

' तएण त महब्बल ' इत्यादि

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (त महब्बल अम्मापियरो) उस महा बल का माता पिताने (एगदिवसेण) एक ही दिन के भीतर (सरिसियाण कमलसिरी पामोक्खाण पचण्ह रायवरकन्नासयाण) समान कुल, वय वाली कमलश्री आदि पाचसौ श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ (पाणिं

સમય જતા મહાબલ બચપણ વટાવીને જુવાન થયો ઉંમરના વધારાથી વધીને તે સવિશેષ વિકાસ યુક્ત જ્ઞાનવાળો ગયો તે બધી કળાઓમા કુશળ બુદ્ધિ વાળો અને પચેન્દ્રિયોના ભોગોને ભોગવવા યોગ્ય થઈ ગયો ॥ સૂત્ર " ૧ " ॥

' तएण महाब्बल ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારબાદ (त महब्बल अम्मापियरो) મહાબલને તેના માતા પિતાએ (एगदिवसेण) ફક્ત એક દિવસમા જ

(सरिसियाण कमलसिरीपामोक्खा ण पचण्ह रायवर कन्नासयाण)

સરખા કુળ અને સરખી આયુષ્યવાળી કમળ શ્રી વગેરે પાચસો ઉત્તમ રાજ કન્યઓની સાથે (पाणिं गेण्हावेंति) પરણાવી દીધો (पच पासाय सया पच सय

मूलम्—तएणं सा कमलसिरी अन्नया सीहं सुमिणे जाव बलभद्दो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स ण महाबलस्स रन्नो इमे छप्पियबालवयसगा रायाणो होत्था, त जहा अयले धरणे पूरणे वसु वेसमाणे अभिचदे सहजायया सहवड्ढिया जाव अम्हेहि एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्तिकट्टु अन्नमन्नस्सेयमट्ठ पडिसुणेंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं इदकुभे उज्जाणे थेरा समोसढा। परिसा निग्गया, महब्बले णं धम्म सोच्चा ज नवर छप्पियबालवयंसए आपुच्छामि बलभद्द च कुमार रज्जे ठावेमि, जाव छप्पिय बालवयसए आपुच्छइ। तएणं ते छप्पियबालवयसगा महब्बल राय एवं वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया! तुब्भे पव्वयह अम्ह के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामो। तएणं से महब्बले राया ते छप्पिय बालवयसए एव वयासी—जइण तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह तो ण गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जेहि ठावेह—पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवति, तए णं से महब्बले राया छप्पियबालवयसए पाउब्भूते पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठे कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता बलभद्दस्स अभिसेओ आपुच्छइ, तएण से महब्बले जाव महिड्ढीए जाव पव्वइए एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरइ ॥ सू० ३ ॥

अत्र पूर्ववद् वर्णन बोध्यम् यथा हे देवानुप्रियाः महाबलकुमार राज्ये स्थापयित्वा युष्माकमन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामि. तत स्थविरैः-' विलम्ब माकुरु ' इत्युक्तो ऽसौ बल यन्नवर=विशेषवृत्तमाह-महाबल महाबलनामक स्वपुत्र राज्ये स्थापयति स्थापयित्वा स्थविराणा समीपे प्रव्रजितः ।

यावद् एकादशाङ्गविद् एकादशाङ्गान्यधीते स्म । बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा यत्रैव चारुपर्वतस्तत्रोपागत्य मासिकेन भक्तेन=मासिकभक्तपत्याख्याने न मासिकमनशन कृत्वेत्यर्थ , सिद्ध =मुक्ति प्राप्तः ॥ सू०२ ॥

ज नवर महब्बल कुमार रज्जे ठावेइ, जाव एक्कारसगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाय पाउणित्ता जेणेव चारूपव्वए, मासिएण भत्तेणं सिद्धे) स्थविरों से श्रुतचारित्र रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर, उसे हृदय में धारण कर राजा बल प्रतिबुद्ध हो गया । और कहने लगा-हे देवानुप्रियो ! मैं महाबल कुमार को राज्य में स्थापित कर आपके पास दीक्षा लेना चाहता हूँ । इस तरह जब राजा ने कहा-तो उन स्थविरों ने " विलम्ब मत करो " ऐसा उससे कहा-इस प्रकार उन से आज्ञापित होता हुआ वह महाबल राजा वापिस नगर में आया वहा आकर उसने महाबल कुमार को राज्य में स्थापित किया ।

बाद में स्थविरों के पास जाकर दीक्षित हो गया । धीरे २ उसने ११ अगों का अध्ययन कर लिया । इस तरह उसने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया । पालन करके फिर वह जहा बल चारु पर्वत था वहा आया । वहा आकर उसने १ मास का भक्त प्रत्याख्यान किया । और अन्त में मुक्ति को प्राप्त कि । सूत्र " २ "

(धम्म सोच्चा निसम्म ज नवर महब्बल कुमार रज्जे ठावेइ, जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाय पाउणित्ता जेणेव चारूपव्वए मासिएणभत्तेण सिद्धे)

સ્થવિરો પાસે શ્રી શ્રુતચરિત્ર રૂપ ધર્મનુ વ્યાખ્યાન સાભળીને તેને સારી પેઠે હૃદયમા ધારણ કરીને રાજા બલ પ્રતિબુદ્ધ થઈ ગયો, અને તે કહેવા લાગ્યો-' હે દેવાનુપ્રિયો ! હુ મહાબલ કુમારને રાજ્યાસને સ્થાપિત કરીને તમારી પાસેથી દીક્ષિત થવા ચાહુ છુ રાજાની આ વાત સાભળીને સ્થવિરો એ તેને કહ્યુ 'વિલમ્બ કરો નહિ' આ રીતે તેમની આજ્ઞા મેળવીને રાજા નગરમા આવ્યા ત્યા આવીને તેણે મહાબલ કુમારને રાજ્યસિહાસન ઉપર બેસાડયો ત્યારબાદ રાજા સ્થવિરોની પાસે આવીને દીક્ષિત થઇ ગયો ધીમે ધીમે તેણે અગિયાર (૧૧) અ ગોનુ અધ્યયન કર્યુ આરીતે તેણે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યુ પાલન કરીને તે જ્યા ચારુપર્વત હતો ત્યા આવીને તેણે એક માસનુ ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કર્યુ અને અન્તે મુક્તિ

मूलम्–तएणं सा कमलसिरी अन्नया सीहं सुमिणे जाव बलभद्दो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स णं महाबलस्स रन्नो इमे छप्पियबालवयंसगा रायाणो होत्था, तं जहा अयले धरणे पूरणे वसु वेसमाणे अभिचंदे सहजायया सहवड्ढिया जाव अम्हेहि एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्तिकट्टु अन्नमन्नस्सेयमट्ठं पडिसुणेंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं इदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा। परिसा निग्गया, महब्बले णं धम्मं सोच्चा ज नवर छप्पियबालवयसए आपुच्छामि बलभद्द च कुमार रज्जे ठावेमि, जाव छप्पिय बालवयसए आपुच्छइ। तएणं ते छप्पियबालवयसगा महब्बल रायं एवं वयासी–जइ णं देवाणुप्पिया! तुब्भे पव्वयह अम्ह के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामो। तएणं से महब्बले राया ते छप्पिय बालवयसए एव वयासी–जइणं तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह तो णं गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहि २ रज्जेहि ठावेह–पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवंति, तएणं से महब्बले राया छप्पियबालवयसए पाउब्भूते पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठे कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता बलभद्दस्स अभिसेओ आपुच्छइ, तएण से महब्बले जाव महिड्ढीए जाव पव्वइए एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, बहूहि चउत्थ जाव भावेमाणे विहरइ ॥ सू० ३ ॥

टीका-'तएण सा' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं सा कमलश्री राज्ञी महाबलस्य भार्या, अन्यदा अन्यस्मिन् काले सिंहं स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा। यावत् बलभद्रः कुमारो जात अत्र यावत्करणेनायमर्थोऽवगन्तव्य -सा स्वप्नदृत्त भर्तुरग्रे निवेदयति ततः स्वप्नपाठकमुखात् स्वप्नफलश्रवण यावत्-तदनन्तर सा गर्भवती जाता. सपूर्णेषु मासेषु बलभद्रनामकः कुमारः उत्पन्न इति। स युवराजश्चाप्यभवत्। तस्य खलु महाबलस्य राज्ञ इमे=वक्ष्यमाणा षडपि च बालवयस्यका बालमित्राणि

'तएण सा कमलसिरी' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा कमलसिरी) महाबल राजा की रानी कमल श्री ने (अन्नया) किसी एक समय (सीह) सिंह को (सुमिणे) स्वप्न में (जाव बलभद्दो कुमारो जाओ) देखा और देख कर वह प्रतिबुद्ध हो गई-जग गई-। यावत् उस के बलभद्र कुमार उत्पन्न हुआ यहा यावत् शब्द से इस पाठ का सग्रह हुआ है-कमल श्री ने स्वप्न में जो सिंह देखा था उस स्वप्न को उस ने अपने पति महाबल से कहा-महाबल ने स्वप्नपाठकों को बुलाया उन्हो ने इस दृष्ट स्वप्न का क्या फल है यह बात उसे सुनाई। सुनकर सब को बडा आनन्द हुआ। कमल श्री गर्भवती हुई। नौ मास साढे सात दिन जब गर्भ को पूर्ण हो गया-तब कमल श्री के बलभद्र नाम का कुमार उत्पन्न हुआ।

(जुवराया यावि होत्था) धीरे २ वह कुमार युवराज भी बन गया।

(तस्स ण महाबलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयसगा रायाणो होत्था)

'तएण सा कमलसिरी' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (सा कमलसिरी) મહાબલ રાજાની રાણી કમલા શ્રીએ (अन्नया) કોઇ એક વખતે (सीह) સિંહને (सुमिणे) સ્વપ્નમા (जाव बलभद्दो कुमारो जाओ) જોયો અને જોઈને તે જાગી ગઇ 'यावत्' સમય જતા તેને બલભદ્ર નામે કુમાર જન્મ્યો અહીં 'यावत्' શબ્દથી આ પાઠોનો સગ્રહ થયો છે કે-કમલશ્રીએ જે સ્વપ્નમા સિંહ જોયો હતો તે સ્વપ્ન વિષેની ચર્ચા તેણે પોતાના પતિ મહાબલને કરી મહાબલે સ્વપ્નપાઠકોને બોલાવ્યા સ્વપ્નપાઠકોએ તેને સ્વપ્નનુ ફળ બતાવ્યુ સ્વપ્નફળને જાણીને બધાને ખૂબજ આનદ થયો કમળશ્રી સગર્ભા થઇ ગર્ભને જ્યારે નવમાસ અને સાડા સાત દિવસ પૂરા થયા ત્યારે કમળશ્રીના ઉદરથી બલભદ્રનામે કુમારનો જન્મ થયો

(जुवराया यवि होत्था) સમય પસાર થતા કુમાર બલભદ્ર યુવરાજ પણ થઇ ગયા (तस्सण महाबलस्स रन्नो इमे छप्पियबालवयसगा रायाणो होत्था) મહાબલ રાજાને ૬ બાલમિત્ર રાજાઓ પણ હતા

राजान आसन्,तद् यथा-(१) अचल , (२) धरण , (३) पूरणः, (४) वसुः (५) वैश्रमण , (६) अभिचद्रः, ते कीदृशा इत्याह-' सहजायया ' सहजातकाः सह समानकाले समुत्पन्नाः, सहवर्धिताः, समानकाले वर्धिता', यावत्-' तेसिं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण सन्निसन्नाण सन्निविट्ठाण इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-जन्न देवाणुप्पिया ! अम्ह सुह वा दुक्ख वा पव्वज्जा वा विदेसगमण वा समुपज्जइ, तन्न, ' इत्यन्तस्य पाठस्य सग्रह. । तेषाम् अन्यदा कदाचित् एकतः सहितानां समुपागतानां सनिषण्णाना सनिविष्टानाम् अयमेत द्रूपः मिथः कथासमुल्लापः समुदपद्यत इतिछाया । एकतः=एकत्र-एकस्मिन् स्थाने सहिताना=मिलिताना, समुपागताना सप्राना मध्ये एकस्य कस्यचिद् भवने कार्यवशात् सप्राप्ताना, सनिषण्णानाम्=उपविष्टाना, सनिविष्टाना=स्थिरसुखा-सनस्थितानाम्-अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूप मिथः कथासमुल्लाप.=परस्परवार्ता लापः समुदपद्यत=अभवत्, इत्यर्थः । यत् खलु देवानुप्रिया ! अस्माक सुख वा दुःख वा प्रव्रज्या वा विदेशगमन वा समुत्पद्यते, तत् खलु अस्माभि. ' एगयओ

उस महाबल राजा के ये छह बाल मित्र राजा थे । (तंजहा अयले, धरणे, पूरणे, वसु, वेसमणे अभिचदे सहजायया, सहवड्ढिया जाव कम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्ति कट्टु अन्न मन्न स्सेयमट्ठ पडिसुणेति) उनके नाम ये हैं- (१) अचल, (२) धरण (३) पूरण (४) वसु (५) वैश्रमण (६) ये अभिचद्र । सब महाबल राजा के साथ२ उत्पन्न हुए थे,और उन्ही के साथ २ बढे हुए थे। एक समय सब ये सबके सब किसी कार्यवश एक स्थान पर एकत्रित हुए तो परस्पर में इन सब ने ऐसा विचार किया-कि चाहे सुख कारक कार्य हो या दु.ख कारक कार्य हो, प्रव्रज्या लेना हो या परदेश जाना हो चाहे इनमें से कोई भी

(तजहा अयले, धरणे, पूरणे, वसु, वेसमणे, अभिचदे सहजायया सह वड्ढिया जाव अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्ति कट्टु अन्न मन्न स्सेयमट्ठ पडिसुणेत्ति

તેમના નામો આ પ્રમાણે છે-(૧) અચલ, (૨) ધરણ, (૩) પૂરણ, (૪) વસુ, (૫) વૈશ્રમણ, (૬) અભિચદ્ર આ બધા મહાબલ રાજાની સાથે જ જન્મ્યા હતા, અને તેમની સાથે જ મોટા થયા હતા, એક વખતે જ્યારે બધા કોઇ કાર્યવશ એક સ્થાને એકઠા થયા ત્યારે તેઓએ વિચાર કર્યો કે દુ ખ કારક કે સુખ કારક ગમે તેવુ કામ હોય પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવી હોય કે પરદેશ જેડવુ હોય, તો આપણે બધાએ સ પીને જ તે કામ સાથે રહીને કરવુ

समेच्चा ' एकतः समेत्य ' णित्थरियव्व ' निस्तरितव्यम् इतिकृत्वाऽन्योन्यस्यैतम र्थं प्रतिशृण्वन्ति, अस्माभिः सर्वमित्रैर्मिलित्वा सर्वं कार्यं सपादनीयमिति निश्चित्य परस्परमेतमर्थं प्रतिज्ञातवन्त इत्यर्थः।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये इन्द्रकुम्भे उद्याने स्थविराः समवसृताः समाग तवन्तः। परिषन्निर्गता=स्थविरान् वदितु वीतशोका नगरी निवासिनो लोका बहिर्निं सृताः, महाबलो राजाऽपि वन्दनार्थं निर्गत । महाबलः खलु धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धः सन् स्थविरानेवमवादीद् युष्माकमन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामि यन्नवर मडपि च बालवयस्यकान् आपृच्छामि बलभद्र च कुमार राज्ये स्थापयामि, ततः

कार्य करना हो तो हम सब लोग मिलकर ही वह कार्य करेंगे इस प्रकार से 'आपस मे वे सब वचन बद्ध हो गये। (तेण कालेण तेण समएणं) इतने मे उस काल और उस समय में (इदकुभउज्जाणे थेरा समोसढा) उस इदकुभ उद्यान में स्थविरों का आगमन हुआ- (परिसा निग्गया महब्बलेण धम्म सोच्चा ज नवर छप्पियबालवयसए आपु च्छामि बलभद्द च कुमार रज्जे ठावेमि) स्थविरों का आगमन सुनकर वीतशोका नगरी की परिषद् मुनियों को वदना करने के लिये अपने २ घर से निकल कर उद्यान मे आई, महाबल राजा भी गये। धर्म का उपदेश हुआ महाबल राजा धर्म का उपदेश सुन कर प्रतिबोध को प्राप्त हो गया।

उसने उसी समय स्थविरों से कहा-भदत ! मैं आप लोगों के पास दीक्षा धारण करना चाहता हूँ-परन्तु मेरे जो बालसखा है मैं उन से

આ પ્રમાણે તેઓ પ્રતિજ્ઞા (વચન) બદ્ધ થયા (इण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે इदकुभे उज्जाणे थेरा समोसढा) ઇન્દ્રકુભ ઉદ્યાનમ ! સ્થવિરો પધાર્યા

(परिसा निग्गया महब्बले ण धम्मं सोच्चा जन वर छप्पिय बालवयसए आपूच्छामि बलभद्दच कुमार रज्जे ठावेमि)

સ્થવિરોનુ, આગમન સાભળીને પોત પોતાના સ્થાનેથી નીકળીને વીત શોકા નગરીના નાગરિકોની પરિષદ મુનિયોની વદન માટે ઉદ્યાનમા આવી મહાબલ રાજા પણ ત્યા ગયા મુનિઓએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ધર્મોપદેશ શ્રવણ કરીને રાજા મહાબલને પ્રતિબોધ થયો એટલે કે વૈરાગ્ય થયો

મહાબલે તે સમયે જ સ્થવિરોને વિનતિ કરી " હે ભદત ! હુ તમારી પાસેથી દીક્ષિત થવા ચાહુ છુ પણ તે પહેલા આ વિષે મારા બાલસાખાઓને

स्थविरै-'मा विलम्ब कुरु' इत्येवमुक्त सन् स्वभवने समागत्य यावत् तान् षडपि बालवयस्यकान् अपृच्छति। तत खलु ते षडपि च बालवयस्यका महाबल राजानमेवमवादीत्-यदि खलु देवानुप्रियाः! यूय प्रव्रजिष्यथ, अस्माक कोऽन्य आधारो वा आलम्बो वा भविष्यति यावत्-तस्माद् युष्माभि सहैव वय प्रव्रजामः। तत खलु स महाबलो राजा तान् षडपि च बालवयस्यकान् एवमवादीत् यदि खलु यूय मया सार्धं यावत् प्रव्रजिष्यथ, तर्हि खलु स्व स्वभवन गच्छत ज्ये-

इस विषय में पूछ लूँ और बलभद्र कुमारको राज्य में स्थापित कर दूँ पीछे आपके पास सयम लूगा। इस प्रकर राजा का कथन सुनकर स्थविरों ने उससे "मा विलम्ब कुरू" विलम्ब मत करो ऐसा कहा- स्थविरों द्वारा अनुमत हो कर राजा अपने घर पर वहां से वापिस आया और आते ही उस ने (जाव छप्पिय बालवयसए आपुच्छइ) अपने बाल काल्य के उन छह मित्रो से पूछा।

(तएण ते छप्पिय बालवयसगा महब्बल राय एव वयासी) अपने मित्र महाबल की बात सुनकर उन मित्रों ने उससे ऐसा कहा- (जइण देवा० जाव पव्वयामो) मित्र! यदि आप दीक्षा लेना चाहते हैं तो फिर हमारा आपके बाद और कौन दूसरा आलबन तथा आधार होगा-इसलिये हम भी आप ही के साथ दीक्षा सयम धारण करेगे। (तएण एव वयासी) इस प्रकार अपने बाल कल्य के मित्रों की बात सुनकर राजा महाबल ने उन से कहा (जइण तुब्भे मए सद्धिं जाव

હુ પૂછી લઉ અને બલભદ્ર કુમારને રાજ્યાસને બેસાડી દઉ ત્યાર બાદ તમારી પાસેથી સયમ ગ્રહણ કરીશ "આ રીતે રાજાની વિનતી સાભળીને સ્થવિરોએ તેને કહ્યુ-"मा विलम्ब कुरु, મોડુ કરો નહિ" આમ સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને તે રાજા પોતાને ઘેર પાછો વળ્યો ઘેર આવીને તેણે (जाव छप्पियबालवयसए आपुच्छइ પોતાના છએ બાલસખાઓને પૂછયુ

(तएण ते छप्पियबालवयसगा महब्बल राय एव वयासी) પોતાના મિત્ર મહાબલની વાત સાભળીને તે મિત્રોએ તેને કહ્યુ-"जइण देवा जाव पव्वयामो) હે મિત્રવર! તમે જો દીક્ષિત થવા ચાહો છો તો અમારો કોણ આલબન અને આધાર થશે? એથી અમે પણ તમારી સાથે જ દીક્ષા સયમ ધારણ કરીશુ (तएण एव वयासी) આ રીતે પોતાના બાલ સખાઓની વાત સાભળીને મહાબલે તેમને કહ્યુ-

(जइण तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह तोण गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जे

ष्ठान् पुत्रान् स्वकेषु स्वकेषु राज्येषु स्थापयत, स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविका दूरूढाः समारूढाः सन्तो यावत्=ममान्तिके प्रादुर्भवत, ततस्ते षडपि बालवयस्यकाः स्व स्व गृहे गत्वा स्व स्व ज्येष्ठपुत्र राज्ये स्थापयित्वा पुरुषसह स्रवाहिनीः शिविकाः समारूढाः सन्त महाबलस्य राज्ञोऽन्तिके प्रादुर्भवन्ति। ततः खलु स महाबलो राजा षडपि च बालवयस्यकान प्रादुर्भूतान् पश्यति। दृष्ट्वा हृष्टतुष्टो=ऽतिशयेन तुष्टः सन् कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति। शब्दयित्वा =आहूय बलभद्रस्य बलभद्रकुमारस्य अभिषेकः कारितः। ततो महाबलो बलभद्र

पव्वयह तो ण गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जेहिं ठावेह) यदि आप लोग मेरे साथ प्रव्रजित होना चाहते हैं तो अपने २ घर पर जाओ-और जाकर ज्येष्ठ पुत्रों को अपने २ राज्यपद पर स्थापित करो-बाद में पुरुष सहस्र वाहिनी शिविकाओ पर आरूढ होकर मेरे पास यहा आओ (पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवति) इस प्रकार महाबल राजा की बात सुनकर वे छहों मित्र वहा से अपने २ घर पर आये-और अपने २ ज्येष्ठ पुत्रों को अपने २ पद पर स्थापित कर पुरुष सहस्र वाहिनी शिविका पर आरूढ हो महाबल राजा के पास आये। (तएण से महब्बले राया छप्पिय बाल वयसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता हट्ठ तुट्ठे कोडुबिय पुरिस सद्दावेइ, सद्दावित्ता बलभद्दस्स अभिसेओ, आपुच्छइ) महाबल राजा ने जब अपने इन छहों बाल सखाओं को अपने पास आया हुआ देखा-तो देखकर वे बहुत अधिक

જો તમે બધા ખુશીથી મારી સાથે દીક્ષિત થવા ચાહતાહો છો તો સત્વરે પોત પોતાની રાજધાનીઓ જઈને પોત પોતાના મોટા પુત્રો ને રાજગાદીઓ બેસાડીને હજાર પુરુષો વહન કરે એવી ' પુરુષ સહસ્રવાહિની ' પાલખીઓ ઉપર બેસીને અહીં આવો (पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवति) આ રીતે મહાબલ રાજાની વાત સાભળીને છએ મિત્રો ત્યાથી પોતપોતાને ઘેર આવ્યા અને પોતાના સ્થાને મોટા પુત્રોને રાજ ગાદીએ બેસાડીને પુરુષ સહસ્ર વાહિની પાલખીઓ ઉપર બેસીને થઈને મહાબલ રાજાની પાસે આવ્યા

(तएण से महब्बले राया छप्पिय बालवयसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता हट्ठ तुट्ठे कोडुबियपुरिस सद्दावेइ सद्दावित्ता बलभद्दस्स अभिसेओ, आपुच्छइ)

પોતાના છએ બાલમિત્રોને પોતાની પાસે આવી ગયેલા જોઈને રાજા મહાબલ અત્યત હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થયો રાજાએ સત્વરે તે સમયે જ કૌટુબિક પુરુ

राजानम् आपृच्छतिस्म। आपृच्छय स महाबलो यावत् महद्धर्या महाद्युत्या पुरुष सहस्रवाहिनीं शिविकामारुह्य यावत् स्थविराणामन्तिके मव्रजितः दीक्षा गृहीतवान्। एकादशाङ्गानि-आचाराङ्गादीनि अधीतेस्म। बहुभिश्चतुर्थादि भक्तैः यावत् आत्मानं भावयन् विहरति आस्ते स्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्-तएणं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-जण्णं अम्हं देवाणुप्पिया ! एगे तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उपसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरंति, तएणं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिणामगोयं कम्मं निव्वत्तिसु ॥ सू० ४ ॥

हर्षित एव सतुष्ट हुए। उसी समय उन ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर बलभद्र कुमार का अभिषेक करवाया।

इस तरह बलभद्र कुमार अब राज्य पद आसीन हो गया। महाबल राजा ने बलभद्र से पूछा-पूछकर फिर वे पुरुष सहस्र वाहिनी शिविका पर आरूढ हो गये-और महाऋद्धि एव महाद्युति के साथ २ चलते हुए वे स्थविरों के पास उद्यान में आये। उन्हों ने सयम ले लिया। आचारांग आदि ११ अगों का अध्ययन किया और चतुर्थभक्त आदि विविध प्रकार की तपस्याओ से अपने आत्मा को भावित किया ॥सू० ३॥

પોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને બલભદ્ર કુમારનો રાજ્યાભિષેક કરાવડાવ્યો

આ રીતે બલભદ્ર કુમાર રાજ્યાસને બિરાજીત થઈ ગયા રાજા મહાબલે પ્રજાજ્યા વિષે બલભદ્રને પૂછયુ અને પૂછીને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી ઉપર બેસીને મહાઋદ્ધિ અને મહાદ્યુતિની સાથે શોભતા તેઓ ઉદ્યાનમા સ્થંવિરોની પાસે આવ્યા અને તેઓએ સયમ સ્વીકાર્યો તેમણે આચારાગ વગેરે અગિયાર અગોનુ અધ્યયન કર્યુ અને ચતુર્થભક્ત વગેરે અનેક પ્રકારની તપસ્યા બોવા પોતાના આત્માને ભાવિત કર્યો ॥ સૂત્ર " ૩ " ॥

टीका—तेसिं ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर तेषां महाबलप्रमुखाणां सप्ताना मनगाराणाम् अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले एकतः सहितानाम् एकत्रोपविष्टानाम् अयमेतद्रूप =वक्ष्यमाणस्वरूपः ' मिहो ' मिथः=परस्पर ' कथा समुल्लावे ' कथासमुल्लापे- वार्तालापः ' समुप्पज्जित्था ' समुदपद्यत- अभवत् हे देवानुप्रियाः ! अस्माक मध्ये ' एगे ' एकः=कोऽप्येकः यत् खलु तपः कर्म ' उवसपज्जित्ता ' उपसंपद्य अङ्गीकृत्य खलु विहरति=विहरिष्यति, अस्माभिः सर्वैः तत् खलु तपः कर्म उपसपद्य खलु विहर्तुं=विहर्तव्यम्, इति कृत्वा ' अन्नमन्नस्स ' अन्योन्यस्य परस्परस्य एतमर्थं ' पडिसुणेंति ' प्रतिशृण्वन्ति=प्रतिजानन्ति प्रतिज्ञां

' तएण तेसिं महब्बलपामोक्खाणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इस के बाद (तेसिं महब्बलपामोक्खाण सत्तण्ह अणगाराण अन्नया कयाइ) उन महाबल प्रमुख सात अनगारोंको किसी एक समय (एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहो कहा समुल्लावे समुप्प जित्था) जब कि ये एक जगह बैठे हुए थे इस प्रकार का यह विचार उत्पन्न हुआ-परस्पर में उनकी ऐसी बात चीत चली-(जण्ह अम्ह देवाणुप्पिया ! एगे तवोकम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ) हे देवानुप्रियों ! हम लोगों में से जो भी कोई तप कर्म को अगीकार कर अपने आप को भावित करेगा-हम सब भी वही तप कर्म आचरित करेंगे । (तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तएत्ति कट्टु अण्ण-

---

' तएण तेसिं महब्बलपामोक्खाण ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (तेसिं महाब्बलपामोक्खाण सत्तण्ह अणगाराण -अन्नया कयाइ) કોઈ વખતે મહાબલ પ્રમુખ તે સાતે અનગારોને (एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था)-જ્યારે તેઓ એક સ્થાને એકઠા થઇને બેઠા હતા ત્યારે આ પ્રમાણે વિચાર સ્ફુર્યો-એટલે કે તેઓ આ રીતે અરસ પરસ વાતચીત કરવા લાગ્યા-(जाण्ह अम्ह देवाणुप्पिया ! एगे तवो कम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ) હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણામાથી ગમેતે વ્યક્તિ જે જાતનુ તપ કર્મ સ્વીકારીને પોતાના આત્માને ભાવિત કરશે આપણે બધા પણ તેજ તપ આચરીશું

(तण्ण अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तएत्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति)

कुर्वन्ति । प्रतिश्रुत्य बहुभिश्चतुर्थ- यावद् चतुर्थभक्तादिभिरात्मान भावयन्तो विहरन्ति ।ततस्तदनन्तर स महाबलोऽनगारो ' इमेण ' अनेन वक्ष्यमाणेन 'कारणेण' कारणेन प्रतिज्ञा कृत्वा तदन्यथा करणरूपेण भापित्वातदन्यथा करण हि माया साच स्त्रीत्वस्य कारणम्, इय मायाऽभिमानात् मादुर्भवति, अभिमान चात्र-' अह मेतेषां नायकोऽस्मि, एते मदधीना अनुनायकाः सन्तीति. यदि ममोत्कृष्टता न स्यात्तर्हि नायकानुनायकाना को विशेप स्यादित्येव भावनया अभिमानो माया

मण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति) इस प्रकार विचार कर उन्हों ने परस्पर में इस विचार को स्वीकार कर लिया।

(पडिसुणित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरति) स्वीकार कर फिर उन सबने साथ ही साथ चतुर्थ भक्त आदि की तपश्चर्या करना प्रारभ कर दी- (तएण से महब्बले अणगारे इमेण कारणेणं इत्थिणामगोय कम्म निव्वत्तिसु) महाबल अनगार ने इस वक्ष्यमाण कारण से स्त्री नाम गोत्र कर्म का उपार्जन किया अर्थात् महाबल ने प्रतिज्ञा करके भी प्रतिज्ञानुसार तपश्चरण नही किया किन्तु-कुटिलभाव रखकर अन्यथारूप से तपश्चरण किया-कहा कुछ और किया कुछ-इसी का नाम माया है। यह माया स्त्रीत्व प्राप्ति का कारण होती है। माया अभिमान से उद्भूत होती है-महाबल के हृदय मे अभिमान इस कारण से आया था- कि मैं इन सब का नायक हूँ-ये मेरे आधीन हैं-अनुनायक हैं-यदि मेरे में इनकी अपेक्षा उत्कृष्टता नही हो तो फिर नायक और अनुनायकों मे

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને બધાએ મળીને એ વાતને સ્વીકારી લીધી

(पडिसुणित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरति) સ્વીકાર કરીને તેઓએ એકી સાથે ચતુર્થભક્ત વગેરે તપશ્ચર્યા શરુ કરી

(तएण से महब्बले अणगारे इमेण कारणेण इत्थिनामगोय कम्म निव्वत्तिसु)

મહાબલ અનગારે જેના કારણ વિષેની ચર્ચા આગળ થશે-તેવા " સ્ત્રી નામ ગોત્ર કર્મનુ " ઉપાર્જન કર્યું એટલે કે મહાબલે પ્રતિજ્ઞા કરીને પણ તે મુજબ તપનુ આચરણ કર્યું નહિ કુટિલભાવથી તેઓએ બીજી રીતે તપનુ આચરણ કર્યું " કહેવુ કઇ અને કરવુ કઇ " તેનુ નામ માયા છે એ માયા જ સ્ત્રીત્વ પ્રાપ્તિ ! કારણ બને છે અભિમાનથી માયા ઉત્પન્ન થાય છે મહાબલ ના મનમા આરીતે અભિમાન ઉત્પન્ન થયુ કે હુ બધાનો નાયક છુ આ બધા મારે આધીન છે-અનુનાયક છે ને મારામા તેઓની અપેક્ષા ઉત્કૃષ્ટતા નહિ હોય તો નાયક અને અનુનાયકોમા તફાવત શો ગ્યો ? આ જાતની ભાવના

मुत्पादयति । ' इत्थिणामगोय ' स्त्रीनामगोत्र यस्य कर्मण उदयात् स्त्रीभावः स्त्रीत्व माप्यते तत् स्त्रीनाम कर्म तथा-गोत्रं जाति कुल निर्वर्तक कर्म अनयो समा हारः स्त्रीनामगोत्र कर्म ' निव्वत्तिसु ' निर्वर्तितवान् उपार्जितवान् ॥ सू०४ ॥

मूलम्-जइणं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तओ से महब्बले अणगारे छट्ठ उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । जइणं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तओ से महब्बलअणगारे अट्ठम उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । एव अट्ठमं तो दसम, अह दसम तो दुवालसं इमेहि य णं वीसाएहि य कारणेहि आसेविय बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु, त जहा —

(१) अरहत (२) सिद्ध (३) पवयण (४) गुरु (५) थेर (६) बहुस्सुए (७) तवस्सीसु । वच्छल्लयाइ (८) तेसि अभिक्खणं णाणोवओगे य ॥१॥ (९) दसण (१०) विणए (११) आवस्सए य (१२) सीलव्वए निरइयार । (१३) खणलव (१४) तव (१५) च्चियाए (१६) वेयावच्चे (१७) समाहीय ॥२॥ (१८) अप्पुव्व-णाणगहणे (१९) सुयभत्ती (२०) पवयणे पभावणया । एएहिं कारणेहि तित्थयरत्त लहइ जीओ ॥सू०५॥

क्या भेद होगा-इस प्रकार की भावना ने उस के हृदय में अभिमान उत्पन्न किया और इस अभिमान ने माया को जन्म दिया । जिस कर्म के उदय से जीव स्त्रीत्वपद प्राप्त करता है वह स्त्री नाम कर्म है तथा जातिकुल निर्वर्तक जो कर्म होता है वह गोत्र है । इस प्रकार के कर्म को माया के सद्भाव से अनगार ने उपार्जित किया । सूत्र " ४ "

એજ મહાબલના મનમા અભિમાન ને જન્મ આપ્યો હતો અને એ અભિમાને જ માયાને પણ ઉત્પન્ન કરી હતી જે કર્મના ઉદયથી જીવ સ્ત્રીત્વપદ મેળવે છે તે સ્ત્રીનામ કર્મ છે તેમજ જે કર્મ જાતિકુલ નિર્વતક હોય છે તે ગોત્ર છે માયા ના સદ્ભાવથી આ પ્રમાણે તે અનગારે આ જાતના કર્મનુ ઉપાર્જન કર્યુ ॥ સૂત્ર " ૪ " ॥

टीका—' जइणं ते इत्यादि । यदि खलु ते महाबलवर्जा षडनगाराः ' चउत्थ चतुर्थं=चतुर्थभक्तम् एकोपवासमित्यर्थं , उवसपज्जित्ता ' उपसपद्य=स्वीकृत्य खलु विहरति, ततः स महाबलोऽनगारः ' छट्ठ ' षष्ठ=षष्ठभक्तमुपवासद्वयमुपसपद्य खलु विहरति । अय भाव –यदा ते षडनगारा एकोपवास कुर्वन्ति, तदा महाबलोऽप्येकोपवास करोति, परतु-पारणदिने एव कथयति अद्य मे शिरोबाधा ते नाह पारण करिष्यामि, भवद्भिरेवपारण कर्तव्यमित्युक्त्वा मायया षष्ठ भक्त करोतीति । यदि खलु ते महाबलवर्जा षष्ठ=षष्ठभक्तमुपसपद्य=स्वीकृत्य खलु विहरति, ततः स महाबलोऽनगारोऽष्टम अष्टमभक्तमुपसपद्य खलु ' विहरइ ' विहरति. ।

' जइणं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा' इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण) यदि वे (महब्बलवज्जा) महाबल अनगार को छोड़कर (छ अणगारा) छह अनगार (चउत्थउवसपज्जित्ताण विहरति) चतुर्थ भक्त की तपस्या करते–तओसे) तो वह (महाबल अणगारे) महाबल अनगार (छट्ठउवसपज्जित्ताण विहरइ) दो उपवास करता-तात्पर्य इसका यह है कि जिस समय वे छह अनगार एक उपवास करते उस समय महाबल अनगार भी एक ही उपवास करता –परतु जब पारणा का दिन आता तो कहने लगता कि आज मेरे शिरमे दर्द हो रहा है मै पारणा नही करूँगा–आप लोग ही पारणा करलो । इस प्रकार माया को चित्त में रखकर वह दूसरा उपवास करलेता। (जइण ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठ उपसपज्जित्ताण विहरति ताओ से महब्बले अणगारे अट्ठम उवसपज्जित्ताण विहरइ) इसी तरह वे

' जइणं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–(जइण) જો તેઓ (महाब्बलवज्जा) મહાબલ સિવાયના (छ अण गारा) છ અનગારો (चउत्थ उवसपज्जित्ताण विहर ति) ચતુર્થભક્તની તપસ્યા કરતા (तओसे) ત્યારે તે (महाबलअणगारे) મહાબલ અનગાર (छट्ठ उवसपज्ज त्ताण विहरइ) બે ઉપવાસ કરતા એટલે કે જ્યારે છ અનગાર એક ઉપવાસ કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર પણ એક જ ઉપવાસ કરતા પણ જ્યારે પારણાનો દિવસ આવતો ત્યારે તેઓ કહેતા કે આજે મારૂ માથુ દુખવા માડયુ છે, હુ પારણા કરીશ નહિ તમે લોકો પારણા કરો

આરીતે માયાવડા થઈને મહાબલ અનગાર બીજો ઉપવાસ કરતા હતા

(जइण ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरति, तओ से महब्बलेअणगारे अट्ठम उवसपज्जित्ताण विहरइ)

एव यदि ते षडनगारा अष्टमम् अष्टमभक्तम् उपसपद्य विहरति 'तो' तर्हि स महाबलोऽनगारः दशम=दशमभक्तमुपसपद्य विहरति। अथ यदि ते षडनगारा दशम = दशमभक्तमुसपद्य विहरति ' तो ' तदा स महाबलोऽनगार ' दुवालस ' द्वादश द्वादश भक्तम् उपसंपद्य विहरति, एवमधिकाधिकतप करणादहमुत्कृष्टो भविष्यामीति मायाकरणेन स्त्रीनामगोत्र कर्मोपार्जितवान् तदानीं मिथ्यात्व सास्वादन च गुणस्थानमनुभवतिस्म, स्त्रीनामकर्मणो मिथ्यात्वानन्तानुबन्धि मायाहेतुकत्वादिति

महाबल अनगार वर्ज छट्ठ की तपश्चर्या-दो उपवास-करते तो यह महाबल अनगार अट्ठम की तपश्चर्या-तीन उपवास करता।

(एव अट्ठमतो दसम, अह दसमतो दुवालस इमेहिं य ण वीसाए हिं य कारणेहिं य आसेविय बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोय कम्म निव्वत्तिसु) यदि वे छह अनगार अष्टमभक्त की तपश्चर्या करते तो यह महाबल अनगार दशमभक्त की तपश्चर्या करता यदि वे दशम भक्त की तपश्चर्या करते, तो यह द्वादशभक्त की तपस्या करता। इस तरह अधिकाधिक तप करने से मैं उत्कृष्ट उत्तम-हो जाऊँगा " इस प्रकार माया पूर्वक तपस्या करने से उसने स्त्री नाम गोत्र-जिस कर्म के उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है ऐसा स्त्री नाम कर्म तथा जाति कुल निर्वर्तक गोत्र कर्म का बधकर लिया। इस समय में मिथ्यात्व और सास्वादन इन दो गुणस्थानों का जीव अनुभव करता है। क्यों कि मिथ्यात्व और अनतानुबधी माया हेतुकता स्त्री नामकर्म में रहती

આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ બધા છએ અનગારો છઠ્ઠનાં તપશ્ચર્યા-બે ઉપવાસ-કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર અઠ્ઠમની તપશ્ચર્યા-ત્રણ ઉપવાસ કરતા હતા

(एव अट्ठमतो दसम, अह दसमतो दुवालस इमेहिं य ण वीसाएहिय कारणेहिंय आसेविय बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोय कम्म निव्वत्तिसु)

તે બધા છ અનગારો જ્યારે અષ્ટમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર દશમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ છ અનગાર દશમભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર દ્વાદશ ભક્તની તપસ્યા કરતા હતા આ રીતે વધારે તપ કરવાથી હુ આ બધા કરતા ઉત્તમ થઈ જઈશ તેમ તેઓ માનતા પણ આમ માયાવશ તપ કરવાથી તેણે સ્ત્રીનામ ગોત્ર-એટલે કે જે કર્મના ઉદયથી સ્ત્રીત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે એવુ સ્ત્રીનામ કર્મ તેમજ જાતિકુલ નિર્વર્તક ગોત્ર કર્મનો બધ કર્યો આ વખતે મિથ્યાત્વ અને સાસ્વાદન આ બે ગુણ સ્થાનોને જીવ અનુભવે છે કેમકે મિથ્યાત્વ અને અનતાનબધી માયા

भावः । तत खलु स महाबलोऽनगारः ' इमेहिं ' एभिश्च शास्त्रप्रसिद्धैः खलु वीसाएहि य ' विंशत्याच कारणैः विंशतिस्थानकैः ' आसेवियबहुलीकएहिं ' आसेवितबहुलीकृतैः प्रत्येक स्थानस्य सकृत् करणादासेवितानि बहुशः सेवनाद् बहुलीकृतानि तैः लब्धोत्कृष्टरसायनपरिणामैरित्यर्थः । तीर्थंकरनामगोत्र कर्म ' निव्वत्तिंसु ' निर्वर्तितवान् उपार्जितवानित्यर्थः । त जहा तद्यथा-विंशतिस्थानकाना नामानि गाथात्रयेण दर्शयति(१-७) अर्हत्-सिद्ध- प्रवचन- गुरु- स्थविर- बहुश्रुततपस्विषु वत्सलता भक्तिः-यथाऽवस्थिते गुणग्रामोत्कीर्तनरूपा (८) ' तेसिं ' तेषाम् अर्हदादीनां 'अभिक्खणं ' अभीक्ष्णं=पुन पुनः ज्ञानोपयोगः ज्ञानेषूपयोगः ज्ञानोपयोगः इत्यष्ट स्थानकानि, (९) दर्शन=सम्यक्त्व, (१०) विनयो गुरुदेवादिविषयक', (११) आवश्यकम्- उभयकालमावश्यककरणम् (१२) शील व्रत च निरतिचार, व्रतप्रत्याख्याननिर्मल पालनम्, (१३) क्षणलवेति- कालोप

है । इस के बाद उस महाबल अनगार ने शास्त्र प्रसिद्ध इन विंशति स्थानकों के द्वारा कि जो आसेवित बहुलिकृत थे तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का बध किया । प्रत्येक स्थान का एक बार सेवन करना इसका नाम आसेवित और बहुत बार सेवन करना इसका नाम बहुली कृत है । (तजहा) वे बीस स्थान ये हैं अरिहंत (१), सिद्ध (२), प्रवचन (३) गुरु (४), स्थाविर (५), बहुश्रुत (६), तपस्वी इनमें वात्सल्यभाव-भक्ति -रखना-अर्थात् इनके यथावस्थित गुणो का उत्कीर्तन करना (७), इन के ज्ञान में निरतर उपयोग रखना (८), दर्शन का विशुद्धि करना (९) गुरुदेव आदि के विषय में विनय सपन्नता होना (१०), दोनों काल में आवश्यक क्रियाओं को करना (११),शील और व्रतों में अतिचार रहित

હેતુકતા જીનામ કર્મમા રહે છે ત્યાર બાદ મહાબલ અનગારે શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ વિશતિ (વીસ) સ્થાનકો વડે-કે જે આસેવિત બહુલીકૃત હતા -તીર્થંકર નામ ગોત્ર કર્મનો બધ કર્યો દરેક સ્થાનનુ એક વાર સેવન કરવું તે આસેવિત અને ઘણી વાર સેવન કરવુ તે બહુલીકૃત છે (તજહા) વીસ સ્થાનો નીચે મુજબ છે-અરિહંત, (૧) સિદ્ધ, (૨) પ્રવચન, (૩)ગુરુ, (૪) સ્થવિર, (૫)બહુ શ્રુત, (૬) તપસ્વીમા વાત્સલ્યભાવ-ભક્તિ-રાખવી એટલે કે તેમના યથાવસ્થિત ગુણોનુ કીર્તન કરવુ (૭) તેમના જ્ઞાનમા નિરતર ઉપયોગ કરતા રહેવુ (૮) દર્શનની વિશુદ્ધિ કરવી (૯) ગુરુ દેવ વગેરેની સામે વિનય રાખવો (૧૦) બને સમયે (સવાર સાજ) આવશ્યક ક્રિયાઓ કરવી, (૧૧) શીલ અને

लक्षणं, क्षणलवादिकालेषु प्रमाद विहाय शुभध्यानकरणम् (१४) तपः= द्वादश विधम्, (१५) त्याग!=दानम् तत्र अभयदान सुपात्रदान च, तत्राभयदानं=भया नुत्पादन परैर्भय प्राप्तस्य मार्यमाणस्य कथचिन्म्रीयमाणस्य च परिरक्षणम्, अभ यदानमिह करुणादानोपलक्षणम् । सुपात्रेभ्यो दान महाव्रतधारिभ्यः प्रतिमाधारि श्रावकेभ्यश्च दानम् सुपात्रदानम् । इदमुपलक्षण तेन चतुर्विधसघ सुखोत्पादनमि त्यर्थः । (१६) वैयावृत्य=आचार्यादीना शुश्रुषा (१७) समाधि –सर्वजीवाना सुखो त्पादनम्, (१८) अपूर्वज्ञानग्रहण=प्रसिद्धम्, (१९) श्रुतभक्तिः=जिनोक्तागमेषु

होकर प्रवृत्ति करते रहना व्रत, प्रत्याख्यान को निर्मल रूपसे पालन करना (१२), क्षण, लव आदि कालों में प्रमाद का परिहार (निवारण) करते हुए शुभ ध्यान करना, (१३), तप–१२ प्रकार के तपों का आराधन करना (१४), त्याग–अभय दान और सुपात्र दान देना किसी को भय उत्पादन नहीं करना यह अभयदान है–तथा दूसरों द्वारा भय को प्राप्त हुए अथवा मार्यमाण या किसी भी तरह मरणोन्मुख हुए ऐसे व्यक्ति की अपनी शक्ति के अनुसार रक्षा करना, उन पर करुणा धर-ना, उनके प्रति दया भाव रखना यह सब अभय दान है।

यह अभयदान करुणादान का उपलक्षक है। महाव्रतधारी सकल सयमीजनों को अथवा प्रतिमाधारी श्रावकों को आहारादि दान करना यह सुपात्र दान है। चतुर्विध सघ के लिये सुख का उत्पादन करना इसका यह उपलक्षक है (१५), वैयावृत्य–आचार्य आदि की शुश्रूषा करना (१६) समाधि–समस्त जीवों को सुख मिले इस प्रकार का प्रय

વ્રતોમા અતિચાર વગર થઇને પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવુ –વ્રત, પ્રત્યાખ્યાન નુ નિર્મળ રૂપથી પાલન કરવુ (૧૨) ક્ષણ, લવ વગેરે કાળોમા પ્રમાદ રહિત થઇને શુભ ધ્યાન ધરવુ (૧૩) તપ,–બાર પ્રકારના તપોનુ આરાધન કરવુ ,(૧૪)ત્યાગ, અભય દાન અને સુપાત્ર દાન આપવુ , કોઇને પણ ભયની સ્થિતિમા મૂકવો નહિ તે અભયદાન છે તેમજ બીજાઓ દ્વારા ભયની સ્થિતિમા મૂકાયેલા અથવા તો કોઇપણ રીતે મરણોન્મુખ થતા વ્યક્તિની પોતાની શક્તિ મુજબ રક્ષા કરવી, તેમની ઉપર કરુણા રાખવી, દયાભાવ બતાવવો આબધુ અભયદાન કહેવાય છે

આ અભયદાન કરુણાદાનનો ઉપલક્ષક છે મહાવ્રતધારી બધા સયમી જનોને અથવાતો પ્રતિમાધારી શ્રાવકોને આહાર વગેરે દાન કરવુ તે સુપાત્ર દાન છે ચતુર્વિધ સઘના માટે સુખનુ સર્જન કરવુ આ તેનો ઉપલક્ષક છે (૧૫) વૈયાવૃત્ય–આચાર્ય વગેરેની સેવા કરવી, (૧૬) સમાધિ–બધા

परमानुरागः, (२०) प्रवचने प्रभावना=प्रभूतभव्येभ्यः प्रव्रज्यादान, भवकूपपतत्प्राणिनाणसमाश्वासनपरायणजिनशासनमहिमोपबृंहण समस्तस्य जगतो जिनशासनरसिक करण मिथ्यात्वतिमिरापहरणं, चरणकरणशरणीकरण च।

एतानी-तीर्थकरत्वप्राप्तिः विंशतिस्थानकानि सर्वजीवसाधारणानि सन्तीति दर्शयितुमाह-' एएहिं तित्थयरत्त लहइ जीवो ' इति। एतैः कारणैस्तीर्थकरत्व लभते जीवः।

त्न करना, (१७), अपूर्व ज्ञान का पढना, (१८), श्रुतभक्ति-जिनेन्द्र द्वारा प्रतिपादित आगमो में परम अनुराग रखना, (१९), प्रवचन प्रभावना अनेक भव्य जीवों को प्रव्रज्या देना, ससारकूप में पडते हुए प्राणीयों की रक्षा करने के आश्वासन में परायण ऐसे जिनशासन की महिमा बढाना, समस्त जगत के जीवों को जिन शासन का रसिक बनाना, मिथ्यात्वरूप तिमिर का ध्वस करना, और चरण सत्तरी एव करण सत्तरी की शरण में रहना यह सब प्रवचन प्रभावन है (२०)।

ये २० स्थान समस्त जीवों को तीर्थ कर पदकी प्राप्ति में कारण है। (एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्त लहइ जीओ) इन्हीं बीस स्थानक के सेवन से जीव तीर्थंकर पद को प्राप्त करता है। अन्यत्रभी यही बात कही है-जिनागम में अनेक तप प्रसिद्ध हैं परन्तु इन श्री बीसस्थानरूप तपस्या के समान और कोई तप नही है। इन बीस स्थानों में से कोई एक स्थान की आराधना करके जीव अरिहतो के बीच में उत्तम जिनेन्द्र के पद को पाता है।

સુણ ભણે તેમ કરવુ-(૧૭) અપૂર્વજ્ઞાનનુ વાચન કરવુ (૧૮ શ્રુતભક્તિ-જિનેન્દ્રપ્રતિપાદિત આગમો-મા ખૂબજ અનુરાગ રાખવો, ૧૯ પ્રવચન પ્રભાવના -અનેક ભવ્યજીવોને પ્રવ્રજ્યા આપવી સ સાર રૂપી વાવમા પડનાર પ્રાણીઓની રક્ષા કરવા રૂપ આશ્વાસન મા પરાયણ એવા જિન શાસનનો મહિમા પ્રશસ્ત કરવો જગતના બધા જીવોને જિનશાસનના રસિક બનાવવા મિથ્યાત્વ રૂપ અધકારનો નાશ કરવો, અને ચરણસત્તરી અને કરણસત્તરીની શરણમા રહેવુ આ પ્રવચન પ્રભાવના છે ૨૦

આ વીસ સ્થાનો બધા જીવોને માટે તીર્થકર પદની પ્રાપ્તિમા કારણ ભૂત હોય છે "एएहिं कारणेहि तित्थयरत्त लहइ जीओ" આ કારણો દ્વારા જ જીવ તીર્થકર પદ મેળવે છે બીજી ઘણી જગ્યાએ પણ એજ વાત કહેવામા આવી છે જિનાગમોમા અનેક તપ પ્રસિદ્ધ છે, પણ આ શ્રી વીસ સ્થાન રૂપ તપસ્યા જેવી બીજી કોઈપણ તપસ્યા નથી આ વીસ સ્થાનોમાથી ગમે તે એક સ્થાનની આરાધના કરીને જીવ અરિહતોની મધ્યે ઉત્તમ જિનેન્દ્રના પદને મેળવે છે

यदुक्तम्—
भूयास्यपि तपांसिस्युः, प्रसिद्धानि जिनागमे ।
परश्रीविंशतिस्थान – तपस्तुल्य तपो नहि ॥ १ ॥
अन्यच्च–वीसाए अन्नयर, ठाग आराहिऊण जे जीवा ।
अरिहाईण मज्झे, जिणिंदपदमुत्तम लहइ ॥ २ ॥
पुनः–पुरिमेण पच्छिमेणय, एए सव्वे वि फासिया ठाणा ।
मज्झिमगेहिं जिणेहिं, एग दो तिण्णि सव्वे वा. ॥ ३ ॥

इतिवचनादादिनाथजीवेन वर्धमानजीवेन च पूर्वस्मिन् तृतीयभवे सर्वाणि विंशतिस्थानकानि सेवितानि, अन्यैर्द्वाविंशतितीर्थकरजीवैरेक द्वे त्रीणि सर्वाण्यपि स्पृष्टानि, नियमो नास्ति । मल्लीनाथ जीवेन तु सर्वाण्येव सेवितानीति भाव, ।

एतेषु विंशति सख्याकेषु ये वसन्ति तदाराधनाया मवृत्ता भवन्ति, ते स्थानकवासिनः कथ्यन्ते । उक्त च—

" तित्थगर पयदाइसु, वसइ य वीसासु ठाणगेसु ज ।
आराहणट्ठमणिस, ठाणगवासी य सो हवए ॥ १ ॥ "

छाया–" तीर्थङ्कर पददायिषु वसति च विंशतौ स्थानकेषु यत् ।
आराधनार्थमनिश, स्थानकवासो च स भवति ॥ १ ॥ " इति ।

आदि नाथ प्रभु के जीव ने और श्री महावीर प्रभुके जीवने पूर्व तृतीय भव में समस्त वीस स्थानो की आराधना की थी। बीच के बाकी २२ तीर्थंकरो ने किन्हीने एक किन्हीने २ किन्हीने ३ स्थानों की और किन्हीं २ ने सबही स्थानों की आराधना की। ऐसा नियम नहीं हैं कि तीर्थंकर प्रकृति के बध के लिये इन बीसो ही स्थानो की आराधना करनी पडती हो। मल्लिनाथ के जीव ने तो इन बीसोही स्थानो की आराधना की। बीस स्थानो में जो रहते है उनकी आराधना करने में प्रवृत्त होते हैं—वे स्थानकवासी कहलाते है। उक्तच–तथंकर

પૂર્વતૃતીય ભવમા આદિનાથ પ્રભુના જીવે અને શ્રી મહાવીર પ્રભુના જીવે વીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી વચ્ચેના શેષ બાવીસ તીર્થંકરો માથી કોઇએ એક કોઇએ બે, કોઇએ, ત્રણ સ્થાનોની અને કોઈ કોઇએતો બધા સ્થાનોની આરાધના કરી હતી એવો કોઈ ચોક્કસ નિયમ નથી કે તીર્થંકર પ્રકૃતિના બધને માટે ઉક્ત વીસે વીસસ્થાનોની આરાધના કરવી જ પડતી હોય મલ્લિનાથના જીવેતો આ બધાની વીસેવીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી આ વીસ સ્થાનોમા જે રહે છે તેમની આરાધના કરવામા જે તત્પર રહે છે તેઓ 'સ્થાનકવાસી' કહેવાય છે ઉક્ત ચ–તીર્થંકર પ્રકૃતિને આપનારા વીસ

अन्यच्च—" तीर्थङ्कर पदप्राप्तेः, स्थानकेषु च विंशतौ ।
वसन्त्याराधनार्थं यत्तस्मात् स्थानकवासिनः ॥ १ ॥" इति।

मूलम्—तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, जाव एगराइयं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तएणं ते महाब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तं जहा—चउत्थं करेंति, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेंति, पारित्ता छट्ठं करेंति । करित्ता चउत्थं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता चाउद्दसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता चोद्दसमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता वीसइमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं करेंति, करित्ता वीसइमं करेंति करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं करेंति करित्ता चोद्दसमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता चाउद्दसमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति,

---

प्रकृति के दाता इन २० स्थानों में जो आराधना करने के निमित्त सदा वसते है—निवास करते हैं—वे ही स्थानकवासी कहलाते हैं । दूसरे श्लोक का भी यही भाव है । सूत्र ' ५ "

સ્થાનોમા આરાધના કરવાના પ્રયોજનથી જેઓ હમેશા નિવાસ કરે છે—વસે છે, તેઓજ સ્થાનવાસી કહેવાય છે બીજા શ્લોક નો પણ એજ અર્થ છે સૂત્ર ',૫"॥

करित्ता चउत्थं करेंति करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता चउत्थं करेंति, सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेंति एव खलु एसा खुड्डागसीह निक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहि सत्तहि य अहोरत्तेहि य अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ,

तयाणतर दोच्चपि परिवाडीए चउत्थं करेंति, नवरं विगइवज्ज पारेंति, एव तच्चापि परिवाडी नवर पारणए अलेवाड पारेंति, एव चउत्था वि परिवाडी नवर पारणए आयविलेण पारेंति ॥ सू० ६ ॥

टीका-' तएण ते ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते महाबलप्रमुखा सप्तानगाराः ' मासिय ' (१) मासिकीम् एकमासपरिमाणां प्रथमा भिक्षुप्रतिमाम् ' उवसजित्ताण ' उपसपद्य स्वीकृत्य, विहरन्तिस्म । एवम् अमुना प्रकारेण ' जाव एगराइय ' यावत् एकरात्रिकीम् अत्र यावत् करणात् ' दो मासिय तेमासिय चउम्मासिय पचमासिय छम्मासिय सत्तमासिय पढमसत्तराइदिय बीयसत्तराइदिय

' तएण ते महाबल पामोक्खा ' । इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (ते महब्बलपामोक्खा) उन महाबल प्रमुख सातों अनगारों ने (मासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरति) १ मास की प्रमाण वाली १ प्रथम भिक्षु प्रतिमा धारण की (जाव एगराइय उवसपज्जित्ताण विहरति) इसी तरह दो मास प्रमाण वाली द्वितीय भिक्षु प्रतिमा, तीन मास प्रमाण वाली तृतीय भिक्षु प्रतिमा, ४ चार मास प्रमाण वाली चतुर्थ भिक्षु प्रतिमा, पाच मास

' तएण ते महाबल पामोक्खा ' । ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર બાદ (ते महाबलपामोक्खा) મહાબલ પ્રમુખ સાત અનગારોએ (मासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरति) એક માસની પ્રમાણવાળી ૧ પ્રથમ ભિક્ષુ પ્રતિમા ધારણ કરી (जाव एगराइय उवसपज्जित्ताण विहरति) આ પ્રમાણે જ બે માસ પ્રમાણવાળી દ્વીતીય ભિક્ષુપ્રતિમા, ત્રણમાસ પ્રમાણ વાળી તૃતીય ભિક્ષુપ્રતિમા, ચાર ચાર માસ પ્રમાણ વાળી ચતુ

तच्चसत्तराइदिय अहोराइदिय ' इति पाठस्य सग्रहः । तत्र २ द्वैमासिकीं, ३ की, ४, चातुर्मासिकीं ५, पचमासिकी, ६, षाण्मासिकी, ७ सप्तमासिकी, सप्तां ८ प्रथम सप्तरात्रिंदिवा, ९. द्वितीय सप्तरात्रिंदिवा, १० तृतीय सप्तरात्रिंदिव, इमा दश प्रतिमा उपसपद्य, एकादशीम्–११ अहोरात्रिकी, १२ द्वादशीम्– एक रात्रिकीम् इत्येव द्वादशप्रतिमा उपसंपद्य विहरन्ति स्म । आसा वर्णन दशाश्रुत-स्कन्धे सप्तमाध्ययने मुनिहर्षिणी टीकायां द्रष्टव्यम् ।

ततस्तदन्तर खलु ते महाबलप्रमुखा सप्तानगारा ' खुड्डाग ' क्षुल्लक ' सीह निक्कीलिय' सिंहनिष्क्रीडित=सिंहनिष्क्रीडितनामक सिंहो यथा विहरन् स्व पथा-

---

प्रमाण वाली पाचवी भिक्षुप्रतिमा, ६ मास प्रमाण वाली छठी भिक्षुप्रतिमा, ७ मास प्रमाण वाली सप्तमी भिक्षुप्रतिमा, प्रथम सात रात दिन प्रमाण वाली ८ भी भिक्षुप्रतिमा, द्वितीय सात दिन रात प्रमाण वाली १० वी भिक्षुप्रतिमा तथा १ दिन रात प्रमाण वाली ११ वी भिक्षुप्रतिमा और एक रात प्रमाण वाली १२वी भिक्षुप्रतिमा उन सब अनगारोने धारण की ।

इन समस्त प्रतिमाओं का वर्णन दशाश्रुतस्कध में सप्तम अध्ययन में मुनि हर्षिणी नाम की टीका मे किया गया है । वहां से देख लेना ।

(तएण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाग सीहनिक्की लिय तवोकम्म उवसपज्जित्ताण विहरति) इसके बाद उन महाबलप्रमुख सातो ही अनगारो ने लघु सिंह निष्क्रीडित नाम का तप किया । जिस

र्थ भिक्षुप्रतिमा પાચ માસ પ્રમાણુવાળી પાચમી ભિક્ષુપ્રતિમા, છ માસ પ્રમાણુ વાળી છઠ્ઠી ભિક્ષુપ્રતિમા, સાત માસ પ્રમાણુવાળી સાતમી ભિક્ષુપ્રતિમા, પ્રથમ સાત રાત દિવસ પ્રમાણુવાળી આઠમી ભિક્ષુપ્રતિમા, બીજી સાત દિવસ રાત પ્રમાણુ વાળી નવમી ભિક્ષુપ્રતિમા, ત્રીજી સાત દિવસ રાત પ્રમાણુવાળી દશમી ભિક્ષુ પ્રતિમા તેમજ એક દિવસ રાત પ્રમાણુવાળી અગિયારમી ભિક્ષુપ્રતિમા, અને એક રાત પ્રમાણુવાળી બારમી ભિક્ષુ પ્રતિમા, તેઓ બધા અનગારો એ ધારણ કરી

આ બધી પ્રતિમાઓ વિષે વિગત વાર ચર્ચા ' દશાશ્રુતસ્કધ ' ના સાતમા અધ્યયનની મુનિહર્ષિણી નામની ટીકામા કરવામા આવી છે જિજ્ઞાસુ ઓએ ત્યાથી જાણી લેવુ જોઇએ

(तएण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाग सीह निक्कीलिय तवो कम्म उवसपज्जित्ताण विहरति)

ત્યાર બાદ મહાબલ પ્રમુખ સાતે સાત અનગારોએ લઘુસિંહનિષ્ક્રીડિત નામે તપ કર્યું સિંહ જેમ પોતાના પાછળના ભાગની તરફ ડોકીયુ કરતો

ङ्गाग पश्यति, तथा यत् तप पूर्वकृत पुनरावर्त्योत्तरोत्तर क्रियते तत् सिंहनिष्क्री डितमित्युच्यते. । तप कर्मोपसपद्य विहरन्ति । तत्र क्षुल्लक सिंहनिष्क्रीडित तपः कर्म केन प्रकारेण तैः कृतमित्याकाङ्क्षायामाह-' तजहा ' इत्यादि चतुर्थं चतुर्थभक्तमेकोपवासरूप कुर्वन्ति कृत्वा ' सव्वकामगुणिय ' सर्वकामगुणित=सर्वे कामगुणा दुग्धदधिघृततैलमधुररूपा विकृतय सजाता यत्र तत् सर्वकामगुणितम् इद पारणक्रियायाविशेषण, ' पारेंति ' पारयन्ति=पारण कुर्वन्ति । पारयित्वा षष्ठ कुर्वन्ति, तत पारण कृत्वा षष्ठभक्त द्वयुपवासरूप तप' कुर्वन्ति- इत्यर्थ कृत्वा

तरह सिंह अपने पश्चात् भाग का निरीक्षण करता आगे चलता है उसी प्रकार जो तप पूर्वकृत तपो को साथ लेकर आगे २ किया जाता है उस का नाम सिंहनिष्क्रीडित तप है । (तजहा) यह क्षुल्लक सिंह निष्क्री डित तप उन्हो ने किस प्रकार से किया इस बात को अब सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं ।- (चउत्थ करेंति, करित्ता सव्व कामगुणिय पारेंति, पारित्ता छट्ठ करेंति, करित्ता चउत्थ करेंति करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता छट्ठ करेंति, करित्ता, दसम करेंति, करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता दुवा लसम करेंति, करित्ता दसम करेंति, करित्ता चाउद्दसम करेंति करित्ता दुवालसम करेंति) उन्हो ने पहिले चतुर्थ भक्त-एक उपवास किया । एक उपवास करके विगय सहित पारणा किया पारणा करके फिर छट्ठभक्त -दो उपवास किये दो उपवास करके फिर उन्हों ने पारणा किया बाद मे चतुर्थ भक्त किया । चतुर्थभक्त करके पारणा किया फिर-तीन उप

આગળ ચાલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલા તપોને સાથે લઈને આગળ કરવામા આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્ક્રીડિત કહેવાય છે (ત જહા) અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કેવી રીતે કર્યું ? તે વિષે સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતા કહે છે

(चउत्थ करेंति, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेंति, परित्ता, छट्ठ करेंति करित्ता चउत्थ करेंति, करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता छट्ठ करेति, करित्ता दसम करेंति करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता दुवालसम करेति करित्ता चाउद्दसम करेति करित्ता दुवालसम करेति)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થભક્ત-એક ઉપવાસ કર્યો એક ઉપાસ કરીને વિગય સહિત પારણા કર્યા પારણા કર્યા બાદ ફરી છઠ્ઠભક્ત-બે ઉપવાસ કર્યા બે ઉપવાસ કરીને તેઓએ પારણા કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ ભક્ત કર્યા બાદ પારણા કર્યા ત્યાર પછી ત્રણ ઉપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો અષ્ટમ ભક્ત

चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमम्, अष्टमभक्त द्युपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा षष्ठ कुर्वन्ति, कृत्वा दशम चतुरुपवासरूप दशमभक्त कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टम कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादश पञ्चपोवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा दशम कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्दश षडुपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादश कुर्वन्ति कृत्वा षोडश सप्तोपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दश कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादश अष्टोपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा षोडश कुर्वन्ति, कृत्वा विंश

वासरूप अष्टभभक्त किया अष्टम भक्त करके पारणा किया फिर छट्ठभक्त रूप दो उपवास किये। षष्टभक्त करके पारणा किया फिर दशम भक्त रूप चार उपवास किये चार उपवास करके पारणा किया फिर अष्टम भक्त रूप तीन उपवास किये। अष्टम भक्त करके पारणा कियो फिर पञ्च उपवास रूप द्वादश भक्त किया द्वादश भक्त करके पारणा किया। पुनः दशम भक्त किया। दशम भक्त करके पारणा किया फिर षट् उपवास रूप चतुर्दश भक्त किया। चतुर्दश भक्त करके पारणा किया पुनः द्वादश भक्त रूप पाच उपवास किये। (करित्ता सोलसम करेंति) पाच उपवास करके पारणा किया पुनः७ उपवासरूप सोलस भक्त किया (करित्ता चोद्दसम करेंति) ७ उपवास करके पारणा कियो–बाद मे ६ उपवास किये (करित्ता अट्ठारसम करेति)पारणा करके फिर अष्टा दश भक्त रूप८उपवास किये (करित्ता सोलसम करेंति) आठ उपवास करके पारणा किया फिर ७ उपवास किये (करित्ता वीसइम करेंति) सात उपवास करके उसका

કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છઠ્ઠ ભકત રૂપ બે ઉપવાસો કર્યા ષષ્ઠ ભકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દશમ ભકત રૂપ ચાર ઉપવાસો કર્યા ચાર ઉપવાસોના અન્તે પારણા કર્યા ત્યાર બાદ અષ્ટમ ભકત રૂપ ત્રણ ઉપવાસો કર્યા અષ્ટમ ભકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દ્વાદશ ભકત પાચ ઉપવાસ કર્યા ત્યાર પછી પારણા કર્યા ફરી દશમ ભકત કર્યા દશમ ભકત કરીને પારણા કર્યા અને ત્યાર બાદ છ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ ભકત કર્યા

ચતુર્દશ ભકત કરીને પારણા કર્યા ફરી દ્વાદશ ભકત રૂપ પાચ ઉપવાસો કર્યા (करित्ता सोडससम करेति પાચ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા ફરી સોલસ ભકત સાતઉપવાસ કર્યા (करित्ता चोद्दसम करेंति) સાત ઉપવાસ કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છ ઉપવાસો કર્યા ' करित्ता अट्ठारसम करेंति " પારણા કરીને અષ્ટાદશ ભકત રૂપ આઠ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता सोलसम करेंति આઠ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ સાત ઉપવાસો કર્યા " करिता वीसइम करेति " સાત ઉપવાસો કરીને તેણે પારણા કર્યા, ત્યાર

ङ्गाग पश्यति, तथा यत् तप पूर्वकृत पुनरावर्त्योत्तरोत्तर क्रियते तत् सिंहनिष्क्री डितमित्युच्यते । तप कर्मोपसपद्य विहरन्ति । तत्र क्षुल्लक सिंहनिष्क्रीडित तपः कर्म केन प्रकारेण तैः कृतमित्याकाङ्क्षायामाह-' तजहा ' इत्यादि चतुर्थ चतुर्थभक्तमेकोपवासरूप कुर्वन्ति कृत्वा ' सव्वकामगुणिय ' सर्वकामगुणित=सर्वे कामगुणा दुग्धदधिघृततैलमधुरूपा विकृतय सजाता यत्र तत् सर्वकामगुणितम् इद पारणक्रियायाविशेषण, ' पारेंति ' पारयन्ति=पारण कुर्वन्ति । पारयित्वा षष्ठ कुर्वन्ति, तत पारण कृत्वा षष्ठभक्त द्वयुपवासरूप तपः कुर्वन्ति- इत्यर्थ कृत्वा

तरह सिंह अपने पश्चात् भाग का निरीक्षण करता आगे चलता है उसी प्रकार जो तप पूर्वकृत तपो को साथ लेकर आगे २ किया जाता है उस का नाम सिंहनिष्क्रीडित तप है । (तजहा) यह क्षुल्लक सिंह निष्क्री डित तप उन्हो ने किस प्रकार से किया इस बात को अब सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं ।- (चउत्थ करेंति, करित्ता सव्व कामगुणिय पारेंति, पारित्ता छट्ठ करेंति, करित्ता चउत्थ करेंति करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता छट्ठ करेंति, करित्ता, दसम करेंति, करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता दुवा लसम करेंति, करित्ता दसम करेंति, करित्ता चाउद्दसम करेंति करित्ता दुवालसम करेंति) उन्हो ने पहिले चतुर्थ भक्त-एक उपवास किया । एक उपवास करके विगय सहित पारणा किया पारणा करके फिर छट्ठभक्त -दो उपवास किये दो उपवास करके फिर उन्हो ने पारणा किया बाद मे चतुर्थ भक्त किया । चतुर्थभक्त करके पारणा किया फिर-तीन उप

આગળ ચાલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલા તપોને સાથે લઈને આગળ કરવામા આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્ક્રીડિત કહેવાય છે (त जहा) અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કેવી રીતે કર્યું ? તે વિષે સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતા કહે છે

(चउत्थ करेंति, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेंति, परित्ता, छट्ठ करेंति करित्ता चउत्थ करेंति, करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता छट्ठ करेंति, करित्ता दसम करेंति करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता दुवालसम करेंति करित्ता चाउद्दसम करेंति करित्ता दुवालसम करेंति)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થ ભક્ત-એક ઉપવાસ કર્યો એક ઉપવાસ કરીને વિગય સહિત પારણા કર્યા પારણા કર્યા બાદ ફરી છઠ્ઠભક્ત-બે ઉપવાસ કર્યા બે ઉપવાસ કરીને તેઓએ પારણા કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ ભક્ત કર્યા બાદ પારણા કર્યા ત્યાર પછી ત્રણ ઉપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો અષ્ટમ ભક્ત

चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमम्, अष्टमभक्त ३युपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा षष्ठ कुर्वन्ति, कृत्वा दशम चतुरुपवासरूप दशमभक्त कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टम कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादश पञ्चपोवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा दशम कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्दश षडुपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादश कुर्वंति कृत्वा पोडश सप्तोपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दश कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादश अष्टोपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा पोडश कुर्वन्ति, कृत्वा विंश

वासरूप अष्टमभक्त किया अष्टम भक्त करके पारणा किया फिर छट्ठभक्त रूप दो उपवास किये। षष्टभक्त करके पारणा किया फिर दशम भक्त रूप चार उपवास किये चार उपवास करके पारणा किया फिर अष्टम भक्त रूप तीन उपवास किये। अष्टम भक्त करके पारणा कियो फिर पञ्च उपवास रूप द्वादश भक्त किया द्वादश भक्त करके पारणा किया। पुनः दशम भक्त किया। दशम भक्त करके पारणा किया फिर षट् उपवास रूप चतुर्दश भक्त किया। चतुर्दश भक्त करके पारणा किया पुनः द्वादश भक्त रूप पाच उपवास किये। (करित्ता सोलसम करेंति) पाच उपवास करके पारणा किया पुनः७ उपवासरूप सोलस भक्त किया (करित्ता चोद्दसम करेंति) ७ उपवास करके पारणा कियो–बाद मे ६ उपवास किये (करित्ता अट्ठारसम करेति)पारणा करके फिर अष्टा दश भक्त रूप८उपवास किये (करित्ता सोलसम करेंति) आठ उपवास करके पारणा किया फिर ७ उपवास किये (करित्ता वीसइम करेंति) सात उपवास करके उसका

કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છઠ્ઠ ભકત રૂપ બે ઉપવાસો કર્યા ષષ્ઠ ભકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દશમ ભકત રૂપ ચાર ઉપવાસો કર્યા ચાર ઉપવાસોના અન્તે પારણા કર્યા ત્યાર બાદ અષ્ટમ ભકત રૂપ ત્રણ ઉપવાસો કર્યા અષ્ટમ ભકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દ્વાદશ ભકત પાચ ઉપવાસ કર્યા ત્યાર પછી પારણા કર્યા ફરી દશમ ભકત કર્યા દશમ ભકત કરીને પારણા કર્યા અને ત્યાર બાદ છ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ ભકત કર્યા

ચતુર્દશ ભકત કરીને પારણા કર્યા ફરી દ્વાદશ ભકત રૂપ પાચ ઉપવાસો કર્યા (करित्ता सोडससम करेति पाच उपवासो કરીને પારણા કર્યા ફરી સોલસ ભકત સાતઉપવાસ કર્યા (करित्ता चोद्दसम करेंति) સાત ઉપવાસ કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છ ઉપવાસો કર્યા ‘ करित्ता अट्ठारसम करेंति ” પારણા કરીને અષ્ટાદશ ભકત રૂપ આઠ ઉપવાસો કર્યા “ करित्ता सोलसम करेंति આઠ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ સાત ઉપવાસો કર્યા “ करिता वीसइम करेति ” સાત ઉપવાસો કરીને તેણે પારણા કર્યા, ત્યાર

ङ्गाग पश्यति, तथा यत् तप पूर्वकृत पुनरावर्त्योत्तरोत्तर क्रियते तत् सिंहनिष्क्री डितमित्युच्यते. । तप कर्मोपसपद्य विहरन्ति । तत्र क्षुल्लक सिंहनिष्क्रीडित तपः कर्म केन प्रकारेण तैः कृतमित्याकाङ्क्षायामाह-' तजहा ' इत्यादि चतुर्थं चतुर्थभक्तमेकोपवासरूप कुर्वन्ति कृत्वा ' सव्वकामगुणिय ' सर्वकामगुणित=सर्व कामगुणा दुग्धदधिघृततैलमधुररूपा विकृतय सजाता यत्र तत् सर्वकामगुणितम् इद पारणक्रियायाविशेषण, ' पारेंति ' पारयन्ति=पारण कुर्वन्ति । पारयित्वा षष्ठ कुर्वन्ति, तत पारण कृत्वा षष्ठभक्त द्वयुपवासरूप तप' कुर्वन्ति- इत्यर्थ कृत्वा

तरह सिंह अपने पश्चात् भाग का निरीक्षण करता आगे चलता है उसी प्रकार जो तप पूर्वकृत तपो को साथ लेकर आगे २ किया जाता है उस का नाम सिंहनिष्क्रीडित तप है । (तजहा) यह क्षुल्लक सिंह निष्क्री डित तप उन्हो ने किस प्रकार से किया इस बात को अब सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं ।- (चउत्थ करेंति, करित्ता सव्व कामगुणिय पारेंति, पारित्ता छट्ठ करेंति, करित्ता चउत्थ करेंति करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता छट्ठ करेंति, करित्ता, दसम करेंति, करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता दुवा लसम करेंति, करित्ता दसम करेंति, करित्ता चाउद्दसम करेंति करित्ता दुवालसम करेंति) उन्हों ने पहिले चतुर्थ भक्त-एक उपवास किया । एक उपवास करके विगय सहित पारणा किया पारणा करके फिर छट्ठभक्त -दो उपवास किये दो उपवास करके फिर उन्हों ने पारणा किया बाद मे चतुर्थ भक्त किया । चतुर्थभक्त करके पारणा किया फिर-तीन उप

આગળ ચાલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલા તપોને સાથે લઈને આગળ કરવામા આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્ક્રીડિત કહેવાય છે (ત જહા) અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કેવી રીતે કર્યું ? તે વિષે સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતા કહે છે

(चउत्थ करेंति, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेंति, परित्ता, छट्ठ करेंति करित्ता चउत्थ करेंति, करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता छट्ठ करेति, करित्ता दसम करेंति करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता दुवालसम करेति करित्ता चाउद्दसम करेति करित्ता दुवालसम करेति)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થ ભક્ત-એક ઉપવાસ કર્યો એક ઉપાસ કરીને વિગય સહિત પારણા કર્યા પારણા કર્યા બાદ ફરી છઠ્ઠભક્ત-બે ઉપવાસ કર્યા બે ઉપવાસ કરીને તેઓએ પારણા કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ ભક્ત કર્યા બાદ પારણા કર્યા ત્યાર પછી ત્રણ ઉપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો અષ્ટમ ભક્ત

चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमम्, अष्टमभक्त "युपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा षष्ठ कुर्वन्ति, कृत्वा दशम चतुरुपवासरूप दशमभक्त कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टम कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादश पञ्चपोवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा दशम कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्दश षडुपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादश कुर्वंति कृत्वा षोटश सप्तोपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दश कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादश अष्टोपवासरूप कुर्वन्ति, कृत्वा षोडश कुर्वन्ति, कृत्वा विंश-

---

वासरूप अष्टमभक्त किया अष्टम भक्त करके पारणा किया फिर छट्ठभक्त रूप दो उपवास किये। षष्टभक्त करके पारणा किया फिर दशम भक्त रूप चार उपवास किये चार उपवास करके पारणा किया फिर अष्टम भक्त रूप तीन उपवास किये। अष्टम भक्त करके पारणा कियो फिर पञ्च उपवास रूप द्वादश भक्त किया द्वादश भक्त करके पारणा किया। पुनः दशम भक्त किया। दशम भक्त करके पारणा किया फिर षट् उपवास रूप चतुर्दश भक्त किया। चतुर्दश भक्त करके पारणा किया पुनः द्वादश भक्त रूप पांच उपवास किये। (करित्ता सोलसम करेंति) पाच उपवास करके पारणा किया पुनः७ उपवासरूप सोलस भक्त किया (करित्ता चोद्दसम करेंति) ७ उपवास करके पारणा कियो–बाद में ६ उपवास किये (करित्ता अट्ठारसम करेति)पारणा करके फिर अष्टा दश भक्त रूप८उपवास किये (करित्ता सोलसम करेंति) आठ उपवास करके पारणा किया फिर ७ उपवास किये (करित्ता वीसइम करेंति) सात उपवास करके उसका

કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છઠ્ઠ ભકત રૂપ બે ઉપવાસો કર્યા ષષ્ઠ ભકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દશમ ભકત રૂપ ચાર ઉપવાસો કર્યા ચાર ઉપવાસોના અન્તે પારણા કર્યા ત્યાર બાદ અષ્ટમ ભકત રૂપ ત્રણ ઉપવાસો કર્યા અષ્ટમ ભકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દ્વાદશ ભકત પાચ ઉપવાસ કર્યા ત્યાર પછી પારણા કર્યા ફરી દશમ ભકત કર્યા દશમ ભકત કરીને પારણા કર્યા અને ત્યાર બાદ છ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ ભકત કર્યા

ચતુર્દશ ભકત કરીને પારણા કર્યા ફરી દ્વાદશ ભકત રૂપ પાચ ઉપવાસો કર્યા (करित्ता सोडससम करेति પાચ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા ફરી સોલસમ ભકત સાતઉપવાસ કર્યા (करित्ता चोद्दसम करेंति) સાત ઉપવાસ કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता अट्ठारसम करेंति " પારણા કરીને અષ્ટાદશ ભકત રૂપ આઠ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता सोलसम करेंति આઠ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ સાત ઉપવાસો કર્યા " करिता वीसइम करेति " સાત ઉપવાસો કરીને તેણે પારણા કર્યા, ત્યાર

तितम नवोपवासरूप कुर्वन्ति । कृत्वाऽष्टादश कुर्वन्ति कृत्वा विंशतितम कुर्वन्ति कृत्वा षोडश कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादश कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दश कुर्वन्ति, कृत्वा षोडश कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादश कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्दश कुर्वन्ति कृत्वा दशम कुर्वन्ति कृत्वा द्वादश कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टम कुर्वन्ति, कृत्वा दशम कुर्वन्ति कृत्वा षष्ठ कुर्वन्ति, कृ

पारणा किया-फिर ९ उपवास किये (करित्ता अट्ठारसम करेंति) उस का पारणा किया-फिर ८ उपवास किये (करित्ता वीसइम करेंति) आठ उपवास करके उस का पारणा किया-फिर ९ उपवास किये (करित्ता सोल सम करेंति) ९ उपवास करके उस का पारणा किया-फिर ७ उपवास किये (करित्ता अट्ठारसम करेंति) सात उपवास का पारणा किया-८ उपवास किये (करित्ता चोद्दसम करेंति) उन आठ उपवास का पारणा किया-फिर ६ उपवास किये (करित्ता सोलसम करेंति) ६ उपवास का पारणा किया-फिर ७ उपवास किये (करित्ता दुवालसम करेंति) ७ उपवास करके उस का पारना किया-फिर ५ उपवास किये (करित्ता चाउद्दसम करेंति) ५ उपवास करके उस का पारणा किया-फिर ६ उपवास किये (करित्ता दसम करेंति) ६ उपवास करके पारणा किया फिर ४ उपवास किये (करित्ता दुवालसम करेंति) ४ उवास का पारणा किया-पारणा करके ५ उपवास किये (करित्ता अट्ठम करेंति) ५ उपवास का पारणा किया-फिर ३ उपवास किये (करित्ता दसम

બાદ ફરી નવ ઉપવાસો કર્યા " करिता अट्ठारसम करेति" અને તેના પારણા કર્યા ત્યાર બાદ આઠ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता वीसइमकरेति " અઠ ઉપવાસો કરીને તેના પારણા કર્યા ત્યાર પછી નવ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता सोलसम करेति " નવ ઉપવાસો કરીને તેના પારણા કર્યા ત્યાર બાદ સાત ઉપવાસો કર્યા " करित्ता अट्ठारसम करेति " સાત ઉપવાસના પારણા કરીને આઠ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता चोद्दसम करेति " અને આઠ ઉપવાસોના પારણા કર્યા ત્યાર પછી ૬ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता सोलसम करेति " ૬ ઉપવાસોના પારણા કરીને સાત ઉપવાસ કર્યા " करित्ता दुवालसम करेति " સાત ઉપવાસ કરીને તેના પારણા કર્યા ત્યાર બાદ પાંચ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता चाउद्दसम करेति " પાંચ ઉપવાસો કરીને તેના પારણા કર્યા ત્યાર બાદ ૬ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता दसम करेति ૬ ઉપવાસના પારણા કર્યા, અને ત્યાર પછી ચાર ઉપવાસો કર્યા " करित्ता दुवालसम करेति " ચાર ઉપવાસના પારણા કરીને પાંચ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता अट्ठम करेति " પાંચ ઉપવાસના પારણા કર્યા અને ત્યાર બાદ ત્રણ ઉપવાસો કર્યા " करित्ता " ત્રણ

त्वाऽष्टम कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वा षष्ठ कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्थं कुर्वन्ति सर्वत्र सर्वकामगुणितेन पारयन्ति। चतुर्थ कुर्वन्तीत्यादि-सर्वत्र सर्वकामगुणितेन पारयन्तीत्यन्तस्याय निष्कर्षः-सिंहनिष्क्रीडितं तपोद्विविध महत् क्षुल्लकच । तत्रानुलोमगत्या-

---

करेंति) ३ उपवास का परणा किया फिर ४ उपवास किये (करित्ता छट्ठ करेंति) ४ उपवास का पारणा किया-फिर २ उपवास किये (करित्ता अट्ठम करेंति) २ उपवास का पारणा करके फिर ३ उपवास किये (करित्ता चउत्थ करेति) ३ उपवास का पारणा करके फिर १ उपवास किया (करित्ता छट्ठ करेति) १ उपवास का पारणा करके फिर २ उपवास किये (करित्ता चउत्थ करेति) २ उपवास का पारणा करके फिर एक उपवास किया (सव्वत्थ सव्वकामगुणिएण पारेति) पारणो जो इन्हो ने किया वह सर्वत्र विगय सहित किया

(एव खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परीवाडी छहिं-मासेहिं सत्तहिं अहोरत्तेहिं य अहासुत्त जाव अहाराहिया भवइ) इस तरह क्षुद्र सिंहनिष्क्रीडित तप की प्रथम परिपाटी है। यह छह मास और सात दिन रात तक सूत्रोक्त विधि के अनुसार यावत् आराधित होती है।

अर्थात इसके करने में सात दिन रात अधिक ६ मास का समय लगता है। यहा "सर्वकामगुणित" ऐसा जो पारणा का विशेषण

ઉપવાસોના પારણા કરીને ત્યાર પછી ચાર ઉપવાસો કર્યા "करित्ता ञ करेति" ચાર ઉપવાસના પરણા કર્યા, ત્યાર બાદ બે ઉપવાસ કર્યા "करिता अट्ठम करेति" બે ઉપવાસના પારણા ત્રણ ઉપવાસ કર્યા "करित्ता चउत्थ करेति ત્રણ ઉપવાસના પારણા કરીને એક ઉપવાસ કર્યો "करित्ता छट्ठ करेति" એક ઉપવાસના પારણા કરીને બે ઉપવાસો કર્યા "करित्ता चउत्थ करेति બે ઉપવાસના પારણા કરીને એક ઉપવાસ કર્યો "सव्वत्थ सव्व कामगुणिएण पारेति" તેઓએ બધા પારણા વિગય સહિત કર્યા હતા.

(एव खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं सत्तहिं अहोरत्तेहिंय आहासुत्त जाव अहाराहिया भवइ)

આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની આ પ્રથમ પરિપાટી છે છ માસ અને સાત દિવસ રાત સુધી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજ 'यावत्' તેની આરાધના હોય છે

એટલે કે આ વ્રતને કરવામા છ માસ અને સાત દિવસ રાત જેટલો વખત લાગે છે અહીં "सर्वकामगुणित" ને પારણાના વિશેષણ રૂપે મૂક-

चतुर्भक्तादि विंशतितमपर्यन्त, मतिलोमगत्या ।

विंशतितमभक्तादितश्चतुर्थभक्तपर्यन्त च मिलित्वा तपः क्षुल्लकमित्युच्यते । अनुलोमसमाप्त्यनन्तर मतिलोमकरणात् प्राग् मध्येऽष्टादशभक्तं भवति । चतुर्थ षष्ठाष्टमादीनि तु एकैकवृद्धया एकोपवास द्व्युपवासादीनि । इह चतुर्थषष्ठाष्टमदशम द्वादशचतुर्दशषोडशभक्तानि प्रत्येक चत्वारि २ त्रिणि अष्टादशानि, द्वे विंशतितमे एव तपोदिनानि १५४ चतुःपञ्चाशदधिक शत, पारणदिनानि ३३ त्रयस्त्रिंशद्भवन्ति।

रखा है उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यह सिंहनिष्क्रीडित तप क्षुल्लक और महत की अपेक्षा से दो प्रकार का होता है–इनमें अनुलोम गति से प्रथम चतुर्थभक्त से प्रारभ होकर विंशतितम पर्यन्त किया जाता है और प्रति लोमगति से प्रथम वि शतितम भक्तादि से प्रारभ कर चतुर्थभक्त पर्यन्त समाप्त किया जाता है। इस तरह अनुलोम प्रतिलोम विधि से किया गया यह तप क्षुल्लक निष्क्रीडित तप माना गया है। अनुलोम विधि की समाप्ति होने के बाद प्रतिलोम विधि से इसे करने के पहिले बीच में अष्टादश भक्त हो जाते हैं। ये चतुर्थ षष्ठ अष्टमादि एक एक उपवास की वृद्धि से एक उपवास दो उपवास तीन उपवास आदि वाले होते है।

इसमें चतुर्थ षष्ठ अष्टम, दशम द्वादश चतुर्दश और षोडश भक्त ये प्रत्येक क्रमश ४–४–३–३ हो जाते है, तथा विंशतितम २ उपवास दो होते है। तपस्या के दिन १५४, पारणा के दिन ३३ इस प्रकार मिला

વામા આવ્યો છે તેનો અભિપ્રાય આ પ્રમાણે છે કે સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ ક્ષુલ્લક અને મહતની દૃષ્ટિએ બે પ્રકારનુ હોય છે અનુલોમ ગતિથી પહેલા ચતુર્થ ભક્તથી આરભીને વિંશતિતમ સુધી તપ કરવામા આવે છે અને પ્રતિ લોમ ગતિથી પ્રથમ વિંશતિતમ ભક્ત વગેરે થી આરભિને ચતુર્થ ભકત સુધી પુરૂ કરવામા આવે છે, આ રીતે અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિથી કરવામા આવેલુ આ તપ ક્ષુલ્લક નિષ્ક્રીડિત તપ ગણાય છે અનુલોમ વિધિની સમાપ્તિ બાદ પ્રતિલોમ વિધિથી આ તપ આરભ કરીને તેના પહેલા વચ્ચે અષ્ટાદશ ભક્ત થઈ જાય છે આ ચતુર્થ, અષ્ઠ, અષ્ટમ વગેરે એક એક ઉપવાસની વૃદ્ધિથી એક ઉપવાસ, બે ઉપવાસ અને ત્રણ ઉપવાસ વગેરેના હોય છે

આમા ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ, ચતુર્દશ અને ષોડશ ભક્ત આ બધા અનુક્રમે ચાર ચાર, ત્રણ ત્રણ, થઈ જાય છે તેમજ વિંશતિતમ નવ ઉપવાસ બે હોય છે તપસ્યાના દિવસો ૧૫૪, અને પારણુ, ૩૩,

उभय मिलित्वा प्रथमपरिपाट्या १८७ सप्ताशीत्यधिकैकशत दिनानि भवन्ति पारणाश्च सर्वत्र सर्वकामगुणित=सविकृतिक कुर्वन्ति-इत्यर्थः। एव खलु एषा क्षुद्रसिंहनिष्क्रीडितस्य तपः कर्मणः प्रथमा परिपाटी षड्भिर्मासैः सप्तभिश्चाहोरात्रैश्च यथासूत्र सूत्रोक्तविधिना यावद् आराधिता भवति। उक्तरीत्या क्षुद्रसिंह निष्क्रीडितस्य तपसः प्रथमाया परिपाट्या सप्तरात्रिंदिवाधिकाः षण्मासा भवन्ति पारण च विकृतिसहित भवति।

इदमस्य तपस प्रथमपरिपाटीयन्त्रम्, एकमेव द्वितिय तृतीयचतुर्थ पदिपाटीनामपि यन्त्र नो यम्।

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९		
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	

तदनन्तर प्रथमपरिपाटीकरणानन्तर द्वितीयाया परिपाट्या चतुर्थं कुर्वन्ति, नवर विकृतिवर्जं पारयन्ति। पारण कुर्वन्ति, एव तृतीयाऽपि परिपाटी, नवर

कर प्रथम परिपाटी में १८७, दिन हो जाते है। पारणा के दिन विगय सहित आहार लिया जाता है। इस प्रकार इस क्षुद्र सिंह निष्क्रीडित तप की प्रथम परिपाटी ६ मास ७ दिन रात तक सूत्रोक्त विधि के अनुसार आराधित होती है। इस तप की प्रथम परिपाटी का यन्त्र उपर सस्कृत टीका मे दिया है। इसी तरह, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ परिपाटी काभी यत्र जानना चाहिये।

(तयाणतर पारेंति)

जब प्रथम परिपाटी के अनुसार क्षुद्र सिंह निष्क्रीडित तप आराधित हो चुकता है तब उसके बाद द्वितीय परिपटी में जो चतुर्थ भक्त की तपस्या करते ह वे विकृतिवर्ज आहार का पारणा करते है।

આમ બનેનો મરવાળો પ્રથમ પરિપાટીમા ૧૮૭ દિવસનો હોય છે પારણાના દિવસે વિગય સહિત આહાર કરવામા આવે છે આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની પ્રથમ પરિપાટી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ છ માસ અને સાત દિવસ રાત સુધી આરાધિત હોય છે આ તપની પ્રથમ પરિપાટીનુ યત્ર ઉપર સસ્કૃત ટીકામા બતાવ્યા મુજબ છે આ પ્રમાણેજ દ્વિતીય, તૃતીય ચતુર્થ પરિપાટીના યત્ર વિષે પણ જાણવુ જોઇએ

(તયાણતર પરિતિ)

જ્યારે પ્રથમ પરિપાટી મુજબ ક્ષુદ્રસિંહ-નિષ્ક્રીડિત તપની આરાધના પૂરી થઈ જાય છે ત્યારે દ્વિતીય પરિપટીમા ચતુર્થ ભક્તની તપસ્યા કરનારા વિકૃતિ વર્જ આહારના પારણા કરે છે

पारणके-अलेपकृत=अस्निग्ध=रूक्ष पारयन्ति। एव चतुर्ष्वपि परिपाटी नवर पारणके आचामाम्लेन पारयन्ति=रूक्षान्नमचित्तजलप्लावित कृत्वा तेन पारण कुर्वन्तीत्यर्थः ॥ सू० ६ ॥

मूलम्-तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलिय तवोकम्म दोहि संवच्छरेहि अट्ठावीसाए अहोरत्तेहि अहासुत्त जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वदति नमंसति वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी-इच्छामो णं भते। महालय सीहनिक्कीलिय तहेव जहा खुड्डागनवरं चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडीए कालो एगेणं सवच्छरेणं छहि मासेहि अट्ठारसहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ । सव्वपि सीहनिक्कीलिय छहिं वासेहि दोहि य मासेहि वारसेहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ। तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालय सीहनिक्कीलिय अहासुत्त जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति वदित्ता नमासित्ता बहूणि चउत्थ जाव विहरति ॥ सू० ७ ॥

इसी तरह तीसरी भी परिपाटी होती है। परन्तु इसमें जो पारणा होता है वह विगय वर्जित रूक्ष अन्न का होता है। इसी तरह की चोथी परिपाटी होती है परन्तु इस मे जो पारणा होता है वह चावल आदि का धोया हुआ धोवान पानी में अर्थात् अचित्त जल से प्लावित हुए रूक्ष अन्न याने आयबिल का होता है ॥ सूत्र ६ ॥

આ પ્રમાણે ત્રીજી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા વિગય વગરના રૂક્ષ અન્નના હોય છે આ પ્રમાણે ચોથી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા ભાત વગેરેના ઓસામણમા એટલે કે અચિત્ત પાણીથી પ્લાવિત થયેલા રૂક્ષ અન્ન અર્થાત્ આયબિલના હોય છે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

टीका-ततस्तदनन्तर खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगारा 'खुड्डाग' क्षुल्लक= लघुक, सिंहनिष्क्रीडित-चतसृभिः परिपाटीभिर्युक्त तप कर्म द्वाभ्या सवत्सराभ्या-मष्टाविंशत्याऽहोरात्रैः 'अहासुत्त' यथासूत्र सूत्रोक्तविधिना, यावद्=इह यावत् करणाद् ज्ञानादिमोक्षमार्गानतिक्रमेण क्षायोपशमिकभावानतिक्रमेण वा 'आणाए' आज्ञया=भगवदाज्ञया मवचनानुसारेण आराध्य, यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवो पागच्छन्ति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते=स्तुवन्ति, नमस्यति=प्रणमन्ति, वन्दित्वा नत्वा एवमवदन्

हे भदन्त ! वयमिच्छामः खलु 'महालय' महत् सिंहनिष्क्रीडित तपः कर्म कर्तुम्, ततः स्थविराज्ञया महाबलप्रमुखा सप्तानगाराः महासिंहनिष्क्रीडित तपः

'तएणं ते महब्बलपामोक्खा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा) वे महाबल प्रमुख सातों ही अनगार (खुड्डाग सीह निक्कीलिय) लघु सिंह निष्क्रीडित तप कर्म को (दोहिं सवच्छरेहिं अट्ठोविसाए अहोरत्तेहिं) दो वर्ष २८ दिन रात तक (अहासुत्त) यथा सूत्र (जाव आणाए आराहेत्ता) यावत् भगवान की इस तप को करने की जैसी आज्ञा है उस के अनुसार आराधित कर (जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) जहाँ स्थाविर भगवान थे वहा गये। वहा जाकर उन्होने भगवत स्थविरो को वदन की-उन्हे नमस्कार किया वदना नमस्कार करके फिर वे इस प्रकार बोले (इच्छामो ण भते! महालय सीहनिक्कीलिय

'तएणं ते महाबलपामोक्खा' ઇત્યાદિ !

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારબાદ 'ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा' મહાબલ પ્રમુખ સાતે અનગારો (खुड्डाग सीहनिक्कीलिय) લઘુસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરીને (दोहिं सवच्छरेहिं अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं) બે વર્ષ ૨૮ દિવસ રાત સુધી (अहासुत्त) સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ (जाव आणाए आराहेत्ता) તેમજ તેને આરાધવાની ભગવાનની જેવી આજ્ઞા છે, તે મુજબ આરાધીને

(जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी)

જ્યા સ્થવિર ભગવાન હતા ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેમણે ભગવત સ્થવિરોની વદના કરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ એ વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ

पारणके-अलेपकृत=अस्निग्ध=रूक्ष पारयन्ति। एव चतुर्ष्वपि परिपाटी नवर पारणके आचामाम्लेन पारयन्ति=रूक्षान्नमचित्तजलप्लावित कृत्वा तेन पारण कुर्वन्तीत्यर्थः ॥ सू० ६ ॥

मूलम्-तएण ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलिय तवोकम्मं दोहि संवच्छरेहिं अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्त जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वदति नमंसति वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी-इच्छामो णं भते। महालय सीहनिक्कीलिय तहेव जहा खुड्डागं नवर चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडीए कालो एगेणं सवच्छरेणं छहि मासेहि अट्ठारसहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ । सव्वपि सीहनिक्कीलिय छहिं वासेहि दोहि य मासेहि बारसेहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ। तएणं ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा महालय सीहनिक्कीलिय अहासुत्त जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदंति नमसति वदित्ता नमासित्ता बहूणि चउत्थ जाव विहरति ॥ सू० ७ ॥

इसी तरह तीसरी भी परिपाटी होती है। परन्तु इसमें जो पारणा होता है वह विगय वर्जित रूक्ष अन्न का होता है। इसी तरह की चोथी परिपाटी होती है परन्तु इस मे जो पारणा होता है वह चावल आदि का धोया हुआ धोवान पानी में अर्थात् अचित्त जल से प्लावित हुए रूक्ष अन्न याने आयबिल का होता है ॥ सूत्र ६ ॥

આ પ્રમાણે ત્રીજી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા વિગય વગરના રૂક્ષ અન્નના હોય છે આ પ્રમાણે ચોથી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા ભાત વગેરેના ઓસામણમા એટલે કે અચિત્ત પાણીથી પ્લાવિત થયેલા રૂક્ષ અન્ન અર્થાત્ આયબિલના હોય છે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

टीका-ततस्तदनन्तर खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगारा 'खुड्डाग' क्षुल्लक= लघुक, सिंहनिष्क्रीडित-चतसृभिः परिपाटीभिर्युक्त तप कर्म द्वाभ्या सवत्सराभ्या-मष्टाविंशत्याऽहोरात्रैः 'अहासुत्त' यथासूत्र सूत्रोक्तविधिना, यावद्=इह यावत् करणाद् ज्ञानादिमोक्षमार्गानतिक्रमेण क्षायोपशमिकभावानतिक्रमेण वा 'आणाए' आज्ञया=भगवदाज्ञया प्रवचनानुसारेण आराध्य, यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवो पागच्छन्ति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते=स्तुवन्ति, नमस्यति=प्रणमन्ति, वन्दित्वा नत्वा एवमवदन्

हे भदन्त ! वयमिच्छामः खलु 'महालय' महत् सिंहनिष्क्रीडित तपः कर्म कर्तुम्, तत' स्थविराज्ञया महाबलप्रमुखा सप्तानगाराः महासिंहनिष्क्रीडित तपः

'तएण ते महब्बलपामोक्खा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा) वे महाबल प्रमुख सातों ही अनगार (खुड्डाग सीह निक्कीलिय) लघु सिंह निष्क्रीडित तप कर्म को (दोहिं सवच्छरेहिं अट्ठाविसाए अहोरत्तेहिं) दो वर्ष २८ दिन रात तक (अहासुत्त) यथा सूत्र (जाव आणाए आराहेत्ता) यावत् भगवान की इस तप को करने की जैसी आज्ञा है उस के अनुसार आराधित कर (जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) जहां स्थाविर भगवान थे वहा गये। वहा जाकर उन्होने भगवत स्थ विरो को वदन की-उन्हें नमस्कार किया वदना नमस्कार करके फिर वे इस प्रकार बोले (इच्छामो ण भते! महालय सीहनिक्कीलिय

'तएण ते महाबलपामोक्खा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) त्यारબાદ 'ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा' મહાબલ પ્રમુખ સાતે અનગારો (खुड्डाग सीहनिक्कीलिय) લઘુસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરીને (दोहि सवच्छरेहि अट्ठावीसाए अहोरत्तेहि) બે વર્ષ ૨૮ દિવસ રાત સુધી (अहासुत्त) સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ (जाव आणाए आराहेत्ता) તેમજ તેને આરાધવાની ભગવાનની જેવી આજ્ઞા છે, તે મુજબ આરાધીને

(जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी)

જ્યા સ્થવિર ભગવાન હતા ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેમણે ભગવત સ્થ વિરોની વદના કરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ એ વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ

कर्म कर्तुं प्रवृत्ताः, 'तहेव' तथैव=महासिंहनिष्क्रीडितमपि तद्वदेव भवति-'जहा खुड्डाग' यथा क्षुल्लक=लघुसिंहनिष्क्रीडित, नवर विशेषस्तु 'चोत्तीसइमाओ नियत्तए' चतुस्त्रिंशत्तमाद् निर्वर्तते-अयमर्थः-चतुर्थभक्तमेकोपवासरूपमादितः कृत्वाऽनुलोमगत्या पूर्वोक्त-क्षुल्लकसिंह निष्क्रीडिततपः क्रमवत् षोडशोपवासरूप चतुस्त्रिंशत्तमपर्यन्त करोति पुनस्तस्मान्निवर्तते=प्रत्यावर्तते, तद् यदा-चतुस्त्रिंशत्तम

तहेव जहा खुड्डाग नवर चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडिए कालो एगेण संवच्छरेण छहिं मासेहिं अट्ठारसहिय अहोरत्तेहिं य समप्पेइ) हे भदन्त ! हम लोग महान् सिंह निष्क्रीडित तप कर्म करना चाहते हैं। इसके बाद वे स्थविर भगवान् की आज्ञा से महाबल प्रमुख सातों ही अनगार वृहत् सिंह निष्क्रीडित तप कर्म करने में प्रवृत्त हो गये।

यह महासिंहनिष्क्रीडित तप भी क्षुल्लकसिंह निष्क्रीडित तप की ही तरह होता है-परन्तु इसमे इतनी विशेषता रहती है कि इस तप को करने वाला संयमी एक उपवास रूप चतुर्थ भक्त को सर्व प्रथम करता है फिरवह अनुलोम गति से पूर्वोक्त क्षुल्लकसिंह निष्क्रीडित तप कर्म को आराधित करने के क्रम की तरह सोलह उपवास रूप चतुस्त्रिंशत्तम पर्यंत इस तप को करता है।

बाद में वहा से लौटता है-लौटने का क्रम इस प्रकार है-जब यह

(इच्छामो ण भंते ! महालय सीहनिक्कीलिय तहेव जहा खुड्डाग नवर चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडिए कालो एगेण संवच्छरेण छहिं मासेहिं अट्ठारसहिय अहोरत्तेहिं य समप्पेइ)

હે ભદ્દત ! અમે મહાન સિંહનિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરવા ઇચ્છીએ છીએ ત્યાર બાદ સ્થવિર ભગવાનની આજ્ઞાથી મહાબલપ્રમુખ સાતે અનગારો મહાન સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મમા પ્રવૃત્ત થઈ ગયા

મહાસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની વિધિ પણ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની વિધિની જેમજ હોય છે પણ તેના કરતા તેમા એટલી વિશેષતા હોય છે કે આ તપને આચરનાર સંયમી એક ઉપવાસ રૂપ ચતુર્થ ભક્તને સૌ પહેલા આચરે છે ત્યાર બાદ તે અનુલોમ ગતિથી પૂર્વે વર્ણવેલા ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મના આરાધન ક્રમની જેમજ સોળ ઉપવાસ રૂપ ચતુસ્ત્રિંશત્તમ સુધી આ તપને કરે છે

करणानन्तर प्रतिलोमगत्या प्रत्यावृत्तिकाले मध्ये पञ्चदशोपवासरूपं द्वात्रिंश भक्त कृत्वा पुनः षोडशोपवासरूप चतुस्त्रिंशत्तम करोति, ततश्चतुर्दशोपवासरूप त्रिंशत्तम कृत्वा द्वात्रिंश करोति एव पूर्वोक्तक्रमेण ततश्चतुर्थभक्तपर्यन्त करोति । इद महासिंहनिष्क्रीडितस्य तपसः प्रथमपरिपाटी यन्त्रत्-

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	१०	९
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	१०	९
११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६							
११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६	१५						

इमेऽङ्का उपवासना निवेशिताः । एवमेव द्वितीयतृतीय चतुर्थपरिपाटीना प्रत्येक यन्त्र वो यम् ।

इह महासिंह निष्क्रीडिते तपस्येकस्यां परिपाटयामनुलोमप्रतिलोमतश्च[1]तुर्य-षष्ठाष्टमादि त्रिंशत्तमपर्यन्तानि चत्वारि चत्वारि [2]'द्वात्रिंशानि त्रीणि, [3]'द्वे चतुस्त्रिंशत्तमे' भवन्ति ।

सोलह उपवास कर चुकता है-तब प्रतिलोम गति से प्रत्यावृत्ति काल मे बीच मे यह १५ उपवासरूप द्वात्रिंशत् भक्त करता है-पुनः सोलह उपवासरूप चतुस्त्रिंशत्तम भक्त करता है। फिर चतुर्दश उपवास रूप तीस भक्त करता है-इन्हें कर के फिर १५ उपवास करता है। इस प्रकार पूर्वोक्त क्रम से यह चतुर्थभक्त पर्यन्त तपस्या करता है। इस महासिंह निष्क्रीडित तप का प्रथम परिपाटीयन्त्र उपर सस्कृत टीका में दिया है। इस प्रकार समझ लेवें।

यन्त्र मे जो अक दिये है वे अक उपवासों के हैं। इसी तरह द्वितीय तृतीय और चतुर्थ परिपाटीयो के प्रत्येक के अक जानना चाहिये। इस महासिंह निष्क्रीडित तप मे एक परिपाटी मे अनुलोम प्रतिलोम की

ત્યાર બાદ તે ત્યાથી પાછો ફરે છે પાછા ફરવાનો ક્રમ આ પ્રમાણે છે જ્યારે તે સોળ ઉપવાસો કરી લે છે ત્યારે પ્રતિલોમ ગતિથી પ્રત્યાવૃત્તિ કાળમા વચ્ચે પદર ઉપવાસ રૂપ દ્વાત્રિંશત ભકત કરે છે ફરીતે સોળ ઉપવાસ રૂપ ચતુસ્ત્રિંશત્તમ ભકત કરે છે ત્યાર બાદ ચતુર્દશ ઉપવાસ રૂપ ત્રીશ ભકત કરે છે અને ત્યાર પછી પદર ઉપવાસ કરે છે આ રીતે પૂર્વો-ત ક્રમથી તે ચતુર્થ ભકત પર્યન્ત તપસ્યા કરે છે મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપનુ પ્રથમ પરિ-પાટી યત્ર ઉપર સસ્કૃત ટીકામા બતાવ્યા પ્રમાણે સમજી લેવુ

આ અકો ઉપવાસો ના છે આ પ્રમાણે જ દરેક બીજી, ત્રીજી અને ચોથી પરિપાટીઓના અકો જાણવા જોઇએ મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપમા એક પરિપાટિમા અનુલોમ પ્રતિલોમની અપેક્ષા ચતુર્થ, પષ્ઠ, અષ્ટમ, વગેરેથી

इह प्रत्येकपरिपाट्या मनुलोममतिलोमत सर्वाणि तपोदिनानि सकलनया ४९७सप्तनवत्यधिकानि चत्वारि शतानि,तथा पारणदिनानि-६१एकाधिक षष्ठिमख्यकानि भवन्ति, एषामुभयेषामाकलनेन यावान् कालो भवति, त प्रदर्शयितुमाह 'एगाए परिवाडीए' इत्यादि। एकस्याः परिपाट्याः कालः-एकेन सवत्सरेण षड्भिर्मासैरष्टादशभिश्चाहोरात्रै 'समप्पेइ' समाप्यते सपूर्णो भवति.। 'सव्वपि' सर्वमपि अशेषमपि चतसृभिः परिपाटीभिर्युक्तमित्यर्थ, 'सीहनिक्कीलिय' सिंह निष्क्रीडित तप.- षड्भिर्वर्षैर्द्वाभ्या च मासाभ्या द्वादशभिश्चाहोरात्रै पारण दिनैः 'समप्पेइ' समाप्यते= सपूर्ण भवति-यथासूत्र यावदाराधित भवतीत्यर्थः

अपेक्षा चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, आदि से लेकर त्रिंशत्तम-१४ उपवासो-तक सब उपवास चार चार हो जाते हैं। अर्थात् प्रथम भक्त ४, चतुर्थ भक्त ४ षष्ट भक्त ४ अष्टम भक्त ४,इत्यादि १४ उपवासों तक जानना चाहिये। १५ उपवास ३, और १६ उपवास २ हो जाते हैं।

यहां प्रत्येक परिपाटी मे अनुलोम प्रतिलोम विधि के अनुसार समस्त तपस्या के दिनों की सख्या मिलाकर ४९७ होती है। पारणा के दिनों की सख्या ६१। इन दोनो के सकलन से जितना समय होता है-सूत्रकार उसे "एगाए परिवाडी ए" इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते हैं-वे कहते हैं कि एक परिपाटी का काल एक वर्ष ६ मास और १८रात दिनो मे समाप्त होता है। (सव्व वि सीहनिक्कीलिय छहिं वासेहिं दोहिं मासेहिं बारसहिय अहोरत्ते हिं य समप्पेइ) और समस्त यह सिंह निष्क्रीडित तप छह वर्ष दो मास एव १२ दिन रात मे समाप्त होता है।

ભાંડીને ત્રિરાત્તમ-૧૪ ઉપવાસો-સુધી બધા ઉપવાસો ચારચાર હોય છે એટલે કે પ્રથમ ભક્ત ૪ ચતુર્થ ભક્ત ૪, ષષ્ઠ ભક્ત ૪, અષ્ટમ ભક્ત ૪, વગેરે ૧૪ ઉપવાસો સુધી જાણવુ જોઇએ ૧૫ ઉપવાસ ૩ અને ૧૬ ઉપવાસ ૨ થઇ જાય છે

આ પ્રમાણે અહીં દરેકે દરેક પરિપાટિમા અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિ મુજબ તપસ્યાના બધા દિવસોની ગણત્રી કરીયે તો ૪૯૭ થાય છે પારણાના દિવસોની સખ્યા ૬૧ હોય છે આ બનેના સરવાળાના જેટલા દિવસો થાય છે સુત્રકાર 'एगाए परिवाडीए" વગેરે પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે સૂત્રકાર કહે છે કે એક પરિપાટીનો કાળ એક વર્ષ છ માસ અને અઢાર દિવસોમા પૂરો થાય છે (सव्व वि सीहनिक्कीलिय छहिं वासेहिं दोहिं मासेहि वारसहिय अहोरत्तेहि य समप्पेइ અને આ સિંહ નિષ્ક્રીયડિત તપને સપૂર્ણ પણે પૂરૂ થવામા છ વર્ષ બે માસ અને બાર દિવસ રાત જેટલો વખત લાગે છે —

ततस्तदनन्तर खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगाराः ' महालय ' महत्, सिंह निष्क्रीडित यथासूत्र-सूत्रानतिक्रमेण यावद् आज्ञया आराध्य यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नत्वा बहूनि बहुविधानि चतुर्थ यावद् चतुर्थषष्ठाऽष्टमादीनि तपासि कुर्वन्तो विहरन्ति. ॥ सू० ७ ॥

मूलम्-तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खदओ नवर थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वय दुरूहति, दुरूहित्ता जाव दोमासियाए सलेहणाए सवीस भत्तसय चउरासीइं वाससयसहस्साइ सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता चुलसीइ पुव्वसयसहस्साइ सव्वाउयं पालइत्ता जयते विमाणे देवत्ताए उववन्ना। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं वत्तीसि सागरोवमाइ ठिई तत्थणं महब्बल-

(तएण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालय सिंह निक्कीलिय अहासुत्त जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति) इस प्रकार वे महाबल प्रमुख सातो ही अनगार इस महासिंह निष्क्रीडित तप को यथा सूत्र यावत् आराधित करके जहा स्थविर भगवत थे वहा आये। (उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता, बहूणि चउत्थ जाव विहरति) वहा आकर उन्हों ने स्थविर भगवतो को वदना की नमस्कार किया-और वदना नमस्कार करके फिर वे चतुर्थ षष्ठ अष्टमादि तपो को करते हुए विहार करने लगे ॥सू०७॥

(तएण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालय सिंहनिक्कीलिय अहासुत्त जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति)

આ રીતે યથાસૂત્ર અને યાવત્ યથાવિધિ મહાસિંહનિષ્ક્રાડિત તપને આરાધીને મહાબલ પ્રમુખ સાતે અનગારો જ્યા સ્થવિર ભગવત હતા ત્યા આવ્યા

(उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता, बहूणि चउत्थ जाव विहरति)

ત્યા જઈને તેમણે સ્થવિર ભગવતો ને વદન અને નમસ્કાર કર્યા, અને વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેઓ ત્યાર બાદ ચતુર્થ ષષ્ઠ અષ્ટમ વગેરે તપોને

वज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई महव्वलस्स देवस्स पडिपुन्नाइं वत्तीस सागरोवमाइं ठिई ॥सू०८॥

टीका-'तएण ते' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगारास्तेनोदारेण इहलोकाद्याशंसारहितत्वेन प्रधानेन तपः कर्मणा 'सुक्का' शुष्काः शुष्कशरीराः रक्तमांसशोषणात् 'भुक्खा' बुभुक्षिताः बहुतपस्वित्वात्। 'जहा खंदओ' यथा स्कन्दकः स्कन्दकनामकोऽनगारः भगवतीसूत्रे द्वितीयशतके प्रथमोद्देशके वर्णितस्तथा सजाता इत्यर्थः, नवर-एतावान् विशेषः-'थेरे' स्थविरान् स्कन्दको महावीरमापृष्टवान् एते तु स्थविरानित्यर्थः आपृच्छ्य 'चारुपव्वय'

'तएण ते महब्बलपामोक्खा' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते महब्बल पामोक्खा सत्त अणगारा) वे महबल प्रमुख सातो ही अनगार (तेण ओरालेण सुक्का भुक्खा जहा खंदओ) भगवती सूत्र के द्वितीय शतक के प्रथम उद्देशक में वर्णित स्कंदक मुनि की तरह उसे इहलोक परलोक आदि की आशंसा से रहित होने के कारण प्रधान तप से शुष्क शरीर एवं बुभुक्षित (भूख युक्त) हो गये। (नवर थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वय दुरूहंति' दुरूहित्ता जाव दो मासियाए सलेहणाए सवीस भत्तसय चउरासीइ वाससयसहस्साइ सामण्णपरियाग पाउणंति) किन्तु स्कंदक मुनि की अपेक्षा इन सातों अनगारो मे यह विशेषता हुई कि स्कंदक मुनि ने महावीर प्रभु से आज्ञा ली और इन्हों ने स्थविर भगवतो से आज्ञा ली

'तएण ते महाब्बल पामोक्खा सत्त अणगारा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (महाब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा) મહાબલ પ્રમુખ સાતે અનગારો (तेण ओरालेण सुक्का भुक्खा जहा खंदओ) ભગવતી સૂત્રના બીજા શતકના પહેલા ઉદ્દેશકમા વર્ણિત સ્કંદક મુનિની જેમ તેઓ ઇહલોક અને પરલોક વગેરેની આકાંક્ષા (ઇચ્છા) રહિત હોવા બદલ પ્રધાન તપથી શુષ્ક શરીર અને બુભુક્ષિત (ભૂખ્યા) થઇ ગયા

(नवर थेरे आपुच्छित्ता चारु पव्वय दुरूहंति, दुरूहित्ता जाव दो मासियाए सलेहणाए सवीस भत्तसय च उरासीइ वाससय सहस्साइ सामण्णपरियागं पाउणंति)

સ્કંદક મુનિએ જ્યારે ભગવાન મહાવીર પાસે આજ્ઞા મેળવી હતી ત્યારે એ સાતે અનગારોએ ભગવત સ્થવિરો પાસેથી આજ્ઞા મેળવી સ્કંદમુની કરતા એમના વિશે આટલુ જ વધારે જાણવુ જોઇએ આ પ્રમાણે સાતે અનગારો

चारुपर्वत चारुनामक पर्वत ' दुरूहति ' दूरोहन्ति=आरोहन्ति, ' दुरूहित्ता' दूरुह्य =आरुह्य यावद् पृथिवीशिलापट्टक प्रमार्ज्य पादपोपगमन स्वीकृत्य द्विमासिक्यास-लेखनया सविंशतिक भक्तशत 'चउरासीइ वाससयसहस्साइ' चतुरशीतिं वर्षशतसह-स्राणि=चतुरशीतिलक्षवर्षाणि, श्रामण्यपर्याय=चारित्रपर्याय पालयन्ति, पालयित्वा चतुरशीतिं पूर्वशतसहस्राणि=चतुरशीतिलक्षपूर्वाणि सर्वायु' पालयित्वा जयन्ते विमाने देवतयोपपन्नाः=देवत्वेनोपपातमुत्पत्तिं प्राप्ताः ।

तत्र खलु अस्त्येकेषा देवाना द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि यावत् स्थिति । तत्र खलु महाबलवर्जाना षण्णा देवाना देशोनानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः । महाबलस्य देवस्य प्रतिपूर्णानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिर्जाता ॥ सू०८ ॥

इस तरह ये सातों ही अनगार भगवत स्थविरो से आज्ञा लेकर चारु नाम के पर्वत पर पहुँचे-वहा पहुँच कर उन्हों ने वहां के शिलापट्टक की प्रमार्जना की-बाद मे पादपोपगमन सथारा धारण कर लिया। दो मास की सलेखना से १२० भक्तो का छेदन कर उन्हों ने ८४ लाख वर्ष तक श्रामण्य पर्याय का पालक किया ।

इस तरह अपनी ८४ लाख पूर्व की समस्त आयु समाप्त कर अन्त में देह का परित्याग कर वे पांच अनुत्तर विमान के अन्दर जयन्त विमान मे (तत्थण अत्थे गइयाण देवाण वत्तीस सागरोवमाइ० ठिई तत्थण महब्बलवज्जाण छण्ह देवाण देसूणाइ बत्तीस सागरोवमा इ ठिई महब्बलस्स देवस्स पडिपुन्नाइ वत्तीस सागरोवमाइ ठिई) वहां कितने क देवो की बत्तीस सागर प्रमाण स्थिति है सो महाबल को छोड़कर छह देवो की स्थिति कुछ कम बत्तीस सागर की हुई और महाबल की स्थिति पूर्ण बत्तीस सागर की हुई । " सूत्र ९ "

ભગવત સ્થવિરોની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને ચારુ નામે પર્વત ઉપર પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેઓએ પાદપોપગમન સથારો ધારણ કર્યો

આ પ્રમાણે પોતાનો ૮૪ લાખ પૂર્વનુ સપૂર્ણ આયુષ્ય પૂરુ કરીને અન્તે દેહ છોડીને તેઓ પાચ અનુત્તર વિમાનમા જયન્ત નામના વિમાનમા દેવના પર્યાયથી જન્મ પામ્યા

(तत्थण अत्थेगइयाण देवाण वत्तीस सागरोवमाइ० ठिई-तत्थण महब्बल वज्जाण छण्ह देवाण देसूणाइ वत्तीस सागरोवमाइ ठिई)

ત્યના કેટલાક દેવોની બત્રીશ સાગર પ્રમાણુ સ્થિતિ છે મહાબલને બાદ કરતા બીજા ૭ દેવોની સ્થિતિ બત્રીશ સાગર પ્રમાણુમા થોડી ઓછી થઇ અને મહાબલની સ્થિતિ પૂરી બત્રીસ સાગર જેટલી થઇ ॥ સૂત્ર " ૮ "

मूलम्–तएणं ते महब्बलवज्जा छप्पिय देवा ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु रायकुलेसु पत्तेय पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायायासी, त जहा पडिबुद्धी इक्खागराया, चदच्छाए अगराया, सखे कासिराया, रुप्पी कुणालाहीवई, अदीणसत्तूकुरुराया, जितसत्तू पचालाहिवई॥ सू०९ ॥

टीका–'तएण ते' इत्यादि। ततस्तदनन्तर ते महाबलवर्ज्याः षडपि देवास्तस्माद् देवलोकाद् जयन्ताद् विमानाद्। 'आउक्खएण' आयुः क्षयेण–देवसम्बन्धिन आयुष्कर्मदलिकनिर्जरणेन, देवसम्बन्धायुः क्षयेण 'भवक्खए' भवक्षयेण भवनिबन्धनभूतकर्मणा गत्यादीना निर्जरण 'ठिइक्खएणं' स्थितिक्षयेण=देवसम्बन्धिस्थितिक्षयेण तेनानन्तर चय=देवशरीर त्यक्त्वा इहैव जम्बूद्वीपे नाम्नि द्वीपे

'तएण ते महब्बलवज्जा छप्पियदेवा' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (ते महब्बल वज्जिया) महाबल के सिवाय वे (छप्पिय देवा) छहो देव (ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण) उस देवलोक से जयन्त विमान से–देवलोक सबन्धी आयु कर्म के दलिको की निर्जना हो जाने से अर्थात् देव पर्याय सबन्धी आयु के क्षय हो जाने से भव के कारण भूत गत्यादि कों की निर्जना हो जाने से स्थिति के क्षय हो जाने से (अणतर) उसी समय (चय चइत्ता) देव शरीर को छोड़कर (इहेव जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे) इसी जबू द्वीप नाम के द्वीप में, भारतवर्ष मे–भरत क्षेत्र में–

'तएण ते महब्बल वज्जा छप्पिय देवा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારબાદ (ते महब्बल वज्जिया) મહાબલ સિવાય તે (छप्पियदेवा) છ દેવો (ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण) તે દેવલોકના જયત વિમાનથી દેવલોક સબધી આયુ કર્મના દલિકોની નિર્જરા થઈ જવાથી એટલે કે દેવ પર્યાય સબધી આયુષ્ય ક્ષય થવાથી ભવના કારણ ભૂત ગતિ વગેરેની નિર્જરા થઈ જવાથી, સ્થિતિનો ક્ષય હોવાથી (અર્णતર) તે સમયેજ (चयचइत्ता) દેવ શરીરને છોડીને (इहेव जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे) જબૂદ્વીપ નામના એજ દ્વીપમા–ભારત વર્ષમા–ભરત ક્ષેત્રમા

(मध्यजम्बूद्वीपे) भारते वर्षे भरत-क्षेत्रे, विशुद्धपितृमातृवंशेषु राजकुलेषु प्रत्येक २ कुमारतया ' पच्चायाया ' इत्था प्रत्युत्पन्ना अभूवन् तद्यथा-१. मति बुद्धिः-इक्ष्वाकुराज प्रथमो जीव प्रतिबुद्धि नामकः कोशलदेशाधिपतिः । यत्रदेशे-अयोध्यानगरी २ चन्द्रच्छायः-अङ्गराजः द्वीतीयो-धरणि जीवः चन्द्रच्छायनामाऽङ्ग देशाधिपतिः यत्र चम्पानगरी ३ शङ्ख काशिराज' तृतीयोऽभिचन्द्रजीवः शङ्खनामा-काशिदेशाधिपतिः यत्र वाराणसी नगरी । ४ रुक्मी-कुणालाधिपतिः चतुर्थः पूरण जीवः -रुक्मीनामकः कुणालदेशाधिपति यत्र श्रावस्ती नगरी । ५ अदीनशत्रुः-कुरुराजः, पञ्चमो वसु जीवोऽदीनशत्रुनामक' कुरुदेशाधिपति. । यत्र

(विसुद्धपिइमाइवंसेसु) विशुद्ध माता पिता के वंश वाले राज कुलों मे (पत्तेय २) पृथक २ (कुमारत्ताए पच्चायायासी) पुत्र रूप से उत्पन्न हुए । (तंजहा) उनमें (पडिबुद्धी इक्खागराया चंदच्छाए अंगराया संखे कासि राया, रुप्पी कुणालाहिवइ, अदीणसत्तु कुरु राया, जियसत्तू पंचालाहिवई) प्रथम जो अचल का जीव था वह कोशल देश का अधिपति हुआ, जिस में अयोध्या नगरी है-इसका नाम वहा प्रतिबुद्ध हुआ । दूसरा जिसका नाम धरण था वह चन्द्र छाया नाम का अङ्ग देश का अधिपति हुआ । इस अंग देश में चंपा नगरी है । तीसरा जो अभिचन्द्र का जीव था वह काशी देश का राजा हुआ । वहा, इसका नाम शंख हुआ । इस काशी देश मे वनारस नाम की नगरी है । चौथा जो पूरण का जीव था वह कुणाल देश का अधिपति हुआ उसका वहा नाम रुक्मी था । इस कुणाल देश मे श्रावस्ती नगरी हे । पाचवा जो

"विसुद्धपिइमाइवंसेसु" વિશુદ્ધ માતાપિતાના વંશવાળા રાજકુળોમા (पत्तेयं२) જુદા જુદા (कुमारत्ताए पच्चायायासी) પુત્ર રૂપે જન્મ પામ્યા (तं जहा) આ બધામા

(पडिबुद्ध इक्खागराया चंदच्छाए अंगराया संखे कासिराया रुप्पी कुणाला हिवइ अदीणस त्तु कुरुराया, जियसत्तू पंचालाहिवई)

પહેલો અચલનો જીવ કોશલ દેશનો અધિપતિ થયો કોશલ દેશનું પાટ નગર અયોધ્યા નગરી હતુ અચલનો જીવ ત્યા પ્રતિબુદ્ધ નામે પકાયો

બીજો ધરણ અંગ દેશનો અધિપતિ થયો તેનુ નામ ચંદ્રચ્છાય હતુ ત્રીજા અભિચંદ્રનો જીવ કાશી દેશનો રાજા થયો તે ત્યા શંખ નામે પ્રસિદ્ધિ પામ્યો આ કાશી દેશમા બનારસનામે નગરી છે ચોથા પૂરણનો જીવ કુણાલ દેશનો અધિપતિ થયો ત્યા તેનુ નામ રુકમી હતુ આ કુણાલદેશમા

देशे-हस्तिनागपुरम् । ८. जिनशत्रु पाञ्चालाधिपतिः, षष्ठो वैश्रमण जीवो जित शत्रुनामकः पाञ्चालदेशाधिपतिः, यत्रदेशे काम्पिल्य नगरम् । एव षडपि पृथक् २ स्थानेषु राजानो जाताः ॥ सू०९ ॥

मूलम्-तएणं से महब्बले देवे तीहिं णाणेहिं समग्गे उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु जइएसु सउणेसु पयाहिणाणुकूलसि भूमिसर्प्पसि मारुयसि पवायसि निप्फन्नसस्समेइणीयसि कालंसि पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु अद्धरत्तकालसमयसि अस्सिणीणक्खत्तेण जोगमुवागएण जे से हेमताण चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुणसुद्धे तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थि पक्खेण जयताओ विमाणाओ बत्तीस सागरोवमट्ठिईयाओ अणतर चय चइत्ता इहेव जबूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुभगस्स रन्नो पभावईए देवीए कुच्छिसि आहारवक्कंतीए सरीरवक्कतीए भववक्कतीए गब्भत्ताए वक्कते तरयणि च णं चोद्दसमहासुमिणा वन्नओ भत्तारकहण सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ ॥ सू० १०॥

वसु का जीव था वह कुरु देश का अधिपति हुआ-वहा उसका नाम अदीन शत्रु था । कुरु देश में हस्तिनाग पुर है । तथा छठा जो वैश्रवण का जीव था पाञ्चाल देश का अधिपति हुआ-इसका वहा नाम जित शत्रु पड़ा था । इस मे कपिला नाम की नगरी है ।

इस तरह ये छहो पृथक् २ स्थानो मे राजा हुए । सूत्र " ९ "

શ્રાવસ્તી નગરી છે પાચમેા વસુનેા જીવ કુરુદેશનેા અધિપતિ થયેા તેનુનામ અદીન શત્રુ હતુ કુરુ દેશમા હસ્તિનાપુર નગર છે તેમજ છઠ્ઠો વૈશ્રવણુનેા જીવ પાચાલ દેશનેા અધિપતિ થયેા તેનું નામ જિત રાત્રુ હતુ પાચલ દેશમા કપિલા નામે નગરી છે

આ પ્રમાણે તેઆ છએ જુદા જુદા દેશેામા રાજ્ય પદે સુશેાભિત થયા ॥ સૂત્ર " ૯ " ॥

टीका–' तएण से ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर स महाबलो देवस्त्रिभिर्ज्ञानैः ' समग्गे ' समग्र सयुक्तः, ' उच्चट्ठाणट्ठिएसु ' उच्चस्थान स्थितेषु ग्रहेषु सूर्यादिषु सौम्यासु दिग्दाहाद्युत्पातरहितासु ' दिसासु '=दिक्षु विंतिमिरासु तीर्थकर गर्भावासमभावाद् व्यपगतान्धकारासु विशुद्धासु=झझावातरजः कणादि रहितत्वेन निर्मलासु ' जइएसु ' जापिकेषु राजदीना विजयसूचकेषु ' सउणेसु ' शकुनेषु काकरुतादिषु ' पयाहिणाणुकूलसि ' प्रदक्षिणानुकूले प्रदक्षिणावर्तत्वात् प्रदक्षिण', शुभावह सुरभिशीतमन्दत्वादनुकूलश्च तस्मिन् ' भूमिसर्प्पिसि ' भूमिसर्पिणी= भूमौ प्रसरणशीले मारुते वायौ, ' पवायसि ' प्रवाते वातु प्रवृत्ते ' निप्फन्नसस्स मेइणीयसि ' निष्पन्नसस्यमेदिनीके निष्पन्नसस्या मेदिनी भूमिर्यस्मिन् तथाभूते काले ' पमुइयपक्कीलिएसु ' प्रमुदितप्रक्रीडितेषु जनपदेषु अर्धरात्रकालसमये अश्विनीनक्षत्रेण ' जोग ' योग चन्द्रयोगम्, उपागतेन प्राप्तेन, यःस =प्रसिद्ध ' हेमताण ' हेमन्ताना मार्गशीर्षादि फाल्गुनान्ताना शीतकालमासाना मध्ये चतुर्थो मासः, अष्टम' पक्षः कृष्णादि मासस्य शास्त्रसयमत्वादष्टमत्व पक्षस्येति भावः फाल्गुनशुद्धः=फाल्गुनस्य शुद्धः शुक्ल' द्वितीयपक्षोऽस्तीत्यर्थः । तस्य फाल्गुन शुद्धस्य ' चउत्थिपक्खे ' चउर्थीपक्षे फाल्गुनशुद्धस्य पक्षस्य या चतुर्थी तिथिस्तस्याः पक्ष पार्श्वोऽर्धरात्रिरिति भावः, तत्र–' ण ' इतिवाक्यालङ्कारे, जयन्ताद् विमानाद् द्वात्रिंशत्सागरोपमस्थितिकादनन्तर चय=देवसम्बन्धिशरीर त्यक्त्वा– इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलाया राजधान्या

' तएण से महब्बले ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से महब्बले देवे) वह महाबल का जीव देव (तीहिं णाणेहिं समग्गे) मति ज्ञान श्रुतज्ञान और अवधि ज्ञान इन तीन ज्ञानों का धारी हो कर (अणतर) उन छहो के बाद अपनी स्थिति पूर्ण कर (जयताओ विमाणाओ) उस जयत विमान से (चइत्ता) चल कर (इहेव जबुद्दीवे दीवे) इसी जबू द्वीप नाम के द्वीप मे (भार

' तएण से महब्बले ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારબાદ " से महब्बले देवे " દેવ મહાબલનો જીવ " तीहिं णाणेहि समग्गे " મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાન આ ત્રણે જ્ઞાનોને ધારણ કરનાર થઈને " अणतर " તે છએના પછી પોતાની સ્થિતિ પૂરી કરીને " जयताओ विमाणाओ " જયત વિમાનથી " चइत्ता " ચાલીને " इहेव जबुद्दीवे दीवे " જબૂ દ્વીપ નામના આજ દ્વીપમા (भारहे वासे)

'कुभगस्स' कुम्भकस्य कुम्भकनामकस्य राज्ञः पभावत्याः=प्रभावतीनाम्न्या देव्यः 'कुच्छिंसि' कुक्षौ 'आहारवक्कतीए' आहारव्युत्क्रान्त्या=आहारपरिवर्तनेन मनुष्योचिताहारग्रहणेनेत्यर्थः, 'सरीरवक्कतीए' शरीरव्युत्क्रान्त्या=देवशरीरपरिवर्तनपूर्वकमनुष्यशरीरग्रहणेनेत्यर्थ 'भववक्कतीए' भवव्युत्क्रान्त्या = देवभव विहाय मनुष्यभवग्रहणेन 'गब्भत्ताए वक्कते' गर्भतया व्युत्क्रान्तः=गर्भरूपेण समुत्पन्नः। तस्या रजन्यां च खलु चतुर्दश महास्वप्नाः प्रभावती देव्या दृष्टा।

हे वासे) भरत क्षेत्र मे (मिहिलाए रायहाणीए) मिथिला राजधानी में (कुभगस्स रन्नो पभावइए देवीए कुच्छिंसि) कुभक राजाकी प्रभावती देवी की कुक्षि मे (आहार वक्कतीए) आहार के परिवर्तन से–मनुष्योचित आहार के ग्रहण से, (सरीरवक्कतीए) शरीर की व्युत्क्रान्ति से देव शरीर के परिवर्तन पूर्वक मनुष्य शरीर के ग्रहण से, (भव वक्कतीए) भव की व्युत्क्रान्ति से देव भव को छोड़कर मनुष्य भव के ग्रहण से (गब्भत्ताए वक्कते) गर्भरूप से उत्पन्न हुए।

जब यह प्रभावती की कुक्षी मे गर्भ रूप से उत्पन्न हुए तब (गहेसु उच्चट्ठाणट्ठिएसु) सूर्यादिग्रह उच्चस्थान पर स्थित थे। (दिसासु सोमासु) चारों दिशाये दिग्दाह आदि उपद्रवों से रहित थी (वितिमिरासु विसुद्धासु) तीर्थंकर के गर्भावास के प्रभाव से वे अन्धकार रहित बन गई थीं एव झञ्झावात रजकण आदि से रहित हो कर निर्मल हो गई थी।

ભરત ક્ષેત્રમા ''मिहिलाए रायहाणीए'' મિથિલા રાજધાનીમા કુભગસરન્નો पभावइए देवीए कुच्छिसि '' કુભક રાજાની પ્રભાવતી દેવીના ઉદરમા ''आहार वक्कतीए '' આહારના પરિવર્તનથી માનવોચિત આહારના ગ્રહણથી '' सरीर वक्कतीए '' શરીરની વ્યુત્ક્રાતિથી એટલે કે દેવ શરીરના પરિવર્તન તેમજ મનુષ્ય શરીરના ગ્રહણથી '' भववक्कतीए '' ભવની વ્યુત્ક્રાતિથી દેવ ભવને ત્યજીને મનુષ્ય ભવને ગ્રહણ કરવાની આપેક્ષાથી '' गब्भत्ताए वक्कते '' ગર્ભ રૂપે જન્મ પામ્યા

જ્યારે તેઓ પ્રભાવતીના ઉદરમા ગર્ભરૂપે અવતર્યા ત્યારે '' गहेसु उच्चट्ठाण ट्ठिएसु '' સૂર્ય વગેરે ગ્રહો ઉચ્ચ સ્થાને હતા दिसासु सोमासु ચારે દિશાઓ દિગ્દાહ વગેરે ઉપદ્રવો વગરની હતી '' वितिमिरासु विसुद्धासु '' તીર્થંકર ના ગર્ભવાસના પ્રભાવથી દિશાઓ પ્રકાશ યુક્ત તેમજ ઝાંખાનિલ રજકણ વગેરેથી રહિત થઇને સ્વચ્છ બની ગઈ

उस समय (सउणे सु जइएसु) काक आदि पक्षी, राजा आदि के विजय सूचक शब्द बोल रहे थे। (मारुयसि) हवा भी (पयाणु कूलसि) प्रदक्षिणावर्त हो कर (पवायसि) वह रही थी। सुरभी और शीतल मन्द होने के कारण वह अनुकूल थी। (भूमि सप्पिसि) भूमि का स्पर्श वह कर रही थी। (कालसि) वह समय ऐसा था कि जिसमे (निप्फन्नसस्समेइणीयसि) निष्पन्न सस्य से मेदिनी आच्छादितहरी भरी बनी हुई थी (जणवए सु) जन पद भी (पमुइयपक्कीलीएसु) हर्ष से हर्षित बने हुए थे और विविध प्रकार की क्रीडाओ में रत थे- (अद्धरत्तकालसमयसि) यह समय अर्द्ध रात्रि का था। (अस्सिणी णक्खत्तेण जोगमुवगएण) इस में अश्विनी नक्षत्र का चन्द्र के साथ योग हो रहा था (जे से हेमताण चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुण सुद्धे) यह अर्ध रात्रि का समय फालगुन माम के शुक्ल पक्ष का था। यह मास हेमत काल के मासो में चौथा मास तथा ८ वां पक्ष है। (तस्स ण फग्गुणसुद्धस्स चउत्थि पक्खे ण) ऐसी उस फाल्गुन शुक्ल चौथ की अर्द्धरात्रि के समय में वे महाबल देव अपनी ३२ सागर की स्थिति पूर्ण करके उस जयत नामक विमान से चव कर प्रभावती देवी

તે વખતે (सउणेसु जइएसु) કાગડા વગેરે પક્ષીઓ રાજા વગેરેના માટે વિજયને સૂચવનારા શબ્દો ઉચ્ચારી રહ્યા હતા (मारुयसि) પવન પણ (पयाणुकूलसि) પ્રદક્ષિણાવર્ત થઈને (पवायसी) વાતો હતો. શીતળ મન્દ અને સુગંધ યુક્ત પવન અનુકૂળ લાગતો હતો. ' भूमिसप्पिंसि ' તે પૃથ્વીનો સ્પર્શ કરતા વાતો હતો હતો. ' कालसि ' આવો સુખદ સમય હતો કે જેમા (निप्फन्नसरसमेइणियसि) નિષ્પન્ન ધાનથી મેદિની ' પૃથ્વી ' લીલાછમ આવરણ થી ઢકાઇ રહી હતી ' जणवएसु ' જનપદ પણ ' पमुइय पक्कीलीएसु ' હર્ષમા તરબોળ થઈ રહ્યુ હતુ અને જાતજાતની ક્રીડાઓમા મસ્ત હતું 'अद्ध रत्तकालसमयसि ' અડધી રાતનો વખત હતો ' अस्सिणीणक्खत्तेण जोगमुवगए ण ' અશ્વિની નક્ષત્રનો ચન્દ્રની સાથે યોગ થઈ રહ્યો હતો 'जे से हे मताण चऊत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुणसुद्धे ' ફાગણ મહિના નો શુકલ પક્ષ ચાલતો હતો આ મહિનો હેમત કાળના મહિનામા ચોથો મહિનો તેમજ આઠમો પક્ષ છે ' तस्सण फग्गुणसुद्धस्स चउत्थि पक्खेण ' એવી ફાગણ શુકલ ચોથના અડધી રાતના વખતે મહાબલ દેવ પોતાની બત્રીશ સાગરની સ્થિતિ પૂરી કરીને त न्यत नामक विमानमाथी चवीने प्रभावती देवीना गर्भमा

वर्णकः= तेषां स्वप्नाना वर्णन वाच्य तच्चान्यत्र सविस्तर द्रष्टव्यम् तेषां नामानि केवल मोच्यन्ते—गज-वृषभ-सिंह=लक्ष्मी-पुष्पमाला-चन्द्र-सूर्य-ध्वज-पूर्णकलश-पद्मसर -समुद्र-देवविमान-रत्नराशिवह्नय इति । भर्तृकथनम् स्वप्नवृत्त भर्त्रे निवेदयतीत्यर्थः । स्वप्नपाठकपृच्छा=स्वप्नफलवाचकान समाहूय भर्त्रा कुम्भकनृपेण स्वप्नफलपृच्छा कृतेत्यर्थः । यावत्-स्वप्नपाठकैः स्वप्नफल निवेदित, तत्सर्वं प्रथमाध्ययने धारिणीदेव्या अधिकारे यथा कथित तथैव वाच्य विशेषस्तु-धारिण्या स्वप्ने गज एव दृष्टः, प्रभावत्या तु चतुर्दश स्वप्ना इति । एव च तैरुक्तम्-

के गर्भ में आये । (त रयणिं च ण चोद्दस महासुमिणा वन्नओ) उस रात्रि में उस प्रभावतीदेवी ने १४ महा स्वप्न देखे । इन महा स्वप्नों का सविस्तर वर्णन अन्यत्र से जानना चाहिये हम यहाँ उन के नाम निर्देश करते है जो इस प्रकार चन्द्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकलश, पद्मसर, समुद्र देवविमान, रत्नराशि और अग्नि । इन स्वप्नो को देखकर प्रभावती ने अपने पति कुभक राजा से कहा राजा ने उसी समय स्वप्नपाठकों को बुलाया-और उनसे इन स्वप्नो के फल को पूछा ।

उन्हों ने इन स्वप्नो का क्या फल है यह बात राजा को कही । यह सब विषय इसी के प्रथम अध्ययन में धारिणी देवी के अधिकार में जिस प्रकार से प्रकट किया गया है उसी प्रकार से यहा भी जानना चाहिये । धारिणी देवी ने स्वप्न मे केवल एक हाथी ही देखा था । प्रभावती ने तो चौदह महा स्वप्न देखे । अन्त मे उन स्वप्न पाठकों ने कहा-राजन ! प्रभावती देवी ने जो ये चौदह सुन्दर स्वप्ने देखे हैं-उन

સ્થિત થયા ‘ त रयणिं च ण चोद्दसमहासुमिणा वन्नओ ’ તે રાત્રિમા પ્રભાવતી દેવીએ ૧૪ સ્વપ્નો જોયા આ બધા મહાસ્વપ્નો વિષેનુ સવિસ્તર વર્ણન જિજ્ઞાસુઓએ બીજેથી જાણી લેવુ જોઇએ પ્રભાવતી દેવીએ ચદ્ર, સૂર્ય, ધ્વજ, પૂર્ણકળશ, પદ્મસર, સમુદ્ર, દેવવિમાન રત્નરાશિ અને અગ્નિ આટલી વસ્તુઓ સ્વપ્નમા જોઇ હતી આ સ્વપ્નોને જોયા બાદ પ્રભાવતીએ પોતાના પતિ કુભક રાજાને સ્વપ્ન વિષે કહ્યુ અને તેમણે તરત જ સ્વપ્નપાઠકોને બોલાવ્યા અને તેમને આ સ્વપ્નોના ફળ વિષે પૂછ્યુ

સ્વપ્ન પાઠકોએ આ સ્વપ્નોનુ ફળ શુ થશે તેની બધી વિગત રાજાને કહી સભળાવી જ્ઞાતાધ્યયન ના પ્રથમ અધ્યપનમા ધારિણિદેવીના પ્રસગમા આ વિષે સવિસ્તર વર્ણવ્યુ છે અહીં પણ તે મુજબ જ સમજી લેવુ જોઇએ સ્વપ્નમા ધારિણી દેવીએ ફક્ત એક હાથી જ જોયો હતો પણ પ્રભાવતીએ તો ચૌદ મહા સ્વપ્નો જોયા હતા સ્વપ્નનુ ફ

हे राजन् ! प्रभावती देव्या चतुर्दश शोभनाः स्वप्ना अवलोकिताः । तत्प्रभावाच्च चक्रवर्ती वा तीर्थंकरो वा भविष्यति । स्वप्नफल श्रुत्वा सा प्रभावती गर्भं सुखसुखेन वहमाना विहरति=आस्ते स्म ॥ सू० १० ॥

मूलम्-तएणं तीसे पभावईए देवीए तिण्ह मासाणं बहुपडिपुन्नाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूए-धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं जलथलयभासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं मल्लेणं अत्थुयपच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सपिणवन्नाओ य विहरंति, एग च महं सिरीदामगड पाडलमल्लिय चपय असोग पुन्नाग नाग मरुयगदमणगअणोज्जकोज्जयपउरं परमसुहफासदरिसणिज्ज महयागंधद्धणिं मुयंतं अग्घायमाणीओ डोहल विणेंति ।

तएणं तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवं डोहलं पाउब्भूय पासित्ता अहासन्निहिया वाणमतरा देवा खिप्पामेव जलथलय० जाव दसद्धवन्नमल्ल कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभगस्स रन्नो भवणसि साहरंति, एगं च णं मह सिरिदामगड जाव मुयत जाव उवणेंति, तएणं सा पभावती देवी जलथलय जाव मल्लेणं जाव डोहल विणेइ, तएणं सा पभावती देवी पसत्थ-

---

के प्रभाव से इस के या तो कोई तीर्थंकर जन्म लेगा या कोई चक्रवर्ती। इस प्रकार स्वप्नों का फल सुनकर प्रभावती बडी प्रसन्न हुई और उस ने आनद के साथ गर्भ को धारण करते हुए सुखपूर्वक समय को व्यतीत किया। सूत्र " १० "

'હે રાજન્! પ્રભાવતી દેવીએ ચૌદ ઉત્તમ સ્વપ્નો જોયા છે, તેના પ્રભાવથી એમના ઉદરથી કાતો તીર્થ કર જન્મલેશે કા કોઇ ચક્રવર્તી!" આ પ્રમાણે સ્વપ્ન ફળ સાભળીને પ્રભાવતી ખૂબજ પ્રસન્ન થઇ અને સુખેથી ગર્ભ ધારણ કરી ને સમય પસાર કરવા લાગી ॥ સૂત્ર ૧૦ ॥

डोहला जाव विहरइ, तएणं सा पभावई देवी नवण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य रत्तिंदियाण जे से हेमंताणं पढम मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सण एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्त० अस्सिणी नक्खत्तेण जोगमुवागएण उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोग्गारोग्गं एकूणवीस-इम तित्थयर पयाया ॥ सू० ११ ॥

टीका—' तएण तीसे ' इत्यादि- ततस्तदनन्तर खलु तस्या प्रभावत्या देव्या त्रिषु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु=अशेषतः सम्पूर्णेषु सत्सु अयमेतद्रूप' दोहदः गर्भसद्भावजनिताभिलाषः प्रादुर्भूत.- धन्याः खलु ता अम्बा'=पुत्रमातरः या खलु ' जलथलयभासुरप्पभूएण ' जलस्थलजभास्वरप्रभू - तेन जलेषु स्थलेषुच यज्जात भास्वर= विकसित, प्रभूत प्रचुर, तेन ' दसद्धवन्नेण ' दशार्धवर्णेन पञ्चवर्णयुक्तेन माल्येन माल्येभ्यो हित माल्य=पुष्पजात, तेन ' अत्थुयपच्चत्थुयसि ' आस्तृत प्रत्यास्तृते क्रमश उपर्युपरि समाच्छादिते शयनीये=शय्याया ' सन्निसन्नाओ ' सन्निषण्णा'=सन्निविष्टा ' सण्णिवन्नाओ ' सनिपन्नाः सुप्ताश्च विहरन्ति सुखेन

' तएण तीसे पभावईए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इस के बाद (तीसे पभावईए देवीए) उस प्रभावती देवी के जब (तिण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण) तीन मास अच्छी तरह से पूर्ण हो चुके-तब (इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए) उसे इस प्रकार का दोहला उत्पन्न हुआ- (धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ) वे माताएँ धन्य हैं (जाओ ण जल थलय भासुरप्पभूएण दसद्धवन्नेणं मल्लेण) जो जल मे एव स्थल में उत्पन्न हुए विकसित पचवर्णों के प्रभूतपुष्पों से (अत्थुय पच्चत्थुयसि सयणिज्जसि सन्निसन्नाओ सन्निवन्नाओ य

'तएण तीसे पभावइए । ' ઈત્યાદિ !

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારબાદ (तीसे प्रभावइए देवीए) પ્રભાવતીદેવીને જ્યારે (तिण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण) ત્રણ મહિના સારી રીતે પસાર થઇ ચુકયા ત્યારે (इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए) તેને આ પ્રમાણે દોહદ ઉત્પન્ન થયુ કે (धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ) તે માતા ઓ ધન્ય છે (जाओ ण जल थलय भासुरप्पभूएण दसद्धवन्नेण मल्लेण) જેઓ જળ અને સ્થળમા ઉદ્ભવેલા અને વિકાસ પામેલા પાચરગના પુષ્પળ પ્રમાણુમા એકઠા કરેલા પુષ્પોથી

तिष्ठन्ति ता अम्बा वन्या, इति पूर्वेण सम्बन्ध । एकच महत् विशाल 'सिरि दामगड' श्रीदामकाण्ड श्रीदाम्ना=शोभायुक्तमालाना काण्ड समूह 'पाडलमल्लि यचपय- असोग- पुन्नाग-नागमरुयग-दमणग-अणोज्ज कोज्जयपउर' पाटला-मल्लिका- चम्पिका-ऽशोक- पुनागनाग - मरुवक-दमनका- ऽनवद्यकुब्ज प्रचुर, पाटलाद्या पुष्पजातयः- पाटलपुष्प, 'गुलाब' इति प्रसिद्ध मल्लिकापुष्प=चम्पकपुष्पम्, अशोकपुष्पम्, पुन्नागपुष्पम्, नागपुष्प, मरुवक' पत्रजाति विशेष, दमनकपुष्पम्, अनवद्य - सुन्दरः, कुब्जक- शतपत्रिका विशेष, एतानि प्रचुराणि यत्र तत् तथा, 'परमसुहफासदरिसणिज्ज' परमसुखस्पर्शदर्शनीय परमसुखदः स्पर्शोयस्य तद् तच्च दर्शनीय दृष्टिसुखद चेति 'महया गधद्धाणि' महासुरभिगन्धघ्राणि महासुरभिगन्धगुण तृप्तिहेतु पुद्गलसमूह मुञ्चत् प्रसारयद् तद् आजिघ्रन्त्यः

विहरति) इस तरह एक एक करके क्रमशः पुष्पों के अनेक स्तरो से समाच्छादित हुई शय्या पर बैठती है सुख से शयन करती है। (एग च महं सिरीदामगडं पाडलमल्लियचपयअसोगपुन्नागनागमरुयगदमणगअणोज्जकोज्जयपउरं परमसुहफासदरिसणिज्जं महया गधद्धणिमुयत आधायमाणीओ दोहलं विणेति) और अद्वितीय श्रीदामकांड को-शोभायुक्त मालाओ के समूह को कि जिसमें पाटल (गुलाब) मल्लिका (मोगरा) चपक, अशोक, पुन्नाग, नाग, मरुवा, दमनक एव सुन्दर कुब्जक के पुष्पो का प्राचुर्य है, जिसका स्पर्श परम सुख कारक है और जो दृष्टि को आनद दायक हैं तथा तृप्ति कारक महासुरभि गध गुण वाले पुद्गलों को जो फैला रहा है सूघती हुई अपने गर्भ मनोरथ

(अत्थुय पच्चत्थुयसि सयणिज्जसि सन्निसन्नाओ सन्निवन्नाओ य विहरति) આ રીતે અનુક્રમે પુષ્પોના થરથી ઢકાએલી એવી શય્યા (પથારી) ઉપર બેસે છે અને સુખેથી શયન કરે છે

(एग च महं सिरीदामगडं पाडलमालियचपयअसोगपुन्नागनागमरुयगदमणगअणोज्जकोज्जं पउरं परमसुहफासदरिसणिज्जं महया गधद्धणिमुयतआधायमाणीओ दोहलं विणेंति)

જેમા પાટલ (ગુલાબ), મલ્લિકા, ચપક, અશોક, પુન્નાગ, નાગ, મરુવો, દમનક અને સુદર કુબ્જકના પુષ્પો પુષ્કળ પ્રમાણમા છે, સ્પર્શ જેનો અત્યત સુખદ છે અને જે દૃષ્ટિને આનદ આપનાર છે અને તૃપ્તકરનાર મહાસુગધ ગુણવાળા પુદ્ગલોને જે ફેલાવી રહ્યો છે—એવા અદ્વિતીય (સર્વોત્તમ)

तेन तथाविधेन श्रीदामकाण्डेन घ्राणेन्द्रिय तर्पयन्त्यः दोहद = गर्भसद्भावजनित मनोरथ ' विणेति' विनयन्ति=पूरयन्ति । ता एव जनन्यो जगति भाग्यशालिन्यः प्रशसनीया धन्याश्च सन्तीत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु- तस्याः प्रभावत्या देव्या इममेतद्रूप दोहद प्रादुर्भूत दृष्ट्वा यया सनिहिताः समीपस्थिता वानव्यन्तरादेवाः क्षिप्रमेव जलस्थलोत्पन्नानि यावद्दशार्धवर्णानि = पञ्चवर्णानि माल्यानि = पुष्पाणि कुम्भाग्रशश्च कुम्भ-परिमाणतः, भाराग्रशश्च भारपरिमाणतश्च कुम्भकस्य राज्ञो भवने सहरन्ति= समानयन्ति. । एकच खलु महत् श्रीदामकाण्ड यावद् मुञ्चत् उपनयन्ति-समीपे समानयन्ति । ततः खलु सा प्रभावती देवीगलस्थलज यावत्- यावच्छब्देन-

की पूर्ति करती है (वे माताएँ धन्य हैं ऐसा सबध यहा पर लगा लेना चाहिये) (तएण) इसके बाद (तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूव दोहल पाउब्भूत पासित्ता अहासन्निहिया वाणमतरा देवा खिप्पामेव जलथल्लय० जाव दसद्धवन्नमल्ल कुभग्गसोय भारग्गसोय कुभगस्स रन्नो भवणसि साहरति) उस प्रभावती देवीके इस प्रकारके दोहलेको उत्पन्न हुआ देख कर के समीप में रहे हुए वानव्यन्तर देवोंने शीघ्र ही जल में और स्थल में उत्पन्न पचवर्ण के पुष्पो को कुभ परिमाण में और भारपरिमाण मे कुभक राजा के भवन पर लाकर रख दिया।

(एग च ण महं सिरिदामगडं जाव सुयत जाव उवणेति) और साथ मे एक बड़ा भारी श्रीदामकाण्ड भी कि जिसमे 'पाटल गुलाब

શ્રી દામકાંડ (સુદરભાળાઓના સમૂહ) ની સુવાસ અનુભવતી પોતાના ગર્ભ મનોરથ (દોહદ)ની પૂર્તિ કરે છે (ખરે ખર તે માતાઓ ધન્ય છે) (तएण) ત્યાર બાદ

(तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवे दोहलं पाउब्भूत पासित्ता अहासन्नि हिया वाणमतरा देवा खिप्पामेव जल थलय० जाव दसद्धवन्न मल्ल कुभगस्सो य भारगस्सो य कुभगरस्स रन्नो भवणसि साहरति)

પ્રભાવતી દેવીના આ પ્રમાણેના દોહલાને ઉત્પન્ન થયેલો જાણીને પાસે રહેનારા વાનવ્યતર દેવોએ તરત જ જળ અને સ્થળમા ઉત્પન્ન થયેલા પાચરગના પુષ્પોને કુભ પરિમાણમા અને ભાર પરિમાણમા કુભક રાજાના ભવન ઉપર લાવીને મૂકી દીધા

(एगच ण महं सिरिदामगडं जाव सुयत जाव उवणेति) પાટલ વગેરે ના પુષ્પો જેમા ગૂથેલા છે, અને જે નેત્રોને માટે સુખદ અને સ્પર્શ પણ જેનો આનદ દાયક છે, અને જેમાથી ચોમેર સુગધી પ્રસરી રહી છે એવો

'जल थलइत्यनन्तर 'भासुरप्पभूएण दसद्धवन्नेण' इति सग्रह, माल्येन=पुष्प जातेन यावत्-अत्र यावच्छब्देन- 'अत्थुयपच्चत्थुयसि' इत्यारभ्य 'अग्घाय माणीओ' इतिपर्यन्तस्य ग्रहणम्, दोहद विनयति=पूरयति. । ततः खलु सा प्रभावती देवी प्रशस्तदोहदा यावद् सपूर्ण दोहदा समानित दोहदा विहरति ।

अथ भगवतस्तस्य तीर्थकरस्य सकल जगत्कल्याणकरजन्मकदाऽभवदिति जिज्ञासायामाह-'तएण' इत्यादि ।

ततस्तदन्तर खलु सा प्रभावती देवी नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु=सर्वथा सपूर्णेषु तदनन्तरम् अर्धाष्टमेषु रात्रिदिवेषु व्यतीतेषु योऽसौ हेमन्तानो हेमन्त ऋतु सज्ञकाना मार्गशीर्षादिफाल्गुनान्ताना प्रथमो मासः, द्वितीयः पक्षः मार्गशीर्ष शुद्धः मार्गशीर्षमासस्य शुद्ध शुक्लः पक्षो वर्तते, तस्य- खलु एकादश्या तिथौ पूर्वरात्रापररात्रकालसमये मध्यरात्रे अश्विनी नक्षत्रे योग=चन्द्रयोगमुपागते-प्राप्ते

आदिकेपुष्पगुथे हुए हैं और जो नेत्र को सुख देने वाले एव सुखस्पर्श है जिसमें से सुगध ही सुगध चारों ओर फैल रही है रानिके पास लाकर उपस्थित किया। (तएण सा पभावती देवी जल थलय जाव मल्लेण जाव दोहल विणेइ) इसके अनन्तर उस प्रभावती देवीने जल थलके विकसित पच वर्ण वाले प्रभूत पुष्पों से समाच्छादित हुई शय्या पर बैठकर शयन कर श्रीदामकाण्ड को कि जो पाटल (गुलाब) आदि के पुष्पो से गुथा हुआ था यावत् गध को फैला रहा था सूघ कर अपने दोहले की पूर्ति की। (तएण सा पभावती देवी पसत्थ दोहला जाव विहरइ, तएण सा पभावई देवी नवण्ह मासाण बहु पडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य रत्तिं दियाण जे से हेमन्ताण पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सण एगारसीए पुव्वरत्तावरत्त० आसिणीनक्खत्तेण जोगमुवागएण

उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोग्गारोग्ग एगू

એક મોટો ભારે શ્રીદામકાડ પણ વાનવ્યતરો ત્યા લાવ્યા (तएण सा पभावती देवी जलथलय जाव मल्लेण जाव दोहल विणेइ) ત્યાર બાદ પ્રભાવતી દેવીએ જળના વિકસિત પાચરગના પુષ્પોથી સમાચ્છાદિત શય્યા ઉપર બેસીને, શયન કરીને, પાટલ વગેરેના પુષ્પોથી ગૂથાયેલા સુવાસિત શ્રીદામકાડને સુધીને પોતાના દોહદની પૂર્તિ કરી

(तएण सा पभावती देवी पसत्थदोहला विहरइ, तएण सा पभावई देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाग अद्धट्ठमाणयराइदियाण जे से हेमताण पढमेमासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सण एगारसीए पुव्वरत्तावरत्त आसिणीनक्खत्तेण जोग

सति उच्चस्थानस्थितेषु उच्चराशिगतेषु ग्रहेषु सूर्यादिषु प्रमुदित प्रक्रीडितेषु हृष्टेषु क्रीडावत्सु च जनपदेषु=देशेषु सत्सु आरोग्यारोगरहिता अनाबाधा प्रसववेदना रहिता सतीत्यर्थः आरोग्य = अनाबाध क्लेशवर्जित एकोनविंशतितम तीर्थंकर प्रजाता=प्रजनितवती ॥ सू० ११ ॥

णवीसइम तित्थयर पयाया) इस प्रकार प्रशस्त दोहला वाली वह प्रभावती देवी कि जिस का दोहला अच्छी तरह से पूर्ण हो चुका है और जिस दोहले को राजा आदिजनों ने भी सन्मानित किया है आनन्द पूर्वक रहने लगी। अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं कि भगवान् उन तीर्थंकर का जगत् कल्याण कारक जन्म किस समय हुआ-वे कहते हैं कि जब गर्भ के नौ मास सम्पूर्ण रूप से व्यतीत हो चुके और उनके ऊपर साढे सात रात का समय और अधिक निकल चुका उस समय प्रभावती देवी ने हेमन्त काल के प्रथम मास मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन मध्य रात्रि के समय अश्विनी नक्षत्र मे, जब कि उसका योग चन्द्रमा के साथ हो रहा था और सूर्यादिग्रह उच्चस्थान पर स्थित थे तथा जनपदों मे आनन्द की लहरे छायी हुईथी-विविध प्रकार की क्रीडाओं मे वे रत बने हुए थे बिना किसी बाधा के क्लेशवर्जित १९ वें तीर्थंकर को जन्म दिया ॥ सूत्र ११ ॥

मुव्वागएण उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु पमुइय पक्कीलिएसु जणवएसु आरोग्गारोग्गं एकूणवीसइम तित्थयर पयया)

આ રીતે જેનુ દોહદ સપૂર્ણ પણે પૂરૂ થયુ છે અને રાજા વગેરે ગુરુ જનોએ પણ જેના દોહદને સન્માનીત કર્યું છે એવી પ્રશસ્ત દોહદ વાળી પ્રભાવતી દેવી આનદની સાથે પોતાના દિવસો પસાર કરવા લાગી હવે સૂત્રકાર જગત્ ના કલ્યાણ કરનારા એવા ભગવાન તીર્થંકર નો જન્મ કયારે થયો તેનુ વર્ણન કરતા કહે છે-કે જ્યારે ગર્ભના નવમાસ પૂરા થઇ ગયા અને નવમાસ ઉપર માડા સાત દિવસરાતનો સમય પસાર થયો ત્યારે હેમતકાળના પ્રથમ મહિનાના શુકલ પક્ષ અગિયારસના દિવસે અડધી રાતના સમયે અશ્વિની નક્ષત્રમા-જ્યારે તે નક્ષત્રનો યોગ ચન્દ્રની સાથે થઇ રહ્યો હતો અને સૂર્ય વગેરે ગ્રહો ઉચ્ચ સ્થાને સ્થિત હતા અને આખા જનપદમા આનદના મોજાઓ પ્રસરી રહ્યા હતા અને બધા માણસો અનેક જાતની રમતો અને ક્રીડાઓમા મસ્ત થઇ રહ્યા હતા ત્યારે પ્રભાવતી દેવીએ કલેશ અને દુખ રહિત થઇને ૧૯ મા તીર્થ કર ને જન્મ આપ્યો ॥ સૂત્ર " ૧૧ " ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समयेणं अहोलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरीयाओ जहा जंबूद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं नवर मिहिलाए कुभयस्स पभावईए अभिलाओ सजो-एव्वो जाव नन्दीसरवर दीवे महिमा, तया णं कुभए राया बहूहि भवणवइ४ तित्थयर जायकम्म जाव नामकरण, जम्हाणं अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीते त होउणं णामेणं मल्ली, जहा महाब्बले नाम जाव परिवड्ढिया सा वद्धती भगवती दियलोयचुता अणोवमसिरीया। दासीदास परिवुडा परिकिन्ना पीढमद्देहि ॥ सू० १२ ॥

टीका–' तण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले चतुर्थारकलक्षणे तस्मिन् समये जिन ज मसमयेऽधोलोक वास्तव्या अष्ट दिक्कुमार्य महत्तरिकाः प्रधानाः भोगङ्करा १, भोगवती २, सुभोगा ३, भोगमालिनी ४, सुवत्सा ५, वत्समित्रा ६, वारिषेणा ७, बलाहका ८, इत्येतन्नामिका' समागताः । यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ भगवतस्तीर्थंकरस्य जन्मवर्णित, सर्वं तथैव विज्ञेयम् , नवर=एतावान् विशेषः

'तेणं कालेण तेण समएण' इत्यादि

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (अहो लोगवत्थव्वाओ) अधोलोक में निवास करनेवाली (अट्ठ) आठ (दिसाकुमारीओ) दिक्कुमारिकाएँ (महयरीयाओ जहा जंबूद्दीवपन्नत्तीए जम्मणसव्वं) जिनका नाम भोगङ्करा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी सुवत्सा, वत्समित्रा वारिषेणा और बलाहका है आई। जंबूद्दीप प्रज्ञप्ति

'तेण कालेण तेण समएण'–ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (अहोलोग वत्थवाओ) અધોલોકમા રહેનારી (अट्ठ) આઠ (दिसाकुमारीओ) દિશા કુમારિકાઓ (महयरीयाओ जहा जंबूद्दीवपन्नत्तीए जम्मण सव्व) જેમના નામો ભોગકરા ભોગવતી, સુભોગા, ભોગમાલિની, સુવત્સા, વત્સમિત્રા, વારિષેણા, અને બલાહકા–છે–ત્યા આવી–' જંબૂદ્દીપપ્રજ્ઞપ્તિ ' મા ભગવાન

इह मिथिलाया नगर्या कुम्भकस्य राज्ञः प्रभावत्याः अभिलाप'=वर्णन सयोक्तव्यः =वक्तव्य', यावत् नन्दीश्वरवरे द्वीपे महिमा=उत्सवः, देवैकृतः । तदा खलु कुम्भको राजा बहुभिर्भवनपतिवानव्यन्तर ज्योतिष्क वैमानिकैः जन्मोत्सवे कृते सति तीर्थकरजातकर्म यावत् नामकरण कृतवान् यस्मात् खलु अस्माकम् अस्यां दारिकाया गर्भगतायां मातुर्माल्यशयनीये कुसुमशय्या विषये दोहदो विनीत =

में भगवान तीर्थंकर ने जन्म का जैसा वर्णन किया गया है--वैसा ही वर्णन यहा जानना चाहिये (नवर) परन्तु उसकी अपेक्षा इसमें इतनी विशेषता है (मिहिलाए कुभयस्स पभावइए अभिलाओ) कि यहां मिथिला नगरी कुभक राजा और रानी प्रभावती का सम्बन्ध लिया गया इसलिये मल्लीनाथ तीर्थंकर के जन्म के वर्णन करने में इनसब का योग लगा लेना चाहिये ।

(जाव नदीसर वरे दीवे महिमा) मल्लिनाथ तीर्थंकर के जन्म का उत्सव नदीश्वर नाम के द्वीप में देवों ने किया । (तयाणं कुभए राया बहूहिं भवणवइ ४ तित्थयर जाय कम्म जाव नाम करण) इसके बाद कुभक राजा ने अनेक भवनपति वानव्यन्तर, ज्योतिष्क एव वैमानिक देवो के द्वारा जन्मोत्सव किये जाने पर तीर्थंकर का जातकर्म यावत् नाम करण किया । (जम्हा ण अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्ल सयणिज्जसि दोहले विणीए त होउण णामेण मल्ली) नाम करण

તીર્થંકર ના જન્મ વિષે જેવુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેવુ જ વર્ણન અહી પણ જાણવુ જોઇએ (નવર) પણ તેના કરતા અહીં આટલી વિશેષતા જાણવી જોઇએ કે (મહિલાए કુભયસ્સ પભાईए અભિલાઓ) અહીં મિથિલા નગરી, કુભક રાજા અને રાણી પ્રભાવતીના સબધ વિષે વર્ણન કરવામા આવે છે એટલે મલ્લિનાથ તીર્થંકરના જન્મ વર્ણનમા આ બધાનો યોગ અપેક્ષિત છે

(जाव नदीसरवरे दीवे महिमा) દેવોએ મલ્લિનાથ તીર્થંકરનો જન્મો ત્સવ નદીશ્વર નામના દ્વીપમા ઊજવ્યો હતો (तयाण कुभए राया बहूहि भवण वइ४ तित्थयर जायकम्म जाव नाम करण) ઘણા ભવનપતિ વાન વ્યતર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક દેવોએ જ્યારે સારી પેઠે ભગવાન તીર્થંકરનો જન્મોત્સવ ઊજવી લીધો ત્યારે કુભક રાજાએ તેમનો જાતકર્મ યાવત્ નામ કરણ સસ્કાર કર્યો

(जम्हाण अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जसि दोहले विणीए त होउण णामेण मल्ली)

રાજાએ તેમનુ નામ મલ્લિ પાડયુ કેમકે જ્યારે તે ગર્ભમા હતા ત્યારે તેમની માતાને માલતીના પુષ્પોની માળાની શય્યાનુ દોહદ થયુ હતું અને તેમના દોહદની

देवैः पूरित', तद् भवतु खलु इय नाम्ना मल्लिः मालायै हित, तत्र साधु वा माल्य कुसुम तद्गताभिलाषरूपदोहदपूर्वकमेतस्या दारिकाया जन्मसजात तस्मा दस्या नाम 'मल्ली' इतिकृतम्। अस्याः स्त्रीत्वेऽपि जिनस्तीर्थंकरोऽर्हदिति शब्दाना बाहुल्येन पुस्त्वे प्रवृत्तिदर्शनात्पुलिङ्गशब्देन व्यवहारः। यथा महाबलो नाम=

में उनका नाम मल्ली रखा गया-क्यो कि राजाने यह विचारा कि जब ये गर्भ मे थी तो इनकी माताको पुष्पोंकी माल्य की शय्या के विषय में दोहला उत्पन्न हुआ था-और उस दोहले की पूर्ति देवो ने की थी अतः यह पुत्री नाम से मल्ली रहो- इसी अभिप्राय से राजा ने उसका नाम मल्लि रखा।

"मालायै हित तत्र साधु वा माल्य" इस व्युत्पत्ति के अनुसार माल्य शब्द का अर्थ कुसुम होता है। सो जब ये माता के गर्भ में थी तब माता को उस माल्य के विषय में अभिलाष रूप दोहला उत्पन्न हुआ था-जिस की पूर्ति देवो ने की थी-अत. उस दोहद पूर्वक इस लड़की का जन्म हुआ-इस कारण राजा ने उसका नाम मल्लि रख दिया। यद्यपि यह स्त्रीरूप में थी-तो भी "जिनः तीर्थकर अर्हत" इत्यादि शब्दों की बहुलता से पुल्लिङ्ग में प्रवृत्त देखी जाती है-इसलिये यहा इनका पुल्लिङ्ग शब्द से व्यवहार तीर्थंकर की अपेक्षा किया गया है। (जहा महाबले नाम जाव पडिवड्ढिया "सा वद्धइ भगवती दिय लोय चुता अणोवम सिरीया दासी दास परिवुडा परिकिन्ना पीढमद्देहिं ,,

પૂર્તિ દેવોએ કરી હતી એથી જ રાજાએ તે પુત્રીનુ નામ મલ્લિ પાડયુ હતુ

"मालायै हित तत्र साधुवा माल्य" આ વ્યુત્પત્તિ મુજબ માલ્ય શબ્દનો અર્થ કુસુમ (પુષ્પ) થાય છે જ્યારે મલ્લિ માતાના ગર્ભમા હતા ત્યારે તેમને માલ્ય ની અભિલાષા રૂપ દોહદ ઉત્પન્ન થયુ હતુ તે દોહદની પૂર્તિ દેવોએ કરી હતી એથી માલ્યના દોહદથી જન્મેલી તે પુત્રીનુ નામ રાજાએ મલ્લિ પાડયુ ને કે આ સ્ત્રી રૂપે હતી છતા એ "जिन तीर्थंकर अर्हत्" વગેરે શબ્દો ના બાહુલ્યથી તે પુલ્લિગથી જ સબોધિત કરવામા આવે છે એટલા માટે અહી જે પુલ્લિગ શબ્દથી વ્યવહાર કરવામા આવે છે તે તેમની તીર્થંકરની અપેક્ષાથી જ

(जहा महाबले नाम जाव पडिवड्ढिया 'सा वद्धती भगवती दियलोय चुता अणोवमसिरीया दासीदासपरिवुडा परिकिन्ना पोढमद्देहिं "१")

ભગવતી સૂત્રના મહાબલના વર્ણનની જેમ જ મલ્લિના વર્ણન વિષેપણ

यथा भगवती सूत्रे महाबलो वर्णितस्तथेय मल्ली विज्ञेयेत्यर्थः ।

अथ गाथा द्वयेन मल्लिं वर्णयति-' सा वड्ढइ ' इत्यादि

सा वर्धमाना भवती द्युलोकच्युता अनुपमश्रीका,
दासीदासपरिवृता परिकीर्णा पीठमर्दैः ॥ १ ॥

सा मल्ली वर्धमाना=अनुदिन वृद्धि गता, भगवती=ऐश्वर्यादिगुणयुक्ता, द्युलोकच्युता देवलोकादनुत्तरविमानाच्च्युता=अवतीर्णा, अनुपम श्रीका=अद्वितीय शोभायुक्ता, दासीदासपरिवृता, पीठमर्दैः=वयस्यैः परिकीर्णा=परिकरवती बहु सहचरी युक्तेत्यर्थः ।

असितशिरोजा सुनयना बिम्बोष्ठी धवलदन्तपङ्क्तिका ।
वरकमलकोमलाङ्गी फुल्लोत्पलगन्धनिःश्वासा ॥ २ ॥

असित शिरोजा=भ्रमरवदतिश्यामवर्णकेशा, सुनयना = सुलोचना, बिम्बोष्ठी =बिम्बवद्रक्तवर्णोष्ठी, धवलदन्तपङ्क्तिका धवला कुन्दमुक्तादिवच्छुक्लवर्णा दन्त पङ्क्तिर्दन्तश्रेणिका यस्याः सा तथा, वरकमलकोमलाङ्गी=वरकमलवत् – अशुष्क कमलपुष्पवत् कोमलानि मृदुलान्यङ्गानि यस्याः सा तथा, फुल्लोत्पलगन्धनि. श्वासा=विकसितनीलकमलवद्गन्धयुक्तनि श्वासवती जाता ॥ सू० १२ ॥

जिस प्रकार भगवती सूत्र में महाबल का वर्णन किया गया है-उसी प्रकार से इन मल्ली का भी वर्णन जानना चाहिये-सूत्रकार इसी बात का वर्णन " सा वड्ढइ " इस गाथा द्वारा करते है--वे कहते है कि ये मल्लि नाम की कन्या प्रतिदिन वृद्धिंगत हो रही थी । ऐश्वर्य आदि गुणों से युक्त थी । अणुत्तर विमान से चव कर आई थी अनुपम श्री से सपन्न थी । दासी दास परिवृत्त थी और अनेक सहचरियों से युक्त थी।

उनके बाल भ्रमर के समान अति श्याम वर्ण वाले थे । लोचन बडे सुहावने थे । बिम्ब जैसे लाल वर्ण वाले इनके दोनो ओष्ठ थे । दांतो की पङ्क्ति कुन्द तथा मुक्ता आदि के समान बिलकुल शुभ्र थी । अशुष्क

જાણવુ જોઇએ " सा वड्ढइ" આ ગાથા વડે સૂત્રકાર એજ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે તેઓ વર્ણન કરતા કહે છે કે મલ્લિ નામે કન્યા દિવસે દિવસે મોટી થઈ રહી હતી તે ઐશ્વર્ય વગેરે ગુણોથી પૂર્ણ હતી તે અનુત્તર વિમા નથી ચવીને આવી હતી અને અનુપમ શ્રી સપન્ન હતી તે દાસી દાસોથી વીટળાયેલી તેમજ ઘણી સહચરીઓથી યુક્ત હતી

તેમના વાળ ભમરા જેવા અત્યત કાળા હતા તેમના નેત્રો મનોહર હતા અને હોઠ બિંબફળ જેવા લાલ હતા તેમની દતપક્તિ કુદ તેમજ મોતી

मूलम्–तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कबाल-भावा जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं सा मल्ली देसूणवाससय-जाया ते छप्पिरायाणो विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २ विहरइ । त जहा – पडिबुद्धि जाव जियसत्तु पचालाहिवइ, तएणं सा मल्ली कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी – तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह अणेगखभसयसन्निविट्ठं, तस्स णं मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह, तेसि णं गब्भघरगाणं बहुमज्झदेसभाए जालघरयं करेह, तस्स णं जालघरयस्स बहुम ज्झदेसभाए मणिपेढिय करेह, जाव पच्चप्पिणति ॥सू०१३॥

टीका–'तएण सा' इत्यादि–ततस्तदनन्तर खलु सा मल्ली मल्लीनाम्नी विदेह रायवरकन्ना ' विदेहराजवरकन्या=विदेहो मिथिलाजनपद', तस्य राजा कुम्भ कस्तस्य वराकन्या=पुत्री ' उम्मुक्कबालभावा ' उन्मुक्तबालभावा, व्यपगतबाल्या वस्था यावत् रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च अतीवातीवोत्कृष्टा उत्कृष्ट-

---

कमल पुष्प के जैसा इनका मृदुल अग था। विकसित नील कमल के समान गध युक्त इनका निश्वास था। सूत्र " १२ "

' तएण सा मल्ली ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ–(तएण) इसके बाद (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) विदेह राजकी कन्या वह मल्ली (उम्मुक्कबालभावा) बाल्यावस्था का परित्याग कर (जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्ठसरीरा

વગેરે જેવી એકદમ સ્વચ્છ હતી તાજા કમળ પુષ્પના જેવા તેમના સુકોમળ અ ગો હતા તેમનો નિશ્વાસ પ્રફુલ્લિત નીલકમળ જેવો સુવાસિત હતો ॥ સૂત્ર " ૧૨ ' तएण सा मल्ली ' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારબાદ (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) વિદેહ રાજકન્યા મલ્લિ (उम्मुक्कबालभावा) બચપણ વટાવીને (जाव रूवेण जोव्वणेण य

शरीरा चापि जाता ऽऽसीदिति सम्बन्ध'=। ततस्तदनन्तर खलु सा मल्लिर्देशोन वर्षशत जाता देशोन=किञ्चिदून वर्षशत जात=भूत व्यतीत यस्याः सा तथा, देशोनशतवर्षत्रयस्का सतीत्यर्थ' तान् षडपि प्रतिबुद्ध्यादीन् राज्ञो विपुलेनावधिना= अवधिज्ञानेन आभोगयन्ती २ पुनः पुनः पश्यन्ती विहरति, तिष्ठति स्म । तद्यथा प्रतिबुद्धिं यावत् जितशत्रु पाञ्चालाधिपतिम् । प्रतिबुद्धि नामा इक्ष्वाकुवंश्यो राजाऽ योध्याधिपतिः, चन्द्रच्छायोऽङ्गदेशाधिपति, शङ्खनामा काशीजनपदाधिपतिः, रुक्मीनामा कुणालाधिपति, अदीनशत्रुनामा कुरुदेशराजः, जितशत्रुः पञ्चाला

जाया यावि होत्था) यावत् रूप, यौवन एव लावण्य से अत्यत उत्कृष्ट शरीर युक्त हो गई । (तएण सा मल्ली देसूण वाससय जाया-ते छप्पि रायाणो विपुलेण ओहिणा आभोएमाणी २ विहरइ) उस समय उस की अवस्था शत वर्ष से कुछ कम थी । प्रतिबुद्धि आदि अपने साथ के उन ६ राजाओं को ज्योंही उनोंने अपने अवधिज्ञान से जाना तो उन्हे मालूम हो गया कि (पडिबुद्धिं जाव जियसतु पचालाहिवइ) अचल का जीव कोशल देश का अधिपति हुआ है-वह इक्ष्वाकुवशीय है और उसका नाम प्रतिबुद्ध है ।

धरण का जीव चद्रच्छाय नाम का अग देशाधिपति हुआ है । अभिचन्द्र का जीव काशी देश का अधिपति हुआ है उसका नाम इस समय शख है । पूरण का जीव कुणाल देश का अधिपति हुआ है । उसका नाम रुक्मी है । वसुका जीव कुरुदेश का अधिपति हुआ है

लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था) यावत २५, यौवन અને લાવણ્યથી એકદમ ઉત્તમ શરીરવાળી થઈ ગઈ

(तएण सा मल्ली देसूण वास समजाया ते छप्पि रायाणो विपुलेण ओहिणो आभोएमाणी २ विहरइ)

તેમની ઉંમર તે વખતે સો વર્ષ કરતા ઓછી હતી પ્રતિબુદ્ધિ વગેરે પેતાની સાથેના તે છ રાજાઓને તેણે પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જાણ્યા ત્યારે તેને જાણ થઇ કે (पडिबुद्धि जाव जियसत्तु पचालाहिवइ) અચલનો જીવ કોશલનો અધિપતિ થયો છે તે ઈક્ષ્વાકુવંશીય છે, અને તેનુ નામ પ્રતિબુદ્ધ છે

ધરણનો જીવ અગ દેશનો અધિપતિ થયો છે અને તેનુ નામ ચદ્ર ચ્છાય છે અભિચદ્રનો જીવ કાશી દેશનો અધિપતિ થયો છે અને અત્યારે તેનુ નામ શખ છે પૂરણ નો જીવ કુણાલ દેશનો અધિપતિ થયો છે અને તેનુ નામ રુકમી છે વસુનો જીવ કુરુ દેશનો અધિપતિ થયો છે અને તેનુ

धेपति, एतान् षडपि राज्ञः पुनपुनरवधिज्ञानेन विलोकयन्ती तिष्ठतिस्मेत्यर्थः। ानत्रयसपन्ना मल्ली भगवती स्वकीयावधिज्ञानोपयोगेनेद विदितवती-पूर्वभव-नेहवशात्ते षडपि राजानो मा परिणेतुमागमिष्यन्तीति तेषा प्रतिबोधार्थमुपायो मया विधेय इति भावयति स्मेति भावः। ततस्तदनन्तर सा मल्ली कौटुम्बिक पुरुषान् आज्ञाकारिण' पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव= वक्ष्यमाण प्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रियाः! यूय खलु अशोकवनिकायामेक महत्=बृहत् मोहनगृह=समोहजनकं गृह 'करेह' कुरुत=निर्मात, कीदृशं तदित्याह 'अणेगखभसयसन्निविट्ठ' अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टम् अनेकानि स्तम्भशतानि सन्निविष्टानि सलग्नानि यस्मिन् तत् तथाविधम्। तस्य खलु मोहनगृहस्य बहुम-

---

उसका नाम अदीन शत्रु है। वैश्रवण का जीव पांचालाधिपति हुआ है। उसका नाम जितशत्रु है (तएण सा मल्ली कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) इस प्रकार अपने पूर्वभव के साथियो की परिस्थिति को ज्ञात कर उस मल्ली भगवती ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया- (सद्दावित्ता एव वयासी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा- (तुब्भे ण देवाणुप्पिया। असोगवणियाए एग महं मोहणघर करेह-अणेगखभसयसन्निविट्ठ) हे देवानुप्रियों! तुम अशोकवनिका मे सैकडों खभों से युक्त एक विशाल समोहन गृह बनाओ। इस घर को बनाने को आदेश उन मल्ली भगवती इसलिये दिया था कि उन्हो ने अपने अवधिज्ञान से यह जान लिया था कि वे छहो राजा पूर्वभव के स्नेह से मुझ से विवाह करने के लिये यहा आवेंगे-अत मुझे उन्हे प्रतिबोधित करने के लिये उपाय करना चाहिये।

નામ અદીનશત્રુ છે વેશ્રવણ નો જીવ પંચાલ દેશનો અધિપતિ થયો તે અને તેનુ નામ જિતશત્રુ છે (तएण सा मल्ली कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) આ રીતે પોતાના પૂર્વભવના મિત્રોની પરિસ્થિતિ જાણીને મલ્લી ભગવતીએ કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા "सद्दावित्ता एव वयासी" અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ

(तुब्भेण देवाणुप्पिया! असोगवणियाए एग महं मोहणघर करेह-अणेग-खभ सयसन्निविट्ठ)

હે દેવાનુપ્રિયો! તમે અશોક વનિકામા સેકડો થાભલાઓ વાળુ એક મોટુ સમોહન ઘર બનાવો મલ્લી ભગવતીએ સમોહન ઘર એટલા માટે બનાવડાવ્યુ હતુ કે પોતાના અવધિજ્ઞાન થી તેમણે એ વાત જાણી લીધી હતી કે તેઓ છએ રાજા પૂર્વ ભવના પ્રેમને લીધે તેમની સાથે લગ્ન કરવા અહીં આવશે એથી તેમને પ્રતિબોધિત કરવાના ઉપાયો તેમણે મનમાં કરવા જ લાગ્યા કૌટુબિક પુરુષોને તેમણે આગળ કહ્યુ-

ध्यदेशभागे=सर्वथा मध्यस्थानभागे पढ़-' गब्भघरए ' गर्भगृहान् अन्तर्गृहान् कुरुत । वास भवनानि तेषा च गर्भगृहाणा बहुमध्यदेशभागे जालगृह अत्र गृहा न्तर्गत वस्तु बहि स्थिताः पश्यन्ति, तदर्थं कुड्येषु दार्वादिनिर्मितजालकानि वर्त-न्ते तद् जालगृह कुरुत तस्य खलु जालगृहस्य बहुमध्यदेशभागे मणिपीठिकां मणिमयपीठिका, कुरुत, कृत्वा यावत् प्रत्यर्पयन्ति मल्लीभगवत्या आदेशाद् कौटुम्बिकपुरुषा मोहनगृह तत्र मध्यभागे षट्सख्यक गर्भगृह तन्मध्ये मणिमय

(तस्स ण मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह) उस समोहन गृह के ठीक मध्यभाग में छ गर्भगृहो को बनाओ (तो सेण गब्भघरगाण बहुमज्झदेसभाए जालघरय करेह तस्स णं जाल घरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढिय करेह, जाव पच्चप्पिणति) उन गर्भ गृहों के मध्यभाग में जालघर को बनाओ। जालियों में से जिस घर की वस्तु को बाहिर रहे हुए मनुष्य देख लेते हैं। वह जाल घर कहलाते है। ये जालिया भीतो में काष्ट आदि की बनाकर लगाई जाती है। जिस प्रकार मकानो में हवा तथा प्रकाश आने के लिये खिड़कियों हुआ करती है-उसी प्रकार से ये जालियां भी लगाई जाती हैं। और उस जाल गृह के ठीक बीच के स्थान में मणिनिर्मित पीठिका को बनाओ।

बनाकर पीछे इसकी हमें सूचना दो। इस प्रकार मल्ली भगवती के आदेश को पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने १ मोहन गृह, उसके बीच में छ गर्भ गृह उनके बीच में १ जाल गृह और उस के बीच में मणि

"तस्सण मोहणगरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह" ૐ મોહન ઘરનો અધવચ્ચે છ ગર્ભ ગૃહો બનાવો

(तीसेण गब्भघरगाण बहुमज्झ देसभाए जाव घर य करेह तस्स ण जाल घरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढिय करेइ जाव पच्चप्पिणंति)

ગર્ભગૃહોના મધ્ય ભાગમા જાલ ઘર બનાવો જે ઘરની અદરની વસ્તુઓ ને બહારના માણસો ઘરની જાળીઓથી જોઈ લે છે, તે ઘરને જાળઘર કહે છે જાળીઓ ભીતોમા લાકડા વગેરેની બનાવીને મૂકવામા આવે છે ઘરોમા પવન તેમજ પ્રકાશ ને આવવાને માટે બારીઓ હોય છે, તેમજ જાળીઓ પણ મૂકવામા આવે છે) આ જાળ ઘરની બરાબર અધવચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા બનાવો

આબધુ તૈયાર થઈ જાય ત્યારે મને સૂચિત કરો આરીતે મલ્લી ભગ વતીની આજ્ઞા સાભળીને કૌટુબિક પુરુષોએ એક સમોહન ઘર, તેની વચ્ચે છ ગર્ભગૃહ, તેની વચ્ચે એક જાળગૃહ અને તેની વચ્ચે મણિ જટિત પીઠિકા

पीठिकां च कृत्वा मल्लीभगवत्या' समीपमागत्यावेदयन्ति स्म. भवदीयादेशमनुसृत्य सर्वं साधितमस्माभिरिति कथयन्ति स्मेत्यर्थः ॥ सू. १३ ॥

मूलम्–तएणं मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरित्तय सरिव्वय सरिसलावन्नजोव्वणगुणोववेय कणगमइं मत्थयच्छिड्ड पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेइ, करित्ता जं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ, तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगमईए मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी २ विहरइ। तएणं तीसे कणगमईए जाव मच्छयच्छिड्डाए पडिमाए एगमेगंसि पिंडेपक्खिप्पमाणे २ तओ गंधे पाउब्भवइ, से जहानामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए॥सू०१४॥

टीका–'तएण मल्ली' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु मल्ली=मल्लीकुमारी मणिपीठिकाया उपरि आत्मनः सदृशीं सदृशत्वं च सदृशवयस्का स्वशरीरसदृशप्रमाणा सदृशलावण्ययौवनगुणोपपेता स्वसदृशलावण्यादिगुणैः सहिता, कनकमयी सुवर्णनि

मय पीठिका बनाई–और बनाकर फिर वे मल्ली भगवती के पास आये–आकर कहने लगे–आपके आदेशानुसार हमने सब बनाकर यथावत् तैयार कर दिया है। सूत्र " १३ "

' तएण मल्ली मणिपेढियाए ' इत्यादि०।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (मल्ली) मल्ली कुमारीने (मणिपेढियाए उवरि अप्पणो सरिसिय सरित्तय सरिव्वय सरिसलावन्न जोव्वण गुणो

બનાવી અને બનાવીને તેઓ મલ્લી ભગવતીની સામે આવ્યા અને આવીને કહેવા લાગ્યા–" હે દેવાનુપ્રિયો હમારી આજ્ઞા પ્રમાણે અમે યથાવત બધુ તૈયાર કરાવી દીધુ છે " ॥ સૂત્ર " ૧૩ ,, ॥

'तएण मल्ली मणिपेढियाए' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યાર બાદ (मल्ली) મલ્લી કુમારીએ

(मणिपेढियाए उवरि अप्पणो सरिसिय सरित्तय सरिव्वय सरिस लावन्न

ध्यदेशभागे=सर्वथा मध्यस्थानभागे पद्-' गब्भघरए ' गर्भगृहान् अन्तर्गृहान् कुरुत । वास भवनानि तेषा च गर्भगृहाणा बहुमध्यदेशभागे जालगृह अत्र गृहा न्तर्गत वस्तु बहि स्थिताः पश्यन्ति, तदर्थ कुड्येषु दार्वादिनिर्मितजालकानि वर्त न्ते तद् जालगृह कुरुत तस्य खलु जालगृहस्य बहुमध्यदेशभागे मणिपीठिकां मणिमयपीठिका, कुरुत, कृत्वा यावत् प्रत्यर्पयन्ति मल्लीभगवत्या आदेशात् कौटुम्बिकपुरुषा मोहनगृह तत्र मध्यभागे षट्गर्भगृह तन्मध्ये मणिमय

(तस्स ण मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह) उस समोहन गृह के ठीक मध्यभाग मे छ गर्भगृहो को बनाओ (तो सेण गब्भघरगाण बहुमज्झदेसभाए जालघरय करेह तस्स ण जाल घरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढिय करेह, जाव पच्चप्पिणंति) उन गर्भ गृहों के मध्यभाग में जालघर को बनाओ । जालियों में से जिस घर की वस्तु को बाहिर रहे हुए मनुष्य देख लेते हैं । वह जाल घर कहलाते है । ये जालिया भीतो में काष्ट आदि की बनाकर लगाई जाती है । जिस प्रकार मकानो में हवा तथा प्रकाश आने के लिये खिड़कियों हुआ करती है-उसी प्रकार से ये जालिया भी लगाई जाती हैं । और उस जाल गृह के ठीक बीच के स्थान में मणिनिर्मित पीठिका को बनाओ ।

बनाकर पीछे इसकी हमें सूचना दो । इस प्रकार मल्ली भगवती के आदेश को पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने १ मोहन गृह, उसके बीच में छ गर्भ गृह उनके बीच में १ जाल गृह और उस के बीच में मणि

" तस्सण मोहणगरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह " ૐ મોહન ઘરનો અધવચ્ચે છ ગર્ભ ગૃહો બનાવો

(तीसेण गब्भघरगाण बहुमज्झ देसभाए जाव घर य करेह तस्स ण जाल घायस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढिय करेइ जाव पच्चप्पिणंति)

ગર્ભગૃહોના મધ્ય ભાગમા જાલ ઘર બનાવો જે ઘરની અદરની વસ્તુઓ ને બહારના માણસો ઘરની જાળીઓથી જોઈ લે છે, તે ઘરને જાળઘર કહે છે જાળીઓ ભીતોમા લાકડા વગેરેની બનાવીને મૂકવામા આવે છે ઘરોમા પવન તેમજ પ્રકાશ ને આવવાને માટે બારીઓ હોય છે, તેમજ જાળીઓ પણ મૂકવામા આવે છે) આ જાળ ઘરની બરાબર અધવચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા બનાવો

આબધુ તૈયાર થઈ જાય ત્યારે મને સૂચિત કરો આરીતે મલ્લી ભગ વતીની આજ્ઞા સાભળીને કૌટુબિક પુરુષોએ એક સમોહન ઘર, તેની વચ્ચે છ ગર્ભગૃહ, તેની વચ્ચે એક જાળગૃહ અને તેની વચ્ચે મણિ જટિત પીઠિકા

मध्या यावत् मस्तकच्छिद्राया प्रतिमायामेकैकस्मिन् पिण्डे प्रक्षिप्यमाणे प्रक्षिप्यमाणे सति ' तओ ' ततः=तस्या पुत्तलिकाया सकाशाद् गन्धः=दुर्गन्धः पाउब्भवइ ' प्रादुर्भवति=बहिर्निस्सरति स्म। सदृष्टान्त पुत्तलिका वर्णयति-तद् यथानामकम्=यथा दृष्टान्तम्-' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक इति वा यावत्-अत्र यावच्छब्देन-' गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा, मज्जारमडेइ वा, मणुस्समडेइ वा, महिसमडेइ वा, मूसगमडेइ वा, आसमडेइ वा, हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा, वाघमडेइ वा, विगमडेइ वा, दीविमडेइ वा, इति सङ्ग्रहः ' गोमृतक इति वा, शुनकमृतक इति वा, मार्जारमृतक इति वा, मनुष्यमृतक इति वा, महिषमृतक, इति वा मूषकमृतक इति वा, अश्वमृतक इति वा, हस्तिमृतक इति वा, सिंहमृतक इति वा, व्याघ्रमृतक

तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छयछिड्डाए पडिमाए एगमेगसि पिंड पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) इस प्रकार करते करते उस सुवर्ण मयी पुत्तलिका मे मस्तक के छेद द्वारा पिंड पहुँच ने पर उस पुत्तलिका से दुर्गन्ध निकल ने लगी।

(से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए) वह दुर्गंध ऐसी थी-जैसी मरे हुए सर्प के सड जाने की होती है। यहां यावत् शब्द से " गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा " इत्यादि का सग्रह हुआ है।

इसका अर्थ इस प्रकार है-वह दुर्गंध गाय के मरे हुए सडे कलेवर की होती है मरे हुए कुत्ते के सडे कलेवरकी होती है, मरे हुए बिलाव के सडे कलेवर की होती है, मनुष्य के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, महिष के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, मरे हुए चूहे के सडे कलेवर की होती है, मरे हुए घोडे के सडे कलेवर की

માથાના કાણામા નાખતી (तएण तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छय छिड्डाए पडिमाए एगमेगसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) આરીતે સોનાની પૂતળીમા દરરોજ એક એક કોળીયો નાખવાથી તેમાથી દુર્ગંધ નીકળવા લાગી (से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए) મરેલા અને સડેલા સાપના જેવી તે દુર્ગધ હતી અહી યાવત શબ્દથી ' गोमडेइवा, सुणगमडेइवा ' વગેરેનો સગ્રહ થયેલ છે આનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે મરીને સડી ગયેલા ગાયના શરીરના જેવી મરીને સડવા માડેલા કૂતરાના શરીરના જેવી મરીને સડવા માડેલા બિલાડાના શરીરના જેવી, મરીને સડતા માણસનાં શરીરના જેવી, મરીને સડતા પાડાના શરીરના જેવી, મરીને સડતા ઉદરના શરીરના જેવી, મરીને સડતા ઘોડાના શરીરના જેવી, મરીને સડી ગયેલા હાથીના શરીરના જેવી,

र्मिता 'मत्थयच्छिद्द' मस्तकच्छिद्रा मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्ता 'पउमुप्पलपिहाणं पद्मोत्पलपिधाना=रक्तनीलकमलानि पिधानानि मस्तकच्छिद्रस्याच्छादनानि यस्या स्ता प्रतिमा = स्वतुल्यकृतिकपुत्तलिका कारयति = शिल्पकारैर्निर्मापयति । कारयित्वा सा मल्ली कुमारी यद् ' विउल ' विपुल=बहुलम् , अशनपानखाद्य स्वाद्य= चतुर्विधमाहारम् आहारयति=भुङ्क्ते, तत तस्मात्-' मणुन्नाओ ' मनोज्ञाम् प्रिय रसयुक्तात् अशनपानखाद्यस्वाद्यात् चतुर्विधाहारभेदात् 'पल्लाकृल्लि' पल्याकल्पि दिने दिने, एकमेक पिण्ड=ग्रास गृहीत्वा, तस्याः कनकमय्याः मस्तकच्छिद्राया यावत् प्रतिमाया मस्तके=मस्तकोपरिभागवर्तिनि रन्ध्रे प्रक्षिपन्ती=एकमेक ग्रास निपातयन्ती ' विहरइ ' विहरति=आस्ते स्म । ततस्तदनन्तर खलु तस्या कनक

ववेय कणगमइ मत्थयच्छिद्द पउमुप्पलप्पिहाण पडिम करेइ) उस माणिपीठिका के ऊपर अपनी जैसी-अपनी जैसी वयवाली अपने शरीर के सदृश प्रमाणवाली, अपने जैसे लावण्य आदि गुणों वाली एक सुवर्ण निर्मित पुत्तलिका शिल्पियो से घनवाई । उसके मस्तक में एक बड़ा सा छेद रखवाया । वह छेद रक्त नील कमल रूप ढक्कन से ढका हुआ था । (करित्ता ज विउल असण पाण खाइम साइम आहारेइ तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लिं एगद्वारेण पिउगहाय विहरइ) जब इस प्रकार की पुत्तलिका बनकर तैयार हो चुकी-तब उस मल्ली कुमारी ने विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया और स्वय खाया-बाद मे उस प्रियरसयुक्त आहार में से प्रतिदिन वह एक एक ग्रास को लेकर उस मस्तक छिद्र वाली सुवर्ण की पुत्तलिका के उस मस्तकोपरिभागवर्ती छेद मे डालने लगी-(तएण

जोव्वणगुणोववेय कणगमइ मत्थयच्छिद्द पउमुप्पलप्पिहाण पडिम करेइ)

તે મણિ પીઠિકા ઉપર શિલ્પ શાસ્ત્રીઓ પાસેથી પોતાના જેવી પોતાના જેવા આયુષ્યની, પોતાના શરીર જેવા પ્રમાણની પોતાના જેવા લાવણ્ય વગેરે ગુણોવાળી એક સોનાની પૂતળી બનાવડાવી તેના માથામા એક મોટુ કાણું રખાવ્યુ તે કાણુ રકતનીલ કમળના ઢાકણાથી ઢાકેલુ હતુ

(करित्ता ज विउल असण पाण खाइम साइम आहारेइ तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लिं एगद्वारेण पिउगहाय विहरइ)

જ્યારે આરીતે સોનાની પૂતળી તૈયાર થઇ ગઇ ત્યારે મલ્લી કુમારીએ અશન પાન ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો પુષ્કળ પ્રમાણુમા આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો, અને હમેશાં તે આહારમાથી પોતે જમતી, અને ત્યાર બાદ તેમાથી એક કોળીઓ લઇને કાણાવાળી સોનાની પૂતળીના

मय्या यावत् मस्तकच्छिद्राया प्रतिमायामेकैकस्मिन् पिण्डे प्रक्षिप्यमाणे प्रक्षिप्यमाणे सति ' तओ ' ततः=तस्या पुत्तलिकाया सकाशाद् गन्धः=दुर्गन्धः पाउब्भवइ ' प्रादुर्भवति=बहिर्निस्सरति स्म। सदृष्टान्त पुत्तलिका वर्णयति-तद् यथानामकम्=यथा दृष्टान्तम्-' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक इति वा यावत्-अत्र यावच्छब्देन-' गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा, मज्जारमडेइ वा, मणुस्समडेइ वा, महिसमडेइ वा, मूसगमडेइ वा, आसमडेइ वा, हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा, वाघमडेइ वा, विगमडेइ वा, दीविमडेइ वा, इति सङ्ग्रहः ' गोमृतक इति वा, शुनकमृतक इति वा, मार्जारमृतक इति वा, मनुष्यमृतक इति वा, महिषमृतक, इति वा मूषकमृतक इति वा, अश्वमृतक इति वा, हस्तिमृतक इति वा, सिंहमृतक इति वा, व्याघ्रमृतक

तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छयछिड्डाए पडिमाए एगमेगसि पिंड पक्खिप्पमाणे २ तओ गंधे पाउब्भवइ) इस प्रकार करते करते उस सुवर्ण मयी पुत्तलिका मे मस्तक के छेद द्वारा पिंड पहुँच ने पर उस पुत्तलिका से दुर्गन्ध निकल ने लगी।

(से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए) वह दुर्गंध ऐसी थी-जैसी मरे हुए सर्प के सड जाने की होती है। यहां यावत् शब्द से " गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा " इत्यादि का सग्रह हुआ है।

इसका अर्थ इस प्रकार है-वह दुर्गंध गाय के मरे हुए सडे कलेवर की होती है मरे हुए कुत्ते के सडे कलेवरकी होती है, मरे हुए बिलाव के सडे कलेवर की होती है, मनुष्य के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, महिष के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, मरे हुए चूहे के सडे कलेवर की होती है, मरे हुए घोडे के सडे कलेवर की

માથાના કાણામા નાખતી (तएण तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छय छिड्डाए पडिमाए एगमेगसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) આરીતે સોનાની પૂતળીમા દરરોજ એક એક કોળીયો નાખવાથી તેમાથી દુર્ગંધ નીકળવા લાગી (से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए) મરેલા અને સડેલા સાપના જેવી તે દુર્ગધ હતી અહી યાવત શબ્દથી ' गोमडेइवा, सुणगमडेइवा ' વગેરેનો સગ્રહ થયેલ છે આનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે મરીને સડી ગયેલા ગાયના શરીરના જેવી મરીને સડવા માડેલા કૂતરાના શરીરના જેવી મરીને સડવા માડેલા બિલાડાના શરીરના જેવી, મરીને સડતા માણસના શરીરના જેવી, મરીને સડતા પાડાના શરીરના જેવી, મરીને સડતા ઉદરના શરીરના જેવી, મરીને સડતા ઘોડાના શરીરના જેવી, મરીને સડી ગયેલા હાથીના શરીરના જેવી,

इति वा, वृकमृतक इति वा, द्वीपिमृतक इति वा, इतिकृत्वा, एषां मृतसर्पादि कलेवराणा दुर्गन्धः खलु यादृशोऽनिष्टः प्रादुर्भवति 'एत्तो' एतस्माद् 'अणि ट्ठतराए' अनिष्टतर अधिकस्तीव्रः, अतएव 'अमणामतराए' अमनआमतरः= मनसोऽति प्रतिकूलो दुर्गन्धस्तस्याः पुत्तलिकाया अभवदित्यर्थ ॥ सू० १४ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसलणामं जणवए, तत्थ णं सागेए नाम नयरे, तस्स णं उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं महं एगे णागघरए होत्था दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे, तत्थ णं नयरे पडिबुद्धिनामं इक्खागुराया परिवसइ, पउमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदण्डभेयकुसले, तएणं पउमावईए देवीए अन्नया कयाइ नागजन्नए यावि होत्था। तएणं सा पउमावई नागजन्नमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल परिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु सामी! मम कल्लं नागजन्नए यावि भविस्सइ, त

होती है, मरे हुए हाथी के सडे कलेवर की होती है, मरे हुए सिंह के सडे कलेवर की होती है, मरे हुए व्याघ्र के सडे कलेवर की होती है वृक और द्वीपि के सडे कलेवर की होती है। इन मृत सर्पादिकों के सडे हुए कलेवरों की दुर्गंध जिस प्रकार अनिष्ट होती है उसी प्रकार इससे भी अनिष्टतर वह पुत्तलिका से निकलती हुई दुर्गंध थी—अमन आमतर थी मन को जरा सी भी रुचे ऐसी नही थी—किन्तु मन के अतिसर्वथा प्रतिकूल थी। सूत्र "१४"

મરીને સડી ગયેલા સિંહના શરીરના જેવી, મરીને સડી ગયેલા વાઘના શરીરના જેવી મરીને સડી ગયેલા વરુ અને દીપડા (દ્વીપિ)ના શરીરના જેવી, મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના શરીરના જેવી અનિષ્ટકારી દુર્ગંધ હોય છે તેવી જ અને તેઓના કરતા પણ વધારે અનિષ્ટતર પૂતળીમાથી નીકળતી દુર્ગંધ હતી મનને એકદમ અણુગમો થાય તેવી સર્વથા પ્રતિકૂળ તેમાથી નીકળતી દુર્ગંધ હતી ॥ સૂત્ર "૧૪" ॥

इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नय गमित्तए, तुब्भेवि णं सामी ! मम नागजन्नयसि समोसरहा तएणं पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ। तएण पउमावई पडिबुद्धिणा रन्नो अब्भणुन्नाया हट्ठतुट्ठ जाव कोडु बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणु-प्पिया ! मम कल्ल नागजण्णए भविस्सइ तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावित्ता एवं वदह एव खलु पउमावइए देवीए कल्ल नागजण्णए भविस्सइ, त तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! जलथलय० दसद्धवन्नं मल्ल णागघरयसि साहरह, एगं च णं मह सिरिदा-मगंड उवणेह । तएणं जलथलय दसद्धवन्नेणं मल्लेणं णाणा-विह भत्तिसुविरइय हसामियमउरकोच सारसचक्कवायमयणसाल कोइलकुलोववेय ईहामियजावभत्तिचित्त महग्घ महरिह विपुलं पुप्फमंडवं विरएह तस्सणं वहुमज्झदेसभाए एग मह सिरिदा-मगड जाव गधध्धुणिं मुयत उल्लोयंसि ओलंबेह, ओलवित्ता पउमावइ देवि पडिवालेमाणा २ चिट्ठह। तएणं ते कोडुविया जाव चिट्ठति ॥ सू० १५ ॥

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समयेकोसला-नाम जनपदः देश आसीत्, तत्र खलु साकेतनामक नगरमासीत् । तस्य साकेत

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (कोसला नाम जणवए) कोशल नामका जन पद-देश था ।

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि

टीકાર્થ-(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે વખતે (कोसल नाम जणवए) કોશલ નામે જનપદ (દેશ) હતો (तत्थण सागेए नाम नयरे)

नगरस्य खलु उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे=ईशानकोणे अत्र खलु महदेक नागगृहमासीत् तत् कीदृशमित्याह-दिव्य=प्रधानं, सत्य कामनापूरकत्वात् ' सच्चोवाए ' सत्यावपाद =सत्याभिलाप, ' सन्निहियपाडिहेरे ' सन्निहितमातिहार्यं=सन्निहित विनिवेशित मातिहार्यं प्रतीहारकर्म व्यन्तरदेवेन यस्मिन् तत्तथा देवाधिष्ठितमित्यर्थः । तत्र खलु नगरे=साकेतनगरे प्रतिबुद्धिनामा इक्ष्वाकुराजः=इक्ष्वाकुवंशीयो राजा परिव सति । पद्मावती देवी तस्य भार्याऽऽसीत् । ' सुबुद्धिः अमच्चे ' सुबुद्धिनामक स्तस्यामात्य =मन्त्री, स कथभूत इत्याह-' सामदण्डभेयकुसले ' सामदण्डभेदकुशलः

(तत्थण साएए नाम नयरे) उस में साकेत नाम का नगर था । (तस्स ण उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए-एत्थ ण महं एगे णागघरए होत्था दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सति हियपाडिहेरे) उस के ईशान कोण में विशाल नागघर था ।

यह दिव्य और प्रत्येक व्यक्ति की कामना का पूरक होने से सत्य था । जो भी कोई कामना-अभिलाषा-इसके समक्ष करता वह उस की सफल हो जाती-सत्य हो जाती-इसलिये यह सत्याभिलाष था । इसके द्वार पर व्यन्तर देव प्रतिहार के रूप मे खडे रहते थे इसलिये यह सन्निहित प्रतिहार्य था । (तत्थ ण नयरे पडिबुद्धी नाम इक्खागु राया परिवसइ, पउमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदण्डभेयकुसले) उस साकेत (अयोध्या) नगर में इक्ष्वाकुवंश से उत्पन्न प्रतिबुद्ध नाम का राजा रहता था । इस की भार्या का नाम पद्मावती था । अमात्य का नाम सुबुद्धि था।

તેમા સાકેત નામે નગર હતુ

(तस्सण उत्तर पुरत्थिमे दिसी भाए-एत्थण महं एगे णागघरए होत्था) दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सतिहिय पडिहेरे)

તેના ઈશાન કોણમા એક મોટુ નાગઘર હતુ

તે દિવ્ય અને દરેકે દરેક માણસની ઈચ્છાને પૂરી કરનાર હોવાથી સત્ય હતુ ગમે તે વ્યક્તિ પોતાની ઈચ્છા-કામના-તેની સામે પ્રકટ કરતો, તેની ઈચ્છા તે ચોક્કસ પૂરી પાડતુ હતુ તેની કામના સફળ તેમજ સત્ય થતી હતી એથી જ તે સત્યાભિલાષ હતુ વ્યંતર દેવો તેના દ્વારે પ્રતિહારના રૂપમા ઊભા રહેતા હતા એથીજ તે સન્નિહિત પ્રતિહાય હતુ

(तत्थण नयरे पडिबुद्धीनाम इक्खागुराया परिवसइ, पउमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदण्डभेयकुसले)

સાકેત નગરમા ઈક્ષ્વાકુવંશમા જન્મેલો પ્રતિબુદ્ધ નામે રાજા રહેતો હતો તેની ભાર્યાનુ નામ પદ્માવતી હતુ તેના અમાત્ય (મંત્રી) નુ નામ સુબુદ્ધિ હતુ

साम=सान्त्वनप्रयोगः, दण्डः=युद्ध, भेदः=शत्रुपक्षे मन्त्रिसैनिकादिभिर्विरोधोत्पादनम्, तेषु कुशलः=निपुण । ततस्तदनन्तर खलु पद्मावत्यादेव्या अन्यदा कदाचित् नागयज्ञश्चाप्यासीत्=नागमहोत्सव दिवस समायात इत्यर्थः । ततस्तदा खलु सा पद्मावती देवी नागयज्ञ नागमहोत्सवदिवसम्, उपस्थित=समायात ज्ञात्वा यत्रैव प्रतिबुद्धिर्नाम इक्ष्वाकुराजस्तत्रैवोपागच्छति । उपागत्य करतल परिगृहीत शिरआवर्त्त दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्–हे स्वामिन् । एव खलु मम कल्ये आगामिदिवसे नागयज्ञश्चापि भविष्यति, तद्=तस्मात् इच्छामि

यह अमात्य साम, दण्ड, और भेद नीति में कुशल था। शत्रु को शांति से वश करना यह साम नीति है, युद्ध से वश करना–उसे परास्त कर अपने आधिन बनाना–यह दण्ड निति है–शत्रु की सेना मे मत्री तथा सैनिको में विरोध उत्पन्न कराना इस का नाम भेद है। (तएणं पउमावईए देवीए अन्नया कयाइ नागजन्नए यावि होत्था) एक समय की बात है कि पद्मावती देवी के यहा नागयज्ञ के महोत्सव का दिन आया। (तएण सा पउमावई नागजन्न मुवट्ठिय जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी–तेणेव उवागच्छइ)अत.यह पद्मावती देवी नाग यज्ञ–नागमहोत्सव–का दिन आया हुआ जान कर जहाँ अपने पति प्रतिबुद्धि राजा थे वहा गई। (उवागच्छित्ता करयल परिग्गहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी) वहा जाकर उस ने राजा को दोनों हाथो की अजलि बनाकर और मस्तक पर रखकर नमस्कार किया–बाद में वह इस प्रकार कहने लगी–(एव खलु सामी मम कल्ल नाग जन्नए

તે અમાત્ય સામ દંડ તેમજ ભેદ નીતિમા કુશળ હતો. શત્રુને શાતિથી વશકરવો તે સામનીતિ છે યુદ્ધ લડીને વશ કરવો, તેને હરાવવો અને પોતાને અધીન કરવો તે દંડનીતિ તે શત્રુની સેનામા મત્રી તેમજ સૈનિકોમા વિરોધ ઉત્પન્ન કરવો તે ભેદ નીતિ છે (तएण पउमावइए देवीए अन्नया कयाइ नागजन्नए यावि होत्था) એક સમયની વાત છે કે પદ્માવતી દેવીને ત્યા નાગયજ્ઞ નો મહોત્સવ દિવસ આવ્યો (तएण सा पउमावई नागजन्नमुवट्ठिय जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धि तेणेव उवागच्छइ) નાગ મહોત્સવ ના દિવસની જાણ થતા પદ્માવતી દેવી પ્રતિબુદ્ધ રાજાની પાસે ગઇ (उवागच्छित्ता करयलपरिगहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी) ત્યા જઇને તેણે બને હાથોની અજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી કહ્યુ

(एव खलु सामी मम कल्ल नाग जन्नए यावि भविस्सइ त इच्छामि णं

खलु स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता=आदिष्टासती नागयज्ञकं गन्तु नागमहोत्सवं कर्तुं=नागगृहं गन्तुम् 'इच्छामी' ति पूर्वेण सम्बन्धः । हे स्वामिन् ! यूयमपि खलु मम नागयज्ञे=नागपूजाया समवसरत=आगच्छत यत्तु ' मया सार्धं समागच्छत इत्यर्थः' इति व्याख्यातं तत् ममादिकम् पद्मावत्या उक्तिं स्वीकृत्य हि राज्ञः पश्चाद् गमनपरं शास्त्रं विरुध्येत । ततस्तदनन्तरं खलु स प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको नृप पद्मावत्या देव्या एतमर्थम्=प्रार्थनारूपं प्रतिशृणोति=स्वीकरोतिस्म । ततः खलु पद्मावती प्रतिबुद्धिना राज्ञाऽभ्यनुज्ञाता हृष्टा तुष्टा० यावत् कौटुम्बिकपुरुषान् आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवं=वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्- हे देवानुप्रियाः ! एवं खलु मम कल्ये नागयज्ञको भविष्यति,

यदि भविस्सइ, तं इच्छामिणं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नए य गमित्तए) स्वामीन् ! कल नागमहोत्सव होगा-मैं कल नाग महोत्सव मनाऊँगी-अत. आपसे आज्ञा लेने आई हूँ अत. आप आज्ञा दे तो मैं कल नाग महोत्सव मनाने के लिये नाग गृह जाऊँ । हे स्वामिन् ! आप भी मेरे इस उत्सव में पधारें ।

(तएण पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ) पद्मावती देवी के इस कथन को सुनकर प्रतिबुद्धि राजा ने उस के प्रार्थना रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया (तएण पउमावई पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठ तुट्ठ जाव कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) इस के अनन्तर प्रतिबुद्धि राजा से आज्ञापित हुई वह पद्मावती देवी बहुत अधिक हर्षित एव सतुष्ट हुई । यावत् उस ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम, कल्ल नागजण्णए भविस्सइ,

सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नएय गमित्तए)

હે સ્વામિન્ આવતી કાલે મારે ત્યા નાગ મહોત્સવ થશે હુ આવતી કાલે મહોત્સવ ઉજવવાની છુ એથી નાગ મહોત્સવ ઉજવવાની તમારી પાસેથી આજ્ઞા મેળવવા આવી છુ તમારી આજ્ઞા થાય તો હુ આવતી કાલે નાગ મહોત્સવ માણવા નાગઘર જાઉ હે સ્વામિ ! ઉત્સવમા પધારવા તમને પણ હુ આમત્રણ આપું છુ

(तएण पडिबुद्धि पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ) પદ્માવતી નુ કથન સાભળીને પ્રતિબુદ્ધ રાજાએ તેની વિનતી સ્વીકારી લીધી " तएण पउमावई पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठतुट्ठ जाव कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ " પ્રતિબુદ્ધિ રાજા વડે આજ્ઞાકિત થયેલી રાણી પદ્માવતી દેવી ખૂબજ હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઇ યાવત તેણે કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા

तद्=तस्मात् यूय मालाकारान् शब्दयत, शब्दयित्वा एव वदत-एव खलु पद्मावत्या देव्याः कल्ये=प्रभाते नागयज्ञः =नाग महोत्सवो भविष्यति तद्=तस्माद् यूय खलु हे देवानुप्रियाः जलस्थलजभास्वरभूत जलोत्पन्न विकसित प्रचुरदशार्ध वर्ण=पञ्चवर्णमाल्य कुसुमजात माल्य च नागगृहे सहरत=समानयत एकच खलु महत् श्रीदामकाण्डमुपनयत समानयत । तत खलु जलस्थलज भास्वर भूतेन दशार्धवर्णेन माल्येन 'णाणाविहभत्तिसु विरइय'नानाविध भक्ति सुरचितम् अनेकप्रकारकचित्ररचना सुशोभित,पुप्पमण्डप विरचयतेति सम्बन्ध', पुनः कथभूत तदित्याह-'हसमियमउरकोंच सारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेव ' हसमृगमयूरक्रोञ्चसारसचक्रवाकमदन शालकोकिल कुलोपपेतम्-हसादि कोकिलान्ताः प्राग् व्याख्याताः, तेषा कुलै समूहैश्चित्ररूपैरुपपेत्त युक्त, 'ईहामियजावभत्तिचित्त ' ईहामृग यावद् भक्तिचित्रम्

त तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावित्ता एव वदह एव खलु पउमावईए देवीए कल्ल नाग जण्णए भविस्सइ) बुलाकर उन से उस ने ऐसा कहा देवानुप्रियों ! मेरे यहां कल नागमहोत्सव होगा-इसलिये तुम लोग मालियो को बुलाओ-और बुलाकर उन से ऐसा कहो-कि पद्मादेवी के कल नाग यज्ञ होगा । (त तुब्भेण देवाणुप्पिया ! जल थलय० दसद्धवन्न मल्ल णागघरयसि साहरह) सो तुम सब हे देवानुप्रियो ! जलथल में उत्पन्न हुए विकसित पचवर्णो के पुष्पो को नागघर पर पहुँचाओ और साथ मे एक महान् श्रीदामकाण्ड को भी । (तएण जलथल० दसद्धवन्नेण मल्लेणं णाणा विह भत्तिसु विरुय हँस मिय मउर कोच सारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेय ईहामिय जाव भत्तिचित्त

" सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया मम कल्ल नाग जण्णए भविस्सइ, त तुब्भे मालागारे सद्दावेह सद्दावित्ता एव वदह एव खलु पउमावईए देवीए कल्ल नागजण्णए भविस्सइ "

બોલાવીને તેમને કહ્યુ- " દેવાનુપ્રિયો ! મારે ત્યા આવતી કાલે નાગ મહોત્સવ થશે એથી તમે માળીઓને બોલાવો અને બોલાવીને તેમને એ પ્રમાણે કહો કે કાલે પદ્માવતી દેવીને ત્યા નાગ મહોત્સવ થશે (त तुब्भेण देवाणुप्पिया ! जल थलय दसद्धवन्न मल्ल णागघरयसि साहरह) તો હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બધા જળ થળમા Cત્પન્ન થયેલા પાચ રગોના પુષ્પોને અને શ્રીદામકાંડને નાગઘરમા પહોચાડો

" तएण जल थल० दसद्धवन्ने ण मल्लेण णाणाविह भत्तिसु विरुय हँस मियमउर कोंच सारस चक्कवायमयणसाल कोइलकुलोववेय ईहामिय जाव भत्ति चित्त महग्घ गहरिह विपुल पूप्फमल्ल विरएह)

खलु स्वामिन्! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता=आदिष्टासती नागयज्ञक गन्तु नागमहोत्सव कर्तुं=नागगृह गन्तुम् 'इच्छामी' ति पूर्वेण समन्वयः। हे स्वामिन्! यूयमपि खलु मम नागयज्ञे=नागपूजाया समवसरत=आगच्छत यतु 'मया सार्धं समागच्छत इत्यर्थः' इति व्याख्यात तत् ममादिकम् पद्मावत्या उक्तिं स्वीकृत्य हि राज्ञः पश्चाद् गमनपर शास्त्र त्विरुध्येत। ततस्तदनन्तर खलु स प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको नृप पद्मावत्या देव्या एतमर्थम्=प्रार्थनारूप प्रतिशृणोति=स्वीकरोतिस्म। ततः खलु पद्मावती प्रतिबुद्धिना राज्ञाऽभ्यनुज्ञाता हृष्टा तुष्टा० यावत् कौटुम्बिकपुरुषान् आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव=वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्- हे देवानुप्रियाः! एव खलु मम कल्ये नागयज्ञको भविष्यति,

---

यावि भविस्सइ, त इच्छामिण सामी! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नए य गमित्तए) स्वामीन्! कल नागमहोत्सव होगा-मैं कल नाग महोत्सव मनाऊँगी-अत. आपसे आज्ञा लेने आई हूँ अतः आप आज्ञा दे तो मैं कल नाग महोत्सव मनाने के लिये नाग गृह जाऊँ। हे स्वभिन्! आप भी मेरे इस उत्सव में पधारें।

(तएण पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ) पद्मावती देवी के इस कथन को सुनकर प्रतिबुद्धि राजा ने उस के प्रार्थना रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया (तएण पउमावई पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठ तुट्ठ जाव कोडुबिय पुरिसे सद्दावेइ) इस के अनन्तर प्रतिबुद्धि राजा से आज्ञापित हुई वह पद्मावती देवी बहुत अधिक हर्षित एव सतुष्ट हुई। यावत् उस ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया! मम, कल्ल नागजण्णए भविस्सइ,

---

सामी! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नएय गमित्तए)

હે સ્વામિન્ આવતી કાલે મારે ત્યા નાગ મહોત્સવ થશે હુ આવતી કાલે મહોત્સવ ઉજવવાની છુ એથી નાગ મહોત્સવ ઉજવવાની તમારી પાસેથી આજ્ઞા મેળવવા આવી છુ તમારી આજ્ઞા થાય તો હુ આવતી કાલે નાગ મહોત્સવ માણવા નાગઘર જાઉ હે સ્વામિ! ઉત્સવમા પધારવા તમને પણ હુ આમત્રણ આપુ છુ

(तएण पडिबुद्धि पउमावईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ) પદ્માવતી નુ કથન સાભળીને પ્રતિબુદ્ધ રાજાએ તેની વિનતી સ્વીકારી લીધી "तएण पउमावई पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठतुट्ठ जाव कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ" પ્રતિબુદ્ધિ રાજા વડે આજ્ઞાકિત થયેલી રાણી પદ્માવતી દેવી ખૂબજ હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઇ યાવત તેણે કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા

तद्=तस्मात् यूय मालाकारान् शब्दयत, शब्दयित्वा एव वदत-एव खलु पद्मावत्या देव्याः श्वस्ये=प्रभाते नागयज्ञक =नाग महोत्सवो भविष्यति तद्=तस्माद् यूय खलु हे देवानुप्रियाः जलस्थलजभास्वरप्रभूत जलोत्पन्न विकसित प्रचुरदशार्ध वर्ण=पञ्च-वर्णमाल्य कुसुमजात माल्य च नागगृहे सहरत=समानयत एकच खलु महत् श्रीदाम-काण्डमुपनयत समानयत । ततः खलु जलस्थलज भास्वर प्रभूतेन दशार्धवर्णेन माल्येन 'णाणाविहभत्तिसु विरइय'नानाविध भक्ति सुरचितम् अनेकप्रकारकचित्ररचना सुशोभित,पुष्पमण्डप विरचयतेति सम्बन्धः, पुनः कथभूत तदित्याह-'हसमियमउ-रकोंच सारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेव ' हसमृगमयूरक्रोञ्चसारसचक्रवाक मदन शालकोकिल कुलोपपेतम्-ह सादि कोकिलान्ताः प्राग् व्याख्याताः, तेषा कुलै समूहैश्चित्ररूपैरुपपेत्त युक्त, 'ईहामियजावभत्तिचित्त ' ईहामृग यावद् भक्तिचित्रम्

त तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दाचित्ता एव वदह एव खलु पउमावईए देवीए कल्ल नाग जण्णए भविस्सइ) बुलाकर उन से उस ने ऐसा कहा देवानुप्रियों ! मेरे यहां कल नागमहोत्सव होगा-इसलिये तुम लोग मालियो को बुलाओ-और बुलाकर उन से ऐसा कहो-कि पद्मादेवी के कल नाग यज्ञ होगा । (त तुब्भेण देवाणुप्पिया ! जल थलय० दसद्धवन्न मल्ल णागघरयसि साहरह) सो तुम सब हे देवानुप्रियो ! जलथल मे उत्पन्न हुए विकसित पचवर्णो के पुष्पो को नागघर पर पहुँचाओ और साथ मे एक महान् श्रीदामकाण्ड को भी । (तएण जलथल० दसद्धव ने ण मल्लेणं णाणा विह भत्तिसु विरच्य हँस मिय मउर कोच सारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेय ईहामिय जाव भत्तिचित्त

" सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया मम कल्ल नाग जण्णए भविस्सइ, त तुब्भे मालागारे सद्दावेह सद्दावित्ता एव वदह एव खलु पउमावईए देवीए कल्ल नागजण्णए भविस्सइ "

બોલાવીને તેમને કહ્યુ- " દેવાનુપ્રિયો ! મારે ત્યા આવતી કાલે નાગ મહોત્સવ થશે એથી તમે માળીઓને બોલાવો અને બોલાવીને તેમને એ પ્રમાણે કહો કે કાલે પદ્માવતી દેવીને ત્યા નાગ મહોત્સવ થશે (त तुब्भेण देवाणुप्पिया ! जल थलय दसद्धवन्न मल्ल णागघरयसि साहरह) તો હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બધા જળ થળમા ઉત્પન્ન થયેલા પાચ રગોના પુષ્પોને અને શ્રીદામકાંડને નાગઘરોમા પહોચાડો

" तएण जल थल० दसद्धवन्ने ण मल्लेण णाणाविह भत्तिसु विरच्य हँस मियमउर कौंच सारस चक्कवायमयणसाल कोइलकुलोववेय ईहामिय जाव भत्ति चित्त महग्घ गहरिह विपुल पूष्फमटव विरएह)

अत्र यावच्छब्देन - ' ईहामृगेत्यनन्तर - वृषभतुरगमकरविहगव्यालकिन्नररुरु शरभकुञ्जरवनलतापद्मलता ' इतिपाठस्य ग्रहणम् । ईहामृगो वृकः, रुरुश्चरमौ मृगजातिविशेषौ अन्ये स्पष्टार्थाः तेषां भक्त्या चित्ररचनया चित्रम्-आश्चर्य जनकम् , ' महग्घ ' महार्घं-महामूल्यक ' महरिह ' महार्हं=महता योग्य, विपुल विस्तीर्णम् , ईदृश पुष्पमण्डप विरचयत कुरुतेत्यर्थः । तस्य पुष्पमण्डपस्य खलु बहुमध्यदेशभागे-सर्वथा मध्यभागे एक महत् श्रीदामकाण्ड यावत् पाटलादिपुष्प समूहसहितगन्धद्रव्याणि गन्धवर्त्तिं मुञ्चत्-ददत् ' उल्लोयसि ' उल्लोचे=चन्द्रा तपे वस्त्रनिर्मितगृहाभ्यन्तरिकावरणे-' ओलएह ' अवलम्बयत , ओलबित्ता अव

महग्घ महरिह विपुलं पुप्फमडव चिरएह) इस के अनन्तर वे सब जल थल के विकसित पचवर्णों के पुष्पो से और अनेक प्रकार के चित्रों की रचना से सुशोभित एक पुष्प मडप बनावे, इस मडप को वे हस मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक, मदनशाल कोकिल इन सब के चित्रों से सुशोभित करें ईहा मृग-वृक, वृषभ, तुरग, मकर, विहग, व्यालक-सर्प, किन्नर, एए, शरभ, कुजर-वनलता और पद्मलता इन के चित्रों की रचना से उसे आश्चर्य कारक बनावें ।

वह पुष्प मडप कीमती महारुपों के योग्य, एव विस्तीर्ण हो ऐसा बनावें । (तस्सण बहुमज्झदेसभाए एग महं सिरिदामगंड जाव गंध द्धणिं मुयत उल्लोलयसिओलवेह, ओलबित्ता पउमावइ देवीं पडि वाले माणा २ चिट्ठह, तएण ते कोडुबिया जाव चिट्ठति) और उस के ठीक मध्य भाग मे तने हुए चदोवा के नीचे एक बडा भारी श्रीदाम

અને ત્યાર બાદ જળથળ ના વિકાસ થયેલા પચવર્ણોના પુષ્પોથી તેમજ જાત જાતના ચિત્રોની રચનાથી શોભતો એક પુષ્પો નો માડવો બનાવે હસ, મૃગ, મોર, ક્રૌચ, સારસ, ચક્રવાક મદનશાલ અને કોકિલ આબધા પશુ પખીઓ ના ચિત્રો થી માડવાને શણગારે તથા ઇહામૃગ, વરુ, બળદ, ઘોડો, મગર, પક્ષી વ્યાલક, (સર્વ), કિન્નર, રુરુ, શરભ હાથી, વનલતા, અને પદ્મલતાના સુદર ચિત્રોથી માડવાને અદ્ભુત રીતે સુશોભિત કરો

પુષ્પમડપ કિંમતી તેમજ મહાપુરુષોને યોગ્ય વિશાળ હોવો જોઇએ

(तस्स ण बहुमज्झदेसभाए एग महं सिरिदामगडं जाव गधद्धणि मुयत उल्लोलयसि ओलबेह, ओलबित्ता पउमावइ देवी पडिवालेमाणा २ चिट्ठह, तएण ते कोडुबिया जाव चिट्ठति)

અને તાણેલા ચદરવાની નીચે ઠીક મધ્યભાગમા નાકને પોતાની સુવાસ થી નૃત્ય કરાવનાર એક, બહુ મોટો શ્રીદામકાડ લટકાવો

लम्ब्य पद्मावती देवीं 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्त २ प्रतीक्षमाणाः प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिका कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-यथापद्मावत्यासमादिष्टं तथा कृत्वा पद्मावतीदेवीं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्तिस्म॥सू० १५॥

मूलम्-तएणं सा पउमावई देवी कल्ल० कोडुंबिए एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेय नगर सब्भितर वाहिरियं आसित्त समज्जिओवलित्त जाव पच्चप्पिणंति तएणं सा पउमावई देवी दोच्चपि कोडुंबिय० खिप्पामेव लहुकरण-जुत्त० जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह, तएण तेऽवि तहेव उवट्ठावेंति। तएणं सा पउमावई देवी अंतो अते उरसि ण्हाया जाव धम्मिय जाण दुरूढा, तएण सा पउमावई देवी नियगपरिवाल सपरि-वुडा सागेय नगर मज्झमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता जेणेव पुक्ख-रणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरणिं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसूइभूया उल्लपडसाडिया जाइ

काण्ड-पुष्पो का गजरा-कि जिस से नासिका इन्द्रिय को तृप्ति कारक गध निकल रही हो को लटकावे। लटका कर फिर मुझ-पद्मावती की वहां प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहें। इस प्रकार उन कौटुम्बिकपुरुषों से पद्मावती देवी ने ऐसा कहा-पद्मावती देवी के इस कथनानुसार सब ही काम उन कौटुम्बिक पुरुषों ने किया-अर्थात् मालियो को बुलाया-और उन से इस पूर्वोक्त प्रकार के पुष्प मडप की रचना करने को कहा-उन्हों ने सब कार्य व्यवस्थित ढग से कर दिया और पद्मावती देवी की प्रतीक्षा करते हुए वे सब वहां ठहरे रहे। सूत्र " १५ "

લટકાવાને મારી-પદ્માવતી દેવીની બધા ત્યા પ્રતીક્ષા કરતા રોકાય આ પ્રમાણે પદ્માવતી દેવીએ કૌટુબિક પુરુષોને નાગમહોત્સવ વિષે સૂચનો આપ્યા પદ્મવતી દેવીના આદેશ મુજબ કૌટુબિક પુરુષોએ માળીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને યથાયોગ્ય પુષ્પમડપ બનાવવાની આજ્ઞા આપી આ પ્રમાણે બધુ કામ વ્યવસ્થિત રીતે પતાવીને પદ્માવતી દેવીની રાહ જોતા તેઓ ત્યા રોકાયા ॥ સૂત્ર " ૧૫ " ॥

अत्र यावच्छब्देन - ' ईहामृगेत्यनन्तर - वृषभतुरगमकरविहग-व्यालकिन्नररुरु शरभकुञ्जरवनलतापद्मलता ' इतिपाठस्य ग्रहणम् । ईहामृगो वृकः, रुरुशरभौ मृगजातिविशेषौ अन्ये स्पष्टार्थाः तेषां भक्त्या चित्ररचनया चित्रम्-आश्चर्य जनकम् , ' महग्घ ' महार्घं-महामूल्यकं ' महरिह ' महार्हं=महता योग्य, विपुल विस्तीर्णम् , ईदृश पुष्पमण्डप विरचयत कुरुतेत्यर्थः । तस्य पुष्पमण्डपस्य खलु बहुमध्यदेशभागे-सर्वथा मध्यभागे एक महत् श्रीदामकाण्ड यावत् पाटलादिपुष्प समूहसहितगन्धद्रव्याणि गन्धवर्तिं मुञ्चत्-मुञ्चति ' उल्लोयसि ' उल्लोचे=चन्द्रा तपे वस्त्रनिर्मितगृहाभ्यन्तरिकावरणे-' ओलेहइ ' अवलम्बयत , ओलंबित्ता अव

महग्घ महरिह विपुलं पुप्फमडव विरएह) इस के अनन्तर वे सब जल थल के विकसित पचवर्णों के पुष्पो से और अनेक प्रकार के चित्रों की रचना से सुशोभित एक पुष्प मडप बनावे, इस मडप को वे हस मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक, मदनशाल कोकिल इन सब के चित्रों से सुशोभित करें ईहा मृग-वृक, वृषभ, तुरग, मकर, विहग, व्यालक-सर्प, किन्नर, एए, शरभ, कुजर-वनलता और पद्मलता इन के चित्रों की रचना से उसे आश्चर्य कारक बनावें ।

वह पुष्प मडप कीमती महारुपो के योग्य, एव विस्तीर्ण हो ऐसा बनावें । (तस्सण बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंड जाव गंध द्धणिं मुयत उल्लोलयसिओलवेह, ओलबित्ता पउमावइ देवीं पडि वाले माणा २ चिट्ठह, तएण ते कोडुबिया जाव चिट्ठति) और उस के ठीक मध्य भाग मे तने हुए चदोवा के नीचे एक बडा भारी श्रीदाम

અને ત્યાર બાદ જળથળ ના વિકાસ થયેલા પચવર્ણોના પુષ્પોથી તેમજ જાત જાતના ચિત્રોની રચનાથી શોભતો એક પુષ્પે નો માડવો બનાવે હ સ, મૃગ, મોર, ક્રૌચ, સારસ, ચક્રવાક મદનશાલ અને કોગલ આબધા પશુ પખીઓ ના ચિત્રો થી માડવાને શણગારે તથા ઇહામૃગ, વરુ, બળદ, ઘોડો, મગર, પક્ષી વ્યાલક, (સર્પ), કિન્નર, રુરુ, શરભ હાથી, વનલતા, અને પદ્મલતાના સુદર ચિત્રોથી માડવાને અદ્ભુત રીતે સુશોભિત કરો

પુષ્પમડપ કિમતી તેમજ મહાપુરુષોને યોગ્ય વિશાળ હોવો જોઇએ

(तस्स ण बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगडं जाव गधद्धणि मुयत उल्लोलयसि ओलबेह, ओलबित्ता पउमावइ देवी पडिवालेमाणा २ चिट्ठह, तएण ते कोडुबिया जाव चिट्ठति)

અને તાણેલા ચદરવાની નીચે ઠીક મધ્યભાગમા નાકને પોતાની સુવાસ થી નૃત્ય કરાવનાર એક, બહુ મોટો શ્રીદામકાડ લટકાવો

लम्ब्य पद्मावती देवीं 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्त २ प्रतीक्षमाणाः प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिका कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-यथापद्मावत्यासमादिष्टं तथा कृत्वा पद्मावतीदेवीं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्तिस्म॥सू० १५॥

मूलम्-तएणं सा पउमावई देवी कल्ल० कोडुंबिए एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नगर सब्भितर वाहिरियं आसित्त समज्जिओवलित्त जाव पच्चप्पिणंति तएणं सा पउमावई देवी दोच्चपि कोडुंबिय० खिप्पामेव लहुकरण-जुत्त० जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह, तएण तेऽवि तहेव उवट्ठावेति। तएणं सा पउमावई देवी अंतो अते उरसि ण्हाया जाव धम्मियं जाण दुरूढा, तएण सा पउमावई देवी नियगपरिवाल सपरि-वुडा सागेय नगर मज्झमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता जेणेव पुक्ख-रणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरणि ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसूइभूया उल्लपडसाडिया जाइ

काण्ड-पुष्पों का गजरा-कि जिस से नासिका इन्द्रिय को तृप्ति कारक गंध निकल रही हो को लटकावे। लटका कर फिर मुझ-पद्मावती की वहा प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहें। इस प्रकार उन कौटुम्बिकपुरुषों से पद्मावती देवी ने ऐसा कहा-पद्मावती देवी के इस कथनानुसार सब ही काम उन कौटुम्बिक पुरुषों ने किया-अर्थात् मालियो को बुलाया-और उन से इस पूर्वोक्त प्रकार के पुष्प मडप की रचना करने को कहा-उन्हों ने सब कार्य व्यवस्थित ढग से कर दिया और पद्मावती देवी की प्रतीक्षा करते हुए वे सब वहा ठहरे रहे। सूत्र " १५ "

લટકાવાને મારી-પદ્માવતી દેવીની બધા ત્યા પ્રતીક્ષા કરતા રોકાય આ પ્રમાણે પદ્માવતી દેવીએ કૌટુબિક પુરુષોને નાગમહોત્સવ વિષે સૂચનો આપ્યા પદ્મભાવતી દેવીના આદેશ મુજબ કૌટુબિક પુરુષોએ માળીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને યથાયોગ્ય પુષ્પમડપ બનાવવાની આજ્ઞા આપી આ પ્રમાણે બધુ કામ વ્યવસ્થિત રીતે પતાવીને પદ્માવતી દેવીની રાહ જોતા તેઓ ત્યા રોકાયા ॥ સૂત્ર " ૧૫ " ॥

तत्थ उप्पलाइ जाव गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं, पउमावईए दासचेडीओ बहूओ पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडुच्छुगहत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छंति । तएणं पउमावई सविड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नागघरय अणुपविसइ, अणुपविसित्ता लोमहत्थग जाव धूव डहइ, डहित्ता पंडिबुद्धि पडिवालेमाणी पडिवालेमाणी चिट्ठइ ॥ सू० १६ ॥

टीका —' तएण सा ' इत्यादि-ततस्तदनन्तर खलु सा पद्मावती देवी कल्ये द्वितीयदिवसे प्रभाते कौटुम्बिकान्=आज्ञाकारिणः पुरुषान् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादित्-भो देवानुप्रिया ! क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, साकेत नगरं ' सब्भिंतर बाहिरियं' माभ्यन्तरबाह्यं=अभ्यन्तरेण-मध्यभागेन सह बाह्यं बहिर्भागं यत्र तत्-' आसित्तसम्मज्जिओवलित्तं ' आसिक्तं समार्जितोपलिप्तं=आसिक्त=सुगन्धितजलैरार्द्रीकृतं समार्जितं=मार्जन्यादिभिः कचवरापसारणेन निर्मलीकृतं पश्चादुपलिप्तं

' तएणं सा पउमावई देवी इत्यादि ' ।

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (सा पउमावईदेवी) उस पद्मावतीदेवीने (कल्ल कोडुंबिए एवं वयासी) दूसरे दिन प्रातःकाल उन कौटुम्बिक पुरुषों से ऐसा कहा-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! साकेय नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्त सम्मज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही साकेत नगर को भीतर बाहिर सुगंधित जल से सींचो, बुहारू लेकर उसे कूडा कर कट कचरा हटाकर बिलकुल साफ करो, गोबर आदिसे उसे लीपो इस प्रकार पद्मावतीदेवी

'तएणं सा पउमावईदेवी ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ(तएणं) ત્યાર બાદ (सा पउमावईदेवी) પદ્માવતી દેવીએ (कल्लं कोडुंबिए एवं वयासी) બીજે દિવસે સવારે કૌટુંબિક પુરુષોને આ પ્રમાણે કહ્યું

(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेय नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्त सम्मज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વર સાકેત નગરની બહાર અને અંદર સુવાસિત પાણી છાંટો સાવરણીથી કચરો એકદમ સાફ કરો અને છાણ વગેરેથી લીંપો પદ્માવતી દેવીની આજ્ઞા સાંભળીને કૌટુંબિક પુરુષોએ તે પ્રમાણે જ

गोमयादिनाऽनुलिप्त कुरुत यावत् प्रत्यर्पयन्ति-यथा-पद्मावती देव्या आदिष्ट तथा कृत्वा ते कौटुम्बिका हे स्वामिन्य' सर्वं साधितमस्माभिरिति-तदाज्ञा प्रत्यर्पयन्ति-आवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं सा पद्मावती देवी ' दोच्चपि ' द्वितीयवारमपि कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयित्वा एवमवादित्-हे देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव ' लहुकरणजुत्त० ' लघुकरणयुक्त० यावद् युक्तमेव नृपैर्युक्ता कृत्वा रथमुपस्थापयत । ततस्तदनन्तर खलु तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषा-अपि यथा पद्मावत्या समादिष्टं तथैव रथमुपस्थापयन्ति । तत खलु सा पद्मावती देवी अन्तोऽन्तःपुरे=अन्तःपुरस्य मध्ये स्नाता यावद् सर्वालकार विभूषिता धार्मिक यान=रथ, दूरुढा=आरो

के आदेश को पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषो ने वैसा ही सब कुछ कार्य यथावत कर दिया और पीछे पद्मावती के पास जाकर कहा-स्वमिनी ! आपने जैसा काम कर ने को कहा था हम ने वह काम वैसा ही कर दिया है । (तएण सा पउमावई देवी दोच्चपि कौडुंबिय० खिप्पामेव लहु करण जुत्त०जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह, तएण ते वि तहेव उवट्ठावेंति) इसके बाद पद्मावती देवीने दुबारा भी उन कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाया और बुलाकर कहा-भो देवानुप्रियों ! तुम लोग शीघ्र ही जल्दी २ चाल से चलने वाले बैलो को जोत कर यहा एक रथ को उपस्थित करो । पद्मावती की इस आज्ञा को पाकर वे कौटुम्बिक पुरुष भी पद्मावती के आदेशानुसार रथ को बैलों से युक्त कर ले आये । (तएणं सा पउमावई देवी अन्नो अंतेउरंसि ण्हाया जाव वम्मिय जाणं दुरुढा) रथ जब आ चुका-तब पद्मावती देवी ने अन्त' पुर के भीतर ही स्नान किया यावत् समस्त अलकारों से अपने आप को विभूषित कर फिर वह

કર્યું અને ત્યાર બાદ તેમની પાસે આવીને કહેવા લાગ્યા-હે સ્વામિનિ ! તમે જે કામ કરવાની અમને આજ્ઞા આપી હતી તે કામ અમે એ સરસ રીતે પૂર્ણ કરી દીધુ છે

तएण सा पउमावईदेवी दोच्चपि कोडुंबिय खिप्पामेव लहुकरण जुत्ता० जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह तएण तेवि तहेव उवट्ठावेंति)

ત્યાર બાદ પદ્માવતી દેવીએ બીજી વાર કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને કહ્યું "હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે શીઘ્રગતિ વાળો બળદ જોતરીને એક રથ લાવો પદ્માવતી દેવીની આજ્ઞાનુસાર આજ્ઞા સાભળીને કૌટુંબિક પુરુષો પણ તેમની આજ્ઞા મુજબ રથમા બળદ જોતરીને લઈ આવ્યા (तएण सा पउमावइ देवी अन्तो अंतेउरसि ण्हाया जाव धम्मिय जाण दुरुढा) જ્યારે રથ સજ્જ થઈને આવી ગયો ત્યારે પદ્માવતી દેવીએ સ્નાનગૃહની અદર જ સ્નાન કર્યું યાવત્ સર્વ પ્રકારના ઘરેણાઓથી પોતાના શરીરને શણગાર્યું અને ત્યાર પછી તે ધાર્મિક રથમા બેસી ગઈ

हतिस्म । ततः खलु सा पद्मावती देवी निजकपरिवारसपरिवृता सखयादिपरिवारेण युक्ता साकेतनगर मध्यमध्येन निर्याति=निर्गच्छति । निर्याय=निर्गत्य यत्रैव पुष्करणी कमलयुक्ता चापी वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पुष्करणीमवगाहते=प्रविशति । अवगाह्य जलमज्जन यावत्-स्नान कृत्वा परमशुचिभूता 'उल्लपडसाडिया' आर्द्रपटशाटिका, सार्द्रपरिधानीयवस्त्रा यानि तस्या पुष्करिण्यामुत्पलानि यावत्पद्मादीनि तानि गृह्णाति गृहीत्वा यत्रैव नागगृह वर्तते तत्रैव प्रधारयति प्रवर्तते गमनाय । ततस्तदनन्तर खलु पद्मावत्या दासचेट्यो बहव्यः पुष्पपटलकहस्तगताः=हस्तपरिधृतपुष्पकरण्डकाः धूपकडुच्छुकहस्तगता'=धूपाधारपात्राणि

उस धार्मिक यान पर रथ पर आरूढ हो गई । (तएण सा पउमावई देवी नियगपरिवाल सपरिवुडा साकेय नयर मज्झ मज्झे ण णिज्जाइ णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद पद्मावती देवी अपने परिवार से घिरी हुई होकर उस साकेत नगर के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर निकली-निकल कर वह जहा कमलों से युक्त वापी थी-वहां पर आई-(उवागच्छित्ता पुक्खरणिं ओगाहइ) आकर उस ने उस पुष्करिणी में प्रवेश किया - (ओगाहित्ता जल मज्जणं जाव परमसुइभूया उल्ल पउ साडिया जाइ तत्थ उप्पलाइ जाव गेण्हइ) प्रवेश कर जल स्नान किया यावत् परम शुची भूत बनी हुई उस ने गीली साड़ी पहिने ही पुष्करिणी से कमल चुन लिये (गिण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) चुन कर फिर वह जहा नाग घर था उस ओर चल दी-(तएण पउमावईए दासचेडीओ बहुओ

(तएण सा पउमावईदेवीनियग परिवालसपरिवुडा साकेय नयर मज्झ मज्झेण णिज्जाइ णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર બાદ પદ્માવતી દેવી પોતાના સ પૂર્ણ પરિવારની સાથે સાકેત નગરીની બરા બર મધ્યમાર્ગમા થઇને પસાર થઇ અને જ્યા કમળો યુક્ત વાવ હતી ત્યા પહોચી (उवागच्छित्ता पुक्खरणि ओगाहइ) ત્યા પહોચીને તે પુષ્કરિણી (કમળવાવ) મા ઉતરી

ओगाहित्ता जलमज्जण जाव परमसुइभूया उल्ल पउसाडिया जाइ तत्थ उप्पलाइ जाव गेण्हइ)

ઉતરીને તેણે પાણીમા સ્નાન કર્યુ યાવત તે પરમ પવિત્ર થઇને તેણે ભીના લુગડાથીજ પુષ્કરિણીમાથી કમળો ચૂટ્યા (गोण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ચૂટ્યા બાદ પદ્માવતી દેવી જ્યા નાગધર હતુ તે તરફ ગઈ

हस्ते धृतवत्यः पृष्ठतः समनुगच्छन्ति । ततः खलु सा पद्मावती देवी सर्वर्द्धया= सखिदास्यादिपरिजनैः सह यत्रैव नागगृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य नागगृह-मनुप्रविशति, अनुप्रविश्य रोमहस्तक=मयूरपिच्छनिर्मितमार्जनी गृहीत्वा नागगृह समार्ज्य यावद् धूप ददाति, नागगृहाभ्यन्तरे समन्तात् धूप ददाति स्म । धूपं दत्त्वा प्रतिबुद्धि=पतिबुद्धिनृप स्वपतीं प्रतिपल्यन्ती प्रतिपालयन्ती=पुनः पुनः प्रतीक्षमाणा तिष्ठति स्म ॥ सू० १६ ॥

पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडुच्छगहत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छति) उस के पीछे २ उस की अनेक दास चेटिया पुष्प करण्डों को और धूप के पात्रो को हाथो में लिये हुए चली । (तएण पउमावई सव्विड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नागघरय अणुपविसइ, अणुपविसित्ता लोमहत्थग जाव धूव डहइ डहित्ता पडि बुद्धि पडिवालेमाणी २ चिट्ठइ) इस के अनन्तर पद्मावती सखी, दासी आदि परिजन रूप अपनी समस्त ऋद्धि के साथ जहा वह नाग घर था वहां आई-वहां आकर वह नाग घर के भीतर गई भीतर जाकर उस ने वहा रखी हुई मयूर पिच्छ निर्मित मार्जनी को उठाया-उठा कर उस ने उससे उस नागघर को झाडा झाड कर फिर उस ने वहा यावत् धूप जलाई । धूप जला कर फिर वह अपने पतिदेव प्रतिबुद्धि राजा की प्रतीक्षा करती हुई बैठ गई । सूत्र ' १६ "

(तएण पउमावईए दास चेडीओ बहूओ पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडु-च्छगहत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छति)

તેની પાછળ ઘણી દાસ-દાસીઓ પુષ્પ-ગરણ્ડકો તેમજ ધૂપદાનીઓ હાથોમા ઉચકી ચાલવા લાગી

(तएण पउमावई सव्विड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता नागघरय अणुपविसइ अणुपविसित्ता लोमहत्थग जाव धूव डहइ डहित्ता पडिबुद्धि पडिवालेमाणी २ चिट्ठइ)

આરીતે પદ્માવતી દેવી સખી દાસી વગેરે પરિજન રૂપ પોતાની સંપૂર્ણ ઋદ્ધિની સાથે જ્યા તે નાગઘર હતુ ત્યા પહોચી અને ત્યા પહોચીને તે નાગઘરનાં અદર ગઈ ત્યા જઈને તેણે મોરપીંછી હાથમા લીધી અને ત્યાર પછી તેણે નાગઘરને સ્વચ્છ બનાવ્યુ નાગઘરની સફાઈ કરાને તેણે ધૂપ સળગાવ્યો અને પછી પોતાના પતિ પ્રતિબુદ્ધિની પ્રતીક્ષા કરતી ત્યા જ બેસી ગઈ સૂ ૧૬

मूत्रम्—तएण पडिबुद्धी णहाए हत्थिखधवरगते सकोरट जाव सेयवरचामराहिं० हयगयरहजोहमहयाभडगचडकरपहकरेहिं साकेयनयरं० णिगच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणामं करेइ, करित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ अणुपविसित्ता पासइ तं एगं महं सिरिदामगंडं। तएण पडिबुद्धी त सिरिदामगंड सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तंसि सिरिदामगंडंसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धि अमच्चं एव वयासी—तुमन्न देवाणुप्पिया ! मम दोच्चंण बहूणि गामागर जाव सन्निवेसाइं आहिंडसि बहूणि रायईसर जाव गिहाइं अणुपविसासि त अत्थि णं तुमं कहिचि परिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमं पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?

तएणं सुबुद्धी पडिबुद्धि राय एवं वयासी – एव खलु सामी ! अह अन्नया कयाइ तुब्भ दोच्चेण मिहिल रायहाणिं गए, तत्थ णं मए कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए सवच्छरपडिलेहणगसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगडे सयसहस्सतम कल ण अग्घइ, तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी–केरिसिया ण देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहरायवरकन्ना जस्स णं सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगंडस्स पउमावईए देवीए सिरिदामगडे सयसहस्सतमपि कल न अग्घइ ?, तएण सुबुद्धी पडिबुद्धि इक्खागुराय एव वयासी—

विदेहरायवरकन्नगा सुपइट्ठियकुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ, तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सिरिदामगंडजणितहासे दूय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं तुम देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं तत्थ णं कुभगस्स रन्नो धूयं पभावईए देवीए अत्तयं मल्लि विदेहवररायकप्पणग मम भारियत्ताए वरेहि जतिविय णं सा सयं रज्जं सुक्का, तएणं से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ० पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंट आसरहं पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावित्ता दुरूढे जाव हयगयमहयाभडचडगरेण साएयाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥सू०१८॥

टीकाः—ततस्तदनन्तर खलु प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको राजा स्नातो मुकुटाद्यलङ्कारवस्त्रविभूषित' हस्तिस्कन्धवरगतः 'सकोरण्टमल्लदामेण' सकोरण्टमाल्यदाम्ना कोरण्टाख्य पुष्पतयक्वन्ति माल्यदामानि पुष्पस्रजस्तैः सहितेन छत्रेण ध्रियमाणेन यावत् श्वेतवरचामरैरुद्धोजितैश्च सहित', हयगजरथयोधमहा-

'तएण पडिबुद्धी पहाए' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पडिबुद्धी) प्रतिबुद्धि राजाने (पहाए) स्नान किया बाद मे वे मुकुट आदि अलकारों से और राजसी वस्त्रों से अलकृत होकर (हत्थिखधवरगए) अपने पट्ट हाथी पर बैठ गये-(सकोरट जाव सेयवरचामरार्हि० हयगयरह जोहमहया भड

'तएण पडिबुद्धि पहाए' इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्यारपाछ (पडिबुद्धि) प्रतिबुद्धि राजाओ (पहाए) स्नान कर्युं अने मुकुट वगेरे आभूषणो तेमज राजसी वस्त्रोथी अलकृत थईने (हत्थिखधवरगए) पोताना खास हाथी उपर सवार थया

(सकोरट जाव सेयवर चामरार्हि० हयगयरह जोह महया भडचडकरेहिं साकेयनयर० निग्गच्छइ)

भट चरकरपहकरै हय गजादीना समूहैश्च सहितः साकेतनगरस्य मध्यभागेन निर्गच्छति । निर्गत्य स पतिबुद्धिनृपो यत्रैव नागगृहं वर्तते तत्रैवोपागच्छति उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति=अवतरति प्रत्यवरुह्य=अधः प्रत्यवतीर्य आलोके=नागदर्शने प्राप्ते सति प्रणाम करोति कृत्वा पुष्पमण्डप पद्मावती निर्मापित-पुष्पमयमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य पश्यति तंच्च महत् श्रीदामकाण्डम् ।

चड कर पर करेहिं साके य नयर० निग्गच्छइ) उन के बैठते ही छत्र धारी ने उन पर कोरण्ट पुष्प के गुच्छों से निर्मित मालाओं से युक्त छत्र को तान दिया ।

चमर ढोर ने वालों ने उन पर श्वेत उत्तम चमर ढोरना प्रारभ कर दिया । बाद में वे हय, गज आदि के समुदाय से युक्त होकर साकेत नगर के मध्यभाग से होकर निकले (निग्गच्छित्ता जेणेव नाग घरे, तेणेव उवागच्छइ) निकल कर नागघर की ओर चल दिये (उवाग च्छित्ता हत्थि खधाओ पच्चो रुहइ, पच्चो रुहित्ता आलोए पणाम करेइ) वहा पहुँच कर वे उस हाथी से नीचे उतरे-उतर कर ज्यो ही उन्हें नाग प्रतिमा दिखलाइ पडी तो उसी समय उन्हो ने उसे नमस्कार किया ।

(करित्ता पुप्फमडप अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पासइ, त एग मह सिरिदामगडे) नमस्कार कर फिर वे पद्मावती देवी द्वारा निर्मापित पुष्प मडप में प्रविष्ट हुए । वहा उन्हों ने उस विशाल श्री दाम काण्ड

રાજા જ્યારે હાથી ઉપર સવાર થઈ ગયા ત્યારે છત્ર ધારીએ તેમના ઉપર કોરટ પુષ્પોના ગુચ્છોથી બનેલુ તેમજ માળાઓથી શોભિતુ છત્ર તાણ્યુ ચમર ધારીઓ તેમના ઉપર સફેદ તેમજ ઉત્તમ ચમરો ઢોળવા લાગ્યા આમ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા હય, ગજ વગેરે સમુદાયની સાથે સાકેત નગરના મધ્યભાગે થઈને (निग्गच्छित्ता जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ) જે તરફ નાગઘર હતુ તે તરફ ગયા

(उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणाम करेइ)

ત્યા પહોચીને તેઓ હાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને જ્યારે તેઓએ નાગપ્રતિમાઓ જોઈ ત્યારે તરત જ તેમણે તેમને નમન કર્યુ

(करित्ता पुप्फ मडव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पासइ, त एग मह सिरिदाम गडे

નમન કર્યા બાદ રાજા પદ્માવતી દેવી વડે બનાવવામા આવેલા પુષ્પ મડપમા પ્રવિષ્ટ થયા ત્યા તેમણે મોટા શ્રીદામકાડને જોયો

ततस्तदनन्तर खलु प्रतिबुद्धिस्त श्रीदामकाण्ड सुचिर काल=बहुकाल निरीक्षते एकाग्रमनसा पश्यतिस्म । निरीक्ष्य तस्मिन् श्रीदामकाण्डे जातविस्मयः ' अपूर्वदृष्टमिद श्रीदामकाण्ड ' मित्याश्चर्यं प्राप्तः सन् सुबुद्धिं=सुबुद्धिनामकममात्य=स्वमन्त्रिणम् , एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्–हे देवानुप्रिय ! त्व खलु मम ' दोच्चेण ' दौत्येन=दूतो भूत्वा बहून् यावत् ग्रामाकरनगरसनिवेशान् अहिण्डसि = परिभ्राम्यसि, बहूनि च राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठि सेनापतिसार्थवाहाना यावद् गृहाणि अनुप्रविशसि, तदस्ति खलु त्वया दृष्टपूर्वं

को–देखा । (तएण पडिबुद्धि त सिरीदामगड सुइर काल निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तसि सिरिदामगडसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी) देख ने के बाद प्रतिबुद्धि राजा ने बहुत देर तक उस का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण किया ।

निरीक्षण करने के बाद उसे उस श्रीदामकाण्ड के विषय में बड़ा आश्चर्य हुआ । आश्चर्य युक्त होकर उसने अपने सुबुद्धि मन्त्रीसे फिर इस प्रकार कहा–(तुम पण देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेण बहूणि गामागर जाव गिहाइ अणुपविससि–त अत्थि ण तुम कहिंचि एरिसए सिरिदामगडे दिट्ठ पुव्वे जारिसए ण इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगडे)

हे देवानुप्रिय ! तुम मेरे दूत होकर अनेक ग्रामों में अनेक आकरों में, अनेक नगरो में अनेक सनिवेशो में घूमते फिरते हो वहां बहुत से राजा, ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी सेनापति और सार्थवाहों के घरों मे भी आते जाते रहते हो, तो क्या तुमने ऐसा

(तएण पडिबुद्धि त सिरीदामगड सुइर काल निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तसि सिरिदामगडसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी)

તેને જોઈને પ્રતિબુદ્ધિ રાજાએ સૂક્ષ્મ દૃષ્ટિથી બહુ વખત સુધી તેનુ નિરીક્ષણ કર્યુ

રાજાને શ્રીદામકાંડ જોઈને ખૂબજ આશ્ચર્ય થયુ તેમણે પોતાના મંત્રી સુબુદ્ધિને આ પ્રમાણે કહ્યુ–

(तुमन्न देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेण बहूणि गामागार जाव गिहाइ अणुपविससि त अत्थिण तुम कहिंचि एरिसए सिरिदामगडे दिट्ठपुव्वे जारिसएण इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगडे)

હે દેવાનુપ્રિય ! મારાદૂત થઈને તમે ઘણા ગામો, આકરો નગરો અને સનિવેશોમા ફરતા રહો છો, ત્યા ઘણા રાજા ઈશ્વર, તલવર, માડંબિક કૌટુંબિક, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ અને સાર્થવાહોના નિવાસ સ્થાનમા પણ આવાગમન

कुत्रचिदेतादृश श्रीदामकाण्डम्, यादृश खलु इद पद्मावत्या देव्या श्रीदामकाण्ड वर्त्तते। ततःखलु सुबुद्धिः सुबुद्धिनामा मन्त्री प्रतिबुद्धि राजानमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-एव खलु स्वामिन्! अहमन्यदा कदाचित् युष्माक दौत्येन=दूतो भूत्वा मिथिला राजधानीं गतः।

तत्र=मिथिलाराजधान्या खलु मया कुम्भकस्य=कुम्भकनाम्नो राज्ञो दुहितु पुत्र्याः प्रभावत्या देव्या आत्मजाया मल्ल्या =कुम्भकनृपस्य पुत्री या प्रभावती देव्या आत्मजा=गर्भजा मल्ली नाम्नी कुमारी वर्तते तस्या इत्यर्थः, 'सवच्छर परिलेहणगसि' 'सवत्सरप्रतिलेखनके=वर्षपूर्तिसत्याकरणदिवसे वार्षिके जन्मदिवसोत्सवकाले इत्यर्थः दिव्यम् आश्चर्यकारक श्रीदामकाण्ड दृष्टपूर्व=पूर्वकाले दृष्टम्। तस्य खलु श्रीदामकाण्डस्येद पद्मावत्या श्रीदामकाण्ड शतसहस्रतमा कला

श्रीदामकाड जैसा कि ये श्रीदामकाड पद्मावती देवी का है कहीं देखा है? (तएण सुबुद्धी पडिबुद्धिं राय एव वयासी) राजा की इस प्रकार बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उन प्रतिबुद्धि राजा से इस तरह कहा (एव खलु सामी! अह अन्नया कयाइ तुब्भ दोच्चेण मिहिल राय हाणिं गए तत्थ णं मए कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए सवच्छरपडिलेहणगसि दिव्वे सिरिदामगडे दिट्ठपुव्वे) स्वामिन्! मैं किसी एक समय आपका दूत बनकर मिथिला राजधानीमे गयो हुआ था। वहा मैंने कुभक नरेश की पुत्री प्रभावती देवी की आत्मजा-गर्भजा-मल्ली कुमारी की वर्ष गाठ के अवसर पर आश्चर्य कारक श्रीदाम कांड को देखा था।

(तस्स णं सिरीदामगडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगडे सयसहस्सतमे कल्ल ण अग्घइ) उस के समक्ष पद्मावती देवी का यह श्री

કરેા છેા, તેા તમે પદ્માવતી દેવીના જેવેા શ્રીદામકાડ કેાઈ સ્થાને જોયેા છે? (तएण सुबुद्धि पडिबुद्धिराय एव वयासी) રાજાની આ પ્રમાણે વાત સાભળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિએ પ્રતિબુદ્ધિ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ-

(एव खलु सामी! अह अन्नया कयाइ तुब्भ दोच्चेण मिहिल रायहाणिगए तत्थण मए कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए, सवच्छर पडिलेहणगसि दिव्वे सिरिदामगडे दिट्ठपुव्वे)

હે સ્વામિન્! એક વખતે તમારા દૂત તરીકે જ હું મિથિલા રાજધાની મા ગયેા હતેા

ત્યા મે કુભક રાજાની પુત્રી પ્રભાવતી દેવીની આત્મજા-પુત્રી-મલ્લી કુમારીના જન્મોત્સવ પ્રસગે ખૂબજ નવાઈ પમાડે તેવેા શ્રીદામકાડ જોયેા હતેા

नार्हति । मल्लीकुमार्या यदस्ति श्रीदामकाण्ड तस्य शोभासुगन्धादिगुणाना लक्षाशमपि प्राप्तुं न शक्नोति पद्मावत्याः श्रीदामकाण्डमित्यर्थः ।

ततः खलु प्रतिबुद्धिममात्यमेवमवादीत्–हे देवानुप्रिय! ईदृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या यस्याः खलु सवत्सरप्रतिलेखनके श्रीदामकाण्डस्य पद्मावत्या देव्या श्रीदामकाण्ड शतसहस्रतमामपि कला नार्हति ? । तत खलु सुबुद्धिः प्रतिबुद्धिमिक्ष्वाकुराजमेवमवादीत्–हे स्वामिन् ! विदेह राजवरकन्यका मल्लीनाम्नी

दामकाड लक्षाश (लाखमा भाग भी सुन्दर और सुगधीत में नही है) भी नही हैं (तएण पडिबुद्धी सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) इस प्रकार सुनने के बाद प्रतिबुद्धि ने सुबुद्धि अमात्य से ऐसा कहा– (केरिसियाण देवाणुप्पिया ! मल्ली वीदेहरायवर कन्ना) हे देवानुप्रिय ! विदेह राजा की वह उत्तम कन्या मल्ली कुमार कैसी है कि (जस्स ण सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगडस्स पउमावईए देवीए सिरिदामगडे सयसहस्सत्तमपि कल न अग्घइ) जिस की वार्षिक जयती के श्रीदाम काड के समक्ष पद्मावती देवी का यह श्रीदामकांड लक्षाश भी नही ज्ञात हो रहा है ।

(तएण सुबुद्धिपडिबुद्धिं इक्खागुराय एव वयासी) इस तरह सुनकर सुबुद्धि ने इक्ष्वाकु वशों में उत्पन्न प्रतिबुद्ध राजा से ऐसा कहा (विदहरायवरकन्नगा सुपइट्ठिय कुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ) स्वा

(तस्स ण दिरीदामगडस्स इमे पउमावईए सिरीदामगडे सय सहस्सतमे कलल ण अग्घइ)

તેની સામે પદ્માવતી દેવીનો આ શ્રીદામકાડ લક્ષાશ પણ નથી એટલે કે સુગધ કે સૌદર્ય બનેની દૃષ્ટિએ મલ્લીકુમારીના જન્મોત્સવ પ્રસગના શ્રીદામકાડની સામે આ કઇ જ નથી (તણ પડિબુદ્ધો સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી) આરીતે સાભળીને પ્રતિબુદ્ધિએ સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યુ– (કેરિસિયાણ દેવાણુપ્પિયા ! મલ્લી વીદેહરાયવરકન્ના) હે દેવાનુપ્રિય ! વિદેહ રાજ પુત્રી મલ્લીકુમારી એવી કેવી છે કે

" जस्स ण सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगडस्स पउमावईएदे वीए सिरिदामगंडे सयसहस्सत्तम पि कल न अग्घइ "

જેમના જન્મોત્સવના શ્રીદામકાડની સામે પદ્માવતી દેવીનો આ શ્રીદામ કાડ લક્ષાશ પણ લાગતો નથી

(तएण सुबुद्धि पडिबुद्धिं इक्खागुराय एव वयासी) આ રીતે સાભળીને ઇક્ષ્વાકુવશમા ઉત્પન્ન પ્રતિબુદ્ધ રાજાને સુબુદ્ધિએ કહ્યુ (विदेहरायवरकन्नगा

सुपतिष्ठितकूर्मोन्नतचारुचरणा, सुप्रतिष्ठितौ=सुष्ठुसंस्थानवन्तौ=कूर्मोन्नतौ=कूर्मपृष्ठवदुपर्युन्नतौ चारू=सुन्दरौ चरणौ यस्या सा तथा, वर्णक=वर्णन विशेषतो जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यादौ द्रष्टव्यम्, ।

ततः खलु मतिबुद्धिभूपः सुबुद्धेरमात्यस्यान्तिके एतमर्थं मल्लीकुमारी सौन्दर्यादि गुणवर्णनरूप श्रुत्वा=श्रवण गोचरीकृत्य, निशम्य=अर्थतोऽवधार्य श्रीदामकाण्डजनितहर्ष=श्रीदामकाण्डगुणश्रवणमजनितप्रमोदः सन् दूत शब्दयति आह्वयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! गच्छ खलु त्व मिथिला राजधानीं, तत्र खलु कुम्भकस्य राज्ञो दुहितर प्रभावत्या देव्या आत्मजा मल्लीं विदेहवरराजक

मिन् । वह विदेहराज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी अच्छे आकार वाले, कूर्म की पृष्ठ के समान उन्नत सुन्दर चरण वाली है । इस का विशेष वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति आदि में किया गया है ।

(तएण पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सिरिदामगडजणितहासे दूय सद्दावेइ) इस प्रकार श्रीदाम काड के गुणो के श्रवण से अत्यधिक हर्षित हुए प्रतिबुद्धि राजा ने सुबुद्धि अमात्य के मुख से मल्ली कुमारी के सान्दर्य आदि गुणों का वर्णन सुनकर और उसे हृदय में निश्चित कर दूत को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा (गच्छाहिण तुम देवाणुप्पिया ! मिहिल रायहाणिं) हे देवानुप्रिय ! तुम मिथिला नाम की राजधानी को जाओ-(तत्थ ण कुभगस्स रण्णो धूय पभावईए देवीए

सुपइट्ठिय कुम्मुन्नय चारूचरणा वन्नओ) હે સ્વામિન્ ! તે વિદેહ રાજાની ઉત્તમકન્યા મલ્લીકુમારી સરસ આકારવાળા કાચબાની પીઠના જેવા સુંદર ઉન્નત ચરણવાળી છે (તેમનુ વિશેષ વર્ણન જંબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ વગેરે મા કરવામા આવ્યુ છે

(तएण पडिबुद्धि सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सिरिदामगडजणितहासे दूय सद्दावेइ)

આ પ્રમાણે સુબુદ્ધિ અમાત્યના મોઢેથી શ્રીદામકાંડના ગુણ શ્રવણથી તેમજ મલ્લીકુમારીના સૌંદર્ય વગેરે ગુણોની ચર્ચા સાભળીને તેને હૃદયમા અવધારિત કરીને ખૂબજ હર્ષિત થયેલા પ્રતિબુદ્ધિ રાજાએ દૂતને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને તેને કહ્યુ-(गच्छाहि ण तुम देवाणुप्पिया ! मिहिल रायहाणिं) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મિથિલાની રાજધાનીમા જાઓ

(तत्थण कुभगस्स रण्णो धूय पभावईए देवीए अत्तय मल्लिं विदेहवरराय कण्णग मम भरियत्ताए वरेहिं)

न्यका मम भार्यात्वेन वरय, अयमर्थ-हे देवानुप्रिय ! मिथिलां गत्वा कुम्भकनृप ब्रूहि-साकेतनगराधिपतिः प्रतिबुद्धिनामानृपस्तव कन्यका मल्लीं धर्मपत्नीत्वेन ग्रहीतुमिच्छति, तदनुमन्यस्वेति ।

यद्यपि च सा स्वय राज्य शुल्क=मूल्य यस्याः सा तथा, स्वस्य निरुपम सुशीलादिगुणवत्तया सा यदि स्व शुल्कत्वेन राज्यमभिलषेत्तदाऽह सर्वं राज्य समर्पयामीति भावः। तत खलु स दूतः प्रतिबुद्धिना राज्ञा एवमुक्तः सन् हृष्टतुष्टो

अत्तय मल्लि विदेहवररायकण्णग मम भारियत्ताए वरेहिं) वहां कुभक राजा की पुत्री मल्ली कुमारी को कि जो प्रभावती देवी के गर्भ से उत्पन्न हुई है मेरी भार्या के रूप से वरो अर्थात् तुम मिथिला राज धानी में जाकर कुभक राजा से कहो कि साकेताधिपति प्रतिबुद्धि राजा आपकी कन्या मल्ली कुमारी को अपनी धर्मपत्नी बनाना चाहते हैं-सो आप इस की स्वीकृति प्रदान करो

(जइ विय ण सा सय रज्जसुक्का) यद्यपि मैं इस बात को जानता हूँ कि वह कन्या राज्य ही है शुल्क जिस का ऐसी है-अर्थात् वह अनुपम सुशीलादि गुणों से युक्त होने के कारण अपने शुल्कपने से राज्य की अभिलाषा यदि करेगी तो मैं उसे समस्त अपना राज्य भी समर्पित कर दूँगा ।

(तएण से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एव वुत्ते समाणे हट्ठ० पडि सुणेइ) इस प्रकार राजा का अभिप्राय हृदयगम कर वह सुबुद्धि अमात्य बडा ही अधिक हर्षित एव सतुष्ट हुआ और उस ने मिथिला राजधानी जाना स्वीकार कर लिया । (पडिसुणित्ता जेणेव सए गेहे

અને પ્રભાવતી દેવીના ઉદરથી જન્મ પામેલી કુભકરાજાની પુત્રી કુમારીની મારી વધૂના રૂપે યાચના કરો, એટલે કે તમે મિથિલા રાજધાનીમા જઇને કુભક રાજાને કહોકે સાકેતના અધિપતિ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા તમારી પુત્રી મલ્લી કુમારી ને પોતાનીવધૂ બનાવવા ચાહે છે તો તમે તેની સ્વીકૃતિ આપો

(જઇવિયણ સા સય રજ્જસુક્કા) મલ્લીકુમારી અત્યન્ત સૌદર્યવતી તેમજ રાજ્ય જેનુ શુલ્ક (કિંમત) છે આવી અદ્ભુત સુશીલ વગેરે ગુણોવાળી કન્યા છે એ વાત હુ સારી પેઠે જાણુ છુ એટલે કે અનુપમ ગુણવતી મલ્લી કુમારી પોતાના શુલ્ક રૂપે મારા રાજ્યને પણ માગશે તો હુ મારૂ આખુ રાજ્ય તેને સમર્પત કરવા તૈયાર છુ

(तएण से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एव वुत्ते समाणे हट्ठ० पडिसुणेइ) આ રીતે રાજાનો અભિપ્રાય હૃદયમા ધારણ કરીને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ખૂબ જ

ऽत्तिकचेन प्रमुदितो भूत्वा प्रतिशृणोति आज्ञामङ्गीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यत्रैव स्वक गृह यत्रैव चातुर्घण्टोऽश्वरथो वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथ प्रतियल्पयति=सज्जयति, प्रतियल्प्य चातुर्घण्टमश्वरथ सज्जीकृत्य दूरूढ'=समारूढः सन यावत्-हयगजभटाभट चटकरेण सहितः साकेतात् साकेत नगराद् निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव विदेहजनपदः यत्रैव मिथिलानगरी तत्रैव प्रधारयति गमनाय=गतु प्रवृत्त प्रस्थित इत्यर्थः । इति प्रतिबुद्धिनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः कथितः ॥ सू० १७॥

जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) स्वीकार कर पहिले वह अपने घर गया ।

वहा जाकर फिर वह जहां चार घटो से युक्त अश्वरथ रखा था वहां गया (उवागच्छित्ता चाउग्घंट आसरह पडिकप्पावेइ) वहां जाकर उस ने उसे चातुर्घंट रथ को अच्छी तरह सज्जित कर वाया (पडिकप्पाविता दुरूढे जाव हय गय महया भडचडगरेण साएया णि गच्छइ) जब रथ अच्छी तरह सज्जित हो चुका तो वह बाद में उस पर आरूढ हुआ-और हय, गज, महा भटों के समूह से युक्त होकर साकेत नगर से बाहिर निकला (णिग्गच्छित्ता जेणेव विदेह जणवए जेणेव मिथिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए निकल कर फिर वह जहा विदेह जनपद और उस में भी जहा वह मिथिला राजधानी थी उस ओर चल दिया । सूत्र " १७ "

હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થયો અને તેણે મિથિલા રાજધાની જવાની રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી (પડિસુણિત્તા જેણેવ સએ ગેહે જેણેવ ચાઉગ્ઘંટે આસરહે તેણેવ ઉવાગચ્છઇ) સ્વીકારીને તે પહેલા પોતાને ઘેર ગયો.

ઘેર પહોંચીને તે જ્યા ચાર ઘંટડીઓ વાળો અશ્વરથ મૂકેલો હતો ત્યાં ગયો (ઉવાગચ્છિત્તા ચાઉગ્ઘંટે આસરહ પડિકપ્પાવેઇ) ત્યા જઇને તેણે ચાતુર્ઘંટ રથને સારી પેઠે શણગાર્યો

(પડિકપ્પાવિત્તા દુરૂઢે જાવ હયગય મહયા મડચડગરેણ સાએયા મો ણિગચ્છઇ)

જ્યારે રથ સારી રીતે તૈયાર થઇ ગયો ત્યારે તેના પર સવાર થયો અને હાથી ઘોડા મહાભટોના દળની યોદ્ધાઓની સાથે સાથે સાકેત નગરથી બહાર નીકળ્યો

(णिगच्छित्ता जेणेव विदेह जणवए जेणेव महिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमगाए)

નીકળીને તે જે તરફ વિદેહ જનપદ અને મિથિલા રાજધાની હતી તે તરફ ગયો ॥ સૂત્ર " ૧૭ " ॥

मूलम्—तेणं कालेण तेण समएणं अगनाम जणवए होत्था, तत्थण चपा नामं णयरी होत्था, तत्थण चंपाए नयरीए चदच्छाए अगराया होत्था, तत्थ णं चम्पाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे सजत्ता णावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव अपरिभूया, तएण से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था अहिगयजीवाजीवे वन्नओ, तएण तेसिं अरहन्नगपामोक्खाण सजुत्ता णावावाणियगाणं अन्नया कयाइ एगयओ सहिआणं इमे एयारूवे मिहो कहासलावे समुप्पज्जित्था—से य खलु अम्ह गणिम धरिम च मेज्ज च भडग गहाय लवणसमुद्द पोतवहणेण ओगाहित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्न एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता गणिम च ४ गेण्हंति । गेण्हित्ता सगडसागडियं भरेंति, भरित्ता सोहणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुल असण०४उव-क्खडावेंति मित्तणाइ० भोअणवेलाए भुजावेंति जाव आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडिसागडिय जोयंति, जोइत्ता चपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडिसागडिय मोयंति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति, तदु-लाण य समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरसस्स य उदयस्स उदयमायणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूण पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाण पोयवहणं भरेंति । सोहणंसि

तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुल असणं४ उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आपुच्छंति, आपुच्छित्ता जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति ॥ सू० १८ ॥

टीका-अथ द्वितीयस्य चन्द्रच्छायनाम्नो नृपस्य सम्बन्ध प्रस्तौति-'तेण कालेणं' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये अङ्ग नामा जनपद आसीत् । तत्र खलु चम्पा नाम नगरी असीत् तत्र खलु चम्पाया नगर्या चन्द्रच्छायोऽङ्गराज असीत् । तत्र खलु चम्पायां नगर्याम् अर्हन्नकप्रमुखा बहवः सयात्रा नौकावाणिजका = सगतायात्रा सयात्रा तत्प्रधाना नौकावाणिजकाः-पोतवणिजः मिलित्वा देशान्तर गामिनो नौकया वाणिज्यकारिणः परिवसन्ति, कथभूतास्ते इत्याह-आढ्या =धन

' तेणं कालेण तेणं समएण ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेणं समएण) उस काल और उस समयमें (अगनाम जणवए होत्था) अंग नामका जनपद था-(तत्थण) उस जनपद में (चपानाम णयरी होत्था) चपा नाम की नगरी थी (तत्थ णं चपाए नयरीए चद्दच्छाए अंगराया होत्था) उस चपा नगरी में चन्द्रच्छाय नाम के अंग देशाधिपति रहते थे ।

(तत्थ णं चपाए नयरीए अरहन्नग पामोक्खा बहवे सजत्ता णावा वणियगा परिवसति) और उसी चपा नगरी में अरहन्नक प्रमुख अनेक पोतवणिक् जो साथ २ व्यापार के निमित्त परदेश की यात्रा-गमना गमन-करते रहते थे । नौकाओ द्वारा जो व्यापार करते हैं वे पोतवणिक कहलाते हैं । (अड्ढा जाव अपरिभूया) ये सब धन धान्या

'तेण' कालेण तेण समएण' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (अंगनामे जणवए होत्था) અંગનામે જનપદ હતુ (तत्थण) તે જનપદમા (चपा नाम णयरी होत्था) ચપા નામે નગરી હતી (तत्थण चपाए नयरीए चद्दच्छाए अंगराया होत्था) તે ચપા નગરીમા ચદ્રચ્છાય નામના અધિપતિ રહેતા હતા

(तत्थणं चपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे सजत्ताणावा वाणियगा परिवसति)

તે ચપા નગરીમા અરહન્નક પ્રમુખ ઘણા પોતવાણિકો-કે-જેઓ વેપાર ખેડવા માટે દેશ પરદેશમા આવ જા કરતા રહેતા હતા નિવાસ કરતા હતા નૌકાઓ વડે જેઓ વેપાર કરે છે તેઓ પોતવણિક કહેવાય છે (अड्ढा जाव

धान्यपूर्णा यावद् अपरिभूता परैः पराभवितुमशक्या। । तत=तत्र=तेषु खलु सोऽरहन्नक श्रमणोपासक श्रावकश्चाप्यासीत्, न केवल धनधान्यादियुक्तएवासीत् किंतु-आर्हतागमानुरागी श्रमणाना सेवकश्चाप्यासीदित्यर्थः । पुनः किं भूतोऽसावित्याह-' अहिगयजीवाजीवे ' अभिगतजीवाजीवः = जीवाजीवतत्वज्ञः वर्णकः=अस्य वर्णनमन्यत्रोक्तरीत्याऽवगन्तव्यम् । ततः खलु तेषामहरन्नकप्रमुखाणा संयात्रानौकावाणिजकाना व्यवसायिकानाम्, अन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, एकत। सहितानाम्=एकत्र समिलिताना अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूप, मिथ कथासलाप परस्परकथालापः समुदपद्यत=अभवत् श्रेयः

दि से परिपूर्ण यावत् दूसरो से पराभवितु अशक्य थे (तएण से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था) इन में अरहन्नक श्रमणोपासक भी थो । केवल यह धन धान्यादि से परिपूर्ण ही नहीं था किन्तु आर्हत आगमानुरागी और श्रमण जनों का उपासक भी था ।

(अहिगत जीवाजीवे वन्नओ) जीव का क्या स्वरूप है, अजीव का क्या स्वरूप है इस बात का यह ज्ञाता था । इस का विशेष वर्णन अन्यत्र किया गया है ।

(तएणं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं सजुत्ता णावा वाणियगाण अन्नया कयाइ एगयओ सहिआण इमे एयारूवे मिहो कहासलावे समुप्पज्जित्था) किसी एक दिन ये अरहन्नक प्रमुख सायात्रिक पोत वणिक किसी कार्य वश जब सब के सब किसी एक स्थलपर एकत्रित हुए तो उन्हो ने परस्पर मे वक्ष्यमाण रूप से ऐसा विचार किया-

---

अपरिभूया) તેઓ બધા ધન ધાન્ય વગેરે સમસ્ત વૈભવોથી સંપન્ન હતા તેઓ બધા અપરાજેય હતા (तएण से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था) આમા એક અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક પણ હતો તે કેવળ ધન ધાન્યથીજ સમૃદ્ધ નહતો પણ તે આર્હત આગમાનુરાગી અને શ્રમણજનોનો સેવક પણ હતો

(अहिगत जीवाजीवे वन्नओ) જીવ અને અજીવ સ્વરૂપ વિષે તે સંપૂર્ણ પણે જ્ઞાતા હતો (આ બાબતનુ વિશેષ વર્ણન બીજા સ્થાને કરવામા આવ્યુ છે)

(तएण तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं सजुत्ता णावा वाणियगाण अन्नया कयाइ एगयओ सहिआण इमे एयारूवे मिहो कहासलावे समुप्पज्जित्था)

એક દિવસે અરહન્નક પ્રમુખ બધા સાયાત્રિક પોતવણિક કોઇ સ્થળે એકઠા થયા અને તેઓએ પરસ્પર મળીને આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો

खलु अस्माकं गणिमं गणयित्वा व्यवहारयोग्यं यथा नालिकेरपूगीफलादिकं, धरिमं यत् तुलाधृतं व्यवहारयोग्यं भवति तद् धरिमम्, मेयं यत्-सेटिकादिभिर्मीयते तद् मेयम्, परिच्छेद्यं यत्-गुणतः परिच्छेद्यते परीक्ष्यते वस्त्र रत्नादि, तत् परिच्छेद्यं, च भाण्डकं चतुर्विधं क्रयाणकं गृहीत्वा लवणसमुद्रं पोत वहनेन अवगाहितुम्=उत्तरीतुम्, इति कृत्वा इति निश्चित्य, अन्योन्यं=परस्परम् एतमर्थं चतुर्विधं क्रयाणकं गृहीत्वा नौकायानेन लवणसमुद्रसतरणरूपमर्थं प्रतिश्रुण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति। प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य गणिमं च ४ गृह्णन्ति, गृहीत्वा शकटी शाकटिकं=लघुशकटमहाशकटानां समूहं च सज्जयन्ति-नूतनरज्ज्वाद्युपकरणैः

(सेयं खलु अम्हं गणिमं, धरिमं, च मेज्जं च परिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तए) गणिम - गिनती करके व्यवहार योग्य-जैसे नारियल, पूगीफल आदि, धरिम-तुला पर तौलकर व्यवहार योग्य-जैसे सस्यादि, मेय सेटिकादि से प्रमाण कर व्यवहार योग्य, और परिच्छेद्य-गुणसे परीक्षा कर व्यवहार योग्य-जैसे वस्त्र रत्न आदि इन चार प्रकार के क्रयाणक को दो नौकाओंमें भर कर हम लोग बाहर लवणसमुद्रको पार कर चलें-इसमें हम लोगोंको बहुत लाभ होगा।

(त्ति कट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता गणिमं च ४ गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडसागडियं भरेंति) इस प्रकार परस्पर विचार कर उन सब ने एक मत हो इस चतुर्विध क्रयाणक को लेकर नौका से लवण समुद्र को पार करने रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया।

(सेयं खलु अम्हं गणिमं, धरिमं च मेज्जं च परिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तए)

ગણિમ- ગણીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમ કે નારિયેળ, સોપારી, વગેરે ધરિમ-ત્રાજવા મા જોખીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમકે ધાન વગેરે, મેય-માપના પ્રમાણથી વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમકે તેલ વગેરે અને પરિચ્છેદ્ય-ગુણથી પરીક્ષા કરીને વ્યવહાર કરી શકાય જેમકે વસ્ત્ર રત્ન વગેરે આ ચારે જાતની વસ્તુઓ વિક્રય માટે બે નૌકાઓમા લાદીને આપણે લોકો બહાર લવણસમુદ્રને પાર કરીએ તો આપણને ખૂબ લાભ થશે

(त्ति कट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता गणिमं च ४ गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडसागडियं भरेंति)

આ રીતે ચારે જાતની વેપારની વસ્તુઓ નૌકાઓમા ભરીને લવણસમુદ્રને પાર કરવાની બધાએ સર્વસમ્મતિથી સ્વીકારી અને સ્વીકારીને તેઓએ

परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा गणिमस्य ४ भाण्डकस्य शकटीशाकटिक भरन्ति= पूरयन्ति । भृत्वा=पूरयित्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते विपुल=विस्तीर्णम् अशनपानखाद्यस्वाद्य चतुर्विधमाहारमुपस्कारयन्ति = निष्पादयन्ति । मित्रज्ञातिमुखान् भोजनवेलाया भोजयन्ति, यावद् आपृच्छन्ति स्म अरहन्नक प्रमुखाः सयात्रानौकावाणिजका यात्रावसरे मित्रज्ञातीन् भोजयित्वा वाणिज्यार्थं नौकया समुद्रसतरणकामास्तान् मित्रज्ञातीन् स्वस्वानुमति प्रदानार्थं प्रार्थयन्ति स्मेत्यर्थः। आपृच्छ्य=समार्थ्य शकटीशाकटिक योजयन्ति वृषभैः सह सयोजयन्ति सयोज्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव गम्भीरक गम्भीराख्य समुद्रतीरवर्ति पोत-

---

स्वीकार कर के फिर उन सबने चारों प्रकार के क्रयाणक को लिया-लेकर उसे नूतन रज्ज्वादि से परिष्कृत की गई गाडी और गाडों में भर दिया।

(भरित्ता सोहणंसि तिहिकरण दिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुल असण ४ उवक्खडावेंति) भर कर फिर उन्हो ने शुभतिथि, करण दिवस नक्षत्र रूप मुहूर्त में विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार को बनवाया - (मित्तणाइ० भोअणवेलाए भुजावेंति जाव आपुच्छति) जब वह बन कर तैयार हो चुका-तो उन्हो ने अपने २ मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों को भोजन के अवसर पर भोजन करवाया और फिर उन से पूछा-हम लोग बाहर व्यापार के लिये जाना चाहते हैं- इसलिये आप लोग इस विषय मे अपनी २ अनुमति प्रदान करे-इस तरह उन मे प्रार्थना की- (अपुच्छित्ता) पूछ कर (सगडसागडियं जोयति, जोइत्ता चपाए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव गभीरए पोय

ચારે જાતની વેચાણની વસ્તુઓને નવા દોરડાઓવાળી ગાડી તેમજ ગાડાઓમા ભૂકી

(भरित्ता सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुल असण४ उवक्खडावेंति) ભરીને તેઓએ શુભતિથિ, કરણ નક્ષત્રરૂપ મુહૂર્તમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય આમ ચારે જાતના આહાર પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવડાવ્યા (मित्तणाइ० भोअणवेलाए भुजावेंति जाव आपुच्छति) જ્યારે આહાર તૈયાર થઇ ગયો ત્યારે તેઓએ પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને જમવામાટે બોલાવીને જમાડયા અને જમ્યા પછી તેમને તેઓએ પૂછયુ " અમે બધા વેપાર ખેડવામાટે બહાર જવા ઇચ્છીયે છીએ "

એથી તમે બધા અમને અનુમતિ આપો આરીને તેઓએ તેમને વિનતી કરી (आपुच्छित्ता) આજ્ઞા મેળવીને

(सगडसागडियं जोयंति जोइत्ता चपाए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणस्थान वर्तते तत्रोपागच्छति, उपागत्य शकटी-शाकटिक मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहावस्थित क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात मवतारयन्ति, मुक्त्वा=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽवतार्य पोतवहन=नौकायान सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणै परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डकस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः। तण्डुलाना च समि-तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपकान्नविशेषस्य च तैलकस्य च गुडस्य च घृत-स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकभाजनाना च औषधाना=त्रिकटुकादीनाम्

पट्टणे तेणेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी और गाड़ों को जुत वाया-जुतवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज पर सवार होने का स्थान (बदरगाह) था वहा पर आये।

(उवागच्छित्ता सगड़सागडिय मोयति, मोडत्ता पोयवहण सज्जेंति सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति) वहां आकर उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत यानों को सज्जित किया-यथो चित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया। सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को गाडियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान पर भर दिया (तंदुलाणय सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

તેમને વેચાણુના માલસામાનથી ભરેલી ગાડી અને ગાડાને જોતર્યા અને ત્યાર પછી તેઓ બધા ચપા નગરીની બરાબર વચ્ચોવચ્ચના માર્ગથી પસાર થઇને જ્યા ગભીરક નામનુ વહાણુ પર બેસવાનુ સ્થાન (બદર) હતુ ત્યા પહોચ્યા

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति मोइत्ता पोयवहण सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति)

ત્યા પહોચીને તેઓએ પોતપોતાની ગાડીઓ તેમજ ગાડાઓને છોડીને યથોચિત નવીન ઉપકરણોથી વહાણ તૈયાર કર્યું વહાણને સુદૃઢ રીતે તૈયાર કરીને તેઓએ ગાડી તેમજ ગાડાઓની વેચાણુની બધી વસ્તુઓ વહાણુમા યથાસ્થાને ગોઠવી દીધી

(तंदुलाण य सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य, कट्ठस्स य आव

अथवा-एकद्रव्यरूपाणा च भैषज्याना पथ्यानामाहारविशेषाणाम् अथवा द्रव्यस योगरूपाणाम् च तणस्य च काष्ठस्य च आवरणानाम्=अङ्गरसकादीना च प्रहरणाना च खड्गादिशस्त्राणा अन्येषा च बहूना पोतवहनमायोग्याणा=नौकायानोपनेयानां द्रव्याणा=स्थापनेन पोतवहन=नौकायान भरन्ति पूरयन्ति स्म। शोभने=शुभावहे,

णय तणस्स य, कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूण पोयवहणपाउग्गाण दव्वाण पोयवहण भरेंति)

नौका यान में उन्हों ने चावलों को भरा, गेहुओ को भरा, गेहुओ के आँटे को और आटे से निष्पन्न पक्वान्न विशेषको भरा। तैल, गुड घृत गोरस भरा पानी भरा पानी के वर्तनो को भरा। त्रिकुट आदि औषधियों को भरा पथ्याहार विशेष भैषज्यों को भरा, तृणों को भरा लकड़ियो को भरा अगस्स आदि आवरणों को, खड्ग, आदि शस्त्रों को तथा और भी अनेक वस्तुओं को जो पोत वहन के योग्य थी भरा।

इस तरह उन्हों ने इन समस्त वस्तुओं को, यथोचित स्थान पर स्थापित उस नौकायान को भर दिया। यहा पर जो औषध और भैषज्य ये दो शब्द प्रयुक्त हुए हैं उन से ऐसा भी अर्थ बोध होता है कि त्रिकूट आदि जो अलग २ द्रव्य है वे औषध और इन का समुदाय रूप जो द्रव्य है-जैसे चूर्ण आदि वह भैषज्य है। "पोयवहणपाउग्गाण" पद का यह अर्थ है कि जो द्रव्य नौका द्वारा अच्छी तरह ढोया जा सके वह सब उन्हो ने उस में भर दिया। (सोहणसि तिहि करण

रणाण य, पहरणाण य, अन्नेसि च बहूण पोयवहणपाउग्गाण दव्वाण पोयवहण भरेंति)

તેમણે ચોખા, ઘઉ, ઘઉનોલોટ તેમજ ઘઉના લોટથી બનાવવામા આવેલુ પકવાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો, ત્રિકૂટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યો, ચારો, લાકડા, અગરસ વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણ ઘણી વહાણુ મા લઈજવા યોગ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણુમા લાદી

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાને ગોઠવીને વહાણુને સામા નથી ભરી દીધુ અહીં ઉપર 'ભૈષજ્ય' અને 'ઔષધ' આ બે શબ્દો પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે જે જુદા જુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠા કરવા જેમકે ચૂર્ણ વગેરે તે ભૈષજ્ય છે "पोयवहणपाउग्गाण" પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે સારી રીતે લઈ જઈ શકાય તે બધુ તેમણે તેમા ભર્યું હતું

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणस्थान वर्तते तत्रोपागच्छति, उपागत्य शकटी-शाकटिक मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूढावस्थित क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात मवतारयन्ति, मुक्त्वा=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽवतार्य पोतवहन=नौकायान सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणै परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डकस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः। तण्डुलाना च समि-तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपक्वान्नविशेषस्य च तैलस्य च गुडस्य च घृत-स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकभाजनाना च औषधाना=त्रिकटुकादीनाम्

पट्टणे तेणेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी और गाड़ों को जुत चाया-जुतवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज पर सवार होने का स्थान (बदरगाह) था वहा पर आये।

(उवागच्छित्ता सगड़ सागडिय मोयति, मोइत्ता पोयवहण सज्जेंति सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भंडगस्स भरेंति) वहां आकर उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत थानों को सज्जित किया-यथो चित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया। सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को गाडियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान पर भर दिया (तदुलाणय सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

તેમને વેચાણુના માલસામાનથી ભરેલી ગાડી અને ગાડાને જોતર્યા અને ત્યાર પછી તેઓ બધા ચપા નગરીની બરાબર વચ્ચોવચ્ચના માર્ગથી પસાર થઈને જ્યા ગભીરક નામનુ વહાણુ પર બેસવાનુ સ્થાન (બદર) હતુ ત્યા પહોચ્યા

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति मोइत्ता पोयवहण सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति)

ત્યા પહોચીને તેઓએ પોતપોતાની ગાડીઓ તેમજ ગાડાઓને છોડીને યથોચિત નવીન ઉપકરણોથી વહાણ તૈયાર કર્યું વહાણુને સુદૃઢ રીતે તૈયાર કરીને તેઓએ ગાડી તેમજ ગાડાઓની વેચાણુની બધી વસ્તુઓ વહાણુમા યથાસ્થાને ગોઠવી દીધી

(तदुलाण य सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तगस्स य, कट्ठस्स य आव

अथवा-एकद्रव्यरूपाणा च भैषज्याना पथ्यानामाहारविशेषाणाम् अथवा द्रव्यस योगरूपाणाम् च तृणस्य च काष्ठस्य च आवरणानाम्=अङ्गरसकादीना च प्रहरणाना च खड्गादिशस्त्राणा अन्येषा च बहूना पोतवहनप्रायोग्याणा=नौकायानोपनेयानां द्रव्याणा=स्थापनेन पोतवहन=नौकायान भरन्ति पूरयन्ति स्म। शोभने=शुभावहे,

णय तणस्स य, कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूण पोयवहणपाउग्गाण दव्वाण पोयवहण भरेंति)

नौका यान में उन्हों ने चावलों को भरा, गेहुओ को भरा, गेहुओ के आंटे को और आटे से निष्पन्न पक्वान्न विशेषको भरा। तैल, गुड घृत गोरस भरा पानी भरा पानी के वर्तनों को भरा। त्रिकुट आदि औषधियों को भरा पथ्याहार विशेष भैषज्यो को भरा, तृणों को भरा लकडियो को भरा अगस्स आदि आवरणों को, खड्ग, आदि शस्त्रों को तथा और भी अनेक वस्तुओं को जो पोत वहन के योग्य थी भरा।

इस तरह उन्हों ने इन समस्त वस्तुओं को, यथोचित स्थान पर स्थापित उस नौकायान को भर दिया। यहा पर जो औषध और भैषज्य ये दो शब्द प्रयुक्त हुए हैं उन से ऐसा भी अर्थ बोध होता है कि त्रिकूट आदि जो अलग २ द्रव्य हैं वे औषध और इन का समुदाय रूप जो द्रव्य है-जैसे चूर्ण आदि वह भैषज्य है। "पोयवहणपाउग्गाण" पद का यह अर्थ है कि जो द्रव्य नौका द्वारा अच्छी तरह ढोया जा सके वह सब उन्हो ने उस में भर दिया। (सोहणसि तिहि करण

रणाण य, पहरणाण य, अन्नेसि च बहूण पोयवहणपाउग्गाण दव्वाण पोयवहण भरेंति)

તેમણે ચોખા, ઘઉ, ઘઉનો લોટ તેમજ ઘઉના લોટથી બનાવવામા આવેલુ પકવાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો, ત્રિકુટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યો, ચારો, લાકડા, અગરસ વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણ ઘણી વહાણ મા લઈજવા યોગ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણમા લાદી

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાને ગોઠવીને વહાણને સામા નથી ભરી દીધુ અહીં ઉપર 'ભૈષજ્ય' અને 'ઔષધ' આ બે શબ્દો પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે જે જુદા જુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠા કરવા જેમકે ચૂર્ણ વગેરે તે ભૈષજ્ય છે "पोयवहणपाउग्गाण" પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે સારી રીતે લઈ જઈ શકાય તે બધુ તેમણે તેમા ભર્યું હતું

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणस्थान वर्तते तत्रोपागच्छति, उपागत्य शकटी-शाकटिक मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहावस्थित क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात मवतारयन्ति, मुक्त्वा=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽवतार्य पोतवहन=नौकायान सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणै परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डकस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः। तण्डुलाना च समि-तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपक्वान्नविशेषस्य च तैलस्य च गुडस्य च घृत-स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकभाजनाना च औषधाना=त्रिकटुकादीनाम्

पट्टणे तेणेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी और गाड़ों को जुत वाया-जुतवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज पर सवार होने का स्थान (बदरगाह) था वहा पर आये।

(उवागच्छित्ता सगड़सागडिय मोयति, मोइत्ता पोयवहण सज्जेंति सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति) वहां आकर उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत यानों को सज्जित किया-यथो चित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया। सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को गाडियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान पर भर दिया (तदुलाणय सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

તેમને વેચાણુના માલસામાનથી ભરેલી ગાડી અને ગાડાને જોતર્યા અને ત્યાર પછી તેઓ બધા ચપા નગરીની બરાબર વચ્ચોવચ્ચના માર્ગથી પસાર થઇને જ્યા ગભીરક નામનુ વહાણ પર બેસવાનુ સ્થાન (બદર) હતુ ત્યા પહોચ્યા

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति मोइत्ता पोयवहण सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति)

ત્યા પહોચીને તેઓએ પોતપોતાની ગાડીઓ તેમજ ગાડાઓને છોડીને યથોચિત નવીન ઉપકરણોથી વહાણ તૈયાર કર્યું વહાણુને સુદૃઢ રીતે તૈયાર કરીને તેઓએ ગાડી તેમજ ગાડાઓની વેચાણુની બધી વસ્તુઓ વહાણુમા યથાસ્થાને ગોઠવી દીધી

(तदुलाण य सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जाग य तगस्स य, कट्ठस्स य आव

अथवा-एकद्रव्यरूपाणा च भैषज्याना पथ्यानामाहारविशेषाणाम् अथवा द्रव्यसयोगरूपाणाम् च तृणस्य च काष्ठस्य च आवरणानाम्=अङ्गरसकादीना च प्रहरणाना च खड्गादिशस्त्राणा अन्येषा च बहूना पोतवहनमायोग्याणा=नौकायानोपनेयानां द्रव्याणा=स्थापनेन पोतवहन=नौकायान भरन्ति पूरयन्ति स्म। शोभने=शुभावहे,

णय तणस्स य, कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूण पोयवहणपाउग्गाण दव्वाण पोयवहण भरेंति)

नौका यान में उन्हों ने चावलों को भरा, गेहुओ को भरा, गेहुओ के आंटे को और आटे से निष्पन्न पक्वान्न विशेषको भरा। तैल, गुड घृत गोरस भरा पानी भरा पानी के बर्तनो को भरा। त्रिकुट आदि औषधियों को भरा पथ्याहार विशेष भैषज्यो को भरा, तृणों को भरा लकड़ियो को भरा अगस्स आदि आवरणो को, खड्ग, आदि शस्त्रों को तथा और भी अनेक वस्तुओं को जो पोत वहन के योग्य थी भरा।

इस तरह उन्हों ने इन समस्त वस्तुओं को, यथोचित स्थान पर स्थापित उस नौकायान को भर दिया। यहा पर जो औषध और भैषज्य ये दो शब्द प्रयुक्त हुए हैं उन से ऐसा भी अर्थ बोध होता है कि त्रिकूट आदि जो अलग २ द्रव्य हैं वे औषध और इन का समुदाय रूप जो द्रव्य है-जैसे चूर्ण आदि वह भैषज्य है। "पोयवहणपाउग्गाण" पद का यह अर्थ है कि जो द्रव्य नौका द्वारा अच्छी तरह ढोया-जा सके वह सब उन्हो ने उस में भर दिया। (सोहणसि तिहि करण

रणाण य, पहरणाण य, अन्नेसि च बहूण पोयवहणपाउग्गाण दव्वाण पोयवहण भरेंति)

તેમણે ચોખા, ઘઉ, ઘઉનોલોટ તેમજ ઘઉના લોટથી બનાવવામા આવેલુ પકવાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો, ત્રિકૂટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યો, ચારો, લાકડા, અગરસ વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણ ઘણી વહાણ મા લઇજવા યોગ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણુમા લાદી

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાને ગોઠવીને વહાણુને સામા નથી ભરી દીધુ અહીં ઉપર 'ભૈષજ્ય' અને 'ઔષધ' આ બે શબ્દો પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે જે જુદા જુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠા કરવા જેમકે ચૂર્ણ વગેરે તે ભૈષજ્ય છે "पोयवहणपाउग्गाण" પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે સારી રીતે લઇ જઈ શકાય તે બધુ તેમણે તેમા ભર્યું હતું

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणस्थान वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटी-शाकटिक मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहावस्थित क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात मवतारयन्ति, मुक्त्वा=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽवतार्य पोतवहन=नौकायान सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणै परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डकस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः। तण्डुलाना च समि-तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपक्वान्नविशेषस्य च तैलकस्य च गुडस्य च घृत-स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकभाजनाना च औषधाना=त्रिकटुकादीनाम्

पट्टणे तेणेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाडी और गाड़ों को जुत वाया-जुतवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज पर सवार होने का स्थान (बदरगाह) था वहा पर आये।

(उवागच्छित्ता सगड़ सागडिय मोयति, मोइत्ता पोयवहण सज्जेंति सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति) वहां आकर उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत यानों को सज्जित किया-यथो चित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया। सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को गाडियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान पर भर दिया (तदुलाणय सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

તેમને વેચાણુના માલસામાનથી ભરેલી ગાડી અને ગાડાને જોતર્યા અને ત્યાર પછી તેઓ બધા ચપા નગરીની બરાબર વચ્ચોવચ્ચના માર્ગથી પસાર થઈને જ્યા ગભીરક નામનુ વહાણ પર બેસવાનુ સ્થાન (બદર) હતુ ત્યા પહોચ્યા

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति मोइत्ता पोयवहण सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति)

ત્યા પહોચીને તેઓએ પોતપોતાની ગાડીઓ તેમજ ગાડાઓને છોડીને યથોચિત નવીન ઉપકરણોથી વહાણ તૈયાર કર્યું વહાણને સુદૃઢ રીતે તૈયાર કરીને તેઓએ ગાડી તેમજ ગાડાઓની વેચાણની બધી વસ્તુઓ વહાણમા યથાસ્થાને ગોઠવી દીધી

(तदुलाण य समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य, कट्ठस्स य आव

त्तसि धूवसि पूइएसु समुद्दवाएसु, ससारियासु, वलयवाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु,जइएसु सव्वस-उणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु, महया उक्किट्ठिसीहणाय जंयरवेण पक्खुभितमहासमुद्दरवभूयं पिव मेइणि करेमाणा एगादिसि सजुत्ता नावा वाणियगा णावं दुरूढा ।

तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु–हभो सव्वेसिमत्थिभे अत्थ सिद्धीओ उवट्ठिताइ कल्लाणाइ, पडिहयाइ सव्वपावाइं, जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अय देसकालाओ, तओ पुस्समाणवेणं वक्के उदाहिए हट्ठतुट्ठा कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज्जसंजाता णावा वाणियगा वावारिसु तं नाव पुन्नुच्छगं पुण्णमुहि वधणेहिंतो मुंचंति ॥ सू० १९ ॥

टीका—' तएण तेसिं ' इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु तेषामरहन्नक प्रभु खाणा यावत् नौकावाणिजकाना परिजना यावत् तादृशीभिर्वाग्भिरभिनन्दन्तश्चाभि सस्तुवन्तश्चैव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादिषुः–हे आर्य ! =हे पितामह ! तात ! हे पितः हे मातुल ! हे भागिनेय ! भगवता महता समुद्रेण ' अभिरग्विज्जमाणा '२ अभि

' तएण तेसिं अरहन्नग जाव ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (अरहन्नग जाव वाणियगाण परियणा जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणदता य अभिसथुणमाणा य एव वयासी) उन अरहन्नक यावत् अन्य और पोतवणिजों के परिजनो ने यावत् उस २ प्रकार की वाणियों द्वारा उन सबका अभिनन्दन एव सस्तवन करते हुए उन से इस प्रकार कहा-(अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणज्जे ! भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जे माणा २ चिर जीवह भद्द

'तएण तेसिं अरहन्नग जाव' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–"तएण" ત્યાદિથી "अरहन्नग जाव वाणियगाण परियणा जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणदताय अभिसथुणमाणाय एव वयासी" તે અરહન્નક પ્રમુખ પોતવણિકોના પરિજનો તેમનુ અનેક જાતની મગળવાણીયો વડે અભિનદન અને સસ્તવન કરતા તેમને કહેવા લાગ્યા (अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भणिज्जे भगवया समुद्देण अभिरक्खिज्जेमाणा२ चिर जीवह भद्द च ते) હે આર્ય !

तिथिकरण दिवस नक्षत्रमुहूर्ते विपुलम्=विस्तीर्णम्, अशनपानखाद्यस्वाद्यम्=चतुर्विधमाहारमुपस्कारयन्ति=सपादयन्ति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनान् भोजयित्वाऽऽपृच्छन्ति, समुद्रयात्रानुमतिमदानार्थं मार्थयन्ति आपृच्छ्य यत्रैव पोतस्थान=नौकायानारोहणस्थान वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च तत्र स्थिताः ॥सू० १८॥

मूलम्–तएणं तेसिं अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणा जाव तारिसेहिं वग्गूहि अभिणंदंता य अभिसथुणमाणा य एवं वयासी–अज्ज ताय भाय माउल भाइणज्जे भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जमाणा २ चिरजीवह भद्दं च भे पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियग घरं हव्वमागए पासामोत्तिकट्टु ताहिं सोमाहिं, निद्धाहिं दीहाहिं, सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरीक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं सचिट्ठति तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मे दिन्नेसु सरसरत्तचदणदद्दर पचंगुलितलेसु, अणुक्खदिवसनक्खत्तमुहुत्तसि विपुलं असण४ उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता, मित्तणाई० आपुच्छति, आपुच्छित्ता जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छति) जब सब प्रकार का चतुर्विध क्रयाणक नौकायान में भरा जा चुका तब पुनः उन लोगों ने अशनादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न करवाया, और करवा कर अपने २ मित्र ज्ञाति आदि परिजनों को जिमाया जिमा कर उन से समुद्रयात्रा कर ने की अनुमति मागी–और माग कर फिर वे सब के सब पोत वणिक् जहा नौका पर चढने का स्थान था वहा आये–और आकर वहां ठहर गये। सूत्र " १८ "

(सोहणसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तसि विपुल असण ४ उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता, मित्तणाई० आपुच्छति,आपुच्छित्ता जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छति

જ્યારે ચારે જાતની વેચાણુ કરવાની વસ્તુઓ જહાજમા ભરાઇ ગઇ ત્યારે તેમણે અશન વગેરે ચારે જાતનો આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો અને કરાવડાવીને પોતપોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને જમાડયા અને જમાડીને તેમની પાસેથી સમુદ્રયાત્રા કરવાની આજ્ઞા માગી અને આજ્ઞા મેળવીને તેઓ બધા પોતવણિકો જ્યા વહાણુમા બેસવાનુ હતુ ત્યા આવ્યા અને ત્યા આવીને તેઓ બધા ત્યા રોકાયા ॥ સૂત્ર " ૧૮ " ॥

दानादिकर्मसु, तथा-सरसरक्तचन्दन दर्दर पञ्चाङ्गुलितलेषु सरसरक्तचन्दनस्य दर्दरेण चपेटाऽऽकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु करतलाङ्कनेषु दत्तेषु परीधानीयेषु उत्तरीयेषु वस्त्रेषु च सरसरक्तचन्दनानुलिप्तकरतलमुद्रणेषु कृतेष्वित्यर्थः। अनूत्क्षिप्ते=अनुपश्चात् ऊर्ध्वक्षिप्ते धूपे गुग्गुलादि धूमे कृते सति, पूजितेषु=धूपादिना समानितेषु समुद्रवातेषु समुद्रसम्बन्धिपवनेषु, तथा ससारितेषु स्थानान्तरादानीय यथोचित स्थाने निवेशितेषु वलयबाहुषु=दीर्घकाष्ठरूपेषु बाहुषु, तथा उच्छ्रितेषु उर्ध्वमुखम वस्थापितेषु सितेषु शुक्लेषु ध्वजाग्रेषु पताकाग्रेषु, तथा-पटुभिर्वादितेषु पटुभिः पुरुषैः प्रवादितेषु, यद्वा-पटु यथा भवति तथा प्रवादितेषु तूर्येषु वाद्येषु, तथा जयिकेषु जयकारकेषु सर्वशकुनेषु=वायसरुतादिषु, तथा-गृहीतेषु=प्राप्तेषु राजवरशासनेषु=समुद्रयात्रार्थं चम्पानगरीभूपस्याऽऽज्ञापत्रेषु तथा-महोत्कृष्टसिंहनाद

धूवसि, पूइएसु समुद्दवाएसु समारियासु वलयवाहासु, उसिएसु सिएसुद्धयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु, जइएसु सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु) इसके बाद पुष्प अक्षत दानादिक कर्म जब समाप्त हो चुका, परिधानीय वस्त्रो पर सरस रक्त चदन के चपेटाकार से हाथे जब लगाये जा चुके, गुग्गुल आदि धूप अग्नि में डालकर जब उस का धूम किया जा चुका समुद्रीय हवाए जब धूपादि प्रदान द्वारा पूजित की जा चुकी दीर्घ काष्ट रूप वलय (पतवार) स्थानान्तर से लाकर जब यथोचित स्थान पर रखे जा चुके, शुभ्र ध्वजाओं के अग्रभाग जब उर्ध्वमुख कर अवस्थापित हो चुके, चतुर बजाने वालो के द्वारा जब अच्छी तरह बाजे बजाये जा चुके जय कारक वायसरुतादि रूप सर्व शकुन जब अच्छी तरह से हो चुके और समुद्र यात्रा करने का आदेश पत्र जब चपा नगरी के राजा का प्राप्त हो चुका तब(महया उक्किट्ठसी

अणुक्खित्तसि धूवसि पूइएसु समुद्दवाएसु ससारियासु वलयवाहासु उसिएसु सिएसु झयग्गेसु पडुप्पवाइएसु तूरेसु जइएसु सव्व सउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु)

ત્યાર બાદ પુષ્પ અક્ષત દાન વગેરે ની વિધિ પૂરી થઈ ગઇ, પરિધાનીય વસ્ત્રો ઉપર સરસ લાલ ચદનના થાપાઓ લગાવી લીધા, ગૂગળ વગેરે ધૂપ અગ્નિમા નાખીને ધૂપ કરી લીધો, ધૂપ વગેરે અર્પીને સમુદ્રના પવનોની અર્ચનાનુ કામ પુરૂ થઇગયુ, બીજા સ્થાનેથી દીર્ઘકાષ્ઠરૂપ વલય એટલે કે સૂકાન વગેરે વહાણ ઉપર યથાસ્થાને મુકાઇ ગયા, શુભધ્વજાઓના અગ્રભાગ જ્યારે ઉર્ધ્વમુખના રૂપે અવસ્થાપિત થઇ ગયા, કુશળ વાજા વાળાઓ વડે સરસ વાજાઓ વગાડવાનુ કામ પતિ ગયુ, જય પમાડનારા કાગડા વગેરે પક્ષીઓના માગલિક શબ્દો એટલે કે સારા શુકન થઇ ગયા અને ચપાનગરીના રાજા પાસેથી સમુદ્રયાત્રા કરવાનો પરવાનો " આદેશ પત્ર " તેઓની પાસે આવી ગયો ત્યારે

रक्ष्यमाणा २=सुरक्ष्यमाणाः२ चिरं बहुकालं जीवत, भद्रं च युष्माकं भवतु पुनरपि लब्धार्थान् लब्धलाभान कृतकार्यान् सम्पादितसकलकृत्यान अनघसमग्रान्=अनघाश्च ते समग्राः अनघसमग्रास्तान् दोषरहितत्वादनघा, धनेषु परिवारेषु च क्षामाभावात् समग्राः तथाविधान् युष्मान निजक=स्वकीय, गृहं क्षिप्रमागतान् शीघ्रमागतान् वयं पश्यामः, इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा तामि सौम्याभिर्निर्विकारत्वात्, स्निग्धाभिः सस्नेहत्वात्, दीर्घाभिः दूर यावदवलोकनात् 'सप्पिवासाहिं' सर्पिवासाभिः=दर्शनेच्छावतीभिः, 'पप्पुयाहिं' प्लुताभिः=अश्रुपूर्णाभिः दिट्ठीहिं' दृष्टिभि निरीक्षमाणा अवलोकमाना' मुहूर्तमात्रं सतिष्ठन्ते अरहन्नादीनां परिजना अश्रुपूर्णदृष्टिभिस्तान पश्यन्तोमुहूर्तमात्र निश्चला अभवन्नित्यर्थः। ततः 'समाणिएसु' समापितेषु सम्यक् सपादितेषु पुष्पबलिकर्मसु पुष्पाक्षत-

---

च,भे) हे आर्य! हे तात! हे भ्रातः! हे मामा! हे भागिनेय! आपलोग इस भगवान् विशाल समुद्र से बार२ सुरक्षित होते हुए चिर काल तक जीवित रहें। आप सबका कल्याण हो। (पुणरवि लद्धट्ठे, कय कज्जे, अणहसमग्गे नियग घर हव्वमागए पासामो) हम लोग लाभ से-युक्त सम्पादित सकल कार्यों वाले विना किसी शारीरिक आदि बाधा से रहित धन और परिवारो से परिपूर्ण हुए आप सब को घर पर शीघ्र आया हुआ देखें। (त्ति कट्टु) ऐसा कह कर वे वहा-(ताहिं सोमाहिं, निद्धाहिं, दीहाहिं, सप्पिवासाहिं, पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरीक्खमाणा मुहुत्तमेत्त सचिट्ठति) सौम्य स्निग्ध, दीर्घ, दर्शनेच्छावती और अश्रुपूर्ण दृष्टियों से उन्हें देखते हुए एक मुहूर्त तक बैठे रहे। (तओ समाणिएसु पुप्फ बलकम्मेसु दिन्नेसु सरसरत्तचदणदद्दर, पचगुलितलेसु, अणुक्खित्तसि

હેતાત! હે ભાઇ! હે મામા! હે ભાણેજ! તમે બધા આ ભગવાન વિશાળ સમુદ્રવડે વારવાર સુરક્ષિત થઇને ચિરકાળ સુધી જીવતા રહો તમારુ કલ્યાણ થાઓ "पुणरविलद्धट्ठे, कयकज्जे, अणहसमग्गे नियग घर हव्वमागए पासामो" અમે બધા તમને લાભન્વિત થયેલા, બધા કાર્યોને પાર પમાડનારા, કોઇ પણ જાતની શારીરિક મુશ્કેલી વગર એટલે કે સ્વસ્થ શરીરવાળા, ધન તેમજ પરિપૂર્ણ પરિવારથી યુક્ત થઇને ઘેર પાછા આવેલા જોઇએ "त्तिकट्टु" આમ કહીને તેઓ ત્યા

(ताहिं सोमाहिं निद्धाहिं दीहाहिं, सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं, दिट्ठीहिं निरीक्खमाणा मुहुत्तमेत्त सचिट्ठति)

સૌમ્ય સ્નિગ્ધ, બહુવખત સુધી દર્શનની ઈચ્છાવાળી અને આસુ ભીની દૃષ્ટિઓથી તેમને જોતા એક મુહૂર્ત સુધી બેસી રહ્યા

(तओ समाणिए सुपुप्फ बलिकम्मेसु दिन्नेसु सरसरत्तचदणदद्दरपचगुलि तलेसु,

दानादिकर्मसु, तथा-सरसरक्तचन्दन दर्दर पञ्चाङ्गुलितलेषु सरसरक्तचन्दनस्य दर्दरेण चपेटाऽऽकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु करतलाङ्कनेषु दत्तेषु परीधानीयेषु उत्तरीयेषु वस्त्रेषु च सरसरक्तचन्दनानुलिप्तकरतलमुद्रणेषु कृतेष्वित्यर्थः। अनूत्क्षिप्ते=अनुपश्चात् ऊर्ध्वक्षिप्ते धूपे गुग्गुलादि धूमे कृते सति, पूजितेषु=धूपादिना समानितेषु समुद्रवातेषु समुद्रसम्बन्धिपवनेषु, तथा ससारितेषु स्थानान्तरादानीय यथोचित स्थाने निवेशितेषु वलयबाहुषु=दीर्घकाष्ठरूपेषु बाहुषु, तथा उच्छ्रितेषु उर्ध्वमुखम वस्थापितेषु सितेषु शुक्लेषु ध्वजाग्रेषु पताकाग्रेषु, तथा-पटुप्रवादितेषु पटुभिः पुरुषैः प्रवादितेषु, यद्वा-पटु यथा भवति तथा- प्रवादितेषु तूर्येषु वाद्येषु, तथा जयिकेषु जयकारकेषु सर्वशकुनेषु=वायसरुतादिषु, तथा-गृहीतेषु=प्राप्तेषु राजवरशासनेषु=समुद्रयात्रार्थं चम्पानगरीभूपस्याऽऽज्ञापत्रेषु तथा-महोत्कृष्टसिंहनाद

धूवसि, पूइएसु समुद्दवाएसु ससारियासु वलयवाहासु, उसिएसु सिएसुज्झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु, जइएसु सव्वसउणेसु,-गहिएसु रायवरसासणेसु) इसके बाद पुष्प अक्षत दानादिक कर्म जब समाप्त हो चुका, परिधानीय वस्त्रो पर सरस रक्त चदन के चपेटाकार से हाथे जब लगाये जा चुके, गुग्गुल आदि धूप अग्नि में डालकर जब उस का धूम किया जा चुका समुद्रीय हवाए जब धूपादि प्रदान द्वारा पूजित की जा चुकी दीर्घ काष्ट रूप वलय (पतवार) स्थानान्तर से लाकर जब यथोचित स्थान पर रखे जा चुके, शुभ्र ध्वजाओ के अग्रभाग जब उर्ध्वमुख कर अवस्थापित हो चुके, चतुर बजाने वालो के द्वारा जब अच्छी तरह बाजे बजाये जा चुके जय कारक वायसरुतादि रूप सर्व शकुन जब अच्छी तरह से हो चुके और समुद्र यात्रा करने का आदेश पत्र जब चपा नगरी के राजा का प्राप्त हो चुका तब(महया उक्किट्ठसी

अणुक्खित्तसि धूवसि पूइएसु समुद्दवाएसु ससारियासु वलयवाहासु उसिएसु सिएसु झयग्गेसु पडुप्पवाइएसु तूरेसु जइएसु सव्व सउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु)

ત્યાર બાદ પુષ્પ અક્ષત દાન વગેરે ની વિધિ પૂરીથઈ ગઇ, પરિધાનીય વસ્ત્રો ઉપર સરસ લાલ ચદનના થાપાઓ લગાવી લીધા, ગૂગળ વગેરે ધૂપ અગ્નિમા નાખીને ધૂપ કરી લીધો, ધૂપ વગેરે અર્પીને સમુદ્રના પવનોની અર્ચનાનુ કામ પુરૂ થઇગયુ, બીજા સ્થાનેથી દીર્ઘકાષ્ઠરૂપ વલય એટલે કે સૂકાન વગેરે વહાણ ઉપર યથાસ્થાને મુકાઇ ગયા, શુભધ્વજાઓના અગ્રભાગ જ્યારે ઉર્ધ્વમુખના રૂપે અવસ્થાપિત થઇ ગયા, કુશળ વાજા વાળાઓ વડે સરસ વાજાઓ વગાડવાનુ કામ પતિ ગયુ, જય પમાડનારા કાગડા વગેરે પક્ષી ઓના માગલિક શબ્દો એટલે કે સારા શુકન થઇ ગયા અને ચપાનગરીના રાજા પાસેથી સમુદ્રયાત્રા કરવાનો પરવાનો " આદેશ પત્ર " તેઓની પાસે આવી ગયો ત્યારે

जयरवेण उच्चस्वरयुक्त जय जय ध्वनिता प्रक्षुभितमहासमुद्ररवभूतामिव वायु प्रक्षोभजनितमहासागरध्वनिव्याप्तामिव मेदिनीं = पृथिवीं मधुरनादवतीं कुर्वाणा एकदिशं एकस्या दिशि सयात्रानौका यानिजका नाव नौकायान दुरूढाः आरोहति स्म ।

ततस्तदनन्तर ' पुस्समाणवो ' पुष्यमानव =मागधो मङ्गलपाठकः ' वक्कमुदाहु ' वाक्यमुदाह–मङ्गल्यवचनमुक्तवान् तदाह–हभो इत्यादि हे नौकायात्रिका ' सव्वेसिमविभे ' सर्वेषामपि युष्माकम् अर्थसिद्धयो भवन्तु, उपस्थितानि कल्याणानि भवन्तु तथा प्रतिहितानि सर्वपापानि भवन्तु=सर्वविघ्ना प्रतिहता विनष्टा भवन्त्वित्यर्थ । ' जुत्तो ' युक्तः ' पूसो ' पुष्यः=पुष्याख्यो नक्षत्रविशेषः अनुकूलेन चन्द्रमसा युक्त इत्यर्थः । पुष्यनक्षत्र यात्राया प्रशस्तम् तथ चोक्त–

हणायजयरवेण पक्खुभित्तमहासमुद्दरवभूयपिव मेढणिं करेमाणा) उत्कृष्ट सिंहनाद जैसी जय जय ध्वनि से वायु के प्रक्षोभ से जनित महासागरकी ध्वनि से व्याप्त हुई की तरह मेदनी को करते हुए (सज्जुत्ता नावा वाणियगा एगदिसिं णाव दुरूढा) वे सायात्रिक पोत वणिक् नाव पर सवार हुए ।

(तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु) इतने में ही मगल पाठक–चारण–ने मगल ध्वनि की (हभो सव्वेसिं भविभे अत्थसिद्धीओ उवट्ठिताइ कल्लाणाइ, पडियाइ सव्व पावाइ, जुत्तो पूसो, विजओ मुहुत्तो अयदेसकालो) हे हे नौका यात्रिकों ! आप सब को अर्थ की सिद्धि हो, सब कल्याण आपके लिये सदा उपस्थित रहें, समस्त प्रकार के विघ्न आपकी इस मागलिक यात्रा में नाश हो पुष्प नक्षत्र का अनुकूल चन्द्रमा के साथ योग रहा है यात्रा मे पुष्प नक्षत्र का योग प्रशस्त होता

(महया उक्किट्ठसीहणायजयरवेण पक्खुभित्तमहासमुद्दरवभूय पिव मेइणिं करेमाणा)

પવનથી–ક્ષુબ્ધ મહાસાગરના સર્વત્ર વ્યાપ્ત થયેલા ધ્વનીની જેમ સિંહનાદ જય જય ધ્વનિથી પૃથ્વીને શબ્દિત કરતા (सज्जुत्तानावा वाणियगा एगदिसिंणाव दुरूढा) તે સમયે માગલિકોએ એટલે કે ચારણોએ મગળધ્વનિ કર્યો

(हभो सव्वेसिमविभे अत्थसिद्धीओ उवट्ठिताइ कल्लाणाइ पडियाइ सव्वपावाइ, जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयदेसकालो)

હે પોતવણિકો ! તમને બધાને અર્થની સિદ્ધિ થાય તમને સદા કલ્યાણો પ્રાપ્ત થાઓ, મગળયાત્રાના તમારા બધા વિઘ્નોનાશ પામો અત્યારે ચન્દ્રની સાથે પુષ્યનક્ષત્રનો અનુકૂળ યોગ થઈ રહ્યો છે (यात्रामा पुष्यनक्षत्रनो योग

अपि द्वादशमे चन्द्र पुष्यः सर्वार्थसाधनः ॥ इति ॥

त्रिजयो मुहूर्तोऽयुना वित्यते, अय देशकालः=समय प्रस्थाने शुभावह इत्युक्त-मागधेन । ततस्तदनन्तर ' पुस्समाणवेण ' पुष्यमानवेन मागधेन ' वक्क ' वाक्ये=माङ्गलिकवचने, ' उदाहिए ' उदाहृते उक्ते सति हृष्टतुष्टा अतिशयेन प्रमुदिता ' कुच्छिधारकन्नधार गब्भिज्ज सजत्ताणावावाणियगा ' कुक्षिधार कर्णधार गर्भज सयात्रा नौवाणिजकाः=कुक्षिधारा नौकायाः पार्श्वतो नियोजिता सञ्चालकाः, कर्णधार नाविका प्रधानभूता नौकावाहकाः, गर्भजाः=नौमध्ये स्थित्वा यथावसरकार्यकर्त्तारः, सयात्राः=सगताः समिलिताः सन्तो देशान्तरगामिन , नौ वाणिजकाः=नौकया वाणिज्यकारिण भाण्डपतय. सर्वएते व्यापृतवन्त स्व स्व व्यापारे प्रवृत्ता सन्तः, ता नाव पूर्णां-सङ्गा विविधक्रयाणकजातैः

है-उक्तञ्च अपि द्वादशमे चन्द्रे पुष्यः सर्वार्थसाधन । इस समय विजय मुहूर्त वर्त रहा है। प्रस्थान के लिये यह समय शुभावह हैं । (तओ पुस्समाणवेण वक्के उदाहिए हट्ठतुट्ठा कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज्ज सजात्ता णावा वाणियगा वावारिसु) इस तरह पुष्प मानव-चारण जब मगल ध्वनि कर चुका-तब हर्षित और सतुष्ट हुए कुक्षिधार-नौका के पार्श्व मे नियोजित किये गये सचालक जन, कर्णधार-खेवटियाजन, गर्भज-नौका के भीतर बैठ कर अवसरानुकूल कार्य कर्त्ता जन, और सायात्रिक जन-मिलकर परदेश जाने वाले पोतवणिक् कि जिन का क्रयाणक नौका में भरा हुआ था-ये सब के सब अपने २ व्यापार-कार्य में प्रवृत्त हो गये (त नाव पुन्नुच्छग पुण्ण मुहिंवधणेहिंतो मुचति) और उस नौका को कि जिस का मध्यभाग विविध क्रयाणकों से पूर्ण

પ્રશસ્ત હોય છે-કહ્યું પણ છે- ' अपिद्वादशमे चन्द्रे पुष्य सर्वार्थसाधन ") અત્યારે વિજયના મુહૂર્તનો સમય ચાલી રહ્યો છે પ્રસ્થાન માટે અત્યાર નો વખત શુભાવહ છે

(तओ पुस्समाण वेणवक्के उदाहिए हट्ठतुट्ठा कुच्छिधारकन्नधार गब्भिज्ज सजात्ता णावावाणियगा वावारिसु)

આરીતે જ્યારે પુષ્પમાનનો-ચરણો-નો મગળ પાઠ થઇ ચૂકયો ત્યારે હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થયેલા કુક્ષિધાર-નૌકાના પાર્શ્વભાગમા નિયુક્ત કરાયેલા સચાલકો, કર્ણધાર-નૌકાચલાવનારાઓ, ગર્ભજ-નૌકાના અદરના ભાગમા બેસીને અવસરાનુકૂળ કામ કરનારાઓ અને સાયાત્રિકજનો-વેપારીઓ-કે જેમની વસ્તુઓને નૌકામા લાદેલી હતી, પોતપોતાના કામમા વળગી ગયા

(त नाव पुन्नुच्छग पुण्णमुहिं वयणेहिं तो मुचति)

અને જેના વચ્ચેના ભાગમા અનેક જાતની વેચાણની વસ્તુઓ ભરેલી

सभृतान्तराला, पूर्णमुत्कां यथोचितसभृताग्रभागा बन्धनेभ्यः तीरस्थशङ्कुबद्धरज्जु बन्धनग्रन्थिमुन्मुच्य मुञ्चन्ति=विसर्जयन्ति ॥ सू० १९ ॥

मूलम्—तएणं सा नावा विमुक्कबंधणा पवणबलसमाहया उस्सियसिया वितत्तपक्खा इव गरुडजुवई गंगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखुब्भमाणी२ उम्मीतरंगमालासहस्साइं समइच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहि लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा, तएणं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजात्ताना वावाणियगाणं लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाण बहूइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे, अभिक्खणं२ आगासे देवयाओ नच्चति, एग च ण महं पिसायरूव पासति, तालजंघं दिवंगयाहि वाहाहि मसिमूसगमहिसकालग भरियमेहवन्न लंबोट्ठ निग्गयग्गदत निल्लालियजमलजुयलजीह आऊसिय वयणगडदेस चीणचिविटनासिय विगयभुग्गभुमय खज्जोयगदित्तचक्खुरागउत्तासणगं विसालवच्छ विसालकुच्छि पलवकुच्छि पहसियपयालियपयडियगत्त पणच्चमाणं अप्फोडत अभिवयत अभिगज्जत बहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयत नीलुप्पलगवल-

---

भरा हुआ था तथा अग्रभाग भी जिस का यथोचित अनेक प्रकार की सचालन सामग्री से व्याप्त हो रहा था तीर पर की कील मे बंधी हुई रस्सी के बधन को खोलकर छोड दिया। सूत्र " १९ "

હતી અને અગ્રભાગમા યથોચિત જાતજાતની સચાલન સામગ્રી ભરેલી હતી એવા વહાણને કિનારા ઉપર ના થાભલાનુ બધન ખોલીને મુક્ત કરવામા આવ્યુ ॥ સૂત્ર " ૨૦" ॥

गुलिय अयसिकुसुमप्पगास खुरधार असिंगहाय अभिमुहमाव-
यमाण पासंति ॥ सू० २० ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि-ततस्तदनन्तर खलु सा नौ विंमुक्तबन्धना बन्धनरहिता पवनबलसमाहता=वायुवेगप्रेरिता ' उस्सियसिया ' उच्छ्रितसितपटा नौकाया वायुसग्रहार्थं बृहद्वस्त्रमुच्छ्रित कृत्वा निबध्यते, उच्छ्रितशुक्लपटेन सा नौः कीदृशीत्याह-' विततपक्खा इव गरुडजुवई ' विततपक्षेव गरुडयुवतिः विततपक्षा=प्रसारितपक्षा गरुडभार्या गगने गच्छन्ती, यथा भवति तद्वदित्यर्थः, गङ्गासलिलतीक्ष्णस्रोतोवेगै गङ्गाजलस्य ये तीक्ष्णास्तीव्रा स्रोतोवेगाः=प्रवाहवे गास्तैः सक्षुभ्यन्ती२ प्रेर्यमाणा २ समुद्रं प्रतीति भावः,' उम्मीतरङ्गमालासहस्साइ' ऊर्मितरङ्गमालासहस्राणि ऊर्मयो महाकल्लोला वृहत्तरङ्गा , तरङ्गाः=ह्रस्वकल्लोलाः लघुतरङ्गास्तेषा माला आवलयः तासा सहस्राणि, समति क्रामन्ती २ समुत्तरन्ती २ कतिपयैर्बहुभिरहोरात्रै र्दिवसैं रात्रिभिश्च लवणसमुद्र अनेकानि योजनशतानि

' तएणं सा नावा ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इस के बाद (विमुक्क बधणा) बन्धन से विमुक्त हुई (सा नावा) वह नौका (पवणबलसमाहया) वायु के वेग से प्रेरित होकर (गगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं सखुब्भमाणी २) गंगा जल के प्रवाह वेगों से बार २ इधर उधर क्षुभित होती हुई (उस्सियसिया) अपने ऊपर वायु सग्राहार्थ बांधे गये शुभ्रवस्त्र से (विनत पक्खो गरुड जुवईइव) पाखों को पसार कर आकाश में उडती हुई गरु युवती के जैसी प्रतीत होने लगी। (उम्मीतरग मालासहस्साइ समइच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहि लवण समुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा)

' तण्णं सा नावा ' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર બાદ (विमुक्कबधणा) બંધન મુક્ત થયેલુ (सा नवा) તે વહાણ (पवणबलसमाहया) પવનના આઘાતોથી પ્રેરિત થઇને (गगा सलिलतिक्खसोयवेगेहिं सखुब्भमाणी) ગગાના તીવ્રપ્રવાહથી ક્ષુભિત થતું (उस्सियसिया) પવન ભરાઇને વહાણને ગતિમળે એવા પોતાના ઉચ્છ્ર સઢથી " विनत पक्खा गरुडजुवई इव " પાખો પ્રસારેલી અને આકાશમા ઉડતી ગરુડ યુવતીની જેમ લાગતુ હતુ

(उम्मीतरग माला सहस्साइ समइच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवण समुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा)

'ओगाढा' अवगाहिता तीर्णा। ततस्तदनन्तरं खलु तेषाम् अरहन्नकप्रमुखाणां सयात्रा नौयानिजकाना लवणसमुद्रमनेकानि योजनशतानि अवगाहितानां तीर्णानां सता बहूनि 'उप्पाइयसयाइ' उत्पातशतानि प्रादुर्भूतानि। तान्युत्पादशतानि वर्णयति--

'त जहा' इत्यादि। तद् यथा-अकाले गर्जितं वर्षाकाल-विना मेघध्वनिः, अकाले विद्युत् अकाले 'थणियसद्दे' स्तनितशब्दः मेघस्य गम्भीरध्वनिरभूत् तथा-अभीक्ष्ण=पुनः पुनः आकाशे देवता नृत्यन्ति तथा-एकं च खलु महद् बृहत् पिशाचरूपं पश्यन्ति अरहन्नकप्रमुखाः संयात्रा नौ यानिजकाः अकालमेघध्वनिं

ઘણા વેગ કે સાથ ઉર્મિયોં-મહાલહરોં કે તરંગો કે-છોટી ૨ લહરોં કે-માલા સહસ્ર કો ઉલ્લઘન કરતી હુઈ વહ નૌકા કિતનેક દિનોં કે બાદ લવણ સમુદ્ર મેં અનેક યોજનોં તક પહુંચ ગઈ। (तएणं तेसिं अरहन्नग पामोक्खाणं सजत्तानावा वाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयण सयाइ ओगाढाणं समाणाण बहूइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ) इस के बाद उन सायात्रिक अरहन्नक प्रमुख नौका वणिकों को जब कि वे लवण समुद्र में अनेक सैकडों योजनों को पार कर चुके थे बहुत से सैकड़ो उपद्रव सामने आने लगे।

(त जहा) जैसे- (अकालेगज्जिए, अकाले विज्जुए, अकाले थणियसद्दे, अभिक्खण २ आगासे देवयाओ नच्चति, एग च ण महं पिसायरूव पासति) वर्षा काल के विना ही उस समय मेघध्वनि होने

ખૂબજતીવ્ર વેગે નાનામોટા સેકડો મોજાઓ ને વટાવીને ઘણલાક દિવસો બાદ વહાણુ લવણુસમુદ્રમા ઘણુ યોજનો દૂર સુધી પહોચી ગયુ

(तएण तेसिं अरहन्नगपामोक्खाण सजत्तानावा वाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समाण बहूइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ)

ત્યાર બાદ સાયાત્રિક અરહન્નક પ્રમુખ પોતવણિકો લવણુ સમુદ્રમા જ્યારે સેકડો યોજનો સુધી દૂર પહોચીગયા ત્યારે સેકડો આફતો તેમની સામે ઝઝૂમવાલાગી (त जहा) જેમ કે

(अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे, अभिक्खण २ आगासे देवयाओ नच्चति, एगच ण महं पिसायरूव पासति)

વર્ષાકાળ હોવા ન છતા મેઘ ગર્જનાઓ થવા માડી, વીજળીઓ ઝબૂકવા લાગી અને મેઘનો ગભિર ધ્વનિ પણ થવા માડયો આકાશમા વારવાર દેવતાઓ નાચતા જોવામા આવવા લાગ્યા,

विद्युद्विद्योतन पुनः पुनर्देवनृत्यप्रदर्शनपूर्वकमेक बृहत् पिशाचरूप विलोकयन्ति । स्मेत्यर्थः । कथम्भूत तत् पिशाचरूपमित्याह–' तालजघ ' तालजङ्घ तालवृक्षवद्दीर्घे जङ्घे यस्य तत्तथा, दिव गताभ्या गगनस्पर्शिभ्या बाहुभ्या महादीर्घाभ्यां बाहुभ्या युक्तमित्यर्थः । मषीमूशकमहिषकालक मषी–कज्जल मूषको महिषश्च प्रसिद्धः तद्वत् कालक कृष्णवर्ण यत्तत्तथा, भरियमेहवन्न ' भृतमेघवर्ण = जलपूर्णघनीभूतमेघघटावदतिश्याम, लम्बोष्ठ, निर्गताग्रदन्त निर्गतानि मुखाद्बहिर्भूतानि अग्राणि अग्रभागा येषा ते निर्गताग्रास्तथा भूतादन्ता यस्य तथोक्तस्त, ' निल्ला लियजमलजुयलजीह ' निर्लालितयमलयुगलजिह्वम् निर्लालित – मुखाद्बहिष्कृत यमल=सम युगल द्वय जिह्वयो र्येन तत्तथा, 'आऊसियवयणगडदेस' प्रविष्टवदन-

---

लगी, बिजली चमक ने लगी, और मेघ की गभीर ध्वनि भी होने लगी। बार २ आकाश में देवता नाचते हुए दिखलाई पडने लगे ।

तथा विशाल काय पिशाच का रूप भी दृष्टिगोचर होने लगा। (तालजघ दिव गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग महिसकालग) इस पिशाच की दोनों जघाएँ तालवृक्ष के समान दीर्घ थी। दोनों बाहु मानो आकाश को छूते थे। कज्जल, मूषक, और महिष के समान इस का वर्ण काला था। (भरियमेहवन्न, लम्बोट्ठ निग्गयग्गदत निल्ललिय जमलजुय लजीह, आऊसिय वयणगडदेस, चीण चिपिटनासिय विगय भुग्ग-भग्ग भुमय) जल से भरी हुई घनी भूत मेघघटा की तरह इस का शरीर अत्यत काला था। ओष्ठ बडे लबे थे। आगे के दाँत बाहर निकले हुए थे। इस की जिह्वा के दोनो अग्र भाग एक ही साथ मुख से बाहिर

તેમજ વિશાળ શરીરવાળા પિશાચનુરૂપ પપુ જોવામા આવવા લાગ્યુ (तालजघ दिव गयाहिं बाहाहि मासिमूसग महिचकालग) તે પિશાચની બને સાથળો તાલવૃક્ષની જેમ લાબી હતી બને હાથ જાણે આકાશને સ્પર્શતા હોય મેરા, ઉંદર અને પાડાના જેવો તેનો રગ કાળો હતો

(भरियमेहवन्न, लम्बोट्ठ निग्गयग्गदत निल्ललियजमलजुयलजीह, आऊसियवयणगडदेस, चीणचिपिटनासिय विगयभुग्गभग्गभुभय)

પાણીથી ભરલી સાન્દ્ર મેઘ ઘટાઓની જેમ તેનુ શરીર ઘણુ કાળુ હતુ હોઠ ઘણા લાબા અને નીચે લબાતા હતા આગળના દાત બહાર નીકળી ગયેલા હતા તેની જીભના આગળના બને ટેરવા બેઠી માથે મોથી બહાર નીકળી રહ્યા હતા તેના બને ગાલ મોમા બેસીગયેલા હતા

'ओगाढा' अवगाहिता तीर्णा। ततस्तदनन्तरं खलु तेषाम् अरहन्नकप्रमुखाणां संयात्रा नौवाणिजकाना लवणसमुद्रमनेकानि योजनशतानि अवगाहितानां तीर्णानां सता बहूनि 'उप्पाइयसयाइं' उत्पातशतानि प्रादुर्भूतानि। तान्युत्पादशतानि वर्णयति--

'त जहा' इत्यादि। तद् यथा-अकाले गर्जितं वर्षाकाल-विना मेघध्वनिः, अकाले विद्युत् अकाले 'थणियसद्दे' स्तनितशब्दः मेघस्य गम्भीरध्वनिरभूत् तथा-अभीक्ष्ण=पुनः पुनः आकाशे देवता नृत्यन्ति तथा-एकं च खलु महद् बृहत् पिशाचरूपं पश्यन्ति अरहन्नकप्रमुखाः संयात्रा नौ वाणिजकाः अकालमेघध्वनिं

પહેલે વેગ के साथ ऊर्मियों-महालहरों के तरगो के-छोटी २ लहरों के-माला सहस्र को उल्लघन करती हुई वह नौका कितनेक दिनों के बाद लवण समुद्र में अनेक योजनों तक पहुँच गई। (तएण तेसिं अरहन्नग पामोक्खाणं सजत्तानावा वाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयण सयाइ ओगाढाणं समाणाण बहूइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ) इस के बाद उन सायात्रिक अरहन्नक प्रमुख नौका वणिकों को जब कि वे लवण समुद्र में अनेक सैकडों योजनो को पार कर चुके थे बहुत से सैकड़ो उपद्रव सामने आने लगे।

(त जहा) जैसे- (अकालेगज्जिए, अकाले विज्जुए, अकाले थणियसद्दे, अभिक्खण २ आगासे देवयाओ नच्चति, एग च ण महं पिसायरूव पासति) वर्षा काल के विना ही उस समय मेघध्वनि होने

ખૂબજતીવ્ર વેગે નાનામોટા સેકડો મોજાઓ ને વટાવીને કેટલાક દિવસો બાદ વહાણ લવણસમુદ્રમા ઘણા યોજનો દૂર સુધી પહોચી ગયુ

(तएण तेसिं अरहन्नगपामोक्खाण सजत्तानावा वाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समाण बहूइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ)

ત્યાર બાદ સાયાત્રિક અરહન્નક પ્રમુખ પોતવણિકો લવણ સમુદ્રમા જ્યારે સેકડો યોજનો સુધી દૂર પહોચીગયા ત્યારે સેકડો આફતો તેમની સામે ઝઝૂમવાલાગી (त जहा) જેમ કે

(अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे, अभिक्खण २ आगासे देवयाओ नच्चति, एगच ण महं पिसायरूव पासति)

વર્ષાકાળ હોવા ન છતા મેઘ ગર્જનાઓ થવા માડી, વીજળીઓ ઝબૂકવા લાગી અને મેઘનો ગભિર ધ્વનિ પણ થવા માડયો આકાશમા વારવાર દેવતાઓ નાચતા જોવામા આવવા લાગ્યા

विद्युद्विद्योतन पुनः पुनर्देवनृत्यप्रदर्शनपूर्वकमेक बृहत् पिशाचरूप विलोकयन्ति । स्मेत्यर्थः । कथम्भूत तत् पिशाचरूपमित्याह–' तालजघ ' तालजङ्घ तालवृक्षवद्दीर्घे जङ्घे यस्य तत्तथा, दिव गताभ्या गगनस्पर्शिभ्या बाहुभ्या महादीर्घाभ्यां बाहुभ्या युक्तमित्यर्थः । मषीमूशकमहिषकालक मषी–कज्जल मूषको महिषश्च प्रसिद्धः तद्वत् कालक कृष्णवर्ण यत्तत्तथा, भरियमेहवन्न ' भृतमेघवर्ण = जलपूर्णघनीभूतमेघघटावदतिश्याम, लम्बोष्ठ, निर्गताग्रदन्त निर्गतानि मुखाद्बहिर्भूतानि अग्राणि अग्रभागा येषा ते निर्गताग्रास्तथा भूतादन्ता यस्य तथोक्तस्त, ' निल्लालियजमलजुयलजीह ' निर्लालितयमलयुगलजिह्वम् निर्लालित – मुखाद्बहिष्कृत यमल=सम युगल द्वय जिह्वयो र्येन तत्तथा, 'आऊसियवयणगडदेस' प्रविष्टवदन-

---

लगी, बिजली चमक ने लगी, और मेघ की गभीर ध्वनि भी होने लगी। बार २ आकाश में देवता नाचते हुए दिखलाई पडने लगे ।

तथा विशाल काय पिशाच का रूप भी दृष्टिगोचर होने लगा। (तालजघ दिव गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग महिसकालग) इस पिशाच की दोनों जघाएँ तालवृक्ष के समान दीर्घ थी। दोनों बाहु मानो आकाश को छूते थे। कज्जल, मूषक, और महिष के समान इस का वर्ण काला था। (भरियमेहवन्न, लम्बोट्ठ निग्गयग्गदत निल्लालिय जमलजुय लजीह, आऊसिय वयणगडदेस, चीण चिपिटनासिय विगय भुग्ग भग्ग भुमय) जल से भरी हुई घनी भूत मेघघटा की तरह इस का शरीर अत्यत काला था। ओष्ठ बडे लबे थे। आगे के दाँत बाहर निकले हुए थे। इस की जिह्वा के दोनो अग्र भाग एक ही साथ मुख से बाहिर

તેમજ વિશાળ શરીરવાળા પિશાચનુરૂપ પણ જોવામા આવવા લાગ્યુ (तालजघ दिव गयाहिं बाहाहि मासिमूसग महिसकालग) તે પિશાચની બને જાંઘો તાલવૃક્ષની જેમ લાબી હતી બને હાથ જાણે આકાશને સ્પર્શતા હોય મેશ, ઉંદર અને પાડાના જેવો તેનો રંગ કાળો હતો.

(भरियमेहवन्न, लम्बोट्ठ निग्गयग्गदत निल्लालियजमलजुयलजीह, आऊसियवयणगडदेस, चीणचिपिटनासिय विगयभुग्गभग्गभुमय)

પાણીથી ભરેલી સાન્દ્ર મેઘ ઘટાઓની જેમ તેનુ શરીર ઘણુ કાળુ હતુ હોઠ ઘણા લાબા અને નીચે લબાતા હતા આગળના દાત બહાર નીકળી ગયેલા હતા તેની જીભના આગળના બને ટેરવા બેઠી આથે મોથી બહાર નીકળી રહ્યા હતા તેના બને ગાલ મોમા બેસીગયેલા હતા

गण्डदेश प्रविष्टौ वदने गण्डदेशौ कपोलभागौ यस्य तत्तथा, 'चीणचिपिटनासियं' चीनचिपिटनासिक, चीना=ह्रस्वा चिपिटा च नासिका यस्य तत्तथा, ' विगय भुग्गभग्गभुमय ' विकृतभुग्नभग्नभ्रुवम् विकृते सविकारे भुग्ने भग्ने= अतीववक्रे भ्रुवौ यस्य तत् तथा, खज्जोयगदित्तचक्खुराग ' खद्योतकदीप्तचक्षुराग, खद्योतकवद्दीप्तश्चक्षुरागो लोचनरक्तत्व यस्य तत्तथा, उत्तासणग' उत्त्रासनक भयानक विशालवक्षस्क=विस्तीर्णोरः स्थल, विशालकुक्षि=विस्तीर्णोदरम्, प्रलम्बकुक्षि-दीर्घोदरम्, ' पहसियपयलिय पयडियगत्त ' प्रहसितप्रचलितप्रपतितगात्रम्। प्रहसितानि प्रविकासितानि प्रचलितानि=प्रकम्पितानि प्रपतितानि प्रकर्षेण श्लथीभूतानि गात्राणि यस्य तत्तथा, पणच्चमाण ' प्रनृत्यत् 'अप्फोडत ' आस्फोटयत्, अभिवयत ' अभिव्रजत्, ' अभिगज्जत ' अभिगर्जत्, वहुसो ' अट्टट्टहासे विणिम्मुयत ' बहु

निकल रहे थे ' दोनों कपोल इसके मुख के भीतर घुसे हुए थे-अर्थात् दोनो गाल इस के पिच के हुए थे।

नाक इस की छोटी और चपटी थी। इस की दोनों भौंहें विकृत भुग्न और भग्न थी। अथवा भुग्न भग्न थी अत्यन्त वक्र थी-(खज्जोयगदित्तचक्खुराग, उत्तासणग विसालवच्छ, विसालकुच्छि पलबकुच्छि पहसियपयालिय, पयडियगत्त) इस की आँखों की ललाई खद्योत (आग्या) के समान दीप्त थी, उरस्थल (छाती) इस का भयोत्पादक था, पेट विस्तीर्ण और लबा था। शरीर इस का प्रहसित प्रचलित एव श्लथी भूत ढीला था। यह उस समय, (पणच्चमाण अप्फोडत, अभिवयत अभिगज्जत, वहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयत) नृत्य कर रहा था। अपनी दोनो भुजाओं का आस्फालन (बजाता) कर रहा था। ऐसा ज्ञात होता था कि मानों गर्जना करता हुआ समक्ष (सामने) ही

તેનુ નાક નાનુ અને ચપટુ હતુ તેની બને ભમ્મરો વિકૃત બડબચડી અને ભગ્ન હતી અથવા ભુગ્નભગ્ન અને વક્ર-ત્રાસી-હતી

(खज्जोयगदित्तचक्खुराग उत्तासणग विसालवच्छ, विसालकुच्छि पलब कुच्छि, पहसिय पयालिय, पयडियगत्त)

તેની આખોની રતાશ આગિયા જેવી ચમકતી હતી તેનુ વક્ષસ્થળ ભયકર હતુ પેટ વિશાળ અને લાબુ હતુ તેનુ શરીર પ્રહસિત, પ્રચલિત અને શ્લથી ભૂત એટલે કે લબડી ગયેલુ હતુ ત્યારે

(पणच्चमाण अप्फोडत अभिवयत, अभिगज्जत, वहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयत)

તે નાચી રહ્યો હતો પોતાના બને ભુજાઓનુ તે આસ્ફાલન (અફળાવવુ)

शोऽट्टहास विनिर्मुञ्चत्, ' नीलुप्पलगवलगुलिय अयसिकुसुमप्पगास ' नीलोत्पल गवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाश=नीलोत्पल=नीलकमल, गवल=महिशशृङ्ग, गुलिका =कृष्णवर्णवस्तुविशेषः प्रसिद्धः, अतसीकुसुमम्, अतसी=अलसीनाम्नाप्रसिद्धो धान्य-विशेषस्तस्य कुसुम=पुष्प, तद्वत् प्रकाशो वर्णो यस्य स तथा तम्, नीलकमलादि-सदृशवर्णमित्यर्थः, खुर धार क्षुरवार क्षुरस्येव धारा यस्य स तत्तथा तम् अतितीक्ष्ण धारमित्यर्थः, असिं = कृपाण, गृहीत्वा, अभिमुहमावयमाण ' अभिमुखमापतत् पश्यन्ति सर्वेऽपि सायात्रिकाः अरहन्नकप्रमुखा अवलोकन्ते स्म ॥ सू० १९ ॥

मूलम्–तएणं ते अरहण्णगवज्जा सजत्ताणावावाणियगा एगं च णं महं तालपिसायं पासंति तालजंघं दिवं गायाहं वाहाहिं फुट्टसिरं भमरणिगरवरमासरासिमहिसकालगं भरियमेहवन्नं सुप्पणहं फालसरिसजीहं लंबोट्ठं धवलवट्टअसिलिट्ठं तिक्ख-थिरपीणकुडिलदाढोवगूढवयणं विकोसियधारासिजुयलसमस-

आ रहा है। बार बार तो यह अट्टहास करता था। (नीलुप्पलगवल गुलिय अयसि कुसुमप्पगास खुरधार असि गहाय अभिमुह मावय माण पासति) नीलकमल, गवल–महिष शृंग, गुलिका–कृष्ण वर्णक विशेष, अलसी पुष्प, के समान इसका सारा शरीर अत्यत काला था।

यह एक तलवार लिये हुए था, जिस की धारा क्षुरा की धारा के समान तीक्ष्ण थी। उन अरहन्नक प्रमुख सायात्रिको ने उसे इस तरह से देखा कि वह उस तलवार को लेकर हम लोगों की ओर आरहा है। सूत्र " २० "

કરી રહ્યો હતો. તેને જોઇને એમજ લાગતુ હતુ કે તે જાણે ગર્જના કરતો સામે આવી રહ્યો હોય તે વાર વાર અટ્ટહાસ "ખડખડાટ કરીને હસવુ" કરતો હતો.

(नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगास खुरधार असिं गहाय अभिमुह मावयमाण पासति)

નીલકમળ, ગવલ, કપડાના શુલિકા–કૃષ્ણવર્ણક વિશેષ, અળસીના પુષ્પની જેમ તેનુ શરીર ઘણુ કાળુ હતુ

તેના હાથમા ધરાનીધાર જેવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી તલવાર હતી અરહન્નક પ્રમુખ સાયાત્રિકોને એમ થયુ કે તે પિશાચ હાથમા તલવાર લઇને તેમની તરફ જ ધસી આવી રહ્યો છે ॥ સૂત્ર " ૨૦ " ॥

गण्डदेश प्रविष्टौ वदने गण्डदेशौ कपोलभागौ यस्य तत्तथा, 'चीणचिपिटनासियं' चीनचिपिटनासिक, चीना=हस्वा चिपिटा च नासिका यस्य तत्तथा, 'विगय भुग्गभग्गभुमय' विकृतभुग्नभग्नभ्रुवम् विकृते सविकारे भुग्ने भग्ने= अतीववक्रे भ्रुवौ यस्य तत् तथा, खज्जोयगदिन्नचक्खुराग' खद्योतकदीप्तचक्षुराग, खद्योतकवद्दीप्तचक्षुरागो लोचनरक्तत्व यस्य तत्तथा, उत्तासणग' उत्त्रासनक भयानक विसालवक्षस्क=विस्तीर्णोरः स्थल, विसालकुक्षि=विस्तीर्णोदरम्, पलम्बकुक्षि-दीर्घोदरम्, 'पहसियपयलिय पयडियगत्त 'प्रहसितप्रचलितप्रपतितगात्रम्। प्रहसितानि प्रविकासितानि प्रचलितानि=प्रकम्पितानि प्रपतितानि प्रकर्षेण श्लथीभूतानि गात्राणि यस्य तत्तथा, पणच्चमाण' प्रनृत्यत् 'अप्फोडत' आस्फोटयत्, अभिवयत' अभिव्रजत्, 'अभिगज्जत' अभिगर्जत्, बहुसो' अट्टट्टहासे विणिम्मुयत' बहु

निकल रहे थे। दोनों कपोल इसके मुख के भीतर घुसे हुए थे–अर्थात् दोनों गाल इस के पिच के हुए थे।

नाक इस की छोटी और चपटी थी। इस की दोनों भौंहें विकृत भुग्न और भग्न थी। अथवा भुग्न भग्न थी अत्यन्त वक्र थी–(खज्जोय गदित्तचक्खुराग, उत्तासणग विसालवच्छ, विसालकुच्छि पलबकुच्छि पहसियपयालिय, पयडियगत्त) इस की आँखों की ललाई खद्योत (आग्या) के समान दीप्त थी, उरस्थल (छाती) इस का भयोत्पादक था, पेट विस्तीर्ण और लघा था। शरीर इस का प्रहसित प्रचलित एव श्लथी भूत ढीला था। यह उस समय, (पणच्चमाण अप्फोडत, अभिवयत अभिगज्जत, बहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयत) नृत्य कर रहा था।

अपनी दोनो भुजाओं का आस्फालन (बजाता) कर रहा था। ऐसा ज्ञात होता था कि मानो गर्जना करता हुआ समक्ष (सामने) ही

તેનુ નાક નાનુ અને ચપટુ હતુ તેની બને ભમ્મરો વિકૃત અડબચડી અને ભગ્ન હતી અથવા ભુગ્નભગ્ન અને વક્ર–ત્રાસી–હતી

(खज्जोयगदित्तचक्खुराग उत्तासणग विसालवच्छ, विसालकुच्छि पलब कुच्छि, पहसिय पयालिय, पयडियगत्त)

તેની આખોની રતાશ આગિયા જેવી ચમકતી હતી તેનુ વક્ષસ્થળ ભયકર હતુ પેટ વિશાળ અને લાબુ હતુ તેનુ શરીર પ્રહસિત, પ્રચલિત અને શ્લથી ભૂત એટલે કે લબડી ગયેલુ હતુ ત્યારે

(पणच्चमाण अप्फोडत अभिवयत, अभिगज्जत, बहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयत)

તે નાચી રહ્યો હતો પોતાના બને ભુજાઓનુ તે આસ્ફાલન (અફળાવવુ)

टीका-सर्वैः नौकास्थैः सायात्रिकैः पिशाचरूप दृष्ट, तत्रारहन्नकश्रावकवर्ज्यै र्यत्कृत तद् दर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूप सविशेष वर्णयन्नाह-'तएण' इत्यादि।

ततस्तदनन्तर खलु तेऽरहन्नकवर्ज्या सयात्रानौर्वाणिजकाः वक्ष्यमाणविशे षणक पिशाचस्वरूप पश्यन्ति, दृष्ट्वा च भीतास्त्रस्ता बहूनामिन्द्रादीना बहूनि मान्यता शतानि कुर्वन्तस्तिष्ठन्तीति वाक्यार्थः। कीदृश पिशाचस्वरूप पश्यन्ती त्याह-' एग च ण महं ' इत्यादि। एक च खलु महान्त तालपिशाचम्=अतिदी-र्घत्वेन तालवृक्षकारः पिशाचस्तालपिशाचस्तम् पश्यन्ति, कथम्भूत तालपिशाच मित्याह-' तालजघ ' इति तालवृक्षवदीर्घे जङ्घे यस्य स तालजङ्घस्तम्, दिव गताभ्या=गगनस्पर्शिभ्या बाहुभ्या युक्त, स्फुट शिरस=स्फुट स्फुटित बन्धनरहि-तत्वाद् विकीर्ण शिर' शिरोजातत्वाद् केशजाल यस्य स तथा त, 'भमरणिगरवरमा-

---

' तएण ते अरहण्णगवज्ज ' इत्यादि।

अब सूत्रकार इसी पिशाच के स्वरूप का पुनः विशेष वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि जितने भी उस नौका मे सायात्रिक थे उन सबने एक अरहन्नक श्रावक के विना उस विकराल पिशा च को देखकर क्या २ किया उनकी कैसी स्थिति हुई इस बात को कहने के लिये पहिले वे उक्त पिशाच के स्वरूप को विशेष रूप से पुनः कहते है-

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (अरहन्नगवज्जा) एक अरहन्नक श्रावक के सिवाय (सजत्ताणावा वाणियगा) उन समस्त सांयात्रिक पोत वणिक् जनो ने (एग च ण महं तालपिसाय पासति) एक बडा ताल वृक्ष के जैसा पिशाच ताल वृक्ष के समान लबी २ जघाओं वाला था।

इस के दोनों बाहु मानो आकाश को स्पर्श कर रहे थे। इस के

' तएण ते अरहण्णगवज्जा ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—સૂત્રકાર અહીં ફરી પિશાચનુ સવિશેષવર્ણન કરવાની ઈચ્છાથી કહે છે કે પિશાચને જોઈને અરહન્નક શ્રાવક સિવાયના બાકીના બીજા બધા સાયત્રિકોની શુ સ્થિતિ થઇ અને તે વિકરાળ પિશાચનુ રૌદ્ર સ્વરૂપ જોઈને તેઓએ શુ શુ કર્યુ એનુ વર્ણન કરતા પહેલા તે પિશાચના સ્વરૂપનુ વિશેષ રૂપથી વર્ણન હુ અહીં કરૂ છુ—

" तएण " ત્યાર બાદ " अरहन्नगवरज्जा " અરહન્નક શ્રાવકના સિવાય " सजत्ताणावा वाणियगा " બધા સાયાત્રિક પોતવણિક જનો એ " एग च ण महं तालपिसाय पासति " મોટા તાલવૃક્ષ જેવો અને તાલ વૃક્ષ જેવી મોટી સાથળો વાળો પિશાચ જોયો

તેના બને હાથ આકાશને સ્પર્શતા હતા છૂટા પડેલા તેના માથાના વાળ

रिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरफुरंतानिल्लालियग्गजीहं अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्ततालुय हिंगुलुयसगब्भकदरविलंवअंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयणं आऊसियअक्खचम्मउइट्ठगंडदेस चोणचिपिडवंकभग्गणासं रोसागयधमधमेंतमारुतनिट्ठुरखरफरुसझुसिर ओभुग्गणासिय-पुड घाडुब्भडरइयभीसणमुह उद्धमुहकन्नसक्कुलिय महंत विगयलोमसखालगलवतचलियकन्न पिंगलदिप्पतलोयणं भिउडितडियनिडाल नरसिरमालपरिणद्धचिंधं विचित्तगोणस-सुवद्धपरिकर अवहोलत पुप्फुयायतसप्पविच्छुय गोधदरनउल-सरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियागं भोगकूरकण्हसप्पधमधमें-तलवतकन्नपूर मज्जारसियाललइयखध दित्तवुघुयंत घूयकय कुंमलसिरं घटारवेण भीम भयकरं कायरजणहियय फोडणं दित्तमट्टट्टहासं विणिम्मुयंत वसारुहिरपूयमसमलमलिणपोच्चड-तणुं उत्तासणय विसालवच्छ पेच्छता भिन्नणहरोमसुहनयण कन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं सरसरुहिरगयचम्मवितत ऊस वियबाहुजुयल ताहि य खरफरुसअसिणिद्ध अणिट्ठ दित्त असुभ अप्पिय अमणुन्न अक्कतवग्गुहि य तज्जयत पासति, त ताल-पिसायरूव एज्जमाणं पासति, पासित्ता भीया० संजायभय अन्नमन्नस्स कायं समतुरगेमाणा२ बहूणं इदाण य खदाण य रुद्दसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकि-रियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा२ चिट्ठति ॥१॥

टीका-सर्वैः नौकास्थैः सायात्रिकैः पिशाचरूप दृष्ट, तत्रारहन्नकश्रावकवर्ज्यैर्यत्कृत तद् दर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूप सविशेष वर्णयन्नाह-'तएण' इत्यादि।

ततस्तदनन्तर खलु तेऽरहन्नकवर्ज्या सयात्रानौर्वाणिजकाः वक्ष्यमाणविशेषणक पिशाचस्वरूप पश्यन्ति, दृष्ट्वा च भीतास्त्रस्ता बहूनामिन्द्रादीना बहूनि मान्यता शतानि कुर्वन्तस्तिष्ठन्तीति वाक्यार्थः। कीदृश पिशाचस्वरूप पश्यन्तीत्याह-'एग च ण महं' इत्यादि। एक च खलु महान्त तालपिशाचम्=अतिदीर्घत्वेन तालवृक्षकारः पिशाचस्तालपिशाचस्तम् पश्यन्ति, कथम्भूत तालपिशाचमित्याह-'तालजघ' इति तालवृक्षवद्दीर्घे जङ्घे यस्य स तालजङ्घस्तम्, दिवं गताभ्या=गगनस्पर्शिभ्या बाहुभ्या युक्त, स्फुट शिरस=स्फुट स्फुटित बन्धनरहितत्वाद् विकीर्णं शिरः शिरोजातत्वाद् केशजाल यस्य स तथा त, 'भमरणिगरवरमा

'तएण ते अरहण्णगवज्ज' इत्यादि।

अब सूत्रकार इसी पिशाच के स्वरूप का पुनः विशेष वर्णन करते हुए कह रहे है कि जितने भी उस नौका में सांयात्रिक थे उन सबने एक अरहन्नक श्रावक के विना उस विकराल पिशा च को देखकर क्या २ किया उनकी कैसी स्थिति हुई इस बात को कहने के लिये पहिले वे उक्त पिशाच के स्वरूप को विशेष रूप से पुनः कहते है-

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (अरहन्नगवज्जा) एक अरहन्नक श्रावक के सिवाय (सजत्ताणावा वाणियगा) उन समस्त सांयात्रिक पोत वणिक् जनों ने (एग च ण महं तालपिसाय पासति) एक बडा ताल वृक्ष के जैसा पिशाच ताल वृक्ष के समान लबी २ जघाओं वाला था।

इस के दोनों बाहु मानो आकाश को स्पर्श कर रहे थे। इस के

'तएण ते अरहण्णगवज्जा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—સૂત્રકાર અહીં ફરી પિશાચનુ સવિશેષવર્ણન કરવાની ઇચ્છાથી કહે છે કે પિશાચને જોઇને અરહન્નક શ્રાવક સિવાયના બાકીના બીજા બધા સાયત્રિકોની શુ સ્થિતિ થઇ અને તે વિકરાળ પિશાચનુ રૌદ્ર સ્વરૂપ જોઇને તેઓએ શુ શુ કર્યુ એનુ વર્ણન કરતા પહેલા તે પિશાચના સ્વરૂપનુ વિશેષ રૂપથી વર્ણન હુ અહીં કરૂ છુ-

"तएण" ત્યાર બાદ "अरहन्नगवज्जा" અરહન્નક શ્રાવકના સિવાય "सजत्ताणावा वाणियगा" બધા સાયાત્રિક પોતવણિક જનો એ "एग च ण महं तालपिसाय पासति" મોટા તાલવૃક્ષ જેવો અને તાલ વૃક્ષ જેવી મોટી સાથળો વાળો પિશાચ જોયો

તેના બને હાથ આકાશને સ્પર્શતા હતા છૂટા પડેલા તેના માથાના વાળ

रिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरफुरतनिट्ठालियग्गजीहं अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्ततालुयं हिंयु-लुयसगब्भकंदरविलवअंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयणं आऊसियअक्खचम्मउइट्ठगंडदेस चीणचिपिडवंकभग्गणासं रोसागयधमधमेंतमारुतनिट्टुरखरफरुसझुसिर ओभुग्गणासिय-पुड घाडुब्भडरइयभीसणमुह उद्धमुहकन्नसक्कुलिय महंत विगयलोमसखालगलवतचलियकन्न पिंगलदिप्पतलोयणं भिउडितडियनिडाल नरसिरमालपरिणद्धचिंध विचित्तगोणस-सुवद्धपरिकर अवहोलत पुप्फुयायतसप्पविच्छुय गोधदरनउल-सरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियाग भोगकूरकण्हसप्पधमधमें-तलवतकन्नपूर मज्जारसियाललइयखंध दित्तवुघुयत घूयकय-कुंमलसिरं घंटारवेण भीम भयंकर कायरजणहिययफोडणं दित्तमट्टहास विणिम्मुयंत वसारुहिरपूयमंसमलमलिणपोच्चड-तणुं उत्तासणय विसालवच्छ पेच्छतं भिन्नणहरोममुहनयण कन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं सरसरुहिरगयचम्मवितततऊस वियबाहुजुयलं ताहि य खरफरुसअसिणिद्धअणिट्ठ दित्त असुभ अप्पिय अमणुन्न अक्कंतवग्गुहि य तज्जयत पासति, त ताल-पिसायरूव एज्जमाणं पासति, पासित्ता भीया० सजायभय अन्नमन्नस्स काय समतुरगेमाणा२ वहूणं इदाण य खदाण य रुद्दसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकि-रियाण य वहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा२ चिट्ठति ॥१॥

धारौ तयोरस्योः खड्गयोर्युगल=द्वय तेन समसदृश्यौ-अतितुल्ये तनुके-प्रतले, चञ्चल यथाभवति, यथाऽविश्रान्त गलन्त्यौ=रसातिलालसत्वात् लालाविन्दूनधः पातयन्त्यौ, अतएव रसलोले-रसास्वादानुरक्ते, चपले चञ्चले, अतएव फुरफुरायमाणे-प्रकम्पमाने, निर्लालिते मुखाद्वहिष्कृते, अग्रजिह्वे-अग्रभूतजिह्वे जिह्वाग्रे येन स तथा तम् अतिदीर्घजिह्वमित्यर्थः तथा-' अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छ लालपगलंतरत्ततालुय ' प्रसारितमहाविकृतवीभत्सलालाप्रगलद्रक्ततालुकम्, प्रसारित मुखप्रसारणेन दृश्यमान महाविकृत वीभत्स लालाभिः प्रगलद्रक्त च तालु यस्य स तथा त मुखप्रसारणप्रकटीभूतमहाविकृतलालापूर्णरक्ततालुवन्तमित्यर्थः तथा-' हिंगुलुयसगब्भकदरविलवअजणगिरिस्स ' हिङ्गुलुकसगर्भकन्दरविलामिवाञ्जनगिरेः-हिङ्लकेन रक्तवर्णकद्रव्यविशेषेण सगर्भ=सान्तराल कन्दररूप विलमिव अञ्जनगिरेः=कज्जलपर्वतस्य मुखप्रसारेण रक्तातिदीर्घ जिह्वा तालु युक्तमुख विवरस्य हिङ्गुलक पुञ्जसम्भृतकन्दरसादृश्यादति कृष्णवर्णमहाविशालशरीरस्याञ-

---

भाग म्यान से निकाली हुई तलवार के समान तीक्ष्ण थी। पतलि थी। चचल थी। रस में अतिलालसावाले होने के कारण उन से निरन्तर लार बह रही थी। रस के आस्वादन मे वे अनुरक्त थे। चचल होने के कारण वे कप रहे थे। और मुख से बाहिर निकले हुए थे। तात्पर्य-इस की जीभ बहुत लबी थी।

(अवयच्छिय महल्लविगयवीभच्छलालपगलतरत्ततालूय, हिंगुलुय सगब्भकदरविलवअजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलतवयण) तालु इस का मुख के फाडते समय दिखलाई पडता था। महा विकराल था। वीभत्स था। लार से गीला हो रहा था और लाल था। इसका मुख अजनगिरि (काला पर्वत) के हिंगुलक से भरे हुए कदरा रूप बिल के

તેની જીભના બને આગળના ટેરવા મ્યાનમાથી બહાર કાઢેલી તલવારની જેમ તીક્ષ્ણ હતા, પાતળા હતા ચચળ હતા અને વિષયના રસોને ગ્રહણ કરવા માટે અત્યત લોલુપ તેમજ આતુર હોવા બદલ તેમાથી સતત લાળ ટપકયા જ કરતી હતી તેઓ રસાસ્વાદમા અનુરક્ત હતા ચચળ હોવાને લીધે તેઓ ધ્રૂજી રહ્યા હતા, અને મોથી બહાર નીકળી રહ્યા હતા મતલબ એ છે કે તેની જીભ ખૂબ લાબી હતી

(अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलतरत्ततालूय, हिंगुलुयसगब्भ कदरविलवअजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलतवयण)

મો પહોળુ કરતી વખતે તેનુ તાળવુ દેખાતુ હતુ તે બીભત્સ હતુ લાળથીભીનુ થઈ રહ્યુ હતુ અને લાલચોળ હતું તેનુ મો અજનગિરિ (કાળા પર્વત) ના હિંગળોથી ભરેલી કદરાના દર જેવુ હતુ તે બહુ વિશાળ અને

सरासिमहिसकालगं ' भ्रमरनिकरवरमापराशिमहिषकाऽऽक=तत्र भ्रमरनिकर इव= भ्रमरसमूह इव वरमापराशिरिव, महिष इव च यः कालकः=कृष्णवर्णकस्तत, 'भरिय मेहवन्न ' भृतमेघवर्णं=जलपूर्णमेघघटावदतिनीलम्, ' सुप्पणह ' शूर्पनख शूर्पवत् नखा यस्य स शूर्पनखस्त, फालसदृशजिह्व, फालसिद्धाग्नौ सतापित योऽयम्, तत्सादृश्य च वर्णदैर्घ्यदीप्त्यादिभिरिति, लम्बोष्ठ=दीर्घौष्ठ, ' धवलवट्ट आसिलिट्ठ तिक्खथिरपीणकुडिलदाढोवगूढवयण ' धवलवृत्ताश्लिष्टतीक्ष्णस्थिरपीनकुटिलद ष्ट्रोपगूढवदन ' धवलाभिः=श्वेताभिः, वृत्ताभिर्वर्तुलाभिरश्लिष्टाभिर्विरलाभिः ती क्ष्णाभिः स्थिराभिर्दृढाभिः उपचितत्वेन पीनाभि =स्थूलाभिः ऋजुतया कुटिलाभिश्च दंष्ट्राभिरुपगूढ व्याप्त वदन यस्य स तथा तम् अतिविशालदंष्ट्रमित्यर्थः, ' विकोसियधारासिजुयलसमसरिसतणुय चचलगलतरसलोलचवलफुरफुरेंतनिल्लालियग्ग-जीह' विकोशितधारासियुगल समसदृशतनुकचञ्चलगलद्रसलोलचवलफुरफुरायमाण निर्लालिताग्रजिह्वम्, तत्र विकोशिता=अपनीतावरणा धारा ययोस्तौ विकोशित

शिर के बाल बधन रहित होने से इधर उधर बिखरे हुए थे। इस का वर्णभ्रमर समूह उडद की राशि और महिष के शृग जैसा काला था। (भरिय मेहवन्न) जल से भरी हुई मेघ घटा के समान अत्यन्त श्याम था। (सुप्पणह, फाल सरिस जीह लंबोट्ठ, धवलवट्ट आसिलिट्ठ तिक्ख थिर पीणकुडिलदाढोवगूढवयणं) नख इस के सूप (सूपड़ा) जैसे थे। जिह्वा इस की अग्नि में लाल किये गये फाल के समान थी। ओष्ठ लंबे २ थे। इसका मुख श्वेत, गोल, २ विरली, नुकीली, स्थिर-दृढ-स्थूल और कुटिल टेढी २ दाडों से युक्त था।

(विकोसिय धारासिजुयल समसरिसतणुय चचल गलत रस लोल चवलफुरफुरेंत निल्लालियग्गजीह) इस की जिह्वा दोनों अग्र

આમતેમ વિખેરાઈ ગયા હતા તેનોરંગ ભમરાઓના ટોળા, અડદનો ઢગલો અને પાડાના શિંગડા જેવો કાળો હતો "भरिय मेहवन्न" પાણીથી ભરેલી મેઘની ઘટાઓની જેમ ખૂબજ કાળો હતો

(सुप्पणह, फालसरिसजीह लंबोट्ठ, धवलवट्ट, आसिलिट्ठ, तिक्खथिरपीण कुडिलदाढोवगूढवयणं)

તેના નખો સૂપડા જેવા હતા તેની જીભ અગ્નિમા લાલચોળ થઈ ગયેલી હળની ડોસ જેવી હતી તેના હોઠ લાબા હતા તેનુ મો સફેદ ગોળ મટોળ અણિયાળી, મજબૂત મોટી તેમજ કુટિલ ત્રાસી દાઢો વાળુ હતુ

(विकोसिय धारासियजुयलसमसरिसतणुय चचलगलतरसलोलचवलफुर फुरेंत निल्लालियग्गजीह)

धारौ तयोरस्योः खड्गयोर्युगल=द्वय तेन समसदृश्यौ-अतितुल्ये तनुके-प्रतले, चञ्चल यथाभवति, यथाऽविश्रान्त गलन्त्यौ=रसातिलालसत्वात् लालाविन्दूनधः पातयन्त्यो, अतएव रसलोले-रसास्वादानुरक्ते, चपले चञ्चले, अतएव फुरफुरायमाणे-प्रकम्पमाने, निर्लालिते मुखाद्वहिष्कृते, अग्रजिह्वे-अग्रभूतजिह्वे जिह्वाग्रे येन स तथा तम् अतिदीर्घजिह्वमित्यर्थः तथा-' अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्ततालुय ' प्रसारितमहाविकृतवीभत्सलालाप्रगलद्रक्ततालुकम्, प्रसारित मुखप्रसारणेन दृश्यमान महाविकृत वीभत्स लालाभिः प्रगलद्रक्त च तालु यस्य स तथा त मुखप्रसारणप्रकटीभूतमहाविकृतलालापूर्णरक्ततालुवन्तमित्यर्थः तथा-' हिंगुलुयसगब्भकंदरविलवअंजणगिरिस्स ' हिङ्गुलुकसगर्भकन्दरविलामिवाञ्जनगिरेः-हिङ्गलकेन रक्तवर्णकद्रव्यविशेषेण सगर्भं=सान्तराल कन्दररूप विलमिव अञ्जनगिरेः=कज्जलपर्वतस्य मुखप्रसारेण रक्तातिदीर्घ जिह्वा तालु युक्तमुख विवरस्य हिङ्गुलक पुञ्जसम्भृतकन्दरसादृश्यादति कृष्णवर्णमहाविशालशरीरस्याञ-

---

भाग म्यान से निकाली हुई तलवार के समान तीक्ष्ण थी। पतलि थी। चचल थी। रस मे अतिलालसावाले होने के कारण उन से निरन्तर लार वह रही थी। रस के आस्वादन मे वे अनुरक्त थे। चचल होने के कारण वे कप रहे थे। और मुख से बाहिर निकले हुए थे। तात्पर्य-इस की जीभ बहुत लबी थी।

(अवयच्छिय महल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्ततालूय, हिंगुलुयसगब्भकंदरविलवअंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयण) तालु इस का मुख के फाडते समय दिखलाई पडता था। महा विकराल था। बीभत्स था। लार से गीला हो रहा था और लाल था। इसका मुख अजनगिरि (काला पर्वत) के हिंगुलक से भरे हुए कदरा रूप बिल के

તેની જીભના ખાને આગળના ટેરવા ખ્યાનમાથી બહાર કાઢેલી તલવારની જેમ તીક્ષ્ણ હતા, પાતળા હતા ચચળ હતા અને વિષયના રસોને ગ્રહણ કરવા માટે અત્યત લોલુપ તેમજ આતુર હોવા બદલ તેમાથી સતત લાળ ટપકયા જ કરતી હતી તેઓ રસાસ્વાદમા અનુરક્ત હતા ચચળ હોવાને લીધે તેઓ ધ્રૂજી રહ્યા હતા, અને મોથી બહાર નીકળી રહ્યા હતા મતલબ એ છે કે તેની જીભ ખૂબ લાબી હતી

(अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्ततालूय, हिंगुलुयसगब्भकंदरविलवअंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयण)

મો પહોળુ કરતી વખતે તેનુ તાળવુ દેખાતુ હતુ તે બીભત્સ હતુ લાળથીભીનુ થઈ ગયુ હતુ અને લાલચોળ હતું તેનુ મો અજનગિરિ (કાળા પર્વત) ના હિંગળોથી ભરેલી કદરાના દર જેવું હતુ તે બહુ વિશાળ અને

नगिरिसाम्पाद् अञ्जनगिरः कन्दरमिव तन्मुखं प्रतिभातीतिभावः । ' अग्गिजालुग्गिलतवयण ' अग्निज्वालोद्गिरद् वदनम् अग्निज्वाला उद्गिरद्=बहिष्कुर्वद्=वदन मुख यस्य स तथा तम्, यस्य मुखाद् अग्निज्वालानिस्सरति तथाविधमित्यर्थः, ' आऊसिय अक्खचम्मउट्ठगडदेस ' आयुक्षितासचर्मापकृष्ट गण्डदेशम्-आयूषित=वलियुक्तम् यदक्षचर्म-शुष्को जलाकर्षण कोशस्तद्वदपकृष्टौ=अन्त' प्रविष्टौ गण्डदेशौ यस्य स तथा तम्, ' चीणचिपिडवक्कभग्गणास ' चीनचिपिटवक्रभग्ननास=चीना=ह्रस्वा, चिपिटा=निम्ना, वक्रा=कुटिला, भग्ना=भग्नेव अयोघनोपरिक्षुण्णेन मूतेव नासा यस्य स तथा त, चिपिटनासिकावन्तमित्यर्थ' ' रोसागयधमधमेंत मारुतनिट्ठुरखरफरुसझुसिर ओभुग्गणासियपुड ' रोषागतधमधमायमानमारुतनि

समान था। यह स्वय अति विशाल और अत्यत काले वर्ण का था इस लिये अजनगिरि के जैसा था-तथा इस की जिह्वा और तालुये दोनों अतिरक्त थे इस लिये वे हिंगुल के समान लाल थे।

इसलिये सूत्रकार ने उस के मुख को अजनगिरि की हिंगुलक से भरी हुई कदरा से उपमित किया है। इस के मुख से अत्यन्त लाल जिह्वा और तालु वाला होने के कारण ऐसा ज्ञात होता था कि मानो अग्नि की ज्वाला ही बाहर निकल रही है। (आऊसियअक्ख चम्म उइट्ठगडदेस, चीणचिपिडवक्कभग्गणास रोसागयधमधमेतमारुत निट्ठुर खरफरुसझुसिरओभुग्गणासियपुग्गड, घाडुब्भडरइयभीसणमुह) इस के दोनों कपोल (गाल) पानी को खीच ने वाले शुष्क वलि युक्त चरस के समान भीतर को घुसे हुए थे। नासिका इस की ह्रस्व चिपटी थी। टेडी इस नासि का के छेदो से जो श्वासोच्छ्वास निकलता

અતિશય કાળા રંગનુ હતુ એટલા માટે જ તે અજનગિરિ જેવુ હતુ તેની જીભ અને તાળવુ બન્ને ખૂબજ લાલ હતા એથી તેઓ હિંગળોક જેવા લાલ હતા

સૂત્રકારે અજનગિરિની હિંગળોકથી ભરેલી કદરાની તેના મોની જે ઉપમા આપી છે તેની પાછળ એજ કારણ છે તેનુ તાળવુ અને જીભ ખૂબજ લાલ હોવાથી એમ લાગતુ હતુ કે જાણે તેના મોમાથી અગ્નિની જવાળાઓ બહારનીકળી રહી હોય

(आऊसिय अक्ख चम्म उइट्ठगडदेस चीण चिपिडवक्क भग्गणास रोसागय धम मेत मारुत निट्ठुर खर फरुस झुसिरओ भुग्गणासियपुड घाडुब्भडरइयभीसणमुह

તેના બને ગાલ કોસની જેમ કરચલીયેવાળા જેમ મોમા પેસી ગયેલા હતા નાક તેનુ નાનુ અને ચપટુ હતુ ત્રાસા નાકના છિદ્રોથી શ્વાસોચ્છવાસ

ष्ठुरखरपरुषशुषिरावभुग्ननासिकापुटम् रोषात् क्रोधादिवागतः मत्वलतया धमधमायमानः धमधमेतिशब्दं कुर्वन् मारुतो=वायुनिष्ठुरस्तीव्रः खरपरुषः=अतिकर्कशः परमदुःसहः, शुषिरयो ≈रन्ध्रयोर्यस्य तत्तथा, तदेव भूतम्–अवभुग्न–वक्रं नासिकापुटं यस्य तथा तम् भस्त्रावद्धमधमायमानश्वासोच्छ्वासपूर्णवक्रनासिकायुक्तमित्यर्थः'घाडुब्भडरइयभीसणमुह ' घाटोद्भटरचितभीषणमुख=तत्र घाटाभ्यां शिरोऽवयवविशेषाभ्याम् उद्भट विकराल दुर्दर्श रचितम् अतएव भीषण भयकर, मुख यस्य स तथा त विकृतभयानकमुखयुक्तम् ' उद्धमुहकन्नसक्कुलिय ' ऊर्ध्वमुखकर्णशष्कुलीकम्= ऊर्ध्वमुखे कर्णशष्कुल्यौ कर्णपुटौ यस्य स तम्। तथा–'महतविगयलोमसखालग्गलबतचलियकन्न ' महाविकृतलोमशङ्खालग्नलम्बमानचलितकर्णम्, महान्ति विकृतानि असुन्दराणि लोमानि ययोस्तौ महाविकृतलोमानौ, तथा–तौ च शङ्खालग्नौ=शङ्ख = अक्षिप्रान्तभागस्तत्रालग्नौ=सलग्नौ सस्पर्शिनौ लम्बमानौ च चलितौ=चञ्चलौ च कर्णौ यस्य स तथा तम्, 'पिंगलदिप्पतलोयण' पिङ्गलदीप्यमानलोचन=पिङ्गले कपिले,

था वह ऐसा मालूम देता था कि मानों बडे क्रोध से आ रहा है–और इसी लिये वायु भरते समय भस्त्रा (धमनी) से जैसा धम २ शब्द होते है उसी प्रकार का उस से भी धम धम ऐसा शब्द होता रहता था। वह तीव्र या अतिकर्कश या कठोर था। दुःसह था। उस का मुख शिर के अवयव विशेषो ने ऐसा ही दुर्दर्श बनाया था कि जिस से वह बड़ा भयकर लगता था।

(उद्धमुहकन्नसक्कुलिय) इस के दोनों कर्णपुट ऊँचे उठे हुए थे। (महतविगयलोमसखालग्गलबतचलियकन्न) इन दोनों कानों के रोम इस के महा विकराल थे शख अक्षि प्रान्त भाग तक ये दोनों कान फैले हुए थे। इसीलिये ये बडे लबे थे और चचल थे।

નીકળતો હતો તે એમ જણાતો હતો કે જાણે બહુ ક્રોધમા ભરાઇને તે સામે ધસી આવતો હોય, એથી જ જ્યારે તે શ્વાસ લેતો હતો ત્યારે ભસ્ત્રા (ધમણ) માથી જેમ ' ધમ ' ધમ શબ્દ થતો રહે છે તેવો જ ધ્વનિ થયા હતો તે તીવ્ર, કર્કશ કઠોર અને દુસહ હતો તેના મોના કદ રૂપા અવયવોથી તે દુર્દર્શ અને મહા ભયકર લાગતો હતો

(उद्धमुहकन्नसक्कुलिय) તેની બને તરફની કાનપટ્ટી ઉચે ઉપસેલી હતી (महतविगयलोमसखालग्गलबतचलियकन्न) બને કાન પરના રુવાટા મહાવિકરાળ હતા આખના ખૂણાઓસુધી તેના બને કાન ફેલાયેલા હતા એટલા માટે જ એઓ લાબા અને ચચળ હતા

नगिरिसाम्पाद् अञ्जनगिरेः कन्दरमिव तन्मुखं प्रतिभातीतिभाव । ' अग्गिजालुग्गिलतवयण ' अग्निज्वालोद्गिरद् वदनम् अग्निज्वाला उद्गिरद्=बहिष्कुर्वद्=वदन मुख यस्य स तथा तम् , यस्य मुखाद् अग्निज्वाला निस्सरति तथाविधमित्यर्थः, ' आऊसिय अक्खचम्मउइट्ठगडदेस ' आयुगितासचर्मापकृष्ट गण्डदेशम्-आयुषितं=वलियुक्तम् यदक्षचर्म-शष्को जलाकर्षण कोशस्तद्वदपकृष्टौ=अन्तः प्रविष्टौ गण्डदेशौ यस्य स तथा तम् , ' चीणचिविडवंकभग्गणास ' चीनचिपिटवक्रभग्ननास=चीना =ह्रस्वा, चिपिटा=निम्ना, वक्रा=कुटिला, भग्ना=भग्नेव अयोग्यतोपरिक्षुब्धेन प्र सृतेव नासा यस्य स तथा त, चिपिटनासिकावन्तमित्यर्थ ' रोसागयधमधमेंत मारुतनिट्ठुरखरफरुसयुसिर ओभुग्गणासियपुड ' रोषागतधमधमायमानमारुतनि

समान था। यह स्वय अति विशाल और अत्यत काले वर्ण का था इस लिये अजनगिरि के जैसा था-तथा इस की जिह्वा और तालुये दोनों अतिरक्त थे इस लिये वे हिंगुल के समान लाल थे।

इसलिये सूत्रकार ने उस के मुख को अजनगिरि की हिंगुलक से भरी हुई कदरा से उपमित किया है। इस के मुख से अत्यन्त लाल जिह्वा और तालु वाला होने के कारण ऐसा ज्ञात होता था कि मानो अग्नि की ज्वाला ही बाहर निकल रही है। (आऊसियअक्ख चम्म उइट्ठगडदेस, चीणचिपिडवंकभग्गणास रोसागयधमधमेतमारुत निट्ठुर खरफरुसझुसिरओभुग्गणासिपुगड, घाडुब्भडरइयभीसणमुह) इस के दोनों कपोल (गाल) पानी को खीच ने वाले शुष्क वलि युक्त चरस के समान भीतर को घुसे हुए थे। नासिका इस की ह्रस्व चिपटी थी। टेडी इस नासि का के छेदों से जो श्वासोच्छ्वास निकलता

અતિશય કાળા રંગનુ હતુ એટલા માટે જ તે અજનગિરિ જેવુ હતુ તેની જીભ અને તાળવુ બન્ને ખૂબજ લાલ હતા એથી તેઓ હિંગળોક જેવા લાલ હતા

સૂત્રકારે અજનગિરિની હિંગળોકથી ભરેલી કદરાની તેના મોની જે ઉપમા આપી છે તેની પાછળ એજ કારણ છે તેનુ તાળવુ અને જીભ ખૂબજ લાલ હોવાથી એમ લાગતુ હતુ કે જાણે તેના મોમાથી અગ્નિની જવાળાઓ બહારનીકળી રહી હોય

(आऊसिय अक्ख चम्म उइट्ठगडदेस चीण चिपिडवक्क भग्गणास रोसागय धम मेत मारूत निट्ठुर खर फरुस झुसिरओ भुग्गणासियपुड धाडुब्भडरइयभीसणमुह

તેના બને ગાલ કોસની જેમ કરચલીયોવાળા જેમ મોમા પેસી ગયેલા હતા નાક તેનુ નાનુ અને ચપટુ હતુ ત્રાસા નાકના છિદ્રોથી શ્વાસોચ્છવાસ

ष्ठुरखरपरुषशुषिराऽवभुग्ननासिकापुटम् रोषात् क्रोधादिवागत' मबलतया धमधमा यमानः धमधमेतिशब्द कुर्वन् मारुतो=वायुनिष्ठुरस्तीव्रः खरपरुषः=अतिकर्कशः पर मदु'सहः, शुषिरयो =रन्ध्रयोर्यस्य तत्तथा, तदेव भूतम्-अवभुग्न-वक्र नासिकापुट यस्य तथा तम् भस्त्रावद्धमधमायमानश्वासोच्छ्वासपूर्णवक्रनासिकायुक्तमित्यर्थः'घाडु-ब्भडरइयभीसणमुह ' घाटोद्भटरचितभीषणमुख=तत्र घाटाभ्या शिरोऽवयवविशेषा भ्याम् उद्भट विकराल दुर्दर्श रचितम् अतएव भीषण भयकर, मुख यस्य स तथा त विकृतभयानकमुखयुक्तम् ' उद्धमुहकन्नसक्कुलिय ' ऊर्ध्वमुखकर्णशष्कुलीकम्= ऊर्ध्वमुखे कर्णशष्कुल्यौ कर्णपुटौ यस्य स तम्। तथा-'महतविगयलोमसखालग्गलव तचलियकन्न ' महाविकृतलोमशङ्खालग्नलम्बमानचलितकर्णम्, महान्ति विकृतानि असुन्दराणि लोमानि ययोस्तौ महाविकृतलोमानौ, तथा-तौ च शङ्खालग्नौ=शङ्ख = अक्षिप्रान्तभागस्तत्रालग्नौ=सलग्नौ सस्पर्शिनौ लम्बमानौ च चलितौ=चञ्चलौ च कर्णौ यस्य स तथा तम्, 'पिंगलदिप्पतलोयण' पिङ्गलदीप्यमानलोचन=पिङ्गले कपिले,

था वह ऐसा मालूम देता था कि मानो बडे क्रोध से आ रहा है-और इसी लिये वायु भरते समय भस्त्रा (धमनी) से जैसा धम २ शब्द होते हैं उसी प्रकार का उस से भी धम धम ऐसा शब्द होता रहता था। वह तीव्र या अतिकर्कश या कठोर था। दुःसह था। उस का मुख शिर के अवयव विशेषों ने ऐसा ही दुर्दर्श बनाया था कि जिस से वह बड़ा भयकर लगता था।

(उद्धमुहकन्नसक्कुलिय) इस के दोनो कर्णपुट ऊँचे उठे हुए थे। (महतविगयलोमसखालग्गलवतचलियकन्न) इन दोनो कानों के रोम इस के महा विकराल थे शख अक्षि प्रान्त भाग तक ये दोनों कान फैले हुए थे। इसीलिये ये बडे लबे थे और चचल थे।

-

નીકળતો હતો તે એમ જણાતો હતો કે જાણે બહુ ક્રોધમા ભરાઇને તે સામે ધમી આવતો હોય, એથી જ જ્યારે તે શ્વાસ લેતો હતો ત્યારે ભસ્ત્રા (ધમણ) માથી જેમ ' ધમ ' ધમ શબ્દ થતો રહે છે તેવોજ ધ્વનિ થયા હતો તે તીવ્ર, કર્કશ કઠોર અને દુસહ હતો તેના મોના કદ રૂપા અવય-વોથી તે દુર્દર્શ અને મહા ભયકર લાગતો હતો

(उद्धमुहकन्नसक्कुलिय) તેની બને તરફની કાનપટ્ટી ઉચે ઉપસેલી હતી (महतविगयलोमसखालग्गलवतचलियकन्न) બને કાન પરના રુવાટા મહાવિક રાળ હતા આખના ખૂણાઓસુધી તેના બને કાન ફેલાયેલા હતા એટલા માટે જ એઓ લાંબા અને ચચળ હતા

नगिरिसाम्याद् अञ्जनगिरेः कन्दरमिव तन्मुखं प्रतिभातीतिभावः । ' अग्गिजालुग्गिलतवयण ' अग्निज्वालोद्गिरद् वदनम् अग्निज्वाला उद्गिरद्=बहिष्कुर्वद्=वदन मुख यस्य स तथा तम् , यस्य मुखाद् अग्निज्वालानिस्सरति तथाविधमित्यर्थः, ' आऊसिय अक्खचम्मउइट्ठगडदेसं ' आयुक्षिताक्षचर्मापकृष्ट गण्डदेशम्-आयूषित=वलियुक्तम् यदक्षचर्म-शुष्को जलाकर्षण कोशस्तद्वदपकृष्टौ=अन्तः प्रविष्टौ गण्डदेशौ यस्य स तथा तम् , ' चीणचिपिडवक्कभग्गणासं ' चीनचिपिटवक्रभग्ननासम्=चीना=ह्रस्वा, चिपिटा=निम्ना, वक्रा=कुटिला, भग्ना=भग्नेव अयोघनोपरिकुट्टनेन प्रसृतेव नासा यस्य स तथा तं, चिपिटनासिकायन्तमित्यर्थः ' रोसागयधमधमेंत मारुतनिट्ठुरखरफरुसयुसिर ओभुग्गणासियपुड ' रोषागतधमधमायमानमारुतनि

समान था। यह स्वय अति विशाल और अत्यत काले वर्ण का था इस लिये अजनगिरि के जैसा था-तथा इस की जिह्वा और तालुये दोनों अतिरक्त थे इस लिये वे हिंगुल के समान लाल थे।

इसलिये सूत्रकार ने उस के मुख को अञ्जनगिरि की हिंगुलक से भरी हुई कदरा से उपमित किया है। इस के मुख से अत्यन्त लाल जिह्वा और तालु वाला होने के कारण ऐसा ज्ञात होता था कि मानो अग्नि की ज्वाला ही बाहर निकल रही है। (आऊसियअक्ख चम्म उइट्ठगडदेस, चीणचिपिडवक्कभग्गणास रोसागयधमधमेतमारुत निट्ठुर खरफरुसझुसिरओभुग्गणासिपुगड, घाडुब्भडरइयभीसणमुह) इस के दोनों कपोल (गाल) पानी को खीच ने वाले शुष्क वलि युक्त चरस के समान भीतर को घुसे हुए थे। नासिका इस की ह्रस्व चिपटी थी। टेडी इस नासि का के छेदो से जो श्वासोच्छ्वास निकलता

અતિશય કાળા રંગનુ હતુ એટલા માટે જ તે અજનગિરિ જેવુ હતુ તેની જીભ અને તાળવુ બન્ને ખૂબજ લાલ હતા એથી તેઓ હિંગળોક જેવા લાલ હતા

સૂત્રકારે અજનગિરિની હિંગળોકથી ભરેલી કદરાની તેના મોની જે ઉપમા આપી છે તેની પાછળ એજ કારણ છે તેનુ તાળવુ અને જીભ ખૂબજ લાલ હોવાથી એમ લાગતુ હતુ કે જાણે તેના મોમાથી અગ્નિની જવાળાઓ બહારનીકળી રહી હોય

(आऊसिय अक्ख चम्म उइट्ठगडदेस चीण चिपिडवक्क भग्गणास रोसागय धम मेत मारुत निट्ठुर खर फरुस झुसिरओ भुग्गणासियपुड घाडुब्भडरइयभीसणमुह

તેના બને ગાલ ડોસની જેમ કરચલીયોવાળા જેમ મોમા પેસી ગયેલા હતા નાક તેનુ નાનુ અને ચપટુ હતુ ત્રાસા નાકના છિદ્રોથી શ્વાસોચ્છવાસ

युक्तप्रसर्पत्सर्पादिमालाधारिणमित्यर्थं । तथा-' भोगक्रूरकण्हसप्पधमधमेतलवतकन्न पूर ' भोगक्रूरकृष्णसर्पौ धमधमायमानलम्बमानकर्णपूरम्=भोगै.=फणैःक्रूरा भयकरौ भोगक्रूरौ, तौच कृष्णसर्पौ च भोगक्रूरकृष्णासर्पौ, तौ च धमधमायमानौ=फुत्कुर्वन्तौ तावेव लम्बमाने कर्णपूरे=कर्णालङ्कारविशेषौ यस्य स तथा तम्,तथा-परिधृतकृष्णसर्प कर्णभूषणमित्यर्थं 'मज्जारसियालल इयखध ' मार्जारशृगाललगितस्कन्धम्=मार्जा रशृगालालगिता संयोजिताः स्कन्धयोर्येन स तथा तम्, 'दित्तघुघुयत घूयकयकुतल-सिर ' दीप्तघुघुर्कुर्वद्घूककृतकुमलशिरस्कम्=दीप्त-दीप्तस्वर यथाभवत्येव घुघुशब्द कुर्वन्तो यौ घूका =उलूका तएव कृतः कुम्मलः शेखरकः शिरोभूषण शिरसि येन स तथा तम्, शब्दायमानोलूकशिरोभूषणधारिणमित्यर्थः, तथा-घटारवेण भीम= भयकरम् , घण्टानां शब्देन भीम भयकरम् , अतिभयानकम् , तथा-' कायरजण-हियय फोडण ' कातरजनहृदयस्फोटनम्=कातरजनानां भीरुजनाना यानि हृद

वर्ण सपन्न माला उस ने पहिरी हुई थी। (भोगक्रूरकण्हसप्पघम धमेत लवतकन्नपूर) कर्णपूरो के स्थान पर इसने फणावलि से भयकर बने हुए, तथा फुत्कार करते हुए काले दो सर्पों को पहने रखे थे। (मज्जारसियाल लइय खध) अपने दोनो स्कन्धों पर इसने मार्जार और शृगालो को बैठा रखा था। (दित्तघुघुयतघूयकयकुतलसिर) दीप्त स्वर जिस तरह से हो इस तरह से घू घू करते हुए उल्लुओं को इस ने अपने शिर का आभूषण-मुकुट बनाया था। (घटारवेण भीम भय कर कायरजणहियय फोडण दित्तमत्तट्टट्टहास विणिम्मुयत वसारुहिर-पूयम समलमलिणपोच्चडतणु) घटाओ के शब्द से यह भयकर बना हुआ था। कातरजनों के हृदय का भयजनक होने से यह विदारक बना

વાળી માળા તેણે પહેરેલી હતી (भोगक्रूरकण्हसप्पध मधमेंतलवतकन्नपूर) કુંડ-લોના સ્થાને તેણે ફણાઓથી ભયકર તેમજ ફુત્કાર કરતા બે કાળા સાપો પહે-રેલા હતા (मज्जारसियाललइयखध) પોતાના બંને ખભા ઉપર તેણે બિલાડા અને શૃગાલને બેસાડેલા હતા (दित्तघुघुय त घूयकयकु तलसिर) મોટા સાદે ' ઘૂ ' 'ઘૂ' કરનાર ઘૂવડોને તેણે પોતના માથાના આભૂષણ એટલે કે મુકુટ બનાવ્યા હતા

(घटारवेण भीम भयकर जणहिययफोडण दित्त मत्तट्टट्टहास विणिम्मुयत वसारुहिरपूयममलमलिणपोच्चडतणु)

ઘટના ભીમ ધ્વનિથી તે ભયકર લાગતો હતો કાતર જનોને હૃદયોના ભયથી વિદીર્ણ કરનાર હોવાથી તે 'વિદારક' હતો વાર વાર તે મહા ભયકર ઉગ્ર

दीप्यमाने=भास्वरे, लोचने यस्स स तथा तम्, मार्जारवत्प्रदीप्तनेत्र मित्यर्थः, तथा =' भिउडितडियनिडाल ' भ्रुकुटितडिल्ललाट=भ्रुकुटिः- भ्रूवक्रता कोपकृता सैव तडिद् यस्मिन्, तथाविध ललाट, भाल यस्य स तथा तम् कोपावेपेन विद्युत्सदृश भ्रूसमुल्लसितललामयुक्तमित्यर्थः । तथा-' नरसिरमालपरिणद्धचिंध ' नरशिरोमाला परिणद्धचिन्ह=नरशिरोमालैव परिणद्ध=परिधृत चिह्न=पिशाचत्व बोधक लक्षणयेन स तथात=नरतुण्डमाला धारिणमित्यर्थः । तथा-'विचित्तगोणससुबद्धपरिकर' विचि त्रगोनससुबद्धपरिकर=विचित्रैः=बहुवर्णयुक्तैः, गोनसै'=सर्पविशेषैः, सुबद्धः परि कर कवचो येन स तथा तम्, 'अवहोलतपुप्फुयायतसप्पविच्छुय गधु दरनउलसरड विरइयविचित्तवेयच्छमालियाग ' अवधोलयत् फुत्कुर्वत् सर्पवृश्चिकगोधोन्दुरनकुल सरटविरचितविचित्रवैकक्षमालिक=अवधोलयन्तः किंचिम् प्रसर्पन्त' फूत्कुर्वतश्च ये सर्पाः वृश्चिकाः गोधा उन्दुरा नकुलाः सरटाश्च तैर्विरचिता विचित्रा विविध वर्णवती, वैकक्षमालिकास्कन्धलम्बितमाला यस्य स तथा तम्, स्कन्धदेशे फुत्कार

(पिंगलदिप्पतलोयण, भिउडितडियनिडालनरसिरमालपरिणद्ध चिंध विचित्तगोणससुबद्धपरिकर अवहोलतपप्फुयायतसप्प विच्छुय गोधदरनउलसरडविरइय विचित्तवेयच्छमाल याग) इस की दोनों आँखे मार्जार (बिल्ली की तरह पीली और चमकीली थी। इस का ललाट भ्रू वक्रता रूप बिजली से युक्त था इस ने पिशाचत्व के बो धक नरमुंडकी माला रूप चिह्न को धारण कर रक्खा था। इस ने जो कवच पहिरा हुआ था-वह अनेक वर्णवाले सर्पों से व्याप्त हो रहा था। अथवा-कवचके स्थानापन्न इस ने विविध वर्णवाले सर्पों को अपने शरीर पर धारण कर रक्खा था।

स्कंध देश में, इधर उधर, सरकते हुए तथा फुत्कार करते हुए सर्पों की, वृश्चिकों की, गोहों की, उन्दुरो की, नकुलो की, सरटों की, विविध

(पिंगलदिप्पतलोयण भिउडितडियनिडाल नरसिर-मालपरिणद्ध चिंध विचित्तगोणससुबद्धपरिकर अवहोलतपप्फुयायतसप्पविच्छुयगोधदरनउलसरडविरइय विचित्तवेयच्छमालयाग)

તેની બને આંખો બિલાડાની જેમ પીળી અને ચમકતી હતી વક્રભ્રૂ (ભમ્મર) રૂપ વીજળીથી તેનુ કપાળ યુકત હતુ પિશાચપણાના પ્રમાણ રૂપે તેણે નરમુડની માળા પહેરેલી હતી ઘણાર ગના સાપોથી તે આવેષ્ટિત હતો અથવા કવચના સ્થાને તેણે જાતજાતના ર ગવાળા અનેક સાપોને શરીર ઉપર ધારણ કરેલા હતા

બધા ઉપર આમતેમ હિલચાલ કરતા એટલે કે સરકતા તેમજ ફુત્કાર કરતા સાપો, વીછીઓ, ઘો, ઉદરો, નોળિયાઓ, અને સરટોની અનેક ર ગો

ऊर्ध्वीकृतभुजद्वयलम्बमानप्रक्षरद्रुधिरगजचर्मधारिणमित्यर्थः । तथा-' ताहिय खर फरुसअसिणिद्धअणिट्ठदित्तअसुभअप्पियअमणुन्नअकंतवग्गूहि य तज्जयत' ताभिश्च खरपरुषास्निग्धनिष्टदीप्ता शुभा प्रिया मनोज्ञा कान्तवाग्भिश्च तर्जयन्त=ताभिः =तादृशीभिर्भयकराभिश्च, खरपरुषा=अतिकर्कशा, अस्निग्धाः=स्नेहरहिता, अनिष्टा=दुःश्रवत्वेनानीप्सिताः, दीप्ता=उपतापजनकत्वादुज्ज्वला', अशुभाः=अमङ्गला, अप्रियाः-श्रुतिकटुत्वात्, अमनोज्ञा =मनोविकृतिजनकत्वात्, अकान्ताश्च विकृत स्वरत्वाद् या वाचस्ताभिश्च तर्जयन्त=त्रस्तयन्त पश्यन्तिस्म । अथ पुनस्तत् ताल पिशाचरूप ' एज्जमाण ' एजमान=नावप्रति अभ्यागच्छत् पश्यन्ति, दृष्ट्वा भीता', त्रस्ताः, त्रसिताः, उद्विग्नाः, सजातभयाः अन्योन्यस्य=परस्परस्य, काय=शरीर, ' समतुरगेमाणा २ ' आश्लिष्यन्तः २ बहूनामिन्द्राणा च स्कन्दाना=कार्तिकेयाणा च, रुद्रशिववैश्रमणनागाना नागो-भवनपतिविशेष', भूताना यक्षाना च भूतयक्षाः

णिद्ध अणिट्ठदित्तअसुभअप्पियअमणुन्नअकंत वग्गूहि य तज्जयत पासइ) उस ताल पिशाच को भयकर, अत्यन्त कर्कश, स्नेह शून्य, अनिष्ट, उपताप जनक, अमगल रूप अप्रिय अमनोज्ञ, एव अकान्त ऐसी अपनी वाणी से दूसरो को दुःखित करता हुआ उन लोगोने देखा।

(त ताल पिसायरूव एज्जमाण पासति, पासित्ता, भीया० सजायभया अन्नमन्नस्स काय समतुरगेमाणा २ बहूण इदाणय खदाण य रुद्दसिव वेसमणणागाण भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्ट किरियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा २ चिट्ठति) और साथ में यह भी देखा की वह ताल पिशाच का रूप हम लोगों की और आ रहा

(ताहि य खरफरुस असिणिद्ध अणिट्ठदित्त असुभअप्पियअमणुन्नअकंत वग्गूहिंय तज्जयत पासइ)

તાલ પિશાચને તે લોકોએ પોતાની ભયકર, અત્યત કર્કશ, સ્નેહ રહિત, અનિષ્ટ ઉપતાપ જનક, અમગળરૂપ અપ્રિય અમનોજ્ઞ, અને અકાન્ત (બીભત્સ) વાણીથી બીજાઓને ત્રાસ આપતો જોયો

(त ताल पिसायरूव एज्जमाण पासति, पासित्ता, भीया० सजायभया, अन्नमन्नस्स, काय समतुरगेमाणा २ बहूण इदाण य खदाण य रुद्दसिववेसमण णागाण भूयाणय जक्खाणय अज्जकोट्ट किरिया य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा २ चिट्ठति)

यानि तेषा स्फोटन भयजनकत्वेन विदारक, तथा-दित्तमट्टट्टहास विणिम्मुयत ' दित्तमट्टाट्टहासम्=उग्रमट्टाट्टहास विनिर्मुञ्चन्त=मकुर्वन्तम्, तथा-' वसारुहिरपूयमस मलमलिणपोच्चडतणु ' वसारुधिरपूयमासमलमलिनपोचडतनुम्=वसारुधिरपूयमा समलैर्मलिना पोच्चडा आर्द्रा ' पच पच ' कुर्वाणा तनुः शरीर यस्य स तथातम्, तथा-' उत्तासणय ' उत्त्रासनकम्=उद्वेजक, विशालवक्षस्कम्=विस्तीर्णवक्षस्थलकम् 'पेच्छताभिन्नणहरोममुहनयणकन्नवरवग्घचित्तकत्तीणीवसण' प्रेक्ष्यमाणाऽभिन्ननखरो ममुखनयनकर्णवरव्याघ्र चित्र कृत्तिनिवसनम्=तत्र प्रेक्ष्यमाणा-दृश्यमाना अभिन्ना: =अच्छिन्नानखाश्च रोमाणि च मुख च नयने च कर्णौ च यस्या सा प्रेक्ष्यमाणाऽ भिन्ननखरोममुखनयनकर्णा सा चासौ वरव्याघ्रस्य चित्रा-विविधकर्णका, कृत्ति श्चर्म सैव निवसन-परिधान वस्त्र यस्य स तथा तम् अखण्डव्याघ्रचर्मपरिधानमित्य र्थः, तथा-' सरसरुहिरगयचम्मवितउसवियबाहुजुयल ' सरसरुधिरगजचर्म वि ततोच्छृतबाहुयुगल=सरस-रुधिरार्द्रं यद् गजचर्म, तद् वितत-विस्तारित यत्र तत् सरसगजचर्मवितत, तदेव भूतम् उच्छृतम् उत्थापित बाहुयुगल येन स तथा तम्

हुआ था घार २ यह महा उग्र, अट्टहास कर रहा था। इस का शरीर वसा-चर्बी, रुधिर, पूय-पीप, माम एव मल इन से मलिन हो रहा था। और मसक ने पर पच पच इस प्रकार का शब्द करने लगता था।

(उत्तासणय, विशालवच्छ पेच्छताभिन्नणहरोममुहनयणकन्न वरवग्घचित्तकत्तीणिवसण, सरसरुहिरगयचम्मवितउसविय बाहु जुयल) इसे देखते ही लोग काँप जाते थे,। इस का वक्षस्थल (छाती) बहुत विशाल था। इस ने जो व्याघ्र का विविध वर्ण वाला चर्म रूप वस्त्र पहिर रखा था उस मे स्पष्ट रूप से व्याघ्र के अच्छिन्न नख, रोम, मुख, नयन' और कान दृष्टिगत हो रहे थे। अपने उत्थापित किये हुए बाहु युगल मे इस ने लम्बा खून से लथ पथ हुआ गीला गज का चमडा धारण कर रखा था। (तोहियखरफरुसअसि

અટ્ટહાસ કરતો હતો તેનુ શરીર વસા-ચર્બી, લોહી, પીપ, માસ અને મળથી ખરડાયેલુ હતુ અને જોરથી દબાવાથી (ફસકી જવાથી) 'પચ' પચ શબ્દ થતો હતો

(उत्तासणय, विसालवच्छपेच्छता भिन्नणह रोममुहनयणकन्नवरवग्घ चित्तकत्ती णिवसण, सरससहिरगयचम्म वितत ऊसवियबाहुजुयल)

તેને જોતાની સાથે જ માણસો ધ્રૂજવા માડતા હતા તેનુ વક્ષસ્થળ ખૂબજ પહોળુ હતુ અનેક જાતના રંગોના પહેરેલા વાઘના ચામડાના વસ્ત્રમા વાઘના આખા નખો, રુવાટા, મોઢા આખે અને કાન સ્પષ્ટ રીતે દેખાઇ રહ્યા હતા ઉચા કરેલા બન્ને હાથમા તેણે લોહીથી ખરડાયેલુ લાણુ હાથીનુ ચામડુ પહેરેલુ હતુ

कप्पइ, तव सीलव्वयगुणवेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासाइ चालित्तए वा एव खोभेत्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइणं तुम सीलव्वय जाव ण परिच्चयसि तो ते अहं एय पोयवहणं दोहि अगलियाहिं गेण्हामि, गिण्हित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइ उड्ढ वेहास उव्विहामि, उव्विहित्ता अतो जलसि णिव्वोलेमि जेणं तुमं अट्ट-दुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि तएणं से अरहन्नए समणोवासए त देव मणसा चेव एवं वयासी—अह णं देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णाम समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु अह सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा तुम ण जा सद्धा त करेहित्तिकट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फदे तुसिणीए धम्मज्झाणोव-गए विहरइ ॥ सू० २० ॥

टीका—अरहन्नकमन्यै सायात्रिकैर्यथानुष्ठित तदुक्तम्, अधुनाऽरहन्नकेन पिशाचरूपमवलोक्य यत् कृत तदाह—' तएण ' इत्यादि । ततस्तदा खलु स अरह-न्नक. अरहन्नकनामको मुख्य मायात्रिक, श्रमणोपासक'=श्रावकस्त दिव्यम्

तएण से अरहन्नए इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद मुख्य सायात्रिक अरहन्नक को छोड कर अन्य सांयात्रिकों ने जो २ किया उस के बाद (समणोवासए अरहन्नए) श्रमणोपासक अरहन्नक ने (त दिव्व पिसायरूव पासित्ता) जब दिव्य

' तएण से अरहन्नए ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(तएण) અરહન્નક સિવાયના બીજા સાયાત્રિકોની આવી હાલત થઇ ત્યાર બાદ (समणोवासए अरहन्नए) શ્રમણોપાસક અરહ[redacted] દિવ્ય पिसायरूव पासित्ता) જ્યારે તે દિવ્ય અપૂર્વદૃષ્ટ—અદ્ભુત—[illegible]

—व्यन्तरभेदास्तेषाम्, तथा—आर्यकोट्टक्रियाणा च=आर्याप्रशान्तस्वभावा देव्यः, कोट्टक्रिया=चण्डिकारूपादेव्यः, तासा बहूनि उपयाचितशतानि=बहुविधानि मान्यताशतानि उपयाचमानाः २ कुर्वन्त २ स्तिष्ठन्ति ॥सू-२१ ॥

मूलम्—तएणं अरहन्नए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिन्नमुहराग णयणवन्ने अदीणविमणमाणसे पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाण ठाइ, ठाइत्ता करयलओ एव वयासी—नमोत्थुणं अरहंताणं जाव सपत्ताण, जइ ण अह एत्तो उवसग्गाओ मुचामि तो मे कप्पइ पारित्तए अहणं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि, तो मे तहा पच्चक्खाए यव्वे त्तिकट्टु सागार भत्त पच्चक्खाइ, तएणं से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहन्नग एव वयासी—हं भो ! अरहन्नगा अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया णो खलु

है इस बात को देख कर वे सब के सब भयभीत हो गये, डर गये, उद्विग्न हो गये ! उन के प्रति प्रदेश मे भय का सचार हो गया। इस तरह होकर वे सब परस्पर में एक दूसरे के शरीर से चिपक गये। और अनेक इन्द्रों की स्कन्द की कार्तिकेय की रुद्र की शिव की वैश्रमण की नाग की भूत की यक्ष प्रशान्त स्वभाव वाली देवियों की तथा चण्डि का रूप देवियो की सैकडों प्रकार बार २ मान्यता करने लग गये। सूत्र "२१"

તાલ પિશાચ ને તેઓએ પોતાની તરફ જ આવતો જોયો આરીતે જોઇને તેઓ બધા ભયત્રસ્ત થઇગયા, ઘીગયા ઉદ્વિગ્ન થઇગયા તેમના આત્માના પ્રતિપ્રદેશમા ભયનુ સચરણ થઇ ગયુ તેઓ ભયભીત થઇને એક બીજાને ચોટી પડયા, અને તેઓમાથી ઘણા ઈન્દ્રોની સ્કદની, કાર્તિકેયની રુદ્રની, શિવની, વૈશ્રમણની, નાગની, ભૂતની, યક્ષની, પ્રશાન્ત સ્વભાવવાળી દેવીઓની તેમજ ચડિકારૂપ દેવીઓની સેકડો પ્રકારની વારવાર માનતા માનવા લાગ્યા ॥ ॥ સૂત્ર " २१ " ॥

स्थान समाप्तेभ्य, यदि खल्वहम् एतस्मादुपसर्गाद् पिशाचकृतसङ्कटात्, निर्विघ्नो भवामि मुञ्चामि, तदा मे तथा=तावत्पर्यन्तं प्रत्याख्यातव्यम्० चतुर्विधभक्त प्रत्याख्यान मयाऽनुष्ठेयमित्यर्थ, इति कृत्वा साकारभक्त=चतुर्विधमाहार प्रत्याख्याति०। ततस्तदनन्तर खलु स पिशाचरूपधारी देा, यत्रैवारहन्नक अरहन्नक नामकः श्रमणोपासक' = श्रावकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यारहन्नकम्-एवं= वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-हमो ! अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित !=अप्रार्थितं

एव वयासी) बैठ कर उस ने अपने दोनो हाथों की अजलि बनाई। और उसे मस्तक पर रख कर आवर्त करते हुए वह इस प्रकार कह ने लगा-(णमोत्थु णं अरहंताण जाव सपत्ताण) यावत् सिद्धगति को प्राप्त हुए अर्हंत प्रभुओ को नमस्कार हो (जइण अह एत्तो उवसग्गाओ मुचामि तो मे कप्पइ पारित्तए)

यदि मे इस पिशाच कृत उपसर्ग से बच गया तो ही अशनादि ग्रहण करूँगा (अह ण एत्तो उवसग्गाओ ण मुचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे) यदि मे इस उपसर्ग से नही बचा तो मेरे तावत्पर्यन्त चतुर्विध आहार का त्याग है (त्ति कट्टु) ऐसा विचार कर (सागार भत्त पच्चक्खाइ) उसने साकार चतुर्विध आहारका प्रत्याख्यान कर दिया। अर्थात् सागारी सथारा किया - (तएण से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद वह पिशाच रूप धारी देव जहा वह श्रमणोपासक अरहन्नक बैठा था-वहा आया

એટલીને તેણે પોતાના બને હાથની અંજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક ઉપર ભૂકીને ફેરવતા તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો-"णमोत्थुणं अरहंताण जाव सपत्ताण" यावत्-सिद्धगतिने पामेला अर्हंत प्रभुओने मारा नमस्कार छे.

(जइण अह एनो उवसग्गाओ मुचामि तो मे कप्पइ पारित्तए

જો હું આ પિશાચના ઉપસર્ગોથી બચી જઈશ તોજ આહાર વગેરે ગ્રહણ કરીશ "अह ण एत्तो उवसग्गाओ ण मुचामि तो मे तहा पच्चक्खाए यव्वे" આ ઉપસર્ગથી મારી રક્ષા નહિ થાય તો તાવત્પર્યન્ત ચારપ્રકારના આહારનો હું ત્યાગ કરૂ છું "त्तिकट्टु" આમ વિચારીને "सागर भत्त पच्चक्खाइ" તેણે આકાર ચતુર્વિધ આહારનુ પ્રાત્યાખ્યાન કર્યું

એટલે કે તેણે સાગારી સથારો કર્યો

(तएण से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર બાદ પિશાચ રૂપ ધારીદેવ જ્યા શ્રમણોપાસક બેઠાહતા ત્યા આવ્યો.

अपूर्वदृष्टमद्भुतं पिशाचरूपम् एजमान=नावं प्रति समागच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वाअभीतः, भयरहितः, अत्रस्तः त्रासमप्राप्तः अचलितः, अप्राप्तक्षोभः असम्भ्रातः, सम्भ्रान्तिरहितः अनाकुलः, अव्यग्रः अनुद्विग्नः, असम्भ्रमः अभिन्नमुखरागनयनवर्ण.= अभिन्नौ-अविकृतौ मुखरागनयनवर्णौ यस्य स तथा, तस्य भयाभावान्मुख रागोनयनवर्ण श्चान्यथा न अदीनविमानो जातइत्यर्थः मानसः=अदीनविमनः-नदीन दैन्यप्राप्त, नापि विमनः=दुर्मनः नापि विकृत मानस यस्य स तथा तस्य मनोऽप्यन्यथा न जातमित्यर्थः, तथा भूतः सन् पोतवहनस्य नौकायानस्यैकदेशे=एक भागे वस्त्रान्तेन=वस्त्राञ्चलेन खलु भूमिम्=उपवेशनस्थान प्रमार्जयति प्रमार्ज्य स्थानम्-उपवेशनार्ह स्थान सशोध्य जीवादिरहित कृत्वा तत्र तिष्ठति=उपविशति, स्थित्वा=उपविश्य करतलपरिगृहीत शिर आवर्त दशनख मस्तकेऽञ्जालि कृत्वा एव =वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-नमोऽस्तु अर्हद्भ्यो यावत् सिद्धिगतिनामधेय

अपूर्वदृष्ट-अद्भूत-पिशाच रूप को (एज्ज मान) नाव की तरफ आता हुआ (पासइ) देखा-तो (पासित्ता देखकर वह (अभीए) डरा नहीं (अतत्थे) त्रस्त नहीं हुआ (अचलिए) धैर्य से चलायमान नहीं हुआ (असम्भते) घबराया नहीं (अणाउले) आकुल व्याकुल नहीं बना (अणुव्विग्गे) उद्विग्न नहीं हुआ (अभिन्न मुहरागणयणवन्ने) उस के मुख का राग और नयनों का वर्ण विकृत नही बना (अदीणविमणमाणसे) उस का मन न दीन बना और न विकृत ही बना (पोयवहणस्स एगदेससि वत्थ तेण भूमिं पमज्जइ) किंतु नौका यान के एक तरफ वस्त्राञ्चल से भूमि को प्रमार्जित करने लगा- (पमज्जित्ता) प्रमार्जित कर के फिर वह (ठाण ठाइ) बैठ ने के योग्य स्थान का सशोधन कर उसे जीवादि रहित कर वहा बैठ गया। (ठाइत्ता करयलओ

“ एज्जमान ” પોતાના વહાણ તરફ આવતુ “ पासइ ” જોયુ ત્યારે “ पासित्ता ” જોઇને તે “ अभीए ” ભય પામ્યો નહિ, “ अतत्थे ત્રસ્ત થયો નહીં, ‘ अचलिए ” ધૈર્યથી વિચલિત થયો નહિ, “ असभते ” ગભરાયો નહિ, “ अणाउले વ્યાકુળ થયો નહિ, (अणुव्विग्गे) ઉદ્વિગ્ન થયો નહિ, (अभिन्नमुहरागणयणवन्ने) તેના મોનો રગઅને આખોના વર્ણનમા જરાયે વિકૃત થયો નહિ (अदीण विमणमाणसे) તેનુ મન દીન બન્યુ નહિ તેમજ વિકૃત થયુ નહિ (पोयवहणस्स एगदेससि वत्थतेण भूमि पमज्जइ) તે વહાણના એક તરફની ભૂમિને વસ્ત્રના છેડાથી પ્રમાર્જિત કરવા લાગ્યો (पम्मजित्ता) પ્રમાર્જિત કરીને તે (ठाणठाइ) બેસવા યોગ્ય સ્થાનનુ સશોધન કરીને સ્થાનને જીવ વગેરેથી રહિત બનાવીને ત્યા બેસીગયો (ठाइत्ता करयलओ एव वयासी)

=मिथ्यात्वान्निवर्त्तनम्, प्रत्याख्यान=पर्वदिनेषु हरितकायादि त्याज्यानामवश्य परित्यागः, पोषधोपवासः=पोष=पुष्टिधर्मस्य वृद्धिं धत्त इति पोषध =चतुर्दश्यष्टम्य-मावास्यापूर्णिमादिपूर्वदिनानुष्ठेयो व्रतविशेषः, एतेषा द्वन्दे तान् चालयितुं वा करणयोगरूपेण परिवर्त्तयितुम्, एव क्षोभयितु वा एतान् एव परिपालयामि, अथवा परित्यजामीति क्षोभ कर्तुं, खण्डयितु देशतो भङ्क्तु भङ्क्तु सर्वतो वा उज्झितु देशविरतेस्त्यागेन, वा परित्यक्तु सम्यक्त्वस्यापि त्यागात् वा, तद् यदि खलु त्व शीलव्रत० यावत् न परित्यजसि तदा तवाहमेतत् पोतवहन नौकायान द्वाभ्यामङ्गुलीभ्या तर्जनीमध्यमाभ्या गृह्णामि, गृहीत्वा सप्ताष्टतालप्रमाणमात्रान् गगनभागान् यावत्, ऊर्ध्वं विहायसि=गगने 'उव्विहामि' उद्विध्यामि=प्रापयामि, 'उव्विहित्ता' उद्विध्य=ऊर्ध्वमाकाशे नीत्वा, 'अतो जलसि,' अन्त-

---

को, चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा आदि पर्वदिनों मे अनुष्ठेय व्रत विशेष रूप पोषध को अन्यथा करण योग रूप से परिवर्तित करने की तुम इन्हें इस तरह से पालो अथवा इन का परित्याग कर दो इस रूपसे उन्हें क्षुभित करने की उन्हें एक देश अथवा सर्वदेश से खडित करने की भग करने की देश विरति के छुडवाने की अथवा सम्यक्त्व के परित्याग से उन के त्याग करवाने की मुझ में शक्ति नही है। अतः (*जइणं तुम सीलव्वय जाव ण परिच्चयसि तो ते अह पोयवहण दोहिं अगुलियाहि गेण्हामि*) तुम इन शीलव्रत आदि को को स्वय छोड़ दो-यदि नही छोडोगे तो मे तुम्हारी इस नौका को दो अगुलियो से-तर्जनी और मध्यमा से-पकड लूँगा (गिण्हित्ता सत्ताट्ठ तालप्पमाणमेत्ताइ उड्ढं

અમાસ, પૂનમ વગેરે, પર્વના દિવસોમા અનુષ્ઠેય વ્રતવિશેષ રૂપ પોષધને, અન્યથા કરણયોગ રૂપથી પરિવર્તિત કરવાની, તમે આ વ્રતો આ રીતે આચરો કે આનો પરિત્યાગ કરો આ પ્રમાણે તેમને ક્ષુભિત કરવાની, તેમને એકદેશ અથવા સર્વદેશથી ખડિત કરવાની-ભગ કરવાની-દેશવિરતિના ત્યાગ અથવા સમ્યકત્વના પરિત્યાગથી તેમને પરિત્યકત કરાવડાવવાની માગમા તાકાત નથી એથી

(*जइणं तुम सीलव्वय जाव ण परिच्चयसि तो ते अह पोयवहण दोहिं अगुलियाहिं गेण्हामि*)

તમે પોતાની મેળેજ આ શીલવ્રત વગેરે નો ત્યાગ કરો જો તમે આ પ્રમાણે કરશો નહિ તો હુ તમારા વહાણને બે આગળીઓથી એટલે કે તર્જની અને મધ્યમા આગળીઓથી-પકડી પાડીશ

(*गिण्हित्ता सत्तट्ठताल प्पमाण मेत्ताइ उड्ढ वेहास उव्विहामि-उव्विहित्ता अतो*

-यत् केनापि न प्रार्थित मरण, तत् प्रार्थित येन, स अप्रार्थितप्रार्थित । यद्वा-हे तत्सम्बोधनम् हे मरणप्रार्थक !-अप्रस्थित प्रस्थित। अप्रस्थितः येन प्रस्थित इव मुमूर्षुरित्यर्थस्तस्य सम्बोधनम्, हे मरणवाञ्छक ! यावत् इह यावच्छब्देन ' दुरंतपंतलक्खणा, हीणपुण्णचाउद्दसिया सिरिहिरिधीकित्ति ' इत्यन्तस्य संग्रहः। दुरन्तप्रान्तलक्षण ! दुरन्त विपाकप्रकटु प्रान्तम् अवसान लक्षण स्वभावो यस्य स तथा, तस्यामन्त्रण, हीनपुण्य चातुर्दशिक ! हीना क्षीणा पुण्या=चन्द्रकला शुभकारकत्वात् यस्या सा हीनपुण्या=कृष्णपक्षीयेत्यर्थः, सा चासौ चतुर्दशी च हीनपुण्य चतुर्दशी, तस्या जात', तत्सम्बोधनम् हे भाग्यहीन इत्यर्थ । श्रीह्रीधी कीर्तिपरिवर्जित । हे दरिद्र । हे निर्लज्ज ! हे बुद्धिहीन ! हे कुलकलङ्कित ! श्रीः=लक्ष्मीः, ह्रीः=लज्जा, धी =बुद्धिः, कीर्तिः=यशः, ताभिः नो खलु कल्पते तवशीलव्रतगुण-विरमणप्रत्याख्यानपौषधोपवासान्-तत्र शीलानि=सामायिकदेशावकाशिकपौषध-तिथिसंविभागाख्यानि, व्रतानि=पञ्चाणुव्रतानि, गुणाः=त्रीणिगुणव्रतानि, विरमण

(उवागच्छित्ता अरहन्नगं एवं वयासी) आकर उस ने अरहन्नक से इस तरह कहा (हं भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया) हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मरण की इच्छा करने वाला ! यावत् शब्द से " हे दुरन्त प्रान्त लक्षण ! हे हीन पुण्य चातुर्दशिक ! हे श्रीह्रीधी कीर्ति परिवर्जित ! हे कुल कलंकित ! (णो खलु कप्पइ, तव सीलव्वयगुण वेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइ चालित्तए वा एव खोभेत्तए वा खडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तएवा) मुझे तुम्हारे द्वारा पालित शीलो को व्रतो को गुणव्रतों को मिथ्यात्व की विनिवृत्ति को पर्व दिनों में हरित काय आदि के परित्याग

" उवागच्छित्ता अरहन्नगं एवं वयासी " આવીને તેણે અરહન્નકને આ પ્રમાણે કહ્યું-" हं भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया " હે અરહન્નક ! હે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મૃત્યુને ભેટવાની ઇચ્છા રાખનાર ! ' यावत् ' શબ્દથી હે દુરંતપ્રાંત લક્ષણ ! હે હીનપુણ્ય ચાતુર્દશિક ! હે શ્રીહ્રીધી કીર્તિ પરિવર્જિત ! હે કુલકલંકિત !

(णो खलु कप्पइ, तव सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइ चालित्तए वा एव खोभेत्तएवा खडित्तए वा भंजित्तएवा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तएवा)

તમારા વડે આચરિત શીલોને, વ્રતોને, ગુણવ્રતોને, મિથ્યાત્વની વિનિવૃત્તિને, પર્વના દિવસોમા હરિકાય વગેરેના પરિત્યાગને, ચૌદશ, આઠમ,

वचनात् 'चालित्तए' चालयितुम्=अन्यथाभाव कारयितु वा, 'खोभित्तए' क्षोभयितु=सशयोत्पादनेन क्षोभ कर्तुंवा, तथा-'विपरिणामित्तए' विपरणमयितु =विपरीताध्यवसायोत्पादनेनाप्यन्यथाकर्तुं वा, केनापि देवादिना श्रावकधर्माद् विचालयितु नाह शक्य इति सक्षिप्तार्थः। तत् खलु या=यादृशी श्रद्धा वर्तते तत्-तथा कुरु त्व यत् कर्तुमिच्छसि तत् कुरुष्वेत्यर्थः 'इति कट्टु' इति कृत्वा= इति स्वात्मन्युक्त्वा, अभीतः यावद्-अत्र यावच्छब्देन 'अतत्थे, अचलिए, असंभते अणाउले, अणुव्विग्गे, इत्येषा पदाना सग्रह', एतान्यस्मिन्नेवसूत्रे व्याख्यातानि,

णाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा तुम ण जा सद्धा त करहि त्ति कट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीण विमगमाणसे निच्चले निप्फदे तुसिणीए, धम्मज्झाणोवगए विहरइ) हे देवानुप्रिय देव! मैं अरहन्नक नामका श्रमणोपासक श्रावक हूँ।

जीव अजीव आदि तत्त्वों के स्वरूप को जानने वाला हूँ। किसी भी देव मे ऐसी शक्ति नही है जो मुझे इस निर्ग्रन्थ प्रवचन से विचलित कर सके उस मे अन्यथा भाव रूप से परिणमासके क्षुभित कर सके-सशयोत्पादन से मुझे उस में सदिग्ध बना सके तथा विपरिणामी बना सके-विपरीत अध्यवसाय के उत्पादन से उस में मुझे विपरीत बुद्धि वाला कर सके, तात्पर्य इस का यही है कि कोइ भी देव ऐसा नहीं है कि जिस के द्वारा म श्रावक धर्म से विचलित किया जा सकू।

इसलिये हे देव! तुम्हारी जैसी श्रद्धा हो वैसा तुम करो। इस

खोभित्तएवा विपरिणामित्तए्वा तुमण जा सद्धा त करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फदे तुसिणीए धम्मज्झणोवगए विहरइ)

હે દેવાનુપ્રિયદેવ ! હુ અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક શ્રાવક છુ

જીવ અજીવ વગેરેના તત્ત્વોના સ્વરૂપને જાણનાર છુ કોઇપણ દેવમા તાકાતનથી કે જે મને પોતાના નિર્ગ્રંથપ્રવચનથી વિચિલિત કરી શકે, તેમા અન્યથા ભાવ રૂપથી પરિણમાવી શક, ક્ષુભિતકરી શકે, સશય ઉત્પન્ન કરીને મને તેમા શકાશીલ બનાવી શકે અને વિપરિણામી બનાવી શકે, વિપરીત અધ્યવસાયના ઉત્પાદનથી નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પ્રત્યે મને વિપરીત બુદ્ધિવાળો કરી શકે મતલબ એ છે કે કોઇપણ દેવમા આટલી તાકત નથી કે તે મને પોતાના શ્રાવક ધર્મથી ડગાવી શક

એથી દેવ ! તમારી જેવી શ્રદ્ધા હોય તેમ કરો મનમા દેવને સંબોધીને

र्जले-जलमध्ये, ' णिव्वोलेमि ' निर्वोडयामि=निमज्जयामि, येन त्व ' अट्टदुहट्ट-वसट्टे ' आर्तदुर्घटवशार्त =आर्तम्-आर्त्तध्यानम् दुर्घट=हिंसादिदुर्घटनायुक्तत्वाद् रौद्रध्यानार्त्त, तयोर्वशेन प्रतः-पीडितः, अतएव-'असमाहिपत्ते' असमाधिप्राप्तः, अकाले चैव=मरणकालात्पूर्वमेव जीवितात् 'ववरोविज्जसि' व्यपरोपयिष्यसे-व्यपगतोभविष्यसि मरिष्यसीत्यर्थः । ततः पिशाचवचनश्रवणानन्तर सोऽरहन्नकः श्रमणोपासकः त देव पिशाचरूप मनसा चैव एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=पिशाचरूप देव स्वमनसि सम्बोध्य स्वात्मन्येव वक्ष्यमाणप्रकारेणोक्तवानित्यर्थः, हे देवानुप्रिय ! हे देव ! अह खलु अरहन्नको नाम श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीवः=जीवाजीवतत्त्वज्ञः, नो खलु अह शक्य केनापि देवेन वा यावत् निर्ग्रन्थात् प्र

वेहास उव्विहामि-उव्विहित्ता अतो जलसि णिव्वोलेमि) और पकड़ कर सात आठ ताल प्रमाण आकाश भाग तक उसे ऊपर पानी में डुबो दूँगा । (जेण तुम अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि) जिससे तुम आर्त्त और दुर्घट-रौद्र-ध्यान के वश से पीडित होते हुए असमाधि को प्राप्त हो जाओगे और मरण काल से पहिले ही जीवन से रहित हो जाओगे ।

(तएणं से अरहन्नए समणो वासए त देव मणसा चेव एव वयासी) इस तरह उस पिशाच रूप धारी देव के वचन सुनने के बाद उस श्रमणोपासक अरहन्नक ने उस देव से अपने मन ही मन ऐसा कहा- (अह ण देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णाम समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु अह सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गथाओ पावय-

---

जलसि णिव्वोलेमि)

અને પકડીને સાત આઠ તાલ પ્રમાણ તેને ઉપર આકાશમા લઈ જઈશ અને ત્યાથી પાણીમા ડુબાડી મૂકીશ

(जे ण तुम अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि)

એથી તમે આર્ત્ત અને દુર્ઘટ-રૌદ્ર-ધ્યાનથી પીડિત થતા અસમાધિને મેળવશો અને મૃત્યુકાળ ના પહેલા જ જીવન વગરના થઈ જશો

(तएण से अरहन्नए समणोवासए त देव मणसा चेव एव वयासी) આરીતે પિશાચ રૂપવાળા દેવની વાત સાભળીને શ્રમણોપાસક અરહન્નકે દેવને પોતાના મનમા જ આમભાષે કહ્યુ

(अहण देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णाम समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु अह सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा

मूलम्–तएणं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चपि एवं वयासी–हं भो ! अरहन्नगा० अदीण विमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ, तएणं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ, पासित्ता बलियतरागं आसुरुत्ते त पोयवहण दोहि

દૃઢ બના રહતા હૈ તો ઇસ કા પરિણામ ઉસે વિપાકકાલ મે કટુ હી ભોગના પડેગા–ઉસે દુરન્ત પ્રાન્ત લક્ષણ ઇસ સબોધન પદ સે બોધિત કિયા હૈ । કૃષ્ણ પક્ષ કી ચતુર્દશી મેં ચન્દ્રકલા ક્ષીણ રહતી હૈ-ઇસલિયે શુભ કારક ચન્દ્રકલા સે વિહીન હોને કે કારણ વહ ચતુર્દશી હીન પુણ્ય માની જાતી હૈ દેવ કહતા હૈ કિ માલૂમ હોતા હૈ તેરા જન્મ હુઆ હૈ અતઃ તૂ ભાગ્ય હીન હૈ । ઇસલિયે અરહન્નક શ્રાવક કો ઉસ ને હીન પુણ્ય ચાતુર્દશિક ઇસ સબોધન પદ સે બોધિત કિયા હૈ । શ્રી હ્રી આદિ પ્રત્યેક મેં વર્જિત પદ કે સાથ સબોધન પદ લગાકર દેવ ને અરહન્નક કો સબોધિત કિયા હૈ–જૈસે હે શ્રી વર્જિત હે હ્રી વર્જિત આદિ । સામાયિક, દેશાવકાશિક, પૌષધ, અતિથિ સવિભાગ યે શીલ હૈં । અણુવ્રત ૫ હૈં । ગુણવ્રત ૩ હૈં । યહ સબ શ્રાવક કા ધર્મ હૈ । ઇસ તરહ ૪ શિક્ષાવ્રત, ૫ અણુવ્રત ઔર ૩ ગુણવ્રત યે ૧૨ પ્રકાર શ્રાવક ધર્મ કે યહાં પ્રકટ કિયે ગયે હૈં । સૂત્ર " ૨૨ "

કાળમા પરિણામ કટુ જ ભોગવવુ પડશે આ જાણીને જ દેવે તેને " દુરત પ્રાત લક્ષણ " આ પદથી સબોધ્યો છે કૃષ્ણ પક્ષની ચૌદશના દિવસે ચદ્રકળા ક્ષીણરૂપે રહે છે એથી તે અમગળકારી ગણાય છે તે મગળકારી નહીં હોવાથી તે ચૌદશ હીન પુણ્ય ગણાય છે દેવ તેને કહે છે કે તારો જન્મ આવા સમયે જ થયો છે એથી તું અભાગિયો છે અરહન્નક શ્રાવકને દેવે એટલા માટે જ હીનપુણ્યચાતુર્દશિક પદવડે સબોધિત કર્યો છે શ્રી, હ્રી વગેરે દરેક પદની સાથે વર્જિત વિશેષણ લગાડીને જ દેવે અરહન્નકને સબોધિત કર્યો છે જેમ કે–'હે શ્રીવર્જિત ! હેહ્રી વર્જિત ! વગેરે સામાયિક, દેશાવકાશિક, પૌષધ, અતિથિસવિભાગ આ બધા શીલ છે અણુવ્રત પાચ છે ગુણવ્રત ત્રણ છે આ બધો શ્રાવકનો ધર્મ છે આરીતે ચાર શિક્ષાવ્રત, પાચ અણુવ્રત, અને ત્રણ ગુણવ્રત આમ બાર પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ અહી ચર્ચવામા આવ્યો છે ॥ સૂત્ર " ૨૨ " ॥

अभिन्नमुखरागनयनवर्णः=भयाभावादभिहतमुखनेत्रकान्तिभ , तथा-अदीनविमनो मानस =भयसशयरहितत्वात् विशादवैमनस्यरहितचित्तः, अतएव-निश्चल'=सुधीरः धर्मे दृढतर इत्यर्थः, निस्पन्दः=किंचिदपिस्पन्दरहितः, तूष्णीक कृतवाक्सयमः स मौन इत्यर्थ धर्मध्यानोपगतः धर्म यानमेव शरण कृत्य तत्परायणः विहरति= आस्तेस्म ॥सू०२२॥

પ્રકાર દેવ को मन में सबोधन करके उस अरहन्नक श्रमणोपासक ने मन ही मन कहा-और अभीत, अत्रस्त, अचलित, असभ्रान्त, अना कुल, अनुद्विग्न, चित्त बना रहा। निर्भय होने के कारण उस के मुख और नेत्र की कांति मे अन्तर नही आया।

भय और सशय से रहित होने की वजह से उस का चित्त विषाद एव वैमनस्य से रहित रहा। इसीलिये अपने धर्म में दृढ बना हुआ वह जरा भी उस से विचलित नही हुआ। किन्तु चुपचाप मौन धारण कर एक धर्म ध्यान को ही इस स्थिति में शरण मान उसी मे वह तत्पर बना रहा। अप्रार्थित प्रार्थित आदि जो सबोधन पद सूत्र में आये हैं उन का अर्थ इस प्रकार है-जिसे कोइ भी नहीं चाहता है ऐसा अप्रा र्थित मरण होता है उसे भी अरहन्नक श्रावक चाह रहा है।

इसलिये देव ने उसे अप्रार्थित प्रार्थित इस सबोधन से सबोधित किया है। देव ने यह समझ कर की यह अरहन्नक अपने धर्म पर यदि

। અરહન્નક શ્રમણોપાસકે પાતાના મનમા જ આમ કહ્યુ અને તે અભીત અત્રસ્ત, અચલિત, અસભ્રાત, અનાકુળ, અનુદ્વિગ્ન, ચિત્તથી શાતથઇને બેસી રહ્યો તે નિર્ભય હતો તેથી તેના મો અને આખોની કાતિમા જરાયે પરિવર્તન થયુ નહિ

ભય તેમજ સશય વગર હોવાથી તેનુ ચિત્ત વિષા અને વૈમનસ્ય રહિત હતુ એથી જ તે પોતાના ધર્મ પ્રત્યે દૃઢભાવ રાખતો તે જરાએ વિચલિત થયો નહિ, પણ ચુપચાપ મૌન ધારણ કરીને ફકત ધર્મધ્યાનને જ આ સ્થિતિમા શરણ માનીને તેમા તે તલ્લીન થઇ ગયો અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત વગેરે જે સબોધન પદો સૂત્રમા આવ્યા છે તેનો અર્થ આપ્રમાણે છે-કે જે મરણ ને ભેટવાનુ કોઈપણ ઇચ્છે નહિ તે મરણને અરહન્નક શ્રાવક ઇચ્છી રહ્યો હતો એથી જ દેવે તેને અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત આ જાતના સબોધનથી સબો ધિત કર્યો છે અરહન્નક જો પોતાનો ધર્મને વળગી રહેશે તો તેનો વિપાક

दढधम्मे नो दढधम्मे ? सीलव्वयगुणे किं चालेति जाव परिच्चयइ णो परिच्चयइ त्तिकट्टु, एव सपेहेमि, सपेहित्ता ओहि पउजामि, पउंजित्ता देवाणुप्पिय ओहिणा आभोएमि, आभोइत्ता उत्तरपुरत्थिमं० उत्तरविउव्वियं० ताए उक्किट्ठाए गईए जेणेव समुद्दे जेणेव देवाणुप्पिया ! तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवाणुप्पियस्स उवसग्ग करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिया भीया वा०, त जण्णं सक्के देविंदे देवराया वदइ सच्चेणं एसमट्ठे त दिट्ठेणं देवाणुप्पियाण इड्ढी जुई जसे भाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, त खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमतु णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो२ एवं करणयाए त्तिकट्टु पजलिउडे पायवडिए एयमट्ठ विणएणं भुज्जो२ खामेइ, खामित्ता अरहन्नयस्स दुवे कुंडलजुयले दलयति, दलयित्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि-पडिगए ॥ सू० २३ ॥

टीका।—'तएण से दिव्वे' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु स दिव्यः पिशाचरूपः=पिशाचरूपधारी, अरहन्नकम्०अरहन्नकनामक श्रमणोपासक=श्रावकं 'दोच्चपि' द्वितीयवारमपि, तच्चपि=तृतीयवारमपि, एवम्=उक्तप्रकारेण अवादीत्-हभो ! अरहन्नक० ! अप्रार्थित प्रार्थित ! नो खलु कल्पते-तव शीलव्रत०

'तएण से दिव्वे पिसायरूवे' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से दिव्वे पिसाय रूवे) उस पिशाचरूप धारी देव ने (अरहन्नग समणोपासग) उस श्रमणोपासक अरहन्नक से (दोच्चपि तच्च पि) दुबारा तिबारा भी (एव वयासी) ऐसा ही कहा की हे अरहन्नक०। अप्रार्थित प्रार्थित ! मुझ में ऐसी शक्ति नही

'तएण से दिव्वे पिसायरूवे' इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी "से दिव्वे पिसायरूवे" ते पिशाचरूप धारी देवे "अरहन्नग समणोपासग" श्रमणोपासक अरहन्नकथी "दोच्चपि तच्चपि" बीजी अने त्रीजी वखत पण "एव वयासी" आ प्रमाणे ज कहयु-"हे अरहन्नक०!, अप्रार्थित प्रार्थित तमारा शील विगेरे श्रावक धर्मने बदलवानी के

अंगुलियाहि गिण्हइ, गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं एव वयासी–हं भो ! अरहन्नगा ! अप्पत्थियपत्थिया णो खलु कप्पइ, तव सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ । तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो सचाएइ निग्गंथाओ० चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सते जाव निव्विन्ने त पोयवहणं सणिय२ उवरिं जलस्स ठवेइ, ठाविता त दिव्व पिसायरूव पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता अतलिक्खपडिवन्ने सखिं खिणियाइ जाव परिहिए अरहन्नग समणोवासयं एव वयासी –हं भो ! अरहन्नगा ! धन्नोऽसि णं तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्स णं तव निग्गथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नगया । एव खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं० मज्झगते महया सद्देणं आइक्खइ ४, एव खलु जबूद्दीवे२ भारहे वासे चपाए नयरीए अरहन्नए समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा णिग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा । तएण अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स० णो एयमट्ठ सद्दहामि०, तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था, गच्छामि ण अरहन्नयस्स अतिये पाउब्भवामि, जाणामि ताव अह अरहन्नग कि पियधम्मे ? नो पियधम्मे

मात्रान् यावत् ऊर्ध्वं गगने नीत्वाऽरहन्नके श्रावकमेवम्=उक्तप्रकारेण अवादीत्-हभो ! अरहन्नक ! अप्रार्थित प्रार्थित ! नो खलु कल्पते तव शीलव्रत०तथैव=सोऽरहन्नकः पूर्ववदेव यावत् धर्मध्यानोपगतो विहरति=आस्ते स्म० ।

किसी भय के मौन सहित धर्म ध्यान में ही मग्न देखा तो देख कर वह उस पर क्रोध के आवेश से अत्यत लाल पीला बन गया । और उस पोतयान को उस ने अपनी दोनो अगुलियो-मध्यमा एव तर्जनी अगुलियों से-पकड लिया । (गिण्हित्ता मत्तट्ठतलाइ जाव अरहन्नग एवं वयासी) पकड कर वह उसे ऊपर आकाश न सात आठ ताल प्रमाण आकाश भाग तक ले गया-ले जाकर फिर उस में अरहन्न श्रावक को इस प्रकार कहा -(ह भो अरहन्नगा । अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पइ तव सीलव्वय तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ) हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मुझे तुम्हारे इन शीलव्रत आदिकों को विचलित आदि करना उचित नही हैं अतः तुम ही खुशी से उन्हे छोड दो-नही तो मैं तुम्हारी इस नौका को यहा से पटक कर पानी में डुबो दूगा-जिस से तुम असमाधि प्राप्त होकर आर्तध्यानादि के वशवर्त्ति बन मरणकाल से पहिले मृत्युके वश हो जाओगे । देवके इस कहने पर अरहन्नक श्रावकने कुछ भी ध्यान नही दिया प्रत्युत उसे मन ही मन

કરીને ધર્મધ્યાનમા જ તલ્લીન જોયો ત્યારે તે તેના ઉપર-ક્રોધમા ભરાઈ લાલ પીળો થઇ ગયો, અને તેણે વહાણને પોતાની બે આગળીઓ-મધ્યમા અને તર્જની-વડે પકડી લીધુ " गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइ जाव अरहन्नग एव वयासी ' પકડીને તે વહાણને સાત આઠ તાલ પ્રમાણ જેટલુ આકાશમા લઇગયો અને લઇ જઇને તેણે અરહન્નક શ્રાવકને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(ह भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पइ तवसीलव्वय तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ)

હે અરહન્નક ! હે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! હુ તમને પોતાના શીલવ્રત વગેરેથી વિચલિત કરૂ તે યોગ્ય ન લેખાય જેથી તમે રાજીખુશીથી પોતાની મેળે જ તેમને ત્યજો નહિતો તમારા વહાણને હુ અહીથી પટકીને પાણીમા ડુબાડી દઇશ જેથી તમે અસમાધિને મેળવીને આર્તધ્યાન વગેરેના વશવર્તી થશો અને છેવટે મૃત્યુના સમય પહેલા જ મૃત્યુને ભેટશો દેવની આ વાત પર અરહન્નક શ્રાવકે જરાએ ધ્યાન આપ્યુ નહિ અને તેણે પોતાના મનમા જ

इत्यादि-येन त्वं मार्तदुर्घटवशार्तः अरमाधिमाप्तः अवशे चैव जीवितादू व्यपरोपयिष्यसे इत्यन्त पूर्वोक्तमेवावाय द्वितीयतृतीयवारमप्युक्तवानित्यर्थः। तथापि सोऽरहन्नकः श्रावकः अदीन विमनो मानसः=विषाददैमनस्य रहितचित्तः, निश्चलः=धीरः, निरुपन्दः=भयाभावद वम्परहितः=तूष्णीकः= भयरहिततत्वेन संभ्रमवाग्व्यापाररहितः यद्वा-कृतवाक् सयमः, धर्मध्यानोपगतः, धर्मध्यानशरणमुपागतः विहरति-आस्तेस्म०।

ततस्तदन्तर खलु स दिव्यः पिशाचरूपोऽरहन्नक धर्मध्यानोगत पश्यति, दृष्ट्वा बलिततरकम्=अत्यन्तम्०आशुरुप्त =झटिति क्रोधाविष्टस्तत् पोतवहन=नौका यन, द्वाभ्याम क्षलीभ्याम्=तर्जनीमध्यमाभ्या गृह्णाति। गृहीत्वा सप्ताष्टतालप्रमाण

हैं कि मैं तुम्हारे इन शीलादिकों का परिवर्तन आदि कर सकू अतः तुम स्वय ही इन का परित्याग कर दो-तो ठीक है-नही तो मैं तुम्हारी नौका को पानी में डुबा दूगा।

इस से तुम, आर्त्त रौद्रध्यान के वशवर्ती होकर असमाधि को प्राप्त हो जाओगे-तथा मरण काल से पहिले ही जीवन से रहित हो जाओगे। इस तरह जैसा उस ने प्रथम वार कहा-द्वितीय और तृतीय वार भी अरहन्नक श्रावक को वैसा ही कहा-(तएण से दिव्वे पिसाय रूवे अरहन्नग धम्मज्झाणोवगय पासइ पसित्ता बलियतराग आसुरुत्ते त पोयवहण दोहि अगुलियाहिं गिण्हइ) इस के बाद जब उस पिशाचरूप धारी देव ने अपनी बातें पर ध्यान नही देते हुए अरहन्नक श्रावक को विषाद दैमनस्य से रहित चित्त होकर निश्चल रूप से विना

, તેમા કોઇ પણ જાતનો ફેરફાર કરવાની મારામા તાકાત નથી, જો તમે પોતાની મેળેજ એમનો ત્યાગ કરો તો ઠીક ! નહીં તો તમારા વહાણને હુ પાણીમા ડુબાડીદઈશ

તેથી તમે આર્ત્તરૌદ્ર ધ્યાનના વશવર્તી થઇને અસમાધિને પ્રાપ્તકરશો તેમજ મૃત્યુના સમય પહેલા જ મૃત્યુને ભેટશો આ પ્રમાણે જેમ તેણે પહેલી વખત કહ્યુ હતું તે પ્રમાણે જ બીજી અને ત્રીજી વખત પણ અરહન્નક શ્રાવકને દેવે કહ્યુ

(तएण से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नग धम्मज्झाणोवगय पासइ पासित्ता बलियतराग आसुरुत्ते त पोयवहण दोहिं अंगुलियाहिं गिण्हइ)

ત્યાર બાદ પિશાચરૂપ ધારી દેવે અરહન્નક શ્રાવકને વિષાદ અને વૈમનસ્ય રહિત ચિત્તવાળો થઇને નિશ્ચળ રૂપથી, ભય વગર થઇને, મૌન ધારણ

मात्रान् यावत् ऊर्ध्वं गगने नीत्वाऽरहन्नके श्रावकमेवम्=उक्तप्रकारेण अवादीत्-हभो ! अरहन्नक ! अप्रार्थित प्रार्थित ! नो खलु कल्पते तव शीलव्रत०तथैव=सोऽरहन्नकः पूर्ववदेव यावत् धर्मध्यानोपगतो विहरति=आस्ते स्म० ।

किसी भय के मौन सहित धर्मध्यान में ही मग्न देखा तो देख कर वह उस पर क्रोध के आवेश से अत्यत लाल पीला बन गया । और उस पोतयान को उस ने अपनी दोनो अगुलियों-मध्यमा एव तर्जनी अगुलियों से-पकड लिया । (गिण्हित्ता मत्तट्ठतलाइ जाव अरहन्नग एव वयासी) पकड कर वह उसे ऊपर आकाश न सात आठ ताल प्रमाण आकाश भाग तक ले गया-ले जाकर फिर उस में अरहन्न श्रावक को इस प्रकार कहा -(ह भो अरहन्नगा । अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पइ तव सीलव्वय तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ) हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मुझे तुम्हारे इन शीलव्रत आदिकों को विचलित आदि करना उचित नही है अतः तुम ही खुशी से उन्हे छोड दो-नही तो मैं तुम्हारी इस नौका को यहा से पटक कर पानी में डुबो दूगा-जिस से तुम असमाधि प्राप्त होकर आर्त्तध्यानादि के वशवर्त्ति बन मरणकाल से पहिले मृत्युके वश हो जाओगे । देवके इस कहने पर अरहन्नक श्रावकने कुछ भी ध्यान नही दिया प्रत्युत उसे मन ही मन

કરીને ધર્મધ્યાનમા જ તલ્લીન જોયો ત્યારે તે તેના ઉપર-ક્રોધમા ભરાઈ લાલ પીળો થઈ ગયો, અને તેણે વહાણને પોતાની બે આગળીઓ-મધ્યમા અને તર્જની-વડે પકડી લીધુ " गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइ जाव अरहन्नग एव वयासी ' પકડીને તે વહાણને સાત આઠ તાલ પ્રમાણ જેટલુ આકાશમા લઇગયો અને લઇ જઇને તેણે અરહન્નક શ્રાવકને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(ह भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पइ तवसीलव्वय तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ)

હે અરહન્નક ! હે આપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! હુ તમને પોતાના શીલવ્રત વગેરેથી વિચલિત કરૂ તે યોગ્ય ન લેખાય એથી તમે રાજીખુશીથી પોતાની મેળે જ તેમને ત્યજો નહિતો તમારા વહાણને હુ અહીથી પટકીને પાણીમા ડૂબાડી દઇશ જેથી તમે અસમાધિને મેળવીને આર્ત્તધ્યાન વગેરેના વશવર્તી થશો અને છેવટે મૃત્યુના સમય પહેલા જ મૃત્યુને ભેટશો દેવની આ વાત પર અરહન્નક શ્રાવકે જરાએ ધ્યાન આપ્યુ નહિ અને તેણે પોતાના મનમા જ

ततस्तदनन्तर खलु स पिशाचरूपः=पिशाचरूपधारी देवः, अरहन्नकं यदा नो शक्नोति नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनात् चालयितुं वा क्षोभयितुं वा विपरिणमयितुं वा 'ताहे' तदा स पिशाचः 'सते' श्रान्तः=परिश्रम प्राप्तः स्थगनः, मनसा खिन्न इत्यर्थः, यावत्-अत्र यावत् करणेन-'तते' परितते इत्यनयो संग्रहः । तान्तः-शरीरेण खेद प्राप्तः, परितान्तः=सर्वथा खिन्नः, 'निव्विन्ने' निर्विण्णः=उपसर्गकरणात् प्रतिनिवृत्तः, तत् पोतवहनं=नौकायानं, शनैः शनैरुपरिजलस्य, 'ठवेइ' स्थापयति० 'ठावित्ता' स्थापयित्वा तद् दिव्यं पिशाचरूपं 'पडिसाहरइ' प्रतिसंहरति

संबोधित कर "मुझे इस निग्रन्थ प्रवचनसे कोइ भी देव विचलित नहीं कर सकता है" ऐसा ही विचार-कहा-तथा अडिग भावसे निर्भय बन मौन लिये हुए अपने धर्मध्यानमें ही वह स्थिर रहा।

(तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ, निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे संते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं उवरिजलस्स ठवेइ) इस तरह वह पिशाच रूप धारी देव जब अरहन्नक श्रावक को निर्ग्रन्थ प्रवचन० से चलाने के लिये, उस से क्षुभित करने के लिये, विपरिणमित करने के लिये समर्थ नहीं हो सका तब श्रान्त और भग्न मन से खिन्न-होकर वह उपसर्ग करने रूप अपने कृत्य से प्रति निवृत्त हो गया। और धीरे २ आकाश से उतार उस पोतयान को उस ने पानी के ऊपर रख दिया। (ठावित्ता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ)

વિચાર કરીને કહ્યું—"આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનથી મને કોઇ પણ દેવ હટાવી શકશે નહિ" આમ વિચારી ને નિશ્ચળ અને નિર્ભય થઇને તે મૌન પાળતો તે પોતાના ધર્મધ્યાન માજ તલ્લીન રહ્યો

(तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तएवा विपरिणामित्तएवा ताहे संते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं उवरिं जलस्स ठवेइ)

આ પ્રમાણે પિશાચ રૂપધારી દેવ જ્યારે અરહન્ન શ્રાવકને નિર્ગ્રંથ પ્રવચનથી વિચલિત કરવામા, તેનાથી ક્ષુભિત કરવામા, વિપરિણમિત કરવામા શક્તિમાન થઈ શકયો નહી ત્યારે શ્રાંત અને ભગ્નમનથી ખિન્ન થઇને ઉપસર્ગ કરવા રૂપ પોતાના કર્મથી પ્રતિનિવૃત્ત થઈ ગયો અને આકાશમાથી ધીમેધીમે ઉતરીને તેણે વહાણ ને પાણી ઉપર મૂકી દીધુ (ठावित्ता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ)

त्रिलीनयति० । प्रतिसंहृत्य=पिशाचरूपमन्तर्हित कृत्वा दिव्य=प्रशस्त परमसुदर देवरूप विकुर्वति प्रादुर्भावयति । विकुर्वित्वा = दिव्य देवरूप प्रादुर्भाव्य, अन्तरिक्षप्रतिपन्नः=आकाशस्थित', 'सखिखिणियाइ' सकिङ्किणीकानि यावद् प्रवरवस्त्राणि परिहितः, स देवोऽरहन्नक श्रमणोपासकमेव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हभो ! अहो ! अरहन्नक ! धन्योऽसि खलु त्व, हे देवानुप्रिय ! यावत् त्वया जन्मजीवितफल लब्ध, यस्य खलु तव निर्ग्रन्थे प्रवचने इममेतद्रूपा प्रति-

पत्तिः=सम्यक्श्रद्धा लब्धा=उपार्जिता प्राप्ता=स्वायत्तीकृता०, अभिमुखमन्वागता=

रखकर फिर उसने वह अपना दिव्य पिशाच का रूप समेट लिया-अन्तर्हित कर लिया- (पडिसाहरित्ता दिव्व देवरूव विउव्वइ, विउव्वित्ता अतलिक्खपडिवन्ने सखिखिणियाइ जाव परिहिए अरहन्नग जाव समणोवासय एव वयासी) अन्तर्हित कर के फिर बाद में वह अपने वास्तविक दिव्यरूप में आ गया ।

दिव्यरूप में आकर के उसने जो उस समय वस्त्रो को धारण कर रखा था-वे क्षुद्र घटिकाओ से युक्त बडे ही सुन्दर थे । आकाश में रह कर ही उसने श्रमणोपासक अरहन्नक से इस प्रकार कहा-(ह भो अरिहन्नगा ! धन्नो सि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्सण तव निग्गये पावयणे इमेयारूवे पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया) अहो अरहन्नक ! तुम धन्य हो । हे देवानुप्रिय ! तुमने यावत् जन्म और जीवन का फल प्राप्त कर लिया है जो इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मे इस प्रकार

ભૂકીને તેણે પોતાનુ દિવ્ય પિશાચરૂપ અ તર્હિત કરી લીધુ

पडिसाहरित्ता दिव्व देवरूव विउव्वइ, विउव्वित्ता अतलिक्खपडिवन्ने सखिणियाइ जाव परिहिए अरहन्नग जाव समणोवासय एव वयासी)

અન્તર્હિત કરીને તેણે પોતાના સાચા દિવ્ય રૂપને ફરી ધારણ કરી લીધુ

દિવ્ય રૂપમા પહેરેલા તેના વસ્ત્રો નાની નાની ઘૂઘરીઓવાળા ખૂબજ સુદર હતા આકાશમા સ્થિર રહીને તેણે શ્રમણોપાસક અરહન્નકને આ પ્રમાણે કહ્યુ-

(ह भो अरिहन्नगा धन्नोसि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्स ण तव निग्गये पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिमुखमन्नागया)

હે અરહન્નક તમે ધન્ય છો ! હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સપૂર્ણ પણે જન્મ અને જીવનનુ ફળ મેળવી લીધુ છે કેમ કે આ નિગ્રથ પ્રવચનમા આ રીતે

सम्यगासेविता वर्त्तते०। हे देवानुप्रिय ! एवम्=अमुना प्रकारेण खलु शक्रो देवेन्द्र =परमैश्वर्यवत्त्वाद्देवानामिन्द्रः, देवराजः = देवानां राजा कान्त्यादिगुणाधिक्येन विराजमानत्वाद्, सौधर्मे=सौधर्मनामके प्रथमे कल्पे, सौधर्मावतंसके विमाने सुधर्मायां सुधर्माख्यायां सभायां देवसभायां बहूनां देवानां मध्यगतः=मध्ये स्थितः महता शब्देन=उच्चैः स्वरेण, 'आइक्खइ' आख्याति=सामान्यरूपेण ब्रवीति, भाषते=विशेषतः कथयति, प्रज्ञापयति=सामान्यतो बोधयति, प्ररूपयति, विशेषतः प्रतिबोधयति०। किमित्याह 'एव खलु' इत्यादिना।

की यह सम्यक् श्रद्धा प्राप्त की है और उसे अपने आधीन कर लिया है। तथा वह श्रद्धा इस समय तक भी तुम्हारे द्वारा अच्छी तरह अचल रूप में सेवित हो रही है। (एव खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्म वडिंसए विमाणे सभाए) सुहम्माए बहूण देवाण मज्झगए महया सद्देण आइक्खई ४) मैंने तुम्हारे साथ ऐसा क्यों किया इसका कारण यह है कि हे देवानुप्रिय ! एक दिवस परम ऐश्वर्यशाली देवों के इन्द्र शक्र देवराज ने सौधर्म नाम के प्रथम कल्प में सौधर्मावतंसक विमान में अनेक देवों के बीच में बैठकर अपनी सुधर्मासभा में उच्चस्वर से पहिले तो सामान्य रूप से, कहा, बाद में भाषण द्वारा विशेष रूप से कहा। पहिले सामान्य रूप से समझाया, बाद में विशेषरूप से समझाया। उस मे उन्हों ने कहा- (एव खलु जम्बूद्दीवे २ भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए सम

તમે સમ્યક્ શ્રદ્ધા મેળવી છે અને તેને સ્વાધીન બનાવ્યુ છે' અત્યાર સુધી પણ તમે તે શ્રદ્ધા ને જ સારી રીતે અચળ રૂપે વળગી રહ્યા છે

(एव खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूण देवाण०मज्झगए महए सद्देण आइक्खई४)

મે જે કઇ તમારી સાથે વર્તન કર્યુ છે તેની પાછળનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે હે દેવાનુપ્રિય ! એક દિવસે પરમ ઐશ્વર્યશાળી દેવોના ઈન્દ્ર શક્ર દેવરાજે સૌધર્મનામના પહેલા કલ્પમા સૌધર્માવતંસક વિમાનમા ઘણા દેવોની વચ્ચે બેસીને પોતાની સુધર્મા સભામા મોટા સાદે પહેલા તો સામાન્ય રૂપે કહ્યુ અને ત્યાર બાદ પોતાના ભાષણ વડે વિશેષ રૂપમા કહ્યુ તેઓ એ પહેલા સામાન્ય અને ત્યાર પછી વિશેષ રૂપમા સમજાવતા કહ્યુ —

(एव खलु जंबूद्दीवे२ भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए समणोवासए

एव खलु जम्बूद्वीपेद्वीपे जम्बूद्वीपनामके द्वीपे भारते वर्षे=दक्षिणभरतक्षेत्रे चम्पायां नगर्याम् अरहन्नक श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीवो यावत्-सम्यक्त्वमूलदेशविरतिलक्षणे धर्मे दृढचित्तो वर्तते, असौ नो खलु शक्य केनापि देवेन वा दानवेन वा इदमुपलक्षणम्- किन्नरेण वा, किंपुरुषेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा इतिसंयोज्यम्० । तत्र देवो वैमानिको ज्योतिष्को वा दानवो भवनपति, इतरे किन्नरादयो व्यन्तरभेदाः, ' णिग्गथाओ ' नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनात् चालयितु वा यावत् क्षोभयितु वा, 'विपरिणामित्तए' विपरिणमयितु=विपरीताध्यवसायोत्पादनेनान्यथाभाव जनयितुं वा । जम्बूद्वीपान्तर्गतभरतक्षेत्रे चम्पानगरी निवासी-अरहन्नक नामकः श्रावको वे नापि देवादिना श्रावकधर्माच्चालयितु न शक्यत इतिभावः।

णोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा णिग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा)

देखो-जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में दक्षिण भरत क्षेत्र में, चपा नाम की नगरी में जीव अजीव आदि तत्वों का ज्ञाता अरहन्नक नाम का श्रमणोपासक सेठ रहता है।

यह सम्यक्त्व मूल देश विरति रूपधर्म में इतना दृढचित्त हैं कि यह किसी भी देव दानव, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व द्वारा अपने निर्ग्रन्थ प्रवचनरूप गृहीत धर्म से विचलित नही किया जा सकता है।

क्षुभित नहीं किया जा सकता है। विपरीत अध्यवसाय के उत्पादन से उसमें अन्यथा भाव उत्पन्न नहीं किया जा सकता है इन में वैमानिक एव ज्योतिषी देवो का देव पद से तथा भवनपति का दानव पद से ग्रहण हुआ है। शेष किन्नरादिको का कि जो व्यन्तर देव हैं उपलक्षण से ग्रहण किया गया है।

અહિગય જીવાજીવે નો खलु सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा णिग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा)

જુઓ-જે બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા દક્ષિણ ભરતક્ષેત્રમા ચપ નામની નગરીમા જીવ અજીવ વગેરે તત્વોને જાણનાર અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક શેઠ રહે છે.

તે સમ્યકત્વમૂળ દેશ વિરતિ રૂપ ધર્મમા આટલો બધો સ્થિર ચિત્ત છે કે ગમે તે દેવ દાનવ, કિન્નર કિંપુરુષ મહોરગ, ગ ધર્વ વડે પણ પોતાના નિર્ગ્રથ પ્રવચન રૂપ ધર્મથી તે વિચલિત થતો નથી

ક્ષુભિત તેમજ વિપરીત અધ્યવસાયના ઉત્પાદનથી તેમા બીજો ભાવ ઉત્પન્ન થતો નથી અહીયા દેવપદથી વૈમાનિક અને જ્યોતિષી દેવોનુ તેમજ દાનવપદથી ભવનપતિનુ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યુ છે

तत =शक्रदेवेन्द्रवचनश्रवणानन्तर खलु अहं हे देवानुप्रिय ! शक्रस्य नो एतमर्थं श्रद्दधामि नो प्रत्येमि नो रोचयामि, शक्रोक्तवाक्यार्थे मम विश्वासो न जात इत्यर्थः । ततः खलु ममायमेतद्रूप =वक्ष्यमाणरूपः अभ्यर्थितः यावत्-चिन्तितः, प्रार्थितः, कल्पितः, मनोगतः सङ्कल्प' समुदपद्यत=समभवत्-गच्छामि खलु अरहन्नकस्यान्तिके=समीपे प्रादुर्भवामि, तावद् अहम् अरहन्नक, शक्रेण प्रशमितोऽरहन्नकः स कीदृशो वर्तते ' किं पियधम्मे ' किं प्रियधर्मा=प्रियो धर्मो यस्य स प्रियधर्मा, प्रीतिभावेन सुखेन च धर्मस्य स्वीकारात् प्रियधर्मा वर्तते किम्, अथवा ' नो पियधम्मे ' नो प्रियधर्मा स नास्ति प्रियधर्मा, तथा-किमसौ ' दढधम्मे ' दृढधर्मा विपत्सूपस्थितास्वपिधर्मस्यापरित्यागकरणात् दृढ =स्थिर' धर्मो यस्य स दृढधर्मा,

तात्पर्य इस का केवल एक यही है कि जम्बूद्वीप नाम का एक द्वीप है । उस में भरत क्षेत्र नाम का क्षेत्र है । उस मे चपा नाम की नगरी है । यह अरहन्नक नाम का श्रावक उसी नगरी का निवासी है । वह अपने धर्म में इतना अधिक दृढ है कि उसे अपने धर्म से विचलित करने की किसी भी देव दानव में शक्ति नही हैं । (तएण अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स०णो एयमट्ठं सद्दहामि० तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था) जब शक्र देवेन्द्र ने इस प्रकार कहा-तो उनके कथन को सुननेके बाद हे देवानुप्रिय मुझे उनके उन वचनों पर विश्वास-श्रद्धा नही हुई वे उनके वचन मुझे रुचिकारक नही हुए । अतः मेरे मनमें इस प्रकार का अभ्यर्थित, चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित सकल्प उत्पन्न हुआ (गच्छामिण अरहन्नस्स अंतिए पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं

તાત્પર્ય—આ પ્રમાણે છે કે જબૂદ્વીપનામે દ્વીપ છે તેમા ભરતક્ષેત્ર નામે ક્ષેત્ર છે તે ક્ષેત્રમા ચપા નામે નગરી છે તે અરહન્નક શ્રાવક ચપા નામે નગરીમા વસે છે તે પોતાના ધર્મમા એટલો બધો સુદૃઢ છે કે દેવ દાનવમા પણ તાકાત નથી કે તેઓ તેને પોતાના ધર્મથી હટાવી શકે

(तएण अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स० णो एयमट्ठं सद्दहामि० तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था)

જ્યારે શક્ર દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે કહ્યુ ત્યારે તેમની વાત સાભળીને મને તેમની વાત ઉપર શ્રદ્ધા તેમજ વિશ્વાસ બેઠો નહિ મને તેમના વચન ગમ્યા પણ નહિ એથી મારા મનમા આ જાતનો અભ્યર્થિત, ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો

(गच्छामि ण अरहन्नस्स अंतिए पाउब्भवामि जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं

अथवा-' नो दृढधर्म्मे ' नो दृढधर्मा सोऽरहन्नको नास्ति दृढधर्मा ? स च शील-व्रतगुणान् किं चालयति=अपनयति यावत् परित्यजति, किं वा नो परित्यजति अत्र यावत् करणात्-क्षोभयति किंवा नो क्षोभयति ? खण्डयति किंवा नो खण्डयति ? उज्झति किं वा नो उज्झति ? इति बोध्यम् । इति कृत्वा=इत्येव मनसि विचार्य, एव समेक्षे, सम्प्रेक्ष्य अवधिम्=अवधिज्ञान प्रयुङ्क्ते प्रेरयामि प्रयुज्य देवानुप्रियम् आ-भोगयामि=पश्यामि । आभोग्य उत्तरपौरस्त्यम्-ईशानकोणदिग्भागं गच्छामि, गत्वा, ' उत्तरविउव्विय ' उत्तरवैक्रिय करोमि, कृत्वा तयोत्कृष्टया गत्या=देवस म्बन्धिन्या गत्या यत्रैव समुद्रः, यत्रैव देवानुप्रियस्तत्रैवोपागच्छामि, उपागत्य दे-

अरहन्नग किं पियधम्मे ? नो पियधम्मे दढधम्मे नो दढधम्मे ? सील व्वयगुणे किं चालेंति, जाव परिच्चयइ, णो परिच्चयइ) कि चलो अरह-न्नक के पास चलें-और चलकर यह ज्ञातकरें कि अरहन्नक को धर्म प्रिय है, कि नही है, वह धर्म में दृढ है कि नही है । वह अपने शीलों को, व्रतो को और गुणों को छोडता है अथवा नही छोडता है, उन्हें क्षुभित करता है, या नही करता है, उनका खडन करता है या नहीं करता है। प्रवचन में एक देश से भी उस में अतिचार लगाता है या नही लगाता है (त्तिकट्टु एव सपेहेमि) हे अरहन्नक ! मैंने ऐसा विचार किया (सपेहित्ता ओहिं पउजामि) विचार करके फिर मैंने अपने अव-धिज्ञान को जोडा (पउजित्ता देवाणुप्पिय ओहिणा आभोएमि, आभो-इत्ता उत्तरपुरत्थिम० उत्तर विउव्विय० ताए उक्किट्ठाए गइए जेणेव देवा-णुप्पिया तेणेव उवागच्छामि) अवधिज्ञान को जोड कर मैंने उसके द्वारा आप देवानुप्रिय को देखा ।

पियधम्मे नो दढधम्मे ? सीलव्वय गुण किं चालेंति जाव परिच्चयइ, णो परिच्चयइ

કે ચાલો અરહન્નકની પાસે જઈએ અને જઈને તપાસ કરીએ કે તેને ધર્મ પ્રિય છે કે કેમ ? તે પોતાના શીલોને, વ્રતોને અને ગુણોને ત્યજે છે કે કેમ ? તેમને ક્ષુભિત કરે છે કે નહિ ? તેમજ તેમનુ ખડન કરે છે કે કેમ ? પ્રવચનમા એક દેશથી પણ તેમા અતિચાર લાગે છે કે કેમ ? (તિ કટ્ટુ એવ સપેહેમિ) હે અરહન્નક ! મે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો (સપેહિત્તા ઓહિં પઉજામિ) વિચાર કરીને મે મારા અવધિજ્ઞાનથી સ ગતિ જોસાડી

(પઉજિત્તા દેવાણુપ્પિય ઓહિણા આભોએમિ આભોइત્તા उत्तरपुरत्थिम० उत्तर विउव्विय०ताए उक्किट्ठाए गइए जेणेव समुद्दे जेणेव देवाणुप्पिया तेणेव उवागच्छामि અને તેની સ ગતિ વડે દેવાનુપ્રિય તમને મે જોયા

तत्त=शक्रदेवेन्द्रवचनश्रवणान्तरं खलु अहं हे देवानुप्रिय ! अनेकस्य नो एतमर्थं श्रद्दधामि नो प्रत्येमि नो रोचयामि, शक्रोक्तवाक्यार्थे मम विश्वासो न जात इत्यर्थः । ततः खलु ममायमेतद्रूप'=वक्ष्यमाणरूपः अभ्यर्थितः यावत्-चिन्तितः प्रार्थितः, कल्पित', मनोगतः सङ्कल्पः समुदपद्यत=समभवत्-गच्छामि खलु अरहन्नकस्यान्तिके=समीपे प्रादुर्भवामि, तावद् अहम् अरहन्नक, शक्रेण प्रशंसितोऽरहन्नकः स कीदृशो वर्तते ' किं पियधम्मे ' किं प्रियधर्मा=प्रियोधर्मो यस्य स प्रियधर्मा, प्रीतिभावेन सुखेन च धर्मस्य स्वीकारात् प्रियधर्मा वर्तते किम्, अथवा ' नो पियधम्मे ' नो प्रियधर्मा स नास्ति प्रियधर्मा, तथा-किमसौ ' दृढधम्मे ' दृढधर्मा विपत्स्वपस्थितास्वपिधर्मस्यापरित्यागकरणात् दृढ=स्थिर धर्मो यस्य स दृढधर्मा,

तात्पर्य इस का केवल एक यही है कि जम्बूद्वीप नाम का एक द्वीप है । उस में भरत क्षेत्र नाम का क्षेत्र है । उस में चपा नाम की नगरी है । यह अरहन्नक नाम का श्रावक उसी नगरी का निवासी है । वह अपने धर्म में इतना अधिक दृढ है कि उसे अपने धर्म से विचलित करने की किसी भी देव दानव में शक्ति नहीं है । (तएणं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स०णो एयमट्ठं सद्दहामि० तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था) जब शक्र देवेन्द्र ने इस प्रकार कहा-तो उनके कथन को सुननेके बाद हे देवानुप्रिय मुझे उनके उन वचनों पर विश्वास-श्रद्धा नहीं हुई वे उनके वचन मुझे रुचिकारक नहीं हुए । अतः मेरे मनमें इस प्रकार का अभ्यर्थित, चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित सकल्प उत्पन्न हुआ (गच्छामिणं अरहन्नस्स अंतिए पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं

તાત્પર્ય-આ પ્રમાણે છે કે જંબૂદ્વીપનામે દ્વીપ છે તેમા ભરતક્ષેત્ર નામે ક્ષેત્ર છે તે ક્ષેત્રમા ચપા નામે નગરી છે તે અરહન્નક શ્રાવક ચપા નામે નગરીમા વસે છે તે પોતાના ધર્મમા એટલો બધો સુદૃઢ છે કે દેવ દાનવમા પણ તાકાત નથી કે તેઓ તેને પોતાના ધર્મથી હટાવી શકે

(तएणं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स० णो एयमट्ठं सद्दहामि० तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था)

જ્યારે શક્ર દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે કહ્યુ ત્યારે તેમની વાત સાભળીને મને તેમની વાત ઉપર શ્રદ્ધા તેમજ વિશ્વાસ બેઠો નહિ મને તેમના વચન ગમ્યા પણ નહિ એથી મારા મનમા આ જાતનો અભ્યર્થિત, ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો

(गच्छामि णं अरहन्नस्स अंतिए पाउब्भवामि जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं

स्वधर्म दृढतारूप इति, पराक्रमः=धर्माराधनजन्यशक्तिविशेषः, लब्धः=उपार्जितः, प्राप्तः=स्वायत्तीकृतः, अभिसमन्वागतः=सम्यगासेवितः । अहो ! अरहन्नक ! भवतामृद्ध्यादयो मया दृष्टा , यश्च पराक्रमो धर्माराधनालब्धः प्राप्तोऽभिसमन्वागतश्च सोऽपि मया दृष्ट इति भावः ।

तत्=तस्मात् क्षमयामि, खलु हे देवानुप्रियाः ! भवन्तः, हे देवानुप्रियाः ! क्षमन्तु भवन्त हे देवानुप्रिया ! क्षन्तुमर्हन्ति भवन्तः । मत्कृताऽपराध क्षन्तु योग्या भवन्त इति भावः । नापि भूयोभूयः एव करणतया=पुनः पुनरेव न करिष्यामि, इति कृत्वा=एवमुक्त्वा, प्राञ्जलिपुट =सयोजिताञ्जली कृतकरद्वयपुटः, पादपतितः पश्चाङ्गनमनपूर्वक चरणयोः पतितः सन् एतमर्थम्=स्वकृतापराधरूप विनयेन=विन-

---

रूप पुरुषकार आपका धर्माराधन जन्य शक्तिरूप पराक्रम, ये सब गुण मैने देख लिया। इन सब गुणों को आपने अच्छी तरह उपार्जितकिया है ।

अच्छी तरह इन सब को आपने अपने आधीन बनाया है । और अच्छी तरह से इन सब गुणों को आपने सेवित किया है । (त खामेमि, ण देवाणुप्पिया ! खम तु ण देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो२ एव करणयाए त्तिकट्टु पजलिउडे पायवडिए एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेइ) अतः हे देवानुप्रिय ! आप को मैं खमाता हूँ । आप देवानुप्रिय मुझे क्षमा करे ! मैंने अभी तक जो आपके अपराध किये है मैं उन की आपसे क्षमा चाहता हू । आप मेरे अपराधों को क्षमा करने योग्य है । अब आगे मैं ऐसा नही करूँगा । इस प्रकार कह कर उस देवने अपने दोनो हाथों को जोडा और जोड़ कर फिर वह उस अरहन्नक श्रावक के चरणों में

આત્મિક બળ, તમારૂ ધર્મમા દઢરૂપ પુરુષકાર, ધર્મની આરાધનારૂપ તમારૂ પરાક્રમ આ બધા ગુણો મે જોઇ લીધા છે તમે આ બધા ગુણો સારી પેઠે મેળવ્યા છે આ બધાને સારી પેઠે તમે પોતાને સ્વાધીન બનાવ્યા છે આ સર્વે ગુણોનુ સેવન તમે સારી રીતે કર્યુ છે

(त खामेमि ण देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो २ एव करणयाए त्तिकट्टु पजलिउडे पायवडिए एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेइ)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને હુ ખમાવુ છુ દેવાનુપ્રિય તમે મને ક્ષમા કરો મે જે કઈ પણ તમારા અપરાધ કર્યા છે હુ તેમની તમારાથી ક્ષમા ચાહુ છુ તમે મારા અપરાધો ક્ષમા કરવા યોગ્ય છો હવેથી ભવિષ્યમા કોઇ પણ વખત મારાથી આવુ અયોગ્ય વર્તન થશે નહિ આ રીતે કહીને તે દેવે પોતાના બન્ને હાથ જોડયા અને ત્યારબાદ તેણે અરહન્નક શ્રાવકના પગમા

वानुभियस्योपसर्गं करोमि । नो चैव खलु देवानुप्रियाः ! भीता वा त्रसिता वा उद्विग्ना वा सजातभया वा जाताः । तद्=तस्माद् यत् खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो वदति, सत्यः खलु एषोऽर्थो दृष्टः । तद् तस्मात् दृष्टा खलु देवानुप्रियाणां भव स्ताम् ऋद्धिः=गुणानामैश्वर्यम्, द्युतिः=आन्तर तेजः, यशः=ख्यातिः, यावद्-अत्र यावच्छब्देनेद द्रष्टव्यम् बल=शारीर पराक्रम, वीर्यम्=आत्मिक बलम्, पुरुषकारः

देखकर मैं ईशान कोण की ओर गया। वहा जाकर मैंने उत्तर वैक्रिय की रचना की-रचना कर उस देवभव सम्बन्धी उत्कृष्ट गति से जहां समुद्र था और जहां आप देवानुप्रिय थे वहा मैं आया (उवागच्छित्ता देवाणुपियस्स उवसग्ग करेमि) आकर मैंने फिर आप देवानुप्रियके ऊपर उपसर्ग करना प्रारभ करदिया। (णो चेवण देवाणुप्पिया भीया वा त जण्णं सक्के देविंदे देवराया वदइ सच्चे ण एसमट्ठे) परन्तु आप देवानुप्रिय भीत नहीं हुए, त्रस्त नही हुए त्रसित नही हुए उद्विग्न नहीं हुए और न उत्पन्न हुआ है भय जिस को ऐसे ही हुए। इस लिये मैंने जैसा आपके विषय में शक्रदेव राजा देवेन्द्र ने कहा था वैसा ही आपको देखा-(त दिट्ठेण देवाणुप्पियाण इड्ढी, जुई जसे जाव परक्कमे, लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए) अब मैंने आपके गुणों का ऐश्वर्य देखलिया प्रत्यक्ष कर लिया। आपकी द्युति-आन्तरतेज, आपकी ख्याति यावत् शब्द से आप का शारीरिक पराक्रम, आपका आत्मिक बल आपका स्वधर्म मे दृढता

જોઈને હું ઈશાન કોણ તરફ ગયો ત્યા જઈને મે ઉત્તર વૈક્રિયની રચના કરી, રચના કરીને તે દેવભવ સબંધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી જ્યા સમુદ્ર હતો અને જ્યા દેવાનુપ્રિય તમે હતા ત્યા આવ્યો

(उवागच्छित्ता देवाणुप्पियस्स उवसग्ग करेमि)

આવીને દેવાનુપ્રિય તમારા ઉપર ઉપસર્ગ (બાધા) શરૂ કર્યો

(णो चेव ण देवाणुप्पिया भीया वा त जण्ण सक्के देविंदे देवराया वदइ सच्चे ण एसमट्ठे)

પણ દેવાનુપ્રિય તમે તેનાથી ડર્યો નથી, ત્રસ્ત થયા નથી, ત્રસિત થયા નથી, ઉદ્વિગ્ન થયા નથી તેમજ તમારામા ભય ઉત્પન્ન થયેા નથી એથી તમારા વિષે શક્ર દેવરાજે જે કઈ કહ્યુ છે તે તમને જોતા બરોબર લાગે છે

(त दिट्ठेण देवाणुप्पियाण इड्ढी, जुई जसे जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए)

હવે મે તમારા ગુણોની સમૃદ્ધિ જોઈ લીધી છે તમારી દ્યુતિ આતર તેજ, તમારી પ્રસિદ્ધિ યાવત્ શબ્દ વડે તમારા શરીરનુ શૂરાતન, તમારૂ

स्वधर्मे दृढतारूप इति, पराक्रमः=धर्माराधनजन्यशक्तिविशेषः, लब्धः=उपार्जितः, प्राप्तः=स्वायत्तीकृतः, अभिसमन्वागतः=सम्यगासेवितः। अहो ! अरहन्नक ! भवतामृद्ध्यादयो मया दृष्टा, यश्च पराक्रमो धर्माराधनालब्धः प्राप्तोऽभिसमन्वागतश्च सोऽपि मया दृष्ट इति भावः।

तत्=तस्मात् क्षमयामि, खलु हे देवानुप्रियाः ! भवन्तः, हे देवानुप्रियाः ! क्षमन्तु भवन्त हे देवानुप्रिया ! क्षन्तुमर्हन्ति भवन्तः। मत्कृताऽपराध क्षन्तु योग्या भवन्त इति भावः। नापि भूयोभूयः एव करणतया=पुनः पुनरेव न करिष्यामि, इति कृत्वा=एवमुक्त्वा, प्राञ्जलिपुट=संयोजिताञ्जली कृतसद्धयपुटः, पादपतितः पश्चाद्वन्दनपूर्वक चरणयोः पतितः सन् एतमर्थम्=स्वकृतापराधरूप विनयेन=विन-

---

रूप पुरुषकार आपका धर्माराधन जन्य शक्तिरूप पराक्रम, ये सब गुण मैंने देख लिया। इन सब गुणों को आपने अच्छी तरह उपार्जितकिया है। अच्छी तरह इन सब को आपने अपने आधीन बनाया है। और अच्छी तरह से इन सब गुणों को आपने सेवित किया है। (त खामेमि, ण देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो२ एव करणयाए त्तिकट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ) अतः हे देवानुप्रिय ! आप को मैं खमाता हूँ। आप देवानुप्रिय मुझे क्षमा करें ! मैंने अभी तक जो आपके अपराध किये है मैं उन की आपसे क्षमा चाहता हू। आप मेरे अपराधों को क्षमा करने योग्य है। अब आगे मैं ऐसा नही करूँगा। इस प्रकार कह कर उस देवने अपने दोनों हाथों को जोडा और जोड़ कर फिर वह उस अरहन्नक श्रावक के चरणों में

આત્મિક બળ, તમારૂ ધર્મમા દૃઢરૂપ પુરુષકાર, ધર્મની આરાધનારૂપ તમારૂ પરાક્રમ આ બધા ગુણો મે જોઈ લીધા છે તમે આ બધા ગુણો સારી પેઠે મેળવ્યા છે આ બધાને સારી પેઠે તમે પોતાને સ્વાધીન બનાવ્યા છે આ સર્વે ગુણોનુ સેવન તમે સારી રીતે કર્યું છે

(त खामेमि ण देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो २ एव करणयाए त्तिकट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएण भुज्जो २ खामेइ)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને હુ ખમાવુ છુ દેવાનુપ્રિય તમે મને ક્ષમા કરો મે જે કઈ પણ તમારા અપરાધ કર્યા છે હુ તેમની તમારાથી ક્ષમા ચાહુ છુ તમે મારા અપરાધો ક્ષમા કરવા યોગ્ય છો હવેથી ભવિષ્યમા ક્રોધ પણ વખત મારાથી આવુ અયોગ્ય વર્તન થશે નહિ આ રીતે કહીને તે દેવે પોતાના બન્ને હાથ જોડયા અને ત્યારબાદ તેણે અરહન્નક શ્રાવકના પગમા

वानुप्रियस्योपसर्गं करोमि । नो चैव खलु देवानुप्रियाः ! भीता वा त्रसिता वा उद्विग्ना वा सञ्जातभया वा जाताः । तद्=तस्माद् यत् खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो वदति, सत्यः खलु एषोऽर्थो दृष्टः । तद् तस्मात् दृष्टा खलु देवानुप्रियाणां भवतां ऋद्धिः=गुणानामैश्वर्यम्, द्युतिः=भान्तर तेजः, यशः=ख्यातिः, यावद्-अत्र यावच्छब्देनेद द्रष्टव्यम् बल=शारीर पराक्रम, वीर्यम्=आत्मिक बलम्, पुरुषकारः

देखकर मैं ईशान कोण की ओर गया। वहां जाकर मैंने उत्तर वैक्रिय की रचना की-रचना कर उस देवभव सम्बन्धी उत्कृष्ट गति से जहां समुद्र था और जहां आप देवानुप्रिय थे वहा में आया (उवागच्छित्ता देवाणुपियस्स उवसग्ग करेमि) आकर मैंने फिर आप देवानुप्रियके ऊपर उपसर्ग करना प्रारभ करदिया। (णो चेवणं देवाणुप्पिया भीया वा तत्थ जणणं सक्के देविंदे देवराया वदइ सच्चे णं एसमट्ठे) परन्तु आप देवानुप्रिय भीत नहीं हुए, त्रस्त नही हुए त्रसित नहीं हुए उद्विग्न नहीं हुए और न उत्पन्न हुआ है भय जिस को ऐसे ही हुए। इस लिये मैंने जैसा आपके विषय में शक्रदेव राजा देवेन्द्र ने कहा था वैसा ही आपको देखा-(त दिट्ठेण देवाणुप्पियाण इड्ढी, जुई जसे जाव परक्कमे, लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए) अब मैंने आपके गुणों का ऐश्वर्य देखलिया प्रत्यक्ष कर लिया। आपकी द्युति-आन्तरतेज, आपकी ख्याति यावत् शब्द से आप का शारीरिक पराक्रम, आपका आत्मिक बल आपका स्वधर्म मे दृढता

જોઇને હું ઈશાન કોણ તરફ ગયો. ત્યા જઈને મે ઉત્તર વૈક્રિયની રચના કરી, રચના કરીને તે દેવભવ સબંધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી જ્યા સમુદ્ર હતો અને જ્યા દેવાનુપ્રિય તમે હતા ત્યા આવ્યો.

(उवागच्छित्ता देवाणुप्पियस्स उवसग्ग करेमि)

-આવીને દેવાનુપ્રિય તમારા ઉપર ઉપસર્ગ (બાધા) શરૂ કર્યો

(णो चेव ण देवाणुप्पिया भीया वा तं जण्ण सक्के देविंदे देवराया वदइ सच्चे ण एसमट्ठे)

પણ દેવાનુપ્રિય તમે તેનાથી ડર્યા નથી, ત્રસ્ત થયા નથી, ત્રસિત થયા નથી, ઉદ્વિગ્ન થયા નથી તેમજ તમારામા ભય ઉત્પન્ન થયો નથી એથી તમારા વિષે શક્ર દેવરાજે જે કઈ કહ્યુ છે તે તમને જોતા બરોબર લાગે છે

(त दिट्ठेण देवाणुप्पियाण इड्ढी, जुई जसे जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए)

હવે મે તમારા ગુણોની સમૃદ્ધિ જોઈ લીધી છે તમારી દ્યુતિ આતર તેજ, તમારી પ્રસિદ્ધિ યાવત્ શબ્દ વડે તમારા શરીરનુ શૂરાતન, તમારૂ

पडिच्छित्ता मल्लीं विदेहवररायकन्न सद्दावित्ता त दिव्वं कुडल-जुयल मल्लीए विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धइ पिणद्धित्ता पडि-विसज्जेइ तएणं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावा वाणियगे विउलेणं वत्थगंध जाव उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ पडिविसज्जेइ, तएणं अरह-न्नग सजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवाग-च्छति, उवागच्छित्ता भंडवहरणं करेंति, करित्ता पडिभंडं गिण्हति, गिण्हित्ता सगडी० भरेंति, भरित्ता जेणेव पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोतवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता भंड सक्कामेंति, दक्खिणाणुकुलेणं वाउणा जेणेव चपा पोय-ट्ठाणे तेणेव पोय लवेंति, लवित्ता सगडी० सज्जेंति, सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगडी० संकामेंति, संकामित्ता जाव महत्थ पाहुड दिव्व च कुडलजुयल गिण्हति, गिण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए अगराया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता त महत्थ जाव उवणेंति, तएणं चदच्छाए अंगराया त दिव्वं महत्थं च कुडल युगल पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तं अरहन्नगपामोक्खे एव वयासी –तुब्भे णं देवा०! बहूणि गामागार जाव आहिंडह लवणसमुद्द च अभिक्खण २ पोयवहणेहि आगाहेह, त अत्थियाइ भे केइ कहिचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ? तएणं ते अरहन्नगपामोक्खा चदच्छायं अगरायं एव वयासी–एव खलु सामी ! अम्हे इहेव चम्पाए नयरीए अरहन्नपामोक्खा बहवे सजत्तगा णावा वा-णियगा परिवसामो, तएण अम्हे अन्नया कयाइ गणिमं च४

'भावेन भूयोभूय क्षमयति, क्षमयित्वा अरहन्नकस्य द्वे कुण्डलयुगले ददाति दत्वा 'यस्या दिशः स देवः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगत =देवलोकं गत इत्यर्थः ॥सू० २३॥

मूलम्–तएणं से अरहन्नए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ, तएणं ते अरहन्नगपामोक्खा नावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेंति, लंबित्ता सगडिसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तं गणिम ४ सगडि० संकामेंति, संकामित्ता सगडी० जोएंति, जोइत्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं मोएइ, मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए त महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलजुयलं च गिण्हति, गिण्हित्ता मिहिलं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० तं महत्थं दिव्वं कुंडल जुयलं उवणेंति । तएणं तेसिं संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ,

---

पचाग नमन पूर्वक नमस्कार किया नमस्कार कर उसने अपने अपराध की उससे बड़े विनय के साथ बार २ क्षमा कराई। (खामित्ता) क्षमा कराकर (अरहन्नस्स) उसने अरहन्नक श्रावक के लिये (दुवे कुंडल जुयले दलयति–दलयित्ता–जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) दो कुडल युगल दिये। देकर के फिर वह जिस दिशा से आया था–प्रकट हुआ था–उसी दिशा की ओर वापिस हो गया देवलोक को चला गया। सूत्र " २३ "

પચાગ નમનપૂર્વક નમસ્કાર કર્યા અને પોતાના અપરાધોની બહુ જ વિનય સાથે વાર વાર ક્ષમા કરાવી (खामित्ता) ક્ષમા કરાવીને (अरहन्तस्स, तेणे अरहन्नक श्रावकने (दुवेकुडलजुयले दलयति दलयित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

બે કુંડળોની જોડ આપી તે આપીને જે દિશામાથી આવ્યો હતો, પ્રકટ થયો હતો તે જ દિશા તરફ દેવલોકમા જતો રહ્યો ॥ સૂત્ર " २३ " ॥

ऽवतरणस्थ ान वर्तने, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पोत=नाव, 'लवेंति, लम्बयन्ति तीरस्थाने वऽङ्कुषु रज्ज्वादिभिर्निबध्य स्थिरी कुर्वन्ति० । 'लवित्ता' लम्बयित्वा श कटी शाकटिक=लघुऽ कटवृहच्छव टाना समूह सज्जयन्ति=नवीनोपकरणरज्वादिभिः परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा त गणिम धरिम मेय परिच्छेद्य चतुर्विध क्रयाणकसमूह शक्टीशाकटिके ' सकामेति सक्रामयन्ति=स्थापयन्ति, सक्राम्य=तेऽरहन्नक प्रमुखाः सायात्रिकाः शक्टीशाकटिक योजयन्ति=बलीवर्दादिभिर्योजित कुर्वन्ति, योजयित्वा शक्टारूढास्ते यत्रैव मिथिला राजधानीवर्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिलाया राजधान्या बहिरग्रोद्याने=प्रधानोद्याने शकटीशाकटिक मोचयन्ति=शकटेभ्यो बलीवर्दान् पृथक्कुर्वन्ति, मोचयित्वा मिथिलाया राजधान्या तन्म-

---

से जहा गभीर नाम का नौका के ठहर ने का स्थान था (बदर गाह था) वहा पहुचे। (उवागच्छित्ता पोय लबेंति) वहा पहुच कर उन लोगों ने नौका को खडा कर दिया-तीर स्थित अनेक खूटों मे रज्ज्वादि से उसे बांधकर स्थिर कर दिया। (लबित्ता सगडसागड सज्जेंति) खडा करके छोटी छोटी गाडियों को और गाडो को तैयार किया-नवीन उपकरण एव रज्ज्वादि से उन्हें सज्जित किया। (सज्जित्ता त गणिम ४ सगडि ४ सकामेंति) सज्जित करके फिर उन्हों ने उस गणिम, धरिम, मेय एव परिच्छेद्य रूप चतुर्विध-क्रयाणक को नौका से उतार कर उन गाडी गाडों मे भरा (सकामित्ता सगडी० जोएंति, जोइत्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति) भर कर फिर उन्हों ने उन्हें जोता-जोत कर जहा मिथिला नगरी थी वहां वे आये। (उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणमि सागडंसगडी मोएइ मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए त महत्थ महग्घ महरिह विउल रायरिह पाहुड कुडलजुयल

(उवागाच्छित्ता पोय लवे ति) त्या पहोचीने तेओओ नावने उभी राखी किनारानी दोरीओथी तेने सारी रीते बाधी दीधी (लबित्ता सगड सागड सज्जे ति) त्यार पछी नानी गाडीओ तेमज मोटा गाडाओने दोरी वगेरे साधनोथी सज्ज कर्या (सज्जित्ता त गणिम ४ सगडि ४ स कामे ति) सज्ज कर्या बाद तेमणे गणिम, धरिम, मेय अने परिच्छेद्य रूप चार प्रकारनी वेचाणुनी वस्तुओने नावमाथी उतारीने गाडीओ अने गाडाओमा भरी

(सकामित्ता सगडी० जोएंति, जोइत्ता जेणेव महिला तेणेव उवागच्छंति)

सामान भर्या पछी तेमणे गाडीओ अने गाडाओने जोतर्या अने जोतरीने ज्या मिथिला नगरी हती त्या गया

(उवागच्छित्ता महिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणसि सगडीसागड

तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो, तएणं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए त दिव्वे कुंडलजुयलं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ, त एसणं सामी अम्हेहिं कुभगराय भवणंसि मल्ली विदेह० अच्छेरए दिट्ठे तं नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेह०, तएण चदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ, तएणं चदच्छाये वाणियगजणियहरिसे दूत सद्दावेइ, जाव जइविय णा सा सयं रज्ज सुक्का, तएण से दूते हट्ठ जाव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २२॥

टीका—' तएण ' इत्यादि । ततस्तनन्तर खलु सोऽरहन्नकः, ' निरूवसग्गं ' उपसर्गाभावो जात, इति कृत्वा=इतिविज्ञाय प्रतिमा=साकारसस्तारकरूप नियम विशेष पारयति स्म० । ततस्तदनन्तर खलु ते ऽरहन्नकप्रमुखा नौकावाणिजका. सायात्रिकाः दक्षिणानुकूलेन वातेन यत्रैव गम्भीरक गम्भीरनामक पोतपत्तन नौका

'तएण से अरहन्नए' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से अरहन्नए) उस अरहन्नक श्रावक ने (निरूव सग्गामिति कट्टु) उपसर्ग दूर हो गया है ऐसा जानकर पडिम परेइ) अपने साकारी सथारे को पारित किया ।

(तएण ते अरहन्नग पामोक्खा नावावाणियगा दक्खिणानुकूलेणं वाएण जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति) इसके अनन्तर वे समस्त अरहन्नक प्रमुख सायात्रिक पोत वणिक् दक्षिणानुकूल वायु

' तएण से अरहन्नए ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યાર બાદ (से अरहन्नए) તે અરહન્નક શ્રાવકે (निरुवस ग्गामिति कट्टु) ઉપસર્ગ (સંકટ) જતો રહ્યો છે એમ માનીને (पडिम पारेइ) પોતાના સાકારી સથારાને પારિત કર્યો

(तएण ते अरहन्नगपामोक्खा नावावाणियगा दक्खिणानुकूलेण वाएण जे गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

ત્યાર પછી બધા અરહન્નક પ્રમુખ સાયાત્રિક પોત વાણિકો દક્ષિણાનુ કૂળ પવનથી જ્યા ગભીર નામે નાવને લાગરવાનુ બદર હતુ ત્યા પહોચ્યા

च प्रतीच्छति=गृह्णाति, प्रतीच्छ्य=गृहीत्वा च मल्लीं विदेह राज-
ति, शब्दयित्वा च तद् दिव्य=मनोहर कुण्डलयुगल मल्ल्या विदेह
। 'पिणद्धेइ' पिनद्धयति=पिनद्ध करोति परिधापयतीत्यर्थः।
सर्जयति=तां कन्यान्त' पुरे स्वभृत्यै प्रापयति, ततस्तदन्तर खलु
। तान् अरहन्नकप्रमुखान् नौकावाणिजकान् विपुलेन वस्त्रगन्ध-
समान्य यावत् उच्छुल्क=शुल्काभाव वितरति=ददाति। 'अरहन्न-
तृभ्यः क्रयविक्रयव्यवहारनियमित राजशुल्क मद्भृत्यैर्न ग्रहीव्य
मदत्तवानिति भावः। तितीर्य=शुल्काभावविषयकमाज्ञापत्र दत्वा,

ग को भेट किये। (तएणं कुभए तेसिं सजत्तगाण जाव
डिच्छित्ता मल्ली विदेहवररायकन्न सद्दावेइ सद्दावित्ता तं
जुयल मल्लीए विदेहवरराजकन्नगाए पिणद्धेइ) कुभक राजा
यत्रिको की उस दिये हुए रत्नादि भेटको तथा कुण्डलद्वय
कर लिया-स्वीकार करने के बाद फिर विदेहवरराजकन्या
री को बुलाया-बुलाकर वे दोनो दिव्य कुण्डल उस विदेह
या मल्लि कुमारी को पहिरा दिये।
द्धित्ता पडिविसज्जेइ) पहिराकर फिर उसे वहां से दूतों के
न्तः पुर मे विसर्जितकर दिया। (तएणं से कुभए राया ते
मोक्खे नावावणिगये विउले ण वत्थगध जाव उस्सुक्क
इसके बाद कुभक राजाने उन अरहन्नक प्रमुख सायात्रिकों का
त्र, गधमाला, अलकारो से सन्मान किया। सन्मान करके

ए तेसिं सजत्तगाण जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लीविदेह वररायकन्न
वित्ता त दिव्व कुडलजुयल मल्ली विदेह वरराज कन्नगाए पिणद्धेइ)
રાજાએ તે સાયાત્રિકોની ... ભેટની ભેટ તેમજ કુંડળોને
યાં પછી વિદેહવર રાજકન્યા ... કુમારીને બોલાવી અને
દિવ્ય કુંડળો વિદેહવરરાજકન્ય ... કુમારીને પહેરાવ્યા
પડિવિસજ્જેઇ) પહેરાવીને તે ... ાથે ત્યાથી કન્યા

...गपामो ... निउले ण वत्थ

... त्र ग ध
... पहेरावी)

हार्थं महामयोजनकं 'महग्घ' महार्घं=बहुमूल्यकं, महार्हं महतां योग्यं विपुलं विस्तीर्णं राजार्हं राजयोग्यं प्राभृतम्-उपहाररत्नादिकं कुण्डलयुगल=देवेन दत्तं कुण्डलद्वयं च गृह्णन्ति, गृहीत्वा मिथिलामनुप्रविशन्ति। अनुप्रविश्य यत्रैव कुम्भकः =कुम्भकनामको मिथिलानरेशो वर्तते, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीत शिर आवर्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तन्महार्थं प्राभृत रत्नादिकं दिव्यं कुण्डलयुगलं च उपनयन्ति=राज्ञः पुरतः स्थापयन्ति। ततस्तदा खलु कुम्भको राजा तेषाम्=अरहन्नकादीनां सांयात्रिकाणां नौकावाणिजकानां यावत् रत्नादिं

च गिण्हंति, गिण्हित्ता मिहिलं अणुपविसंति) वहां आकर उन लोगों ने मिथिला राजधानी के बाहिर प्रधान बगीचे में उन गाड़ी गाड़ों को ढील दिया। ढील देने के बाद फिर उन्होंने मिथिला राजधानी में जाने के लिये उस महा प्रयोजन साधक, बहुमूल्य, महापुरुषों के योग्य रत्नादिकों को भेट (नजराने) को और देव प्रदत्त उन दोनों कुंडलों को कि जो राजा के लायक थे लिया-और लेकर वे मिथिला राजधानी में गये (अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलजुयलं च उवणेंति) वहां जाकर फिरवे जहां कुंभक राजा थे वहां गये-वहां पहुंचकर उन सबने राजा को दोनों हाथों की अंजलि कर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया।

बाद में साथ में लाया हुआ वह रत्नादिक रूप उपहार और कुंडल

मोएइ मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए त महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलजुयलं च गिण्हंति, गिण्हित्ता मिहिलं अणुपविसंति)

ત્યાં પહોંચીને તેમણે ગાડીઓ અને ગાડાંઓને છોડી દીધા અને ત્યાર બાદ તેમણે મિથિલા રાજધાનીમાં જવા માટે તે મહાપ્રયોજનની સિદ્ધિ માટે બહુ કિંમતી મહાપુરૂષોને લાયક એવા રત્નો વગેરેની ભેટ તથા દેવે આપેલા બને કુંડળોને કે જેઓ રાજાને યોગ્ય હતા તે લીધા અને લઈને તેઓ મિથિલા રાજધાનીમાં ગયા

(अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल० तं महत्थं दिव्वं कुंडलजुयलं उवणेंति)

ત્યાં જઈને તેઓ જ્યાં કુંભક રાજા હતા ત્યાં પહોંચ્યા, ત્યાં પહોંચીને તેઓ બધાએ રાજાને બંને હાથની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમન કર્યા પછી સાથે લાવેલા રત્નો વગેરેના ઉપહાર તેમજ કુંડળો તેમણે ભેટ કર્યા

प्राभृत कुण्डलद्वय च प्रतीच्छति=गृह्णाति, प्रतीच्छय=गृहीत्वा च मल्लीं विदेहं राज वरकन्या शब्दयति, शब्दयित्वा च तद् दिव्य=मनोहर कुण्डलयुगल मल्ल्या विदेह राजवरकन्यकाया 'पिणद्धेइ' पिनद्धयति=पिनद्ध करोति परिधापयतीत्यर्थः। पिनद्धय प्रतिविसर्जयति=ता कन्यान्त' पुरे स्वभृत्यै प्रापयति, ततस्तदन्तर खलु स कुम्भको राजा तान् अरहन्नकप्रमुखान् नौकावाणिजकान् विपुलेन वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण समान्य यावत् उच्छुल्क=शुल्काभाव वितरति=ददाति। 'अरहन्नकादिभ्योऽन्यवहर्तृभ्यः क्रयविक्रयव्यवहारनियमित राजशुल्क मद्भृत्यैर्न ग्रहीव्य मित्याज्ञापत्र प्रदत्तवानिति भावः। तितीर्य=शुल्काभावविषयकमाज्ञापत्र दत्वा;

उन्हों ने राजा को भेट किये। (तएणं कुभए तेसिं सजत्तगाणं जावं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्ली विदेहवररायकन्न सद्दावेइ सद्दावित्ता तं दिव्व कुडलजुयल मल्लीए विदेहवरराजकन्नगाए पिणद्धइ) कुभक राजा ने उन सायत्रिको की उस दिये हुए रत्नादि भेटको तथा कुण्डलद्वय को स्वीकार कर लिया-स्वीकार करने के बाद फिर विदेहवरराजकन्या मल्ली कुमारी को बुलाया-बुलाकर वे दोनों दिव्य कुण्डल उस विदेह वरराजकन्या मल्लि कुमारी को पहिरा दिये।

(पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ) पहिराकर फिर उसे वहा से दूतों के साथ कन्यान्तः पुर मे विसर्जितकर दिया। (तएणं से कुभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावावणिगये विउले ण वत्थगध जाव उस्सुक्क वियरइ) इसके बाद कुभक राजाने उन अरहन्नक प्रमुख सायात्रिकों का विपुल, वस्त्र, गधमाला, अलकारो से सन्मान किया। सन्मान करके

(तएण कुभए तेसिं सजत्तगाण जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लीविदेह वररायकन्न सद्दावेइ, सद्दावित्ता त दिव्व कुडलजुयल मल्लीए विदेह वरराज कन्नगाए पिणद्धेइ)

કુભ રાજાએ તે સાયાત્રિકોની રત્નો વગેરેની ભેટ તેમજ કુડળોને સ્વીકાર્યા સ્વીકાર્યા પછી વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લિકુમારીને બોલાવી અને બોલાવીને બંને દિવ્ય કુડળો વિદેહવરરાજકન્યા મલ્લિકુમારીને પહેરાવ્યા

(पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ) પહેરાવીને તેને દૂતોની માથે ત્યાથી કન્યા न्तपुरमा पहोचाडी

(तएण से कुभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावावणियगे विउले ण वत्थ गध जाव उस्सुक्क वियरइ)

ત્યાર પછી કુભકરાજાએ અરહન્નક પ્રમુખ સાયાત્રિકોનુ વિપુલ વસ્ત્ર ગધ માળા અલકારોવડે સન્માન કર્યું સન્માન કરીને તેમની વસ્તુઓનો કર (મહેસૂલ)

हार्थं महामयोजनक 'महग्घ' महार्घं=बहुमूल्यक, महार्हं महता योग्य विपुल विस्तीर्ण राजार्हं राजयोग्य प्राभृतम्-उपहाररत्नादिक कुण्डलयुगल=देवेन दत्त कुण्डलद्वय च गृह्णन्ति, गृहीत्वा मिथिलामनुप्रविशन्ति। अनुप्रविश्य यत्रैव कुम्भक =कुम्भकनामको मिथिलानरेशो वर्तते, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीत शिर आवर्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तन्महार्थं प्राभृत रत्नादिक दिव्य कुण्डलयुगल च उपनयन्ति=राज्ञ पुरत स्थापयन्ति। ततस्तदा खलु कुम्भके राजा तेषाम्=अरहन्नकादीना सायात्रिकाणां नौकावाणिजकाना यावत् रत्नादि

च गिण्हति, गिण्हित्ता मिहिल अणुपविसति) वहां आकर उन लोगों ने मिथिला राजधानी के बाहिर प्रधान बगीचे में उन गाड़ी गाड़ों को ढील दिया। ढील देने के बाद फिर उन्होंने मिथिला राजधानी में जाने के लिये उस मह्या प्रयोजन साधक, बहुमूल्य, महापुरुषो के योग्य रत्नादिकों को भेट (नजराने) को और देव प्रदत्त उन दोनों कुडलों को कि जो राजा के लायक थे लिया-और लेकर वे मिथिला राजधानी में गये (अणुपविसित्ता जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल० त महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुडलजुयलं च उवणेंति) वहा जाकर फिरवे जहा कुभक राजा थे वहा गये-वहा पहुचकर उन सबने राजा को दोनो हाथो की अजलि कर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया।

बाद में साथ मे लाया हुआ वह रत्नादिक रूप उपहार और कुडल

मोएइ मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए त महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुडलजुयलं च गिण्हति, गिण्हित्ता मिहिलं अणुपविसति)

ત્યા પહોચીને તેમણે ગાડીઓ અને ગાડાઓને છોડી દીધા અને ત્યાર બાદ તેમણે મિથિલા રાજધાનીમા જવા માટે તે મહાપ્રયોજનની સિદ્ધિ માટે બહુ કિમતી મહાપુરૂષોને લાયક એવા રત્નો વગેરેની ભેટ તથા દેવે આપેલા બને કુડળોને કે જેઓ રાજાને યોગ્ય હતા તે લીધા અને લઇને તેઓ મિથિલા રાજધાનીમા ગયા

(अणुपविसित्ता जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयल० त महत्थं दिव्व कुडलजुयल उवणेति)

ત્યા જઇને તેઓ જ્યા કુભક રાજા હતા ત્યા પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને તેઓ બધાએ રાજાને બને હાથની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમન કર્યા પછી સાથે લાવેલા રત્નો વગેરેના ઉપહાર તેમજ કુડળો તેમણે ભેટ કર્યા

पकरणरज्ज्वादिभिः परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा भाण्ड सक्रामयन्ति, स्थापयन्ति दक्षिणानुकूलेन वायुना यत्रैव चम्पापोतस्थान=चम्पानगरीसमीपे नौकावतरणस्थान वर्तते तत्रैव पोत=नाव लम्बयन्ति=तीरस्थितानेकशङ्कुषु रज्ज्वादिभिर्बद्ध्वा स्थिरी कुर्वन्ति, लम्बयित्वा शकटीशाकटिक=लघुशकटबृहच्छकटाका समूह सज्जयन्ति= परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा तद् गणिम धरिम मेय परिच्छेद्य=चतुर्विध भाण्ड शकटी शाकटिके शकटसमूहे सक्रामयन्ति=स्थापयन्ति सक्राम्य यावद् महार्थं प्राभृत दिव्य देवेन दत्त कुण्डदयुगल च गृह्णन्ति, गृहीत्वा चम्पानगर्यां प्रविष्टा चन्द्रच्छायःचन्द्रच्छायनामाऽङ्गराजः = अङ्गदेशाधिपतिस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तन्महार्थं यावद्

वहा आकर वे उन भचनो मे ठहर गये-और वही रहते हुए वे अपनी क्रयाणक गणिमादिरूप वस्तुओं का विक्रयकरने लगे। और उनके विक्रय से जो मूल्य उन्हें प्राप्त होता था उससे दूसरी अपने व्यवहार के उपयोगी वस्तुओं को खरीदने लगे। इस तरह जब उन का सग्रह होचुका तब उन लोगों ने गाडी और गाडो को उनसे भरा-और भरकर मिथिला नगरी से प्रस्थित होकर जहा गभीरक नाम का पोत पत्तन था वहाँ आये। वहाँ आकर उन्होंने नौकायान को सज्जित किया (सज्जिता भड सक्कामेंति, दक्खिणानुकूलेण वाउणा जेणेव चपा पोयट्ठणे तेणेव पोय लबेंति-लबित्ता सगडी० सज्जेंति, सज्जित्ता त गणिम ४ सगडी० सक्कामेंति सक्कामित्ता जाव महत्थ पाहुड दिव्व च कुडल जुयल गिण्हित्ता जेणेव चदच्छाए अगराया तेणेव उवागच्छति) सज्जित

રાજાની આજ્ઞા મેળવીને અરહન્નક સાયાત્રિકો જ્યા રાજ માર્ગની પાસે રાજ મહેલ હતો ત્યા પહોચ્યા

ત્યા જઇને તેઓ મહેલમા રોકાયા અને ત્યા રહીને જ તેઓ પોતાની વેચાણ માટેની વસ્તુઓનુ વેચાણ કરવા લાગ્યા વેચાણથી તેઓને જે કઇ રકમ મળતી તેનાથી તેઓ પોતાના વેપાર માટેની બીજી વસ્તુઓની ખરીદી કરવા લાગ્યા આ પ્રમાણે વસ્તુઓનો સગ્રહ થયો ત્યારે તે લોકોએ ગાડીઓ અને ગાડાઓમા વસ્તુઓ ભરી અને આ પ્રમાણે મિથિલા નગરીથી પ્રસ્થાન કરીને તેઓ જ્યા ગભીરક નામે પોત પત્તન હતું ત્યા ગયા ત્યા જઇને તેઓએ વહાણને તૈયાર કર્યું

(सज्जित्ता भड सक्कामेति दक्खिणानुकूलेण वाउणा जेणेव चपापोयट्ठणे तेणेव पोय लबेंति लबित्ता सगडी० सज्जेंति सज्जित्ता त गणिम ४ सगडी सक्कामेंति सक्कामित्ता जाव महत्थ पाहुड दिव्व च कुडलजुयल गिण्हति गिण्हित्ता जेणेव चदच्छाए अगाराया तेणेव उवागच्छति)

'रायमग्गमोगाढे' राजमार्गमवगाढान् राजमार्गसमीपावस्थितान आवासान् निवासस्थानानि वितरति=अरहन्नकादीनां वासार्थमाज्ञा ददाति, प्रति विसर्जयति =एवं व्यवस्था तदर्थं विधाय कुम्भको राजा स्वनिर्दिष्टानि वासस्थानानि गन्तु मादिशति स्मेत्यर्थ । ततः खलु अरहन्नक सायात्रिका यत्रैव राजमार्गमव गाढिता=राजमार्गसनिकृष्टा आवासा =वासस्थानानि वर्तन्ते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य राजदत्तभवनेषु निवसन्तस्ते भाण्डव्यवहरण=गणिमादिकस्य क्रयाणकस्तुजातस्य विक्रय कुर्वन्तिस्म० । कृत्वा प्रतिभाण्ड=स्वकीय गणिमादिक भाण्डं विक्रीय तन्मूल्येन पुनरन्यत् क्रीत्व स्वोपयोगिवस्तुजातरूप भाण्ड प्रतिभाण्ड, तद् गृह्णन्ति=सचिन्वन्ति, गृहीत्वा शकटी गाकटिक भरन्ति=पूरयन्ति० भूत्वा मिथि लानगरीतः प्रस्थिता सन्तः यत्रैव गम्भिरक गम्भीरकाख्य पोतपत्तन=नौकारोहण स्थान वर्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहन=नौकायान सज्जयन्ति=नौनो

उन की वस्तुओं पर से कर-टेक्स-माफ कर दिया। इन व्यवहारी अरहन्नकादिकों से क्रय विक्रय के व्यवहार पर नियमित राज शुल्क मेरे नौकर न लेवे इस प्रकार का आज्ञा पत्र उन्हें लिखकर दे दिया। (वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासेवियरइ, पडिविसज्जेइ) शुल्क भाव विषयक आज्ञापत्र प्रदान करके राजा फिर उन्हे राजमार्ग के समीप में रहे हुए राजकीय मकान ठहरने के लिये देदिये। इस प्रकार उनकी व्यवस्था करके बाद में कुभक राजा ने वहां से उन्हें विदा किया (तएणं अरहन्नग सजत्ता जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे-तेणेव उवागच्छति उवागछित्ता भडववहरण करेंति, करित्ता पडिभड गिण्हति गिण्हित्ता सगडी० भरेंति, भरित्ता जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोयवहण सज्जेति) राजा से बिना विदा लेकर वे अरहन्नक सायात्रिक जन जहा राजमाग में राजकीय भवन थे वहां आये।

માફ કર્યો વેપારી અરહન્નક પ્રમુખ વગેરેની પાસેથી ક્રય વિક્રયના ઉપર મારા રાજ કર્મચારીઓ શુલ્ક(કર)લે નહિ આ પ્રમાણેનુ આજ્ઞાપત્ર રાજાએ તેમને લખી આપ્યુ

(वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ, पडिविसज्जेइ)

શુલ્ક માફીનુ આજ્ઞાપત્ર તેમને આપીને રાજાએ રાજમાર્ગની પાસે આવેલો પોતાનો મહેલ તેમને ઉતરવા માટે આપ્યો આ પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરીને કુભક રાજાએ ત્યાથી તેમને વિદાય કર્યા

(तएण अरहन्नग सजत्ता जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भडववहरण करेंति, करित्ता पडिभड गिण्हति गिण्हित्ता सगडी०भरेंति, भरित्ता जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति,उवागच्छित्ता पोयवहण सज्जेंति)

प्रकारेणोक्तवान् हे देवानुप्रिया ! यूय खलु बहून् ग्रामागर० यावत्-अत्र यावत्करणादिद द्रष्टव्यम्० 'ग्रामाकरनगरखेटकर्वट मडम्बद्रोणमुख पत्तन निगमसन्निवेशान्' इति तत्र ग्रामो जनपद, आकरः-सुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानम् नगर-करहित, खेट-धूलीप्राकार, कर्वटकुनगर, मडम्ब-दूरवर्ति सन्निवेशान्तर, द्रोणमुख-जलपथस्थलपथयुक्त, पत्तनं - जलपथ - स्थलपथयोरेकतरेण युक्त, निगमो-वणिग्जनाधिष्ठित, सन्निवेशः-कटकादीनामावासः, तान् ग्रामादीन् 'आहिंडह' आहिण्डध्वे=परिभ्राम्यथ, तथा लवणसमुद्र चाभीक्ष्ण २ पोतवहनैः=नौकायानै, 'ओगाहेह' अवगाहध्वे=तरथ, तत्=तस्माद् यूय कथयत-अस्ति चापि युष्माभिः किमपि कुत्रचिद् आश्चर्य दृष्टपूर्व पूर्व युष्माभिर्यत् किमप्याश्चर्य कुत्रचिद् दृष्टमस्ति, तान्मग्रे वर्णयतेत्यर्थ । ततस्तदनन्तर खलु तेऽरहन्नकप्रमुखाः व्यवहारिणश्चन्द्रच्छायमङ्गराजमेवमवादिषु =वक्ष्यमाणप्रकारेणोक्तवन्तः-हेस्वामिन् ! एव खलु वयमिहैव चम्पाया नगर्याम् अरहन्नकप्रमुखा बहवः सायात्रा नौकावाणिजकाः परिवसाम०,

---

सायात्रिक से इस प्रकार कहा-(तुब्भे ण देवाणुप्पिया बहूणि गामागर जाव आहिंडह, लवणसमुद्द च अभिक्खण २ पोयवहणेहिं ओगाहेह) हे देवानुप्रियो ! आप लोग अनेक ग्राम आकर आदि में परिभ्रमण करते रहते हो-तथा लवण समुद्र को भी नौका यानो से बार २ पार करते रहते हो (त अत्थियाइ भे केइ कहिं चि अच्छेए दिट्ठ पुव्वे ?) तो कहो यदि कहीपर आप लोगों ने कोई आश्चर्य देखा हो तो । (तएण ते अरहन्नग पामोक्खा चदच्छाय अगराय एव वयासी) ऐसा राजा की जिज्ञासा जानकर उन व्यवहारी अरहन्नक प्रमुखो ने अगदेशाधिपति उन चदच्छाय राजा से इस प्रकार कहा- (एव खलु सामी अम्हे इहेव चपाए नयरीए अरहन्नग पामोक्खा बहवे सजत्तगा णावा

(तुब्भेण देवाणुप्पिया बहूणि गामागार जाव आहिंडह लवणसमुद्द च अभिक्खण २ पोयवहणेहिं ओगाहेइ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે ઘણા ગામ આકર વગેરેમા પરિભ્રમણ કરતા જ રહો છો તેમજ લવણસમુદ્રને પણ વહાણ વડે વારવાર પાર કરતા રહો છો

(त अत्थियाइ भे केइ कहि चि अच्छेए दिट्ठपुव्वे !) તમે કોઇ પણ નવાઈની વાત જોઇ હોય તો બતાવો

(तएण अरहन्नगपामोक्खा चदच्छाय अगराय एव वयासी)

અગદેશાધિપતિ રાજા ચદ્રચ્છાયની જિજ્ઞાસા જાણીને અરહન્નક, પ્રમુખો એ તેને આ પ્રમાણ કહ્યું--

(एव खलु सामी अम्हे इहेव चपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे

प्राभृत दिव्य कुण्डलयुगल चोपनयन्ति, चन्द्रच्छायनृपस्याग्रे स्थापयतीत्यर्थः। तत खलु चन्द्रच्छायनृपोऽङ्गराजस्तद दिव्य महार्थं कुण्डलयुग च प्रतीच्छति=गृह्णाति, प्रतीच्छय गृहीत्वा तान् अरहन्नकप्रमुखान् नौकावणिजकान् एवमवादीत्-वक्ष्यमाण

करके उसमें गाड़ी और गाड़ों से उतर २ कर अपने भांडों को रखा। दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर फिर वे वहा से चले-और चलकर जहां चपा नगरी के समीप में नौका के ठहरने का स्थान था वहां आकर उन लोगों ने लगड़ डाल दिया अपनी नौका को ठहरा दिया।

नौका को ठहरा कर फिर गाड़ी और गाड़ों को सज्जित किया-सज्जित करने के बाद उसमें से गणिमादि वस्तुओं को उतार २ कर उन गाड़ी और गाड़ों में भरा-भर कर फिर वे महार्थ साधक प्राभृत (भेंट) को और दिव्य कुडलयुगल को लेकर चपा नगरी में प्रविष्ट हुए।

वहा प्रविष्ट होकर जहा अगदेशाधिपति चदच्छाय राजा थे-वहा गये। (उवागच्छित्ता त महत्थ जाव उवणेति, तएण चदच्छाए अगराया त दिव्व महत्थ च कुडलयुगल पडिच्छइ) वहा पहुँच कर उन लोगों ने उस महार्थ साधक भेंट को और कुडलयुगल को राजा को भेट किया अगदेशाधिपति चदछाय राजा ने उस भेंट एव दिव्य महार्थ कुडल युगल को स्वीकार कर लिया- (पडिच्छित्ता ते अरहन्नकपामोक्खे एव वयासी) स्वीकार करके फिर उसने उन अरहन्नक आदि

તૈયાર કરીને ગાડીઓ તથા ગાડાઓમાથી પોતાના ભાડાને તેમા ભૂકયા દક્ષિણાનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે તેઓ ત્યાથી ચાલ્યા અને ચ પા નગરીની પાસે વહાણુને ઉભુ રાખવાની જગ્યા હતી ત્યા લગર નાખ્યુ અને વહાણુ ઉભુ રાખ્યુ

વહાણુ ઉભુ રાખીને ગાડીઓ અને ગાડાઓને તૈયાર કરીને તેમા ગણિમ વગેરે વસ્તુઓ વહાણુમાથી ઉતારીને ભૂકી અને ત્યાર પછી મહાર્ય સાધક ભેટ અને દિવ્ય કુડળની જોડ લઈને ચ પા નગરીમા ગયા

ત્યા જઈને જ્યા અગદેશાધિપતિ ચદચ્છાય રાજા હતા ત્યા ગયા

(उवागच्छित्ता त महत्थ जाव उवणेंति तएण चदच्छाए अगाराया त दिव्व महत्थ च कुडलयुगल पडिच्छइ)

ત્યા પહોચીને તેઓએ મહાર્થ સાધક ભેટને તેમજ કુડળની જોડ રાજાને ભેટ કરી અગદેશના રાજા ચદ્રછાયે પણ તે ભેટ તેમજ દિવ્ય મહાર્થ કુડળની જોડને સ્વીકારી (पडिच्छित्ता त अरहन्नकपामोक्खे एव वयासी) સ્વીકાર્યા બાદ તેણે અરહન્નક વગેરે સાયાત્રિકોને આ પ્રમાણે કહ્યુ—

'मल्लीए' मल्ल्या =मल्लीनाम्न्या विदेहराजवरकन्यायाः=स्वकन्यकायास्तद् दिव्य कुण्डलयुगल पिनद्धयति, पिनद्ध्य=परिधाप्य प्रतिविसर्जयति। हे स्वामिन्! तदेषा खलु अस्माभिः कुम्भकस्य राज्ञो भवने, मल्ली विदेहराजवरकन्या=विदेह राजस्य कुम्भकस्य वरा सर्वगुणयुक्तत्वात् श्रेष्ठा कन्या, आश्चर्यं दृष्टम्=अवलोकितम्। तत् नो खलु अन्या काऽपि तादृशी देवकन्या वा यावत्-अत्र यावच्छब्देनेद द्रष्टव्यम्-'असुरकन्ना वा-नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गधव्वकन्ना वा राजकन्ना वा' इति। असुरकन्या वा नागकन्या वा यक्षकन्या वा गन्धर्वकन्या वा राजकन्या वा, इति सस्कृतम्, यादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या, यादृशी मिथिला

(तएण से कुभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए त दिव्व कुडलजुयल पिणद्धेइ) भेट को स्वीकार करके उसी समय उन कुभक राजा ने अपनी विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी को बुलाया-और बुलाकर वे दो कुडल उसे पहिना दिये। (पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ) और पहिना कर फिर उसे कन्यान्तः पुर मे प्रति विसर्जित कर दिया। (त एसण सामी अम्हें हिं कुभरायभवणंसि मल्ली विदेह अच्छेरए दिट्ठे, त नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देव कन्ना वा जाव जारिसियाण मल्ली विदेह०) इस तरह हे स्वामीन्! हमने कुभक राजा के भवन में सर्व गुण सपन्न विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी रूप अश्चर्य देखा है।

हमारी दृष्टि मे अन्य कोई भी ऐसी देव कन्या, असुर कन्या, नाग कन्या, यक्ष कन्या, गधर्व कन्या अथवा राज कन्या आश्चर्य रूपा नही है

ગયા ત્યા જઈને અમે તેનની સામે ભેટ તેમજ કાનના કુડળની જોડ મૂકી
(तएणं से कुभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए त दिव्व कुडलजुयलं पिणद्धेइ)
ભેટ સ્વીકારીને તેજ વખતે કુભક રાજાએ પોતાની વિદેહ રાજવરકન્યા મલ્લી કુમારીને બોલાવી અને બોલાવીને કુડળો તેને પહેરાવ્યા (पिणद्धिता पडिविसज्जेइ,) અને પહેરાવીને તેને કન્યાન્ત પુરમા મોકલી દીધી
(त एसण सामी अम्हें हिं कुभरायभवणसि मल्ली विदेहअच्छेरए दिट्ठे त नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसियाण मल्लीविदेह०)
આ પ્રમાણે હે સ્વામી! અમે કુભક રાજાના મહેલમા સર્વગુણ સપન્ન વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના રૂપમા આશ્ચર્ય જોયુ છે

અમારી સામે બીજી કોઈ પણ દેવકન્યા અસુર કન્યા, નાગ કન્યા, યક્ષ કન્યા, ગધર્વકન્યા, અથવા તો રાજકન્યા નથી કે જે એવી વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી જેવી આશ્ચર્ય રૂપા હોય

ततः खलु वयमन्यदा कदाचिद् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्-समये गणिमं च ४ गणिमादि चतुर्विधं क्रयाणकं पोतवहने भृत्वा समुद्रे प्रस्थिताः, तथैव अहीनातिरिक्तम्=न न्यूनाधिकम्, किंतु यथादृष्टं तथैव भवतामग्रे कथयामः, यावत्=समुद्रेगच्छन्तो वयं गम्भीरपुरपत्तनम्=नौकावतरणस्थानं प्राप्य शकटसमूहे सर्वं क्रयाणकं भृत्वा मिथिलायां नगर्यां बहिस्थाने शकटसमूहमवस्थाप्य कुम्भकस्य राज्ञोदर्शनार्थं मिथिला नगरीं प्रविष्टाः, यावत्- कुम्भकस्य राज्ञः भाभृतं दिव्यं कुण्डलयुगलं चोपनयामः, कुम्भकृत्पापोपहारं वयं प्रदत्तवन्त इत्यर्थः। तदा खलु स कुम्भकः

वणियगा परिवसामो, तएणं अम्हे अन्नया कयाइ गणिमं च ४ तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो) स्वामिन् सुनो हम अरहन्नक प्रमुख अनेक सांयात्रिक पोतवणिक् यहीं चंपा नगरी में रहते हैं

हम लोग किसी एक समय, गणिमादि चतुर्विध क्रयाणक को पोत वहन में भरकर यहां से समुद्रीय रास्ते से होकर मिथिला राजधानी गये हुए थे। वहां हम ने जो कुछ देखा वह आपके समक्ष न न्यून रूप में और न अधिक रूप मे किन्तु जैसा देखा वैसा ही हम निवेदित करते हैं-हम लोग नौका से यहां से प्रस्थित होकर गभीरक पोत पत्तन पर पहुँचे वहां उतर कर हम लोगो ने समस्त अपना क्रयाणक शकटों में भर दिया। वहां से चल कर फिर हम लोग मिथिला नगरी के बाहिर एक उद्यान मे गाडियों को रख कर कुंभक राजा के दर्शन करने के लिये मिथिला नगरी गये। वहां राजा के समीप पहुँच कर हम लोगों ने उन के समक्ष अपनी भेट रख दी और कानो के दो कुंडल भी

, सजत्तगा णावा वणियगा परिवसामो तएणं अम्हे अन्नया कयाइ गणिमं च ४ तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो)

હે સ્વામી! અમે અરહન્નક પ્રમુખ અનેક સાંયાત્રિક પોત વાણિકો અહીં ચંપાનગરીમા જ રહીયે છીએ

અમે કોઇ વખત ગણિમ વગેરે ચાર જાતની વેચાણની વસ્તુઓ પોત વહન દ્વારા મૂકીને અહીંથી સમુદ્રના માર્ગેથી મિથિલા રાજધાનીમા ગયા હતા ત્યા અમે જે કઇ જોયુ છે તે તમારી સામે વધારે પડતુ પણ નહિ તેમજ ઓછુ પણ નહિ એટલે કે ત્યા જેવી રીતે જે રૂપમા અમે જોયુ છે તે વિષે તમારી સામે નિવેદન કરીયે છીએ અમે લોકો અહીંથી વહાણ વડે પ્રસ્થાન કરીને ગભીરક પોતપત્તન ઉપર પહોચ્યા ત્યા ઉતરીને અમે વેચાણની બધી વસ્તુઓ ગાડાઓમા ભરી ત્યાર પછી ત્યાથી ચાલીને મિથિલા નગરીની બહાર ઉદ્યાનમાં ગાડીઓને ઉભીરાખીને કુંભક રાજાના દર્શન માટે મિથિલા નગરીમા

अत्र यावत् कहणादिद द्रष्टव्यम्–गच्छयित्वा चैवमवादीत्–हे देवानुप्रिय ! त्व मिथिलाया नगर्या गत्वा कुम्भक राजान ब्रूहि–तव कन्यका मल्ली चन्द्रच्छायो वाञ्छति ' इति । यद्यपि च खलु सा स्वय राज्यशुल्का = राज्यार्थीनी, एव चेत्तस्याः समग्र राज्य समर्पयामीति भावः । ततस्तदनन्तर खलु स दूतश्चन्द्रच्छा-यनृपाज्ञया हृष्टतुष्ट.=अत्यन्त प्रमुदितः सन् यावत् कतिपय सैन्यसहितो रथारूढः प्राधारयद् गमनाय=गन्तु प्रवृत्त इत्यर्थः । इति द्वितीयस्य चन्द्रच्छायनाम्नो नृपस्य सम्बन्धः कथितः ॥ सू० २४ ॥

मूलम्–तेण कालेणं तेणं समएण कुणाल नाम जणवए होत्था, तत्थ ण सावत्थी होत्था, तत्थ णं रुप्पी कुणालाहि-वई नाम राया होत्था, तस्स णं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुवाहुनाम दारिया, होत्था, सुकुमाल० रूवेण य जोवणेणं लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि

श्रवणसे मल्ली कुमारीके ऊपर जिसका अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे उस चन्द्रच्छाय राजा ने उसी समय दूत को बुलाया । बुला कर उससे ऐसा कहा–हे देवानुप्रिय ! तुम मिथिला नगरी में जाकर कुभक राजासे कहो कि आपकी पुत्री मल्ली कुमारी को चद्रच्छाया राजा चाहते हैं ।

यदि वह पुत्री मेरे समस्त राज्य को चाहेगी तो मे उसे अपना समस्त राज्य समर्पित कर दूगा । इस तरह वह दूत चद्रच्छाय राजा की आज्ञा से हर्षित एव सतुष्ट होता हुआ कतिपय सैन्य सहित वहा से रथ पर आरूढ होकर मिथिला नगरी की ओर प्रस्थित हो गया । इस तरह यह द्वितीय चद्रच्छाय नामके राजा का सबध कहा । सूत्र " २४ "

ચદ્રચ્છાય રાજાએ તરત જ દૂતને બોલાવ્યો અને તેને કહ્યુ–હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મિથિલા નગરીમા જઇને કુભક રાજાને કહોકે તમારી પુત્રી મલ્લી કુમારી ને ચદ્રચ્છાય રાજા ચાહે છે

જો તે પુત્રી મારા આખા રાજ્યને પણ ઈચ્છશે તો હુ તેને પોતાનુ રાજ્ય સમર્પવા તૈયારે છુ આ રીતે દૂત ચદ્રચ્છાય રાજાની આજ્ઞાથી હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થતો થકી કેટલાક સૈન્યની સાથે ત્યાથી રથ ઉપર સવાર થઇને મિથિલા નગરી તરફ ચાલ્યો આ પ્રમાણે આ બીજા ચદ્રચ્છાય નામના રાજા ના સબધ વિષે કહ્યુ ॥ સૂત્ર " ૨૪ " ॥

श्वरस्य कुम्भस्य कन्यका मल्ली दिव्याश्चर्यरूपा विज्ञायते, नास्ति तादृशी काऽपि देवकन्या तथा न सन्त्यसुरकन्यकादयः काश्चिदपि तत्तुल्या इति भावः।

ततस्तदनन्तर खलु चन्द्रच्छायनामा नृपस्तान् अरहन्नकप्रमुखान् सत्कारयति=वस्त्रादिना तेषां सत्कारं करोति, सम्मानयति-मधुरवचनादिना प्रशंसति। सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति। तेभ्योऽरहन्नकादिभ्यो व्यवहर्तृभ्यः क्रयविक्रय व्यवहारेषु राजकीय शुल्क मदीयभृत्यैर्न ग्रहीतव्यमित्याज्ञापत्रं दत्वा तान् विसर्जयति स्मेत्यर्थः। ततः खलु चन्द्रच्छायो वाणिजकजनितहर्षः = अरहन्नकादि वाणिजकवचनश्रवणेन मल्लीकुमार्यां सजातानुरागः सन् दूतं शब्दयति, यावद्-

---

जैसी कि विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी है। (तएणं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता, पडिविसज्जेइ, तएणं चंदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूतं सद्दावेइ, जाव जइ वि य ण सा सय रज्जसुक्कं, तएणं से दूते हट्ठे जाव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार उन अरहन्नक प्रमुख सांयात्रिकों के मुख से मल्ली कुमारी रूप आश्चर्य श्रवण कर चंद्रच्छाय राजा ने उन अरहन्नक प्रमुख पोत वणिकों का वस्त्रादि प्रदान द्वारा सत्कार किया और मधुर वचनादि द्वारा उनकी बहुत २ प्रशंसा की।

बाद में उन्हें अपने पास से राजकीय शुल्क माफ कर विसर्जित कर दिया उन्हें इस प्रकार का " मेरे भव्य जन इन अरहन्नक आदि व्यवहारी जनों से क्रय विक्रय के व्यवहार में राजकीय शुल्क न लेवें आज्ञा पत्र लिखकर दे दिया। पश्चात् उन अरहन्नक आदि वणिग्जनोंके वचनों के

(तएणं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ तएणं चंदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूतं सद्दावेइ जाव जइ वि य ण सासय रज्जसुक्कं तएणं से दूते हट्ठे जाव पहारेत्थ गमणाए)

આ રીતે તે અરહન્નક પ્રમુખ સાયાત્રિકોના મોથી મલ્લીકુમારી રૂપ આશ્ચર્ય સાભળીને ચદ્રચ્છાય રાજાએ અરહન્નક પ્રમુખ તે પોત વાણિકોનો વસ્ત્ર વગેરે આપીને સત્કાર કર્યો તેમજ મધુર વચનો વડે તેમના ગુણજ વખાણ કર્યા

ત્યાર બાદ રાજકીય કર (મહેસૂલ) માફ કરીને તેમને વિદાય કરતી વખતે " મારા તમામ રાજકર્મચારીઓ અરહન્નક વગેરે વેપારીઓ પાસેથી ક્રય વિક્રયના વ્યવહારમા રાજકીય કર લેવો નહિ " આ જાતનુ આજ્ઞાપત્ર લખી આપ્યુ ત્યાર પછી અરહન્નક વગેરે વણિક જનોના મોથી સાભળેલા વચનોથી મલ્લીકુમારી ઉપર જેમના હૃદયમા પ્રેમ ઉત્પન્ન થયો છે, એવા તે

णेंति, तएणं सुवाहुदारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छई उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, तएणं से रुप्पी राया सुवाहुदारिय अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुवाहुदारियाए रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधर सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–तुमएणं देवाणुप्पिया मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, त अत्थि ताइं ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसए णइमीसे सुवाहुदारियाए मज्जणए ? तएणं से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी–एवं खलु सामी ! अह अन्नया तुब्भेण दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ ण मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्झणए दिट्ठे, तस्स ण मज्जणगस्स इमे सुवाहुदारियाए मज्जणए सहस्सइमंपि कलं न अग्घेइ, तएणं से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजाणितहास दूतं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–जाव जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थए गमणाए ॥ सू० २५॥

टीका—अथ तृतीयस्य रुक्मिनाम्नोनृपस्य सबन्ध प्रस्तौति–' तेणं कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणालो नाम जनपद् =देशः, आसीत्,

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तेण कालेण तेणं समएण) उस काल और उस समय में (कुणाल नाम जणवए होत्था) कुणाल नामका जनपद् अर्थात् देश था ।

' तेण कालेण समएण ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (कुणाल नाम

होत्था, तंसि णं सुवाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्ज-
णए जाए यावि होत्था, तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई
सुवाहुदारियाए चाउम्मासियजणय उवट्ठिय जाणइ,
जाणित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी
—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुवाहुदारियाए कल्ल चाउम्मासि-
यमज्जणए भविस्सइ, त कल्लं तुब्भेण रायमग्गमोगाढसि
मंडवं जलथलयदसद्धवन्नमल्ल साहरेह जाव सिरिदामगंडं
ओलइंति । तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवन्नगारसेणिं
सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणु-
प्पिया ! रायमग्गमोगाढसि पुप्फमडवसि णाणाविहपच
वन्नेहि तदुलेहि णगर आलिहइ, तस्स वहुमज्झदेसभाए
पट्टए रयेह, रएइत्ता जाव पच्चप्पिणति, तएणं से रुप्पी
कुणालाहिवई हत्थिक्खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए
महया भडचडगरयहयरविंदपरिक्खित्ते अतेउरपरियालसप-
रिवुडे सुवाहुं दारियं पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव
पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमडव अणुपविसइ, अणुपवि-
सित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तएणं
ताओ अते उरियाओ सुवाहुदारिय पट्टयसि दुरूहेति
दुरूहित्ता सेयपीयएहि कलसेहि पहाणेंति, ण्हाणित्ता सव्वा-
लकारविभूसिय करेंति करित्ता पिउणो पाय वदिउ उव

णेंति, तएणं सुवाहुदारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छई उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, तएणं से रुप्पी राया सुवाहुदारिय अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुवाहुदारियाए रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधर सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुमण्णं देवाणुप्पिया मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, त अत्थि ताइं ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमीसे सुवाहुदारियाए मज्जणए ? तएणं से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एवं खलु सामी ! अह अन्नया तुब्भेण दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ ण मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्झणए दिट्ठे, तस्स ण मज्जणगस्स इमे सुवाहुदारियाए मज्जणए सहस्सइमंपि कलं न अग्घेइ, तएणं से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सेस तहेव मज्जणगजाणितहास दूतं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-जाव जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थए गमणाए ॥ सू० २५॥

टीका—अथ तृतीयस्य रुक्मिनाम्नोनृपस्य सबन्ध प्रस्तौति-' तेण कालेण ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणालो नाम जनपद् =देश., आसीत्,

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (कुणाल नाम जणवए होत्था) कुणाल नामका जनपद अर्थात् देश था।

' तेण कालेण समएण ' इत्यादि ॥

टीકार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) ते કાળે અને તે સમયે (कुणाल नाम

तत्र=तस्मिन् देशे खलु श्रावस्ती नाम नगर्यासीत । तत्र=श्रावस्त्यां नगर्यां खलु 'रुप्पी' रुक्मी=रुक्मिनामा कुणालाधिपति'=कुणालदेशाधिपतिर्नाम=प्रसिद्धः राजाऽऽसीत्० । तस्य खलु रुक्मिणो दुहिता=पुत्री धारिणीदेव्या आत्मजा=गर्भसमुत्पन्ना,सुवाहुर्नाम=सुवाहुनाम्नी दारिका=कन्यका आसीत् । सा सुवाहुदारिका कीदृशीत्याह-'सुउमालपाणिपाया' सुकुमारपाणिपादा=कोमलकरचरणवती, तथा-रूपेण=आकृत्या वर्णेन च, यौवनेन=तारुण्येन, लावण्येन चोत्कृष्टा=उत्कर्षवती प्रधानेत्यर्थ, अतएव-उत्कृष्ट शरीरा=परमसुन्दराङ्गी यावत् सकलयुवतिगुणसपन्ना

(तत्थण सावत्थी नाम नयरी होत्था) उस जनपद-देश-में श्रावस्ती नाम की नगरी थी । (तत्थण रुप्पी कुणालाहिवई नाम राया होत्था-तस्सणं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुवाहूनाम दारिया होत्था) उस श्रावस्ती नगरी में कुणाल देश के अधिपति जिन का नाम रुक्मी था रहते थे । इस रुक्मी राजा की एक पुत्री थी । जिस का नाम सुवाहु था ।

यह धारिणी देवी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी । (सुकुमाल० रूवेण य जोव्वणे णं लावण्णेण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठ सरीरा जाया यावि होत्था) इस के हाथ और चरण ही अधिक सुकुमार थे । यह रूप-आकृति और वर्ण से यौवन से तथा लावण्य से सब में सुन्दर मानी जाती थी । इस कारण यह परम सुन्दराङ्गी थी और स्त्री सबधी समस्त गुणों से युक्त

જણવए होत्था) કુણાલ નામે જનપદ એટલે કે દેશ હતો (तत्थण सावत्थी नाम नगरी होत्था) તે જનપદ-દેશમા શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી

(तत्थण रुप्पी कुणालहिवई नाम राया होत्था तस्स ण सप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुवाहु नाम दारिया होत्था)

શ્રાવસ્તી નગરીમા કુણાલ દેશના અધિપતિરુકમી રહેતા હતા રુકમી રાજા ને એક પુત્રી હતી તેનુ નામ સુબાહુ હતુ

ધારિણી દેવીના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો હતો

(सुकुमाल० रूवेण य जोव्वणे ण लावण्णेण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था)

તેના હાથપગ ખૂબ જ સુકોમળ હતા તે રૂપ, આકૃતિ, યૌવન, તેમજ લાવણ્ય બધામા સુદર ગણાતી હતી તેથી તે ખૂબજ સુદર અંગોવાળી અને સ્ત્રી સબધી બધા ગુણોથી યુક્ત હતી

जाता चाप्यासीत्० । तस्याः खलु सुबाहुदारिकाया अन्यदाकदाचित् चातुर्मासिक मज्जनक=स्नान=स्नानमहोत्सवश्चाप्यभूत् ततस्तदन तर स रुक्मीकुणालाधिपतिः सुबाहुदारिकाया =स्वपुत्र्याश्चातुर्मासिकमज्जनकमुपस्थित जानाति० । ज्ञात्वा कौटुम्बिकपुरुषान्= आज्ञाकारिण पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एव मवादीत्–हे देवानुप्रियाः ! एव खलु सुबाहुदारिकायाः मम पुत्र्याः कल्ये=प्रभाते द्वितीयदिवसेत्यर्थः चातुर्मासिकमज्जनक चातुर्मासिकस्नानमहोत्सवो भविष्यति, तत् तस्मात् कल्ये यूय खलु राजमार्गमवगाढे=राजमार्गसनिकृष्टे मण्डपे जलस्थ लजदशार्धवर्णमाल्य=जलज स्थलज पञ्चवर्णपुष्पसमूह सहरत=समानयत, यावत्–

थी । (तीसेण सुबाहु दारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था) एक दिन इस सुबाहु पुत्री के चातुर्मासिक स्नान महोत्सव का समय आया (तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहु दारियाए चाउम्मासिय मज्जणय उवट्ठिय जाणइ) कुणाल देशाधिपति रुक्मि राजा को अपनी पुत्री सुबाहु दारिका के चातुर्मासिक स्नानोत्सव का जब ज्ञान आया–तब (जणित्ता कौडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) ऐसो जान कर उस ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया– (सद्दावित्ता एव वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा–(एव खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहु दारियाए कल्लं चाउम्मासिय मज्जणए भविस्सइ) हे देवानुप्रियो ! कल प्रातः काल सुबाहु दारिका का चतुर्मासिक स्नान होगा । (त कल्ल तुब्भेण रायमग्गमोगाढसि मडव जलथल दसद्धवन्न मल्ल साहरेह) अत. तुम लोग राज मार्ग के समीप मुख्य मडप मे कल प्रातः काल ही जल, स्थल मे

(तीसेण सुबाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासिय मज्जणए जाए यावि होत्था)
એક દિવસે સુબાહુ પુત્રીનો ચાતુર્માસિક સ્નાન મહોત્સવનો સમય આવ્યો
(तएण से कुणालाहिवई सुबाहु दारियाए चाउम्मासिय मज्जणय उवट्ठिय जाणइ)
કુણાલ દેશના રાજા રુકમીને તેની પુત્રી સુબાહુનો ચાતુર્માસિક સ્નાનો ત્સવનો જ્યારે વિચાર આવ્યો ત્યારે (जणित्ता कौडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) તેણે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी) અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું—
(एव खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहुदारियाए सकल्ल चाउम्मासियमज्जणए भविस्सइ)
હે દેવાનુપ્રિયો ! આવતી કાલે સવારે સુબાહુ દારિકાનુ ચાતુર્માસિક સ્નાન થશે
(त कल्ल तुब्भेण रायमग्गमोगाढसि मडव जलथल दसद्धवन्नमल्ल साहरेइ)
એથી તમે આવતી કાલે સવારે રાજમાર્ગની પાસેના મુખ્ય મડપમા

तत्र=तस्मिन् देशे खलु श्रावस्ती नाम नगर्यासीत । तत्र=श्रावस्त्यां नगर्यां खलु 'रुप्पी' रुक्मी=रुक्मिनामा कुणालाधिपतिः=कुणालदेशाधिपतिर्नाम=प्रसिद्धः राजाऽऽसीत्० । तस्य खलु रुक्मिणो दुहिता=पुत्री धारिणीदेव्या आत्मजा=गर्भे समुत्पन्ना,सुवाहुर्नाम=सुवाहुनाम्नी दारिका=कन्यका आसीत् । सा सुवाहुदारिका कीदृशीत्याह-'सुउमालपाणिपाया' सुकुमारपाणिपादा=कोमलकरचरणवती, तथा-रूपेण=आकृत्या वर्णेन च, यौवनेन=तारुण्येन, लावण्येन चोत्कृष्टा=उत्कर्षवती प्रधानेत्यर्थ, अतएव-उत्कृष्ट शरीरा=परमसुन्दराङ्गी यावत् सकलयुवतिगुणसम्पन्ना।

(तत्थण सावत्थी नाम नगरी होत्था) उस जनपद-देश-में श्रावस्ती नाम की नगरी थी। (तत्थण रुप्पी कुणालाहिवई नाम राया होत्था-तस्सणं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुवाहूनाम दारिया होत्था) उस श्रावस्ती नगरी में कुणाल देश के अधिपति जिन का नाम रूक्मी था रहते थे। इस रूक्मी राजा की एक पुत्री थी। जिस का नाम सुवाहू था।

यह धारिणी देवी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। (सुकुमाल० रूवेण य जोव्वणे ण लावण्णेण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठ सरीरा जाया यावि होत्था) इस के हाथ और चरण ही अधिक सुकुमार थे। यह रूप-आकृति और वर्ण से यौवन से तथा लावण्य से सब में सुन्दर मानी जाती थी। इस कारण यह परम सुन्दराङ्गी थी और स्त्री सबधी समस्त गुणों से युक्त

જણવए होत्था) કુણાલ નામે જનપદ એટલે કે દેશ હતો (तत्थण सावत्थी नाम नगरी होत्था) તે જનપદ-દેશમા શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી

(तत्थण रुप्पी कुणालहिवई नाम राया होत्था तस्स ण सप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुवाहु नाम दारिया होत्था)

શ્રાવસ્તી નગરીમા કુણાલ દેશના અધિપતિરુકમી રહેતા હતા રુકમી રાજા ને એક પુત્રી હતી તેનુ નામ સુવાહુ હતુ

ધારિણી દેવીના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો હતો

(सुकुमाल० रूवेण य जोव्वणे ण लावण्णेण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था)

તેના હાથપગ ખૂબ જ સુકોમળ હતા તે રૂપ, આકૃતિ, યૌવન, તેમજ લાવણ્ય બધામા સુદર ગણાની હતી તેથી તે ખૂબજ સુદર અગોવાળી અને સ્ત્રી સબધી બધા ગુણોથી યુક્ત હતી

बहुमध्यदेशभागे पट्टक रचयत, रचयित्वा यावत् प्रत्यर्पयन्ति । हे स्वामिन् ! यथा देवेन समादिष्ट तथा सर्वं साधितमस्माभिरित्येव ते कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततस्तदनन्तर खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिर्हस्तिस्कन्धवरगतः=गजस्कन्धोपरि वरासने विराजमान, 'चाउरगिणीए' चतुरङ्गिण्या गजाश्वरथपदातिरूपया 'सेणाए' सेनया 'महया भडचडगडपहयरविंदपरिक्खित्ते' महाभटचडगरपहयरवृन्दपरिक्षिप्तः महाभटानां चडगरः विच्छर्दः समर्दः अन्यजनदुष्प्रवेश्यः तथाविधो य पहयरः समुदायस्तस्य वृन्द=समूहः तेन परिक्षिप्तः=परिवृतः, 'चडगर' इति 'पहयर' इति च देशीयः शब्द समूहार्थवाचकः । अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः सुबाहु=सुबाहु-

---

राजमार्ग के समीप बने हुए पुष्प मडप मे अनेक रगों से रगे हुए चावलो से नगर की रचना करो ।

(तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टय रहेय) उसने ठीक बीचों बीच में एक पट्टक बनाओ-(रएइत्ता जाव पच्चप्पिणति) पट्टक बनाकर उनलोगों ने राजा को इसकी पीछे खबरकरदी-उन्हों ने कहा स्वामी ! जैसा कार्य करने के लिये आपने आज्ञा प्रदान कीथी-वैसाही सब काम हमने कर दिया है इस प्रकार की राजा को सूचना कर दी-(तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचडगर पहयरविंदपरिक्खित्ते अतेउरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद वे कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी पर बैठ कर चतुरगिणी सेना के साथ २ महाभटो के समूह से कि जिस से भीतर और कोई दूसरा

" હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે રાજમાર્ગની પાસે બનાવવામા આવેલા પુષ્પ-મડપમા અનેક રગથી રગાએલા ચોખાથી નગરની રચના કરો.

(तस्स बहुमज्झ देसभाए पट्टय रहेय) તેની બરોબર અધવચ્ચે એક પટ્ટક બનાવો (रएइत्ता जाव पच्चपिणाति) આ પ્રમાણે પટ્ટક બનાવીને તેઓએ રાજાને સૂચના કરી કે હે સ્વામી ! જે પ્રમાણે કામ કરવાની તમે અમને આજ્ઞા આપી હતી તે પ્રમાણે બધુ અમે તૈયાર કરી દીધુ છે

(तएण से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचठगरपहयरविंदपरिक्खित्ते अहे उरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्ग जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર પછી તે કુણાલાધિપતિ રુકમી રાજા હાથી ઉપર સવાર થઈને ચતુરગિણી સેનાની સાથે સાથે જેમા કોઈપણ પેસી શકે નહિ તેવા મહા

अत्र यावच्छब्देनेद द्रष्टव्यम्-पकच खलु महत् श्रीदामकाण्डमुपनयत, तस्य मण्ड पस्य खलु बहुमध्यदेशभागे एक महत् श्रीदामकाण्ड यावत् पाटलादि पुष्पसमूह सहित गधघाणि मुञ्चत् उल्लोचे अवलम्बयतः इति ततस्ते कौटुम्बिक पुरुषास्तथैव मण्डपमध्ये उल्लोचे= चन्द्रातपे श्रीदामकाण्डमवलम्बयन्ति०। तत' खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिःसुवर्णकारश्रेणिं=सुवर्णकारान् शब्दयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्- भो देवानुप्रिया ! क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, राजमार्गमवगाढे=राज मार्गोऽऽसन्ने पुष्पमण्डपे नानाविधपञ्चवर्णैः=अनेकविधैः पञ्चवर्णैरञ्जितैस्तण्डुले नैगर आलिखत=रचयत स्वस्तिकाद्याकारै श्चित्रयतेत्यर्थ । तस्य लिखितचित्रस्य

उत्पन्न हुए पच वर्ण के पुष्पों को लाकर उपस्थित करो ।

(जाव सिरिदाम गडे ओलइति) तथा एक बड़ा भारी श्री दामकांड-बहुत बड़ी लंबी पुष्पमाला-भी लाना । जो पाटल (गुलाब) आदि पुष्पों से गुथा हुआ हो और जिस में से नासिका को तृप्ति करने वाली सुगंधि निकल रही हो । उस मंडप के ठीक बीचो बीच ऊपर तने हुए चंदरवामे उसे लटका देना । इस तरह राजाकी आज्ञानुसार उन कौटु म्बिक पुरुषो ने सब कार्य कर दिया श्रीदाम काड को बड़ा ऊपर चंदरवा में लटका दिया । (तएण से रुप्पी कुणालाहिवई सुवन्नगारसेणिं सद्दा वेइ, सद्दावित्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमो गाढसि पुप्फमडवसि णाणाविह पचवण्णेहिं तदुलेहि णगर आलिहह) इस के बाद उस कुणालाधिपति रुक्मी राजा ने सुनारों को बुलाया-और बुला कर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही

જળ તેમજ સ્થળના પચવર્ણના પુષ્પો લાવો.

(जाव सिरिदामगडे ओलइति) તેમજ એક મોટો શ્રીદામકાંડ-મોટી પુષ્પમાળા-પણ સાથે લાવો તે શ્રીદામકાંડ ગુલાબ વગેરે પુષ્પોથી ગુથાએલો તેમજ નાસિકા તૃપ્ત થાય તેવી સુવાસવાળો હોવો જોઇએ તેને મંડપની બરોબર વચ્ચે ઉપર તાણવામા આવેલા ચંદરવામા લટકાવજો આ પ્રમાણે રાજાની આજ્ઞા સાભળીને તે રાજ પુરુષોએ તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે જ કામ પુરૂ કરી આપ્યુ શ્રીદામકાંડને અધવચ્ચે ચંદરવામા લટકાવ્યો

(तएण से रुप्पी कुणालहिवई सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढसि पुप्फमडवसि णाणा विह पचवण्णेहिं तदुलेहिं णगरआलिहह)

ત્યારપછી કુણાલાધિપતિએ સોનીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યુ—

बहुमध्यदेशभागे पट्टक रचयत, रचयित्वा यावत् मत्यर्पयन्ति । हे स्वामिन् ! यथा देवेन समादिष्ट तथा सर्वं साधितमस्माभिरित्येव ते कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततस्तदनन्तर खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिर्हस्तिस्कन्धवरगतः=गजस्कन्धोपरि वरासने विराजमान, 'चाउरगिणीए' चतुरङ्गिण्या गजाश्वरथपदातिरूपया 'सेणाए' सेनया 'महया भडचडगडपहयरविंदपरिक्खित्ते' महाभटचडगरपहयरवृन्दपरिक्षिप्तः महाभटानां चडगरः विच्छर्दः समर्दः अन्यजनदुष्प्रवेश्य' तथाविधो य पहयरः समुदायस्तस्य वृन्द=समूहः तेन परिक्षिप्तः=परिवृतः, 'चडगर' इति 'पहयर' इति च देशीयः शब्द समूहार्थवाचकः । अन्त पुरपरिवारसपरिवृतः सुबाहु=सुबाहु-

राजमार्ग के समीप बने हुए पुष्प मडप मे अनेक रगों से रगे हुए चावलो से नगर की रचना करो ।

(तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टय रहेय) उसने ठीक बीचो बीच में एक पट्टक बनाओ-(रएइत्ता जाव पच्चप्पिणति) पट्टक बनाकर उन-लोगों ने राजा को इसकी पीछे खबरकरदी-उन्हों ने कहा स्वामी ! जैसा कार्य करने के लिये आपने आज्ञा प्रदान कीथी-वैसाही सब काम हमने कर दिया है इस प्रकार की राजा को सूचना कर दी-(तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचडगर पहयरविंदपरिक्खित्ते अतेउरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद वे कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी पर बैठ कर चतुरगिणी सेना के साथ २ महाभटो के समूह से कि जिस से भीतर और कोई दूसरा

"હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે રાજમાર્ગની પાસે બનાવવામા આવેલા પુષ્પ-મડપમા અનેક રગથી રગાએલા ચોખાથી નગરની રચના કરો.

(तस्स बहुमज्झ देसभाए पट्टय रहेय) તેની બરાબર અધવચ્ચે એક પટ્ટક બનાવો (रएइत्ता जाव पच्चप्पिणाति) આ પ્રમાણે પટ્ટક બનાવીને તેઓએ રાજાને સૂચના કરી કે હે સ્વામી ! જે પ્રમાણે કામ કરવાની તમે અમને આજ્ઞા આપી હતી તે પ્રમાણે બધુ અમે તૈયાર કરી દીધુ છે

(तएण से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचठगरपहयरविंदपरिक्खित्ते अहे उरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्ग जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર પછી તે કુણાલાધિપતિ રુકમી રાજા હાથી ઉપર સવાર થઈને ચતુરગિણી સેનાની સાથે સાથે જેમા કોઈપણ પેસી શકે નહિ તેવા મહા

नाम्नी दारिका=पुत्री, पुरतः अग्रे कृत्वा यत्रैव राजमार्गो यत्रैव पुष्पमण्डपस्तत्रोपागच्छति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति=प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य पुष्पमण्डपमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य सिंहासनवरगतः 'पुरत्याभिमुह' पौरस्त्याभिमुखः पूर्वदिङ्मुखः, 'सन्निसन्ने' सनिषण्णः=उपविष्ट । ततस्तदनन्तर 'ताओ' ताः, 'अंतेउरियाओ' आन्त पुरवासिन्यो वनिता सुबाहुदारिका पट्टके 'दुरुहेंति' दुरोहति=आरोहयन्ति उपवेशयन्तीत्यर्थः। दुरुह्य=आरोह्य श्वेतपीतकैः=राजतसौवर्णैः कलशैः स्नपयन्ति,स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभूषिता कुर्वन्ति, कृत्वा=भूषयित्वा, पितुः पादौ वन्दितुमुपनयन्ति तत खलु सुबाहुदारिका यत्रैव स्वमी राजा तत्रोपाग

मनुष्य घुस नहीं सकता है तथा अन्त' पुर से परिवृत होते हुए अपनी पुत्री सुबाहुदारिका को आगे करके जहां राजमार्ग के समीप पुष्पमंडप बना हुआ था वहां आये। (उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमडव अणुपविसइ-अणुविसित्ता सीहासनवरगए पुरत्थाभिमूहे सन्निसन्ने) वहा आकर वे हाथी के स्कध से नीचे उतरे। उतर कर पुष्प मडप में उपविष्ट हुए। वहा जाकर वे पूर्वदिशा की तरफ मुख कर के श्रेष्ठ सिहासन पर बैठ गये।(तएणं ताओ अन्ते उरियाओ सुबाहुदारिय पट्टयति दुरूहेति, दुरुहित्ता सेयपीयएहि कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेंति-करित्ता पिउणो पाय वदिउ उवणेंति) इस के बाद उन अन्तः पुर निवासिनी स्त्रियों ने सुबाहुदारिका को पाट पर चढाया-और चढा करके-बैठा कर के-चादी और सुवर्ण के श्वेत पीले कलशों से उसे स्नान कराया-स्नान कराने के बाद

ભટોના સમૂહની વચ્ચે તેમજ અન્ત પુરની સાથે પોતાની પુત્રી સુબાહુ દારિકાને આગળ રાખીને જ્યા રાજમાર્ગની પાસે પુષ્પમ ડપ હતો ત્યા ગયા

(उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमडव अणुपविसइ अणुपविसित्ता सीहासनवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने)

ત્યા આવીને તેઓ હાથીના ઉપરથી નીચે ઉતર્યા ઉતરીને તેઓ પુષ્પ મડપની અદર ગયા ત્યા જઈને તેઓ પૂર્વ દિશા તરફ મો કરીને એક ઉત્તમ આસન ઉપર બેસી ગયા

(तएण ताओ अतेउरियाओ सुबाहुदारिय पट्टयति दुरूहेंति दुरूहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावित्ता सव्वालकार विभासिय करेंति करित्ता पिउणो पाय वदिउ उवणेंति)

ત્યારબાદ રણવાસની સ્ત્રીઓએ સુબાહુ દારિકાને પટ્ટક ઉપર ચઢાવી અને તેના ઉપર બેસાડીને ચાદી તેમજ સોનાના સફેદ અને પીળા કલશોથી તેને

च्छति, उपागत्य पादग्रहण करोति । तत खलु स रुक्मीराजा सुवाहुदारिकामङ्के= उत्सङ्गे निवेशयति, निवेश्य सुवाहुदारिकाया रूपेण च यौवनेनच लावण्येन च यावद् विस्मितः= आश्चर्यं प्राप्तः, वर्षधर=वर्षधरपुरुष अन्तः पुररक्षक पण्ढपुरुष शब्दयति= आह्वयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्=उक्तवान्-हे देवानुप्रिय ! त्व खलु मम दौत्येन=दूतो भूत्वा बहूनि ग्रामाकरनगरगृहाणि अनुप्रविशसि, तद् तस्माद्ब्रूहि-अस्तिचापि त्वया कस्यचिद् राज्ञो वा ईश्वरस्य वा व्यवहारिणो वा सार्थवाहस्य वा श्रेष्ठिनो वा क्वचिद् ईदृश मज्जनक दृष्टपूर्व,

फिर उसे समस्त अलकारो से विभूषित किया-विभूषित करके फिर वे उसे पिता के चरणों की वदना करने के लिये ले चली ।

(तएण सुवाहुदारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ, तएण से रुप्पी राया सुवाहु दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता सुवाहुदारियाए रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधर सद्दावेइ) सुवाहु दारिका भी जहा रुक्मी राजा विराजमान थे-वहा आई वहां आकर के उसने पिता के चरणो में नमन किया इस के बाद राजाने उस सुवाहुदारिका को उठाकर अपनी गोद मे बैठालिया बैठाकर उस सुवाहुदारिका के रूपसे यौवन से और लावण्य से विस्मित हुए उन राजा ने वर्षधर अत पुर के रक्षक नपुसक-कचुकी को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी-तुमण्ण देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेण वहूणिं गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, त अत्थियाइ ते कस्सइ

નવડાવી, નવડાવીને તેને બધા ઘરેણાઓથી શણગારી, શણગારીને તેઓ તેને પિતાના ચરણોના વદન માટે લઈ ગઈ

(तएण सुवाहु दारिया जेणेव रुप्पीराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ, तएण से रुप्पीराया सुवाहुदारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता सुवाहुदारियाए रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधर सद्दावेइ)

સુબાહુ દારિકા પણ જ્યા રુકમી રાજા બેઠા હતા ત્યા આવી આવીને તેણે પિતાના ચરણોમા વદન કર્યા ત્યારબાદ રાજાએ સુબાહુ દારિકાને ઉઠાવીને પોતાના બોળામા બેસાડી લીધી બેસાડીને સુબાહુ દારિકાના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી વિસ્મય પામેલા રાજાએ વર્ષધર રણવાસના રક્ષક નપુસક-કચુકીને બોલાવ્યા

(सद्दावित्ता एव वयासी तुमण्ण देवाणुप्पिया । मम दोच्चेण वहूणिं गामागरनगर गिहाणि अणुपविससि, त अत्थिया ते कस्सइ रण्णो वा इसरस्स वा कहिं

यादृश खलु अस्याः सुबाहुदारिकाया मज्जनकम् ? । यतस्तदनन्तर खलु स वर्ष धरः=अन्तःपुररक्षकः पण्डपुरुषः, रुक्मिण करतलपरिगृहीत शिर आवर्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! अहम् अन्यदा=अन्यस्मिन् समये युष्माक दौत्येन=दूतो भूत्वा मिथिला राजधानी प्रतिगतः, तत्र खलु मया कुम्भकस्य राज्ञो दुहितु =पुत्र्याः प्रभावत्या देव्या प्रभावतीदेव्या आत्म जायाः=अङ्गजातायाः मल्लयाः=मल्लीनाम्न्याः, विदेहराजवरकन्यकायाः यद् मज्जनकं दृष्ट, तस्य खलु मज्जनकस्य=मल्लीमज्जनकस्य, इद सुबाहुदारिकाया मज्जनक शतसहसतमामपि=लक्षामपि कला=शोभाया अश 'न अर्घेइ' नार्हति,न प्राप्नोती

रण्णो वा इसरस्स वा कहिं चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसएण इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए) बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम हमारे दूत होकर अनेकग्रामों में आकरों में नगरों एव घरों में जाते रहते हो,तो कहो तुमने पहिले ऐसा स्नपन महोत्सव कहीं किसी राजा का किसी ईश्वर का किसी व्यवहारी का किसी सार्थवाहक अथवा किसी श्रेष्ठी का देखा है जैसा कि इस सुबाहु दारिका का यह हुआ है ।

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी अह अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेण मिहिल गए, तत्थण मए कुभकस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स ण मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सयसहस्स इमपि कल न अग्घेइ) ऐसा सुनकर उस वर्ष धरने दोनो हाथों की अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर चढाकर रुक्मी राजा से इस

चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठ पुव्वे जारिसए ण इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए

બોલાવીને તેમણે આ પ્રમાણે કહ્યું—" હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અમારા દૂતના રૂપમા ઘણા ગામો, આકારો, નગરો અને ઘરોમા અવર-જવર કરતા રહો છો તો બતાવો કે તમે પહેલા એવો સુબાહુ દારિકા જેવો સ્નપન મહોત્સવ કોઈ રાજા, ઈશ્વર, કોઈ વ્યવહારી, કોઈ સાર્થવાહ અથવા કોઈ શ્રેષ્ઠીને ત્યા જોયો છે ?

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी ! अह अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेण मिहिल गए तत्थ ण मए कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह रायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स ण मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सयसहस्सइमपि कल न अग्घेइ)

આ પ્રમાણે સાભળીને તે વર્ષધરે બને હાથની અજલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને રુકમી રાજાને કહ્યુ કે હે સ્વામી ! હુ કોઈ વખત તમારા દૂત

त्यर्थः। ततस्तदनन्तर खलु स रुक्मी राजा वर्षधरस्य=वर्षधर पुरुषस्यान्तिके=समीपे 'एयमट्ठ' श्रुत्वा निशम्य 'सेस तहेव' शेष तथैव-शेषवृत्तान्त चन्द्रच्छायनृप वद् बोध्यमित्यर्थः। तथाचाय सम्बन्धः- स रुक्मी-त वर्षधर प्रत्येवमवादीत्- हे देवानुप्रिय! कीदृशी मल्ली वर्तते, तदा वर्षधर आह-नो खलु अन्या कापि तादृशी देवकन्या वा यावत् यादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या, अत्र यावच्छब्देनासुरनागयक्षगन्धर्वादि कन्यकाः सग्राह्या, ततः खलु स रुक्मी वर्षधरपुरुष

प्रकार कहा-हे स्वामिन। मे किसी समय आपका दूत होकर मिथिला नगरी गया हुआथा-वहा मैने कुभक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती की कुक्षि से अवतरित हुई हे मल्ली कुमारी का जो विदेह राजा की पुत्रियो में सर्वोत्तम है जैसा स्नान महोत्सव देखा उसके समक्ष यह सुबाहुदारीका का मज्जनोत्सव लक्षाश-लाखमें अश को भी प्राप्त नही कर सकता है। (तएण से रुप्पी राया वरिसधरस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सेस तहेव मज्जणगजणितहासे दूत सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी जाव जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इस के बाद रुक्मी राजाने जब वर्षधर (कचुकी पुरुष) के मुख से ऐसी बात सुनी तो उसका विचार कर उसने चन्द्रच्छाय राज की तरह अर्थात् राजा ने वर्ष घरसे मल्ली कुमारी के विषय में अपनी जिज्ञासा प्रकट की-पूछा वह कैसी है-तब वर्षधर ने उस से कहा-हे देवानुप्रिय! क्या कहें-जैसी वह है ऐसी तो कोई भी कन्या नही है-न ऐसी कोई देव कन्या है न कोई असुर कन्या है, न कोई नाग कन्या है,

---

તરીકે મિથિલા નગરીમા ગયેા હતેા ત્યા મે પ્રભાવતીના ગર્ભથી જન્મેલી વિદેહ રાજાની બધી પુત્રીઓમા શ્રેષ્ઠ કુભક રાજાની પુત્રી મલ્લી કુમારીનેા જેવેા સ્નાન મહેાત્સવ જોયેા તેની આગે સુબાહુ દારિકાનેા સ્નાન મહેાત્સવ લક્ષારા પણ કહી શકાય તેમ નથી

(तएण से रुप्पीराया वरिसधरस्स अतिए अयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सेस तहेव मज्जणगजणितहासे दूत सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी जाव जेणेव महिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

રુકમી રાજાએ જ્યારે વર્ષધર (કચુકી પુરુષ) ના મુખેથી આ પ્રમાણે વાત સાભળી ત્યારે તેના વિષે વિચાર કરીને તેણે ચન્દ્રચ્છાય રાજાની જેમ એટલે કે રાજાએ વર્ષધરને મલ્લી કુમારીના સબધમા પોતાની ઈચ્છા જણાવતા કહ્યુ કે તે કેવા છે? ત્યારે જવાબમા વર્ષધરે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! શુ કહુ? જેવી તે કન્યા છે તેવી તેા કોઈ પણ નથી એવી કેા∫ નથી દેવકન્યા

यादृश खलु अस्याः सुबाहुदारिकाया मज्जनकम् ? । यतस्तदनन्तर खलु स वर्ष धरः=अन्तःपुररक्षकः पण्ढपुरुषः, रजिमण करतलपरिगृहीत शिर आवर्त दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! अहम् अन्यदा=अन्यस्मिन् समये युष्माक दौत्येन=दूतो भूत्वा मिथिला राजधानी प्रतिगतः, तत्र खलु मया कुम्भकस्य राज्ञो दुहितु =पुत्र्याः प्रभावत्या देव्या प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अङ्गजाताया: मल्ल्याः=मल्लीनाम्न्याः, विदेहराजवरकन्यकायाः यद् मज्जनकं दृष्ट, तस्य खलु मज्जनकस्य=मल्लीमज्जनकस्य, इद सुबाहुदारिकाया मज्जनक शतसहस्रतमामपि=लक्षामपि कला=शोभाया अश 'न अर्घेइ' नार्हति,न प्राप्नोती

रण्णो वा इसरस्स वा कहिं चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसएणं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए) बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम हमारे दूत होकर अनेकग्रामो में आकरों में नगरों एव घरों में जाते रहते हो,तो कहो तुमने पहिले ऐसा स्नपन महोत्सव कही किसी राजा का किसी ईश्वर का किसी व्यवहारी का किसी सार्थवाहक अथवा किसी श्रेष्ठी का देखा है जैसा कि इस सुबाहु दारिका का यह हुआ है ।

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी अह अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेणं मिहिल गए, तत्थण मए कुभकस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सयसहस्स इमपि कल न अग्घेइ) ऐसा सुनकर उस वर्ष धरने दोनो हाथों की अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर चढाकर रुक्मी राजा से इस

चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठ पुव्वे जारिसए ण इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए

બોલાવીને તેમણે આ પ્રમાણે કહ્યુ—" હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અમારા દૂતના રૂપમા ઘણા ગામો, આકારો, નગરો અને ઘરોમા અવર-જવર કરતા રહો છો તો બતાવો કે તમે પહેલા એવો સુબાહુ દારિકા જેવો સ્નપન મહોત્સવ કોઇ રાજા, ઈશ્વર, કોઈ વ્યવહારી, કોઈ સાર્થવાહ અથવા કોઈ શ્રેષ્ઠીને ત્યા જોયો છે ?

(तएणं से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी ! अह अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेण मिहिल गए तत्थ ण मए कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह रायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स ण मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सयसहस्सइमपि कल न अग्घेइ)

આ પ્રમાણે સાભળીને તે વર્ષધરે બને હાથની અજલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને રુકમી રાજાને કહ્યુ કે હે સ્વામી ! હુ કોઈ વખત તમારા દૂત

मूलम्–तेणं कालेण तेणं समएण कासी नाम जणवए होत्था तत्थ ण वाणारसी नाम नयरी होत्था, तत्थ णं सखे नाम कासी राया होत्था, तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था, तएण से कुभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधिं सघाडेह, तएणं सा सुवन्नगारसेणी एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता त दिव्वं कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेइ, णिवेसित्ता बहूहि आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छइ, तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स सधि घडित्तए, नो चेवणं सचाएइ सघडित्तए, तएणं सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एव वयासी–एव खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता एयमाण पच्चप्पिणह, तएण अम्हे त दिव्व कुडलजुयल गिण्हामो जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो सचाएमो सघाडित्तए, तएण अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुडलस्स अन्न सरिसय कुडलजुयल घडेमो, तएण से कुभए राजा तीसे सुवन्नगारसेणीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियभिउडी निडाले साहट्टु एव वयासी–से केण तुब्भे कलायाण भवह ? जे ण तुब्भे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधिं सघा-

सत्कारयति, सम्मानयति, सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति, ततः खलु स रुक्मी कुणालाधिपति-मज्जनजनितहर्षः = मल्लीमज्जनकगुणश्रवणसजात तद्विषयकारागः सन् दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् अत्र यावत्करणादिदं द्रष्टव्यम् । हे देवानुप्रिय ! शीघ्रमेव मिथिलां राजधानीं गत्वा कुम्भक राजान ब्रूहि—' रुक्मी कुणालदेशाधिपतिस्तव कन्यका मल्लीं याचति ' इत्यादि । तत खलु रुक्मिण आदेशानुसारेण स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव प्राधारयद् गमनाय = गन्तु प्रवृत्तः । इति तृतीयस्य रुक्मिणो राज्ञः सम्बध कथित ॥ सू०२५॥

न कोई यक्ष कन्या है, न कोई गन्धर्व कन्या है आदि २ ।

ऐसा वर्षधर से सुनकर रुक्मी राजा ने वर्षधर का सत्कार किया सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उसे अपने पास से विसर्जित कर दिया । बाद में कुणाल देशाधिपति उन रुक्मी राजा ने मल्ली कुमारी के मज्जनोत्सव तथा गुणों के श्रवण से हर्षित और उस कुमारी में अनुरक्त चित्त हो कर दूत को बुलाया-बुलाकर फिर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम यहा से शीघ्र ही मिथिला राजधानी को जाओ और जाकर कुंभक राजा से कहो कि कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा तुम्हारी कन्या मल्ली कुमारी को चाहते है । इत्यादि

इस तरह अपने स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर सवार हो जहा मिथिला नगरी थी उस ओर प्रस्थित हो गया । यह तृतीय राजा रुक्मी का सबध कहा गया है । सूत्र " २५ "

કે નથી અસુર કન્યા કે નથી યક્ષકન્યા કે નથી ગધર્વ કન્યા, વગેરે

આ રીતે વર્ષધરની વાત સાભળીને રુકમી રાજાએ વર્ષધરનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમને પોતાની પાસેથી વિદાય કર્યા ત્યારપછી કુણાલ દેશાધિપતિ રુકમી રાજાએ મલ્લી કુમારીના મજ્જનોત્સવ તેમજ ગુણોના શ્રવણથી હર્ષિત તથા તે કુમારીમા અનુરક્ત ચિત્ત વાળા થઈને દૂતને બોલાવ્યો દૂતને બોલાવીને તેને કહ્યુ—હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અહીંથી સત્વરે મિથિલા રાજધાનીમા જાઓ અને જઈને કુભક રાજાને કહો કે કુણાલ દેશાધિપતિ રુકમી રાજા તમારી કન્યા મલ્લી કુમારીને ચાહે છે વગેરે

આ પ્રમાણે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞા મેળવીને દૂત રથ ઉપર સવાર થઇને મિથિલા નગરી તરફ રવાના થયો આ રીતે તૃતીય રાજા રુકમીનો સબંધ કહેવામા આવ્યો છે ॥ સૂત્ર ॥ ૨૫ ॥

मूलम्–तेणं कालेण तेणं समएण कासी नाम जणवए होत्था तत्थ ण वाणारसी नाम नयरी होत्था, तत्थ णं सखे नाम कासी राया होत्था, तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था, तएण से कुभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इमस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधि सघाडेह, तएणं सा सुवन्नगारसेणी एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता त दिव्वं कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेइ, णिवेसित्ता वहूहि आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छइ, तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स सधि घडित्तए, नो चेवणं सचाएइ सघडित्तए, तएण सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एव वयासी–एव खलु सामी! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता एयमाण पच्चप्पिणह, तएण अम्हे त दिव्व कुडलजुयल गिण्हामो जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो सचाएमो सघाडित्तए, तएण अम्हे सामी! एयस्स दिव्वस्स कुडलस्स अन्न सरिसय कुडलजुयल घडेमो, तएण से कुभए राजा तीसे सुवन्नगारसेणीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियभिउडी निडाले साहट्टु एव वयासी–से केण तुब्भे कलायाण भवह? जे ण तुब्भे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधिं सघा-

सत्कारयति, सम्मानयति, सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति, ततः रा ३ स रुक्मी कुणालाधिपति.-मज्जनजनितहर्षः = मल्लीमज्जनकगुणश्रवणसजात तद्विषयकारागः सन् दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् अत्र यावत्करणादिद द्रष्टव्यम् । हे देवानुप्रिय ! शीघ्रमेव मिथिला राजधानी गत्वा कुम्भक राजान ब्रूहि—' रुक्मी कुणालदेशाधिपतिस्तव कन्यका मल्लीं याचति ' इत्यादि । तत खलु रुक्मिण आदेशानुसारेण स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव प्राधारयद् गमनाय = गन्तु प्रवृत्तः । इति तृतीयस्य रुक्मिणो राज्ञः सम्बन्ध कथित ॥ सू०२५॥

न कोई यक्ष कन्या है, न कोई गन्धर्व कन्या है आदि २ ।

ऐसा वर्षधर से सुनकर रुक्मी राजा ने वर्षधर का सत्कार किया सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उसे अपने पास से विसर्जित कर दिया । बाद में कुणाल देशाधिपति उन रुक्मी राजा ने मल्ली कुमारी के मज्जनोत्सव तथा गुणों के श्रवण से हर्षित और उस कुमारी में अनुरक्त चित्त हो कर दूत को बुलाया-बुलाकर फिर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम यहा से शीघ्र ही मिथिला राजधानी को जाओ और जाकर कुभक राजा से कहो कि कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा तुम्हारी कन्या मल्ली कुमारी को चाहते है । इत्यादि

इस तरह अपने स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर सवार हो जहा मिथिला नगरी थी उस ओर प्रस्थित हो गया । यह तृतीय राजा रुक्मी का सबध कहा गया है । सूत्र " २५ "

કે નથી અસુર કન્યા કે નથી યક્ષકન્યા કે નથી ગધર્વ કન્યા, વગેરે

આ રીતે વર્ષધરની વાત સાભળીને રુકમી રાજાએ વર્ષધરનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમને પોતાની પાસેથી વિદાય કર્યા ત્યારપછી કુણાલ દેશાધિપતિ રુકમી રાજાએ મલ્લી કુમારીના મજ્જનોત્સવ તેમજ ગુણોના શ્રવણથી હર્ષિત તથા તે કુમારીમા અનુરક્ત ચિત્ત વાળા થઈને દૂતને બોલાવ્યો દૂતને બોલાવીને તેને કહ્યુ-હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અહીંથી સત્વરે મિથિલા રાજધાનીમા જાઓ અને જઈને કુભક રાજાને કહો કે કુણાલ દેશાધિપતિ રુકમી રાજા તમારી કન્યા મલ્લી કુમારીને ચાહે છે વગેરે

આ પ્રમાણે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞા મેળવીને દૂત રથ ઉપર સવાર થઇને મિથિલા નગરી તરફ રવાના થયો આ રીતે તૃતીય રાજા રુકમીનો સબધ કહેવામા આવ્યો છે ॥ સૂત્ર ॥ ૨૫ ॥

रायवरकन्ना ?, तएण ते सुवन्नगारा सखराय एव वयासी–णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गधव्वकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तएणं से संखे कूडलजुयलजणितहासे दूय सद्दावेइ, जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अथ चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धमस्तावमाह—' तेणं कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्, तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तर खलु तस्या मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि =सन्धान योजन, ' विसघडिए ' विसघटितः= त्रुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणिं शब्दयति,

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएएण) उस काल और उस समय में (काशी नाम जणवए होत्था) काशी नाम का देश था (तत्थण वाणारसी नयरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थण सखे नाम काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शख नाम का राजा रहता था (तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था) एक समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन दिव्य कुडलों की सधी टूट गई–उन का जोड खुल गया ।

(तएण से कुभए राया सुवन्नगार सेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव

' तेण कालेण तेण समएणं ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ–' तेण कालेण तेण समएण ' તે વખતે (काशी नाम जणवए होत्था) કાશી નામે દેશ હતો (तत्थण वाराणसी नगरी होत्था) તેમા બના રસ નામે નગરી હતી (तत्थण सखे नाम कासीराया होत्था) તેમા કાશી દેશના અધિપતિ શખ નામે રાજા રહેતો હતો।

(तएणं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था)

એક વખતની વાત છે કે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના દિવ્ય કુડળોનો સાધાનો ભાગ તૂટી ગયો।

डेत्तए ? सुवन्नगारे निव्विसए आणावेइ, तएण ते सुवन्नगारा कुभेण रण्णा निव्विसया आणत्तासमाणा जेणेव साइ२ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणंसि सगडीसागड मोएति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुड गिण्हति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० जाव एवं वयासी—अम्हेणं सामी ! मिहिलाओ नयरीओ कुभएणं रन्ना निव्विसया आणत्तासमाणा इह हव्वमागया त इच्छामो णं सामी ! तुब्भ वाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहसुहेण परिवसिउ । तएणंसखे कासिराया त सुवन्नगारे एव वयासी—किन्न तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता ?, तएण ते सुवन्नगारा सख एव वयासी -एव खलु सामी ! कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुडलजुयलस्स सधीं विसघडिए, तएणं से कुभए सुवन्नगारसेणि सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता, त एएण कारणेण सामी! अम्हे कुभएण निव्विसया आणत्ता, तएण से सखे सुवन्नगारे एव वयासी -केरिसिया ण देवाणुप्पिया ! कूभगस्सधूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेह

रायवरकन्ना ?, तएण ते सुवन्नगारा सखरायं एव वयासी-णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तएणं से संखे कूडलजुयलजणितहासे दूय सद्दावेइ, जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अथ चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धप्रस्तावमाह—' तेणं कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्, तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तर खलु तस्या मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि =सन्धान योजन, ' विसघडिए ' विसघटितः= त्रुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणिं शब्दयति,

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएएण) उस काल और उस समय में (काशी नाम जणवए होत्था) काशी नाम का देश था (तत्थण वाणारसी नयरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थण सखे नाम काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शख नाम का राजा रहता था (तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था) एक समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन दिव्य कुडलों की सधी टूट गई-उन का जोड खुल गया ।

(तएण से कुभए राया सुवन्नगार सेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव

' तेण कालेण तेण समएणं ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-' तेण कालेण तेण समएण ' તે વખતે (काशी नाम जणवए होत्था) કાશી નામે દેશ હતો (तत्थण वाराणसी नगरी होत्था) તેમા બનારસ નામે નગરી હતી (तत्थण सखे नाम कासीराया होत्था) તેમા કાશી દેશના અધિપતિ શખ નામે રાજા રહેતો હતો

(तएणं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था)

એક વખતની વાત છે કે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના દિવ્ય કુડળોનો સાધાનો ભાગ તૂટી ગયો

डेत्तए ? सुवन्नगारे निव्विसए आणावेइ, तएणं ते सुवन्नगारा कुभेणं रण्णा निव्विसया आणत्तासमाणा जेणेव साइ२ गिहाइ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमति, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणंसि सगडीसागड मोएति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुड गिण्हति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव कासीराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल० जाव एवं वयासी—अम्हेणं सामी ! मिहिलाओ नयरीओ कुभएणं रन्ना निव्विसया आणत्तासमाणा इह हव्वमागया त इच्छामो णं सामी ! तुब्भ वाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसिउ । तएणंसखे कासीराया त सुवन्नगारे एव वयासी—किन्न तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता ?, तएण ते सुवन्नगारा सख एव वयासी--एव खलु सामी ! कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुडलजुयलस्स संधीं विसघडिए, तएणं से कुभए सुवन्नगारसेणि सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता, त एएणं कारणेण सामी! अम्हे कुभएण निव्विसया आणत्ता, तएणं से सखे सुवन्नगारे एव वयासी -केरिसिया ण देवाणुप्पिया ! कूभगस्सधूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेह

रायवरकन्ना ?, तएण ते सुवन्नगारा सखराय एव वयासी–णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तएणं से संखे कूडलजुयलजणितहासे दूयं सद्दावेइ, जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अथ चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धप्रस्तावमाह—' तेणं कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्, तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तर खलु तस्या मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि =सन्धान योजन, ' विसघडिए ' विसघटितः= त्रुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणिं शब्दयति,

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएएण) उस काल और उस समय में (काशी नाम जणवए होत्था) काशी नाम का देश था (तत्थण वाणारसी नयरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थण सखे नाम काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शख नाम का राजा रहता था (तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था) एक समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन दिव्य कुडलों की सधी टूट गई–उन का जोड खुल गया ।

(तएण से कुभए राया सुवन्नगार सेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव

' तेण कालेण तेण समएणं ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ–' तेण कालेण तेण समएण ' તે વખતે (काशी नाम जणवए होत्था) કાશી નામે દેશ હતો (तत्थण वाराणसी नगरी होत्था) તેમા બનારસ નામે નગરી હતી (तत्थण सखे नाम कासीराया होत्था) તેમા કાશી દેશના અધિપતિ શખ નામે રાજા રહેતો હતો

(तएणं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था)

એક વખતની વાત છે કે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના દિવ્ય કુડળોનો સાધાનો ભાગ તૂટી ગયો

शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवाणुप्रियाः ! अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं 'सघाडेह' सघटयत सन्धान सयोजन कुरुत ततस्तदा खलु सा सुवर्णकारश्रेणिः एतम्=कुण्डलसधानकरणरूपम् अर्थं=कार्यं तथाऽस्त्विति कथयित्वा प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य तद् दिव्य कुण्डलयुगल गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव 'सुवन्नगार सिसियाओ' सुवर्णकारसिसियाः सुवर्णकाराणा वृषिका'=आसनानि-उपवेशनस्थानानि तत्रोपागच्छति, उपागत्य सुवर्णकारसिसियासु-सुवर्णकारोपवेशनस्थानेषु निषिशति=उपविशति निषिद्य=उपविश्य, बहुभि'=अनेकविधै आयैः=साधनै यावत्-अत्र यावत्करणात्-उपायैः=प्रयोगैः, स्थितिभि'=व्यवस्थाभिरिति बोध्यम्। परिणमयन्ति=पूर्वस्वरूप सम्पादयन्ति सा सुवर्णकारश्रेणिस्तस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं घटयितुमिच्छतीति पूर्वेण सम्बन्धः।

वयासी तुब्भेण देवाणुप्पिया! इमस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधिं सघाडेह) तब कुभक राजा ने सुवर्णकारों को बुलाया और बुलाकर उन से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम लोग इस दिव्य कुडल युगल की सधि को जोड़ दो (तएण सा सुवन्नगारसेणी एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता त दिव्व कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारसिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगार सिसियासु णिवेसइ, णिवेसित्ता बहूहिं आएहिं य जाव परिणामे माणा इच्छइ तस्स दिव्वस्स कुडल जुयलस्स सधित्तए) उस सुवर्णकार श्रेणी ने कुडलों की सधि को जोड ने रूप अर्थ को " तथास्तु कहकर स्वीकार कर लिया-और वे दोनो दिव्य कुडल राजा के पास से ले लिये। लेकर फिर वे सब जहा सुवर्णकारो के बैठ ने के स्थान थे वहा चले आये।

(तएण से कुभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी तुब्भेण देवाणुप्पिया ! इमस्स दिवस्स कुडलजुयलस्स सद्धिं सघाडेह)

ત્યારે કુભક રાજાએ સોનીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે આ દિવ્ય કુંડળો નો સધિ ભાગ જોડી આપો

(तएण सा सुवन्नगार सेणी एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ २ पडिसुणित्ता त दिव्व कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारसिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारसिसियासु णिवेसइ, णिवेसित्ता बहूहिं आएहिं य जाव परिणामेमाणा इच्छइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधित्तए)

તે સોનીઓએ તથાસ્તુ કહીને કુંડળો નો તૂટેલા ભાગને જોડવાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને બને દિવ્ય કુંડળો રાજાની પાસેથી તેઓ એ લઈ લીધા લીધા પછી તેઓ બધા જ્યા સોનીઓને બેસવાના સ્થાન હતા

नो चैव खलु शक्नोति सघटयितुम् तैः सुवर्णकारैस्तस्य त्रुटितस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि सघटयितुमनेकोपाया कृताः, परतु कुण्डल सन्धेर्यथोचित योजनाऽभावात्ते विफलप्रयत्ना अभूवन्निति भावः । ततस्तदनन्तर खलु सा सुवर्णकारश्रेणिर्यत्रैव कुम्भक-मिथिलाराजः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीत शिर आवर्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा=कृत्वा सयोज्य 'वद्धावेत्ता' वर्धयित्वा-'जयजये' ति शब्देनाभिनन्द्य, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे स्वामिन् ! एव खलु अद्य यूयमस्मान् शब्दयथ, शब्दयिता यावत्=भवद्भिरेव वयमाज्ञप्ताः-' अस्य कु-

---

आकर उन स्थानों में बैठ गये-बैठकर उन लोगो ने अनेक साधनो से, अनेक उपायों से अनेक व्यवस्थाओं से उस दिव्य कुडल के युगल की सधि को जोड ने की इच्छा की, परन्तु (नो चेवण सचाएइ सघडित्तए, तएण सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ) वे उस सधी को यथोचित रूप से जोड़ ने में समर्थ नही हो सके-अतः उन का समस्त प्रयत्न विफल हुआ- । इस तरह विफल प्रयत्न वाले हुए वे लोग जहा मिथिलाधिपति कुभक राजा थे-वहा गये उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एव वयासी) वहा जाकर उस सुवर्णकार श्रेणी ने दोनों हाथो को जोडकर राजाको वधाई दी-जय हो विजय हो इस तरह उसका अभिनदन किया-बाद में इस प्रकार कहा- (एव खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावेह, सद्दावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता एयमाण पच्चप्पिणह) स्वामिन् ! आपने आज हमलोगों को बुलाया था और

त्या आव्या त्या तेओ बेठा अने बेसीने ते लोकोओ जात जातना साधनो, उपायो तेमज अनेक जातनी व्यवस्थाओथी अने कुंडळोना तूटेला भागने साधवाना प्रयत्नो कर्या पण

(नो चेव ण सचाएइ सघडित्तए, तएण सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ)

તેઓ કુંડળોના તૂટેલા સધિભાગને સાધવામા સમર્થ થઈ શકયા નહિ અને તેઓના બધા પ્રયત્નો નિષ્ફળ બન્યા આ પ્રમાણે નિષ્ફળ પ્રયત્ન વાળા તેઓ બધા જ્યા મિથિલાધિપતિ કુભક રાજા હતા ત્યા ગયા (उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एव वयासी) ત્યા જઈને તે સોનીઓએ બને હાથ જોડી ને રાજાને જયથાઓ જયથાઓ આ પ્રમાણે ના શબ્દોથી અભિનદિત કર્યો અને ત્યાર પછી કહેવા લાગ્યા--

एव खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावेह सद्दावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता एयमाण पच्चप्पिणह)

ण्डलयुगलस्य सन्धिं सघटयत, सन्धिं सघट्य=जुटित सन्धिं योजित्वा-एतामाज्ञां =ममाज्ञप्तिं प्रत्यर्पयत ' इति, ततः खलु वय तद् दिव्यं कुण्डलयुगल गृह्णीमः, यत्रैव सुवर्णकारपर्षिकाः, यावत्-तत्रोपागच्छामः उपागत्य तत्रोपविश्य वय कुण्डल युगलस्य सधिं सघटयितु प्रयत्न कृतवन्त' परतु नो शक्नुमः सघटयितु सयोजयितुम् , तत' तस्मात् कारणात् खलु हे स्वामिन् ! एतस्य दिव्यस्य कुण्डलस्यान्यत् सदृश कुण्डलयुगल घटयामः=रचयाम', ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भो राजा तस्याः सुवर्णकारश्रेण्याः सुवर्णकारसमूहस्य अन्तिके=समीपे, एतमर्थ=कुण्डलसन्धिसघटन

घुलाकर ऐसा कहा था कि तुम लोग इस दिव्य कुण्डल युगल की सधि को कि जो टूट गई है-खुल गई है-ठीक कर दो-जोड़ दो-और जोड़कर हमारी इस आज्ञप्ति को पूर्ण कर इस की हमें खबर दो (तएण अम्हे त दिव्व कुडलजुयल गिण्हामो-जेणेव सुवन्नागारभिसियाओ जाव नो सचाएमो सघडित्तए तएण अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुडलस्स अन्न सरिसय कुडलजुयल घटेमो) हमने उस दिव्य कुडल युगल को ले लिया था-और लेकर हम लोग जहा सुवर्ण कारों के बैठने का स्थान था-वहा चले गये थे-वहाँ बैठकर हम लोगों ने अनेक साधनों द्वारा, अनेक उपायों द्वारा और अनेक व्यवस्थाओं द्वारा इस कुडल युगल की सधि को जोडनेका प्रयत्न किया-परन्तु यथोचित रूपसे जोड़ने में हम लोग सफल प्रयत्न नहीं हो सके है-अतः हे स्वामिन् ! आपकी आज्ञा हो तो हम इस दिव्य कुडलके समान और दूसरा कुडल युगल बना देते हैं-(तएण से कुभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अतिए एयमट्ठ

હે સ્વામિન્ તમે આજે અમને બોલાવ્યા હતા અને બોલાવીને કહ્યું હતુ કે તમે લોકો આ દિવ્ય કુંડળોનો સધિ ભાગ તૂટી ગયો છે તેને સારો કરી આપો, સાધી આપો અને સાધીને અમને ખબર આપો

(तएण अम्हे त दिव्व कुडल जुयल गिण्हामो जेणेव सुवन्नागारभिसिया ओ जाव नो सचाएमो सघडित्तए तएण अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुडलस्स अन्न सरिसय कुडलजुयल घटेमो)

અમે તે કુંડળની જોડને લીધી અને લઇને જ્યા સોનીઓને બેવસાની જગ્યાઓ છે ત્યા ગયા ત્યા બેસીને અમે લોકોએ ઘણા સાધનો ઉપાયોને ઘણી વ્યવસ્થાઓ વડે આ બને કુંડળોના તૂટેલા ભાગને સાધવાના પ્રયત્નો કર્યા, પણ તેઓને યોગ્ય રીતે સાધવામા અમે લોકો સફળ થયા નથી, એથી હે સ્વામી ! આપની આજ્ઞા હોય તો આ દિવ્ય કુંડળો જેવાજ બીજા કુંડળો ઘડી આપીએ

योग्यताराहित्यरूप श्रुत्वा=शब्दत कर्णगोचरीकृत्य, निशम्य=अर्थतोऽवगम्य, 'आसुरुत्ते' आशुरुप्तः=झटितिक्रोधाविष्टः, 'तिवलिय' त्रिवलिका=रेखात्रयाभिव्यक्तिकारिका, 'भिउडीं' भ्रुकुटिं वक्रीभूतभ्रुव, ललाटे=भाले सहृत्य=आरुह्य-एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-अय खलु यूय 'कलायाण' कलादाना-कलामाददत इति कलादा' स्वर्णकारास्तेषां के भवथ ? न कोऽपीत्यर्थ' ये खलु यूयमस्य कुण्डलयुगलस्य नो शक्नुथ सन्धि सघटयितुम् । ये खलु सुवर्णकारास्ते कलामात्र सुवर्णमादाय तद् वितत्य राजादीना मनोहर कनकमयमाभूषणादिक रचयन्ति यूय तु त्रुटितस्य सुवर्णसन्धेः सयोजनेऽप्यसमर्थाः स्थ तर्हि कलादाकुलोद्भवा यूयमिति कथं

सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते तिवलिय भिउडी निडाले साहट्टु एव वयासी) इस प्रकार उस सुवर्णकार श्रेणी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे विचार कर वह कुभक राजा उस पर झटिति क्रोध से लाल पीली आखों वाला हो गया-और भ्रकुटि को मस्तक पर चढाकर इस प्रकार बोला (से केण तुब्भे कलायाण भवह ? जेण तुब्भे इमस्स कुडल जुयलस्स नो सचाएह सधि सघाडेत्तए ?) जब तुम लोग इस कुडल युगल की सधि को ही नहीं जोड सकते हो तो फिर तुम सुवर्णकार कैसे ? जो सुवर्णकार होते हैं वे तो कलामात्र (थोढा) भी सोनेका पसार कर ऐसे २ आभूषण उसके बना देते है जो राजादिकोके मनको भी हरण कर लेते हैं।

तुम लोग तो टूटे हुए सुवर्ण की सधि को भी जोडने मे अक्षम बन रहे हो तो फिर कैसे हम तुम्हें सुवर्णकारों के कुलो में उत्पन्न हुआ

तएण से कुभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते तिवलिय भिउडी, निडाले साहट्ट एव वयासी)

આ રીતે સોનીઓના મુખેથી આ વાત સાભળીને અને તે વિષે બરોબર વિચારીને કુભક રાજા તેઓના ઉપર ખૂબજ ક્રોધથી લાલ પીળા થઈ ગયા અને ભ્રમ્મરો ઉચી ચઢાવીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા-

(सेकेण तुब्भे कलायाण भवइ ? जेण तुब्भे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधिं सघाडेत्तए ?)

તમે આ બે કુડળોના તૂટેલા સધિભાગને જ સધી રાકવામા અસમર્થ છો ત્યારે તમે સુવર્ણકાર કઈ રીને છો ! જેઓ સુવર્ણકાર હોય છે તેઓ તો કલા માત્ર પણ સોનુ હોય તેને ફેલાવીને એવા એવા ઘરેણાઓ તૈયાર કરી આપે છે કે જનાથી રાજાઓના મન પણ પ્રસન્ન થઈ જાય છે

તમે લોકો જ્યારે તૂટેલા સોનાનો સાધો પણ જોડી શકતા નથી ત્યારે અમે તમને સુવર્ણ કારોના કુળમા જન્મેલા કયા આધારે માની એ ? (सुव

मन्ये, इति भावः । ततः स कुम्भको राजा किं कृतवान् ? इत्याह- ते' इत्यादि, तान् सुवर्णकारान् ' निव्विसए ' निर्विषयान् स्वदेशतो निष्क्रान्तान् आज्ञापयति ' मम राज्याद्बहिर्गच्छथ ' इत्याज्ञां ददाति स्मेत्यर्थः ।

तत खलु ते सुवर्णकाराः कुम्भेन=कुम्भकेन राज्ञा निर्विषया स्वदेशतो निर्गन्तुमाज्ञप्ताः सन्तः यत्रैव स्वानि स्थानि गृहाणि, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' सभंडमत्तोवगरणमायाए ' सभाण्डामत्रोपकरणमादाय स्वकीयभाण्डभाजनाद्युपकरणं गृहीत्वा शकटसमूहेऽवस्थाप्य मिथिलाया राजधान्या मध्यमध्येन निष्क्रामन्ति= निर्गच्छन्ति, निष्क्रम्य विदेहस्य जनपदस्य मध्यमध्येन मध्ये भूत्वा, यत्र काशीजनपदः, यत्रैव वाराणसी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' अग्गुज्जाणंसि'

मानें । (सुवन्नगारे निव्विसए आणवेइ) इस तरह कह कर उस कुंभक राजा ने उन सुवर्णकारों को अपने देश से बहिर निकल जाने की-आज्ञा दे दी । (तएणं से सुवन्नगारा कुंभेणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमंति) इसके बाद वे सुवर्णकार कुंभक राजा से अपने देश से बाहिर निकल जाने के लिये आज्ञप्त होकर जहा अपने २ घर थे वहा आये । वहा आकर उन्हों ने अपने २ भाड भाजन आदि उपकरणों को गाडियों में भरा और भराकर मिथिला राजधानी के बीचो बीच से होकर निकले । (निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति) और निकल विदेह जनपद के भीतर से होकर जहा काशी देश और बनारसी नगरी थी वहा आये।

न्नगारे निव्विसए आणवेइ) આ પ્રમાણે કહીને કુંભરાજાએ તે સુવર્ણકારોને પોતાના દેશની બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી

तएणं से सुवन्नगारा कुंभेणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडमत्तोवगरणमायाए महिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमंति)

ત્યાર પછી તે સોનીઓ કુંભક રાજાની પાસેથી પોતાના દેશમાંથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા સાંભળીને જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓ એ પોતાના વાસણ વગેરે સામાનને ગાડીઓમાં ભર્યો અને ભરીને મિથિલા રાજધાનીના રાજમાર્ગે થઈને નીકળ્યા

(निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति)

અને નીકળીને વિદેહ જન પદની વચ્ચે થઈ ને જ્યાં કાશીદેશ અને બનારસી નગરી હતી ત્યાં ગયા

अग्रोद्याने=प्रधानोद्याने, सगडीसागड ' शकटीशाकट=क्षुद्रशकटबृहच्छकटानां समूह ' मोएंति ' मोचयन्ति शकटेभ्यो बलीवर्दान् पृथक् कुर्वन्ति मोचयित्वा महार्थ=महाप्रयोजनक यावत्-महार्घ=महामूल्यक महार्ह=महता राजादीना योग्य, पाभृतम्=उपहार गृह्णन्ति, गृहीत्वा वाराणस्या नगर्या म-यमध्येन=वाराणस्या नगर्यामध्ये भूत्वा यत्रैव शङ्ख' शङ्खनामा काशिराजस्तत्रोपागच्छन्ति० । उपागत्य करतल० यावत् मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे स्वामिन्! एव खलु मिथिलाया नगर्या कुम्भकेन राज्ञा निर्दिषयाः=स्व-देश निर्गता भवितुमाज्ञप्ता सन्त इह 'हव्वमागया ' हव्यमागता शीघ्रमागताः,

(उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणसि सगडी सागड मोएंति, मोइत्ता महत्थ जाव पाहुड गिण्हंति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सखे कासी राया तेणेव उवागच्छंति) वहा आकर उन्होंने अपनी २ गाडी और गाड़ो को वहा के बगीचे मे ठहरा दिया-और ठहरा कर फिर ये सब महार्थसाधक-कीमती तथा राजादिको के योग्य भेट को लेकर वानारसी नगरी के बीच से होकर जहा काशी राज शंख राजा थे वहा आये ' (उवागच्छित्ता करयल० जाव एव वयासी-अम्हेण सामी! मिहिलाओ-नयरीओ कुभएण रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा इह हव्वमागया) वहाँ आकर उन्होने दोनों हाथो को जोड कर और उनकी अजलि को माथेपर रखकर राजा को नमस्कार किया, बाद में इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन्! हमलोगों को कुभक राजा ने

उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणसि सगडी सागड मोएंति, मोइत्ता महत्थ जाव पाहुड गिण्हंति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव सखे कासी राया तेणेव उवागच्छंति)

ત્યા આવીને તેઓ એ પોત પોતાની ગાડીઓ તેમજ ગાડાઓને ત્યાના બાસ ઉદ્યાનમા રોકયા અને રોકીને તેઓ બવા મહાર્થ સાધક બહુજ કીમતી તેમજ રાજા વગરે ને યોગ્ય એવી ભેટ લઈને બનારસી નગરીની ઠીક વચ્ચે થઈ ને જ્યા કાશીરાજ શખરાજા હતા ત્યા ગયા

उवागच्छित्ता करयल० जाव एव वयासी अम्हेणसामी ! मिहिलाओ नयरीओ कुभएण रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा इह-हव्वमागया)

ત્યા જઈને તેમણે બને હાથો જોડીને અજલી મસ્તકે મૂકીને રાજાને વદન કર્યા અને તેઓ કહેવા લાગ્યા-હે સ્વામિન્! કુભક રાજાએ અમને લોકોને મિથિલાનગરીથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે મિથિલાનગરીની બહાર કહા

मन्ये, इति भावः । ततः स कुम्भको राजा किं कृतवान्? इत्याह- ते' इत्यादि, तान् सुवर्णकारान् ' निव्विसए ' निर्विषयान् स्वदेशतो निष्क्रान्तान् आज्ञापयति ' मम राज्यादूरहिर्गच्छत ' इत्याज्ञा ददाति स्मेत्यर्थः ।

तत खलु ते सुवर्णकाराः कुम्भेन=कुम्भकेन राज्ञा निर्विषया स्वदेशतो निर्गन्तुमाज्ञप्ताः सन्तः यत्रैव स्वानि स्वानि गृहाणि, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' सभण्डमत्तोवगरणमायाए ' सभाण्डामत्रोपकरणमादाय स्वकीयभाण्डभाजनाद्युपकरण गृहीत्वा शकटसमूहेऽवस्थाप्य मिथिलाया राजधान्या मध्यमध्येन निष्क्रामन्ति= निर्गच्छन्ति, निष्क्रम्य विदेहस्य जनपदस्य मध्यमध्येन मध्ये भूत्वा, यत्र काशीजनपदः, यत्रैव वाराणसी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' अगुज्जाणसि'

मानें । (सुवन्नगारे निव्विसए आणवेइ) इस तरह कह कर उस कुम्भक राजा ने उन सुवर्णकारों को अपने देश से बहिर निकल जाने की-आज्ञा दे दी । (तएणं से सुवन्नगारा कुम्भेणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साई २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झ मज्झेणं निक्खमंति) इसके बाद वे सुवर्णकार कुम्भक राजा से अपने देश से बाहिर निकल जाने के लिये आज्ञप्त होकर जहा अपने २ घर थे वहा आये । वहां आकर उन्हों ने अपने २ भाड भाजन आदि उपकरणो को गाडियो में भरा और भराकर मिथिला राजधानी के बीचो बीच से होकर निकले । (निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति) और निकल विदेह जनपद के भीतर से होकर जहा काशी देश और बनारसी नगरी थी वहा आये।

नगारे निव्वसए आणवेइ) આ પ્રમાણે કહીને કુભરાજાએ તે સુવર્ણકારોને પોતાના દેશની બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી

तएण से सुवन्नगारा कुभेणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए महिलाए रायहाणीए मज्झ मज्झेण निक्खमंति)

ત્યાર પછી તે સોનીઓ કુભરાજાની પાસેથી પોતાના દેશમાથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા સાભળીને જ્યા પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓ એ પોતાના વાસણ વગેરે સામાનને ગાડીઓમા ભર્યો અને ભરીને મિથિલા રાજધાનીના રાજમાર્ગે થઇને નીકળ્યા

(निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति)

અને નીકળીને વિદેહ જન પદની વચ્ચે થઈ ને જ્યા કાશીદેશ અને બનારસી નગરી હતી ત્યા ગયા

पुत्र्याः=प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अङ्गजातायाः, मल्लयाः=मल्लीकुमारिकायाः, कुण्डलयुगलस्य सन्धिविसंघटित=त्रुटितः। ततः खलु स कुम्भकः सुवर्णकार श्रेणिम्=अस्मानित्यर्थः शब्दयति, शब्दयित्वा यावत्-अत्रयावच्छब्देनेद द्रष्टव्यम्-तेनैव वयमाज्ञप्ताः-अस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि- सघटयत सन्धि सघटय्य=त्रुटित सन्धि योजयित्वा, एतामाज्ञां=ममाज्ञप्तिं, प्रत्यर्पयत" इति ततः खलु वय तद् दिव्य कुण्डलयुगल गृहीत्वा निजोपवेशनस्थानमागत्य तत्रोपविश्य नानाविधैरुपायैः पूर्व-स्वरूप सम्पादयन्तस्तस्य कुण्डलयुगलस्य सधिं सघटयितु प्रयास कृतवन्तः, परन्तु नो शक्नुमः सघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरोगत्वाऽस्माभिरेवमावेदि

धूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयस्स सधी विसघडिए-तएण से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता) हे स्वामीन्! कुंभक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती की कुक्षि से उत्पन्न हुई है और जिसका नाम मल्ली कुमारी है-के दो कुंडलों की सधी विघटितहो गई थी-सो कुंभक राजाने हमसब सुवर्णकारों को बुलाया था-और ऐसा कहा था कि तुम लोग इन की सधी को जोड कर ले आओ-हमलोगों ने उनकी आज्ञानुसार उन दोनों कुंडलो को लेलिया और लेकर हमलोग अपने २ बैठने के स्थान पर चले आए-वहा बैठकर हमलोगों ने नाना प्रकार के उपायों से उन कुंडलो को पूर्वावस्थ बनाने के लिये त्रुटित सधी को जोडने का बहुत प्रयास किया परन्तु यथावत् हमलोग उसे सघटित नही कर सके अतः हमलोग उनके समीप पहुँचे-और वहा जाकर उनसे प्रार्थना की कि

(एव खलु सामी! कुंभगरस्स रन्नो धूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयलस्स सधी विसघडिए तएण से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता)

હે સ્વામીન્! પ્રભાવતી રાણીના ગર્ભથી જન્મ પામેલી કુંભક રાજાની પુત્રી મલ્લી કુમારીના બે કુંડળોનો સાંધો તૂટી ગયો કુંભક રાજાએ બધા સોનીઓને બોલાવ્યા અને કહ્યું કે તમે લોકો આ કુંડળોની સંધિને જોડી આપો અમોએ તેમની પાસેથી કુંડળો લઈ લીધા મને લઈને અમે બધા પોતપોતાના બેસવાના સ્થાને આવી ગયા ત્યા બેસીને અમોએ જાત જાતના ઉપાયોથી તે કુંડળોને પહેલાના જેવા જ સારા બનાવી આપવાની એટલે કે તૂટેલો સંધિ ભાગ ફરી સાંધી આપવા માટે ઘણા પ્રયત્નો કર્યા પણ તે કુંડળોને પૂર્વવત્ સારા કરવામા સમર્થ થઈ શકયા નહિ અમે લોકો રાજાની પાસે ગયા અને તેમને વિનતિ કરી કે હે મહારાજ! અમે બહુ જ

तत्=तस्मात् इच्छामः खलु हे स्वामिन्! युष्माकं बाहुच्छाया परिगृहीताः सञ्जच्छाया समाश्रिता अतएव निर्भयाः, निरुद्विग्नाः=उद्वेगरहिता, सुखं सुखेन=अतिसुखेन परिवस्तुमिच्छाम इति पूर्वेण सम्बन्धः ।

ततस्तदनन्तरं खलु शङ्खः काशिराजस्तान् सुवर्णकारानेवमवादीत्-हे देवानुप्रिया ! किं= कुतः खलु यूयं कुम्भकेन राज्ञा निर्विषया आज्ञप्ताः ? ततः खलु ते सुवर्णकाराः शङ्खमेवमवादीत्-हे स्वामिन्। एवं खलु कुम्भकस्य राज्ञो दुहितुः

मिथिलानगरी से बहार चलेजाने की आज्ञा दी-सो हमलोग वहांसे निर्वासित होकर यहां आये हैं-(तं इच्छामोणं सामी ! तुब्भ बाहुच्छाया परिग्गहिया निब्भयानिव्विग्गा सुहं सुहेणं परिवसिउ) अतः हे स्वामिन् ! आपकी बाहुच्छाया का आश्रय लेकर हमलोग यहां निर्भय और निरुद्विग्न होकर शान्ति पूर्वक आनन्द के साथ रहना चाहते हैं (तएणं सुवन्नागारे एवं वयासी) उनकी इस प्रकार की बात सुनने के बाद काशी देशाधिपति शङ्ख राजा ने उनसे ऐसा कहा-(किन्न तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता) हे देवानुप्रियो। किस कारण से कुम्भक राजा ने आप लोगों को मिथिलानगरी से बाहर चले जाने की आज्ञा प्रदान की-

(तएणं ते सुवन्नगारा सखं एवं वयासी) सुवर्णकारों ने प्रत्युत्तरमें शङ्ख राजा से इस प्रकार कहा-(एवं खलु सामी ! कुंभगस्स रन्नो

હવાની આજ્ઞા કરવાથી એથી અમે ત્યાંથી નિર્વાસિત થઇને અહીં આવ્યા છીએ

(तं इच्छामो णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छायां परिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं परिवसिउ)

એથી હે સ્વામિન્ ! તમારી બાહુચ્છાયાના આશ્રયમાં અમે લોકો નિર્ભય અને નિરૂદ્વિગ્ન થઇને શાંતિથી સુખેથી અહીં રહેવા ઇચ્છા રાખીએ છીએ

(तएणं सखे कासी राया ते सुवन्नागारे एवं वयासी)

તેમની આ પ્રમાણે વિનંતી સાંભળીને કાશી દેશાધિપતિ શંખ રાજાએ તેમને કહ્યું

(किन्न तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता)

હે દેવાનુપ્રિયો ! કુંભક રાજાએ તમને શા કારણથી મિથિલા નગરીની બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે ?

(तएणं ते सुवन्नागारा सखं एवं वयासी)

સોનીઓએ જવાબમાં શંખ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

पुत्र्याः=प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अङ्गजातायाः, मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकायाः, कुण्डलयुगलस्य सन्धिविसंघटित=त्रुटितः। ततः खलु स कुम्भकः सुवर्णकार श्रेणिम्=अस्मानित्यर्थः शब्दयति, शब्दयित्वा यावत्-अत्रयावच्छब्देनेद द्रष्टव्यम्-तेनैव वयमाज्ञप्ताः-अस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि- संघटयत सन्धि संघटय्य=त्रुटित सन्धि योजयित्वा, एतामाज्ञां=ममाज्ञप्तिं, प्रत्यर्पयत" इति ततः खलु वय तद् दिव्य कुण्डलयुगल गृहीत्वा निजोपवेशनस्थानमागत्य तत्रोपविश्य नानाविधैरुपायैः पूर्व-स्वरूप सम्पादयन्तस्तस्य कुण्डलयुगलस्य सधिं संघटयितु प्रयास कृतवन्तः, परन्तु नो शक्नुमः संघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरोगत्याऽस्माभिरेवमावेदि

धूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयस्स सधी विसंघडिए-तएणं से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता) हे स्वामीन्! कुंभक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती की कुक्षि से उत्पन्न हुई है और जिसका नाम मल्ली कुमारी है-के दो कुंडलो की सधी विघटितहो गई थी-सो कुंभक राजाने हमसब सुवर्ण कारों को बुलाया था-और ऐसा कहा था कि तुम लोग इन की सधी को जोड कर ले आओ-हमलोगों ने उनकी आज्ञानुसार उन दोनों कुंडलो को लेलिया और लेकर हमलोग अपने २ बैठने के स्थान पर चले आए-वहा बैठकर हमलोगों ने नाना प्रकार के उपायों से उन कुंडलों को पूर्वावस्थ बनाने के लिये त्रुटित सधी को जोडने का बहुत प्रयास किया परन्तु यथावत् हमलोग उसे संघटित नही कर सके अतः हमलोग उनके समीप पहुँचे-और वहा जाकर उनसे प्रार्थना की कि

(एत्र खलु सामी! कुंभगरस्स रन्नो धूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयलस्स सधी विसंघडिए तएणं से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता)

હે સ્વામીન્! પ્રભાવતી રાણીના ગર્ભથી જન્મ પામેલી કુંભક રાજાની પુત્રી મલ્લી કુમારીના બે કુંડળોનો સાંધો તૂટી ગયો કુંભક રાજાએ બધા સોનીઓને બોલાવ્યા અને કહ્યુ કે તમે લોકો આ કુંડળોની સંધિને જોડી આપો અમોએ તેમની પાસેથી કુંડળો લઈ લીધા અને લઇને અમે બધા પોતપોતાના બેસવાના સ્થાને આવી ગયા ત્યા બેસીને અમોએ જાત જાતના ઉપાયોથી તે કુંડળોને પહેલાના જેવા જ સારા બનાવી આપવાની એટલે કે તૂટેલો સંધિ ભાગ ફરી સાંધી આપવા માટે ઘણા પ્રયત્નો કર્યા પણ તે કુંડળોને પૂર્વવત્ સારા કરવામા સમર્થ થઈ શકયા નહિ અમે લોકો રાજાની પાસે ગયા અને તેમને વિનતિ કરી કે હે મહારાજ! અમે બહુ જ

तम्-अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं सघटयितुं प्रयास कृतवन्तः, परतु नो शक्नुमः सघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञ पुरो गत्वाऽस्माभिरेव मवादित्-अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं सघटयितु मयत्न कृतवन्तोऽपि वय नो शक्ता सघटयितुम्, तस्मात् खलु हे स्वामिन्। एतत्सदृशमन्यत कुण्डलयुगल घटयामः इति। ततः क्रोधाविष्टेन कुम्भकेन राज्ञा एव 'निव्विसया' निर्विषया स्वदेशतो निर्गता भवितुम्, आज्ञप्ता.=आदिष्टाः।

ततः स शङ्खः काशीराजः सुवर्णकारानेवमवादीत्-हे देवानुप्रिया। कीदृशी खलु कुम्भकस्य राज्ञो दुहिता=पुत्री प्रभावत्या देव्या आत्मना=अङ्गजाता, मल्ली

महाराज हमलोग प्रयत्न करने पर भी इस कार्यमें असफलित हो रहे हैं-अतः आपको आज्ञा हो तो हम इन्ही कुडलों जैसा कुडल और बनादेवें-बस हमारा इतना ही कहना था कि राजा इकदम क्रोध के आवेश मे आ गये-और हमलोगों को अपने देश से निकल जाने की आज्ञा दे बैठे। बस (त एएण कारणेण सामी! अम्हे कुभएण निव्विसयो आणत्ता-तएण से सखे सुवन्नगारे एव वयासी-केरिसिया ण देवाणुप्पिया! कुभगधूया पभावइए देवीए अत्तया मल्ली विदेह रायवर-कन्ना) हे स्वामीन् यहीकारण है कि जिससे हमलोग कुभक राजा के द्वारा देश से निकल जाने के लिये आज्ञप्तहुए हैं-शख राजाने उन सुवर्ण करों को अपने राज्यमे बसनेके लिये खुशी से आज्ञाप्रदान की।

इस प्रकार सुनने के अनन्तर उस शख राजा ने सुवर्णकारों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो! कहो-कुभक राजा की वह विदेहवर

પ્રયત્નો કર્યા છતા આ કામમા અમે સફળ થઈ શકયા નહિ એથી તમે આજ્ઞા આપો તો આ કુડળો જેવા જ બીજા બે કુડળો ઘડી આપીએ અમારી આ વાત સાભળીને રાજા એકદમ લાલચોળ થઈ ગયા અને અમને પોતાના દેશથી બહાર જવાની આજ્ઞા આપી દીધી

(त एएण कारणेण सामी! अम्हें कुभए णं निव्विसया आणत्ता तएणं से सखे सुवन्नगारे एव वयासी केरिसियाण देवाणुप्पिया! कुभगधूया पभावइए देवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ना)

હે સ્વામીન્! બસ એ કારણને લીધે જ કુભક રાજાએ અમને દેશવટો આપ્યો શખ રાજાએ તે બધા સોનીઓને પોતાના દેશમા રહેવાની ખુશીથી પરવાનગી આપી

સોનીઓની આ બધી વાત સાભળીને શખ રાજાએ તેમને કહ્યુ કે-હે

विदेहराजवरकन्यका ?, ततः खलु ते सुवर्णकाराः शङ्खं राजानमेवमवदन्–हे स्वामिन् ! नो खलु अन्या काचित् तादृशी देवकन्या वा गन्धर्वकन्या वा यावत्–अत्र यावच्छब्देनेदं बोध्यम्–असुरकन्या नागकन्या यक्षकन्या वा इति, यादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या मल्लीसदृशी काऽपि कन्या लोकत्रये नास्तीत्यर्थः । ततः खलु स शङ्खः काशीराजः कुण्डलयुगलजनितहर्षः=कुण्डलयुगलमहत्त्वश्रवणसजातमल्लीविषयकानुराग सन् दूतं शब्दयति,यावत्–अत्र यावच्छब्देनेदं द्रष्टव्यम्–शब्दयित्वा एवमवादीत्–हे देवानुप्रिय ! शीघ्रमेव मिथिलां गत्वा कुम्भकं राजानं

राज कन्या मल्ली कुमारी–कि जिसका जन्म प्रभावती की कुक्षि से हुआ है–कैसी है ? (तपण ते सुवन्नगारा सखराय एव वयासी–णो खलु सामी ! अन्ना काइ तारिसिया देवकन्ना वा गधव्वकन्ना वा जारीसियाण मल्ली विदेहवरायकन्ना–तएण से सखे कुडलजुयलजणितहासे दूय सद्दावेइ, जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए) इसके प्रत्युत्तर में उन सुवर्ण कारोंने शख राजा से इस प्रकार कहा हे स्वामिन् ! ऐसी तो कोई देव-कन्या भी नहीं है, गधर्व कन्या भी नही है, असुरकन्या भी नहीं है, नागकन्या भी नही है और न कोई यक्ष कन्या ही है कि जैसी विदेह वर राजकन्या मल्लीकुमारी है। तात्पर्य इसका यही है कि–मल्ली कुमारी जैसी कन्या लोकत्रय में भी नही है। इस प्रकार कुडलयुगल के महत्व श्रवण से मल्लीकुमारी के विषय में जिसे अनुराग (भाव उत्पन्न हो चुका है ऐसे उस शाख राजाने दूतको बुलाया–बुलाकर उस से ऐसा कहा–हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही मिथिला जाकर कुभक

દેવાનુપ્રિયો ! બતાવો કુભક રાજાની વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લી કુમારી કે જેનો જન્મ પ્રભાવતીના ગર્ભથી થયો છે તે કેવી છે ?

(तएण ते सुवन्नगारा सखराया एव वयासी–णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गधव्वकन्ना वा जारिसियाण मल्ली विदेहवररायकन्ना–तएण से सखे कुडलजुयलजणितहासे दूय सद्दावेई, जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए)

તેના જવાબમા સોનીઓએ શાખ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે–હે સ્વામીન્ ! જેવી વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી છે તેવી તો દેવકન્યા પણ નથી, ગધર્વકન્યા પણ નથી, અસુર કન્યા પણ નથી, નાગકન્યા પણ નથી અને યક્ષ કન્યા પણ નથી તાત્પર્ય એ છે કે–મલ્લીકુમારી જેવી કન્યા ત્રણે લોકોમા પણ નથી

આ રીતે કુડળોના મહત્ત્વ વિષે વાત સાભળતા જ મલ્લી કુમારીના ઉપર જેના મનમા અનુરાગ જન્મ પામ્યો છે એવા તે શાખ રાજાએ દૂતને બોલાવ્યો અને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ–કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મિથિલા નગરીમા ત્વરે

ब्रूहि-शङ्खः काशिराजस्तव कन्यका मल्लीं याचते ' इत्यादि । तथैव=पूर्वोक्त रुक्मिदूतवत्, प्राधारयद् गमनाय=ततः शङ्खस्य काशीराजस्याज्ञया स दूतो रथारूढ सन् यत्रैव मिथिलानगरी तत्रैव गन्तु प्रवृत्त इत्यर्थः । इति चतुर्थस्य शङ्खस्य राज्ञः सम्बन्धः कथित ॥ सू० २६ ॥

मूलम्-तेण कालेण तेण समएणं कुरु जणवए होत्था, तत्थ ण हत्थिणाउरनयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था, जाव विहरइ, तत्थ णं मिहिलाए कुभगस्स पुत्ते पभावईए अत्तए मल्लीए अणुजाणए मल्लदिन्नए नामकुमारे जाव जुवराया यावि होत्था तएणं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबिय० सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह अणेग जाव पच्चप्पिणंति, तएण से मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हावभावविलास विव्वोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह, चित्तित्ता जाव पच्चप्पिणह, तएणं सा चित्तगरसेणी तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, तूलियाओ वन्नए य गिण्हइ,

---

राजासे कहो कि काशी देशाधिपति शंख राजा आपकी कन्या मल्ली कुमारी को चाहते है इत्यादि ।

इस प्रकार अपने राजा काशी राज की आज्ञा से वह दूत रथ पर आरूढ होकर जहा मिथिला नगरी थी उस ओर चल दिया । इस तरह यह चतुर्थ शख राजा का वृत्तान्त प्रकार कहा गया है । सूत्र " २६ "

પહોચ્યો અને કુભક રાજાને કહ્યુ કે કાશી દેશાધિપતિ શખ રાજા તમારી કન્યા મલ્લીકુમારીને ચાહે છે વગેરે

આ રીતે પોતાના રાજા કાશી રાજાની આજ્ઞા મેળવીને દૂત રથ ઉપર સવાર થયો અને જે તરફ મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો આ રીતે આ ચોથા શખ રાજાનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે ॥ સૂત્ર " ૨૬ " ।

गिण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता भूमिभागे विरचइ, विरंचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जित्ता चित्तसभं हावभाव जाव चित्तेउ पयत्ता यावि होत्था, तएणं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धापत्ता अभिसमन्नागया-जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेण तयाणुरूव रूव निव्वत्तेइ, तएणं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठ पासइ, तएण तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु मम मल्लीए एवि पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं जाव गुणो ववेय रूव निव्वत्तित्तए, एव संपेहेइ, संपेहित्ता भूमिभागं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीएवि पायंगुट्ठाणुसारेण जाव निव्वत्तेइ, तएणं सा चित्तगरसेणी चित्तसभ हावभाव जाव चित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तिय पच्चप्पिणइ, तएण मल्लदिन्ने चित्तगरसेणि सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता विपुल जीवियारिह पीइदाण दलेइ, दलित्ता पडि-विसज्जेइ । तएण मल्लदिन्ने अन्नया पहाए अंतेउरपरियाल-संपरिवुडे अम्मधाईए सद्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चित्तसभ अणुपविसइ, अणुपविसित्ता हावभाव-विलास विव्वोयकलियाइ रूवाइ पासमाणेर जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू०२७ ॥

टीका-अथ पञ्चमस्यादीनशत्रुनाम्नो राज्ञ सम्बन्धमस्तावमाह-'तेण कालेण' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुरुजनपदः=कुरु नामको देशः, आसीत्, तत्र=तस्मिन् देशे, हस्तिनापुरे-नगरे अदीनशत्रुर्नाम राजाऽऽसीत्०।यावद् विहरति-राज्य पालयन् स आस्त स्मेत्यर्थः ।

इतश्च तत्र खलु मिथिलाया कुम्भकस्य पुत्रः प्रभावत्या' आत्मजः=अङ्गजातः, मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकाया अनुजातकः=लघुभ्राता, मल्लदत्तो नाम कुमारः, यावद्-राजनीतिकुशलो युवराजश्चाप्यभूत् । ततस्तदनन्तर मल्लदत्तः कुमारः

' तेण कालेणं तेण समएण ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समयमें (कुरु जणवए होत्था-तत्थण हत्थिणाउरनयरे अदीण सतू नाम राया होत्था जाव विहरइ) कुरु नाम का देश था-उस में हस्तिनापुर नाम के नगर में अदीन शत्रु नाम के राजा रहते थे। ये न्याय नीति के अनुसार अपने राज्य का परिपालन अच्छी तरह से करते थे । (तत्थ ण मिहिलाए कुभगस्स पुत्ते पभावइए अत्तए मल्लीए अणु जाणए मल्ल दिन्नए नाम कुमारे जाव जुवराया यावि होत्था) उस मिथिला नगरी में कुभक राजा के यहा प्रभावती से एक पुत्र और हुआ था-जिस का नाम मल्ल दत्त कुमार था यह मल्ली कुमारी का छोटा भाई था ।

राजनीति में यह विशेष निष्णात था । अत राजा ने इसे युवराज

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે

(कुरुजणवए होत्था तत्थण हत्थिणाउरनयरे अदीणसत्तू नाम राया होत्था जाव विहरइ)

કુરુ નામે દેશ હતો. તેમા હસ્તિનાપુર નામે નગરમા અદીનશત્રુ નામે રાજા રહેતો હતો તે ન્યાય અને નીતિને અનુસરીને રાજ્ય-શાસન ચલાવતો હતો.

(तत्थ ण महिलाए कुभगस्स पुत्ते पभावइए अत्तए मल्लीए अणुजाणए मल्ल दिन्नए नामकुमारे जाव जुवराया यावि होत्था)

તે મિથિલા નગરીમા કુભક રાજાને રાણી પ્રભાવતી રાણીના ગર્ભથી એક પુત્રનો જન્મ થયો હતો. તેનુ નામ મલ્લદત્તકુમાર હતુ અને તે મલ્લીકુમારીનો નાનો ભાઈ હતો. રાજનીતિમા તે ખૂબ જ નિષ્ણાત હતો. એથી રાજાએ યુવ રાજપદે તેની નીમણુક કરી હતી

अन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये, कौटुम्बिकपुरुषान शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्- हे देवानुप्रियाः ! गच्छत खलु यूय मम 'पमदवणसि' प्रमदवने = अन्तःपुरस्थितोद्याने, एका महतीं 'चित्तसभ' चित्रसभा=चित्रगृह 'करेह' कारयत चित्रसभाया विशेषणमाह- 'अणेग' इति-अणेगखभसयसन्निविट्ठ' अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टम्, अनेके- अनेकप्रकारा नानावर्णदेदीप्यमानचाकचिक्यचक्षुश्चित्ताह्लादजनकमणिगत- विचित्रशिल्परचना सुशोभिता ये स्तम्भा' सुवर्णमयस्तम्भा', तेषा शतै. सन्निविष्टम् =समन्वितम्, 'जाव पच्चप्पिणति' यावत् प्रत्यर्पयन्ति-कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव चित्रसभा कृत्वा मल्लदत्तस्य पुरः समागत्य तदाज्ञा निवेदयति, भवदाज्ञाऽनुसा- रेण सर्वं साधितमस्माभिरिति कथयन्ति स्मेत्यर्थ । ततः खलु स मल्लदत्तश्चित्र-

का पद प्रदान कर दिया था। (तएण मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडु बिय०सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह्ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे मम पमदवणसि एग महं चित्तसभ करेह अणेग जाव पच्चप्पिणति) एक दिन मल्लदिन्न कुमार ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उन से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम जाओ और प्रमदोद्यान में-अन्त पुर- स्थित बगीचे मे एक बडा चित्रगृह बनाओ।

वह अनेक सुवर्ण मय स्तभशत से समन्वित हो। इन स्तभो में नाना वर्ण के चमकीले मणि जडे हुए हो। जो अपनी चाकचिक्य से चक्षु और चित्त के आह्लादक हो। इन मणियो द्वारा उन स्तभों में विचित्र शिल्प रचना की गई हो। इस प्रकार मल्लदत्त कुमार की आज्ञा प्राप्त कर उन कौटुम्बिक पुरुषो ने उसी के अनुसार चित्र गृह की रचना

(तएण मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुबिय० सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह्ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे मम पमदवणसि एग महं चित्तसभ करेह अणेग जाव पच्चप्पिणति)

એક દિવસે મલ્લદિનકુમારે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ--કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે પ્રમદોદ્યાનમા જાઓ અને ત્યા રણ- વાસના ઉદ્યાનમા એક મોટુ ચિત્રગૃહ તૈયાર કરો।

ચિત્રગૃહ સે કડો સોનાના થાભલાવાળુ હોવુ જોઇએ તે થાભલાઓમા ચમકતા ઘણા મણિઓ જડેલા હોવા જોઇએ પોતાના પ્રકારાથી જોનારાની આખોને આજી દે તેવુ તેમજ ચિત્તને આહ્લાદ આપનારૂ હોવુ જોઇએ મણિઓ વડે તેના થભલાઓમા જાતજાતના ચિત્રની રચના કરવામા આવેલી હોવી જોઇએ આ રીતે મલ્લદત્ત કુમારની આજ્ઞા મેળવીને કૌટુબિક પુરુષોએ

करश्रेणिं=चित्रकारान् शब्दयति, शब्दयित्वैवमवादीत्- हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु चित्रसभां=चित्रगृहं 'हावभावविलासविब्बोयकलिएहिं' हावभावविलासविब्बोककलितैः =शृङ्गारभावाभ्यां सजाता स्त्रीचेष्टा हावः, भावो मनोविकारः, विलासो हावभेदः विब्बोकः-अभिमतप्राप्तावपिगर्वादनादरः, अयमपि हावभेदः । अन्येत्वेवमाहुः —

हावो मुखविकारः स्याद् भावश्चित्तसमुद्भवः ।
विलासो नेत्रजो ज्ञेयो विभ्रमो भ्रू समुद्भवः ॥इति॥

करके उसे खबर दी कि आपकी आज्ञानुसार हमने सब काम कर लिया है।

(तएणसे मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दावेइ,सद्दावित्ता एवं वयासी) इसके बाद उस मल्लदत्त कुमार ने चित्रकारों को बुलवाया और बुला कर उनसे इस प्रकार कहा-(तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हावभावविलासविब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह चित्तित्ता जाव पच्चप्पिणह) हे देवानुप्रियों ! तुम लोग चित्रगृह को हाव, भाव, विलास, एवं विब्बोक युक्त चित्रो से चित्रित करो। स्त्रियो की जो चेष्टा शृंगार एव मनो विकार जन्य होती है-उस का नाम हाव है। मानसिक विकृतिका नाम भाव है। विलास हाव का ही एक प्रकार है। अभि मत (इच्छित) की प्राप्ति होने पर भी जो गर्व से उस में अनादर होता है-उस का नाम विब्बोक है। यह भी हाव का ही एक भेद है। इन हाव भावादिकों के विषय में कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि मुख का जो विकार होता है वह हाव है, चित्त से जो विकार उत्पन्न होता है, वह भाव है। नेत्र

તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ચિત્રગૃહનુ નિર્માણ કરીને તેમને ખબર આપી કે આજ્ઞા મુજબ અમોએ બધુ કામ પુરૂ કરી નાખ્યુ છે

(तएणं से मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी)

ત્યારબાદ મલ્લદત્ત કુમારે ચિત્રકારોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ કે-

(तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हावभावविलासविब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह, चित्तित्ता जाव पच्चप्पिणह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે ચિત્રગૃહને હાવ, ભાવ, વિલાસ અને વિબ્બોકવાળા ચિત્રોથી ચિત્રિત કરો સ્ત્રીઓની શૃંગાર અને મનોવિકાર જન્યને ચેષ્ટાઓ હાવ કહે છે માનસિક વિકૃતિનુ નામ ભાવ છે અભિમત (ઇચ્છિત) ની પ્રાપ્તિ હોવા છતા પણ ગર્વથી જે તે અનાદર હોય છે તેનુ નામ વિબ્બોક છે તે પણ હાવનો જ એક પ્રકાર છે આ હાવ, ભાવ વગેરેના વિષે કેટલાક આ પ્રમાણે પણ કહે છે કે મોનો વિકાર જ હાવ છે, ચિત્તથી જન્ય [illegible] તે

एतैर्भावादिभिः कलितैर्युक्तैः, रूपैः=चित्रविशेषै चित्रयत=चित्रित कुरुत, चित्रयित्वा यावत् मत्यर्पयत=ममाज्ञा समर्पितेति मा कथयतेत्यर्थः। ततस्तदनन्तर खलु सा चित्रकारश्रेणिः=तथेति=' तथाऽस्तु ' इत्युक्त्वा प्रतिशृणोति=स्वीकुरुते स्म। प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकानि गृहाणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य ' तूलियाओ वन्नए य ' तूलिका वर्णकाश्च=तूलिका =केशमप्यश्चित्रलेखनकूर्चिकाः, वर्णकान्= पञ्चवर्णकद्रव्याणि, च गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चित्रसभा तत्रैवानुप्रविशति, अनुप्रविश्य भूमिभाग=चित्ररचनस्थान ' विरचइ ' वेवेक्ति=भजेत्य चित्रणीयमिति कृत्वा रेखादिभिर्भित्त्यादौ विभाग करोति, ' विरचित्ता ' विरच्य=भूमिं सज्जयति

से जो भाव उत्पन्न होता है वह विलास एव भ्रू से जो उत्पन्न होता है वह विभ्रम है। जब इस प्रकार के चित्रों से वह चित्रगृह चित्रित हो जावे-तब हमें इस की खबर दो- (तएण सा चित्तगरसेणी तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तूलियाओ वन्नए य गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुपविसइ) इस के बाद उस चित्रकार श्रेणि ने " तथास्तु " इस प्रकार कहकर मल्लदत्त कुमार की आज्ञा को स्वीकार कर लिया- और स्वीकार करके फिर वे सब के सब अपने २ घर आ गये-वहा आकर उन्हों ने अपनी २ तूलिकाओं को और वर्णको-पचवर्ण वाले द्रव्यों को लिया-लेकर जहा-वह चित्रगृह था उस ओर चल दिये। वहा आकर वे उस के अन्दर गये (अणुपविसित्ता भूमिभागे विरचेइ विरचित्ता भूमिं सज्जेइ, सिंजित्ता चित्तसभं हाव भाव जाव चित्तेउ

ભાવ છે, નેત્રથી જે ભાવ ઉત્પન્ન હોય છે તે વિલાસ અને ભવાથી જે ઉત્પન્ન હોય છે તે વિભ્રમ છે જ્યારે આ પ્રમાણે તે ચિત્રગૃહ ચિત્રિત થઈ જાય ત્યારે અમને તમે સૂચિત કરજો

(तएणं सा चित्तगरसेणी तहत्ति पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तूलियाओ वन्नएयगिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुपविसइ)

ત્યારપછી તે ચિત્રકારોએ તથાસ્તુ' (સારૂ) આ પ્રમાણે કહીને મલ્લદત્ત કુમારની આજ્ઞા ને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારપછી તેઓ બધા પોતપોતાને ઘેર આવી ગયા ત્યા આવીને તેઓએ પોતપોતાની પીંછીઓ અને વર્ણકા એટલે કે પાચ રગવાળા દ્રવ્યોને સાથે લીધા અને લઈને જે તરફ ચિત્રગૃહ હતું તે તરફ રવાના થયા ત્યા પહોચીને તેઓ તેમા પ્રવિષ્ટ થયા

अणुपविसित्ता भूमिभागे विरचेइ विरचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जित्ता चित्त

मार्जनादिभिः परिष्करोति, सञ्जनयित्वा चित्तसभा 'हावभाव-जाव' हावभाव-यावत्=हावभावविलासविब्बोकललितैः, रूपै.=चित्रविशेषैः, 'चित्तेउ' चित्रयितु 'पयत्ता' प्रवृत्ता चाप्यभवत्। सा चित्रकारश्रेणिश्चित्रगृह हावभावादियुक्त चित्र-विशेषैश्चित्रयितु प्रवर्ततेस्म 'इत्यर्थ ।

ततः=तत्र खलु एकस्य चित्रकारस्य इमेयारूवा' इयमेतद्रूपा=वक्ष्यमाणस्वरूपा चित्रकरलब्धि =चित्रकरणविशिष्टशक्ति', मनसि यादृश रूप चिन्तयति तादृश करोत्येव भूता लब्धिः, लब्धा=उपार्जिता, प्राप्ता=स्वायत्तिकृता, अभिसमन्वा गता=सम्यगासे-

---

पयत्ता यावि होत्था) अन्दर प्रविष्ट होकर सबसे पहिले उन्हों ने चित्र रचने के स्थान को रेखादि द्वारा अंकित किया

यहा इस प्रकार का चित्र काढना चाहिये इस प्रकार के विचार से भित्ति के ऊपर रेखा आदि खीचकर उन्हों ने उस का विभाग किया-विभाग कर के फिर वहा की भूमि को उन्हों ने साफ किया-साफ कर के फिर वे चित्रकार उस चित्रगृह को हाव भाव आदि वाले चित्र विशेषों से चित्रित करने में लग गये। (तएण एगस्स चित्तगस्स इमेयारूवे चित्तगर लद्धी लद्धा, पत्ता अभि समन्नागया-जस्सण दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्सण देसाणु-सारेण तयाणुरूव रूव निव्वत्तेइ) इन में एक चित्रकार ऐसा था जिसमें चित्र करने की विशिष्ट शक्ति थी। इस ने इस शक्ति को पहिले से ही

सभ हाव भाव जाव चित्तेउ पयत्ता यावि होत्था)

તેમા પ્રવેશીને તેઓએ સૌ પહેલા ચિત્ર બનાવવાની જગ્યા ઉપર રેખાઓ બનાવી

અહીં આ પ્રમાણે ચિત્ર તૈયાર કરવાનુ છે આ પ્રમાણે વિચાર કરીને ભીત વગેરે ઉપર રેખાઓ વગેરે દોરીને તેમને વિભાજન કર્યું, વિભાજન કરીને તે સ્થાનને તેઓએ સ્વચ્છ બનાવ્યુ સ્વચ્છ બનાવીને તે ચિત્રકારો ચિત્રગૃહને હાવ ભાવ વગેરેના વિશેષ ચિત્રોથી ચિત્રિત કરવા લાગ્યા

(तएण एगस्स चित्तगस्स इमेयारूवे चित्तगरलद्धी लद्धा, पत्ता अभिसमन्ना गया, जस्सण दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स ण देसाणुसारेण तयाणुरूव रूवं निव्वत्तेइ)

આ બધાઓમા એક ચિત્રકાર એવો પણ હતો કે તેમા ચિત્ર તૈયાર કરવાની વિશેષ શક્તિ હતી તેણે પોતાની ચિત્ર બનાવવાની અસાધાર

विता, यस्य, खलु द्विपदस्य-मनुष्यादेर्वा चतुष्पदस्य गवादेर्वा, अपदस्य=चरण रहितस्य सपदीवृक्षादेर्वा, एकदेशमपि एकाङ्गमपि पश्यति तस्य खलु देशानुसारेण चक्षुर्गोचरीकृतैकदेशानुसारेण 'तयाणुरूव' तदनुरूप दृष्ट द्विपदादियोग्य, रूप चित्र 'निव्वत्तेइ' निर्वर्तयति=रचयति। ततस्तदनन्तर खलु स चित्रकरदारको मल्ल्याः= मल्लीकुमारिकाया, 'जवणियंतरियाए' यवनिकान्तरिताया =यवनिकया - पर दाख्येन आवरणपटेन, अन्तरिताया'-व्यवहिताया परदाभ्यन्तरस्थिताया इत्यर्थः। जालान्तरेण=गवाक्षरन्ध्रेण पदाङ्गुष्ठं पश्यति-दृष्टवान्। तत खलु तस्य चित्रकारस्य= चित्रकारदारकस्य, अयमेतद्रूपः=अय वक्ष्यमाणस्वरूप ,यावद्=विचारः समुदपद्यत- श्रेयः=श्रेयस्करम् अभ्युदयजनक, खलु मम मल्ल्या अपि पादाङ्गुष्ठानुसारेण सदृशक= मल्लीसमान यावद्-गुणोपपेत=मल्ल्या अङ्गेषु यत्र ये सौन्दर्यादिगुणाः तैः समन्वित,

---

उपार्जित किया था-प्राप्त किया-था-उस मे यह विशेष चतुर था, इस का इसे अच्छा अभ्यास था।

यह जिस मनुष्यके, चतुष्पद गवादिके, अपद सर्पादि अथवा वृक्षादि के जिस किसी एक एक भाग को देख लेता तो उसी के अनुसार यह उस का पूर्ण चित्र अकित कर देता था। (तएण से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ, तएण तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेय खलु मम मल्लीए वि पायंगुट्ठाणुसारेण सरिसगं जाव गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए एव संपेहेइ) एक दिन इस चित्रकार ने परदा के भीतर बैठी हुई मल्लि कुमारी के पैर का अगूठा गवाक्ष छिद्र से देख लिया था सो उस के मन में ऐसा विचार आया कि मेरे लिये यह श्रेयस्कर है कि मै मल्ली कुमारीका भी पादा ङ्गुष्ठानुसार यावत् गुणोपपेत उसी के जैसा चित्र बनाऊँ।

પહેલેથી જ મેળવેલી હતી ચિત્રકળામા તે ખૂબ જ પ્રવીણ તેમજ તેનો તે સારો અભ્યાસી હતો.

તે ચિત્રકાર માણસના, ગાય વગેરે ચોપગાઓના, સાપ વગેરે અપદોના અથવા તો વૃક્ષ વગેરેનો કોઈપણ એક ભાગ જોઈ લેતો અને ત્યારબાદ તે પ્રમાણેના જ આબેહૂબ તેમના ચિત્ર દોરતો હતો.

(तएण से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ तएण तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेय खलु मम मल्लीए वि पायंगुट्ठाणुसारेण सरिसगं जाव गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए एव संपेहेइ)

એક દિવસ તે ચિત્રકારે પડદાની પાછળ બેઠેલી મલ્લીકુમારીના પગનો અગૂઠો ગવાક્ષના કાણામાથી જોઈ લીધો ત્યારે તેના મનમા એમ થયુ કે હુ મલ્લીકુમારીના પગના અગૂઠાના જેવુ જ સુદર ચિત્ર તૈયાર કરૂ

रूप=चित्र निर्वर्तयितु=रचयितुम् । एवम्=उक्तप्रकारेण, सप्रेक्षते=स चित्रकारदारको विचारयतिस्म । सप्रेक्ष्य=मनसि विमृश्य, भूमिभाग=चित्रकरणस्थान सज्जयति=मार्जनलेपादिना संस्करोति, सज्जयित्वा मल्लया अपि पादाङ्गुष्ठानुसारेण यावत्=सदृशक गुणोपपेत रूप निर्वर्तयति=रचयतिस्म । ततस्तदन्तर खलु सा चित्रकार-श्रेणिश्चित्रसभा 'हावभाव-जाव' हावभाव-यावत्=हावभावविलास विब्बोककलितैः रूपैः, चित्रैः 'चित्तेइ' चित्रयति, चित्रयित्वा यत्रैव मल्लदत्त कुमारस्तत्रोपागच्छति, उपागत्य यावत् एतामाज्ञा प्रत्यर्पयति- हे स्वामिन् ! भवदाज्ञानुसारेण चित्रगृह

मल्ली कुमारी के अग में जहा २ जो जो सौन्दर्यादि गुण है उन सब गुणों को उस मल्ली कुमारी के चित्र में अकित करूँ । ऐसा जब उस ने विचार किया- (सपेहित्ता) तो उस विचार के अनुसार (भूमि भाग सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए वि पायगुट्ठानुसारेण जावि निव्वत्तेइ, तएण सा चित्तगरसेणी चित्तसभ हावभावजाव चित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव मल्ल दिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तिय पच्चप्पिणइ) उस ने वहां का भूमिभाग साफ किया-मार्जन, लेप आदि द्वारा उसे सस्कारित किया-संस्कारित करके फिर उस ने वहां मल्ली कुमारी का भी दृष्ट पादांगुष्ठ के अनुसार बिलकुल हूबहू जैसे के तैसा गुणोपपेत रूप-चित्र अकित कर दिया ।

इसके बाद उस चित्रकारों की श्रेणी ने उस चित्रगृह को हावभाव विलास एव विब्बोक वाले रूपों से-चित्रों से अकित कर दिया-चित्रित कर दिया-चित्रित कर फिर वे सब के सब मल्लदत्त कुमार जहा बैठा

મલ્લી કુમારીના અગમા જ્યા જ્યા જે જે સૌદર્યના ગુણો છે તે બધા ગુણોને તે મલ્લીકુમારીના ચિત્રમા અકિત કરૂ આ પ્રમાણે જ્યારે તેણે વિચાર કર્યો-(सपेहित्ता) અને તે વિચાર ને અનુ સરતા જ

(भूमिभागं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए वि पायगुट्ठानुसारेण जावि निव्वत्तेइ तएणं सा चित्तगर सेणी चित्तसभ हावभाव जावचित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणात्तिय पच्चप्पिणइ)

તેણે તે જગ્યાને સ્વચ્છ બનાવી અને માર્જન લેપન વગેરેથી તે સ્થાનને સાફ કર્યુ સાફ કર્યો બાદ તેણે પહેલા જોયેલા મલ્લી કુમારીના પગના અગૂઠા ના જેવુ જ આખેહૂબ ગુણોપેત રૂપ ચિત્ર અકિત કર્યુ

ત્યાર બાદ ચિત્રકારોએ જ્યારે ચિત્રગૃહને હાવભાવ વિલાસ અને વિબ્બોકના ચિત્રોથી ચિત્રિત કરી આપ્યુ ત્યારે તેઓ બધા જ્યા મલ્લદત્ત

चित्रितमस्माभिरित्येव चित्रकारश्रेणिं कथयति स्मेत्यर्थः। ततः खलु मल्लदत्तश्चित्रकारश्रेणिं 'सक्कारेइ' सत्कारयति, वचनादिना, समानयति=वस्त्रादिना। 'सक्कारित्ता' सत्कार्य-सत्कार कृत्वा 'सम्माणित्ता' समान्य विपुलं=विस्तीर्णं 'जीवियारिहं' जीविकार्हं-वृत्तियोग्य, 'पीइदाणं' प्रीतिदान-परमहर्षहेतुकं दानं ददाति दत्त्वा प्रतिविसर्जयति। ततः खलु मल्लदत्तोऽन्यदा-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये स्नातोऽन्तः पुरपरिवारपरिवृतः 'अम्मधाईए' अम्बाधात्र्या=उपमात्रा सार्धं यत्रैव चित्रसभा=चित्रगृहं वर्तते, तत्रोपागच्छति। उपागत्य चित्रसभामनुप्रविशति=चित्रगृहे प्रवेशं करोति, अनुप्रविश्य हावभावविलासविब्बोककलितानि रूपाणि=

था-वहा आये-आकर के उन्होंने उससे कहा स्वामिन्! हमलोगो आपकी आज्ञानुसार चित्र गृह को चित्रित कर दिया है-(तएण) इस प्रकार चित्रकारो के मुख से सुनकर (मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता, विपुलजीवियारिहं पीइदाणं दलेइ, दलित्ता पडिविसज्जेइ) मल्लदत्त कुमारने उस चित्रकार श्रेणी का सत्कार किया सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिरउस ने उसे विपुल जीविकाके योग्य प्रीतिदान दिया-और बाद मे उसे विसर्जित कर दिया। (तएण मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अंतेउरपरियाल सपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ) इसके पश्चात् किसी एक दिन वह मल्लदत्त कुमार स्नान कर के अन्त' पुर परिवार से युक्त होकर अपनी अम्बाधात्री के साथ जहा चित्रगृह था वहाँ गया-(उवागच्छित्ता चित्तसभं अणुपविसइ अणुपविसित्ता हावभाव

કુમાર બેઠા હતા ત્યા આવ્યા અને આવીને તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે હે સ્વામિન! તમારી આજ્ઞા મુજબ અમોએ ચિત્રગૃહ તૈયાર કરી દીધુ છે
(તએણ) આ રીતે ચિત્રકારો ના મોથી સાભળીને

(मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता, विपुलजीवियारिहं पीइदाणं दलेइ, दलित्ता पडिविसज्जेइ)

મલ્લદત્ત કુમારે ચિત્રકારોનુ સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યુ, સત્કાર અને સન્માન કરીને તેણે તેમને પુષ્કળ પ્રમાણમા જીવિકાયોગ્ય પ્રીતિદાન આપ્યુ અને ત્યાર પછી તેઓને જવાની રજા આપી

(तएण मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अंतेउरपरियाल सपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર પછી કોઇ એક દિવસ મલ્લદત્ત કુમાર સ્નાન કરીને રણવાસના પરિવાર ને સાથે લઈને પોતાની અમ્બાધાત્રીની સાથે જ્યા ચિત્ર ગૃહ હતુ ત્યા ગયો

चित्राणि पश्यन् यत्रैव मल्लया विदेहराजवरकन्यायाः, ' तयाणुरूवे ' तदनुरूप= तत्सदृश, रूप=चित्र ' णिव्वत्तिए ' निर्वर्तित = रचित मासीत् तत्रैव प्राधारयद् गमनाय= गन्तु प्रवर्ततेस्म ॥ सू० २७ ॥

मूलम्—तएणं से मल्लदिन्ने कूमारे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिय पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जावसमुपज्जित्था—एस णं मल्लीविदेहरायवरकन्नत्तिकट्टु लज्जिए वीडिए विअडे सणियर२ पच्चोसक्कइ । तएण मल्लिदिन्न अम्मधाई पच्चोसक्कत पासित्ता एव वयासी—किन्नं तुम पुत्ता! लज्जिए वीडिए विअडे सणिय सणिय पच्चोसक्कइ ?,

तएणं से मल्लदिन्ने अम्मधाइं एव वयासी—णो जुत्त णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए देवयभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तिय सभ अणुपविसित्तए ?, तएणं अम्मधाई मल्लदिन्न कूमार एव वयासी—नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली, एस ण मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्तगरएण तयाणुरूवे

विलासविब्बोयकलियाइ रूवाइ पासमाणे जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) वहा जाकर चित्र गृह मे प्रविष्ट हुआ—प्रविष्ट होकर हावभाव, विलास एव विब्बोक से युक्त उन रूपोंको चित्रों को—बार२ देखता हुआ वह जहा विदेह राजव रकन्या का तदनुरूप चित्र बना हुआ था उस ओर गया ॥ सूत्र २७ ॥

(उवागच्छित्ता चितसभ अणुपविसइ अणुपविसित्ता हावभाव विलासविब्बोय कलियाइ रूवाइ पासमाणे २ जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे-णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યા પહોચીને તે ચિત્રગૃહમા ગયો અને જઈને હાવભાવ વિલાસ અને વિબ્બોકવાળા તે ચિત્રોને જોતા તે જ્યા વિદેહ રાજવર કન્યાના જેવુ જ ચિત્ર દોરેલુ હતુ તે તરફ ગયો ॥ સૂત્ર " ૨૭ " ॥

रूवे णिव्वत्तिए । तएण मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते एव वयासी-केसणं भो चित्तयरए अपत्थिय पत्थिए जाव परिवज्जए जेणं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवय-भूयाए जाव निव्वत्तिए त्तिकट्टु त चित्तगर वज्झ आणवेइ तएणं सा चित्तगरसेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी--एव खलु सामी ! तस्स चित्तग-रस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नगया, जस्स णं दुपयस्स वा जाव णिवत्तेइ, त माणं सामी ! तुब्भे तचित्तगरं वज्झ आणवेह, त तुब्भे णं सामी ! तस्स चित्तगरस्स अन्न तया णुरूव दड निव्वत्तेह । तएण से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स सडासग छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसय आणावेइ ॥ सू०२८ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि ' ततस्तदनन्तर खलु स मल्लदत्तः कुमारो मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया.=स्वाग्रजाताया भगिन्याः' ' तयानुरूप ' तदनुरूप= मल्लीसदृश रूप=रूप चित्र,' निर्व्वत्तिय' निर्वर्तित=चित्रकारदारकेण रचित, पश्यति। दृष्ट्वा ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूप.=अय वक्ष्यमाणस्वरूपः, ' अज्झत्थिए ' आध्या-त्मिकः=आत्मगतः, यावत्=सकल्प', ' समुपज्जित्था ' समुदपद्यत=सजातः-एपा

' तएण से मल्लदिन्ने कुमारे ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से मल्लदिन्ने कुमारे) उस मल्लदत्त कुमार ने (विदेहरायवरकन्नाए मल्लीए तयाणुरूव निव्वत्तिय पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) विदेह राज की वर-

---

' तएण से मल्लदिन्ने कुमारे ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण)त्यार બાદ (से मल्लदिन्ने कुमार) તે મલ્લ દત્તકુમારે (विदेह रायवरकन्नाए मल्लीए तयाणुरूव निव्वत्तिय पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था)

खलु मल्ली विदेह राजवरकन्या, इति कृत्वा लज्जितः=सामान्यतः, व्रीडितः=विशेषतो लज्जितः, व्यर्दः=सर्वथा लज्जा प्राप्तः सन् शनैः शनैः 'पच्चोसक्कइ' प्रत्यवष्वस्कते=तस्मात् स्थानात् प्रतिनिवर्ततेस्म । ततस्तदनन्तरं खलु मल्लदत्त=मल्लदत्त कुमारम्, 'अम्मधाई' अम्बधात्री=मातृप्रतिनिधिरूपा धात्रीस्तन्यादि दानेन पोषिका उपमातेत्यर्थः, 'पच्चोसक्कत' प्रत्यवष्वस्कमानं पश्चान्निवर्तमानं दृष्ट्वा एव=वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्-हे पुत्र ! किं=कस्मात्कारणात् खलु त्वं लज्जितो व्रीडितो व्यर्दः=अत्यन्तं लज्जितः सन् शनैः शनैः प्रत्यवष्वस्कसे ? । तत खलु स मल्लदत्तकुमारः अम्बधात्रीमेवमवादीत्-' अम्मो ! ' हे अम्ब ! ' नो जुत्त ' नो युक्त=नो

कन्या मल्लीकुमारीका कि जो अपनी घडी बहिन थी तदनुरूप चित्र चित्रकार दारक के द्वारा अङ्कित किया गया ज्यों ही देखा-तो देखकर उस के मन में इस प्रकार का सकल्प उत्पन्न हुआ-(एमण मल्ली विदेह रायवरकन्नत्तिकट्टु लज्जिए, वीडिए विउडे सणिय २ पच्चोसक्कइ) यहतो विदेहराज को वर कन्या मल्ली कुमारी है। ऐसा विचार करवह पहिले तो लज्जित हुआ-बाद में विशेषरूप से लज्जित हुआ। और इस तरह वह दुःखित होकर धीरे २ वहा से चलदिया। (तएण मल्लदिन्न अम्मधाई पच्चोसक्कत पासित्ता एव वयासी-किन्न तुम पुत्ता लज्जिए वीडिए विअडे सणिय २ पच्चोसक्कइ ?) इस तरह मल्लीदत्त कुमार को वहा से धीमी २ चाल से जाता हुआ देखकर उसकी अम्बा धाय ने उससे ऐसा कहा-क्यो तुम लज्जित-व्रीडित एव विशेष लज्जित होकर यहा से धीरे २ चले जा रहे हो-(तएण से मल्लदिन्ने

જ્યારે પોતાની મોટી બહેન વિદેહવર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ ચિત્રકારવડે દોરાયેલુ આબેહૂબ ચિત્ર જોયુ ત્યારે તે જોતાજ તેના મનમા વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે (एसण मल्ली विदेहरायवरकन्न त्तिकट्टु लज्जिए वीडिए विउडे सणिय २ पच्चोसक्कइ)

આતો વિદેહરાજની વરકન્યા મલ્લી કુમારી છે આમ વિચારીને પહેલાતો તે લજ્જિત થયો અને ત્યાર બાદ તે ખૂબજ લજ્જિત થયો આ રીતે તે દુખી અવસ્થામા ત્યાથી ધીમે ધીમે જતો રહ્યો

(तएण मल्लदिन्न अम्मधाई पच्चोसक्कत पासित्ता एव वयासी-किन्न तुम पुत्ता लज्जिए वीडिए विअडे सणिय २ पच्चोसक्कइ ?)

આ રીતે મલ્લીકુમારને ત્યાથી ધીમે ધીમે જતો જોઇને તેની અબા ધાયે કહ્યુ કે-તમે કેમ લજ્જિત-વ્રીડિત અને અવિશેષ પીડિત થઇને અહીથી ધીમે ધીમે જઈ રહ્યા છો (तएण से मल्लदिन्ने अम्मधाई एव ...ी)

चित्त खलु मम ज्येष्ठाया भगिन्या गुरुदैवतभूतायाः, पूज्यायाः, लज्जनीयायाः= लज्जते यस्या सकाशात् सा लज्जनीया, 'कृत्य प्रत्ययस्य बाहुलकत्वादुपादानेऽनीयर प्रत्ययः' तस्या अग्रे मम चित्रकरनिर्वर्तिता सभा=चित्रगृहम् अनुप्रवेष्टुम् अत्र खलु चित्रगृहे मम पूज्या ज्येष्ठा भगिनी मल्लीकुमारी स्थिताऽस्ति, तस्मादत्र मम प्रवेशकरण नोचित मित्यर्थः। ततस्तदनन्तर खलु अम्बाधात्रीमल्लदत्त कुमार मेवादीत्- हे पुत्र ! नो खलु=निश्चयेन एषा मल्लीभवति, किंतु एतत् खलु मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः श्चित्रकरेण तदनुरूप रूप=चित्र निर्वर्तित=रचितमस्ति। तस्मादत्र लज्जाकरण तव नोचितमिति भावः।

अम्मधाइं एव वयासी) इस प्रकार सुनकर उस मल्लदत्त कुमारने अम्बाधाय से ऐसा कहा-(णो जुत्त ण अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवभूआए मम चित्तगरणिव्वत्तिय सभ अणुपविसित्तए) मुझे चित्रकार से निर्वर्तित इस चित्रगृहमें प्रवेश करना उचित नही है, कारण यहा मेरी गुरुदेव जैसा-पूज्य तथा जिसके समक्ष मे लजाता हूँ-जिनके सामने आते जाते मुझे लज्जा आती है-ऐसी बड़ी बहिन बैठी हुई हैं।

तात्पर्य इसका यह है कि इस चित्रगृह में मेरी पूज्य बहिन मल्ली कुमारी बैठी हुई है इसलिये उनके समक्ष मुझे यहां प्रवेश करते हुए लज्जा आती है। (तएण अम्माधाई मल्लदिन्न कुमार एव वयासी-नो खलु पुत्ता एस मल्ली-एसण मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्त गरएण तयाणुरूवे चित्ते णिव्वत्तिए) ऐसा सुनकर अम्बाधात्री उपमाता ने मल्लदत्त कुमारसे इस प्रकार कहा-हे पुत्र ! ये स्वय मल्ली कुमारी नही है-यह तो विदेहराजकी उत्तम कन्या उन मल्ली कुमारी का चित्र

આ પ્રમાણે સાભળીને તે મલ્લદત્ત કુમારે અબાધાય ને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-

(णो जुत्त ण अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तिय सभ अणुपविसत्तए)

ચિત્રકારો વડે ચિત્રિત કરવામા આવેલા આ ચિત્રગૃહમા પ્રવેશવુ મારા માટે ઉચિત નથી કેમકે ગુરુદેવ જેવી પૂજનીય તેમજ જેમની સામે જતા પણ હુ લજ્જિત થાઉ છુ એવા મારા મોટા બહેન અહી બેઠા છે

મતલબ એ છે કે આ ચિત્રગૃહમા મારી પૂજ્ય-બહેન મલ્લી કુમારી બેઠી છે એથી તેમની સામે જતા મને લજ્જા આવે છે

(तएण अम्माधाई मल्लदिन्न कुमार एव वयासी-नो खलु पुत्ता एसमल्ली एसण मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए चित्तगरएण तयाणुरूवे चित्ते णिव्वत्तिए)

આ પ્રમાણે સાભળીને અબાધાત્રી ઉપમાતા એ મલ્લદત્ત કુમારને કહ્યુ કે કે હે પુત્ર ! આ બને મલ્લીકુમારી નથી પણ આ તો વિદેહરાજની ઉત્તમ

ततस्तदन्तर खलु मल्लदत्तः=मल्लदत्तकुमार , अम्बाधाख्या एतम्=उक्तरूपम्, अर्थं श्रुत्वा, आशुरुप्त =शीघ्र क्रोधाविष्टः, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-क एव खलु भो.! चित्रकरः ' अपत्थियपत्थिय ' अप्रार्थितप्रार्थित' यत् केनापि न प्रार्थ्यते, तदप्रार्थित मरण तत् प्रार्थित येन सोऽप्रार्थित प्रार्थित मरणाऽऽरब्धक इत्यर्थः यावत् परिवर्जितः=श्रीह्रीधृति कीर्ति परिवर्जितः, एतदवस्था यत्ने माग् व्याख्यातम् , येन खलु मम ज्येष्ठाया भगिन्या गुरु दैवतभूतायाः=पूज्याया., यावत्-तदनुरूप ' निव्वत्तिए त्तिकट्टु ' निर्वर्तितम् ?, इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा, त चित्रकार वध्य=हन्तव्यम्०आज्ञापयति येन मल्लीचित्र लिखित स चित्रकारो हन्तव्य इत्याज्ञा दत्तवानित्यर्थः। तत खलु सा चित्रकर श्रेणिरस्या उक्तरूपायाः कथाया

कारने तदनुरुप चित्र बनाया है। इसलिये यहा लज्जा करना तुम्हे योग्य नही हैं। (तएण मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठ सोच्चा आसुरत्ते एव वयासी) अम्बाधाय के मुख से ऐसी बात सुनने के बाद मल्ल दत्त कुमार ने उस अपनी अम्बाधाय से क्रोध में भरे हुए होकर इस प्रकार कहाः-(केसण भो! चित्तयरए अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जेण मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवभूयाए जाव निव्वत्तिए) अरे! कौन ऐसा मरण वाञ्छक तथा श्री ह्रीधृति, एव कीर्ति से परिवर्जित चित्र कार हैं कि जिसने गुरुदेव जैसा-पूज्य मेरी ज्येष्ठ भगिनी का यहां तदनुरूप चित्र चित्रित किया है। (त्तिकट्टुत चित्तगर वज्झ आणवेइ) इस प्रकार कहकर उसने उस चित्रकार को वध्य घोषित कर दिया।

जिस चित्रकार ने मेरी पूज्य ज्येष्ठ भगिनी का यह चित्र यहां लिखा है-वह वध्य है इस प्रकार उसने आज्ञा देदी- (तएण सा

કન્યા મલ્લીકુમારીનુ આબેહૂબ દોરાયેલુ ચિત્ર છે એથી અહીં લજ્જા તમારા તમારા માટે યોગ્ય નથી (तएण मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठ सोच्चा आसुरत्ते एव वयासी) અબાધાય ના મોથી આ વાત સાભળીને મલ્લદત્ત કુમારે તે પોતાની અબાધાય ને ક્રોધમા ભરાઇને કહ્યુ કે-

(केसणं भो ! चित्तयरए अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जेण मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवभूयाए जाव निव्वत्तिए)

અરે ! એવો કોણ મૃત્યુને ચાહનાર શ્રી, હ્રી, ધૃતિ અને કીર્તિ રહિત ચિત્રકાર છે કે જેણે ગુરુદેવ જેવા પૂજ્ય મારા મોટા બહેનનુ અહીં આબેહૂબ ચિત્ર દોર્યુ છે (त्तिकट्टु त चित्रगर वज्झ आणवेइ) આ પ્રમાણે કહીને તેણે તે ચિત્રકારને વધ્ય (મારવા યોગ્ય) ઘોષિત કર્યો

મારાપૂજ્ય મોટા બહેનનુ જે ચિત્રકારે અહી જે ચિત્ર દોર્યુ છે તે વધ્ય છે આ રીતે તેણે પોતાની આજ્ઞા ઘોષિત કરી

लब्धार्था-ज्ञातार्था सती यत्रैव मल्लदत्त कुमारस्तत्रोपागच्छति, उपागत्य करतल परिगृहीत यावत्-शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयविजय शब्देन वर्धयति= अभिनन्दयति, वर्धयित्वा, एवमवादीत्-हे स्वामिन्! एव खलु तस्य चित्रकरस्य, इममेतद्रूपा=वक्ष्यमाणस्वरूपा चित्रकरलब्धिर्लब्धा=अर्जिता प्राप्ता=स्वायत्तीकृता अभिसमन्वागता=सम्यगासेविता, यस्य खलु द्विपदस्य वा यावत्-चतुष्पदस्य वा अपदस्य वा एकदेशमपि पश्यति तस्य खलु देशानुसारेण तदनुरूप रूप 'निव्वत्तेइ' निर्वर्तयति=रचयति, तत्=तस्मात् हे स्वामिन्! मा खलु यूय त चित्रकर वध्य-

चितगरसेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय जाव वद्धावेइ; वद्धावित्ता एव वयासी-एव खलु सामी! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धीलद्धा, पत्ता अभिसमन्नागया तस्सण दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेइ) इस प्रकार इस उक्त रूप कथा का हाल जब उस चित्रकार श्रेणी को मालूम हुआ-तब वह जहा मल्लदत्त कुमार था वहाँ पहुँची पहुँच कर उसने उसे दोनो हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर धरकर नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा वधाई दी वधाई देकर फिर वह इस प्रकार कहने लगी-स्वामिन्! उस चित्रकार को इस प्रकार की यह चित्रकार लब्धि प्राप्त हुई है-उस पर उसका अधिकार जम गया है-उस का उसे अच्छी तरह अभ्यास हो चुका है-कि जिसकी वजह से वह किसी भी द्विपद, चतुष्पद, अपद का एक देश भी देखकर उसके अनुसार तदनुरूप चित्ररच देता है। (त माण सामी।

(तएण सा चित्तगरसेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता एव वयासी एव खलु सामी! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा, पत्ता अभिसमन्नागया जस्सण दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेइ)

આ રીતે ચિત્રકારોને ઉપરની બધી વિગતની જાણ થઇ ત્યારે જ્યા મલ્લદત્ત કુમાર હતો ત્યા તેઓ પહોચ્યા અને પહોચીને બને હાથોની અજલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરતા જય વિજ્યના શબ્દો ઉચ્ચારતા તેણે કહ્યુ—કે હે સ્વામિન્! તે ચિત્રકારને આ પ્રમાણેની વિશેષ શકિત પ્રાપ્ત થઈ છે તે કલા ઉપર તેનો પૂરે પૂરો અધિકાર આવી ગયો છે તે સારી પેઠે અભ્યસ્ત થઇ ગયો છે જેથી તે કોઈ પણ દ્વિપદ (માણસ) ચતુષ્પદ (પશુ) અને અપદ (સાપ વગેરે) ના કોઇ પણ એક દેશને જોઈને તે મુજબના જેવુજ ચિત્ર દોરી આપે છે (त माण सामी! तुब्भे-

माज्ञापयत-यथार्थमाज्ञां मा कुरुतेत्यर्थः, तत्=तस्मात् हे स्वामिन् ! यूयं खलु तस्य चित्रकारस्यान्यं तदनुरूपं चित्रकारापराधसदृशं, दण्डं 'निव्वत्तेह' निर्वर्तयत=कुरुत। ततः=चित्रकारश्रेणिसविनयवचनश्रवणानन्तरं, खलु स मल्लदत्तस्तस्य - मल्लीचित्रं रचयितुः, चित्रकारस्य 'सडासगं' सन्दंशकम्=ऊरुजङ्घयोः सन्धिं नाडीरूपमित्यर्थं, 'छिंदावेइ' छेदयति-कर्तयतिस्म यत्नं-'सडासगंति' हस्तौ छेदयतिस्म' इतिव्याख्यात-तद् ज्ञानविजृम्भितम्-तेनैव चित्रकरेण हस्तिनापुरे नगरे गत्वा पुनर्मल्लीचित्रं रचितमित्येतदर्थमनिबोधकमूलपाठविरोधात् हस्तामावे चित्रलेखना

तुब्भे ते चित्तगरं वज्झं आणवेह) इसलिये हे स्वामिन! आप उस चित्रकार को मारने की आज्ञा प्रदान न कीजिये (न तुब्भेणं सामी! तस्स चित्तगरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह, तएणं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स सडासगं छिंदावेइ, छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ) किन्तु हे नाथ! आप उस चित्रकार को बताये गये इस चित्र के अनुसार किसी और दूसरे दंड का निर्धारण कर दीजिये-इस प्रकार चित्रकार श्रेणी के वचन सुनने के बाद मल्लदत्त कुमार ने उस मल्ली के चित्र बनाने वाले चित्रकार की उरू और जंघाओं की संधि को छिदवा दिया-कतरवा दिया-

(जो "सडासगंति" किसी २ टीकाकार ने ऐसा मान कर "उस के दोनों हाथ कटवा दिये" इस प्रकार का व्याख्यान किया है वह ठीक नहीं ज्ञात होता है-कारण "इसी चित्रकार ने हस्तिनापुर में जाकर मल्ली कुमारीका चित्र रचा है" ऐसा जो आगे मूलपाठ आनेवाला उस

त चित्तगर वज्झ आणवेह) એથી હે સ્વામિન્! તમે તે ચિત્રકારને મારવાની આજ્ઞા આપી વાળો.

(त तुब्भेणं सामी! तस्स चित्तगरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह, तएणं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स सडासगं छिंदावेइ, छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ)

અને હે નાથ! તમે ચિત્રકારને તે ચિત્ર બદલ બીજી ગમે તે સજા કરો આ પ્રમાણે ચિત્રકારોના વચન સાંભળીને મલ્લદત્તકુમારે મલ્લીકુમારીનું ચિત્ર બનાવનાર ચિત્રકારના ઉરુઓ-જાંઘાઓના સાંધાઓને કપાવી દીધા

"सडासगंति" આ પ્રમાણેના પાઠના આધાર લઈને કેટલાક ટીકાકારો આમ માનતા થયા છે કે તે ચિત્રકારના બંને હાથ પણ કપાવવામાં આવ્યા હતા પણ હકીકતમાં આ વાત સત્યથી વેગળી છે કેમકે એ જ ચિત્રકાર આગળ હસ્તિનાપુરમાં જઈને મલ્લીકુમારીનું ચિત્ર

समवात्। छेदयित्वा 'निव्विसय' निर्विषयम्-विषयान्निर्गत स्वदेशात् बहिर्गन्तु-मित्यर्थः, आज्ञापयति=आज्ञां दत्तवान् ॥ सू०२८॥

मूलम्—तएणं से चित्तगरए मल्लदिन्नेण णिव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयराओ णिक्खमइ, णिक्खमित्ता विदेहजणवय मज्झ मज्झेण जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडणिक्खेव करेइ, करित्ता चित्तफलगं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेण एव णिव्वत्तेइ, णिवत्तित्ता कक्खनरासि छुब्भइ, छुब्भित्ता महत्थ जाव पाहुड गिण्हइ, गिण्हित्ता हत्थिणापुर नयर मज्झ मज्झेणं जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त करयल जाव वद्धावित्ता पाहुड उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी—एव खलु अह सामी ! मिहिलाओ रायहाणीओ कूभगस्स रन्नो पुत्तेणं पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेण कूमारेण निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए तं इच्छामिण सामी ! तुब्भ वाहुच्छाया परिग्गहिए जाव परिवसित्तए, तएणं से अदीणसत्तू राया त चित्तगरदारयं एवं

का फिर विरोध आवेगा। हाथों के विना चित्र लिखना कैसे बन सकता है। जघा कटवा देने के बाद फिर उस ने उसे अपने देश से बाहर चले जाने की आज्ञा दे दी। " २८ "

મૂળ પાઠ આગળ આવશે તેની સાથે હાથ કપાવવાની ઉકત વાત બધ બેસતી નથી હાથ વગર ચિત્ર દોરી જ કઈ રીતે શકાય ?

મલ્લદત્તકુમારે વતધાઓ કપાવવાની સજા કરીને તે ચિત્રકારને દેશવટો આપ્યો ॥ સૂત્ર " ૨૮ " ॥

वयासी-किन्न तुमं देवाणुप्पिया ! मल्लदिण्णेणं निव्विसए आणत्ते ? तएणं से चित्तयरदारए अदीसत्तूरायं एव वयासी-एव खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगरसेणि सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभ त चेव सव्व भाणियव्व जाव मम छिदावेइ, छिदावित्ता निव्विसय आणवेइ, त एव खलु सामी! मल्लादिण्णे कुमारेण निव्विसए आणत्ते ।

तएण अदीणसत्तू राया त चित्तगर एव वयासी - से केरिसए णं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? तएणं से चित्तगरदारए कक्खतराओ चित्तफलय णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तूस्स उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी -एसणं सामी ! मल्लीए विदेहराजवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगारभावपडोयारे निव्वत्तिए, णो खलु सक्के केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकण्णगाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए, तएण अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी - तहेव जाव पहारेत्थ गमणयाए ॥ सू० ॥

टीका—'तएण से इत्यादि । ततस्तदन्तर खलु स चित्रकारो मल्लदत्तेन निर्विं षयः=देशनिर्गतो भवितुम् आज्ञप्त सन् सभाण्डामत्रोपकरणमादाय=स्वगृहमागत्य

' तएण से चित्तगरए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से चित्तगरए) वह चित्रकार (मल्ल दिन्ने ण, णिव्विसए आणत्ते समाणे) मल्लदत्त कुमारसे देशसे बाहिर निकल

' तएण से चित्तगरए ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(तएण) त्यारબાદ (से चित्तगरए) चित्रકાર (मल्लदिन्नेण णिव्विसए आणत्ते समाणे) મલ્લદત્તકુમાર વડે અપાએલી દેશ બહાર જવાની આજ્ઞા સાંભળીને

स्वकीय भाण्डाद्युपकरण गृहीत्वा मिथिलातो नगरीतो निष्क्रामति=बहिर्निस्सरति निष्क्रम्य विदेह जनपद=विदेहदेशस्य म यमध्येन-मध्येभूत्वा माकृतत्वात् षष्ठ्यर्थे द्वितीया, यत्रैव कुरुजनपदः=कुरुनामको देश., यत्रैव हास्तिनापुर नगर, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'भडणिक्खेव' भाण्डनिक्षेप=भाण्डाद्युपकरणाना स्थापन करोति कृत्वा 'चित्तफलग' चित्रफलक=चित्रगोयपट्टक यस्मिन् पट्टके चित्र रचनीय तदित्यर्थ, सज्जयति=मार्जनलेपादिना सस्करोति, सज्जयित्वा मल्लया विदेहराज

जाने के लिये आज्ञप्त होता हुआ (सभडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ णिक्खमित्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव कुरु जणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ) अपने घर आया-वहा आकर उसने अपने भाण्ड आदि उपकरणों को लिया-और लेकर फिर वह मिथिला नगरीसे बाहिर निकल गया-निकल कर वह विदेह जनपद के बीच से होकर जहा कुरु जनपद था और जहा हस्तिनापुर नगर था-वहा आये- (उवागच्छित्ता भडनिक्खेव करेइ, करित्ता चित्तफलग सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्ठानुसारेण रूव णिव्वत्तेइ) वहा आकर के उस ने अपने भांड आदि उपकरणो को यथास्थान रख दिया-रखकर के फिर उसने चित्र फलक को-जिस में चित्र रचा जाता है उस पटिये को-मार्जन लेप आदि से ठीक ठाक किया-अर्थात् पहिले उसने उस पट्टि को साफ किया पश्चात् उस पर रग आदि का लेप लगाया।

(सभडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ णिक्खमित्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ

તે પોતાને ઘેર આવ્યો અને ત્યાથી તેણે ભાડ-વાસણ વગેરે વસ્તુઓ લીધી લઇને મિથિલા નગરીની બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને વિદેહ જનપદની વચ્ચે થઈને જ્યા કુરુજનપદ હતુ અને જ્યા હસ્તિનાપુર નગર હતુ ત્યા ગયો.

(उवागच्छित्ता भडनिक्खेव करेइ, करित्ता चित्तफलग सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्ठानुसारेण रूव णिव्वत्तेइ)

ત્યા જઇને તેણે પોતાની ભાડ વગેરે વસ્તુઓને ઉચિત સ્થાને ગોઠવી દીધી અને ગોઠવીને ચિત્ર કલકતુ-ઓલ્યે કે જેમા ચિત્ર દોરવામા આવે છે તે પાટિયાનુ-માર્જન લેપન વગેરે કરીને તૈયાર કર્યું મતલબ આ પ્રમાણે છે કે પહેલા તેણે પાટિયાને સ્વચ્છ બનાવ્યુ ત્યારપછી રગ વગેરેનો લેપ કર્યો

वरकन्यायाः पादाङ्गुष्ठानुसारेण रूप=तदीय चित्र निर्वर्तयति। निर्वर्त्य 'कक्ख तरसि' कक्षान्तरे-कक्षस्य=बाहोर्मूलस्य अन्तरे=आभ्यन्तरे 'छुप्पइ' छुपति धरतीत्यर्थः। 'छुप्पित्ता' छुप्त्वा=धृत्वा 'महत्थ जाव' महार्घं यावत्-महार्घ, महार्ह, 'पाहुड' प्राभृतम्=उपहार, गृह्णाति, गृहीत्वा हस्तिनापुर नगर-हस्तिना पुरनगरस्य मध्यमध्येन यत्रैव-अदीनशत्रूराजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त करतल -यावत् करतल परिगृहीत शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयनयेति शब्देन वर्धयति=अभिनन्दयति, वर्धयित्वा प्राभृतमुपचयति=अग्रे स्थापयति उपनीय एव

बाद में विदेह राजवर कन्या मल्लि कुमारी का उसके ऊपर पाद के अगुष्ठ के अनुसार तदनुरूप चित्र रचा। (णिव्वत्तित्ता कक्खतरसि छुब्भइ, छुब्भित्ता महत्थ जाव पाहुड गिण्हइ, गिण्हित्ता, हत्थिणा पुर नयर मज्झ मज्झेण जेणेव अदीण सतूराया तेणेव उवागच्छइ) चित्र रचकर के फिर उसने उसे अपनी कांख में दबाया-दबा कर महार्थं यावत् महार्घ प्राभृत (बहु मूल्य भेट) लिया, और लेकर हस्तिनापुर नगर के बीचो बीच से होकर वह जहां अदीन शत्रु राजा थे वहां गया- (उवागच्छित्ता त करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता पाहुड उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी) वहा जाकर उसने दोनो हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख कर राजा को नमस्कार किया बाद में जय विजय आदि शब्दों द्वारा उन्हें बधाई दी। बधाई देकर उस ने लाये हुए भेंट को उन के समक्ष रख दिया। रख देने के बाद फिर उस

ત્યારબાદ ચિત્રકારે પગના અંગુઠાને અનુરૂપ વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીનુ આબેહૂબ ચિત્ર દોર્યું

(णिव्वत्तित्ता कक्खतरसि छुब्भइ, छुब्भित्ता महत्थ जाव पाहुड गिण्हइ गिण्हित्ता, हत्थिणापुर णयर मज्झ मज्झेण जेणेव अदीणसत्तूराया तेणेव उवागच्छइ)

ચિત્ર દોર્યા પછી ચિત્રને બગલમા દબાવીને મહાર્થ સાધક-બહુ જ મૂલ્યવાન ભેટ લીધી અને લઇને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઈને જ્યા અદીનશત્રુ રાજા હતા ત્યા ગયો

उवागच्छित्ता त करयल जाव वद्धावेइ वद्धावित्ता पाहुड उवणेइ उवणित्ता एव वयासी

ત્યા જઈને તેણે બને હાથોની અજલી બનાવીને તેને માથે મૂકીને રાજા ને નમન કર્યા અને ત્યાર બાદ તેણે 'જય વિજય' વગેરે શબ્દોથી રાજા ને વધામણી આપી વધામણી આપીને ચિત્રકારે પોતાની પાસેની ભેટ રાજાની સામે મૂકી ભેટ અર્પણ કર્યા બાદ તેણે રાજાને આ પ્રમાણે વિનતિ કરી કે

मवादीत्-हे स्वामिन्! एव खलु अह मिथिलातो राजधानीत' कुम्भकस्य राज्ञः पुत्रेण प्रभावत्या देव्या आत्मजेन=अङ्गजातेन, मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषय = देशान्निर्गन्तुम्=आज्ञप्तः सन् इह= अस्मिन स्थाने, हव्य=शीघ्रम् आगत । तत्= तस्मात् हे स्वामिन्! इच्छामि खलु युष्माक बाहुच्छाया परिगृहीत'-भुजबलाश्रय गृहीत्वेत्यर्थ. यावत् परिवस्तुम्, अत्र-यावच्छब्देन-निर्भय, निरुद्विग्नः सन्, सुख सुखेन, इतिग्राह्यम्। ततः खलु सोऽदीनशत्रूराजा, त चित्रकरदारकमेवमवादीत् हे देवानुप्रिय! किम्-कुतः, खलु त्व मल्लदत्तेन निर्विषयः-देशाद् बहिर्गन्तुम्,

ने उन से इस प्रकार कहा-एव खलु अह सामी! मिहिलाओ राय हाणीओ कुभगस्स रण्णो पुत्तेण, पभावईए देवीए अत्तएण मल्ल दिन्नेण कुमारेण निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए) हे स्वामिन्! मिथिला राजधानी से वहा के कुभक राजा के पुत्र और प्रभावती के अगज मल्लदत्त कुमार से देश से निर्वासित किया गया यहा आये हैं।

(त इच्छामिण सामी! तुब्भ बाहुच्छाया परिग्गहिए जाव परिवसित्तए) अतः हे स्वामिन्! मैं आपकी भुजच्छाया का आश्रय लेकर यहां रहना चाहते हैं। यहा "यावत्" शब्द से "निर्भयः" निरुद्विग्नः सन् सुख सुखेन" इस पाठ का सग्रह किया गया है। (तएण से अदीणसत्तू राया त चित्तगरदारय एव वयासी-किन्न तुम देवाणुप्पिया! मल्ल दिन्नेण निव्विसए आणत्ते) उस की इस प्रकार बात सुनकर अदीन शत्रु राजा ने उस चित्रकर दारक से इस प्रकार पूछा-

(एव खलु अह सामी! महिलाओ रायहाणीओ कुभगस्स रण्णो पुत्तेण पभावईए देवीए अत्तएण मल्लदिन्नेण कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए)

હે સ્વામીન્! મિથિલા રાજધાનીના પ્રભાવતી દેવીના ગર્ભથી જન્મ પામેલા કુભક રાજાના પુત્ર મલ્લદત્તકુમારે મને દેશવટો આપ્યો છે તેથી હુ અહી તમારે શરણે આવ્યો છુ

(त इच्छामि ण सामी! तुब्भ बाहुच्छाया परिग्गहिए जाव परिवसित्तए)

એથી હે સ્વામી! હુ તમારી બાહુચ્છાયાના આશ્રયમા અહી રહેવા ચાહુ છુ અહી 'यावत्' પદથી 'निर्भय' 'निरुद्विग्न सन् सुख सुखेन' આ પાઠનો સગ્રહ કરવામા આવ્યો છે

(तएण से अदीण सत्तूराया त चित्तगरदारय एव वयासी किन्न तुम देवाणुप्पिया! मल्लदिन्नेण निव्विसए आणत्ते)

આ વાત સાભળીને અદીનશત્રુ રાજાએ ચિત્રકારદારકને આ પ્રમાણે કહ્યુ

आज्ञप्त ? ततः स चित्रकरदारक, अदीनशत्रु राजानमेवमवादीत्-हे स्वामिन्! एव खलु मल्लदत्त कुमारोऽन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, चित्रकरश्रेणिं चित्रकारान् शब्दयति=आहूतवान्। शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः! यूय खलु मम चित्रसभा चित्रयत त चेव सव्व भाणियव्व' तदेव सर्वं भणितव्यम्-इह चित्रकर विषयक सकल पूर्वोक्तमेव वृत्तान्त वाच्यमित्यर्थः, 'जाव मम सडासग छिंदावेइ' यावन्मम सन्देशक छेदयति। चित्रयत' इत्यादि,

हे देवानुप्रिय! तुम किस कारण से मल्लदत्तकुमार से निर्वासित होने के लिये आज्ञप्त किये गये हो (तएणं से चित्तयरदारए अदीणसत्तूराय एव वयासी-एव खलु सामी! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगरसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया! मम चित्तसभ त चेव सव्व भाणियव्व जाव मम सडासग छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसय आणवेइ त एव खलु सामी! मल्लदिन्नेणं कुमारेण निव्विसये आणत्ते) उस चित्रकर दारक ने तब अदीन शत्रु राजा से कहा-हे स्वामिन्! मल्लदत्त कुमार ने किसी एक समय चित्रकारों की श्रेणी को बुलाया और बुलाकर उस से ऐसा कहा कि हे देवानुप्रियों! तुम लोग मेरे इस चित्रगृह को चित्रित करो इस तरह पहिले की सब घटना उस चित्रकार ने अदीनशत्रु राजा को उरू और जघाओं को छेदने तक की सुना दो। छिदवा कर फिर उन्होंने मुझे

કે હે દેવાનુપ્રિય! મલ્લદત્ત કુમારે તમને શા કારણથી દેશમાથી નિર્વાસિત થઈ જવાની આજ્ઞા આપી છે?

(तएण से चित्तयरदारए अदीण सत्तूराय एव वयासी-एव खलु सामी! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगरसेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भे ण देवाणुप्पिया! मम चित्तसभ त चेव सव्व भाणियव्व जाव मम सडाएग छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसय आणवेइ त एव खलु सामी! मल्लदिन्नेणं कुमा

छेदयित्वा निर्विषयम्=देशनिष्कासनमाज्ञापयति ' तदेव खलु हे स्वामिन् ! अह मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषय आज्ञप्तः ।

ततस्तदनन्तर खलु अदीनशत्रु राजा त चित्रकारमेव वक्ष्यमाण प्रकारेण, अवादीत् — हे देवानुप्रिय ! तत् कीदृग खलु त्वया मल्ल्यास्तदनुरूप रूप =चित्र निर्वर्तितम् ?, तत खलु स चित्रकरदारकः कक्षान्तरात् = बाहुमूलाभ्यन्तराद् चित्रफलक यस्मिन् मल्ल्याश्चित्र लिखितमासीत् तदित्यर्थः, 'णीणेइ' नयति = बहिर्नयति बहिष्करोतीत्यर्थ', ' णीणित्ता ' नीत्वा अदीनशत्रोः राज्ञ उपनयति=अग्रे स्थापयति, उपनीय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–हे स्वामिन् ! एष खलु मल्ल्या–विदेहराजवरकन्याया' पादाङ्गुष्ठानुसारेण तदनुरूप स्य तत्सदृशस्य रूपस्य चित्रस्य ' केइ ' कोऽपि कश्चित्, किञ्चिन्मात्रः ' आगार

देश से बाहर निकल जाने के लिये आज्ञा दे दी । इस तरह मल्लदत्त कुमार से निर्वासित होता हुआ–मैं यहा आया हूँ ।

(तएण अदीणसत्तूराया त चित्तगर एव वयासी–से केरिसएण देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? तएण से चित्तगर दारए कक्खतराओ चित्तफलय णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ) चित्रकर की इस बात को कर्णपथ करके अदीनशत्रु राजा ने उस चित्रकार से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय ? मल्लीकुमारी का चित्र तुमने तदनुरूप कैसा बनाया था । इस प्रकार राजा का वचन सुनकर उस चित्रकरदारक ने अपनी कक्षा के भीतर से दबे हुए उस चित्र फलक को कि जिसमें मल्लीकुमारीका चित्र अकित किया हुआ था बाहर निकाला और बाहर निकाल कर उसे अदीनशत्रु राजा के समक्ष रख दिया । (उवणित्ता एव वयासी) रखकर वह फिर इस

દેશમાથી બહાર જતા રહેવાનો હુકમ કર્યો છે ત્યાથી તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે બહાર નીકળીને હુ અહીં આવ્યો છુ

(तएण अदीण सत्तूराया त चित्तगर एव वयासी–से केरिसएण देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? तएण से चित्तगरदारए कक्खतराओ चित्तफलय णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ)

ચિત્રકારની વાત સાભળીને અદીનશત્રુ રાજાએ તે ચિત્રકારને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! મલ્લીકુમારીનુ આબેહૂબ ચિત્ર તમે કેવુ દોર્યુ હતુ ? આ રીતે રાજાના વચનો સાભળીને ચિત્રકારદારકે મલ્લીકુમારીના ચિત્રવાળુ ફલક બગલમાથી બહાર કઢયુ અને તેને અદીનશત્રુ રાજાની સામે મૂકી દીધુ (उवणित्ता एव वयासी) મૂકીને તેણે રાજાને કહ્યુ કે—

आज्ञप्त ? ततः स चित्रकरदारक, अदीनशत्रु राजानमेवमवादीत्-हे स्वामिन्! एव खलु मल्लदत्त कुमारोऽन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, चित्रकरश्रेणिं चित्रकारान् शब्दयति=आहूतवान्। शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः! यूय खलु मम चित्रसभा चित्रयत त चेव सव्व भाणियव्व' तदेव सर्वं भणितव्यम्-इह चित्रकर विषयक सकल पूर्वोक्तमेव वृत्तान्त वाच्यमित्यर्थः, 'जाव मम सडासग छिंदावेइ' यावन्मम सन्देशक छेदयति। चित्रयत' इत्यादि,

हे देवानुप्रिय! तुम किस कारण से मल्लदत्तकुमार से निर्वासित होने के लिये आज्ञप्त किये गये हो (तएणं से चित्तयरदारए अदीण सत्तु राय एव वयासी-एव खलु सामी! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगरसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया! मम चित्तसभ त चेव सव्व भाणियव्व जाव मम सडासग छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसय आणवेइ त एव खलु सामी! मल्लदिन्नेणं कुमारेण निव्विसये आणत्ते) उस चित्रकर दारक ने तब अदीन शत्रु राजा से कहा-हे स्वामिन्! मल्लदत्त कुमार ने किसी एक समय चित्रकारों की श्रेणी को बुलाया और बुलाकर उस से ऐसा कहा कि हे देवानुप्रियों! तुम लोग मेरे इस चित्रगृह को चित्रित करो इस तरह पहिले की सब घटना उस चित्रकार ने अदीनशत्रु राजा को उरू और जघाओ को छेदने तक की सुना दी। छिदवा कर फिर उन्होंने मुझे

કે હે દેવાનુપ્રિય! મલ્લદત્ત કુમારે તમને શા કારણથી દેશભાથી નિર્વાસિત થઈ જવાની આજ્ઞા આપી છે?

(तएण से चित्तयरदारए अदीण सत्तूराय एव वयासी-एव खलु सामी! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगरसेणिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भे ण देवाणुप्पिया! मम चित्तसभ त चेव सव्व भाणियव्व जाव मम सडाएग छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसय आणवेइ त एव खलु सामी! मल्लदिन्नेणं कुमारेण निव्विसये आणत्ते)

ચિત્રકારદારકે ત્યારે અદીનશત્રુ રાજાને કહ્યું કે હે સ્વામીન્! મલ્લદત્ત કુમારે એક વખતે ચિત્રકારોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે મારા ચિત્રગૃહને ચિત્રિત કરો આ રીતે ચિત્રકારે અદીન શત્રુની સામે ઉરુઓ-જંઘાઓને કપાવવા સુધીની બધી વિગત રજૂ કરી અને તેણે અંતે આ પ્રમાણે કહ્યું કે જંઘાઓને કપાવીને મલ્લદત્તકુમારે મને પોતાના

समुत्पन्न तद्विषयकानुरागवानित्यर्थः। एवभूतः सन् दुत शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-'तहेव' तथैव=काशीराजः शङ्खः स्वदूतमुक्तवान्, तद्वदित्यर्थः, यावत् प्राधारयद् गमनाय=अदीनशत्रो राज्ञ आज्ञया स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव गन्तु प्रवृत्त इत्यर्थ । इति पञ्चमस्यादीनशत्रुनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः कथितः ॥ सू० २९॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं पंचाले जणवए कंपिल्ले पुरे नयरे, तत्थणं जियसत्तू नाम राया पंचालाहिवई होत्था, तस्सणं जियसत्तुस्स धारिणी पामोक्ख देविसहस्स ओरोहे होत्था, तत्थणं मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेद जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था, तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव सत्थवाह पभिइणं पुरओ दाण-धम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवे-

है। (तएणं अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार चित्रकर के मुख से सुनकर राजा ने उसे अपने राज्य मे रहने के लिये खुशी से आज्ञा प्रदान कर दिया। चित्र के देखने से जिन्हें मल्लि विषयक अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे उन कुरुदेशाधिपति अदीन शत्रु राजा ने अपने दूत को बुलाया-और, बुलाकर जिस प्रकार काशीराजा शख ने अपने दूत से कहा था-उसी तरह इन्होने भी उससे कहा। की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर आरूढ हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस ओर चल दिया॥ सूत्र २९॥

तएणं अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए)

આ રીતે ચિત્રકારના મોથી બધી વિગત સાભળીને રાજાએ તેને પોતાના રાજ્યમા રહેવાની આજ્ઞા આપી દીધી ચિત્રને જોઇને જ અદીનશત્રુ રાજાના મનમા મલ્લિકુમારી માટેનો અનુરાગ ઉપન્ન થઇ ગયો રાજાએ તુરત એક દૂતને બોલાવ્યો અને જેમ કાશીરાજ શખે પોતાના દૂતને કહ્યુ હતુ તે પ્રમાણે જ તેણે પણ પોતાના દૂતને કહ્યુ આજ્ઞા મેળવીને દૂત રથ ઉપર સવાર થયો અને જે તરફ મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો ॥ સૂત્ર "૨૯" ॥

भावापडोयारे ' आकारभावमत्यवत्तारः=आकृतिचेष्टयोराविर्भावः, निव्वत्तिए ' निर्व्वर्तितं, पादाङ्गुष्ठमात्रदर्शनानुमितत्वेन मत्कृतचित्रेण पूर्णरूपेणाकृति चेष्टयोराविर्भाव. किंतु स्वल्प एव प्रकटीकृत इत्यर्थः नो खलु शक्य केनापि देवेन व यावत्-दानवेन वा गन्धर्वेण वा यक्षेण वा मल्लया विदेहराजवरकन्यायास्तदनुरूप रूप निर्वर्तयितुम्, तस्या मल्लया विदेहराजवरकन्यायाः स्वरूप लोकोत्तर वर्णनातीत मस्ति, दर्शनादेव तत्स्वरूपस्य पूर्ण ज्ञान भवितु शक्यते, इति भावः। ततः खलु अदीनशत्रुः ' पडिरूवजणियहासे ' प्रतिरूप जनितहर्षः=प्रतिरूप=चित्र तेन जनितस्तद्दर्शनसमुत्पन्नः, हर्षः=सुख कार्ये कारणोपचाराद्अनुरागोऽपि हर्ष इत्युच्यते, मल्लीविषयकानुराग इत्यर्थः, स यस्यास्ति स तथा, मल्लीचित्र दर्शन

प्रकार बोला-(एसण सामी ! मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगारभावपडियारे निव्वत्तिए,णो खलु सक्के केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकण्णाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए) हे स्वामिन्! मैंने विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी के इस पादागुष्ठानुसार से अंकित किये गये चित्र का थोड़ा सारी-किञ्चिन्मात्र-आकृतिएव चेष्टाका आविर्भाव चित्रण किया है-मैंने यह चित्र मल्लीकुमारी का,अंकित किया है-वह उनके अंगुष्ठ को देखकर अवशिष्ट अङ्गादि का अनुमान लगाकर बनाया है।

इसलिये इस चित्र में किञ्चिन्मात्रा में ही उनके आकारादिका अंकन हुआ है पूर्णरूप से नहीं। पूर्णरूप से उन विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी के तदनुरूप चित्र बनाने मे न कोई देवता समर्थ है, न कोई दानव समर्थ है, न कोई गन्धर्व समर्थ है और न कोई यक्ष ही समर्थ

(एसणं सामी! मल्लीए विदेह राजवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगार भाव पडोयारे निव्वत्तिए णो खलु सक्के केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवर कण्णाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए)

હે સ્વામીન્! વિદેહરાજ વર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ તેમના પગના અંગુઠાને જોઇને જ તેમની આકૃતિ અને ચેહરાઓનો આછો ખ્યાલ આપતું ચિત્ર મે દોર્યું છે તેમના અંગુઠાને જોઇને જ બાકીના બધા અંગોનુ ચિત્રણ અનુમાનથી કરવામા આવ્યુ છે

એથી આ ચિત્રમા તેમના આકાર વગેરેનુ અંકન ઓછી માત્રામા જ થયુ છે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ આબેહૂબ ચિત્ર બનાવવાનુ સામર્થ્ય કોઇ દેવતામા નથી કે નથી કોઈ દાનવમા, નથી કોઇ ગાંધર્વમા કે નથી કોઈ યક્ષમા

समुत्पन्न तद्विषयकानुरागवानित्यर्थः। एवभूतः सन् दुत शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-'तहेव' तथैव=काशीराजः शङ्खः स्वदूतमुक्तवान्, तद्वदित्यर्थः, यावत् प्राधारयद् गमनाय=अदीनशत्रो राज्ञ आज्ञया स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव गन्तु प्रवृत्त इत्यर्थ । इति पञ्चमस्यादीनशत्रुनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः कथितः ॥ सू० २९॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएण पचाले जणवए कपिल्ले पुरे नयरे, तत्थण जियसत्तू नाम राया पचालाहिवई होत्था, तस्सण जियसत्तूस्स धारिणी पामोक्ख देविसहस्स ओरेहे होत्था, तत्थण मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेद जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था, तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूण राईसर जाव सत्थवाह पभिइणं पुरओ दाण-धम्म च सोयधम्मं च तित्थाभिसेय च आघवेमाणी पण्णवे-

है। (तएण अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार चित्रकर के मुख से सुनकर राजा ने उसे अपने राज्य मे रहने के लिये खुशी से आज्ञा प्रदान कर दिया। चित्र के देखने से जिन्हें मल्लि विषयक अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे उन कुरुदेशाधिपति अदीन शत्रु राजा ने अपने दूत को बुलाया-और, बुलाकर जिस प्रकार काशीराजा शख ने अपने दूत से कहा था-उसी तरह इन्होने भी उससे कहा। की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर आरूढ हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस ओर चल दिया॥ सूत्र २९ ॥

तएण अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूय सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए)

આ રીતે ચિત્રકારના મોથી બધી વિગત સાભળીને રાજાએ તેને પોતાના ગન્યમા રહેવાની આજ્ઞા આપી દીધી ચિત્રને જોઇને જ અદીનશત્રુ રાજાના મનમા મલ્લિકુમારી માટેનો અનુરાગ ઉપન્ન થઇ ગયો રાજાએ તુરત એક દૂતને બોલાવ્યો અને જેમ કાશીરાજ શખે પોતાના દૂતને કહ્યુ હતુ તે પ્રમાણે જ તેણે પણ પોતાના દૂતને કહ્યુ આજ્ઞા મેળવીને દૂત રથ ઉપર સવાર થયો અને જે તરફ મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો ॥ સૂત્ર "૨૯" ॥

भावापडोयारे ' आकारभावप्रत्यवतारः=आकृतिचेष्टयोराविर्भावः, निव्वत्तिए ' निर्व्वर्तितं, पादाङ्गुष्ठमात्रदर्शनानुमितत्वेन मल्लकृतचित्रेण पूर्णरूपेणाकृति चेष्टयोराविर्भावं किंतु स्वल्प एव प्रकटीकृत इत्यर्थः नो खलु शक्य केनापि देवेन व यावत्-दानवेन वा गन्धर्वेण वा यक्षेण वा मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायास्तदनुरूप रूप निर्वर्तयितुम्, तस्या मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया. स्वरूप लोकोत्तर वर्णनातीत मस्ति, दर्शनादेव तत्स्वरूपस्य पूर्ण ज्ञान भवितु शक्यते, इति भावः। ततः खलु अदीनशत्रुः ' पडिरूवजणियहासे ' प्रतिरूप जनितहर्षः=प्रतिरूप=चित्र तेन जनितस्तद्दर्शनसमुत्पन्नः, हर्षः=सुन्न कार्ये कारणोपचारादनुरागोऽपि हर्ष इत्युच्यते, मल्लीविषयकानुराग इत्यर्थः, स यस्यास्ति स तथा, मल्लीचित्र दर्शन

प्रकार बोला-(एसण सामी ! मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूव स्स रूवस्स केइ आगारभावपडियारे निव्वत्तिए,णो खलु सक्के केणइ देवे ण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकण्णाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए) हे स्वामिन्! मैंने विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी के इस पादाणुष्ठा नुसार से अंकित किये गये चित्र का थोड़ा सा ही-किञ्चिन्मात्र-आकृतिएव चेष्टाका आविर्भाव चित्रण किया है-मैंने यह चित्र मल्लीकुमारी का,अंकित किया है-वह उनके अंगुष्ठ को देखकर अवशिष्ट अङ्गादि का अनुमान लगाकर बनाया है।

इसलिये इस चित्र में किञ्चिन्मात्रा में ही उनके आकारादिका अंकन हुआ है पूर्णरूप से नहीं। पूर्णरूप से उन विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी के तदनुरूप चित्र बनाने मे न कोई देवता समर्थ है, न कोई दानव समर्थ है, न कोई गन्धर्व समर्थ है और न कोई यक्ष ही समर्थ

(एसणं सामी! मल्लीए विदेहराजवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगार भाव पडोयारे निव्वत्तिए णो खलु सक्के केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवर कण्णाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए)

હે સ્વામીન્! વિદેહરાજ વર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ તેમના પગના અંગુઠાને જોઇને જ તેમની આકૃતિ અને ચેહરાઓનો આછો ખ્યાલ આપતું ચિત્ર મે દોર્યું છે તેમના અંગુઠાને જોઇને જ બાકીના બધા અંગોનુ ચિત્રણ અનુમાનથી કરવામા આવ્યુ છે

એથી આ ચિત્રમા તેમના આકાર વગેરેનુ અંકન ઓછી માત્રામા જ થયુ છે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ આબેહૂબ ચિત્ર બનાવવાનુ સામર્થ્ય કોઇ દેવતામા નથી કે નથી કોઈ દાનવમા, નથી કોઇ ગાંધર્વમા કે નથી કોઈ યક્ષમા

मल्लीए णो सचाएइ किंचि वि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसिणिया संचिट्ठइ, तएणं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति निंदंति खिसंति गरहंति अप्पेगइया होरुयालंति अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति, अप्पेगइया वाघाडीओ करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभंति ।

तएण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायकरकन्नाए दासचेडियाहि जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, भिसिय गिण्हइ, गिण्हित्ता कणंतेउराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता परिव्वाइया सपरिवुडा जेणेव पचालजणवए, जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कपिलपुरे बहूणं राईसर० जाव परूवेमाणी विहरइ ॥ सू० ३० ॥

टीका—अथ षष्ठस्य जितशत्रुनाम्नो राज्ञः सम्बन्धप्रस्तावमाह-'तेण कालेण' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पञ्चालः अधुना पञ्जाबनाम्ना

इस तरह यह पञ्चमराजा का संबंध प्रकट किया है । अब छठेराजा का सम्बन्ध प्रकट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं:-

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (पंचाले जणवए कपिल्ले पुरे नयरे) पञ्चाल नामका देश (जो अभी पंजाब

આ રીતે પંચમરાજાનો સંબંધ પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે હવે છઠ્ઠા રાજાનો સંબંધ સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે—

'तेण कालेणं तेण समएण' इत्यादि

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (पंचाले जणवए कपिल्ले पुरे नयर) પંચાલ નામે દેશ-જે અત્યારે પંજાબ નામે પ્રસિદ્ધ છે,

माणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ, तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाइं तिदंडं च कुडिय च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल परिव्वाइया सद्धिं सपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ, निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाइय एव वयासी-तुब्भेणं चोक्खे किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ? तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी-अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे, जणणं अम्हं किंचि असुइ भवइ, तएणं उदएणं य मट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्ग गच्छामो, तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाइय एव वयासी-चोक्खा ! से जहानामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा अत्थिणं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काई सोही ?, नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा ! तुब्भेणं पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहावतस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव धोवमाणस्स, तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायकन्नाए एव वुत्ता समाणा संकिया कंखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था

मल्लीए णो सचाएइ किंचि वि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसिणिया संचिट्ठइ, तएणं चोक्ख मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति निंदंति खिसंति गरहंति अप्पेगइया होरुयालंति अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति, अप्पेगइया वाघाडीओ करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभंति ।

तएणं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायकरकन्नाए दासचेडियाहि जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, भिसिय गिण्हइ, गिण्हित्ता कणंतेउराओ पडिनिक्खमइ, परिनिक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता परिव्वाइया सपरिवुडा जेणेव पचालजणवए, जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कपिलपुरे बहूणं राईसर० जाव परूवेमाणी विहरइ ॥ सू० ३० ॥

टीका—अथ षष्ठस्य जितशत्रुनाम्नो राज्ञः सम्बन्धप्रस्तावमाह–'तेण कालेण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये पञ्चाल. अधुना पजाबनाम्ना

इस तरह यह पञ्चमराजा का सबध प्रकट किया है। अब छठेराजा का सम्बन्ध प्रकट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं:–

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि॥

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (पचाले जणवए कपिल्ले पुरे नयरे) पञ्चाल नामका देश (जो अभी पजाब

આ રીતે પચમરાજાનો સબધ પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે હવે છઠ્ઠા રાજાનો સબધ સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે—

'तेण कालेणं तेण समएण' इत्यादि

ટીકાર્થ–(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (पंचाले जणवए कपिल्ले पुरे नयरे) પચાલ નામે દેશ–જે અત્યારે પજાબ નામે પ્રસિદ્ધ છે.

माणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ, तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाई तिदंडं च कुडिय च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल परिव्वाइया सद्धिं सपरिवुडा मिहिल रायहाणिं मज्झमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ, निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाइयं एव वयासी-तुब्भेण चोक्खे किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ? तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी-अम्ह ण देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे, जणं अम्ह किंचि असुइ भवइ, तएणं उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइय एव वयासी-चोक्खा ! से जहानामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा अत्थिण चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काई सोही ?, नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा ! तुब्भेण पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहावतस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव धोवमाणस्स, तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायकन्नाए एव वुत्ता समाणा संकिया कंखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था.

दान स्वशास्त्रानुसारेण शौचादि धर्माणा विधि नियमभेदादि प्ररूपणां कुर्वती उपदर्शयन्ती=स्वाचरणेन साक्षात् कारयन्ती, विहरति=आस्तेस्म ।

ततस्तदनन्तर सा चोक्षा परिव्राजिना अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये त्रिदण्ड=दण्डत्रय च कुण्डिका=कमण्डलु च यावत्-धातुरक्तानि वस्त्राणि गृह्णति, गृहीत्वा ' परिव्वाइगावसहाओ ' परिव्राजिकावसथात्=परिव्राजिकानां मठात् ' पडिनिक्खमइ ' प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पविरलपरिव्वाइया ' अविरलपरिव्राजिकाभिः = अल्पसख्यकसन्यासिकाभिः सार्धं=सह, सपरिवृता=युक्ता मिथिला राजधानीं मिथिलाया राजधान्या इत्यर्थः मध्यमध्येन यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवन यत्रैव ' कण्णते उरे ' कन्यान्तः पुर, यत्रैव मल्ली विदेहवरकन्या, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' उदयपरिफासियाए ' उदकपरि

वह चोक्षा परिव्राजिका मिथिला नगरी में अनेक राजेश्वर, तलवर, कौटुम्बिक, माण्डविक, श्रेष्टी, सार्थवाह आदिकों के समक्ष दान धर्म शौच धर्म, और तीर्थाभिषेक का कथन करती थी, उन्हें अच्छी तरह समझाती थी उस शौचादि धर्मो की अपने शास्त्रानुसार विधि नियम आदि के भेद से प्ररूपणा करती थी और अपने आचरण से साक्षात उन का प्रदर्शन भी करती थी । (तएण सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाइ तिदडं च कुडिय च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पविरलपरिव्वाइयासद्धिं सपरिवुडा मिहिला रायहाणिं मज्झं मज्झेण जेणेव कुभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेह रायवरकन्ना-तेणेव उवागच्छइ) एक दिन वह चोक्षा परिव्राजिका अपने त्रिदड कमण्डलु, तथा गैरिक धातु से रक्त हुए वस्त्रों को लेकर

મિથિલા નગરીમા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા ઘણા રાજેશ્વર, તલવર, કૌટુંબિક માડલિક શ્રેષ્ઠિ સાર્થવાહ વગેરેની સામે દાનધર્મ, શૌચધર્મ અને તીર્થસ્નાન વિષે ધર્મ ચર્ચા કરતી હતી તેમને તે સારી પેઠે શૌચ વગેરે ધર્મો તેમજ શાસ્ત્રાનુસાર વિધિ નિયમ વગેરેના ભેદોની બાબતમા સમજાવતી હતી અને જાતે બધા શૌચ વગેરે આચરણોને આચરીને પ્રત્યક્ષ રૂપમા તેનો દેખાવ કરતી હતી

(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाइ तिदंडं च कुडिय च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरलपरिव्वाइयासद्धिं सपरिवुडा मिहिला रायहाणिं मज्झं मज्झेण जेणेव कुभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवर कन्नातेणेव उवागच्छइ)

એક દિવસ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા પોતાના ત્રિદંડ, કમંડલુ તેમજ ગેરૂથી

प्रसिद्ध जनपदः=देशः आसीत् तत्र= तस्मिन् देशे 'कपिल्लपुरे' काम्पिल्यपुरे' =काम्पिल्यपुरनामके, 'नयरे' नगर, जितशत्रुर्नाम राजा पञ्चालाधिपतिरासीत्, तस्य खलु जितशत्रो राज्ञो धारिणीप्रमुखा देवीसहस्रम् 'ओरोहे' अवरो धे=अन्तः पुरे आसन् ।

इतश्च मिथिलाया नगर्या खलु 'चोक्खा' चोक्षा=चोक्षानाम्नी परिव्राजिका ऋग्वेद-यावत्-चतुर्वेद परिनिष्ठिता श्रुतिस्मृत्यादिसकलशास्त्रामिज्ञा चाप्यासीत्। ततस्तदन्तर सा चोक्षा परिव्राजिका मिथिलायां नगर्यां बहूना राजेश्वर-यावत् राजेश्वरतलवरकौटुम्बिकमाण्डविकश्रेष्ठिसार्थवाहप्रभृतीनां पुरतः = अग्रे, दान-धर्मं च शौचधर्मं च तीर्थाभिषेक तीर्थजलस्नानधर्मं च आख्यापयन्ती=आख्यानम् -आख्याता कुर्वती कथयन्तीत्यर्थः, प्रज्ञापयन्ती=सम्यग बोधयन्ती, प्ररूपयन्ती=

नामसे प्रसिद्ध है) था। उस देशमें काम्पिल्यपुर नामका नगर था। उसमें पचाल देश के अधिपति जित शत्रु राजा रहते थे। (तस्सण जियस्सुस्स धारिणी पामोक्ख देवीसहस्स ओरेहे होत्था) उस जित शत्रु राजा के अन्तः पुर में धारिणी प्रमुख ? एक हजार देवियां थी। (तत्थ ण मिहिलाए चोक्खानाम परिव्वाइया रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था) इस तरह मिथिला नगरी में ऋग्वेद आदि चारों वेदो की तथा स्मृति आदि समस्त शास्त्रों की परिज्ञाता चोक्षा नाम की परिव्राजिका भी रहती थी-(तएण सा चोक्खा परिवाइया मिहिलाए बहूण राइसर जाव सत्थवाहपभिइण पुरओ दाणधम्मच सोयधम्मच तित्थाभिसेयच आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी, विहरइ)

હતો તે દેશમા કાંપિલ્યપુર નામે નગર હતુ તેમા પચાલ દેશના અધિપતિ જિતશત્રુ રાજા રહેતા હતા

(तस्सण जियसत्तुस्स धारिणी पामोक्खं देविसहस्स ओरेहे होत्था)

જિતશત્રુ રાજાના રણવાસમા ધારિણી પ્રમુખ એક હજાર રાણીઓ હતી

(तत्थण मिहिलाए चोक्खानाम परिव्वाइया रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था)

મિથિલા નગરીમા ઋગ્વેદ વગેરે ચારે વેદો તેમજ સ્મૃતિ વગેરે બધા શાસ્ત્રોને જાણનારી ચોક્ષા નામે એક પરિવ્રાજિકા રહેતી હતી

(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूण राई सरजाव सत्थवाह पभिइणं पुरओ दाणधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च अघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ)

चोक्षा परिव्राजका मल्लीं विदेहराजवरकन्या मेवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! अस्माक खलु शौचमूलको धर्म प्रज्ञप्त', यत् खलु अस्माक किंचिदशुचिभवति, तत् खलु उदकेन=जलेन च मृत्तिकया-यावत्-शुचिभवति,एव खलु वय जलाभिषेकपूतात्मान. अविघ्नेन स्वर्गं गच्छामः।

तत =चोक्षापरिव्राजिकावचनश्रवणानन्तर खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या चोक्षा परिव्राजिकामेव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे चोक्षे ! तद् ययानामक-इद दृष्टान्तोपन्यासे-दृष्टान्त प्रदर्शयामि तावदित्यर्थः-यथा कोऽपि पुरुषो रुधिर

(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी) प्रत्युत्तर मे उस चोक्षा परिव्राजिका ने विदेह राजवर कन्या उस मल्ली कुमारी से ऐसा कहा

(अम्हण देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे, जण्ण अम्ह किंचि असुइ भवइ तएण उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाइय एव वयासी) हे देवानुप्रिये ! हमारा धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त हुआ है। इसीलिये हमारी कोई वस्तु जब अशुचि हो जाती है-तब हम लोग उसे जल एव मृत्तिका से पवित्र कर लेते हैं। इस तरह हम लोग जल स्नान से पवित्रात्मा होकर विना किसी विघ्न के शीघ्र ही स्वर्ग पहुँच जाते है।

इस प्रकार चोक्षा का कथन सुनकर विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी ने उस चोक्षा परिव्राजिका से ऐसा कहा-(चोक्खा-से

(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी)
જવાબમા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાએ વિદેહ રાજવર કન્યાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે—

(अम्हण देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे जण्ण अम्ह किं चि असुइ भवइ, तएण उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो तएण मल्ली विदेहराय वरकन्ना चोक्ख परिव्वाइय एव वयासी)
હે દેવાનુપ્રિયે ! અમારો ધર્મ શૌચ મૂલક પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે એટલા માટે અમારી જ્યારે તે વસ્તુ જ્યારે અશુચિ થઇ જાય છે ત્યારે અમે તેને પાણી અને માટીથી પવિત્ર કરીએ છીએ આ રીતે અમે પાણીમા સ્નાન કરીને પવિત્રાત્મા થઈ જઇએ છીએ અને નિર્વિઘ્ન રૂપે જલદી સ્વર્ગમા પહોચી જઈએ છીએ
આ રીતે ચોક્ષાનુ કથન સાભળીને વિદેહરાજની ઉત્તમ કન્યા મલ્લિ કુમારીએ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને કહ્યુ છે—

स्पृष्टायां=जलप्रक्षेपेण सिक्ता, दर्भोपरि 'पच्चुत्थुयाए' प्रत्यस्तरणायां=प्रसारितायां 'भिसियायां' वृषिकायाम्=आसने निषीदति=उपविशति, निषद्य मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः पुरतो दानधर्मं च यावद् विहरति दानधर्मशौचधर्मादि-कमाख्यापयन्ती प्रज्ञापयन्ती सा चोक्षा परिव्राजिका आस्ते स्म।

ततः खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या चोक्षां परिव्राजिकामेवमवादीत्-हे चोक्षे! तव खलु किं मूलो धर्मः प्रज्ञप्तः 'ततः=मल्लीवचन, श्रवणानन्तर खलु सा

परिव्राजकों के मठ से निकली और कितनीक परिव्राजिकाओं को साथ लेकर मिथिला राजधानी के बीचों बीच से होकर वह जहां कुंभक राजा का भवन था तथा उस में जहां कन्यान्तः पुर और उस में भी विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी थी वहां आई-(उवागच्छित्ता उदय परि फासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ वहां आकर वह जल से सिञ्चित हुए तथा दर्भ के ऊपर बिछाये गये आसन पर बैठ गई। (निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्म च जाव विहरइ) बैठकर उसने विदेह राजवर कन्याके समक्ष दान, धर्म शौचधर्म आदि की कथा की-प्ररूपणा की (तएण मल्ली विदेहरायवर कन्ना-चोक्ख परिव्वाइय एच वयासी) बाद में विदेह राज की उत्तम कन्या मल्लीकुमारी ने उस चोक्षा परिव्राजिका से इस प्रकार कहा-(तुब्भेण चोक्खे किं मूलए धम्मे पण्णत्ते ?) हे चोक्षे ! तुम्हारे यहां धर्म किं मूलक (किस मूलक) प्रज्ञप्त हुआ है।

રંગેલા વસ્ત્રોને લઇને પરિવ્રાજકોના મઠથી બહાર નીકળી અને કેટલીક પરિવ્રાજિકાઓની સાથે મિથિલા રાજધાની વચ્ચે થઇને જ્યા કુંભકરાજાનો મહેલ હતો તેમજ જ્યા કન્યાન્ત પુર અને તેમા પણ વિદેહરાજાની ઉત્તમ કન્યા મલ્લીકુમારી હતી ત્યા પહોચી

(उवागच्छित्ता उदय परिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ)

ત્યા આવીને તે પાણી છાટેલા દર્ભના ઉપર પાથરવામા આવેલા આસન ઉપર બેસી ગઈ

(निसित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्म च जाव विहरइ) બેસીને તેણે વિદેહરાજવર કન્યાની સામે દાનધર્મ, શૌચધર્મ વગેરેની વાત્યા કરી (चोक्ख परिवाइय एव वयासी) ત્યારપછી વિદેહરાજાની ઉત્તમ કન્યા મલ્લી કુમારીએ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—' तुमेण चोक्खेकिं लए धम्मे पण्णत्ते ?) હે ચોક્ષે ! તમારામા ધર્મ કિ મૂલક પ્રરુપિત કરવામા છે

किमन्यदुत्तर दास्यामी ' त्येवमुत्तरविषयक वाञ्छायुक्ता । ' विइगिच्छिया ' विचिकित्सिता=' अस्मिन्नुत्तरे दत्ते सति किं मल्ल्या अत्र श्रद्धोत्पत्स्यते किं वा नोत्पत्स्यते ' इत्येव विचिकित्सा=सशयः, सजाता यस्या सा विचिकित्सिता, तथा-' भेयसमावण्णा ' भेदसमापन्ना=अत्र भेदो मतेर्भङ्गः-मयाऽधुना किं कर्तव्यमिति निर्णयाभवाद् व्याकुलतारूपस्त समापन्ना समाप्ता, जाताचाप्यभवत् शङ्कितेत्यादि विशेषणचतुष्टयेन चोक्षा परिव्राजिका मल्ल्या समुचित दृष्टान्तेन दृढीकृत प्रश्न समाधातु व्याकुलीजाता, इति भाव' मल्ल्याः ' णो सचाएइ ' नो

से धोने पर किसी भी प्रकार की शुद्धि नही होती है । (तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेह रायवर कन्नाए एव वुत्ता समाणा सकिया कखिया विइगिच्छिया भेय समावण्णा जाया यावि होत्था) इस प्रकार विदेह राज की वर कन्या मल्ली कुमारी के द्वारा समझाई गई वह चोक्षा परिव्राजिका शका से युक्त बन गई, कांक्षा से युक्त बन गई, विचिकित्सा (फलके प्रति सदेह और भेद (अपने मतव्य का विच्छेद) से समापन्न हो गई । मनसे सोचकर यदि म मल्ली कुमारीको उत्तर दूगी-तो न मालूम वह उत्तर सच्चा होगा कि नही होगा इस प्रकारका उसके हृदयमें द्वैधी भाव आनेसे वह चोक्षाशकित बन गई ।

यदि मेरा दिया हुआ उत्तर ठीक नही होगा-तो उस का उत्तर में क्या दूगी-इस प्रकार वह उत्तर विषयक वाञ्छा से युक्त बन गई । मल्ली कुमारी को उत्तर देने पर भी कौन जाने उस में उस की श्रद्धा होगी-या नही होगी इस तरह वह विचिकित्सा-से युक्त बन गई ।

(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एव वुत्ता सकिया कखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था)

આ પ્રમાણે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી વડે સમજાવવામા આવેલી ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા શકાથી યુક્ત થઈ ગઈ, કાક્ષાથી યુક્ત થઇ ગઇ, વિચિકિત્સા (ફળ પ્રાપ્તિ વિશે સદેહ યુક્ત) અને ભેદ (પોતાની માન્યતાનો નાશ) સમાપન્ન થઈ ગઈ મલ્લીકુમારીને જવાબમા હું કોઈ પણ વસ્તુ રજૂ કરીશ તો તે માચી હશે કે કેમ ? આ જાતની મુઝવણથી ચોક્ષાનુ મન શકિત થઇ ગયુ

" જો મારો જવાબ બરોબર નહિ હોય તો બીજો શો જવાબ હું આપીશ ? આ પ્રમાણે તે જવાબના વિશે વાઞ્છાયુક્ત થઈ ગઇ " મલ્લીકુમારીને જવાબ આપ્યા છતા પણ તેને મારા જવાબ ઉપર વિશ્વાસ બેસશે કે કેમ ?" આ રીતે તે વિચિકિત્સા યુક્ત થઇ ગઈ " આ પરિસ્થિતિમા મારે શુ કરવુ

कृत=शोणितलिप्त वस्त्र रुधिरेणैव शोणितलिप्तस्य वस्त्रस्य रुधिरेण धाव्यमानस्य=प्रक्षाल्यमानस्य किञ्चिदपि शोधिः ? नायमर्थः समर्थः=रुधिरलिप्तवस्त्रस्य रुधिरेण कापि शुद्धिर्न भवतीत्यर्थः । चोक्षे ! एवमेव=रुधिरमलिनवस्त्रदृष्टान्तेनैव युष्माकं खलु प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शनशल्येन=अष्टादशपापस्थानसेवनेन नास्ति शुद्धिः=न भवति कथंचिदपि शुद्धि रात्मन इत्यर्थः, यथैव तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य रुधिरेणैव धाव्यमानस्य=प्रक्षाल्यमानस्य नास्ति शुद्धिः । ततः खलु=तत्पश्चात् सा चोक्षा परिव्राजिका मल्लया विदेहराजवरकन्यया एवमुक्ता सति 'सकिया' शङ्किता 'कखिया' काङ्क्षिता=यदि मनसि निश्चार्योत्तरं दास्यामि तत्समीचीनं भविष्यति नवा ?' इति सशययुक्ता। 'यदि मद्विचारितमुत्तरं सम्यग् न भवेत्तर्हि

जहा नामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणं चेव धोवेज्जा अत्थिणं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काई सोही ? नो इणट्ठे समट्ठे एवामेव चोक्खा ! तुब्भेणं पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोव्वमाणस्स) चोक्षे ! जैसे कोई पुरुष रुधिर (खून) से लिप्त हुए वस्त्र को रुधिर (खून) से ही धोवे-तो क्या चोक्षे ! उस रुधिर लिप्त वस्त्र की रुधिर से धोये जाने पर कोई शुद्धि हो सकती है ? । रुधिर से लिप्त वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि होती है-यह बात तो कोई भी समझदार प्राणी नहीं मान सकता है। उसी तरह हे चोक्षे ! प्राणातिपात यावत् मिथ्या दर्शन शल्य के सेवन से-अष्टादश पाप-स्थानों के सेवन से-आप लोगों की आत्मा की भी किसी तरह से शुद्धि नहीं हो सकती है। जैसे उस रुधिर से सने हुए वस्त्र की रुधिर

(चोक्खा ! से जहा नामए केई पुरिसे रूहिरकयं वत्थं रूहिरेणं चेव धोवेज्जा, अत्थिणं चोक्खा ! तस्स रूहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स कोई सोही ? नो इणट्ठे, समट्ठे एवामेव चोक्खा ! तुब्भेणं पाणाइवाएणं जाव मिच्छादसणसल्लेणं नत्थिकाई सोही, जहा तस्स रूहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव धोव्वमाणस्स)

હે ચોક્ષે ! જેમ કોઇ માણસ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રો લોહીથી જ ધોવે તો શુ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રો લોહીથી જ ધોવડાવવામા આવે તો તેની શુદ્ધિ થઇ ગઈ કહેવાય ? આ વાત તો ગમે તે વ્યક્તિ પણ સમજી શકે તેમ છે આ પ્રમાણે હે ચોક્ષે ! પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યના સેવનથી તમારા જેવા લોકો ની શુદ્ધિ કોઇપણ રીતે સભવી શકે તેમ નથી જેમ પેલા લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રની શુદ્ધિ લોહીથી થઇ શકતી જ નથી તેમજ મિથ્યાદર્શન શલ્યના સેવનથી પણ શુદ્ધિ થતી નથી

किमन्यदुत्तर दास्यामी ' त्येवमुत्तरविषयक वाञ्छायुक्ता । ' विइगिच्छिया ' विचिकित्सिता=' अस्मिन्नुत्तरे दत्ते सति किं मल्ल्या अत्र श्रद्धोत्पत्स्यते किं वा नोत्पत्स्यते ' इत्येव विचिकित्सा=सशयः, सजाता यस्या सा विचिकित्सिता, तथा-' भेयसमावण्णा ' भेदसमापन्ना=अत्र भेदो मतेर्भङ्गः-मयाऽधुना किं कर्तव्यमिति निर्णयाभवाद् व्याकुलतारूपस्त समापन्ना समाप्ता, जाताचाप्यभवत् शङ्कितेत्यादि विशेषणचतुष्टयेन चोक्षा परिव्राजिका मल्ल्या समुचित दृष्टान्तेन दृढीकृत मश्न समागातु व्याकुलीजाता, इति भावः मल्ल्याः ' णो सचाएइ ' नो

से धोने पर किसी भी प्रकार की शुद्धि नही होती है । (तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेह रायवर कन्नाए एव वुत्ता समाणा सकिया कखिया विइगिच्छिया भेय समावण्णा जाया यावि होत्था) इस प्रकार विदेह राज की वर कन्या मल्ली कुमारी के द्वारा समझाई गई वह चोक्षा परिव्राजिका शका से युक्त बन गई, काक्षा से युक्त बन गई, विचिकित्सा (फलके प्रति सदेह और भेद (अपने मतव्य का विच्छेद) से समापन्न हो गई । मनसे सोचकर यदि मे मल्ली कुमारीको उत्तर दूगी-तो न मालूम वह उत्तर सच्चा होगा कि नही होगा इस प्रकारका उसके हृदयमें द्वैधी भाव आनेसे वह चोक्षाशकित बन गई ।

यदि मेरा दिया हुआ उत्तर ठीक नही होगा-तो उस का उत्तर मैं क्या दूगी-इस प्रकार वह उत्तर विषयक वाञ्छा से युक्त बन गई । मल्ली कुमारी को उत्तर देने पर भी कौन जाने उस में उस की श्रद्धा होगी-या नही होगी इस तरह वह विचिकित्सा-से युक्त बन गई ।

(तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एव वुत्ता सकिया कखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था)

આ પ્રમાણે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી વડે સમજાવવામા આવેલી ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા શકાથી યુક્ત થઈ ગઈ, કાક્ષાથી યુક્ત થઇ ગઈ, વિચિકિત્સા (ફળ પ્રાપ્તિ વિશે સદેહ યુક્ત) અને ભેદ (પોતાની માન્યતાનો નાશ) સમાપન્ન થઈ ગઇ મલ્લીકુમારીને જવાબમા હું કોઈ પણ વસ્તુ રજૂ કરીશ તો તે સાચી હશે કે કેમ ? આ જાતની મુઝવણથી ચોક્ષાનુ મન શકિત થઇ ગયુ

" જો મારો જવાબ બરોબર નહિ હોય તો બીજો શો જવાબ હું આપીશ ? આ પ્રમાણે તે જવાબના વિશે વાઞ્છાયુક્ત થઈ ગઇ " મલ્લીકુમારીને જવાબ આપ્યા છતા પણ તેને મારા જવાબ ઉપર વિશ્વાસ બેસશે કે કેમ ?" આ રીતે તે વિચિકિત્સા યુક્ત થઇ ગઈ " આ પરિસ્થિતિમા મારે શુ કરવુ

शक्नोति कचिदपि 'पामोक्ख' प्रमोक्षम्=प्रमुच्यते प्रश्नबन्धनादनेनेति-प्रमोक्षः प्रश्नस्य परिहारम्, उत्तरमित्यर्थः 'आइक्खित्तए' आख्यातुम्=कथयितुम्, यदा चोक्खा परिव्राजिका मल्ल्याः प्रश्नस्योत्तर दातुमसमर्था जाता, तदा सा 'तुसिणीया' तूष्णीका=मौनावलम्बिनी भूत्वा 'सचिट्ठइ' सतिष्ठते सस्थिता। ततस्तदन्तर खलु तां चोक्षा मल्ल्याबह्व्यो दासचेटिका =दासपुत्र्यः 'हीलेंति' हिलन्ति-अवमानयन्ति, निन्दन्ति-जात्याद्युद्घाटनेन कुत्सन्ति, खिंसन्ति-दोषकीर्तनेनोपहसन्ति, गर्हन्ते सर्वसमक्ष निन्द्रा कुर्वन्ति, अप्येकिका एकाः काश्चित्-क्रोधयन्ति तस्याः कोपमुद्भावयन्ति, अप्येकिकाः=एकाः काश्चित्-'मुहमक्कडियओ' मुखमर्कटिका =मुखाना तिर्यक्कानि कुर्वन्ति, अप्येकिका'=एकाः काश्चित् 'वग्घा

अब इस समय मुझे क्या करना चाहिये इस तरह का वह निर्णय नही कर सकने के कारण व्याकुल बन जाने से भेद समापन्न बन गई।

(मल्लीए णो सचाएइ किं चि वि पामोक्खा माइक्खित्तए तुसिणीया सचिट्ठइ, तएण चोक्ख मल्लीए बहूओ दास चेडीओ हीलेंति, निंदति, खिंसति गरहति) अतः वह मल्ली कुमारी को कुछ भी प्रमोक्षा प्रश्न का उत्तर-नही दे सकी, किन्तु चुपचाप बैठी रही। जब चोक्षा की ऐसी हालत मल्ली कुमारी की दास चेटियों ने देखी तो वे उसका अपमान रूप हीलना करने लग गई। जाती आदि के उद्घाटन से उस से घृणा रूप निंदा करने लगी। दोषो के कीर्तनसे उस का उपहास रूप खिंसना करने लगीं। सबके समक्ष उसके अवर्ण वादरूप गर्हणा करने लगी (अप्पेगइया हेरूयालंति, अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभंति) इन

જોઈએ ? " આ જાતના વિવેકની શક્તિ પણ તેની નાશ પામી હતી એટલે તે વ્યાકુળ થઈને ભેદ સમાપન્ન બની ગઇ હતી

(मल्लीए णो सचाएइ किंचि वि पामोक्खामाइक्खित्तए तुसिणीया सचिट्ठइ, तएण चोक्ख मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति, निंदति, खिंसति गरहति) એથી મલ્લીકુમારીને તે જવાબમા કઈ પણ કહી શકી નહિ તે સાવ મૂગી થઇને એસી જ રહી મલ્લીકુમારીની દાસ ચેટીઓએ ચોક્ષાની આ પ્રમાણેની સ્થિતિ જોઇ ત્યારે તેઓ તેની અપમાનરૂપ હીલના કરવા લાગી જાતિ વગેરેનુ ઉદ્ઘાટન કરીને તેની ઘૃણા રૂપ નિંદા કરવા લાગી તેના દોષો ને કહેતી ઉપહાસ રૂપ ખિસના કરવા લાગી બધાના સામે તેની અવર્ણવાદ રૂપ ગર્હણ કરવા લાગી

(अप्पेगइया हेरूयालंति, अप्पेगइय मुहमक्कडियाओकरेंति अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभंति)

डीओ' व्याघाटिका=उपहासार्थं शब्दविशेषान् कुर्वन्ति, अप्येकिका एकाः काश्चित् 'तज्जमाणीओ' तर्जयन्त्यः – दुर्वचनतः, 'मम प्रश्नस्योत्तरं देहि, नो चेत् पश्चाद् ज्ञास्यसि ' इत्यादिना भीषयन्त्य इत्यर्थः । निच्छुभति निक्षिपन्ति=निस्सारयन्ति ।

ततस्तदन्तर सा चोक्षा परिव्राजिका मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः दासचेटिकाभिः ' यावत्–हिल्यमाना निन्द्यमाना गर्ह्यमाणा, आशुरुक्षा=शीघ्र क्रोधाविष्टा यावत् 'मिसमिसेमाणी ' मिसमिसन्ती क्रोधानलेन जाज्वल्यमाना मल्ल्या विदेह राजवरकन्यायाः ' पओसमावज्जइ ' प्रद्वेषमापद्यते=परमद्वेषवती जाता । तत सा

में से किसी एक ने उसे क्रोध उद्भावित–किया, किसी एक ने उस के सामने अपना मुख मोड लिया, किसी एक ने उस की हँसी उड़ाने के लिये विशेष शब्दों का प्रयोग किया, किसी एक ने दुर्वचनो से उसे तर्जित किया, किसी एक ने " मेरे प्रश्न का उत्तर दे, नही तो पीछे तुझे मालूम पडेगी " इस तरह कहकर उसे डराया और वहा से निकाल दिया । (तएण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसि मिसे माणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, मिसिय गिण्हइ, गिण्हित्ता कण्णतेउराओ पडिनिक्खमइ) इस तरह विदेह राज कि वरकन्यामल्ली कुमारी की दास चेटियो से अपमानित घृणित, और निन्दित होती हुइ वह चोक्षा परिव्राजिका, क्रोध से लाल हो गई, और मिसमिसाती हुई क्रोध से जाज्वल्यमान होती हुई–वह विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी के ऊपर परम द्वेषवती बन गई ।

તેઓમાથી કોઇકે તેને ક્રોધિત કરી, કોઇએ તેની સામેથી મો ફેરવી લીધુ કોઇએ તેની મશ્કરી કરવા વિશેષ શબ્દોનો પ્રયોગ કર્યો, કોઈએ દુર્વચનોથી તેનો તિરસ્કાર કર્યો, કોઇએ તેને " મારા સવાલનો જવાબ આપ નહિતર તારી બબર લઇ લઈશુ " આ રીતે બીક બતાવી અને ત્યાથી બહાર કાઢી મૂકી
(तएण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी, आसुरुत्ता जाव मिसि मिसे माणी मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, मिसिय गिण्हइ, गिण्हित्ता कण्णतेउराओ पडिनिक्खमइ)
આ રીતે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીની દાસ ચેટીયોથી અપમાનિત, ધૃણિત અને નિંદિત થતી ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા ક્રોધમા લાલચોળ થઈ ગઇ અને ક્રોધમા સળગતી તે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી પ્રત્યે ખૂબ જ ઇર્ષાળુ–દ્વેષ કરનારી થઈ ગઈ

चोक्षा परिव्राजिका 'भिसिय' भृषिका= आसन स्वकीयमितिभाव, गृह्णाति गृहीत्वा 'कण्णतेउराओ' कन्यान्तः पुरात् मल्ल्या भवनात्, पतिनिष्क्रामति= निः सरति, पतिनिष्क्रम्य मिथिलातो निर्गच्छति, निर्गत्य परिव्राजिका सपरिक्षिप्ता पविरलसन्यासिकाभिर्युक्ता, यत्रैव पञ्चालजनपदः=पञ्चालनामको देशोऽस्ति, यत्रैव=यस्मिन् देशे काम्पिल्यपुर नाम नगर, तत्र= तस्मिन् नगरे उपागच्छति, उपागत्यच काम्पिल्यपुरे नगरे बहूना राजेश्वरादीना पुरत. स्वमत यावद्-आख्या पयन्ती प्रज्ञापयन्ती प्ररूपयन्ती विहरति=आस्तेस्म ॥ सू० ३० ॥

मूलम्-तएणं से जियसत्तू अन्नदा कयाइं अंतेउरपरियाल सपरिवुडे एव जाव विहरइ, तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया सप-

---

उस ने उसी समय वहा से अपना आसन उठाया-और उठाकर वह कन्यान्तः पुर से-मल्ली कुमारी के भवन से बाहिर निकल आई। (पडि निक्खमित्ता) बाहिर निकलकर (मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्ग च्छित्ता परिव्वाइया सपरिवुडा जेणेव पचाल जणवए, जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कपिल्लपुरे बहूण राईसर० जाव परूवेमाणी विहरइ) फिर वह मिथिला नगरी से चल दी।

चलकर परिव्राजिकाओं को साथ में लिये हुए जहा पाचाल देश और उसमें जहा काम्पिल्य नगर था वहां आई। वहा आकर वह अपने मत की अनेक राश्वजेर आदिको के समक्ष आख्यापना और प्ररूपणाक रती हुई रहने लगी ॥ सू० ३० ॥

તેણે તરત જ પોતાનુ આસન ત્યાથી ઉપાડી લીધુ અને કન્યાન્ત પુરથી એટલે કે મલ્લીકુમારીના મહેલથી તે બહાર નીકળી ગઈ (પડિનિક્ખમિત્તા) બહાર નીકળીને

(મહિલાઓ નિગ્ગચ્છઇ નિગ્ગચ્છિત્તા પરિવ્વાઇયા સપરિવુડા જેણેવ પચાલ જણવએ, જેણેવ કપિલ્લપુરે નયરે તેણેવ ઉવાગચ્છઇ ઉવાગચ્છિત્તા કપિલ્લપુરે બહૂણ રાઈ સર૦ જાવ પરૂવેમાણી વિહરઇ)

તે મિથિલા નગરીમાથી ચાલતી થઇ

પરિવ્રાજિકાઓની સાથે તે ચાલતી ચાલતી રો જ્યા પાચાલ દેશ અને તેમા પણ જ્યા કાપિલ્યનગર હતુ ત્યા આવી ત્યા આવીને તે પોતાના ધર્મની ઘણા રાજેશ્વર વગેરેની સામે આખ્યાપના, પ્રજ્ઞાપના અને પ્રરૂપણા કરતા રહેવા લાગી ॥ સૂત્ર "૩૦" ॥

रिवुडा जेणेव जितसत्तूस्स रण्णो भवणे जेणेव जितसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जियसत्तु जएण विजएण वद्धावेइ। तएण से जियसत्तू चोक्ख परिव्वाइय एज्जमाण पासइ पासित्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता चोक्ख सक्कारेइ, सक्कारित्ता आसणेणं उवणिमतेइ, तएणं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निसीयइ, जियसत्तुं राय रज्जे य जाव अतेउरे य कुसलोदत पुच्छइ, तएण सा चोक्खा जियसत्तस्स रन्नो दाणधम्म च जाव विहरइ, तएणं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहसि जाव विम्हिए चोक्ख एव वयासी–तुमंण देवाणुप्पिया! बहूणि गामागार० जाव अडसि, बहूणि य राईसर० गिहाइं अणुपविसासि, ते अत्थियाइ ते कस्सवि रन्नो वा जाव कहिचि एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह अवरोहे ? तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसिं अवहासिय करेइ, करित्ता एव वयासी–एव च सरिसए णं तुम देवाणुप्पिया ! तस्स अगडदद्दुरस्स ?, केण देवाणुप्पिए से अगडदद्दुरे ? जियस ! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया तथेव बुड्ढे अण्णं अगड वा तलाग वा सर वा सागर वा अपासमाणे चेव मण्णइ-अय चेव अगडे वा जाव सागरे वा। तएण त कूव अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए, तएणं से कूवदद्दुरे त सामुद्ददद्दुर एव वयासी–से केसणं तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ? तएणं से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुर एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया !

अहं सामुद्दए दद्दुरे, तएण से कूवदद्दुरे तं सामुद्दय दद्दुर एव वयासी-के महलए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, तएणं से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुरं एव वयासी-महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे ! तएणं से दद्दुरे पाएण लीह कड्ढेइ, कड्ढित्ता एव वयासी —एमहालएणं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, णो इणट्ठे समट्ठे, महालएणं से समुद्दे ! तएणं से कूवदद्दुरे पुरमत्थिमिलाओ तीराओ उप्फिडित्ता ण गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी-ए महालएणं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, णो इणट्ठे समट्ठे, तहेव एवामेव तुमपि जियसत्तू अन्नेसि वहूण राईसर जाव सत्थवाहपभिईण भज्ज वा भगिणीं वा धूय वा सुण्ह वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेवणं ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स, त एव खलु जियस मिहिलाए नयरीये कुंभगस्स धूया पभावतीये अत्तया मल्ली नामति रूवेण य जुव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देयकन्ना या जारिसिया मल्ली, मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए छिण्णस्स वि पायगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयसहस्स तमपि कल न अग्घइ त्तिकट्टु जामेय दिस पाउब्भूया तामेव दिसपडिगया, तएणं से जियसत्तू परिव्वाइया जणियहासे दूयं सद्दायेइ, सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३१ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततस्तदन्तर स जितशत्रु अन्यदा कदाचित्

' तएण से जियसत्तू अन्नया कयाइ ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण)इसके बाद(से जियसत्तू,वह जिनशत्रु (अन्नया कयाइ)

(तएण से जियसत्तू अन्नया कयाइ। इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएण) त्यार બાદ (से जियसत्तू) જિતશત्रु (अन्नया कयाइ) કોઈ

=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये ' अंतेउरपरियालसंपरिवुडे ' अन्तः पुरपरिवार संपरि वृतः=अन्तः पुरस्य परिवारेण=स्त्रीजनैःसपरिवृत युक्त , एव यावद् विहरति-तिष्ठति । ' तए ' ततः=तदा, खलु सा चोक्खा परिव्राजिका परिवृता=स्वशिष्य-सन्यासिका सहित यत्रैव जितशत्रो राज्ञो भवन=प्रासादः, यत्रैव=यस्मिन्नेव स्थाने जितशत्रु', तत्रैवोपागच्छति, जितशत्रु जयेन-विजयेन=जय विजय शब्द कीर्तनेन ' वद्धावेइ ' वर्धयति । तत' खलु स जितशत्रुश्चोक्षा परिव्राजिकाम् एजमानाम्=आगच्छती पश्यती, दृष्ट्वा सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय चोक्षा सत्करोति, सत्कृत्य आसनेन ' उवणिमतेइ ' उपनिमन्त्रयति=उपवेशनार्थं प्रार्थ-

---

किसी एक दिन (अंतेउरपरियालसंपरिवुडे) अपने अन्तः पुर परिवार के साथ (एव जाव विहरइ) बैठा हुआ था (तएण सा चोक्खा परिव्वा-इया) इतने में वह चोक्षा परिव्राजिकाओंके साथ२ (जेणेव जितसत्तूस्स रण्णो भवणे जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिय-सत्तु जएण विजएण वद्धावेइ) जहा जितशत्रु राजा का महल था और जहा वे जितशत्रु राजा विराजमान थे वहा आई आकर उसने उन्हें जय विजय शब्दोंसे धन्यवाद दिया-(तएण से जियसत्तू चोक्ख परिव्वाइय एज्जमाण पासइ, पासित्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्टित्ता चोक्ख सक्कारेइ, सक्कारित्ता आसणेण उवणिमतेइ) जब चोक्षापरिव्राजिका को जितशत्रु राजाने आते हुए देखा था-तो वह देखते ही अपने सिंहा सन से उठ बैठा था-और उठकर उसने चोक्षा परिव्राजिका का आदर सत्कार किया था। आदर सत्कार करके उसने उसे आसन पर

એક દિવસે (अंतेउरपरियाल संपरिवुडे) પોતાના રણવાસના પરિવારની સાથે (एव जाव विहरइ) બેઠો હતો (तएण सा चोक्खा परिवाइया) તેટલામા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાઓની સાથે
(जेणेव जितसत्तूस्स रण्णो भवणे जेणेव जितसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जियसत्तू जएण विजएण वद्धावेइ)

જ્યા જિતશત્રુ રાજાનો મહેલ હતો અને જ્યા જિતશત્રુ રાજા બેઠા હતા ત્યા ગઇ ત્યા પહોચીને તેણે રાજાને જય વિજય શબ્દોથી વધાવ્યા

(तएण से जियसत्तू चोक्ख परिव्वाइय एज्जमाण पासइ, पासित्ता सीहा सणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता चोक्ख सक्कारेइ, सक्कारित्ता आसणेण उवणिमतेइ)

જિતશત્રુ રાજાએ જ્યારે ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને આવતી જોઇ ત્યારે તેઓ પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઉભા થઇને ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાનો તેઓએ આદર સત્કાર કર્યો આદર સત્કાર કરીને રાજાએ તેને આસન ઉપર બેસવા માટે કહ્યુ

यति। तएण चोक्खा 'उदगपरिफासियाए, उदकपरिस्पृष्टायां=जलप्रक्षेपेण सिक्तायां यावत्-दर्भोपरि प्रत्यास्तृतायां 'भिसियाए' भृषिकायां निषीदति=उपविशति। जितशत्रु राजानं राज्ये च यावदन्तः पुरे च कुशलोदन्तं कुशलसमाचारं पृच्छति, ततः खलु सा चोक्षा जितशत्रो राज्ञः पुरतो दानधर्मं च यावद्-शौचधर्मादिकमाख्यापयन्ती प्रज्ञापयन्ती प्ररूपयन्ती विहरति=आस्ते स्म। ततस्तदनन्तरं खलु स जितशत्रुः, आत्मानः स्वस्य, 'ओरोहसि' अवरोधे=अन्तः पुरे यावद् विस्मितः= आश्चर्ययुक्तः सन् चोक्षाम् एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिये! त्वं खलु-बहूनि, ग्रामाकर०यावत्=ग्रामाकरखेटकर्वटादीनि अटसि=गच्छसि बहूनि

बैठ जाने के लिये कहा-। (तएण सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निसीयइ) अतः वह चोक्षा परिव्राजिका जलसे सिञ्चित हुए यावत् आसन पर बैठ गई।

(जियसत्तू राय रज्जे य जाव अंतेउरेय कुसलोदंत पुच्छइ, तएण सा चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाणधम्मंच जाव विहरइ) बैठने के बाद उसने जितशत्रु राजा से राज्य एवं अन्त. पुर की कुशलवार्ता पूछी बाद में उसने जितशत्रु राजा के समक्ष दान धर्म शौच धर्म आदिका कथन किया, प्ररूपणा किया प्रज्ञापन किया, (तएण से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वयासी) इसके बाद उस जितशत्रू राजा ने अपने अन्तः पुर में विस्मित होकर उस चोक्षा परिव्राजिका से इस प्रकार कहा-(तुमण देवाणुप्पिया! बहूणि गामागर० जाव अडसि बहूणि य राईसर० गिहाइं अणुपविससि) हे देवाणुप्रियों! तुम अनेक

(तएण सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निसीयइ)
ચોક્ષા પરિવ્રાજીકા પાણી છાંટેલા આસન ઉપર બેસી ગઇ

(जियसत्तूराय रज्जे य जाव अंते उरेय कुसलोदंत पुच्छइ तएण चोक्खा जियसत्तूस्स रण्णो दाणधम्मं च जाव विहरइ)

ત્યાર બાદ તેણે રાજાને રાજ્ય તેમજ રણવાસની કુશળ વાર્તા પૂછી અને પરિવ્રાજીકાએ આ બધું કરીને જિતશત્રુ રાજાની સામે દાનધર્મ, શૌચધર્મ વગેરેનું કથન કર્યું, પ્રરૂપણ કર્યું અને પ્રજ્ઞાપન કર્યું

(तएण से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वयासी)

રણવાસમાં બેઠેલા રાજા જીતશત્રુએ તેની વાત સાંભળીને વિસ્મય પામતા પરિવ્રાજીકાને કહ્યું કે—

(तुमणं देवाणुप्पिया! बहूणि गामागर० जाव अडसि बहूणि य राईसर० गिहाइं अणुपविससि)

च ' राईसर०गिहाइ ' राजेश्वरादीना गृहाणि अनुप्रविशसि, तत्=तस्मात् कथय-अस्ति चापि, 'ते ' त्वया कस्यापि राज्ञो वा यावत्- ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वः, यादृशः खलु अय ममावरोध ? अन्तःपुरम् ततस्तदनन्तर खलु सा चोक्षा परिव्राजिका जितशत्रुमीपदपहसित करोति, कृत्वा एव वयासी ।

हे देवानुप्रिय ! एव च सदृशः खलु त्व तस्य 'अगडदद्दुरस्स ' अवटदर्दुरस्य =कूपमण्डूकस्य । चोक्षाया वचन श्रुत्वा जितशत्रुश्चोक्षा पृच्छति-' केण ' इत्यादि । कः खलु हे देवानुप्रिये ! सोऽवटदर्दुरः=कूपमण्डूकः ?, चोक्षा परिव्राजिका कथयति-तद् यथानामकम् = यथानामकमितिपद दृष्टान्त प्रदर्शयामि तावदित्यर्थ.

ग्राम, आकर, खेट कर्वट आदिस्थानो मे जाती रहती हो, तथा अनेक राजेश्वर आदि जनों के गृहों में प्रवेश भी करती रहती हो (त अत्थि याइ ते कस्स वि रन्नो वा जाव कहिं चि एरिसए आरोहे दिट्ठिपुव्वे जारिसए ण इमे मह अवरोहे) तो कहो तुमनेकिसी राजा आदि का ऐसा अन्तः पुरपहिले कभी कहिं देखा हे ? कि जैसा मेरा यह अन्त पुर हैं। (तएण सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसि अवहासेय करेइ, करित्ता एव वयासी) इस प्रकार सुनने के बाद उस चोक्षा परिव्राजिकाने पहिलेतो राजा को कुछ हँसाया बाद में हंसाते हुए उनसे ऐसा कहा-एव च सरिसए ण तुम देवाणुप्पिया ! तस्स अगडदद्दुरस्स) हे देवानुप्रिय ! तुम तो उस कूपमडूक के समान हो ऐसी चोक्षा की बात सुनकर बीच मे ही राजा ने उससे कहा (केण देवाणुप्पिए से अगडदद्दुरे ? देवानु-

---

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે ઘણા ગ્રામ,આકર, ખેટકર્વટ વગેરે સ્થાનોમા અવર –જવર કરતા રહો છો તેમજ ઘણા રાજાઓ વગેરેના મહેલોમા પણ જાઓ છો

त अत्थियाइ ते कस्स वि र नो वा, जाव कहिं चि एरिसए आरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए ण इमे मह अवरोहे)

તો બતાવો કે મ રા જેવો રણવાસ કોઇપણ રાજા વગેરેનો તમે જોયો છે

(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसिं अवहासेय करेइ, एव करित्ता वयासी)

આ રીતે સાભળીને ચોક્ષા પરિવ્રાજીકાએ પહેલા તો રાજાને થોડો હસાવ્યો ત્યાર પછી હસાવતા તેમને કહ્યુ કે-

(एव च सरिसए ण तुम देवाणुप्पिया ! तस्स अगडद्दद्दुरस्स)

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે તો પેલા કૂવાના દેડકા જેવા છો ! ચોક્ષાની આ વાત સાભળીને રાજાએ વચ્ચેથી જ તેને કહ્યુ કે (केण देवाणुप्पिए से अगड

यथा-एकः कूपमण्डूकः स्यात्=आसीत्, स खलु 'तत्थ' तत्र=तस्मिन् कूपे जातः, तत्रैव कूपे एव 'वुड्ढे' वृद्धः=वृद्धिंगतः, अन्यम्-'आगड' अवट=कूप वा, 'तलाग' तडाग=कमलयुक्तागाधजलाशय वा, 'दह' ह्रद=प्रसिद्ध, 'सर' सरः=सरोवर वा, सागर वा, अपश्यन्नेव मन्यते-अयमेवावटो वा यावत् सागरो वा। एतस्मात् कूपान्महाजलस्थानमन्यन्नास्तीत्येव मनसि जानातीति भाव। ततस्तदनन्तर खलु स कूपमति, 'अण्णे' अन्यः सामुद्रकः=समुद्रे जातः 'ददुरे' दर्दुरः=मण्डूकः, इव्यमागतः=सहजगत्या समागतः। ततः खलु स कूपदर्दुरः=कूपमण्डूक त 'सामुद्ददद्दुर' सामुद्रनिवासिन मण्डूकम् एव=वक्ष्यमाण मकारेण अवादीत्-यथा क एप खलु त्व हे देवानुप्रिय! 'कत्तो' कुतः=कस्मात्

प्रिय! वह कूपमण्डूक कैसा होता है! (जियसत्तू! से जहानामए अगडददुरे सिया से ण तत्थ जाए तथेव वुड्ढे अन्नअगडे वा तडाग वा दह वा सर वा सागर वा अपासमाणे चेव मण्णइ अय चेव अगडे वा जाव सागरे वा) इस प्रकार जितशत्रु राजा की बात सुनकर चोक्षा परिव्राजिका ने उससे कहा-जितशत्रो सुनो मैं तुम्हें समझाती हूँ-जसे कोई एक कूपका मेंढक कि जो उसी मे उत्पन्न हुआ हो और उसी मे पलपुष कर बढा हुआ हो वह जैसे अपने कुए के सिवाय और किसी-कुए को, तडाग कमलयुक्त अगाध-सरोवर को द्रह को जलाशय विशेष को, अथवा समुद्रको कभी नही देखता हुआ ऐसा ही मानता है कि यही मेरा कुआ और दूसरा कुआ है? यावत् सागर है।

इस कुए के सिवाय और दुसरा कोई बड़ा भारी जलस्थान कहीं पर नही है (तएण त कूव अण्णे सामुद्दए ददुरे इव्वमागए-तएण

ददुरे?) હે દેવાનુપ્રિય! કૂવાનો દેડકો કેવો હોય છે?

(जियसत्तू! से जहानामए अगडददुरे सिया से ण तत्थ जाए तथेव वुड्ढे अन्न अगडे वा तडागं वा दह वा सर वा सागर वा अपासमाणे चेव मण्णइ अय चेव अगडेवा जाव सागरे वा)

આ પ્રમાણે જીતશત્રુ રાજાની વાત સાંભળીને ચોક્ષા પરિવ્રાજીકાએ તેને કહ્યું કે જીતશત્રો! સાંભળો તમને હું બધી વાત સમજાવું છું જેમ કોઇ એક કૂવાનો દેડકો કે જે કૂવામા તે જન્મ્યો છે અને તેજ ત્યાજ ઉછર્યો છે તે જેમ પોતાના કૂવા સિવાય બીજા કોઇપણ કૂવા, તડાગ-કમળોવાળુ અગાધ સરોવર, દ્રહ જલાશય વિશેષ અને સમ[illegible]ુ વખત ન જોવાથી જેમ જ માને છે કે આ મારો [illegible]

स्थानाद् वा इह हव्यमागत ?, ततः खलु स सामुद्रको दर्दुरः त कूपदर्दुरमेव= वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–हे देवानुप्रिय ! अह सामुद्रको दर्दुरः=समुद्रनिवासी मण्डूकोऽस्मि । तत. खलु स कूप दर्दुरस्त सामुद्र दर्दुरमेवमवादीत्–' के महालए' कियन्महालयः=कियान विशालः खलु हे देवाणुप्रिय ! स समुद्र ?, ततस्तदनन्तर खलु स सामुद्रो दर्दुरस्त कूपदर्दुरमेवमवादीत् महालयः=अति विस्तीर्ण',खलु देवा-

से कूवददुरे त सामुद्ददद्दुर एव वयासी) इस प्रकार की मान्यता वाले उस मेढक के कुएपर उसी समय में कोइ दूसरा समुद्र मे रहने वाला मेंढक आगया-उसे आया हुआ देखकर कूप के मेढक ने उस समुद्र निवासी मेढक से कहा-(से केसण तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?) हे देवानुप्रिय ! यह तुम कौन हो-इस समय कहा से आरहे हो ? (तएण से सामुद्दे ददुरे त कूवददुर एव वयासी प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी मेंढक ने उस कूप मेढक से ऐसा कहा (एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दए ददुरे) हे देवानुप्रिय ! मे समुद्र का रहने वाला मेढक हूँ (तएण से कूव ददुरे त सामुद्दय ददुर एव वयासी) उस के ऐसे वचन सुन कर कूप मेंढक ने उस समुद्र के निवासी ददुरे से इस प्रकार पूछा (के महालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?) हे देवानुप्रिय वह समुद्र कितना बड़ा हैं ? (तएण से सामुद्दए ददुरे त कूवददुर एव वयासी) प्रत्युत्तर मे उस समुद्र निवासी दर्दुर ने उस से ऐसा कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया महालएण

સકુચિત વિચાર ધરાવતા કૂવાના દેડકાની પાસે બીજો કોઇ સમુદ્રમા રહેનારો દેડકો આવ્યો તેને આવેલો જોઇને કૂવાના દેડકાએ સમુદ્રના દેડકાને કહ્યુ— (से केसण तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?) હે દેવાનુપ્રિય ? તમે કોણ છો ? અત્યારે તમે કયાથી આવો છો ? (तएण से सामुद्दे ददुरे त कूवददुर एव वयासी) જવાબમા તે સમુદ્રમા રહેનારા દેડકાએ કૂવાના દેડકાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે (एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दए ददुरे) હે દેવાનુપ્રિય ! હુ સમુદ્રમા રહેનારો દેડકો છુ (तएण से कूवददुरे त सामुद्दय ददुर एव वयासी) તેની આ પ્રમાણે વાત સાભળીને કૂવાના દેડકાએ તે સમુદ્રમા રહેનારા દેડકાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે (के महालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?) હે દેવાનુપ્રિય ? તે સમુદ્ર કેટલો મોટો છે ? (तएण से सामुद्दए ददुरे त कूवददुर एव वयासी) જવાબમા સમુદ્રના દેડકાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુકે—

(एव खलु देवाणुप्पिया, महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे, तएण से ददुरे

यथा-एकः कूपमण्डूकः स्यात्=आसीत्, स खलु 'तत्थ' तत्र=तस्मिन् कूपे जातः, तत्रैव कूपे एव 'वुड्ढे' वृद्धः=वृद्धिंगतः, अन्यम्-'आगड' अवट=कूप वा, 'तलाग' तडाग=कमलयुक्तागाधजलाशय वा, 'दह' ह्रद=प्रसिद्ध 'सर' सरः=सरोवर वा, सागर वा, अपश्यन्नेव मन्यते-अयमेवावटो वा यावत् सागरो वा। एतस्मात् कूपान्महाजलस्थानमन्यन्नास्तीत्येव मनसि जानातीति भाव। ततस्तदनन्तर खलु त कूपमति, 'अण्णे' अन्यः सामुद्रकः=समुद्रे जातः 'ददुरे' दर्दुर=मण्डूकः, इव्यमागतः=सहजगत्या समागतः। ततः खलु स कूपदर्दुरः=कूपमण्डूक त 'सामुददद्दुर' सामुद्रनिवासिन मण्डूकम् एव=वक्ष्यमाण प्रकारेण अवादीत्-यथा क एप खलु त्व हे देवानुप्रिय! 'कत्तो' कुतः=कस्मात्

प्रिय! वह कूपमडूक कैसा होता है! (जियसत्तू! से जहानामए अगडददुरे सिया से ण तत्थ जाए तथेव वुड्ढे अन्नअगडे वा तडाग वा दह वा सर वा सागर वा अपासमाणे चेव मण्णइ अय चेव अगडे वा जाव सागरे वा) इस प्रकार जितशत्रु राजा की बात सुनकर चोक्षा परिव्राजिका ने उससे कहा-जितशत्रो सुनो मैं तुम्हें समझाती हूँ-जैसे कोई एक कूपका मेंढक कि जो उसी मे उत्पन्न हुआ हो और उसी मे पलपुष कर बढा हुआ हो यह जैसे अपने कुए के सिवाय और किसी-कुए को, तडाग कमलयुक्त अगाध-सरोवर को द्रह को जलाशय विशेष को, अथवा समुद्रको कभी नही देखता हुआ ऐसा ही मानता है कि यही मेरा कुआ और दूसरा कुआ है? यावत् सागर है।

इस कुए के सिवाय और दुसरा कोई बड़ा भारी जलस्थान कहीं पर नही हैं (तएण त कूव अण्णे सामुद्दए ददुरे हव्वमागए-तएण

ददुरे?) હે દેવાનુપ્રિય! કૂવાનો દેડકો કેવો હોય છે?

(जियसत्तू! से जहानामए अगडददुरे सिया से ण तत्थ जाए तथेव वुड्ढे अन्न अगड वा तडागं वा दह वा सर वा सागर वा अपासमाणे चेव मण्णइ अय चेव अगडेवा जाव सागरे वा)

આ પ્રમાણે જીતશત્રુ રાજાની વાત સાંભળીને ચોક્ષા પરિવ્રાજીકાએ તેને કહ્યું કે જીતશત્રો! સાંભળો તમને હું બધી વાત સમજાવું છું જેમ કોઇ એક કૂવાનો દેડકો કે જે કૂવામા તે જન્મ્યો છે અને તેજ ત્યાજ ઉછર્યો છે તે જેમ પોતાના કૂવા સિવાય બીજા કોઇપણ કૂવા, તડાગ-કમળોવાળુ અગાધ સરોવર, દ્રહ જલાશય વિશેષ અને સમુદ્રને કોઇપણ વખત ન જોનાથી એમ જ માને છે કે આ મારો કૂવો જ બીજો કૂવો છે યાવત્ સાગર છે

આ મારા કૂવા સિવાય બીજુ કોઇ મોટુ સરોવર કે જળસ્થાન જગતમા નથી (तएण त कूव अण्णे सामुद्दए ददुरे हव्वमागए) આ પ્રમાણે

स्थानाद् वा इह हव्यमागत ?, ततः खलु स सामुद्रको दर्दुरः त कूपदर्दुरमेव= वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–हे देवानुप्रिय ! अह सामुद्रको दर्दुरः=समुद्रनिवासी मण्डूकोऽस्मि । तत. खलु स कूप दर्दुरस्त सामुद्र दर्दुरमेवमवादीत्–' के महालए' कियन्महालयः=कियान विशालः खलु हे देवाणुप्रिय ! स समुद्र ?, ततस्तदनन्तर खलु स सामुद्रो दर्दुरस्त कूपदर्दुरमेवमवादीत् महालयः=अति विस्तीर्ण',खलु देवा-

से कूवददुरे त सामुद्ददद्दुर एव वयासी) इस प्रकार की मान्यता वाले उस मेढक के कुएपर उसी समय में कोइ दूसरा समुद्र मे रहने वाला मेंढक आगया–उसे आया हुआ देखकर कूप के मेढक ने उस समुद्र निवासी मेढक से कहा–(से केसण तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?) हे देवानुप्रिय ! यह तुम कौन हो–इस समय कहां से आरहे हो ? (तएण से सामुद्दे ददुरे त कूवददुर एव वयासी प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी मेंढक ने उस कूप मेढक से ऐसा कहा (एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दए ददुरे) हे देवानुप्रिय ! मे समुद्र का रहने वाला मेंढक हूँ (तएण से कूव ददुरे त सामुद्दय ददुर एव वयासी) उस के ऐसे वचन सुन कर कूप मेंढक ने उस समुद्र के निवासी ददुरे से इस प्रकार पूछा (के महालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?) हे देवानुप्रिय वह समुद्र कितना बड़ा है ? (तएण से सामुद्दए ददुरे त कूवददुर एव वयासी) प्रत्युत्तर मे उस समुद्र निवासी दर्दुर ने उस से ऐसा कहा–(एव खलु देवाणुप्पिया महालएण

સકુચિત વિચાર ધરાવતા કૂવાના દેડકાની પાસે બીજો કોઇ સમુદ્રમા રહેનારો દેડકો આવ્યો તેને આવેલો જોઇને કૂવાના દેડકાએ સમુદ્રના દેડકાને કહ્યુ— (से केसण तुम देवाणुप्पिया! कत्तो वा इह हव्वमागए?) હે દેવાનુપ્રિય ? તમે કોણ છો ? અત્યારે તમે કયાથી આવો છો ? (तएण से सामुद्दे ददुरे त कूवददुर एव वयासी) જવાબમા તે સમુદ્રમા રહેનારા દેડકાએ કૂવાના દેડકાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે (एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दए ददुरे) હે દેવાનુપ્રિય ! હુ સમુદ્રમા રહેનારો દેડકો છુ (तएण से कूवददुरे त सामुद्दय ददुर एव वयासी) તેની આ પ્રમાણે વાત સાભળીને કૂવાના દેડકાએ તે સમુદ્રમા રહેનારા દેડકાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે (के महालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?) હે દેવાનુપ્રિય ? તે સમુદ્ર કેટલો મોટો છે ? (तएण से सामुद्दए ददुरे त कूवददुर एव वयासी) જવાબમા સમુદ્રના દેડકાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુકે—

(एव खलु देवाणुप्पिया, महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे, तएण से ददुरे

नुप्रिय ! समुद्रः, ततस्तदनन्तर खलु स दर्दुरः=कूपमण्डूक, पादेन रेखा कर्षति, कृष्ट्वा, एवमवादीत्-इयन्महालयः=एतावान विस्तीर्णः खलु हे देवानुप्रिय ! स समुद्रः ?, तदा समुद्रमण्डूक आह-' नायमर्थः समर्थः ' इति अय रेखया निर्दिष्टो विस्तारः समुद्रविस्तार बोधयितु न शक्तइत्यर्थः । उक्तार्थे हेतुमाह-' महालय खलु स समुद्र ' खलु=निश्चेन स समुद्रो महालयोऽति विस्तीर्णः समुद्रस्य महत्त्व न केनापि निर्देष्टु शक्यत इतिभावः । ततस्तदनन्तर ख स कूपदर्दुर. पौरस्त्यात् =अग्रवर्तिनः, तीरादुत्पत्य=कूर्दयित्वा खलु गच्छति, = कूपस्य द्वितीयतीरमिति भावः । गत्वा एवमवादीत्-इयन्महालय =एतावान्विशाल. खलु हे देवानुप्रिय !

देवाणुप्पिया ! समुद्दे, तण्ण से ददुरे पाएण लीह कड्ढेइ, कड्ढित्ता एव वयासी, ए महालएण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे महालएण से समुद्दे) हे देवानुप्रिय ! वह समुद्र तो बहुत बड़ा है । इस बात को सुनकर उस कूप मेढक ने अपने पैर से एक रेखा खेची और खेंचकर बोला हे देवानुप्रिय ! वह समुद्र इतना भारी विशा ल है । प्रत्युत्तर मे उस समुद्रवासी मेंढ़क ने उस कूप मेढक से कहा- नहीं वह इतना बड़ा नहीं है-वह तो इस से भी अधिक बड़ा है अर्थात् रेखा से निर्दिष्ट जो विस्तार है वह समुद्र के विस्तार को बतलाने में समर्थ नही हो सकता है-उस का विस्तार तो क्या कहे-बहुत ही अधिक है । (तण्ण से कूवददुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता ण गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी ए महालएण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे) समुद्रवासी मेंढक की बात सुनकर वह कूप मेंढ़क अपने अग्रवर्ती तीर से कूए के दूसरे तीर पर उछल गया-वहा

पाएण लीह कड्ढेइ, कड्ढित्ता एव वयासी ए महालएण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे महालएण से समुद्दे)

હે દેવાનુપ્રિય ! સમુદ્ર તો બહુ વિશાળ છે

આ વાત સાભળીને કૂવાના દેડકાએ પોતાના પગથી એક લીટી દોરી અને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે સમુદ્ર આટલો વિશાળ છે ? ત્યારે જવાબમા સમુદ્રના દેડકાએ કહ્યુ કે નહિ, તે આટલો મોટો નથી તે તો એના કરતા પણ વિશાળ છે એટલે કે લીટી દોરીને જે વિસ્તાર બતાવવામા આવ્યો છે તે સમુદ્રની વિશળતાને અકિત કરવામા અશક્તિમાન છે તેનો વિસ્તાર તો ખૂબ જ વિશાળ છે

(तण्ण से कूवददुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता ण गच्छइ गच्छित्ता एव वयासी, ए महालएण देवाणुप्पिया ! समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे)

स समुद्रः ?, एव कूपमण्डूकस्य वचः श्रुत्वा समुद्रमण्डूकः पुनराह–' नायमर्थः समर्थः, इति दर्शनादेव समुद्रस्य महत्त्व ज्ञात भवति ननु तत् कथमपि निर्देष्टुं वक्तुं च शक्य केनापीति भावः। तथैव=यथा स कूपमण्डूकस्तद्वदेव, एवमेव = उक्त प्रकारेणैव, त्वमपि हे जितशत्रो ! अन्येषा बहूना राजेश्वर–यावत् सार्थवाहप्रभृतीना भार्या वा भागिनी वा दुहितर वा स्नुषा वा अपश्यन् जानासि–यादृश ममैव खलु अवरोधः =अन्तःपुर, तादृश नो अन्यस्य।

जाकर कहने लगा–हे देवानुप्रिय ! तुम्हारे द्वारा निर्दिष्ट वह समुद्र क्या इतना बडा है ? इस प्रकार कूप मेंढक के वचन सुन कर उस सामुद्रिक मेंढक ने कहा–

भाई क्या बतलावें देखने से ही उस की महत्ता ज्ञात हो सकती है। यह कहने की और निर्दिष्ट करने की बात नही हैं। उस का निर्देश और कथन तो कोई कर ही नहीं सकता है। (तहेव एवामेव तुमपि जियसत्तू ! अन्नेसिं बहूण राईसर जाव सत्थवाह पभिईण भज्ज वा भगिणीं वा धूय वा सुण्ह वा अपासमाणे जाणेसि–जारिसए मम चेव-ण ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स) इसी तरह हे जितशत्रो ! तुमने भी कभी और किसी राजेश्वर आदि सार्थवाह प्रभृतियो की भार्या को, भगिनी को, दुहिता को, स्नुषा को देखा नही है–इसीलिये ऐसा मान रहे हो कि जैसा अन्तः पुर हमारा हैं–वैसा और किसी का कही पर

સમુદ્રમા રહેનારા દેડકાની વાત સાભળીને તે કૂવાનો દેડકો પોતે જ્યા બેઠો હતો તે કૂવાના કિનારા ઉપરથી કૂવાના બીજા કિનારા ઉપર કૂદી ગયો અને ત્યા જઈને કહેવા લાગ્યો કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જે સમુદ્રની વાત કરો છો તે શુ આટલો બધો છે ? આ રીતે કૂવાના દેડકાની વાત સાભળીને સમુદ્રના દેડકાએ કહ્યુ—

ભાઇ શુ કહીએ ? સમુદ્રને જોવાથી જ તેની વિશળતાનુ જ્ઞાન થઈ શકે તેમ છે મુખેથી કહેવાની અને લીટીઓ વગેરેથી નિર્દેષ તો થઇ શકે તેમજ બ્યાતું નથી

(तहेव एवामेव तुमपि जियसत्तू ! अन्नेसिं बहूण राई सरजाव सत्थवाह पभिईण भज्जवा भगिणी वा धूय वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेवण ओराहे तारिसए णो अण्णस्स)

આ પ્રમાણે જ હે જિતશત્રો ! તમે પણ કોઇ દિવસ બીજા કોઈ રાજેશ્વર વગેરે તેમજ સાર્થવાહ વગેરેની સ્ત્રીઓને, બહેનને, દુહિતાને, સ્નુષા (પુત્રની વહુ) ને જોઇ નથી એટલે જ તમે આમ માનો છો કે મારા જેવો રણવાસ બીજે કયાય હોય જ નહિ,

नुप्रिय ! समुद्रः, ततस्तदनन्तरं खलु स दर्दुरः=कूपमण्डूक, पादेन रेखा कर्षति, कृत्वा, एवमवादीत्-इयन्महालयः=एतावान् विस्तीर्णः खलु हे देवानुप्रिय ! स समुद्रः ?, तदा समुद्रमण्डूक आह-' नायमर्थः समर्थः ' इति अय रेखया निर्दिष्टो विस्तारः समुद्रविस्तार बोधयितु न शक्तइत्यर्थः। उक्तार्थे हेतुमाह-' महालय खलु स समुद्र ' खलु=निश्चेन स समुद्रो महालयोऽति विस्तीर्णः समुद्रस्य महत्त्व न केनापि निर्देष्टु शक्यत इतिभाव. । ततस्तदनन्तर ख स कूपदर्दुरः पौरस्त्यात् =अग्रवर्तिनः, तीरादुत्पत्य=कूर्दयित्वा खलु गच्छति, = कूपस्य द्वितीयतीरमिति भावः । गत्वा एवमवादीत्-इयन्महालय =एतावान्विशाल. खलु हे देवानुप्रिय !

देवाणुप्पिया ! समुद्दे, तएण से ददुरे पाएण लीह कड्ढेइ, कड्ढित्ता एव वयासी, ए महालएण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे महालएण से समुद्दे) हे देवानुप्रिय ! वह समुद्र तो बहुत बड़ा है। इस बात को सुनकर उस कूप मेढक ने अपने पैर से एक रेखा खेंची और खेंचकर बोला हे देवानुप्रिय ! वह समुद्र इतना भारी विशाल है। प्रत्युत्तर मे उस समुद्रवासी मेंढक ने उस कूप मेढक से कहा-नहीं वह इतना बड़ा नहीं है-वह तो इस से भी अधिक बड़ा है अर्थात् रेखा से निर्दिष्ट जो विस्तार है वह समुद्र के विस्तार को बतलाने में समर्थ नही हो सकता है-उस का विस्तार तो क्या कहे-बहुत ही अधिक है। (तएण से कूवददुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता ण गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी ए महालएण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे) समुद्रवासी मेंढक की बात सुनकर वह कूप मेंढक अपने अग्रवर्ती तीर से कूए के दूसरे तीर पर उछल गया-वहा

पाएण लीह कड्ढेइ, कड्ढित्ता एव वयासी ए महालएण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे महालएण से समुद्दे)

હે દેવાનુપ્રિય ! સમુદ્ર તો બહુ વિશાળ છે

આ વાત સાભળીને કૂવાના દેડકાએ પોતાના પગથી એક લીટી દોરી અને તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે સમુદ્ર આટલો વિશાળ છે ? ત્યારે જવાબમા સમુદ્રના દેડકાએ કહ્યુ કે નહિ, તે આટલો મોટો નથી તે તો એના કરતા પણ વિશાળ છે એટલે કે લીટી દોરીને જે વિસ્તાર બતાવવામા આવ્યો છે તે સમુદ્રની વિશાળતાને અકિત કરવામા અશક્તિમાન છે તેનો વિસ્તાર તો ખૂબ જ વિશાળ છે

(तएण से कूवददुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता ण गच्छइ गच्छित्ता एव वयासी, ए महालए ण देवाणुप्पिया ! समुद्दे णो इणट्ठे समट्ठे)

जिका-जनितहर्षः = चोक्षा परिव्राजिका-वचनश्रवणानन्तरसजातमल्लीविषय कानुरागः, दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा 'जाव पडारेत्थगमणाए' यावत्-मिथिलां गन्तुमादिष्टवान् ततः स दूतस्तदाज्ञानुसारेण प्राधारयद् गमनाय मिथिला गन्तु मवृत्तः। इति पण्णामपि राज्ञा सम्बन्धः पृथक् २ प्रोक्तः ॥ सू० ३१ ॥

मूलम्-तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं छप्पि-यदूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं२ खंधावारनिवेसं करेंति, करित्ता मिहिलं रायहाणिं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पत्तेयं२ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु साणं२ राईणं वयणाइं निवेदेंति, तएणं से कुंभए तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं

थी उसी दिशा तरफ वापिस चली गई। चोक्षा परिव्राजिका के वचन सुनने के बाद जिसे मल्ली कुमारी के विषय में अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे उस जितशत्रु राजा ने दूत को बुलाया-और उस से मिथिला जाने के लिये कहा-वह दूत भी अपने राजा की आज्ञानुसार मिथिला नगरी तरफ जाने के लिये वहां रवाना हो गया। सूत्र " ३१ "

તરફ પાછી જતી રહી ચોક્ષા પરિવ્રાજીકાના મોથી મલ્લીકુમારીના સૌદર્ય વિશે પ્રશંસાજનક શબ્દો સાંભળીને જેના મનમા તેના માટે અનુરાગ ઉત્પન્ન થયો છે એવા તે જિતશત્રુ રાજાએ દૂતને બોલાવ્યો. અને તેને મિથિલા જવા માટે આજ્ઞા કરી દૂત પોતાના રાજાના હુકમ પ્રમાણે મિથિલા નગરી તરફ જવા ઉપડી ગયો ॥ સૂત્ર " ૩૧ " ॥

तदेव खलु हे जितशत्रो ! मिथिलायां नगर्यां कुम्भकस्य राज्ञो दुहिता=पुत्री, प्रभावत्या आत्मजा=अङ्गजाता मल्ली नाम इति, रूपेण=सुन्दरतया च यौवनेन च यावत् नो खलु अन्या काऽपि देवकन्या वा तादृशी विद्यते, यादृशी मल्ली। मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाश्छिन्नस्यापि पादाङ्गुष्ठस्यायं तवावरोध शतसहस्रतमामपि कला=लक्षांशमपि नार्हति ' इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा, सा चोक्षा परिव्राजिका यस्या दिश प्रादुर्भूता, तामेव दिश प्रतिगता। ततः खलु स जितशत्रु परिव्रा-

भी नही है। (त एव खलु जियसत्तू मिहिलाए नयरीए कुभगस्स धूया पभावतीए अत्तया मल्ली नामति-रूवेण य जोव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली) इसलिये हे जितशत्रो! सुनो- मिथिला नगरी में कुभक राजा की पुत्री जो प्रभावती की कुक्षि से उत्पन्न हुई है मल्ली कुमारी है। वह रूप और यौवन से इतनी अधिक सुन्दरी है कि उस के समक्ष ऐसी कोई देव कन्या आदि कोई भी कन्या सुन्दरी नहीं है-(मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए छिण्णस्स वि पायगुट्ठस्स इमे तवारोहे सयसहस्सतमपि कल न अग्घइ, त्ति कट्टु जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया तएण से जियसत्तू परिव्वाइया जणियहासे दूय सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए) उस विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी के कटे हुए पादांगुष्ठ के एक लाख वे अंश बराबर २ भी यह आपका अवरोध अन्तपुर नहीं है।

इस प्रकार कहकर वह चोक्षा परिव्राजिका जिस दिशा से आई

(त एव खलु जियसत्तू मिहिलाए नयरीए कुभगस्स धूया पभावतीए अत्तया मल्ली नामति रूवेण य जोव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली)

એટલા માટે હે જીતશત્રો ! સાભળો, મિથિલા નગરીમા પ્રભાવતીના ગર્ભથી જન્મેલી કુભક રાજાની પુત્રી મલ્લીકુમારી પોતાના રૂપ અને યૌવનથી એટલી બધી સુદરી છે કે તેની સામે તો દેવકન્યા પણ કઈ જ નથી

(मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए छिण्णस्स वि पायगुट्ठस्स इमे तवोरोहे सयसहस्सतम पि कल न अग्घइ, त्ति कट्टु जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया तएण से जियसत्तू ! परिव्वाइया जणियहासे दूय सद्दावेइ सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए)

વિદેહ રાજાની ઉત્તમ કન્યા મલ્લીકુમારીના કપાએલા અગૂઠાના એક લાખમા ભાગ બરાબર પણ આ તમારો અવરોધજન (રણવાસ) નથી

આ પ્રમાણે કહીને ચોક્ષા પરિવ્રાજીકા જે દિશાથી આવી હતી તે દિશા

निग्गच्छित्ता एगयओ मिलायति, मिलायित्ता जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३२ ॥

टीका—' तएण तेसिं ' इत्यादि । ततस्तदन्तर तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा षण्णा राज्ञा दूता यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव ' प्राधारयद् गमनाय ' गन्तुमुद्यताः । तत खलु षडपि दूता यत्रैव मिथिला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मिथिलाया ' अग्गुज्जाणमि ' अग्रोद्याने=प्रधानोद्याने, प्रत्येक २ 'खधावारनिवेस ' स्कन्धावार-निवेश=शिविरस्य ' छावनी ' इति भाषा प्रसिद्धस्य निवेश स्थापन कुर्वन्ति, कृत्वा, मिथिला राजधानीमनुप्रविशन्ति, यत्रैव कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

' तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) इस के बाद (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह राईण) उन जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओ के (दूया) दूत (जेणेव मिहिला) जहा वह मिथिला नगरी थी (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) उस ओर अपने २ स्थान से चल दिये (तएणं छप्पियदूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति) चलते २ वे छहों ही दूत एक ही साथ जहा मिथिला नगरी थी वहा आये । (उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणसि पत्तेय २ खधावारनिवेस करेंति, करित्ता मि हिल रायहाणि अणुपविसति) वहा आकर मिथिलानगरी प्रधान उद्यान में उन सबने अलग २ अपनी २ छावनी डाल दी । छावनी डालकर फिर वे मिथिला नगरी मे प्रवेश किया–(अणुपविसित्ता जेणेव कुभए

तएण तेसिं जियमत्तू पामोक्खाण इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) त्यारपछी (तेसिं जियमत्तू पामोक्खा ण छण्ह राईण) જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓના (दूया) દૂતો (जेणेव मिहिला) જ્યા મિથિલા નગરી હતી (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) તે તરફ પોતપોતાના સ્થાનેથી ઉપડી ગયા (तएण छप्पिय दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छ ति) તે છએ દૂતો ચાલતા ચાલતા એકી સાથે જ જ્યા મિથિલા નગરી હતી ત્યા આવી પહોચ્યા

(उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाण मि पत्तेय २ खधावार निवेस करेंति, करित्ता मिहिल रायहाणिं अणुपविसति)

ત્યા પહોચીને બધાએ મિથિલા નગરીના પ્રધાન ઉદ્યાનમા પોતપોતાનો પડાવ નાખ્યો પડાવ નાખીને તેઓ મિથિલા નગરીમા ગયા (अणुपविसित्ता जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति) અને જ્યા કુભક રાજા હતા ત્યા પહોચ્યા,

भिउंडि एव वयासी-न देमिण अहं तुब्भ मल्लिं विदेहराय वरकण्णं तिकट्टु ते छप्पिदूए असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ । तएणं जियसत्तू पामोक्खाण छण्हं राईणं दूया कुभएण रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेणं णिच्छुभाविया जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइं२ णगराइ जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल परि० एव वयासी-एव खलु सामी ! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह राईणं दूया जमगसमग चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेणं निच्छुभावेइ, तं ण देइणं सामी ! कुभए मल्लिं विदेहरायवरकन्न साणं २ राईणं एयमट्ठ निवेदेंति ।

तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसि दूयाणं अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूयसपेसणं करेंति, करित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह छण्ह राईण दूया जमगसमगं चेव जाव निच्छूडा, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह कुभगस्स जत्त गेण्हित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता ण्हाया सण्णद्धा हत्थिखधवरगया सकोरट मल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, उद्धुव्वमाणाहिं सेयवरचामराहिं महयाहयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं२ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति

निग्गच्छित्ता एगयओ मिलायंति, मिलायित्ता जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३२ ॥

टीका—' तएण तेसिं ' इत्यादि। ततस्तदन्तर तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा षण्णा राज्ञा दूता यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव ' प्राधारयद् गमनाय ' गन्तुमुद्यताः। तत खलु षडपि दूता यत्रैव मिथिला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मिथिलाया ' अग्गुज्जाणसि ' अग्रोद्याने=प्रधानोद्याने, प्रत्येक २ 'खधावारनिवेस ' स्कन्धावार-निवेश=शिविरस्य ' छावनी ' इति भाषा प्रसिद्धस्य निवेश स्थापन कुर्वन्ति, कृत्वा, मिथिला राजधानीमनुप्रविशन्ति, यत्रैव कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

' तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं ' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएण) इस के बाद (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह राईण) उन जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओं के (दूया) दूत (जेणेव मिहिला) जहा वह मिथिला नगरी थी (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) उस ओर अपने २ स्थान से चल दिये (तएण छप्पियदूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति) चलते २ वे छहों ही दूत एक ही साथ जहा मिथिला नगरी थी वहा आये। (उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणसि पत्तेय २ खधावारनिवेस करेंति, करित्ता मि हिल रायहाणि अणुपविसंति) वहा आकर मिथिलानगरी प्रधान उद्यान में उन सबने अलग २ अपनी २ छावनी डाल दी। छावनी डालकर फिर वे मिथिला नगरी मे प्रवेश किया–(अणुपविसित्ता जेणेव कुभए

तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારપછી (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण) જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓના (दूया) દૂતો (जेणेव मिहिला) જ્યા મિથિલા નગરી હતી (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) તે તરફ પોતપોતાના સ્થાનેથી ઉપડી ગયા (तएण छप्पिय दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति) તે છએ દૂતો ચાલતા ચાલતા એકી સાથે જ્યા મિથિલા નગરી હતી ત્યા આવી પહોચ્યા

(उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाण मि पत्तेय २ खधावार निवेस करेंति, करित्ता मिहिल रायहाणिं अणुपविसंति)

ત્યા પહોચીને જુદાજુદા મિથિલા નગરીના પ્રધાન ઉદ્યાનમા પોતપોતાનો પડાવ નાખ્યો પડાવ નાખીને તેઓ મિથિલા નગરીમા ગયા (अणुपविसित्ता जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति) અને જ્યા કુભક રાજા હતા ત્યા પહોચ્યા.

भिउंडि एवं वयासी-न देमिणं अह तुब्भ मल्लिं विदेहराय-वरकण्णं तिकट्टु ते छप्पिदूए असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ । तएणं जियसत्तू पामोक्खाण छण्हं राईणं दूया कुभएणं रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेणं णिच्छुभाविया जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ२ णगराइ जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल परि० एव वयासी-एवं खलु सामी ! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह राईणं दूया जमगसमग चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेणं निच्छुभावेइ, त ण देइणं सामी ! कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न साणं २ राईणं एयमट्ठ निवेदेंति ।

तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसि दूयाणं अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूयसपेसणं करेंति, करित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह छण्ह राईण दूया जमगसमगं चेव जाव निच्छूढा, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह कुंभगस्स जत्त गेण्हित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता पहाया सण्णद्धा हत्थिखधवरगया सकोरट मल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, उद्धुव्वमाणाहिं सेयवरचामराहिं महयाहयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं२ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति

असंमान्य, च 'अवदारेण' अपद्वारेण=भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावेइ' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा षण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असत्कारिताः असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्त. यत्रैव स्वकं २ आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि, यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः – हे स्वामिन्!

रिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ) हे दूतों! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नहीं दूंगा" ऐसा कहकर उसने उन दूतो का न कोई सत्कार किया और न कोई सन्मान-ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से, बाहिर निकालदिया। (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ२ णगराइ जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छंति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुभक राजा से असत्कृत एव असमानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहा से प्रस्थित होकर जहा, अपना २ जनपद था, वहा अपने २ नगर थे, और उन में भी जहा अपने २ राजा थे वहा आ गये।

असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ)

" હે દૂતો મારી પુત્રી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તમારા રાજાઓને આપીશ નહિ " આ પ્રમાણે કહીને રાજાએ દૂતોનો કોઈ પણ રૂપમા સત્કાર અને સન્માન ન કરતા તેઓને પોતાના મહેલના પાછળના નાના બારણેથી બહાર કાઢી મૂક્યા

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छंति)

આ પ્રમાણે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓના તે દૂતો કુભકરાજા વડે અસત્કૃત અને અસમાનિત થતા જ્યારે મહેલના પાછલા બારણેથી બહાર કાઢી મૂકવામા આવ્યા ત્યારે તેઓ ત્યાથી રવાના થઈને જ્યાં તેમનો જનપદ (દેશ) હતો, જ્યા તેમનુ નગર હતુ અને તેમા પણ જ્યા તેમના રાજા હતા ત્યા પહોચ્યા.

प्रत्येक २ करतल परिगृहीत शिर आवर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवं वा स्वकान् स्वकान् राज्ञां 'वयणाइ' वचनानि=कथनानि निवेदयन्ति स्म। ततस्तदनन्तरं स कुम्भको राजा तेषां दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं 'जितशत्रुप्रमुखा' षडपि राजानो मल्लीं वरयन्ति' इत्येतद्रूप वृत्तान्त श्रुत्वा 'आसुरुत्ते' आशुरुप्त=शीघ्र क्रोधाविष्टः, यावत् त्रिवलिकां=रेखात्रययुतां भ्रकुटिं=भ्रुवं, ललाटे कुर्वन् गर्व=वाक्यं भणिष्यामीव, अवादीत्= हे दूताः 'नो दास्यामि' खलु अहं युष्माकं राजभ्यो मल्लीं विदेहराजवरकन्याम्' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् षडपि दूतान् असत्कृत्य,

तेणेव उवागच्छंति) प्रवेश कर जहां कुंभक राजा थे-वहां आये (उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयल परिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु साणं २ राईणं वयणाणि निवेदेंति) वहां आकर उन सबोंने भिन्न २ रूप से कुंभक राजा को दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने क्रमशः अपने २ राजा का कथन उसे सुनाया-(तएणं से कुंभए तेसिं दूयाणं अन्तिए, एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एवं वयासी) जितशत्रु प्रमुख छहों ही नृपति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को चाह रहे हैं इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर वह कुंभक राजा इकदम क्रोधित हो गया-और उसी समय उसकी त्रिवलियुक्त भ्रकुटि मस्तक पर चढ गई।

इसी आवेश में उसने उन दूतो से इस प्रकार कहा-(न देमि णं अहं तुब्भं मल्लीं विदेहरायवरकण्णं त्ति कट्टु ते छप्पि दूए असक्का)

(उवागच्छित्ता पत्तेयं २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्टु साणं २ राईणं वयणाणि निवेदेंति।)

ત્યા જઈને તેઓ બધાએ જુદા જુદા રૂપમા કુભક રાજાને બને હાથની અંજલિ બતાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને નમસ્કાર કરીને તેઓએ વારાફરતી પોતપોતાના રાજાનો સદેશો તેમને કહી સંભળાવ્યો

(तएणं से कुंभए तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एवं वयासी)

જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ છ રાજાઓ મારી પુત્રી મલ્લીકુમારીને ચાહે છે આ જાતનો સદેશ દૂતોના મોથી સાભળીને કુભક રાજા એકદમ ગુસ્સે થઈ ગયા અને ત્રણે રેખાઓવાળી તેમની ભ્રકુટી ભમરો વક્ર થઈ ગઈ

ક્રોધના આવેશમા રાજાએ તે દૂતોને કહી સભળાવ્યુ કે—

(न देमि णं अहं तुब्भं मल्लीं विदेहरायवरकण्णं त्ति कट्टु ते छप्पि दूए

असंमान्य, च 'अवदारेण' अपद्वारेण=भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावेइ' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा षण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असत्कारिता असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्त यत्रैव स्वका २ आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः—हे स्वामिन्!

रिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ) हे दूतों! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओ के लिये नही दूगा" ऐसा कहकर उसने उन दूतो का न कोई सत्कार किया और न कोई सन्मान ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से-बाहिर निकालदिया। (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ२ णगराइ जेणेव सगा २-रायाणो तेणेव उवागच्छति,) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओ के-वे दूत कुभक राजा से असत्कृत एव असमानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहा से प्रस्थित होकर जहा, अपना २ जनपद था, वहा अपने २ नगर थे, और उन में भी जहा अपने २ राजा थे वहा आ गये।

असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ)

" હે દૂતો મારી પુત્રી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તમારા રાજાઓને આપીશ નહિ " આ પ્રમાણે કહીને રાજાએ દૂતોનો કોઈ પણ રૂપમા સત્કાર અને સન્માન ન કરતા તેઓને પોતાના મહેલના પાછળનાં નાના બારણેથી બહાર કાઢી મૂક્યા

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छति)

આ પ્રમાણે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓના તે દૂતો કુભકરાજા વડે અસત્કૃત અને અસમાનિત થતા જ્યારે મહેલના પાછલા બારણેથી બહાર કાઢી મૂકવામા આવ્યા ત્યારે તેઓ ત્યાથી રવાના થઈને જ્યા તેમનો જનપદ (દેશ) હતો, જ્યા તેમનુ નગર હતુ અને તેમા પણ જ્યા તેમના રાજા હતા ત્યા પહોચ્યા.

प्रत्येक २, करतल, परिगृहीत शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं वा एवमेव रीत्या 'वयणाइ' वचनानि=कथनानि निवेदयन्ति स्म। ततस्तदनन्तर स कुम्भको राजा तेषा दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं 'जितशत्रुप्रमुखा' षडपि राजानो मल्ली ठेऊन्ति' इत्येतद्रूप वृत्तान्त श्रुत्वा 'आसुरुत्ते' आशुरुप्त=शीघ्र क्रोधाविष्टः, यावत् त्रिवलिकां=रेखात्रययुतां भ्रकुटिं=भ्रुवः कौटिल्यं ललाटे कुर्वन् गर्व=दर्प मणिमकारेण, अवादीत्= हे दूताः 'नो दास्यामि खलु अह युष्माकं राजभ्यो मल्लीं विदेहराजवरकन्याम्' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् षडपि दूतान् असत्कृत्य,

---

तेणेव उवागच्छंति) प्रवेश कर जहा कुंभक राजा थे-वहा आये (उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयल परिग्गहियं सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलिं कट्टु साण २ राईणं वयणाणि निवेदेंति) वहा आकर उन सबोंने भिन्न २ रूप से कुभक राजा को दोनों हाथो की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने क्रमश अपने २ राजा का कथन उसे सुनाया-(तएण से कुभए तेसिं दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एव वयासी) जितशत्रु प्रमुख छहों ही नृपति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को चाह रहे हैं इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर वह कुभक राजा इकदम क्रोधित हो गया-और उसी समय उसकी त्रिवलियुक्त भ्रकुटि मस्तक पर चढ गई।

इसी आवेश में उसने उन दूतो से इस प्रकार कहा-(न देमि णं अह तुब्भ मल्ली विदेह रायवरकण्ण त्ति कट्टु ते छप्पि दूए असक्का

(उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलिं कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदेंति)

ત્યા જઈને તેઓ બધાએ જુદા જુદા રૂપમા કુભક રાજાને બને હાથની અજલિ બતાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને નમસ્કાર કરીને તેઓએ વારાફરતી પોતપોતાના રાજાનો સદેશો તેમને કહી સંભળાવ્યો

(तएणं से कुभए तेसिं दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एव वयासी)

જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ છ રાજાઓ મારી પુત્રી મલ્લીકુમારીને ચાહે છે આ જાતનો સદેશ દૂતોના મોથી સાભળીને કુભક રાજા એકદમ ગુસ્સે થઈ ગયા અને ત્રણે રેખાઓવાળી તેમની ભ્રકુટી ભમરો વક્ર થઈ ગઈ

ક્રોધના આવેશમા રાજાએ તે દૂતોને કહી સભળાવ્યુ કે—

(न देमि णं अह तुब्भ मल्ली विदेहरायवरकण्ण त्ति कट्टु ते छप्पिदूए

असम्मान्य, च 'अवद्वारेण' अपद्वारेण=भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावेइ' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा षण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असत्कारिता असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्त यत्रैव स्वकाः २ आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि, यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः – हे स्वामिन्!

रिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ) हे दूतों! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नहीं दूंगा" ऐसा कहकर उसने उन दूतों का न कोई सत्कार किया और न कोई सन्मान ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहिर निकालदिया। (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेण णिच्छुभाविया समाणा, जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ२ णगराइ जेणेव सगा २-रायाणो तेणेव उवागच्छंति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुंभक राजा से असत्कृत एव असम्मानित होते हुए-जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहा से प्रस्थित होकर जहा, अपना २ जनपद था, वहा अपने २ नगर थे, और उन में भी जहा अपने २ राजा थे वहा आ गये।

असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ)

" હે દૂતો મારી પુત્રી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તમારા રાજાઓને આપીશ નહિ " આ પ્રમાણે કહીને રાજાએ દૂતોનો કોઈ પણ રૂપમા સત્કાર અને સન્માન ન કરતા તેઓને પોતાના મહેલના પાછળનાં નાનાં બારણેથી બહાર કાઢી મૂક્યા

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छंति)

આ પ્રમાણે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓના તે દૂતો કુંભકરાજા વડે અસત્કૃત અને અસમાનિત થતા જ્યારે મહેલના પાછલા બારણેથી બહાર કાઢી મૂકવામા આવ્યા ત્યારે તેઓ ત્યાથી રવાના થઈને 'જ્યાં તેમનો' જનપદ (દેશ) 'હતો, જ્યા તેમનુ નગર હતુ અને તેમા પણ જ્યા તેમના રાજા હતા ત્યા પહોચ્યા.

मत्येक २, करेवल, परिगृहीत शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जएणं विजएणं वद्धावेइ २ त्ता एवं वयासी ' चयणाइ ' वचनानि=कथनानि निवेदयन्ति स्म। ततस्तदनन्तर स कुम्भको राजा तेषा दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं ' जितशत्रुप्रमुखा षडपि राजानो मल्लीं वरयन्ति ' इत्येतद्रूप वृत्तान्त श्रुत्वा ' आसुरुत्ते ' आशुरुप्त =शीघ्र क्रोधाविष्टः, यावत् त्रिवलिकां=रेखात्रययुतां भ्रकुटिं=भ्रुवः कौटिल्यं ललाटे कुर्वन् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्= हे दूताः ' नो दास्यामि खलु अहं युष्माकं राजभ्यो मल्लीं विदेहराजवरकन्याम् ' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् षडपि दूतान् असत्कृत्य,

---

तेणेव उवागच्छति) प्रवेश कर जहा कुंभक राजा थे-वहा आये (उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयल परिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अजलिं कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदेंति) वहा आकर उन सबोंने भिन्न २ रूप से, कुभक राजा को दोनों हाथो की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने क्रमशः अपने २ राजा का कथन उसे सुनाया-(तएण से कुभए तेसिं दूयाण अन्तिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एव वयासी) जितशत्रु प्रमुख छहो ही नृपति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को चाह रहे हैं इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर वह कुभक राजा इकदम क्रोधित हो गया-और उसी समय उसकी त्रिवलियुक्त भ्रकुटि मस्तक पर चढ गई।

इसी आवेश में उसने उन दूतो से इस प्रकार कहा-(न देमि णं अहं तुब्भ मल्ली विदेहरायवरकण्णं त्ति कट्टु ते छप्पि दूए असक्का

(उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अजलिं कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदेंति)

ત્યા જઈને તેઓ બધાએ જુદા જુદા રૂપમા કુભક રાજાને બને હાથની અજલિ બતાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને નમસ્કાર કરીને તેઓએ વારાફરતી પોતપોતાના રાજાનો સદેશો તેમને કહી સભળાવ્યો

(तएणं से कुभए तेसिं दूयाणं अतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एव वयासी)

જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ છ રાજાઓ મારી પુત્રી મલ્લીકુમારીને ચાહે છે આ જાતનો સદેશ દૂતોના મોથી સાભળીને કુભક રાજા એકદમ ગુસ્સે થઈ ગયા અને ત્રણે રેખાઓવાળી તેમની ભ્રકુટી ભમરો વક્ર થઈ ગઈ

ક્રોધના આવેશમા રાજાએ તે દૂતોને કહી સભળાવ્યુ કે—

(न देमि णं अहं तुब्भ मल्ली विदेहरायवरकण्णं त्ति कट्टु ते छप्पि दूए

असंमान्य, च 'अवद्दारेण' अपद्वारेण=भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावेइ' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असत्कारिताः असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्तः यत्रैव स्वकाः २= आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि, यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः—हे स्वामिन्!

रिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ) हे दूतो! मैं अपनी पुत्री विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओ के लिये नही दूगा" ऐसा कहकर उसने उन दूतो का न कोई सत्कार किया और न कोई सन्मान ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहिर निकालदिया। (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ२ णगराइ जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओ के वे दूत कुभक राजा से असत्कृत एव असमानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहा से प्रस्थित होकर जहा अपना २ जनपद था, वहा अपने २ नगर थे, और उन में भी जहा अपने २ राजा थे वहा आ गये।

असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ)

"હે દૂતો મારી પુત્રી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તમારા રાજાઓને આપીશ નહિ" આ પ્રમાણે કહીને રાજાએ દૂતોનો કોઈ પણ રૂપમા સત્કાર અને સન્માન ન કરતા તેઓને પોતાના મહેલના પાછળનાં નાના બારણેથી બહાર કાઢી મૂક્યા

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छति)

આ પ્રમાણે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓના તે દૂતો કુભકરાજા વડે અસત્કૃત અને અસન્માનિત થતા જ્યારે મહેલના પાછલા બારણેથી બહાર કાઢી મૂકવામા આવ્યા ત્યારે તેઓ ત્યાથી રવાના થઇને જ્યા તેમનો જનપદ (દેશ) હતો, જ્યા તેમનુ નગર હતુ અને તેમા પણ જ્યા તેમના રાજા હતા ત્યા પહોચ્યા.

एव खलु वय जितशत्रुपमुखाणा छण्हा राइणा दूताः 'जमगसमगं' युगपद् = एकस्मिन् काल एव, यत्रैव मिथिला यावत् - तत्रैव गत्वा स्वेषां स्वेषां राज्ञा वचनानि निवेदितवन्तः, तदा स कुम्भकः शीघ्र क्रोधाविष्टः सन् 'न दास्याम्यह मल्ली' मित्युक्त्वाऽस्मानसत्कृत्यासमान्य, अपद्वारेण 'निच्छुभावेइ' निःसारयति=निष्कासयति स्मेत्यर्थः। तत=तस्माद् न ददाति हे स्वामिन्! कुम्भको मल्लीं विदेह राजवरकन्याम् इत्युक्त्वा षडपि दूताः स्वेषा स्वेषा राज्ञामेतद्युक्तमर्थं निवेदयन्ति कथयन्तिस्म।

(उवागच्छित्ता करयलपरि० एव वयासी) वहा आकर उन्होंने उन्हें दोनों हाथों की अजलि बनाकर नमस्कार किया (एव खलु सामी! अम्हें जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया जमगसमग चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेण निच्छुभावेइ) हे स्वामिन्! हम सब जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के दूत एक ही समय जहा मिथिला नगरी थी-वहां पहुँचे-वहा पहुँचकर कुभक राजा के दर्शनार्थ उनके राजमहल में गये वहा जाकर हमलोगों ने सविनय अपने २ राजाओं के वक्तव्य उन्हें कहकर सुनाये सुनते ही वे कुभक राजा क्रोध से भर गये-और कहने लगे-हम अपनी पुत्री मल्ली कुमारी किसी को नही देगे ऐसा कहते हुए उन्हो ने बाद में हमलोगो को असत्कृत एव असमानित कर अपने महल से उसके पिछले छोटे से दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया।

(उवागच्छित्ता करयल परि०" एव वयासी) त्या आवीने तेमणे बन्ने हाथोनी अंजली बनावीने नमन कर्यां

(एव खलु सामी! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया जमग समग चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेण निच्छुभावेइ)

અને કહ્યું હે સ્વામિન્! અમે બધા જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ છ રાજાઓના દૂતો એક જ સમયમા જ્યા મિથિલા નગરી હતી ત્યા પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને કુભકરાજાના દર્શન માટે અમે રાજમહેલમા ગયા ત્યા પહોચીને અમે લોકોએ વિનયની સાથે પોતપોતાના રાજાનો સદેશ તેમને કહી સભળાવ્યો કુભકરાજા તે સદેશાઓને સાભળતા જ ગુસ્સે થઇ ગયા અને કહેવા લાગ્યા કે હુ મારી પુત્રી મલ્લીકુમારી કોઇને ય આપીશ નહિ આમ કહેતા તેમણે અમને અસત્કૃત તેમજ અસમાનિત કરીને પોતાના મહેલના પાછળના નાના બારણાથી બહાર કાઢી મૂક્યા

ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानस्तेषां दूतानामन्तिके=समीपे, एतमर्थं श्रुत्वा=कर्णगोचरीकृत्य, निशम्य=अर्थमवगम्य' आशुरुप्ता'=शीघ्र क्रोधाविष्टा ' अण्णमण्णस्स ' अन्योन्यस्य=परस्परस्य दूतसंप्रेषणं कुर्वन्ति, कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषु -हे देवानुप्रिया ! एवं खलु अस्माकं षण्णां राज्ञां दूताः युगपदेव यावदसत्कृत्यासमान्यापद्वारेण ' णिच्छूढा ' निक्षिप्ताः= निः

(त णं देहणं सामी ! कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं साणं २ राइणं एयमट्ठं निवेदेति) अतं हे स्वामिन् ! आप निश्चय समझे-कुंभकराजा अपनी विदेह राजवरकन्या मल्लीकुमारी को नहीं देता है। ऐसा कहकर उन छहों दूतो ने इसी उक्त अर्थ की पुष्टी अपने २ राजाओं के समक्ष की। (तएणं से जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसिं दूयाणं अन्तिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म असुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूयसंपेसणं करेंति) इसके बाद उन जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओं ने दूतों के मुखसे इस बात को सुनकर और उसे समझ कर क्रोधित हो अपने २ दूतों को एक दूसरे राजा के पास भेजा (करित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव णिच्छूढा) भेज कर उन दूतों से यह समचार कहलवाये-हे देवानुप्रियों ! देखो हम छहों राजाओं के दूत एक ही समय कुंभक राजा के पास

(त णं देइणं सामी ! कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं साणं २ राईणं एयमट्ठं निवेदेंति)

એથી હે સ્વામિન્ ! તમે યોગ્યરીતે આ જાણીલો કે કુંભક પોતાની વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી આપશે નહિ આ પ્રમાણે કહીને છએ દૂતોએ પોતપોતાના રાજાઓની સામે પોતાના મતની પુષ્ટિ કરી

(तएणं से जियसत्तू पामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एवमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्ण मण्णस्स दूयसंपेसणं करेंति)

ત્યારબાદ જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ દૂતોના મુખેથી આ પ્રમાણે વાત સાભળીને અને તેને મરોબર સમજીને ગુસ્સે થયા અને પોતપોતાના દૂતોને એક બીજા રાજાની પાસે મોકલ્યા

(करित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं राईणं दूया जमग समगंचेव जाव णिच्छूढा)

તેઓએ તે દૂતોની સાથે આ જાતનો સંદેશ મોકલ્યો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણા છએ રાજાઓના દૂતો એકી વખતે કુંભકરાજાની પાસે ગયા ત્યા તેણે

एव खलु नय जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञा दूताः ' जमगसमग ' युगपद् = एकस्मिन काल एव, यत्रैव मिथिला यावत् – तत्रैव गत्वा स्वेषा स्वेषां राज्ञा वचनानि निवेदितवन्तः, तदा स कुम्भकः शीघ्र क्रोधाविष्टः सन् 'न दास्याम्यह मल्ली ' मित्युक्त्वाऽस्मानसत्कृत्यासमान्य, अपद्वारेण 'निच्छुभावेइ ' निःसारयति=निष्कासयति स्मेत्यर्थ.। तत=तस्माद् न ददाति हे स्वामिन् ! कुम्भको मल्लीं विदेह राजवरकन्याम् इत्युक्त्वा पडपि दूताः स्वेषा स्वेषा राज्ञामेतमुक्तमर्थं निवेदयन्ति कथयन्तिस्म ।

(उवागच्छित्ता करयलपरि० एव वयासी) वहा आकर उन्होंने उन्हें दोनों हाथों की अजलि बनाकर नमस्कार किया (एव खलु सामी ! अम्हें जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया जमगसमग चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेण निच्छुभावेइ) हे स्वामिन् ! हम सब जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के दूत एक ही समय जहा मिथिला नगरी थी-वहा पहुँचे-वहा पहुँचकर कुभक राजा के दर्शनार्थ उनके राजमहल में गये वहा जाकर हमलोगों ने सविनय अपने २ राजाओं के वक्तव्य उन्हें कहकर सुनाये सुनते ही वे कुभक राजा क्रोध से भर गये-और कहने लगे-हम अपनी पुत्री मल्ली कुमारी किसी को नही देगे ऐसा कहते हुए उन्हों ने बाद मे हमलोगों को असत्कृत एव असमानित कर अपने महल से उसके पिछले छोटे से दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया।

(उवागच्छित्ता करयल परि०" एव वयासी) त्या आवीने तेमणे अने હાથોની અજલી બતાવીને નમન કર્યા

(एव खलु सामी ! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया जमग समग चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेण निच्छुभावेइ)

અને કહ્યુ હે સ્વામિન્ ! અમે બધા જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ છ રાજાઓના દૂતો એક જ સમયમા જ્યા મિથિલા નગરી હતી ત્યા પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને કુભકરાજાના દર્શન માટે અમે રાજમહેલમા ગયા ત્યા પહોચીને અમે લોકોએ વિનયની સાથે પોતપોતાના રાજાનો સદેશ તેમને કહી સભળાવ્યો કુભકરાજા તે સદેશાઓને સાભળતા જ ગુસ્સે થઇ ગયા અને કહેવા લાગ્યા કે હુ મારી પુત્રી મલ્લીકુમારી કોઇને ય આપીશ નહિ આમ કહેતા તેમણે અમને અપમાનિત તેમજ અસમાનિત કરીને પોતાના મહેલના પાછળના નાના બારણાથી બહાર કાઢી મૂક્યા

ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानस्तेषां दूतानामन्तिके=समीपे, एतमर्थं श्रुत्वा=कर्णगोचरीकृत्य निशम्य=अर्थमवगम्य' आशुरुप्ता'=शीघ्र क्रोधाविष्टा ' अण्णमण्णस्स ' अन्योन्यस्य=परस्परस्य दूतसमेपग कुर्वन्ति, कृत्वा एव= वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषु –हे देवानुप्रिया ! एव खलु अस्माक पण्णा राना दूताः युगपदेव यावदसत्कृत्यासमान्यापद्वारेण ' णिच्छूढा ' निक्षिप्ताः= नि'

(त ण देइण सामी। कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न साण २ राइण एयमट्ठ निवेदेंति) अत हे स्वामिन्! आप निश्चय समझे–कुभ कराजा अपनी विदेह राजवरकन्या मल्लीकुमारी को नही देता है। ऐसा कहकर उन छहों दूतो ने इसी उक्त अर्थ की पुष्टी अपने २ राजा ओ के समक्ष की। (तएण से जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसिं दूयाण अन्तिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म असुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूय सपेसण करेति) इसके बाद उन जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओं ने दूतों के मुखसे इस बात को सुनकर और उसे समझ कर क्रोधित हो अपने २ दूतों को एक दूसरे राजा के पास भेजा (करित्ता एव वयामी–एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह छण्ह राईण दूया जमगसमगं चेव जाव णिच्छूढा) भेज कर उन दूतों से यह समचार कहलवाये–हे देवानुप्रियों ! देखो हम छहों राजाओ के दूत एक ही समय कुभक राजा के पास

(त ण देइण सामी ।कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न साण २ राईण एयमट्ठ निवेदेंति)

એથી હે સ્વામિન્ ! તમે ચોક્કસપણે આ જાણીલેા કે કુભક પેાતાની વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી આપશે નહિ આ પ્રમાણે કહીને છએ દૂતેાએ પેાતપેાતાના રાજાઓની સામે પેાતાના મતની પુષ્ટિ કરી

(तएण से जियसत्तू पामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाण अतिए एवमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरूत्ता अण्ण मण्णस्स दूयसपेसण करेंति)

ત્યારબાદ જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ દૂતોના મુખેથી આ પ્રમાણે વાત સાભળીને અને તેને બરાબર સમજીને ગુસ્સે થયા અને પેાતપેાતાના દૂતોને એક બીજા રાજાની પાસે મેાકલ્યા

(करित्ता एव वयामी एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह राईण दूया जमग समगचेव जाव णिच्छूढा)

તેઓએ તે દૂતોની સાથે આ જાતનેા સદેશ મેાકલ્યેા કે હે દેવાનુપ્રિયેા ! આપણા છએ રાજાઓના દૂતો એકી વખતે કુભકરાજાની પાસે ગયા ત્યા તેણે

सारिताः । तत्=तस्मात् श्रेयः खलु हे देवानुप्रियाः ! अस्माकं कुम्भकाय कुम्भक पराजयाय 'जत्त' यात्रा=युद्धयात्रा ग्रहीतुम्=स्वीकर्तुं श्रेय इति पूर्वसम्बन्धः । इति कृत्वा=इति परामृश्य-विचार्य, परस्परस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य, ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानः स्नाताः सन्नद्धाः=युद्धोपकरण-कवचादि धारणेन सज्जीकृतशरीराः, हस्तिस्कन्धवरगता=गजोपरिमारूढाः, 'सकोरंट पहुँचे-वहाँ उसने हमलोगों के दूतों का कोई भी सत्कार और सन्मान नहीं किया-किन्तु उन्हे अपमानित कर अपने महल के पिछले छोटे दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया-(त) अतः-(सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह कुंभगस्सजत्त गेण्हित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, ण्हाया, सण्णद्धा हत्थिकंधवरगया सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उद्धुव्वमाणाहिं सेयवरचामराहिं महया हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव निग्गच्छंति) हम लोगोंका अब यही कर्तव्य श्रेयस्कर है कि हम लोग कुम्भक राजा को पराजित करने के लिये उन पर चढाइ कर दें ।

इस प्रकार का जब उन सब का परामर्श हो चुका तब सब ने एक मत हो इस बात को मान लिया । मान लेने के बाद वे जितशत्रु प्रमुख सब ही राजा नहा धोकर युद्धोपकरणों से सुसज्जित हो गये । और हाथियों के स्कंधो पर आरूढ होकर महान २ योद्धाओं से-राजों से रथों से

આપણા દૂતોનો સત્કાર કે સન્માન કંઈજ કર્યું નથી, અને તેમને અપમાનિત કરીને પોતાના મહેલના પાછલા નાના બારણેથી બહાર કાઢી મુકાવ્યા છે (ત) એથી

(सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह कुंभगस्स जत्तं गेण्हित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, ण्हाया सण्णद्धा, हत्थिकंधवरगया सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उद्धुव्वमाणाहिं सेयवरचामराहिं महया हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं २ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति)

હવે અમારા માટે એક જ કર્તવ્ય શ્રેયસ્કર લાગે છે કે અમે કુંભકરાજાને હરાવવા માટે તેમના ઉપર આક્રમણ કરીએ - - -)

જ્યારે આ પ્રમાણે બધાએ વિચાર કર્યો ત્યારે સહુએ એકમત થઈને આ નિર્ણય સ્વીકારી લીધો ત્યારપછી જીતશત્રુ પ્રમુખ બધા રાજાઓ સ્નાન કરીને યુદ્ધ માટેના બધા આયુધોથી સુસજ્જ થઇ ગયા અને તેઓ બધા

मल्लदामेण ' सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कोरण्ट पुष्पमालमदामयुक्तेन ' छत्तेण धरिज्ज माणेण उद्धुव्वमाणाहिं सेयवरचामराहिं' छत्रेण ध्रियमाणेन स्वस्वभृत्येन उद्धू यमानैः श्वेतवरचामरैश्चयुक्ता', ' महयाहयगयरहपवरजोहकलियाए ' महाहय-गजरथप्रवरयोधकलितया=महान्तश्च हयगजरथप्रवरयोधाश्चेति समाहारद्वन्द्वः महा-हयगजरथप्रवरयोध, सेनाङ्गत्वादेकवद्भाव', तेन कलितया = युक्तया, अतएव-चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरि कृता ' सव्विड्ढीए' सर्वद्धर्या = राजचिह्नादि रूपया युक्तः यावद्-रवेण = युद्धोत्साहवर्धकतुर्यादि शब्देन स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो नगरेभ्यो यावद् निर्गच्छन्ति, निर्गत्य, एकतः एकत्र-एकस्मिन् स्थाने मिलन्ति, मिलित्वा ते जितशत्रुप्रमुखा षडपि राजानो यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव प्राधारयन् गमनाय=गन्तु प्रवृत्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३२ ॥

प्रवर योधाओंसे कलित चतुरंगिणी सेना को साथ लेकर अपने २ नगरों से बाहिर निकले। हाथी पर जब ये राजा जन बैठे हुए थे उस समय इन के ऊपर छत्र धारी भृत्यो ने कोरटक पुष्प माल्य दाम से युक्त छत्र ताना हुआ था। चामर ढोरने वाले भृत्यजन उस समय इन के ऊपर श्वेतवर चामर ढोर रहे थे। ये समस्त राजाजन राज्यार्थ आह्लाद जनक रूप सर्वर्द्धि से युक्त होकर ही उत्साह वर्धक तुर्यादि के शब्दों द्वारा सस्तुत होते हुए-अपने २ नगरो से निकले थे। (निग्गच्छित्ता एगया ओ मिलायति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए) निकल कर ये सब एक स्थान पर मिल गये। मिलनेके बाद ये सब जितशत्रु प्रमुख-छहों राजा फिर वहांसे मिथिला नगरीकी ओर चल दिये ।सू ३२।

હાથીઓના ઉપર સવાર થઈને મોટા ઘોડાઓ, હાથીઓ, રથો અને બહાદુર યોદ્ધાઓની ચતુરંગિણી સેના માથે લઈને પોતપોતાના નગરની બહાર નીકળ્યા હાથીઓ ઉપર જ્યારે બધા રાજાઓ બેઠા હતા તે વખતે છત્રધારી ભૃત્યોએ તેમના ઉપર કોરટક પુષ્પમાલ્ય દામવાળુ છત્ર ધર્યું હતુ ચામર ઢોળનારા ભૃત્યજનો તે સમયે તેમના ઉપર સફેદ ચામરો ઢોળતા હતા તે બધા રાજાઓ રાજ્યાર્થ આહ્લાદરૂપ સર્વર્દ્ધિયુક્ત થઈને ઉત્સાહ વધારનાર તુર્યાદિના શબ્દો વડે સસ્તુત થતા પોતપોતાના નગરોથી બહાર નીકળ્યા હતા

(निग्गच्छित्ता एगयाओ मिलायति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

બહાર નીકળીને તેઓ બધા એક સ્થાને એકઠા થયા એકઠા થઈને તેઓ બધા જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ ત્યાથી મિથિલા નગરી તરફ રવાના થયા ॥સૂ૦૩૨॥

मूलम्–तएण से कुभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव० हय जाव सेण्णं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणइ, तएणं कुंभए ण्हाए सण्णद्धे हत्थिखंध० सकोरट० सेयवरचामराहि० महया भिहिल मज्झमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता विदेहं जणवय मज्झंमज्झेणं जेणेव देस अंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खधावरनिवेस करेइ, कृत्वा, जियसत्तूपामोक्खा छप्पियरायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिय रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना संद्धि सपलग्गा यावि होत्था, तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पि रायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीरघाइयनिविडियचिधद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसि पडिसेहिंति, तएणसे कुभए जियसत्तूपामोक्खेहि छहि राईहि हयमहित जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव अधारणिज्जमितिकट्टु सिग्घतुरिय जाव वेइय जेणेव मिहिला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिल अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥सू०३३॥

टीका—' तएण ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भको राजाऽस्या

'तएण से कुभए राया ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण इसके बाद (से कुभए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बल

तएण से कुभएराया इत्यादि ॥

टीकार्थ–(त एण) त्यार पछी (से कुभए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बल

कथाया लब्धार्थः= ज्ञातार्थ. सन् 'बलवाउय' बलव्यापृत=सैन्यव्यापारपरायण= सैन्यनायकमित्यर्थः, शब्दयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत् भो देवानुप्रिय ! क्षिप्रमेव 'हयजाव सेण्ण' हय०यावत्-सैन्य-हयगजरथप्रवरयोध-कलित चतुरङ्गयुक्त सैन्य 'सन्नाहेह' सनाहय=सन्नद्ध कुरु-सज्जीकुर्वित्यर्थ । यावत् प्रत्यर्पयति, ततोऽसौ सेनापति सैन्य सज्जीकृत्य, कुम्भक राजान निवेदयति-हे स्वामिन् ! सैन्यमस्माभिः सन्नद्धीकृतमिति । ततस्तदनन्तर स कुम्भको राजा स्नातः सन्नद्धः = युद्धोपकरणशस्त्रास्त्रकवचादि धारणेन सज्जीकृतशरीरः हस्ति-स्कन्धवरगत सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कोरण्टपुष्परचितमालायुक्तेन छत्रेण स्वभृत्येन

वाउय सद्दावेइ) कुभक राजा को जब यह पता चला-तब उस ने अपने सेना नायकको बुलाया-(सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा-(खिप्पामेव० हय गय जाव सेण्ण सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणह) भो देवानुप्रिय ! तुम जल्दी से जल्दी हय-गज-रथ एव प्रवर योधाओं से युक्त चतुरंगिणी सेना को सजाओ । और इस की हमे पीछे आकर खबर दो-सेना नायक ने ऐसा ही किया सेना सजा कर राजा को खबर दी कि हे स्वामिन् ! हमने आप की आज्ञानुसार सैन्य सज्जित कर दिया है । (तएण कुभए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खध० सकोरट० सेयवर चामराहिं महया मिहिल मज्झ मज्झेण णिज्जाइ) इस के बाद कुभक राजा ने स्नान कर अपने शरीर को युद्धोपकरणो से-शस्त्र अस्त्र एव कवचादि के धारण से-सज्जित किया । बाद में हाथी के स्कध पर

वाउय सद्दावेइ) કુભક રાજાને જ્યારે આ વાતની જાણ થઇ ત્યારે તેણે પોતાના સેનાપતિને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને તેને કહ્યું—

(खिप्पामेव० हय गय जाव सेण्ण सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે ત્વરે ઘોડા, હાથી, રથ અને બહાદૂર યોદ્ધાઓ-વાળી ચતુરંગિણી સેના તૈયાર કરો અને અમને ખબર આપો સેનાપતિએ પોતાનુ કામ પુરૂ કર્યું, અને રાજાને સૂચના આપી કે હે સ્વામિન્ ! તમારી આજ્ઞા પ્રમાણે અમે સેના તૈયાર કરી દીધી છે

(तएण कुभए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खध० सकोरट० सेयवरचामराहिं महया मिहिल, मज्झ मज्झेण णिज्जाइ)

ત્યારબાદ કુભક રાજાએ સ્નાન કર્યું અને પછી પોતાના શરીરને યુદ્ધના સાધનોથી સુસજ્જ કર્યું એટલે કે રાજાએ શસ્ત્ર, અસ્ત્ર, કવચ વગેરે ધારણ કર્યા તેઓ હાથીની ઉપર સવાર થયા, રાજાને હાથી ઉપર સવાર થયેલા

मूलम्–तएणं से कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव० हय जाव सेण्णं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणइ, तएणं कुंभए ण्हाए सण्णद्धे हत्थिखंध० सकोरंट० सेयवरचामराहिं० महया भिहिल मज्झमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देस अंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंधावारनिवेस करेइ, कृत्वा, जियसत्तूपामोक्खा छप्पियरायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिय रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभएण रन्ना सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभय राय हयमहियपवरवीरघाइयनिवाडियचिंधद्धयपडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसिं पडिसेहिंति, तएणसे कुंभए जियसत्तूपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहित जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव अधारणिजमितिकट्टु सिग्घतुरिय जाव वेइय जेणेव मिहिला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिल अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥सू०२३॥

टीका—' तएण ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भको राजाऽस्या

'तएणं से कुंभए राया ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएणं इसके बाद (से कुंभए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बल

तएण से कुंभएराया इत्यादि ॥

टीकार्थ–(त एण) त्यार पछी (से कुंभए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बल

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो यत्रैव कुम्भकस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कुम्भकेन राज्ञा सार्धं ' सपलग्गा ' सप्रलग्नाः-युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । तत स्तदनन्तर खलु जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजान. कुम्भक राजान ' हयमहिय-पवरवीरघाइयनिवडियचिंधद्धयछत्तपडाग ' हतमथितप्रवरवीरघातित-निपतित चिह्नध्वजच्छत्रपताक-हता.=मारिताः, मथिताः=विलोडिता'-ताडिता तथा घातिता घातम् आघात व्यथा प्राप्ताः प्रवरवीराः=महाभटाः, यस्य स हतमथित प्रवरवीरघातित., आर्षत्वाद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्नध्वजप ताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजछत्रपताकः, तत कर्मधारयः, तमेनभूत नष्टसैन्य ध्वजपताकमित्यर्थ ' किच्छप्पाणोवगय ' कृच्छ्रप्राणोपगत-कृच्छ्रे-कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओ कीप्रतीक्षा करते हुए वे वहींपर युद्धके लिये कटिबद्ध होकर ठहरगये । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति) इतने में वे जितशत्रु प्रमुख छहों राजा जहा वे कुभक राजा पहुँचे हुए थे-वहा आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था) आते ही उन लोगोंने कुम्भकराजा के साथ युद्ध करना प्रारभ कर दिया । (तएण ते जियसत्तू पमोक्खा छप्पि रायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीर घाइयनिवडियचिंधद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसिं पडि सेहिंति) युद्ध में उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने कुभकराजा के कितनेक वीरो को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बूरी तरह पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप ध्वज-पताका एव छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कु भए तेणेव उवागच्छति) એટલામા તેઓ છએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યા કુ ભકરાજા હતા ત્યા પહોચ્યા.

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धि सपलग्गा यावि होत्था) અને તેઓએ તરત જ યુદ્ધ શરૂ કરી દીધુ

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो कुभय राय हयमहिय पवरवीर घाइय निवडिय चिंधद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसोदिसिं पडिसेहिंति)

યુદ્ધમા તેઓ જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ કુભક રાજાના કેટલાક વીરોને જાનથી મારી નાખ્યા, કેટલાક વીરોને ભયકર રીતે ટીપી નાખ્યા, અને કેટલાક વીરોને જખમી બનાવી દીધા તેમજ રાજ ચિહ્ન રૂપ ધ્વજ-

घ्रियमाणेन युक्तः, तथा-उद्धूयमानैः=वीज्यमानैः श्वेतवरचामरैर्युक्तः तथा-महा हयगजरथादियुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया सपरिवृत, सर्वद्धर्या सपन्न तूरीमेर्यादिवाद्यमहानादेन मिथिलानगर्या मध्यमध्येन 'णिज्जाइ' निर्याति=निर्गच्छति। निर्गत्य विदेहजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशान्तः स्वदेशस्य सीमा वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'खंधावारनिवेस' स्कन्धावारनिवेश=स्कन्धावारस्य शिविरस्य 'छावनी' इति भाषामसिद्धस्य निवेश-स्थापन, कुर्वन्ति। कृत्वा स कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः 'पडिवालेमाणे' प्रतीक्षमाणः, युद्धस-ज्जः युद्धाय सज्जन शस्त्रास्त्रकवचबन्धेन युद्धार्थमुद्यतः सन् प्रतितिष्ठति। ततस्तदनन्तर

विराजमान हो गये। उन के बैठते ही। छत्र धारियों ने उन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र धारण किया चमर ढोर ने वालों ने उन के ऊपर श्वेत चमर ढोर ना प्रारभ कर दिया। इस प्रकार महागज, हय, रथादि से युक्त चतुरगिणी सेना से घिरे हुए अपनी पूर्ण तैयारीके साथ मिथिला नगरी के बीचसे होकर निकले। (णिगच्छित्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ) निकल कर विदेह जनपद के बीच से होकर जहा अपने देश की सीमा थी वहा पहुँचे।

(उवागच्छित्ता खधावारनिवेस करेइ) वहा पहुँच कर उन्होंने वहीं अपनी छावनी स्थापित कर दी-(करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ) बादमें जितशत्रु प्रमुख

જોઇને છત્રધારીઓએ કોરટ પુષ્પોની માળાથી શોભતુ છત્ર ધર્યું ચામર ઢોળનાર ભૃત્યોએ ચામરો ઢોળવાનુ શરૂ કર્યું આ રીતે મહાગજ હય રથ વગેરે તેમજ ચતુરગિણી સેના યુક્ત થઇને પોતાની પૂરી તૈયારી સાથે મિથિલા નગરીની વચ્ચેના રાજમાર્ગ ઉપરથી બહાર નીકળ્યા

(णिगच्छित्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ) નીકળીને વિદેહ જનપદની વચ્ચે થઈને જ્યા પોતાના દેશની હદ હતી ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता खंधावारनिवेस करेइ) ત્યા પહોચીને તેઓએ ત્યા જ સેનાની છાવણી નાખી (करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ)

ત્યારબાદ જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓની પ્રતીક્ષા કરતા તેઓ ત્યાજ યુદ્ધને માટે કમ્મર કસીને રોકાયા

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो यत्रैव कुम्भकस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कुम्भकेन राज्ञा सार्धं ' सपलग्गा ' सम्प्रलग्नाः-युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । तत स्तदनन्तर खलु जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानः कुम्भक राजान ' हयमहिय-पवरवीरघाइयनिवडियचिंधद्धयछत्तपडाग ' हतमथितप्रवरवीरघातित-निपतित चिह्नध्वजच्छत्रपताक-हताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिता'-ताडिता., तथा घातिता घातम् आघात व्यथा प्राप्ताः प्रवरवीराः=महाभटा', यस्य स हतमथित प्रवरवीरघातित., आर्षत्वाद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्न ध्वज पताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजछत्रपताकः, तत कर्मधारय', तमेवभूत नष्टसैन्य-ध्वजपताकमित्यर्थ ' किच्छप्पाणोवगय ' कृच्छ्रप्राणोपगत-कृच्छ्रे-कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओ कीप्रतीक्षा करते हुए वे वहींपर युद्धके लिये कटिबद्ध होकर ठहरगये । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति) इतने मे वे जितशत्रुप्रमुख छहों राजा जहा वे कुभक राजा पहुँचे हुए थे-वहा आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था) आते ही उन लोगोंने कुम्भकराजा के साथ युद्ध करना प्रारभ कर दिया । (तएण ते जियसत्तू पमोक्खा छप्पि रायाणो कुभय रोय हयमहियपवरवीर घाइयनिवडियचिंधद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसिं पडि से हिंति) युद्ध में उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओ ने कुभकराजा के कितनेक वीरो को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बुरी तरह पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप ध्वज-पताका एव छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कु भए तेणेव उवागच्छति)

એટલામા તેઓ છએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યા કુ ભકરાજા હતા ત્યા પહોચ્યા

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धि सपलग्गा यावि होत्था) અને તેઓએ તરત જ યુદ્ધ શરૂ કરી દીધુ

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो कुभय राय हयमहिय पवरवीर धाइय निवडिय चिंधद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसोदिसिं पडिसेहिंति)

યુદ્ધમા તેઓ જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ કુ ભક રાજાના કેટલાક વીરોને જાનથી મારી નાખ્યા, કેટલાક વીરોને ભયકર રીતે ટીપી નાખ્યા, અને કેટલાક વીરોને જખમી બનાવી દીધા તેમજ રાજ ચિહ્ન રૂપ ધ્વજ-

घियमाणेन युक्तः, तथा-उद्धूयमानैः=वीज्यमानैः श्वेतवरचामरैर्युक्त' तथा-महा हयगजरथादियुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया सपरिवृत, सर्वद्धर्या सपक्षः तूरीमेर्या दिवाद्यमहानादेन मिथिलानगर्या मध्यमध्येन 'णिज्जाइ' निर्याति=निर्गच्छति। निर्गत्य विदेहजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशान्तः स्वदेशस्य सीमा वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'खधावारनिवेस' स्कन्धावारनिवेश=स्कन्धावारस्य शिविरस्य 'छावनी' इति भाषाप्रसिद्धस्य निवेश-स्थापन, कुर्वन्ति। कृत्वा स कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः 'पडिवालेमाणे' प्रतीक्षमाणः, युद्धस-ज्जः युद्धाय सज्जः शस्त्रास्त्रकवचधारणेन युद्धार्थमुद्यतः सन् प्रतितिष्ठति। ततस्तदनन्तर

विराजमान हो गये। उन के बैठते ही। छत्र धारियों ने उन के ऊपर कोरट पुष्पो की माला से विराजित छत्र धारण किया चमर ढोर ने वालों ने उन के ऊपर श्वेत चमर ढोर ना प्रारभ कर दिया। इस प्रकार महागज, हय, रथादि से युक्त चतुरगिणी सेना से घिरे हुए अपनी पूर्ण तैयारीके साथ मिथिला नगरी के बीचसे होकर निकले। (णिगच्छि त्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ) निकल कर विदेह जनपद के बीच से होकर जहा अपने देश की सीमा थी वहा पहुँचे।

(उवागच्छित्ता खधावारनिवेस करेइ) वहा पहुँच कर उन्होंने वहीं अपनी छावनी स्थापित कर दी-(करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ) बादमें जितशत्रु प्रमुख

જોઇને છત્રધારીઓએ કોરટ પુષ્પોની માળાથી શોભતુ છત્ર ધર્યું ચામર ઢોળનાર ભૃત્યોએ ચામરો ઢોળવાનુ શરૂ કર્યું આ રીતે મહાગજ હય રથ વગેરે તેમજ ચતુરગિણી સેના યુક્ત થઇને પોતાની પૂરી તૈયારી સાથે મિથિલા નગરીની વચ્ચેના રાજમાર્ગ ઉપરથી બહાર નીકળ્યા

(णिगच्छित्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ) નીકળીને વિદેહ જનપદની વચ્ચે થઇને જ્યા પોતાના દેશની હદ હતી ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता खंधावारनिवेस करेइ) ત્યા પહોચીને તેઓએ ત્યા જ સેનાની છાવણી નાખી (करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ)

ત્યારબાદ જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓની પ્રતીક્ષા કરતા તેઓ ત્યાજ યુદ્ધને માટે કમ્મર કસીને રોકાયા

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो यत्रैव कुम्भकस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कुम्भकेन राज्ञा सार्धं ' सपलग्गा ' सम्प्रलग्ना'-युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । तत स्तदनन्तर खलु जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजान कुम्भक राजान ' हयमहिय-पवरवीरघाइयनिवडियचिंधद्धयछत्तपडाग ' हतमथितप्रवरवीरघातित-निपतित चिह्नध्वजच्छत्रपताक-हताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिता.-ताडिता., तथा घातिता घातम् आघात व्यथा प्राप्ताः प्रवरवीराः=महाभटाः, यस्य स हतमथित प्रवरवीरघातितः, आर्षत्वाद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्न ध्वज पताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजछत्रपताक', तत कर्मधारयः, तमेवभूत नष्टसैन्य ध्वजपताकमित्यर्थं ' किच्छप्पाणोवगय ' कृच्छ्रप्राणोपगत-कृच्छ्रे-कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओ कीप्रतीक्षा करते हुए वे वहींपर युद्धके लिये कटिबद्ध होकर ठहरगये । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति) इतने में वे जितशत्रु प्रमुख छहों राजा जहा वे कुभक राजा पहुँचे हुए थे-वहा आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था) आते ही उन लोगोंने कुम्भकराजा के साथ युद्ध करना प्रारभ कर दिया । (तएण ते जियसत्तू पमोक्खा छप्पि रायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीर घाइयनिवडियचिधद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसिं पडि से हिंति) युद्ध में उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने कुभकराजा के कितनेक वीरो को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बुरी तरह पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप ध्वज-पताका एव छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति)

એટલામા તેઓ છએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યા કુભકરાજા હતા ત્યા પહોચ્યા

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था) અને તેઓએ તરત જ યુદ્ધ શરૂ કરી દીધુ

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो कुभय राय हयमहिय पवरवीर घाइय निवडिय चिंधद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसोदिसिं पडिसेहिंति)

યુદ્ધમા તેઓ જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ કુભક રાજાના કેટલાક વીરોને જાનથી મારી નાખ્યા, કેટલાક વીરોને ભયકર રીતે ટીપી નાખ્યા, અને કેટલાક વીરોને જખમી બનાવી દીધા તેમજ રાજ ચિહ્ન રૂપ ધ્વજ-

उपगता यस्य स कृच्छ्रप्राणोपगतस्तत प्राणसङ्कटापन्नम् ' दिसं दिसं '=एकस्मा दिशः-अपरा दिश-' पडिसेहेंति ' प्रतिषेधयति=निवारयन्ति ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखैः षड्भीराजभिर्हतमथित-यावत् प्रवरवीरघातित चिह्नध्वजछत्रपताकः कृच्छ्रप्राणोपगतः प्रतिषिद्ध सन् अस्थामा=आत्मबलरहितः, अबलः=सैन्यरहितः अत एव ' अवीरिए '-अवीर्य.=उत्साहरहित. । यावत्- 'आधारणिज्ज' अधारणीयम्-आत्माधार्यते स्थाप्यते यत्र तद् धारणीय, न धारणी यमिति निग्रहः, अधारणीय परबलम्-अत्र शत्रुसैन्ये ममात्मधारणमशक्यमित्यर्थः। इतिकृत्वा-एव विचार्य, शीघ्र त्वरित यावत् चलित वेगित यत्रैव मिथिला तत्रैवो

प्राण बहुत अधिक सकट मे पड़ गये । वह वहा से दूसरी तरफ भागना भी चाहता था-तो भी उन्हों ने उसे दूसरी ओर भागने नही दिया। (तएण से कुभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राइहिं हयमहिय० जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव आधारणिज्जमित्तिकट्टु सिग्घ तुरिय जाव वेइय जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ) इस तरह जितशत्रु आदि छहों राजाओ से हत मथित तथा घातित प्रवरवीरवाला और निपातित चिह्न ध्वज पताका वाला वह कुभक राजा जब संकट युक्त प्राणोवाला बन गया और युद्धभूमि से दूसरी ओर भागने के लिये असमर्थ हो गया तब आत्मबल और सैन्यबल से रहित बना हुआ वह उत्साह रहित हो गया। एव परबल को अजेय मान कर वहा से शीघ्र ही त्वरा युक्त, वेगयुक्त चाल से जहा मिथिला नगर थी उस तरफ आया।

પતાકા-અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધા આ રીતે તેના પ્રાણ આફતમા ફસાઇ ગયા ત્યાથી તે બીજી તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ

(तएण से कुभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहिय० जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव आधारणिज्जमित्ति कट्टु सिग्घ तुरिय जाव वेइय जेणेव महिला तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે જીતશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હત, મથિત તેમજ ઘાતિત યોદ્ધાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજા પતાકાવાળા તે કુભક રાજાના પ્રાણ પણ જ્યારે આફતમા ફસાઈ ગયા અને રણભૂમિમાથી નાસી જવાની પણ તક ગુમાવી બેઠા ત્યારે આત્મબળ અને સૈન્યબળ વગર બનેલા તેઓ સાવ નિરૂત્સાહી થઇ ગયા આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી વેગયુક્ત ઝડપભેર ચાલથી જ્યા મિથિલા નગરી હતી તે તરફ ર[illegible] થયા

पागच्छति उपागत्य मिथिलामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य मिथिलाया द्वाराणि 'पिहेइ' पिदधाति=आवृणोति। पिधाय 'रोहसज्जे' रोधमज्ज =रोधेन शत्रु-भयाद् गमनागमनमार्गमवरुध्य सज्ज =रक्षा कुर्वन् तिष्ठति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्-तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता मिहिल रायहाणिं णिस्सचार णिरुच्चार सव्वओ समता ओरुभित्ताणं चिट्ठंति, तएण से कुभए राया मिहिल रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह राईण अतराणिय छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे बहूहि आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाए हि य कम्मयाहि य परिणामियाहि य बुद्धीहि परिणामेमाणे२ किंचि आय वा उवाय वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियाय इ। इम च णं मल्लीं विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव बहूहि खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुभगस्स पायग्गहण करेइ। तएण कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाई नो परियाणाइ तुसिणीए सचिट्ठइ। तएण

वहा आते ही वह मिथिला नगरी मे प्रविष्ट हो गया। (अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ) प्रविष्ट होकर उसने मिथिला के द्वारों को बद करवा दिया और शत्रु के भय से आने जाने के मार्ग को रोक कर अपनी रक्षा करने में तल्लीन हो गया ॥ सूत्र ३३ ॥

ત્યા આવતા જ મિથિલા નગરીમા તેઓ પ્રવિષ્ટ થયા
(अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ)
પ્રવેશીને તેમણે મિથિલાના દરવાજાઓને બધ કરાવી દીધા અને શત્રુની બીકથી આવવા જવાના માર્ગોને પણ રોકીને પોતાની રક્ષા માટે તેઓ તત્પર થઈ ગયા ॥ સૂત્ર "૩૩"

उपगता यस्य स कृच्छ्रप्राणोपगतस्तं प्राणसङ्कटापन्नम् ' दिग्ग दिश '=एकस्मा दिशः-अपरा दिश-' पडिसेहेंति ' प्रतिषेधयति=निवारयन्ति ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखै' षड्भीराजभिर्हतमथित-यावत् प्रवरवीरघातित चिह्नध्वजछत्रपताकः कृच्छ्रप्राणोपगत' प्रतिपिद्ध सन् अस्थामा=आत्मबलरहितः, अबलः=सैन्यरहितः अत एव ' अवीरिए '-अवीर्यः=उत्साहरहित. । यावत्- 'आधारणिज्ज' अधारणीयम्-आत्माधार्यते स्थाप्यते यत्र तद् धारणीय, न धारणी यमिति विग्रहः, अधारणीय परबलम्-अत्र शत्रुसैन्ये ममात्मधारणमशक्यमित्यर्थः। इतिकृत्वा-एव विचार्य, शीघ्र त्वरित यावत् चलित वेगित यत्रैव मिथिला तत्रैवो

प्राण बहुत अधिक सकट में पड़ गये । वह वहा से दूसरी तरफ भागना भी चाहता था-तो भी उन्हों ने उसे दूसरी ओर भागने नहीं दिया। (तएण से कुभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राइहिं हयमहिय० जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव आधारणिज्जमित्तिकट्टु सिग्घ तुरिय जाव वेइय जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ) इस तरह जितशत्रु आदि छहों राजाओ से हत मथित तथा धातित प्रवरवीरवाला और निपातित चिह्न ध्वज पताका वाला वह कुभक राजा जब संकट युक्त प्राणोंवाला बन गया और युद्धभूमि से दूसरी ओर भागने के लिये असमर्थ हो गया तब आत्मबल और सैन्यबल से रहित बना हुआ वह उत्साह रहित हो गया। एव परबल को अजेय मान कर वहां से शीघ्र ही त्वरा युक्त, वेगयुक्त चाल से जहा मिथिला नगर थी उस तरफ आया।

પતાકા-અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધા આ રીતે તેના પ્રાણ આફતમા ફસાઇ ગયા ત્યાથી તે બીજી તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ

(तएण से कुभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहिय० जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव आधारणिज्जमित्ति कट्टु सिग्घ तुरिय जाव वेइय जेणेव महिला तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે જીતશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હત, મથિત તેમજ ધાતિત યોદ્ધાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજા પતાકાવાળા તે કુભક રાજાના પ્રાણ પણ જ્યારે આફતમા ફસાઈ ગયા અને રણભૂમિમાથી નાસી જવાની પણ તક ગુમાવી બેઠા ત્યારે આત્મબળ અને સૈન્યબળ વગર બનેલા તેઓ સાવ નિરૂ ત્સાહી થઇ ગયા આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી વેગયુક્ત ઝડપભેર ચાલથી જ્યા મિથિલા નગરી હતી ને તરફ રવાના થયા

पागच्छति उपागत्य मिथिलामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य मिथिलाया द्वाराणि 'पिहेइ' पिदधाति=आवृणोति। पिधाय 'रोहसज्जे' रोधसज्ज=रोधेन शत्रुभयाद् गमनागमनमार्गमवरुध्य सज्ज=रक्षा कुर्वन् तिष्ठति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्-तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता मिहिल रायहाणिं णिस्सचारं णिरुच्चार सव्वओ समता ओरुभित्ताणं चिट्ठति, तएण से कुभए राया मिहिल रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्हं राईणं अतराणिय छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे बहूहि आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाए हि य कम्मयाहि य परिणामियाहि य बुद्धीहि परिणामेमाणे२ किंचि आय वा उवाय वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ। इम च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना पहाया जाव बहूहि खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुभगस्स पायग्गहण करेइ। तएण कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाई नो परियाणाइ तुसिणीए सचिट्ठइ। तएण

वहा आते ही वह मिथिला नगरी मे प्रविष्ट हो गया। (अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ) प्रविष्ट होकर उसने मिथिला के द्वारों को बद करवा दिया और शत्रु के भय से आने जाने के मार्ग को रोक कर अपनी रक्षा करने में तल्लीन हो गया ॥ सूत्र ३३ ॥

ત્યા આવતા જ મિથિલા નગરીમા તેઓ પ્રવિષ્ટ થયા
(अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ)
પ્રવેશીને તેમણે મિથિલાના દરવાજાઓને બધ કરાવી દીધા અને શત્રુની બીકથી આવવા જવાના માર્ગોને પણ રોકીને પોતાની રક્ષા માટે તેઓ તત્પર થઈ ગયા ॥ સૂત્ર "૩૩"

उपगता यस्य स कृच्छ्रप्राणोपगतस्तत भावस्तत्ता तत्त्वम् ' दिसं दिसं '=एकस्मा दिशः-अपरा दिश-' पडिसेहेंति ' प्रतिषेधयति=निवारयन्ति ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखैः षड्भीराजभिर्हतमथित-यावत् प्रवरवीरघातित चिह्नध्वजछत्रपताकः कृच्छ्रप्राणोपगत' प्रतिषिद्ध सन् अस्थामा=आत्मबलरहित, अबलः=सैन्यरहितः अत एव ' अवीरिए '-अवीर्यः=उत्साहरहित । यावत्- 'आधारणिज्ज' अधारणीयम्-आत्माधार्यते स्थाप्यते यत्र तद् धारणीय, न धारणी यमिति विग्रहः, अधारणीय परबलम्-अत्र शत्रुसैन्ये ममात्मधारणमशक्यमित्यर्थः। इतिकृत्वा-एव विचार्य, शीघ्र त्वरित यावत् चलित वेगित यत्रैव मिथिला तत्रैवो

प्राण बहुत अधिक सकट में पड़ गये । वह वहा से दूसरी तरफ भागना भी चाहता था-तो भी उन्हों ने उसे दूसरी ओर भागने नहीं दिया। (तएण से कुभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राइहिं हयमहिय० जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव आधारणिज्जमित्तिकट्टु सिग्घ तुरिय जाव वेइय जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ) इस तरह जितशत्रु आदि छहों राजाओ से हत मथित तथा घातित प्रवरवीरवाला और निपातित चिह्न ध्वज पताका वाला वह कुभक राजा जब संकट युक्त प्राणोवाला बन गया और युद्धभूमि से दूसरी ओर भागने के लिये असमर्थ हो गया तब आत्मबल और सैन्यबल से रहित बना हुआ वह उत्साह रहित हो गया। एव परबल को अजेय मान कर वहा से शीघ्र ही त्वरा युक्त, वेगयुक्त चाल से जहा मिथिला नगर थी उस तरफ आया।

પતાકા-અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધા આ રીતે તેના પ્રાણ આફતમા ફસાઇ ગયા ત્યાથી તે બીજી તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ

(तएण से कुभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहिय० जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव आधारणिज्जमित्ति कट्टु सिग्घ तुरिय जाव वेइय जेणेव महिला तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે જીતશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હત, મથિત તેમજ ઘાતિત યોદ્ધાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકાવાળા તે કુભક રાજાના પ્રાણ પણ જ્યારે આફતમા ફસાઈ ગયા અને રણભૂમિમાથી નાસી જવાની પણ તક ગુમાવી બેઠા ત્યારે આત્મબળ અને સૈન્યબળ વગર બનેલા તેઓ સાવ નિરૂ ત્સાહી થઇ ગયા આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી વેગયુક્ત ઝડપભેર ચાલથી જ્યા મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયા

'णिस्सचार' निः सचार=यथा जनाना प्रवेशनिर्गमरूप सचारस्तत्र न स्यात् तथा, 'णिरुच्चार' निस्चार-उन्-उ र्ं चरण=प्राकारस्योपरिभागेन गमनागमनरूप जनाना यथा न भवेत् तथा, न्द द्वय क्रिया विशेषण यद्वा-निस्च्चारम्-उच्चारः पुरीष तद्विसर्गार्थं यज्जनाना बहिर्गमन तद्रहित यथा स्यात् तथा, सर्वत' सर्व-दिक्षु=समन्तात् सर्वविदिक्षु 'ओरुभित्ताण' अवरु य=वेष्टयित्वा तिष्ठन्तिस्म।

ततस्तदन्तर खलु स कुम्भको राजा मिथिलां राजधानीमवरुद्धां ज्ञात्वा 'अब्भतरियाए' आभ्यन्तरिकायाम् = अभ्यन्तरवर्तिन्याम् उपस्थानशालायाम्-आस्थानमण्डपे सभास्थान इत्यर्थ., सिंहासनवरगतः-राज्ञ प्रधानासनसमुपविष्टः, तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा षण्णा राज्ञाम् अन्तराणि=अवसराणि, छिद्राणि=दूषणानि, विवरान्=एकान्तान्, मर्माणि=गुप्तदोषान् अत्र चकारो वाक्यालङ्कारपर, अलभ-

---

मिहिला-तेणेव उवागच्छति) जितशत्रु प्रमुख वे छहों राजा जिस तरफ मिथिला नगरी थी उस ओर बढे (उवागच्छित्ता मिहिल रायहाणिं णिस्सचार णिरुच्चार सव्वओं समता ओरुभित्ताण चिट्ठति) वहा आकर उन्हों ने उस मिथिला राजधानीको सब ओरसे घेर लिया-इससे मनुष्योंका आना जाना रुक गया-यहा तक हो गया कि कोई भी व्यक्ति कारण सर भी बाहर नही निकल सका (तएणं से कुभए राया मिहिल रायहाणिं रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए) इस के अनन्तर कुभक राजा ने अपनी राजधानी मिथिला नगरी को शत्रुओ द्वारा रुद्ध जाना-तब किले की भीतर रहे हुए सभामडप मे स्थित सिंहासन पर बैठकर वह (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे) उन

જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ મિથિલા નગરી તરફ વઢ્યા

(उवागच्छित्ता मिहिल रायहाणिं णिम्मचार णिसच्चार सव्वओ समता ओसमित्ताण चिट्ठति)

ત્યા મિથિલા નગરીની પાસે આવીને ચોમેર તેઓએ વેરો નાખ્યો આ રીતે માણસોની અવર જવર સદતર બધ થઈ ગઈ

तएण से कुभए राया मिहिल रायहाणिं रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उवट्ठाणसालाए, सीहासणवरगए)

ત્યારબાદ જ્યારે કુભક રાજાએ પોતાની રાજધાની મિથિલા નગરીને શત્રુઓ વડે ઘેરાએલી જોઈ ત્યારે તેઓ કિલ્લાની અદર સભામડપ સિહાસન ઉપર બેસીને

(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे)

मल्ली विदेहरायवरकन्नाकुभगं पव वयासी-तुब्भेण ताओ अण्णदा मम एज्जमाण जाव निवेसेह, किण्णं तुब्भ अज्ज ओहय मण सकप्पे जाव झियायह ?, तएणं कुभए मल्लिं विदेहरायवरकन्न एवं वयासी-एव खलु पुत्ता तव कज्जे जियसत्तूपामोक्खेहि छहि राईहिं दूया सपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा तेसि दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिल रायहाणि निस्सचार जाव चिट्ठति । तएणं अह पुत्ता तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि४ अलभमाणे जाव झियामि, तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभय राय एव वयासी-माण तुब्भ ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव झियायह, तुब्भेणं ताओ तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह राईण पत्तेय रहसिय दूयसपेसे करेह, एगमेग एव वदह -तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकण्ण तिकट्टु सझाकालसमयसि पविरलमणुसासि निसतसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणिं अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणिए दुवाराइ पिहेह, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह, तएणं कुभए एव० त चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—' तएण ते ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु जियशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिला राजधानीं

' तएण ते जियसत्तू पामोक्खा ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा) इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यार पछी (जियसत्त पामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति)

' णिस्सचार' निः सचार=यथा जनाना प्रवेशनिर्गमरूप. सचारस्तत्र न स्यात् तथा, ' णिरुच्चार ' निरुच्चार–उत्–उ र्ं चरण=प्राकारस्योपरिभागेन गमनागमनरूप जनाना यथा न भवेत् तथा, ¯द दूय क्रिया विशेषण यद्वा–निरुच्चारम्–उच्चारः पुरीष तद्विसर्गार्थं यज्जनाना बहिर्गमन तद्रहित यथा स्यात् तथा, सर्वत' सर्व-दिक्षु=समन्तात् सर्वविदिक्षु ' ओरुभित्ताण ' अवरु-य=वेष्टयित्वा तिष्ठन्तिस्म ।

ततस्तदन्तर खलु स कुम्भको राजा मिथिलां राजधानीमवरुद्धां ज्ञात्वा ' अब्भतरियाए ' आभ्यन्तरिकायाम् = अभ्यन्तरवर्तिन्याम् उपस्थानशालायाम्– आस्थानमण्डपे सभास्थान इत्यर्थ , सिंहासनवरगतः–राज्ञ प्रधानासनसमुपविष्टः, तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा षण्णा राज्ञाम् अन्तराणि=अवसराणि, छिद्राणि=दूषणानि, विवरान्=एकान्तान्, मर्माणि=गुप्तदोषान् अत्र चकारो वाक्यालङ्कारपर , अलभ-

---

मिहिला–तेणेव उवागच्छति) जितशत्रु प्रमुख वे छहों राजा जिस तरफ मिथिला नगरी थी उस ओर बढे (उवागच्छित्ता मिहिल रायहा-णिं णिस्सचार णिसच्चार सव्वओ समता ओसभित्ताण चिट्ठति) वहा आकर उन्हों ने उस मिथिला राजधानीको सब ओरसे घेर लिया–इससे मनुष्योंका आना जाना रुक गया–यहा तक हो गया कि कोई भी व्यक्ति कारण सर भी बाहर नही निकल सका (तएणं से कुभए राया मिहिल रायहाणिं रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए) इस के अनन्तर कुभक राजा ने अपनी राजधानी मिथिला नगरी को शत्रुओ द्वारा रुद्ध जाना–तब किले की भीतर रहे हुए सभामडप मे स्थित सिंहासन पर बैठकर वह (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे) उन

જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ મિથિલા નગરી તરફ વળ્યા

(उवागच्छित्ता मिहिल रायहाणिं णिस्सचार णिसच्चार सव्वओ समता ओसभित्ताण चिट्ठति)

ત્યા મિથિલા નગરીની પાસે આવીને ચોમેર તેઓએ ઘેરો નાખ્યો આ રીતે માણસોની અવર જવર સદંતર બધ થઈ ગઈ

तएण से कुभए राया मिहिल रायहाणिं रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उव ट्ठाणसालाए, सीहासणवरगए)

ત્યારબાદ જ્યારે કુભક રાજાએ પોતાની રાજધાની મિથિલા નગરીને શત્રુઓ વડે ઘેરાએલી જોઈ ત્યારે તેઓ કિલ્લાની અદર સભામડપ સિહાસન ઉપર બેસીને

(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे)

मल्ली विदेहरायवरकन्नाकुंभगं एवं वयासी-तुब्भेण ताओ अण्णदा मम एज्जमाण जाव निवेसेह, किण्णं तुब्भ अज्ज ओहय मण सकप्पे जाव झियायह ?, तएणं कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता तव कज्जे जियसत्तूप्पमुखेहि छहि राईहिं दूया सपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएण ते जियसत्तूपामोक्खा तेसि दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणि निस्सचार जाव चिट्ठति। तएणं अह पुत्ता तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह राईण अंतराणि४ अलभमाणे जाव झियामि, तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभय राय एव वयासी-माण तुब्भ ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव झियायह, तुब्भेणं ताओ तेसिं जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह राईणं पत्तेय रहसिय दूयसपेसे करेह, एगमेग एव वदह-तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकण्णं तिकट्टु सझाकालसमयसि पविरलमणुसंसि निसतंसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणिं अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइ पिहेह, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह, तएणं कुंभए एवं० त चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—'तएण ते' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु जियशत्रुप्रमुखा. षडपि राजानो यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिला राजधानीं

'तएण ते जियसत्तू पामोक्खा' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा) इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यार भाद (जियसत्त पामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति)

'इम च णं' अस्मिन् काले खलु, अत्रार्षत्वात्सप्तम्यर्थे द्वितीया मल्ली विदेहराजवरकन्या स्नाता यावद् बहीभिः 'खुज्जाहिं' कुब्जाभिः=वक्रसस्थानाभिर्दासीभिः सपरिवृता यत्र कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य राज्ञ पादग्रहण – चरणस्पर्शपूर्वक नमन करोति । ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मल्लीं विदेहराजवरकन्या 'णो आढाइ' नो आद्रियते नो परिजानाति, 'मल्ली समागता' इत्यपि न जानाति तूष्णीकः मौनभावसहित' सतिष्ठतेस्म । ततस्तदन्तर

दुःखित होने लगा (इम च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना, ण्हाया जाव बहूहिं खुज्जाहिं सपरिवुडा जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ) इसी समय विदेह राजवरकन्या मल्ली कुमारी स्नान कर वस्त्राभरणों से अलकृत शरीर होकर अनेक वक्र सस्थान वाली दासियोंके साथ जहां कुभकराजा थे वहा आई। (उवागच्छित्ता कुभगस्स पायग्गहण करेइ) आकर उसने अपने पिता कुभक राजा के चरणों में नमे (तएणं कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाइ णो परियाणाइ, तुसिणीए सचिट्ठइ) परन्तु व्यग्रचित्त होने से विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी का कुभक राजा ने कोई आदर नही किया और उसे इस बातका ही पता चला कि मल्लीकुमारी आई हैं। केवल वह मौनभाव धारण किये हुए चुपचाप बैठा रहा (तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुभग एव वयासी) पिता की इस परिस्थिति

(इम च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव बहूहिं खुज्जाहिं सपरिवुडा जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ)

આ અરસામા વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ સ્નાન કર્યું અને ત્યાર પછી વસ્ત્રો, આભરણો તેમજ અલકારોથી અલકૃત થઇને ઘણી વક્ર સસ્થાન વાળી દાસીઓની સાથે કુભક રાજાની પાસે ગઈ

(उवागच्छित्ता कुभगस्स पायग्गहण करेइ) અને ત્યા જઇને તેણે પોતાના પિતા કુભક રાજાના ચરણોમા નમન કર્યું

(तएण कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाइ, णो परियाणाइ, तुसिणीए सचिट्ठइ)

વ્યાકુળ ચિત્તવાળા કુભક રાજાએ વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનો આદર કર્યો નહિ કે સત્કાર કર્યો નહિ રાજાને તો માત્ર આટલુ જ ભાન થયુ કે મલ્લીકુમારી આવી છે

રાજા સાવ મૂગા થઈને બેસી જ રહ્યા (तएण मल्ली विदेहरायवर कन्ना कुभग एव वयासी) પિતાની આવી હાલત જોઈને વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ તેમને પૂછ્યુ કે—

मान =अभाप्नुवन्, बहुभिः=, आयै'=इष्टसिद्धिउपायै'-सावनैश्च 'उप्पत्तियाहि' औत्पत्तिकाभि =स्वाभाविकीभिः-शास्त्राभ्यासेन विनैव समुत्पन्नाभिरित्यर्थ, 'वेण इयाहि' वैनयिकीभिः=विनयतः प्राप्ताभिः, 'कम्मयाहि' कार्मिकाभिः=अभ्यास लब्धाभिश्च अत्रापि चकारा यथायोग्यार बोधकाः, बुद्धिभि' 'परिणामेमाणे २' परिणमयन् परिणमनकुर्वन्-अमात्यैः सह विचारयन्नित्यर्थः, कमपि आय वा उपाय वा अलभमानः 'ओहयमणसकप्पे' अपहृतमन' सकल्पः=विध्वस्तमनोरथः सन् यावत् 'झियायइ' ध्यायति=आर्तध्यान कुर्वन्नास्तेस्म ।

जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के अवसरों को, दूषणों को विवरों को एव गुप्तदोषों को देखने की ताक में रहने लगा-परन्तु जब अपने इन शत्रुओं के उसे अवसर दूषण आदि देखने में नहीं आये तब उसने बहूहिं, आयेहिं य, उवाएहिं य, उप्पत्तियाहिं य, वेणइयाहिं य, कम्म याहिं य परिणामियाहिं य बुद्धीहिं परिणामेमाणे २) अनेकविध इष्ट सिद्धिकारक उपायों से उन्हे परास्त करने की बात सोची तथा औत्प त्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी एव परिणामि की बुद्धियों से मन्त्रियों के साथ बैठकर बार २ इस बात का विचार भी किया परन्तु इस स्थिति में उसे (कि चि आय वा उवाय वा अलभमाणे) जब इष्ट सिद्धिकारक कोई भी उपाय नजर नहीं आया तब वह (ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ) अपहृत मनः सकल्प होकर अर्तध्यान करने लग गया-

---

જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓના અવસરોને, દૂષણોને, વિવરોને અને ગુહ્ય દોષોને જોવા માટે લાગ જોતા બેસી રહ્યા પણ જ્યારે આ કામમા પણ તે સફળ થઈ શકયા નહિ એટલે કે શત્રુ પક્ષના દૂષણો વગેરે તે જાણી શકયા નહિ ત્યારે તેમણે

(बहूहिं, आएहिं य उवाएहिं य उप्पत्तियाहिय, वेणइयाहिय, कम्मयाहिय, परिणामियाहिय, बुद्धीहिं परिणामे माजे २)

જાતજાતના ઈષ્ટ સિદ્ધિ કરનારા ઉપાયોથી તેઓને હરાવવાની વાત ઉપર વિચાર કર્યો, તેમજ ઔત્પાતિકી, વૈનયિકી, કાર્મિકી અને પારિણામિકી બુદ્ધિ ઓથી મંત્રીઓની સાથે બેસીને વારવાર આ સમસ્યા ઉપર મંત્રણા પણ કરી પણ એવી ગંભીર હાલતમા તેઓને (किं चि आय वा उवाय वा अलभमाणे જ્યારે ઈષ્ટ સિદ્ધિ માટેનો કોઇ પણ ઉપાય જણાયો નહિ ત્યારે (ओहयमण सकप्पे जाव झियायइ) દુખી થઇને આર્તધ્યાન કરવા લાગ્યા.

' इम च ण ' अस्मिन् काले खलु, अनार्षत्वात्सप्तम्यर्थे द्वितीया मल्ली विदेहराजवरकन्या स्नाता यावद् बहीभिः ' खुज्जाहिं ' कुब्जाभिः=वक्रसस्थानाभिर्दासीभिः सपरिवृता यत्र कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य राज्ञ पाद-ग्रहण – चरणस्पर्शपूर्वक नमन करोति । ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मल्लीं विदेहराजवरकन्या ' णो आढाइ ' नो आद्रियते नो परिजानाति, ' मल्ली समागता ' इत्यपि न जानाति तूष्णीकः मौनभावसहितः सतिष्ठतेस्म । ततस्तदन्तर

दुःखित होने लगा (इम च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना, ण्हाया जाव बहूहिं खुज्जाहिं सपरिवुडा जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ) इसी समय विदेह राजवरकन्या मल्ली कुमारी स्नान कर वस्त्राभरणो से अलकृत शरीर होकर अनेक वक्र सस्थान वाली दासियोंके साथ जहां कुभकराजा थे वहा आई । (उवागच्छित्ता कुभगस्स पायग्गहण करेइ) आकर उसने अपने पिता कुभक राजा के चरणों में नमे (तएणं कुभए मल्लि विदेहरायव-रकन्न णो आढाइ णो परियाणाइ, तुसिणीए सचिट्ठइ) परन्तु व्यग्रचित्त होने से विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी का कुभक राजा ने कोई आदर नही किया और उसे इस बातका ही पता चला कि मल्लीकुमारी आई है । केवल वह मौन भाव धारण किये हुए चुपचाप बैठा रहा (तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुभग एव वयासी) पिता की इस परिस्थिति

(इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जावबहूहिं खुज्जाहिं सपरि वुडा जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ)

આ અરસામા વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ સ્નાન કર્યું અને ત્યાર પછી વસ્ત્રો, આભરણો તેમજ અલકારોથી અલકૃત થઈને ઘણી વક્ર સસ્થાન વાળી દાસીઓની સાથે કુભક રાજાની પાસે ગઈ

(उवागच्छित्ता कुभगस्स पायग्गहण करेइ) અને ત્યા જઈને તેણે પોતાના પિતા કુભક રાજાના ચરણોમા નમન કર્યું

(तएण कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाइ, णो परियाणाइ, तुसिणीए सचिट्ठइ)

વ્યાકુળ ચિત્તવાળા કુભક રાજાએ વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનો આદર કર્યો નહિ કે સત્કાર કર્યો નહિ રાજાને તો માત્ર આટલુ જ ભાન થયુ કે મલ્લીકુમારી આવી છે

રાજા મૌન ભૂગા થઈને જેવા જ રહ્યા (तएण मल्ली विदेहरायवर कन्ना कुभग एव वयासी) પિતાની આવી હાલત જોઈને વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ તેમને પૂછયુ કે—

मल्ली विदेहराजवरकन्या कुम्भकं राजानमेवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे तात! यूय खलु अन्यदा=अन्यस्मिन् समये माम् 'एज्जमाण' एयमानाम् आगच्छन्तीं यावत्-दृष्ट्वा, आद्रियध्वे, परिजानीथ, उत्सङ्गे 'निवेसेह' निवेशयथ, किं=केन कारणेन खलु यूयमधोपहतमनः सङ्कल्पो यावत्-ध्यायथ=आर्तध्यानं कुरुथ ? तत =मल्लीवचनश्रवणानन्तरं कुम्भको राजा मल्लीं विदेहराजवरकन्यामेवमवादीत्-हे पुत्रि ! एवं खलु तव कार्ये विवाहरूपे कार्ये निमित्तीकृत्येत्यर्थः, जितशत्रुप्रमुखैः षड्भीराजभिर्दूताः समेषिताः, ते खलु मया 'असक्कारिया' असत्कृताः=अनादृता

को देखकर उस विदेहवरराजकन्या मल्लिकुमारी ने उन से पूछा-(तुब्भे ण ताओ अण्णया मम एज्जमाण जाव निवेसेह, किण्ण तुब्भ अज्जे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायह) हे तात ! पहिले जब कभी आप मुझे आती हुई देखते थे तो उस समय मेरा आदर करते थे-मुझे जानलेते थे, और अपनी गोद में बैठा लेते थे-परन्तु आज क्या कारण है जो आप अपहतमन. सकल्प होकर चिन्ताग्रस्त बैठे हुए है

(तएण कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी) इस प्रकार सुन कर राजाने अपनी विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी से कहा - (एव खलुपुत्ता। तव कज्जे जिय सत्तूप्पमुखेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया तेण मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएण ते जियसत्तू पामोक्खा तेसिं दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा परिकुविया- समाणा मिहिल रायहाणिं निस्सचार जाव चिट्ठति) हे पुत्रि ! तुम्हारे साथ वैवाहिक -

(तुब्भे ण ताओ अण्णया मम एज्जमाण जाव निवेसेह किण्ण तुब्भ अज्जे ओहयमण संकप्पे जाव झियायह

હે પિતા ! પહેલા ગમે ત્યારે મને આવતી જોતા ત્યારે મારો તમે આદર કરતા હતા, મને જાણી લેતા હતા અને મને પોતાના ખોળામા બેસાડતા હતા પણ આજે શુ કારણ છે કે તમે ઉદાસ થઇને આર્તધ્યાનમા બેઠા છો (तएण कुभएमल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी) આ રીતે રાજાએ વિદેહ રાજવર કન્યાની વાત સાભળીને તેણે કહ્યુ કે—

(एव खलु पुत्ता तव कज्जे जियसत्तूप्पमुखेहिं छहिं राईहिं दूया सपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छुढा, तएण ते जियसत्तू पामोक्खा तेसिं दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिल रायहाणिं निस्सचार जाव चिट्ठति)

यावत्-असमानिता अपद्वारेण 'निच्छूढा' निक्षिप्ताः-निः सारिताः। तत खलु ते जितशत्रुप्रमुखास्तेषा दूतानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'परिकुविया' परिकुपिताः =अतिशयेन क्रोधाविष्टाः 'समाणा' सन्त, मिथिला राजधानी नि.सचार यावत्-निरुच्चार=सर्वतः समन्ताद्वरु य 'चिट्ठति' तिष्ठन्ति। ततस्तस्मात् कारणात् खल्वह हे पुत्रि! तेषा जितशत्रु प्रमुखाणा पण्णा राज्ञा अन्तराणि४_अलभमानो यावद् बहुभिरायैरुपायैरौत्पत्तिक्यादिबुद्धिभिश्च परिणमयन् क्रमप्यायमुपाय वा अलभमान अपहतमनः सकल्पः सन् 'झियामि' ध्यायामि=आर्तध्यान करोमि।

सबन्ध जोडने के लिये जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओने अपने २ दूत मेरे पास भेजे थे

मैंने उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया-और उनके उन दूतोंको अनादृत एव असमानित कर महल के पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया उन दूतो से जब इन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने इस परिस्थिति को सुना तो वे बहुत अधिक कुपित हुए। और इसी लीये उन्हों ने अब मिथिला राजधानी को सब तरफ घेर लिया है। जिस का परिणाम यह हुआ कि लोगो का आना रुक गया और वह कारणवश बाहिर नही आनी जाती है। (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणिं ४ अलभमाण जाव झियामि) इसलिये हे पुत्रि! मे अभी तक उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओ के अन्तर आदि को-अवसर आदि को देखने की ताकमे रहा आया-परन्तु मुझे उसका

હે પુત્રિ! જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ તમારી સાથે લગ્ન કરવાના વિચારથી મારી પાસે દૂતો મોકલ્યા હતા

મે તેમના પ્રસ્તાવને સ્વીકાર્યો નહિ અને તેમના દૂતોનો અનાદર અને અસમાન કરીને મહેલના પાછળના નાના બારણેથી તેઓને બહાર કઢાવી મૂક્યા પોતાના દૂતોની પાસેથી આ બધી વિગત જાણીને જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ ખૂબ જ ગુસ્સે થયા, અને હવે તેઓએ મિથિલા નગરીને ચારે બાજુથી ઘેરી લીધી છે તેના પરિણામે લોકોની અવર જવર બધ થઈ ગઇ છે કોઈપણ કારણસર લોકો બહાર જઈ શકતા નથી એવી ભયકર પરિસ્થિતિ ઊભી થઇ છે (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि अलभमाणे जाव झियामि)

એટલા માટે હે પુત્રિ! હજી સુધી પણ હું જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓના અન્તર વગેરેને એટલે કે અવસર વગેરેની લાગમા રહ્યો પણ મને

मल्ली विदेहराजवरकन्या कुम्भकराजानमेवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे तात! यूय खलु अन्यदा=अन्यस्मिन् समये माम् 'एज्जमाणं' एजमानाम् आगच्छन्तीं यावत्-दृष्ट्वा, आद्रियध्वे, परिजानीथ, उत्सङ्गे 'निवेसेह' निवेशयथ, किं=केन कारणेन खलु यूयमधोपहतमनः सकल्पो यावत्-ध्यायथ=आर्तध्यान कुरुथ ? तत =मल्लीवचनश्रवणानन्तर कुम्भको राजा मल्ली विदेहराजवरकन्यामेवमवादीत्-हे पुत्रि ! एव खलु तव कार्ये विवाहरूप कार्यं निमित्तीकृत्येत्यर्थ., जितशत्रुप्रमुखैः षड्भीराजभिर्दूताः समेषिता., ते खलु मया 'अवदारिया' अपदृताः=अनादृता

को देखकर उस विदेहवरराजकन्या मल्लिकुमारी ने उन से पूछा-(तुम्हे ण ताओ अण्णया मम एज्जमाण जाव निवेसेह, किण्ण तुब्भ अज्जे ओहयमणसकप्पे जाव झियायह) हे तात ! पहिले जब कभी आप मुझे आती हुई देखते थे तो उस समय मेरा आदर करते थे-मुझे जानलेते थे, और अपनी गोद में बैठा लेते थे-परन्तु आज क्या कारण है जो आप अपहतमनः सकल्प होकर चिन्ताग्रस्त बैठे हुए है

(तएण कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी) इस प्रकार सुन कर राजाने अपनी विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी से कहा - (एव खलुपुत्ता। तव कज्जे जिय सत्तूप्पमुखेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया तेण मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएण ते जियसत्तू पामोक्खा तेसिं दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा परिकुविया- समाणा मिहिल रायहाणिं निस्सचार जाव चिट्ठति) हे पुत्रि ! तुम्हारे साथ वैवाहिक

(तुब्भे ण ताओ अण्णया मम एज्जमाण जाव निवेसेह किण्ण तुब्भ अज्जे ओहयमण सकप्पे जाव झियायह

હે પિતા ! પહેલા જ્યારે મને આવતી જોતા ત્યારે મારો તમે આદર કરતા હતા, મને બોલી લેતા હતા અને મને પોતાના ખોળામા બેસા ડતા હતા પણ આજે શુ કારણ છે કે તમે ઉદાસ થઇને આર્તધ્યાનમા બેઠા છો (तएण कुभएमल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी) આ રીતે રાજાએ વિદેહ રાજવર કન્યાની વાત સાભળીને તેણે કહ્યુ કે—

(एव खलु पुत्ता तव कज्जे जियसत्तूप्पमुखेहिं छहिं राईहिं दूया सपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छुढा, तएण ते जियसत्तू पामोक्खा तेसिं दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिल रायहाणिं निस्सचार जाव चिट्ठति)

यावत्-असमानिता अपद्वारेण 'निच्छूढा' निक्षिप्ताः-निः सारिताः। तत खलु ते जितशत्रुप्रमुखास्तेषा दूतानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'परिकुविया' परिकुपिताः =अतिशयेन क्रोधाविष्टाः 'समाणा' सन्त, मिथिला राजधानी नि सचार यावत्-निरुच्चार=सर्वतः समन्तादवरु ध 'चिट्ठति' तिष्ठन्ति। ततस्तस्मात् कारणात् खल्वह हे पुत्रि! तेषा जितशत्रु प्रमुखाणा पण्णा राज्ञा अन्तराणि४ अलभमानो यावद् बहुभिरायैरुपायैरौत्पत्तिक्यादिबुद्धिभिश्च परिणमयन् कमप्यायमुपाय वा अलभमान अपहतमनः सकल्पः सन् 'झियामि' ध्यायामि=आर्तध्यान करोमि।

सबन्ध जोडने के लिये जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओने अपने २ दूत मेरे पास भेजे थे

मैंने उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया-और उनके उन दूतोंको अनादृत एव असमानित कर महल के पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया उन दूतो से जब इन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने इस परिस्थिति को सुना तो वे बहुत अधिक कुपित हुए। और इसी लीये उन्हों ने अब मिथिला राजधानी को सब तरफ घेर लिया है। जिस का परिणाम यह हुआ कि लोगो का आना रुक गया और वह कारणवश बाहिर नही आती जाती है। (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणिं ४ अलभमाण जाव झियामि) इसलिये हे पुत्रि! म अभी तक उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओ के अन्तर आदि को-अवसर आदि को देखने की ताकमे रहा आया-परन्तु मुझे उसका

હે પુત્રિ! જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ તમારી સાથે લગ્ન કરવાના વિચારથી મારી પાસે દૂતો મોકલ્યા હતા

મે તેમના પ્રસ્તાવને સ્વીકાર્યો નહિ અને તેમના દૂતોનો અનાદર અને અસમાન કરીને મહેલના પાછળના નાના બારણેથી તેઓને બહાર કઢાવી મૂક્યા પોતાના દૂતોની પાસેથી આ બધી વિગત જાણીને જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ ખૂબ જ ગુસ્સે થયા, અને હવે તેઓએ મિથિલા નગરીને ચારે બાજુથી ઘેરી લીધી છે તેના પરિણામે લોકોની અવર જવર બધ થઈ ગઇ છે કોઈપણ કારણસર લોકો બહાર જઈ શકતા નથી એવી ભયકર પરિસ્થિતિ ઊભી થઇ છે (तएणं अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि अलभमाणे जाव झियामि)

એટલા માટે હે પુત્રિ! હજી સુધી પણ હુ જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓના અન્તર વગેરેને એટલે કે અવસર વગેરેની લાગમા રહ્યો પણ મને

ततस्तदनन्तरं खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या कुम्भकं राजानम् एवम् वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे तात ! यूय खलु मा अपहतमन सकल्पो यावत् ध्यायथ, हे तात ! यूय खलु तेषां जितशत्रुप्रमुखाणा षण्णा राज्ञा प्रत्येकं रहसि दूतसप्रेषण कुरुत, एकैक मत्येव वदत-' तव=तुभ्य दास्यामि मल्लीं विदेहराजवरकन्याम् ' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, सन्ध्याकालसमये - सूर्येऽस्तगतेसति ' प्रविरलमनुष्ये-मार्गादौ क्वचिद् क्वचिद् प्रविरला अल्पा मनुष्या यत्र स तथा तस्मिन्, रात्रिप्रद्वावे सतोत्पन्ने तथा निशान्ते=ननकालकले व्यतिक्रान्ते,

कोई भी छिद्र आदि नहीं मिल रहा है। मैंने अनेक विध उपायों से उन्हें परास्त करने का विचार भी किया-औत्पत्ति की आदि बुद्धियों से सचिवों के साथ उन्हें वश करने की मत्रणा भी की परन्तु मुझे कुछ भी उपाय इन्हें वश या परास्त करने का नजर नहीं आ रहा है-अतः अपहृतमनः सकल्प वाला बना हुआ मैं इस समय चिन्ताग्रस्त हो रहा हूँ। (तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुभय राय एव वयासी) इस प्रकार अपने पिता कुभक राजा की बात सुनकर उस विदेहराज वर कन्या ने उन से कहा - (माण तुब्भे ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव झियायह) हे तात ! आप अपहत मनः सकल्प होकर यावत् चिन्तित न बने मैं इस विषयमें आपको उपाय बतलाती हूँ (तुब्भेण ताओ तेसिं जिय सत्तू पामोक्खाण छण्हं रायाणं पत्तेय रहसिय दूय सँपेसे करेह) हे पिताजी ! वह उपाय यह है कि आप उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं में से प्रत्येक राजा के पास एकान्त में अपना दूत

અત્યાર સુધી તેમનુ એક પણ છિદ્ર (ખામી) ની જાણ થઇ શકી નહિ ઘણા ઉપાયોથી તેમને હરાવવાના વિચારો પણ મે કર્યા છે, ઔત્પત્તિકી વગેરે બુદ્ધિઓથી મત્રીઓની સાથે વિચારણા પણ કરી છે પણ મને તેઓને સ્વાધીન બનાવવા કે હરાવવા માટેનો કોઈ એક પણ ઉપાય જણાતો નથી એથી અપહતમન સકલ્પવાળો હુ આર્તધ્યાનમા તલ્લીન થઇને બેઠો છુ (तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुभय राय एव वयासी) આ રીતે પોતાના પિતા કુભક રાજાની વાત સાભળીને વિદેહરાજવર કન્યાએ તેમને કહ્યુ કે- (मा ण तुब्भे ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव झियायह) હે તાત ! અત્યારે તમે ચિતામગ્ન છો એટલે તેને દૂર કરવા માટે હુ એક ઉપાય બતાવુ છુ (तुब्भेण ताओ तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह रायाण पत्तेय रहसिय दूयस पेसे करेह) હે પિતા ! તમે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓમાથી દરેક રાજાની પાસે એકાતમા પોતાનો દૂત મોકલો

प्रति निशान्ते जनानां निद्रोपगतत्वेन सर्वथा जनध्वनिसंचाररहिते यस्मिन् काले कोऽपि मार्गे दूत न पश्येदिति भावः, प्रत्येकं मिथिला राजधानीमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य गर्भगृहेषु अभ्यन्तरवर्तिभवनेषु अनुप्रवेशयत, ततो मिथिलाया राजधान्या द्वाराणि पिधत्त, आच्छादयत पिधाय रोधसज्जः-रोधेन प्रतिरोधेनाऽऽत्मरक्षा कुर्वन् तिष्ठत। ततः=मल्लीवाक्यश्रवणानन्तरं खलु कुम्भको राजा मल्ल्या

भेजिये (एगमेग एव वदह-तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकण्ण त्तिकट्टु सझाकालसमयंसि पविरलमणूससि निसतंसि पडिनिसतंसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणिं अणुप्पवेसेह) वह दूत जाकर उन प्रत्येक से ऐसा-कहे कि हम अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी तुम्ह देंगे। ऐसा कहकर (दूतो से कहलवा कर) फिर उन राजाओं में से प्रत्येक राजा को आप ऐसे सध्याकाल के समय में-जब कि सूर्य बिलकुल अस्त हो गया हो-रात्रि का समय आ गया-हो मार्ग मे भी कहीं कहीं पर ही थोड़े से मनुष्य का सचार हो रहा हो-मकान भी मनुष्यो की कल कल ध्वनि से रहित हो चुके हो-सबो के निद्राधीन बन जाने से जिन में से जन ध्वनि बिलकुल ही नही प्रकट हो रही हो अपनी मिथिला नगरी में घुलवाई ये-उन्हें प्रवेश कराईये (अणुप्पवेसित्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइ पिहेह पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह तएण कुभए एव त चेव जाव पवे सेह, रोहसज्जे चिट्ठह) प्रवेश करवा कर उन्हें आप गर्भ गृहों में-ठहरा दीजिये।

(एगमेग एव वदह तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकण्ण त्तिकट्टु सझाकाल समयसि पविरलमणूससि निसतंसि पडिनिसतंसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणिं अणुप्पवेसेह)
તે દૂત તેમની પાસે જઇને દરેકને આ પ્રમાણે કહે કે અમારી કન્યા વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તમને આપીશુ આ પ્રમાણે દૂત વડે દરેકની પાસે સદેશ મોકલીને તે રાજાઓમાથી દરેકને તમે સધ્યાકાળના સમયે જ્યારે સુરજ બરોબર અસ્ત થઈ ગયેા હેાય રાત્રિનેા વર્ણત થઈ ગઈ હેાય, માર્ગમા બહુ જ થેાડા માણુસેાની અવર જવર થવા માડી હેાય, માણુસેાના ઘેાઘાટથી ઘરેા પણ જ્યારે રાત થઈ ગયા હેાય ત્યારે મિથિલા નગરીમા બેાલાવેા

(अणुप्पवेसित्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइ पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह तएण कुभए एव० त चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठह)
બોલાવીને તેઓને તમે ગભ ગૃહોમા રોકેા

ततस्तदनन्तर खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या कुम्भकं राजानम् एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे तात ! यूय खलु मा अपहतमन सकल्पो यावद्-ध्यायथ, हे तात ! यूय खलु तेषा जितशत्रुपामुख्याणा षण्णा राज्ञा प्रत्येकं गतानि दूतसप्रेषण कुरुत, एकैक प्रत्येव वदत-' तुभ्य दास्यामि मल्लीं विदेहराजवर कन्याम् ' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, सन्ध्याकालसमये - सूर्येऽस्तगतेसति ' प्रविरलमनुष्ये-मार्गादौ क्वचिद् क्वचिद् प्रविरला अल्पा मनुष्या यत्र स तथा तस्मिन्, रात्रिप्रद्रावे सतीत्यर्थे तथा निशान्ते=जनकृकले ध्वनिवर्जिते,

---

कोई भी छिद्र आदि नहीं मिल रहा है। मैंने अनेक विध उपायों से उन्हें परास्त करने का विचार भी किया-औत्पत्ति की आदि बुद्धियों से सचिवों के साथ उन्हें वश करने की मन्त्रणा भी की परन्तु मुझे कछ भी उपाय इन्हें वश या परास्त करने का नजर नहीं आ रहा है-अतः अपहृतमनः सकल्प वाला बना हुआ मैं इस समय चिन्ताग्रस्त हो रहा हूँ। (तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुभय राय एव वयासी) इस प्रकार अपने पिता कुम्भक राजा की बात सुनकर उस विदेहराज वर कन्या ने उन से कहा - (माण तुब्भे ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव झियायह) हे तात ! आप अपहृत मनः सकल्प होकर यावत् चिन्तित न बने मैं इस विषयमें आपको उपाय बतलाती हूँ (तुब्भेण ताओ तेसिं जिय सत्तू पामोक्खाण छण्हं रायाण पत्तेय रहसिय दूय सपेसे करेह) हे पिताजी ! वह उपाय यह है कि आप उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं में से प्रत्येक राजा के पास एकान्त में अपना दूत

અત્યાર સુધી તેમનુ એક પણ છિદ્ર (ખામી) ની જાણ થઇ શકી નહિ ઘણા ઉપાયોથી તેમને હરાવવાના વિચારો પણ મે કર્યા છે, ઔત્પત્તિકી વગેરે બુદ્ધિઓથી મત્રીઓની સાથે વિચારણા પણ કરી છે પણ મને તેઓને સ્વાધીન બનાવવા કે હરાવવા માટેનો કોઈ એક પણ ઉપાય જણાતો નથી એથી અપહૃતમન સકલ્પવાળો હુ આર્તધ્યાનમા તલ્લીન થઈને બેઠો છુ (तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुभय राय एव वयासी) આ રીતે પોતાના પિતા કુભક રાજાની વાત સાભળીને વિદેહરાજવર કન્યાએ તેમને કહ્યુ કે- (माणं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव झियायह) હે તાત ! અત્યારે તમે ચિતામગ્ન છો એટલે તેને દૂર કરવા માટે હુ એક ઉપાય બતાવુ છુ (तुब्भेण ताओ तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्हं रायाण पत्तेय रहसिय दूयसपेसे करेह) હે પિતા ! તમે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓમાથી દરેક રાજાની પાસે એકાતમા પોતાનો દૂત મોકલો

भूषा समाणा सएहि २ उत्तरिज्जएहि णासाइं पिहेंति, पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठंति, तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तूप्पामोक्खे एवं वयासी—किण्णं तुब्भ देवाणुप्पिया ! सएहिं२ उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा चिट्ठह ?, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्न एवं वयंति—एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेणं असुभेण गंधेण अभिभूया समाणा सएहिं२ जाव चिट्ठामो ।

तएणं मल्ली विदेहरायकन्ना ते जियसत्तूपामोक्खे एवं वयासी—जइ ता देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग० जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असण पाण खाइमसाइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे२ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे इम्मस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरूवमुत्तपूइयपुरिसपुण्णस्स सडणपडण विद्धंसणधम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ ?, तं मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्स एसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह, एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावइंसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था, सहजाया जाव पव्वइया, तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेण इत्थीनामगोय कम्म निव्वत्तेमि जइण तुब्भ चोत्थं उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएण अहं छट्ठ उवसंपज्जित्ताणं विहरामि,

विदेहराजवरकन्यायाः एवम्=उक्तप्रकारेणोक्त सन् तदेव=तथैव कृत्वा यावत्-मितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः प्रवेशयति, प्रवेश्य रोधसज्जस्तिष्ठति ॥सू० ३४॥

मूलम्–तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पियरायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए जालंतरेहिं कणगमय मत्थयछिद्दु पउमुप्पलपिहाण पडिमं पासइ, एसुण मल्ली विदेहरायवरकण्णत्तिकट्टु मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा२ चिट्ठति ।

तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना पहाया जाव सव्वालंकारविभूसिया बहूहि खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ त पउम उवणेइ, तएण गंधे णिद्धावइ, से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव । तएण ते जियसत्तूपामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभि-

---

बाद में मिथिला राजधानी के द्वारों को बन्द करवा दीजिये। इस प्रकार उन्हें यहा रोक कर आप अपनी आत्म रक्षा करिये। मल्ली कुमारी के इन वचनो को सुनने के बाद कुभक राजा ने विदेह राजवर कन्या उस अपनी पुत्री मल्लीकुमारी के कहे अनुसार वैसा ही किया। अर्थात् दूतों द्वारा उन सब को अपने यहाँ बुलवा लिया एव उन्हें तल घरों में ठहरा दिया। सूत्र " ३४ "

ત્યાર પછી મિથિલા રાજધાનીના દરવાજાઓ બંધ કરાવડાવી દો, આ રીતે તેઓને અહી બંધ કરીને તમે આત્મરક્ષા કરો વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીના વચનો સાભળીને કુભક રાજાએ તેણીએ કહ્યુ તે મુજબ જ કર્યું એટલે કે દૂતો વડે તેઓ બધાને પોતાને ત્યા બોલાવી લીધા અને ગર્ભગૃહોમા તેઓને રોકી લીધા ॥ સૂત્ર " ૩૪ " ॥

भूसा समाणा सएहि २ उत्तरिज्जएहि णासाइं पिहेंति, पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठंति, तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तूप्पामोक्खे एवं वयासी-किण्णं तुब्भ देवाणुप्पिया ! सएहिं२ उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा चिट्ठह ?, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्न एवं वयंति-एव खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेणं असुभेणं गधेणं अभिभूया समाणा सएहिं२ जाव चिट्ठामो ।

तएणं मल्ली विदेहरायकन्ना ते जियसत्तूपामोक्खे एवं वयासी-जइ ता देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग० जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असण पाण खाइमसाइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे२ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे इम्मस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरूवमुत्तपूइयपुरिसपुण्णस्स सडणपडण विद्धंसणधम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ ?, त मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह, एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावइसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था, सहजाया जाव पव्वइया, तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेण इत्थीनामगोय कम्म निव्वत्तेमि जइण तुब्भं चोत्थं उवसपज्जित्ताण विहरइ. तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि.

सेसं तहेव सव्वं, तएणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा, तत्थं णं तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुब्भं ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे २ जाव साइं २ रज्जाइ उवसपज्जित्ताणं विहरइ, तएण अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउ क्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया ।

किं थ तयं पम्हुट्ठ जं थ तया भो जयत पवरामि ।
वुत्था समयं निवद्ध देवा ! तं संभरह जाइ ॥सू०३५॥

टीका—' तएण ते ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजान कल्ये-द्वितीयदिवसे ' पाउप्पभायाए ' प्रादुः प्रभातायां=प्रादुर्भूतः सजातः, प्रभातः-प्रातः कालो यस्याः सा प्रादुः प्रभाता तस्याम् अवसान प्राप्ता यामित्यर्थः रजन्या=रात्रौ, ' जलते सूरिए ' ज्वलति-उदिते सूर्ये, सुवर्णनिर्मिता मस्तकछिद्रा-मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां ' पउमुप्पलपिहाण ' पद्मोत्पलपिधानां=छिद्रोपरि कमलाच्छादनयुक्तां, प्रतिमा=प्रतिकृतिं पश्यन्ति, दृष्ट्वा, ' एसा-खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या वर्तते ' इति कृत्वा=इतिज्ञात्वा, मल्ल्या विदेहराजवर

तएण ते जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी और सूर्य का उदय अच्छी तरह हो चुका तब (जाल तरेहिं) खिडकियों के रन्ध्रों से (कणगमय मत्थयछिद्दड पउमुप्पलपिहाण पडिम पासइ) कनक मय उस प्रतिकृति को कि जिस के मस्तक में छिद्र था और वह छिद्र जिस

(तएण जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्यारબાद (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्ल पाउप्पभयाए रयणीए जलते सूरिए) તે જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ બીજે દિવસે જ્યારે રાત પૂરી થઈ અને સૂરજ ઉદય પામ્યો ત્યારે (जाल तरेहिं) બારીઓના કાણાઓમાથી (कणगमय मत्थयछिद्दड पउमुप्पलपिहाण पडिम पासइ) જેના માથામા કાણુ હતુ તેવી સોનાની પ્રતકૃતિ (भूर्तिं) ને જોઇ

(एसणं मल्ली विदेहरायवरकण्णत्तिकट्टु मल्लीए रूवे य

कन्याया रूपे=मनोहाराकारे च यौवने वयसि लावण्ये-यौवनवयोजनितकान्ति निशेषे च मूर्छिता-रूपयौवनलावण्यदर्शनेन मोहिताः, 'गिद्धा' गृद्धाः=लोलुपाः, 'गढिया' ग्रथिताः=निबद्धचित्ता, अध्युपपन्ना=अत्यन्तासक्ताः अनिमेषया निमेषपातरहितया दृष्ट्या प्रेक्षमाणा २ अनुक्षण पुनः पुनर्विलोकयन्तस्तिष्ठन्ति स्म।

ततस्तदनन्तर खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या स्नाता यावत्-सर्वालंकारविभूषिता बहीभिः कुब्जिकाभि र्यावत्-दासीभिः 'परिक्खित्ता' परिक्षिप्ता=परिवेष्ठिता यत्रैव जालगृह गवाक्षयुक्त गृह, यत्रैव कनकप्रतिमा=स्वकीया सुवर्ण-

---

का पद्मोत्पल से ढका हुआ था देखा (एमण मल्ली विदेह रायवर कण्णं कट्टुं मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्ण अणिमिसाए दिट्ठए पेहमाणा २चिट्ठति

देख कर अरे ! यह तो विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी हैं, ऐसा जान कर वे सब उस विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी के रूप यौवन एवं लावण्य पर मूर्च्छित हो गये-मोहित हो गये, लोलुप हो गये। उन में उन का चित्त बध गया। इस तरह अत्यत आसक्त होकर वे सब के सब अनिमेष दृष्टि से बार २ उस की तरफ देखते रहे। (तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिम तेणेव उवागच्छइ) इस के पश्चात् विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी स्नान आदि कर के समस्त अलकारो से विभूषित शरीर हो अनेक कुब्जक सस्थान वाली दासियो के साथ २ जहा वह जाल गृह और उस में भी

जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए-दिट्ठीए पेहमाणा २ चिट्ठति)

જોઇને "અરે આ તો વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી જ છે" આમ જાણીને તેઓ બધા વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીના રૂપ યૌવન અને લાવણ્યના પ્રભાવથી મૂર્છિત થઇ ગયા મોહિત થઈ ગયા લોલુપ થઇ ગયા તેમાં તેમનુ ચિત્ત ચોટી ગયુ આ રીતે ખૂબજ આસક્ત થઇને તેઓ બધા વારવાર તેની તરફ જોતા રહ્યા

(तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमं तेणेव उवागच्छइ)

सेसं तहेव सव्व, तएण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा, तत्थं णं तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुब्भ ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जबूदीवे २ जाव साइं २ रज्जाइ उवसपज्जित्ताणं विहरइ, तएण अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया ।

किं थ तयं पम्हुट्ठं ज थ तया भो जयत पवरमि ।
वुत्था समयं निवद्धं देवा ! तं संभरह जाइ ॥सू०३५॥

टीका—'तएण ते' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजान कल्ये-द्वितीयदिवसे 'पाउप्पभायाए' प्रादु प्रभाताया=प्रादुर्भूतः सजातः, प्रभातः-प्रातः काली यस्याः सा प्रादुः प्रभाता तस्याम् अवसान प्राप्ता यामित्यर्थः रजन्या=रात्रौ, 'जलते सूरिए' ज्वलति-उदिते सूर्ये, सुवर्णनिर्मिता मस्तकछिद्रा-मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां 'पउमुप्पलपिहाण' पद्मोत्पलपिधाना=छिद्रोपरि कमलाच्छादनयुक्तां, प्रतिमा=प्रतिकृतिं पश्यन्ति, दृष्ट्वा, 'एसा-खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या वर्तते' इति कृत्वा=इतिज्ञात्वा, मल्ल्या विदेहराज्ञवर

तएण ते जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी और सूर्य का उदय अच्छी तरह हो चुका तब (जाल तरेहिं) खिडकियों के रन्ध्रों से (कणगमय मत्थयछिद्दड पउमुप्पलपिहाण पडिम पासइ) कनक मय उस प्रतिकृति को कि जिस के मस्तक में छिद्र था और वह छिद्र जिस

(तएण जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।।

टीकार्थ-(तएण) त्यारબાદ (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्ल पाउप्पभयाए रयणीए जलते सूरिए) તે જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ બીજે દિવસે જ્યારે રાત પૂરી થઈ અને સૂરજ ઉદય પામ્યો ત્યારે (जाल तरेहि) બારીઓના કાણાઓમાથી (कणगमय मत्थयछिद्दड पउमुप्पलपिहाण पडिम पासइ) જેના માથામા કાણુ હતુ તેવી સોનાની પ્રતિકૃતિ (મૂર્તિ) ને જોઇ

(एसणं मल्ली विदेहरायवरकण्णत्तिकट्टु मल्लीए [illegible] रूवे य

ततस्तदन्तर खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या तान् जितशत्रुप्रमुखान् राज्ञ एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत् हे देवानुप्रियाः ! किं=केन कारणेन खलु यूय स्वकैरुत्तरीयै यावत्-नासिका पिधाय पराङ्मुखास्तिष्ठथ ?, ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाऽा मल्लीं विदेहराजवरकन्याम्, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदन्ति-हे देवानुप्रिये ! एव खलु वयमनेनाशुभेन-अनिष्टतरेण दुरभिगा गन्धेन, अभिभूताः सन्तः स्वकैः २ यावत्-उत्तरीयैः स्व स्व नासिका पिदाय पराङ्मुखाः, ' चिट्ठामो ' तिष्ठामः=स्थिताः स्मः ।

(पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठति' तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तू पामोक्खे एव वयासी) और दूसरी तरफ मुख करके बैठ गये । जब मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या ने उन्हें इस प्रकार देखा तो वह बोली- (किण्ण तुब्भ देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह तएण ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लीं विदेह रायवर कन्न एव वयति) हे देवानु प्रियो ! आप लोग क्यों अपने अपने उत्त रीय वस्त्रों से अपनी २ नाक को ढक कर और पुतली की ओर से मुँह फेरकर बैठ गये हैं । मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या की इस प्रकार बात सुन कर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओ ने उससे ऐसा कहा

(एव खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेण असुभेण गधेण अभिभूया समाणा सएहिं २ जाव चिट्ठामो) हे देवानुप्रिये ! हमलोगो से यह अशुभ गध सहन नही हो रही है अतः हम लोग अपने २ उत्तरीय

(पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठति तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना त जियसत्तू पामोक्खे एव वयासी)

અને તેઓ બધા મો ફેરીને બેસી ગયા ત્યારે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તેઓને આ પ્રમાણે કરતા જોયા ત્યારે તેણે કહ્યુ—

(किण्ण तुब्भ देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह तएण ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો શા કારણથી પોતાનુ નાક ઉત્તરીયવસ્ત્રના છેડાથી ઢાંકીને પ્રતિમાના તરફથી મો ફેરવી બેસી ગયા છો?

વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીની આ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ તેને કહ્યુ—

(एव खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेण असुभेण गंधेण अभिभूया समाणा सएहिं २ जाव चिट्ठामो)

मयी प्रतिकृतिः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तस्याः कनकप्रतिमायाः मस्तकात् तत्-पिधानरूप पद्मम् ' अवणेइ ' अपनयति=दूरीकरोति, पद्मापसारणेन कनकमय प्रतिकृतेर्मस्तकोपरिस्थितस्तन्मुद्घाटयतीत्यर्थः। ततस्तदनन्तर खलु गन्धः=दुर भिगन्धः, ' णिद्धावइ ' निर्धावति=शीघ्र बहिर्निःसरति, तद् यथा नामकम्-तथाहि-यथा-' अहिमडेति वा ' अहिमृतक इति वा मृतसर्पस्य तीव्रदुर्गन्धः प्रस रति, तद्वदित्यर्थः, स यावत्-गोमृतकइव, श्वमृतकइत्यादिरोध्यम् ' एत्तोवि '= एतस्मादपिदुर्गन्धात् अशुभतर एव-अत्यन्तं मनो विकृतिजनकस्तीव्रतरो दुःसहश्चैव वर्त्तते। तत खलु ते जितशत्रुप्रमुखास्तेनाशुभेन गन्धेनाभिभूताः सन्त स्वकै स्वकैरुत्तरीयैः उत्तरीयवस्त्रैः, ' णासाइ ' नासिकाः पिदधति=आच्छादयति पिधाय ' परम्मुहा ' पराङ्मुखाः परावर्तितमुखास्तिष्ठन्तिस्म।

जहा वह सुवर्णमयी प्रतिमा थी वहा आई। (उवागच्छित्ता तीसे कणग पडिमाए मत्थयाओ त पउम अवणेइ) वहा आकर के उस ने उस कनक मय पुतली के मस्तक से उस कमल को हटाया (तएण गधे णिद्धावइ) ढक्कन के हटते ही उस में से बहुत भारी दुर्गन्ध निकली (से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव) वह दुर्गंध ऐसी अशुभतर थी कि जैसी मरे हुए सर्प के सडे शरीर की होती है-तथा गोमृतक एव श्वमृतक, की होती है। (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा तेण असुभेण गधेण अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं णासाइ पिहेंति) उस दुर्गंध के निकलते ही उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने अपने २ उत्तरीय वस्त्राचलों से अपनी २ नाक को ढक लिया।

(भूर्ति) હતી ત્યા ગઈ (उवागच्छित्ता तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ त पउम) अवणेइ) ત્યા આવીને તેણે તે સોનાની પ્રતિમા પર રહેલુ સોનાના કમળવાળુ ઢાકણુ ઉઘાડયુ (तएण गध णिद्धावइ) ઢાકણુ દૂર થતા જ તેમાથી અત્યત ખરાબ દુર્ગંધ નીકળવા લાગી से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव) તે દુર્ગંધ એટલી ખરાબ હતી કે મરેલા સાપના સડી ગયેલા શરીરની તેમજ ગોમૃતક અને શ્વમૃતકની હોય છે

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा तेण असुभेण गधेण अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं णासाइ पिहेंति)

દુર્ગંધ બહાર આવતાની સાથે જ જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ પોતાના ઉત્તરીયવસ્ત્રના છેડાથી પોતપોતાનુ નાક ઢાકી દીધુ

वायोर्निर्गमनं निः श्वासः तौ दुरूपावनिष्टौ यस्य स तथा, तस्य दुरूपमूत्रपूतिकुपुरीष पूर्णस्य=दुरूपेण पूतिकेन अनिष्टगन्धवता पुरीषेण पूर्णस्य, तथा तत्र-शटनपटनविध्वंसनधर्मस्य=शटनं-कुष्ठादिरोगाङ्गुल्यादेः पतनं ज्वरादिना शैथिल्यं, विध्वसन=नाशः एते शटनादयो धर्माः स्वभावा यस्य स तस्य, कीदृश परिणामो भविष्यति? अशनाद्याहारादुद्धृतस्यैकैकग्रासस्य प्रतिदिवम प्रतिकृतौ प्रक्षिप्तस्य यदि पुरिसपुण्णस्स सडण पडण विद्धसण धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ) इस औदारिक शरीर का पुद्गल परिणमन उसकी अपेक्षा भी अधिकतर अनिष्ट दुर्गध वाला नहीं होगा क्या ? अवश्य होगा-क्योंकी यह कफ का आश्रय भूत है। समय २ पर इससे वमन का निस्सरण होता रहता है। पित्त भी इस से निकलता रहता है। शुक्र, शोणित, एव पीव इस में वाहिर वहता है। इसका जो श्वास और उच्छ्वास हैं वे महा दुरूप-अनिष्टतर हैं। यह दुरूप मूत्र एव अनिष्ट गंध वाले मल से सदा भरा रहता है। यह शटन, पटन, तथा विध्वंसन धर्म वाला है। कुष्टादि रोग द्वारा जो इस के अगुलि आदि अवयव गिर जाते हैं उस का नोम शटन है। ज्वरादि अवस्था से जो इसमें शिथिलता आ जाती है उस का नाम पतन है। नाश होने का नाम विध्वंसन है। कारण इस का इस प्रकार है कि अशनादि रूप चतुर्विध आहार से उत्पन्न हुए एक २ ग्रास का जो प्रतिदिन इस प्रतिकृति में प्रक्षिप्त किया जाता है

(इमस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वत्तासवस्स पित्तासवस्स सुक्क सोणिय पूयासवस्स दुरूव उसासनीसासस्स दुरूवमुत्त पूइयपूरिस पुण्णस्स सडण पडण निद्धसण धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ)

આ ઔદારિક શરીરનુ પુદ્ગલ પરિણમન તેના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળુ થશે નહિ ? અરે ! ચોક્કસ થશે કેમકે આ કફનુ આશ્રય છે આમાથી વારવાર વમનનુ નિસ્સરણ થતુ રહે છે પિત્ત પણ આમાથી નીકળતુ રહે છે શુક્ર, શોણિત (લોહી) અને પરૂ આમાથી બહાર વહેતુ રહે છે આમ થી એના શ્વાસોચ્છવાસ મહા દુરૂપ અનિષ્ટતર છે આ શરીર દુરૂપ મૂત્ર અને અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળા મળથી હમેશા ભરાએલુ રહે છે આ શરીર શાટન, પતન, તેમજ વિધ્વસન ધર્મવાળુ છે કોઢ વગેરે રોગ વડે જે શરીરના આગળીયો વગેરે અવયવો ખરી પડે છે તેનુ નામ શટન છે ઘડપણને લીધે શરીરમા જે શિથિલતા આવે છે તેને પતન કહેવાય છે નાશ થવું તે વિધ્વસન કહેવાય છે આનુ કારણ બતાવવામા આવેલો કોળિયો જે એક એક કરીને દરરોજ આ પૂતળીમા નાખવામા આવ્યો છે તે જ્યારે આવું તીવ્ર અનિષ્ટતર દુર્ગંધે

ततस्तदनन्तरं तेषां राज्ञां वचनं श्रुत्वा खलु मल्लो विदेहराजवरकन्या तान् जितशत्रुप्रमुखान् राज्ञः एवमवादीत्-हे देवानुप्रिया ! यदि तावत् अस्यां कनक मय्यां यावत्-प्रतिमायां 'कल्लाकल्लिं' कल्याकल्ये=प्रतिदिवसं तस्मात् मनोज्ञात् अशनपानखाद्यस्वाद्यात्=चतुर्विधाऽऽहारात् एकैकः पिण्डः=ग्रासः प्रक्षिप्यमाणः' अयमेतद्रूपः=मनोविकृतिकारकस्तीव्रतरो दुःसहो दुर्गन्धः, अशुभः=अनिष्टतरः पुद्गलपरिणामो जातः, तर्हि पुनरौदारिकशरीरस्य श्लेष्मास्रवस्य=यस्मात् कफस्रावो भवति तस्य, वान्तास्रवस्य=वान्तम्-उद्गीर्णं तस्यास्रवः स्रावो यस्माद् भवति तस्य, पित्तास्रवस्य=पित्तस्यास्रवो निः सरणं यावत् तस्येत्यर्थः । तथा शुक्रशोणित-पूयास्रवस्य दुरुच्छ्वास निःश्वासस्य=नाद्यवायुग्रहणमुच्छ्वासः शरीरान्तर्गतस्य

वस्त्राचलों से नाक ढक और इस तरफ मुँह कर फेर कर बैठ गये हैं।

(तएणं मल्लो विदेहरायवर कन्ना ते जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी)

इस के अनन्तर विदेहराजवर कन्या मल्ली कुमारी ने उन जितशत्रु प्रमुख राजों से कहा—(जइणं देवाणुप्पिया! इमीसे कणग० जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ माणुण्णाओ असणपाणखाइमसाइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे२ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे) हे देवानुप्रियो ! इस कनकमयी पुतली मे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप चतुर्विध आहारका डाला गया एक२ ग्रास जब इस प्रकारका मनोविकृति जनक अशुभ तर पुद्गल परिणामरूप दुर्गंधवाला बन गया है तो।

(इमस्स पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कसोणियपूयासवस्स- ऊसासनीसाससस्स दुरूवमुत्तपुरीय

હે દેવાનુપ્રિયે ! આ ખરાબ ગંધ અમારા માટે અસહ્ય થઈ પડી છે એથી અમે પોતપોતાના ઉત્તરીયના છેડાથી નાક દબાવીને અને આ તરફથી મોં ફેરવીને બેસી ગયા છીએ (तएणं मल्ली विदेहराजवर कन्ना ते जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी) ત્યારપછી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને કહ્યું કે—

(जइता देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग० जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असणपाणखाइम साइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આ સોનાની પૂતળીમા મનોજ્ઞ અશન પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારનો નખાએલો એક એક કોળીયો જ્યારે આ પ્રમાણે મનોવિકૃતિજનક અશુભતર પુદ્ગલ પરિણામ રૂપ દુર્ગંધવાળો થઇ ગયો છે ત્યારે—

'वायोर्निर्गमनं निः श्वासः तौ दूरूपावनिष्टौ यस्य स तथा, तस्य दूरूपमूत्रपूति-कपुरीष पूर्णस्य=दूरूपेण पूतिकेन अनिष्टगन्धवता पुरीषेण पूर्णस्य, तथा तत्र-'शटनपटनविध्वंसनधर्मस्य=शटन-कुष्ठादिरोगात्कुल्यादेः पतनं ज्वरादिना शैथिल्य, विध्वसन=नाशः एते शटनादयो धर्माः स्वभावा यस्य स तस्य, कीदृश परिणामो भविष्यति? अशनाद्याहारादुद्धृतस्यैकैकग्रासस्य प्रतिदिवस प्रतिकृतौ प्रक्षिप्तस्य यदि

पुरिसपुण्णस्स सडण पडण विद्धसण धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ) इस औदारिक शरीर का पुद्गल परिणमन उसकी अपेक्षा भी अधिकतर अनिष्ट दुर्गंध वाला नहीं होगा क्या ? अवश्य होगा-क्योंकी यह कफ का आश्रय भूत है । समय २ पर इससे वमन का निस्सरण होता रहता है । पित्त भी इस से निकलता रहता है । शुक्र, शोणित, एव पीव इस में बाहिर बहता है । इसका जो श्वास और उच्छ्वास हैं वे महा दुरूप-अनिष्टतर हैं । यह दुरूप मूत्र एव अनिष्ट गंध वाले मल से सदा भरा रहता है । यह शटन, पटन, तथा विध्वंसन धर्म वाला हैं । कुष्ठादि रोग द्वारा जो इस के अगुलि आदि अवयव गिर जाते हैं उस का नाम शटन है । ज्वरादि अवस्था से जो इसमें शिथिलता आ जाती है उस का नाम पतन है । नाश होने का नाम विध्वसन है । कारण इस का इस प्रकार है कि अशनादि रूप चतुर्विध आहार से उत्पन्न हुए एक २ ग्रास का जो प्रतिदिन इस प्रतिकृति में प्रक्षिप्त किया जाता है

(इमस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वत्तासवस्स पित्तासवस्स सुक्क सोणिय पूयासवस्स दुरूव उसासनीसासस्स दुरूवमुत्त पूइयपूरिस पुण्णस्स सडण पडण विद्धसण धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सइ)

આ ઔદારિક શરીરનુ પુદ્ગલ પરિણમન તેના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળુ થશે નહિ ? અરે ! ચોક્કસ થશે કેમકે આ કફનુ આશ્રય છે આમાથી વારવાર વમનનુ નિસ્સરણ થતું રહે છે પિત્ત પણ આમાથી નીકળતુ રહે છે શુક્ર, શોણિત (લોહી) અને પરૂ આમાથી બહાર વહેતુ રહે છે આમ થી એના શ્વાસોચ્છવાસ મહા દુરૂપ અનિષ્ટતર છે આ શરીર દુરૂપ મૂત્ર અને અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળા મળથી હમેશા ભરાએલુ રહે છે આ શરીર શટન, પતન, તેમજ વિધ્વસન ધર્મવાળુ છે દાઢ વગેરે રોગ વડે જે શરીરના આગળાયેા વગેરે અવયવેા ખરી પડે છે તેનુ નામ શટન છે ઘડપણને લીધે શરીરમા જે શિથિલતા આવે છે તેને પતન કહેવાય છે નાશ થવું તે વિધ્વસન કહેવાય છે આનુ કારણ બતાવવામા આવેલેા કોળિયેા જે એક એક કરીને દરરોજ આ પૂતળીમા નાખવામા આવ્યેા છે તે ન્યારે આવુ તીવ્ર અનિષ્ટતર દુર્ગંધ

पुद्गलपरिणामस्तीव्रतरोऽनिष्टतरोदुर्गन्धः प्रसरति, तर्हि पुनरस्यौदारिकशरीरस्य श्लेष्मादिनानाविधमलपूर्णस्य शटनपतनविध्वंसनस्वभावस्य पुद्गलपरिणामस्तस्मादप्यधिकतरोऽनिष्टदुर्गन्धो भविष्यतीत्यर्थः। तस्मात् हे देवानुप्रियाः! यूयं खलु मानुष्यकेषु कामभोगेषु मा 'सज्जत' मा सज्जत-सङ्गं मा कुरुत, 'मा' इत्यस्य प्रत्येकमपिसम्बन्धः। 'रज्जत' रज्यत-रागं मा कुरुत, 'गिज्झत' गर्धध्वम् गृद्धिं तृष्णां मा कुरुत, 'मुज्झत' मुह्यत मोहं मा कुरुत विषयदोषं मा विस्मरतेत्यर्थः, 'अज्झोववज्जत' अध्युपपद्यध्वम्=कामभोगानां ध्यानं मा कुरुतेत्यर्थः। हे देवानुप्रियाः! एवं खलु यूयं यदमितस्तृतीये भवग्रहणे अपरविदेहवर्षे पश्चिमीयमहाविदेहक्षेत्रे सलिलावत्यां सलिलावतीनामके विजये वीतशोकायां राजधान्यां महाबलप्रमुखाः सप्तापि च बालवयस्या राजानः=राजकुलगृहीतजन्मानः

यदि इस प्रकार का तीव्र अनिष्टतर दुर्गंध रूप पुद्गल परिणाम है तो फिर इस औदारिक शरीर का कि जो श्लेष्मादि नाना विध मल से परिपूर्ण हो रहा है तथा शटन पटन एव विध्वसन जिस का स्वाभाविक धर्म है पुद्गल परिणाम इस से भी अधिक तर अनिष्ट दुर्गंध वाला ही होगा

(तं माणं तुब्भे देवाणुप्पिया! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह गिज्झह, मुज्झह, अज्झोववज्जह) इसलिये हे देवानुप्रियों! तुम लोग मनुष्य भव सबधी काम भोगो में मत फँसो, उन में राग भाव मत करो तृष्णा मत बढाओ, मुग्ध मत बनो और न इन का ध्यान ही करो। (एव खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवर विदेहवासे सलिलावइसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि यालवयसया रायाणो होत्था) हे देवानुप्रियों!

---

૩૫ પુદ્ગલ પરિણામવાળુ થાય ત્યારે આ ઔદારિક શરીરનુ કે જે શ્લેષ્મ વગેરે ઘણા મળોથી ભરાએલુ છે-અને શટન, પતન, અને વિધ્વ સન જેનુ સ્વાભાવિક ધર્મ છે-પુદ્ગલ પરિણામ એના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળુ હશે જ

(तं मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह गिज्झह, मुज्झह, अज्झोववज्जह)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો! તમે મનુષ્યભવના કામ ભોગોમા ફસાશો નહિ, તેમા રાગ ઉત્પન્ન કરો નહિ, તેના પ્રતિ તૃષ્ણાનુ વર્દ્ધન કરો નહિ, મુગ્ધ થાઓ નહિ અને તેનો કોઇ દિવસ પણ વિચાર કરો જ નહિ

(एव खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेह वासे सलिलावइसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि बालवयसया रायाणो होत्था)

'होत्था' सजाता कीदृशाः ? इत्याह-'सहजाया' सहजाता=सहोत्पन्ना, यावत्-सहवर्धिताः सहक्रीडितकाः, 'पव्वइया' प्रव्रजिताः=सहैव दीक्षां गृहीतवन्त इत्यर्थः। ततः खलु हे देवानुप्रिया ! अह 'इमेण कारणेण' वक्ष्यमाणेन कारणेन स्त्रीनामगोत्र कर्म निव्वत्तेमि' निर्वर्तयामि=अर्जयामि तस्मिन भवे मया स्त्रीनामगोत्र कर्मेत्यर्थः। येन कारणेन स्त्रीनामगोत्र कर्म निर्वर्तित तदाह-'जइण' इत्यादि। यदि खलु यूय चतुर्थ=चतुर्थभक्त तप', उपसपद्य विहरथ, 'तए' ततः=तदा खलु अह षष्ठ=षष्ठभक्त तप, उपसपद्य विहरामि=तिष्ठामि। शेष तथैव सर्वम्,

---

हम तुम आज से तीसरे भव में पश्चिम महा विदेह क्षेत्र में सलिलावती नाम के विजय में वर्तमान वीतशोका नाम की राजधानी में "बालवयस्य" सात राजपुत्र थे। उस समय हम लोगों का नाम महाबल आदि था (सहजाया जाव पव्वइया) हम सब साथ ही उत्पन्न हुए थे- और साथ ही बढे हुए थे। साथ ही धूलि क्रीडा में रत रहा करते थे। निमित्त पाकर हम सातों ने ही उस समय दीक्षा धारण की थी। (तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण तुब्भ चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व) मैंने उस भव में इस कारण से स्त्री नाम गोत्रकर्म का बध किया कि तुम सब लोग यदि चतुर्थ भक्त करते तो हम भी तुम्हारे साथ चतुर्थ भक्त ही करते परन्तु कोई बहाना बनाकर पारणा के दिन भी छट्ठ आदि तपस्या कर लिया करते। यह सब विषय इसी अध्ययन में पहिले स्पष्ट किया जा चुका है।

હે દેવાનુપ્રિયો ! હું અને તમે આજથી ત્રીજા ભવમા પશ્ચિમ મહાવિદેહક્ષેત્રમા સલિલાવતી નામના વિજયમા વિદ્યમાન વીતશોકા નામની રાજધાનીમા 'બાલવયસ્ય' સાત રાજપુત્રો હતા તે સમયે અમારા નામો મહાબલ વગેરે હતા (सहजाया जाव पव्वइया) અમે બધા સાથે જ જન્મ્યા હતા અને સાથે સાથે જ મોટા થયા હતા માટીમા પણ આપણે બધા સાથે સાથે જ રમ્યા હતા સમય આવતા આપણે સાતે જણાએ દીક્ષા ધારણ કરી હતી

(तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेण इत्थीनामगोयकम्म निव्वत्तेमि जइण तुब्भ चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व)

તે ભવમા આ કારણથી સ્ત્રીનામ ગોત્ર કર્મનો બધ કર્યો તમે બધા જ્યારે ચતુર્થભક્ત કરતા ત્યારે હું પણ તમારી સાથે ચતુર્થભક્ત તો કરતોજ પરન્તુ ગમે તે બહાના હેઠળ પારણાના દિવસે પણ છઠ્ઠ વગેરે તપસ્યાઓ કરતો રહેતો હતો (આ વિષેનુ બધુ વર્ણન આ અધ્યયનમા પહેલાજ કરવામા આવ્યુ છે)

पुद्गलपरिणामस्तीव्रतरोऽनिष्टतरोदुर्गन्धः प्रसरति, तर्हि पुनरस्यौदारिकशरीरस्य श्लेष्मादिनानाविधमलपूर्णस्य शटनपतनविध्वंसनस्वभावस्य पुद्गलपरिणामस्तस्मादप्यधिकतरोऽनिष्टदुर्गन्धो भविष्यतीत्यर्थः। तस्मात् हे देवानुप्रियाः! यूयं खलु मानुष्यकेषु कामभोगेषु मा 'सज्जह' मा सज्जत-सङ्गं मा कुरुत, 'मा' इत्यस्य प्रत्येकमपिसम्बन्धः। 'रज्जह' रज्यत-रागं मा कुरुत, 'गिज्झह' गर्धध्वम् गृद्धिं तृष्णां मा कुरुत, 'मुज्झह' मुह्यत मोहं मा कुरुत विषयदोषं मा विस्मरतेत्यर्थः, 'अज्झोववज्जह' अध्युपपद्यध्वम्=कामभोगानां ध्यानं मा कुरुतेत्यर्थः। हे देवानुप्रियाः! एवं खलु यूयं यदमितस्तृतीये भवग्रहणे अपरविदेहवर्षे पश्चिमीयमहाविदेहक्षेत्रे सलिलावत्यां सलिलावतीनामके विजये वीतशोकायां राजधान्यां महाबलप्रमुखाः सप्तापि च बालवयस्या राजानः=राजकुलगृहीतजन्मानः

यदि इस प्रकार का तीव्र अनिष्टतर दुर्गंध रूप पुद्गल परिणाम है तो फिर इस औदारिक शरीर का कि जो श्लेष्मादि नाना विध मल से परिपूर्ण हो रहा है तथा शाटन पटन एवं विध्वंसन जिस का स्वाभाविक धर्म है पुद्गल परिणाम इस से भी अधिक तर अनिष्ट दुर्गंध वाला ही होगा

(तं माणं तुब्भे देवाणुप्पिया! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह गिज्झह, मुज्झह, अज्झोववज्जह) इसलिये हे देवानुप्रियो! तुम लोग मनुष्य भव सम्बंधी काम भोगों में मत फँसो, उन में राग भाव मत करो तृष्णा मत बढाओ, मुग्ध मत बनो और न इन का ध्यान ही करो। (एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवर विदेहवासे सलिलावइसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था) हे देवानुप्रियों!

રૂપ પુદ્ગલ પરિણામવાળુ થાય ત્યારે આ ઔદારિક શરીરનુ કે જે શ્લેષ્મ વગેરે ઘણા મળોથી ભરાએલુ છે-અને શાટન, પતન, અને વિધ્વંસન જેનુ સ્વાભાવિક ધર્મ છે-પુદ્ગલ પરિણામ એના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળુ હશે જ

(तं माणं तुब्भे देवाणुप्पिया! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह गिज्झह, मुज्झह, अज्झोववज्जह)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો! તમે મનુષ્યભવના કામ ભોગોમા ફસાશો નહિ, તેમા રાગ ઉત્પન્ન કરો નહિ, તેના પ્રતિ તૃષ્ણાનુ વર્દ્ધન કરો નહિ, મુગ્ધ થાઓ નહિ અને તેનો કોઇ દિવસ પણ વિચાર કરો જ નહિ

(एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेह वासे सलिलावइसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसया रायाणो होत्था)

'होत्था' सजाता कीदृशाः ? इत्याह-'सहजाया' सहजाता=सहोत्पन्ना, यावत्-सहवर्धिताः सहक्रीडितकाः, 'पव्वइया' प्रव्रजिताः=सहैव दीक्षां गृहीतवन्त इत्यर्थः। ततः खलु हे देवानुप्रिया ! अह 'इमेण कारणेण' वक्ष्यमाणेन कारणेन स्त्रीनामगोत्र कर्म निव्वत्तेमि' निर्वर्तयामि=अर्जयामि तस्मिन भवे मया स्त्रीनामगोत्र कर्मेत्यर्थः। येन कारणेन स्त्रीनामगोत्र कर्म निर्वर्तित तदाह-'जइण' इत्यादि। यदि खलु यूय चतुर्थ=चतुर्थभक्त तप', उपसपद्य विहरथ, 'तए' ततः=तदा खलु अह षष्ठ=षष्ठभक्त तप, उपसपद्य विहरामि=तिष्ठामि। शेष तथैव सर्वम्,

---

हम तुम आज से तीसरे भव में पश्चिम महा विदेह क्षेत्र में सलिलावती नाम के विजय में वर्तमान वीतशोका नाम की राजधानी में "बालव यस्य" सात राजपुत्र थे। उस समय हम लोगों का नाम महाबल आदि था (सहजाया जाव पव्वइया) हम सब साथ ही उत्पन्न हुए थे- और साथ ही बढे हुए थे। साथ ही धूलि क्रीडा में रत रहा करते थे। निमित्त पाकर हम सातों ने ही उस समय दीक्षा धारण की थी। (तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण तुब्भ चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व) मैंने उस भव में इस कारण से स्त्री नाम गोत्रकर्म का बध किया कि तुम सब लोग यदि चतुर्थ भक्त करते तो हम भी तुम्हारे साथ चतुर्थ भक्त ही करते परन्तु कोई बहाना बनाकर पारणा के दिन भी छट्ठ आदि तपस्या कर लिया करते। यह सब विषय इसी अध्ययन में पहिले स्पष्ट किया जा चुका है।

હે દેવાનુપ્રિયો ! હુ અને તમે આજથી ત્રીજા ભવમા પશ્ચિમ મહા-વિદેહક્ષેત્રમા સલિલાવતી નામના વિજયમા વિદ્યમાન વીતશોકા નામની રાજ ધાનીમા 'બાલવયસ્ય' સાત રાજપુત્રો હતા તે સમયે અમારા નામો મહાબલ વગેરે હતા (સહજાયા જાવ પવ્વઇયા) અમે બધા સાથે જ જન્મ્યા હતા અને સાથે સાથે જ મોટા થયા હતા માટીમા પણ આપણે બધા સાથે સાથે જ રમ્યા હતા સમય આવતા આપણે સાતે જણાએ દીક્ષા ધારણ કરી હતી

(तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेण इत्थीनामगोयकम्म निव्वत्तेमि जइण तुब्भ चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व)

તે ભવમા આ કારણથી સ્ત્રીનામ ગોત્ર કર્મનો બધ કર્યો તમે બધા જ્યારે ચતુર્થભક્ત કરતા ત્યારે હુ પણ તમારી સાથે ચતુર્થભક્ત તો કરતોજ પરન્તુ ગમે તે બહાના હેઠળ પારણાના દિવસે પણ છઠ્ઠ વગેરે તપસ્યાઓ કરતો રહેતો હતો (આ વિષેનુ બધુ વર્ણન આ અધ્યયનમા પહેલાજ કરવામા આવ્યુ છે)

अस्मिन्नेवाध्ययने प्रागुक्तवदेवोध्यम् । ततस्तदनन्तरं खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं कालमासे कालं कृत्वा जयन्ते विमाने उत्पन्नाः=देवभवं प्राप्ताः, तत्र खलु युष्माकं देशोनानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः, ततः खलु यूयं तस्मादेवलोकादनन्तरं चयं=देवशरीरं, त्यक्त्वा इहैव=अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे जन्म लब्धा यावत्-रत्नानि २ राज्यान्युपसम्पद्य विहरथ, ततस्तदनन्तरं खल्वहं हे देवानुप्रिया ! तस्माद् देवलोकादायुःक्षयेण च्युत्वा यावत्--'दारियत्ताए' दारिकतया पुत्रीभावेन 'पच्चायाया' प्रत्यायाता=समजाता-अथ तान् जितशत्रुप्रमुखान् षडपिराज्ञः पुनः

(तएण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा-तत्थण तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएण तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे २ जाव साइं२ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरह) हे देवानुप्रियो ! आप लोग काल मास में मृत्यु के अवसर में काल कर-जयन्त विमान में देव पर्याय से उत्पन्न हुए । वहां आप सब की कुछ कम ३२ बत्तीस सागर की स्थिति हुई । जब यह स्थिति समाप्त हो चुकी-तो उसी समय आप लोग वहां से चवकर इसी जंबूद्वीप में उत्पन्न हो गये-और अपने २ राज्यों का भोग करने लगे । (तएण अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव दारियत्ताए पच्चायाया) तुम लोगों के च्युत होने के बाद हे देवानुप्रियो ! मैं भी उस देवलोक से आयुक्षय हो जाने के कारण च्युत हुआ-और च्युत होकर कन्या रूप से उत्पन्न हो गया हूँ ।

(तएण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा तत्थण तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएण तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे२ जाव साइं२ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે કાળ માસમા મૃત્યુના વખતે કાલ કરીને જયંત વિમાનમા દેવપર્યાયથી જન્મ પામ્યા ત્યા તમારી બધાની બત્રીસ (૩૨) સાગરની સ્થિતિ કરતા કંઈક ઓછી એટલી સ્થિતિ થઈ જ્યારે આ સ્થિતિ પૂરી થઈ ત્યારે તરત જ તમે ત્યાથી ચવીને આ જંબૂદ્વીપમા ઉત્પન્ન થયા છો અને પોતપોતાના રાજ્યોનુ શાસન ચલાવવા લાગ્યા છો

(तएण अहं देवाणुप्पिया! ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव दारियत्ताए पच्चायाया)

ત્યારબાદ હે દેવાનુપ્રિયો ! હું પણ દેવલોકમાથી આયુક્ષમ હોવા બદલ આવીને અહીં પુત્રી રૂપમા જન્મ પામી છુ

पूर्वजन्मवृत्तान्त स्मारयन्ती मल्ली यदवोचत् तद् गाथया माह-किं थ तय इत्यादि। भो राजानः किं तद् विस्मृत युष्माभिः तदा=तस्मिन् काले पूर्वभवे जय तमवरे= जयन्तनामकेऽनुत्तरविमाने 'देवाः' देवाभूत्वा 'वुत्था' यूयम् उषितः = निवास कृतवन्तः, 'थ' इति वाक्यालङ्कारे' समयनिबद्धा=वयं परस्परेण प्रतिबोधनीया' इत्येव सकेतेन निबद्धा = परिगृहीता, ता देवसम्बन्धिनी जातिं जन्म 'सभरह' सस्मरतेति ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्-तएणं तेसि जियसत्तपामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहि विसुज्झमाणीहि तयावरणिज्जाणं० कम्माणं खओवसमेण ईहावोहमग्गणगवेसणं करेमाणाणं सण्णिज्जाइस्सरणे समुप्पन्ने एयमट्ठं सम्म अभिसमागच्छति, तएणं मल्लो अरहा जियसत्तूपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाइसरणे जाणित्ता गब्भघराणं दाराइं विहाडावेइ, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव

इसी पूर्वोक्त-पूर्वजन्मके वृत्तान्त को उन छह जितशत्रु प्रमुख राजाओं को याद कराती हुई मल्ली कुमारीने जो कुछ कहा वही गाथा द्वारा सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं-वह गाथा "किं थ तय पम्हुट्ठ' इत्यादि यह है। इसका तात्पर्य यह है-हे राजाओं! क्या आपलोग वह पूर्वभव भूल गये कि जिसमें हम सबलोग जयन्त नामके अनुत्तर विमान में देव होकर रहे हैं। सो "हम परस्पर मे एक दूसरे को प्रतिबोधित करेंगे" ऐसी प्रतिज्ञासे प्रतिबद्ध उस देव भवसम्बन्धी जन्मको अब याद करो॥सू० ३५॥

આ પૂર્વજન્મની વિગત છએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને બતાવતી મલ્લીકુમારીએ જે કઈ કહ્યું છે તે અહીં સૂત્રકાર ગાથા દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-

(किंथ तय पम्हुट्ठ) ઇત્યાદિ

એનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે, હે રાજાઓ શું તમે લોકો પૂર્વ ભવને ભૂલી ગયા છો કે જ્યારે અમે બધા જયન્ત નામના અનુત્તર વિમાનમા દેવ થઈને રહ્યા હતા તો "અમે એક બીજાને પ્રતિબોધિત કરીશુ" આ પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઇને મેળવવા તે દેવભવના જન્મને તમે યાદ કરો ॥સૂ "૩૫"॥

अस्मिन्नेवाध्ययने प्रागुक्तवन्द्योऽयम् । ततस्तदनन्तरं खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं कालमासे कालं कृत्वा जयन्ते विमाने उत्पन्ना=देवभवं प्राप्ताः, तत्र खलु युष्माकं देशोनानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः, ततः खलु यूयं तस्मादेवलोकादनन्तरं चयं=देवशरीरं, त्यक्त्वा इहैव=अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे ज भरतक्षेत्रे यावत्-स्वानि २ राज्यान्युपसम्पद्य विहरथ, ततस्तदनन्तरं खलु हे देवानुप्रिया ! वयमपि देवलोकादायुःक्षयेण च्युत्वा यावत्--'दारियत्ताए' दारिकतया पुत्रीभावेन 'पच्चायाया' प्रत्यायाता=समुत्पन्ना-अथ तान् जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः पुनः

(तएणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे काल किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा-तत्थणं तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे २ जाव साइं२ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरह) हे देवानुप्रियो ! आप लोग काल मास में मृत्यु के अवसर में काल कर-जयन्त विमान में देव पर्याय से उत्पन्न हुए । वहां आप सब की कुछ कम ३२ बत्तीस सागर की स्थिति हुई । जब यह स्थिति समाप्त हो चुकी-तो उसी समय आप लोग वहां से चवकर इसी जंबूद्वीप में उत्पन्न हो गये-और अपने २ राज्यों का भोग करने लगे । (तएणं अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया) तुम लोगो के च्युत होने के बाद हे देवानुप्रियो ! मैं भी उस देवलोक से आयुक्षय हो जाने के कारण च्युत हुआ-और च्युत होकर कन्या रूप से उत्पन्न हो गया हूँ ।

(तएणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे काल किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा तत्थणं तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे२ जाव साइं२ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે કાળ માસમા મૃત્યુના વખતે કાલ કરીને જયંત વિમાનમા દેવપર્યાયથી જન્મ પામ્યા ત્યા તમારી બધાની બત્રીસ (૩૨) સાગરની સ્થિતિ કરતા કંઈક ઓછી એટલી સ્થિતિ થઈ જ્યારે આ સ્થિતિ પૂરી થઈ ત્યારે તરત જ તમે ત્યાથી ચવીને આ જંબૂદ્વીપમા ઉત્પન્ન થયા છો અને પોતપોતાના રાજ્યોનુ શાસન ચલાવવા લાગ્યા છો

(तएणं अहं देवाणुप्पिया! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया)

ત્યારબાદ હે દેવાનુપ્રિયો ! હું પણ દેવલોકમાથી આયુક્ષય હોવા બદલ આવીને અહીં પુત્રી રૂપમા જન્મ પામી છુ

पूर्वजन्मवृत्तान्त स्मारयन्ती मल्ली यदवोचत् तद् गाथया प्राह-किं थ तय इत्यादि। भो राजानः किं तद् विस्मृत युष्माभिः तदा=तस्मिन् काले पूर्वभवे जय तमवरे= जयन्तनामकेऽनुत्तरविमाने 'देवाः' देवाभूत्वा 'थुत्था' यूयम् उषितः = निवासं कृतवन्तः, 'थ' इति वाक्यालङ्कारे' समयनिबद्धा=वयं परस्परेण प्रतिबोधनीया' इत्येव सङ्केतेन निबद्धां = परिगृहीता, ता देवसम्बन्धिनी जातिं जन्म 'सभरह' सस्मरतेति ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्-तएणं तेसि जियसत्तपामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहि विसुज्झमाणीहि तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहावोहमग्गणगवेसणं करेमाणाणं सण्णिज्जाइस्सरणे समुप्पन्ने एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छति, तएणं मल्लो अरहा जियसत्तूपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाइसरणे जाणित्ता गब्भघराणं दाराइं विहाडावेइ, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव

इसी पूर्वोक्त-पूर्व जन्मके वृत्तान्त को उन छह जितशत्रु प्रमुख राजाओं को याद कराती हुई मल्ली कुमारीने जो कुछ कहा वही गाथा द्वारा सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं-वह गाथा " किं थ तय पम्हुट्ठ ' इत्यादि यह है। इसका तात्पर्य यह है-हे राजाओं! क्या आपलोग वह पूर्वभव भूल गये कि जिसमें हम सबलोग जयन्त नामके अनुत्तर विमान में देव होकर रहे हैं। सो " हम परस्पर मे एक दूसरे को प्रतिबोधित करेंगे " ऐसी प्रतिज्ञासे प्रतिबद्ध उस देव भवसम्बन्धी जन्मको अब याद करो ॥सू० ३५॥

આ પૂર્વજન્મની વિગત છએ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને બતાવતી મલ્લીકુમારીએ જે કઈ કહ્યું છે તે અહીં સૂત્રકાર ગાથા દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-

(किंथ तय पम्हुट्ठ) इत्यादि

એનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે, હે રાજાઓ શું તમે લોકો પૂર્વ ભવને ભૂલી ગયા છો કે જ્યારે અમે બધા જયન્ત નામના અનુત્તર વિમાનમા દેવ થઈને રહ્યા હતા તો " અમે એક બીજાને પ્રતિબોધિત કરીશુ " આ પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઇને મેળવવા તે દેવભવના જન્મને તમે યાદ કરો ॥સૂ "૩૫"॥

अस्मिन्नेवाध्ययने प्रागुक्तवदुच्यम् । ततस्तदनन्तरं खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं कालमासे कालं कृत्वा जयन्ते विमाने उत्पन्नाः=देवभवं प्राप्ताः, तत्र खलु युष्माकं देशोनानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः, ततः खलु यूयं तस्मादेवलोकादनन्तरं चयं=देवशरीरं, त्यक्त्वा इहैव=अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे जम्बूभारते वर्षे यावत्-स्वकानि २ राज्यानि उपसम्पद्य विहरथ, ततस्तदनन्तरं खल्वहं हे देवानुप्रिया ! तस्माद् देवलोकादायुःक्षयेण च्युत्वा यावत्--'दारियत्ताए' दारिकतया पुत्रीभावेन 'पच्चायाया' प्रत्यायाता=समजनि-अथ तान् जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः पुनः

(तएण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे काल किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा-तत्थण तुब्भे देसूणाइ बत्तीसाइ सागरोवमाइ ठिई, तएण तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतर चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे २ जाव साइ२ रज्जाइ उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) हे देवानुप्रियो ! आप लोग काल मास में मृत्यु के अवसर में काल कर-जयन्त विमान में देव पर्याय से उत्पन्न हुए । वहां आप सब की कुछ कम ३२ बत्तीस सागर की स्थिति हुई । जब यह स्थिति समाप्त हो चुकी-तो उसी समय आप लोग वहां से चवकर इसी जंबूद्वीप में उत्पन्न हो गये-और अपने २ राज्यों का भोग करने लगे । (तएणं अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव दारियत्ताए पच्चायाया) तुम लोगों के च्युत होने के बाद हे देवानुप्रियो ! मैं भी उस देवलोक से आयुक्षय हो जाने के कारण च्युत हुआ-और च्युत होकर कन्या रूप से उत्पन्न हो गया हूँ ।

(तएण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे काल किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा तत्थण तुब्भे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइ ठिई, तएण तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे२ जाव साइ२ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે કાળ માસમા મૃત્યુના વખતે કાલ કરીને જયંત વિમાનમા દેવપર્યાયથી જન્મ પામ્યા ત્યા તમારી બધાની બત્રીસ (૩૨) સાગરની સ્થિતિ કરતા કંઈક ઓછી એટલી સ્થિતિ થઈ જ્યારે આ સ્થિતિ પૂરી થઈ ત્યારે તરત જ તમે ત્યાથી ચવીને આ જંબૂદ્વીપમા ઉત્પન્ન થયા છો અને પોતપોતાના રાજ્યોનુ શાસન ચલાવવા લાગ્યા છો

(तएणं अहं देवाणुप्पिया! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया)

ત્યારબાદ હે દેવાનુપ્રિયો ! હું પણ દેવલોકમાથી આયુક્ષમ હોવા બદલ આવીને અહીં પુત્રી રૂપમા જન્મ પામી છુ

सक्कारेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा कुंभएणं रण्णा विसज्जिजत्ता समाणा जेणेव साइं२ रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगाइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता विहरंति, तएणं मल्ली अरहा 'संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि' त्ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'तएणं तेसिं' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु तेषां जितशत्रुप्रमुखाणां षण्णां राज्ञां, मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः अन्तिके=समीपे 'एयमट्ठं' एतमर्थं=पूर्वभववृत्तान्तरूपमुक्तमर्थं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=हृदयेऽवधार्य, शुभेन परिणामेन प्रशस्तेनाध्यवसायेन लेश्याभिः 'विसुज्झमाणीहिं' विशुध्यन्तीः 'तयावरणिज्जाणं' तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीनां, कर्मणां क्षयोपशमेन 'ईहापोहमग्गणगवेसणं' ईहाऽपोहमार्गणगवेषणम्-ईहा-अर्थविशेषविषयकसमालोचनाभिमुखो मतेर्व्यापार

'तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं' इत्यादि

(तएणं) इस के बाद (तेसिं जियसत्तूपामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म, सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं० कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणाणं सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं को जब उन्हों ने विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी से इस प्रकार सुना और उसका मन से अच्छी तरह विचार किया-तो शुभ परिणाम से प्रशस्त अध्यवसाय से लेश्याओं की विशुद्धि से, तथा तदावरणीयकर्मों के

'तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म, सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं० कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणाणं सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने)

જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ જ્યારે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના મુખથી આ બધી પૂર્વભવની વિગત સાભળી અને મનમા તેના ઉપર સારી પેઠે વિચાર કર્યો ત્યારે શુભ પરિણામથી, પ્રશસ્ત અધ્યવસાયથી લેશ્યાઓની વિશુદ્ધિથી તેમજ તદાવરણીય કર્મોના ક્ષયોપશમથી, ઇહા, અપોહ,

उवागच्छति, उवागच्छित्ता तएण महब्बलपामोक्खा सत्तवि बालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागयायावि होत्था तएणं मल्लो अरहा ते जियसत्तप्पामोक्खे छप्पियरायाणो एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! ससारभयउविग्गा जाव पव्वयामि,तं तुब्भे णं किं करेह किं च ववसह जाव किं भे हियसामत्थे ?, तएणं जियसत्तूप्पामोक्खा मल्लि अरह एव वयासी – जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए ससार जाव पव्वयह अम्हे णं देवाणुप्पिए! के अण्णे आलंवणे वा आहारे वा पडिवधे वा जह चेव णं देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हेइओ तच्चेभवग्गहणे वहुसु कज्जेसु य मेढी पमाण जाव धम्मधुरा होत्था, तहा चेव णं देवाणुप्पिये ! इण्हिपि जाव भविस्सह, अम्हे वि य णं देवाणु० ! ससार भयउव्विग्गा जाव भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पियाण सद्धिं मुडा भवित्ता जाव पव्वयामो । तएण मल्ली अरहा ते जियसत्तपामोक्खे एव वयासी-जण्ण तुब्भे ससार जाव मए सद्धिं पव्वयह, त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया सएहिं२ रज्जेहि जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहह दुरूढा समाणा मम अतिय पाउब्भवह, तएण ते जियसत्तूपामुक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठ पडिसुणेंति, तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू० गहाय जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुभगस्स पाएसु पाडेइ, तएण कुभए ते जियसत्तूपामोक्खे विपुलेण असण४

सक्कारेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा कुंभएण रण्णा विसज्जिता समाणा जेणेव साइ२ रज्जाइ जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगाइ रज्जाइं उवसपज्जित्ता विहरति, तएणं मल्ली अरहा 'सवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि' त्ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'तएण तेसिं' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा षण्णा राज्ञा, मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाः अन्तिके=समीपे 'एयमट्ठ' एतमर्थं=पूर्वभववृत्तान्तरूपमुक्तमर्थं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=हृदयधार्य, शुभेन परिणामेन प्रशस्तेनाध्यवसायेन लेश्याभिः 'विसुज्झमाणीहिं' विशुध्यन्तीः 'तयावरणिज्जाण' तदावरणीयाना=ज्ञानावरणीयादीना, कर्मणा क्षयोपशमेन 'ईहावोहमग्गणगवेषण' ईहाऽपोहमार्गण गवेषणम्-ईहा-अर्थ विशेष विषयकसमालोचनाभिमुखो मतेर्व्या-

'तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण' इत्यादि

(तएण) इस के बाद (तेसिं जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह रायाण मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण परिणामेण पसत्थेणं अज्झवसाणेण लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं० कम्माण खओवसमेणं ईहावोयमग्गणगवेसणकरेमाणाणं सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं को जब उन्हो ने विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी से इस प्रकार सुना और उसका मन से अच्छी तरह विचार किया-तो शुभ परिणाम से प्रशस्त अध्यवसाय से लेश्याओं की विशुद्धि से, तथा तदावरणीयकर्मों के

'तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह रायाण मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण परिणामेण पसत्थेण अज्झवसाणेण लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाण० कम्माण खओवसमेण ईहावोयम गणगवेसण करेमाणाण सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने)

જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ જ્યારે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના મુખથી આ બધી પૂર્વભવની વિગત સાભળી અને મનમા તેના ઉપર સારી પેઠે વિચાર કર્યો ત્યારે શુભ પરિણામથી, પ્રશસ્ત અધ્યવસાયથી લેશ્યાઓની વિશુદ્ધિથી તેમજ તદાવરણીય કર્મોના ક્ષયોપશમથી, ઇહા, અપોહ,

पारः, विचार इत्यर्थः । स चात्र-" किं मल्ल्या कथितं पूर्वभववृत्तान्तस्तथा संजातः, अपिच देवभवं प्राप्य जयन्तविमाने किं वयमवस्थिता आस्मे " त्येवरूपो बोध्यः । अपोहः-निश्चयः, स चेत्थम्-उक्तविचारे निरन्तरसञ्जनाया बुद्धेः परिणाम खल्वेवमभवत्-' मल्ल्युक्तरीत्या निश्चयेन वयं सप्तानगाराः पूर्वभवे तपोऽनुष्ठानं कृतवन्तः, तत्प्रभावाच्च जयन्तविमाने देवत्वेन समाता " इति । ईहापोहाभ्यां

क्षयोपशम से ईहा, अपोह मार्गण एवं गवेषण करने पर संज्ञि जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । अर्थ विशेष को विषय करने वाली समालोचना की तरफ झुकता हुआ जो मति व्यापार रूप विचार होता है उसका नाम ईहा हैं । यहां इसका समन्वय इस तरह से समझना चाहिये-मल्ली कुमारी ने जो पूर्वभवीय वृत्तान्त कहा है वह क्या उसी तरह से हुआ है क्या देव भव को प्राप्तकर हम लोग जयन्त विमान में साथ रहे हैं? ईहा के बाद जो निश्चय रूप बोध होता है उसका नाम अपोह है-इसका संबंध यहां इस प्रकार से जानना चाहिये-जब उक्त विचार में बुद्धि संलग्न हो गई तो उसका परिणाम इस प्रकार निकला-ठीक है-मल्ली कुमारी के कथनानुसार हम सातों अनगारों ने तपोऽनुष्ठान नियमतः किया है-इससे उसके प्रभाव से हम लोग काल मास में कालकर जयन्त विमान में देव की पर्याय अवश्य उत्पन्न हुए हैं । इस प्रकार का ईहित अर्थ में जो निश्चयात्मक विचार होता है वही अपोह है ।

માર્ગણ અને ગવેષણ કરવાથી તેમને સંજ્ઞી-જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન થયું અર્થ વિશેષને વિષમ બનાવીને સમાલોચના તરફ વળતો જે મતિવ્યાપાર રૂપ વિચાર હોય છે તે 'ઈહા' છે અહીંયા ઈહા વિષેનો સંબંધ આ રીતે સમજવો જોઇએ કે મલ્લીકુમારીના મુખેથી પૂર્વભવની વિગત સાંભળીને રાજાઓના મનમા જે આ પ્રમાણેના વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે મલ્લીકુમારીએ જે પૂર્વભવનુ વૃત્તાન્ત કહ્યુ છે તે શુ ખરેખર તેમજ હશે !

દેવભવ મેળવીને શુ અમે બધા એકી સાથે જયંત વિમાનમા રહ્યા છીએ ? ઇહા પછી જે નિશ્ચય રૂપ બોધ થાય છે તેનુ નામ અપોહ છે, તેનો સંબંધ અહીં આ પ્રમાણે સમજવો જોઇએ કે જ્યારે પૂર્વભવના વિચારોમા બુદ્ધિ સંલગ્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના પરિણામમા તેઓના મનમા આ પ્રમાણેનો નિશ્ચય થયો કે ' ઠીક છે ' મલ્લીકુમારીના કહેવા મુજબ અમે સાતે અનગારોએ મળીને નિયમ પૂર્વક તપસ્યા કરી છે તેના પ્રભાવથી અમે લોકો કાળ માસમા કાળ કરીને જયંત વિમાનમા દેવની પર્યાયથી ચોક્કસપણે જન્મ પામ્યા હોઇશુ [illegible] અર્થમા જે નિશ્ચયાત્મક વિચાર ઉત્પન્ન હોય છે તે જ અપો

निश्चितोर्थो मार्गणगवेषणाभ्यां दृढीभवतीत्यतआह – 'मग्गणगवेसण' इति, मार्गण-ईहापोहाभ्यां निश्चितार्थेऽन्वयधर्मालोचनमन्वयः-सद्भाव'-यथा-अस्मासु सप्तसु परस्पर सुहृद्भाव विषयविरागदर्शनेन पूर्वभवे सहावस्थानपूर्वक तपश्चरण, तदनु जयन्तविमानावस्थान दृढ निश्चीयते, गवेषणम्-ईहापोहाभ्यां निश्चितेऽर्थे व्यतिरेकधर्मालोचनम् व्यतिरेको नाम-अभावः, यथा-अस्मासु सप्तसु यदि परस्परसुहृद्भावो न स्यात्, तथा यदि विषयविरागो न स्यात्, तर्हि पूर्वभवसम्बन्धि सहावस्थानपूर्वक तपश्चरण जयन्तविमानावस्थान च न स्यात्, इत्येवमन्वयव्यतिरेकधर्मालोचनादुक्तार्थस्य निश्चयो दृढतरो भवतीति तदेवमीहाऽपोहमार्गणगवेषणं

ईहा और अपोह से निश्चित किया गया पदार्थ मार्गण और गवेषण से दृढ हो जाता है। मार्गण शब्द का अर्थ है ईहा। और अपोह से निश्चित हुए अर्थ में अन्वय धर्म की पर्यालोचना करना। जैसे ऐसा विचार आना कि इन सातोंमें जब परस्पर में सुहृद्भाव (मैत्री भाव) और विषय विराग देखा जाता है तो इस से यह बात दृढरूप से निश्चित हो जाती है कि इन लोगो ने सहावस्थान पूर्वक तपश्चरण किया है और बाद में जयन्त विमान में ये उत्पन्न हुए हैं। गवेषण शब्द का अर्थ है ईहा और अपोह से निश्चित हुए पदार्थ में व्यतिरेक धर्म की आलोचना करना। जैसे इन सातों में यदि परस्पर में सुहृद्भाव तथा विषय विराग नहीं होता तो पूर्वभव में इन का साथ २ रहकर तपश्चरण करना, तथा जयन्त विमान में उत्पन्न होना भी नहीं होता।

इस तरह अन्वय और व्यतिरेक धर्म की आलोचना से उक्तार्थ का निश्चय दृढतर हो जाता है। संज्ञी जीवों के पूर्व भव का ही स्मरण इस

ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત કરાએલો પદાર્થ માર્ગણ તેમજ ગવેષણાથી દૃઢ થઈ જાય છે માર્ગણ શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે ઈહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા અર્થમા અન્વય ધર્મની પર્યાલોચના કરવી જેમકે અત્યારે સાતેમા પરસ્પર મિત્રભાવ અને વિષય વિરાગ (વિશેષ રાગ) જોવાય છે ત્યારે એનાથી આ વાત ચોક્કસપણે પુષ્ટ થાય છે કે આ લોકોએ સહાવસ્થાનપૂર્વક પૂર્વભવમા તપશ્ચરણ કર્યું છે અને ત્યારબાદ તેઓ જયત વિમાનમા ઉત્પન્ન થયા છે 'ગવેષણ' શબ્દનો અર્થ છે, ઈહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા પદાર્થમા વ્યતિરેક ધર્મની આલોચના કરવી જેમકે આ સાતેમા હમણા એક બીજા માટે સુહૃદ્ભાવ તેમજ વિષય વિરાગ હોત નહિ તો પૂર્વભવમા તેમનુ સાથે રહીને તપ કરવું તેમજ જયત વિમાનમા જન્મ પામવુ પણ થાત નહિ

આ રીતે અન્વય અને વ્યતિરેક ધર્મની આલોચનાથી ઉપર વર્ણવવામા આવેલા અર્થનો નિશ્ચય દૃઢ રૂપે થઈ જાય છે સંજ્ઞી જીવોના પૂર્વભવનુ સ્મર

पारः, विचार इत्यर्थ ।स चात्र-" किं मल्ली कथित पूर्वभववृत्तान्तस्तथा सञ्जातः, अपिच देवभव माप्य जयन्तविमाने किं वयमवस्थिता आस्मे " त्येवरूपो बोध्य । अपोह'-निश्चयः, स चेत्थम्-उक्तविचारे निरन्तरसङ्गनाया बुद्धेः परिणाम खल्वेवमभवत्-" मल्ल्युक्तरीत्या निश्चयेन वय सप्तानगाराः पूर्वभवे तपोऽनुष्ठानं कृतवन्तः, तत्प्रभावाच्च जयन्तविमाने देवत्वेन सजाता " इति। ईहापोहाभ्यां

क्षयोप शम से ईहा, अपोह मार्गण एव गवेषण करने पर सज्ञि जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। अर्थ विशेष को विषय करने वाली समालोचना की तरफ झुकता हुआ जो मति व्यापार रूप विचार होता है उसका नाम ईहा हैं। यहा इसका समन्वय इस तरह से समझना चाहिये-मल्ली कुमारी ने जो पूर्वभवीय वृत्तान्त कहा है वह क्या उसी तरह से हुआ है क्या देव भव को प्राप्तकर हम लोग जयन्त विमान में साथ रहे हैं? ईहा के बाद जो निश्चय रूप बोध होता है उसका नाम अपोह है-इसका सबध यहा इस प्रकार से जानना चाहिये-जब उक्त विचार में बुद्धि सलग्न हो गई तो उसका परिणाम इस प्रकार निकला-ठीक है-मल्ली कुमारी के कथनानुसार हम सातों अनगारों ने तपोअनुष्ठान नियमतः किया है-इससे उसके प्रभाव से हमलोग काल मास में कालकर जयन्त विमान में देव की पर्याय अवश्य उत्पन्न हुए हैं। इस प्रकार का ईहित अर्थ में जो निश्चयात्मक विचार होता है वही अपोह है।

માર્ગણ અને ગવેષણ કરવાથી તેમને સજ્ઞી-જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન થયુ અર્થ વિશેષને વિષમ બનાવીને સમાલોચના તરફ વળતો જે મતિવ્યાપાર રૂપ વિચાર હોય છે તે 'ઈહા' છે અહીંયા ઈહા વિષેનો સબધ આ રીતે સમજવો જોઇએ કે મલ્લીકુમારીના મુખેથી પૂર્વભવની વિગત સાભળીને રાજાઓના મનમા જે આ પ્રમાણેના વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે મલ્લીકુમારીએ જે પૂર્વભવનુ વૃત્તાન્ત કહ્યુ છે તે શુ ખરેખર તેમજ હશે!

દેવભવ મેળવીને શુ અમે બધા એકી સાથે જયત વિમાનમા રહ્યા છીએ? ઇહા પછી જે નિશ્ચય રૂપ બોધ થાય છે તેનુ નામ અપોહ છે, તેનો સબધ અહીં આ પ્રમાણે સમજવો જોઇએ કે જ્યારે પૂર્વભવના વિચારોમા બુદ્ધિ સલગ્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના પરિણામમા તેઓના મનમા આ પ્રમાણેનો નિશ્ચય થયો કે 'ઠીક છે' મલ્લીકુમારીના કહેવા મુજબ અમે સાતે અનગારોએ મળીને નિયમ પૂર્વક તપસ્યા કરી છે તેના પ્રભાવથી અમે લોકો કાળ માસમા કાળ કરીને જયત વિમાનમા દેવની પર્યાયથી ચોક્કસપણે જન્મ પામ્યા હોઇશુ આ રીતે ઇહિત અર્થમા જે નિશ્ચયાત્મક વિચાર ઉત્પન્ન હોય છે તે જ અપોહ છે

निश्चितोर्थो मार्गणगवेषणाभ्यां दृढीभवतीत्यतआह – 'मग्गणगवेसणं' इति, मार्गण-ईहापोहाभ्यां निश्चितार्थेऽन्वयधर्मालोचनमन्वयः-सद्भाव'-यथा-अस्मासु सप्तसु परस्पर सुहृद्भाव विषयविरागदर्शनेन पूर्वभवे सहावस्थानपूर्वक तपश्चरण, तदनु जयन्तविमानावस्थान दृढ निश्चीयते, गवेषणम्-ईहापोहाभ्यां निश्चितेऽर्थे व्यतिरेकधर्मालोचनम् व्यतिरेको नाम-अभावः, यथा-अस्मासु सप्तसु यदि पर स्परसुहृद्भावो न स्यात्, तथा यदि विषयविरागो न स्यात्, तर्हि पूर्वभवसम्बन्धि सहावस्थानपूर्वक तपश्चरण जयन्तविमानावस्थान च न स्यात्, इत्येवमन्वयव्यतिरेक-धर्मालोचनादुक्तार्थस्य निश्चयो दृढतरो भवतीति तदेवमीहाऽपोहमार्गणगवेषणं

ईहा और अपोह से निश्चित किया गया पदार्थ मार्गण और गवेषण से दृढ हो जाता है। मार्गण शब्द का अर्थ है ईहा। और अपोह से निश्चित हुए अर्थ में अन्वय धर्म की पर्यालोचना करना। जैसे ऐसा विचार आता कि इन सातोंमें जब परस्पर में सुहृद्भाव (मैत्री भाव) और विषय विराग देखा जाता है तो इस से यह बात दृढरूप से निश्चित हो जाती है कि इन लोगो ने सहावस्थान पूर्वक तपश्चरण किया है और बाद में जयन्त विमान में ये उत्पन्न हुए है। गवेषण शब्द का अर्थ है ईहा और अपोह से निश्चित हुए पदार्थ में व्यतिरेक धर्म की आलोचना करना। जैसे इन सातों में यदि परस्पर में सुहृद्भाव तथा विषय विराग नही होता तो पूर्वभव में इन का साथ २ रहकर तपश्चरण करना, तथा जयन्त विमान में उत्पन्न होना भी नही होता।

इस तरह अन्वय और व्यतिरेक धर्म की आलोचना से उक्तार्थ का निश्चय दृढतर हो जाता है। सज्ञी जीवों के पूर्व भव का ही स्मरण इस

ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત કરાએલો પદાર્થ માર્ગણ તેમજ ગવેષણાથી દૃઢ થઇ જાય છે માર્ગણ શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે ઈહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા અર્થમા અન્વય ધર્મની પર્યાલોચના કરવી જેમકે અત્યારે સાતેમા પરસ્પર મિત્રભાવ અને વિષય વિરાગ (વિશેષ રાગ) જોવાય છે ત્યારે એનાથી આ વાત ચોક્કસપણે પુષ્ટ થાય છે કે આ લોકોએ સહાવસ્થાનપૂર્વક પૂર્વભવમા તપશ્ચરણ કર્યું છે અને ત્યારબાદ તેઓ જયત વિમાનમા ઉત્પન્ન થયા છે 'ગવેષણ' શબ્દનો અર્થ છે, ઈહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા પદાર્થમા વ્યતિરેક ધર્મની આલોચના કરવી જેમકે આ સાતેમા હમણા એક બીજા માટે સુહૃદ્ભાવ તેમજ વિષય વિરાગ હોત નહિ તો પૂર્વભવમા તેમનુ સાથે રહીને તપ કરવું તેમજ જયત વિમાનમા જન્મ પામવુ પણ થાત નહિ

આ રીતે અન્વય અને વ્યતિરેક ધર્મની આલોચનાથી ઉપર વર્ણવવામા આવેલા અર્થનો નિશ્ચય દૃઢે રૂપે થઈ જાય છે સજ્ઞી જીવોના પૂર્વભવનુ સ્મર

यूय संसारभयोद्विग्ना यावत् प्रव्रजथ=प्रव्रजिष्यथ, अस्माकं खलु हे देवानुप्रियाः ! किमन्यदालम्बनं वा सहायो वा कोऽन्य आधारो वा=आश्रयो वा, कः प्रतिबन्धो अकार्यकरणे प्रतिरोधकः सन्मार्गे स्थापयितु धर्मोपदेशक इत्यर्थः वा, यथैव खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयमस्माकमितस्तृतीयभवग्रहणे बहुषु कार्येषु च मेधिः मेधिवदालम्बनम्-आधारो वा किं च यूय प्रमाण=युष्माननुसृत्य वयमास्मेत्यर्थः, यावद्-चक्षुर्भूतः=नेत्रवत् समविषममार्गदर्शकाः, धर्मधुरा =धुरइव धुरः धर्मस्य धुर =वाहका धर्मप्रवर्तका इत्यर्थः । अस्माकं धर्मरक्षका यूयमासत, तथैव खलु हे देवानुप्रिया. !

की ऐसी बात सुनकर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उन मल्ली अरिहंत से इस प्रकार कहा-(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए संसार जाव पव्वयह, अम्हे णं देवाणुप्पिए ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा पडिबधे वा तह चेवणं देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढीपमाणं जाव धम्मधुरा होत्था) हे देवानुप्रिये ! जब तुम संसार के भय से उद्विग्न होकर यावत् दीक्षा संयम अंगीकार करना चाहती हो तो हे देवानुप्रिये ! कहो फिर हमें तुम्हारे सिवाय अब और कौन दूसरा सहाय करने वाला होगा-कौन हमारा आलंबनभूत होगा कौन हमारा आधार होगा कौन हमें अकार्य करने से मना करने वाला होगा-कौन सन्मार्ग में स्थापित करने के लिये धर्म का उपदेश दाता होगा- । जिस प्रकार आप आज से तीसरे भव में हमारे लिये अनेक कार्यों में मेधि की तरह आलंबन रूप हुए आधार भूत हुए प्रमाणभूत हुए, सम विषम मार्ग का दर्शक होने से चक्षुभूत

મલ્લી અરિહંતના આ પ્રમાણે વિચારો સાંભળીને તે જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ મલ્લી અરિહંતને કહ્યું કે

(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए संसार जाव पव्वयह, अम्हे णं देवाणुप्पिए ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा पडिबधे वा तह चेव णं देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाण जाव धम्मधुरा होत्था)

હે દેવાનુપ્રિય ! સંસાર ભયથી વ્યાકુળ થઈને જ્યારે તમે પોતે દીક્ષા સંયમ સ્વીકારવા ઇચ્છો છો ત્યારે હે દેવાનુપ્રિયે ! બતાવો તમારા વગર અમારો સહાયક બીજો કોણ હશે ? અમારો આલંબન કોણ હશે ? અમારો આધાર કોણ હશે ? ખોટા કામ કરતા અમને રોકનાર કોણ હશે ? અમારા જેવા ને સન્માર્ગ તરફ વાળનાર ધર્મના ઉપદેશક કોણ હશે ? જેમ આજથી પહેલાના ત્રીજા ભવમા અમારા માટે ઘણા કામોમા તમે મેધિની જેમ આલંબન રૂપ થયા, આધાર ભૂત થયા પ્રમાણ ભૂત થયા, સમવિષમ માર્ગને બતાવનાર હોવા બદલ ચક્ષુભૂત થયા, ધ[illegible]રૂપ થયા, ધર્મના માર્ગમા પ્રવૃત્તિ કરાવનાર

'इण्हिंपि' इदानीमपि यावद् भविष्यथ। वयमपि खलु हे देवानुप्रिया ! ससार भयोद्विग्ना यावद् भीता 'जम्मणमरणाण' जन्ममरणेभ्यः आर्षत्वात्पञ्चम्यर्थे षष्ठी, 'देवाणुप्पियाण' देवानुप्रियै युष्माभिः सार्द्धं मुण्डा भूत्वा यावत्-प्रव्रजाम =दीक्षा ग्रहीष्यामः, ततः-जितशत्रुप्रमुखाणा तेषा वचन श्रुत्वा, खलु मल्ली अर्हन् तान् जितशत्रुप्रमुखान् एवमवादीत्-यदि खलु यूय समारभयोद्विग्नाः यावद् मया सार्धं प्रव्रजथ, तत्=तस्मात् गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! स्वेषु स्वेषु राज्येषु ज्येष्ठान् पुत्रान् राज्ये स्थापयत, स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनी शिविकाः दूरोहत=आरोहत, दूरूढाः सन्तो ममान्तिकमुपादुर्भवत आगच्छत। ततस्तदनन्तर

हुए, धर्म का बुरा रूप हुए-धर्ममार्ग में प्रवृत्ति कराने वाले हुए (तहा चेव णं देवाणुप्पिए ! इहिंपि जाव भविस्सह) उसी प्रकार इस भव में भी आप ही होवे (अम्हे वि य णं देवाणु० ससारभयउव्विग्गा जाव भीया जम्ममरणाणं देवाणुप्पियाण सद्धिं मुडा भवित्ता जाव पव्वयामो) इसलिये-हम भी हे देवानुप्रिये ! ससारभय से उद्विग्न बने हुए यावत् जन्म मरण से भीत हुए आप देवानुप्रिय ! के साथ ही मुडित होकर यावत् जिन दीक्षा ग्रहण करेंगे।

(तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एव वयासी-जण्णं तुब्भे ससार जाव मए सद्धिं पव्वयह, त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहिं २ रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह ठावित्ता पुरिससहस्स वाहिणी-ओ सीयाओ दुरूहह) इस के बाद मल्ली अरिहत ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओ से इस प्रकार कहा-यदि तुम सब ससारभय से उद्विग्न

થયા (तहा चेव ण देवाणुप्पिए ! इहिंपि जाव भविस्सह) તે પ્રમાણે આ ભવમા પણ તમે જ અમને ધર્મમા પ્રવૃત્તિ કરાવનાર થાઓ

(अम्हे वि य ण देवाणु० ससारभयउव्विग्गा जाव भीया जम्ममरणाणं देवाणुप्पियाण सद्धिं मुडा भवित्ता जाव पव्वयामो)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયે ! સ સાર ભયથી વ્યાકુળ તેમજ જન્મ મરણના ભયથી ત્રસ્ત થયેલા અમે પણ હે દેવાનુપ્રિય તમારી સાથે જ મુડિત થઇને જિન દીક્ષા સ્વીકારીશુ

(तएण मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एव वयासी- जण्ण तुब्भे ससार जाव मए सद्धिं पव्वयह, त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहिं २ रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्स वाहिणीओ सीयाओ दुरुहइ)

ત્યાર પછી મલ્લી અરિહ તે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે જો તમે બધા સ સાર ભયથી વ્યાકુળ થઇને મારી સાથે જિન દીક્ષા ગ્રહણ

यूय संसारभयोद्विग्ना यावत् मव्रजथ=मव्रजिष्यथ, अस्माक रलु हे देवानुप्रियाः ! किमन्यदालम्बन वा सहायो वा कोऽन्य आधारो वा=आश्रयो वा, कः प्रतिबन्धो अकार्यकरणे प्रतिरोधकः सन्मार्गे स्थापयितु धर्मोपदेशक इत्यर्थः वा, यथैव खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयमस्माकमितस्तृतीयभवग्रहणे बहुषु कार्येषु च मेधिः मेधिव दालम्बनम्-आधारो वा किं च यूय प्रमाण=युष्मानवलम्ब्य वयमास्मेत्यर्थः, यावद्-चक्षुर्भूतः=नेत्रवत् समविषममार्गदर्शकाः, धर्मधुरा =धुरइव धुरः धर्मस्य धुर'=वाहका धर्मप्रवर्तका इत्यर्थः । अस्माकं धर्मरक्षका यूयमास्त, तथैव खलु हे देवानुप्रिया !

की ऐसी बात सुनकर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उन मल्ली अरिहंत से इस प्रकार कहा-(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए संसार जाव पव्वयह, अम्हे ण देवाणुप्पिए ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा तह चेवणं देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढीपमाणं जाव धम्मधुरा होत्था) हे देवानुप्रिये ! जब तुम संसार के भय से उद्विग्न होकर यावत् दीक्षा संयम अंगीकार करना चाहती हो तो हे देवानुप्रिये ! कहो फिर हमें तुम्हारे सिवाय अब और कौन दूसरा सहाय करने वाला होगा-कौन हमारा आलंबनभूत होगा कौन हमारा आधार होगा कौन हमें अकार्य करने से मना करने वाला होगा-कौन सन्मार्ग में स्थापित करने के लिये धर्म का उपदेश दाता होगा- । जिस प्रकार आप आज से तीसरे भव में हमारे लिये अनेक कार्यों में मेधि की तरह आलंबन रूप हुए आधार भूत हुए प्रमाणभूत हुए, सम विषम मार्ग का दर्शक होने से चक्षुभूत

મલ્લી અરિહંતના આ પ્રમાણે વિચારો સાંભળીને તે જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ મલ્લી અરિહંતને કહ્યું કે

(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए संसार जाव पव्वयह, अम्हे ण देवाणुप्पिए ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा तह चेव ण देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाण जाव धम्मधुरा होत्था)

હે દેવાનુપ્રિય ! સંસાર ભયથી વ્યાકુળ થઇને જ્યારે તમે પોતે દીક્ષા સંયમ સ્વીકારવા ઇચ્છો છો ત્યારે હે દેવાનુપ્રિયે ! બતાવો તમારા વગર અમારો સહાયક બીજો કોણ હશે ? અમારો આલંબન કોણ હશે ? અમારો આધાર કોણ હશે ? ખોટા કામ કરતા અમને રોકનાર કોણ હશે ? અમારા જેવા ને સન્માર્ગ તરફ વાળનાર ધર્મના ઉપદેશક કોણ હશે ? જેમ આજથી પહેલાના ત્રીજા ભવમા અમારા માટે ઘણા કામોમા તમે મેધિની જેમ આલંબન રૂપ થયા, આધાર ભૂત થયા પ્રમાણ ભૂત થયા, સમવિષમ માર્ગને બતાવનાર હોવા બદલ ચક્ષુભૂત થયા, ધર્મની ધુરારૂપ થયા, ધર્મના માર્ગમા પ્રવૃત્તિ કરાવનાર

ङ्कारेण सत्करोति, यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखा कुम्भकेन राज्ञा विसर्जिताः सन्तः, यत्रैव स्वानि २ राज्यानि, यत्रैव नगराणि तत्रोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वानि २ राज्यान्युपसम्पद्य विहरन्ति । ततः खलु मल्ली अर्हन् संवत्सरावसाने '' सवत्सरावसाने=वर्षपूर्तौ सत्यां ' निक्खमिस्सामि ' त्ति ' निष्क्रमिष्यामीति दीक्षा ग्रहीष्यामीति मनसि प्रधारयति=निश्चिनोति स्म ॥ सू० ३६॥

कुम्भक राजाने भी उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं का विपुल अशनादि रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प; वस्त्र, गंध माल्यादि से सत्कार किया । (जाव पडिविसज्जेइ) यावत फिर उन्हें विसर्जित कर दिया । (तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा कुंभगेणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं साइं रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता साइं साइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता विहरंति तएणं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ) कुंभक राजा के द्वारा विसर्जित होते हुए जितशत्रु प्रमुख राजा जहां अपने २ राज्य और उन में भी जहां अपने २ नगर थे वहां आये । वहां आकर वे सब अपने २ राज्य कार्यों में संलग्न हो गये ।

वर्ष समाप्त होने पर दीक्षा धारण करूंगा ऐसा मल्लि प्रभुने निश्चित विचार कर लिया । सूत्र " ३६ "

આલિંગન કરીને સત્કાર, સન્માન, વસ્ત્ર, ગંધ, માલ્ય વગેરેથી સત્કાર કર્યો (જાવ પડિવિસજ્જેઇ) ત્યારબાદ તેઓને વિદાય કર્યા

(તએણં તે જિયસત્તુ પામોક્ખા કુંભએ ણ રણ્ણા વિસજ્જિયા સમાણા જેણેવ સાઇં સાઇં રજ્જાઇં જેણેવ નગરાઇં તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિત્તા સગાઇં રજ્જાઇં ઉવસંપજ્જિત્તા વિહરંતિ, તએણં મલ્લી અરહા સંવચ્છરાવસાણે નિક્ખમિસ્સામિ ત્તિ મણં પહારેઇ)

કુંભક રાજાને ત્યાંથી વિદાય થઈને જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યાં પોત પોતાનું રાજ્ય અને તેમાં પણ જ્યાં પોતપોતાના મહેલો હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેઓ બધા પોત પોતાના રાજકાજમાં પરોવાઈ ગયા

એક વર્ષ પછી દીક્ષા ધારણ કરીશ, મલ્લી પ્રભુએ આ રીતનો ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો હતો ॥ સૂત્ર " ૩૬ " ॥

खलु ते जितशत्रुप्रमुखा 'मल्लिस्स अरहओ' मल्लेः अर्हतः, एतमर्थं=उक्तरूपमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति स्म ।

ततः खलु मल्ली अर्हन्, तान् जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञो गृहीत्वा= सार्धंनीत्वा यत्रैव कुम्भको राजा तत्रोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य पादयोः 'पाडेइ' पातयति=प्रणमयति, ततः खलु कुम्भको राजा तान् जितशत्रुप्रमुखान् विपुलेन=प्रचुरेण, अशनपानखाद्यस्वाद्येन=चतुर्विधाऽऽहारेण, पुष्पवस्त्रगन्धमाल्याल

होकर मेरे साथ जिन दीक्षा धारण करना चाहते हो तो हे देवाणुप्रियो ! जाओ और अपने अपने राज्य में पहिले अपने अपने ज्येष्ठ पुत्र को स्थापित करो-स्थापित करके फिर पुरुष सहस्र वाहिनी शिबिकाओं पर बैठो- (दुरूढा समाणा मम अंतिय पाउब्भवह) उन पर बैठे हुए फिर हमारे पास आओ। (तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति) इस प्रकार उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं ने मल्ली अरिहंत की इस बात को स्वीकार कर लिया। (तएणं मल्ली अरहा-ते जियसत्तू०गहाय जेणेव कुंभए-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ, तएणं कुंभए ते जियसत्तू पामोक्खे विपुलेणं असण ४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ) इस के पश्चात् उन मल्ली अरिहंत ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं को अपने साथ लिया और लेकर वे जहां कुंभक राजा थे वहां पहुँचे वहां पहुँच कर उन्हों ने कुंभक राजा के चरणोंमें झुका कर उन से वंदना करवाई ।

કરવા ઇચ્છતા હો તો હે દેવાનુપ્રિયો ! પોત પોતાના રાજ્યમા તમે જાઓ અને ત્યા પહેલા રાજગાદીએ પોતપોતાના મોટા પુત્રને બેસાડો અને પછી પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓમા બેસો (દુરૂઢા સમાણા મમ અંતિય પાઉબ્ભવહ) અને મારી પાસે આવો

(तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति)

મલ્લી અરિહંતની આ વાતને બધા જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ સ્વીકારી લીધી

तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू० गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु, पाडेइ, तएणं कुंभए ते जियसत्तू पामोक्खे विउलेणं असण ४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ)

ત્યારબાદ મલ્લી અરહંતે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને પોતાની સાથે લીધા અને લઈને તેઓ જ્યા કુંભક રાજા હતા ત્યા ગયા ત્યા જઈને કુંભક રાજાના ચરણોમા વંદન કરાવ્યા

કુંભક રાજાએ પણ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓનો વિપુલ અશન ૧રે ચાર

ङ्कारेण सत्करोति, यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखा कुम्भकेन राज्ञा विसर्जिताः सन्तः, यत्रैव स्वानि २ राज्यानि, यत्रैव नगराणि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वानि २ राज्यान्युपसाद्य विहरन्ति । ततः खलु मल्ली अर्हन् संवच्छरावसाणे ' संवत्सरावसाने=वर्षपूर्तौ सत्यां ' निक्खमिस्सामि ' त्ति ' निष्क्रमिष्यामीति दीक्षां ग्रहीष्यामीति मनसि प्रधारयति=निश्चिनोति स्म ॥ सू० ३६॥

कुम्भक राजाने भी उन जितशत्रू प्रमुख राजाओं का विपुल अशनादि रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प, वस्त्र, गंध मालयादि से सत्कार किया । (जाव पडिविसज्जेइ) यावत फिर उन्हे विसर्जित कर दिया । (तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा कुभएणं रण्णा विसज्जित्ता समाणा जेणेव साइं साइं रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सगाइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता विहरंति तएणं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे णिक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ) कुम्भक राजा के द्वारा विसर्जित होते हुए जितशत्रु प्रमुख राजा जहाँ अपने २ राज्य और उन में भी जहा अपने ५ महल थे वहा आये । वहा आकर वे सब अपने २ राज्य कार्यों मेंसलग्न हो गये ।

वर्ष समाप्त होने पर दीक्षा धारण करूँगा ऐसा मल्लि प्रभुने निश्चित विचार कर लिया । सूत्र " ३६ "

આહારોથી તેમજ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માલ્ય વગેરેથી સત્કાર કર્યો (जाव पडिविसज्जेइ) ત્યારબાદ તેઓને વિદાય કર્યા

(तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा कुभएणं रण्णा विसज्जित्ता समाणा जेणेव साइं साइं रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगाइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता विहरंति, तएणं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे णिक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ)

કુંભક રાજાને ત્યાંથી વિદાય થઈને જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યાં પોત પોતાનું રાજ્ય અને તેમાં પણ જ્યાં પોતપોતાના મહેલો હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેઓ બધા પોતપોતાના રાજકાજમાં પરોવાઈ ગયા

એટલે વર્ષ પછી દીક્ષા ધારણ કરીશ, મલ્લી પ્રભુએ આ જાતનો ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો હતો ॥ સૂત્ર " ૩૬ " ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेण समएण सक्कस्सासणं चलइ, तएणं सक्के देविंदे३ आसण चलिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउजइ, पउजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेया रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु जबूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो भवणासि मल्ली अरहा निक्खमिस्साइ त्ति मणं पहारेइ, त जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाण सक्काण३ अरहताण निक्खममाणाण इमेयारूव अत्थसपयाणं दलित्तए, त जहा–

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडिओ ।
असिति च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाण ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमण देव सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीति च सयसहस्साइ दलइत्तए, त गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभगभवणसि इमेयारूवे अत्थसपदाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएण से वेसमाणे देवे सक्केण देविदेण देवराएण एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! जबूद्दीव दीव भारहं वासं मिहिल रायहाणि कुभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीय च

आसिय च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसपयाणं साहरेइ, साहरित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेह, तएण ते जंभगा देवा वेसमणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्टतुट्ठा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रन्नो भवणसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणंति, तएण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ, तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागअहो पायरासोत्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणाइं सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थसपदाणं दलयइ, तएणं से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ२ तहि२ देसे२ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइभत्तवेयणा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छति त जहा—पथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहित्था वा तेसिं य तहा

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्कस्सासणं चलइ, तएणं सक्के देविंदे३ आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु जंबूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो भवणंसि मल्ली अरहा निक्खमिस्साइ त्ति मणं पहारेइ, त जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं३ अरहंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलित्तए, त जहा–

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडिओ ।
असिति च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाण ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमणं देवं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइं दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगभवणंसि इमेयारूवे अत्थसंपदाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएणं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा एवं वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जंबूद्दीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयं च

आसिय च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसपयाणं साहरेइ, साहरित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेह, तएण ते जंभगा देवा वेसमणेणं एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइ विउव्वति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जबूद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणंति, तएण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ, तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागअहो पायरा सोत्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडि अट्ठ य अणूणाइ सयसहस्साइं इमेयारूव अत्थसपदाण दलयइ, तएणं से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ२ तहि२ देसे२ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइभत्तवेयणा विपुल असणं पाणं खाइम साइम उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छति त जहा–पथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहित्था वा तेसिं य तहा

मूलम्–तेणं कालेणं तेण समएण सक्कस्सासण चलइ, तएणं सक्के देविंदे३ आसण चलिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउजइ, पउजित्ता मल्लिं अरह ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेया रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एव खलु जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो भवणासि मल्ली अरहा निक्खमिस्साइ त्ति मण पहारेइ, त जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नम णागयाण सक्काण३ अरहंताण निक्खममाणाण इमेयारूव अत्थ सपयाणं दलित्तए, त जहा–

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडिओ ।
असिति च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाण ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमण देव सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी –एवं खलु देवाणुप्पिया! जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीति च सयसहस्साइ दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभगभवणंसि इमेयारूवे अत्थसपदाण साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएणं से वेसमाणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएणं एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–गच्छह णातुब्भे देवाणुप्पिया! जबूद्दीव दीव भारहं वास मिहिल रायहाणि कुभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीय च

आसिय च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसपयाणं साहरेइ, साहरित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेह, तएण ते जंभगा देवा वेसमणेणं एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइ विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जबूद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रन्नो भवणसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणंति, तएण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ, तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागअहो पायरासोत्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडि अट्ठ य अणूणाइ सयसहस्साइ इमेयारूव अत्थसपदाण दलयइ, तएणं से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थर२ तहि२ देसे२ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइभत्तवेयणा विपुल असणं पाणं खाइम साइम उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छति त जहा–पथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहित्था वा तेसिं य तहा

आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विपुलं असणं४ परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति, तएणं मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ, एवं पण्णवेइ,एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणु० ! कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणिय किमिच्छिय विपुलं असणं४ बहुणं समणाण य जाव परिविसिज्जइ।

" वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जइ बहुविहीयं ।
सुरअसुरदेवदाणव नरिंद महियाण निक्खमणे ॥१॥

तएणं मल्ली अरहा सवच्छरेणं तिन्निकोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडिओ असिति च सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थ संपयाणं दलइत्ता निक्खमामित्ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३७ ॥

टीका—' तेण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौधर्मकल्पे शक्रस्य=इन्द्रस्य आसन चलति, तत' खलु शक्रो देवेन्द्र =देवाना मध्ये परमैश्वर्यवान् देवराज आसन चलित पश्यति, दृष्ट्वा ' ओहिं ' अवधि ' पउंजइ ' प्रयुङ्क्ते, केन कारणेन ममासन चलतीत्येतस्मिन् विषये स्वकीयोपयोग ददाति इत्यर्थ । प्रयुज्य=अवधिज्ञानेन ' आभोएइ ' आभोगयति=विलोकयति, मल्ली अर्हन् खलु

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (सक्कस्सासणं चलइ) इन्द्र का आसन चलायमान हुआ (तएण सक्के देविंदे देवराया आसण चालिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ) देवों के बीच में परम ऐश्वर्यवान्

" तेण कालेण तेण समएण " इत्यादि ॥

ટીકાર્થ (तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે વખતે (सक्कस्सासण चलइ) ઇન્દ્રનુ આસન રાતી ઉઠયુ

(तएण सक्के देविंदे देवराया आसण चालिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ)

निष्क्रमण कर्तुमुद्यक्तो वर्तत इति विजानाति स्मेत्यर्थ । ' आभोइत्ता ' आभोग कृत्वा ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूप', आध्यात्मिक =आत्मनिष्ठः, यावत् सङ्कल्प' समुदपद्यत=सजातः-एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे मध्य जम्बूद्वीपे भारते भरतक्षेत्रे दक्षिणार्ध भरते, वर्षे मिथिलाया राजधान्या कुम्भकस्य राज्ञो भवने मल्ली अर्हन् मनसि प्रधारयति-" निष्क्रामिष्यामि=अहं दीक्षा ग्रहीष्यामि"

शक्र देवराज ने ज्यों ही अपने आसन को चलायमान देखा-तो देख कर उसने अपने अवधिज्ञान को जोडा-जोड कर मल्ली अरिहंत को उसने अवधिज्ञान से देखा ।

यहा अवधिज्ञान को जोडने का तात्पर्य यह है कि जब इन्द्रने अपने आसन को चलायमान देखा तो " किस कारण से मेरा आसन कपायमान हो रहा है" इस विषयमें अपने उपयोग को लगाया । इस प्रकार से अवधिज्ञान-उपयोग का लगाना ही अवधिज्ञान का जोडना है । (आभोइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था-एव खलु जम्बू दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभगस्स रण्णो भवणसि मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मण पहारेइ) मल्ली अरिहंत सप्रति निष्क्रमण करने के लिये उद्युक्त हो रहे है-ऐसा जान करके उसके मन में इस प्रकार का यह मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-इस जम्बूद्वीप नामके द्वीप में भारत वर्ष क्षेत्र में मिथिला नामकी नगरी में कुभक राजा के भवन

ઘણા દેવોમા પરમ અશ્વર્યવાન દેવરાજ ઈન્દ્રે જ્યારે પોતાનુ આસન ડોલતુ જોયુ ત્યારે તેઓએ અવધિજ્ઞાનના પ્રયોગથી મલ્લી અરહંતને જોયા

અહીં અવધિજ્ઞાનને જોડવાનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે ઈન્દ્રે પોતાના આસનને ડગમગ થતુ જોયુ ત્યારે શા કારણથી મારૂ આસન ડોલતુ થયુ છે ? " આ વિશે પોતાનો ઉપયોગ (ધ્યાન) ને લગાવ્યો આ રીતે અવધિજ્ઞાનને ઉપયોગમા લગાવવુ જ અવધિજ્ઞાનને જોડવુ તેમ કહેવાયછે

(आभोइत्ता, इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था एव खलु जम्बू द्वीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभगस्स रण्णो भवणंसि मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मण पहारइ)

મલ્લી અરિહંત હવે નિષ્ક્રમણના માટે તૈયાર થઈ રહ્યા છે આમ જાણીને તેના મનમા આ જાતનો મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે આ જ બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા, મિથિલા નામની નગરીમા, કુંભકરાજાના ભવનમા મલ્લીનામના અરિહંત પ્રભુ ' હું દીક્ષા ધારણ કરીશ ?" આ પ્રમાણે વિચાર કરી રહ્યા છે

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेय' जीतमेतत्-जीत-मर्यादा-परम्पराऽऽगत आचारः एतत्-एवमस्ति-यद्-' तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं ' अतीत प्रत्युत्पन्नानागतानां =भूतवर्तमानभाविना, कालत्रयवर्तिनामित्यर्थः शक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानाम् यद्-अर्हतां भगवता निष्क्रामतामिमामेतद्रूपा=वक्ष्यमाणाम् 'अत्थसंपयाणं' अर्थ सपया ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अर्थसपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो निष्क्रमणाभिमुखा भवन्ति, तदा तेषा मातापित्रोर्गृहेऽर्थसपदमुपनयन्ति देवेन्द्रा इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः। इन्द्राः कियद्द्रव्य ददतीत्याकाङ्क्षायामाह-त जहा- इत्यादि-तद् यथा ।

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ ।
असितिं च सयसहस्सा इदा दलयति अरहाण ॥ १ ॥
त्रीण्येव च कोटिशतान्यष्टाशीतिश्च भवन्ति कोटयः ।
अशीतिश्च शतसहस्राणि इन्द्रा ददति अर्हताम् ॥ १ ॥

त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीति कोटयः, अशीतिशतसहस्राणि रजतदीनाराणि तीर्थंकराणां निष्क्रमणे वार्षिकदानाय दातव्यानि भवन्ति तानीन्द्रा अर्हतां भवने ददति=अर्पयन्ति ।

में मल्ली नाम के अरिहंत प्रभु " मैं दीक्षा धारण करूँगा " ऐसा विचार कर रहे हैं (त जीयमेय तीयपच्चुप्पन्नमणागयाण सक्काण ३ अरहंताणं भगवताण निक्खममाणाणं इमेयारूव अत्थ सपयाण दलित्तए) इस लिये कालत्रयवर्त्ती देवेन्द्रों का परम्परागत यह आचार है कि वे दीक्षा लेने के लिये तत्पर हुए तीर्थंकर प्रभुओं के माता पिताओं के घर अर्थ सपत्ति प्रदान करें देवेन्द्र जो अर्थ सपत् प्रदान करते हैं (त जहा) उस का प्रमाण इस प्रकार है तीन सौ करोड, अट्ठासी करोड, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें । वार्षिक दान में तीर्थंकरों के निष्क्रमण के समय में इतना द्रव्य इन्द्र उन के भवन पर लाकर रखते हैं ।

(त जीयमेय तीय पच्चुपन्नमणा गयाण सक्काणं ३ अरहंताणं भगवंताण निक्खममाणाना इमेयारूव अत्थसपयाण दलित्तए)

એટલા માટે ત્રણકાળવર્તી દેવેન્દ્રોના પરંપરાથી ચાલતો આવેલો આ પ્રમાણેનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થંકર પ્રભુઓના માતા-પિતાઓને અર્થ સંપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સંપત્તિ અર્પે છે (ત જહા) તેનુ પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે " ત્રણસો કરોડ, અઠ્ઠાસી કરોડ અને એંશી લાખ સ્વર્ણમુદ્રાઓ વાર્ષિક દાનમા, તીર્થંકરોના નિષ્ક્રમણના વખતે આટલુ દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોચાડે છે

एव समेक्षते=विचारयतिस्म। समेक्ष्य वैश्रमण देव शब्दयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हता भगवता निष्क्रमता त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटी अशीतिशतसहस्राणि दातु सर्वेषामिंद्राणा मर्यादाऽस्तीति भावः। तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकभवने इमामेतद्रूपामर्थप्रपद खलु 'साहराहि' सहर=मापय। सहृत्य क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम 'एयमाणत्तिय' आज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पण कुरु।

ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैवमुक्तो हृष्टः करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=एव "करिष्यामि" इत्युक्त्वा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

(एव सपेहेइ, सपेहित्ता वेसमण देव सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ऐसा विचार उस शक्र देवेन्द्र ने किया। कर के फिर उसने वैश्रमणदेव-कुवेर-को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया। जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइ दलइत्तए) हे देवानुप्रिय ! इस जबूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष क्षेत्र में मिथिला नाम की नगरी है। उस के राजा कुभक के महल में मल्ली नाम की तीर्थंकर प्रभु हैं वे दीक्षा लेने का विचार कर रहे हैं। इसलिये इन्द्रो का यह परम्परागत नियम है कि वे उन के निष्क्रमण महोत्सव के समय तीन सौ करोड़, अट्ठासी करोड, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें वार्षिक दान में देने के लिये उन के माता पिता के भवन

(एव सपेहेइ, सपेहित्ता वेसमण देव सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

તે શક્ર દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ કુબેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યું—

(एव खलु देवाणुप्पिया ! जूबद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सय सहस्साइ दलइत्तए)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા મિથિલા નામની નગરી છે ત્યાના રાજા કુભકના મહેલમા મલ્લી નામના તીર્થંકર પ્રભુ છે તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી રહ્યા છે એટલા માટે ઇન્દ્રોનો આ જાતનો પરપરાથી ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવના વખતે ત્રણસો કરોડ, ઈકયાશી કરોડ અને એશી લાખ સોના મહોરો વાર્ષિક દાનના રૂપમા તેમને ત્યા ઘેર પહોચાડે

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेय' जीतमेतत्-जीत-मर्यादा-परम्पराऽऽगत आचार एतत्-एवमस्ति-यद्-' तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं ' अतीत प्रत्युत्पन्नानागतानां =भूतवर्तमानभाविनां, कालत्रयवर्तिनामित्यर्थः शक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानाम् यद्-अर्हतां भगवता निष्क्रामतामिमामेतद्रूपा=वक्ष्यमाणाम् 'अत्थसंपयाणं' अर्थसंपदा ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अर्थसंपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो निष्क्रमणाभिमुखा भवन्ति, तदा तेषां मातापित्रोर्गृहेऽर्थसंपदमुपनयन्ति देवेन्द्रा इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः। इन्द्राः कियद्द्रव्य ददतीत्याकाङ्क्षायामाह-त जहा- इत्यादि-तद् यथा ।

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ ।
असितिं च सयसहस्सा इदा दलयति अरहाण ॥ १ ॥
त्रीण्येव च कोटिशतान्यष्टाशीतिश्च भवन्ति कोटयः ।
अशीतिश्च शतसहस्राणि इन्द्रा ददति अर्हताम् ॥ १ ॥

त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीति कोटयः, अशीतिशतसहस्राणि रजतदीनाराणि तीर्थंकराणां निष्क्रमणे वार्षिकदानाय दातव्यानि भवन्ति तानीन्द्रा अर्हतां भवने ददति=अर्पयन्ति ।

में मल्ली नाम के अरिहंत प्रभु " मैं दीक्षा धारण करूँगा " ऐसा विचार कर रहे हैं (त जीयमेय तीयपच्चुप्पन्नमणागयाण सक्काण ३ अरहंताणं भगवंताण निक्खममाणाणं इमेयारूव अत्थसंपयाण दलित्तए) इस लिये कालत्रयवर्त्ती देवेन्द्रो का परम्परागत यह आचार है कि वे दीक्षा लेने के लिये तत्पर हुए तीर्थंकर प्रभुओं के माता पिताओं के घर अर्थ संपत्ति प्रदान करें देवेन्द्र जो अर्थ संपत् प्रदान करते हैं (त जहा) उस का प्रमाण इस प्रकार है तीन सौ करोड, अट्ठासी करोड, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें । वार्षिक दान में तीर्थंकरों के निष्क्रमण के समय में इतना द्रव्य इन्द्र उन के भवन पर लाकर रखते हैं ।

(त जीयमेय तीय पच्चुपन्नमणा गयाण सक्काणं ३ अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाना इमेयारूव अत्थसंपयाण दलित्तए)

એટલા માટે કાળત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરંપરાથી ચાલતો આવેલો આ પ્રમાણેનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થંકર પ્રભુઓના માતા-પિતાઓને અર્થ સંપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સંપત્તિ અર્પે છે (ત જહા) તેનુ પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે " ત્રણસો કરોડ, અઠ્ઠાશી કરોડ અને એંશી લાખ સ્વર્ણમુદ્રાઓ વાર્ષિક દાનમા, તીર્થંકરોના નિષ્ક્રમણના વખતે આટલુ દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોચાડે છે

एव समेक्षते=विचारयतिस्म। समेक्ष्य वैश्रमण देव शब्दयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हता भगवता निष्क्रमता त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटी अशीतिशतसहस्राणि दातु सर्वेषामिंद्राणा मर्यादाऽस्तीति भावः। तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकभवने इमामेतद्रूपामर्थसपद खलु 'साहराहि' सहर=मापय। सहृत्य क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम 'एयमाणत्तिय' आज्ञप्तिका प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पण कुरु।

ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैवमुक्तो हृष्टः करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=एव "करिष्यामि" इत्युक्त्वा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

(एव स पेहेइ, स पेहित्ता वेसमण देव सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ऐसा विचार उस शक्र देवेन्द्र ने किया। कर के फिर उसने वैश्रमणदेव-कुवेर-को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया। जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइ दलइत्तए) हे देवानुप्रिय ! इस जबूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष क्षेत्र मे मिथिला नाम की नगरी है। उस के राजा कुभक के महल में मल्ली नाम की तीर्थंकर प्रभु हैं वे दीक्षा लेने का विचार कर रहे हैं। इसलिये इन्द्रों का यह परम्परागत नियम है कि वे उन के निष्क्रमण महोत्सव के समय तीन सौ करोड़, अट्ठासी करोड, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें वार्षिक दान में देने के लिये उन के माता पिता के भवन

(एव सपेहेइ, सपेहित्ता वेसमण देव सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

તે શક્ર દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ કુબેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યુ—

(एव खलु देवाणुप्पिया ! जूबद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सय सहस्साइ दलइत्तए)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા મિથિલા નામની નગરી છે ત્યાના રાજા કુભકના મહેલમા મલ્લી નામના તીર્થંકર પ્રભુ છે તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી રહ્યા છે એટલા માટે ઇન્દ્રોનો આ જાતનો પરપરાથી ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવના વખતે ત્રણસો કરોડ, ઈકયાશી કરોડ અને એશી લાખ સોના મહોરો વાર્ષિક દાનના રૂપમા તેમને તેમ ઘેર પહોચાડે

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेय' जीतमेतत्-जीत-मर्यादा-परम्पराऽऽगत आचार एतत्-एवमस्ति-यद्-' तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं ' अतीत प्रत्युत्पन्नानागतानां =भूतवर्तमानभाविना, कालत्रयवर्तिनामित्यर्थः शक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानाम् यद्-अर्हतां भगवता निष्क्रामतामिमामेतद्रूपा=वक्ष्यमाणाम् ' अत्थसंपयाणं' अर्थसंपदा ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अर्थसंपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो निष्क्रमणाभिमुखा भवन्ति, तदा तेषां मातापित्रोर्गृहेऽर्थसंपदमुपनयन्ति देवेन्द्रा इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः। इन्द्राः कियद्द्रव्य ददतीत्याशङ्क्याहमूलाय आह-त जहा-इत्यादि-तद् यथा ।

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ ।
असितिं च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाण ॥ १ ॥
त्रीण्येव च कोटिशतान्यष्टाशीतिश्च भवन्ति कोटयः ।
अशीतिश्च शतसहस्राणि इन्द्रा ददति अर्हताम् ॥ १ ॥

त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीति कोटयः, अशीतिशतसहस्राणि स्वर्णदीनाराणि तीर्थंकराणां निष्क्रमणे वार्षिकदानाय दातव्यानि भवन्ति तानीन्द्रा अर्हतां भवने ददति=अर्पयन्ति ।

में मल्ली नाम के अरिहंत प्रभु " मैं दीक्षा धारण करूँगा " ऐसा विचार कर रहे हैं (त जीयमेय तीयपच्चुप्पन्नमणागयाण सक्काण ३ अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूव अत्थसंपयाण दलित्तए) इस लिये कालत्रयवर्त्ती देवेन्द्रों का परम्परागत यह आचार है कि वे दीक्षा लेने के लिये तत्पर हुए तीर्थंकर प्रभुओं के माता पिताओं के घर अर्थ संपत्ति प्रदान करें देवेन्द्र जो अर्थ संपत् प्रदान करते हैं (त जहा) उस का प्रमाण इस प्रकार है तीन सौ करोड, अट्ठासी करोड, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें । वार्षिक दान में तीर्थंकरों के निष्क्रमण के समय में इतना द्रव्य इन्द्र उन के भवन पर लाकर रखते हैं ।

(त जीयमेय तीय पच्चुपन्नमणा गयाण सक्काणं ३ अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाना इमेयारूव अत्थसंपयाण दलित्तए)

એટલા માટે કાળત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરંપરાથી ચાલતો આવેલો આ પ્રમાણેનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થંકર પ્રભુઓના માતા-પિતાઓને અર્થ સંપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સંપત્તિ અર્પે છે (त जहा) તેનુ પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે " ત્રણસો કરોડ, ઈક્યાશી કરોડ અને અસ્સી લાખ સ્વર્ણમુદ્રાઓ વાર્ષિક દાનમા, તીર્થંકરોના નિષ્ક્રમણના વખતે આટલુ દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોંચાડે છે.

एव संप्रेक्षते=विचारयतिस्म। संप्रेक्ष्य वैश्रमण देव शब्दयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हता भगवता निष्क्रमता त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटी अशीतिशतसहस्राणि दातु सर्वेषामिंद्राणा मर्यादाऽस्तीति भावः। तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकभवने इमामेतद्रूपामर्थसपद खलु 'साहराहि' संहर=मापय। संहृत्य क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम 'एयमाणत्तिय' आज्ञप्तिका प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पण कुरु।

ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैवमुक्तो हृष्टः करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=एव "करिष्यामि" इत्युक्त्वा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

(एव संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमणं देव सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ऐसा विचार उस शक्र देवेन्द्र ने किया। कर के फिर उसने वैश्रमणदेव-कुवेर-को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया। जंबूदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइ दलइत्तए) हे देवानुप्रिय ! इस जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष क्षेत्र में मिथिला नाम की नगरी है। उस के राजा कुभक के महल में मल्ली नाम की तीर्थंकर प्रभु हैं वे दीक्षा लेने का विचार कर रहे हैं। इसलिये इन्द्रों का यह परम्परागत नियम है कि वे उन के निष्क्रमण महोत्सव के समय तीन सौ करोड़, अट्ठासी करोड, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें वार्षिक दान में देने के लिये उन के माता पिता के भवन

(एव संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमण देव सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

તે શક દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ કુબેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યું—

(एव खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइ दलइत्तए)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા મિથિલા નામની નગરી છે ત્યાના રાજા કુભકના મહેલમા મલ્લી નામના તીર્થંકર પ્રભુ છે તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી રહ્યા છે એટલા માટે ઇન્દ્રોનો આ જાતનો પરંપરાથી ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવના વખતે ત્રણસો કરોડ, એંકયાશી કરોડ અને એશી લાખ સોના મહોરો વાર્ષિક દાનના રૂપમા તેમને તેમના ઘેર પહોચાડે

देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! गच्छत खलु यूयं जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकस्य राज्ञो भवने-त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीतिकोटीः, अशीतिशतसहस्राणि, इमामेतद्रूपा मर्थसपद "साहरह" संहरत=मापयत संहृत्य ममाज्ञप्तिं प्रत्यर्पयत। ततः खलु तेजःप्रभादेवाः, 'वेसमणेण' वैश्रमणेन=एवमुक्ता सन्तो हृष्टतुष्टा यावत् प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'उत्तरपुरत्थिमं' उत्तरपौरस्त्यम्=ईशानकोणरूप 'दिसीभाग' दिग्भागम्, 'अवक्कमंति' अवक्रामन्ति, गच्छन्ति, अवक्रम्य=गत्वा यावत्-'उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं' उत्तरवैक्रियाणि रूपाणि विकुर्वन्ति विकुर्वंगा कुर्वन्ति 'विकुर्वित्ता' विकुर्वित्वा, 'विकुर्व' इति सौत्रो धातु, तेन लयव न भवति। तयोत्कृष्टया गत्या=दिव्यगत्या देवसम्बन्धि 'वीइवयमाणा' व्यतिव्रजन्त. आगच्छन्तः यत्रैव जम्बूद्वीप द्वीपः, भारत वर्ष, यत्रैव मिथिला राजधानी, यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवन, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य राज्ञो भवने त्रीणि कोटिशतानि यावत्-अष्टाशीतिकोटी, अशीतिलक्षाणि इमामेतद्रूपामर्थसम्पद 'साहरंति' संहरन्ति=मापय। संहृत्य-यत्रैव वैश्रमणो देवस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं

पर पहुँचावें (तं गच्छह्ण देवाणुप्पिया ! जम्बूद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिल्लाए कुभगभवणसि इमेयारूवे अत्थ सपदाण साहराहि) अत हे देवानुप्रिय ! तुम जाओ-और जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारत वर्ष क्षेत्र में वर्तमान मिथिला नगरी के कुभक राजा के भवन पर इतनी पूर्वोक्त अर्थ सपत्ति को पहुँचाओ (साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाण त्तिय पच्चप्पिणाहि) पहुँचा कर पीछे हमें इस की खबर दो। (तएण से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडि सुणेइ) शक्र देवेन्द्र देव राज के द्वारा इस प्रकार आज्ञापित किये

(त गच्छह्ण देवाणुप्पिया ! जबू दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभग भवणसि इमेयारूवे अत्थसपदाण साहराहि)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જાઓ અને જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા સ્થિત ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા વિદ્યમાન મિથિલા નગરીના કુભક રાજાના ભવન ઉપર કહ્યા મુજબ અર્થ સપત્તિ-એટલે કે દ્રવ્ય તેમને ત્યા પહોચાડો (साहरित्ता खिप्पामेव मम एयम) પહોચાડીને તમે અમને સૂચિત કરો

(तएण से वेर) देविंदेण देवराएण एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ)

कृत्वा यावत्-प्रत्यर्पयन्ति, भवदीयाज्ञानुसारेण सर्वंसाधितमस्माभिरिति निवेदयन्ति स्म। ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवो यत्रैव शक्रो देवेन्द्रो देवराजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीत दशनख यावत् प्रत्यर्पयन्ति।

गये उस वैश्रवण देव ने हर्षित एव सतुष्ट होते हुए अपने दोनों हाथों की अजलि बना कर उसे मस्तक पर रक्खा और नमस्कार कर देवेन्द्र की बात स्वीकार कर ली। "मैं ऐसा ही करूँगा" इस प्रकार कह कर उस ने उन की आज्ञा मान ली।

(पडि सुणित्ता जभए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! जबूदीव दीव भारह वास मिहिल रायहाणिं कुभगस्स भवणसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीय च कोडीओ आसे य च सयसहस्साइ अयमेयारूव अत्थ सपयाण साहरेइ) आज्ञा मानकर फिर उस ने जृभकदेवों को बुलाया और बुला कर उन से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो! तुम जबूद्वीप नाम के इस द्वीप में स्थित भारत वर्ष क्षेत्रान्तर्गत मिथिला नाम की राजधानी मे जाओ-और जाकर वहा के कुभक राजा के महल में तीन सौ अट्ठासी करोड ८०, अस्सी लाख सुवर्ण दीनारे पहुँचाओ (साहरित्ता) पहुँचा कर (मम एयमाणात्तिय पच्चप्पिणेह) फिर मुझे इस आज्ञा प्रर्ति की पीछे खबर दो। (तएण

શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજ વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલા વૈશ્રવણ દેવ કુબેર હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઈને પોતાના બને હાથોની અજલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને દેવેન્દ્રની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી "હુ આમ જ કરીશ" આ પ્રમાણે કહીને તેમની તેણે આજ્ઞા સ્વીકારી

(पडिसुणित्ता जभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! जबूदीव दीव भारह वास मिहिल रायहाणिं कुभगस्स भवणसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीय च कोडीओ आसे य च सयसहस्साइ अयमेयारूव अत्थसपयाण साहरेइ)

આજ્ઞા સ્વીકારીને તેણે જૃભક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા સ્થિત ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા વર્તમાન મિથિલા નામની રાજધાનીમા જાઓ અને જઈને ત્યાના કુભક રાજાના મહેલમા ત્રણસો કરોડ, ઇકયાશી કરોડ, એશી લાખ સોના મહોરો પહોચાડો (मम एयमाणात्तिय पच्चप्पिणेह) પહોચાડયા બાદ મારી આજ્ઞા પ્રમાણે સપૂર્ણપણે કામ પૂરૂ થઇ ગયુ છે તેની મને ખબર આપો

देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! गच्छत खलु यूयं जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकस्य राज्ञो भवने-त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीतिकोटी , अशीतिशतसहस्राणि, इमामेतद्रूपा-मर्थसपद "साहरह" संहरत=मापयत संहृत्य ममाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत। ततः खलु तेजृम्भकादेवाः, 'वेसमणेण' वैश्रमणेन=एवमुक्ता. सन्तो हृष्टतुष्टा यावत् मतिं शृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'उत्तरपुरत्थिमं' उत्तरं पौरस्त्यम्=ईशान-कोणरूप 'दिसीभाग' दिग्भागम् , 'अवक्कमंति' अवक्रामन्ति, गच्छन्ति, अवक्रम्य=गत्वा यावत्-'उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं' उत्तरवैक्रियाणि रूपाणि विकु-र्वन्ति विकुर्वंगा कुर्वन्ति 'विकुव्वित्ता' विकुर्वित्वा, 'विकुर्व' इति सौत्रो धातु, तेन ल्यब न भवति। तयोत्कृष्टया गत्या=दिव्यगत्या देवसम्बन्धि 'वीइवयमाणा' व्यतिव्रजन्तः आगच्छन्तः यत्रैव जम्बूद्वीप द्वीपः, भारत वर्ष, यत्रैव मिथिला राजधानी, यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवन, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य राज्ञो भवने त्रीणि कोटिशतानि यावत्-अष्टाशीतिकोटी , अशीतिलक्षाणि इमामेतद्रू-पामर्थसम्पद 'साहरंति' संहरन्ति=मापय। संहृत्य-यत्रैव वैश्रमणो देवस्त त्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं

पर पहुँचावें (त गच्छह्ण देवाणुप्पिया ! जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभगभवणसि इमेयारूवे अत्थ सपदाण साहराहि) अत हे देवानुप्रिय ! तुम जाओ-और जबूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारत वर्ष क्षेत्र में वर्तमान मिथिला नगरी के कुभक राजा के भवन पर इतनी पूर्वोक्त अर्थ सपत्ति को पहुँचाओ (साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाण त्तिय पच्चप्पिणाहि) पहुँचा कर पीछे हमें इस की खबर दो। (तएण से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडि सुणेइ) शक्र देवेन्द्र देव राज के द्वारा इस प्रकार आज्ञापित किये

(त गच्छह्ण देवाणुप्पिया ' जबू दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभग भवणसि इमेयारूवे अत्थसपदाण साहराहि)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જાઓ અને જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા સ્થિત ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા વિદ્યમાન મિથિલા નગરીના કુભક રાજાના ભવન ઉપર કહ્યા મુજબ અર્થ સપત્તિ એટલે કે દ્રવ્ય તેમને ત્યા પહોચાડો (साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि) પહોચાડીને તમે અમને સૂચિત કરો

(तएण से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ)

ततस्तदनन्तर खलु मल्ली अर्हन् ' कल्लाकल्लिं ' कल्याकल्ये=प्रतिदिवस ' जाव मागहओ पायरासोत्ति ' यावत्-मागधक प्रातराश, मगधदेशसम्बन्धिन प्रातरार्भ -प्राभातिक भोजनकाल यावत् आरभ्य प्रहरद्वयपर्यन्त बहुभ्यः ' सणाहाण य ' सनाथेभ्य -स्वस्वामिकेभ्यश्च ' अणाहाण य ' अनाथेभ्यश्च=रङ्केभ्यश्च, ' पथियाग यं ' पान्थिकेभ्यः पन्थान नित्य गच्छन्तीति पान्थास्त एव पान्थिकास्तेभ्यश्च, ' पहियाण य ' पथिकेभ्यः-पथि गच्छन्तीति पाथिकास्तेभ्यश्च, 'करोडियाण य ' कारोडिकेभ्यः=करोट्या कपालेन चरन्तीति करोटिकास्तेभ्यश्च, ' खप्परधारी ' इतिभाषाप्रसिद्धेभ्यश्च, ' कप्पडियाण य ' कार्पटिकेभ्य -कर्पटैश्चरन्तीति कार्पटिकास्तेभ्यः, कन्थाधारि-भिक्षुकेभ्य , एकमेकहिरण्यकोटिम्, तथा-' अट्ठ च

सा जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणति) रखकर फिर वे जहां वैश्रमण देव था वहां गये वहा जाकर उन्हो ने हाथ जोडकर " आपकी आज्ञानुसार हमने कुभक राजा के भवन अर्थ सपदा पहुँचा दी है, ऐसी खबर उसे पीछे कर दी । (तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासोत्ति बहूण सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेग हिरण्णकोडिं अट्ठय अणूणाइ सयसहस्साइ इमेयारूव अत्थ संपदाण दलयइ) इसके बाद मल्ली अरिहत प्रभु ने कल्याकल्य-प्रतिदिन प्रातः समय से लेकर दोपहर तक अपने सनाथों को, अनाथों को, पन्थिकों को, पथिकों, खप्पर धारियो को, कन्था धारियो को प्रतिदिवस १ वर्ष तक १ करोड ८० अस्सी लाख स्वर्ण दीनारें दी ।

(साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणति)

મૂકયા પછી તેઓ જ્યા વૈશ્રમણ દેવો હતા ત્યા ગયા, ત્યા જઇને તેઓએ હાથ જોડીને " તમારી આજ્ઞા મુજબ અમોએ કુભક રાજાના ભવનમા અર્થ-સપત્તિ પહોચાડી દીધી છે " આ પ્રમાણેની સૂચના કરી

(तएण मल्ली अरहा । कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासोत्ति बहूण सणाहाणा य अणाहाण य पथियाणय पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाणय एगमेग हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणाइ सयसहस्साइ इमेयारूव अत्थसपदाण दलयइ)

ત્યારબાદ મલ્લી અરહત પ્રભુએ કટયાકટય દરરોજ સવારના વખતથી માડીને બપોરસુધી ઘણા સનાથોને, અનાથોને, પાથોને અને પથિકોને, ખપ્પરધારીઓને, કન્થાધારીઓને એક વર્ષ સુધી એક કરોડ એશી લાખ સોના મહોરો આપી.

ते जभगा देवा वेसमणेण एव वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जाव उत्तर वेउव्वियाइ, रूवाइ विउव्वति) इस के बाद वैश्रमण देव के द्वारा इस तरह अज्ञापित हुए उन जृभक देवो ने हर्षित एव सतुष्ट होकर उस की आज्ञा को मान लिया-स्वीकार कर लिया-। स्वीकार कर के ईशान कोण की ओर गये। वहा जाकर उन्हो ने उत्तर वैक्रिय रूपों की विकुर्वणा की-(विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जबूदीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी, जेणेव कुभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छति) विकुर्वणा करके फिर वे उस देव गति सबन्धी उत्कृष्ट गति से यावत् चलते हुए जहा जबूद्वीप नाम का द्वीप भारत वर्ष नाम का क्षेत्र, उस में भी जहा मिथिला नाम की राजधानी उसमें भी जहा कुभक राजा का राज प्रासाद था-वहा आये।

(उवागच्छित्ता कुभगस्स रण्णो भवणसि तिन्नि कोडिसया जाव साहरति) वहा आकर उन्हों ने कुभक राजा के भवन में तीनसौ अट्ठासी करोड और ८०लाख सुवर्ण दीनारसे भडार भर दिया। (साहरि-

(तएण जभगा देवा वेसमणेण एव वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव पडिसुणे ति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमति अवक्कमित्ता जाव उत्तर-वे उव्वियाइ रूवाइ विउव्व ति)

ત્યારબાદ વૈશ્રવણ દ્વારા આજ્ઞાપિત થયેલા જૃભક દેવોએ હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઇને તેની આજ્ઞાને માની લીધી એટલે કે તેની આજ્ઞા સ્વીકારી સ્વીકાર્યા બાદ તેઓ ઈશાન કોણ તરફ ગયા ત્યા જઇને તેઓએ ઉત્તર વૈક્રિય રૂપોની વિકુર્વણા કરી

(विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जबूदीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी, जेणेव कुभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छति)

વિકુર્વણા કર્યા પછી તેઓ દેવગતિ સબધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી ચાલતા જ્યા જંબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ, ભારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર અને તેમા પણ જ્યા મિથિલા નામની રાજધાનીમા કુભક રાજાનો મહેલ હતો ત્યા ગયા

(उवागच्छित्ता कुभगस्स रण्णो भवणसि तिन्नि कोडिसया जाव साहरति) ત્યા જઇને તેઓએ કુભક રાજાના મહેલમા ત્રણસો એકયાશીકરોડ અને એશી લાખ સોનામહોરો ભડાર-ખજાનામા મૂકી દીધી

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्थाः पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था वा, तेसिं च=तेषाम्=आगताना, चकारः-समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखासनवरगतस्य तद् विपुलमशन पान खाद्य खाद्य 'परिभाएमाणा' परिभाजयन्त.=विभाग कुर्वन्त' 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्त. विहरन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे बहवो मनुष्या विपुलस्याशनादि चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्यः तत्तद्देशावस्थितेभ्यश्च विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषण कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थ.।

ततस्तदनन्तर खलु मिथिलाया शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य=परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्म, एव 'भासइ' भाषते. साश्चर्य वक्ति, अपूर्व

चतुर्विध आहार को पका कर वहां जो जैसे आते थे (तजहा) यथा-चाहे वे (पथियावा पहिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर धारी भिक्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखडी धर्म में स्थित हो, चाहें गृहस्थजन हो, (तेसिंपि-तहा आसत्थस्स, वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को, विश्वस्तों को, एव सुखासनवरगतो को उस विपुल अशनादिरूप आहार को बाँट देते थे तथा वही पर जिमा देते थे।

(तएण मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासइ एव पन्नवेइ, एव परूवेइ,-एव खलु देवाणु०।

આહારો તૈયાર કરીને ત્યા ગમે તેવા માણસો આવતા (त जहा) જેમકે (पथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा) પાથિક જન, ખપ્પરધારી ભિક્ષુક, કથાધારી ભિક્ષુક, પાખડી ધર્મને આચરનારા અને ગૃહસ્થીઓ ગમે તે જાત પથના લોકો ત્યા આવતા

(तेसिंपि तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसेणा विहरति)

તેઓ બધાને તેમજ તે દેશમા રહેનારા બીજા ઘણા માણસોને, આશ્વસ્થોને, વિશ્વસ્તોને અને સુખાસનવર ગતોને તે પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવવામા આવેલો આહાર વહેચવામા આવતો હતો તેમજ તેઓને ત્યાજ જમાડવામા પણ આવતા હતા

(तएण मिहिलाए रिंगाडग जाव बहु जणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ,एवं

अन्यूनानि पूर्णानि शतसहस्राणि '=लक्षाणि एककोटिमष्टलक्षाणि च स्वर्णदीनाराणि इमामेतद्रूपामर्थसम्पदं 'दलयइ' ददाति ।

' ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मिथिलायां राजधान्यां तत्र तत्र=अवान्तर पुरादौ, तथा तस्मिन् तस्मिन् देशेदेशे=शृङ्गाटकादौ यज्ञीमेदानसशालाः ओदनादीनां पाकगृहाणि=कारयति । ततः खलु बहवो मनुष्याः ते कथभूता इत्याह-' दिन्न भइभत्तवेयणा ' इति, दत्तभृतिभक्तवेतनाः=दत्त भृतिभक्तलक्षण द्रव्य भोजनस्वरूप वर्तन मूल्य येभ्यस्ते तथा, यद्वा-भृत्तिर्भरण पोष्यवर्गार्थमन्नादिक, भक्त-स्व भोजनार्थं, वेतन-अशनादि संस्कारकरणपारिश्रमिक च तानि दत्तानि भृतिभक्त वेतनानि येभ्यस्ते तथा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यम्-' उवक्खडेंति ' उपस्कुर्वन्ति चतुर्विधाहार निष्पादयन्ति, उपस्कृत्य, ये यथाऽऽगच्छन्ति ' तजहा ' तद् यथा-

---

प्रतिदिन-नित्य-मार्ग चलने वाले व्यक्ति यहा पान्थिक शब्द से, तथा जय कभी मार्ग चलने वाले व्यक्ति पथिक शब्द से गृहीत हुए है। (तएण से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणसलालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडेंति उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छइ) इस के अनन्तर उन कुभक राजा ने मिथिला राजधानी में जहाँ तहा अवान्तर पुर आदि में-उस प्रदेश में शृगाटक आदि रास्तों में अनेक रसोंई घर स्थापित करवा दिये, उनमें अनेक रसोइये अशन पान आदी रूप चतुर्विध आहार विपुल मात्रा में बनाते थे ।

इसके उपलक्ष्य मे उन्हे तथा उनके पोष्य वर्ग के लिये वहा से भो जन मिलता था और उन भोजन बनाने वालों के लिये वहां से वेतन भी मिलता था । वे विपुल मात्रा मे अशन पान, खाद्य, स्वाद्य तथा रूप

દરરોજ નિત્ય રસ્તે ચાલતા રહેનારાઓ અહીં 'પાથિક' શબ્દથી તેમજ કોઈક દિવસ રસ્તે ચાલનારાઓ 'પથિક' શબ્દથી સમજવા જોઇએ

(तएण से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणसमालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छइ)

ત્યારબદ કુભક રાજાએ મિથિલા નગરીમા બધે અન્તરપુર વગેરેમા તે પ્રદેશોમા શૃગાટક વગેરે રસ્તાઓમા ઘણા રસોઈ ઘરો સ્થાપિત કરાવડાવ્યા તેઓમા ઘણા રસોઇયાઓ અશન, પાન વગેરે રૂપમા પુષ્કળ પ્રમાણમા ચારે જાતના આહારો તૈયાર કરતા હતા

એના બદલ તેઓને તથા તેમની સાથેના બીજા માણસોને ત્યાંથી ભોજન મળતું હતું અને રસોઈ તૈયાર કરનાર માણસોને પગાર પણ મળતો હતો તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યના રૂપમા જાતના

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्थाः पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था वा, तेसिं च=तेषाम्=आगताना, चकारः-समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्थ सुखासनवरगतस्य तद् विपुलमशन पान खाद्य खाद्य 'परिभाएमाणा' परिभाजयन्तः =विभाग कुर्वन्त' 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्त. विहरन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे बहवो मनुष्या विपुलस्याशनादि चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्य' तत्तद्देशावस्थितेभ्यश्च विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषण कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः।

ततस्तदनन्तर खलु मिथिलाया शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य =परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्म, एव 'भासइ' भाषते, साश्चर्य वक्ति, अपूर्वं

चतुर्विध आहार को पका कर वहां जो जैसे आते थे (तजहा) यथा -चाहे वे (पथियावा पहिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर धारी भिक्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखडी धर्म में स्थित हो, चाहें गृहस्थजन हो, (तेसिंय-तहा आसत्थस्स, वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को, विश्वस्तो को, एव सुखासनवरगतो को उस विपुल अशनादिरूप आहार को बाँट देते थे तथा वहीं पर जिमा देते थे।

(तएण मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासइ एव पन्नवेइ, एव परूवेइ,-एव खलु देवाणु०।

આહારો તૈયાર કરીને ત્યા ગમે તેવા માણસો આવતા (त जहा) જેમકે (पथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा) પાથિક જન, ખપ્પરધારી ભિક્ષુક, કથાધારી ભિક્ષુક, પાખડી ધર્મને આચરનારા અને ગૃહસ્થીઓ ગમે તે જાત પથના લોકો ત્યા આવતા

(तेसिंय तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसेणा विहरति)

તેઓ બધાને તેમજ તે દેશમા રહેનારા બીજા ઘણા માણસોને, આશ્વસ્થોને, વિશ્વસ્તોને અને સુખાસનવર ગતોને તે પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવવામા આવેલો આહાર પરોસવામા આવતો હતો તેમજ તેઓને ત્યાજ જમાડવામા પણ આવતા હતા

(तएण मिहिलाए सिंघाडग जाव बहु जणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ,एवं

भन्यूनानि पूर्णानि शतसहस्राणि '=लक्षाणि एककोटिमिष्टलक्षाणि च स्वर्णदीनाराणि इमागेउद्रूपामर्थसम्पद 'दलयइ' ददाति ।

' ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मिथिलायां राजधान्यां तत्र तत्र=अवान्तर पुरादौ, तथा तस्मिन् तस्मिन् देशेदेशे=शृङ्गाटकादौ बह्वीर्महानसशालाः ओदनादीनां पाकगृहाणि=कारयति । ततः खलु बहवो मनुष्याः ते कथभूता इत्याह-' दिन्न भइभत्तवेयणा ' इति, दत्तभृतिभक्तवेतनाः=दत्त भृतिभक्तलक्षण द्रव्य भोजनस्वरूप वर्तन मूल्य येभ्यस्ते तथा. यद्वा-भृत्तिर्भरण पोष्यवर्गार्थमन्नादिक, भक्त-स्व भोजनार्थं, वेतन-अशनादि संस्कारकरणपारिश्रमिक च तानि दत्तानि भृतिभक्त वेतनानि येभ्यस्ते तथा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यम्-' उवक्खडेंति ' उपस्कुर्वन्ति चतुर्विधाहार निष्पादयन्ति, उपस्कृत्य, ये यथाऽऽगच्छन्ति ' तजहा ' तद् यथा-

---

प्रतिदिन-नित्य-मार्ग चलने वाले व्यक्ति यहां पान्थिक शब्द से, तथा जय कभी मार्ग चलने वाले व्यक्ति पथिक शब्द से गृहीत हुए हैं। (तएण से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहुओ महाणससालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडेंति उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छइ) इस के अनन्तर उन कुभक राजा ने मिथिला राजधानी में जहां तहा अवान्तर पुर आदि में-उस प्रदेश में शृगाटक आदि रास्तों में अनेक रसोई घर स्थापित करवा दिये, उनमें अनेक रसोइये अशन पान आदी रूप चतुर्विध आहार विपुल मात्रा में बनाते थे।

इसके उपलक्ष्य मे उन्हे तथा उनके पोष्य वर्ग के लिये वहा से भो जन मिलता था और उन भोजन बनाने वालों के लिये वहा से वेतन भी मिलता था। वे विपुल मात्रा मे अशन पान, खाद्य, स्वाद्य तथा रूप

દરરોજ નિત્ય રસ્તે ચાલતા રહેનારાઓ અહીં 'પાથિક' શબ્દથી તેમજ કોઈક દિવસ રસ્તે ચાલનારાઓ 'પથિક' શબ્દથી સમજવા જોઇએ

(तएण से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहुओ महाणससालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छइ)

ત્યારબદ્દ કુભક રાજાએ મિથિલા નગરીમા બધે અવાન્તરપુર વગેરેમા તે પ્રદેશોમા શૃગાટક વગેરે રસ્તાઓમા ઘણા રસોઈ ઘરો સ્થાપિત કરાવડાવ્યા તેઓમા ઘણા રસોઈયાઓ અશન, પાન વગેરે રૂપમા પુષ્કળ પ્રમાણમા ચારે જાતના આહારો તૈયાર કરતા હતા

એના બદલ તેઓને તથા તેમની સાથેના બીજા માણસોને ત્યાંથી ભોજન મળતું હતું અને રસોઈ તૈયાર કરનાર માણસોને પગાર પણ મળતો હતો તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યના રૂપમા જાતના

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्थाः पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था वा, तेसिं च=तेषाम्=आगताना, चकारः-समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखासनवरगतस्य तद् विपुलमशन पान खाद्य खाद्य 'परिभाएमाणा' परिभाजयन्तः =विभाग कुर्वन्त' 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्त. विहरन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे बहवो मनुष्या विपुलस्याशनादि चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्य' तत्तद्देशावस्थितेभ्यश्च विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषण कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः।

ततस्तदनन्तर खलु मिथिलाया शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोऽन्यस्य =परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्म, एव 'भासइ' भाषते. साश्चर्य वक्ति, अपूर्व

चतुर्विध आहार को पका कर वहां जो जैसे आते थे (तजहा) यथा -चाहे वे (पथियावा पहिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर धारी भिक्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखडी धर्म में स्थित हो, चाहें गृहस्थजन हो, (तेसिंय-तहा आसत्थस्स, वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को, विश्वस्तो को, एव सुखासनवरगतो को उस विपुल अशनादिरूप आहार को बाँट देते थे तथा वही पर जिमा देते थे।

(तएण मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासइ एव पन्नवेइ, एव परूवेइ,-एव खलु देवाणु०।

આહારો તૈયાર કરીને ત્યા ગમે તેવા માણસો આવતા (त जहा) જેમકે (पथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा) પાથિક જન, ખપ્પરધારી ભિક્ષુક, કથાધારી ભિક્ષુક, પાખડી ધર્મને આચરનારા અને ગૃહસ્થીઓ ગમે તે જાત પથના લોકો ત્યા આવતા

(तेसिंय तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसेणा विहरति)

તેઓ બધાને તેમજ તે દેશમા રહેનારા બીજા ઘણા માણસોને, આશ્વસ્થોને, વિશ્વસ્તોને અને સુખાસનવર ગતોને તે પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવવામા આવેલો આહાર વહેચવામા આવતો હતો તેમજ તેઓને ત્યાજ જમાડવામા પણ આવતા હતા

(तएण मिहिलाए रिंग डग जाव बहु जणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ,एवं

अन्यूनानि पूर्णानि शतसहस्राणि '=लक्षाणि एककोटिमष्टलक्षाणि च स्वर्णदीनाराणि इमामेतद्रूपामर्थसम्पद 'दलयइ' ददाति ।

ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मिथिलायां राजधान्यां तत्र तत्र=अवान्तर पुरादौ, तथा तस्मिन् तस्मिन् देशेदेशे=शृङ्गाटकादौ बहूनमहानसशालाः ओदनादीनां पाकगृहाणि=कारयति । ततः खलु बहवो मनुष्याः ते कथंभूता इत्याह-' दिन्न भइभत्तवेयणा ' इति, दत्तभृतिभक्तवेतनाः=दत्त भृतिभक्तलक्षण द्रव्य भोजनस्वरूप वर्तन मूल्य येभ्यस्ते तथा, यद्वा-भृत्तिर्भरण पोष्यवर्गार्थमन्नादिक, भक्त-स्व भोजनार्थं, वेतन -अशनादि संस्कारकरणपारिश्रमिक च तानि दत्तानि भृतिभक्त वेतनानि येभ्यस्ते तथा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यम्-' उवक्खडेंति ' उपस्कुर्वन्ति चतुर्विधाहार निष्पादयन्ति, उपस्कृत्य, ये यथाऽऽगच्छन्ति ' तजहा ' तद् यथा-

---

प्रतिदिन-नित्य-मार्ग चलने वाले व्यक्ति यहां पान्थिक शब्द से, तथा जब कभी मार्ग चलने वाले व्यक्ति पथिक शब्द से गृहीत हुए हैं। (तएण से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडेंति उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छइ) इस के अनन्तर उन कुभक राजा ने मिथिला राजधानी में जहां तहां अवान्तर पुर आदि में-उस प्रदेश में शृंगाटक आदि रास्तों में अनेक रसोई घर स्थापित करवा दिये, उनमें अनेक रसोइये अशन पान आदी रूप चतुर्विध आहार विपुल मात्रा में बनाते थे।

इसके उपलक्ष्य मे उन्हे तथा उनके पोष्य वर्ग के लिये वहा से भो जन मिलता था और उन भोजन बनाने वालों के लिये वहां से वेतन भी मिलता था। वे विपुल मात्रा मे अशन पान, खाद्य, स्वाद्य तथा रूप

દરરોજ નિત્ય રસ્તે ચાલતા રહેનારાઓ અહીં 'પાથિક' શબ્દથી તેમજ કોઈક દિવસ રસ્તે ચાલનારાઓ 'પથિક' શબ્દથી સમજવા જોઈએ

(तएण से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छइ)

ત્યારબદ કુભક રાજાએ મિથિલા નગરીમા બધે અન્તરપુર વગેરેમા તે પ્રદેશોમા શૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમા ઘણા રસોઈ ઘરો સ્થાપિત કરાવડાવ્યા તેઓમા ઘણા રસોઇયાઓ અશન, પાન વગેરે રૂપમા પુષ્કળ પ્રમાણમા ચારે જાતના આહારો તૈયાર કરતા હતા

એના બદલ તેઓને તથા તેમની સાથેના બીજા માણસોને ત્યાંથી ભોજન મળતું હતુ અને રસોઈ તૈયાર કરનાર માણસોને પગાર પણ મળતો હતો તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યના રૂપમા જાતના

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्थाः पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था वा, तेसिं च=तेषाम्=आगताना, चकारः-समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखासनवरगतस्य तद् विपुलमशन पान खाद्य खाद्य 'परिभाएमाणा' परिभाजयन्त. =विभाग कुर्वन्तः 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्त. विहरन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे बहवो मनुष्या विपुलस्याशनादि चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्य. तत्तद्देशावस्थितेभ्यश्च विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषण कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु मिथिलाया शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य =परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्म, एव 'भासइ' भाषते. माश्चर्य वक्ति, अपूर्व

चतुर्विध आहार को पका कर वहाँ जो जैसे आते थे (तजहा) यथा -चाहे वे (पथियावा पहिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर धारी भिक्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखडी धर्म में स्थित हो, चाहे गृहस्थजन हो, (तेसिंपि य-तहा आसत्थस्स, वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको तथा अन्य और भी उस उस देश में रहे हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को, विश्वस्तों को, एव सुखासनवरगतों को उस विपुल अशनादिरूप आहार को बाँट देते थे तथा वही पर जिमा देते थे।

(तएण मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासइ एव पन्नवेइ, एव परूवेइ,-एव खलु देवाणु० !

આહારો તૈયાર કરીને ત્યા ગમે તેવા માણુસો આવતા (त जहा) જેમકે (पथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा) પાથિક જન, ખપ્પરધારી ભિક્ષુક, કથાધારી ભિક્ષુક, પાખડી ધર્મને આચરનારા અને ગૃહસ્થીઓ ગમે તે જાત પથના લોકો ત્યા આવતા

(तेसिंपि य तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसेणा विहरति)

તેઓ બધાને તેમજ તે દેશમા રહેનારા બીજા ઘણા માણુસોને, આશ્વસ્થોને, વિશ્વસ્તોને અને સુખાસનવર ગતોને તે પુષ્કળ પ્રમાણુમા બનાવવામા આવેલો આહાર વહેચવામા આવતો હતો તેમજ તેઓને ત્યાજ જમાડવામા પણ આવતા હતા

(तएण मिहिलाए रिंगाडग जाव बहु जणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ,एवं

भोजनदान, न श्रुत नापिदृष्टमित्याश्चर्यपूर्वक वर्णयतीत्यर्थ । एव ' पन्नवेइ ' प्रज्ञापयति विस्तारेण बोधयति, एव ' परूवेइ ' प्ररूपयति-सदृष्टान्त वर्णयति, किमाख्यातीत्याह-' एव खलु ' इत्यादि-एव खलु हे देवानुप्रिया ! कुम्भकस्य राज्ञो भवने ' सव्वकामगुणिय ' सर्वकामगुणित=सर्वेन्द्रियसुखजनक ' किमिच्छयं ' किमिच्छकम्=इच्छानुसार विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य बहुभ्य श्रमणेभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च, यावत् यथा समागतेभ्यः सनाथानाथपान्थिकादिभ्य परिवेष्यते ।

" वरवरिया घोसिज्जइ किमिच्छय दिज्जए बहुविहीय ।
सुरअसुरदेवदाणव नरिंदमहियाण निक्खमणे ॥१॥ "

'वरवरिया' वरवरिका-वर वर=याचस्व याचस्व इति घोषणा, ' घोसिज्जइ '

कुभगस्स रण्णो भवणंसि सव्व कामगुणिय किमिच्छिय विपुल असण ४ बहूण समणाणय जाव परिवेसिज्जेइ) इस कारण मिथिला नगरी में शृगाटक आदि स्थानों पर अनेक जन मिल २ कर एक दूसरे से ऐसा कहने लगे, आश्चर्य युक्त होकर इस प्रकार बोलने लगे- विस्तार पूर्वक इस प्रकार एक दूसरे को समझाने लगे, तथा दृष्टान्त देकर २ इस प्रकार वर्णन करने लगे-हे देवानुप्रियों ! कुभक राजा के भवन पर सर्वेन्द्रिय सुख जनक, अशन पान, खाद्य एव स्वादरूप चतुर्विध आहार अनेक श्रमणों के लिये, ब्राह्मणों के लिये यावत् समागतों के लिये, सनाथों अनाथों के लिये और पांथिकोदिकों के लिये इच्छानुसार दिया जाता है (वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छिय दिज्जए बहु विहीय, सुर असुर देव दाणवनरिंद महियाण निक्खमणे) सुर असुर, देव, दानव, एव नरेन्द्रों द्वारा पूज्य तीर्थंकरों के निष्क्रमण के

भासइ एव पन्नवेइ, एव परूवेइ, एव खलु देवाणु० ? कुभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणिय किमिच्छिय विपुल असण४ बहूण समणाण य जाव परिवेसिज्जेइ)

એના લીધે મિથિલા નગરીના શૃંગાટક વગેરે સ્થાનોમા નાગરિકોના ટોળે ટોળા એકઠા થઇને આશ્ચર્ય પામતા વિસ્તારપૂર્વક એક-બીજાને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા, સમજાવવા લાગ્યા તેમજ દૃષ્ટાન્તો આપીને આ પ્રમાણે વર્ણન કરવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! કુભક રાજાના મહેલમા સર્વેન્દ્રિય સુખજનક અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદરૂપ ચાર જાતનો આહાર ઘણા શ્રમણો, બ્રાહ્મણો, સમાગતો, સનાથો, અનાથો અને પાથિકો વગેરેને માટે ઈચ્છા મુજબ આપવામા આવે છે

वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छिय दिज्जए बहुविहीय, सुर असुर देव, दाणवनरिंद महियाण निक्खमणे)

સુર, અસુર, દેવ, દાનવ અને નરેન્દ્રોવડે પૂજ્ય તીર્થંકરોના નિષ્ક્રમણના સમયે " માગો, માગો " આ જાતની ઘોષણા કરવામા આવી છે, " ધન્ય

घोष्यते किमिच्छय=किमिच्छकम् इच्छानुसार दीयते बहुविधिकम् । सुरासुरदेव दानवनरेन्द्र महिताना=अर्हता तीर्थकराणा निष्क्रमणे ॥ १ ॥

तत. खलु मल्ली अर्हन् अस्य-' मण पहारेइ ' मनसि प्रधारयति, इत्यनेन सम्बन्ध । किं प्रधारयतीत्याह-'सवच्छरे' सवत्सरे खलु त्रीणि कोटिशतानि अष्टा दश च भवन्ति कोट्यः । अशीतिशतसहस्राणि स्वर्णदीनाराणि तीर्थंकरनिष्क्रमणे दातव्यानि भवन्ति इमामेतद्रूपामर्थसपद खलु दत्वा निष्क्रमामि दीक्षा ग्रहीष्यामि इति ॥ सू० ३७ ॥

मूलम्-तेण कालेणं तेण समएण लोगंतिया देवा बभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणे पत्थडे सएहिं२ विमाणेहिं सएहिं२ पासायवडिसएहिं पत्तेय२ चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहिं य बहूहिं लोगतिएहिं देवेहिं सहिं संपरिवुडा महया हयनट्टगीयवाइय जाव रवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ

समय में " मागो मागो " ऐसी घोषणा कराई जाती है और अनेक प्रकार का किमिच्छक (तुम्हारी क्या इच्छा है) दान भी दिया जाता है । (तएण मल्ली अरहा सवच्छरेण तिन्नि कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ असितिं च सयसहस्साइ इमेयारूव अत्थ सपयाण दलइत्ता निक्खमोमित्ति मण पहारेइ) अबमल्ली अरिहंत ने " एक साल में तीन सौ करोड-तीन अरब अट्ठासी करोड ८० लाख स्वर्ण दीनारें तीर्थंकर निष्क्रमण (दीक्षा अवसर पर) में दातव्य होती है सो मैं इतनी अर्थ सपत्ति देकर दीक्षा ग्रहण करूँगा " ऐसा मन में निश्चित विचार किया । सूत्र " ३७ "

જાતનુ ' કિમિચ્છક ' (તમારી શુ ઈચ્છા છે ?) દાન પણ આપવામા આવે છે

(तएण मल्ली अरहा सवच्छरेण तिन्नि कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडीओ असितिं च सयसहस्साइ इमेयारूव अत्थसपयाण दलइत्ता निक्खमो मित्तिमण पहारेइ)

હવે મલ્લી અરહંતે " એક વર્ષમા ત્રણસો કરોડ, ત્રણ અબજ, અઠયાસી કરોડ એટલી લાખ સોના મહોરનુ તીર્થંકર નિષ્ક્રમણ (દીક્ષાના સમયે) મા આપવામા આવે છે તો હુ આટલી અર્થ સપત્તિ આપીને જ દીક્ષા ગ્રહણ કરીશ " આ પ્રમાણે મનમા ચોક્કસપણે વિચાર કર્યો ॥ સૂત્ર " ૩૭ "

भुजमाणा विहरति, त जहा–' सारस्सयमाइच्चा वण्हि–वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठाय ॥ १ ॥ " तएणं तेसि लोयंतियाणं देवाणं पत्तेयं२ आसणाइं चलति तहेव जाव अरहताणं निक्खममाणाण सबोहण करेत्त एत्ति त गच्छामो णअम्हेवि मल्लिस्स अरहओ सबोहण करेमि त्तिकट्टु एव सपेहेंति, सपेहित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाय अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइ एव जहा जभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता अतलिक्खपडिवन्ना सखिंखिणियाइ जाव वत्थाइं पवरपरिहिया करयल० ताहिं इट्ठाहि जाव वग्गूहि एवं वयासी–बुज्झाहि भयव! लोगनाहा! पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकर भविस्सइ त्तिकट्टु दोच्चपि तच्चंपि एवं वयति, वयित्ता मल्लिं अरहं वदति नमसंति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया । तएण मल्ली अरहा तेहि लोगंतिएहि देवेहि सबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा० करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे मुडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए, अहासुह देवा० ! मा पडिबध करेहि, तएणं कुंभए कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव अट्ठसहस्स सोवणियाणं जाव भोमे

जाणंति, अण्णं च महत्थ जाव तित्थयराभिसेय उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएणं सक्के३ आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव अट्ठसहस्स सोवणियाणं जाव अण्णं च त विउल उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा, तएणं से सक्के देविंदे देवराया कुभराया य मल्लिं अरह सीहासणं पुरत्थाभिमुह निवेसेइ अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाण जाव अभिसिचइ, तएण मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च सब्भितरबाहिरिय जाव सव्वओ समता परिधावंति, तएणं कुभए राया दोच्चपि उत्तरावक्कमण जाव सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव मणोरम सीयं उवट्ठवेह, ते उवट्ठवेंति तएणं सक्के ३ आभिओगिए० खिप्पामेव अणेगखभ० जाव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह जाव सावि सीया त चेव सयि अणुपविट्ठा ॥सू०३६॥

टीका—' तेण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये लोकान्तिका देवा ब्रह्मलोके कल्पे रिष्टविमानप्रतरे स्वकेषु स्वकेषु विमानेषु स्वकेषु

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (लोगतिया देवा बभलोए कप्पेरिट्ठविमाण पत्थडे) लोकान्तिक देवों के जो ब्रह्मलोक नाम के कल्प में स्थित रिष्ट विमान पाथडे में वर्तमान

(तेण कालेण तेण समएण) इत्यादि ।

ટીકાર્થ–(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (लोगतिया देवा बम्भलोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडे) લૌકાંતિક દેવો કે જેઓ બ્રહ્મલોક નામના કલ્પમાં સ્થિત રિષ્ટ પાથડામા રહેલા

स्वकेषु भासादावतंसकेषु प्रत्येकं२ चतुर्भिः सामानिकसहस्रैः, तिसृभिः परिषद्भिः सप्तभिरनीकैः=हस्त्यश्वरथपदातिमहिषगन्धर्वनाट्यरूपैः सप्तभिरनीकाधिपतिभिः, षोडशभिरात्मरक्षकदेवसहस्रैः, अन्यैश्च बहुभिर्लौकान्तिकैर्देवैः सार्धं संपरिवृताः, 'महया' महता 'अहयनट्टगीयवाइय रवेण' अहत नृत्यगीतवादित्र रवेण=अहतः=अप्रतिहत, नृत्यगीतवादित्राणा यो रवः = मधुरध्वनिस्तेन सह भोगान्=दिव्यसुखभोगान्=भुञ्जाना विहरन्ति-आसते। तद्यथा तेषा नामान्याह-

"सारस्सयमाइच्चा, वह्नि वरुणा य गद्दतोया य।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेवरिट्ठा य ॥१॥" इति ॥

(१) सारस्वताः, (२) आदित्याः, (३) वह्नयः, (४) वरुणाश्च, (५) गर्दतो

(सएहिं २ विमाणेहिं, सएहिं २ पासायवडिंसएहिं पत्तेय २ चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहिं बहूहिं लोगतएहिं देवेहिं सहिं सपरिवुडा) अपने २ विमानों में रहे हुए अपने २ श्रेष्ठ प्रासादो में अलग २ चार २ हजार सामानिक देवों के साथ, तीन २ परिषदाओं के साथ, सात २ अनीको के साथ, सात २ अनीकाधिपतियों के साथ सोलह २ आत्म रक्षक देवों के साथ तथा और भी अन्य लोकान्तिक देवों के साथ रहते हैं (महया हयनट्टगीयवाइय, जाव रवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति) एव जो नृत्य गीत, तथा बाजों की अप्रतिहत ध्वनि पूर्वक दिव्य भोगों भोगा करते हैं। (त जहा) इन लौकान्तिक देवो के आठ भेद होते है वे आठ भेद ये हैं-१ सारस्वत २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ वरुण-५ गर्ततोय, ६ तुषित,

---

(सएहिं, २ विमाणेहिं २ पासायवडिंसएहिं पत्तेय २ चउहिं समाणिय साहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहि सत्तहिं अणियाहिवईहिं आयरक्ख देव साहस्सीहिं अन्नेहिं बहूहिं लोगतएहि देवेहि सहि स परिवुडा)

પોતપોતાના વિમાનોમાના ઉત્તમ પ્રાસાદોમા જુદાજુદા ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે, ત્રણ ત્રણ પરિષદાઓની સાથે, સાત સાત અનીકોની સાથે, સાત સાત અનીકાધિપતીઓની સાથે, સોળ સોળ આત્મરક્ષક દેવોની સાથે તેમજ બીજા પણ લૌકાતિક દેવોની સાથે રહે છે

(महया हयनट्टगीय वाइय जाव रवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहर ति)

અને જેઓ નૃત્ય, ગીત તેમજ વાજાઓની અપ્રહિત ધ્વનિપૂર્વક દિવ્ય ભોગોનો ઉપભોગ કરતા રહે છે (त जहा) આ લોકાતિક દેવોના આઠ ભેદો હોય છે તે આ પ્રમાણે છે-૧ સારસ્વત. ૨ આદિત્ય, ૩ વહ્નિ ૪ વરૂણ,

याश्च, (६) तुषिताः, (७) अव्याबाधाः, (८) आग्नेयाश्च, एतेऽष्टौ कृष्णराज्य वकाशान्तरस्थायि-विमानाष्टकवासिनः, तथा (९) रिष्टाश्च = रिष्टाख्यविमान-प्रतरवासिनः ।

ततस्तदनन्तर खलु तेषा लोकान्तिकाना देवाना प्रत्येक२ आसनानि चलन्ति तथैव यावत्-सौधर्मेन्द्रदेवावधिं प्रयुञ्जते, प्रयुज्य मल्लीमर्हन्तमाभोगयति ततः खल्वेवं सकल्पः समुदपद्यत-मल्ली अर्हन्निष्क्रमितुमिच्छति, एव मर्यादाऽस्ति

७ अव्याबाध ८ आग्नेय ये आठ लौकान्तिक देव कृष्ण राज्य भिन्न २ आठ विमानों में रहते है। तथा जो रिष्ट हैं वे रिष्ट नामक विमान प्रतर में रहते हैं। (तएण) सो (तेसिं लोयंतियाण देवाण पत्तेय २ आसणाइ चलंति) इन लौकान्तिक देवों के प्रत्येक के आसान कम्पित हुए।

(तहेव जाव अरहंताणं देवाणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तए त्ति तं गच्छामोणं अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करेमि त्तिकट्टु एवं संपेहेंति) अतः इन्हो ने सब ने अपने २ अवधिज्ञान से विचार किया कि हमारे आसन कंपित क्यो हुए हैं सो जिस तरह से सौधर्मेन्द्र ने अपने आसन कंपित होने का कारण जान लिया था उसी प्रकार इन्हों ने भी जोन लिया। इस तरह कारण जानकर इन्हों के मन में ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि मल्ली अर्हन् घर से निकल ने की-दीक्षा अंगीकार करने की इच्छा कर रहे हैं सो हम लौकान्तिक देवों की ऐसी

५ गर्तोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ आग्नेय એ આઠ લોકાંતિક દેવ કૃષ્ણરાજ્ય જુદા જુદા આઠ વિમાનોમા રહે છે તેમજ જે રિષ્ટ છે તેઓ રિષ્ટ નામક વિમાન પ્રતરમા રહે છે (तएण) તો આ પ્રમાણે (तेसिं लोयंतियाण देवाण पत्तेय २ आसणाइ चलंति) આ બધા લોકાંતિક દેવોમાથી દરેકના આસનો ડોલવા માડયા

(तहेव जाव अरहंताणं देवाणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तए त्ति तं गच्छामोणं अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करेमि त्ति कट्टु एवं संपेहेंति)

એટલા માટે આ બધા દેવોએ પોતપોતાના અવધિજ્ઞાન વડે વિચાર કર્યો કે અમારા આસનો શા માટે ડોલવા માડયા છે ? તો જેમ ઇન્દ્રે પોતાના આસનને ડોલવાનુ કારણ જાણ્યુ હતું તે પ્રમાણે આ બધાઓએ પણ જાણી લીધુ

આ પ્રમાણે કારણની ખાત્રી કરીને તેમના મનમા આ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો કે મલ્લી અર્હન્ ઘેરથી નીકળી જવાની-દીક્ષા સ્વીકારવાની ઇચ્છા કરી રહ્યા છે, તો આ સમયે અમારા જેવા બધા લોકાંતિક દેવોની એવી

लोकान्तिकदेवानां, यद् अर्हतां निष्क्रामतां सबोधनं कर्तुमिति = दीक्षाकालं बोधयितुमित्यर्थः, तद्=तस्माद् गच्छाम खलु वयमपि मल्लीं अर्हतो सबोधनं कुर्म इति कृत्वा एवं संप्रेक्षन्ते=विचारयन्ति संप्रेक्ष्य, उत्तरपौरस्त्यं दिग्भागम्= ईशानकोणम् अवक्रामन्ति, अवक्रम्य वैक्रियसमुद्घातेन समवहन्ति उत्तरवैक्रियं कुर्वन्ति। समवहत्य संख्यातानि योजनानि यावत्-दण्डं निःसारयन्ति, दण्डं रत्नमयं कुर्वन्ति-कृत्वा च एव यथा जृम्भकाः-जृम्भकदेववद् देवलोकसम्बन्धिं दिव्यगत्या यावत्-यत्रैव मिथिला राजधानी यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवनं यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य अन्तरिक्षप्रतिपन्नाः गगनस्थाः, सकिं

मर्यादा है कि वैराग्य की मन में भावना जगे ही तीर्थंकरों को आवे-तब उन्हें सबोधन करना-यह कहना कि भगवान्! यह दीक्षा के लिये उचित अवसर है। इसलिये हम लोग भी चलें और मल्ली अर्हत को सबोधन करें। ऐसा विचार कर (उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति) वे सब के सब लोकान्तिक देव ईशान कोण में गये-वहां जाकर उन्हों ने वैक्रिय समुद्घात से उत्तर वैक्रिय की विकुर्वणा की-विकुर्वणा कर के उन्हों ने अपने आत्मप्रदेशों को रत्नमय दण्डाकार रूप में बाहर निकाला।

बाद में जृंभक देवों की तरह वे सब देव लोक सबन्धी उत्कृष्ट गति से जहां मिथिला राजधानी थी-उस में भी जहां कुंभक राजा का भवन

મર્યાદા (પ્રણાલિકા) હોય છે કે તીર્થંકરોના મનમાં જ્યારે વૈરાગ્યની ભાવના ઉદ્ભવે કે તરત જ તેમને સંબોધન કરવું-એટલે કે તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરવી કે હે ભગવન! દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો આ ઉચિત અવસર (સમય) છે એટલે અમે પણ ત્યાં જઈએ અને તેઓને સંબોધન કરીએ આમ વિચાર કરીને

(उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमति अवक्कमित्ता, वेउव्विय समुग्घाएण समोहणंति, समोहणित्ता, संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव मिहिला जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति)

તેઓ બધા લૌકાંતિક દેવો ઈશાન કોણમાં ગયા, ત્યાં જઈને તેમણે વૈક્રીય સમુદ્ઘાતથી ઉત્તર વૈક્રિયની વિકુર્વણા કરી, વિકુર્વણા બાદ તેમણે પોતાના આત્મપ્રદેશોને રત્નમય દંડાકાર રૂપમાં બહાર કાઢયા

ત્યારપછી જૃંભક દેવોની જેમ તેઓ બધા દેવલોક સંબંધી ઉત્કૃષ્ટગતિથી જ્યાં મિથિલા રાજધાની હતી તેમાં પણ જ્યાં કુંભક રાજાનો મહેલ અને મલ્લી અર્હંત વિરાજમાન

क्षुद्रघण्टिकायुक्तानि यावद् वस्त्राणि 'पवर परिहिया' प्रवरेण विधिना परिहिताः दिव्यवस्त्रधारिण इत्यर्थः, करतलपरिगृहीतदशनख शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ताभिरिष्टाभि कमनीयाभिर्वाग्भिरेवमवादीत्—हे भगवन्! हे लोकनाथ! 'बुज्झाहि' बोधय, भव्यजीवान् प्रवर्तय धर्मतीर्थचतुर्विधसन्धरूप धर्मतीर्थप्रवर्तनस्य फलमाह—'जीवाण' इत्यादि, जीवाना 'हीयसुहनिस्सेय सकर' हितसुखनिश्रेयसकर, हितकर—नरकनिगोदादि दुःखनिवारकत्वात्,

था—उस में भी जहा मल्ली अर्हत विराजमान थे वहां आये। (उवागच्छित्ता अतलिक्खपडिवन्ना सखिखिणियाइ जाव वत्थाइ पवरपरिहिया करयल० ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं एव वयासी—बुज्झाहिं भयव। लोगनाहा! पवत्तेहिं धम्मतित्थ जीवाण हियसुहनिस्सेयसकर भविस्सइ) वहां आकर भी वे नीचे नही उत्तरे किन्तु आकाशमें अधर खडे२ बोले। उस समय उन्हों ने बडे सुन्दर वस्त्र जो कि क्षुद्र किंकिणियों से युक्त थे पहिर रखे थे। अधर रहे हुए ही उन्होंने दोनो हथोंकी अजुलि बना और उसे मस्तक पर रख वहीं से मल्लि अर्हंत को नमस्कार किया बाद मे बडी मीठी २ मनोहर वाणियों द्वारा उन से इस प्रकार कहा—हे भगवान् हे लोक नाथ! भव्यजीवो को आप समझाओ चतुर्विध सघरूप धर्मतीर्थ की आप प्रवृति करो। इससे जीवों नरक निगोद आदि के दु:खो से छुटकर वह धर्मतीर्थ हितकारी होगा। स्वर्ग आदि

(उवागच्छित्ता अतलिक्खपडिवन्ना सखिखिणियाइ जाव वत्थाइ पवर परिहिया करयल० ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं एव वयासी बुज्झाहिं भयव! लोगनाहा पवत्तेहिं धम्मतित्थ जीवाण हिय सुय निस्सेयसकर' भविस्सइ)

ત્યા પહોચીને તેઓ નીચે ઉતર્યા નહિ પણ આકાશમા જ અદ્ધર ઊભા રહીને બોલ્યા—દેવોએ તે વખતે સુદર વસ્ત્રો પહેરેલા હતા' તેમના વસ્ત્રો નાની નાની ઘૂઘરીઓથી શોભતા હતા આકાશમા અદ્ધર રહીને જ તેઓએ પોતાના બને હાથોની અજલી બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને ત્યાથી જ મલ્લી અર્હંતને નમસ્કાર કર્યા ત્યારપછી ખૂબ જ મીઠા અને મનોહર વચનો દ્વારા તેઓ તેમને વિનતી કરતા કહેવા લાગ્યા—' હે ભગવન! હે લોકનાથ! તમે ભવ્યજીવોને જ્ઞાન આપો ચતુર્વિધ સઘ રૂપ ધર્મતીર્થની તમે પ્રવૃત્તિ કરો એનાથી જીવોને નરક નિગોદ વગેરેના દુ ખોથી મુક્ત કરાવીને હિતકારી ધર્મ તીર્થ તરફ તેમને ઉન્મુખ કરો તે ધર્મતીર્થ તે લોકોના માટે સ્વર્ગ વગેરેનો અભદ (અતીવ) આનદ આપનાર હોવાથી સુખકર થશે તેમજ મુક્તિ

लोकान्तिकदेवानां, यद् अर्हतां नि
बोधयितुमित्यर्थः, तद्=तस्माद् गच्छ
कुर्म इति कृत्वा एवं संप्रेक्षन्ते=वि
ईशानकोणम् अवक्रामति, अवक्रम्य
कुर्वन्ति। समवहत्य संख्यातानि यो
रत्नमयं कुर्वन्ति-कृत्वा च एव यथा
दिव्यगत्या यावत्-यत्रैव मिथिला रा
मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छति उपाग

मर्यादा हैं कि वैराग्य की मन में
तब उन्हें संबोधन करना-यह कहन
उचित अवसर है। इसलिये हम
संबोधन करें। ऐसा विचार कर
मति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमु
संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा
कुंभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मर
सब के सब लोकान्तिक देव ईशान
वैक्रिय समुद्घात से उत्तर वैक्रिय की
ने अपने आत्मप्रदेशों को रत्नमय

बाद में जृंभक देवों की तरह
से जहां मिथिला राजधानी थी-

મર્યાદા (પ્રણાલિકા) હોય છે કે
ઉદ્ભવે કે તરત જ તેમને સંબોધ
કરવી કે હે ભગવન! દીક્ષા અહ
એટલે અમે પણ ત્યાં જઈએ અને

(उत्तर पुरत्थिम दिसीभाय
ए्ण समोहणति, समोहणित्ता, सं
मिहिला जेणेव कुंभगस्स रण्णो

તેઓ બધા લૌકાંતિક
વૈક્રીય સમુદ્ઘાતથી ઉત્તર વૈ
આત્મપ્રદેશોને રત્નમય કર્યા
ત્યારપછી જૃંભક દેવે
જ્યાં મિથિલા રાજધાની
મલ્લી અર્હંત વિરાજમાન

केऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादीत्—इच्छामि खलु हे अम्ब ! हे तात ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् मुण्डो भूत्वा यावत् प्रव्रजितुम् , मातापितरावूचतु.—हे देवानुप्रिय ! यथासुख भवेत तथा कुरु, मा प्रतिबन्ध=विलम्ब मा कुरु। ततः=मल्लीमर्हन्त मेवमुक्त्वा, खलु स कुम्भकः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेवाष्टसहस्रम्—अष्टाधिकसहस्र(१००८) सौवर्णिकाना यावद० अत्र यावदित्य

थे-वहां आये। वहां आकर उन्हों ने पहिले उन्हें दोनों हाथ जोड कर चरणों में नमस्कार किया। बाद में वे बोले-कि हे अम्ब हे तात ! मैं आप लोगो से आज्ञा लेकर मंडित हो यावत् दीक्षा लेना चाहती हूँ आपकी आज्ञासे मुझे दीक्षा लेना है इस प्रकार मल्ली अरिहंतकी बात सुन कर उन के माता पिता दोनो ने उन से "यथासुख देवानुप्रिय।" जैसे तुम्हें सुख हो-तुम वैसा करो-देरी मत करो ऐसा कहा। (तएण कुंभए कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव अट्ठ सहस्स सोवण्णियाण जाव भोमेज्जाणति, अण्ण च महत्थ जाव तित्थयराभिसेय उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) इस के बाद कुंभक राजाने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुला कर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही १००८ सुवर्ण निर्मित कलशों को रूप्यमय कलशोंको मणिमय कलशों को सुवर्ण रूप्य निर्मित कलशोंको, सुवर्ण मणि निर्मित कलशो को, रूप्यमणि निर्मित कलशों को, स्वर्ण,

માતાપિતાના ચરણોમા નમસ્કાર કર્યા ત્યારબાદ તેઓ કહેવા લાગ્યા કે હે માતાપિતા ! હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને મુંડિત થઈને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ચાહું છું " મલ્લી અર્હંતના મોથી આ પ્રમાણે વાત સાભળીને તેમના માતા પિતાઓએ તેમને કહ્યું " યથાસુખ દેવાનુપ્રિય ! " એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમને જેમ સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો અને મોડુ કરો નહિ

(तएण कुमए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव अट्ठसहस्स सोवण्णियाण जाव भोमेज्जाणति, अण्ण च महत्थ जाव तित्थयराभिसेय उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति)

ત્યારપછી કુભક રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે એક હજાર આઠ (૧૦૦૮) સોનાના કળશો, ચાંદીના કળશો, મણિમય કળશો, સોના અને ચાંદીથી બનાવેલા કળશો, સોના અને મણિઓથી બનાવવામા

सुखकर स्वर्गाद्यमन्दानन्दजनकत्वात्, निःश्रेयसकर-मोक्षप्रापकत्वात्, भविष्यतीति कृत्वा=उक्त्वा, द्वितीयवारमपि, तृतीयवारमपि एवं वदन्ति, उक्त्वा, मल्लीम् अर्हन्तं वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नत्वा यस्या एव दिश प्रादुर्भूतास्तामेव प्रतिगताः।

ततस्तदनन्तर खलु मल्ली अर्हन् तैर्लौकान्तिकैर्देवैः सबोधितः सन् यत्रैव मातापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिरआवर्त मस्त

का अमन्द अत्यन्त अनन्द का प्रदाता होने से यह धर्मतीर्थ उन्हें सुख कर होगा। तथा मुक्ति प्राप्ति का कारण होने से यह धर्मतीर्थ उन भव्य जीवों को निःश्रेयसकर होगा (तिक्खुत्तो दोच्चपि तच्चपि एव वयति, वयित्ता मल्लिं अरहं वदति, नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया) इस प्रकार कह कर उन लोकान्तिक देवों ने दुबारा तथा तिबारा भी ऐसा ही कहा-कह कर फिर उन्हों ने मल्ली अरिहंत को वंदना की-नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की तरफ चले गये।

(तएणं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सबोहिए समाणे जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छति-उवागच्छित्ता करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणु०मा पडिबंधं करेहि) इस प्रकार उन लौकान्तिक देवों द्वारा सबोधित होते हुए वे मल्ली अरहंत जहां अपने माता पिता

ભળવાનું કારણ હોવા બદલ તે ધર્મતીર્થ તે ભવ્ય જીવોના માટે નિઃશ્રેયસકર થશે

(तिक्खुत्तो दोच्चपि एवं वयति, वयित्ता मल्लिं अरहं वदति, नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया)

આ રીતે કહીને તે લોકાંતિક દેવોએ બીજી અને ત્રીજી વખત પણ આ પ્રમાણે જ વિનંતી કરી વિનંતી કરીને મલ્લી અર્હંતને તે દેવોએ વંદન અને નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ જે દિશા તરફથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ જ જતા રહ્યા

(तएणं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति-उवागच्छित्ता करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणु० मा पडिबंधं करेहि)

આ પ્રમાણે લૌકાંતિક દેવો વડે સંબોધિત થતા મલ્લિ અરહંત જ્યાં પોતાના માતાપિતા હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓએ નીચે પ્રમાણે પોતાના

केऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादीत्—इच्छामि खलु हे अम्ब ! हे तात ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् मुण्डो भूत्वा यावत् प्रव्रजितुम् , मातापितरावूचतु.—हे देवानुप्रिय ! यथासुख भवेत् तथा कुरु, मा प्रतिबन्धं=विलम्बं मा कुरु। ततः=मल्लीमर्हन्त मेवमुक्त्वा, खलु स कुम्भकः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेवाष्टसहस्रम्—अष्टाधिकसहस्र(१००८) सौवर्णिकानां यावद्० अत्र यावदित्य

थे–वहां आये। वहां आकर उन्हों ने पहिले उन्हें दोनों हाथ जोड कर चरणों में नमस्कार किया। बाद में वे बोले-कि हे अम्ब हे तात ! मैं आप लोगो से आज्ञा लेकर मुंडित हो यावत् दीक्षा लेना चाहती हूँ आपकी आज्ञासे मुझे दीक्षा लेना है इस प्रकार मल्ली अरिहंतकी बात सुन कर उन के माता पिता दोनो ने उन से "यथासुख देवानुप्रिय।" जैसे तुम्हें सुख हो–तुम वैसा करो–देरी मत करो ऐसा कहा। (तएणं कुंभए कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव भोमेज्जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) इस के बाद कुंभक राजाने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुला कर उनसे ऐसा कहा–हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही १००८ सुवर्ण निर्मित कलशों को रूप्यमय कलशोंको मणिमय कलशों को सुवर्ण रूप्य निर्मित कलशोंको, सुवर्ण मणि निर्मित कलशो को, रूप्यमणि निर्मित कलशों को, स्वर्ण,

માતાપિતાના ચરણોમા નમસ્કાર કર્યા ત્યારબાદ તેઓ કહેવા લાગ્યા કે હે માતાપિતા ! હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને મુડિત થઈને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ચાહુ છુ " મલ્લી અર્હંતના મોથી આ પ્રમાણે વાત સાભળીને તેમના માતા પિતાઓએ તેમને કહ્યુ " યથાસુખ દેવાનુપ્રિય ! " એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમને જેમ સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો અને મોડુ કરો નહિ

(तएणं कुंभए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव भोमेज्जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति)

ત્યારપછી કુભક રાજાએ પોતાના કૌટુમ્બિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે એક હજાર આઠ (૧૦૦૮) સોનાના કળશો, ચાંદીના કળશો, મણિમય કળશો, સોના અને ચાદીથી બનાવેલા કળશો, સોના અને મણિઓથી બનાવવામા

नेनेद घोध्यम्-रूप्यमयाणा, मणिमयाना, सुवर्णरूप्यनिर्मिताना सुवर्णमणिनिर्मिताना, रूप्यमणिनिर्मिताना, स्वर्णरूप्यरत्नमयानामिति। भौमेयानाम् पार्थिवानां घटानामिति अन्यच्च महार्थं यावत्-तीर्थकराभिषेकम् तीर्थकरनिष्क्रमणाभिषेक साधनम् 'उवट्ठवेह' उपस्थापयत, प्रापयत, यावत्-उपस्थापयन्ति।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये चमरोऽसुरेन्द्र' यावद्-अच्युत पर्यवसानाः= चमरेन्द्रादारभ्याच्युतेन्द्रपर्यन्ताश्चतुः षष्टि संख्यका इन्द्राः, आगताः। तदनन्तर खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराज'=सौधर्मेन्द्र, आभियोगिकान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेवाष्टसहस्र सौवर्णिकानां यावत्-अन्यच्च तद्

रूप्य, मणि निर्मित कलशों को मिट्टी के कलशों को तथा और भी महा र्थ-महा प्रयोजन साधक भूत-तीर्थ कर-निष्क्रमणाभिषेक (दिक्षाके) साधनों को उपस्थित करो। राजा की इस प्रकार आज्ञा प्राप्त कर उन लोगो ने आज्ञानुसार सब साधनो को उपस्थित कर दिया।

(तेण कालेण तेण समएण चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएण सक्के३ आभियोगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी) उस काल में और उस समय में चरमेन्द्र से लेकर अच्युतेन्द्र पर्यन्त ६४ इन्द्र आ गये। इस के अनन्तर शक्र देवेन्द्र देव राज ने-सौधर्मेन्द्र ने-आभियोगिक देवों को बुलाया-और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-(खिप्पामेवअट्ठसहस्स सोवण्णियाण जाव अण्ण च त विउल उवट्ठवेह, जाव उवट्ठवेंति) तुम लोग शीघ्र ही १००८, सुवर्ण आदि के निमित्त कलशो को तथा और भी विपुल मात्रा में तीर्थकर

આવેલા કળશો, સોના ચાંદી અને મણિઓથી બનાવેલા કળશો, માટીના કળશો તેમજ બીજા પણ મહાર્થ-મહાપ્રયોજન સાધકભૂત-તીર્થંકર નિષ્ક્રમણાભિષેકના સાધનો લાવો રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા મેળવીને તેઓએ આજ્ઞા મુજબજ બધા સાધનો લઈ આવ્યા

(तेण कालेण तेण समएण चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएण सक्के ३ अभियोगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

તે કાળે અને તે સમયે ચરમેન્દ્રથી માંડીને અચ્યુતેન્દ્ર સુધીના ચોસઠે ઇન્દ્રો આવી પહોંચ્યા

ત્યારબાદ શક દેવેન્દ્ર અને દેવરાજે-સૌધર્મેન્દ્રે આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(खिप्पामेव अट्ठसहस्स सोवण्णियाण जाव अण्ण च त विउल उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेति)

તમે લોકો શીઘ્રે એક હજાર આઠ (૧૦૦૮) સોના વગેરેથી બનાવવામા આવેલા કળશો તેમજ બીજા પણ તીર્થંકરોના અભિષેક માટેના બા[illegible]

विपुल तीर्थकराभिषेकभावनमुपस्थापयत, यावद्-उपस्थापयन्ति । तेऽपिदेवोपस्थापिताः सर्वेऽपि कलशास्तानेव-कुम्भकोपस्थापितानेव कलशान् अनुप्रविष्टा', दिव्याः कलशा दिव्यानुभावेन कुम्भककलशेषु प्रविष्टास्तेन कुम्भककलशाना शोभतिशय सजात इति भावः ।

ततस्तदन्तर खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजः कुम्भको राजा च मल्लीमर्हन्तं सिंहासने पौरस्त्याभिमुख=पूर्वदिशाऽभिमुख निवेशयति=उपवेशयति । अष्टसहस्रेण=अष्टाधिकसहस्रेण, सौवर्णिकाना यावत् अभिषिञ्चति, अष्टाधिकसहस्रसख्यकैः प्रत्येक कलशै सौवर्णिकादि स्नपयतीत्यर्थ ततस्तदनन्तर खलु मल्ल्या भगवतो-

---

के अभिषेक के साधनों को उपस्थित करो । उन सब ने वैसा ही किया। (ते षि कल सा तेचेव कलसे अणुपविट्ठा, तएण से सक्के देविंदे देवराया कुभराया य मल्लिं अरह सीहासणं पुरत्थाभिमुह निवेसेइ) इस तरह कुभक राजा द्वारा उपस्थापित कलशों के साथ २ वे सब दिव्य कलशएक जगह मिलाकर रख दिये गये ।

इससे कुभक राजा के कलशो की शोभा और अधिक बढ गई । बाद में शक्र देवेन्द्र देवराज ने और कुभक राजा ने मल्ली अर्हन्त को सिंहासनके उपर पूर्वाभिमुख करके बैठा दिया । (अट्ठसहस्सेण सोवण्णियाण जाव अभिसिंचइ, तएण मल्लीस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया, देवा मिहिल च सब्भितरबाहिरिय जाव सव्वओ समता परिधावति) बैठा ने के बाद फिर उन्हों ने उन१००८, सुवर्ण आदि के प्रत्येक कलशों से उनका अभिषेक किया ।

પ્રમાણુમા લાવેા તેઓ બધાએ તેમ જ કર્યું

(ते वि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा, तएण से सक्के देविंदे देवराया कुभराया य मल्लिं अरह सीहासण पुरत्थाभिमुह निवेसेइ)

આ રીતે કુભકરાજા વડે મૂકાએલા કળશેાની સાથે જ તે દિવ્ય કળશેા પણ એક જ સ્થાને ગેાઠવી દીધા

એનાથી કુભક રાજાના કળશેાની શેાભા ખૂમ જ વધી ગઇ ત્યાર પછી શક દેવેન્દ્ર દેવરાજ અને કુભક રાજાએ મલ્લી અર્હંતને સિંહાસન ઉપર પૂર્વ દિશા તરફ મેા રાખીને બેસાડી દીધા

(अट्ठ सहस्सेण सोवण्णियाण जाव अभिसिंचइ, तएण मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया, देवा मिहिल च सब्भितरबाहिरिय जाव सव्वओ समता परिधावति)

બેસાડીને તેઓએ એક હજાર આઠ સેાના વગેરેના દરેકે દરેક કળશથી તેમનેા અભિષેક કર્યો

नेनेद वोध्यम्-रूप्यमयाणा, मणिमयानां, सुवर्णरूप्यनिर्मिताना सुवर्णमणिनिर्मिताना, रूप्यमणिनिर्मिताना, स्वर्णरूप्यरत्नमयानामिति। भौमेयानाम् पार्थिवानां घटानामिति अन्यच्च महार्थं यावत्-तीर्थकराभिषेकम् तीर्थकरनिष्क्रमणाभिषेक साधनम् 'उवट्ठवेह' उपस्थापयत, आपयत, यावत्-उपस्थापयन्ति।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये चमरोऽसुरेन्द्रः यावद्-अच्युत पर्यवसानाः= चमरेन्द्रादारभ्याच्युतेन्द्रपर्यन्ताश्चतुः षष्टि संख्यका इन्द्राः, आगताः। ततस्त दनन्तर खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराज'=सौधर्मेन्द्र, आभियोगिकान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेवाष्टसहस्र सौवर्णिकानां यावत्-अन्यच्च तद्

रूप्य, मणि निर्मित कलशों को मिट्टी के कलशों को तथा और भी महा र्थ-महा प्रयोजन साधक भूत-तीर्थ कर-निष्क्रमणाभिषेक (दिक्षाके) साधनों को उपस्थित करो। राजा की इस प्रकार आज्ञा प्राप्त कर उन लोगो ने आज्ञानुसार सब साधनो को उपस्थित कर दिया।

(तेण कालेण तेण समएण चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएण सक्के३ आभियोगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी) उस काल में और उस समय में चरमेन्द्र से लेकर अच्युतेन्द्र पर्यन्त ६४ इन्द्र आ गये। इस के अनन्तर शक्र देवेन्द्र देव राज ने-सौधर्मेन्द्र ने-आभियोगिक देवों को बुलाया-और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-(खिप्पामेवअट्ठसहस्स सोवण्णियाण जाव अण्ण च त विउल उवट्ठवेह, जाव उवट्ठवेंति) तुम लोग शीघ्र ही १००८, सुवर्ण आदि के निर्मित्त कलशो को तथा और भी विपुल मात्रा में तीर्थकर

આવેલા કળશો, સોના ચાદી અને મણિઓથી બનાવેલા કળશો, માટીના કળશો તેમજ બીજા પણ મહાર્થ-મહાપ્રયોજન સાધકભૂત-તીર્થ કર નિષ્ક્રમણાભિષેકના સાધનો લાવો રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા મેળવીને તેઓએ આજ્ઞા મુજબના બધા સાધનો લઈ આવ્યા

(तेण कालेण तेण समएण चमरे असुरिंदे जाव अच्चूयपज्जवसाणा आगया, तएण सक्के३ अभियोगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

તે કાળે અને તે સમયે ચરમેન્દ્રથી માંડીને અચ્યુતેન્દ્ર સુધીના ચોસઠે ઈન્દ્રો આવી પહોચ્યા

ત્યારબાદ શક્ર દેવેન્દ્ર અને દેવરાજે-સૌધર્મેન્દ્રે આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(खिप्पामेव अट्ठसहस्स सोवण्णियाण जाव अण्ण च त विउल उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेति)

તમે લોકો જલ્દીથી એક હજાર આઠ (१००८) સોના વગેરેથી બનાવવામા આવેલા કળશો તેમજ બીજા પણ તીર્થ કરોના અભિષેક માટેના બધા

न्द्रो देवराज –आभियोग्यान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्–हे देवानुप्रिया ! क्षिप्रमेव ' अणेगखभ०जाव मणोरम सीय उवट्ठवेह ' अनेकस्तम्भशत सन्निविष्टां यावद्–मनोरमा शिविकाम् उपस्थापयत, यावत् सापि शक्रो देवेन्द्रो पस्तापितापि शिविका तामेव–कुम्भकोपस्थापितामेवशिविकामनुप्रविष्टा दिव्यानुभावेनेति भाव. । सू०३८ ॥

मूलम्–तएण मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मणोरम सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरम सीय दुरूहइ, दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाहिमुहे सन्निसन्ने, तएण कुभए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालकारविभूसिया मल्लिस्स सीय परिवहह जाव पविवहति, तएण सक्के दाविदे देवराया मणो०माए दाहिणिल्ल उवरिल्ल वाह गण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्ल गेण्हइ, चमरे दाहिणिल्ल हेट्ठिल्ल, वली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्ल, अवसेसा देवा जहारिह मणोरम सीय परिवहति । ' पुव्वि उक्खित्ता माणुस्सेहि तो हट्ठरोमकूवेहि । पच्छावहति सीय, असुरिदसुरिद नागिंदा ॥ १ ॥ चलचवलकुडलधरा,

---

देवराज ने भी आभियोगिक देवों को बुलाया–और उनसे अनेक स्तम्भ शत युक्त शिविका (पालखी)ले आने को कहा–उन्होंने भी शीघ्र वैसी ही शिविका (पालखी)लाकर वहाँ उपस्थित कर दी। वह शिविका अपने दिव्य प्रभाव से कुभक राजाकी शिविका के साथ मिल गई । सूत्र " ३८ "

શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજે પણ આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને તેમને સેકડો થાભલાઓવાળી પાલખી લાવવાનો હુકમ કર્યો તે લોકો પણ સત્વરે પાલખી લઈ આવ્યા દેવરાજની તે પાલખી પોતાની દિવ્ય પ્રભાથી કુભક રાજાની પાલખી સાથે ભળી ગઇ ॥ સૂત્ર " ૩૮ " ॥

ऽभिषेके वर्तमानेऽप्येककाः=अप्येके-केचन देवा. मिथिलां राजधानीं च साभ्यन्तर बाह्याम्=अन्तर्बहिश्च यावत्-सर्वतः=समन्तात्=दिक्षु विदिक्षु परिधावन्ति=हर्षातिशयेन कूर्दन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं कुम्भको राजा द्वितीयवारमपि 'उत्तरावक्कमण' उत्तरावक्रमणम्=उत्तराभिमुखं मल्लीं निवेश्य यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितां करोति । कृत्वा, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव मनोरमां शिबिकामुपस्थापयत । ततस्तदनन्तरं खलु शक्रो देवे

इस प्रकार जब मल्ली अर्हत का अभिषेक हो रहा था-तब कितनेक देव हर्षातिशयके वशवर्ती होकर मिथिला नगरीमें भीतर और बहार सब ओर-इधर से उधर कूद रहे थे । (तएण कुभए राया दोच्चपि उत्तरावक्कमण जाव सव्वालंकारविभूसिय करेइ करित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी) जब अभिषेक क्रिया समाप्त हो चुकी-तब कुभक राजाने दूसरी बार फिर मल्ली अरिहन्त को पूर्वकी ओर मुख करके सिंहासन पर बैठाया-और उन्हें समस्त अलंकारो से विभूषित किया बाद में कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर उनसे ऐसा कहा-(खिप्पामेव मनोरम सीयं उवट्ठवेह, ते उवट्ठवेंति तएण सक्के २ आभियोगिए० खिप्पामेव अणेग खभ० जाव मनोरमं सीयं उवट्ठवेह जाव सा वि सीया तं चेव सीयं अणुपविट्ठा) तुम लोग शीघ्र ही अनेक स्तम्भ शत युक्त एक शिबिका को उपस्थित करो-उन लोगों ने भी राजा की आज्ञानुसार शीघ्र वैसीही शिबिका लाकर उपस्थित कर दी । इस के अनन्तर शक्र देवेन्द्र

આ પ્રમાણે જ્યારે આણાનુ મલ્લી અર્હંતનો અભિષેક થઇ રહ્યો હતો ત્યારે મિથિલા નગરીની બહાર અને અદર ચોમેર હર્ષાતિરેકથી કેટલાક દેવતાઓ આમતેમ કૂદી રહ્યા હતા

(तएण कुभए राया दोच्चपि उत्तरावक्कमण जाव सव्वालंकारविभूसिय करेइ करित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

જ્યારે અભિષેકની વિધિ પૂરી થઈ ત્યારે કુભક રાજાએ બીજી વખત મલ્લી અર્હંતને પૂર્વની તરફ મો રાખીને બેસાડયા અને તેમને બધા ઘરેણાઓથી શણગાર્યા ત્યારપછી કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવીને તેઓને હુકમ કર્યો કે

(खिप्पामेव मनोरम सीयं उवट्ठवेह, ते उवट्ठवेंति, तएण सक्के २ आभियो (गिए० खिप्पामेव अणेग खभ० जाव मनोरम सीयं उवट्ठवेह जाव सावि सीया त चेव सीयं अणुपविट्ठा)

તમે લોકો સેકડો થાભલાઓવાળી એક પાલખી જલ્દી લાવો કૌટુબિક પુરૂષો પણ જલ્દીથી રાજાની આજ્ઞા મુજબ પાલખી લઈ આ [illegible]રખાઇ

न्द्रो देवराज –आभियोग्यान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्–हे देवानुप्रिया ! क्षिप्रमेव ' अणेगखंभ०जाव मणोरम सीय उवट्ठवेह ' अनेकस्तम्भशत सनिविष्टा यावद्–मनोरमा शिबिकाम् उपस्थापयत, यावत् सापि शक्रो देवेन्द्रो पस्तापितापि शिविका तामेव–कुम्भकोपस्थापितामेवशिबिकामनुप्रविष्टा दिव्यानुभावेनेति भावः । सू०३८ ॥

मूलम्–तएण मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मणोरम सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरमं सीय दुरूहइ, दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाहिमुहे सन्निसन्ने, तएण कुभए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालकारविभूसिया मल्लिस्स सीय परिवहह जाव परिवहति, तएण सक्के देवराया मणो०माए दक्खिणिल्ल उवरिल्ल वाह गण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्लं गेण्हइ, चमरे दाहिणिल्ल हेट्ठिल्ल, वली उत्तरिल्ल हेट्ठिल्ल, अवसेसा देवा जहारिह मणोरम सीय परिवहति । ' पुव्वि उक्खित्ता माणुस्सेहि तो हट्ठरोमकूवेहि । पच्छावहंति सीयं, असुरिंदसुरिंद नागिंदा ॥ १ ॥ चलचवलकुडलधरा,

---

देवराज ने भी आभियोगिक देवों को बुलाया–और उनसे अनेक स्तम्भशत युक्त शिविका (पालखी)ले आने को कहा–उन्होंने भी शीघ्र वैसी ही शिविका(पालखी)लाकर वहाँ उपस्थित कर दी। वह शिविका अपने दिव्य प्रभाव से कुभक राजाकी शिविका के साथ मिल गई । सूत्र " ३८ "

શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજે પણ આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને તેમને મેકડો થાભલાઓવાળી પાલખી લાવવાનો હુકમ કર્યો તે લોકો પણ સત્વરે પાલખી લઈ આવ્યા દેવરાજની તે પાલખી પોતાની દિવ્ય પ્રભાથી કુભક રાજાની પાલખી સાથે ભળી ગઇ ॥ સૂત્ર " ૩૮ " ॥

सच्छदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदावहंति सीय जिणिदस्स ॥ २ ॥ " तएण मल्लिस्स अरहओ मणोरम सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया एव निग्गमो जहा जमालिस्स, तएणं मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिल मब्भिंतरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव परिधावति, तएण मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता आभरणालकारं मुंचइ, त पभावई पडिच्छई । तएण मल्ली अरहा सयमेव पचमुट्ठियं लोय करेइ। तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता खीरोदगसमुद्दे पक्खवइ । तएणं मल्ली अरहा 'णमोऽत्थुणं सिद्धाण त्तिकट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, जं समय च णं मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ तं समयं च णं देवाण माणुस्साण य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वेयण सदेसेण णिलुक्के यावि होत्था । ज समय च णं मल्ली अरहा सामाइय चरित्त पडिवन्नं त समय च णं मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने । मल्लीणं अरहा जे से हेमताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एकारसीपक्खेणं पुव्वण्हकाल-समयसि अट्ठमेणं भत्तेण अपाणएणं अश्विणीहि नक्खत्तेणं

जोगमुवागएणं तिहि इत्थीसएहि अब्भिंतरियाए परिसाए, तिहि पुरिससएहि बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए। मल्लि अरहं इमे अट्ठ रायकुमारा अणुपव्वइंसु—तं जहा—" णंदेय णंदिमित्ते सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य। अमरवइ, अमरसेणे, महसेणे, चेव अट्ठमए ॥ १ ॥ " तएणं से भवणवइ४ मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिम करेंति, करित्ता जेणेव नंदीसरवरे० अट्ठाहिय करेंति करित्ता जाव पडिगया। तएण मल्ली अरहा जं चेव दिवस पव्वाइए तस्सेव दिवसस्स वरण्हकालसमयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासनसवरगयस्स सुहेण परिणामेणं पसत्थेहि अज्झवसाणेहि पसत्थाहि लेसाहि विसुज्झमाणीहि तयावरणकम्मरयविकरणकर अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ सू० ३९ ॥

टीका-' तएण मल्ली ' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु मल्लीं अर्हन् सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति अभ्युत्थाय यत्रैव मनोरमाशिविका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मनोरमा शिविका ' अणुपयाहिणी करेमाणा ' अणुप्रदक्षिणी कुर्वाणा=आनुकूल्येन

' तएण मल्ली अरहा-इत्यादि। '

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ) मल्ली अर्हंत सिंहासन से उठे (अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरम सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरम सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरगये पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने)

" तएण मल्ली अरहा " इत्यादि

ટીકાર્થ-'तएण) त्यारमाद (मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ) मल्ली अर्हंत सिंहासन उपरथी उभा थया

(अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरम सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरम सीय दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने)

सच्छदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदावहूति सीय जिणिदस्स ॥ २ ॥ " तएण मल्लिस्स अरहओ मणोरम सीय दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया एवं निग्गमो जहा जमालिस्स, तएणं मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिल मब्भितरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव परिधावंति, तएण मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता आभरणालंकारं मुंचइ, त पभावई पडिच्छई । तएण मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोय करेइ। तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता खीरोदगसमुद्दे पक्खिवइ । तएणं मल्ली अरहा 'णमोऽत्थुणं सिद्धाणं त्तिकट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, जं समय च णं मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ तं समय च णं देवाण माणुस्साण -य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वेयणं सदेसेण णिलुक्के यावि होत्था । ज समयं च णं मल्ली अरहा सामाइय चरित्त पडिवन्नं त समय च णं मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने । मल्लीणं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एकारसीपक्खेणं पुव्वण्हकाल-समयसि अट्ठमेणं भत्तेण अपाणएण अस्सिणीहि नक्खत्तेणं

तत खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो मनोरमायाः शिबिकाया दक्खिणिल्ल= दाक्षिणात्य-दक्षिणदिग्भागस्थम्ः, 'उत्तरिल्ल' उपरितन उपरिभागस्थ 'बाहं' बाहु=दण्ड गृह्णाति ईशानः-ईशानेन्द्र.-'उत्तरिल्ल' उत्तरदिग्भास्थम् उपरितन बाहु=दण्डगृह्णाति, चमर'=चमरेन्द्रः 'दाहिणिल्ल' दाक्षिणात्य=दक्षिणदिग्भागस्थ 'हेट्ठिल्ल' अधस्तन दण्ड गृह्णाति, बली=बलीन्द्रः 'उत्तरिल्ल' उत्तरीयम्=उत्त-रभागस्थम् अधस्तन दण्ड गृह्णाति अवशेषा देवा. भवनपति-व्यन्तर-ज्योतिष्क वैमानिकेन्द्राः, 'जहारिह' यथाऽर्हं-यथायोग्य स्व स्व योग्यताऽनुसार मनोरमा शिबिका परिवहन्ति।

"पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोमकूवेहिं।
पच्छा वहति सीय असुरिंद-सुरिन्द-नागिंदा ॥ १ ॥

बाहं गेण्हइ, ईसाणो उत्तरिल्ल बाहं गेण्हइ चमरे दाहिणिल्ल हेट्ठिल्ल, बली उत्तरिल्ल हेट्ठिल्ल अवसेसा देवा जहारिहं मनोरम सीय परिवहति) बाद मे शक्र देवेन्द्र देव राजा ने उस मनोरमा शिबिका के दक्षिण दिग्भागवर्ती ऊपरके दण्डे को पकडा, ईशानेन्द्र ने उत्तर दिग्भा गस्थ ऊपर के दण्डे को पकडा चमरेन्द्र ने दक्षिणदिग्भागवर्ती नीचे के दण्डे को पकडा।

अवशिष्ट भवन पति, व्यन्तर ज्योतिष्क एव वैमानिक इन्द्रो ने अपनी २ योग्यताके अनुसार उस शिबिका का परिवहन किया। (पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिंतो हट्ठ रोमकूवेहिं। पच्छावहति सीय असुरिंद सुरिंद नागिंदा) सब से प्रथम हर्षके वश से रोमाञ्च युक्त हुए मनुष्यों ने उस शिबिका को अपने स्कधो पर रखा-बाद में असुरेन्द्रों ने, सुरेन्द्रों

(तएण सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्ल उत्तरिल्ल बाहं गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्ल बाहं गेण्हइ चमरे दाहिणिल्ल हेट्ठिल्ल बली० उत्तरिल्ल हट्ठिल्ल अवसेसादेवा जहारिहं मनोरम सीय परिवहति)

ત્યાર બાદ શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજે તે મનોરમ પાલખીના દક્ષિણ બાજુના દંડાને ઝાલ્યો, ઈશાનેન્દ્રે ઉત્તર દિશા તરફના ઉપરના દંડાને ઝાલ્યો, ચમરેન્દ્રે દક્ષિણ દિશા તરફના નીચેના દંડાને ઝાલ્યો, બલીન્દ્રે ઉત્તર દિશા તરફના દંડાને ઝાલ્યો

બાકીના બધા ભવનપતિ, વ્યંતર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક ઈન્દ્રોએ પોતપોતાની યોગ્યતા મુજબ પાલખીનુ પરિવહન કર્યું

(पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिंतो हट्ठरोम कूवेहिं पच्छा वहति सीय असुरिंदसुरिंदनागिंदा)

પુલકિત અને હર્ષઘેલા થયેલા માણુસોએ સૌથી પહેલા પાલખીને પોતાના

स्वशुभवाञ्छया-स्वदक्षिणभागे कुर्वती, मनोरमां शिबिकां 'दुरुहइ' दूरोहति=आरोहति, दूरुह्य सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिङ्मुखः सन् सन्निषण्णः। ततः खलु कुम्भकोऽष्टादश 'सेणिप्पसेणीओ' श्रेणि-प्रश्रेणी=शिबिकावाहकान् -अवान्तरजातीयपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्=हे देवानुप्रिया ! यूय खलु स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारविभूषिताः मल्ल्याः शिबिकां परिवहत, एकान्योपरिधारयत यावत्-परिवहन्ति।

उठकर वे जहां वह मनोरम शिबिका थी वहां गये। वहां जाकर वे उस मनोरम शिबिका को अपने शुभ की वाञ्छा से अपने दक्षिण भाग में करते हुए उस शिबिका पर आरूढ हो गये आरूढ हो कर फिर वे पूर्व दिशा की तरफ मुख कर के उस पर रखे हुए सिंहासन पर बैठ गये। (तएण कुंभए अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) इस के बाद कुंभक राजा ने १८, श्रेणी प्रश्रेणी जनों को-शिबिका वाहक १८ प्रकार के अवान्तर जातीय पुरुषों को बुलाया-और बुला कर उन से ऐसा कहा-(तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालंकार विभूसिया मल्लीस्स सीयं परिवहह, जाव परिवहंति) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग स्नान कर तथा समस्त अलंकारों से विभूषित होकर मल्ली अर्हंत की पालखी को उठाओ राजा की इस प्रकार आज्ञा पाकर उन लोगों ने उस पालखी को अपने २ स्कंधों पर उठा कर रख लिया (तएणं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्लं उवरिल्लं

અને ઉભા થઈને જ્યાં મનોરમ પાલખી હતી ત્યાં પહોંચ્યા ત્યાં પહોંચીને તેઓ તે મનોરમ પાલખીને આત્મશ્રેયની ઇચ્છાથી પોતાની જમણી બાજુએ રાખીને તે મનોરમ પાલખી ઉપર ચઢીને તેઓ પૂર્વદિશા તરફ મોં કરીને તેના ઉપર મૂકેલા સિંહાસન ઉપર બેસી ગયા

(तएणं कुंभए अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी)

ત્યાર પછી કુંભક રાજાએ અઢાર શ્રેણી પ્રશ્રેણીજનોને પાલખી ઉચકનારા અઢાર પ્રકારના અવાંતર જાતિના પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આદેશ આપ્યો કે—

(तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह जाव परिवहंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સ્નાન કરો અને ત્યારબાદ બધા અલંકારોથી અલંકૃત થઈને મલ્લી અર્હંતની પાલખીને ઉચકો રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ લોકોએ તરત સ્નાન કરીને પાલખીને પોતપોતાના ખભા ઉપર ઉચકી લીધી

अष्टसख्यकानि मङ्गलानि पुरतः=अग्रे ' अहाणुपुव्वीए ' यथानुपूर्व्या=अनुक्रमेण आलिखितानि-वलिखितानि, एव तेषां नामानि-(१) सोवत्थिय ' स्वस्तिकः, (२) सिरिवच्छा ' श्रीवत्सः, (३) णदियावत्त ' नन्द्यावर्तः, (४) वद्धमाणग ' वर्धमानः (५) भद्दासग ' भद्रासनम् (६) ' कलस ' कलश, (७) ' मच्छ ' मत्स्ययुग्मम्, (८) ' दप्पग ' दर्पणमेति। एव निर्गमो यथा जमालिवक्तव्यो निर्गमनं=निर्गमन वर्णन विज्ञेयम्।

ततः खलु मल्लया अर्हतो निष्क्रामतः=निष्क्रमण कुर्वतः, अप्येकका -केचन-देवा स्वस्ववैक्रियशक्त्या मिथिला राजधानीम्-' सब्भितरबाहिरिय ' साभ्यन्तरबाह्याम् = अन्तर्बहिः ' आसित्तसमज्जिओवलित्त ' आसिक्तसमार्जितोपलिप्ताम् आसिक्ता=पूर्णजलकणैरभिषिक्ताम्, पश्चात् समार्जिताम्=कचवराद्यपनयनेन संशोधिताम्, ततः उपलिप्ता खटिका चूर्णादिना संलिप्ता कुर्वन्ति, कृत्वा यावत्-परिधावन्ति=हर्षोत्कर्षेणेतस्ततः कुर्वन्ति।

आरूढ हुए मल्ली अर्हंतके आगे सब से पहिले क्रमानुसार आठ २ मगल द्रव्य उपस्थित हुए। उनके नाम ये हैं

(१) सोवत्थिय-स्वस्तिक (२) सिरिवच्छा-श्री वत्स (३) णदियावत्त-नन्दिकावर्त (४) वद्धमाणग-वर्धमान (५) भद्दासण-भद्रासन (६) कलस-कलश (७) मच्छ-मत्स्य युग्म (८) और दप्पण-दर्पण (एव निग्गमो जहा जमालिस्स) मल्ली अर्हंत के निर्गम का वर्णन जमालिके निर्गम की तरह ही जानना चाहिये। (तएण मल्लीस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिल सब्भितरबाहिरिय आसिय समज्जिओवलित्त जहा उववाईए जाव परिधावति) जब मल्लि अर्हंत का निष्क्रमण हो रहा था उस समय कितनेक देवो ने अपनी वैक्रियश-

---

(૧) સોવાત્થિય,-સ્વસ્તિક, (૨) સિરિવચ્છા-શ્રીવત્સ, (૩) ણદિયાવત્ત-નદિકાવર્ત્ત (૪) વૃદ્ધમાણગ-વર્ધમાન, (૫) ભદ્દાસણ-ભદ્રાસન, (૬) કલસ-કળશ, (૭) મચ્છ-મત્સ્યયુગ્મ, (૮) અને દપ્પણ-દર્પણ (અરીસો) (एव निग्गमो जहा जमालिस्स) મલ્લી અર્હંતના નિર્ગમનુ વર્ણન જમાલિના નિર્ગમની જેમ જ જાણવુ જોઇએ

(तएण मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिल सब्भितर बाहिरिय आसियसमज्जिओवलित्त जहा उववाईए जाव परिधावति)

જ્યારે મલ્લી અર્હંતની નિષ્ક્રમણવિધિ ચાલતી હતી ત્યારે કેટલાક દેવોએ પોતાની વૈક્રિય શક્તિ વડે મિથિલા રાજધાનીની અદર અને બહાર બધે જળ

चलचवलकुडलधरा सच्छद विउव्वियाभरणधारी ।
देविंद दाणविंदा वहति सीय जिणिंदस्स ॥ २ ॥

'पुव्वि' पूर्वं 'उक्खित्ता' उत्क्षिप्ता स्कन्धोपरिनीता मनुजैः, सा शिबिका, मनुष्यै कथभूतैरित्याह–'हट्ठरोमकूवेहिं' हृष्टरोमकूपै हर्षवशेन रोमाञ्चयुक्तैः, पश्चात्–असुरेन्द्र–सुरेन्द्र–नागेन्द्राः शिबिका वहन्ति–स्कन्धोपरि नयन्तिस्म ॥ १ ॥ देवेन्द्र–दानवेन्द्रा जिनेन्द्रस्य शिबिकां वहन्ति ' इत्यन्वयः । ते देवेन्द्रादयः कथ भूता इत्याह–चलेत्यादि चञ्चपल कुण्डलधरा.=चलाश्च ते चपल कुण्डलधराश्चेति विग्रह । पुनः किं भूता इत्याह–'सच्छदविउव्वियाभरणधारिणः " स्वच्छन्द विकुर्वितामरणधारिण.=स्वच्छन्देन–स्वेच्छया विकुर्वितानि–वैक्रिय शक्तिसमुत्पा दितानि आभरणानि–भूषणानि धारयितु शील येषा ते तथा भूताः ॥ २ ॥

ततः खलु मल्लया अर्हतो मनोरमा शिबिका दूरूढस्य=समारूढस्य सतः 'तप्प ढमयाए ' तत्प्रथमतया=सर्वत पूर्वम् इमानि अष्टाष्टमङ्गलकानि=अष्टगणितानि

ने और नागेन्द्रों ने रखा । (चलचवलकुडलधरा सच्छदविउव्विया भरणधारी, देविंद दाणविंदा वहति सीय जिणिंदस्स) इन देवेन्द्रा दिकों के कुडल उस समय इधर से उधर अत्यन्त चचल हो रहे थे। उन्हों ने जो आभरण धारण कर रखे थे वे अपनी इच्छानुसार वैक्रिय शक्ति से समुत्पादित किये हुए थे। इस तरह देवेन्द्रों और दानवेन्द्रो ने जिने न्द्र की शिबिका को अपने २ स्कधो पर रखा। (तएण मल्लीस्स अरहओ मनोरम सीय दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठ दुमगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया) इस के अनन्तर उस मनोरम शिबिका पर

ખભા ઉપર ઉચકી, ત્યારપછી અસુન્દ્રોએ, સુરેન્દ્રોએ અને નાગેન્દ્રોએ ઉચકી
(चलचवल कुडलधरा, सच्छदविउव्वियाभरणधारी, देविंद दाणविंदा वहति सीय जिणिंदस्स)
તે વખતે દેવેન્દ્ર વગેરેના કુડળો આમ તેમ ખૂબ હાલી રહ્યા હતા
ધારણ કરેલા આભરણોને દેવોએ પોતાની ઈચ્છા મુજબ વૈક્રિય શક્તિ વડે ઉત્પન્ન કરેલા હતા આ પ્રમાણે દેવેન્દ્રો અને દાનવેન્દ્રોએ જિનેન્દ્રની પાલખી પોતપોતાના ખભે ઉચકી હતી
(तएण मल्लिस्स अरहाओ मनोरम सीय दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठ अट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया)
ત્યારબાદ મનોરમ પાલખી ઉપર બેઠેના મલ્લી અર્હંતની સામે સૌ પ્રથમ અનુક્રમે આઠ આઠ મગળ દ્રવ્યો મૂકવામા આવ્યા–તે દ્રવ્યોના નામો આ પ્રમાણે છે.

ततः खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो मल्ल्या अर्हतः केशान् प्रतीच्छति लुञ्चितान् केशान् वस्त्रे धरति प्रतिच्छ्य, क्षीरोदसमुद्रे प्रक्षिपति । तत खलु मल्ली अर्हन्-'णमोऽत्थुण सिद्धाण' नमोऽस्तु खलु सिद्धेभ्यः' इति कृत्वा सामायिकचारित्रं प्रतिपद्यते=प्राप्नोति । यस्मिन समये च खलु मल्ली अर्हन चारित्र प्रतिपन्न, तस्मिन्नेव समये खलु देवानां मनुष्याणा च 'णिग्घोसे' निर्घोषः शब्दः, 'तुरिय णिणाय गीयवाइय निग्घोसे य' तूर्यनिनादगीतवादित्र निर्घोषश्च=वाद्यगीतध्वनिश्च, शक्रवचनसदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया, 'णिलुक्के' निलीन =तिरोहितः निवृत्त चाप्यभवत् ।

(तएण सक्के दविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदग समुद्दे पक्खिवइ) उन मल्लि प्रभुके लुचित केशोंको शक्र देवेन्द्र देवराज ने अपने वस्त्र मे रख लिया और रखकर क्षीर सागर मे उन्हे प्रक्षिप्त कर दिया । (तएण मल्ली अरहा " णमोत्थुण सिद्धाणत्ति कट्टु सामाइयचरित्त पडिवज्जइ) मल्ली अर्हतने " सिद्धों को नमस्कार हो " ऐसा पाठ बोल कर सामायिक चारित्र को धारण किया । (ज समय च ण मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ त समय च ण देवाण माणुस्साण य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वयणसदेसण णिलुक्के यावि होत्था) जिस समय मल्ली अर्हत ने चारित्र को अगीकार किया था उस समय देवो और मनुष्यो का निर्घोष हुआ था तथा बाजों एव गीतों की जो ध्वनि हुई थी वह सब शक्रेन्द्र की आज्ञा से बन्द कर दी गई ।

(तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदगसमुद्दे पक्खिवइ)

તે મલ્લી પ્રભુના લુચિત વાળોને શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજે પોતાના વસ્ત્રમા લઇ લીધા અને લઇને ક્ષીર સાગરમા તેઓને નાખી દીધા

(तएण मल्ली अरहा " णमोत्थुण त्ति कट्टु सामाइय चरित्त पडिवज्जइ)

મલ્લી અર્હંતે " સિદ્ધોને મારા નમસ્કાર ' આ પાઠનુ વાચન કરતા સામાયિક ચારિત્ર ધારણ કર્યું

(ज समय च ण मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ, त समय च ण देवाण माणुस्साण य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वयण सदेसण णिलुक्के यावि होत्था)

જ્યારે મલ્લી અર્હંતે ચારિત્રનો સ્વીકાર કર્યો ત્યારે દેવો અને માણુસોના થયેલા હર્ષ નિર્ઘોષને તેમજ વાજાઓ અને ગીતોના ધ્વનિને શક્રેન્દ્રે પોતાના હુકમથી બધ કરાવી દીધો

ततः खलु मल्ली अर्हन् यत्रैव सहस्राम्रवनमुद्यानं यत्रैवाशोकवरपादपः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शिबिकातः प्रत्यवरोहति प्रत्यवरुह्याभरणालङ्कारं मुञ्चति तदाभरणालङ्कारं प्रभावती=मल्लया जननी प्रतीच्छति वस्त्राञ्चले धारयति ततः खलु मल्ली अर्हन् स्वयमेव=स्वहस्तेनैव पञ्चमुष्टिकं लोचं शिरः केशलुञ्चनं करोति।

क्ति से मिथिला राजधानी को भीतर बाहिर मे जलकणो से सिञ्चित कर दिया था, कूडा करकट के अपनयन से उसे बिलकुल साफ सुथर कर दिया था और चूना आदी से उसे लीप पोत दिया था। यावत् हर्षोत्कर्ष सेवे इधर उधर उसमें इच्छानुसार खूब कूदे और उछले थे।

औपपातिक सूत्र में निष्क्रमण का जैसा वर्णन यहा भी जानना चाहिये। (तएणं मल्ली अरहा जेणेव सहस्सवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आभरणालंकारं मुयइ, तं पभावई पडिच्छइ) वे मल्ली अर्हत जहा सहस्राम्रवन नामका उद्यान और उसमे जहा अशोक वृक्ष था वहा पहुँचे वहां पहुंच कर वे उस शिबिका से नीचे उतरे उतर कर उन्होंने अपने आभरण और अलकारों को उतारा-उतारे हुए उन आभरण और अलकारों को उनकी माता प्रभावती ने अपने वस्त्राञ्चल में रख लिया (तएणं मल्ली अरहा सयमेव पचमुट्ठियं लोयं करेइ) इसके बाद उन मल्ली अर्हत ने अपने केशों का पचमुष्टि लोच किया।

સિંચન કર્યું હતુ કચરો વગેરે વાળીને તેને સરસ બનાવી અને ચુના વગેરેથી ધોળી નાખ્યુ હતુ યાવત્ હર્ષઘેલા થઇને તેઓ ખૂબ ઇચ્છા મુજબ ઉછળ્યા અને કૂદ્યા હતા

ઔપપાતિક સૂત્રમા નિષ્ક્રમણનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે, અહી પણ તે મુજબ જ સમજી લેવુ જોઇએ

(तएणं मल्ली अरहा जेणेव सहस्सवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरूहइ, पच्चोरुहित्ता आभरणालंकार मुयइ, त पभावई पडिच्छई)

મલ્લી અર્હંત જ્યા સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન અને તેમા પણ જ્યા અશોક નામે વૃક્ષ હતુ ત્યા પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને તેઓ પાલખીમાથી નીચે ઉતર્યા, નીચે ઉતરીને તેમણે પોતાના આભરણ અને ઘરેણાઓ ઉતાર્યા મલ્લી અર્હંતના આભરણ અને ઘરેણાઓને તેમના માતા પ્રભાવતીએ પોતાના વસ્ત્રના છેડામા લઇ લીધા (तएण मल्ली अरहा सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ) ત્યારપછી મલ્લી અર્હંતે પોતાના વાળોનુ પચમુષ્ટિ લુચન કર્યું

ततः खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो मल्ल्या अर्हतः केशान् प्रतीच्छति लुञ्चितान् केशान् वस्त्रे धरति प्रतिच्छ्य, क्षीरोदसमुद्रे प्रक्षिपति । ततः खलु मल्ली अर्हन्- 'णमोऽत्थुण सिद्धाणं' नमोऽस्तु खलु सिद्धेभ्यः' इति कृत्वा सामायिकचारित्रं प्रतिपद्यते=प्राप्नोति । यस्मिन् समये च खलु मल्ली अर्हन् चारित्रं प्रतिपन्नः तस्मिन्नेव समये खलु देवानां मनुष्याणां च 'णिग्घोसे' निर्घोषः शब्दः, 'तुरिय णिणाय गीयवाइय णिग्घोसे य' तूर्यनिनादगीतवादित्र निर्घोषश्च=वाद्यगीतध्वनिश्च, शक्रवचनसंदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया, 'णिलुक्के' निलीनः=तिरोहितः निवृत्त चाप्यभवत् ।

(तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदग समुद्दे पक्खिवइ) उन मल्लि प्रभुके लुञ्चित केशोंको शक्र देवेन्द्र देवराज ने अपने वस्त्र मे रख लिया और रखकर क्षीर सागर मे उन्हे प्रक्षिप्त कर दिया । (तएणं मल्ली अरहा ' णमोत्थुणं सिद्धाणंत्ति कट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ) मल्ली अर्हंतने " सिद्धों को नमस्कार हो " ऐसा पाठ बोल कर सामायिक चारित्र को धारण किया । (ज समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ त समयं च णं देवाणं माणुस्साणं य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वयणसंदेसेणं णिलुक्के यावि होत्था) जिस समय मल्ली अर्हंत ने चारित्र को अंगीकार किया था उस समय देवो और मनुष्यो का निर्घोष हुआ था तथा बाजों एवं गीतों की जो ध्वनि हुई थी वह सब शक्रेन्द्र की आज्ञा से बन्द कर दी गई ।

(तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदगं समुद्दे पक्खिवइ)

તે મલ્લી પ્રભુના લુચિત વાળોને શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજે પોતાના વસ્ત્રમા લઇ લીધા અને લઇને ક્ષીર સાગરમા તેઓને નાખી દીધા

(तएणं मल्ली अरहा ' णमोत्थुणं त्ति कट्टु सामाइयं चारित्तं पडिवज्जइ)

મલ્લી અર્હંતે " સિદ્ધોને મારા નમસ્કાર ' આ પાઠનુ વાચન કરતા સામાયિક ચારિત્ર ધારણ કર્યું

(ज समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ, त समयं च णं देवाणं माणुस्साणं य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वयणं सदेसेणं णिलुक्के यावि होत्था)

જ્યારે મલ્લી અર્હંતે ચારિત્રનો સ્વીકાર કર્યો ત્યારે દેવો અને માણુસોના થયેલા હર્ષ નિર્ઘોષને તેમજ વાજાઓ અને ગીતોના ધ્વનિને શક્રેન્દ્રે પોતાના હુકમથી બંધ કરાવી દીધો

यस्मिन् समये च खलु मल्ली अर्हन् सामायिक चारित्रं प्रतिपन्नः=प्राप्तवान्, तस्मिन् समये च मल्ल्या अर्हतो मानुष्यधर्मादुत्तारं=प्रधान मन पर्यवज्ञान समुत्पन्नम्, गृहस्थदशायां ज्ञानत्रयमासीत् चारित्रग्रहणानन्तर तु तदानीमेव चतुर्थज्ञानमभवदिति भावः । मल्ली खलु अर्हन् 'जेसे' यः सः हेमन्ताना मार्गशीर्षादि मासचतुष्टयात्मकानां शीतकालानाम् द्वितीयो मासः चतुर्थे पक्षः-मार्गशीर्षस्या द्यपक्षतश्चतुर्थः पक्ष 'पोस सुध्धे' पौष शुद्धः, पौषमासस्य शुक्लः पक्षः, तस्य खलु पौषशुद्धस्य एकारसीपक्खेण' एकादशीपक्षे खलु एकादशीतिथेः पक्ष-अर्धा

(ज समय च ण मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ त ण मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवणाणे समुप्पन्ने) सामायिक चारित्र को अगीकार करते ही मल्ली अर्हतको चौथा मन पर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया ! गृहस्थ अवस्था में मल्ली अर्हत के मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान ये तीन ज्ञान जन्म जात थे। परन्तु ज्यो ही इन्होंने चारित्र ग्रहण किया उसी समय इनको मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया। (मल्ली ण अरहाजे से हेमताण दोच्चे मासे चउत्थे पक्खेपोस सुद्धे, तस्स ण पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेण पुव्वण्हकालसमयसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएण अस्सिणीहिं नक्खत्तेण जोगमुवागएणं तिहिं इत्थी सएहिं अब्भितरियाए परिसाए तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुडे भवित्ता पव्वइए) मल्ली अर्हत ने जिस समय सर्व विरतिरूप चारित्र अगीकार किया था उस समय हेमतकालका द्वितीय मास था, चौथा पक्ष था उसका नाम पौष मास था-पौष मासका शुक्ल

(ज समय च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ त समय च ण मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुपन्ने)

સામાયિક ચારિત્રને સ્વીકારતાની સાથે જ મલ્લી અર્હંતને ચોથુ મન પર્યવજ્ઞાન ઉત્પન્ન થઇ ગયુ ગૃહસ્થ અવસ્થામા મલ્લી અર્હંતને મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાન આ ત્રણે જ્ઞાન જન્મજાત હતા પણ જ્યારે તેઓએ ચારિત્ર ગ્રહણ કર્યું ત્યારે તેમને મન પર્યવજ્ઞાન થઈ ગયુ

(मल्ली ण अरहा जेसे हेमताण दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स ण पोससुद्धस्स एक्कारसी पक्खे ण पुव्वण्हकालसमयसि अट्ठमेण भत्तेण अपाणएण अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएण तिहिं इत्थीसएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुडे भवित्ता पव्वइए)

મલ્લી અરહંતે જ્યારે સર્વ વિરતિરૂપ ચારિત્ર સ્વીકાર્યું, ત્યારે હેમંત કાળનો બીજો મહીનો હતો ચોથુ પખવાડિયુ હતું તે મહિનાનુ નામ પોષ

शकाले, पूर्वाह्नकालसमये, अष्टमेन भक्तेन 'अपाणएण' अपानकेन जलरहितेन अश्विनीनक्षत्रेण 'जोग' योग=चन्द्रयोगम् उपागतेन त्रिभि स्त्रीशतैः आभ्यन्तरिकया परिषदा, सार्धं तथा-त्रिभि' पुरुषशतैः बाह्यया परिषदा सार्धं मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः=दीक्षा गृहीतवान्। मल्ल्या अर्हत् आभ्यन्तरिका परिषत् स्त्रीभिः, अन्येषा तीर्थंकराणान्तु पुरुषैराभ्यन्तरिका परिषत सञ्जाता। मल्लीमर्हन्तमिमे वक्ष्यमाणा अष्ट राजकुमारा अनुव्रजिताः, तद् यथा-तेषा नामान्ये वम्—

णदे य णदिमित्ते, सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य।
अमरवइ अमरसेणे, महसेणे चेव अट्ठमए॥ १॥

पक्ष था एकादशी का दिन था, पूर्वाह्नकालका समय था। अपानक चौविहार अष्टम भक्त इन्हों ने धारण कर रखा था अश्विनी नक्षत्रका चन्द्रमाके साथ शुभ योग वर्त रहा था।

तीन सौ इनकी अभ्यन्तर परिषदकी आर्यिका थी और बाह्य परिषद के तीन सौ पुरुष थे। सो उन सबके साथ इन्होने दीक्षा धारण की थी। अन्यतीर्थंकरो की आभ्यन्तर परिषद में स्त्रिया नहीं रही हैं ये तो इन्ही की आभ्यन्तर परिषद में कही गई हैं। वहां तो आभ्यन्तर परिषदा में पुरुष ही रहे हैं। (मल्लि अरह इमे अट्ठ रायकुमारा अणुपव्वइस्सु-त्त जहा - णदे य णदिमित्ते सुमित बलमित्त भाणुमित्तेय, अमरवइ अमरसेणे महसेणे चेव अट्ठमए) मल्ली अर्हंत ने जिस समय दीक्षा धारण की उस समय इनके साथ जो आठ राजकुमार दीक्षित हुए थे-उनके नाम ये हैं।

હતુ પોષ મહિનાનો શુકલ પક્ષ હતો, અગિયારસનો દિવસ હતો, પૂર્વાહ્ન કાળનો વખત હતો, અપાનક અષ્ટમ ભક્ત તેમણે ધારણ કરેલુ હતુ અશ્વિની નક્ષત્રનો ચન્દ્રની સાથે શુભયોગ થઈ રહ્યો હતો

તેમની આભ્યતર પરિષદાની ત્રણસો આર્યિકાઓ હતી અને બાહ્ય પરિષદાના ત્રણસો પુરૂષો હતા તેઓ બધાની સાથે તેમણે દીક્ષા ધારણ કરી હતી બીજા તીર્થંકરોની આભ્યતર પરિષદામા સ્ત્રીઓ ન હતી એમની આભ્યતર પરિષદામા સ્ત્રીઓ વિષે વર્ણન કરેલ છે બીજા તીર્થંકરોની પરિષદામા માત્ર પુરુષો જ રહ્યા છે

(मल्लि अरह इमे अट्ठरायकुमारा अणुपव्वइस्सु त्त जहा णदेय णदिमित्ते सुमित्तबलमित्तभाणुमित्तेय। अमरवइ, अमरसेणे महसेणे चेत्र अट्ठमए)

જે વખતે મલ્લી અર્હંતે દીક્ષા ધારણ કરી હતી તે સમયે તેમની સાથે જ દીક્ષિત થયેલા આઠ રાજકુમારોના નામો આ પ્રમાણે છે—(૧) નન્દકુમાર,

(१) नन्दः-नन्दकुमारः, (२) नन्दिमित्र-नन्दिमित्रकुमारः, (३) सुमित्र-सुमित्रकुमारः, (४) बलमित्रः-बलमित्रकुमारः, (५) भानुमित्रः-भानुमित्रकुमारः, (६) अमरपति,-अमरपतिकुमारः, (७) अमरसेन-अमरसेनकुमारः, (८) महासेनः-महासेनकुमार इति।

ततस्तदनन्तर खलु ते भवनपत्यादयश्चतुर्विधा देवा मल्ल्या अर्हतो निष्क्रमण-महिमानं कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव नन्दीश्वरं नामाद्वीपस्तत्राष्टाह्निकाम्=अष्टाहसाध्य मुत्सवं कुर्वन्ति कृत्वा च यावत्-यस्यादिशं प्रादुर्भूतास्ता दिशं प्रतिगताः, ततः खलु मल्ली अर्हन् यस्मिन्नेव दिवसे प्रव्रजितः=दीक्षां गृहीतवान् तस्यैव दिवसस्य पश्चाद्, परार्द्धकाल, समये-पश्चिमे प्रहरे, अशोकवरपादपस्याधः पृथिवीशिलापट्टके

(१) नन्दकुमार (२) नन्दिमित्र कुमार (३) सुमित्र कुमार (४) बालमित्र कुमार (५) भानुमित्र कुमार (६) अमरपति कुमार (७) अमरसेन कुमार और (८) महासेन कुमार। (तएण से भवण वइ ४ मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिमं करेंति, करित्ता जेणेव नंदीसरवरे० अट्ठाहियं करेंति, करित्ता जाव पडिगया) भवनपति आदि चारों प्रकार के देवों ने मल्ली अर्हत के निष्क्रमण महोत्सव की खूब २ महिमा की और करके फिर वे आठवां जो नदीश्वर द्वीप है वहां गये वहां जाकर उन्हों ने अष्टान्हिक महोत्सव किया। यह महोत्सव आठ दिनतक लगातार होता है। अष्टाह्निक महोत्सव करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा तरफ वापिस चले गये। (तएण मल्ली अरहा ज चेव दिवस पव्वाइए तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगं

(२) नन्दिमित्रकुमार, (३) सुमित्रकुमार, (४) बालमित्र कुमार, (५) भानुमित्र कुमार, (६) अमरपति कुमार, (७) अमरसेन कुमार, (८) महासेन कुमार (तएण से भवणवइ ४ मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिम करेंति, करित्ता जेणेव नंदीसरवरे० अट्ठाहियं करेंति करित्ता जाव पडिगया)

भवनपति वगेरे चार जातना देवोओ मल्ली अर्हतना निष्क्रमण महोत्सवनो खूब ज महिमा गायो अने त्यारपछी तेओ आठमा नंदीश्वर द्वीपमा गया त्या पहोचीने तेमणे अष्टाह्निक महोत्सव उजव्यो आ महोत्सव आठ दिवस सुधी सतत उजवाय छे अष्टाह्निक महोत्सव ज्यारे पूरो थयो त्यारे तेओ जे दिशा तरफथी प्रगट थया हता ते दिशा तरफ जता रह्या

(तएणं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वाइए, तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणा

सुखासनवरगतस्य शुभेन परिणामेन ' पसत्थेहिं ' प्रशस्तै =श्रेष्ठै -शुभैः, ' अज्झवसाणे ' अध्यवसानै =आत्मपरिणामै ,-प्रशस्ताभिः लेश्याभिः ' विसुज्झमाणीहिं ' विशुध्यन्तीभिः तयावरणकम्मरयविकरणकर ' तदावरणकर्मरजोविकरणकर-ज्ञानावरणीयादिकर्मरजोविक्षेपक ' अपुव्वकरण ' अपूर्वकरणम्=अष्टमगुणस्थानकम् अनुप्रविष्टस्यानन्त विषयानन्तत्वात्, यावत्-अनुत्तर-समस्तज्ञानभवोन, निर्व्याघातम्-,अप्रतिहत, निरावरण=क्षायिकं, कृत्स्न=सर्वार्थग्राहकत्वात्, प्रतिपूर्ण=सकलाशयुक्तत्वात् पूर्णचन्द्रवत्, 'केवलवर नाणदसणे' केवलवर ज्ञानदर्शन समुत्पन्नम्॥सू० ३९॥

-यस्स, सुहेण परिणामेण पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहि लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणकम्मस्स विकरणकर अपुव्वकरण अणुपविट्ठस्स अणते जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने) मल्ली अर्हंत ने जिस दिन दीक्षा धारण की उसी दिन पश्चिम प्रहर मे अशोक वृक्षने नीचे रहे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर सुखासन से विराजमान उन्हे शुभ परिणाम प्रशस्त अध्यवसान-आत्म परिणाम-एव विशुद्ध -प्रशस्त-लेश्याओ के प्रभावसे समस्त ज्ञानावरणीय दर्शनावणीय मोहनीय और अन्तराय कर्मरूप रजके विक्षेपक अनन्त केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हो गये। अर्थात् दीक्षा लेते ही एक प्रहरके बाद केवलज्ञान पाए। क्षपकश्रेणी पर आरूढ हुई आत्माओं को-ही ये दोनो केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त होते है अन्य को नहीं -तथा यह श्रेणी ८वे अपूर्वकरण गुणस्थान से- ही प्रारभ होती है अन्य गुणस्थान से नही मल्ली अर्हंत ने भी-इसी - श्रेणी -पर आरोहण

मेण पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणकम्मरयविकरणकर अपुव्वकरण अणुपविट्ठस्स अणते जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने)

જે દિવસે મલ્લી અર્હંતે દીક્ષા ધારણ કરી તે જ દિવસે છેલ્લા પહોરમા-અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વી શિલાપટ્ટક ઉપર સુખાસન પૂર્વક બેઠેલા તેઓને શુભ પરિણામ પ્રશસ્ત અધ્યવસાન આત્મપરિણામ અને વિશુદ્ધ પ્રશસ્ત લેશ્યાઓના પ્રભાવથી સમસ્ત જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય મોહનીય અને અંતરાય કર્મરૂપ રજનુ વિક્ષેપક અનંત કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન ઉત્પન્ન થયુ ક્ષપક શ્રેણી ઉપર આરૂઢ થયેલા આત્માઓને જ આ કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન મળે છે બીજાઓને નહી, તેમ જ આ શ્રેણી આઠમા અપૂર્વકરણ ગુણ સ્થાનથી જ આરંભે છે, બીજા કોઈપણ ગુણસ્થાનથી નહી. મલ્લી અર્હંતે પણ આ શ્રેણી

मूलम्–तेण कालेणं तेण समएण स०वदेवाणं आसणाइं चलंति समोसढा केवलमहिमं करेंति करित्ता जेणेव नदीसर० अट्ठाहिय महामहिमं करेंति करित्ता जामेव दिसं पाउ० परिसा णिग्गया कुभएवि निग्गच्छइ । तएणं ते जियसत्तूपा० छप्पि-जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अ० जाव पज्जुवासंति । तएणं मल्ली अ० तीसे महइ महालयाए० कुभगस्स तीसि च जियसत्तू पामु-क्खाणं धम्म कहेइ । परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया। कुंभए समणोवासए जाए । पभावईय । तएणं जियसत्तूप्पा० छप्पिराया धम्म सोच्चा एव वयासी–आलित्तेण

कर दिया था तभी जाकर उन्हें इनकी प्राप्ति हुई यही बात " अपुव्वकरन अणुपविट्ठस्स " इन पदोंद्वारा प्रदर्शित की गई है। "अणते जाव " यहाँ जो "जाव" पद रखा गया है उससे "अनुत्तर निर्व्याघातम् निरावरणं , कृत्स्न, प्रतिपूर्णं " इन पदों का ग्रहण किया गया है । ये दोनों अनत विषयों को जानते हैं और देखते है इसलिये ये अनत हैं। समस्त ज्ञान और दर्शनों में ये प्रधान है इसलिये अनुत्तर है। अप्रतिहत होने से ये दोनों निर्व्याघात, क्षायिक होने से निरावरण सर्वार्थ ग्राहक होने से कृत्स्न, सकलांश युक्त होने से पूर्ण चन्द्र की तरह प्रतिपूर्ण कहे गये है ॥ सूत्र ३९ ॥

'ઉપર આરોહણ કરી દીધું હતું ત્યારે જ તેમને એમની પ્રાપ્તિ થઈ હતી એ જ વાત–" अपुव्वकरण अणुपविट्ठस्स " આ પદોદ્વારે દર્શાવવામા આવી છે " अणते जाव " અહીં જે 'जाव' પદ છે તેનાથી " अनुत्तर निर्व्याघात निरावरण, कृत्स्न, प्रतिपूर्ण, આ પદો ગ્રહણ કરવામા આવ્યા છે આ બને અનત વિષ યોને જાણે છે અને જુએ છે એટલા માટે તેઓ અનત છે સમસ્ત જ્ઞાન અને દર્શનોમા તેઓ પ્રધાન છે એટલા માટે અનુત્તર છે અપ્રતિહત હોવા બદલ આ બને નિર્વ્યાઘાત, ક્ષાયિક હોવાથી નિરાવરણ, સર્વાર્થ ગ્રાહક હોવાથી કૃત્સ્ન, સકલાશયુક્ત હોવાથી પૂર્ણ ચન્દ્રની જેમ પ્રતિપૂર્ણ કહેવામા આવના છે ૩૯

भते ! लोए पलित्तेणं भते लोए जाव पव्वइया, चोद्दसपुव्विणो अणते केवले० सिद्धा ।

तएण मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ । मल्लिस्सणं भिसगपामोक्खा अट्ठावीस गणा, अट्ठावीसगणहरा होत्था । मल्लिस्सण अरहओ चत्तालीस समणसाहस्सीओ उक्कोसेण, बधुमइपामोक्खाओ पणपण्णं अज्जिया साहस्सीओ उक्को०, सावयाणं एगा सायसाहस्सी, चुलसीइ सहस्सा साबियाण तिन्नि सयसाहसीओ पण्णट्ठि च सहस्सा, छस्सया चोद्दसपुव्वीण, वीससया ओहिनाणीण, बत्तीस सया केवलणाणीण,पणतीण सया वेउव्वियाणं, अट्ठसयामणपज्जवणाणीणं, चोद्दससया वाईणं,वीस सया अणुत्तरोववाइण । मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी होत्था त जहा -जुयंतकरभूमी, परियायतकरभूमी य। जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुयतकरभूमी । दुवासपरियाए अतमकासी । मल्लीणं अरहा पणुवीस धणूइ मुड्ढ उच्चत्तेणं । वण्णेणं पियगुसमे समचउरससठाणे, वज्जारिसभणारायसघयणे, मज्झदेसे सुह सुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समेयसेलसिहरे पाओवगमणुव्ववण्णं । मल्लीण अरहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पणपण्ण वाससहस्साइ वासलयऊणाइं केवलि परियाग पाउणित्ता पणपण्ण वाससहस्साइसव्वा उय पालइत्ता जे से गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्तसुद्धे, तस्स णं

चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्तेणं अद्धरत्तकालसमयंसि पचहि अज्जियासएहिं अब्भितरियाए परिसाए, पंचहिं अणगार सएहि बाहिरियाए परिसाए, मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी खीणे वयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे। एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबुद्दीवे पण्णत्तीए नंदीसरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया। एव खलु जबू! समणेणं भगवया महावीरेण अट्ठमस्स नामज्झेयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ४० ॥

टीका—' तेण कालेण ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सर्वदेवनाशक्रस्य देवेन्द्रस्य तथाऽन्येषा सर्वेषामिन्द्राणा च, आसनानि चलन्ति स्म। तदा ऽवधिं प्रयुज्य मल्लया अर्हत' केवलोत्पत्तिं ज्ञात्वा यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैव ' समो

' तेण कालेण तेन समएण ' इत्यादि।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएणं) उस काल और उस समय में (सव्वदेवाण आसणाइ चलति, समोसढा केवल महिम करेंति) करित्ता जेणेव नदीसरे० अट्ठाहिय महामहिम करेंति, करित्ता जामेव दिसपाउ० परिसा णिग्गया कुभएवि निग्गच्छइ) समस्त देवों के शक्र देवेंद्र के तथा अन्य समस्त इन्द्रों के आसन कपायमान हुए। आसनोके कपित होने का क्या कारण है इस प्रकार जब जानने की उन्हों ने इच्छा की तो उसी समय उन्हों ने अपने ३ अवधिज्ञान से देखा

' तेण कालेणं तेणं समएणं ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-तेण कालेण तेण समएण તે કાળે અને તે સમયે (सव्वदेवाण आसणाइ चलति, समोसढा केवलमहिम करे ति करित्ता जेणेव नदी सरे० अट्ठाहिय महामहिमकरे ति, करित्ता जामेव दिस पाउ०परिसाणिग्गया कुभए वि निग्गच्छइ)

બધા દેવતાઓના, શક્ર દેવેન્દ્રના તેમજ બીજા બધા ઇન્દ્રોના આસનો ડોલવા માડયા તેમના આસનો શા કારણથી ડગમગવા માડયા છે ? આ જાતની જ્યારે તેમના મનમા જિજ્ઞાસા ઉત્પન્ન થઈ ત્યારે તરત જ તેમણે પોતપોતાનુ

सद्धा ' एमवसृताः=आगताः, आगत्य ' केवलमहिम ' केवलज्ञानोत्सव कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव नन्दीश्वरो द्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' अट्ठाहिम ' अष्टाह्निका म हिमान अष्टदिवस साध्यमुत्सव कुर्वन्ति, कृत्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतास्तामेव दिश प्रतिगताः । तदनन्तर परिषत्-मिथिलाराजधान्या जनसमूहः मल्ल्या अर्हतो वन्दनार्थं निर्गता-मिथिलाराजधानीतो निःसृता । कुम्भकोऽपि निर्गच्छति स्म ।

ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षिडप राजानः स्व स्व ज्येष्ठपुत्रं राज्ये स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविकाः समारूढा सर्वर्द्धया सर्वैश्वर्येण सकलबलेन सहिता यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत्-पर्युपासते ।

की मल्ली अर्हंत को केवल ज्ञान की उत्पत्ति हुई है । सो जहां मल्ली अर्हत थे वे सब वहा पर आये-आकर उन्हो ने केवलज्ञान की महिमा का उत्सव किया उत्सव कर जहा नदीश्वर द्वीप था फिर वे वहां आये वहां आकर उन्हों ने लगातार आठ दिन तक उत्सव किया । उत्सव कर के फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की तरफ चले गये । इस के बाद मिथिला राजधानीसे जन समुदाय मल्ली अर्हत को वदना करने के लिये निकला । कुभक राजा भी निकले । (तएण ते जियसत्तूपा० छप्पि जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ आरूढा सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अ०जाव पज्जुवासंति) इसके अनतर वे जितशत्रु प्रमुख छहों राजा अपने२ ज्येष्ठ पुत्रको राज्यपदमें स्थापित कर पुरुष सहस्र वाहिनी शिबिकापर आरूढ हो सर्व ऋद्धि एव सकलबल

અવધિજ્ઞાન જોડ્યુ અવધિજ્ઞાનથી તેઓએ જાણ્યુ કે મલ્લી અર્હંતમા કેવળ જ્ઞાનની ઉત્પત્તિ થઈ છે તેઓ બધા જ્યા મલ્લી અર્હંત હતા ત્યા આવ્યા ત્યા પહોચીને તેઓએ કેવળજ્ઞાનના મહિમાનો ઉત્સવ ઉજવ્યો ઉત્સવ ઉજવ્યા પછી તેઓ નદીશ્વર દ્વીપમા ગયા, ત્યા જઇને તેઓએ સતત આઠ દિવસ સુધી ઉત્સવો ઉજ૦ । ઉત્સવની સમાપ્તિ પછી તેઓ જે દિશા તરફથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ જતા રહ્યા ત્યારબાદ મિથિલા રાજધાનીથી મલ્લી અર્હંતના વદન માટે જનસમુદાય નીકળ્યો કુભક રાજા પણ નીકળ્યો

(तएण ते जियसत्तूपा० छप्पि जेट्ठे पुत्ते ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अ० जाव पज्जुवासति)

ત્યારપછી જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ પોતપોતાના મોટા પુત્રને રાજ ગાદીએ બેસાડીને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓમા બેસીને સર્વઋદ્ધિ અને

ततः खलु मल्ली अर्हन तस्या महाति महालयाया'-अतिविस्तीर्णायाः पर्षदोऽग्रे कुम्भकस्य राज्ञस्तथा तेषां च जितशत्रुप्रमुखाणां राज्ञां धर्मं=कथयति, परिषद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूताः, तामेव दिशं प्रतिगता। कुम्भकः श्रमणोपासको जातः, देशविरतिरूपं धर्मं स्वीकृतवान्, प्रतिगतः। प्रभावती च श्रमणोपासिका जाता, प्रतिगता प्रभावती कुम्भकौ स्वस्थानं गतवन्तौ। तत खलु जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो धर्मं श्रुत्वा, प्रतिबुद्धा एवमवादिषुः 'आलित्तेणं भंते लोए पलित्तेणं भंते

के साथ जहां मल्ली अर्हत विराजमान थे वहां आये वहां आकर उन सबने मल्ली अर्हत की अच्छी तरह उपासना की। (तएणं मल्ली तीसे महइ महालियाए ०००० धम्मं कहेइ) इसके बाद मल्ली अर्हत ने उस अति विस्तीर्ण जनमेदिनी के समक्ष कुंभक राजा तथा जितशत्रु प्रमुख उन छहों राजाओं के समक्ष श्रुतचारित्र रूप धर्मका उपदेश दिया। (पारिसा जामेव दिसिं पा०तामेव दि०पडि०) उपदेश सुनकर वह जनमेदिनीरूप परिषदा जिस दिशासे आई थी उसी दिशा तरफ वह वापिस चली गई। (कुंभए समणोवासए जाए) कुंभक राजा श्रमणोपासकबन गये। अर्थात् देशविरतिरूप धर्म उन्होंने स्वीकार कर लिया। (पभावईए) प्रभावती भी श्रमणोपासिका बन गई।

(तएणं जियसत्तूप्पा० छप्पि राया धम्मं सोच्चा एवं वयासी) इसके बाद उस जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं धर्म का उपदेश सुनकर प्रतिबुद्ध हो इस प्रकार कहा-(अलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं

સકળ બળની સાથે જ્યાં મલ્લી અર્હંત વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યા ત્યાં પહોંચીને તેઓ બધાએ મલ્લી અર્હંતની સારી પેઠે ઉપાસના કરી

(तएणं मल्ली अ०तीसे महइ महालियाए० धम्मं कहेइ) ત્યાર પછી મલ્લી અર્હંતે તે વિશાળ જન સમુદાય, તેમજ કુંભક રાજા અને જિતશત્રુ પ્રમુખ તે છએ રાજાઓની સામે શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો (परिसा जामेव दिसिं पा तामेव दिसिं पडि०) ઉપદેશ સાંભળીને જનસમુદાય જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો (कुंभए समणोवासए जाए) કુંભક રાજા શ્રમણોપાસક થઇ ગયા હતા એટલે કે દેશ વિરતિરૂપ ધર્મનો તેઓએ સ્વીકાર કર્યો હતો (पभावईए) પ્રભાવતી પણ શ્રમણોપાસિકા થઇ ગયા

(तएणं जियसत्तूप्पा छप्पिराया धम्मं सोच्चा एवं वयासी) ત્યાર પછી જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ ધર્મના ઉપદેશથી પ્રતિબુદ્ધ થઇને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-

(आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए जाव पव्वइया तुब्भे पुव्वि

लोए ' इति हे भदन्त ! भगवन् ! ' अलीत्ते ' आदीप्तः=भा=समन्ताद् दीप्तः=ज्वलितः खल्वय लोकः, तथा हे भदन्त ! ' पलित्ते ' प्रदीप्तः=प्रकर्षेण ज्वलितः-खदिर कार्पासकाष्ठाग्निज्वालयेव तीव्रज्वालया युक्तः खल्वय लोकः, जन्मजरा मरणादिदुःखानि वहन्तीव्रज्वाला इवास्मिन् लोके जीवान् प्रदहन्तीत्यर्थः । यावत्-प्रव्रजिताः=यथा कश्चिदादीप्ते गृहे प्रसुप्त नर बोधयेत् तथा हे भगवन्-आदीप्ते लोके मोहनिद्रावशगतानस्मान् प्रतिबोध्य युष्माभिः श्रेयस्करो मोक्षमार्ग प्रदर्शित तस्माद् भवतामन्तिके प्रव्रजिष्यामः ' इत्युक्त्वा ते षडपि राजानः प्रव्रजितादीक्षा गृहीतवन्तः । ततश्चतुर्दशपूर्विणः=चतुर्दशपूर्वधारिणो भूत्वाऽनुक्र-

---

भते लोए जाव पव्वइया चोद्दसपुव्विणो अणते केवले सिद्धी) हे भदत ! यह चतुर्गति रूप लोक आ - समन्तात् - ज्वलित हो रहा है । हे भदत ! यह लोक अत्यत ज्वलित हो रहा है । कार्पास काष्ठ की अग्निज्वालाके समान तीव्र ज्वालासे यह लोक व्याप्त हो रहा है अग्नि की तीव्र ज्वाला जैसे जन्म, जरा एव मरण आदि के दुःख जीवोंको सदा उस लोक में जलाते रहते हैं। हे भगवान ! जैसे कोई व्यक्ति घर में आग लग जाने पर उसमें सुप्त हुए व्यक्ति को सचेत कर देता है-इसी तरह आदीप्त हुए इस लोक में मोह-निद्राधीन बने हुए हम लोगों को प्रतिबोधित कर आपने श्रेयस्कर मोक्षमार्ग प्रदर्शित किया है- इसलिये हम आपके पास दीक्षा अगीकार करेंगे । इस प्रकार कह कर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने मल्ली अर्हत के समीप दीक्षा धारण करली । चौदह पूर्व के पाठी होकर उन्हो ने निरतिचार

णो अणते केवले० सिद्धा)

હે ભદન્ત ! આસમતાત્ (ચોમેર) આ ચતુર્ગતિરૂપ લોક સળગી રહ્યો છે હે ભદન્ત ! આ લોક અત્યત જ્વલિત થઇ રહ્યો છે ३ અને લાકડાની અગ્નિ જ્વાળાઓની પેઠે તીવ્ર જ્વાળાઓથી આ લોક વ્યાપ્ત થઇ રહ્યો છે અગ્નિની તીવ્ર જ્વાળાઓ ની જેમ હમેશા જન્મ, જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરેના દુખો આ લોકને સળગાવતા રહે છે હે ભગવન્ ! જેમ કોઇ માણસના ઘરમા અગ્નિ સળગી ઉઠે ત્યારે સૂતેલા માણસને બીજો કોઇ જાગ્રત કરે છે તે પ્રમાણે જ પ્રજ્વલિત થતા આ લોકમા મોહ નિદ્રાવશ થયેલા અમારા જેવા લોકોને બોધ આપીને તમે શ્રેયસ્કર મોક્ષ માર્ગ બતાવ્યો છે તેથી અમે હવે તમારી પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરીશુ આ પ્રમાણે વિનતિ કરીને જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ મલ્લી અર્હંતની પાસેથી દીક્ષા સ્વીકારી લીધી ચૌદ પૂર્વના પાઠી થઇને તેમણે નિરતિચાર ચારિત્રનુ પાલન કર્યું અને આ પ્રમાણે ધીમે ધીમે અનુક્રમે

मेण निरतिचार चारित्र पालयित्वाऽनन्त केवल=केवलज्ञानदर्शन यावत्-सिद्धा सिद्धिस्थान गताः ।

ततस्तदनन्तर खलु मल्ली अर्हन् सहस्राम्रवणात् निष्क्रामति=निर्गच्छति, निष्क्रम्य बहिर्जनपदविहारं विहरति । मल्ल्या खलु भिषगप्रमुखाः अष्टाविंशति गणाः, अष्टाविंशतिर्गणधरा अभवन् । मल्ल्याः खलु अर्हतश्चत्वारिंशत् श्रमणसहस्राणि 'उक्कोसेण' उत्कर्षेण उत्कृष्टा श्रमणसपदभवत् । तया-बन्धुमतिप्रमुखाः पञ्च

चारित्र का पालन किया। और इस तरह धीरे२ क्रमशः वे छहोंके छहों केवल ज्ञान और केवल दर्शनके अधिकारि बन गये और अन्तमें सिद्धस्थान पर पहुँच गये। -(तएण मल्ली अरहा सहसम्बवणाओ निक्खमइ) मल्ली अर्हत उस सहस्राम्र वनसे बाहर निकले (निक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ) निकलकर उन्होंने बाहरके जनपदों में तीर्थंकर परम्पराके अनुसार विहार करना प्रारंभ करदिया। (मल्लिस्सणं भिसगपामोक्खा अट्ठावीस गणा, अट्ठावीस गणहरा, होत्था मल्लिस्सण अरहओ चत्तालीस समणसाहस्सीओ उक्कोसेण बधुमइपामोक्खाओ पणपन्नअज्जिया साहस्सीओ उक्कोसेण सावयाण एगासाय साहस्सी चुलसीइ सहस्सो सावियाण तिन्निसयसायसीओ पण्णट्ठ च सहस्सा) इन मल्ली अर्हत के भिषग प्रमुख २८, गण (गच्छ) थे और २८, गणधर थे। उत्कृष्ट से इन मल्ली अरहत प्रभु की श्रमण सपत्ति ४० हजार की थी। तथा उत्कृष्ट की अपेक्षा बधुमती

તેઓ છએ છ રાજાઓ કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન માટે અધિકારી થઈ ગયા અને છેવટે સિદ્ધસ્થાને પહોંચી ગયા (तएण मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमइ) મલ્લી અર્હંત તે સહસ્રામવનથી બહાર નીકળ્યા (निक्खमित्ता बहिया जणवय विहार विहरइ) નીકળીને બહારના જનપદોમા તેમણે તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરવો શરૂ કર્યો

(मल्लिस्स ण भिसगपामोक्खा अट्ठावीस गणा, अट्ठावीस गणहरा, होत्था मल्लिस्सण अरहओ चत्तालीस समण साहस्सीओ० उक्कोसेण बधुमइ पामोक्खाओ पणपण्ण अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसेण सावयाण एगा साय साहस्सी, चुल सीइ सहस्सा सावियाण एगा साय साहस्सी चुलसीइ सहस्सा सावियाणं तिन्निसय सायसीओ पण्णट्ठ च सहस्सा)

મલ્લી અર્હંતને ભિષગ્ પ્રમુખ અઠ્ઠાવીશ (૨૮) ગણ (ગચ્છ) હતા અને અઠ્ઠાવીશે (૨૮) ગણધર હતા ઉત્કૃષ્ટથી મલ્લી અર્હંત પ્રભુની શ્રમણ સંપત્તિ ચાળીસ હજાર હતી તેમજ ઉત્કૃષ્ટની અપેક્ષાએ બંધુમતી પ્રમુખ ૫૫

पञ्चाशत् अर्यिकासहस्राणि उत्कर्षेण, उत्कृष्टा साध्वीसम्पत् पञ्चपञ्चाशत्सहस्रपरिमिता जातेत्यर्थः, तथा-श्रावकाणामेकशतसहस्राणि=एक लक्षम्, ' चुलसीतिं ' चतुरशीतिः सहस्राणि, श्रमणोपासकसंपदभूत्। तथा-श्राविकाणां त्रीणिशतसहस्राणि=त्रीणि लक्षाणि, पञ्चषष्टिसहस्राणि उत्कर्षेण, तथा-षट्शतानि चतुर्दश पूर्विणा-चतुर्दश पूर्वधारिणा, तथा-विंशतिशतानि अवधिज्ञानिना, तथा-पञ्चत्रिंशत्-शतानि ' वेउव्वियाण ' वैक्रियाणां=वैक्रियलब्धिधारिणा, तथा-अष्टशतानि -मनः पर्ययज्ञानिना, तथा-चतुर्दशशतानि वादिना, तथा-विंशतिशतानि अनुत्तरोपपातिकानाम्। मल्लया अर्हतः ' अतगडभूमी ' अन्तकृद्भूमिः=अन्तकृत -

आदि ५५ हजार आर्यिकाएँ थी। इनके श्रावको की सख्या १ लाख ८४ हजार थी। श्राविकाएँ इनकी ३, लाख ६५, हजार थी। (छस्सया चोद्दस पुव्वीण, वीससया ओहिनाणीण वत्तीस सया केवलणाणीण पणतीण सया वेउव्वियाण, अट्ठसया मणपज्जवणाणीण चोद्दस सयावाईण वीस सया अणुत्तरोववाइण (६००, चतुर्दश पूर्व के धारी मुनि गण थे। बीस सौ अर्थात् २०००, अवधिज्ञानी थे। ३२ सौ अर्थात् ३, हजार दो सौ केवल ज्ञानी थे ३५ सौ वैक्रिय लब्धि के धारी थे। ८००, सौ मन पर्यव ज्ञानी थे। चौदह सौ वादी थे। बीस सौ अनुत्तरोपपातिक थे। (मल्लिस्स अरहओ दुविहा अतगडभूमी य जाव वीसइमाओ पुरिस जुगाओ जुयतकर भूमी) इन मल्लीअर्हत की अतः कृद्भूमि-उसी भव से मोक्ष जानेवलो का काल-दो प्रकारकी थी-(१) युगान्तकर भूमि

હજાર આર્યિકાઓ હતી તેમના શ્રાવકોની સંખ્યા એક લાખ ચોરાશી હજાર હતી અને ત્રણ લાખ પાસઠ હજાર તેમની શ્રાવિકાઓ હતી

(छस्सया चोद्दस पुव्वीण वीससया ओहिनाणीण वत्तीस सया केवलणाणीण पणतीस सया वेउव्वियाण अट्ठ सया मण पज्जवणाणीण, चोद्दस सया वाईण वीस सया अणुत्तरोववाइयाण)

છસો ચતુર્દશ પૂર્વનાધારી મુનિગણો હતા ૨૦ સો એટલે બે હજાર અવધિજ્ઞાની હતા ૩૨ સો એટલે બે ત્રણ હજાર બસો કેવળજ્ઞાની હતા ૩૫ સો વૈક્રિય લબ્ધિનાધારી હતા આઠસો મન પર્યવજ્ઞાની હતા ૧૪ સો વાદી હતા ૨૦ સો અનુત્તરોપપાતિક હતા

(मल्लिस्स अरहओ दुविहा अतगडभूमी य जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुयतकरभूमी)

મલ્લી અર્હંતથી અંતકૃદ્દભૂમિ-તે ભવમા જ મોક્ષ મેળવનારાઓનો કાળ-બે પ્રકારની હતી (૧) યુગાન્તકર ભૂમિ (૨) પર્યાયાન્તકર ભૂમિ ભૂમિ

भवान्तकारिण तस्मिन्नेव जन्मनि मुक्तिगामिनः, तेषा भूमिः-कालः, कालस्य चाधारत्वेन कारणत्वाद् भूमित्वेन व्यपदेश । द्विविधा=द्विप्रकारा, अभवत् , तद् यथा-युगान्तकरभूमिः, पर्यन्तकरभूमिश्च । यावद्-विंशतितमात् पुरुषयुगाद् युगान्तकरभूमिः-अत्र द्वितीयार्थे पञ्चमी यावद् विंशतितम पुरुषयुगं-विंशतितम शिष्य यावदित्यर्थः। युगानि-कालमानविशेषाः, तानि क्रमानुसारिणि, युगानीव युगानि, युगसादृश्याद् गुरुशिष्यप्रशिष्यादिरूपाः पुरुषाअपि युगानि व्यवह्रियन्ते, तैः प्रमितायाऽन्तकरभूमि स, युगान्तकरभूमिः । मल्लीजिनादारभ्य तत्तीर्थ पट्टानुपट्ट क्रमेण विंशतितम पट्टपुरुष यावत् साधवः सिद्धा अभूवन् , ततः पर सिद्धिगमन व्यवच्छेदोऽभूदितिभावः । पर्यायान्तकरभूमिमाह-' दुवासपरियाए अन्तमकासी' इति, द्विवर्षपर्यायेऽन्तमकार्षीत्-इति अनेन-वाक्येन पर्यायान्तकरभूमिः प्रोच्यते । पर्यायस्तीर्थंकरस्य केवलित्व कालस्तमाश्रित्य याऽन्तकृभूमिः सा पर्यायान्तकर

---

(२) पर्यायान्तकर भूमि । भूमि शब्द से काल तथा युग शब्द से गुरु शिष्य प्रशिष्यादि रूप पुरुषों का ग्रहण हुआ है । अतः इन गुरु शिष्य प्रशिष्यादि रूप पुरुषों को आरभ कर जिस में उसी भव से मोक्ष जाने वालोंका प्रमाण प्रमित किया जावे वह युगान्तकर भूमि है ऐसा युगान्तकर भूमि शब्दका वाच्यार्थ निकलता है मल्ली जिनसे लगाकर इनके तीर्थमें पट्टानुपट्ट क्रमसे विंशतितम पट्टपुरुष तक (बीसपेढि)साधु सिद्ध हो चुके हैं । उसके बाद सिद्धि में जानेका व्यवच्छेद हो गया। (दुवासपरियाए अतमकासी) इस वाक्यसे पर्यायान्तकर भूमि सूत्रकार ने प्रकट की है ।

તીર્થંકર की केवली अवस्था के पर्यायरूप समय को लेकर जो अन्त कर भूमि होती है उसका नाम पर्यायान्तकर भूमि है ऐसा इस शब्दका

શબ્દથી કાળ તેમજ યુગ શબ્દથી ગુરુ-શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરૂષોનુ ગ્રહણ થયુ છે એથી આ બધા ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરૂષોને આરભીને જેમા તે ભવથી જ મોક્ષ મેળવનારાઓનુ પ્રમાણ પ્રમિત (કેટલુ છે તેની ગણત્રી) કરવામા આવે તે યુગાતકર ભૂમિ શબ્દનો વાચ્યાર્થ થાય છે મલ્લીજીનથી માડીને એમના તીર્થમા પટ્ટાનુપટ્ટ ક્રમથી વિશતિતમપટ્ટ પુરૂષ સુધી સાધુઓ સિદ્ધપદ પામી ચૂકયા છે ત્યારપછી સિદ્ધિમા જવા માટે વ્યવચ્છેદ થઇ ગયો (દુવાસ પરિયાए अतमकासी) આ વાકયથી સૂત્રકારે પર્યાયાન્તકર ભૂમિ પ્રકટ કરી છે

તીર્થંકરની કેવળી અવસ્થાના પર્યાયરૂપ સમયથી લઇને જે અન્તકર ભૂમિ હોય છે, તેનુ નામ પર્યાયાન્તર ભૂમિ છે આ શબ્દનો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે જ

भूमिः । मल्ल्या अर्हतः केवलज्ञानस्य द्विवर्ष-पर्यायेसती तत्तीर्थे साधु अन्तमकार्षीत्-भवान्तमकरोत् न ततः पूर्वं कश्चिदपीत्यर्थ ।

मल्ली खलु अर्हन् पञ्चविंशतिर्धनूंषि ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन=मल्ल्या अर्हतः शरीरमुच्चत्वेन पञ्चविंशतिर्धनुः परिमितमासीदित्यर्थः । वर्णेन प्रियङ्गुसमः नीलवर्णइत्यर्थः । समचतुरस्रसंस्थानः, वज्रऋषभनाराचसंहनन मध्यदेशे ग्रामानुग्राम सुखसुखेन विहृत्य यत्रैव समेतः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, समेतशैलशिखरे पादपोपगमनोपपन्न पादपोपगमन संस्तारक स्वीकृतवान्। मल्ली खलु अर्हन् एक वर्षशतम् अगारवासमध्ये

वाच्चार्थ निकलता है। मल्ली अर्हंत को केवल ज्ञान उत्पन्न हुए जब दो वर्ष हो गये तब उसके बाद ही उनके तीर्थ में अपने भवको अन्त कर साधुजनों ने मुक्ति लाभ किया। इसके पहिले कोई साधु मुक्ति मे नही गया। यही पर्यायान्त करभूमि है। (मल्ली ण अरहा पणुवीस धणूइ मुड्ढ उच्चत्तेण) इन मल्ली अरहत के शरीरकी ऊँचाई २५ धनुष प्रमाण थी। (वण्णे ण पियगुसमे, समचउरससठाणे, वज्जरिसभणाराय संघयणे) शरीर का वर्ण प्रियगु के समान नील था। संस्थान समचतुरस्र था। संहनन वज्र ऋषभ नाराच था (मज्झ देसे सुह सुहेण विहरित्ता जेणेव सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समेय सेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे) मध्य देश में सुख शान्ति पूर्वक विहार कर ये प्रभु जहां समेत पर्वत था वहां आये। आकर उसी समेत शैल शिखर पर पादपोपगमन संथारा उन्हों ने धारण किया। (मल्ली ण अ

થાય છે મલ્લી અર્હંતને કેવળજ્ઞાન ઉદ્ભવ્યુ, તેના બે વર્ષ પછી જ તેમના તીર્થમા પોતાના ભવમા અતકર સાધુજનોએ મુક્તિ લાભ મેળવ્યો એના પહેલા કોઇ સાધુએ મુક્તિ મેળવી નથી, એ જ પર્યાયાન્તકર ભૂમિ છે મલ્લી ણ અરહા પણુવીસ ધણૂઇ મુડ્ઢ ઉચ્ચત્તેણ) મલ્લી અર્હંતના શરીરની ઉચાઇ ૨૫ ધનુષ પ્રમાણ હતી (વણ્ણેણ પિયગુસમે, સમચઉરસસઠાણે, વજ્જરિસભણારાય સઘયણે) શરીરનો રંગ પ્રિયગુના જેવો નીલો હતો સસ્થાન સમચતુરસ્ર હતુ સહનન વજ્ર ઋષભ નારાચ હતુ

(मज्झदेसे सुह सुहेण विहरित्ता जेणेव सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे)

સુખ શાતિપૂર્વક મધ્ય દેશમા વિહાર કરીને મલ્લી પ્રભુ સમેત પર્વત ઉપર પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેઓશ્રીએ સમેત શૈલ શિખર ઉપર પાદપોપગમન સથારો ધારણ કર્યો

उषित्वा=स्थित्वापञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि वर्षशतोनानि यावत्-केवलिपर्यायं पालयित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि सर्वायुष्कं पालयित्वा यः सः ग्रीष्माणां ग्रीष्मकालानां चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मासः द्वितीयः पक्षः चैत्रशुद्धः=चैत्रशुक्लः, तस्य खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्यां भरण्यां नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु चन्द्रयोगमुपागते=चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः। अर्धरात्रकालसमये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्यन्तरिकया परिषदा, पञ्चभिरनगारशतैर्बाह्यया परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पगं पण्णवास सहस्साइं वाससय ऊणाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता पगपण्णवाससहस्साइं सव्वा उयं पालइत्ता) ये मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दीक्षित होकर सौ वर्ष कम ५५, हजार वर्षतक केवलि पर्याय में रहे। इस तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्सणं चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्तेणं अद्धरत्तकालसमयंसि पंचहिं अज्जियासएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए पंचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्षमें अर्थात चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि केदिन जब कि भरणी नक्षत्र का चद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में आभ्यन्तर परिषदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली णं अरहा एगं वाससयं अगारवासमज्झे वसित्ता पुणं पण्णवास सहस्साइं वाससयऊणाइं केवलि परियागं पाउणित्ता पुणपण्णवाससहस्साइं सव्वा उयं पालइत्ता)

મલ્લી અર્હંત પ્રભુ ૧ સો વર્ષ ઘરમા રહ્યા ત્યારપછી દીક્ષા ગ્રહણ કરીને ૫૫ હજાર વર્ષમા એકસો વર્ષ ઓછા એટલે કે ૪૯૦૦ વર્ષનુ આયુષ્ય ભોગવીને કેવલી પર્યાયમા રહ્યા આ રીતે ૫૫ પચાવન હજાર વર્ષનુ આયુષ્ય ભોગવીને

(जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्स णं चेत्त सुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्तेणं अद्धरत्तकालसमयंसि पंचहिं अज्जियासएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए पंचहिं अणगारसयेहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारिय पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

તેમણે ગ્રીષ્મકાળના પહેલા મહિનાના બીજા પખવાડીયામા એટલે કે ચૈત્ર શુકલ પક્ષમા તેમા પણ ચોથના દિવસે જ્યારે ભરણી નક્ષત્રનો ચદ્રની સાથે યોગ થઈ રહ્યો હતો, અર્દ્ધ રાત્રિના વખતે આભ્યતર પરિષદ હતી ત્યારે પાચસો આર્યિકાઓની સાથે ૧ મહિનાનુ પાન રહિત ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીને

प्रत्याख्यानेन, अपानकेन=पानरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः, व्याधारित पाणिः=प्रलम्बितभुजद्वयः, क्षीणे=प्रणष्टे सति वेदनीये आयुष्के नाम्नि गोत्रे च कर्म्मणि-सिद्धः=सिद्धिं गतः । एव परिनिर्वाणमहिमाभणितव्या-यथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्त्याम्, यथा ऋषभस्य निर्वाणमहिमा प्रोक्तस्तथा मल्लिजिनस्यापि बोध्य-इत्यर्थः । नन्दीश्वरे=नन्दीश्वरद्वीपे अष्टाह्निका महिमा=अष्टाहसाध्यमहोत्सव देवैः कृतः । कृत्वा यावत्-प्रतिगताः=यस्यादिशः प्रादुर्भूतास्ता दिश प्रतिगताः=प्रतिनिवृत्ताः ।

हित भक्त प्रत्याख्यान करके दोनो हाथ फैलाये हुए अवशिष्ट वेदनीय आयु नाम एव गोत्र कर्मके नष्ट होते हीं सिद्धि अवस्था प्राप्त करली । (एव परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जबूदीवपण्णत्तीए) जिस प्रकार जबूद्वीप प्रज्ञप्ति में ऋषभ देव के निर्वाण का महिमा प्रकट की गई है उसी तरह इन मल्ली भगवान के निर्वाण की भी महिमा जान नीचाहिये । (नदीसरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया) देवताओं ने मल्ली प्रभु के इस निर्वाण कल्याणक की महिमा नदीश्वर द्वीप में ८ दीन तक लगातार उत्सव कर के मनाई । बादमे वे वहासे जिस दिशासे प्रकट हुए थे उस दिशाको वापिस चले गये अब सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी से कहते हैं (एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महवीर ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके है इस आठवें ज्ञाताध्य

ण ने हाथो ફેલાવતા અવશિષ્ટ વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર કર્મનો નાશ થતા જ સિદ્ધિ અવસ્થા મેળવી લીધી

(एव परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जबूद्दीवपण्णत्तीए)

જે પ્રમાણે જબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમા ઋષભદેવનો મહિમા આલેખવામા આવ્યો છે તે પ્રમાણે જ મલ્લી ભગવાનના નિર્વાણનો મહિમા પણ જાણવો જોઇએ (નદીસરે અટ્ઠાહિયા મહિમા જાવ પડિગયા) મલ્લી પ્રભુના આ નિર્વાણના કલ્યાણ કારક મહિનાનો ઉત્સવ દેવતાઓએ નદીશ્વર દ્વીપમા સતત આઠ દિવસો સુધી ઉજવ્યો ત્યારપછી તેઓ ત્યાથી જે દિશામાથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ પાછા જતા રહ્યા હવે સુધર્માસ્વામી જબૂસ્વામીને કહે છે—

(एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હે જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ સિદ્ધિસ્થાનના અધિપતિ

उषित्वा=स्थित्वापञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि वर्षशतोनानि यावत्-केवलिपर्यायं पालयित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि सर्वायुष्कं पालयित्वा यः सः ग्रीष्माणां ग्रीष्मकालानां चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मासः, द्वितीयः पक्ष चैत्रशुद्ध =चैत्रशुक्लः, तस्य खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्यां भरण्यां नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु चन्द्रयोगमुपागते=चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः। अर्धरात्रकालसमये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्यन्तरिकया परिषदा, पञ्चभिरनगारशतैर्बाह्यया परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पग पण्ण वास सहस्साइ वाससय ऊणाइ केवलिपरियाग पाउणित्ता पगपण्णवाससहस्साइ सव्वा उय पालइत्ता) मे मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दीक्षित होकर सौ वर्ष कम ५५, हजार वर्षतक केवलि पर्याय में रहे। इस तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्सण चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अब्भितरियाए परिसाए पचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएण भत्तेण अपाणएण चग्धारिय पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे) गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्षमें अर्थात चैत्र शुक्ल पक्ष मे उस मे भी चतुर्थी तिथि केदिन जब कि भरणी नक्षत्र का चद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में आभ्यन्तर परिषदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अरहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णवास सहस्साइ वाससयऊणाइ केवलि परियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा उय पालइत्ता)

મલ્લી અર્હંત પ્રભુ ૧ સો વર્ષ ઘરમા રહ્યા ત્યારપછી દીક્ષા ગ્રહણ કરીને ૫૫ હજાર વર્ષમા એકસો વર્ષ ઓછા એટલે કે ૪૯૦૦ વર્ષનુ આયુષ્ય ભોગવીને કેવલી પર્યાયમા રહ્યા આ રીતે ૫૫ પચાવન હજાર વર્ષનુ આયુષ્ય ભોગવીને

(जे से गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्स ण चेत्त सुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्ते णं अद्धरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अब्भितरियाए परिसाए पचहिं अणगारसयेहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएण भत्तेण अपाणएण चग्धारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

તેમણે ગ્રીષ્મકાળના પહેલા મહિનાના બીજા પખવાડીયામા એટલે કે ચૈત્ર શુકલ પક્ષમા તેમા પણ ચોથના દિવસે જ્યારે ભરણી નક્ષત્રનો ચદ્રની સાથે યોગ થઈ રહ્યો હતો, અર્દ્ધ રાત્રિના વખતે આભ્યતર પરિષદ હતી ત્યારે પાચસો આર્યિકાઓની સાથે ૧ મહિનાનુ પાન રહિત ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીને

प्रत्याख्यानेन, अपानकेन=पानरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः, व्याधारित पाणिः=प्रलम्बितभुजद्वयः, क्षीणे=प्रणष्टे सति वेदनीये आयुष्के नाम्नि गोत्रे च कर्म्मणि-सिद्धः=सिद्धिं गतः । एव परिनिर्वाणमहिमाभणितव्या-यथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्त्याम्, यथा ऋषभस्य निर्वाणमहिमा प्रोक्तस्तया मल्लिजिनस्यापि बोध्य-इत्यर्थः । नन्दीश्वरे=नन्दीश्वरद्वीपे अष्टाह्निका महिमा=अष्टाहसाध्यमहोत्सव देवै. कृतः । कृत्वा यावत्-प्रतिगताः=यस्यादिगः प्रादुर्भूतास्ता दिश प्रतिगताः= प्रतिनिवृत्ताः ।

हित भक्त प्रत्याख्यान करके दोनो हाथ फैलाये हुए अवशिष्ट वेदनीय आयु नाम एव गोत्र कर्मके नष्ट होते हीं सिद्धि अवस्था प्राप्त करली । (एव परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जम्बूदीवपण्णत्तीए) जिस प्रकार जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में ऋषभ देव के निर्वाण का महिमा प्रकट की गई है उसी तरह इन मल्ली भगवान के निर्वाण की भी महिमा जान नीचाहिये । (नदीसरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया) देवताओं ने मल्ली प्रभु के इस निर्वाण कल्याणक की महिमा नदीश्वर द्वीप में ८ दीन तक लगातार उत्सव कर के मनाई । बादमे वे वहासे जिस दिशासे प्रकट हुए थे उस दिशाको वापिस चले गये अब सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी से कहते हैं (एव खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेण अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके हैं इस आठवें ज्ञाताध्य

ખને હાથો ફેલાવતા અવશિષ્ટ વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર કર્મનો નાશ થતા જ સિદ્ધિ અવસ્થા મેળવી લીધી

(एव परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जम्बूदीवपण्णत्तीए)

જે પ્રમાણે જબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમા ઋષભદેવનો મહિમા આલેખવામા આવ્યો છે તે પ્રમાણે જ મલ્લી ભગવાનના નિર્વાણનો મહિમા પણ જાણવો જોઇએ (नदीसरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया) મલ્લી પ્રભુના આ નિર્વાણના કલ્યાણ કારક મહિમાનો ઉત્સવ દેવતાઓએ નદીશ્વર દ્વીપમા સતત આઠ દિવસો સુધી ઉજવ્યો ત્યારપછી તેઓ જ્યાથી જે દિશામાથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ પાછા જતા રહ્યા હવે સુધર્માસ્વામી જબૂસ્વામીને કહે છે—

(एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ સિદ્ધિસ્થાનના અધિપતિ

उषित्वा=स्थित्वापञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि वर्षशतोनानि यावत्-केवलिपर्यायं पालयित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि सर्वायुष्कं पालयित्वा यः सः ग्रीष्माणां ग्रीष्मकालानां चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मासः द्वितीयः. पक्ष चैत्रशुद्ध =चैत्रशुक्लः, तस्य खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्यां भरण्यां नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु चन्द्रयोगमुपागते=चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः। अर्धरात्रकालसमये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्यन्तरिकया परिषदा, पञ्चभिरनगारशतैर्बाह्यया परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त

रहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पग पण्ण वास सहस्साइं वाससय ऊणाइं केवलिपरियाग पाउणित्ता पगपण्णवाससहस्साइं सव्वा उय पालइत्ता) ये मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दीक्षित होकर सौ वर्ष कम ५५, हजार वर्षतक केवलि पर्याय में रहे। इस तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्सण चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अब्भितरियाए परिसाए पचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएण भत्तेण अपाणएण वग्घारिय पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्षमें अर्थात चैत्र शुक्ल पक्ष मे उस मे भी चतुर्थी तिथि केदिन जब कि भरणी नक्षत्र का चद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में आभ्यन्तर परिषदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अरहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णास सहस्साइं वाससयऊणाइं केवलि परियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइं सव्वा उय पालइत्ता)

મલ્લી અર્હંત પ્રભુ ૧ સો વર્ષ ઘરમા રહ્યા ત્યારપછી દીક્ષા ગ્રહણ કરીને પપ હજાર વર્ષમા એકસો વર્ષ ઓછા એટલે કે ૪૯૦૦ વર્ષનુ આયુષ્ય ભોગવીને કેવલી પર્યાયમા રહ્યા આ રીતે ૫૫ પચાવન હજાર વર્ષનુ આયુષ્ય ભોગવીને

(जे से गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्स ण चेत्त सुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्ते णं अद्धरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अब्भितरियाए परिसाए पचहिं अणगारसयेहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएण भत्तेण अपाणएण वग्घारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

તેમણે ગ્રીષ્મકાળના પહેલા મહિનાના બીજા પખવાડીયામા એટલે કે ચૈત્ર શુકલ પક્ષમા તેમા પણ ચોથના દિવસે જ્યારે ભરણી નક્ષત્રનો ચદ્રની સાથે યોગ થઈ રહ્યો હતો, અર્દ્ધ રાત્રિના વખતે આભ્યતર પરિષદ હતી ત્યારે પાંચસો આર્યિકાઓની સાથે ૧ મહિનાનુ

प्रत्याख्यानेन, अपानकेन=पानरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः, व्याधारित-पाणिः=प्रलम्बितभुजद्वयः, क्षीणे=प्रणष्टे सति वेदनीये आयुष्के नाम्नि गोत्रे च कर्म्मणि-सिद्धः=सिद्धिं गतः । एव परिनिर्वाणमहिमाभणितव्या-यथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्त्याम्, यथा ऋषभस्य निर्वाणमहिमा प्रोक्तस्तथा मल्लिजिनस्यापि बोध्य-इत्यर्थः । नन्दीश्वरे=नन्दीश्वरद्वीपे अष्टाह्निका महिमा=अष्टाहसाध्यमहोत्सव देवैः कृतः । कृत्वा यावत्-प्रतिगताः=यस्यादिशः प्रादुर्भूतास्ता दिश प्रतिगताः=प्रतिनिवृत्ताः ।

रित भक्त प्रत्याख्यान करके दोनो हाथ फैलाये हुए अवशिष्ट वेदनीय आयु नाम एव गोत्र कर्मके नष्ट होते हीं सिद्धि अवस्था प्राप्त करली ! (एव परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जम्बूदीवपण्णत्तीए) जिस प्रकार जबूद्वीप प्रज्ञप्ति में ऋषभ देव के निर्वाण का महिमा प्रकट की गई है उसी तरह इन मल्ली भगवान के निर्वाण की भी महिमा जान नीचाहिये । (नदीसरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया) देवताओं ने मल्ली प्रभु के इस निर्वाण कल्याणक की महिमा नदीश्वर द्वीप में ८ दीन तक लगातार उत्सव कर के मनाई । बादमे वे वहासे जिस दिशासे प्रकट हुए थे उस दिशाको वापिस चले गये अब सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी से कहते हैं (एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महवीर ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके है इस आठवें ज्ञाताध्य

એ ને હાથો ફેલાવતા અવશિષ્ટ વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર કર્મનો નાશ થતા જ સિદ્ધિ અવસ્થા મેળવી લીધી

(एव परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जम्बूद्दीवपण्णत्तीए)

જે પ્રમાણે જબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમા ઋષભદેવનો મહિમા આલેખવામા આવ્યો છે તે પ્રમાણે જ મલ્લી ભગવાનના નિર્વાણનો મહિમા પણ જાણવો જોઇએ (नदीसरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया) મલ્લી પ્રભુના આ નિર્વાણના કલ્યાણ કારક મહિમાનો ઉત્સવ દેવતાઓએ નદીશ્વર દ્વીપમા સતત આઠ દિવસો સુધી ઉજવ્યો ત્યારપછી તેઓ ત્યાથી જે દિશામાથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ પાછા જતા રહ્યા હવે સુધર્માસ્વામી જબૂસ્વામીને કહે છે—

(एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હે જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ સિદ્ધિસ્થાનના અધિપતિ

उषित्वा=स्थित्वापञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि वर्षशतोनानि यावत्-केवलिपर्यायं पालयित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि सर्वायुष्कं पालयित्वा यः स. ग्रीष्माणां ग्रीष्मकालानां चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मास द्वितीय· पक्ष चैत्रशुद्ध =चैत्रशुक्लः, तस्य खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्यां भरण्या नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु चन्द्रयोगमुपागते=चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः। अर्धरात्रकालसमये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्यन्तरिकया परिषदा, पञ्चभिरनगारशतैर्बाह्यया परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पग पण्ण वास सहस्साइ वाससय ऊणाइ केवलिपरियाग पाउणित्ता पगपण्णवाससहस्साइ सव्वा उय पालइत्ता) मे मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दीक्षित होकर सौ वर्ष कम ५५ हजार वर्षतक केवलि पर्याय में रहे। इस तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्स ण चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए पचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएण भत्तेण अपाणएण चग्धारिय पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्षमें अर्थात चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि केदिन जब कि भरणी नक्षत्र का चद्रमा के साथ योग हो रहा था – अर्द्ध रात्रि के समय में आभ्यन्तर परिषदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अरहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णवास सहस्साइ वाससयऊणाइ केवलि परियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा उय पालइत्ता)

મલ્લી અર્હંત પ્રભુ ૧ સો વર્ષ ઘરમા રહ્યા ત્ય રપછી દીક્ષા ગ્રહણ કરીને ૫૫ હજાર વર્ષમા એકસો વર્ષ ઓછા એટલે કે ૪૯૦૦ વર્ષનુ આયુષ્ય ભોગવીને કેવલી પર્યાયમા રહ્યા આ રીતે ૫૫ પચાવન હજાર વર્ષનુ આયુષ્ય ભોગવીને

(जे से गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्स ण चेत्त सुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए पचहिं ,अणगारसयेहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएण भत्तेण अपाणएण चग्धारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

તેમણે ગ્રીષ્મકાળના પહેલા મહિનાના બીજા પખવાડીયામા એટલે કે ચૈત્ર શુકલ પક્ષમા તેમા પણ ચોથના દિવસે જ્યારે ભરણી નક્ષત્રનો ચદ્રની સાથે યોગ થઈ રહ્યો હતો, અર્દ્ધ રાત્રિના વખતે આભ્યતર પરિષદ હતી ત્યારે પાચસો આર્યિકાઓની સાથે ૧ મહિનાનુ પાન રહિત ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરીને

॥ अथ नवमम् अध्ययनम् ॥

गतमष्टमम्ध्ययन, साम्मत नवम मारभ्यते, अस्य पूर्वेण सहाय सम्बन्ध — पूर्वस्मिन् मायावतोऽनर्थः प्रोक्तः, इह च भोगेष्वविरतिमतोऽनर्थो विरतिमतश्चार्थः प्रोच्यते, इति सम्बन्धेनायातस्यास्येदमादिसूत्रम्—'जइण भते' इत्यादि ।

मूलम्—जइण भते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स णाय-ज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?, एव खलु जबू ! तेणं कालेण२ चंपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए तत्थणं माकदी नाम सत्थवाहे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स ण भद्दा

—नववा अध्ययन प्रारभ—

अष्टम अध्ययन समाप्त हुआ। अब नौवां अध्ययन प्रारभ होता है इस अध्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस तरहसे सबध है पूर्व अध्ययन में कहा गया है कि जो साधु मायावी होते है वे अनर्थ के पात्र होते हैं अर्थात् यदि उसके महाव्रतों में थोड़ा सा भी माया शल्य है तो वे उसे यथावत् फल जनक नही होते हैं—अब सूत्रकार इस अध्ययन द्वारा यह प्रकट करेंगे कि जो साधु भोगों से विरक्त नही होता है वह अनर्थका स्थान होता है और जो विरक्त होता है वह अपने प्रयोजनरूप अर्थको प्राप्त कर लेता है। इसी सबन्धको लेकर प्रारभ हुए इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है (जइण भते! समणेण जाव सत्तेण) इत्यादि ।

॥ નવમુ અધ્યયન પ્રારભ ॥

આઠમુ અધ્યયન પુરૂ થયુ છે નવમુ અધ્યયન હવે આરભ થાય છે આઠમા અધ્યયનની સાથે આ અધ્યયનનો સબધ આ પ્રમાણે છે કે આઠમા અધ્યયનમા એ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે કે જે સાધુઓ માયાવી હોય છે તેઓ અનર્થના પાત્ર હોય છે એટલે કે જો તેના મહાવ્રતોમા થોડુ પણ માયાશલ્ય (માયા રૂપ કાટો) હોય ત્યારે તેઓ તેમા યોગ્ય ફળના અધિકારી થતા નથી હવે સૂત્રકાર આ અધ્યયનમા એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છે છે કે જે સાધુ ભોગોથી વિરક્ત થતો નથી તે અનર્થનુ સ્થાન થઈ પડે છે અને જે વિરક્ત હોય છે તે પોતાના પ્રયોજન રૂપ અર્થને મેળવી લે છે આ વિષયને લઇને પ્રારભ થતા નવમા અધ્યયનનુ આ પહેલુ સૂત્ર છે—

सुधर्मास्वामी प्राह-' एवं खलु जम्बू ' इत्यादि । एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण-यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन, अष्टमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थ उक्तरूपो भावः प्रज्ञप्त कथितः इति ब्रवीमि अस्य व्याख्यान पूर्ववत् ॥ सू० ४० ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां अष्टममध्ययन सपूर्णम् ॥ ८ ॥

ध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप अर्थ प्ररूपित किया है । अतः जैसा प्रभुने अपने मुखारविन्द से कहा और जैसा उनसे मैंने सुना- वैसा ही यह तुमसें कहा है । सू० " ४० "

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासी लालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का आठवा अध्ययन समाप्त ॥ ८ ॥

થઇ ગયેલા છે-આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર લખ્યા મુજબનો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે એટલા માટે પ્રભુએ પોતાના મુખારવિંદથી જે પ્રમાણે મને કહ્યો અને મે સાભળ્યો તે પ્રમાણે જ તમને મે કહ્યો છે ॥ સૂત્ર ૪૦ ॥

આઠમુ અધ્યયન સમાપ્ત ।

तएण ते मागंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो सचाएंति बहूहिं आघवणाहि पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था। तएण तं मागंदियदारगा अम्मापिऊहि अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्दं बहूइ जोअणसयाइ ओगाढा ॥ सू० १ ॥

टीका—श्री जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन—अष्टमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः, नवमस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्त ? श्री सुधर्मास्वामी माह—एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पानामनगरी। पूर्णभद्रं चैत्यम्। तत्र खलु माकन्दीनाम सार्थवाह परिवसति 'अड्ढे' आढ्य = प्रभूतधनधान्यसपन्न, 'जाव अपरिभूए' यावदपरिभूत केनाऽप्यपरिभवनीय—सर्वजनमान्य इत्यर्थ। तस्य खलु भद्रानाम भार्या। तस्या, ख भार्याया आत्मजौ द्वौ सार्थवाहदारकौ

टीकार्थ—जम्बूस्वामी श्री सुधर्मास्वामीसे पूछते हैं कि (भते) भदन्त ! (जइण समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्सण केअट्ठे पण्णत्ते) यदि श्रमण भगवान् महवीरने कि जो सिद्धि स्थान के भोक्ता बन चुके है अष्टम ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है तो हे भदत ! उन्ही श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके है नौवें ज्ञाताध्ययन का क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? (एव खलु जबू ! तेण कालेण २ चपा नम नयरी, पुण्णभद्दे चेइए, तत्थण माकदी नाम सत्थवाहे

ટીકાર્થ—' जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण ' इत्यादि ॥

જબૂ સ્વામી સુધર્માસ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે (भते !) હે ભદન્ત !

(जइण समणे ण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्स ण भते ! नायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?)

જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેઓ સિદ્ધસ્થાનના ઉપભોક્તા થઈ ચૂકયા છે-આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ ઉપર કહ્યા મુજબ નિરુપિત કર્યો છે તો નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ તેઓએ કેવી રીતે પ્રગટ કર્યો છે ?

(एव खलु जबू ! तेण कालेण २ चपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए, तत्थण्

नामं भारिया, तीसेणं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था, तं जहा–जिणपालिए य जिणरक्खिए य, ततेणं तेसिं मागंदियदारगाण अन्नया कयाई एगयओ साहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेण एक्कारसवारा ओगाढा सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया त सेयं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! दुवालसमपि लवणसमुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तए–त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी–एव खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारस वारा तं चेव जाव नियगं घरं हव्वमागया, तं इच्छामो णं अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसम लवणसमुद्दं पोयवहणेण ओगाहित्तए । तएण ते मागंदियदारए अम्मापियरो एव वयासी–इमे य ते जाया ! अज्जग जाव परिभाएत्तए त अणुहोह ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएण निरालबणेण लवणसमुद्दोत्तारेणं ?, एव खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सावसग्गा यावि भवइ, तं माणं तुब्भे दुवे पुत्ता ! दुवालसमपि लवण० जाव ओगाहेह, माहु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ, तएणं मागंदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी–एव खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारसवारा लवण जाव ओगाहित्तए,

'ओगाढा' अवगाहितवन्तौ=उत्तीर्णौ, सर्वत्रापि च खलु सर्वयात्रासु आवां 'लद्धट्ठा' लब्धार्थौ=प्राप्तप्रचुरधनौ, 'कयकज्जा' कृतकार्यौ=साधितधनोपार्जनादिसकलकार्यौ, 'अणहसमग्गा' अनघसमग्रौ = तस्करादिहेतुकविघातरहितसर्वस्वौ सतौ पुनरपि निजगृह हव्यमागतौ=सर्वथा सकुशल समायातौ, तत्=तस्मात् 'सेय' श्रेयः=उचित खलु आवयोः देवानुप्रियः ? 'दुवालसमपि' द्वादशमपि वार लवणसमुद्र पोतवहनेनावगाहितुम्, 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति विचार्याऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृणुतः = स्वीकुरुतः प्रतिश्रुत्य यत्रैव अम्बापितरौ भद्रा माकन्दी च स्तः, तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्यैवमवादिष्टाम्-एव खलु आवां

लवणसमुद्द पोयवहणेण एक्कारसवारा ओगाढा सव्वत्थ वि य ण लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघर हव्वमागया) જહાજ દ્વારા હમ લોગ લવણ સમુદ્ર સે હોકર ૧૧ બાર પરદેશ જા ચુકે હૈ-જબ ૨ હમ લોગ બાહર પરદેશ ગયે-તબ ૨ હમને વહાં પર પ્રચુર ધન કમાયા હૈ ઔર કૃત કાર્ય હોકર વહાં સે નિર્વિઘ્ન રૂપ મેં અપને ઘર પાપિસ સકુશલ આયે હૈ-(त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया । दुवाल समपि लवण समुद्द पोतवहणेण ओगाहित्तए) ઇસલિયે હે દેવાણુપ્રિય અબ ૧૨વી બાર ભી હમ લોગ જહાજ દ્વારા લવણ સમુદ્ર સે હોકર બાહર વ્યપાર કરને કે લિયે ચલે-તો અચ્છા હૈ । (त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति) ઇસ પ્રકાર કા વિચાર કર ઉન દોનો ને એક દૂસરે કી બાત કો માન લિયા (पडिसुणित्ता जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी एव खलु अम्मयाओ एक्कारस वारा त चेव जाव

(एव खलु अम्हे लवणसमुद्द पोयवहणेण एक्कारसवारा ओगाढा सव्वत्थ वि य ण लद्धट्ठा कयकज्जा अणह-समग्गा पुणरवि नियघर हव्वमागया)

વહાણુ વડે અમે લોઠે। ૧૧ વખત દેશાવર ખેડવા નીકળ્યા હતા અને આ પ્રમાણે ત્યાથી પુષ્કળ ધન મેળવ્યુ છે અમે પોતાના વેપાર મા પૂર્ણરૂપે સફળ થઇને સકુશળ પાછા ઘેર ફર્યા છીએ

(तं सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! दुवालसमपि लवणसमुद्द पोतवहणेण ओगाहित्तए)

એટલા માટે હે દેવાણુપ્રિય ! ૧૨મી વખત પણ આપણે વહાણુ મા બેસીને લવણ સમુદ્રમા થઇને વેપાર કરવા દેશાવર માટે નીકળી પડીએ તેા સારૂ થાય.

त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति)

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેઓએ એક મત થઇને આ વાત સ્વીકારી લીધી

(पडिसुणित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी

आस्ताम्, ' त जहा ' तद्यथा=तद्यथा-जिनपालितश्च जिनरक्षितश्च । ततः खलु तयोर्माकन्दिकदारकयोरन्यदा कदाचित् एकत्र सहितानामयमेतद्रूपो मिथः कथा समुल्लापः समुदपद्यत-एवं खलु आवां लवणसमुद्रं पोतवहनेन एकादशवारान्

परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स भद्दा नाम भारिया) इस प्रकार जम्बू स्वामी का प्रश्न सुन कर श्री सुधर्मी स्वामी उन्हे समझाते हैं कि जम्बू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस तरह से है, उस काल और उस समय मे चपा नामकी नगरी थी । उसमें पूर्णभद्र नामका उद्यान था। उस चपा नगरी में माकन्दी नामका सार्थवाह रहता था । यह धनधान्य से खूब पूर्ण था। अत. अपरि भवनीय था। कोई भी मनुष्य इसका तिरस्कार नही कर सकता था-सर्वजन मान्य था । इनकी भार्याका नाम भद्रा था। (तीसेण भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाह दारया होत्था त जहा जिणपा लिएय जिण रक्खिए य) उस भद्रा के दो पुत्र थे.१) जिन पालित (२)जिनरक्षित (तत्तेण तेसिं मागदिय दारगाण अन्नया कयाई एगयओ सहियाणं इमे यारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पजित्था) एक दिन की बात हैं कि जब ये दोनो माकदी सार्थवाह के पुत्र एक जगह मिलकर बैठे हुए थे-तब इनमें परस्पर में इस प्रकार की बातचीत चली-(एव खलु अम्हे

माकदीनाम सत्थवाहे परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्सण भद्दा नाम भरिया)

આ રીતે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રા સુધર્મા સ્વામી તેમને સમજાવતા કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે ચ પા નામે નગરી હતી તેમા પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતુ માકદી નામે એક સાર્થવાહ તે ચ પા નગરીમા રહેતો હતો તે ધનધાન્યથી પૂર્ણરૂપે સમૃદ્ધ હતો, એટલા માટે તે અપરિભવનીય હતો કોઈ પણ માણસની શક્તિ નહોતી કે તેનો તિરસ્કાર કરી શકે તે સર્વજન માન્ય હતો તેમના પત્નીનુ નામ ભદ્રા હતુ

(तीसेण भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाह दारया होत्था त जहा जिणपालिए य जिणरक्खिए य)

તે ભદ્રાને બે પુત્રો હતા-જિનપાલિત અને જિન રક્ષિત

(तत्तेण तेसिं मागदियदारगाण अन्नया कयाई एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पजित्था)

એક દિવસે માકદ્રી સાર્થવાહના બને પુત્રો એક જગ્યાએ બેઠા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાત ચીત કરવા લાગ્યા કે

सङ्ग्रहः, अस्य छाया—''आर्यकप्रार्यकपितृप्रार्यकागत च बहु हिरण्य च सुवर्ण च कास्य च दूष्य' च विपुलधनकनकरत्नमणिमौक्तिकशङ्खशिलाप्रवालरक्तरत्नादिकं सत्सारस्वापतेयम्, अल यावत् आसप्तमात् कुलवश्यात् प्रकाम दातु, प्रकाम भोक्तु, प्रकाम '' इति । ' अज्जयपज्जयपिउपज्जयागए ' आर्यकप्रार्यकपितृप्रार्यकागतम्, आर्यक.-पितामह, प्रार्यकः=पितुः पितामहः, पितृप्रार्यक = पितुः प्रपितामहः, तेभ्यः सकाशाद् आगत=वशपरम्परया प्राप्त, 'बहु' प्रमाणतो बहुल 'हिरण्ण' हिरण्य=रजत, ' सुवण्ण ' सुवर्ण=प्रतीत, ' कस ' कास्य=धातुविशेषः, उपलक्षण ताम्रादीनाम्, ' दूस ' दूष्य=वस्त्र चीनाशुकादिक ' विउल ' विपुल=प्रचुर धणकणग ' धन=गवादि, कणक=धान्य, ' रयण ' रत्नानि = कर्केतनादीनि, ' मणि ' मणयः=चन्द्रकान्ताद्याः, ' मोत्तिय ' मौक्तिकानि प्रतीतानि, ' सखा ' शङ्खा=दक्षिणावर्त्ताः, प्रसिद्धाः, यत्प्रभावाद् विघ्न निवृत्तिः कुशलप्रवृत्तिश्च भवति ' सिलप्पवाल ' शिलाप्रवालानि=विद्रुमाणि, 'रत्तरयण' रक्तरत्नानि=पद्मरागाः, तान्यादौ-यस्य तत्तादृश ' सतसारसावएज्जे ' सत्सारस्वापतेय, सत्=विद्यमान स्वाधीनमित्यर्थः, ' सार '=प्रधान स्वापतेय=द्रव्य, ' अलाहि ' अल=परिपूर्णम् अस्ति कियत्परिमितम् ? इत्याह—' जाव ' इत्यादिना, ' जाव ' यावत्=यावत्परिमितम् '-आसत्तमाओ कुलवसाओ ' आसप्तमात् कुलवश्यात्=अद्यतनादारभ्य भविष्यत्स-

---

निरालवणेण लवणसमुद्दोत्तारेण) इस प्रकार अपने दोनों पुत्रों के वचन सुनकर उनसे माता पिता ने इस प्रकार कहा–हे पुत्रों अपने यहा आर्यक प्रार्यक एव पितृप्रार्यकों से चला आया बहुत सा हिरण्य सुवर्ण, कासा तांवा आदि तथा चीन आदि के वस्त्र, गाय भैंस आदि धन, गेहूँ आदि धान्य, कर्केतनादि रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणिगण, मौक्तिक, दक्षिणावर्त शख, मूगा, पद्मराग आदि उत्तम से उत्तम द्रव्य खूब भरा पडा है–इस पर अपने सिवाय किसी और दूसरे का अधिकार नहीं हैं। वह प्रमाण में इतना अधिक है कि आजकी पीढीसे लेकर

समुदए कि मे सपच्चवाएण निरालवणेण लवणसमुद्दोत्तारेण)

આ પ્રમાણે પોતાના બને પુત્રોની વાત સાભળીને માતપિતાઓએ આ રીતે કહ્યુ કે હે પુત્રો ! આપણે ઘેર આર્યક, પ્રાર્યક અને પિતૃ પ્રાર્યકોથી એકઠુ કરેલુ ખૂબ જ સોનુ, કાસુ, તાણુ વગેરે તેમજ ચીન વગેરે દેશોના વસ્ત્રો, ગાય, ભેસ વગેરે ધન, ઘઉં વગેરે ધાન્ય, કર્કેતન વગેરે રત્નો, ચદ્રકાત વગેરે મણિઓ, મોતીઓ, દક્ષિણાવર્ત શખ, પરવાળા પદ્મરાગ વગેરે ઉત્ત મોત્તમ દ્રવ્ય પુષ્કળ પ્રમાણમા ભર્યું છે આ સપત્તિ ઉપરનુણીત કોઇનો અધિકાર નથી અને તે પ્રમાણમા એટલી બધી છે કે તમારી આજની પેઢીથી

हे अम्बतातौ ! एकादशवारान् तदेव यावत् निजकं गृहं हव्यमागतौ, तद् इच्छावः खलु हे अम्बतातौ ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातौ सन्तौ द्वादशं वारं समुद्रं पोतवहनेन-अवगाहितुं=समुत्तर्तुं समुद्रयात्रां कर्तुमभिलषाव इत्यर्थः ।

ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ एवमवादिष्टाम्-इदं च ते 'जाया' जातौ=हे पुत्रौ ! 'ते' युवयोः' अज्जगं जाव' आर्यकं यावत्, अत्र यावत्पदेन 'अज्जयपज्जय-पिउपज्जयागए य बहु हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूसे य विउलधणकणगरयणमणिमोत्तिय संखसिलप्पवालरत्तरयणमाइए संतसारसावएज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं" इति

नियय घर हव्व मागया-त इच्छामो ण अम्मयाओ तुब्भे हिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसम लवणसमुद्द पोयवहणेण ओगाहित्तए) मान कर फिर वे दोनों जहां माता पिता थे वहां गये वहां जाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे मात तात । हम लोग ११ वार पोतवहन द्वारा लवण समुद्र से होकर बाहर परदेश में व्यापार करने के लिये जा चुके हैं वहां हमने अच्छी तरह से प्रचुर धन कमाया है और बिनो किसी विघ्न बाधा के वहां से वापिस घर सकुशल लौट आये हैं अब हमारा विचार १२ वी बार भी पोतवहन द्वारा लवण समुद्र को पार कर बाहर परदेश मे व्यापार करने के लिये जानेका हो रहा है सो हम आपकी इस विषय में आज्ञा चाहते हैं-(तएणं ते मागदियदारए अम्मापियरो एवं वयासी-इमेयं ते जाया ! अज्जगं जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया । विउले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए, किं ते पवच्चवाएणं

एवं खलु अम्मयाओ एक्कारसवारा तं चेव जाव नियय घरं हव्वमागया तं इच्छामोणं अम्मयाओ तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए)

એક મત થઇને તેઓ બને ત્યાથી માતા પિતાની પાસે ગયા અને તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે માતા પિતા ! અમે અગિયાર વખત વહાણ વડે લવણ સમુદ્રમા થઇને બહાર પરદેશમા વેપાર કરવા ગયા છીએ ત્યા જઇને અમોએ પુષ્કળ પ્રમાણમા ધન મેળવ્યું છે અને ત્યાથી પાછા ક્ષેમ કુશળ નિર્વિઘ્ન રૂપે ઘેર આવ્યા છીએ હમણા અમારો વિચાર વહાણ વડે જ ૧૨ મી વખત લવણ સમુદ્રને પાર કરીને પરદેશમા વેપાર કરવા માટે જવાનો થઈ રહ્યો છે તો એ માટે અમે તમારી આજ્ઞા માંગીએ છીએ

(तएणं ते मागदियदारए अम्मापियरो एवं वयासी इमेयं ते जाया ! अज्जगं जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढि सक्कार

वस्तुवर्जितेन वा ' लवणसमुद्दोत्तारेण ' लवणसमुद्रोत्तारेण = लवणसमुद्रोत्तरणेन ' किं ' किं प्रयोजनम् ? न किमपीत्यर्थः, युवाभ्यामत्रैवस्थातव्य न कुत्रापि गन्तव्यमिति भा० । पुनश्च-एव खलु ' पुत्ता ' हे पुत्रौ ! द्वादशी यात्रा 'सोवसग्गा' सोपसर्गा=सोपद्रवा विघ्नबहुला चापि भवति ' त ' तत्=तस्मात् मा खलु हे पुत्रौ युवा द्वावपि द्वादश ' लवण० जाव ' लवण यावत्-लवणसमुद्र पोतवहनेन अव गाहेथाम् , युवाभ्या द्वादशवार समुद्रावगाहन न कर्त्तव्यमित्यर्थः, माहु ' न खलु युवयोः शरीरस्य ' वावत्ती ' व्यापत्तिः=विनाशः 'भविस्सइ' भविष्यति, 'युवयोः शरीरे काऽपि व्यापत्तिर्न भवतु ' इत्यभिप्रायोऽस्माकमिति भावः ।

ततः खलु माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमवादिष्टाम्-एव खलु आवा हे अम्बतातौ ! एकादशवारान् ' लवण जाव ' लवण

र्य है। कारण इसका यही है कि तुम दोनों यही पर रहो कहीं भी मत जाओं। (एव खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ त माण तुब्भे दुवे पुत्ता दुवालसमपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ) दूसरी बात एक यह भी है कि हे पुत्रों ! बारहवी यात्रा सोपसर्ग-विघ्नबहुल-भी होती है। इसलिये हे पुत्रो ! तुम अब १२ वी बार लवणसमुद्र की पोत वहन से यात्रा मत करो। मत तुम्हारे शरीर पर किसी भी प्रकार की व्यापत्ति आओ। यही हमारी भावना है। (तएण मागदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि एव वयासी) ऐसा सुनकर उन माकदि दोरकों ने अपने उन माता पिता से दुबारा तिबारा भी ऐसा ही कहा-(एव खलु अम्हे अम्मयाओ

ત્યારે તેમાથી રક્ષા મેળવી શકાય તેવા આધારોનો પણ જ્યા સદંતર અભાવ છે એના લવણ સમુદ્રને એળગીને વેપાર કરવાથી શો લાભ છે ? મતલબ એ છે કે તમે બને પુત્રો અહીં જ રહો, કયાએ જાઓ નહિ

(एव खलु पुत्ता ! दुवालसमीजत्ता सोवसग्गा यावि भवइ त माण तुब्भे दुवे पुत्ता! दुवालसमपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ)

અને બીજુ એ કે હે પુત્રો ! ૧૨ મી યાત્રામા વિઘ્નો પણ બહુજ નડતા રહે છે એથી હે પુત્રો ! હવે તમે ૧૨મી વખત પોત વહનથી લવણ સમુદ્રની યાત્રાનો વિચાર માડી વાળો તમારા શરીર ઉપર કોઈ પણ જાતની આફત આવે નહિ અમારી એજ ભાવના છે

(तएण मागदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी)

આ પ્રમાણે સાભળીને માકદી દારકોએ બીજી અને ત્રીજી વાર પણ પોતાના માતા પિતાને એમ જ કહ્યુ કે

सप्तपुरुषपर्यन्त 'पकामं दाउ' प्रकाम दातुम्=दीनदुःखिभ्योऽत्यर्थं वितरीतुम्, एव प्रकाम भोक्तुम्=अत्यर्थं स्वस्योपभोगार्थम्, प्रकामम्=अत्यर्थं 'परिभाएत्तए' परिभाजयितुम्=दायादादिभ्यो विभाग कर्तुम्, पूर्वपरम्पराप्राप्तमिद द्रव्य हे पुत्रौ! युवयोर्भविष्यत्सप्तमपुरुषपर्यन्त प्रकामदानार्थं परिपूर्णमस्तीति भाव। 'तं' तत्—तस्माद् युवाम् 'अणुहोह' अनुभवत 'ताव' तावत्=प्रथम 'जाया' जातौ=हे पुत्रौ! विपुल=प्रचुर माणुस्क=मनुष्यसम्बन्धीयम् 'इड्ढीसक्कारसमुदए' ऋद्धिसत्कारसमुदयम्, ऋद्धया-धनधान्यहिरण्यसुवर्णादिना, सत्कारः=मनकृतबहुमानस्तस्य समुदयः-बाहुल्य तम्, मनुष्यसम्बन्धिन ऋद्धिसत्कारसमुदायस्यानुभव कुरुत युवामिति भावः, अतः 'भे' युवयोः 'सपच्चवाएण' सप्रत्यपायेन=विघ्नबहुलेन 'निरालवणेण' निरालम्बनेन=निष्कारणेन, विघ्नबाधोपस्थितौ त्राणार्थमालम्बनीय

तुम्हारी सात पीढी तक के लोग उसे दीन दु खियों को दान में देवें बैठे २ इच्छानुसार खावें पीवे हिस्सेदारों में उसका विभाग भी कर देवे तौभी वश परम्परा से चला आया हुआ यह द्रव्य कभी समाप्त नहीं हो सकता है-हे पुत्र! तुम्हारी सात पीढी तक के पुरुषों को यह दाना दिक में वितरण करने के लिये पर्याप्त हैं। पितामह-दादा का नाम आर्यक है। पिता के पिता के पिता का नाम प्रार्यक है। पिता के प्रपि तामह का नाम पितृ प्रार्यक हैं यह सब पाठ "परिभाएत्तए" के पहिले का यावत् शब्द से यहा गृहीत हुआ है। इस लिये हे पुत्रों! तुम दोनों पहिले मनुष्य भवसम्बन्धी ऋद्धि सत्कार समुदाय का अनुभव करो। विघ्न बहुल तथा विघ्नबाधा के उपस्थित होने पर त्राण के लिये आलम्बनीयवस्तु से वर्जित ऐसे लवण समुद्र के उत्तरण से क्या तात्प

ભાડીને સાત પેઢી સુધીના લોકો ગરીબ તેમજ દુ ખી માણસોને દાનમા આપે, જેસીને ઈચ્છા મુજબ ખાય, પીવે ભોગવે અને ભાગ પડાવનારાઓમા પણ તેની વહેચણી કરે છતાએ વશપરપરાથી સગ્રહાયેલી સપત્તિ સમાપ્ત થઈ જવાની નથી હે પુત્ર! તમારી સાત સાત પેઢી સુધીના પુત્રોને માટે આ સપત્તિ દાન વગેરેના રૂપમા વિતરણ કરવા માટે પણ પર્યાપ્ત છે પિતામહ એટલે કે દાદાને આર્યક કહે છે. પિતાના પિતા અને તેના પણ પિતાનુ નામ પ્રાર્યક છે પિતાના પ્રપિતામહનુ નામ પિતૃ પ્રાર્યક છે આ પાઠ અહીં "परिभाएत्तए" ના પહેલાના 'यावत्' શબ્દ વડે ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે એટલા માટે હે પુત્રો! તમે બને પહેલા મનુષ્ય ભવના ઋદ્ધિ સત્કાર સમુ દાયનો અનુભવ કરો બહુ વિઘ્નો યુક્ત તેમજ વિઘ્નો બાધાઓ આવી પડે

वस्तुवर्जितेन वा ' लवणसमुद्दोत्तारेण ' लवणसमुद्रोत्तारेण = लवणसमुद्रोत्तरणेन ' किं ' किं प्रयोजनम् ? न किमपीत्यर्थः, युवाभ्यामत्रैवस्थातव्य न कुत्रापि गन्तव्यमिति भावः । पुनश्च-एव खलु ' पुत्ता ' हे पुत्रौ ! द्वादशी यात्रा 'सोवसग्गा' सोपसर्गा=सोपद्रवा विघ्नबहुला चापि भवति ' त ' तत्=तस्मात् मा खलु हे पुत्रौ युवा द्वावपि द्वादश ' लवण० जाव ' लवण यावत्-लवणसमुद्र पोतवहनेन अत्र गाहेथाम् , युवाभ्या द्वादशवार समुद्रावगाहन न कर्त्तव्यमित्यर्थः, माहु ' न खलु युवयोः शरीरस्य ' वावत्ती ' व्यापत्तिः=विनाशः 'भविस्सइ' भविष्यति, 'युवयोः शरीरे काऽपि व्यापत्तिर्न भवतु ' इत्यभिप्रायोऽस्माकमिति भावः ।

ततः खलु माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमवादिष्टाम्-एव खलु अम्बा हे अम्बतातौ ! एकादशवारान् ' लवण जाव ' लवण

र्य है। कारण इसका यही है कि तुम दोनों यही पर रहो कही भी मत जाओं। (एव खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ त माण तुब्भे दुवे पुत्ता दुवालसमपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ) दूसरी बात एक यह भी है कि हे पुत्रों ! बारहवी यात्रा सोपसर्ग-विघ्नबहुल-भी होती है। इसलिये हे पुत्रो ! तुम अब १२ वी बार लवणसमुद्र की पोत वहन से यात्रा मत करो। मत तुम्हारे शरीर पर किसी भी प्रकार की व्यापत्ति आओ। यही हमारी भावना है। (तएण मागदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि एव वयासी) ऐसा सुनकर उन माकदि दोरकों ने अपने उन माता पिता से दुबारा तिबारा भी ऐसा ही कहा-(एव खलु अम्हे अम्मयाओ

ત્યારે તેમાથી રક્ષા મેળવી શકાય તેવા આધારોનો પણ જ્યા સદંતર અભાવ છે એના લવણ સમુદ્રને એળગીને વેપાર કરવાથી શો લાભ છે ? મતલબ એ છે કે તમે બને પુત્રો અહીં જ રહો, કયાએ જાઓ નહિ

(एव खलु पुत्ता ! दुवालसमीजत्ता सोवसग्गा यावि भवइ त माण तुब्भे दुवे पुत्ता! दुवालसमपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भ सरीरस्स वावत्तीं भविस्सइ)

અને બીજુ એ કે હે પુત્રો ! ૧૨ મી યાત્રામા વિઘ્નો પણ બહુજ નડતા રહે છે એથી હે પુત્રો ! હવે તમે ૧૨મી વખત પોત વહુનથી લવણ સમુદ્રની યાત્રાનો વિચાર માડી વાળો તમારા શરીર ઉપર કોઈ પણ જાતની આફત આવે નહિ અમારી એજ ભાવના છે

(तएण मागदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी)

આ પ્રમાણે સાભળીને માકદી દારકોએ બીજી અને ત્રીજી વાર પણ પોતાના માતા પિતાને એમ જ કહ્યુ કે

सप्तपुरुषपर्यन्त 'पकामं दाउ' प्रकाम दातुम्=दीनदुःखिभ्योऽत्यर्थं वितरीतुम्, एव प्रकाम भोक्तुम्=अत्यर्थं स्वस्योपभोगार्थम्, प्रकामम्=अत्यर्थं 'परिभाएत्तए' परिभाजयितु=दायादादिभ्यो विभागं कर्तुम्, पूर्वपरम्पराप्राप्तमिद द्रव्य हे पुत्रौ! युवयोर्भविष्यत्सप्तमपुरुषपर्यन्त प्रकामदानाद्यर्थं परिपूर्णमस्तीति भाव। 'तं' तत्—तस्माद् युवाम् 'अणुहोह' अनुभवत 'ताव' तावत्=प्रथमं 'जाया' जातौ=हे पुत्रौ! विपुल=प्रचुर माणुस्क=मनुष्यसम्बन्धीयम् 'इड्ढीसक्कारसमुदए' ऋद्धिसत्कारसमुदयम्, ऋद्धया-धनधान्यसुवर्णादिना, सत्कारः=जनकृतबहुमानस्तस्य समुदयः-बाहुल्य तम्, मनुष्यसम्बन्धिन ऋद्धिसत्कारसमुदायस्यानुभव कुरुत युवामिति भावः, अतः 'भे' युवयोः 'सपच्चवाएण' सप्रत्यपायेन=विघ्नबहुलेन 'निरालंबणेण' निरालम्बनेन=निष्कारणेन, विघ्नबाधोपस्थितौ त्राणार्थमालम्बनीय-

---

तुम्हारी सात पीढी तक के लोग उसे दीन दुःखियों को दान में देवें बैठे २ इच्छानुसार खावें पीवे हिस्सेदारों में उसका विभाग भी कर देवे तौभी वश परम्परा से चला आया हुआ यह द्रव्य कभी समाप्त नहीं हो सकता है-हे पुत्र! तुम्हारी सात पीढी तक के पुरुषों को यह दान दिक मे वितरण करने के लिये पर्याप्त हैं। पितामह-दादा का नाम आर्यक है। पिता के पिता के पिता का नाम प्रार्यक है। पिता के प्रपितामह का नाम पितृ प्रार्यक हैं यह सब पाठ "परिभाएत्तए" के पहिले का यावत् शब्द से यहा गृहीत हुआ है। इस लिये हे पुत्रों! तुम दोनों पहिले मनुष्य भवसम्बन्धी ऋद्धि सत्कार समुदाय का अनुभव करो। विघ्न बहुल तथा विघ्नबाधा के उपस्थित होने पर त्राण के लिये आलम्बनीयवस्तु से वर्जित ऐसे लवण समुद्र के उत्तरण से क्या तात्प

ભાઈને સાત પેઢી સુધીના લોકો ગરીબ તેમજ દુ ખી માણસોને દાનમા આપે, બેસીને ઈચ્છા મુજબ ખાય, પીવે ભોગવે અને ભાગ પડાવનારાઓમા પણ તેની વહેચણી કરે છતાએ વશપરપરાથી સગ્રહાયેલી સપત્તિ સમાપ્ત થઈ જવાની નથી હે પુત્ર! તમારી સાત સાત પેઢી સુધીના પુરુષોને માટે આ સપત્તિ દાન વગેરેના રૂપમા વિતરણ કરવા માટે પણ પર્યાપ્ત છે પિતામહ એટલે કે દાદાને આર્યક કહે છે. પિતાના પિતા અને તેના પણ પિતાનુ નામ પ્રાર્યક છે પિતાના પ્રપિતામહનુ નામ પિતૃ પ્રાર્યક છે આ પાઠ અહીં "परिभाएत्तए" ના પહેલાના 'यावत्' શબ્દ વડે ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે એટલા માટે હે પુત્રો! તમે બને પહેલા મનુષ્ય ભવના ઋદ્ધિ સત્કાર સમુદાયનો અનુભવ કરો બહુ વિઘ્નો યુક્ત તેમજ વિઘ્નો બાધાઓ આવી પડે

वस्तुवर्जितेन वा ' लवणसमुद्दोत्तारेण ' लवणसमुद्रोत्तारेण = लवणसमुद्रोत्तरणेन ' किं ' किं प्रयोजनम् ? न किमपीत्यर्थः, युवाभ्यामत्रैवस्थातव्य न कुत्रापि गन्तव्यमिति भावः । पुनश्च-एव खलु ' पुत्ता ' हे पुत्रौ ! द्वादशी यात्रा 'सोवसग्गा' सोपसर्गा=सोपद्रवा विघ्नबहुला चापि भवति ' त ' तत्=तस्मात् मा खलु हे पुत्रौ युवा द्वावपि द्वादश ' लवण० जाव ' लवण यावत्-लवणसमुद्र पोतवहनेन अवगाहेथाम् , युवाभ्या द्वादशवार समुद्रावगाहन न कर्त्तव्यमित्यर्थः, माहु ' न खलु युवयोः शरीरस्य ' वावत्ती ' व्यापत्तिः=विनाशः 'भविस्सइ' भविष्यति, 'युवयोः शरीरे क्वाऽपि व्यापत्तिर्न भवतु ' इत्यभिप्रायोऽस्माकमिति भावः ।

ततः खलु माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमवादिष्टाम्-एव खलु अम्बा हे अम्बतातौ ! एकादशवारान् ' लवण जाव ' लवण

र्य है। कारण इसका यही है कि तुम दोनों यही पर रहो कही भी मत जाओं। (एव खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ त माण तुब्भे दुवे पुत्ता दुवालसमपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ) दूसरी बात एक यह भी है कि हे पुत्रों ! बारहवी यात्रा सोपसर्ग-विघ्नबहुल-भी होती है। इसलिये हे पुत्रो ! तुम अब १२ वी बार लवणसमुद्र की पोत वहन से यात्रा मत करो। मत तुम्हारे शरीर पर किसी भी प्रकार की व्यापत्ति आओ। यही हमारी भावना है। (तएण मागदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि एव वयासी) ऐसा सुनकर उन माकदि दारकों ने अपने उन माता पिता से दुबारा तिबारा भी ऐसा ही कहा-(एव खलु अम्हे अम्मयाओ

ત્યારે તેમાથી રહ્યા મેળવી શકાય તેવા આધારોનો પણ જ્યા સદ્ધતર અભાવ છે એના લવણ સમુદ્રને એળગીને વેપાર કરવાથી શો લાભ છે ? મતલબ એ છે કે તમે બને પુત્રો અહીં જ રહો, કયાએ જાઓ નહિ

(एव खलु पुत्ता ! दुवालसमीजत्ता सोवसग्गा यावि भवइ त माण तुब्भे दुवे पुत्ता! दुवालसमपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ)

અને બીજુ એ કે હે પુત્રો ! ૧૨ મી યાત્રામા વિઘ્નો પણ બહુજ નડતા રહે છે એથી હે પુત્રો ! હવે તમે ૧૨મી વખત પોત વહનથી લવણ સમુદ્રની યાત્રાનો વિચાર માડી વાળો તમારા શરીર ઉપર કોઈ પણ જાતની આફત આવે નહિ અમારી એજ ભાવના છે

(तएण मागदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी)

આ પ્રમાણે સાભળીને માકદી દારકોએ બીજી અને ત્રીજી વાર પણ પોતાના માતા પિતાને એમ જ કહ્યુ કે

यावत्-लवणसमुद्रमवगाहितवन्तौ यावत् तच्छ्रेयः खलु आवयोर्द्वादशं वारं पोत वहनेन लवणसमुद्रमवगाहितुमिति ॥

ततः खलु तौ माकन्दियदारकौ अम्मापितरौ यदा नो शक्नुतः बहीभिः 'आघवणाहिं' आख्यापनाभिः=सामान्योक्तिभि, 'पण्णवणाहि य' प्रज्ञापनाभिः=विशेषोक्तिभिश्च 'आघवित्तए वा' आख्यापयितु सामान्यत प्रतिबोधयितु वा 'पण्णवित्तए वा' प्रज्ञापयितु=विशेषतः प्रतिबोधयितुं वा लवणसमुद्रोत्तरणतो निवर्त्तयितुं न शक्नुत इत्यर्थ', तदा 'अकामाचेव' अकामैव=इच्छारहितैव सती एतम्=उक्तमर्थम् 'अणुजाणित्था' अनुजानीत=स्वीकृतवन्तौ। ततः खलु

एक्कारसवारा लघण जाव ओगाहित्तए) कि हे मात तात! जब हम लोगों ने लवण समुद्र की ११ बार पोत वहन द्वारा यात्रा करली है-तो अब १२ वीं बार उसकी यात्रा करने मे क्या भय है। इसलिये १२ वीं बार उसकी पोत वहन द्वारा यात्रा करना भी हम लोगों के लिये श्रेय स्कर ही है। आप हमारी कोइ चिन्ता न करे। (तएण ते मागदीदारए अम्मापियरो जाहे नो सचाए ति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहिं य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था) इस तरह जब अपने दोनों पुत्रो को वे माता पिता अनेक विध आख्यापनाओं से, सामान्य कथन से, प्रज्ञापनाओं से-विशेष कथन से समझाने बुझाने में समर्थ नही हो सके लवण समुद्र की यात्राके उनके विचार को नही बदल सकें तब उन्हों ने उन्हें इच्छा नही होने पर भी इस अर्थ की-लवण समुद्र की पोत वहन द्वारा यात्रा करने की स्वीकृती

(एव खलु अम्हे अम्मयाओ! एक्कारसवारालवण जाव ओगाहित्तए)

હે માતા પિતા! અમે ૧૧ વખત લવણ સમુદ્રની યાત્રા કરી આવ્યા છીએ તો ૧૨ મી વખત યાત્રા કરવામા ભય શાનો હોય? ૧૨ મી વખતની વહાણ વડે યાત્રા અમારા માટે તો મગળકારી જ થશે અમારી તમે કોઈ પણ જાતની ચિંતા કરતા નહિ

(तएण ते मगदीदारए अम्मापियरो जाहे नो सचाएंति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था)

આ પ્રમાણે પોતાના બને પુત્રોને તેઓ અનેકવિધ આખ્યાપનોથી સામાન્ય કથનથી-અને પ્રજ્ઞાપનાઓથી-વિશેષ કથનથી સમજાવવામા અસમર્થ થઈ ગયા, લવ[illegible]ની યાત્રા કરવાના તેમના નિશ્ચયને તેઓ ફેરવી શક્યા નહિ ત્યારે [illegible] ઈચ્છા ન હોવા છતા વહાણ વડે લવણસમુદ્રની યાત્રા કરવા [illegible]ધી

तौ माकन्दिकदारकौ अम्बापितृभ्यामभ्यनुज्ञातौ सन्तौ एकद्वित्रिचतुरादिसङ्ख्याक्रमेण गणयित्वा दीयमान क्रयाणकम्=नालिकेर पूगीफलादिकम्, 'मेज्ज च' मेय च=यत् पल-सेटिका-हस्तादिना मान कृत्वा दीयमान वस्तुजात-दुग्धघृत-तैलवस्त्रादिकम्, 'पारिच्छेज्ज' परिच्छेद्य च=प्रत्यक्षतो निकषादि परीक्षया यद्दीयमान तत्-सुवर्णमणिमुक्तादिक च, एतत्सर्वं गरिमधरिमादिक वस्तुजात गृहीत्वा 'जहा अरहन्नगस्स' यथा अरहन्नकस्य यथा=येन प्रकारेण अरहन्नकस्य=अस्यैवाष्टमाध्ययने वर्णितस्य श्रावकस्य वर्णन तथैवात्र विज्ञेय, 'जाव' यावत् लवणस

देदी। (तएण ते मागदिय दारगा अम्मा पिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिम च धरिम च मेज्ज च पारिच्छेज्ज च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्द बहूइ जोयणसयाइ ओगाढा) इस तरह माता पिता से आज्ञापित हुए वे दोनों माकदी सार्थवाह के पुत्र, गणिम, धरिम, मेय और परिच्छेद्य रूप क्रयाणक वस्तुओं को पोतमें भरकर अरहन्नक सार्थवाह की तरह अनेक योजनों तक लवण समुद्रमे निकल गये। एक दो तीन चार इस रूप से गिनकर जो वस्तु दी जाती है वह गणिम है जैसे नारिकेल, सुपारी आदि। जो तौल कर दी जाय वह धरिम है और नापकर दी जाती है वह मेय-जैसे दुग्ध, घृत, तैल, वस्त्र, आदि। जो प्रत्यक्षसे परीक्षित कर या कसौटी आदि पर कस कर दी जाती है वह परिच्छेद्य है-जैसे सुवर्ण मणि मुक्ता आदि। अरहन्नक श्रावकका वर्णन इसी ज्ञाता अयनके अष्टम अध्ययनमें किया है ॥सू १॥

(तएण ते मागदियदारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिम च धरिम च मेज्ज च पारिच्छेज्ज च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्द बहुइ जोयणसयाइ ओगाढा)

આ રીતે બને માકદી સાર્થવાહના પુત્રો માતાપિતાની આજ્ઞા મેળવીને ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ વેચાણ માટેની વસ્તુઓને વહાણમા ભરીને અરહન્નક સાર્થવાહની જેમ ઘણા યોજનો સુધી લવણ સમુદ્રમા પહોચી ગયા ગણત્રી કરીને જે વસ્તુઓ આપવામા આવે છે તે 'ગણિમ' છે જેમ કે નાળિયેર, સોપારી વગેરે જે તોલ કરીને અને માપ કરીને આપવામા આવે છે તે 'ધરિમ' છે, માપ કરીને અપાય તે મેય છે-જેમ કે દૂધ, ઘી, તેલ, અને વસ્ત્ર વગેરે જે પ્રત્યક્ષ રૂપે પરીક્ષા કરીને કસોટી વગેરે ઉપર કસીને અપાય છે તે પરિચ્છેદ્ય છે-જેમ કે સોનુ, મણિ, મોતી, વગેરે અરહન્નક શ્રાવકનુ વર્ણન જ્ઞાતાધ્યયનનાજ આઠમા અધ્યયનમા કરવામા આવ્યુ છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

यावत्-लवणसमुद्रमवगाहितवन्तौ यावत् तच्छ्रेयः खलु आवयोर्द्वादशं वार पोत वहनेन लवणसमुद्रमवगाहितुमिति ॥

ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ यदा नो शक्नुतः बहीभिः 'आघवणाहिं' आख्यापनाभिः=सामान्योक्तिभि, 'पण्णवणाहि य' प्रज्ञाप नाभिः=विशेषोक्तिभिश्च 'आघवित्तए वा' आख्यापयितु सामान्यत प्रतिबोध-यितु वा 'पण्णवित्तए वा' प्रज्ञापयितु=विशेषतः प्रतिबोधयितु वा लवणसमुद्रो त्तरणतो निवर्त्तयितु न शक्नुत इत्यर्थ', तदा 'अकामाचेव' अकामैव=इच्छारहितैव सती एतम्=उक्तमर्थम् 'अणुजाणित्था' अनुजानीत =स्वीकृतवन्तौ। ततः खलु

एक्कारसवारा लवण जाव ओगाहित्तए) कि हे मात तात! जब हम लोगो ने लवण समुद्र की ११ बार पोत वहन द्वारा यात्रा करली है-तो अब १२ वीं बार उसकी यात्रा करने मे क्या भय है। इसलिये १२ वीं बार उसकी पोत वहन द्वारा यात्रा करना भी हम लोगों के लिये श्रेय स्कर ही है। आप हमारी कोइ चिन्ता न करे। (तएण ते मागदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाए ति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था) इस तरह जब अपने दोनों पुत्रो को वे माता पिता अनेक विध आख्यापनाओं से, सामान्य कथन से, प्रज्ञापनाओं से-विशेष कथन से समझाने बुझाने मे समर्थ नही हो सके लवण समुद्र की यात्राके उनके विचार को नही बदल सकें तब उन्हों ने उन्हें इच्छा नही होने पर भी इस अर्थ को-लवण समुद्र की पोत वहन द्वारा यात्रा करने की स्वीकृती

(एव खलु अम्हे अम्मयाओ! एक्कारसवारालवण जाव ओगाहित्तए)

હે માતા પિતા! અમે ૧૧ વખત લવણ સમુદ્રની યાત્રા કરી આવ્યા છીએ તો ૧૨ મી વખત યાત્રા કરવામા ભય શાનો હોય? ૧૨ મી વખતની વહાણ વડે યાત્રા અમારા માટે તો મંગળકારી જ થશે અમારી તમે કોઈ પણ જાતની ચિંતા કરતા નહિ

(तएण ते मगदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था)

આ પ્રમાણે પોતાના બંને પુત્રોને તેઓ અનેકવિધ આખ્યાપનોથી સામાન્ય કથનથી-અને પ્રજ્ઞાપનાઓથી-વિશેષ કથનથી સમજાવવામા અસમર્થ થઈ ગયા, લવણ સમુદ્રની યાત્રા કરવાના તેમના નિશ્ચયને તેઓ ફેરવી શક્યા નહિ ત્યારે તેઓએ પોતાની ઈચ્છા ન હોવા છતા વહાણ વડે લવણસમુદ્રની યાત્રા કરવાની આજ્ઞા આપી દીધી.

तौ माकन्दिकदारकौ अम्बापितृभ्यामभ्यनुज्ञातौ सन्तौ एकद्वित्रिचतुरादिसख्याक्रमेण गणयित्वा दीयमानं क्रयाणक=नालिकेर पूगीफलादिकम्, 'मेज्ज च' मेयं च=यत् पल-सेटिका-हस्तादिना मान कृत्वा दीयमान वस्तुजात-दुग्धघृततैलवस्त्रादिकम्, 'पारिच्छेज्ज' परिच्छेद्य च=प्रत्यक्षतो निकषादि परीक्षया यदीयमान तत्-सुवर्णमणिमुक्तादिक च, एतत्सर्वं गणिमधरिमादिक वस्तुजात गृहीत्वा 'जहा अरहण्णगस्स' यथा अरहन्नकस्य यथा=येन प्रकारेण अरहन्नकस्य=अस्यैवाष्टमाध्ययने वर्णितस्य श्रावकस्य वर्णन तथैवात्र विज्ञेय, 'जाव' यावत् लवणस

देदी। (तएण ते मागदिय दारगा अम्मा पिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिम च धरिम च मेज्ज च पारिच्छेज्ज च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्द बहूइ जोयणसयाइ ओगाढा) इस तरह माता पिता से आज्ञापित हुए वे दोनों माकदी सार्थवाह के पुत्र, गणिम, धरिम, मेय और परिच्छेद्य रूप क्रयाणक वस्तुओ को पोतमें भरकर अरहन्नक सार्थवाह की तरह अनेक योजनों तक लवण समुद्रमे निकल गये। एक दो तीन चार इस रूप से गिनकर जो वस्तु दी जाती है वह गणिम है जैसे नारिकेल, सुपारी आदि। जो तौल कर दी जाय वह धरिम है और नापकर दी जाती है वह मेय-जैसे दुग्ध, घृत, तैल, वस्त्र, आदि। जो प्रत्यक्षसे परीक्षित कर या कसौटी आदि पर कस कर दी जाती हे वह परिच्छेद्य है-जैसे सुवर्ण मणि मुक्ता आदि। अरहन्नक श्रावकका वर्णन इसी ज्ञाता अयनके अष्टम अध्ययनमे किया है ॥सू १॥

(तएण ते मागदियदारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिम च धरिम च मेज्ज च पारिच्छेज्ज च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्द बहुइ जोयणसयाइ ओगाढा)

આ રીતે બને માકદ્દી સાર્થવાહના પુત્રો માતાપિતાની આજ્ઞા મેળવીને ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ વેચાણ માટેની વસ્તુઓને વહાણમા ભરીને અરહન્નક સાર્થવાહની જેમ ઘણા યોજનો સુધી લવણ સમુદ્રમા પહોચી ગયા ગણત્રી કરીને જે વસ્તુઓ આપવામા આવે છે તે 'ગણિમ' છે જેમ કે નારિયેર, સોપારી વગેરે જે તોલ કરીને અને માપ કરીને આપવામા આવે છે તે 'ધરિમ' છે, માપ કરીને અપાય તે મેય છે-જેમ કે દૂધ, ઘી, તેલ, અને વસ્ત્ર વગેરે જે પ્રત્યક્ષ રૂપે પરીક્ષા કરીને કસોટી વગેરે ઉપર કસીને અપાય છે તે પરિચ્છેદ્ય છે-જેમ કે સોનુ, મણિ, મોતી, વગેરે અરહન્નક શ્રાવકનુ

मुद्र वहूनि योजनशतानि 'ओगाढा' अवगाढौ=अवगाहितवन्तौ नौकाया तेन गतवन्तावित्यर्थः ॥ सू० १ ॥

मूलम्—तएणं तेसिं मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समणाणं अणेगाइ उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाति, तं जहा—अकाले गज्जिय जाव थणियसद्दे कालियावाए तत्थ समुट्ठिए, तएणं सा णावा तेणं कालियावाएणं आहुणिज्जमाणी२ सचालिज्जमाणी२ सखोभिज्जमाणी२ सलिलतिक्खवेगेहि आयट्टिज्जमाणी२ कोट्टिमंसि करयलाहए विव तेंदूसए, तत्थेव२ ओवयमाणी य उप्पयमाणी य, उप्पयमाणीविव धरणीयलाओ सिद्धविज्जाविज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणीविव गगणतलाओ भट्ठविज्जाविज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणीविव महा गरुलवेगवित्तासिया भुयगवरकन्नगा, धावमाणीविवमहाजणरसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी, णिगुजमाणीविव गुरुजणदिट्ठा वराहा सुयणकुलकन्नगा, घुम्ममाणीविव वीचोपहारसयतालिया गलियलवणाविव गगणतलाओ रोयमाणिविव सलिलगंठिविप्पइरमाणघोरसुवाएहि णवग्गह उवरमयभत्तुया विलवमाणीविव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी झायमाणाविव कवडच्छोभप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया णिसासन्नाणीविव महाकतारविणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया सोयमाणीविव तत्तचरणखीणपरिभोगा च्चयणकाले देवचरवहूसचुणियकट्ठकूवरा भग्गमेढीमोडियसहस्समाला सूलाइयवकपरिमासा फलहतरतडतडेंतफुट्टतसंधिवियलतलोहकीलिया

तस०वगत्ता आमगमल्लगभूया अकयपुण्णजणमणोरहोविव चिंति-
ज्जमाणगुरुई हाहाकयकरुणधारणावियवाणियगजणकम्मगारवि-
लविया णाणाविहरयणपणियसंपुण्णा वहूहिं पुरिससएहिं रोय-
माणेहि कंद० सोय० तिप्प० विलवमाणेहि एगं महं अतो
जलगय गिरिसिहरमासायइत्ता सभग्गकूवतोरणा मोडियझय
दंडा वलयसयखंडिया करकरकरस्स तत्थेव विद्दव उवगया,
तएणं तीए णावाए भिज्जमाणीए वहवे पुरिसा विपुलपाणियं
भडमायाए अंतोजलंमि णिमज्जावि य होत्था ॥ सू० २ ॥

टीका—ततः खलु तयोर्माकन्दिकदारकयोरनेकानि योजशतानि यावल्लवण समुद्रमवगाहितयोः सतो 'अणेगाइ' अनेकानि=नानाविधानि 'उप्पाइयसयाइ' उत्पातशतानि=उपद्रवशतानि प्रादुर्भूतानि, 'तंजहा' तद्यथा-'अकालेगज्जिए' अकाले गर्जितम्=असमये मेघगर्जनम् १, 'जाव' यावत्-'अकाले विज्जुए' अकाले विद्युत्=असमये विद्युद्विद्योतनम् २, 'अकाले थणियसद्दे' अकाले स्तनि

'तएण तेसिं मागदिय दारगाण' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तेसिं मागदियदारगाण) उन माकदीके पुत्रों को जब कि वे (अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समगाण) लवण समुद्र में अनेक योजनो तक निकल चुके थे (अणेगाइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ) अनेक-सैकडों उत्पात प्रादुर्भूत हुए (त जहा) जैसे (अकाले गज्जिय जाव थणियसद्देकालियावाए तत्थ समुट्ठिए) असमय में मेघ-गर्जना हुई। यावत्-अकाल में बिजली चमकने लगी। विना समय के

(तएण तेसिं मागदियदारगाण' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (तेसिं मागदियदारगाण) માકદી પુત્રોને-કે જ્યારે તેઓ (अणेगाइं जोयणसयाइ ओगाढाण समणाण લવણ સમુદ્રમા ઘણા યોજનો સુધી દૂર પહોચી ગયા હતા (अणेगाइ उप्पाइयसयाइं पउब्भूयाइ) ઘણા સેકડોની સખ્યામા ઉત્પાતો થવા માંડ્યા (त जहा) જેમ કે (अकाले गज्जिय जाव थणियसद्दे कालियावाए तत्थ समुट्ठिए) અકાળે મેઘ ગર્જના થવા માડી, यावत्-અકાળે આકશમા વીજળી ઝબૂકવા માડી વર્ષાકાળ હતો નહિ છતાએ ભય કર ગર્જનાઓ થવા માડી અકાળે જ ભય કર વ વાઝોડાથી વાતાવરણ આક્રાત થઈ ગયુ

तशब्दः=असमये निष्ठुरगर्जनम् ३, ' कालियावाए ' कालिकावात =असमये महावातश्च ४, तत्र समुत्थित' । ततः खलु सा 'णावा' नौका=यस्या माकन्दिकदारकौ स्थितौ, तेन कालिकावातेन 'आहुणिज्जमाणी २' आधूयमाना २ पुनः पुन कम्पमाना ' सचालिज्जमाणी २ ' सञ्चाल्यमाना २=स्थानात्-स्थानान्तर नयनेन मुहुर्मुहुः प्रचाल्यमाना, ' सखोभिज्जमाणी ' सङ्क्षोभ्यमाना=अधोनिपत्यपुनरूर्ध्वमुत्पतनेन पुनः पुनः क्षोभ प्राप्यमाणा 'सलिलतिक्खवेगेहिं ' सलिलतीक्ष्णवेगैः-जलतीव्रतरङ्गवेगैः ' आयट्टिज्जमाणी २ आवर्त्यमाना २ इतस्ततो वार वार चक्राकारेण भ्राम्यमाणा ' कोट्टिमे ' कुट्टिमे=पाषाणबद्धभूमौ ' करयलाहए ' करतलाहतः=हस्ततलास्फालित. ' तेंदूसए विव ' कन्दुकइव ' तत्थेव २ ' तत्रैव-तत्रैव-' ओवयमाणीए ' अवपतन्ती = अध. पतन्ती ' उप्पयमाणीय ' उत्पतन्ती=

ही घनघोर गर्जना होने लगी। विना कालके ही भयकर आँधी आ गइ। (तएण सा णावा तेणकालियावाएण आहुणिज्जमाणी २ सचालिज्जमाणी सचालिज्जमाणी सखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहिं आयट्टिज्जमाणी २ कोट्टिमसि करयलाहए विव तेदूसए तत्थेव२ ओवयमाणीय उप्पयमाणीय) इस कारण वह नौका उस अकालिक भयकर आँधी से वार वार कपित हो उठी वार २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डगमगाती हुई आने जाने लगी। वार वार कभी वह नीचे आती तो कभी ऊपर उठती।

जल के तीक्ष्णवेग से वह कभी २ वार २ चक्राकार से इधर उधर घूमने लग जाती। जिस प्रकार पाषाणबद्ध भूमि ऊपर गेद हाथसे आहत होकर नीचे ऊँचे वार २ उछलती है उसी तरह वह नौका भी कभी

(तएण सा णावा तेण कालियावाएण आहूणिज्जमाणी २ सचालिज्जमाणी सचालिज्जमाणी सखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहिं आयट्टिज्जमाणी कोट्टिमसि करयलाहएविव तेंदूसए तत्थेव २ ओवयमाणीय उप्पयमाणीय)

અસમયના વાવાઝોડાથી વહાણ સતત ડગમગવા લાગ્યુ, વાર વાર એક જગ્યાએથી ખસીને બીજા સ્થાને ડગમગતુ જવા લાગ્યુ સતત રૂપમા કોઈ વખત તે નીચે તો કોઇ વખત ઉપર આ રીતે નીચે ઉપર થવા માડયુ

પાણીના તીવ્ર વેગથી કયારેક તે નાવ વારવાર પેડાની જેમ આમતેમ ફરવા માડી જેમ પથ્થરવાળી નક્કર જમીન ઉપર દડો હાથ વડે ફેકાય અને તે વારવાર નીચે ઉપર થાય તેમજ નાવ પણ નીચે ઉપર ઉછળવા

ऊर्ध्वंगच्छन्तीव, तथा सिद्धविद्याविद्याधरकन्यकेव धरणीतलाद् उप्पयमाणी' उत्पन्ती=ऊर्ध्वमुच्चन्ती, 'भट्ठविज्जा' भ्रष्टविद्या=विस्मृतविद्या विद्याधरकन्यकेव गगनतलाद् 'ओवयमाणी' अवपतन्ती=अधोनिपतन्ती, 'महागरुलवेगवित्तासिया' महागरुडवेगवित्रासिता=महागरुडवेगेन भयाक्रान्ता 'भुयगवरकन्नगाविव' भुजगवरकन्यकेव नागकन्येव 'विपलायमाणी' विपलायन्यी, 'महाजणरसियसद्दवित्तत्था' महाजनरसितशब्दवित्रस्ता=जनसमूहकोलाहलशब्देनभीता 'ठाणभट्ठा' स्थानभ्रष्टा =स्वस्थानच्युता 'आसकिसोरीविव' अश्वकिशोरीव=अश्ववत्सावत् 'धावमाणी' धावमाना, गुरुजणदिट्ठावराहा' गुरुजनदृष्टापराधा=गुरुजनैः=मातापितृ-श्वशुरा-

२ वहीं २ वार २ नीचे ऊँचे उछलने लगती। (सिद्धविज्जाधरणीयलाओ उप्पयमाणी विज्जाहरकन्नगा इव) उस समय वह नौका ऐसी ज्ञात होती थी कि मानो सिद्ध विद्यावाली कोई विद्याधर कन्या ही धरणीतल से निकलकर ऊपरको उठ रही है (भट्ठ विज्जाहरकन्नगागगणतलाओ ओवयमाणी विव) या जिसकी विद्याभ्रष्ट हो चुकी है जिसे विद्या विस्मृत हो गइ है-ऐसी कोइ विद्याधर कन्या मानो आकाश से नीचे उतर रही है-(महागरुलवेगवित्तासिया विपलायमाणी भूयगवरकन्नगाइव) या गरुड़ के भयोत्पादक वेगसे आक्रान्त हुइ मानों कोई नागकन्या ही इधर उधर भाग रही है (महाजणरसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा धावमाणी आस किसोरी विव) या जनसमूह के कोलाहल से भय भीत होकर मानों कोई घोडी की बछेरी ही अपने स्थान से भ्रष्ट होकर इधर उधर दौडती फिर रही है (गुरुजणदिट्ठावराहा णिगुज्जमाणी

(सिद्धविज्जाधरणीयलाओ उप्पयमाणी विज्जाहरकन्नगा इव) તે વખતે મોજા ઓમા ઉછળતી તે નાવ સિદ્ધ વિદ્યાવાળી કોઇ વિદ્યાધર કન્યા પૃથ્વી ઉપરથી નીકળીને ઉપર ઉઠતી હોય તેમ લાગતી હતી (भट्ठ विज्जा विज्जाहर कन्नगा गगणतलाओ ओवयमाणीविव અથવા તો વિદ્યાભ્રષ્ટ થયેલી, વિદ્યા વિસ્મૃત થયેલી એવી કોઇ વિદ્યાધર કન્યા આકાશમાથી નીચે ઉતરતી હોય, (महागरुलवेगवित्तासिया विपलायमाणी भूयगवरकन्नगा इव) અથવા તો ગરુડના ભયોત્પાદક વેગથી આક્રાત થયેલી કોઇ નાગકન્યા જ આમતેમ નાસભાગ કરતી હોય, (महाजणरसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा धावमाणी आसकिसोरी विव) અથવા તો માણસોના ઘોઘાટથી ભયભીત થઇને કોઈ ઘોડીનુ વછેરૂ તબેલામાથી નાસીને આમતેમ કૂદતુ ઉછળતુ હોય, (गुरुजणदिट्ठो वरद्धा णिगुज्जमाणी सुयणकुलकन्नगा विव) અથવા તો કુટુબના વડાઓ જેઓનુ જુઠું

दिभिर्दृष्टः=अवलोकितः अपराधः=असत्यवचनादिरूपो यस्याः सा तथोक्ता 'सुय-णकुलकन्नगाविव' सुजनकुलकन्यकेव=कुलवतीकन्येव 'णिगुजमाणी' विगुञ्जन्ती =अव्यक्तशब्दकुर्वती, अधोनमन्ती वा, 'वीचीवहारसयतालियाविव' वीचीप्रहार-शतताडितेव=अनेकशतजलतरङ्गप्रहारैस्ताडितेव 'घुम्ममाणी' घूर्णमाना=थर-थरेति कम्पमाना, 'गगणतलाओ' गतनतलात् 'गलियबधणाविव' गलितबन्ध नेव=त्रुटितबन्धनेव-आकाशात् टित्वा पतितेवदृश्यमानेत्यर्थः, रोयमाणीविव सलिलगठिविप्पइरमाणघोरसुवाए हिं णवबहू उवरयभत्तुया' रुदतीवसलिलग्रन्थि विप्रकिरद् घोराश्रुपातैर्नववधूरुपरतभर्तृका, 'उवरयभत्तुया' उपरतभर्तृका=मृतभ-र्तृका नववधूरिव=नवपरिणीता वनितेव=सलिलभिन्नाग्रन्थिय सलिलग्रन्थिय'= सलिलार्द्रग्रन्थयः, तेभ्योविप्रकिरन्तः=क्षरन्तः, जलबिन्दवः तएव घोराश्रुपातास्तै

सुयण कुलकन्नगाविव) या गुरुजनो द्वारा जिसका असत्य वचनादिरूप अपराध देख लिया गया है ऐसी कोई कुलवती कन्या ही मानों लज्जा-वश नीचे की ओर झुकी जा रही है। (वीचीपहार सयतालीया विव घुम्ममाणी) हजारों जलतर गो के प्रहारों से ताडित होने की वजह से ही मानो थर थर कॅपती हुई वह नौका (गगणतलाओ गलियबधणा विव) ऐसी दिखलाई दे रही थी कि बन्धन टूट जाने से आकाश से गिर सी पड़ी हो।

अर्थात्-जिस प्रकार बधन टूट जाने से कोइ वस्तु ऊपर से नीचे गिर पड़ती है-उसी तरह यह नौका भी अपना बधन टूट जाने से मानों आकाश से-ऊपर से-नीचे गिर पड़ी हैं। (रोयमाणीविव सलिल गठि विप्पइरमाण घोरसुवाएहिं णवबहू उपर यभत्तुया) जिस प्रकार अपने पतिदेव के मरजाने पर नवोढा आँसुओं को बहाती हुई रोती है

બોલવુ વગેરે અપરાધો જાણી ગયા છે તેવી કોઇ લાજથી મો નીચુ ઘાલીને કુળવતી કન્યા જતી હોય, (વીચીપહારસયતાલિયા વિવ ઘુમ્મમાણી) હજારો મોજાઓના પ્રહારોથી અથડાઇને થર થર ધ્રુજતી તે નાવ (ગગણાતલાઓ ગલિય વધણા વિવ) એવી લાગતી હતી કે જાણે દોરી તૂટી જવાથી આકાશમાથી નીચે પડી ગઇ હોય

એટલે કે જેમ બધન તૂટી જવાથી કોઇ વસ્તુ ઉપરથી નીચે આવી પડે છે તેવી જ રીતે જાણે કે આ નાવ પણ બધન તૂટી જવાથી આકાશમાથી નીચે પડી ગઇ ન હોય ?

(रोयमाणीविव सलिल गठिविप्पइरमाणा घोरसुवाएहिं णवबहू उपरयभत्तुया)

પોતાના પતિના મૃત્યુ પામ્યા બાદ જેમ કોઇ નવોઢા-જુવાન પત્ની-

रुदतीव, 'विलवमाणी विव परचक्करायाभिरोहियापरममहब्भयाभिदुयामहापुरवरी' विलपन्तीव परचक्रराजाभिरुद्धा परममहाभयाभिद्रुतामहापुरवरी--शत्रुभूतैः परचक्र राजैरभितः सर्वतो रुद्धा परिवेष्टिता, अतएव परममहाभयादभिद्रुता तत्रत्यजनाना-भयार्तानां सर्वदिक्षु कोलाहलपूर्वकं यद् अभिद्रवण पलायन तेनाभिद्रुता अतएव विलपन्ती जनानां सभयकोलाहलै. विलाप कुर्वतीव यथा महापुरवरी महानगरी

उसी प्रकार उस नौका से भी सलिल से आर्द्र हुई सधियो से जल विन्दु समूह टपटप वरस रहा था-अत मालूम पडता था कि मानों यह आसुओ को छोड़ती हुइ रोही रही है। (विलवमाणी विव परचवक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी) जिस प्रकार शत्रू भूत परचक्र राजाओ से सर्व ओर से घिरी हुइ कोई महानगरी बहुत अधिक भयसे अभिद्रुत होती हुई विलाप करती है अर्थात् जब कोई महानगरी शत्रु भूत राजाओ के द्वारा चारों ओर से घेरली जाती है तब वहा का प्रत्येक जन भय से आर्त होकर जहा जिस से भागते बनता है वह वहां रोता विलपता हुआ भाग जाता है-जनता मे इस से अधिक अधिक विक्षोभ उत्पन्न होकर हाय २ आदिका शब्द उसके मुख से स्वतः निकलने लगता है अतः वह नगरी जैसे उससे आकुल व्याकुल बनजाती है-उसी प्रकार इस नौका में बैठे हुए यात्रियो के मुख से भी इस आपत्ति के समय मे हाय २ आदि शब्दों के कोलाहल से वहां का वातावरण आकुल व्याकुल बन रहा था अत सूत्रकार ने इस नौका के

આંખોમાથી શ્રાવણ, ભાદરવાનો જેમ આસુઓની ધારા વહાવતી ઉભી હોય તેમજ તે વહાણ પણ પાણીથી ભીનુ થઈને સાધાઓમાથી સતત જળપ્રવાહ વહાવી રહ્યુ હતુ એટલે એમ જણાતુ હતુ કે તે રડતુ જ ન હોય !

(विलवमाणीविव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भया भिद्दुया महापुरवरी)

શત્રુ બની ગયેલા બીજા બહારના ઘણા રાજાઓથી ઘેરાયેલી કોઇ મહા નગરી અત્યત ભયત્રસ્ત થઇને વિલાપ કરવા માડે છે એટલે કે જ્યારે કોઈ મહાનગરી શત્રુ રાજાઓથી ચોમેર ઘેરાઈ જાય છે ત્યારે નગરીમા રહેનારી દરેક વ્યક્તિ જેમ ભયભીત થઇને જના જેને નાસી જવાનુ સરળ પડે છે ત્યા તે રડતી વિલપતી બની જાય છે, પ્રજાજનોમા એનાથી ખૂબ જ ત્રાસ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે અને તેઓના મોથી 'હાય' 'હાય' ના શબ્દો પોતાની મેળે નીકળવા માડે છે આ પ્રમાણે તે નગરી જેમ વ્યાકુળ થઈ જાય છે તેમ જ નાવમા બેઠેલા યાત્રીઓના મોથી નીકળતા 'હાય', 'હાય' ના શબ્દોથી ત્યાનુ વાતાવરણ વ્યાકુળ થઈ રહ્યુ હતુ સૂત્રકારે આ નાવને અનેક દુશ્મન

भवति, तद्वत्०, 'झायमाणीविव कवडच्छोभप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया' कपट छद्मप्रयोगयुक्ता योगपरिव्राजकाध्यायन्तीव कपटध्यान=कुर्वन्तीव, अतएव परमकपट-प्रयोगयुक्ता योगपरिव्राजिकेव=योगिनीवदृश्यमाना, 'णीसासमाणीविव महाकंतार विणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया' निःश्वसतीव महाकान्तारविनिर्गतपरिश्रान्ता परिणतवयस्का अम्बा यथा महाकान्तारविनिर्गतेन=महावनविनिर्गमनेनापरिश्रान्ता= खिन्ना परिणतवयस्का=वृद्धावस्थाएन्ना अम्बेव=पुत्रवती मातेव निःश्वसतीव ऊर्ध्वाधो-

---

विषय में ऐसी कल्पना की है कि मानों यह नौका परचक्र के राजाओं से सर्व ओर से रोकी हुई महानगरी के समान अत्यन्त भय से अभिद्रुत बन कर विलाप ही कर रही है। (झायमाणी विव कवडच्छोभ घप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया) यह नौका चक्रवत् कपट ध्यानकरने वाली योग परिव्राजिकाके समान दिखलाई देती थी–जिस प्रकार कपट से ध्यान करने वाली परिव्राजिका क्षण भर के लिये कभी स्थिर हो जाती है और कभीअस्थिर–एक सी वृत्ति उसकी नहीं रहती इसी तरह तरोङ्गों से चचल बनी हुई वह नौका भी क्षण भरके लिये स्थिर हो जाती थी और फिर अस्थिर बन जाती थी एक सी वृत्ति उसकी नहो थी।

(णीसासमाणी विव महा कंतार विणिग्गय परिस्संता परिणयवया अम्मया) महा भयकर जगल में ऊची नीची भूमि पर चलने से परिश्रान्त हुई जैसे वृद्धावस्थाप न्न पुत्र वती माता दीर्घ निश्वासो को छोड़

રાજાઓથી આક્રાત થયેલી તેમજ ભયત્રસ્ત થયેલી મહાનગરીની સરખામણી એટલા માટે જ કરી છે

(झायमाणी विव कवडच्छोभप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया)

આ નાવ બગલાની જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી યોગ પરિવ્રાજીકાની જેમ લાગતી હતી એટલે કે જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી પરિવ્રાજીકા થોડી ક્ષણો માટે સ્થિર થઈ જાય છે અને પછી તરત જ અસ્થિર મનવાળી થઇ જાય છે તે સ્થિરતાપૂર્વક મનને સ્થિર રાખી શકતી નથી તેમ આ નાવ પણ મોજાઓથી ચચળ થઇને થોડી ક્ષણો સ્થિર બની જતી અને પાછી તરત જ અસ્થિર થઈ જતી હતી, એક સરખી સ્થિતિમા રહી શકતી જ નહોતી

(णीसासमाणी विव महाकंतारविणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया)

મહા ભયકર વનવગડામા ઉચી નીચી ધરતી પર ચાલનારી પરિશ્રાન્ત થયેલી, ઘરડી થયેલી પુત્રવતી માતા જેમ દીર્ઘ નિશ્વાસો બહાર કાઢતી હોય

गमनयती, 'सोयमाणी विव तव चरणखीणपरिभोगा चयणकाले देवयरयहू' शोचन्तीव तपश्चरणक्षीणपरिभोगा च्यवनकाले देवतरुवधूः-तपश्चरणक्षीणपरिभोगा=भुक्ततपश्चरणफला च्यवनकाले=देवभवस्थितिक्षयसमये देवतरुवधूरिव शोचन्ती=तद्भवस्थितजनविषादयोगात् शोकं कुर्वतीव दृश्यते। पुनः सा नौका कीदृशी जाता इत्याह-'सचुण्णियकट्ठकूवरा' इत्यादि। 'सचुण्णियकट्ठकूवरा' सचूर्णितकाष्ठकूवरा सचूर्णितानि=अत्यर्थं चूर्णीभूतानि काष्ठानि कूवरं च=मुखं यस्याः सा तथा, 'भग्गमेढी' भग्नमेधिः भग्न.= टित मेधिः=सकलनौकाधारभूतः स्तम्भो यस्या सा तथा, 'मोडियसहस्समाला' मोटितसहस्रमाला-मोटितः=भग्नः सहस्रमाल.= सहस्रसख्यजनाधारभूतो मालः=उपरितनभागो यस्या सा तथा, 'सूलाइयवकपरिमासा' शूलाचितवक्रपरिमासा शूलाचितइव=शूलारोपितइव वक्र.=कुब्जः परिमासः

ती हुई लडखडाने लग जाती है-उसी प्रकार यह नौका भी तरगो से आहत होकर मानो थकावट की वजह से ही चलने में लडखडा रही थी। (सोयमाणी विव तवचरणखीणपरिभोगा चयणकाले देवयरवहू) तपश्चरणका जिसने फल भोग लिया है-और अब जिसके च्यवन का समय आ गया है ऐसी देवाङ्गना जिस प्रकार शोक से व्याकुल-चचल -बन जाती है उसी प्रकार यह नौका भी बिलकुल चचल बन गई थी। (सचुण्णिय कट्ठकूवरा) उस समय इस नौका के कष्ट और कूबर मुख-चूर्णी भूत बन चुके थे। (भग्गमेढी) इसका अपना सकल आधार भूत स्तभ टूट चुका था। (मोडिय सहस्स माला) सहस्रसख्यजनो का आधार भूत उपरितन भाग इसका भग्न हो चुका था। (सूलाइय वक्क परिमासा) शूल पर आरोपित किये हुए के समान इसका परि-

---

ડીયા ખાવા માડે છે તેમજ તે નાવ પણ મોજાઓથી અથડાઇને જાણે કે થાકીને લથડીયા ખાવા ન માડી હોય!

(सोयमाणी विव तवचरणखीणपरिभोगा चयणकाले देवयर वहू)

તપનુ ફળ જેણે ભોગવી લીધુ છે અને હવે પતન થવાનો સમય આવવાથી દેવાગના જેમ શોક વ્યાકુળ-ચચળ થઈ જાય છે, તે પ્રમાણે જ આ નાવ પણ ચ ચળ બની ગઇ હતી (सचुण्णियकट्ठकूवरा) મોજાઓથી અથડાતા અથડાતા ત્યા સુધી નાવના કાષ્ટ અને કૂબર-મુખ નાશ પામ્યા હતા (भग्गमेढी) નાવનો આધાર ભૂત સ્તભ (થાભલો) તૂટી પડયો હતો (मोडियसहस्समाला) હજારો માણસો જ્યા આશ્રય મેળવી રાકે તવો નાવનો ઉપરનો ભાગ તૂટી ગયો હતો (सूलाइयवकपरिमासा) શૂલ ઉપર ખૂડવામા

=काष्ठविशेषो यस्याः सा तथा, 'फलहतरतडतडेतफुट्टतसन्धिविगलन्तलोहकीलिया' फलकान्तरेषु सयोजितफलकविवरेषु 'तडतडे' ति शब्द कुर्वन्त्यः, स्फुटन्तो=विघटमाना सन्धयः, अतएव विगलन्त्यो=निस्सरन्त्यो लोहकीलिका यस्या सा तथा, 'सव्वगत्तियभिया' सर्वाङ्ग विजृम्भिता=सर्वाङ्गै'=सर्वावयवैः वि=जृम्भिता=विदृतमुखा जाता या सा तथा, 'पडिमडियरज्जू' परिशटितरज्जुः=गलितरज्जुवती अतएव 'विसरतसव्वगत्ता' विसरत्सर्वगात्रा=विशीर्यमाणसर्वावयवा, 'आमगमल्लगभूया' आमकमल्लभूता=अपक्वशरावसदृशा, 'अकयपुण्णजणमणोरहो विव' अकृतपुण्यजनमनोरथ इव, अकृतपुण्यः=हीनपुण्यो यो जनस्तस्य मनोरथ इव 'चिंतिज्जमाणगुरुई' चिन्त्यमानगुर्वी चिन्त्यमाना-'कथमेतामापद तरिष्यामी'ति-विचार्यमाणेव गुर्वी=चिन्ताभारेणेव गुरुका, 'हाहाकयकण्णधारणावियत्राणिय

मास काष्टविशेष टेढा हो गया था। (फलहतरतडतडेंतफुट्टतसंधिविगलतलोहकीलिया) काष्टके पट्टियोंको परस्पर जोडनेके लिये जो सधियों मे लोहेके बडे२ कीले लगे हुए थे वे सब जब उसकी सधिया-जाड विघटित हो गई तब उनमे बाहर निकल आये थे (सव्वगवियभिया) अतः समस्त इसके जुडे हुए अवयव खुल गये थे। (परिसडियरज्जू) जितनी भी इस में रस्सिया लगी हुई थी वे सब की सब गल चुकी थीं। (विसरतसव्वगत्ता) इससे समस्त जोड खुल गये थे। (आम गमल्लक भूया) यह कच्चे मिट्टी के शरवाके समान हो गइ थी। (अकय पुण्ण जणमणोरहो विव) अकृत पुण्य वाले मनुष्य के मनोरथ के समान यह निष्फल बन गई थी। (चिंतिज्जमाण गुरुई) मै इस आपत्ति को अब कैसे पार करूँगी इस चिंता से ही मानो यह बहुत भारी

આવેલાની જેમ પરિમાસ નામનુ કાષ્ટ વિશેષ-ત્રાસુ થઈ ગયુ હતુ (फल हतर तडतडेत फुट्टत सधि विगल तलोहकीलियो) લાકડાના પાટીયાઓને એક બીજાની સાથે તેને સાધા મેળવવા જે લોખંડના મોટા બીલાઓ કામમા લેવાય છે તે બધા પાટિયાઓ જ્યારે જુદા જુદા થઈ ગયા ત્યારે બહાર નીકળી આવ્યા હતા (सव्वग वियभिया) આ પ્રમાણે નાવના બધા જોડાએલા સાધાઓ જુદા થઈ ગયા હતા (परिसडियरज्जू) તેની બધી દોરીઓ કહોવાઇ ચૂકી હતી (विसरतसव्वगत्ता) તેના બધા સાધાઓ છૂટા પડી ગયા હતા (आम गमल्लकभूया) તે માટીના કાચા કોડિયાની જેમ થઈ ગઈ હતી (अकयपुण्ण जण मणोरहाविव) કોઈ પણ દિવસે જેણે એકેય પુણ્યનુ કામ કર્યું નથી એવા માણસના મનોરથની જેમ તે નિષ્ફળ થઈ ગઈ હતી (चिंतिज्जमाण गुरुई) આવી પડેલી આફતનો સામનો હુ કેવી રીતે કરીશ ? કે આ

गजणकम्मगारविलविआ ' हाहाकृतकर्णधारनाविकवाणिजकजनकर्मकरविलपिता हाहाकृतैः=हाहाकारयुक्तैः कर्णधारैः=निर्यामकैः, नाविकैः=पोतवाहकैः, वाणिजकजनैः=व्यापारिजनैः, कर्मकरैः=भृत्यैः विलपिता=विलापयुक्ता-कर्णधारादीना हाहाकारेण विलाप कुर्वतीवेत्यर्थः 'णाणाविहरयणपणियसपुण्णा' नानाविधैः रत्नैः पण्यैश्च=विक्रेयवस्तुजातैः सम्पूर्णा=सम्भृता, बहुभिः पुरुषशतैः रुदद्भिः क्रन्दद्भिः शोचद्भिः, 'तिप्पमाणेहिं' तेपमानैः=अश्रुणि मुञ्चद्भिः विलपद्भिः,=विलाप कुर्वद्भिः, एक महत् ' अतोजलगय ' अन्तर्जलगत=जलमध्यस्थित गिरिशिखरमासाद्य=सम्प्राप्य ' सभग्ग कूवतोरणा ' सभग्नकूपतोरणा-सभग्नः=त्रुटितः कूपः=कूपस्तम्भः-यत्र सितपटो

थन ६२ थी (हा हा कयकण्णधारणा विव वाणियगजणकम्मगार विलविया) इस में जो कर्ण धार, नाविक, व्यापारिजन एव नौकर-चाकर बैठे हुए थे वे सब के सब हाहाकार करते हुए विलाप कर रहे थे— अतः ऐसा मालूम होता था कि उनके हाहाकार विलापो से यह नौका स्वय विलाप कर रही है। (णाणा विहरयणपणिय सपुण्णा) अनेक प्रकार के रत्नो से एव पण्य द्रव्यों से-विक्रेय्यवस्तुओं से-यह नौका भरी हुई थी। (रोयमाणेहिं कद० सोय तिप्प० विलवमाणेहिं बहूहिं पुरिसेहिं एग महं अतोजलगय गिरिसिहरमासायइत्ता) रुदन करनेवाले, आक्रन्दन करनेवाले, शोक करनेवाले, आसुओं को बहानेवाले ऐसे सैकडों पुरुषों से भरी हुई यह नौका एक बड़े भारी जलके भीतर रहे हुए गिरिके शिखर से टकरा गई-टकराते ही (सभग्गकूव-

---

જાતની ચિંતાથી જ તે નાવ ભારે વજનદાર થઈ પડી હતી (हा हा कय कण्णधारणा विव वाणियगजणकम्मगारविलविया)

તેમા બેઠેલા કર્ણધાર, નાવિક, વેપારીઓ અને બીજા નોકર ચાકરો હાય, હાય, કરીને વિલાપ કરી રહ્યા હતા એથી એમ લાગતુ હતુ કે જાણે તેઓના વિલાપથી જ આ નાવ પોતે વિલાપ કરતી ન હોય ! (णाणाविहरयण पणिय सपुण्णा) ઘણી જાતના રત્નો અને વેચાણની વસ્તુઓથી આ નાવ પૂરેપૂરી ભરી હતી (रोयमाणेहि कद० सोय० तिप्प० विलवमाणेहि बहूहि पुरिसेहि एग महं अतोजलगय गिरिसिहरमासायइत्ता)

રડનારા, કરુણ આક્રંદ કરનારા શોકથી પીડાતા, ચોધાર આસુઓ વહેવડાવનારા, વિલાપ કરનારા એવા સેકડો માણસોથી ચિક્કાર ભરેલી તે નાવ આખરે પાણીની અદરના જ પર્વત શિખર (ખડક) સાથે અથડાઈ પડી અને અથડાતાની સાથે જ (सभग्गकूवतोरणा તેના કપ્તાનો અને તો ણો તૂટી

बध्यते सः, तथा तोरणानिच त्रुटितानि यस्याः सा तथा-'मोडियझयदडा' मोटि तध्वजदण्डा=त्रुटितध्वजकाष्ठा, 'वलयसयसडिया' वलकशतसण्डिता वलकानां= दीर्घदारूणां शतानि खण्डितानि यस्याः सा, 'करकरस' करकरेति शब्दं कुर्वाणा तत्रैव समुद्रे 'विद्दव=विलयम् उपगता=प्राप्ता जले मुडितेत्यर्थः। ततः खलु तस्या नौकाया भिद्यमानाया=त्रुडिताया सत्या बहवः पुरुषा. 'विउलपणिय' विपुलपणित-विपुल=प्रचुर पणित=पण्यद्रव्य विक्रय द्रव्यम् यस्मिन तत् तादृश भाण्डमादाय 'अतोजलसि' अन्तर्जले=जलमध्ये 'निमज्जाविय' निमग्नाः=मुदिता अपि चाभूवन्॥ सू०२॥

मूलम्-तएण ते मागदियदारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी णिउणसिप्पोवगया बहुसु पोतवहणसपराएसु कयकरणा लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एगं महं फलगखंड आसादेंति, जंसि च णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने तंसि च णं पदेसंसि एगे महं रयणदीवे णाम दीवे होत्था अणेगाइं जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अणेगाइं जोअणाइं परिक्खेवेण

तोरणा) इसके कूपस्तभ और तोरण भग्न हो गये (मोडियझयदडा) ध्वजा दड टूट गया (वलयसयखडिया) बडे २ लबे २ सैकडो काष्ठखडित हो गये (करकरस्सतत्थेव विद्दव उवगया) और यह कर २ शब्द करती हुई वही पर डूब गई। (तएण तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपणिय भडमायाए अतोजलमि णिमज्जाविय होत्था) इस तरह उस नौका के डूब जाने पर अनेक पुरुष प्रचुरपण्य द्रव्यवाले भाण्ड को लेकर जलके बीच में निमग्न हो गये॥ सूत्र २॥

ગયા (मोडियझयदडा) ધજા દડ તૂટી ગયેા (वलयसयखडिया) મેાટા મેાટા વિશાળ લાબા સેકડેા કાષ્ઠ તૂટી ગયા (करकरस्स तत्थेव विद्दव उवगया) અને તે નાવ 'કર કર' શબ્દ કરતી ત્યા પાણીમા ડૂબી ગઈ

(तएण तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपणिय भडमायाए अतो जलमि णिमज्जाविय होत्था)

આ રીતે નાવ ડૂબી જવાથી ઘણા માણસેા પુષ્કળ પ્રમાણમા દ્રવ્યેાથી ભરેલા વાસણેા સાથે પાણીમા નિમગ્ન થઈ ગયા॥ સૂત્ર "૨"॥

णाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासाइए ४, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए तत्थ णं एगे महं पासायवडेंसए होत्था अब्भुग्गयमूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४, तत्थणं पासायवडेंसए रयणद्दीवे देवया नामं देवया परिवसति पावा चंडा रुद्दा साहसिया, तस्स णं पासायवडिंसयस्स चउद्दिसि चत्तारि वणसंडा किण्हा किण्हाभासा, तएणं ते मागंदियदारगा तण फलयखडेण उव्वुज्झमाणा२ रयणदीव तेणं सवूढा यावि होत्था, तएणं ते मागदियदारगा थाह लभंति लभित्ता मुहुत्तंतर आससंति आससित्ता फलखड विसज्जेति विसज्जित्ता रयणद्दावे उत्तरति उत्तरित्ता फलाण मग्गणगवेसणं करेति करित्ता फलाइं गिण्हंति गिण्हित्ता आहारेंति आहारित्ता णालिएराण मग्गणगवेसणं करेति करित्ता नालिएराइं फोडेति फोडित्ता नालिएरतेल्लेणं अण्णमण्णस्स गत्ताइ अब्भगेंति अब्भगित्ता पोक्खरणी ओगाहिति ओगाहित्ता जलमज्जण करेंति करित्ता जाव पच्चुत्तरति पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयसि निसीयति निसोइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चपानयरिं अम्मापिउ आपुच्छण च लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमुत्थण च पोतवहणविवत्ति च फलयखडस्स आसायण च रयणद्दीवुत्तार च अणुचिंतेमाणा२ ओहयमणसंकप्पा जाव झियायेन्ति, तएण सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए ओहिणा आभोएइ आभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतालप्पमाण उड्ढं वेहास

उप्पयइ२ ताते उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी२ जेणेव मागदियदारए तेणेव आगच्छइ आगच्छित्ता आसुरुत्ता ते मागदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहि एवं वयासी–ह भो मागदियदारया ! अप्पत्थियपत्थया जइ णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणा विहरह तो भे अत्थि जीविअ, अहण्ण तुब्भे मए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणा नो विहरह तो भे इमेणं निल्लुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासेणं असिणा खुरधारेण असिणा रत्तगडमसुयाइ माउयाहि उवसोहियाइ तालफलाणीव सीसाइं एगंते एडेमि, तएणं ते मागदियदारगा रयणदीव देवयाए अतिए सोच्चाभीया करयल० एव जपणं देवाणुप्पिया ! वइस्ससि तस्स आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएणं सा रयणद्दीवदेवया ते मागदियदारए गेण्हति२ जेणेव पासायवडिसए तेणेव उवागच्छइ२ असुभपोग्गलावहार करेइ२ सुभपोग्गलपक्खेव करेइ करित्ता पच्छा तेहि सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति कल्लाकल्लि च अमयफलाइं उवणेइ ॥ सू०२ ॥

टीका—ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ 'छेया' छेकौ=चतुरौ 'दक्खा' दक्षौ=निपुणौ, 'पत्तट्ठा' प्राप्तार्थौ–प्राप्त =ज्ञातः अर्थः=भावो याभ्यां तौ 'कुसला'

'तएण ते मागदिय दारगा' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (ते मागदियदारगा) उनदोनों माकदियदारकों ने कि जो (छेया,दक्खा,पत्तट्ठा, कुसला, मेहावी, निउणसिप्पो

'तएण ते मागदियदारगा' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યાર બાદ (ते मागदियदारगा) તેઓ બને માગદિય દારકોએ–કે જેઓ

कुशलौ=सकलकलाविज्ञौ 'मेहावी' मेधाविनौ=सुधियो णिउणसिप्पोवगया' निपुणशिल्पोपगतौ=तरणादिविद्यानिपुणौ बहुसु=अनेकेषु 'पोयवहणसपरायेसु' पोतवहनसपरायेषु = पोतवहनस्य=नौकातरणस्य सपरायेषु = विघ्नेषु समुपस्थितेषु 'कयकरणा' कृतकरणौ=कृतकार्यौ बहुशोऽनुभूतसतरणकार्यौ, 'लद्धविजया' लब्धविजयौ=समुद्रपारगमनेन प्राप्तविजयौ 'अमूढा' अमूढौ=तरणादिक्रिया विवेकसम्पन्नौ 'अमूढहत्था' अमूढहस्तौ=तरणक्रियाकुशलहस्तौ एकमहत् फलकखण्ड काष्ठमयम् 'आमादेंति' आसादयत =आलम्बितवन्तौ०। यस्मिंश्च खलु प्रदेशे तत् पोतवहन=प्रवहण 'विवन्ने' विपन्न=भग्न तस्मिंश्च खलु तस्मिन्नेव प्रदेशे एको महान् रत्नद्वीपो नाम द्वीपः 'होत्था' आसीत्, स कीदृशः ? इत्याह-

---

वगया, बहुसु पोतवहणसपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा, अमूढहत्था एग महं फलगखंड आसादेंति) बडे चतुर थे, दक्ष थे, भावों को जानने वाले थे, सकल कलाओ के ज्ञाता थे, मेधावी थे, तरणादि विद्या में विशिष्ट योग्यता सम्पन्न थे, पोत सचालन मे उपस्थित हुए विघ्नो को पार करने वाले थे, अर्थात् ऐसी स्थितिमे जिन्होने सस्तरण कार्य अनेक वार अभ्यस्त कर रखा था, समुद्रपार करने में जिन्हे विजय मिली थी, तरणादि क्रिया का विवेक जिन्हें बहुत अच्छी तरह था, जिनके हाथ तैरने मे कभी थकने नही थे-जो तरण क्रिया मे बडे कुशल थे, एक बडे भारी काष्टफलक खड को प्राप्त कर लिया। (जंमिच ण पदेसंमि से पोयवहणे विवन्ने तंसिंच ण पदेसंसि एगे महं रयणदीवे णाम दीवे होत्था,अणेगाइ जोअणाति आयामविक्खंभेण अणेगाइ जोअ-

---

(छेया, दक्खा पत्तट्ठा, कुसला मेहावी निउण सिप्पोवगया बहुसु पोतवहण सपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एग महं फलग खडआमादेंति

ખૂબ જ ચતુર હતા દક્ષ હતા, ભાવોને જાણનારા હતા, બધી કળાઓમા નિષ્ણાત હતા, મેધાવી હતા તરવા વગેરેની કળાઓમા નિપુણ હતા, પોત સચાલનમા વચ્ચે આવી પડેલા વિઘ્નો દૂર કરી શકવાની શક્તિ ધરાવતા હતા એટલે કે એવી પરિસ્થિતિમા પણ હિંમત ન હારતાગમે તે રીતે તરીને પણ સમુદ્ર પાર કરવામા શક્તિશાળી હતા તરવાની ક્રિયામા જેઓ વિશેષ કુશળ હતા, તરતી વખતે પણ જેમના હાથો કોઈ પણ સ્થિતિમા થાકતા જ નહિ તરવામા જેઓ ખૂબ જ કુશળ હતા-એક મોટા લાકડાના પાટિયાને પકડી લીધુ

(जमिं च ण पदेससि से पोयवहणे विवन्ने त सि च ण पदेससि एगेमह रयणदीवे णाम दीवे होत्था, अणेगाइ जोअणाइ परिक्खेवेण णाणा दुमसडमडिउद्देसे सस्सिरीए पासाइए ४)

'अणेगाइ' इत्यादि-अनेकानि योजनानि आयामविष्कम्भेण=दैर्घ्यपरिणाहेन, अनेकानि योजनानि परिक्षेपेण=परिधिना, नानाद्रुमषण्डमण्डितोद्देश=अनेकवन षण्डमण्डितप्रदेश' सश्रीक=शोभासम्पन्न', प्रासादीय?-मनः प्रसन्नता हेतुत्वात्, दर्शनीय=नेत्राह्लादकत्वात्, अभिरूपः=अपूर्वसौन्दर्यवत्त्वात्, प्रतिरूपः=प्रशस्ताकृतिकत्वात्० । तस्य खलु द्वीपस्य बहुमध्यदेशभागे=मध्यस्थले तत्र खलु एको महान् प्रासादावतंसकःश्रेष्ठप्रासादो आसीत्०। स कीदृशः ? इत्याह-'अब्भुग्गय' इत्यादि -'अब्भुग्गय' अभ्युद्गतः=विशाल 'ऊसियए' उच्छ्रितकः=गगनतलस्पर्शी यावत् सश्रीकः-सुरूप'=शोभनाकारः प्रासादीयः ४ । तत्र खलु प्रासादावतंसके रत्न द्वीपदेवता नाम देवता 'रयणादेवी' इति प्रसिद्धा देवी परिवसति=निवास

णाइ परिक्खेवेण णाणाद्रुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासाइए ४) जिस प्रदेश मे वह पोतवहन भग्न हुआ था, उसी प्रदेश में एक बड़ा भारी रत्नद्वीप नाम का द्वीप था। इसका आयाम और विष्कंभ अनेक योजन का था। परिधि भी इसकी अनेक योजन की थी। नाना प्रकार के वृक्षों के समूह से इस का भीतरी बाहिरी प्रदेश हरा भरा बना हुआ था। यह द्वीप बहुत ही शोभासपन्न था। मन को प्रसन्न करनेवाला था। दर्शनीय था। तथा अपूर्व सौन्दर्य से युक्त था। एव आकृति मे भी यह बडा अभिराम था। (तस्स ण बहुमज्झदेसभाए तत्थ ण एगे महं पासायवडेंसए होत्था-अब्भुग्गयमूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४) इस द्वीप के ठीक मध्य भाग में एक विशाल श्रेष्ठ प्रासाद था। यह बहुत अधिक ऊँचा था। अपनी ऊँचाई से यह आकाश तक को स्पर्श करता था। बहुत सुन्दर था। दर्शनीय आदि विशेषणो वाला था। (तत्थ ण

નાવ જ્યા દૂખી હુતી તેની આસપાસના પ્રદેશમા એક બહુ મોટો રત્નદ્વીપ નામે દ્વીપહુતો આ દ્વીપનો આયામ અને વિષ્કભ ઘણા યોજના સુધી વિસ્તાર પામેલો હતો આ દ્વીપની પરિધિ પણ ઘણા યોજનો સુધીની હતી ઘણી જાતના વૃક્ષોના સમૂહોથી તે દ્વીપનો અદર અને બહારનો ભાગ લીલો છમ દેખાતો હતો તે દ્વીપ ખૂબ જ સુ ર હતો મનોહર હતો, મનને પ્રસન્ન કરે તેવો હતો, દર્શનીય હતો અપૂર્વ સૌદર્યથી તે યુક્ત હતો તેમજ આકારમા પણ તે અત્યત સુદર હતો

(तस्स ण बहुमज्झदेसभाए तत्थण एगे महं पासायवडेंसए होत्था-अब्भुग्गय मूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४)

તે દ્વીપની વચ્ચે એક વિશાળ ઉત્તમ મહેલ હતો તે ખૂબ જ ઊચો હતો પોતાની ઊચાઈથી તે આકાશ ને પણ સ્પર્શતો હતો તે ખૂબ જ સુદર હતો, દર્શનીય વગેરે વિશેષતાઓથી યુક્ત હતો

करोति । सा कीदृशी ? इत्याह-' पावा ' इत्यादि-' पावा ' पापा=पापकर्मकर्त्री स चण्डा=अत्यन्तकोपशीला, रौद्रा=हिंसादिक्रूरकर्मकारिणी, साहसिका=अविचार्य कारिणी । तस्य खलु प्रासादावतंसकस्य चतुर्दिक्षु चत्वारो वनषण्डा आसन्, ते कीदृशाः ? इत्याह-' किण्हा ' इत्यादि-कृष्णा =नूतनमेघवर्णाः, कृष्णावभासाः= अतिहरितत्वेनावभासमानकृष्णकान्तय , इत्यादि । तत खलु तौ माकन्दिकदारकौ तेन फलकखण्डेन ' उव्वुज्झमाणा २ ' उद्ह्यमानौ २ उपरिजले वहन्तौ २ तरन्तौ२, रत्नद्वीपान्ते खलु=रत्नद्वीपसमीपे ' संवूढा ' सम्यूढौ=समागतौ चाप्यास्ताम् ।

ततः खलु तत्र तौ माकन्दिकदारकौ ' थाह ' स्ताघ=समुद्रतलमभेते=पादाभ्यां स्पृष्टवन्तौ लब्ध्वा मुहूर्त्तान्तरम्=अन्तर्मुहूर्त्तम् आश्वस्तौ=विश्रामं कुरुतः, आश्वस्य

पासायवडेंसए रयणदीवे देवया नाम देवया परिवसति, पावा, चंडा रुद्दा, साहसिया तस्स ण पासायवडिंसयस्स चउद्दिसिं चत्तारिवणसंडा किण्हा, किण्हाभासा, तएण ते मागदियदारगा तेण फलयखंडेण उव्वुज्झमाणा २ रयणदीवनेणं संवूढा यावि होत्था) उस श्रेष्ठ प्रासाद में रत्न द्वीप देवता नाम की एक देवी कि जिस का प्रसिद्धनाम 'रत्नदेवी' "देवी था" रहती थी ॥

यह अत्यत पापकर्म करती थी, सदा गुस्से में भरी रहती थी, हिंसादिक्रूरकर्म करने मे बडी निपुणमति थी-जो मन मे आता वही कर डालती थी। उस श्रेष्ठ प्रासाद की चारो दिशाओ मे चार वनखण्ड थे। वे नवीन मघ के वर्ण समान काले थे और सदा हरे भरे रहने के कारण उनकी कांति भी काली ही निकलती थी। ये दोनों माकंदी दारक उस फलक खंड की सहायता से जल पर-तैरते हुए-उस रत्नद्वीप के

(तत्थण पासायवडेंसए रयणदीवे देवया नाम देवया परिवसति, पावा चंडा रुद्दा साहसिया तस्सण पासायवडिंसयस्स चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा, किण्हा किण्हाभासा, तएग ते मागदियदारगा तेण फलयखंडेण उव्वुज्झमाणा २ रयणदीव तेण संवूढा यावि होत्था)

તે શ્રેષ્ઠ મહેલમા રત્નદ્વીપ દેવતા નામની એક દેવી-કે જે ' રયણા દેવી ' નામે પ્રસિદ્ધિ પામેલી હતી-રહેતી હતી હમેશા તે ગુસ્સામા જ રહેતી હતી તે હિંસા વગેરે ક્રૂર કર્મો કરવામા ખૂબ જ ચતુર હતી તે ઈચ્છા મુજબ આચરણ કરતી હતી ને ઉત્તમ મહેલની ચારે દિશાઓ તરફ ચાર વનખંડો હતા તેઓ નવા વાદળના રંગના જેવા શ્યામ હતા અને હમેશા લીલા છમ રહેવા બદલ તેમની કાંતિ પણ શ્યામ રંગની જ હતી અને માકંદી દારકો લાકડા ઉપર તરતા તરતા રત્ન દ્વીપની પાસે આવી પહોંચ્યા હતા

फलकखण्ड 'विसज्जेंति' विसर्जयतः=परित्यक्तवन्तौ, विसृज्य रत्नद्वीपम् उत्तरतः=प्राप्तौ उत्तीर्य=प्राप्य फलाना मार्गणगवेषण कुरुत =इतस्तत' फलानि गवेषितवन्तौ, कृत्वा फलानि गृह्णीतः, गृहीत्वा आहारतः=भुक्तवन्तौ, तदनु नालिकेराणा मार्गणगवेषण कुरुतः, कृत्वा नालिकेराणि स्फोटयतः, तत नालिकेरतैलेन अन्योन्यस्य

पास में आ पहुँचे। (तएण ते मागदियदारगा थाह लभति, लभित्ता मुहुत्तंतर आससति, आससित्ता फलगखड विसज्जेंति, विसज्जित्ता रयणदीव उत्तरति उत्तरित्ता फलाण मग्गणगवेसण करेंति) वहा आते ही उन्हें स्थल मिल गया-थाह मिलते ही उन्होंने वहां एक मुहूर्त्त तक विश्राम किया, विश्राम करके फिर उस काष्ठ खड को छोड दिया। छोड करके फिर वे दोनों रत्नद्वीप में उतर-गये-वहा जाकर उन्होंने फलो की इधर उधर मार्गणागवेषणा की-(करित्ता फलाइं गिण्हंति, गिण्हित्ता आहारेंति आहारित्ता णालिएराणमग्गणगवेसण करेंति, करित्ता नालिएराइं फोडेंति, फोडित्ता नालिएरतेल्लेण-अण्णमण्णस्स गत्ताइं अब्भंगेंति, अब्भंगित्ता पोक्खरणीं ओगाहिंति, ओगाहित्ता जलमज्जण करेंति, करित्ता जाव पच्चुत्तरंति, पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयंसि निसीयंति, निसीइत्ता आसत्था वीसत्था) मार्गणा गवेषणा करने से उन्हें फल मिल गये। मिलते ही उन्होंने उनका आहार किया। जब उनका पेट अच्छी तरह भर चुका तब फिर उन्होंने नारिकेल फलो की-नारियलों की-तलाश

(तएण ते मागदियदारगा थाह लभति, लभित्ता मुहुत्तंतर आससति, आससित्ता फलगखड विसज्जेंति, विसज्जित्ता रयणदीव उत्तरति उत्तरित्ता फलाण मग्गणगवेसण करेंति)

ત્યા પહોચતા જ તેઓને સ્થળ મળી ગયુ, સ્થળ મળતા જ તેઓએ એક મુહૂર્ત્ત ત્યા વિસામો લીધો અને ત્યાર પછી લાકડાને છોડી દીધુ પાણી માથી તેઓ બહાર રત્ન દ્વીપમા આવ્યા અને આમ તેમ ફળો શોધવા લાગ્યા

(करित्ता फलाइं गिण्हंति, गिण्हित्ता आहारेंति आहारित्ता णालिएराण मग्गणगवेषण करेंति करित्ता नालिएराइं फोडेंति फोडित्ता नालिएरतेल्लेण अण्णमण्णस्स गत्ताइं अब्भंगेंति अब्भंगित्ता पोक्खरणीं ओगाहिंति, ओगाहित्ता जलमज्जण करेंति, करित्ता जाव पच्चुत्तरंति, पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयंसि नीसीयंति, निसीइत्ता आसत्था वीसत्था)

શોધ કરતા કરતા તેમને ફળો મળી ગયા તેનાથી ફળોનો આહાર કર્યો જ્યારેફળોના આહારથી તેઓ ધરાઈ ગ । ત્યારે નાળિયેરના ફળોની શોધ કરવા લાગ્યા આખરે નાળિયેરના ફળો તેઓઓ મેળવ્યા અને તેને ફોડીને અદરથી

परस्परस्य ' गत्ताइ ' गात्राणि=अङ्गोपाङ्गानि अभ्यङ्गयतः=मर्दयतः, तदनु पुष्करिणीं=वापीं अवगाहेते=अन्तः प्रविशत, अवगाह्य जलमज्जन=स्नान कुरुत', कृत्वा यावत् प्रत्युत्तरतः=वापीतो बहिर्निस्सृतौ, प्रत्युत्तीर्य=बहिर्निस्सृत्य पृथिवीशिलापट्टे निषीदतः=उपविष्टौ, निषद्य ' आसत्था ' आस्वस्थौ=ईषत्स्वस्थौ ' वीसत्था ' विस्रब्धौ रमणीयनिर्भयस्थान मत्वा विशेषेण विश्राम प्राप्तौ सुखासनवरगतौ=सुखदासने समुपविष्टौ सन्तौ चम्पानगरीम्, अम्बापित्रा पृच्छनम्=समुद्रोत्तरणविषये तन्निषेधेऽपि द्वित्रिवार तदाज्ञायाचनच, लवणसमुद्रोत्तार च, कालिकावातसमुत्थान

की-तलश करने पर वे भी उन्हें मिल गये। मिलते ही उन्होने उन्हें फोडा -फोड कर उनमेंसे तेल निकाला-तेलनिकाल कर परस्पर में उन्हेंने एक दूसरेके शरीर पर उससे मर्दन कीया-मर्दन करनेके बाद फिरवे पुष्करिणी में प्रविष्ट हुए-प्रविष्ट होकर उसमें उन्हों ने स्नान किया स्नान करके फिर वे उससे ऊपर आये। ऊपर आकर पृथिवी शिलापट्टक पर बैठ गये। बैठकर वे वहां अश्वस्त बने। बाद में (सुहासणवरगया) सुखद आसन से बैठ कर उन दोनों ने (चपानयरिं अम्मापिउ आपुच्छण लवणसमुद्दोत्तारण च कालियवायसमुत्थणं च पोत वहणविवत्तिच फलयखडस्स आसायण च रयणदीवुत्तार च अणुचिंते माणा २ ओहयमणसकप्पा जाव झियायेंति) चपानगरी का माता पिता से पूछने का-लवण समुद्र कि यात्रा करने के विषय में पूछने पर और उनके निषेध करने पर पुनः दुबारा तिबारा उनसे आज्ञा प्राप्त करने का-लवण समुद्र में उतरने का कालिका वायु के उत्थान का पोतके डूब जानेका फलक खड की प्राप्ति

તેલ કાઢીને ખૂબ જ સરસ રીતે એક બીજાના શરીરે તેલ ચોળવા લાગ્યા બરોબર તેલની માલિશ કરીને તેઓ પુષ્કરિણીમા ઉતર્યા અને ઉતરીને તેઓએ સ્નાન કર્યું સ્નાન કરીને તેઓ બહાર આવ્યા અને એક શિલા ઉપર બેસી ગયા ત્યા બેસીને તેઓ આશ્વસ્ત વિશ્વસ્ત બન્યા અને ત્યાર પછી (સુહાસણ વર ગયા) સુખાસન પૂર્વક બેસીને તેઓ બને

(चपानयरिं अम्मापिउआपच्छण लवणसमुद्दोत्तारण च कालिय वाय समुत्थण च पोतवहणविवत्ति च फलयखडस्स आसायण च रयणदीवुत्तार च अणुचिंतेमाणा २ ओहयमणसकप्पा जाव झियायेंति

ચપા નગરીને, લવણ સમુદ્રની યાત્રા કરવા માટે માતાપિતાએ રોકવી ના કહેવા છતા બે ત્રણ વખત તેની તેજ વાત તેમની સામે મૂકીને આજ્ઞા મેળવવાનો, લવણ સમુદ્રમા યાત્રા કરવાનો, અકાળે વાવાઝોડાથી નાવ કયી

च, पोतवहनविपत्तिंच, फलकखण्डस्याऽऽपादन=स्वीकरणच, रत्नद्वीपोत्तारच 'अणु चिंतेमाणा' अनुचिन्तयन्तौ=पुनः पुनः स्मरन्तौ 'ओहयमणसंकप्पा' अपहतमनः सकल्पौ=आर्त्तध्यानसम्पन्नौ यावत् 'झियाएंति' ध्यायत =पूर्ववृत्तान्त स्मृतवन्तौ। तत' खलु तस्मिन् समये सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ 'ओहिणा' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएइ' आभोगयति=पश्यति, आभोगयित्वा=दृष्ट्वा 'असिफलगवग्गहत्था' असिफलकव्यग्रहस्ता=असिना=तीक्ष्णखड्गेन फलकेन='ढाल' इति प्रसिद्धेन व्यग्रौ = चञ्चलौ हस्तौ यस्याः सा तथा, सत्तट्ठतालप्पमाण' सप्ताष्टतालप्रमाण, सप्ताष्टताडवृक्षपरिमितम्, 'उड्ढं' ऊर्ध्वम्=ऊर्ध्वभाग 'वेहासं' वैहायस=गगनसम्बन्धिकम्-अत्युच्चैराकाशे 'उप्पयइ' उत्पतति,=उच्छलति, उत्पत्य तया=प्रसिद्धया उत्कृष्टया यावद् देवगत्या 'वीइवयमाणी' व्यतिव्रजन्ती २ =

का और उसके सहारे से रत्न द्वीपमे आकर उतर जानेका बार२ विचार-स्मरण किया। स्मरण करते २ अपने मनोरथ की पूर्त्ति न होनेके कारण वे दोनों आर्त ध्यान मे पड गये। (तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिदारए ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतालपमाण उड्ढं वेहास उप्पयइ २ ताहे उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी २ जेणेव मागदियदारए तेणेव आगच्छइ, आग च्छित्ता आसुरुत्ता ते मागदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहि एव वयासी) इतने मे उस रत्नद्वीप की देवी ने उन दोनो मागदिदारकों को अपने अवधिज्ञान से देखा-देख कर वह तलवार और डाल को हाथो में लेकर आकाश मे सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर तक उछली उछल कर फिर वह उस उत्कृष्ट देव सबधि गति से शीघ्रता पूर्वक चलती २

જવાનો, લાકડુ મેળવીને તેની સહાયથી તરતા તરતા રત્નદ્વીપમા આવીને ઉતરવા સુધીનો વારવાર તેઓ વિચાર કરવા લાગ્યા આ બધી ઘટનાઓનુ તેઓ સ્મરણ કરવા લાગ્યા આમ સ્મરણ કરતા કરતા જ્યારે પોતાના મનોરથો સફળ થતા ન જોયા ત્યારે તેઓ આર્તધ્યાનમા ડૂબી ગયા

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिदारए ओहिणा अभोएइ, अभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतालपमाण उड्ढं वेहास उप्पयइ २ ताहे उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी २ जेणेव मागदियदारए तेणेव आगच्छइ, आग च्छित्ता आसुरुत्ता ते मागदियदारए खरफरुस निट्ठुरवयणेहिं एव वयासी)

એટલામા તે રત્ન દ્વીપની દેવીએ તે બને માકદી દારકોને પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જોઈ લીધા અને જોઇને તે તરવાર અને ઢાલ હાથમા લઈને આકાશમા સાત આઠ તાલ વૃક્ષ પ્રમાણ ઉપર ઉછળી અને ત્યારબાદ તે

शीघ्रमभिगच्छन्ती यत्रैव माकन्दिकदारकौ तत्रोपागच्छति, उपागत्य 'आसुरुत्ता' आशुरुप्ता=शीघ्र क्रुद्धा सती तौ माकन्दिकदारकौ खरपरुषनिष्ठुरवचनैः=खर्कशकठोररूक्षवचनैरेवमवादीत्-'हभो' इति सगर्वमामन्त्रणम्, हभो माकन्दिकदारकौ! युवाम् 'अप्पत्थियपत्थया' अप्रार्थितप्रार्थकौ=मरणवाञ्छकौ स्तः, यदि खलु युवां मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जानौ विहरत 'तो' तदा 'भे' युवयोरुभयोरस्ति जीवितम्०, अथ खलु युवां मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जानौ नो विहरन्त 'तो' तदा 'भे' युवयोर्द्वयोरपि अनेन 'नीलुप्पलगवलगुलिय—अयसिकुसुमप्पगासेण' नीलोत्पलगवलगुलिकाऽतसीकुसुमप्रकाशेन-नीलोत्पल=नीलकमल, गवल=महिषशृङ्ग, गुलिका=नीली 'गुली' इति प्रसिद्धा, अतसीकुसुमम् -'अलसी' इति प्रसिद्ध धान्यवि

जहा वे दोनो मकदी सार्थवाह के दारक थे वहा आई वहाँ आकर वह क्रोध से क्रोधित हुई और उन माकदीदारकों से कर्कश-कठोर एव रूक्ष वचन बोलती हुई इस प्रकार कहने लगी-(ह भो मागदिदारया! अपत्थिय पत्थिया जईण तुब्भे मए सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणा नो विहरह तो भे इमेण नीलुप्पलगवलगुलियअयसियकुसुमप्पभासेण असिणा खुरधारेण असिणा रत्तगडमसुयाइ माउयाहिं उवसोहियाइ ताल फलाणीव सीसाइ एगते एडेमि) अरे ओ माकदी दारको! मालूम पडता है कि तूम दोनो अप्रार्थित-मृत्यु-के प्रार्थक-वाञ्छक बन रहे हो-। यदि तुम लोग मेरे साथ विपुल शब्दादि विषयों को भोगो तब ही तुम दोनों का जीवन सुरक्षित बच सकता है यदि मेरे साथ विपुल शब्दादि विषयोको नहीं भोग सकते हो तो देखो-नील

ઉત્કૃષ્ટ દેવની ગતિથી ઝડપથી ચાલતી ચાલતી જ્યા તેઓ ણ ને માકદી સાથવાહના પુત્રો હતા ત્યા આવી પહોચી અને કર્કશ-કઠોર તેમજ રુક્ષ વચનોનો પ્રયોગ કરતી માકદી દારકોને આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે—

(ह भो मागदिदारया! अपत्थियपत्थिया जइण तुब्भे मए सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणा नो विहरह तो भे इमेण नीलुप्पलगवलगुलिय अयसिय कुसुमप्पगासे ण असिणा खुरधारेण आसिणा रत्तगड मसुयाइ माउयाहिं उवसोहियाइ ताल फलाणीव सीसाइ एगते एडेमि)

અરે ઓ માકદી દારકો! મને લાગે છે કે તમે અપ્રાર્થિત મૃત્યુને ઈચ્છી રહ્યા છો હવે જો તમે મારી સાથે રહીને પુષ્કળ પ્રમાણુમા શબ્દાદિ વિષયોને ભોગવવા માટે તૈયાર થાઓ તો જ તમારુ જીવન બચી શકે તેમ છે, જો તમે મારી સાથે શબ્દ વગેરે વિષયોને ભોગવામા

शेषपुष्पं, तद्वत् प्रकाशः=अतिश्यामवर्णो यस्य स तथा, तेन ' खुरधारेण ' क्षुर धारेण क्षुरवत्तीक्ष्णधारेण ' असिणा ' असिना=खड्गेन ' रत्तगंडमंसुयाइं ' रक्तगण्ड-श्मश्रुके रक्तौ=तरुणावस्थत्वेन लालिमायुक्तौ गण्डौ=कपोलौ, श्यामानि श्मश्रूणि च ययोस्ते, ' माउयाहिं ' मातृकाभ्या=स्वस्व मातृभ्या ' उवमोहियाइं ' उपशोभिते शृङ्गारार्थं समारचितकेशवेशत्वादपूर्वशोभासम्पन्ने ' सीसाइं ' शीर्षे=उभयोर्मस्तकौ ' तालफलाणीव ' ताडफलेइव छित्वा एकान्ते ' एडेमि '=प्रक्षिपामि । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ रत्नद्वीपदेवतया अन्तिके एतद्वचन श्रुत्वा भीतौ करतलपरि

कमल, महिष शृंग, नीली, अलसी पुष्प के समान अतिशय श्याम वर्ण वाली इस तलवार से कि जो छुरा की धार के समान तीक्ष्ण धार वाली है तुम दोनों के मस्तकों को कि जो तरुणाई से लाल हुए कपोलों से युक्त हैं, तथा अपनी २ जननियों-माताओं-द्वारा जिन पर शोभा निमित्त समारचित केशवेश से अपूर्व सौदर्य वाला है, ताड फल के समान काटकर एकान्त स्थान में फेकदूंगी (तएण ते मागदिय दारगा रयणदीव देवयाए अतिए सोच्चा भीया करयल० एव जण्ण देवाणुप्पिया ! वइस्ससि तस्स आणा उववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो-तएण सा रयणद्दीवदेवया ते मागदियदारए गेण्हति, २ जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ २ असुभ पोग्गलावहारकरेइ २ सुभपोग्गल पक्खेव करेइ करित्ता पच्छाते हिं विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणि विहरइ कल्लाकल्लिं च अमय फलाइ उवणेइ) इस प्रकार वे दोनों माकदी दारक

જુઓ નીલકમળ, મહિષશૃંગ, નીલી અળશીના પુષ્પની જેમ ખૂબજ શ્યામ રંગવાળી આ તરવારથી-કે જે છરાની ધારના જેવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી છે-તમારા બનેના માથાઓ કે જેઓ જવાનીથી લાલ લાલ થયેલા કપોલોવાળા છે, કાળી દાઢી અને મૂછોથી શોભી રહ્યા છે તેમજ પોતપોતાની માતાઓ વડે કેશ વિન્યાસ કરવાથી અપૂર્વ સૌદર્યથી જેઓ દીપી રહ્યા છે તાડફળની જેમ કાપીને હું નિર્જન સ્થાન ફેંકી દઇશ

(तएण ते मागदियदारगा रयणदीवदेवयाए अतिए सोच्चा भीया करयल. एव जण्ण देवाणुप्पिया ! वइस्ससि तस्स आणा उववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो तएण सा रयणद्दीवदेवया ते मागदियदारए गेण्हति २ जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ २ असुभपोग्गलावहार करेइ २ सुभपोग्गलपक्खेव करेइ करित्ता पच्छाएहिं विउलाइ भोग भोगाइ भुजमाणी विहरइ कल्लाकल्लिं च अमयफलाइ उवणेइ)

गृहीत शिरआवर्त्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिष्टाम्-एवच य खलु कश्चित्प्रेष्याणामपि प्रेष्य हे देवानुप्रिये ! त्वमस्मदर्थं वदिष्यसि यदुत ' युवयोरय मारा च ' इति, तदा ' तस्स ' तस्यापि ' आणाउववायवयणनिद्देसे ' आज्ञोपपातवचननिर्देशे-आज्ञा=विधेयतयाऽऽदेशः, उपपातः=सेवा, वचनम्=अनियत आदेशएव निर्देशः=नियतार्थमुत्तरम्, एतेषा समाहारः, तत्र स्थास्याव=उपस्थास्यावः किं पुनर्भवत्याः ? त्वदनुमत्या तव दासानुदासस्यापि दासत्व स्वीकरिष्याव इति भावः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव स्वस्य प्रासादावतसकः=प्रधानवासभवन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तयोः शरीरे अशुभपुद्गलापहार करोति, कृत्वा शुभ पुद्गलप्रक्षेप करोति कृत्वा पश्चात् ताभ्यां

रयण देवी (रत्नद्वीपदेवी) के वचन सुनकर भयभीत हो गये । पश्चात् उन्हो ने दोनों हाथोंकी अजलि बनाकर और उसे अपने मस्तक पर रखकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये । आपका यदि कोई नौकर का भी नौकर होगा और आप उसकी सेवा करनेके लिये भी हमसे कहेंगी-तो हम उसकी भी आज्ञा सेवा, आदेश और निर्देश करने के लिये कटिबद्ध हैं-तो फिर आपकी सेवा करने आदि की तो बात ही क्या है।

आपकी आज्ञा से तो हम आपके दासों के भी दासो की दासता स्वीकार करने के लिये तैयार है । तो फिर आपकी दासता के लिये तो कहना ही क्या है । इस प्रकार माकदी-दारको की बात सुनकर उस रयणादेवी (रत्न दीप देवी) ने उन्हें अपने साथ लिया और लेकर वह अपने श्रेष्ठ प्रासाद में आगई । वहा आकर उसने उन दोनो के शरीर में से अशुभ पुद्गलो को दूर किया और शुभ पुद्गलों को डाल दिया।

રયણાદેવીના વચનો સાભળીને બને માકદી દારકો ભયભીત થઈ ગયા તેઓ બનેએ હાથોની અજલી બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમારા નોકર ના પણ કોઈ નોકર હોય અને તમે અમને તેની નોકરી પણ કરાવશો તો અમે તેની પણ આજ્ઞા, આદેશ અને હુકમ પ્રમાણે અનુસરવા તૈયાર છીએ તો તમારી સેવાની વાત જ રી કહેવી ?

તમારા હુકમથી તો અમે તમારા દાસોના દાસોની દાસતા સ્વીકારવા તૈયાર છીએ તો તમારી દાસતા માટે હવે અમારે કહેવાનુજ શુ રહે ? આ પ્રમાણે માકદી દારકોની વાત સાભળીને રયણા દેવી (રત્ન દીપ દેવી) એ તેઓને પોતાની સાથે લીધા અને લઈને તે પોતાના એક સૌથી આગ મહેલમા ગઈ ત્યા જઈને તેણે તેમના શરીરમાથી અશુભ પુદ્ગલો દૂર કર્યા અને શુભ

सार्द्धं विपुलान्=भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जाना विहरति=आस्तेस्म, 'कल्लाकल्लिंच' कल्याकल्यि=प्रतिदिनं च अमृतफलानि=अमृततुल्यफलानि 'उवणेइ' उपनयति=आनीय ददाति, तौ च प्रतिदिन तानि फलानि भुञ्जानौ तया सार्धं कामभोगान् सेवमानौ विहृतः इतिभावः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं सा रयणदीवदेवया सक्कवयणसंदेसणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टियव्वेत्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइं पूतिय दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय२ तिसत्तखुत्तो एगते एडेयव्वंतिकट्टुणिउत्ता, तएण सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! सक्क० सुट्ठिएणं त चेव जाव णिउत्ता, तं जाव अहं देवा० ! लवणसमुद्दे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुहसुहेण अभिरममाणा चिट्ठह, जइ णं तुब्भे एयसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरच्छिमिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह, तत्थण दो ऊऊ सया साहीणा त जहा-पाउसे य वासारत्तेय,—(गाहा) तत्थ उ कदलसिलिधदंतो णिउरवरपुप्फपीवरकरो । कुडयज्जुणणीवसुरभिदाणो पाउसउ-

पश्चात् उन दोनो के साथ विपुल भोग भोगों—शब्दादि विषयों को —भोगने लगी । प्रतिदिन वह उन्हें अमृत फलों को लाकर देती और वे दोनों उन्हें खाते । इस प्रकार वे दोनों सार्थवाह दारक उसके साथ वहा कामभोगों को भोगते हुए रहने लगे । "सू० ३"

પુદ્ગલોને ભૂક્કી દીધા ત્યાર પછી રયણા દેવી તેઓ બનેની સાથે વિપુલ કામ ભોગો શબ્દ વગેરે વિષયોનો ઉપભોગ કરતી રહેવા લાગી હમેશા તે તેઓ બનેને અમૃત ફળો લાવીને આપતી અને તેઓ પણ ફળો ખાતા આ રીતે બને સાર્થવાહ પુત્રો તેની સાથે કામ ભોગો ભોગવતા રહેવા લા ૩ ॥

ऊगयवरो साहिणो ॥१॥ तत्थ य-सुरगोवमणिविचित्तो ददुदुर कुलरसियउज्झररवो । वरहिणविद्दपरिणद्धसिहरो वासारत्तो उऊपव्वतो साहिणो ॥२॥ तत्थणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहुसु वावीसु य जाव सरसरपतियासु बहुसु आलीघरएसु य माली-घरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुह सुहेणं अभिरममाणा विहरेज्जाह, जइणं तुब्भे एत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्ल वणसड गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं० सरदो य हेमंतो य, तत्थ उ सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिगो । सारसचक्क-वायरवितघोसो सरयऊऊगोवती साहीणो ॥१॥ तत्थ य सिय-कुदधवलजोण्हो कुसुमितलोद्धवणसडमडलतलो । तुसारदग-धारपीवरकरो हेमंतऊऊससी सया साहीणा ॥ २ ॥ तत्थणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरेज्जाह, जइणं तुब्भे तत्थवि उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिल्ल वणसड गच्छेज्जाह, तत्थणं दो ऊऊ साहीणा, तं जहा वसते य गिम्हे य, तत्थ उ सहकारचारुहारो किंसुयकण्णि-यारासोगमउडो । ऊसिततिलगवउलायवत्तो वसतउऊणरवती साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य पाडलसिरीससलिलो मालियावासति-यधवलवेलो । सीयलसुरभि अनिलमगरचरिओ गिम्हऊऊसा-गरो साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह, जइ णं तुब्भे देवा० ! तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पडिवालेमा-

सार्द्धं विपुलान्=भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जाना विहरति=आस्तेस्म, 'कल्लाकल्लिंच' कल्याकल्यि=प्रतिदिनं च अमृतफलानि=अमृततुल्यफलानि 'उवणेइ' उपनयति=आनीय ददाति, तौ च प्रतिदिन तानि फलानि भुञ्जानौ तया सार्धं कामभोगान् सेवमानौ विहृतः इतिभावः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्–तएणं सा रयणदीवदेवया सक्कवयणसदेसणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टियव्वेत्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्त वा कट्ठं वा कयवर वा असुइं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं त सव्वं आहुणिय२ तिसत्तखुत्तो एगते एडेयव्वंतिकट्टुणिउत्ता, तएणं सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वयासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्क० सुट्ठिएणं त चेव जाव णिउत्ता, तं जाव अह देवा० ! लवणसमुद्दे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिसए सुहसुहेण अभिरममाणा चिट्ठह, जइ णं तुब्भे एयसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरच्छिमिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह, तत्थण दो ऊऊ सया साहीणा त जहा-पाउसे य वासारत्तेय,–(गाहा) तत्थ उ कदलसिलिधदंतो णिउरवरपुप्फपविरकरो । कुडयज्जुणणिवसुरभिदाणो पाउसउ-

पश्चात् उन दोनों के साथ विपुल भोग भोगों–शब्दादि विषयों को –भोगने लगी । प्रतिदिन वह उन्हें अमृत फलो को लाकर देती और वे दोनों उन्हें खाते । इस प्रकार वे दोनों सार्थवाह दारक उसके साथ वहा कामभोगों को भोगते हुए रहने लगे । "सू० ३"

પુદ્ગલોને ભૂકી દીધા ત્યાર પછી રયણા દેવી તેઓ બનેની સાથે વિપુલ કામ ભોગો શબ્દ વગેરે વિષયોનો ઉપભોગ કરતી રહેવા લાગી હમેશા તે તેઓ બનેને અમૃત ફળો લાવીને આપતી અને તેઓ પણ ફળો ખાતા આ રીતે બને સાર્થવાહ પુત્રો તેની સાથે કામ ભોગો ભોગવતા રહેવા સૂત્ર ૩ ॥

किमर्थं ? मित्याह-' जक्किंचि ' इत्यादि । यत्किञ्चित्तत्र तृण वा, पत्र वा, काष्ठं वा, कचवर वा, अशुचि=विष्टा, पूतिक=अर्धपक्वशोणित, दुरभिगन्ध=दुर्गन्धयुक्त वस्तुजातम् ' अचोक्ख ' अचोक्षम्=अपवित्र तिष्ठति तत्सर्वम् ' तिसत्तखुत्तो ' त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम्० ' आहुणिय २ ' आधूय २ अपनीय २ एकान्ते ' एडेयव्व ' त्यक्तव्यम् इति कृत्वा इत्थ मर्हुं ' णिउत्ता ' नियुक्ता=अधिकृता= आज्ञप्तेत्यर्थः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्- एव खलु देवानुप्रियौ ! शक्रवचनसंदेशेन सुस्थितेन० तदेव यावत्-अहं नियुक्ता, तद् यावदहं देवानुप्रियौ ! लवणसमुद्रे ' जाव ' यावत्-यावत्शब्देन तत्र गत्वा

चारों तरफ से चक्कर लगाओं (ज किंचि तत्थतणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वंति कट्टु निउत्तो) उसमें जो कुछ भी तुम्हें वहां तृण, पत्र, काष्ठ, कूडा, विष्टा अर्धपक्व शोणित अथवा दुर्गंधित वस्तु अदि अपवित्र पदार्थ नजर आवें उन सबको तुम एकवीस वार मे वहां से हटा २ कर एकान्त मे डाल देना " इस काम पर नियुक्त किया । (तएणं सा रयणद्दीवदेवया ते मागदियदारए एवं वयासी- एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्क० सुट्ठिएणं तं चेव जाव णिउत्ता) इसके बाद उस रत्न द्वीप देवता-रयणा देवीने उन माकंदी दारकों से ऐसा कहा-देवानु प्रियों ! मैं सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से लवणाधिपति सुस्थित देवके द्वारा २१ वार लवण समुद्र के चारो ओर चक्कर लगाने के लिये आज्ञप्त की गई हूँ अतः (तं जाव अहं देवाणु० लवणसमुद्दे

(जं किं चि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइं पूतियं दुरभिगंध मचोक्खं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय ति खुत्तो एगंते एडेयव्वं ति कट्टु निउत्ता)

અને તેમા ગમે ત્યા તૃણ, પત્ર, કાષ્ઠ, કચરો, વિષ્ટા અર્ધપકવ શોણિત (લોહી) અથવા તો દુર્ગંધિત વસ્તુ અપવિત્ર પદાર્થ દેખાય તો તેને તમે એકવીશ વખત ફરતા ફરતા ત્યાથી લઈને એકાતમા દૂર ફેકી દો સુસ્થિત દેવે દેવન્દ્રની આજ્ઞાથી આ કામ રયણાદેવીને સોપ્યુ

(तएणं सा रयणद्दीवदेवया ते मागदियदारए एवं वयासी एवं खलु अहं देवाणुप्पिया सक्क० सुट्ठिएणं तं चेव जाव णिउत्ता)

ત્યાર પછી તે રત્નદ્વીપ દેવતા રયણા દેવીએ માકદીદ રકોને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! મને સૌધર્મેન્દ્રની આજ્ઞાથી લવણાધિપતિ સુસ્થિત દેવ વડે લવણ સમુદ્રની ચારે બાજુએ એકવીશવાર ચક્કર મારવાની આજ્ઞા મળી છે એટલા માટે

णा२ चिट्ठेज्जाह, माण तुब्भे दक्खिणिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह, तत्थण महं एगे उग्गविसे चडविसे घोरविसे महाविसे अइकाय महाकाए जहा तेयनिसग्गे मसिमहिसामूसाकालए नयणवि सरोसपुण्णे अजणपुजनिगरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचल-चलतजीहे धरणियलवेणिभूए उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडवि-यडफडाडोवकरणदच्छे लोगाहारधम्ममाणधमधमेंतघोसे अणा-गलियचंडतिव्वरोसे समुहि तुरिय चवल धमधमतदिट्ठीविसे सप्पे य परिवसति, माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ, ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव वयइ वइत्ता वेउव्वियसमु-ग्घाएण समोहइ समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्द तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेय पयत्ता यावि होत्था ॥ सू०४ ॥

टीका—'तएण सा' इत्यादि। ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता=रत्नद्वीपदेवी 'सक्कवयणसदेसेण' शक्रवचनसदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया 'सुट्ठिएण' सुस्थितेन=सुस्थितनामकदेवेन, 'लवणाहिवइणा' लवणाधिपतिना=लवणसमुद्रस्वामिना नियुक्तेत्यन्वय नियोजनप्रकारमाह—लवणसमुद्र 'तिसत्तखुत्तो' त्रिसप्तकृत्व'—एकविंशतिवारम् 'अणुपरियट्टियव्वे' अनुपर्यटितव्य समन्तात्परिभ्रमणीय. इति,

"तएण सा रयण दीव देवया" इत्यादि।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (सक्कवयणसदेसेण) देवेन्द्रकी आज्ञासे (लवणाहिवइणा) लवणाधिपति (सुट्ठिएण) सुस्थित देवने (सा-रयणदीवदेवया) उस रत्नद्वीप देवता–रयणा देवी को (लवणस मुद्दे तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टियव्वेत्ति) लवणसमुद्र के तुम २१ बार

(तएण सा रयणदीव देवया ' इत्यादि ॥

ટીકાર્થ–(तएण) त्यार બાદ (सक्कवयणसदेसेण) દેવેન્દ્રની આજ્ઞાથી (लवणाहिवइणा) લવણ સમુદ્રના અધિપતિ (सुट्ठिएण) સુસ્થિત દેવે (सा रयणदीवदेवया) તે રત્ન દ્વીપ-દેવતા–રયણા દેવીને लवणसमुद्दे ति सत्तखुत्तो अणुपरियट्टियव्वेत्ति) કહ્યું કે લવણ સમુદ્રની ચારે બાજુએ તમે એકવીશ વખત ચક્કર લગાવો

किमर्थ ? मित्याह–' जक्किंचि ' इत्यादि । यत्किञ्चित्तत्र तृण वा, पत्र वा, काष्ठं वा, कचवर वा, अशुचि=विष्टा, पूतिक=अर्धपक्वशोणित, दुरभिगध=दुर्गन्धयुक्त वस्तुजातम् ' अचोक्ख ' अचोक्षम्=अपवित्र तिष्ठति तत्सर्वम् ' तिसत्तखुत्तो ' त्रिसप्तकृत्व.=एकविंशतिवारम्० ' आहुणिय २ ' आहृत्य २ अपनीय २ एकान्ते ' एडेयव्व ' त्यक्तव्यम् इति कृत्वा इत्य र्थं ' णिउत्ता ' नियुक्ता=अधिकृता= आज्ञप्तेत्यर्थ. । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्– एव खलु देवानुप्रियौ ! शक्रवचनसदेशेन सुस्थितेन० तदेव यावत्–अहं नियुक्ता, तद् यावदहं देवानुप्रियौ ! लवणसमुद्रे ' जाव ' यावत्–यावत्पदेन तत्र गत्वा

चारों तरफ से चक्कर लगाओं (ज किंचि तत्थतण वा पत्त वा कठ वा कयवर वा असुइ पूतिय दुरभिगधमचोक्ख त सव्व आहुणिय आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगते एडेयव्वति कट्टु निउत्ता) उसमे जो कुछ भी तुम्हें वहा तृण, पत्र, काष्ठ, कूडा, विष्टा अर्धपक्व शोणित अथवा दुर्गधित वस्तु अदि अपवित्र पदार्थ नजर आवें उन सबको तुम एकवीस वार मे वहा से हटा २ कर एकान्त में डाल देना " इस काम पर नियुक्त किया । (तएण सा रयणद्दीवदेवया ते मगदियदारए एव वयासी– एव खलु अह देवाणुप्पिया ! सक्क० सुट्ठिएण त चेव जाव णिउत्ता) इसके बाद उस रत्न द्वीप देवता–रयणा देवीने उन माकदी दारकों से ऐसा कहा–देवानु प्रियों ! मै सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से लवणाधिपति सुस्थित देवके द्वारा २१ वार लवण समुद्र के चारो ओर चक्कर लगाने के लिये आज्ञप्त की गई हूँ अतः (त जाव अह देवाणु० लवणसमुद्दे

(ज किं चि तत्थ तणवा पत्तवा कट्ठ वा कयवर वा असुइ पूतिय दुरभिगध मचोक्ख त सव्व आहुणिय आहुणिय ति खुत्तो एगते एडेयव्व ति कट्टु निउत्ता)

અને તેમા ગમે ત્યા તૃણ, પત્ર, કાષ્ઠ, કચરો, વિષ્ટા અર્ધપકવ શોણિત (લોહી) અથવા તો દુર્ગધિત વસ્તુ અપવિત્ર પદાર્થ દેખાય તો તેને તમે એકવીશ વખત ફરતા ફરતા ત્યાથી લઈને એકાતમા દૂર દેકી દો સુસ્થિત દેવે દેવન્દ્રની આજ્ઞા થી આ કામ રયણાદેવીને સોપ્યુ

(तएण सा रयणद्दीवदेवया ते मागदियदारए एव वयासी एव खलु अह देवाणुप्पिया सक्क० सुट्ठिए ण त चेव जाव णिउत्ता)

ત્યાર પછી તે રત્નદ્વીપ દેવતા રયણા દેવીએ માકદીદ રકોને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! મને સૌધર્મેન્દ્રની આજ્ઞાથી લવણાધિપતિ સુસ્થિત દેવ વડે લવણ સમુદ્રની ચારે બાજુએ એકવીશવાર ચક્કર મારવાની આજ્ઞા મળી છે એટલા માટે

तृणादिकमपनीय चैकान्ते त्यजामि तावद् युवाम् इहैव प्रासादावतंसके सुखसुखे नाभिरममाणौ तिष्ठतम्, यदि खलु युवाम्, एतस्मिन्नन्तरे 'उव्विग्गावा' उद्विग्नौवा=अत्रावस्थानेन खिन्नौ, 'उस्सुया वा=उत्कण्ठितौ मनोरञ्जनमनस्कावित्यर्थः, 'उप्पुया वा' उत्प्लुतौ क्रीडोत्कण्ठितमानसौ वा 'भवेज्जाह' भवेतम् यद्यत्रास्थानेन युवयोर्मनस्युद्वेग उत्कण्ठ क्रीडनेच्छा वा भवेत् 'तोण' तदा खलु युवां 'पुरत्थिमिल्ल' पौरस्त्य=पूर्वदिशासस्थित वनपण्डम्=उद्यान 'गच्छेज्जाह' गच्छत युवाभ्या रम्य पूर्वदिशोद्यान गन्तव्यमित्यर्थः, यतोहि तत्र खलु द्वौ ऋतू सदा 'साहीणा', स्वाधीनौ=वर्त्तमानौस्त, तद्यथा-'पाउसेय वासारत्तेय' प्रावृड्ढ वर्षारात्रश्च। तत्र प्रावृड्-अषाढ श्रावणौ वर्षारात्रः-भाद्रपदाश्विनौ, तस्मिन् वनपण्डे

जाव एडेमि-ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुह सुहेण अभिरममाणा चिट्ठह जइणं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तोण तुब्भे पुरच्छिमिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह)मैं जबतक २१ बार चक्कर लगाकर वहांके तृण काष्ठ आदि दूर फेंकनेके काममें लगी रहूं तब तक हे देवानुप्रियो! तुम दोनों इसी श्रेष्ठ प्रासादमें आनन्दसे रहना। यदि यहां रहते२ तुम्हारे चित्त उद्विग्न हो जावे अथवा मनोरंजनके लिये उत्कंठित हो जावे अथवा क्रीडाकरने के लिये लालायित बन जावे तो तुम दोनों पूर्व दिशा में संस्थित उद्यान में चले जाना (तत्थणं दो ऊ ऊ सया साहीणा तं जहा पाउसेय वासारत्ते य) वहां सदा दो ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं। एकतो प्रावृड् ऋतु दूसरी वर्षा रात-आषाढ श्रावण ये नो महिने प्रावृड ऋतु के हैं-तथा भाद्रपद एव आश्विन ये दो मास

(त जाव अह देवाणु० लवणसमुद्दे जाव एडेमि-ताव तुब्भे इहेव पसायवडिंसए सुह सुहेण अभिरममाणा चिट्ठह जइणं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गावा उस्सुया वा उप्पुयावा भवेज्जाह तो ण तुब्भे पुरच्छिमिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह)

હું જ્યા સુધી સમુદ્રના એકવીશ ચક્કર મારી ત્યાના તૃણ કાષ વગેરેને દૂર ફેંકવાના કામમા પરોવાઈ રહું ત્યા સુધી હે દેવાનુપ્રિયો! તમે બને આજ શ્રેષ્ઠ મહેલમા સુખેથી રહેજો અહીં રહેતા જો તમને કંટાળો આવવા લાગે, મન તમારૂ ઉદ્વિગ્ન થઈ જાય મનોરંજન કરવાની તમારી ઈચ્છા થાય કે ક્રીડા કરવાની ઉત્કટ અભિલાષા તમારામા ઉત્પન્ન થાય તો બને પૂર્વ દિશાના ઉદ્યાનમા જતા રહેજો (तत्थ ण दो ऊ ऊ सया साहीणा तं जहा पाउसेय वासारत्तेय) તે ઉદ્યાનમા હરહંમેશા બે ઋતુઓ હાજર રહે છે એક પ્રાવૃડ્ ઋતુ અને બીજી વર્ષા અષાઢ શ્રાવણ આ બે મહિના પ્રાવૃડ્ ઋતુના છે અને ભાદરવો અને આસો આ બે મહિના વર્ષા ઋતુના છે

श्रावणादि मासचतुष्टयसदृशो रमणीयः समय सदा वर्त्तत इतिभावः । अत्र वनषण्डे प्रावृड्ऋतुर्गजरूपकेण वर्ण्यते-तत्रतु=तस्मिन् ' पाउसऊऊगयवरो ' प्रावृड्ऋतुगजवर ' साहीणो ' स्वाधीनः अस्तित्स्वेन स्वायत्त सदा वर्त्तते । स कीदृश ? इत्याह-' कदलसिलिंधदतो ' कदलसिलिन्ध्रदन्तः-कन्दलाः=नूतनलता', तत्सधानाः सिलिन्ध्रा' ये प्रावृषि पुष्यन्ति श्वेतकुसुमयुक्ताश्च भवन्ति तएव धवलत्वसाधर्म्यात् दन्ता यस्य स तथोक्ता, पुनः ' णिउरवरपुप्फपीवरकरो ' निकुरवरपुष्पपीवरकरः निकुर=वृक्षविशेषस्तस्य वरपुष्पाणि=आयामत्वेन-एकैकोपरि निस्सृतानि शुण्डाकारेण परिणतानि तान्येव पीवरः=स्थूलः करः=शुण्डा यस्य स तथोक्तः। पुनः ' कुडयज्जुणणीवसुरभिदाणो ' कुटलार्जुननीपसुरभिदानः-कुटजार्जुननीपवृक्षपुष्पाणि, तेषा सुरभिः=सुगन्धः स एव दान=मदजल यस्य स तथोक्त । एतादृशो वर्षा ऋतु गजराजः सदैव तत्र वर्त्तत इतिभावः ॥ १ ॥ अथ वर्षाऋतुः पर्वत,

---

वर्षा रात के हैं। (तत्थउ-कदला सिलिंधदतो णिउरवरपुप्फपीवर करो, कुडयज्जुणणीव सुरभिदाणो पाउस ऊऊ, गयवरो साहीणो " १ " इन चार महिनो में जैसा समय रमणीय रहता है-वैसा समय वहां सदा रमणीय बना रहता है। सूत्रकार वनषड वर्तमान प्रावृड ऋतु का गज के रूपक से वर्णन करते हुए कहते हैं-कि कदल-नवीन लताएँ और सिलिंध्र-जो वर्षा में फूलते हैं और फूल जिनका सफेद होता है -ये दोनो ही जिसके दात हैं। निकुर-वृक्ष विशेष-के उत्तम पुष्प ही जिसके पीवर शुण्डादड हैं तथा कुटज अर्जुन एव नीप वृक्षोंके पुष्पोंकी सुगधि ही जिसका मदजल है ऐसा वर्षाऋतु रूप गजराज उस वनमें सदा विचरण करता रहता है। निकुरवृक्षके पुष्प एक एकके ऊपर निकलते हैं।

(तत्थ उ कदलसिलिंधदतो णिउरवरपुप्फपीवरकरो कुडयज्जुणणीव सुरभिदाणो पाउस ऊ ऊ गयवरो साहीणो ॥ १ ॥

એ ચાર મહિનામા વાતાવરણ જેવું સોહામણું રહે છે તેવું ત્યા હરહ મેશા સોહામણુ રહે છે સૂત્રકાર વનખડમા વર્તમાન પ્રાવૃડ્ ઋતુનુ હાથીના રૂપકથી વર્ણન કરતા કહે છે કે-કદલ-નવી લતાઓ-અને સિલિંધ્ર-કે જે વર્ષા કાળમા ફૂલે છે અને જેના ફૂલ સફેદ હોય છે-આ બને જ જેના દાતો છે નિકુર-વૃક્ષ વિશેષ-ના ઉત્તમ પુષ્પો જ જેની સુડાળ સૂઢ છે તેમજ કુટજ, અર્જુન અને નીપ વૃક્ષોના પુષ્પોની સુવાસ જ જેનો મદ છે વર્ષા ઋતુ રૂપી એવો ગજરાજ તે વનમા હમેશા વિચરણ કરતો જ રહે છે નિકુર વૃક્ષના પુષ્પો

ઉપરાઉ પર નીકળે છે

तृणादिकमपनीय चैकान्ते त्यजामि तावद् युवाम् इहैव प्रासादावतंसके सुखसुखे नाभिरममाणौ तिष्ठतम्, यदि खलु युवाम्, एतस्मिन्नन्तरे 'उव्विग्गावा' उद्विग्नौवा=अत्रावस्थानेन खिन्नौ, 'उस्सुया वा=उत्कण्ठितौ मनोरञ्जनमनस्कावित्यर्थः, 'उप्पुया वा' उत्प्लुतौ क्रीडोत्कण्ठितमानसौ वा 'भवेज्जाह' भवेतम् यद्यत्रास्थानेन युवयोर्मनस्युद्वेग उत्कण्ठ क्रीडनेच्छा वा भवेत् 'तोण' तदा खलु युवां 'पुरत्थिमिल्ल' पौरस्त्य=पूर्वदिशासस्थित वनषण्डम्=उद्यान 'गच्छेज्जाह' गच्छत युवाभ्या रम्य पूर्वदिशोद्यान गन्तव्यमित्यर्थः, यतोहि तत्र खलु द्वौ ऋतू सदा 'साहीणा', स्वाधीनौ=वर्त्तमानौस्त, तद्यथा-'पाउसेय वासारत्तेय' प्रवृड्ढ वर्षारात्रश्च। तत्र प्रावृड्-अषाढ श्रावणौ वर्षारात्रः-भाद्रपदाश्विनौ, तस्मिन् वनषण्डे

जाव एडेमि-ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुहं सुहेण अभिरममाणा चिट्ठह जइणं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तोण तुब्भे पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह)में जबतक ११ बार चक्कर लगाकर वहांके तृण काष्ट आदि दूर फेंकनेके काममें लगी रहूं तब तक हे देवानुप्रियो! तुम दोनों इसी श्रेष्ठ प्रासादमें आनन्दसे रहना। यदि यहां रहते२ तुम्हारे चित्त उद्विग्न हो जावे अथवा मनोरंजनके लिये उत्कण्ठित हो जावे अथवा क्रीडाकरने के लिये लालायित बन जावे तो तुम दोनों पूर्व दिशा मे संस्थित उद्यान में चले जाना (तत्थणं दो ऊ ऊ सया साहीणा तं जहा पाउसेय वासारत्ते य) वहां सदा दो ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं। एकतो प्रावृड् ऋतु दूसरी वर्षा रात-आषाढ श्रावण ये नो महिने प्रावृड ऋतु के हैं-तथा भाद्रपद एव आश्विन ये दो मास

(त जाव अहं देवाणु० लवणसमुद्दे जाव एडेमि-ताव तुब्भे इहेव पसाय वडिंसए सुहं सुहेण अभिरममाणा चिट्ठह जइणं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गावा अस्सुया वा उप्पुयावा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह)

હું જ્યા સુધી લવણસમુદ્રના એકવીશ ચક્કર મારી ત્યાના તૃણ કાષ્ઠ વગેરેને દૂર ફેંકવાના કામમા પરોવાઈ રહું ત્યા સુધી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બને આજ શ્રેષ્ઠ મહેલમા સુખેથી રહેજો અહીં રહેતા જો તમને કંટાળો આવવા લાગે, મન તમારૂ ઉદ્વિગ્ન થઈ જાય મનોરંજન કરવાની તમારી ઈચ્છા થાય કે ક્રીડા કરવાની ઉત્કટ અભિલાષા તમારામા ઉત્પન્ન થાય તો બને પૂર્વ દિશાના ઉદ્યાનમા જતા રહેજો (तत्थ ण दो ऊ ऊ सया साहीणा त जहा पाउसेय वासारत्तेय) તે ઉદ્યાનમા હરહંમેશા બે ઋતુઓ હાજર રહે છે એક પ્રાવૃડ્ ઋતુ અને બીજી વર્ષા અષાઢ શ્રાવણ આ બે મહિના પ્રાવૃડ્ ઋતુના છે અને ભાદરવો અને આસો આ બે મહિના વર્ષા ઋતુના છે

युवा देवानुप्रियौ वहीषु वापीषु च यावत् 'सरसरपतियासु' सरः सर पङ्क्ति कासु पररपर सलग्नेषु बहुषु सररसु, यत्रैकस्मात्सरसोऽन्यस्मिन् तस्मादपरस्मिन्, एव सचरणपरम्परयैदक सचरति, तासु । बहुषु 'आलिघरएसु य' आलिगृहेषु आलिः=रम्यवनस्पतिविशेषस्तस्य गृहेषु 'जाव' यावत्-यावच्छब्देन-कदलीगृहेषु च लतागृहेषु च-अच्छणगृहेषु च प्रेक्षणगृहेषु च प्रसाधनगृहेषु च मोहनगृहेषु च शाला (शाखा) गृहेषु च जालगृहेषु च इति सग्रहः, कुसुमगृहेषु=पुष्पगृहेषु च सुखसुखेन=सुखपूर्वकम् 'अभिरममाणा' अभिरममाणौ=क्रीडा कुर्वाणौ विहरत=तिष्ठतम् ।

पुत्रों को वह रयणादेवी समझा रही है। और साथ में यह भी कह रही है कि (तत्थण तुब्भे देवाणुप्पिया! बहुसु वावी सु य जाव सरसरपतियासु बहुसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुह सुहेणं अभिरममाणा विहरेज्जाह) हे देवानुप्रियो! वहा तुम अनेक वापिकाओं में यावत् अनेक सर सर पक्तियों में अलिघरों मे कदली गृहों में लता गृहों में अच्छण गृहो में प्रक्षण गृहों में, प्रसाधन गृहों में, मोहन घरों में, शाखा गृहों में, जाल गृहों मे, तथा पुष्प गृहों में, सुखपूर्वक क्रीडा करते हुए अपने समय को व्यतीत करते रहना। अनेक तालाब जहा पक्ति बद्ध श्रेणीमें स्थित रहते हैं उस का नाम सरपक्ति है। इन पक्ति आकार स्थित तालाबो मे एक एक दूसरे तालाब का जल आता जाता रहता है। रम्यवनस्पति विशेष के जो गृह होते हैं उनका नाम आलि गृह है। (जइण) यदि (तुब्भे

પુત્રોને રયણા દેવી સમજાવી રહી હતી–અને આ પ્રમાણે આગળ કહેવા લાગી હતી કે (तत्थण तुब्भे देवाणुप्पिया! बहुसु वावीसु य जाव सरसरपतियासु बहुसु आली-घरएसुय मालीघरएसुय जाव कुसुमघरएसुय सुह सुहेण अभिरममाणा विहरेज्जाह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા તમે ઘણી વાપિકાઓ (વાવો) મા યાવત્ ઘણી સર સરપક્તિઓ (સરોવરો) મા, આલિઘરોમા, કદલીગૃહોમા, લતાગૃહોમા, અચ્છનગૃહોમા, પ્રેક્ષણગૃહોમા, પ્રસાધનગૃહોમા, મોહનઘરોમા, શાખાગૃહોમા, જાલગૃહોમા તેમજ પુષ્પગૃહોમા સુખેથી ક્રીડા કરતા પોતાના સમયને પસાર કરજો જ્યા ઘણા તળાવો એક પછી એક આમ અનુક્રમે પક્તિબદ્ધ હોય છે તેનુ નામ સર સરપક્તિ છે આ પક્તિ આકારમા સ્થિત તળાવોમાં એક બીજાના તળાવનુ પાણી આવતું જતું રહે છે રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના જે ગૃહો હોય છે તે આલિગૃહ કહેવાય છે (जइण) જો

रूपकेण वर्ण्यते-' तत्थय ' तत्रच=तस्मिन्= वनषण्डे वर्षारात्रऋतुपर्वतः स्वाधीनो वर्त्तत इत्यनेन सम्बन्धः । सचीदृश ? इत्याह-' सुरगोवमणिविचित्तो ' सुगोपमणि विचित्र'-सुरगोपा =इन्द्रगोपाः वर्षाकाले समुत्पद्यमाना रक्तवर्णा जीव विशेषास्त-एव मणय'=पद्मरागादयस्तैर्विचित्र =कर्बुरो यः स तथा। 'ददुरकुलरसियउज्झररवो ' ददुरकुलरसितोज्झररवः=दर्दुरकुल=मण्डूकसमूहस्तस्य रसित=निरन्तर शब्द , तदेव उज्झररवः=निर्झरशब्दो यत्र स तथा । ' वरहिणविंदपरिणद्धसिहरो ' बर्हिवृन्दप रिणद्धशिखर'- बर्हिवृन्देन=मयूरसमूहेन परिणद्धा'=युक्ताः वृक्षात्मएव शिखराणि यत्र स तथा । एतादृशो वर्षारात्रपर्वतस्तत्र सदैव वर्त्तत इतिभावः ॥ २ ॥ तत्र खलु

इस लिये वे लम्बाईमें शुण्डादंड जैसे प्रतीत होते हैं । (तत्थ य -सुरगोव मणिविचित्तो ददुर कुलरसिय उज्झररवो । वरहिणविंद परिणद्धसिहरो वासारत्तो ऊऊ पव्वतो साहीणो) इस आर्या द्वारा सूत्रकार वर्षाऋतु का पर्वत के रूपक से वर्णन करते हैं-वे कहते हैं कि वर्षा काल मे इन्द्रगोप नामक कीडा उत्पन्न होकर इधर उधर चमक ते हुए रात्रिमें दिखलाई पडते हैं । सो ये इन्द्रगोप कीडे ही जिस वर्षा ऋतु रूप पर्वत में पद्मराग आदि मणियों के स्थानापन्न हैं । तथा पर्वत निर्झरों (झरना) के शब्दों वाला होता है सो इस वर्षा ऋतु रूप पर्वत मे दर्दुरो का जो निरन्तर शब्द होता रहता है वही मानो निर्झरों का शब्द है । वर्षा ऋतु में मयूरो से वृक्ष युक्त रहा करते हैं क्यों कि वृष्टि होनेपर वे उन पर उड कर बैठ जाते हैं-सो ये मयूर युक्त वृक्ष ही जिस वर्षा ऋतु रूप पर्वत की चोटिया है । ऐसा वर्षा रात्र रूप पर्वत उस वन में सदा काल रहता है । यह बात उन दोनों सार्थवाह

એટલા માટે નિકુરવૃક્ષના પુષ્પો લાંબાઈની દૃષ્ટિએ સૂંઢ જેવા લાગે છે

(तत्थ य सुरगोव मणिविचित्तो ददुरकुलरसियउज्झररवो । वरहिण विंदपरिणद्धसिहरो वासारत्तो ऊऊ पव्वतो साहीणो)

આ આર્યા વડે સૂત્રકાર વર્ષા ઋતુનુ પર્વતના રૂપકથી વર્ણન કરે છે તેઓ કહે છે કે વર્ષાકાળે ઇન્દ્રગોપ નામે ક્રીડા ઉત્પન્ન થાય છે અને તે આમ તેમ ચમકતો રાતમા દેખાય છે આ ઇન્દ્રગોપ ક્રીડાઓ જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતમા પદ્મરાગ વગેરે મણિઓના રૂપમા છે પર્વતોમા નિર્ઝરો (ઝરણાઓ) નો ધ્વનિ થતો રહે છે તો આ વર્ષાઋતુ-રૂપ પર્વત ઉપર દેડકાઓનો જ નિરંતર શબ્દ થતો રહે છે તેજ ઝરણાઓના શબ્દના રૂપમા છે વર્ષાઋતુમા વૃક્ષો ઉપર મોરો ઉડી ઉડીને બેસી જાય છે તો એ મોરો જેના ઉપર બેઠલા છે એવા વૃક્ષો જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતના શિખરો છે એવો વર્ષાઋતુ રૂપી પર્વત તે વનમા હમેશા નિવાસ કરતો રહેતો હતો આ વાત તેઓ બને સા વાહ

युवा देवानुप्रियौ वहीषु वापीषु च यावत् 'सरसरपंतियासु' सरः सर पङ्क्ति कासु पररपर सलग्नेषु बहुषु सरस्सु, यत्रैकस्मात्सरसोऽन्यस्मिन् तस्मादपरस्मिन्, एव रुचरणपरम्परयैदक सचरति, तासु । बहुषु 'आलिघरएसु य' आलिगृहेषु आलिः=रम्यवनस्पतिविशेषस्तस्य गृहेषु 'जाव' यावत्-यावच्छब्देन-कदलीगृहेषु च लतागृहेषु च-अच्छणगृहेषु च प्रेक्षणगृहेषु च प्रसाधनगृहेषु च मोहनगृहेषु च शाला (शाखा) गृहेषु च जालगृहेषु च इति सग्रहः, कुसुमगृहेषु=पुष्पगृहेषु च सुखसुखेन=सुखपूर्वकम् 'अभिरममाणा' अभिरममाणौ=क्रीडा कुर्वाणौ विहरत=तिष्ठतम् ।

पुत्रों को वह रयणादेवी समझा रही है। और साथ में यह भी कह रही है कि (तत्थण तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहुसु वावी सु य जाव सरसरपन्तियासु बहुसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुह सुहेणं अभिरममाणा विहरेज्जाह) हे देवानुप्रियो ! वहा तुम अनेक वापिकाओं में यावत् अनेक सर सर पक्तियो में अलिघरों मे कदली गृहों मे लता गृहों में अच्छण गृहो में प्रक्षण गृहो मे, प्रसाधन गृहों में, मोहन घरों मे, शाखा गृहो में, जाल गृहों मे, तथा पुष्प गृहों मे, सुखपूर्वक क्रीडा करते हुए अपने समय को व्यतीत करते रहना। अनेक तालाब जहा पक्ति बद्ध श्रेणीमें स्थित रहते है उस का नाम सरपक्ति है। इन पक्ति आकार स्थित तालावो मे एक एक दूसरे तालाब का जल आता जाता रहता है। रम्यवनस्पति विशेष के जो गृह होते हैं उनका नाम आलि गृह है। (जइण) यदि (तुब्भे

પુત્રોને રયણા દેવી સમજાવી રહી હતી–અને આ પ્રમાણે આગળ કહેવા લાગી હતી કે (तत्थण तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहुसु वावीसु य जाव सरसरपतियासु बहुसु आली धरएसुय मालीघदएसुय जाव कुसुमधरएसुय सुह सुहेण अभिरममाणा विहरेज्जाह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા તમે ઘણી વાપિકાઓ (વાવો) મા યાવત્ ઘણી સર સરપક્તિઓ (સરોવરો) મા, આલિઘરોમા, કદલીગૃહોમા, લતાગૃહોમા, અચ્છણગૃહોમા, પ્રેક્ષણગૃહોમા, પ્રસાધનગૃહોમા, મોહનઘરોમા, શાખાગૃહોમા, જાલગૃહોમા તેમજ પુષ્પગૃહોમા સુખેથી ક્રીડા કરતા પોતાના સમયને પસાર કરજો જ્યા ઘણા તળાવો એક પછી એક આમ અનુક્રમે પક્તિબદ્ધ હોય છે તેનુ નામ સર સરપક્તિ છે આ પક્તિ આકારમા સ્થિત તળાવોમા એક બીજાના તળાવનુ પાણી આવતુ જતું રહે છે રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના જે ગૃહો હોય છે તે આલિગૃહ કહેવાય છે (જઇણ) જો

यदि खलु पुत्रयुगम् ' तत्थवि ' तत्रापि=पूर्वदिशावनषण्डेऽपि उद्विग्नौ वा, उत्सुकौ वा, उत्प्लुतौ=क्रीडार्थिनौ वा भवत तदा खलु युवा द्वावपि ' उत्तरिल्ल ' उत्तरीयम्=उत्तरदिक्संस्थित वनषण्ड 'गच्छेज्जाह' गच्छतम्, युवाभ्या तत्र गन्त व्यमित्यर्थ तत्र खलु द्वौ ऋतू सदा स्वाधीनौ वर्त्तेते, तद्यथा-शरच्च हेमन्तश्च, तत्र शरदृतुः=कार्तिकमार्गशीर्षरूपः, हेमन्तर्तुश्च=पौषमाघरूप इति । अथ शरदृतु ह्रषभरूपकेण वर्णयति-तत्र तु वनषण्डे ' सरयउउ गोवई ' शरदृतुगोपतिः शरदृतुरूपोवृषभः ' साहिणो ' स्वाधीनः स्वायतः सदा वर्त्तते, इत्यग्रेण समन्वयः । स कीदृशः ? इत्याह—' सणसत्तवण्णकउओ ' सनसप्तपर्णकृद्, सनः=वल्कल्प ध्रानो वनस्पतिविशेषः, सप्तपर्णः=सप्तच्छदाभिधवनस्पतिविशेषः तयो पुष्पाण्यपि

एत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह, तो णं तुब्भे उत्त रिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊसया साहीणा, त०सरदो य हेमतो य, तत्थ उ-सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो। सारस चक्कवायरवितघोसो सरय ऊऊ गोवती साहीणो) तुम दोनोंजनों का पूर्वदिशा के वनषंड में मन न लगे, चित्त उद्विग्न बन जाय, मनोरंजन न हो अथवा और अधिक क्रीडा करने के लिये मन उत्कंठित बन जाय तो तुम वहा से उत्तर दिशा में रहे हुए वनखंड में चले जाना। वहा सदा दोऋतुए वर्तमान रहती है-१ शरद ऋतु २. हेमत ऋतु, कार्तिक और मार्गशीर्ष ये दो महिने शरदऋतु केहैं, पौष और माग ये दो महिने हेमन्तऋतु के है। रयणादेवी शरदऋतु का वृषभ के रूपक से और हेमतऋतुका चन्द्रमाके रूपकसे वर्णन करती हुई उन्हें समझाती है

(तुब्भ एत्थपि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो ण तुब्भे उत्तरिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह, तत्थ ण दो ऊऊ सया साहीणा त० सरदो य हेमतो य तत्थ उ सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो। सारस चक्कवायरवित घोसो सरय ऊऊ गोवती साहिणो)

પૂર્વ દિશા તરફના વનખંડમા તમને ગમતુ ન હોય, ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન થઈ જતુ લાગતુ હોય, ત્યા તમારુ મનોરજન થતુ ન હોય, કે વધારે ક્રીડા કરવા માટે મન ઉત્કઠિત થઈ જતુ હોય તો તમે ત્યાથી ઉત્તર દિશા તરફ આવેલા વનખંડમા જતા રહેજો ત્યા હર હમેશ બે ઋતુઓ હાજર રહે છે-(૧) શરદઋતુ અને (૨) હેમતઋતુ કાર્તિક અને માર્ગશીષ આ બે માસ શરદઋતુના છે તેમજ પોષ અને માઘ આ બે માસ હેમતઋતુના છે રયણા દેવી તેઓને શરદઋતુ વૃષભના રૂપકથી અને હેમતઋતુ ચન્દ્રમાના રૂપકથી નિરૂપિત કરતા

सनसप्तपर्णानि, तान्येव गोलाकारोन्नतत्वसाधर्म्यात् ककुत्-स्कन्धदेशो यस्य स तथोक्तः । पुन ' नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो ' नीलोत्पलपद्मनलिनशृङ्गः-नीलोत्पलपद्मनलिनानि=नीलकमलविशेषास्तान्येव तीक्ष्णोन्नततया शृङ्गाकारपरिणतत्वात् शृङ्गे यस्य स तथोक्तः । पुनः-'सारसचक्कायरवियघोसो' सारसचक्रवाकरुतघोषा-सारसचक्रवाकपक्षिणा रुतमेव=शब्द एव उच्चैस्त्वगाम्भीर्यसादृश्याद् घोषो = ध्वनिर्यस्य स तथोक्त । एतादृश' शरदृतु वृषभस्तत्र सदैव विद्यत इतिभावः ॥१॥

सम्प्रति हेमन्तऋतु राशिरूपकेण माह-'तत्थउ' तत्र तु वनपण्डे ' हेमत ऊऊ ससी ' हेमन्तऋतुशशी=हेमन्तर्तुरूपश्चन्द्र सदा स्वाधीन इत्युत्तरेण सम्बन्धः । स कीदृशः ? इत्याह-' सियकुदवत्रऊ जोण्हो ' सितकुन्दधवलज्योत्स्नः-सितकुन्दानि =श्वेतपुष्पाणि तान्येव धवला=उज्ज्वल ज्योत्स्ना=चन्द्रिका यस्य स तथोक्तः । पुनः-' कुसुमियलोद्धवणसडमडलतलो कुसुमितलोध्रवनपण्डमण्डलतल -कुसुमितः= पुष्पित लोध्रवनपण्ड., स एव श्वेतत्वसाधर्म्यात् - मण्डलतल = बिम्ब यस्य स तथोक्तः । ' तुपारदगधारपीवरकरो ' तुपारदकधारापीवरकरः - तत्र तुपारा= हिमकणा', ' दकधारा. = जलबिन्दुप्रवाहास्ता एव दैर्घ्ये शैत्यसादृश्यात् पीवराः= पुष्टा करा: = किरणा यस्य स तथोक्तः । एव भूतो हेमन्तर्तुरूपश्चन्द्रस्तत्र सदैव वर्त्तत इत्यर्थ ॥ २ ॥

कहती है-कि देखो शरऋतुको हमने वृषभका रूप इसलिये दिया है कि इस ऋतुमें सन और सप्तपर्ण फूलते हैं इनके फूल गोल आकारके और ऊँचे होते है। सो ये पुष्प ही जिस ऋतुरूप वृषभके ककुद (खदौला) है। नीलोत्पल आदि कमल ही जिस के शृंग हैं। सारस और चक्रवाक पक्षियो के शब्द ही जिसकी ध्वनि हैं ऐसा शरदृतु रूप वृषभ उस वन में सदा विचरण करता रहता है। (तत्थ य सिय कद धवलजोण्हो कुसुमिय लोद्धवणसडमडल तलो साहीणो) सितकुद-श्वेतपुष्प-ही जिस की धवलज्योत्स्ना (चांदनी) है, कुसुमित लोध्रवनखण्डी जिसका मडल है, हिमकण और बिन्दु प्रवाह ही जिस की पुष्ट किरणें हैं ऐसा

સમજવે છે કે જુઓ શરદઋતુને અમે વૃષભનુ રૂપ એટલા માટે આપ્યુ છે કે આ ઋતુમા સાપુ અને સપ્તપણુ ખીલે છે એમના પુષ્પો ગોળાકારના તેમજ ઊચા હોય છે તો આ પુષ્પોજ શરદઋતુ રૂપ વૃષભની ખાધ (ककुद) છે નીલોત્પલ વગેરે કમળો જ જેના સિંગડા છે સારસ અને ચક્રવાક પક્ષીઓ ના શબ્દો જ જેનો ધ્વનિ છે એવો શરદઋતુ રૂપ વૃષભ તે વનમા હમેશા વિચરતો જ રહે છે (तत्थ य सियकद धवल जोण्हो कुसुमितलोद्धवणसड मडल तलो साहीणो) सितकुद-सफેદ પુષ્પો જ જેની સ્વચ્છ ચદ્રિકા (ચાદની) છે, ખીલેલુ લોધ્ર વનજ જેનો મડળ છે, હિમકણ અને પાણીના વહેતા ટીપાઓ

तत्र खलु युवां हे देवानुप्रियौ ! वप्रीषु वापीषु च यावद् अभिरममाणौ विहरतम् = तत्र क्रीडां कुर्वन्तौ तिष्ठतम् ।

यदि खलु युवां तत्रापि=उत्तरीयवनषण्डेऽपि उद्विग्नौ वा यावद् उत्प्लुतौ वा भवेत तदा खलु युवाम् ' अवरिल्ल ' अपरीय = पश्चिमदिशासम्बन्धिकं वनषण्डं गच्छतम् , तत्र खलु द्वौ ऋतू स्वाधीनौ=स्वायत्तौ सर्वदा वर्त्तमानौ स्तः, तद्यथा-वसन्तश्च ग्रीष्मश्च, वसन्तः=फाल्गुनचैत्रलक्षणः, ग्रीष्मः=वैशाखज्येष्ठलक्षणः । पूर्वं वसन्तऋतुं नरपतिरूपकेण वर्णयति-'तत्थउ' तत्र तु पश्चिमदिग्वर्तिवनषण्डे वसन्तर्तुं

हेमतऋतु रूप चन्द्रमा उसवन में सदा प्रकाशित रहता है । (तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरेज्जाह) हे देवानुप्रियों ! वहा अनेक वापिकाएँ यावत् पुष्पघर भी हैं । सो तुम उनमें भी आनद से विहार करना । (जइणं तुब्भे तत्थ उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अविरिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह-तत्थ णं दो ऊऊ साहीणा) यदि तुम दोनों जनों का मन उत्तरीयवनषंड में भी न लगे-वहा वह उद्विग्न यावत् उत्प्लुत हो जावे-तो तुम दोनों पश्चिम दिशा सम्बधी वनखडमें चले जाना । वहां दो ऋतुएँ सदा वर्तमान रहती है (त जहा-वसंते गिम्हे य, तत्थ उ-सहकार चारूहारो, किसुय कण्णिया रासोगमउडो, उसित तिलग बउलायवत्तो वसत उऊणरवइ साहिणो) वे दो ऋतुएँ ग्रीष्म और वसन्त हैं ।

फाल्गुन चैत्र ये दो महिने वसन्तऋतु के है । वैशाख और ज्येष्ठ ये दो मास ग्रीष्मऋतु के हैं । इस पश्चिमदिशा सबन्धी वनखड में वस

જેની પુષ્ટ કિરણો છે એવો હેમતઋતુ રૂપ ચદ્ર તે વનમા હમેશા પ્રકાશતો રહે છે (तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरेज्जाह હે હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા ઘણી વાવો યાવત્ પુષ્પગૃહો પણ છે તમે તેઓમા પણ વિહાર કરજો (जइणं तुब्भे तत्थ उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अविरिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह-तत्थ णं दो ऊऊ साहिणा)

ઉત્તરના વનખડમા પણ જો તમને બરોબર ગમે નહિ, ઉદ્વિગ્ન થઈ યાવત્ ઉત્પ્લુત થઈ જાય ત્યારે તમે બને પશ્ચિમ દિશાના વનખડમા જતા રહેજો ત્યા બે ઋતુઓ સદા મોજુદ રહે છે

(त जहा वसन्ते गिम्हे य, तत्थ उ सहकार चारूहारो, किंसुय कण्णिया रासोगमउडोउसित तिलग बउलायवत्तो वसत ऊऊ णरवइ साहीणो)

તે ઋતુઓ ગ્રીષ્મ અને વસત છે ફાગણ અને ચૈત્ર આ બે માસ વસત ઋતુના છે જ્યારે વૈશાખ અને જેઠ આ બે માસ ગરમીની ઋતુના

नरपतिः=वसन्तऋतुरूपो राजा स्वाधीनो वर्त्तत इति सम्बन्धः। स कीदृशः? इत्याह-'सहकारचारुहारो' सहकारचारुहारः-सहकाराणि-सहकार पुष्पाणि-आम्रमञ्जर्यः, तान्येवबहुत्वसद्भावेन हाराकार परिणतत्वाच्चारुः=सुन्दरो हारो यस्य स तथा। पुनः -' किंसुयकण्णियारासोगमउडो ' किंशुककर्णिकाराशोकमुकुटः-किंशुकानि=पलाशकुसुमानि, कर्णिकाराणि=कर्णिकारपुष्पाणि, अशोकानि=अशोकपुष्पाणि तान्येव मुकुटाकारपरिणतत्वान्मुकुट=किरीट यस्य स तथा। ' उसियतिलगबउलायवत्तो ' उच्छ्रितातिलकबकुलातपत्रः-उच्छ्रितानि=उन्नतानि तिलकबकुलानि=तिलकबकुलपुष्पाणि, तान्येव आतप=छत्राकारपरिणतत्वेन छत्र यस्य स तथोक्तः। एतादृशो वसन्तर्त्तुनरपतिस्तत्र स्वाधीनः सदा वर्त्तते ॥ १ ॥ अथ ग्रीष्मऋतुः सागररूपकेण वर्ण्यते-' तत्थय ' तत्र च पश्चिमदिग्वनषण्डे ' गिम्हउउसागरो ' ग्रीष्मर्तुरूपः सागरः=समुद्र' स्वाधीनः=स्वायत्तत्वेनानवरत वर्त्तमानोऽस्ति। स कीदृशः? इत्याह-' पाडलसिरीससलिलो ' पाटलशिरीषसलिलः-पाटलशिरीषाणि=पाटलाशिरीषपुष्पाणि, तान्येव जल सादृश्यात्सलिल=जलराशिरूप यस्य स तथा। ' मल्लियवासतियधवलवेलो ' मल्लिकावासन्तिकाधवलवेलः-मल्लिका वासन्तिका च लता-

---

न्तऋतु नरपति के समान सदा विचरण करती रहती है-सहकार (आम्र) की मजरिया ही इस वसन्तऋतु रूपी राजा के सुन्दर हार हैं। किंशुक-कर्णिकार एव अशोकके पुष्प ही इस राजा के मुकुट हैं। उन्नत तिलक वृक्ष एव बकुल वृक्ष के पुष्प ही इसके छत्र है। (तत्थ य-पाडलसिरीससलिलो मल्लियवासतियधवलवेलो, सीयलसुरभिअनिल मगरचरिओ गिम्हऊऊ सागरो साहीणो) उस पश्चिमदिशा सम्बन्धी वनषड में ग्रीष्मऋतु समुद्र के सामान सदा पसरा रहता है-गुलाब और शिरीष पुष्प ये इस ग्रीष्मऋतु रूप समुद्र के जल है। मल्लिका एव वास

છે, આ પશ્ચિમ દિશાના વનમા વસતઋતુ નરપતિ (રાજા) ની જેમ હમેશા વિચરણ કરતી રહે છે સહકાર (આંબા) ની મજરીઓજ આ વસત ઋતુ રાજાના સુદર હારો છે કિંશુક કર્ણિકાર (કનેર) અને અશોકના પુષ્પો જ આ રાજાના મુકુટ છે ઊચા તિલક વૃક્ષો અને બકુલ વૃક્ષોના પુષ્પોજ એના છત્ર છે

तत्थ य पाडलसिरीससलिलो मल्लिया वासति य धवलवेलो सीयलसुरभि अनिलमगरचरिओ गिम्ह ऊ ऊ सागरो साहिणो)

તે પશ્ચિમ દિશાના વનખડમા ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્રની જેમ હમેશા પ્રસરાયેલો રહે છે ગુલાબ અને શિરીષના પુષ્પોજ આ ગરમીની ઋતુ રૂપ સમુદ્રના પાણી છે મલ્લિકા અને વાસતિકા લતા જ જેના કિનારાઓ છે ઠડો અને સુવાસિત

तत्र खलु युवां हे देवानुप्रियौ ! वप्रीषु वापीषु च यावद् अभिरममाणौ विहरतम् = तत्र क्रीडां कुर्वन्तौ तिष्ठतम् ।

यदि खलु युवां तत्रापि=उत्तरीयवनषण्डेऽपि उद्विग्नौ वा यावद् उत्प्लुतौ वा भवेतं तदा खलु युवाम् ' अवरिल्लं ' अपरीयं = पश्चिमदिशासम्बन्धिनं वनषण्डं गच्छतम्, तत्र खलु द्वौ ऋतू स्वाधीनौ=स्वायत्तौ सर्वदा वर्त्तमानौ स्तः, तद्यथा-वसन्तश्च ग्रीष्मश्च, वसन्तः=फाल्गुनचैत्रलक्षणः, ग्रीष्मः=वैशाखज्येष्ठलक्षणः । पूर्वं वसन्तऋतुं नरपतिरूपकेण वर्णयति-'तत्थउ' तत्र तु पश्चिमदिग्वर्तिवनषण्डे वसन्तर्तु

हेमतऋतु रूप चन्द्रमा उसवन में सदा प्रकाशित रहता है। (तत्थ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरेज्जाह) हे देवानुप्रियों ! वहा अनेक वापिकाएँ यावत् पुष्पघर भी हैं। सो तुम उनमें भी आनद से विहार करना। (जइण तुब्भे तत्थ उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो ण तुब्भे अविरिल्ल वणसड गच्छेज्जाह-तत्थ ण दो ऊऊ साहीणा) यदि तुम दोनों जनों का मन उत्तरीयवनषड में भी न लगे-वहा वह उद्विग्न यावत् उत्प्लुत हो जावे-तो तुम दोनों पश्चिम दिशा सम्बन्धी वनखडमें चले जाना। वहां दो ऋतुएँ सदा वर्तमान रहती है (त जहा-वसंते गिम्हे य, तत्थ उ-सहकार चारुहारो, किसुय कण्णिया रासोगमउडो, उसित तिलग बउलायवत्तो वसत उऊणरवइ साहिणो) वे दो ऋतुएँ ग्रीष्म और वसन्त हैं।

फाल्गुन चैत्र ये दो महिने वसन्तऋतु के है। वैशाख और ज्येष्ठ ये दो मास ग्रीष्मऋतु के हैं। इस पश्चिमदिशा सबन्धी वनखड में वस

જેની પુષ્ટ કિરણો છે એવો હેમતઋતુ રૂપ ચદ્ર તે વનમા હમેશા પ્રકાશતો રહે છે (तत्थ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरेज्जा ह હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા ઘણી વાવો यावत् पुष्पगृहो પણ છે તમે તેઓમા પણ વિહાર કરજો (जइण तुब्भे तत्थ उव्विग्गा वा जाव उस्सु या वा भवेज्जाह तो ण तुब्भे अविरिल्ल वणसड गच्छेज्जाह-तत्थ ण दो ऊऊ साहिणा)

ઉત્તરના વનખડમા પણ જો તમને બરોબર ગમે નહિ, ઉદ્વિગ્ન થઈ यावत् उत्प्लुत થઈ જાય ત્યારે તમે બને પશ્ચિમ દિશાના વનખડમા જતા રહેજો ત્યા બે ઋતુઓ સદા મોજુદ રહે છે

(त जहा वसन्ते गिम्हे य, तत्थ उ सहकार चारूहारो, किंसुय कण्णिया रासोगमउडोउसित तिलग बउलायवत्तो वसत ऊऊ णरवइ साहीणो)

તે ઋતુઓ ગ્રીષ્મ અને વસત છે ફાગણ અને ચૈત્ર આ બે માસ વસત ઋતુના છે જ્યારે વૈશાખ અને જેઠ આ બે માસ ગરમીની ઋતુના

नरपतिः=वसन्तऋतुरूपो राजा स्वाधीनो वर्त्तत इति सम्बन्धः। स कीदृशः? इत्याह-'सहकारचारुहारो' सहकारचारुहारः-सहकाराणि-सहकार पुष्पाणि-आम्रमञ्जर्यः, तान्येव बहुत्वसद्भावेन हाराकार परिणतत्वाच्चारुः=सुन्दरो हारो यस्य स तथा। पुनः -'किंसुयकण्णियारासोगमउडो' किंशुककर्णिकाराशोकमुकुटः-किंशुकानि=पलाशकुसुमानि, कर्णिकाराणि=कर्णिकारपुष्पाणि, अशोकानि=अशोकपुष्पाणि तान्येव मुकुटाकारपरिणतत्वान्मुकुट=किरीट यस्य स तथा। 'उसियतिलगबउलायवत्तो' उच्छ्रिततिलकबकुलातपत्रः-उच्छ्रितानि=उन्नतानि तिलकबकुलानि=तिलकबकुलपुष्पाणि, तान्येव आतप=छत्राकारपरिणतत्वेन छत्र यस्य स तथोक्तः। एतादृशो वसन्तर्त्तुनरपतिस्तत्र स्वाधीनः सदा वर्त्तते ॥ १ ॥ अथ ग्रीष्मऋतुः सागररूपकेण वर्ण्यते-'तत्थय' तत्र च पश्चिमदिग्वनषण्डे 'गिम्हउउसागरो' ग्रीष्मर्तुरूपः सागरः=समुद्र. स्वाधीनः=स्वायत्तत्वेनानवरत वर्त्तमानोऽस्ति। स कीदृशः? इत्याह-'पाडलसिरीससलिलो' पाटलशिरीषसलिलः-पाटलशिरीषाणि=पाटलाशिरीषपुष्पाणि, तान्येव जल सादृश्यात्सलिल=जलराशिरूप यस्य स तथा। 'मल्लियवासतियधवलवेलो' मल्लिकावासन्तिकाधवलवेलः-मल्लिका वासन्तिका च लता

न्तऋतु नरपति के समान सदा विचरण करती रहती है-सहकार (आम्र) की मजरियां ही इस वसन्तऋतु रूपी राजा के सुन्दर हार हैं। किंशुक-कर्णिकार एव अशोकके पुष्प ही इस राजा के मुकुट हैं। उन्नत तिलक वृक्ष एव बकुल वृक्ष के पुष्प ही इसके छत्र है। (तत्थ य-पाडलसिरीससलिलो मल्लियवासतियधवलवेलो, सीयलसुरभिअनिल मगरचरिओ गिम्हऊऊ सागरो साहीणो) उस पश्चिमदिशा सम्बन्धी वनषड में ग्रीष्मऋतु समुद्र के सामान सदा पसरा रहता है-गुलाब और शिरीष पुष्प ये इस ग्रीष्मऋतु रूप समुद्र के जल है। मल्लिका एव वास

છે, આ પશ્ચિમ દિશાના વનમા વસતઋતુ નરપતિ (રાજા) ની જેમ હમેશા વિચરણ કરતી રહે છે સહકાર (આંબો) ની મંજરીઓજ આ વસત ઋતુ રાજાના સુદર હારો છે કિંશુક કર્ણિકાર (કનેર) અને અશોકના પુષ્પો જ આ રાજાના મુકુટ છે ઊચા તિલક વૃક્ષો અને બકુલ વૃક્ષોના પુષ્પોજ એના છત્ર છે

तत्थ य पाडलसिरीससलिले मल्लिया वासति य धवलवेलो सीयलसुरभि अनिलमगरचरिओ गिम्ह ऊ ऊ सागरो साहिणो)

તે પાશ્ચિમ દિશાના વનખડમા ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્રની જેમ હમેશા પ્રસરાયેલો રહે છે ગુલાબ અને શિરીષના પુષ્પોજ આ ગરમીની ઋતુ રૂપ સમુદ્રના પાણી છે મલ્લિકા અને વાસતિકા લતા જ જેના કિનારાઓ છે ઠંડો અને સુવાસિત

विशेषः, ता एव तरङ्गाकारपरिणतत्वाद् धवलो=शुभ्रा वेला यस्य स तथा। 'सीय लसुरभि अनिलमगरचरियो' शीतलसुरभ्यनिलमकरचरितः - शीतलः सुरभिश्च योऽनिलः=वायुः स एव इतस्ततोभ्रमणसादृश्यात् मकरचरित=मकरसञ्चारो यत्र स तथोक्तः। एवविधो ग्रीष्मऋतुसागरस्तत्र सदैव विद्यत इति०। तत्र खलु वप्रीषु यावद् अभिरममाणौ विहरतम्=क्रीडन्तौ तिष्ठतम्। लोके तु मार्गशीर्षादिक्रमेण द्वौ द्वौ मासौ हेमन्तशिशिर-वसन्तग्रीष्म-वर्षा-शरत्सञ्ज्ञकाः षड् ऋतवो गण्यन्ते। यदि खलु युवा देवानुप्रियौ! तत्रापि=पाश्चिमदिग्वनषण्डेऽपि उद्विग्नौ उत्प्लुतौ

न्ति का लताये ही जिस की वेलाएँ हैं-तट हैं-शीतल सुरभि पवन ही जिसमें मगरों का सचार हैं। ऐसा ग्रीष्मऋतु रूप सागर उस वनखड में सदा वर्तमान रहता है। (तत्थ ण बहुसु जाव विहरेज्जाह) वहींपर अनेक वापिकाएँ आदि भी है। सो उन में भी तुम दोनों आनन्द के साथ विचरण करते रहना। (जइणं तुब्भे देवो०—तत्थ वि—उव्विग्गा, उस्सुया भवेज्जाह, तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पडिवाले माणा २ चिट्ठेज्जाह, माण तुब्भे दक्खिणिल्ल वनसड गच्छेज्जाह तत्थ ण महं एगे उग्गविसे चडविसे घोरविसे, महाविसे, अइकाय महाकाए जहा तेय निसग्गे मसिमहिं सामूसा कालए नयणविसरोसपुण्णे अजणपुजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचचलचलनजीहे, धरणियलवेणिभूए, उक्कडफुडकुडिल जडिलकक्खडविगडफणाडोवकरणदच्छे, लोगाहारधम्ममाणधम धमेतघोसे अणागलियचडतिव्वरोसे समुहिं तुरिय चवल धम

પવન જેમા મગરોનુ સચરણ છે એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનખંડમા સદા હાજર રહે છે (तत्थ ण बहुसु जाव विहरेज्जाह) ત્યાજ ઘણી વાવો વગેરે છે તમે બને તેઓમા પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો

(जइणं तुब्भे देवा० तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पडिवाले माणा २ चिट्ठेज्जाह माण तुब्भे दक्खिणिल्ल वनसड गच्छेज्जाह तत्थ ण महं एगे उग्गविसे चडविसे घोरविसे महाविसे अइकायमहाकाए जहा तेय निसग्गे मसि महिसामूसाकालए नयणविसरोसपुण्णे अजणपुजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचचलचलत जी हे, धरणियलवेणि भूए उक्कड पुडकुडिल जडिलकक्खड वियडफ णाडोव करण दच्छे लोगाहार धममाणधम्मधमेंतघोसे अनागलियचडतिव्वरोसे समुहिं तुरिय चवल धमधमत दिट्ठीविसे सप्पे य परिवसइ)

હે દેવાનુપ્રિયો! ત્યા પણ તમને ને ગમે નહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમા

वा भवेत तदा खलु युवा यत्रैव प्रासादावतसकः=स्वावासभवन तत्रैव उपागच्छत पुनः स्वप्रासादावतसके समागत्य स्थातव्यमित्यर्थः, 'मम' मा च 'पडिवालेमाणा २' प्रतिपालयन्तौ २=प्रतीक्षमाणौ २ तिष्ठत, किन्तु मा खलु युवा 'दक्खिणिल्लु' दाक्षिणात्य=दक्षिणदिशासम्बन्धिक वनषण्ड गच्छत=युवाभ्या दक्षिणदिग्वर्त्तिवनषण्डे न गन्तव्यमित्यर्थः। कस्मात्? इत्याह-तत्र खलु महानेकः-'उग्गविसे' उग्र विष यस्य स तथोक्त । विषस्य-उग्रत्वं दुर्जरत्वात् । एवमग्रेऽपि सयोज्यम् । एव 'चडविसे' चण्डविषः, चण्डत्वं झटिति प्रतिप्रदेश व्यापकत्वात्। 'घोरविसे' घोरविष, घोरत्व परम्परातः पुरुषसहस्रस्यापि घातकत्वात् । 'महाविसे' महाविष, महत्त्व जम्बूद्वीप परिमितशरीरस्यापि विनाशकत्वात् । 'अइकाए' अतिकायः-अन्यसर्पापेक्षया दीर्घशरीरत्वात्, महाकायः-अन्यसर्पापेक्षया स्थूल शरीरत्वात् । 'मसिमहिसमूसाकालए' मषीमहिषमूषाकालकः-मषी=कज्जल, महिष प्रसिद्धः, मूषा=सुवर्ण द्रावणपात्रविशेषः, एतेषां द्वन्द्वे मषीमहिषमूषा-

---

घमत्तदिट्ठीविसे सप्पे य परिवसइ) यदि हे देवानुप्रियो ! तुम्हारा वहा न लगे-उद्विग्न एव उत्सुक बन जावे तो फिर तुम अपने इसी श्रेष्ट प्रासाद में वापिस आ जाना और यही पर रहते हुए हमारी प्रतीक्षा करना। दक्षिण दिशा सबन्धी वनषड में मत जाना। कारण वहा एक ऐसा बडो भारी सर्प रहता है कि जिस का विष बहुत अधिक दुर्जर होने से उग्र है। बहुत शीघ्र प्रति प्रदेशमें फैल जाने से चण्ड है। परम्परा से पुरुष सहस्र का घातक होने से घोर है, जबूद्वीप के बराबर शरीर का भी विनाशक होने से महान् हैं। अन्य सर्पो की अपेक्षा यह सर्प बहुत लबा है। तथा बहुत स्थूल है। मषी-कज्जल-महिष-भैंसा और मूषा-सुवर्ण के पिघलाने का पात्र विशेष के समान यह अत्यन्त श्यामवर्ण वाला है। इस की दोनों आँखो मे विष रहता है

પાછા આવતા રહેજો અને અહીંજ રહીને મારી રાહ જોજો દક્ષિણ દિશાના વનખંડમા તમે જતા નહિ કેમ કે ત્યા એક બહુ મોટો સાપ રહે છે તેનુ ઝેર ખૂબ જ દુર્ધર હોવા બદલ ઉગ્ર છે પ્રતિ પ્રદેશમા તે સત્વરે પ્રસરી જાય છે એટલા માટે તે ચંડ છે પરપરાથી જ તે પુરુષ સહસ્રને મારનારો હોવાથી ઘોર છે જબૂદ્વીપ જેટલા પ્રમાણના શરીરનો પણ તે નાશ કરી શકે તેમ છે તેથી તે મહાન્ છે બીજા સાપો કરતા તે બહુ જ લાબો તેમજ ખૂબ જ મોટો છે મષી-કાજળ, મહિષ-ભેસો, અને મૂષા-સોનાને ઓગળાવવા માટેનુ પાત્ર વિશેષ-ની જેમ તે ખૂબ જ કાળા રગ વાળો છે તેની બને આખોમા પણ

विशेषः, ता एव तरङ्गाकारपरिणतत्वाद् धवला=शुभ्रा वेला यस्य स तथा। 'सीय लसुरभि अनिलमगरचरियो' शीतलसुरभ्यनिलमकरचरितः - शीतलः सुरभिश्च योऽनिलः=वायुः स एव इतस्ततोभ्रमणसादृश्यात् मकरचरित=मकरसञ्चारो यत्र स तथोक्तः। एवविधो ग्रीष्मऋतुसागरस्तत्र सदैव विद्यत इति०। तत्र खलु बहीषु वापीषु यावद् अभिरममाणौ विहरतम्=क्रीडन्तौ तिष्ठतम्। लोके तु मार्गशीर्षादिक्रमेण द्वौ द्वौ मासौ हेमन्तशिशिर-वसन्तग्रीष्म-वर्षा-शरत्सञ्ज्ञकाः षड् ऋतवो गण्यन्ते। यदि खलु युवां देवानुप्रियौ! तत्रापि=पाश्चिमदिग्वनषण्डेऽपि उद्विग्नौ उत्प्लुतौ

न्ति का लताये ही जिस की वेलाएँ हैं-तट हैं-शीतल सुरभि पवन ही जिसमें मगरों का सचार हैं। ऐसा ग्रीष्मऋतु रूप सागर उस वनखड में सदा वर्तमान रहता है। (तत्थ ण बहुसु जाव विहरेज्जाह) वहींपर अनेक वापिकाएँ आदि भी है। सो उन में भी तुम दोनों आनन्द के साथ विचरण करते रहना। (जइण तुब्भे देवो०—तत्थ वि—उव्विग्गा, उस्सुया भवेज्जाह, तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पडिवाले माणा २ चिट्ठेज्जाह, माण तुब्भे दक्खिणिल्ल वनसड गच्छेज्जाह तत्थ ण महं एगे उग्गविसे चडविसे घोरविसे, महाविसे, अइकाय महाकाए जहा तेय निसग्गे मसिमहिं सामूसा कालए नयणविसरोसपुण्णे अजणपुंजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचचलचलनजीहे, धरणियलवेणिभूए, उक्कडफुडकुडिल जडिलकक्खडवियडफणाडोवकरणदच्छे, लोगाहारधम्ममाणधम धमेतघोसे अणागलियचडतिव्वरोसे समुहिं तुरिय चवल धम

પવન જ જેમા મગરોનુ સચરણ છે એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનખંડમા સદા હાજર રહે છે (तत्थ ण बहुसु जाव विहरेज्जाह) ત્યાજ ઘણી વાવો વગેરે છે તમે બને તેઓમા પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો

(जइण तुब्भे देवा० तत्थ वि' उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासाय' वडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पडिवाले माणा २ चिट्ठेज्जाह माण तुब्भे दक्खिणिल्ल वनसड गच्छेज्जाह तत्थ ण महं एगे उग्गविसे चडविसे घोरविसे महाविसे अइकायमहाकाए जहा तेय निसग्गे मसि महिसामूसाकालए नयणविसरोसपुण्णे अजणपुजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचचलचलत जी हे, धरणियलवेणि भूए उक्कड पुडकुडिल जडिलकक्खड वियडफ णाडोव करण दच्छे लोगाहार धममाणधम्मधमेंतघोसे अनागलियचडतिव्वरोसे समुहिं तुरिय चवल धमधमत दिट्ठीविसे सप्पे य परिवसइ)

હે દેવાનુપ્રિયો! ત્યા પણ તમને જો ગમે નહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમા

वा भवेत तदा खलु युवा यत्रैव प्रासादावतंसक'=स्वावासभवन तत्रैव उपागच्छत पुनः स्वप्रासादावतंसके समागत्य स्थातव्यमित्यर्थः, 'मम' मा च 'पडिवालेमाणा २' प्रतिपालयन्तौ २=प्रतीक्षमाणौ २ तिष्ठत, किन्तु मा खलु युवा 'दक्खिणिल्लं' दाक्षिणात्य=दक्षिणदिशासम्बन्धिक वनषण्ड गच्छत=युवाभ्या दक्षिणदिग्वर्त्तिवनषण्डे न गन्तव्यमित्यर्थः। कस्मात्? इत्याह-तत्र खलु महानेकः-'उग्गविसे' उग्र विष यस्य स तथोक्त । विषस्य-उग्रत्व दुर्जरत्वात् । एवमग्रेऽपि सयोज्यम् । एव 'चडविसे' चण्टविषः, चण्डत्वं झटिति प्रतिप्रदेश व्यापकत्वात्। 'घोरविसे' घोरविष, घोरत्व परम्परातः पुरुषसहस्रस्यापि घातकत्वात् । 'महाविसे' महाविष, महत्त्व जम्बूद्वीप परिमितशरीरस्यापि विनाशकत्वात् । 'अइकाए' अतिकायः-अन्यसर्पापेक्षया दीर्घशरीरत्वात्, महाकायः-अन्यसर्पापेक्षया स्थूल शरीरत्वात् । 'मसिमहिसमूसाकालए' मषीमहिषमूषाकालकः-मषी=कज्जल, महिष प्रसिद्ध', मूषा=सुवर्ण द्रावणपात्रविशेषः, एतेषां द्वन्द्वे मषीमहिषमूषा-

---

घमतदिट्ठीविसे सप्पे य परिवसइ) यदि हे देवानुप्रियों! तुम्हारा वहा न लगे-उद्विग्न एव उत्सुक बन जावे तो फिर तुम अपने इसी श्रेष्ठ प्रासाद में वापिस आ जाना और यही पर रहते हुए हमारी प्रतीक्षा करना। दक्षिण दिशा सबन्धी वनषड में मत जाना। कारण वहां एक ऐसा बडा भारी सर्प रहता है कि जिस का विष बहुत अधिक दुर्जर होने से उग्र है। बहुत शीघ्र प्रति प्रदेशमें फैल जाने से चण्ड है। परम्परा से पुरुष सहस्र का घातक होने से घोर है, जबूद्वीप के बराबर शरीर का भी विनाशक होने से महान् हैं। अन्य सर्पो की अपेक्षा यह सर्प बहुत लबा है। तथा बहुत स्थूल है। मषी-कज्जल-महिष-भैंसा और मूषा-सुवर्ण के पिघलाने का पात्र विशेष के समान यह अत्यन्त श्यामवर्ण वाला है। इस की दोनों आँखो में विष रहता है

પાછા આવતા રહેજો અને અહીંજ રહીને મારી રહ જોજો દક્ષિણ દિશાના વનખંડમા તમે જતા નહિ કેમ કે ત્યા એક બહુ મોટો સાપ રહે છે તેનુ ઝેર ખૂબ જ દુર્જર હોવા બદલ ઉગ્ર છે પ્રતિ પ્રદેશમા તે સત્વરે પ્રસરી જાય છે એટલા માટે તે ચંડ છે પરપરાથી જ તે પુરુષ સહસ્રને મારનારો હોવાથી ઘોર છે જબૂદ્વીપ જેટલા પ્રમાણના શરીરનો પણ તે નાશ કરી શકે તેમ છે તેથી તે મહાન્ છે બીજા સાપો કરતા તે બહુ જ લાબો તેમજ ખૂબ જ મોટો છે મષી-કાજળ, મહિષ-ભેસો, અને મૂષા-સોનાને ઓગળાવવા માટેનુ પાત્ર વિશેષ-ની જેમ તે ખૂબ જ કાળા રગ વાળો છે તેની બને આખોમા પણ

विशेषः, ता एव तरङ्गाकारपरिणतत्वाद् धवला=शुभ्रा वेला यस्य स तथा। 'सीय लसुरभि अनिलमगरचरियो' शीतलसुरभ्यनिलमकरचरितः - शीतलः सुरभिश्च योऽनिलः=वायुः स एव इतस्ततोभ्रमणसादृश्यात् मकरचरित=मकरसञ्चारो यत्र स तथोक्तः। एवम्विधो ग्रीष्मऋतुसागरस्तत्र सदैव विद्यत इति०। तत्र खलु चद्दीषु वापीषु यावद् अभिरममाणौ विहरतम्=क्रीडन्तौ तिष्ठतम्। लोके तु मार्गशीर्षादिक्रमेण द्वौ द्वौ मासौ हेमन्तशिशिर-वसन्तग्रीष्म-वर्षा-शरत्सञ्ज्ञकाः षड् ऋतवो गण्यन्ते। यदि खलु युवा देवानुप्रियौ। तत्रापि=पश्चिमदिग्वनषण्डेऽपि उद्विग्नौ उत्प्लुतौ

न्ति का लताये ही जिस की वेलाएँ हैं-तट है-शीतल सुरभि पवन ही जिसमें मगरों का सचार हैं। ऐसा ग्रीष्मऋतु रूप सागर उस वनखड में सदा वर्तमान रहता है। (तत्थ ण बहुसु जाव विहरेज्जाह) यहींपर अनेक वापिकाएँ आदि भी है। सो उन में भी तुम दोनों आनन्द के साथ विचरण करते रहना। (जइण तुब्भे देवो०—तत्थ वि—उव्विग्गा, उस्सुया भवेज्जाह, तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पडिवाले माणा २ चिट्ठेज्जाह, माण तुब्भे दक्खिणिल्ल वनसड गच्छेज्जाह तत्थ ण महएगे उग्गविसे चडविसे घोरविसे, महाविसे, अइकाय महाकाए जहा तेय निसग्गे मसिमहि सामूसा कालए नयणविसरोसपुण्णे अजणपुजनिगरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचचलचलनजीहे, धरणियलवेणिभूए, उक्कडफुडकुडिल जडिलकक्खडवियडफणाडोवकरणदच्छे, लोगाहारधम्ममाणधम धमेतघोसे अणागलियचडतिव्वरोसे समुहिं तुरिय चवल धम

પવન જ જેમા મગરોનુ સચરણ છે એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનખડમા સદા હાજર રહે છે (तत्थ ण बहुसु जाव विहरेज्जाह) ત્યાજ ઘણી વાવો વગેરે છે તમે બને તેઓમા પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો

(जइण तुब्भे देवा० तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पडिवाले माणा २ चिट्ठेज्जाह माणं तुब्भे दक्खिणिल्ल वनसड गच्छेज्जाह तत्थ ण महएगे उग्गविसे चडविसे घोरविसे महाविसे अइकायमहाकाए जहा तेय निसग्गे मसि महिसामूसाकालए नयणविसरोसपुण्णे अजणपुंजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचचलत जी हे, धरणियलवेणि भूए उक्कड पुडकुडिल जडिलककखड वियडफ णाडोव करण दच्छे लोगाहार धममाणधम्ममधमंतघोसे अनागलियचडतिव्वरोसे समुहिं तुरिय चवल धमधमत दिट्ठीविसे सप्पे य परिवसइ)

હે દેવાનુપ્રિયો! ત્યા પણ તમને જો ગમે નહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમા

करे=लोहतापनस्थाने 'भट्टी' इति भाषाप्रसिद्धे ध्मायमानः=परिताप्यमानो लोहः तद्वद् यद् धमधमायमानो=धम-धमेति कुर्वन् घोष.=शब्दो यस्य स तथा। 'अणागलियचडतिव्वरोसे' अनाकलितचण्डतीव्ररोष', अनाकलितः=अपरिमितः चण्डतीव्रः= अत्यन्तोगो रोषो यस्य स तथा। 'समुहिं' श्वमुखिका= श्वमुखस्येवाऽऽचरण शुन इव भषणम्, 'तुरिय' त्वरितम्, 'चवल' चपल यथा स्यात्तथा 'धमधमतदिट्ठिविसे' धमधमायमानदृष्टिविषः-धमधमायमान=जाज्व ल्यमानम् दृष्टौ विष यस्य स तथोक्तः, एतादृश सर्पश्च तत्र परिवसति, तस्माद् 'माण' मा खलु युवा तत्र गच्छतमिति सम्बन्धः। अन्यथा-तत्र गमने-युवयो शरीरस्य व्यापत्ति भविष्यति। एव सा तौ माकन्दिकदारकौ 'दोच्चपि तच्चपि' द्वितीयमपि तृतीयमपि वार द्विस्त्रिवारमित्यर्थ', एव वदति, एवमुक्त्वा वैक्रिय समुद्घातेन 'समोहणइ' समवहन्ति वैक्रियसमुद्घात करोतीत्यर्थ, 'समोहणित्ता समवहत्य=समुद्घात कृत्वा तया=देवप्रसिद्धया उत्कृष्टया गत्या लवणसमुद्र त्रिस-सकृ-वः=एकविंशतिवारम् 'अणुपरियट्टेउ' अनुपर्यटितु परितोऽटितु प्रवृत्ता चाप्यासीत् ॥ सू० ४ ॥

उग्ररोष है वह अनाकलित-अपरिमित-है। कुत्ते के भोंकने के समान इस की आवाज निकलती है। यह त्वरा सपन्न और अद्भुत ही चपल है। इस की दृष्टि में विष सदा जाज्वल्यमान रहता है (माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ, ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव वयइ२ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ२ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्द त्तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेय पयत्ता यावि होत्था) इस लिये तुम दोनों वहां मत जाना। नहीं तो तुम्हारे शरीरकी कुशलता नहीं रहेगी। इसी प्रकार उस रयणा देवी ने उन माकंदि दारकों को दुवारा भी-तिवारा

भी-समझायो बुझाया फिर समझा बुझाकर उस ने वैक्रिय समुद्घात

ઉગ્રરોષ અનાકલિત-અપરિમિત-છે કૂતરાની ભસવાની જેમ તેનો અવાજ નીકળતો રહે છે આ ત્વરા સપન્ન અને ખૂબ જ ચપળ છે એની આખમા ઝેર હમેશા જાજ્વલ્યમાન રહે છે

(माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति २ ताए उक्किट्ठाए लवण-समुद्दत्ति सत्त खुत्तो अणुपरियट्टेय पयत्ता यावि होत्था)

એટલા માટે તમે બને ત્યા જતા નહિ નહિતર તમારા શરીરનુ કુશળ રહેશે નહિ આ પ્રમાણે જ તે રયણા દેવીએ માકદીદારકોને બે વાર ત્રણ વાર સમજાવ્યા અને સમજાવવાનુ કામ પતાવીને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો

ता इव कालकः=श्यामवर्णः ' नयणविसरोसपुण्णे ' नयनविषरोषपूर्णः - नयनयो र्विष रोषश्च, ताभ्यां पूर्णः ' अंजणपुंज निगरप्पगासे ' अञ्जनपुञ्जनिकरप्रकाशः- अञ्जनपुञ्जानां निकरः= राशिः तद्वत्प्रकाश =कान्तिर्यस्य स तथोक्तः-अत्यन्त श्याम इत्यर्थः । ' रत्तच्छे ' रक्ताक्षः = रक्तनेत्र । ' जमलजुयलचंचलचलंतजीहे' यमलयुगलचञ्चलचलज्जिह्व -यमले=सहवर्त्तिनौ युगले=उभे चञ्चले=चपले चलन्त्यौ पुन पुनर्वहिर्निस्सरन्त्यौ जिह्वे यस्य स तथा । ' धरणीयलवेणिभूए ' धरणितलवेणी भूत अतिदैर्घ्यश्यामत्वादिसादृश्यात् पृथिव्या केशपाशसदृशः ' उक्कडफुड कुडिलजडिलकक्खडविअडफडाडोवकरणदच्छे ' उत्कटस्फुटकुटिलजटिल कर्कश-विकटस्फटाटोपकरणदक्षः - उत्कट' = बलवताऽपि ध्वसयितुमशक्यः, स्फुटः व्यक्तः कुटिलः=वक्र', जटिलः-सिंहवत् शटायुक्तः, कर्कश =कठोरः, विकटश्च= भयङ्करो यः फटाटोप'=फणाडम्बरः तस्य करणे विस्तारणे दक्ष'=निपुणः । लोहा गरधम्ममाणधमधमत घोसे ' लोहाकरधमायमान धमधमायमान घोष - लोहा

यक्ष बड़ा गुस्से बाज है । कज्जल पुंज की राशि के समान यह बिलकुल काला है । इस के दोनों नेत्र सदा लाल रहते हैं । इस की साथ २ रही हुई दोनों चचल जिह्वाएँ बार २ बाहर निकलती रहती हैं । अत्यन्त दीर्घ एव श्याम होने के कारण यह देखने में ऐसा लगता है कि जैसे मानो पृथिवी रूप स्त्री की वेणी चोटी ही हो । बलवान् पुरुष भी जिसे नष्ट नहीं कर सकता है जो व्यक्त है, कुटिल-वक्र-है, सिंह के समान शटा सपन्न है, कर्कश है, और विकट-भयकर है-ऐसी अपनी फणा के फैलाने में यह बड़ा भारी दक्ष है । भट्टी में तपते हुए लोहे का जैसे धम धम शब्द होता है उसी प्रकार इस से निकला हुआ शब्द भी धम धम ऐसी आवाज करता हुआ ही निकलता है । इस का अत्यन्त जो

ઝેર રહે છે તે બહુ જ ક્રોધી છે કાજળના સમૂહની જેમ સાવ કાળો છે તેના બને નેત્રો હમેશા રાતા રહે છે તેની સાથે રહેનારી બને જીભો ચંચળ તેમજ વારવાર બહાર નીકળતી રહે છે બહુ લાંબો અને કાળો હોવાથી તે જોવામા એવો લાગે છે કે જાણે પૃથ્વી રૂપી સ્ત્રીની વેણી (ચોટી) જ ન હોય બળવાન પુરુષ પણ જેને નષ્ટ કરી શકતા નથી, જે વ્યક્ત છે, કુટિલ વક્ર-છે, સિંહની જેમ શટા સપન્ન (કેશવાળી) છે, કર્કશ છે, અને વિકટ-ભયકર-છે એવી પોતાની ફણાને ફેલાવવામા તે ભારે દક્ષ છે ભઠ્ઠીમા તપા વવામા આવેલા લોખંડનો જેમ ' ધમ ધમ ' ધ્વનિ થાય છે તે પ્રમાણે જ તેમાથી નીકળતો ધ્વનિ પણ ' ધમ ધમ ' અવાજ કરતો [illegible] તેનો

करे=लोहतापनस्थाने 'भट्टी' इति भाषाप्रसिद्धे धमायमानः=परिताप्यमानो लोहः तद्वद् यद् धमधमायमानो=धम-धमेति कुर्वन् घोषः=शब्दो यस्य स तथा। 'अणागलियचंडतिव्वरोसे' अनाकलितचण्डतीव्ररोषः, अनाकलितः=अपरिमितः चण्डतीव्रः= अत्यन्तोगो रोषो यस्य स तथा। 'समुहिं' श्वमुखिका=श्वमुखस्येवाऽऽचरण शुन इव भषणम्, 'तुरिय' त्वरितम्, 'चवल' चपल यथा स्यात्तथा 'धमधमतदिट्ठिविसे' धमधमायमानदृष्टिविषः-धमधमायमान=जाज्वल्यमानम् दृष्टौ विष यस्य स तथोक्तः, एतादृश सर्पश्च तत्र परिवसति, तस्माद् 'माण' मा खलु युवा तत्र गच्छतमिति सम्बन्धः। अन्यथा-तत्र गमने-युवयो शरीरस्य व्यापत्ति भविष्यति। एव सा तौ माकन्दिकदारकौ 'दोच्चपि तच्चपि' द्वितीयमपि तृतीयमपि वार द्विस्त्रिवारमित्यर्थः, एव वदति, एवमुक्त्वा वैक्रिय समुद्घातेन 'समोहणइ' समवहन्ति वैक्रियसमुद्घात करोतीत्यर्थ, 'समोहणित्ता समवहत्य=समुद्घात कृत्वा तया=देवप्रसिद्धया उत्कृष्टया गत्या लवणसमुद्र त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् 'अणुपरियट्टेउ' अनुपर्यटितु परितोऽटितु मवृत्ता चाप्यासीत् ॥ सू० ४ ॥

उग्ररोष है वह अनाकलित-अपरिमित-है। कुत्ते के भोकने के समान इस की आवाज निकलती है। यह त्वरा सपन्न और बहुत ही चपल है। इस की दृष्टि में विष सदा जाज्वल्यमान रहता है (माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ, ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव वयइ२ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ२ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्दत्तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेय पयत्ता यावि होत्था) इस लिये तुम दोनों वहां मत जाना। नहीं तो तुम्हारे शरीरकी कुशलता नही रहेगी। इसी प्रकार उस रयणा देवी ने उन माकदि दारकों को दुवारा भी-तिबारा भी-समझायो बुझाया फिर समझा बुझाकर उस ने वैक्रिय समुद्घात

ઉગ્રરોષ અનાકલિત-અપરિમિત-છે કૂતરાની ભસવાની જેમ તેનો અવાજ નીકળતો રહે છે આ ત્વરા સપન્ન અને ખૂબ જ ચપળ છે એની આખમા ઝેર હમેશા જાજ્વલ્યમાન રહે છે

(माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति २ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्दत्ति सत्त खुत्तो अणुपरियट्टेय पयत्ता यावि होत्था)

એટલા માટે તમે બને ત્યા જતા નહિ નહિતર તમારા શરીરનુ કુશળ રહેશે નહિ આ પ્રમાણે જ તે રયણા દેવીએ માકદીદારકોને બે વાર ત્રણ વાર સમજાવ્યા અને સમજાવ્યાનુ કામ પતાવીને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો

ता इव कालकः=श्यामवर्णः ' नयणविसरोसपुण्णे ' नयनविषरोषपूर्णः – नयनयो र्विष रोषश्च, ताभ्यां पूर्णः ' अंजणपुंज निगरप्पगासे ' अञ्जनपुञ्जनिकरप्रकाशः– कज्जलपुञ्जाना निकरः= राशिः तद्वत्प्रकाश'=कान्तिर्यस्य स तथोक्त'–अत्यन्त श्याम इत्यर्थ' । ' रत्तच्छे ' रक्ताक्षः = रक्तनेत्र । ' जमलजुयलचंचलचलंतजीहे' यमलयुगलचञ्चलचलज्जिह्व –यमले=सहवर्तिनी युगले=उभे चञ्चले=चपले चलन्त्यौ पुन'पुनर्वहिर्निस्सरन्त्यौ जिह्वे यस्य स तथा । ' धरणीयलवेणिभूए ' धरणितलवेणी भूत अतिदैर्घ्यश्यामत्वादिसादृश्यात् पृथिव्या केशपाशसदृशः ' उक्कडफुड कुडिलजडिलकक्खडवियडफडाडोवकरणदक्खे ' उत्कटस्फुटकुटिलजटिल कर्कश-विकटस्फटाटोपकरणदक्षः – उत्कट = बलवताऽपि धर्षयितुमशक्यः, स्फुटः व्यक्तः कुटिलः=वक्रः, जटिलः–सिंहवत् शटायुक्तः, कर्कश =कठोरः, विकटश्च= भयङ्करो यः फटाटोप'=फणाडम्बरः तस्य करणे विस्तारणे दक्ष =निपुणः । लोहा गरधम्ममाण धमधमत घोसे ' लोहाकरध्मायमान धमधमायमान घोष – लोहा

यह बड़ा गुस्से बाज है । कज्जल पुंज की राशि के समान यह बिलकुल काला है । इस के दोनों नेत्र सदा लाल रहते हैं । इस की साथ २ रही हुई दोनों चचल जिह्वाएँ बार २ बाहर निकलती रहती हैं । अत्यन्त दीर्घ एव श्याम होने के कारण यह देखने में ऐसा लगता है कि जैसे मानो पृथिवी रूप स्त्री की वेणी चोटी ही हो । बलवान् पुरुष भी जिसे नष्ट नहीं कर सकता है जो व्यक्त है, कुटिल–वक्र–है, सिंह के समान शटा सपन्न है, कर्कश है, और विकट–भयकर है–ऐसी अपनी फणा के फैलाने में यह बड़ा भारी दक्ष है । भट्टी में तपते हुए लोहे का जैसे धम धम शब्द होता है उसी प्रकार इस से निकला हुआ शब्द भी धम धम ऐसी आवाज करता हुआ ही निकलता है । इस का अत्यन्त जो

ઝેર રહે છે તે બહુ જ ક્રોધી છે કાજળના સમૂહની જેમ સાવ કાળો છે તેના બને નેત્રો હમેશા રાતા રહે છે તેની સાથે રહેનારી બને જીભો ચચળ તેમજ વારવાર બહાર નીકળતી રહે છે બહુ લાબો અને કાળો હોવાથી તે જોવામા એવો લાગે છે કે જાણે પૃથ્વી રૂપી સ્ત્રીની વેણી (ચોટી) જ ન હોય બળવાન પુરુષ પણ જેને નષ્ટ કરી શકતા નથી, જે વ્યક્ત છે, કુટિલ વક્ર–છે, સિંહની જેમ શટા સપન્ન (કેશવાળી) છે, કર્કશ છે, અને વિકટ–ભયકર–છે એવી પોતાની ફણાને ફેલાવવામા તે ભારે દક્ષ છે ભઠ્ઠીમા તપાવવામા આવેલા લોખડનો જેમ ' ધમ ધમ ' ધ્વનિ થાય છે તે પ્રમાણે જ તેમાથી નીકળતો ધ્વનિ પણ ' ધમ ધમ ' અવાજ કરતો [illegible] તેનો

करे=लोहतापनस्थाने 'भट्टी' इति भाषाप्रसिद्धे धमायमानः=परिताप्यमानो लोहः तद्वद् यद् धमधमायमानो=धम-धमेति कुर्वन् घोष.=शब्दो यस्य स तथा। 'अणागलियचडतिव्वरोसे' अनाकलितचण्डतीव्ररोषः, अनाकलितः=अपरिमितः चण्डतीव्रः= अत्यन्तोग्रो रोषो यस्य स तथा। 'समुहिं' श्वमुखिका= श्वमुखस्येवाऽऽचरण शुन इव भषणम्, 'तुरिय' त्वरितम्, 'चवल' चपल यथा स्यात्तथा 'धमधमतदिट्ठिविसे' धमधमायमानदृष्टिविषः-धमधमायमान=जाज्व ल्यमानम् दृष्टौ विष यस्य स तथोक्त', एतादृश सर्पश्च तत्र परिवसति, तस्माद् 'माण' मा खलु युवा तत्र गच्छतमिति सम्बन्धः। अन्यथा-तत्र गमने-युवयो शरीरस्य व्यापत्ति भविष्यति। एव सा तौ माकन्दिकदारकौ 'दोच्चपि तच्चपि' द्वितीयमपि तृतीयमपि वार द्वित्रिवारमित्यर्थ., एव वदति, एवमुक्त्वा वैक्रिय समुद्घातेन 'समोहणइ' समवहन्ति वैक्रियसमुद्घात करोतीत्यर्थ, 'समोहणित्ता समवहत्य=समुद्घात कृत्वा तया=देवप्रसिद्धया उत्कृष्टया गत्या लवणसमुद्र त्रिस-सप्त-कृत्वः=एकविंशतिवारम् 'अणुपरियट्टेउ' अनुपर्यटितु परितोऽटितु मवृत्ता चाप्यासीत् ॥ सू० ४ ॥

उग्ररोष है वह अनाकलित-अपरिमित-है। कुत्ते के भौंकने के समान इस की आवाज निकलती है। यह त्वरा सपन्न और बहुत ही चपल है। इस की दृष्टि में विष सदा जाज्वल्यमान रहता है (माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ, ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव वयइ२ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ२ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्द त्तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेय पयत्ता यावि होत्था) इस लिये तुम दोनों वहां मत जाना। नहीं तो तुम्हारे शरीरकी कुशलता नही रहेगी। इसी प्रकार उस रयणा देवी ने उन माकदि दारकों को दुवारा भी-तिबारा भी-समझायो बुझाया फिर समझा बुझाकर उस ने वैक्रिय समुद्घात

ઉગ્રરોષ અનાકલિત-અપરિમિત-છે કૂતરાની ભસવાની જેમ તેનો અવાજ નીકળતો રહે છે આ ત્વરા સપન્ન અને ખૂબ જ ચપળ છે એની આખમા ઝેર હમેશા જાજ્વલ્યમાન રહે છે

(माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति २ ताए उक्किट्ठाए लवण-समुद्दत्ति सत्त खुत्तो अणुपरियट्टेय पयत्ता यावि होत्था)

એટલા માટે તમે બને ત્યા જતા નહિ નહિતર તમારા શરીરનુ કુશળ રહેશે નહિ આ પ્રમાણે જ તે રયણા દેવીએ માકદીદારકોને બે વાર ત્રણ વાર સમજાવ્યા અને સમજાવવાનુ કામ પતાવીને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો

मूलम्—तएणं ते मागंदियदारिया तओमुहुत्तंतरस्स पासायवडिसए सइ वा रइं वा धिइ वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी -एवं खलु देवाणुप्पिया ! रयणद्दीवदेवयाए अम्हे एव वयासी--एव खलु अह सक्कवयणसदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, त सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्लं वणसंड गमित्तए, अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेतिर२ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंतिर२ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति, ततेण ते मागदियदारया तत्थवि सइं वा जाव आलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसडे तेणेव उवा०२ तत्थ णं वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं ते मागंदियदारया तत्थवि सति वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसडे तेणेव उवा०२ जाव विहरति, तएण ते मागंदिय० तत्थवि सतिवा जाव अलभ० अण्णमण्ण एव वयासी --एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी-- एवं खलु अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसदेसेण सुट्ठिएणं लवणाहिवहिणा जाव माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति तं भवियव्व एत्थकारणेणं, त सेय खलु अम्ह दक्खिणिल्लं

किया । समुद्घात करके फिर वह उस प्रसिद्ध देवगति से २१ बार लवण समुद्र के चारों ओर पर्यटन करने में प्रवृत्त हो गई ॥ सू० ४ ॥

સમુદ્ઘાત કરીને તે પોતાની પ્રસિદ્ધ દેવ ગતિથી એકવીશ વખત લવણસમુદ્રની ચારે બાજુએ ભ્રમણ કરવામા પ્રવૃત્ત થઈ ગઈ ॥ સૂત્ર “ ૪ ”

वणसंडं गमित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं गंधे निच्छाति से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अणिट्ठतराए चेव, तएणं ते मागंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं२ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति२ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थणं महं एग आघायणं पासंति अट्ठियरासिसयसकुल भीमदरिसणिज्ज एगं च तत्थ सूलायतय पुरिस कलुणाइ कट्ठाइं विस्सराइ कुज्जमाणा पासंति, पासित्ता भीता जाव सजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छंति२ ते सूलाइय एव वयासी–एसणं देवाणुप्पिया! कस्साघयणे तुमं च णं के कओ वा इहं हव्वमागए केण वा इमेयारूव आवत्तिं पाविए?, तएणं से सूलाइयए पुरिसे मागंदियदारए एव वयासी–एसणं देवाणुप्पिया! रयणदीवेदेवयाए आघयणे अहण्णं देवाणुप्पिया! जबूद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागदीए आसवाणियए विपुल पणियभंडमायाए पोतवहणेण लवणसमुद्द ओयाए, तएण अह पोयवहणविवत्तीए निव्वुड्ढभंडसारे एग फलगखड आसाएमि, तएण अह उवुज्झमाणे२ रयणदीवदेवया मम ओहिणा पासइ२ मम गेण्हइ२ मए सद्धिं विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरति, तएण सा रयणदीवदेवया अण्णया कयाई अहालहुसगसि अवराहसि परिकुविया समाणी मम एयारूव आवत्ति पावइ, त ण णज्जति णं देवाणुप्पिया!

मूलम्—तएणं ते मागंदियदारिया तओमुहुत्तंतरस्स पासायवडिसए सइ वा रइं वा धिइ वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी -एवं खलु देवाणुप्पिया ! रयणद्दीवदेवयाए अम्हे एव वयासी- एव खलु अह सक्कवयणसदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, तं सेय खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्लं वणसड गमित्तए, अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेतिर२ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंतिर२ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं ते मागदियदारया तत्थवि सइं वा जाव आलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२ तत्थ णं वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं ते मागंदियदारया तत्थवि सति वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसडे तेणेव उवा०२ जाव विहरति, तएणं ते मागंदिय० तत्थवि सतिवा जाव अलभ० अण्णमण्ण एव वयासी --एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीविदेवया एव वयासी-- एवं खलु अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसंदेसेण सुट्ठिएण लवणाहिवहिणा जाव माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति तं भवियव्व एत्थकारणेणं, त सेय खलु अम्ह दक्खिणिल्लं

किया । समुद्घात करके फिर वह उस प्रसिद्ध देवगति से २१ बार लवण समुद्र के चारों ओर पर्यटन करने में प्रवृत्त हो गई ॥ सू० ४ ॥

સમુદ્ઘાત કરીને તે પોતાની પ્રસિદ્ધ દેવ ગતિથી એકવીશ વખત લવણસમુદ્રની ચારે બાજુએ ભ્રમણ કરવામા પ્રવૃત્ત થઈ ગઈ ॥ સૂત્ર “ ૪ ” ॥

पश्चात मुहूर्तान्तरात्=घटिकाद्वयरूपमुहूर्तानन्तरमित्यर्थं प्रासादावतंसके 'सइ वा' स्मृति अतिव्याकुलचित्ततया भविष्यत्कालिकसुखबाहुल्यरूपा वा, 'रइ वा' रतिं=मनोमुद वा 'धिइ वा' धृतिं=चित्तस्वास्थ्य वा 'अलभमाणा' अलभमानौ सन्तौ अन्योन्यमेवमवादिष्टाम्-एव खलु हे देवानुप्रिय! रत्नद्वीपदेवता आवामेव मवादीत्-एव खलु अह शक्रवचनसंदेशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावद् व्यापत्तिर्भविष्यति, 'त' तत्=तस्मात्कारणात् श्रयः खलु आवयो र्हे देवानुप्रिय! पौरस्त्य=पूर्वस्या दिशिस्थित वनषण्ड गन्तुम्। अन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृणुतः=

दारया) उन दोनो माकंदी के पुत्रो ने (तओ मुहुत्तंतरस्स पासाय वडिंसए सइ वा रइ वा धिइ वा अलभमाणा अण्णमण्ण एव वयासी) एक मूहूर्त भी उस श्रेष्ठ प्रासाद में अति व्याकुलित चित्त होने के कारण भविष्यत्कालिक सुख बाहुल्य रूप स्मृति को मनोमुद (मन को प्रसन्न करने वाला) रूप रति को और चित्तस्वास्थ्य रूप धृति को नहीं पाते हुए परस्पर में ऐसा विचार किया- (एव खलु देवाणुप्पिया! रयणद्दीवदेवया अम्हे एव वयासी) हे देवानुप्रिय! रयणा देवी ने हम लोगो से ऐसा कहा है कि (एव खलु अह सक्कवयणसंदेसेण सुट्ठिएण लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ-त सेय खलु अह देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्ल वणसंड गमित्तए) "मुझे शक्रेन्द्र की आज्ञानुसार लवण समुद्राधिपति सुस्थित देव ने ऐसा आदेश दिया है कि मैं २१ बार लवण समुद्र की प्रदक्षिणा करूँ" इत्यादि से लेकर

(तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडिंसए सइ वा रइ वा धिइ वा अलभमाणा अण्णमण्ण एव वयासी)

તે મહેલમા એક મુહૂર્ત જેટલા પ્રમાણના સમયમા પણ શાતિ મેળવી નહિ તેઓ વ્યાકુળ ચિત્ત હોવાથી ભવિષ્યમા પ્રાપ્ત થનારા સુખ રૂપ સ્મૃતિને મનોમુદ (મનને આનદિત કરનાર) રૂપ રતિને અને ચિત્ત સ્વાસ્થ્ય રૂપ ધૃતિ પ્રાપ્ત ન કરતા એક બીજાની સાથે વિચાર કરવા લાગ્યા (એવ ખલુ દેવાણુપ્પિયા! રયણદ્દીવ દેવયા અમ્હે એવ વયાસી) હે દેવાનુપ્રિય! રયણા દેવીએ અમને કહ્યુ છે કે

(एव खलु अह सक्कवयण संदेसेणं सट्ठिएण लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ- त सेय खलु अह देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्ल वणसंड गमित्तए)

મને શક્રેન્દ્રની આજ્ઞાથી પ્રેરાઇને લવણસમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવે હુકમ કર્યો છે કે મારે એકવીશ વખત લવણ સમુદ્રની પ્રદક્ષિણા કરવી વગેરેથી

तुम्हंपि इमेसि सरीरगाण का मण्णे आवत्ती भविस्सइ ?, तएणं ते मागदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमत्थं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइतय पुरिस एवं वयासी–कहण्णं देवाणुप्पिया! अम्हे रयणदीवे देवयाए हत्थाओ साहत्थि णित्थरिज्जामो ?, तएण से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदिय० एव वयासी–एसणं देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरूवधारी जक्खे परिवसति, तएण से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमये महया२ सद्देण एव वदति कं तारयामि कं पालयामि ?, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ल वणसंड सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुप्फच्चणियं करेह करित्ता जाणुपायवडिया पजलिउडा विणएण पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेण से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव वदेज्जा–क तारयामि क पालयामि?, ताहे तुब्भे वदह–अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि, सेलए भे जक्खे पर रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा, अण्णहा भे न याणामि इमेसि सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ॥सू०५॥

टीका—' तएण ते ' इत्यादि–ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ ततः=

' तएण ते मागदिय दारया ' इत्यादि ।

टीकार्थ–(तएण) उस रयणा देवीके चले जाने के बाद (ते मागदिय

(तएण ते मागदिय दारया ' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) त्यार पछी (ते मागदियदारया) બને માકંદીના પુત્રોએ

वनषण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तत्र खलु वापीषु च यावद् आलिगृहेषु च यावद् विहरतः। ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ यत्रैव पाश्चात्यो वनषण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य यावद् विहरतः। ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ अन्योन्यमेवमवादिष्टाम्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! आवां रत्नद्वीपदेवता-एवमवदत्-एवं खलु अहं देवानुप्रियौ! शक्रस्य वचनमन्देशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावत् मा खलु युवयोः

सघन्धी वनपड था वहा आये। वहा आकर उन्हो ने वावडिओं में स्नान किया-यावत् आलिघरों मे क्रीडा किया। (तएण ते मागदियदारगा तत्थ वि सइ वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसडे तेणेव उवा० २ जाव विहरति) परन्तु जब उन्हें वहा भी स्मृति आदि रूप कुछ भी प्राप्त नही हुआ तो वे वहाँ से निकल कर पश्चिम दिशा सघन्धी वनपड था वहा आये।

वहा आकर उन्हो ने वावड़िओ में स्नान किया और आलिघरों आदि मे परिभ्रमण किया। (तएण ते मागदिय० तत्थ वि सइ वा जाव अलभ० अण्णमण्ण एव वयासी) फिर भी उन माकदी-के उन दोनो पुत्रों को वहा शाति आदि कुछ भी नही मिला जब इस प्रकार की परिस्थिति उन्हो ने देखी तो परस्पर मे ऐसा विचार किया (एव खलु देवाणुप्पिया। अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी-एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसदेसेण सुट्ठएण लवणाहिवइणा जाव माण

વનખંડમા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેઓએ વાવોમા સ્નન કર્યુ યાવત આલિ-ઘરોમા ક્રીડાઓ કરી

(तएण ते मागदियदारगा तत्थ सइ वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थि-मिल्ले वणसडे तेणेव उवा० २ जाव विहरति)

પણ ત્યા પણ તેમને જ્યારે સ્મૃતિ વગેરે ૩૫ કઈ પણ સુખ મળ્યુ નહિ ત્યારે તેઓ ત્યાથી નીકળીને પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમા પહોચ્યા

પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમા જઇને તેઓએ વાવોમા સ્નાન કર્યું અને આલિઘરો વગેરેમા વિચરણા કર્યું

(तएण ते मागदिय० तत्थवि सइ वा जाव अलभ० अणगमण्ण एव वयासी)

ત્યા પણ પહેલાની જેમજ માકદી પુત્રોને કોઈ પણ જાતની શાતિ વળી નહિ આવી પરિસ્થિતિમા તેઓ એ પરસ્પર મળીને વિચાર કર્યો કે

(एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी- एव खलु अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसदेसेण सुट्ठएण लवणाहिवइणा जाव माण

स्वीकुरुत., प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यत्रैव पौरत्यो वनषण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तत्र खलु वापीषु च यावद् अभिरममाणौ आलिगृहेषु च यावद् विहरतः। ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ यत्रैवोत्तरौ

शरीर का विध्वस न हो यहा तक का रयणा देवी का सब कथन यहां इन दोनों की बात चीत में लगा लेना चाहिये। इसलिये हे देवानुप्रिय! हम लोगो को यही अब उचित है कि हम लोग पूर्वदिशा सबन्धी वन खंड में चलें। (अण्ण मण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वनसड तेणेव उवागच्छति २ तत्थ ण वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरति) इस प्रकार परस्पर में किये इस विचार को उन दोनों ने मान लिया और मान कर जहां पूर्वदिशा सबन्धी वनषड था वहां गये-वहां जाकर उन्हों ने बावड़ी आदि में खूब मन चाहा क्रीडा की बाद में वे रम्य वनस्पति विशेष के घरों आदि मे क्रीडा करने लगे। (तएण मगदियदारया तत्थ वि सतिं वा जाव अलभ० जेणेव उत्तरिल्ले वनसडे तेणेव उवागच्छति तत्थ ण वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरति) परन्तु उन माकदी दारकों को वहा जब भविष्यत्कालीन सुख बाहुल्य रूप स्मृति आदि कुछ भी प्राप्त नही हुआ तो वे वहा से निकल कर जहा उत्तर दिशा

માડીને તમારુ શરીર નષ્ટ થાય નહિ ત્યા સુધીની રયણા દેવીની ઉપર કહ્યા મુજબની બધી વિગત અહીં સમજવી જોઈએ એવી હે દેવાનુપ્રિય! હવે અમને એજ યોગ્ય દેખાય છે કે અમે પૂર્વ દિશાના વનખંડમા જઈએ

(अण्ण मण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वनसडे तेणेव उवागच्छति २ तत्थ ण वावीसु य जाव अभिरममाणा आलिघरएसु य जाव विहरति)

આ પ્રમાણે બને એકે બીજાના વિચારોથી સમત થયા અને ત્યાર પછી જ્યા પૂર્વ દિશાનો વનખંડ હતો ત્યા ગયા, ત્યા જઈને તેઓએ વાવો વગેરેમા ખૂબ જ પ્રમાણમા ક્રીડાઓ કરી અને પછી તેઓ ત્યાના જ રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના ગૃહો વગેરેમા ક્રીડા કરવા લાગ્યા

(तएण मागदियदारया तत्थ वि सतिं वा जाव अलभ० जेणेव उत्तरिल्ले वणसडे तेणेव उवागच्छ ति तत्थण वावीसु य जाव आलिघरए सु य जाव विहरति)

પણ માકદી દારકોને ત્યા પણ જ્યારે ભવિષ્યનુ સુખ બાહુલ્ય રૂપ સ્મૃતિ વગેરે કઈ મળ્યુ નહિ ત્યારે તેઓ ત્યાથી નીકળીને ઉત્તર દિશાના

तत्र-गमनमार्गे गन्धः 'णिद्धाइ' निर्धावति=साधेग समायाति, कीदृशो गन्ध ? इत्याह-'से जहानामए' तद् यथनामकम्र-तथाहि-'अहिमडेइ वा' अहिमृतक इति वा=मृतसर्पकलेवरमिति वा यावत् 'एत्तो वि' तस्मादपि मृतसर्पादिकलेव रादपि 'अणिट्ठतराए चेव' अनिष्टतर एव=यन्नामश्रवणेऽपि मनोऽतिविकृत जायते। ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तेनाशुभेन गन्धेन 'अभिभूयसमाणा' अभिभूतौ=व्याकुलौ सन्तौ स्वकेन उत्तरीयेण=उत्तरासङ्गेन 'दुपट्टा' इति प्रसिद्धेन आस्य=मुखैकदेशरूप स्व स्व नासिकामित्यर्थः 'पिहेंति' पिधत्तः=समाच्छादयतः, पिधाय=नासिकामाच्छाद्य यत्रैव दाक्षिणात्यो वनषण्डस्तत्रैवोपागतौ। तत्र खलु

उन्होंने आपस में निश्चित भी कर लिया। (पडिसुणित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए-तएणं गंधे निद्धाति से जहा नामए अहिमडेइवा जाव अणिट्ठतराए चेव, तएणं ते मागदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा मएहिं २ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थणं मह एगं आघायणं पासंति) विचार निश्चित कर फिर वे दोनों जहां दक्षिणदिशा सम्बन्धी वनषंड था उस ओर चल दिया। चलते २ उन्हें मार्ग में बहुत बडी दुर्गन्ध आई। जैसी दुर्गंध मृत सर्प आदि सडे हुए कलेवर से आती है उससे भी अधिक अनिष्टतर वह दुर्गन्ध थी।

इस के अनन्तर उन दोनो माकंदिके दारकों ने उस अशुभ गंधसे व्याकुल होकर अपने अपने मुख के एक देशरूप भाग नासिका को दुपट्टे के एकदेश से ढक लिया। ढक कर फिर वे दक्षिण दिशा सम्बन्धी

(पडिसुणित्ता जेणेव दाक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए-तएणं गंधे, निद्धाति से जहा नामए अहिमडेइवा जाव अणिट्ठतराए चेव तएणं ते मागदिय दारया तेणं असुभेणं गंधेण अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति २ जेणेव दाक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थणं मह एगं आघायणं पासंति)

અને ત્યાર પછી તેઓ બને જે તરફ દક્ષિણ દિશા સંબંધી વનખંડ હતો તે તરફ રવાના થયા રસ્તામા ચાલતા ચાલતા તેઓને એકદમ ખરાબ દુર્ગંધ આવી મરીને સડી ગયેલા સાપના શરીરની જ જેવી અનિષ્ટતા દુર્ગંધ હોય છે તેવી જ તે દુર્ગંધ પણ હતી માકંદી દારકોએ તે અશુભ ગંધથી વ્યાકુળ થઇને પોતાના મોના એક દેશ રૂપ ભાગ નાકને એસના છેડાથી ઢાકી દીધું ઢાકીને તેઓ આગળ દક્ષિણ દિશાના વનખંડમા ગયા ત્યા જતા જ તેઓએ એક શૂળી ચઢાવવાની જગ્યા જોઈ

शरीरस्य व्यापत्तिर्भविष्यति, ' त ' तत्=तस्मात्-कारणाद् भवितव्यमत्र कारणेन, तच्छ्रेय खलु आवयो दाक्षिणात्य वनषण्ड गन्तुम्, 'इतिकट्टु' इतिकृत्वा इतिविचार्य अन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृणुत, प्रतिश्रुत्य यत्रैव दाक्षिणात्यो वनषण्डस्तत्रैव 'पहारेत्थ गमणाए ' प्रधारयतो गमनाय=गन्तु प्रवृत्तौ प्रस्थितावित्यर्थः । ततः खलु=तदनु

तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ त भवियव्व एत्थ कारणेण त सेय खलु अम्ह दक्खिणिल्ल वणसड गमित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति) हे देवानुप्रिय यह तो तुम्हें ज्ञात ही है कि रयणद्वीप देवता-रयणादेवी-ने जो हमलोगों से ऐसा कहा था कि मुझे शक्रेन्द्र की आज्ञा से लवणाधिपति सुस्थित देवने लवणसमुद्र की २१ बार पर्यटना करने के लिये कहा है इत्यादि २ । सो तुम दक्षिणदिशा सम्बन्धी वनषड के सिवाय तीन दिशा सम्बन्धी वनषडों में ही चित्त के उद्विग्न आदि होने पर जाना वहा की वावड़िओं आदि में भी स्नान आदि कर अपने मन को आनदित करना दक्षिणदिशा सम्बन्ध वनषड में नहीं जाना वहा एक महाकाय विकराल सर्प रहता है । कहीं ऐसा न हो कि वहा जाने पर उसके द्वारा तुम्हारी मृत्यु हो जाय-सो उसके इस कथन में कोईन कोई कारण अवश्य होना चाहिये । अत इस कारण की जाच के लिये हमें दक्षिणदिशा सम्बन्धीवनखड में जाना श्रेयस्कर है । ऐसा उन्होंने परस्पर में विचार किया । और इस विचार को

तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ त भवियव्व एत्थ कारणेण त सेय अलु अम्ह दक्खिणिल्ल वणसड गमित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति)

હે દેવાનુપ્રિય! એ વાત તમે જાણતા જ હશો કે રત્નદ્વીપના દેવતા રયણા દેવીએ અમને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે શક્રેન્દ્રની આજ્ઞાથી પ્રેરાઇને લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવે એકવીશ વાર સમુદ્રની ચારે બાજુ મારે પરિભ્રમણ કરવું છે વગેરે તો તમે દક્ષિણ દિશા તરફના વનખંડ સિવાય બાકીના ત્રણે દિશાના વનખંડોમા ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન થાય ત્યારે જાને ત્યાની વાવો વગેરેમા સ્નાન વગેરે કરીને પોતાના મનને પ્રસન્ન કરજો દક્ષિણ દિશા તરફના વનખંડમા તમારે જવું નહીં કેમ કે ત્યા એક મોટો મહાકાળ વિકરાળ સાપ રહે છે કઈ એવું થાય નહિ કે તમે ત્યા જાઓ અને તેની લપેટમા આવીને તમારુ મૃત્યુ થઈ જાય તો તેનો આ વાતમા કઇક રહસ્ય ચોક્કસ હોવું જોઇએ એટલા માટે આ રહસ્ય વિશે ત્યાં જઇને આપણે કઇક જાણવું તો જોઇએ જ આમ પરસ્પર વિચાર કરીને તેઓએ ત્યા જવાનો મક્કમ વિચાર પાક કરી જ લીધો

मेवमवादिष्टाम्-एतत्खलु हे देवानुप्रिय ! कस्यायातन=वधस्थानम् ? त्वं च खलु-कोऽपि कुतो वा कस्मात्स्थानात् इह इव्यमागतः समागतः ? केन वा इमामेत रूपामापत्ति प्रापित ?। ततः खलु स शूलाचित्तक'=शूलारोपितः पुरुषो माकन्दिक दारकावेवमवदत्-एव खलु हे देवानुप्रियौ रत्नद्वीपदेवताया आयातन=रत्नद्वीप देवतया स्थापित वधस्थानम्-अह खलु हे देवानुप्रियौ ! जम्बूद्वीपात्=जम्बूद्वीपा-भिधानाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद्=भरतक्षेत्रात् काकन्दीनगर्यां 'आसवाणियए' अश्ववाणिजकः=अश्वव्यापारी विपुल 'पणियभाड' पणितभाण्ड=विक्रेय वस्तु-जातम्, आदाय=गृहीत्वा पोतवहनेन लवणसमुद्रम् 'ओवाए' अवयातः=अगा

प्रकार कहा-(एस ण देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे तुम च णं केकओवा इह हव्वमागए केण वा इमेयारूव आवत्ति पाविए ? तएण से सूलाइयए पुरिसे मागदियदारए एववयासी-एसण देवाणुप्पिया ! रयणदीव देवयाए आघ यणे अहण्ण देवाणुप्पिया ! जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ काग दीए आसवाणियाए विपुल पणिय भडमायाए पोहवहणेण लवणसमुद्द ओवाए) हे देवानुप्रिय ! 'कस्साघयणे' यह शूली स्थान किसका है। तुम कौन हो ? यहा कहासे आये हो ? और किसने तुम्हें इस आपत्तिमे डाला है। उन की इस बात को सुनकर उस शूलारोपित पुरुष ने उन दोनों माकदी-दारकों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! यह शूली स्थान रयणादेवीका है,में हे देवानुप्रियो ! जबूद्वीप नाम के द्वीपमे वर्तमान भरत क्षेत्रस्थ काकदी नाम की नगरी का निवासी अश्ववणिक्-घोडों का व्यापारी हूँ। मैं वहा से विक्रेयवस्तु समूह को लेकर नौकाद्वारा इस

(तएण देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे तुम च ण के कओवा इह हव्वमागए केणवा इमेयारूव आवत्ति पाविए ? तएण से सूलाइयए पुरिसे मागदियदारए एव वयासी- एसण देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए आघयणे अहण्ण देवाणु प्पिया ! जबू दीवाओ दीवा-ओ भारहाओ वासाओ काग.दीए आसवाणियाए विपुल पाणिय भडमायाए पोयवहणेण लवणसमुद्द ओयाए)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ શૂળા સ્થાન કોનુ છે ? તમે કોણ છો ? અહીં તમે કયાથી આવ્યા છો ? અને કોણે તમારી આવી હાલત કરી છે ? તેઓની વાત સાભળીને શૂળી ઉપર લટકતા માણસે માકદીદારકોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ શૂળા-સ્થાન રયણા દેવીનુ છે હે દેવાનુપ્રિયો ! હુ જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા વિદ્યમાન ભરતક્ષેત્રનો કાકદા નામની નગરીનો રહીશ છુ હુ અશ્વ વણિક-ઘોડાનો વેપારી-છુ. ત્યાથી હુ વેચાણની વસ્તુઓ સાથે લઈને નાવવડે આ લવણ સમુદ્રમા યાત્રા કરતો આવ્યો હતો (तएण अहं पोय

महदेकम् ' आघायण ' आघातनम्=आघातस्थान वधस्थानमित्यर्थः पश्यतः, तत् स्थान कीदृशम् ? इत्याह-' अट्ठियरासिसयसकुल ' अस्थिराशिशतसङ्कुलम्-अस्थ्नां राशिः=पुञ्जः, तेषा शतानि, तै. सङ्कुल=व्याप्तम् ' भीमदरिसणिज्ज ' भीमदर्शनीयम्-दर्शनमात्रेऽपि भयजनकम् । पुनश्च तत्रैक ' सूलाइतय ' शूलाचितक=शूलारोपित पुरुष ' कलुणाइ ' करुणानि=करुणाजनकानि ' कट्ठाइ ' कष्टानि=हृदयदुःखोत्पादकानि ' विस्सराइ ' विस्वराणि=विकृतध्वनिकानि वचनानि ' कुज्जमाण ' कूजन्तम्=अव्यक्तरूपेणोच्चरन्त पश्यत' । दृष्ट्वा च भीतौ ' जाव ' यावत्-यावच्छब्देन-त्रस्तौ त्रसितौ=त्रास प्राप्तौ उद्विग्नौ इति, ' सजायभया ' सञ्जातभयौ=प्राप्त भयौ तौ यत्रैव स शूलाचितपुरुषस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य त शूलाचित पुरुष

उस वनषड मे गये। वहा जाते ही उन्हों ने एक शूली चढानेका का स्थान देखा। (अट्ठियरासिसयसकुल भीमदरिसणिज्ज एगच तत्थ सूलाइतय पुरिस कलुणाइ कट्ठाइ विस्सराइ कुज्जमाण पासति पासित्ता भीया जाव सजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छति) जिस में सैकडो हड्डियो के ढेर लगे हुए थे। एव जो देखने में बड़ा भयप्रद था। वही पर उन्हों ने शूली पर चढे हुए एक पुरुष को देखा जो बहुत बुरी तरह चिल्ला चिल्ला रहा था। उसके इस चिल्लाने की आवाज को सुनकर हृदय मे दया का प्रवाह बहने लग जाता था। साथ २ में चित्तमें दुःख भी होने लगता था। उसको देखकर ये दोनों भयभीत हो गये। त्रास एव उद्वेगसे युक्त बन गये। इसी स्थितिमें ये दोनों जहां वह शूलीपर चढा हुआ पुरुष था, वहा पहुंचे (उवागच्छित्ता) वहा पहुँच कर (त सूलाइय एव वयासी) उन्हों ने उस शूलारोपित मनुष्य से इस

(अट्ठियरासिसयसकुल भीमदरसणिज्ज एग च तत्थ सूलाइतय पुरिस कलुणाइ कट्ठाइ कुज्जमाण पासति पासित्ता भीया जाव सजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छति)

ત્યા સેકડો હાડકાઓના ઢગલા પડયા હતા ત્યાનુ દૃશ્ય એકદમ ભયપ્રદ હતુ તેઓએ ત્યા શૂળી ઉપર ચઢેલા એક માણસને જોયો કે જે બહુજ ખરાબ રીતે કરુણ ક્રંદન કરી રહ્યો હતો તેની કરુણા ભર્યા અવાજને સાભળીને હૃદયમાં દયાનો પ્રવાહ વહેવા લાગતો હતો અને સાથે સાથે તેની એવી દુદશા જોઇને મનમા દુખ પણ થતુ હતુ તેઓ બને તેને જોઇને ડરી ગયા ત્રાસ અને ઉદ્વેગ યુક્ત થઈ ગયા આ પ્રમાણે તેઓ બને જ્યા તે માણસ શૂળી ઉપર લટકી રહ્યો હતો ત્યા ગયા (उवागच्छित्ता) ત્યા જઇને (त सूलाइयं एव वयासी) તેઓએ શૂળી ઉપર લટકતા માણસને આ પ્રમ

ता सती मामेतद्दुर्गमापत्तिं प्रापयति तन्न ज्ञायते खलु हे देवानुप्रियौ ! युवयोरप्यनयोः शरीरयो का=कीदृशी आपत्तिर्भाविष्यति ?, इति 'मन्ने' मन्ये=चिन्तयामि ।

ततः खलु स शूलाचितपुरुषस्तौ माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्-एष खलु हे देवानुप्रियौ ! पौरस्त्ये वनषण्डे शैलकस्य यक्षस्य यक्षायतने शैलको नाम अश्व

समय मेरे द्वारा उसका थोड़ा सा अपराध बन गया सो उस थोडे से अपराध के बन जाने पर वह बहुत अधिक कुपित हो गई। कुपित होकर उसने मुझे फिर इस विपत्ति में डाल दिया है। अतः हे देवानुप्रियों। तुम दोनों के शरीर की भी कैसी दशा होगी यह कौन जान सकता है-मैं इसीका विचार कररहा हूँ। (तएणं ते मागंदिय दारया तस्स सूलाइयपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव सजायभया सूलाइयपुरिसं एवं वयासी) इस तरह उस शूलारोपित पुरुष के मुख से इस बात को सुनकर और उसका अच्छी तरह हृदय से विचार कर वे दोनों माकंदी-दारक बलिवतर- अत्यन्त-भयभीत हो गये यावत् भयत्रस्त होकर उन्हों ने फिर उस शूलारोपित पुरुष से इस प्रकार कहा (कहण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो ?) हे देवानुप्रिय ! हम लोग कैसे इस रयणा देवी के हाथ से शीघ्र साक्षात् छूट सकते हैं- (तएणं से सूलाइयए पुरिसे ते मागदिय० एवं वयासी एवमेयं देवाणुप्पिया ! पुर

તેણે ઇચ્છા મુજબ કામ ભોગો ભોગવ્યા કોઈ એક વખતે મારાથી સહેજ ભૂલ થઈ ગઈ તે મારી સહેજ ભૂલથી પણ અત્યધિક ગુસ્સે થઈ ગઈ અને તેણે ત્યાર પછી મારી આવી હાલત કરી છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારા શરીરની પણ શી દશા થશે ! તે કોણ જાણી શકે તેમ છે હું અત્યારે એજ વિચાર કરી રહ્યો છુ

(तएणं ते मागदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बलियतर भीया जाव सजायभया सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी)

આ શૂળી ઉપર લટકતા માણસના મોથી આ બધી વિગત જાણીને તેના ઉપર ખૂબ જ ગભીરતાથી વિચાર કરીને તેઓ બને માકંદી દારકો ખૂબ જ-ભયભીત થઈ ગયા યાવત્ ભયત્રસ્ત થઈને તેઓ બનેએ શૂળી ઉપર લટકતા માણુસને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(कहण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो)

હે દેવાનુપ્રિય ! રયણા દેવીના હાથમાથી અમે જલ્દી કેવા રીતે મુક્ત થઈએ ?

हितवान् । ततः खलु अहं 'पोतवहणविपत्तीए' पोतवहनविपत्तौ, नौरायां भग्नायां सत्यां 'निव्वुड्डभंडसारे' निर्बुडितभाण्डसारः जलनिमग्नवस्तुसारः, एकं फलक-खण्डमासादयामि । ततः खलु अहं 'उन्नुज्झमाणे २ उद्युध्यमानः २ उत्तरन् २ रत्नद्वीपान्ते=रत्नद्वीपसमीपे खलु 'संवूढे' संव्यूढः=तीरं प्राप्तः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता माम् 'ओहिणा' अवधिना=अवधिज्ञानेन पश्यति, दृष्ट्वा मां गृह्णाति, गृहीत्वा मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् 'भुंजमाणी' भुञ्जाना 'विहरइ' विहरति=आस्तेस्म । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता, अन्यदा कदाचित् 'अहालहुसगंसि' यथालघुस्वके यथाप्रकारके लघुस्वरूपे स्तोकमात्रेऽपराधे परिकुपि

लवणसमुद्र में उत्तरा (तएणं अहं पोयवहणविवत्तीए) भाग्यवशात् मेरी नौका इस समुद्र में टकरा जाने से डूबगई । (निव्वुड्डभंडसारे एगं फलगखंड आसाएमि) इस तरह जिसका समस्त वस्तुसार जलनिमग्न हो चुका है ऐसे मुझे वहीं पर एक काष्ठफलक प्राप्त हो गया । (तएणं अहं उन्नुज्झमाणे२ रयणदीवं तेणं संवूढे) उसकी सहायतासे तैरताहुआमैं इस रत्नद्वीपके पास आपहुँचा। (तएणं सा रयणदीवदेवया ममं ओहिणा पासइ) इतने में उस रत्नद्वीपदेवी ने मुझे अपने अवधिज्ञान से देख लिया-(पासित्ता ममं गेण्हइ, गेण्हित्ता मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ तएणं सा रयणदीवदेवया अण्णया कयाइ अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एयारूवं आवत्तिं पावेइ तं न णज्जइ णं देवाणुप्पिया ! तुम्हंपि इमेसिं सरीर गाणं का मण्णे आवत्ती भविस्सइ ?) देखकर उसने मुझे अपने पास रख लिया। रखकर मेरे साथ उसने मन चाहे खूब कामभोगोंको भोगा। किसी एक

वहण विवत्तीए) દુર્ભાગ્યથી મારી નાવ આ સમુદ્રમા અથડાઇને ડૂબી ગઈ (निव्वुड्डभंडसारे एगं फलग-खंडं आसाएमि) આ રીતે વેગાણુની બધી જ વસ્તુઓ જ્યારે પાણીમા ડૂબી ગઈ ત્યારે પાણીમાજ એક લાકડુ મને મળી ગયુ (तएणं अहं उन्नुज्झमाणे २ रयणदीवं तेणं संवूढे) તેના ઉપર તરતો હું આ રત્નદ્વીપની પાસે આવી પહોચ્યો (तएणं सा रयणदीवदेवया ममं ओहिणा पासइ) એટલામા તે રત્નદ્વીપ દેવીએ મને પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જોઈ લીધો

(पासित्ता ममं गेण्हइ, गेण्हित्ता मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ तएणं सा रयणदीवदेवया अण्णया कयाई अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एयारूवं आवत्तिं पावेइ तं न णज्जति णं देवाणुप्पिया ! तुम्हंपि इमेसिं सरीरगाणं कामण्णे आवत्ती भविस्सइ ?)

જોઇને તેણે મને પોતાની પાસે રાખી લીધો અને રાખીને

ता सती मामेतद्रूपमापत्तिं प्रापयति तन्न ज्ञायते खलु हे देवानुप्रियौ ! युवयोरप्ययोः शरीरयो का=कीदृशी आपत्तिर्भाविष्यति ?, इति 'मन्ने' मन्ये=चिन्तयामि ।

ततः खलु स शूलाचितपुरुषस्तौ माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्–एष खलु हे देवानुप्रियौ ! पौरस्त्ये वनषण्डे शैलकस्य यक्षस्य यक्षायतने शैलको नाम अश्व

समय मेरे द्वारा उसका थोडा सा अपराध बन गया सो उस थोडे से अपराध के बन जाने पर वह बहुत अधिक कुपित हो गई। कुपित होकर उसने मुझे फिर इस विपत्ति में डाल दिया है। अतः हे देवानुप्रियों। तुम दोनो के शरीर की भी कैसी दशा होगी यह कौन जान सकता है–मैं इसीका विचार कररहा हूँ। (तएणं ते मागदिय दारया तस्स सूलाइयपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइसयं पुरिसं एवं वयासी) इस तरह उस शूलारोपित पुरुष के मुख से इस बात को सुनकर और उसका अच्छी तरह हृदय से विचार कर वे दोनों माकन्दी-दारक बलितर- अत्यंत-भयभीत हो गये यावत् भयत्रस्त होकर उन्हों ने फिर उस शूलारोपित पुरुष से इस प्रकार कहा (कहण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवं देवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो ?) हे देवानुप्रिय ! हम लोग कैसे इस रयणा देवी के हाथ से शीघ्र साक्षात् छूट सकते है– (तएणं से सूलाइयपुरिसे ते मागदिय० एवं वयासी एमेव देवाणुप्पिया ! पुर

તેણે ઈચ્છા મુજબ કામ ભોગો ભોગવ્યા કોઈ એક વખતે મારાથી સહેજ ભૂલ થઈ ગઈ તે મારી સહેજ ભૂલથી પણ અત્યધિક ગુસ્સે થઈ ગઈ અને તેણે ત્યાર પછી મારી આવી હાલત કરી છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારા શરીરની પણ શી દશા થશે ? તે કોણ જાણી શકે તેમ છે હું અત્યારે એજ વિચાર કરી રહ્યો છુ

(तएणं ते मागदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी)

આ શૂળી ઉપર લટકતા માણસના મોથી આ બધી વિગત જાણીને તેના ઉપર ખૂબ જ ગંભીરતાથી વિચાર કરીને તેઓ બને માકંદી દારકો ખૂબ જ–ભયભીત થઈ ગયા યાવત્ ભયત્રસ્ત થઈને તેઓ બનેએ શૂળી ઉપર લટકતા માણસને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(कहण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवं देवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो)

હે દેવાનુપ્રિય ! રયણા દેવીના હાથમાથી અમે જલ્દી કેવા રીતે મુક્ત થઈ શકીએ ?

रूपधारी यक्षः परिवसति=वर्त्तते । ततः खलु स शैलको यक्षः ' चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु ' चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु-चतुर्दश्यामष्टम्याम् ' उद्दिष्ट ' त्ति अमावास्यायां पूर्णिमायां च तिथौ ' आगयसमए ' आगतसमये=आसन्नीभूतावसरे ' पत्तसमए ' प्राप्तसमये उपलब्धावसरे साक्षादेवावसरे, यथोचितसमय सम्माप्येत्यर्थ महता महता शब्देन=उच्चैः स्वरेण एव वदति-' क तारयामि ? क पालयामि=रक्षयामि?, इति, ' त ' तत् तस्मात् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियो! पौरस्त्य वनषण्ड, शैलकस्य यक्षस्य ' महरिह ' महार्हा महायोग्या ' पुप्फच्चणिय '

च्छमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरूवधारी जक्खे परिवसइ) उन की इस प्रकार की बात सुनकर उस शूलारोपित पुरुष ने उन माकंदी दारकों से इस प्रकार कहा । हे देवानुप्रियो ! पूर्व दिशा की वनषंड में एक शैलकयक्ष का यक्षायतन है । उस में अश्वरूप धारी शैलक नामका यक्ष रहता है । (तएणं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया२ सद्देण एव वयइ, क तारयामि, कपालयामि ? त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ल वणसंड सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुप्फच्चणिय करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पंजलिउडा विणएण पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेणं सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव वदेज्जा क तारयामि क पालयामि ? ताहे तुब्भे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि) वह शैलक यक्ष चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या एवं पूर्णमासी

(तएणं से सूलाइयए पुरिसे ते मागदिय० एव वयासी एसण देवाणुप्पिया! पुराच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरूवधारी जक्खे परिवसइ)

તેઓની આ પ્રમાણેની વાત સાભળીને તે શૂળી ઉપર લટકતા પુરુષે માકંદી દારકોને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! પૂર્વ દિશાના વનખંડમા એક શૈલક યક્ષનુ યક્ષાયતન છે ત્યા અશ્વરૂપધારી શૈલક નામે યક્ષ રહે છે

(तएणं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया २ सद्देण एव वयइ क तारयामि क पालयामि ? त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ल वण सड सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुप्फच्चणिय करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पजलिउडा विणएण पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेण सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव वदेज्जा क तारयामि क पालयामि ? ताहे तुब्भे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि)

पुष्पार्चनिका कुरुत, कृत्वा जानुपादपतितौ=जानुनीपादौच भूमौ निधाय विनम्रीभूतौ पञ्जलिउडा ' प्राञ्जलिपुटौ संयोजितकरपुटौ, हस्तौ संयोज्येत्यर्थः ' विणएण ' विनयेन=नम्रभावेन ' पज्जुवासमाणा ' पर्युपासीना=तं सेवमानौ तिष्ठतम्, यदा खलु स शैलको यक्ष आगतसमये=अवसरे समागते प्राप्तसमये=उपलब्धावसरे एवं वदेत्-' कं तारयामि कं पालयामि ? ' इति तदा युवां वदतम्-हे शैलक यक्ष ! आवां तारय, आवां पालय । शैलको ' भे ' युवाभ्यामाराधितो यक्ष ' ' पर ' समर्थः, स युवां रत्नद्वीपदेवतायाः हस्तात् ' साहत्थिं ' साक्षात् ' णित्थारेज्जा ' निस्तारयिष्यति=पारं नेष्यति, सङ्कटान्मोचयिष्यतीत्यर्थः, अन्यथा=एवमकरणे 'भे' युवयोः न जानामि अनयोः शरीरयोः का=कीदृशी आपत्तिर्भविष्यति ?, इति ' मन्ने ' मन्ये=अहं चिन्तयामि ॥ सू० ५ ॥

के दिन उचित समय प्राप्त होने पर बडे जोर २ से ऐसा कहता है कि मैं किसको तारू किसकी रक्षा करूँ ? इस लिये हे देवानुप्रियो! तुम दोनो पूर्वदिशा सम्बन्धी वनषड में जाओ और वहा उस शैलक यक्ष की आराधना करो । आराधन करके फिर उस के समक्ष दोनो घुटनों को और पैरो को टेककर- भूमिपर रखकर- अत्यन्तनमे हुए बडे विनय के साथ दोनो हाथो को जोड कर उसकी उपासना करने में लग जाओं । जब वह शैलक यक्ष अवसर आने पर वैसा कहे कि मैं किसे तारू किसे रक्षित करू ? तो तुम दोनों कहना हे शैलक यक्ष ! हम दोनों को यहा से तारों हमारी रक्षा करो । (सेलए भे जक्खे पर रयण दीव देवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ) इस तरह तुम

તે શૈલક યક્ષ ચૌદશ, આઠમ, અમાવસ્યા અને પૂનમના દિવસે ઉચિત સમય પ્રાપ્ત થતા બહુ મોટેથી આ પ્રમાણે કહે છે કે કોને હું પાર પહોચાડુ ? કોની હુ રક્ષા કરૂ ? એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બને પૂર્વ દિશાના વનખંડમા જાઓ અને ત્યા તે શૈલક યક્ષની આરાધના કરો આરાધના કરીને તેની સામે બને ઘૂટણો અને પગો ટેકાને ઘણા જ નમ્ર શબ્દોમા વિનયની સાથે બને હાથ જોડીને તેની ઉપાસના કરવા લાગો જ્યારે તે શૈલક-યક્ષ સમય આવતા આ પ્રમાણે કહેવા લાગે કે કોને હુ પાર ઉતારૂ અને-કોની રક્ષા કરૂ ? ત્યારે તમે બને વિનતી કરતા કહેજો કે-હે શૈલક યક્ષ ! અમો બનેને અહીંથી પાર ઉતારો અમારી રક્ષા કરો

सेलए भे जक्खे पर रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ)

रूपधारी यक्षः परिवसति=वर्त्तते । ततः खलु स शैलको यक्षः ' चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु ' चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु-चतुर्दश्यामष्टम्याम् ' उद्दिट्ठ ' त्ति अमावास्यायां पूर्णिमायां च तिथौ ' आगयसमए ' आगतसमये=आसन्नीभूतावसरे ' पत्तसमए ' प्राप्तसमये उपलब्धावसरे साक्षादेवावसरे, यथोचितसमय सम्माप्येत्यर्थं महता महता शब्देन=उच्चैः स्वरेण एवं वदति-' क तारयामि ? क पालयामि=रक्षयामि?, इति, ' त ' तत् तस्मात् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! पौरस्त्ये वनषण्ड, शैलकस्य यक्षस्य ' महरिह ' महार्हा महायोग्या ' पुप्फच्चणिय '

च्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरूवधारी जक्खे परिवसइ) उन की इस प्रकार की बात सुनकर उस शूलारोपित पुरुष ने उन माकंदी दारकों से इस प्रकार कहा । हे देवानुप्रियो ! पूर्व दिशा की वनषंड में एक शैलकयक्ष का यक्षायतन है । उस में अश्वरूप धारी शैलक नामका यक्ष रहता है । (तएणं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया२ सद्देण एवं वयइ, क तारयामि, कपालयामि ? त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेणं सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा क तारयामि क पालयामि ? ताहे तुब्भे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि) वह शैलक यक्ष चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या एवं पूर्णमासी

(तएणं से सूलाइयए पुरिसे ते मागदिय० एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरूवधारी जक्खे परिवसइ)

તેઓની આ પ્રમાણેની વાત સાંભળીને તે શૂળી ઉપર લટકતા પુરુષે માકંદી દારકોને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! પૂર્વ દિશાના વનખંડમાં એક શૈલક યક્ષનું યક્ષાયતન છે ત્યાં અશ્વરૂપધારી શૈલક નામે યક્ષ રહે છે

(तएणं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया२ सद्देणं एवं वयइ क तारयामि क पालयामि ? त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेणं सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा क तारयामि क पालयामि ? ताहे तुब्भे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि)

तो भे अहं पिट्ठातो विहुणामि, अहणं तुब्भे रयणदीवदेव-
याए एयमट्ठं णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खह तो
भे रयणदीवेदेवया हत्थाओ साहत्थि णित्थारेमि, तएणं ते
मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी जण्णं देवाणुप्पिया!
वइस्सइ तस्स णं उववायवयणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएणं से
सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाग अवक्कमइ२ वेउव्वि-
यसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता सखेज्जाइ जोयणाइं दंडं
निस्सरेइ निरसरित्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमु०२एगं महं आसरूवं
विउव्वइ२ ते मागंदियदारए एव वयासी–हं भो मागंदिया!
आरुह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठसि, तएणं ते मागंदिय०
हट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणाम करेंति२ सेलगस्स पिट्ठिं
दुरूढा, तएण से सेलए ते मागंदिय० दुरूढे जाणित्ता लत्त-
ट्ठतालप्पमाणमेत्ताइ उड्ढं वेहास उप्पयति, उप्पइत्ता य
त्ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झमज्झेणं
जेणेव जबूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानयरी
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—' तएण ते ' इत्यादि । ' तएण ' ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तस्य शूलाचितस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य शीघ्र, चण्ड=प्रबल, चपल,

' तएण ते मागदिय० ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (ते मागदियदारया) वे दोनों माकदी के दारक (तस्स सूलाइयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा) उस शूलारोपित

' तएण ते मागदिय ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (ते मागदियदारया) तेओ બને માકદી દારકોએ (तस्स सूलाइयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा) शूળी ઉપર લટકતા પુરૂષની વાત

मूलम्–तएणं ते मागदिय० तस्स सूलाइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सिग्घं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवा० पोक्खरिणिं ओगाहंति२ जलमज्जणं करेंति२ जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति२ जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उ०२ आलोए पणाम करेंति२ महरिह पुप्फच्चणियं करेंति२ जाणुपायवडिया सुस्सूसमाणा णमंसमाणा पज्जुवासंति, तएणं से सेलए जक्खे आगतसमये पत्तसमए एव वयासी–क तारयामि क पालयामि ?, तएण ते मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति उट्ठित्ता करयल० एव वयासी –एव खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झं२ वीइवयमणाण सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया बहूहि खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गं करेहिइ, त जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा

दोनों के द्वारा आराधित हुआ वह शैलक यक्ष तुम दोनों के रयणादेवी के हाथ से साक्षात् निस्तारित करवा देगा–अर्थात् उस के सकट से तुम्हे छुडवा देगा–नही तो कौन कह सकता है कि तुम्हारे शरीर की क्या दशा हो। मैं इसी बात का विचार कर रहा हूँ। सूत्र " ५ "

આ પ્રમાણે તમારા વડે આરાધાયેલા તે શૈલક યક્ષ રયણા દેવીના લપેટમાંથી સાક્ષાત્ તમને બનેને મુક્ત કરશે એટલે કે તેના સકટમાંથી તમને તે છોડાવશે નહિતર તમારા શરીરની શી દશા થશે ? તે કોણ જાણી શકે તેમ છે હુ એજ વિચાર કરી રહ્યો છુ ॥ સૂત્ર " ૫ " ॥

तो भे अहं पिट्ठातो विहुणामि, अहणं तुब्भे रयणदीवदेव-
याए एयमट्ठं णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खह तो
भे रयणदीवदेवया हत्थाओ साहत्थि णित्थारेमि, तएणं ते
मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी जएणं देवाणुप्पिया!
वइस्सइ तस्स णं उववायवयणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएणं से
सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमइ२ वेउव्वि-
यसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता सखेज्जाइं जोयणाइं दंडं
निस्सरेइ निरसरित्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमु०२एगं महं आसरूवं
विउव्वइ२ ते मागंदियदारए एवं वयासी–हं भो मागंदिया!
आरुह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठसि, तएणं ते मागंदिय०
हट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणाम करेंति२ सेलगस्स पिट्ठिं
दुरूढा, तएण से सेलए ते मागंदिय० दुरूढे जाणित्ता सत्त-
ट्ठतालप्पमाणमेत्ताइ उड्ढं वेहास उप्पयति, उप्पइत्ता य
त्ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झमज्झेणं
जेणेव जबूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानयरी
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—' तएण ते ' इत्यादि। ' तएण ' ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तस्य शूलाञ्चितस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य शीघ्र, चण्ड=प्रबल, चपल,

' तएण ते मागदिय० ' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (ते मागदिय दारया) वे दोनों माकदी के दारक (तस्स सूलाइयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा) उस शूलारोपित

' तएण ते मागदिय ' इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (ते मागदियदारया) તેઓ બને માકદી દારકોએ (तस्स सूलाइयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा) શૂળી ઉપર લટકતા પુરૂષની વાત

खरित, 'वेइय' वेगित=सवेग यथास्यात्तथा शीघ्रातिशीघ्रमित्यर्थः यत्रैव पौरस्त्य वनषण्ड, यत्रैव पुष्करिणी=वापी तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य पुष्करिणीमवगाहेते=अन्तः प्रविशतः, अवगाह्य जलमज्जन=जलस्नान कुरुतः, कृत्वा यानि तत्र उत्पलादि वा पद्मानि वा यावद् गृहीतः, गृहीत्वा यत्रैव शैलकस्य यक्षस्य यक्षायतनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'आलोए' आलोके यक्षदर्शने सति प्रणाम कुरुतः, कृत्वा महार्हं=महायोग्या पुष्पार्चनिका कुरुत', कृत्वा जानुपादपतितौ=विनम्रकायौ 'सुस्सूसमाणा' शुश्रूषमाणौ=यक्षसेवां कुर्वाणौ 'णमसमाणा' नमस्यन्तौ=नमस्कार कुर्वाणौ 'पज्जुवासति' पर्युपासातेस्म, सेवा कृतवन्तौ। ततः खलुः स शैलको यक्ष आगतसमये यावत्समये एवमवादीत्-'क तारयामि कपाला

पुरुष के मुख से इस बात को सुनकर (निसम्म) और उसे अपने चित्त में निश्चित कर (सिग्घ चउ चवल तुरिय वेइय जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोक्खरिणी ओगाहंति, ओगाहित्ता जलमज्जण करेंति, करित्ता जाइं तत्थ-उप्पलाइं जाव गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आलोए पणाम करेंति) शीघ्र ही वहां से बहुत जल्दी त्वरायुक्त बन जल्दी २ दौडते हुए से होकर जहां वह पूर्व दिशा सबन्धी वनषड-तथा पुष्करिणी थी वहां आये। वहां आकर उन्होंने पुष्करिणी में अवगाहन किया फिर स्नान किया। फिर उस से कमल थे वहां से लिया और लेकर जहां शैलक यक्ष का यक्षायतन था उस ओर चलदिये। वहा पहुँचते ही उन्हो ने यक्ष के दिखलाइ पडते नमस्कार किया। (करित्ता महरिह

સાંભળીને (निसम्म) અને તેને પોતાના મનમા ઠસાવીને

(सिग्घ चड चवल तुरिय वेइय जेणेव पुरच्छिमिल्लो वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोक्खरिणी ओगाहंति, ओगाहित्ता जल मज्जण करेंति, करित्ता जाइं तत्थं उप्पलाइं जाव गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आलोए पणाम करेंति)

સત્વરે ત્યાથી શીઘ્ર ચાલથી દોડતા દોડતા જ્યા તે પૂર્વ દિશા સબધી વનખડ તેમજ પુષ્કરિણી હતી ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેઓ પુષ્કરિણીમા ઉતર્યા અને સ્નાન કર્યું પુષ્કરિણીમા જેટલા કમળો ખીલેલા હતા તેઓને લઈ લીધા અને ત્યાર પછી શૈલક યક્ષના યક્ષાયતન તરફ રવાના થયા ત્યા પહોચીને તેઓએ યક્ષની સામે જતા જ નમન કર્યું

यामि ?' इति । तत खलु तौ माकन्दिकदारकौ 'उट्ठाए' उत्थया स्वकीयोत्थानशक्त्या 'उट्ठेति' उत्तिष्ठतः, उत्थाय करतलपरिगृहीत शिरआवर्त दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिष्टाम्-'आवा तारय, आवा पालय' इति । ततः खलु स शैलको यक्षस्तो माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रियौ ! युवयो मया सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन=अन्तरामार्गेण 'वीइवयमाणाण' व्यति-

पुप्फचणिय करेति-करित्ता जाणु पायवडिया सुस्सूसमाणा णमसमाणा पज्जुवासति, तएण से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव वयासी-क तारयामि क पालयामि तएण ते मागदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति उट्ठित्ता करयल० एव वयासी-अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहि) नमस्कार कर फिर उन्हों ने उस की आराधना-की। आराधन कर के फिर वे दोनों अपने घुटने और पैर टेक कर उस के चरणो पर पड गये। इस प्रकार बार २ उस की सेवा करते हुए वे वहा रहने लगे-जब उचित अवसर प्राप्त हुआ और उस शैलकयक्ष ने ऐसा कहा-कि-मैं किस को तारू, किस को पार उतारूँ-तो उसी समय उठ कर इन दोनों माकदी दारकों ने उस से दोनो हाथ जोड कर ऐसा कहा-आप हमें तारिये हमें पार उतारिये-(तएण से सेलए जक्खे ते मागदिय० एवं वयासी) उन दोना माकदी-दारकों की इस बात को सुनकर उस शैलक यक्ष ने उन से ऐसा कहा- (एव खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भ मएसद्धिं लवणसमुद्द मज्झ २ वीइवयमाणाण सा रयणदीवदेवया

(करित्ता महरिह पुप्फचणिय करेंति-करित्ता जाणुपायवडिया सुस्सूसमाणा णमसमाणा पज्जुवासति, तएण से सेलए जक्खे आगत समए पत्तसमए एव वयासी क तारयामि क पालयामि तएण ते मागदिय दारया उट्ठाए उट्ठेंति उट्ठित्ता करयल० एव वयासी- अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहिं)

નમન કરીને તેઓએ તેની આરાધના કરી આરાધના કરીને તેઓ બને જમીન ઉપર ઘૂંટણો ટેકીને તેના ચરણોમા આળોટી ગયા આ રીતે વારવાર તેની ઉપાસના કરતા તેઓ બને ત્યા જ રહેવા લાગ્યા જ્યારે ઉચિત સમય આવ્યો ત્યારે શૈલક યક્ષે એમ કહ્યુ-કે કોને હુ તારૂ અને કોને પાર ઉતારૂ તરત જ માકદી દારકો ઊભા થયા અને બને હાથ જોડીને યક્ષને વિનતી કરવા લાગ્યા કે તમે અમને તારો અને પાર ઉતારો (तएणं से सेलए जक्खे ते मांगदिय० एव वयासी) બને માકદી દારકોની વિનતી સાભળીને શૈલક યક્ષે તેઓને કહ્યુ કે—

(एव खलु देवाणुप्पिया तुब्भ मए सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झ २ वीइवयमाणा

व्रजतोः=गच्छतो सतो सा रत्नद्वीपदेवता पापा=पापिष्ठा चण्डा=कोपशीला, रुद्रा=क्रूरा क्षुद्रा=तुच्छस्वभावा साहसिका=अविचारितकारिणी बहुभि 'खरएहिय' खरकैः=कठोरै, 'मउएहिय' मृदुकैः=सुकोमलै, 'अणुलोमेहिय' अनुलोमैः=मनोऽनुकूलैः, 'पडिलोमेहिय' प्रतिलोमैः=मन प्रतिकूलभूतैश्च 'सिंगारेहिय' शृङ्गारैः=कामरागजनकैः 'कलुणेहिय' करुणैः=करुणाजनकैश्च 'उवसग्गेहिय' उपसर्गैः=उपसर्गजनकवचनै. 'उवसग्ग' उपसर्गम्=उत्पात 'करेहिइ' करिष्यति, तद् यदि खलु युवां हे देवानुप्रियौ ! रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थम् 'आढाहइ' आद्रि-

पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया, बहूहिं खरएहिं य मउएहिं य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहिं य उवसग्गेहिं य उवसग्ग करेहिइ) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग मेरे साथ लवण समुद्र में बीचों बीच के मार्ग से होकर चलो-उस समय वह पापिष्ठ, कोपशील, क्रूर, क्षुद्र एव अविचारित कारिणी रयणा देवी तुम्हारे ऊपर अनेक कठोर, सुकोमल, मनोऽनुकूल, मनः प्रतिकूल कामराग जनक एव करु णोत्पादक ऐसे उपसर्ग वचनों द्वारा उवसर्ग-उत्पात-करेगी । (त जइण तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणादीव देवयाए एयमट्ठ आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा तो मे अह पिट्ठातो विहुणामि अहण तुब्भे रयण दीव देवयाए एयमट्ठ णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खह तो मे रयण दीव देवया हत्थाओ-साहत्थिं णित्थरेमि) सो यदि हे देवानुप्रियो ! तुम लोग रयणा देवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से

ण सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया, बहूहिं खरएहिं य मउएहिं य अणुलोहि य पडिलोमे हि य सिंगारेहि य कलुणेहिं य उवसग्गेहिं य उवसग्ग करेहिइ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! મારી સાથે લવણ સમુદ્રની વચ્ચેના માર્ગમા થઇને તમે ચાલશો તે વખતે તે પાપિષ્ઠ, કોપશીલ, ક્રૂર, ક્ષુદ્ર અને અવિચારિતકારિણી રયણાદેવી ઘણા કઠોર, સુકોમળ, મનગમતા, મનને પ્રતિકૂલ, કામરાગને ઉત્પન કરનારા અને કરુણોત્પાદક ઉપસર્ગ વચનો વડે ઉપસર્ગ-ઉત્પાત કરશે

(त जइण तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ आढाहवा परियाणहवा अवयक्खहवा तो मे अह पिट्ठातो विहणामि अहण तुब्भे रयणदीव देवयाए एयमट्ठ णो आढाह णो परियाणाह णो अवयक्खह तो मे रयणदीवदेवया हत्थाओ साहत्थिं णित्थरेमि)

ને હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો રયણા દેવીના આ ઉપસર્ગ રૂપ અર્થને સન્માનની દૃષ્ટિએ નહીં એટલે કે તેના વચનોને તમે સત્કારશો, સ્વીકારશો

येथे तदादर करिष्यथ', वा=अथवा 'परियाणह वा' परिजानीथः=स्वीकरिष्यथः वा, अथवा 'अवयक्खह वा' पश्यथ = अवलोकयिष्यथ 'तो' तदा 'भे' युवाम्ह 'पिट्ठाओ' पृष्ठात्=मम पृष्ठभागात् 'विहुणामि' विधुनामि पातयिष्यामि। अथ खलु यदि युवा रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थं नो आद्रियेथे, नो परिजानीथः, 'नो अवयक्खह' ता मति नो पश्यतः, तदुपसर्गं सहिष्येथे इत्यर्थः 'तो' तदा 'भे' युवा रत्नद्वीपदेवताहस्तात् 'साहत्थिं' स्वहस्तेन 'णित्थारेमि' निस्तारयामि=पार नेष्यामि। ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ शैलक यक्षमेवमवादिष्टाम्—य कश्चन खलु हे देवानुप्रिय! त्वमाराध्यत्वेन वदिष्यति, यत्खलु 'युवयोरयमाराध्यः' इति तस्य खलु=तस्यैव उपपातनिर्देशे=सेवावचनाज्ञाया 'चिट्ठिस्सामो' स्थास्याव किंपुनर्भवतः 'भवदाज्ञानुसारेणैव वर्त्तिष्यावहे इत्यर्थः। ततः खलु स शैलको यक्षः 'उत्तरपुरत्थिम' उत्तरपौरस्त्यम् ईशानकोणसम्बन्धिन 'दिसीभाग' दिग्भागम् 'अवक्कमइ' अपक्रामति=गच्छति अपक्रम्य वैक्रियसमुद्घातेन समवहन्ति, समवहत्य=वैक्रियसमुद्घात कृत्वा सङ्ख्येयानि योजनानि यावत् सङ्ख्येय

देखोगे-अर्थात् उन वचनों का आदर करोगे-उन्हें स्वीकार करोगे, उन पर ध्यान दोगे, तो मैं अपने पृष्ठ भागसे तुम लोगको उतार दूगा-नीचे पटक दूँगा-और यदि तुम लोग उस रयणादेवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ का आदर नही करोगे, उन्हें स्वीकृत नही करोगे, उसकी तरफ नहीं देखोगे -उसके द्वारा कृत उपसर्गको सहन कर लोगे मैं तुम लोगोंको रयणादेवी के हाथ से देखते २ छुडा दूगा। (तएण ते मागदियदारया सेलगं जक्खं एवक्यासी-जण्ण देवाणुप्पिया! वइस्सइ तस्सण उववायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएण से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ २ संखेजाइं जोय-

---

અને તેના ઉપર વિચાર કરશો તો હુ પોતાની પીઠ ઉપરથી તમને ઉતારી પાડીશ અને નીચે ફેકી દઈશ અને જો તમે અને રયણા દેવીના ઉપસર્ગ રૂપ તે વચનોનો આદર કરશો નહિ, સ્વીકારશો નહિ, તેની તરફ જોશો નહિ, તે જે કઈ પણ ઉપસર્ગ-ઉત્પાત-કરે તે તમે અમી લેશો તો હુ તમને રયણા દેવીના હાથમાથી જોતજોતામા મુક્ત કરાવી દઈશ

(तएण ते मागदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी जण्ण देवाणुप्पिया! वइस्सइ तस्सण उववायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएण से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति२

योजनपरिमितमित्यर्थः दण्ड 'निस्सरेइ' निस्सारयति, निस्सार्य द्वितीयमपि वारं वैक्रियसमुद्घातेन समवहन्ति, समवहत्य=द्वितीयवार वैक्रियसमुद्घात कृत्वा एकं महत्-अश्वरूप विकुर्वति-अश्वरूपस्य विकुर्वणा करोतीत्यर्थः, विकुर्वित्वा अश्वरूप कृत्वा तौ माकन्दिकदारकौ एवमवदन्-'हमो' हे देवानुप्रियौ माकन्दिकदारकौ!

णाइ दंडं निस्सरेइ, निस्सरित्ता दोच्चपि वेउव्वियसमु० २ एगं महं आसरूवं विउव्वइ, २ ते मागदियदारए एवं वयासी) शैलक यक्षकी इस प्रकार की बात सुनकर उन माकंदी दारकों ने उस शैलक यक्ष से फिर इस प्रकार से कहा-हे देवानुप्रिय ! आप जिसके लिये हमें आराध्यत्वेन कहेंगे-हम लोग उसी की सेवा करने में उसी के वचन मानने में और उसी की आज्ञानुसार वर्तमान करने में लग जावेंगे तो फिर आपकी तो बात ही क्या है। आप तो हम से जैसे कहेंगे हम लोग सर्वथा उसी के अनुसार चलेंगे। इस के बाद वह शैलक यक्ष ईशान कोण संबन्धी दिग्भाग की ओर गया। वहां जाकर उस ने वैक्रिय समुद्घात से उत्तर वैक्रिय की विकुर्वणा की-विकुर्वणा कर के फिर उस ने अपने आत्मप्रदेशों का संख्यात योजन पर्यंत दंडाकार रूप में बाहिर निकला-निकाल कर के फिर दुबारा भी वैक्रिय समुद्घात किया और फिर एक बड़े भारी अश्वरूप की उस ने विकुर्वणा की। अश्वरूप बनाकर फिर वह उन माकंदी दारकों से बोला-

---

सखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरेइ, निस्सरित्ता दोच्चपि वेउव्वि समु० २ एगं महं आसरूवं विउव्वइ २ ते मागदिय दारए एवं वयासी)

શૈલક યક્ષની આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને માકંદી દારકોએ તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમને જે કોઈને આરાધવાનો હુકમ કરશો, અમે લોકો તેની સેવા કરવામા, તેની જ આજ્ઞા સ્વીકારવ મા અને તેની આજ્ઞા પ્રમાણે જ આચરણ કરવામા તત્પર થઈ જઈશુ ત્યારે તમારી તો વાત જ શી કહેવી ? તમે અમને જેમ કહેશો તેમ અમે સંપૂર્ણપણે અનુસરીશુ ત્યારબાદ શૈલક યક્ષ ઈશાન કોણના દ્વિગ્ ભાગ તરફ ગયો ત્યા જઈને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાતથી ઉત્તર વૈક્રિયાની વિકુર્વણા કરી અને વિકુર્વા કર્યા બાદ તેણે પોતાના આત્મ-પ્રદેશોને સંખ્યાત યોજન સુધી દંડાકાર રૂપે બહાર કાઢયા બહાર કાઢીને તેણે બીજી વાર પણ વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો અને ત્યાર પછી તેણે એક બહુ મોટા અશ્વરૂપ (ઘોડાના રૂપ) ની વિકુર્વણા કરી અશ્વનુ રૂપ બનાવીને તેણે માકંદી દારકોને કહ્યું કે—

आरोहत खलु युवां मम पृष्टे । ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ हृष्टतुष्टौ शैलकस्य यक्षस्य प्रणाम कुरुतः, कृत्वा शैलकस्य पृष्ठ दूरूढौ पृष्ठ प्रदेशे समारूढौ । ततः खलु स शैलकस्तौ माकन्दिकदारकौ दूरूढौ=स्वपृष्ठारूढौ ज्ञात्वा 'सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइं' सप्ताष्टतालप्रमाणमात्रान्=सप्ताष्टतालवृक्षपरिमितान् गगनभागान् यावत् 'उड्ढं वेहासं' ऊर्ध्वं विहायसि=उच्चैराकाशे 'उप्पयइ' उत्पतति, उत्पत्य च तया प्रसिद्धया उत्कृष्टया त्वरितया देवगत्या लवणसमुद्र मध्यमध्येन यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीप, यत्रैव भारतो वर्ष.=भरतक्षेत्र, यत्रैव चम्पानगरी तत्रैव प्रधारयति=गन्तु प्रवृत्त ॥ सू० ६ ॥

(ह भो मागदिया ! आरुह ण देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठिसि-तएणं ते मागदिय० दट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणाम करेति करित्ता सेलगस्स पिट्ठिं दुरूढा, तएणं से सेलए ते मागदिय० दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता य ताए-उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण जेणेव जम्बूदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव चपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) अरे ओ देवानुप्रिय माकंदी दारको ! तुम दोनों मेरी पीठ पर चढ जाओ । इस के बाद वे दोनो माकंदी दारक हर्षित एव सतुष्ट होते हुए प्रणाम कर उस शैलक यक्ष की पीठ पर आरूढ हो गये । जब शैलक यक्ष ने उन्हे अपनी पीठ पर चढा जाना तो जानकर वह सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण बराबर क्षेत्रमें ऊपर आकाश में उछला । उछलकर फिर वह अपनी प्रसिद्ध उत्कृष्ट त्वरायुक्त देवगति से लवणसमुद्र के ठीक बीचों

(ह भो मागदिया ! आरुहण देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठसि-तएणं ते मागदिय० दट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणाम करेति करित्ता सेलगस्स पिट्ठिं दुरूढा, तएण से सेलए ते मागदिय दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्द मज्झमज्झेण जेणेव जम्बूदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव चपानयरी तेणेव पहारेत्थगमणाए)

અરે ઓ દેવાનુપ્રિય માકદી દારકો ! તમે મારી પીઠ ઉપર બેસી જાઓ ત્યાર પછી માકદી દારકો હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થતા પ્રણામ કરીને શૈલક યક્ષની પીઠ ઉપર બેસી ગયા શૈલક યક્ષે તેઓને પોતાની પીઠ ઉપર સવાર થઇ ગયેલા જાણીને તે સાત આઠ તાલવૃક્ષ પ્રમાણ જેટલા ક્ષેત્રમા આકાશમા ઉછળ્યો અને ઉછળીને તે પોતાની પ્રસિદ્ધ ઉત્કૃષ્ટ ત્વરાયુક્ત દેવગતિથી લવણસમુદ્રની બરોબર

मूलम्–तएणं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्त-खुत्तो अणुपरियट्टइ जं तत्थ तणं वा जाव एडेइ, एडित्ता जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ते मागंदियदारया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेति२ तेसिं मागदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइं वा पत्तिं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहि पउंजइ पउंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणे पासइ पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडग गेण्हइ गेण्हित्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय० तेणेव उवा० एवं वयासी–हं भो मागदिया० अप्पत्थियपत्थया किण्ण तुब्भे जाणह मम विप्पजहाय सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झं मज्झेण वीइवयमाणा त एवमवि गए। जइण तुब्भे मम अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं, अहणं णावयक्खह तो भे इमेण नीलुप्पलगवल जाव एडेमि, तएण ते मागदियदारया रयणदीव देवयाए अंतिए एयमट्ठ सो० णेस० अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असभता रयणदीविदेवयाए एयमट्ठ नो

बीच के मार्ग से चलता हुआ जहा जबूद्वीप नाम का द्वीप और उसमें जहा भरत क्षेत्र और उसमें भी जहा चपानगरी थी उस ओर चल दिया ॥ सूत्र ६ ॥

વચ્ચેના માર્ગમાથી પસાર થતો જ્યા જબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ તેમજ જ્યા ભરત ક્ષેત્ર અને તેમા પણ જ્યા ચપા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો "૬"॥

आढंति नो परि० णो अवयक्खति, आणाढायमाणा अपरि० अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयंति, ततेणं सा रयणदीवदेवया ते मागदिय० जाहे नो सचाएइ बहूहि पडिलोमेहि य उवसग्गेहि य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा ताहे महुरेहिं सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गोहि य उवसग्गेउ पवत्ता यावि होत्था, हं भो मागंदियदारगा ! जइणं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वाति अमणेमाणा समं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयह, तएणं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मम ओहिणा आभोएइ आभोएत्ता एव वयासी–णिच्चपि य णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा५ निच्च मम जिणपालिए अणिट्ठे ५ निच्चपिय णा अह जिणरक्खियस्स इट्ठा५ निच्चपिय णं मम जिणरक्खए इट्ठे५, जइणं मम जिणपालिए रोयमाणी कदमाणीं सोयमाणी तिप्पमाणी विलवमाणीं णावयक्खइ किण्णं तुम जिणरक्खया ! मम रोयमाणि जाव णावयक्खसि ?, तएण–

सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं।
नाऊण वधनिमित्त उवरि मागंदियदारगाणं दोण्हपि ॥ १ ॥
दोसकलिया सलीलय णाणाविहचुण्णवासमीस दिव्व । घाणमण निव्वुइकर सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठि पमुचमाणी ॥ २ ॥
णाणामणिकणगरयणघटियखिंखिणिणेउरमेहलभूसणरवेण । दि-

मूलम्–तएणं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टइ जं तत्थ तणं वा जाव एडेइ, एडित्ता जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ते मागंदियदारया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेति२ तेसिं मागंदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइ वा पत्तिं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहि पउंजइ पउंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणे पासइ पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडग गेण्हइ गेण्हित्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय० तेणेव उवा० एवं वयासी–हं भो मागंदिया० अप्पत्थियपत्थया किण्णं तुब्भे जाणह मम विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्द मज्झं मज्झेण वीइवयमाणा त एवमवि गए। जइणं तुब्भे मम अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं, अहणं णावयक्खह तो भे इमेण नीलुप्पलगवल जाव एडेमि, तएणं ते मागंदियदारया रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठ सो० णेम० अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असभता रयणदीविदेवयाए एयमट्ठ नो

बीच के मार्ग से चलता हुआ जहा जंबूद्वीप नाम का द्वीप और उसमें जहा भरत क्षेत्र और उसमें भी जहा चपानगरी थी उस ओर चल दिया ॥ सूत्र ६ ॥

વચ્ચેના માર્ગમાથી પસાર થતો જ્યા જંબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ તેમજ જ્યા ભરત ક્ષેત્ર અને તેમા પણ જ્યા ચપા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો ॥સૂત્ર "૬"॥

कम्मदलगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय, तएण जिणरक्खिय समुप्पन्नकलुणभाव मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खतं तहेवजक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं२ उव्विहति नियगपिट्ठाहि विगयसद्धं, तएण सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खिय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतदास ! मओसित्ति जंपमाणी अप्पत्त सागरसलिलं गेण्हिय वाहाहि आरसंत उड्ढं उव्विहति अवरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पलगवलअयसिप्पभासेण असिवरेणं खडाखडि करेति तत्थ विलवमाण तस्स य रारस्ववाहियस्स घेत्तूण अगमंगाइं सरुहिराइं उक्खित्तबलि चउद्दिसि करेंति सा पंजली पहिट्ठा ॥ सू०७ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि-तत' खलु सा रत्नद्वीपदेवता लवणसमुद्र' त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् अनुपर्यटति, अनुपर्यट्य यत्तत्र तृण वा यावत् सर्वं पत्र काष्ठादिकमपनीय-एकान्ते ' एडेइ ' एडति=प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य यत्रैव प्रासादावतसकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तौ माकन्दिकदारकौ प्रासादावतसके-अपश्यन्ती

' तएणं सा रयणदीवदेवया ' इत्यादि ॥

टीकार्थ -(तएण) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) उस रयणादेवी ने (लवण समुद्द तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टति) लवण समुद्र की २१ बार प्रदक्षिणा की-(ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेसए तेणेव उवागच्छति) इस समय में उसे वहा पर जो तृणकाष्ठ पत्र आदि मिला उस-सबको वहा से हटाके दूर जाकर एकान्त स्थान में डाल दिया। डालकर फिर वह जहा अपना श्रेष्ठ प्रासाद था वहा आई-

' तएण सा रणदीव देवया ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (सा रयणदीव देवया) તે રયણાદેવીએ(लवण समुद्द ति सत्तखुत्तो अणुपरियट्टति) લવણ સમુદ્રની એકવીશ વાર પ્રદક્ષિણા કરી (ज तत्थ तणं वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ)

પ્રદક્ષિણા કરતી વખતે રયણા દેવીને ત્યા તૃણ, કાષ્ઠ પત્ર વગેરે જે કઇ પણ જોવામા આવ્યુ તેને ત્યાથી દૂર એકાતમા ફેકી દીધુ ફેકીને તે પોતાના ભવ્ય ભદ્રેલમા આવતી રહી

साओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं वेति सा साकलुसा ॥३॥ होल-वसुल-गोल-णाह-दइत-रमण-कंत-सामिय-णिग्घिण णिच्छक्क। थिण्ण णिक्किव अकयण्णुय सिढिल भाव निल्लज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खियं मज्झ हिययरक्खगा! ॥ ४ ॥ णहु जुज्जसि एक्कियं अणाहं अवधंव तुज्झचलणओवायकारियं उज्झिउ महण्णं। गुणसंकर! अहं तुमं विहूणा ण समत्थावि जीविउ खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगझससमगरविविह सावयसयाउलघरस्स। रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओ एहि णियत्ताहि जइसिकुविओ खमाहि एक्कावराहं मे ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमंडलागार सस्सिरीयं सारयनवकमलकुमुयकुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभनयणं वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउ जे अवलोएहि ताइओ मम णाह जो ते पच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एव सप्पणय सरलमहुराइ पुणोर कलुणाइ वयणाइ जंपमाणी सा पावा मग्गओ समणुगेइ पावहियया ॥ ८ ॥ तएणं से जिणरक्खिए चलमाणे तेणेव भूसणरवेण कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुंदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वणसिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विव्वोयविलसियाणि य विहसिय सकडक्खदिट्ठिनिस्सासियमलियउवलालियठियगमणपणयखिज्जियपासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे

कम्मदलगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय, तएण जिणरक्खिय समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खत तहेवऽक्खे य सेलए जाणिऊण साणियं२ उव्विहति नियगपिट्ठाहि विगयसद्धं, तएण सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खिय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतदास ! मओसित्ति जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय वाहाहि आरसंत उड्ढ उव्विहति अवरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पलगवलअयसिप्पभासेण असिवरेण खंडाखडि करेति तत्थ विलवमाण तस्स य रारसवहियस्स घेत्तूण अगमंगाइं सरुहिराइ उक्खित्तबलि चउद्दिसि करेंति सा पंजली पहिट्ठा ॥ सू०७ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि-तत' खलु सा रत्नद्वीपदेवता लवणसमुद्र' त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् अनुपर्यटति, अनुपर्यट्य यत्तन तृण वा यावत् सर्व पत्र काष्ठादिकमपनीय-एकान्ते ' एडेइ ' एडति=प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य यत्रैव प्रासादावतसकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तौ माकन्दिकदारकौ प्रासादावतसके-अपश्यन्ती

' तएणं सा रयणदीवदेवया ' इत्यादि ॥

टीकार्थ -(तएण) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) उस रयणादेवी ने (लवण समुद्द तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टति) लवण समुद्र की २१ बार प्रदक्षिणा की-(ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ) इस समय में उसे वहां पर जो तृणकाष्ठ पत्र आदि मिला उस-सबको वहा से हटाके दूर जाकर एकान्त स्थान में डाल दिया। डालकर फिर वह जहा अपना श्रेष्ट प्रासाद था वहा आई-

' तएण सा रणदीव देवया ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (सा रयणदीव देवया) તે રયણાદેવીએ(लवण समुद्द ति सत्तखुत्तो अणुपरियट्टति) લવણ સમુદ્રની એકવીશ વાર પ્રદક્ષિણા કરી (ज तत्थ तणं वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ)

પ્રદક્ષિણા કરતી વખતે રયણા દેવીને ત્યા તૃણ, કાષ્ઠ પત્ર વગેરે જે કઈ પણ જોવામા આવ્યુ તેને ત્યાથી દૂર એકાતમા ફેકી દીધુ ફેકીને તે પોતાના [illegible] ભહેલમા આવતી રહી

साओ विदिसाओ पूरयंती वयणामिणं वेति सा साकलुसा ॥३॥ होल-वसुल-गोल-णाह-दइत-रमण-कंत-सामिय-णिग्घिण णिच्छक्क। थिप्पण णिक्किव अकयण्णुय सिढिल भाव निल्लज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झं हिययरक्खगा! ॥ ४ ॥ णहु जुज्जसि एक्कियं अणाहं अवधव तुज्झचलणओवायकारिय उज्झिउ महण्णं। गुणसंकर! अहं तुमं विहूणा ण समत्थावि जीविउ खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगझससमगरविविह सावयसयाउलघरस्स। रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओ एहि णियत्ताहि जइसिकुविओ खमाहि एक्कावराहं मे ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमडलागार सस्सिरीयं सारयनवकमलकुमुयकुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभनयणं वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउ जे अवलोएहि ताइओ मम णाह जो ते पच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एव सप्पणय सरलमहुराइ पुणो२ कलुणाइ वयणाइ जपमाणी सा पावा मग्गओ समणेइ पावहियया ॥ ८ ॥ तएणं से जिणरक्खिए चलमाणे तेणेव भूसणरवेण कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहि सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वणसिरि च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विव्वोयविलसियाणि य विहसिय सकडक्खदिट्ठिनिस्ससियमलियउवललियठियगमणपणयखिज्जियपासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे

[1]

माकन्दिकदारकौ शैलकेन सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन 'वीइवयमाणे' व्यतिव्रजन्तौ=गच्छन्तौ पश्यति, दृष्ट्वा 'आसुरुत्ता' अशुरुप्ता=शीघ्रकुपिता 'असिखेडग' असिखेटकम्, असिश्चखड्ग खेटकश्च फलकः 'ढाल' इतिप्रसिद्धः एतयो समाहारे-असिखेटकम् गृह्णाति, गृहीत्वा 'सत्तट्ठजाव' सप्ताष्ट यावत्, सप्ताष्टतालप्रमाणान् गगनभागान् यावद् ऊर्ध्वं विहायसि उत्पतति, उत्पत्य तया उत्कृष्टया देवगत्या यत्रैव माकन्दिकदारकौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यैवमवादीत्-'हमो' हे माकन्दिक दारकौ ! 'अप्पत्थियपत्थया' अप्रार्थितप्रार्थकौ=मरणाभिलाषिणौ किं खलु युवा

उपयुक्त किया। (पउंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झं मज्झेण वीइवयमाणे पासइ, पासित्ता आसुरत्तो असिखेडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्त अट्ठ जाव उप्पयइ उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय० तेणेव उवा० २ एवं वयासी-हं भो माकंदिय० अप्पत्थियपत्थिया किण्ण तुब्भे जाणह मम विप्पजहाय सेलएण एवमविगए) उपयुक्त करके उसने उन माकंदीदारकों को शैलक के साथ लवणसमुद्र में होकर ठीक बीचो बीच के मार्ग से जाते हुए देखा। देखकर वह क्रोध से क्रोधित हो गई। उसने उसी समय अपनी तलवार और ढाल उठा ई। उठाकर वह सात आठा ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर की ओर आकाश में उछली। उछलकर फिर वह उत्कृष्टदेव सम्बन्धी गति से चल कर जहा वे माकंदी-दारक थे वहां आई। वहा आकर उसने उनसे इस प्रकार कहा। अरे ओ माकंदि-दारक! मालूम पडता है तुमलोग अप्रार्थित प्रार्थक बन रहे हो-जिसे कोई भी नही चाहे वह अप्रार्थित-मृत्यु

(पउंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झं मज्झेण वीइवयमाणो पासइ, पासित्ता, आसुरत्ता आसिखेडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता, सत्तअट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय तेणेव उवा० २ एवं वयासी हं भो मागंदिय०अप्पत्थिय पत्थया किण्ण तुब्भे जाणह मम विप्पजहाय सेलएण एवमविगए)

ઉપયોગ કરીને તેણે માકંદી દારકોને શૈલક યક્ષની સાથે લવણ સમુદ્રની ઠીક વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા જોયા જોતાની સાથે જ તે ગુસ્સે થઈ ગઇ તેણે તરતજ પોતાની ઢાલ અને તલ્વાર હાથમા લીધી લઈને તે સાત આઠ તાલવૃક્ષ જેટલુ આકાશમા ઊચે ઉછળી, ઉછળીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવસબંધી ગતિથી સત્વરે જ્યા માકંદી દારકો હતા ત્યા પહોચી ગઈ. ત્યા પહોચીને તેણે તેઓને એમ કહ્યુ કે અરે ઓ! માકંદી દારકો! મને લાગે છે કે તમે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થક બની રહ્યા છો એટલે કે મૃત્યુ જ એવી વસ્તુ છે કે તેને કોઈ

यत्रैव पौरस्त्य वनषण्ड यावत्सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणां करोति सामान्य विशेषतयाऽन्वेषति, कृत्वा तयोर्माकन्दिकदारयोः कुत्रापि 'सुइवा' श्रुतिं वा= वार्त्ता, 'सुइ वा' क्षुतिं=तत्सम्बन्धिनीं छिक्काम्, अव्यक्तभाषण तच्चिह्न वा, 'पउत्तिं वा' प्रवृत्तिं=वृत्तान्त वा 'अलभमाणी' अलभमाना=अप्राप्नुवन्ती सती यत्रैवोत्तरीये=उत्तरदिग्भवे वनषण्डे एवमेव=पूर्ववदेव पाश्चात्येऽपि यावद् अपश्यन्ती 'ओहिं' अवधिम्-अवधिज्ञान 'पउंजइ' प्रयुनक्ति=व्यापारयति, प्रयुज्य तौ

(उवागच्छित्ता ते मागदियदारया, पासायवडिंसए अपासमाणी, जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वओ समतामग्गणगवेसण करेइ करित्ता तेसिं मायदियदारगाण कत्थइ सुइ खुइ वा पउत्तिं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ) वहा आकर उसने उसमें माकंदी दारकोंको नही देखा-सो इस कारण वह जहाँ पूर्वदिशा सम्बन्धी वनषड था वहा आई वहाँ आकर उसने उनकी सबतरफ चारों ओर तपास की मार्गणा गवेषणा की-परन्तु वहा कही पर भी माकंदी दारकों की उसे न कोई बात सुनने में आई और न उनकी चिह्नरूप छींक या अव्यक्त भाषण या कोई विशेष चिह्न ही देख ने में आया। और न उनकी वहा उसे कोई खबर ही मिली-इस तरह इन सब बातोंको नही प्राप्त करती हुई वह जहा उत्तर दिशा सम्बन्धी वनषड था वहा इसी तरह जहा पश्चिम दिशा सम्बन्धी वनषड था वहा आई वहा कही पर भी उसे उनकी कोइ बात वगैरह सुनने मे देखने में जब नही आई-तब उसने अपने अवधिज्ञान को

(उवागच्छित्ता ते मागदियदारया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेइ करित्ता तेसिं मायदियदारगाण कत्थेइ सुइ खुइ वा पउत्तिं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ)

ત્યા આવીને તેણે માકંદી દારકોને જોયા નહિ ત્યારે તે પૂર્વ દિશા તરફ વનખંડમા પહોચી ત્યા તેણે તેઓની ચોમેર તપાસ કરી, માર્ગણ ગવેષણા કરી પણ માકંદી દારકોનો પત્તો મળ્યો નહિ રયણાદેવીને માકંદી દારકોની વાતચીત પણ સાભળવામા આવી નહિ તેમજ તેઓની હયાતીના પણ કોઇ ચિહ્નો જેમકે છીંક અથવા તો ધીમેથી વાતચીત વગેરે દેખાયા નહિ આ રીતે તે ત્યાથી ઉત્તર દિશા તરફના વનખંડમા ગઇ ત્યારપછી પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમા તે ગઇ ત્યા પણ રયણા દેવીને તેઓની કોઈ પણ વાતચીત વગેરે સાંભળાઇ નહિ ત્યારે તેણે પોતાના અવધિજ્ઞાનનો ઉપયોગ કર્યો

माकन्दिकदारकौ शैलकेन सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन 'वीइवयमाणे' व्यतिव्रजन्तौ=गच्छन्तौ पश्यति, दृष्ट्वा 'आसुरुत्ता' आशुरुप्ता=शीघ्रकुपिता 'असिखेडग' असिखेटकम्, असिश्चखड्ग खेटकश्च फलकः 'ढाल' इतिप्रसिद्धः एतयो समाहारेअसिखेटकम् गृह्णाति, गृहीत्वा 'सत्तट्ठजाव' सप्ताष्ट यावत्, सप्ताष्टतालप्रमाणान् गगनभागान् यावद् ऊर्ध्वं विहायसि उत्पतति, उत्पत्य तया उत्कृष्टया देवगत्या यत्रैव माकन्दिकदारकौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यैवमवादीत्–'हभो' हे माकन्दिक दारकौ ! 'अप्पत्थियपत्थया' अप्रार्थितप्रार्थकौ=मरणाभिलाषिणौ किं खलु युवा

उपयुक्त किया। (पउंजित्ता ते मागदियदारए सेलएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणे पासइ, पासित्ता आसुरत्तो असिखेडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्त अट्ठ जाव उप्पयइ उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागदिय० तेणेव उवा० २ एवं वयासी–हभो माकदिय० अप्पत्थियपत्थिया किण्ण तुब्भे जाणह मम विप्पजहाय सेलएण एवमविगए) उपयुक्त करके उसने उन माकदीदारको को शैलक के साथ लवणसमुद्र में होकर ठीक बीचो बीच के मार्ग से जाते हुए देखा। देखकर वह क्रोध से क्रोधित हो गई। उसने उसी समय अपनी तलवार और ढाल उठाई। उठाकर वह सात आठा ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर की ओर आकाश में उछली। उछलकर फिर वह उत्कृष्टदेव सम्बन्धी गति से चल कर जहा वे माकदी–दारक थे वहां आई। वहा आकर उसने उनसे इस प्रकार कहा। अरे ओ माकदि–दारक ! मालूम पडता है तुमलोग अप्रार्थित प्रार्थक बन रहे हो–जिसे कोई भी नही चाहे वह अप्रार्थित–मृत्यु

(पउंजित्ता ते मागदियदारए सेलएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणो पासइ, पासित्ता, आसुरत्ता आसिखेडग गेण्हइ, गेण्हित्ता, सत्तअट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागदिय तेणेव उवा० २ एव वयासी हे भो माकंदिय०अप्पत्थिय पत्थया किण्ण तुब्भे जाणह मम विप्पजहाय सेलएण एवमविगए)

ઉપયોગ કરીને તેણે માકદી દારકોને શૈલક યક્ષની સાથે લવણ સમુદ્રની ઠીક વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા જોયા જોતાની સાથે જ તે ગુસ્સે થઈ ગઇ તેણે તરતજ પોતાની ઢાલ અને તરવાર હાથમા લીધી લઈને તે સાત આઠ તાલવૃક્ષ જેટલુ આકાશમા ઊચે ઉછળી, ઉછળીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવસબધી ગતિથી સત્વર જ્યા માકદી દારકો હતા ત્યા પહોચી ગઈ ત્યા પહોચીને તેણે તેઓને એમ કહ્યુ કે અરે ઓ ! માકદી દારકો ! મને લાગે છે કે તમે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થક બની રહ્યા છો એટલે કે મૃત્યુ જ એવી વસ્તુ છે કે તેને કોઈ

जानीथः—यत् 'मम' मा ' विप्पजहाय ' विमहाय=परित्यज्य शैलकेन यक्षेण सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन ' वीईवयमाणा ' व्यतिव्रजन्तौ स्थः तद् एवमपि=अनेन प्रकारेण यक्षपृष्ठावलम्बनेन ' गए ' आर्या गतौ=गृहं प्राप्तौ, इति, युवा जानीथ तद् भ्रान्तौस्थः। यदि खलु युवा ' ममं ' माम् ' अवयक्खह ' पश्यत ' तो ' तदा ' भे ' युवयोरस्ति जीवितम्, अथ खलु मा न पश्यत ' तो ' तदा ' भे ' युवयोः अनेन ' नीलुप्पलगवल जाव ' नीलोत्पलगवल यावत् अतिश्याम सुतीक्ष्ण खड्गेन शिरश्छित्त्वा एकान्ते एडेमि=प्रक्षिपामि=द्वयोरपि शिरश्छेत्स्यामीत्यर्थ । ततः खलु ता माकन्दिकदारकौ रत्नद्वीपदेवताया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य अभीतौ अत्रस्तौ अनुद्विग्नौ, अक्षुब्धौ असम्भ्रान्तौ सन्तौ रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थं

है। उस के भी तुम चाहने वाले हो रहे हो। जो तुमलोग मुझे छोड़कर यक्ष शैलक के साथ लवण समुद्र के बीच से होकर जा रहे हो। तो क्या इस तरह के जाने से तुमलोग हम घर पहुँच गये? यह मान रहे हो सो यह तुम्हारा भ्रम है। (जइण तुब्भे मम अवयक्खह तो भे अत्थिजीविय अहण णावयक्खह तो भे इमेण नीलुप्पलगवलजावएडेमि) यदि तुम मेरी ओर देखो-मुझे चाहो-तो ही तुम्हरा जीवन बच सकता है-यदि तुम मुझे नहीं चाहते हो-मेरी तरफ नही देखते हो-तो-देखो इस नील कमल तथा महिष के शृंगके जैसे वर्णवाली-अतिश्याम सुतीक्ष्ण तलवार से मैं अभी तुम दोनों के मस्तक को छेदकर उसे ऐसे स्थान में डाल दूगी कि जहा उसका पता भी नही लगेगा। (तएण तं मागदियदारयो रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सो० णीस० अभीया

ઈચ્છતુ નથી તેની મૃત્યુ 'અપ્રાર્થિત' થયુ અને તે માકંદીદારકો તને ઈચ્છનાર થયા કેમકે તમે અને છોડીને યક્ષ શૈલકની સાથે લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને જઇ રહ્યા છો તમે અત્યારે એમ સમજી રહ્યા હશો કે અમે કેમએમ (સકુશળ) પોતાને ઘેર પહોચી ગયા છીએ તો તમે ભ્રમમા છો

(जइण तुब्भे मम अवयक्खह तो भे अत्थि जीविय अह णं णावयक्खह तो भे इमेण नीलुप्पलगवल जाव एडेमि)

જો તમે મને જ ચાહો-મને જ જુઓ-તો તમારા જીવનની સલામતી છે જો તમે મને ઇચ્છતા નથી, મારી તરફ જોતા નથી તો જુઓ આ નિલકમળ તેમજ પોલના શિંગડા જેવા રંગની ખૂબ જ શ્યામ રંગવાળી તેજ તરવારથી હુ તમારા બનેના માથા કાપીને એવી જગ્યાએ ફેકી દઇશ કે તેની કોઇને ખબર પણ પડી શકે નહિ

(तएणं ते माकंदिय दारया रयणदीवदेवयाए अंतिए

नो आद्रियेते नो परिजानीतः 'नो अवयक्खति' नो पश्यत', 'अणाढायमाणा' अनाद्रियमानौ=तमर्थं प्रति-आदर न कुर्वाणौ 'अपरियमाणा' अपरिजानानौ तमर्थमस्वीकुर्वाणौ 'अणवयक्खमाणा' तत्सम्मुखमप्यपश्यन्तौ शैलकेन यक्षेण सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन 'वीइवयति' व्यतिव्रजत =सुखपूर्वक गच्छतः। तत खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ यदा नो शक्नोति बहुभि 'पडिलोमेहिय' प्रतिलोमैश्च=प्रतिकूलैरुपसर्गैश्चालयितु वा-क्षोभयितुवा 'विपरिणामित्तए वा' विपरिणामयितु=मनोवृत्ति परावर्त्तयितु 'लोभित्तए वा' लोभयितु=लुब्धौ कर्तुं वा

अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असभता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ नो आढति, णो परि०णो अवयक्खति अणाढायमाणा अपरि० अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयंति) इस प्रकार वे माकंदी-दारक रयणा देवा के मुख से इस बात को सुन कर और उसे हृदय में अवधृत कर भयभीत नही हुए त्रस्त नहीं हुए उद्विग्न नहीं हुए क्षुभित नही हुए, सभ्रान्त नही हुए घबड़ाये नहीं-और न उन्हों ने रयणा देवी के इस अर्थ को आदर की दृष्टि से देखा न उसे स्वीकार किया, और न उस तरफ लक्ष्य ही दिया। इस तरह उस के वचनों का अनादर करते हुए उन्हें स्वीकार नही करते हुए तथा उनकी ओर लक्ष्य नहीं देते हुए वे दोनों उस शैलक यक्ष के साथ लवणसमुद्र के बीच में चलते ही गये।

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिय० जाहे णो संचाएंति, बहूहिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहिं य चालित्तए वा खोभित्तए वो विप

अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असभता रयणदीव देवयाए एयमट्ठ नो आढति णो परि० णो अवयक्खति अणाढायमाणा अपरि० अणवयक्खमाणा सेलए जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयति)

માકદી દારકોએ રયણા દેવીના મુખેથી આ પ્રમાણે સાભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને ભય પામ્યા નહિ ત્રસ્ત થયા નહિ, ઉદ્વિગ્ન થયા નહિ ક્ષુભિત થયા નહી સભ્રાત થયા નહિ, ગભરાયા નહિ અને તેઓએ રયણાદેવીના અર્થને ન તો સન્માનપૂવક જોયો અને ન તેનો સ્વીકાર કર્યો તે તરફ તેઓએ સહજ પણ લક્ષ્ય આપ્યુ નહિ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને તેઓ બને શૈલક યક્ષની સાથે પોતાનો પથ કાપતા જ ગયા

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिय० जाहे णो संचाएंति, बहूहिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहिं य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तएवा

तदा मधुरै ' सिंगारेहिय ' शृङ्गारैः कामरागोत्पादकैः ' करुणेहिय ' करुणैः करुणरसजनकैश्चोपसर्गैः ' उवसग्गेउ ' उपसर्गयितुम् = उत्पातयितु मारब्धा चास्याधीत् - हभो देवानुप्रियौ माकन्दिकदारकौ ! यदि खलु युवाभ्यां मया सार्द्धं ' हसियाणिय ' हसितानी च ' रमियाणिय ' रतानि=रमणानि अक्षादिभिः द्यूतादिखेलनानि, 'ललियाणिय' ललितानि च-ईप्सितानि लीलया भोजनादिरूपाणि ' कीलियाणिय ' क्रीडितानि=जलावगाहनादिरूपक्रीडनानि 'हिंडियाणिय' रिणामित्तए वा लोभित्तए वा ताहे मदुरेहिं सिंगारेहिं, करुणेहि य उवसग्गेहिं य उवसग्गेउ पवत्ता यावि होत्था) इस तरह जब वह रयणा देवी उन माकंदी दारकों को प्रतिकूल अनेक उपसर्गों द्वारा चलायमान करने के लिये क्षुभित करने के लिये समर्थ नहीं हो सकी तब उसने काम रागोत्पादक, तथा करुणारस जनक उत्पातों द्वारा उपद्रव करना प्रारंभ कर दिया। (हं भो मागदियदारगा ! जइणं तुब्भे हिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य, हिंडियाणि य, मोहयाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वातिं अगणेमाणा मम विप्पजहाय सेलएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झं मज्झेणं वीइवयह तएणं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मन ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता एवं वयासी) वह करने लगी अरे ओ देवानुप्रिय ! माकंदी दारकों ! यदि तुम दोनों ने मेरे साथ हँसी मजाक किया है, काम सुखों को भोगा है, अथवा अक्षादिकों द्वारा द्यूतादि क्रीडायेंकी है, साथ २ बैठकर इच्छानुसार विविध प्रकार की भोजनादि करने रूप

ताहे बहुरहिं सिंगारेहिं करुणेहि य उवसग्गेहिं य उवसग्गेउ पवत्ता यावि होत्था)

રયણા દેવી માકંદી દારકોને આ જાતના ઘણા પ્રતિકૂળ ઉપસર્ગોથી વિચલિત કરવામા કે ક્ષુભિત કરવામા સમર્થ થઇ શકી નહી ત્યારે તેણે કામરાગોત્પાદક તેમજ કરુણારસ જનક ઉત્પાતો વડે ઉપદ્રવ શરૂ કર્યા

(हं भो मागदियदारगा ! जइणं तुब्भे हिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणिय रमियाणिय ललियाणी य कीलियाणि य हिंडयागि य मोहयाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वातिं अगणेमाणा मम विप्पजहाय सेलएण सद्धिं लवणसमुद्द मझ मज्झेण वीइवयह तएण सा रयणदीवदेवया जिणरक्खेयस्स मम ओहिणा अभोएइ, आभोइत्ता एवं वयासी)

તે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! માકંદી દારકો ! જો તમે બને મારી સાથે હસી મજાક કરી છે, કામ સુખો ભોગવ્યા છે, અક્ષાદિકો વડે જુગાર વગેરે ક્રીડાઓ કરી છે, સાથે સાથે બેસીને મનગમતી અનેક આહારો

हिण्डितानिच=उद्यानादिषु भ्रमणानि 'मोहियाणिय' मोहितानि च=मोहनानि कामरागजनकहावभावादीनि कृतानि 'ताहे' तदा-तादृशे समये एतादृश सुखानुभवावस्थाया खलु युवा सर्वाणि=मया सार्द्धं हसितादीनि 'अणेगमाणा' अगणयन्तौ=अनादियमाणौ 'मम' मा निराधारा 'विप्पजहाय' विप्रहाय=परित्यज्य शैलकेन सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन व्यतिव्रजथः=गच्छथ । ततः खलु पुनः सा रत्नद्वीपदेवता जिनरक्षितस्य लघुभ्रातुः 'मण' मनः=अन्तः करणम् 'ओहिणा' अवधिना अवधिज्ञानेन 'आभोएइ' आभोगयति=पश्यति आभोगयित्वा=दृष्ट्वा-एवमवदत्-नित्यमपि च=पूर्वमपि सदैव च अह जिनपालितस्य-तवज्येष्ठभ्रातुः अनिष्टा, अक्रान्ता, अप्रिया अमनोज्ञा, अमनोमा=मनः प्रतिकूलाऽभवम्, नित्यं च मम जिनपालितः-अनिष्टः, अक्रान्त', अप्रिय, अमनोज्ञ', अमनोऽम =मनः-खेदजनक आसीत् । नित्यमपि च खलु अह जिनरक्षितस्य तव इष्टा यावद् मनोऽमा, नित्यमपि च खलु मम जिनरक्षितस्त्वम् इष्टो यावद् मनोऽम', यदि खलु यथा मा जिनपालितो रुदती, क्रन्दन्ती=शोक कुर्वाणा, 'तिप्पमाणी' तेपमानाम्=

लीलाएँ की हैं, जलावगाहनादि रूप नाना प्रकार की चेष्टाएँ की हैं, उद्यान आदिकों में साथ २ भ्रमण किया है, तथा काम राग जनक हाव भाव आदि क्रियाएँ की है तो फिर क्यों अब उन सब हसितादि चेष्टाओं की उपेक्षा करके तुम दोनों मुझे निराधार छोडकर शैलक के साथ लवण समुद्र के बीच से होकर चले जा रहे हो । इस प्रकार कह कर उस रयणा देवी ने जिन रक्षित के अन्तः करण को अपने अवधि ज्ञान के द्वारा देखा-देख कर वह फिर इस तरह कहने लगी-(णिच्चपि य ण अह जिणपालियस्स अणिट्ठा ५, णिच्च मम जिणपालिए अणिट्ठे-निच्चंपि य ण अह जिणरक्खियस्स इट्ठा, निच्चपि ण अह जिणरक्खिए इट्ठे ५, जइण मम जिणपालिए रोयमाणी, कंदमाणी सोयमाणी तिप्पमाणी विलवमाणी णोवयक्खइ, किण्ण तुम जिणरक्खिया ! मम रोयमाणिं जाव

વગેરે રૂપ લીલાઓ કરી છે, જલાવગાહન વગેરેની ઘણી જાતની ચેષ્ટાઓ કરી છે સાથે સાથે ઉદ્યાન વગેરેમા ફર્યા છો તેમજ કામરાગજનક હાવભાવ વગેરેની ક્રિયાઓ કરી છે ત્યારે હવે શુ કામ તે બધી હસિતાદિ ચેષ્ટાઓની ઉપેક્ષા કરીને ૨ને એકની નિરાધાર બનાવીને શૈલક યક્ષની સાથે લવણસમુદ્રની વચ્ચે થઈને જઈ રહ્યા છો આ પ્રમાણે કહીને તે રયણા દેવીએ જીનરક્ષિતના મનને પોતાના અવધિજ્ઞાન વડે જોયુ અને જોઇને તે ફરી કહેવા લાગી કે-

(णिच्चपि य ण अह जिणपालियस्स अणिट्ठा ५ णिच्च मम जिणपालिए अणिट्ठे निच्चपि य ण अह जिणरक्खियस्स इट्ठा निच्च पि य ण मम जिणरक्खिए

विरहजनितार्त्तध्यान कुर्वाणा, विलपन्तीं=विलाप कुर्वाणा 'णावयक्खइ' न पश्यति तथा किं खलु त्वमपि हे जिनरक्षित ! मां रुदतीं यावद् विलपन्तीं 'णावयक्खसि' न पश्यसि ' एव सा रत्नद्वीपदेवता सोपालम्भ वदति स्मेति ।

ततः खलु तदनन्तरम्-अथ प्रचलितमानस जिनरक्षित विज्ञाय सा यद्वदति तद् गाथाष्टकेनाह—

णावयक्खसि) यह तो निश्चित है कि में पहिले से जिनपालित के लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एवँ अमनोम-मनः प्रतिकूलवह रही हू और जिनपालित भी मेरे लिये सदा अनिष्ट' अकान्त आदि रूप बना रहा है, मैं तो जिन रक्षित के लिये ही सदा इष्ट आदि रूप रही हूँ और जिनरक्षित मेरे लिये इष्ट आदि रूप सदा रहा है तो हे जिन रक्षित ! यदि मुझ रोती हुई आक्रन्दन करती हुई, शोक करती हुई विरह जनित आर्तध्यान करती हुई और विलाप करती हुई की और जिन पालित नही देखता है तो क्या तुम भी मुझ रोती हुई यावत् विलाप करती हुई की ओर नहीं देखते हो (तएण सा पवररयण-दीवस्स देवया ओहिणा जिणरक्खियस्स मण नाऊण वधनिमित्त उवरिं मागदिय दारगाण दोण्हपि ॥ १ ॥) इस तरह उस रयणादेवी ने ताने मारते हुए जब कहा तब जिनरक्षित का मन चलायमान हो गया। इस स्थिति में जो कुछ उस ने कहा वह सूत्रकार आठ गाथाओं

इट्ठे ५, जइण मम जिणपालिए रोयमाणी, कदमाणी, सोयमाणी तिप्पमाणीं, विलवमाणी,णावयक्खइ,किण्ण तुम जिणरक्खिया ! मम रोयमाणिं जाव णावयक्खसि)

એ વાત તો ચોક્કસ પણે કહી શકાય કે હું; શરૂઆતથી જ જીનપાલિતને માટે હમેશા અનિષ્ટ, અકાત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, અને અમનોમ-મનને પ્રતિ કૂળ જ બની રહુ છુ અને જીનપાલિત પણ મારા માટે હમેશા અનિષ્ટ, અકાત વગેરે જ રહ્યા છે હુ તો જીનરક્ષિતને માટે હમેશા ઈષ્ટ વગેરે રૂપમા રહી છુ અને જીનરક્ષિત મારે માટે ઇષ્ટ વગેરે રૂપમા સદા રહી છે ત્યારે હે જીનરક્ષિત ! મને જો રડતી, આક્રંદ કરતી, શોક કરતી, વિરહમા આર્ત્તધ્યાન કરતી અને આ રીતે વિલાપ કરતી કે જીનપાલિત મારી સામુ જોતા નથી તો શુ તમે પણ મને રડતી યાવત્ વિલાપ કરતી જોતા નથી

(तएण सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा ३ जिणरक्खियमण ना ऊण वधनिमित्त उवरिं मागदिय दारगाण दोण्हपि " १ " ॥)

રયણા દેવીએ એ પ્રમાણે કટાક્ષ યુક્ત વચનો કહ્યા ત્યારે જીનરક્ષિતનુ મન ડગમગવા લાગ્યુ આવી પરિસ્થિતિમા જે કઈ તેણે કહ્યુ તે ૮૨ આઠ

सा प्रवर रत्नद्वीपस्य देवताऽवधिना तु जिनरक्षितस्य मनः । ज्ञात्वा वधनिमित्तम्=मारणार्थम् उपरि माकन्दिकदारकयो र्द्वयोरपि ॥ १ ॥ ' दोसकलिया ' द्वेषकलिता=द्वेषयुक्ता ' सलीलय ' सलील=सक्रीड ' नानाविहचुण्णवासमीस ' नानाविधचूर्णवासमिश्र नानाविधाः चूर्णवासा'=चूर्णगन्धाः-पिष्टगन्धद्रव्याणि, तैर्मिश्रा=युक्ता दिव्याम् । घ्राणमनोनिर्वृतिकरां = घ्राणमनसोस्तृप्तिकरा तादृशी सर्वर्तुकसुरभिकुसुमवृष्टिं=सर्वऋतुसमुत्पन्नसुगन्धितपुष्पवृष्टिं ' पमुचमाणी ' प्रमुञ्चन्ती ॥ २ ॥ नानामणिकनकरत्नघण्टिकाकिङ्किणीनूपुरमेखलाभूषणरवेण, तत्र-नानाविधमणिकनकरत्नाना घण्टिकाः, किङ्किण.=क्षुद्रघण्टिका । नूपुर-चरणभूषणम्, मेखलाभूषण=कटिभूषणम्, तेषा रवेण=शब्देन मञ्जुलध्वनिना दिशो विदिशश्च पूरयन्ती=सशब्द कुर्वन्ती वचनमिद=वक्ष्यमाण ब्रवीति सा सकलुषा=

द्वारा कहते हैं-वह प्रवर रत्न द्वीप की देवता अवधिज्ञान से जिन रक्षित के मन को जान कर मारने के लिये उन दोनों माकदी दारकों के ऊपर (दोस कलिया) विद्वेषवती बन गई (सलीलय णाणाविहचुण्णवास मीस दिव्व । घाणमणनिव्वुइकर सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठिंपमुच माणी २) फिर उस ने उन के ऊपर बडी भारी लीला के साथ नाना विधचुर्णवास मिश्रित एव घ्राण और मन को तृप्ति कारक ऐसी दिव्य सर्वऋतु सबन्धी सुरभित कुसुमो की वृष्टि की । (णाणा मणिकणगरयण घटियखिखिणिणेऊर मेहलभूसणरवेण ' दिसाओ विदिसाओ पूरयती वयणमिण वेति सा साकलुसाइ) इस के बाद नाना प्रकार के मणियोंकी, सुवर्णकी एव रत्नोकी घटिकाओंके क्षुद्र घटिकाओंके नूपुरों के कटिभूषण के शब्द से-मजुल आवाज से दिशाओ एव विदिशाओं

ગાથાઓ વડે કહે છે-તે પ્રવર રત્નદ્વીપની દેવતા અવધિજ્ઞાનથી જીનરક્ષિતના મનની વાત સમજીને મારી નાખવાના વિચારથી તેઓ બને માકદી દારકો ઉપર (दोसकलिया) દ્વેષ ધરાવતી થઈ ગઈ (सलीलय णाणाविहचुण्णवास-दिव्व । घाणमणनिव्वुइकर सव्वोउय सुरभिकुसुमवुट्ठि पमुचमाणी २) ત્યાર પછી તેણે તેઓના ઉપર બહુ રે લીલાઓની સાથે ઘણી જાતના સુગધિત ચૂર્ણોઅને નાક તેમજ મનને તૃપ્ત કરે તેવા દ્રવ્યો અને બધી ઋતુઓના સુગધિત પુષ્પોની વર્ષા કરી

(णाणामणिकणगरयणघटियखिखिणिणेऊरमेहलभूसणरवेण । दिसाओ विदिसाओ पूरयती वयणमिण वेति सा साकलुसाइ)

ત્યાર બાદ ઘણી જાતના મણિઓની, સોનાની અને રત્નોની ઘટડીઓના, ઘૂઘરીઓના, ઝાઝરોના, કંદોરાના શબ્દથી મજુલ અવાજથી દિશાઓ તેમજ

सपापा ॥ ३ ॥ तथाहि-होल !=हे मुग्ध !, वसुल=हे सुकुमार। गोल=हे कठोर। हे नाथ ! दयित !=हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे निर्घृण ! हे स्नेहरहित !, निछक्क !=हे अवसरज्ञानशून्य ! ' थिण्ण ! ' हे स्त्यान= हे निर्दयहृदय ! ' णिक्किव ' नि कृ प !=हे निष्करुण ! ' अकयण्णुय ' अकृतज्ञ ! हे कृतोपकारानभिज्ञ ! हे कृतघ्न ! इत्यर्थः ' सिढिलभाव ' शिथिलभाव !=हे मन्द-भाव ! ' निल्लज्ज ' हे निर्लज्ज ! ' लुक्ख ' रूक्ष !=हे प्रेमशून्य ! ' अकलुण ' अकरुण !=हे निर्दय ! जिनरक्षित ! मम ' हियय रक्खगा ' हृदयरक्षक !=हे प्राण रक्षक ! ॥४॥ ' न हु जुज्जसि ' नैव युज्यसे नैवार्हसि न योग्योऽसि त्वम् एक्कि काम्-अनाथा=निराधाराम्, अबान्धवाम्=अपहाया तव ' चलण ओवायकारिय ' चरणावपातकारिका=चरणसेविका=नाम् ' उज्झिउ=त्यक्तुम्, कथम्भूताम्? 'अहण्ण'

को वाचालित करती हुई उस पापिनी ने इस प्रकार कहा-(होलवसुल-गोलणाह, दइत, पिय, रमण, कत सामिय, णिग्घण णिच्छक, थिण्ण णिक्किव अकयण्णुयसिढिलभाव निल्लज्ज-लुक्ख, अकलुण जिणरक्खिय मज्झ हिययरक्खगा ४) होल हे मुग्ध ! वसुल-हे सुकुमार। गोल-हे कठोर ! हे नाथ ! दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण, हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे निर्घृण-स्नेहरहित ! हे निछक्क-अवसरज्ञान शून्य ! थिण्ण हे निर्दयहृदय ! हे निष्कृप ! हे अकृतज्ञ कृतोपकारानभिज्ञ कृतघ्न-हे शिथिलभाव ! हे निर्लज्ज ! हे रूक्ष-प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! जिनरक्षित ! तुम ही मेरे प्राण रक्षक हो अत.-(णहुज्जसि एक्किय अणाह अबंधव तुज्झ चलण ओवाय कारिय उज्झिउ अहण्ण गुणसकर ! अह तुमे विहूणा ण समत्था वि जीविउ खण पि ५) तुम्हे मुझ चरण सेविका

વિદિશાઓને શુભરિત કરતી તે પાપીણીએ આ પ્રમાણે કહ્યુ—

(होलवसुलगोलणाहदइतपिय, रयत, कत,सामिय,णिग्घणणिच्छक ! थिण्णणिक्किव अकयण्णुय सिढिलभाव निलज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झ हिययरक्खगा४)

હોલ-હે મુગ્ધ !, વસુલ-હે સુકુમાર !, ગોલ-હે કઠોર !, હે નાથ !, દયિત-હે દયાલો ! હે પ્રિય ! હે રમણ ! હે કાત ! હે સ્વામીન્ ! હે નિર્ઘૃણ ! સ્નેહરહિત ! હે નિછક્ક-અવસર જ્ઞાન શૂન્ય ! થિણ્ણ-હે નિર્દય હૃદય ! હે નિષ્કૃપ ! હે અકૃતજ્ઞ, કરેલા ઉપકારોને નહિ માનનારા, કૃતઘ્ન-હે શિથિલ ભાવ ! હે નિર્લજ્જ ! હે રુક્ષ ! હે પ્રેમશૂન્ય, હે અકરુણ-નિર્દય ! જીનરક્ષિત ! મારા પ્રાણ રક્ષક તમે જ છો એટલા માટે—

(ण हुज्जसि एक्किय अणाह अबधव तुज्झ चलणओवायकारिय उज्झिउ अहण्ण गुणसकर ! अह तुभे विहूणा ण समत्था वि जीविउ खणपिय)

अपूर्णाम्=अपूर्णमनोरथाम् । ' गुणसऊर ' गुणसङ्कर=हे गुणसागर ! अह ' तुमे विहणा ' त्वयोर्विहीना=त्वद्वियुक्ता न समर्थाऽपि जीवितु क्षणमपि-त्वा विना क्षणमपि न जीविष्यामीत्यर्थः ॥ ५ ॥ पश्य, अधुनैव अहम् ' इमस्स उ ' अस्य तु ' अणेगझसमगरविविहसावयसयाकुलगिहस्स ' अनेकझषमकरविविधश्वापदशता कुलगृहस्य अनेके झषाः=मत्स्याः, मकराः=ग्राहाः, विविधश्वापदा=नानाविध-हिंसकजलचरजन्तवः, तेषा शतानि, तैः आकुल=व्याप्त गृहम्=अन्तर्भागो यस्य स तस्य रत्नाकरस्य=लवणसमुद्रस्य म ये आत्मान ' वहेमि ' हन्मि=नाशयामि तव पुरतः, अत हे जिनरक्षित ! त्वम् एहि=आगच्छ ' णियत्ताहि ' निवर्त्तस्व पुरतो-गमनात्, यद्यसि त्व केनापिकारणेन कुपित, तर्हि ' खमाहि ' क्षमस्व ' एक्का वराह ' एकापराधम्-अज्ञानवशात्सञ्जातमेकमपराध मे=मम ॥ ६ ॥ ' तुज्झय ' तव

को असहाय निराधार अकेली छोड़ना योग्य नहीं है। मेरे अभीतक कोई भी मनोरथ पूर्ण नहीं हुए हैं। हे गुणसागर ! मैं तुम्हारे विना १ एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकती हूँ। (इमस्स २ अणेगझसमगर विविह सावय सयाउलघरस्स। रयणागरस्स मज्झे अप्पाण वहेमि तुज्झ पुरओण्हिं नियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एक्कावराहमे ६) देखो मैं इसी समय अनेक प्रकार की-सैकडों मछलियों से मगरो से विविध हिंसक जलचर जन्तुओं से व्याप्त हुए अन्तर्भाग वाले इस समुद्रके बीच में तुम्हारे देखते २ अपने आपको डाल देती हूँ-अतः हे जिनरक्षिततुम आओ-आगे मत बढो, तुम यदि किसी कारण वश मेरे ऊपर कुपित हो गये हो-तो मेरे अज्ञानवश हुए उस अपराधको क्षमा करो। (तुज्झ

મારા જેવી ચરણોની દાસીને અસહાય, નિરાધાર અને એકલી મૂકીને જતા રહેવુ તમારા જેવાને માટે યોગ્ય કહી શકાય નહિ હજી મારી એક પણ ઈચ્છા પૂરી થઈ નથી હે ગુણ સાગર ! તમારા વગર એક ક્ષણ પણ હુ જીવી શકુ તેમ નથી

(इमस्स उ अणेगझसमगरविविहसावयसयाउलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाण वहेमि तुज्झ पुरओ एहि नियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एक्कावराहमे ६)

જુઓ, હુ અત્યારે જ ઘણી જાતની સેકડો માછલીઓ, મગરો, ઘણી જાતના હિંસક જળચર પ્રાણીઓથી યુક્ત આ સમુદ્રની વચ્ચે તમારી સામે જ ડૂબી મરૂ છુ માટે હે જીનરક્ષિત તમે આવો, આગળ જશો નહિ ગમે તે કારણથી જો તમે મારા ઉપર નારાજ થઈ ગયા હો તો મારા અજ્ઞાનથી થયેલી ભૂલોને તમે માફ કરો

सपापा ॥ ३ ॥ तथाहि-होल !=हे मुग्ध !, वसुल=हे सुकुमार ! गोल=हे कठोर! हे नाथ ! दयित !=हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे निर्घृण ! हे स्नेहरहित !, निच्छक !=हे अवसरज्ञानशून्य ! ' थिण्ण ! ' हे स्त्यान= हे निर्दयहृदय ! ' णिक्किव ' नि कृप !=हे निष्कृप ! ' अकयण्णुय ' अकृतज्ञ ! हे कृतोपकारानभिज्ञ ! हे कृतघ्न ! इत्यर्थः ' सिढिलभाव ' शिथिलभाव !=हे मन्द भाव ! ' निल्लज्ज ' हे निर्लज्ज ! ' लुक्ख ' रूक्ष !=हे प्रेमशून्य ! ' अकलुण ' अकरुण !=हे निर्दय ! जिनरक्षित ! मम ' हिययरक्खगा ' हृदयरक्षक !=हे प्राण रक्षक ! ॥४॥ ' न हु जुज्जसि ' नैव युज्यसे नैवार्हसि न योग्योऽसि त्वम् एकिकाम्-अनाथा=निराधाराम्, अबान्धवाम्=अपहाया तव ' चलण ओवायकारिय ' चरणावपातकारिका=चरणसेविका=नाम् 'उज्झिउ=त्यक्तुम्, कथम्भूताम्? 'अहण्ण'

को वाचालित करती हुई उस पापिनी ने इस प्रकार कहा-(होलवसुल गोलणाह, दइत, पिय, रमण, कत सामिय, णिग्घण णिच्छक्क, थिण्ण णिक्किव अकयण्णुयसिढिलभाव निल्लज्ज-लुक्ख, अकलुण जिणरक्खिय मज्झ हिययरक्खगा ४) होल हे मुग्ध ! वसुल-हे सुकुमार। गोल-हे कठोर ! हे नाथ ! दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण, हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे निर्घृण-स्नेहरहित ! हे निच्छक्क-अवसरज्ञान शून्य ! थिण्ण हे निर्दयहृदय ! हे निष्कृप ! हे अकृतज्ञ कृतोपकारानभिज्ञ कृतघ्न-हे शिथिलभाव ! हे निर्लज्ज ! हे रूक्ष-प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! जिनरक्षित ! तुम ही मेरे प्राण रक्षक हो अतः-(णहुज्जसि एक्किय अणाह अबधव तुज्झ चलण ओवाय कारिय उज्झिउ अहण्ण गुणसकर ! अहं तुमे विहूणा ण समत्था वि जीविउ खण पि ५) तुम्हें मुझ चरण सेविका

વિદિશાઓને ગુણરિત કરતી તે પાપીણીએ આ પ્રમાણે કહ્યું—

(होलवसुलगोलणाहदइतपिय, रयत, कत,सामिय,णिग्घणणिच्छक्क ! थिण्णणिक्किव अकयण्णुय सिढिलभाव निलज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झ हिययरक्खगा४)

હોલ-હે મુગ્ધ !, વસુલ-હે સુકુમાર !, ગોલ-હે કઠોર !, હે નાથ !, દયિત-હે દયાલો ! હે પ્રિય ! હે રમણ ! હે કાંત ! હે સ્વામીન્ ! હે નિર્ઘૃણ ! સ્નેહરહિત ! હે નિચ્છક્ક-અવસર જ્ઞાન શૂન્ય ! થિણ્ણ-હે નિર્દય હૃદય ! હે નિષ્કૃપ ! હે અકૃતજ્ઞ, કરેલા ઉપકારીને નહિ માનનારા, કૃતઘ્ન-હે શિથિલ ભાવ ! હે નિર્લજ્જ ! હે રુક્ષ ! હે પ્રેમશૂન્ય, હે અકરુણ-નિર્દય ! જીનરક્ષિત ! મારા પ્રાણ રક્ષક તમે જ છો એટલા માટે—

(ण हुज्जसि एक्किय अणाह अबधव तुज्झ चलणओवायकारिय उज्झिउ अहण्ण गुणसकर ! अहं तुमे विहूणा ण समत्था वि जीविउ खणपिय)

एवम्=अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण ' सप्पणयसरलमहुराइ ' सप्रणयसरलमधुरानि-स्नेह-सहित सुखार्थबोधकानि मधुराणि च पुनः पुनः ' करुगाइ ' करुणानि=करुणरस-जनकानि ' वयणाइ ' वचनानि ' जपमाणी ' जल्पन्ती सा पापा ' मागओ ' मार्गतः मार्गे इत्यर्थ ' समण्णेइ ' समन्वेति=पश्चाद्गच्छति ' पावहियया ' पाप हृदया=कुटिलान्त करणा का रत्नद्वीपदेवता ॥ ७ ॥

तत खलु स जिनरक्षितश्चलमनास्तनैव भूषणरवेण कर्मसुखदेन मनोहरेण, तथा तैश्चैव सप्रणयसरसमधुरभणितैः सञ्जाताद्विगुणरागः=कामरागाकृष्ट सन् रत्नद्वीप-स्या देवतायास्तस्याः सुन्दरस्तननघनवदनकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनश्रिय च दिव्याम्, तया ' सरभसउवगूहियाइ ' सरभसोपगूहितानि=ससम्भ्रमकृतालिङ्ग-नानि, यानि च ' विव्वोयविलसियाणिय ' विव्वोक विलसितानि=विब्बोका=

सुखकमल को देखलूगी (एव सप्पणयसरलमहुराइ पुणो २ कलुणाइ वयणाइ जपमाणी सा पावमग्गओ समण्णेइ, पावहियया ८) इस प्रकार -कुटिलान्तकरणवाली वह रत्नद्वीपदेवता वार २ स्नेह सहित, सुखार्थ बोधक, मधुर एव करुणारसजनक वचनो को बोलती हुई मार्ग में उस-के पीछे २ चलने लगी । (तएण से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूस णारवेण कण्णसुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं सजाय विणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुन्दरथणजहणवयण कर चरणनयणलावन्नरूवजोव्वणसिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विव्वो य विलसियाणि० य विहसिय सकडक्खदिट्ठि निस्ससिय मलिय उवलालिय ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य, सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय) इसके बाद कर्णेन्द्रिय को

(एव सप्पणयसरलमहुराइ पुणो २ कलुणाइ वयणाइ जपमाणी सो पाव मग्गओ समण्णेइ पावहियया ८)

આ રીતે કુટિલ હૃદયવાળી તે રત્નદ્વીપ દેવતા વારવાર સ્નેહસહિત, સુખાર્થ બોધક મધુર અને કરૂણા-રસજનક વચનો કહેતી માર્ગમા તેને અનુસરતી ચાલવા લાગી

(तएण से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेण कण्णसुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुदरथणजहण वयणकर-चरण-नयण-लावन्नरूव जाव्व णसिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विव्वोय विलसियाणि० य विहसिय सकडक्ख दिट्ठि निस्स-सिय मलिय उवलालिय ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय)

च 'विगयघणविमलससिमडलागार' विगतघनविमलशशिमण्डलाकारम्-विगतघनं=मेघरहितम् अतएव विमल=निर्मल शशिमण्डल=चन्द्रमण्डल, तस्येवाकार=आकृतिर्यस्य तत्तथोक्तम्, सस्सिरीय' सश्रीक=शोभासम्पन्नम्, 'सारयनवकमलकुमुयकुवलयविमलदलनिगरसरिसनिभनयण' शारदनवकमलकुमुदकुवलयविमलदलनिकरसदृशनिभनयनम् तत्र शारद=शरत्कालसमुत्पन्न यन्नव नूतन कमल=सूर्यविकाशिपद्म कुवलय=चन्द्रविकाशिपद्म, तेषा विमलदलनिकरः = निर्मलदलसमूहः, तत्सदृशे=तत्तुल्ये निभे-नितरा दीप्तियुक्ते च नयने=नेत्रे यस्मिन् तत् तथोक्तम्, एतादृशशोभासम्पन्न 'वयण' वदन=मुखम्, 'पिवासागयाए' पिपासागतायाः दर्शनौत्सुक्येन समागतायाः श्रद्धा=वाञ्छा मे=मम 'पेच्छिउ' प्रेक्षितुम्=विलोकितुं वर्त्तते 'जे' यस्मात् 'अवलोहि' अवलोकय=पश्य 'ता' तावत् 'इओ मम' इतो मम=मदाभिमुख 'णाह' हे नाथ! 'जा' यावत्=यावत्काल ते=तव 'पेच्छामि' प्रेक्षे=पश्यामि 'वयणकमल' वदनकमलम्=मुखकमलम्, ॥ ७ ॥

य विगय घण-विमल-ससिमडलागार सस्सिरीय सारय नवकमल कुमुयकुवलय-विमलदल-निकरसरिस-निभनयण वयण पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउ जे अवलोएहि ताहओ मम णाह जा ते पेच्छामि वयण कमल ७) दर्शन की उत्सुकता से आई हुई मेरीइच्छा तुम्हारे मुख को देखने के लिये हो रही है। तुम्हारा वह मुख मेघ रहित निर्मल चन्द्रमडल के समान आकृति वाला एव विशिष्ट शोभा सपन्न है। इसके दोनो नेत्र शरदकालीन नवीन कमल, कुमुद,एव कुवलय के दलनिकर के समान अत्यन्त दीप्ति शाली हैं। सूर्यविकाशीपद्म का नाम कमल, चन्द्र विकाशी पद्म का नाम कुवलय है। इसलिये हे नाथ! इस तरफ तुम मेरी ओर देखो जबतक तुम मेरी ओर देखते रहोगे-तबतक मै तुम्हारे

(तुज्झ य विगय घणविमलससिमडलागार सस्सिरीय सारय नव कमल कुमुय-कुवलय-विमलदल-निकर-सरिस-निभनयण वयण पिवासा गयाए सद्धामे पेच्छिउ जे अवलोएहि ताहओ मम णाह ते पेच्छामि वयणकमल ७)

દર્શનના ઉમળકાથી પ્રેરાઈને આવેલી મારી ઈચ્છા તમારા મુખને જોવાની થઈ રહી છે તમારૂ મુખ મેઘ રહિત નિર્મળ ચદ્રમડળની જેમ આકારવાળુ અને સવિશેષ સૌદર્ય યુક્ત છે અને નેત્રો શરદ-ઋતુના નવીન કમળ, કુમુદ અને કુવલયના દલનિકરની જેમ ઘણા દ્યુતિમાન છે સૂર્ય વિકાશી પદ્મનુ નામ કમળ, ચન્દ્ર વિકાશી પદ્મનુ નામ કુવલય છે એટલા માટે હે નાથ! તમે મારી તરફ જુઓ જ્યા સુધી તમે મારી તરફ જોતા રહેશો ત્યા સુધી હું પણ તમારૂ મુખકમળ જોઈ લઈશ

एवम्=अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण ' सप्पणयसरलमहुराइ ' सप्रणयसरलमधुरानि-स्नेह-सहित सुखार्थबोधकानि मधुरानि च पुनः पुनः ' करुणाइ ' करुणानि=करुणरस-जनकानि ' वयणाइ ' वचनानि ' जपमाणी ' जल्पन्ती सा पापा ' मागओ ' मार्गतः मार्गे इत्यर्थ ' समण्णेइ ' समन्वेति=पश्चाद्गच्छति ' पावहियया ' पाप हृदया=कुटिलान्त करणा का रत्नद्वीपदेवता ॥ ७ ॥

तत खलु स जिनरक्षितश्चलमनास्तनैव भूषणरवेण कर्मसुखदेन मनोहरेण, तथा तैश्चैव सप्रणयसरसमधुरभणितै. सञ्जाताद्विगुणरागः=कामरागाकृष्ट सन् रत्नद्वीप-स्या देवतायास्तस्या. सुन्दरस्तनजघनवदनकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनश्रिय च दिव्याम्, तथा ' सरभसउवगूहियाइ ' सरभसोपगूहितानि=ससम्भ्रमकृताश्लि-नानि, यानि च ' विब्बोयविलसियाणिय ' विब्बोक विलसितानि=विब्बोका=

मुखकमल को देखलूगी (एव सप्पणयसरलमहुराइ पुणो २ कलुणाइ वयणाइ जपमाणी सा पावमग्गओ समण्णेइ, पावहियया ८) इस प्रकार -कुटिलान्तकरणवाली वह रत्नद्वीपदेवता वार २ स्नेह सहित, सुखार्थ बोधक, मधुर एव करुणारसजनक वचनों को बोलती हुई मार्ग में उस-के पीछे २ चलने लगी । (तएण से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूस पारवेण कण्णसुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं सजाय विणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुन्दरथण जहण वयण कर चरणनयणलावन्नरूवजोव्वणसिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विब्बो य विलसियाणि० य विहसिय सकडक्खदिट्ठि निस्ससिय मलिय उवलालिय ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य, सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय) इसके बाद कर्णेन्द्रिय को

(एव सप्पणयसरलमहुराइं पुणो २ कलुणाइ वयणाइ जपमाणी सो पाव मग्गओ समण्णेइ पावहियया ८)

આ રીતે કુટિલ હૃદયવાળી તે રત્નદ્વીપ દેવતા વારવાર સ્નેહમિશ્રિત, સુખાર્થ બોધક મધુર અને કરૂણા રસજનક વચનો કહેતી માર્ગમા તેને અનુસરતી ચાલવા લાગી

(तएण से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेण कण्णसुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुदरथणजहण वयणकर-चरण-नयण-लावन्नरूव जाव्व णसिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विब्बोय विलसियाणि० य विहसिय सकडक्ख दिट्ठि निस्स-सिय मलिय उवलालिय ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खत्ति मग्गतो सविलिय)

स्त्रीचेष्टा विशेषाः, विलसितानि=नेत्रविकारादि लक्षणानि च 'विहसिय सकडक्ख दिट्ठिनिरससियमलिय उवलालियठियगमणपणयखिज्जियपासाइयाणि य' विहसित सकटाक्षदृष्टिनिः श्वसितमलित पुलालितस्थितगमनप्रणयखिलित प्रसादितानि च-विहसितानि=हास्यानि, सकटाक्षदृष्टयः=सविकारविलोकनानि, निः श्वसित=निः श्वासमोचनम्, मलितं=पुरुषाभिलषितमर्दनम्, उपलालितानि=क्रीडाविशेष रूपाणि, स्थितम्=भवननिवसनादिकम्, गमन=हसगत्यासञ्चरणम्, प्रणय=स्नेह, वचनम्, खिसन=कामकलहः, प्रसादित=प्रसन्नतारूपम्, एतानि सर्वाणि च 'सरमाणे' स्मरन्=पुनः पुनः स्मृतिपथमानयन् 'रायमोहियमई' रागमोहितमति-=कामरागमूर्च्छितमति', 'अवसे' अवश=विवश कामपराधीन' 'कम्मवसगए' कर्मवशगत=कर्मगतिपरवशः सन् असौ जिनरक्षितस्ता 'अवयक्खइ' पश्यति 'मग्गओ' मार्गत' पृष्टत 'सविलिय' सव्रीड=सलज्ज दृष्टवानित्यर्थ ।

सुख देने वाले और मन को हरण करने वाले उन्हीं भूषणो के शब्दों से तथा उन्ही सप्रणय सरल मधुर भाषणो से जिसका रागभाव द्विगुणित हो गया है ऐसा वह जिनरक्षित चचल मनवाला बन गया। सो उस रयणादेवी के दोनों सुन्दरस्तनों की दोनों जघनो की, वदन की दोनों करों की दोनो चरणों की, लावण्य की, रूप एव यौवन की दिव्य श्री का तथा उसके ससभ्रमकृत आलिङ्गनों का, विव्वोक तथा विलासो का, हास्य का, कटाक्षयुक्तदृष्टि विक्षेप का श्वासमोचन का, पुरुषाभिलषित मर्दन का, क्रीडा विशेषरूप उपललितो का भवनादिको मे निवास करने आदि का उसकी हसकी चालके समान गति का, उसके प्रणयवचनो का, काम कलह का, उसकी प्रसन्नता का बार २ स्मरण करता हुआ वह काम राग से मोहित मतिवाला बन गया। इस तरह काम से पराधीन

વાર પછી કાનોને ગમતા અને મનને આકર્ષનારા ઘરેણાઓના શબ્દોથી તેમજ પ્રણયના સરળ મધુર વચનોથી જેનો રાગ ભાવ બમણો વધી ગયો છે એવો તે જીનરક્ષિત ચચળ મનવાળો થઈ ગયો તે રયણા દેવીના બને સુદર સ્તનોનુ, જઘનોનુ, વદનનુ બે ને હાથોનુ, બે ને ચ ણોનુ, લાવણ્યનુ રૂપ તેમજ યૌવનનુ, દિવ્યશ્રીનુ, તેના સમ્ભ્રમકૃત આલિંગનોનુ, વિબ્લોકનુ વિલ સોનુ, હાસ્યનુ, કટાક્ષયુક્ત દૃષ્ટિ વિક્ષેપનુ, શ્વાસ મોચનનુ, પુરૂષાભિલષિત મ દનનુ, ક્રીડા વિશેષ રૂપ ઉપલલિતોનુ ભવનો વગેરેમા રહેવા કરવાનુ તેની હ સ જેવી ગતિનુ, તેના પ્રણયપૂર્ણ વચનોનુ કામકલહનુ તેની પ્રસન્નતાનુ વાર વાર સ્મરણ કરતો કામરાગથી મોહિત મતીવાળો થઈ ગયો આ રીતે કામ્ય થયેલો

ततः खलु जिनरक्षित समुत्पन्नकरुणभाव ता मति सजातदयार्द्रहृदयम्, अत एव ' मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइ ' मृत्युगलत्थल्लानोदितमति, मृत्युना=मृत्युराक्षसेन ' गलत्थल्ला '=कण्ठग्रहणरूपा, तया नोदिता=स्वदेशगमनवैमुख्यतया मृत्यु मुखप्रवेशसम्मुखीकृता मतिर्यस्य स तथा तम् ' अवयक्खत ' ता रत्नद्वीपदेवतां पश्यन्त तथैव=तथारूपेणैव यक्षश्च शैलकः ' जाणिऊण ' ज्ञात्वा ' सणियर ' शनैः शनैः ' उव्विहइ ' उद्विजहाति=उच्छालयति-' नियगपिट्ठाहि ' निज पृष्ठाद् विगयसद्ध ' विगतश्रद्ध विगता=नष्टा श्रद्धा विश्वासो यत्प्रवचने यस्य स तम्, स यक्षस्त स्वपृष्टात्पातयामासेत्यर्थः।

ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता ' निस्ससा ' नृशसा=निर्दया ' कलुण ' करुण=दयनीयं जिनरक्षित ' सकलुसा ' सकलुषा=कलुषितहृदया शैलकपृष्ठात्

पना वह विचारा जिनरक्षित अशुभकर्म के चक्कर में पडकर मार्ग में चलते २ उसकी ओर वार २ लज्जा सहित देखने लग गया। (तएण जिणरक्खियय समुप्पन्नकलुणभाव मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइ अवयक्खत तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊण सणिय २ उव्विहति नियग पिट्ठाहि विगय सद्ध) उत्पन्न हुआ है रयणा देवी के प्रति दया भाव जिस को ऐसे उस जिनरक्षित को कि जिस की मति कठ पकड कर मृत्यु रूपी राक्षस ने अपने मुख में प्रवेश के सन्मुख कर ली है रयणा देवी की ओर वार २ निहारता हुआ देखकर-जानकर धीरे २ अपनी पीठ पर से अपने वचनों मे श्रद्धा विहीन जान उछाल दिया। पटक दिया (तएण सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खियय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि

બિચારો જીનરક્ષિત અશુભ કર્મની લપેટમા આવીને માર્ગમા ચલતો ચાલતો તેની સામે વારવાર લજ્જાયુક્ત થઈને જોવા લાગ્યો

(तएण जिणरक्खियय समुपन्नकलुणभाव मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइ अवयक्खत तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊ ण मणियर उव्विहति नियग पिट्ठाहि विगयसद्ध)

રયણા દેવીના માટે જેના મનમા દયા ભાવ જન્મ્યો છે એવા જીન રક્ષિતને-કે જેનો મતિનુ ગળુ દબાવીને મૃત્યુરૂપી રાક્ષસે ગળી જવા માટે પોતાના મોની સામે કરી લીધી છે-રયણાદેવીની તરફ વારવાર જોતા જાણીને, તેના (યક્ષના) વચનોમા અશ્રદ્ધાળુ થઇ ગયેલો સમજીને ધીમે ધીમે જીન રક્ષિતને યક્ષે પોતાની પીઠ ઉપરથી ફેકી દીધો પટકી દીધો

(तएण सा रयणादीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खियय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयत दास ! मओसित्ति जपमाणी अप्पत्त सागरसलिलमेव्हिय वाहाहिं

स्त्रीचेष्टा विशेषाः, विलसितानि=नेत्रविकारादि लक्षणानि च ' विहसिय सकडक्ख दिट्ठिनिरससियमलिय उवलालियठियगमणपणयखिज्जियपासाइयाणि य ' विहसित सकटाक्षदृष्टिनिः श्वसितमलित पल्लितस्थितगमनप्रणयखिन्नित प्रसादितानि च-विहसितानि=हास्यानि, सकटाक्षदृष्टयः=सविकारविलोकनानि, निः श्वसित=निः श्वासमोचनम् , मलितं=पुरुषाभिलषितमर्दनम् , उपलालितानि=क्रीडाविशेष रूपाणि, स्थितम्=भवननिवसनादिकम् , गमन=हसगत्यासञ्चरणम् , प्रणय=स्नेह, वचनम् , खिसन=कामकलहः, प्रसादित=प्रसन्नतारूपम् , एतानि सर्वाणि च ' सरमाणे ' स्मरन्=पुनः पुनः स्मृतिपथमानयन् ' रायमोहियमई ' रागमोहितमतिः=कामरागमूर्च्छितमतिः, ' अवसे ' अवश =विवश कामपराधीनः ' कम्मवसगए ' कर्मवशगत =कर्मगतिपरवशः सन् असौ जिनरक्षितस्तदा ' अवयक्खइ ' पश्यति ' मग्गओ ' मार्गत पृष्टत ' सविलिय ' सव्रीड=सलज्ज दृष्टवानित्यर्थ ।

सुख देने वाले और मन को हरण करने वाले उन्हीं भूषणो के शब्दों से तथा उन्ही सप्रणय सरल मधुर भाषणो से जिसका रागभाव द्विगुणित हो गया है ऐसा वह जिनरक्षित चचल मनवाला बन गया। सो उस रयणादेवी के दोनों सुन्दरस्तनों की दोनों जघनो की, वदन की दोनों करों की दोनो चरणो की, लावण्य की, रूप एव यौवन की दिव्य श्री का तथा उसके ससभ्रमकृत आलिङ्गनो का, विव्वोक तथा विलासो का, हास्य का, कटाक्षयुक्तदृष्टि विक्षेप का श्वासमोचन का, पुरुषाभिलषित-मर्दन का, क्रीडा विशेषरूप उपललितो का भवनादिको मे निवास करने आदि का उसकी हसकी चालके समान गति का, उसके प्रणयवचनो का, काम कलह का, उसकी प्रसन्नता का बार २ स्मरण करता हुआ वह काम राग से मोहित मतिवाला बन गया। इस तरह काम से पराधीन

ત્યાર પછી કાનોને ગમતા અને મનને આકર્ષનારા ઘરેણાઓના શબ્દોથી તેમજ પ્રણયના સરળ મધુર વચનોથી જેનો રાગ ભાવ બમણો વધી ગયો છે એવો તે જીનરક્ષિત ચચળ મનવાળો થઈ ગયો તે રયણા દેવીના બને સુદર સ્તનોનુ, જઘનોનુ, વદનનુ બને હાથોનુ, બને ચરણોનુ, લાવણ્યનુ રૂપ તેમજ યૌવનનુ, દિવ્યશ્રીનુ, તેના સમ્ભ્રમકૃત આલિંગનોનુ, વિબ્બોકનુ વિલાસોનુ હાસ્યનુ, કટાક્ષયુક્ત દૃષ્ટિ વિક્ષેપનુ, શ્વાસ મોચનનુ, પુરૂષાભિલષિત મર્દનનુ, ક્રીડા વિશેષ રૂપ ઉપલલિતોનુ ભવનો વગેરેમા રહેવા કરવાનુ, તેની હસ જેવી ગતિનુ, તેના પ્રણયપૂર્ણ વચનોનુ કામકલહનુ તેની પ્રસન્નતાનુ વારવાર સ્મરણ કરતો કામરાગથી મોહિત મતીવાળો થઈ ગયો આ રીતે કામવશ થયેલો

तत्र 'विलवमाण' विलपन्तं=विलाप कुर्वन्तमित्यर्थ । तस्य च 'सरसवहियस्स' सरसवधितस्य साभिमान वध प्रापितस्य 'घेत्तूण' गृहीत्वा 'अगमगाइ' अङ्गाङ्गानि अङ्गोपाङ्गानि=करचरणमस्तकादीनि सरुधिराणि=रुधिरलिप्तानि 'उक्खित्तबलिं' उत्क्षिप्तबलिम्=आकाशप्रक्षेपणरूप वायसबलि-मिवबलिं 'चउद्दिसिं' चतुर्दिक्षु करोति सा 'पंजली' प्राञ्जलि'=सयोजित करपुटा 'पहिट्ठा' प्रहृष्टा=हर्षितमनस्का सती घातरूप स्वाभिलषित कार्यं कृतवतीत्यर्थ ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाण अंतिए पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायइ पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ से ण इह भवे चेव बहूण समणाणं४ जाव संसार० अणुपरियट्टिस्सति, जहा वा से जिणरक्खिए—'छलिओ अवयक्खतो निरावयक्खो गओ अविग्घेण । तम्हा पवयणसारे निरावयक्खेण भवियव्व ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खता पडंति संसारसायरे घोरे । भोगेहि निरवयक्खा तरंति संसारकंतार ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'एवामेव' एवमेव=पूर्वोक्तदृष्टान्तेनैव 'समणाउसो !' हे श्रमणा

अपने घातरूप अभिलषित कार्य को सपन्न करती हुई वह बहुत अधिक हर्षित हुई । उस रयणादेवी ने साभिमान वध को प्राप्त हुए उस जिन रक्षित के रुधिर लिप्त अग उपागो की चारो दिशाओ में वायस बलि के जैसी बलिकी और दोनो हाथो को जोडकर फिर बडी आनन्द मग्न हुई । ॥सू०७॥

'एवामेव समणाउसो' इत्यादि ।

टीकार्थ–(एवामेव) इसी तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो !

કરી નાખ્યા આ રીતે પોતાની ઘાતકી ઇચ્છા પૂરી કરતા તે અત્યધિક પ્રસન્ન થઈ તે રયણા દેવીએ લોહીથી ખરડાએલા કઠોર કકડા થયેલા જીનરક્ષિતના અંગો, ઉપાંગોને સગવ ચાર દિશાઓમા કાગડા વગેરેને માટે બલિ રૂપમા ફેંકી દીધા અને પછી બંને હાથોને જોડીને તે આનદમગ્ન થઈ ગઈ । સૂત્ર "૭॥"

(एवा मेव समणाउसो " इत्यादि ॥

टीकार्थ–(एवामेव) આ પ્રમાણે (समणाउसो) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો !

'ओवयंत' अवपत्तम्=समुद्रे पतन्तम्, 'दास' हे दास! हे नीच! 'मओसि' मृतोऽसि त्वम्, इति जल्पती सती 'अप्पत्त सागरसलिल' अप्राप्त सागरसलिल समुद्रनीरमप्राप्तमेव मध्य एव 'गेण्हिय बाहाहिं' गृहीत्वा बाहुभ्याम्। आरसन्त=सकरुण रुदन्त=चीत्कुर्वन्तमित्यर्थः ऊर्ध्वम् 'उव्विहइ' उत्क्षिपति=उच्छालयति अम्बरतले=गगनतले, 'ओवयमाण च' अवपतन्त च पश्चादध' पतन्त च 'मडलग्गेण 'मण्डलाग्रेण=खड्गेन 'पडिच्छित्ता' प्रतिच्छिद्य=छित्त्वा नीलोत्पल गवलासी प्रकाशेन=अतिश्यामेन असिवरेण=सुतीक्ष्णखड्गेन खण्डाखण्डि=खण्ड-खण्ड करोति

ओवयत दास! मओसिति जपमाणी अप्पत्त सागरसलिल गेण्हिय बहाहिं आरसत उड्ढ उव्विहति अवरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पलगवलअयसिप्पगासेण असिवरेण खडाखडिं करेइ तत्थ विलवमाण तस्स य सरस वहियस्स घेत्तूणअग मगातिं सरुहिराइ उक्खित्त वलिं चउद्दिसिं करेइ सा पजली पहिट्ठा) इसके बाद नृशस-हत्यारी-तथा कलुषित हृदयवाली उस रयणादेवीने शैलक यक्ष की पीठ से समुद्र मे गिरते हुए जिनरक्षित को जब तक वह समुद्र में नही गिर पाया तब तक बीचमें ही अपने दोनों हाथों से पकड लिया और कहने लगी हे नीच अब तु मर गयो। इस प्रकार सुनकर सकरुण विलाप-चित्कार-करते हुए उस जिनरक्षित को उसने ऊपर उछाल दिया पश्चात् निचे गिरते समय उसने अपनी तलवार से दो टुकडे कर दिये। दो टुकड़े करके फिर उसने नीलोत्पल, गवल एव अतसी के पुष्प के जैसी वर्णवाली तीक्ष्ण तलवार से उसके खड २ कर दिये। इस तरह

आरसत उड्ढ उव्विहति अवरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पल गवल अयसिप्पगासेण असिवरेण खडाखडिं करेइ तत्थ विलवमाण तस्स य सरसव हियस्स घेत्तूण अगमगातिं सरुहिराइ उक्खित्त वलिं चउद्दिसिं करेइ पजली पहिट्ठा)

ત્યારપછી નૃશ સ-હત્યારી-તેમજ કલુષિત હૃદયવાળી રયણા દેવીએ શૈલક યક્ષની પીઠ ઉપરથી ખમીને સમુદ્રમા પડતા જોયો ત્યારે તે સમુદ્રમા પડે નહિ તે પહેલા તેણે પોતાના બને હાથોથી તેને પકડી લીધો, અને તે કહેવા લાગી કે હે નીચ! હવે તુ મરાયો જ સમજ રયણા દેવીની વાત સાભળીને જીન રક્ષિત કરૂણ વિલાપ કરવા લાગ્યો તે દેવીએ તે સ્થિતિમા જ તેને ઉપર ઉછાળ્યો અને ત્યારપછી નીચે પડતા જીનરક્ષિતના તેણે પોતાની તલવારથી બે કકડા કરી નાખ્યા બે કકડા કર્યા બાદ પણ તેને નીલોત્પલ, ગવલ અને અતસીના પુષ્પ જેવી રગવાળી તીક્ષ્ણ તલવારથી તેના શરીરના ૨ કકડા

तत्र 'विलवमाण' विलपन्त=विलाप कुर्वन्तमित्यर्थ । तस्य च 'सरसवहियस्स' सरसवधितस्य साभिमान वध प्रापितस्य ' रेतूण ' गृहीत्वा ' अगमगाइ ' अङ्गाङ्गानि अङ्गोपाङ्गानि=स्वचरणमस्तकादीनि सरुधिराणि=रुधिरलिप्तानि ' उक्खित्तबलिं ' उत्क्षिप्तबलिम्=आकाशप्रक्षेपणरूप वायसबलि-मिवबलिं ' चउद्दिसिं ' चतुर्दिक्षु करोति सा ' पजली ' प्राञ्जलि =सयोजित करपुटा ' पहिट्ठा ' प्रहृष्टा=हर्षितमनस्का सती घातरूप स्वाभिलषित कार्यं कृतवतीत्यर्थ ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाण अंतिए पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायइ पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ से ण इह भवे चेव बहूण समणाण४ जाव स-सार० अणुपरियट्टिस्सति, जहा वा से जिणरक्खिए—'छलिओ अवयक्खतो निरावयक्खो गओ अविग्घेण । तम्हा पवय-णसारे निरावयक्खेण भवियव्व ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खता पडंति ससारसायरे घोरे । भोगेहि निरवयक्खा तरंति ससारकत्तारं ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

टीका—' एवामेव ' एवमेव=पूर्वोक्तदृष्टान्तेनैव ' समणाउसो ! ' हे श्रमणा

अपने घातरूप अभिलषित कार्य को सपन्न करती हुई वह बहुत अधिक हर्षित हुई । उस रयणादेवी ने साभिमान वध को प्राप्त हुए उस जिन रक्षित के रुधिर लिप्त अग उपागो की चारों दिशाओ में वायस बलि के जैसी बलिकी और दोनो हाथों को जोडकर फिर बडी आनन्द मग्न हुई । ॥सू०७॥

' एवामेव समणाउसो ' इत्यादि ।

दीकार्थ—(एवामेव) इसी तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो !

કરી નાખ્યા આ રીતે પોતાની ઘાતકી ઇચ્છા પૂરી કરતા તે અત્યધિક પ્રસન્ન થઈ તે રયણા દેવીએ લોહીથી ખરડાએલા કકડે કકડા થયેલા જીનરક્ષિતના અગો, ઉપાગોને સગર્ ચાર દિશાઓમા કાગડા વગેરેને માટે બલિ રૂપમા ફેકી દીધા અને પછી બને હાથોને જોડીને તે આનદમગ્ન થઇ ગઈ । સૂત્ર "૭॥"

(एवा मेव समणाउमो " इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(एवामेव) આ પ્રમાણે (समणाउसो) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો !

आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् पुनरपि मानुष्यकान् कामभोगान=पूर्वत्यक्तान् ' आसायइ ' आसादयति=स्वीकरोति, ' पत्थयइ ' प्रार्थयते=अमूनान् याचते, ' पीहेइ ' स्पृहयति-' अयाचित-एवायं मह्यं भोगान् ददाति तदा समीचीनं स्यात् ' इत्यादि रूपां स्पृहां करोति ' अभिलसइ ' अभिलषति=दृष्टादृष्टशब्दादि-विषयेषु वाञ्छां करोति, स खलु इह भव एव बहूनां श्रमणानां, बहीनां श्रमणीनां, बहूनां श्रावकाणां बहीनां श्राविकाणां मध्ये ' जाव ' यावत्-यावच्छब्देनेदं दृश्यम् - हीलनीयः, निन्दनीयः, खिंसनीयः=भर्त्सनीयः, गर्हणीयः, परिभवनीयः =तिरस्करणीयो भवति, परलोकेऽपि च खलु आगमिष्यति काले बहूनि दण्डानि=कर्णनासाच्छेदनरूपाणि प्राप्नोति यावत्-अनादिकम्-अनवदग्रम्=अनन्तं, दीर्घाध्वानं=दीर्घमार्गं, दीर्घाद्धं वा दीर्घकालिकं चातुरन्तसंसारकान्तारं=चातुर्गतिकसंसाराटवीम् ' अणुपरियट्टिस्सइ ' अनुपर्यटिष्यति=पुनः पुनर्भ्रमिष्यति, यथा वा स जिनरक्षितः । अत्रार्थे दृष्टान्तयोजनागाथाद्वयेनाह—

(जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरियउवज्झायाण अतिए पव्वइए) जो हमारा निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थी जन आचार्य तथा उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ (पुणरवि माणुसए कामभोगे आसायइ पत्थइ, पीहेइ, अभिलसइ) पुन मनुष्य भव सबन्धी काम भोगों पूर्वत्यक्त वैषयिक सुखो को-स्वीकार कर लेता है उनकी चाहना करता है " विना याचना किये ही यह मेरे लिये भोगों को देदेवे तो अच्छा है " इस प्रकार की जो स्पृहा इच्छा करता है, या दृष्टादृष्ट शब्दादि विषयो मे वाञ्छा करता है (से ण इह भवे चेव बहूणं समणा णं ४ जाव ससार० अणुपरियट्टिस्सइ जहाव से जिणरक्खिए छलिओ

(जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय उव्वज्झायाण अतिए पव्वइए)
જે અમારા નિર્ગ્રંથ કે નિર્ગ્રંથી જન આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજીત થઇને

(पुणरवि माणुसए कामभोगे आसायइ पत्थयइ, पीहेइ, अभिलसइ)

ફરી તે મનુષ્યભવના કામભોગો-પ્રવ્રજીત થતી વખતે છોડેલા મનુષ્યભવના વિષમ સુખો-ને સ્વીકારે છે, તે સુખોની ઇચ્છા કરે છે " હુ વિષય સુખની એની પાસેથી માગણી કરૂ નહિ ને એની મેળે તે મને વિષમ સુખો આપે તો કેટલુ સારૂ થાય ' આ રીતે જે સ્પૃહા કરે છે, અથવા તો દૃષ્ટાદૃષ્ટ શબ્દ વગેરે વિષયોની ઇચ્છા કરે છે

(से ण इह भवे चेव बहूण समणाण ४ जाव ससार० अणपरियट्टिस्सइ

" छलिओ अवयक्खतो, निरावयक्खो गओ अविग्घेण ।
तम्हा पवयणसारे, निरावयक्खेण भवियव्व ॥ १ ॥
भोगे अवयक्खता, पडंति संसारसायरे घोरे ।
भोगेहिं निरवयक्खा, तरंति संसारकंतार ॥ २ ॥ " इति ॥

अस्य व्याख्या—छलितः=वञ्चितः, कः ? अवयक्खतो ' पश्यन् रत्नद्वीप देवताम्—अवलोकयन् जिनरक्षितो विप्रतारित । य ' निरावयक्खो ' अपश्यकः—तस्या देवताया अदर्शक' ता न दृष्ट्वेत्यर्थ', स जिनपालित' गत'=गृह प्राप्त' ' अविग्घेण ' अविघ्नेन=निर्विघ्नतया, सुखसुखेन स्वस्थान प्राप्त वानित्यर्थः । अथोपदेशमाह—तस्मात् कारणात् प्रवचनसारे=चारित्रे लब्धे सती 'निरवयक्खेण'

अवयक्खतो निरावयक्खो गओ अविग्घे ण ! तम्हा पवयणसारे निरा वयक्खेण भवियव्व) वह इस भव में ही अनेक श्रमणों अनेकश्रमणि यों अनेक श्रावकों एव अनेक श्राविकाओं के बीच में हीलनीय होताहै, निंदनीय होता है, खिसनीय होता है, तथा परभव में भी अनेक कर्ण-नासिकाच्छेदन आदि रूप दडों को भोगता है ऐसा जीव अनादि अनन्त रूप इस दीर्घ मार्ग या काल वाले चतुर्गतिक ससार कान्तार में पुनः पुन' भ्रमण करेगा । जिन रक्षित का जो इस विषय मे दृष्टान्त दिया गया है उसकी योजना इस प्रकार है-जैसे रयणा देवी की तरफ देखता हुआ जिनरक्षित ठगा गया-और उसकी तरफ नहीं देखता जिनपालित शीघ्र अपने घर पहुँच गया-इसी तरह चारित्र के प्राप्त करलेने पर जो व्यक्ति शब्दादि विषयो की वाञ्छा से रहित होता है

जहाव से जिणरक्खिए छलिओ अवयक्खतो निरावयक्खो गओ अविग्घेण ! तम्हा पवयणसारे निरावयक्खेण भवियव्व)

તે આ ભવમા જ ઘણા શ્રમણો અને શ્રમણીઓ તેમજ ઘણા શ્રાવકો અને શ્રાવિકાઓની સામે હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, ખિંસનીય હોય છે (ભર્ત્સનીય હોય છે) તિરસ્કાર કરવા યોગ્ય હોય છે, તથા બીજા જન્મમા પણ ઘણા કાન, નાક કપાવવા વગેરે રૂપ સજાને ભોગવતો રહે છે આ જાતનો જીવ અનાદિ અનતરૂપ આ દીર્ઘ માર્ગ અથવા કાળવાળા ચતુર્ગતિક ससार કાતારમા વારવાર ભ્રમણ કરશે અહી જીનરક્ષિત વિશે જે દૃષ્ટાન્ત આપવામા આવ્યુ છે તેને આ પ્રમાણે સમજવુ જોઇએ જેમ રયણા દેવીની તરફ જોતા જીનરક્ષિત ઠગાયો અને તેની તરફ ન જોતા જીનપાલિત એકદમ પોતાને ઘેર પહોચી ગયો તેમજ ચારિત્ર મેળવવા બાદ જે માણસ શબ્દાદિ ભોગોની ઇચ્છા

अपश्यकेन=प्राप्ताप्राप्त-दृष्टादृष्टशब्दादि विषयाणामदर्शकेण शब्दादिविषयवाञ्छा रहितेनेत्यर्थ भवितव्यम् , चारित्र गृहीत्वा विषयवासनाश्च लेशतोऽपि मुनिना मूर्छा न विधातव्येति भाव ॥ १ ॥ अतएव भोगे ' भोगान्=शब्दादिकान् ' अवयक्खता ' पश्यन्त.=वाञ्छन्तो जीवाः पतन्ति ससारसागरे घोरे । ये भोगेषु निरवयक्खाः' अपश्यकाः=वाञ्छारहिताः सन्ति ते तरन्ति पारयन्ति ससारकान्तार =मटवीम् ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

मूलम्–तएण सा रयणद्दीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवा० बहूहि अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य खरमउरसिंगारेहि कलुणेहि य उवसग्गेहि य जाहे नो सचाएइ चालित्तए वा खोभि० विप्प० ताहे सता तता परितता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया, तएण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धि लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीयवयइ२ जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अग्गुज्जाणसि जिणपालिय पिट्ठातो ओयारेइ ओयारित्ता एव वयासी–एसण देवानुप्पिया ! चपानयरी दीसइ त्तिकट्टु जिणपालिय आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिसि पाउब्भुए तामेव दिसि पडिगए ॥ सू० ९ ॥

वह इस ससार रूप अटवी से पार हो जाता है और जो उस अवस्था मे शब्दादि विषय भोगोकी वाञ्छा करता है वह ससार रूप अटवी में डूबता रहता है–पडता रहता है । सूत्र " ८ "

રાખતો નથી તે આ સસાર રૂપી અટવીની પાર પહોચી જાય છે અને જે શબ્દ વગેરે વિષય–ભોગોની ઇચ્છા કરે છે તે સસાર રૂપી અટવીમા ફસાઇને તેમા જ ડૂબતો રહે છે ॥ સૂત્ર " ૮ " ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । ततः खलु तदनन्तर जिनरक्षितवधानन्तर सा रत्नद्वीपदेवता यत्रैव जिनपालितस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य बहुभिः-अनुलोमै.=अनुकूलैश्च, प्रतिलोमै.=प्रतिकूलैश्च ' खरमधुरसिंगारेहिं ' खरमधुरशृङ्गारैः खरै =कर्कशै, मधुरैः=मिष्टैः कर्णसुखदैरित्यर्थः, शृङ्गारै.=शृङ्गाररसोत्पादकैः, करुणैश्च=करुणाजनकैः उपसर्गैरनुकूलरूपैश्च यदा तं नो शक्नोति ' चालित्तए वा ' चालयितुम्=अधीरतामुत्पादयितुम्, ' खोभित्तए वा ' क्षोभयितुं=क्षुब्ध कर्तुम्, विपरिणामित्तए ' विपरिणमयितुम्=मनः परिणाम परावर्त्तयितुं न समर्थोऽभूत् तदा सा ' सता ' शान्ता=शिथिला हतोत्साहा, श्रान्ता वा=परिश्रमिता तान्ता=खिन्ना, परितान्ता=सर्वथा खेदमापन्ना ' निव्विण्णा ' निर्विण्णा=विमनस्का सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता=समागता तामेव दिशं प्रतिगता=प्रतिनिवृत्ता ।

तएण सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) वह रयणा देवी (जेणेव जिणपालिए) जहा जिन पालित था (तेणेव उवागच्छइ) वहा आई (बहूहिं अणुलोमेहिं पडिलोमेहिं खरमहुरसिंगारेहिं कलुणेहिं य उवसग्गेहि य जाहेनो संचाएहिं चालित्तए वा खोभि० विप्प० ताहे संतातत्ता परितता निव्विणा समाणा जामेव दिसि पाउ० तामेव दिस पडिगया) वहा आकर उन से अनेक अनुकूल प्रतिकूल, कर्कश, मधुर-कर्णसुखद-शृगार रसोत्पादक, एव करुणारस जनक उपसर्ग वचनो द्वारा उसे चलायमान करने का क्षुभित करने का और उसकी मनोवृत्ति को बदल ने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु जब वह उसे चलायमान करने के लिये, क्षुभित करने के लिये एव उस की मनोवृत्ति बदलने के लिये समर्थ नही हो सकी तब हतोत्साह परिश्रमित

तएण सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (सा रयणदीवदेवया) તે રયણા દેવી (जेणेव जिणपालिए) જ્યા જીનપાલિત હતો (तेणेव उवागच्छइ) ત્યા આવી

(बहूहिं अणुलोमेहिं कलुणेहिं य उवसग्गे हि य जाहे नो संचाएहिं चालित्तए वा खोभि० विप्प ताहे संतातत्ता परितता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसि पाउ० तामेव दिस पडिगया)

ત્યા આવીને ઘણા અનુકૂળ, પ્રતિકૂળ, કર્કશ, મધુર, કર્ણસુખદ શ્રૃગાર રસોત્પાદક, અને કરૂણા જનક ઉપસર્ગ વચનો વડે તેને પોતાના નિશ્ચયથી [illegible] ના ક્ષુબ્ધિત કરવાના અને તેની મનોવૃત્તિને ફેરવી નાખવાના ખૂબજ

तत खलु स शैलको यक्षो जिनपालितेन सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन 'वीईवयइ वतिव्रजति=गच्छति, वतिव्रज्य यत्रैव चम्पानगरी तत्रोपागच्छति, उपागत्य चम्पाया नगर्या 'अग्गुज्जाणसि' अग्रोद्याने=मुख्योद्याने जिनपालित पृष्ठात् अवतारयति, अवतार्य-एवमवदत्-एषा=पुरोवर्त्तिनी खलु हे देवानुप्रिय! चम्पानगरी दृश्यते, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा जिनपालितम् 'आपुच्छइ' आपृच्छति= तदनुज्ञा गृह्णाति, आपृच्छय यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगत ॥सू०९॥

खिन्न, परितान्त एव विमनस्क होता हुई वह जिस दिशा से आई थी उसी दिशा की तरफ चली गई। (तएण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइ २ जेणेव चपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अग्गुज्जाणसि जिणपालिय पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया! दीसइ त्ति कट्टु जिनपालिय आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) इस के बाद वह शैलक यक्ष लवण समुद्र के बीच में चलने लगा और चल कर जहां चपा नगरी थी-वहा आ पहुँचा आकर के उसने चपा नगरी के प्रधान उद्यान में जिन पालित को अपनी पीठ पर से उतार दिया। उतार करके फिर उसने उस से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय! यह चपा नगरी दिखलाई देती है। ऐसा कह कर फिर उसने जिनपालित से पूछा-और पूछ कर वह जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वहा से चला गया। सूत्र ॥ ९ ॥

પ્રયત્નો કર્યા પણ તે ત્યા ફાવી નહિ છેવટે તે હતાશ, થાકેલી, ખિન્ન, પરિતાત અને વિમનસ્ક થઈને તે જે દિશા તરફથી આવી હતી તે જ દિશા તરફ પાછી જતી રહી

(तएण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइ२ जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अग्गुज्जाणसि जिणपालिय पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एव वयासी एसण देवाणुप्पिया! चपानयरी दीसइ त्तिकट्टु जिनपालिय आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

ત્યાર બાદ તે શૈલક યક્ષ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને આગળ વધતો જ રહ્યો અને જ્યા ચપા નગરી હતી ત્યા પહોચ્યો ત્યા પહોચીને ચપા નગરીના પ્રધાન ઉદ્યાનમા જીનપાલિતને પોતાની પીઠ ઉપરથી નીચે ઉતારી દીધો, ઉતારીને તેણે જીનપાલિતને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! આ સામે ચપા નગરી દેખાય છે ત્યારબાદ યક્ષે જીનપાલિતને જવા માટે પૂછ્યુ અને પૂછીને તે જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો [illegible] ॥

मूलम्–तएणं से जिणपालिए चप अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्ति निवेदेइ, तएणं जिणपालिए अम्मापियरो मित्तणाइ जाव परियणेणं सद्धि रोयमाणा बहूइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेंति करित्ता कालेण विगयसोया जाया, तएण जिणपालिय अन्नया कयाइ सुहासणवरगत अम्मापियरो एव वयासी–कहण्णं पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ?, तएण से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तार च कालियवायससुत्थणं पोतवहणविवत्ति च फलहखडआसायणं च रयणदीवुत्तार च रयणदीवदेवया गिण्हणं च भोगविभूइ च रयणदीवदेवयाए आघायणं च सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहण च रयणदीवदेवया उवसग्ग च जिणरक्खियविवत्ति च लवणसमुद्दउत्तरणं च चपागमण च सेलगजक्खआपुच्छण च जहाभूयमवितहमसदिद्ध परिकहेइ, तएणं से जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ । तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसढे, धम्म सोच्चा पव्वइए एक्कारसगणी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झिहिइ । एवामेव समणाउसो ! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायइ से ण जाव वीइवइस्सइ जहा दा से जिणपालिए । एव खलु जबू !

तत खलु स सैलको यक्षो जिनपालितेन सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन 'वीइवयइ व्यतिव्रजति=गच्छति, व्यतिव्रज्य यत्रैव चम्पानगरी तत्रोपागच्छति, उपागत्य चम्पाया नगर्या 'अग्गुज्जाणंसि' अग्रोद्याने=मुख्योद्याने जिनपालित पृष्ठात् अवतारयति, अवतार्य-एवमवदत्-एषा=पुरोवर्त्तिनी खलु हे देवानुप्रिय ! चम्पानगरी दृश्यते, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा जिनपालितम् 'आपुच्छइ' आपृच्छति= तदनुज्ञां गृह्णाति, आपृच्छय यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगत ।सू०९॥

खिन्न, परितान्त एव विमनस्क होता हुई वह जिस दिशा से आई थी उसी दिशा की तरफ चली गई। (तएण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइ २ जेणेव चपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अग्गुज्जाणसि जिणपालिय पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! दीसइ त्ति कट्टु जिनपालिय आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) इस के बाद वह शैलक यक्ष लवण समुद्र के बीच मे चलने लगा और चल कर जहा चपा नगरी थी-वहा आ पहुँचा आकर के उसने चपा नगरी के प्रधान बगीचे में जिन पालित को अपनी पीठ पर से उतार दिया। उतार करके फिर उसने उस से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह चपा नगरी दिखलाई देती है। ऐसा कह कर फिर उसने जिनपालित से पूछा-और पूछ कर वह जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वहा से चला गया। सूत्र ॥ ९ ॥

પ્રયત્નો કર્યા પણ તે ત્યા ફાવી નહિ છેવટે તે હતાશ, થાકેલી, ખિન્ન, પરિતાત અને વિમનસ્ક થઇને તે જે દિશા તરફથી આવી હતી તે જ દિશા તરફ પાછી જતી રહી

(तएण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइ२ जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अग्गुज्जाणमि जिणपालिय पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एव वयासी एसण देवाणुप्पिया ! चपानयरी दीसइ त्तिकट्टु जिनपालिय आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

ત્યાર બાદ તે શૈલક યક્ષ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને આગળ વધતો જ રહ્યો અને જ્યા ચપા નગરી હતી ત્યા પહોચ્યો. ત્યા પહોચીને ચપા નગરીના પ્રધાન ઉદ્યાનમા જીનપાલિતને પોતાની પીઠ ઉપરથી નીચે ઉતારી દીધો, ઉતારીને તેણે જીનપાવિતને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સામે ચપા નગરી દેખાય છે ત્યારબાદ યક્ષે જીનપાલિતને જવા માટે પૂછ્યુ અને પૂછીને તે જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો [illegible] ॥

कुर्वन्ति, कृत्वा कालेन=कतिपयदिवसानन्तरेण विगतशोका.=शोकरहिता जाताः। तत. खलु जिनपालितम् अन्यदा कदाचित् सुखासनवरगत=सुखोपविष्टम् अम्बापितरौ एवमवादिष्टाम्-कथ=केन प्रकारेण खलु हे पुत्र ! जिनरक्षितः कालगतः=मृतः ?, ततः खलु स जिनपालिताऽम्बापित्रोः-लवणसमुद्रोत्तार च, कालिकवातसमुत्थान, पोतवहनव्यापत्ति=नौकाभङ्ग च, फलकखण्डासादन=फलकखण्डावलम्बन च, रत्नद्वीपोत्तार च, रत्नद्वीपदेवताग्रहण च, भोगविभूर्ति=भोगसम्पत्ति च, रत्नद्वीपदेवतायाः 'आघायण' आघातन=वधस्थान च, शूलाचितपुरुषदर्शन च, शैलकयक्षारोहण च, रत्नद्वीपदेवतोपसर्ग च जिनरक्षितविपत्ति=जिनरक्षितमरण

लित, और उनके माता पिता ने मित्र ज्ञाति यावत् परिजनो के साथ समस्त अनेक लौकिक मृतक कृत्य किये। (करित्ता कालेण विगय सोया जाया) बाद में जैसे २ समय व्यतीत होता गया वैसे २ ये सब शोक रहित बन गये और फिर बिलकुल शोक शून्य भी हो गये। (तएण जिन पालिय अन्नया कयाइ सुहासणवरगय अम्मा पियरो एव वयासी कहण्ण पुत्ता जिणरक्खिए कालगए) एक दिन की बात है कि जब जिनपालित आनन्द से बैठा हुआ था तब माता पिता ने उस से पूछा पुत्र ! जिनरक्षित किस प्रकार से काल कवलित हुआ ? (तएण से जिनपालिए अम्मापिऊण लवणसमुद्दोत्तार च कालियवायसमुत्थण पोतवहणविवत्ति च फलहखडआसायण च रयणदीवुत्तार च रयणदीवदेवया गिण्हण च भोगविभूइ च रयण दीवदेवयाएआघायण च सूलाइय पुरिसदरिसण सेलगजक्ख आरुहण च रयण-

---

કરી (करित्ता कालेणं विगय सोया-जाया) ત્યારબાદ જેમ જેમ સમય પસાર થતો ગયો તેમ તેમ તેઓ પોતાનુ દુ ખ પણ ભૂલતા ગયા અને છેવટે જીન રક્ષિત વિશેનુ દુ ખ તેઓના હૃદય પટલ ઉપરથી સાવ ભુસાઈ ગયુ

(तएण जिनपालिय अन्नया कयाइ सुहासणवरगय अम्मापियरो एव वयासी कहण्ण पुत्ता जिणरक्खिए कालगए)

ત્યારે એક દિવસે જીનપાલિત આનદપૂર્વક બેઠો હતો ત્યારે માતા પિતાઓએ તેને પૂછયુ કે હે પુત્ર ! જીનરક્ષિત કઈ રીતે મરણ પામ્યો છે ?

(तएण से जिनपालिए अम्मापिऊण लवणसमुद्दोत्तार च कालियवायसमुत्थण पोतवहणविवत्ति च फलहखड आसायग च रयणदीवुत्तार च रयणदीव देवयागिण्हण च भोगविभूइ च रयणदीवदेवयाए आघायण च सूलाइय पुरिसदरिसण सेलगजक्खआरुहग च रयणदीवदेवया उवसग्ग च जिणरक्खिय-

समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ९ ॥

॥ नवमं अज्झयण समत्त ॥

टीका—' तएण जिणपालिए ' इत्यादि । ततः खलु जिनपालितश्चम्पामनु मनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव स्वक गृह यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अम्बापित्रोः समीपे रुदन् यावद् विलपन्=विलाप कुर्वन् जिणरक्षितव्यापत्तिं=जिणरक्षितमरण निवेदयति=कथयति, ततः खलु स जिनपालिताऽम्बापितरौ च मित्रज्ञातियावत्परिजनेन सार्द्धं रुदन्तः सर्वे बहूनि लौकिकानि मतकृत्यानि

' तएण से जिन पलिए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से जिनपालिए चप अणुपविसइ) वह जिन पालित चपा नगरी में अनुप्रविष्ट हुआ । (अणुपविसित्ता जेणेव सए गेहे जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छइ , प्रविष्ट होकर वह जहां अपना घर और उस में भी जहां अपने माता पिता थे वहां गया । (उवागच्छित्ता अम्मापिऊण रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खिय वावत्तिं निवेदेइ, तएण जिणपालिए अम्मापिउरो मित्तणाइ जाव परियणेण सद्धिं रोयमाणा बहूहिं लोइयाइ मयकिच्चाइ करेंति) वह जाकर उस ने रोते हुए यावत् विलाप करते हुए माता पिता से जिनरक्षित की मृत्यु हो जानेके समाचार कहे । इस के बाद रोते हुए उस जिनपा

' तएणं से जिनपालिए ' इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्यारબાદ (से जिनपालिए चप अणुपविसइ) જીન પાલિત ચપા નગરીમા ગયો

(अणुपविसित्ता जेणेव सए गेहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ)

त्या જઇને જ્યા તેનુ ઘર અને તેમાં પણ જ્યા તેના માતાપિતા હતા त्या પહોચ્યો

(उवागच्छित्ता अम्मापिऊण रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्तिं निवेदेइ, तएण जिणपालिए अम्मापिउरो मित्तणाइ जाव परियणेण सद्धिं रोयमाणा बहूहिं लोइयाइ मम किच्चाइ करे ति)

त्या તેણે રડતા यावत् વિલાપ કરતા પોતાના માતાપિતાને જીનરક્ષિતના મૃત્યુના સમાચાર કહ્યા ત્યારપછી જીનપાલિત અને માતાપિતાઓએ રડતા મિત્રજ્ઞાતિ यावत् પરિજનોને લોગા કરીને મરણ પછીની બધી ક્રિયો પૂરી

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतः=चम्पाया समागतः। जिनपालितो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजित एकादशाङ्गवित्=आचाराङ्गादि शास्त्रा ज्ञाननिपुणो जात। मासिक्या सलेखनया काल कृत्वा सौधर्मे कल्पे=प्रथमदेव-लोके 'दो सागरोवमे' द्विसागरोपमक=द्विसागरोपमस्थितिकः देवो जातः। महाविदेहे सेत्स्यति=सिद्धो भविष्यति। एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयु-ष्मन्त! योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा यावत् प्रव्रजित' सन् मानुष्यकान् कामभोगान् परित्यक्तान् नो पुनरपि 'आसायइ' आसादयति=प्राप्नोति नो सेवत इत्यर्थः, स खलु यावद् 'वीईवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=व्यतिक्रमिष्यति ससारस्य पार गमिष्यतीत्यर्थः यथा वा स जिनपालितः। इत्थमत्र दृष्टान्तयोजना—

को-काम सुखो को भोगता हुआ अपने समय को व्यतीत करने लगा। (तेणं कालेण तेण समएण समणे० समोसढे, धम्मं सोच्चा पव्वाइए, एक्कारसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झिहिइ-एवामेव समणाउसो! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुण-रवि आसायइ, सेण जाव वीइवइस्सइ, जहा वा से जिणपालिए। एव खलु जबू! समणे ण भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उसी काल और उसी समय में श्रमण भगवान महावीर चम्पा नगरी में आये। जिन पालित धर्म का उपदेश सुन कर दीक्षित हो गया। ग्यारह अग का धीरे २ वह ज्ञाता भी बन गया। अन्त में एक मास की सलेखना की संलेखना से ६० साठ भक्तो का छेदन कर जब काल किया-तो प्रथम देवलोक मे दो सागरोपम की स्थिति वाला देव में उत्पन्न हुआ। यह महा विदेह में सिद्धी गति को

णुभो भोगवतो सुखेथी पोताने। वणत पसार करवा लाग्ये।

(तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसढे, धम्म सोच्चा पव्वाइए एका-रसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे महाविदेहे सिज्झिहिइ-एवामेव समणाउसो! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायइ, से ण जाव वीइवइस्सइ, जहावा से जिणपालिए! एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ચપાનગરીમા આવ્યા જીનપાલિત તેમનો ઉપદેશ સાભળીને દીક્ષિત થઇ ગયો ધીમે ધીમે તેણે અગિયારે અગોનુ જ્ઞાન મેળવી લીધુ છેવટે એક માસ ની તેણે સલેખના કરી સલેખનાથી ૬૦ સાઠ ભક્તોનુ છેદન કરીને કાળ કર્યો ત્યારે પ્રથમ દેવલોકમા

च, लवणसमुद्रोत्तरण च, चम्पागमन पराकृत्यचम्पानगरी समागमन च, शैलकयक्षापृच्छन=शैलकयक्षस्य जिनपालित प्रति स्वस्थानगमननिवेदन च, एतत्सर्वं वृत्तान्त 'जहाभूय' यथाभूत=यथाजातम्, 'अवितह' अवितथ=सत्यम्, 'असंदिद्ध' असदिग्ध=सदेहरहित परिकथयति। ततः खलु स जिनपालितो यावद् 'अप्पसोए' अल्पशोकः=विगतशोक. यावद् विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादि विषयान् भुञ्जानो विहरति०।

दीवदेवयाउवसग्ग च जिणरक्खियविवत्ति च लवणसमुद्द उत्तरण च-चपागमण च सेलगजक्खआपुच्छण च जहाभूयमवितहमसदिद्ध परिकहेइ) तब जिनपालित ने माता पिता से लवणसमुद्र में उतरने से लेकर अचानक कालिक वायुका उठना नौका का नष्ट होना काष्ठ फलक का मिलना उसकी सहायता से रत्न द्वीप मे उतरना वहा रयणा देवी के द्वारा अपना ग्रहण होना उस के साथ भोग रूप विभूति का भोगना, बाद मे रयणा देवी के वधस्थान का देखना वहा शूलारोपित पुरुष को देखना, शैलक यक्ष की पीठ पर चढना रयणा देवी का उपसर्ग करना, जिन रक्षित का मरण होना अपना लवणसमुद्र का पार करना चंपा नगरी में पीछे आना और शैलकयक्ष का पुछ कर अपने स्थान वापिस चले जाना यहा तक का सब वृत्तान्त जैसा हुआ था ठीक २ विना किसी सदेह के उस ने सुना दिया। (तएण से जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ) इस के बाद शोक रहित बना हुआ वह जिनपालित विपुल शब्दादि विषयों

विवत्तिं च लवणसमुद्द उत्तरण च चपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितहमसदिद्धं परिकहेइ)

ત્યારે જીનપાલિતે માતાપિતાને લવણ સમુદ્રમા યાત્રા કરતી વખતે ઔચિત્તા પવનની અથડામણથી નાવ ડૂબી જવાના અકસ્માતથી માડીને લાકડાની સહાયતાથી રત્નદ્વીપના કિનારા સુધી પહોચવુ રયણા દેવીની લપેટમા ફસાવવુ, તેની સાથે કામ ભોગો ભોગવવા, રયણા દેવીના વધસ્થાનને જોવુ, શૂળી ઉપર લટકતા માણસને જોવુ, સૈલક યક્ષનાં પીઠ ઉપર બેસવુ, રયણા દેવીનો ઉત્પાત કરવો, જીનરક્ષિતનુ મરણ થવુ સકુશળ પોતાની લવણ સમુદ્ર યાત્રા પૂરી કરવી, ચપા નગરીમા આવવુ અને શૈલક યક્ષનુ તેને પૂછીને ફરી રત્નદ્વીપ તરફ રવાના થવું અહીં સુધીની એકે એક વાત તેણે કહી સભળાવી

(तएण से जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ)

ત્યારબાદ નિશ્ચિત થયેલો જીનપાલિત શબ્દ વગેરે વિષયોને ભોગ

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृत=चम्पाया समागतः। जिनपालितो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजित एकादशाङ्गवित्=आचाराङ्गादि शास्त्रा ज्ञाननिपुणो जात। मासिक्या सलेखनया काल कृत्वा सौधर्मे कल्पे=प्रथमदेवलोके 'दो सागरोवमे' द्विसागरोपमक=द्विसागरोपमस्थितिकः देवो जातः। महाविदेहे सेत्स्यति=सिद्धो भविष्यति। एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयुष्मन्त! योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा यावत् प्रव्रजितः सन् मानुष्यकान् कामभोगान् परित्यक्तान् नो पुनरपि 'आसायइ' आसादयति=प्राप्नोति नो सेवत इत्यर्थः, स खलु यावद् 'वीईवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=व्यतिक्रमिष्यति ससारस्य पार गमिष्यतीत्यर्थः यथा वा स जिनपालितः। इत्थमत्र दृष्टान्तयोजना—

को-काम सुखो को भोगता हुआ अपने समय को व्यतीत करने लगा। (तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसढे, धम्मं सोच्चा पव्वाइए, एक्कारसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झिहिइ-एवामेव समणाउसो! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायइ, सेण जाव वीईवइस्सइ, जहा वा से जिणपालिए! एव खलु जबू! समणे ण भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उसी काल और उसी समय में श्रमण भगवान महावीर चम्पा नगरी में आये। जिन पालित धर्म का उपदेश सुन कर दीक्षित हो गया। ग्यारह अग का धीरे २ वह ज्ञाता भी बन गया। अन्त में एक मास की सलेखना की सलेखना से ६० साठ भक्तो का छेदन कर जब काल किया-तो प्रथम देवलोक मे दो सागरोपम की स्थिति वाला देव में उत्पन्न हुआ। यह महा विदेह में सिद्धी गति को

णुभा भोगवतो सुखेथी पोताने। वणत पमार કરવા લાગ્યો।

(तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसढे, धम्म सोच्चा पव्वाइए एक्का रसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे महाविदेहे सिज्झिहिइ-एवामेव समणाउसो! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायइ, से ण जाव वीईवइस्सइ, जहावा से जिणपालिए! एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ચપાનગરીમા આવ્યા જીનપાલિત તેમનો ઉપદેશ સાભળીને દીક્ષિત થઇ ગયો ધીમે ધીમે તેણે અગિયારે અગોનુ જ્ઞાન મેળવી લીધુ છેવટે એક માસની તેણે સલેખના કરી સલેખનાથી ૬૦ સાઠ ભક્તોનુ છેદન કરીને કાળ કર્યો ત્યારે પ્રથમ દેવલોકમા બે સાગરોપમની સ્થિતિવાળા દેવ તરીકે તે ઉત્પન્ન થયો ભવિષ્યમા તે મહા

यथा लाभार्थिनो वणिजौ तथा शिवसुखार्थिनौ जीवौ। यथा समुद्रयात्रा तथा संसारयात्रा यथा रत्नद्वीपदेवता महापापा तथा अविरति रापातसुखा परिणामदुःखा०। यथा - आघातस्थानभय तथा जन्ममरणभयम्। यथा रत्नादेवी चरितानुभवी शूलारोपितपुरुषस्तथा अविरति परिणामबोधक भयम्। यथा देवीहस्तान्निस्तारकः शैलकयक्षस्तथा धर्मोपदेशकोऽत्राविरतिपरिणामजनित

को प्राप्त करेगा। इस तरह हे आयुष्मत श्रमणो! जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अथवा निग्रन्थ श्रमणी जन यावत् प्रव्रजित होता हुआ परित्यक्त मनुष्य भव सबन्धी कामभोगों का पुनः सेवन नहीं करता है वह जिन पालित की तरह इस ससार के पार पहुँचेगा। दृष्टान्त की योजना यहा इस प्रकार से कर लेनी चाहिये जिस प्रकार लाभ के अर्थी वणिक् जन होते हैं उसी प्रकार शिव सुख के अर्थी जीव होते हैं। जिस प्रकार समुद्र यात्रा है उसी प्रकार ससार यात्रा है। समुद्र यात्रा में जैसे पापिनी रयणा देवी का मिलाप हुआ-उसी प्रकार इस ससार यात्रा में आपात सुख दायक और परिणाम में दु'खदायक अविरति का जीवों को समागम हो रहा है। वहाँ जैसे वध्यस्थान का भय जिन पालित एव जिन रक्षित को हुआ, उसी तरह इस ससार यात्रा में भी प्रत्येक जीव को जन्म मरण का भय लगा हुआ है। जिस प्रकार रयणा देवी के चरित का अनुभवी वह शूलारोपित पुरुष हमें वहा दिखाई देता है इसी प्रकार यहा भी अविरति के परिणाम का बोधक भय हमें सतत सचेत करता

વિદેહમા સિદ્ધિ ગતિ મેળવશે આ રીતે હે આયુષ્મત શ્રમણો! જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અથવા નિર્ગ્રંથ શ્રમણીજનો પ્રવ્રજીત થઇને દીક્ષા વખતે ત્યજેલા મનુષ્ય ભવ સબધી કામભોગોનુ ફરી સેવન કરતો નથી તે જીનપાલિતની જેમ આ સસારને પાર થશે આ દૃષ્ટાતને અહીં આ રીતે બેસાડવુ જોઈએ કે જેમ વણિકજનો (વેપારીઓ) લાભને ઈચ્છનારા હોય છે તેમ શિવસુખને ઈચ્છનારા જીવો હોય છે સમુદ્ર યાત્રાની જેમ જ આ સસાર યાત્રા પણ છે સમુદ્ર યાત્રામા જેમ પાપણી રયણા દેવી મળી તેમ આ સસાર યાત્રામા શરૂ આતમા સુખદાયક અને પરિણામમા દુખદાયક અવિરતિનો સમાગમ જીવને થતો રહે છે વધસ્થાનમા જેમ જીનપાલિત અને જીનરક્ષિત ભયત્રસ્ત થયા તેમ આ સસાર યાત્રામા પણ દરેકે દરેક જીવને જન્મ-મરણની બીક રહે છે જેમ રયણા દેવીના ક્રૂર વ્યવહારને અનુભવનારો શૂળી ઉપર લટકતો માણસ તેમણે જોયો તેમ આ સસારમા પણ અવિરતિના પરિણામનો બોધક ભય આપણને સતત સાવધ કરતો રહે છે જેમ દેવીની લપેટમાથી મુક્ત કરનાર શૈલક યક્ષને

दुःख निस्तारको गुरुः। यथा देवीमोहितर्जिनरक्षितस्तथा-अविरतिमोहितमतिर्मुनिः। यथा शैलकरूपाश्वपृष्ठच्युतो जिनरक्षितस्तथा गुरूपदिष्टज्ञानादिपञ्चाचार भ्रष्टो मुनि । यथा रत्नादेव्या तीक्ष्णकरवालेन गगने खण्डशः कृत तदङ्ग परितः प्रक्षिप्त नानाविधमकरादि श्वापदसकुले समुद्रे पतति तथा-अविरत्या विपमपरिणामेन नरकावासे खण्डशः कृत शरीरमनुभवन्नपौ जन्मजरामरणाद्यनन्तदुःखसमाकुले ससारे निपतति। यथा देवी कृतोपसर्गैरक्षुब्धो जिनपालितः स्वस्थान जीवित-

रहता है। जिस प्रकार देवी के हाथ से छुडाने वाला वहां शैलक यक्ष कहा गया है इसी प्रकार यहा भी धर्म के उपदेशक एव अविरति परिणाम जनित दुःखसे निस्तारक ये गुरुजन प्रकट किये गये हैं। जिस प्रकार जिन रक्षित देवी के द्वारा मोहित किया गया हमें कहा गया है उसी प्रकार यहा भी अविरति के द्वारा मोहित मुनिजन समझाये गये हैं। जिस प्रकार शैलक रूप अश्व की पीठ पर से जिन रक्षित च्युत हुआ प्रकट किया गया है उसी प्रकार गुरूपदिष्ट ज्ञानादिक पांच आचार से भ्रष्ट बना हुआ मुनि यहा हमे समझाया गया है। जिस प्रकार रत्ना देवी की तलवार से खड २ किये गये जिन रक्षित के अग उपाग इधर उधर प्रक्षिप्त होकर नाना विध मकरादिश्वापद से सकुल हुए समुद्र में गिरे हैं उसी प्रकार अविरति के विपम परिणाम से नरकावास में खड २ किये गये शरीरका अनुभव करता हुआ भी यह जीव जन्म, जरा, और मरण, आदि अनन्त दु.खो से व्याप्त हुए ससार में पतित होता है। जिस प्रकार रयणा देवी कृत उपसर्गों से अक्षुब्ध

આપણે જોયેા તેમ અહીં પણ ધર્મના ઉપદેશક અને અવિરતિ પરિણામ જનિત દુ ખમાથી મુક્ત કરનારા ગુરૂજનેા પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે જેમ દેવીના મેાહવાશની લપેટમા પડેલેા જીનરક્ષિત છે તેમજ અહીં પણ અવિરતિ વડે મેાહિત થયેલા મુનિઓ જોવામા આવે છે જેમ શૈલક યક્ષ રૂપી ઘેાડાની પીઠ ઉપરથી ખસી પડેલા જીતરક્ષિતનુ વર્ણન ઉપર પ્રગટ કરવામા આવ્યુ છે તેમજ આ સ સારમા પણ શુરૂપદિષ્ટ જ્ઞાન વગેરે પાચ આચારેાથી ભ્રષ્ટ થયેલેા મુનિ સમજવેા જોઈએ જેમ રત્નાદેવીની તલવારથી કકડા થયેલા જીનરક્ષિતના અ ગેા ઉપાગેા ઘણી જાતના મગર વગેરે જીવેાથી વ્યાપ્ત સમુદ્રમા આમતેમ ફેકવામા આવ્યા છે તેમ જ અવિરતિના વિષમ પરિણામથી નરકવાસમા શરીરના કકડાઓ કરવામા આવે છે છતાએ તે દુ ખને અનુભવતેા આ જીવ જન્મ, જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે અનત દુ ખેાથી વ્યાપ્ત થયેલા આ સ સારમા ફરી આવી પડે છે જેમ રયણા દેવીના ઉપસર્ગેાથી અક્ષુબ્ધ થઈને જીનપાલિત પેાતાને ઘેર સકુશળ

यथा लाभार्थिनो वणिजो तथा शिवसुखार्थिनो जीवाः। यथा समुद्रयात्रा तथा संसारयात्रा यथा रत्नद्वीपदेवता महापापा तथा अविरति रापातसुखा परिणामदुःखा०। यथा - आघातस्थानभय तथा जन्ममरणभयम्। यथा रत्नादेवी चरितानुभवी शूलारोपितपुरुषस्तथा अविरति परिणामबोधक भयम्। यथा देवीहस्तान्निस्तारकः शैलकयक्षस्तथा धर्मोपदेशकोऽत्राविरतिपरिणामजनित

को प्राप्त करेगा। इस तरह हे आयुष्मत श्रमणो! जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अथवा निग्रन्थ श्रमणी जन यावत् प्रव्रजित होता हुआ परित्यक्त मनुष्य भव सबन्धी कामभोगों का पुनः सेवन नहीं करता है वह जिन पालित की तरह इस ससार के पार पहुँचेगा। दृष्टान्त की योजना यहा इस प्रकार से कर लेनी चाहिये जिस प्रकार लाभ के अर्थी वणिक् जन होते हैं उसी प्रकार शिव सुख के अर्थी जीव होते हैं। जिस प्रकार समुद्र यात्रा है उसी प्रकार ससार यात्रा है। समुद्र यात्रा में जैसे पापिनी रयणा देवी का मिलाप हुआ-उसी प्रकार इस ससार यात्रा में आपात सुख दायक और परिणाम मे दुःखदायक अविरति का जीवों को समागम हो रहा है। वहाँ जैसे वध्यस्थान का भय जिन पालित एव जिन रक्षित को हुआ, उसी तरह इस ससार यात्रा में भी प्रत्येक जीव को जन्म मरण का भय लगा हुआ है। जिस प्रकार रयणा देवी के चरित का अनुभवी वह शूलारोपित पुरुष हमे यहा दिखाई देता है इसी प्रकार यहां भी अविरति के परिणाम का बोधक भय हमें सतत सचेत करता

વિદેહમા સિદ્ધિ ગતિ મેળવશે આ રીતે હે આયુષ્મત શ્રમણો! જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અથવા નિર્ગ્રંથ શ્રમણીજનો પ્રવ્રજીત થઇને દીક્ષા વખતે ત્યજેલા મનુષ્ય ભવ સબધી કામભોગોનુ ફરી સેવન કરતો નથી તે જીનપાલિતની જેમ આ સસારને પાર થશે આ દૃષ્ટાતને અહી આ રીતે બેસાડવુ જોઈએ કે જેમ વણિકજનો (વેપારીઓ) લાભને ઈચ્છનારા હોય છે તેમ શિવસુખને ઈચ્છનારા જીવો હોય છે સમુદ્ર યાત્રાની જેમ જ આ સસાર યાત્રા પણ છે સમુદ્ર યાત્રામા જેમ પાપણી રયણા દેવી મળી તેમ આ સસાર યાત્રામા શરૂ આતમા સુખદાયક અને પરિણામમા દુખદાયક અવિરતિનો સમાગમ જીવને થતો રહે છે વધસ્થાનમા જેમ જીનપાલિત અને જીનરક્ષિત ભયત્રસ્ત થયા તેમ આ સસાર યાત્રામા પણ દરેકે દરેક જીવને જન્મ-મરણની બીક રહે છે જેમ રયણા દેવીના ક્રૂર વ્યવહારને અનુભવનારો શૂળી ઉપર લટકતો માણસ તેમણે જોયો તેમ આ સસારમા પણ અવિરતિના પરિણામનો બોધક ભય આપણને સતત સાવધ કરતો રહે છે જેમ દેવીની લપેટમાથી મુક્ત કરનાર શૈલક યક્ષને

अथ दशममध्ययनम् प्रारभ्यते ।

गत नवमम-ययनम् , साम्प्रत दशममारभ्यते, तस्य पूर्वेण सहाय सम्बन्धः-पूर्वमविरति-विरतिमतोर्हानिलाभो प्रोक्तौ, अत्रतु प्रमादाप्रमादवतोर्गुणहानि-तद् वृद्धिरूपावनर्थार्थौवर्णयति, तत्र जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिन पृच्छति-'जइण भते' इत्यादि ।

मूलम्-जइण भते ! समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठ पण्णत्ते दसमस्स के अट्ठे० ?, एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे नगरे सामी समोसढे गोयमसामी एव वयासी-कहण भते ! जीवा वड्ढति वा हायंति वा ?, गो० ! से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिवयाचदे पुण्णिमा-चंद पणिहाय हीणो वण्णेण हीणे सोम्मयए हीणे निद्धयाए

दशम अध्ययन प्रारभ ।

नौवा अध्ययन समाप्त हो चुका-अब दशमा अध्ययन प्रारभ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार सबन्ध है-पहिले अविरति वाले को हानि एव विरति वाले को लाभ की प्राप्ति होना कहा गया है अब इस अध्ययन में यह कहते हैं कि जो प्रमादि होता है उसके गुणोंके हानि होती है, और जो अप्रमादी होता है उस के गुणों की वृद्धि होती हे । इस तरह गुण हानि और तद् वृद्धि रूप अर्थ अनर्थ का वर्णन सूत्रकार इस अ ययन में कर रहे है । जबू स्वामी इसी बात को श्री सुधर्मा स्वामी से पूछ रहे हैं ।

દશમુ અધ્યયન પ્રારભ

નવમુ અધ્યયન પુરૂ થયુ છે અને હવે દશમુ અ યયન પ્રારભ કરીએ છીએ દશમા અધ્યયનનો એના પહેલાના અધ્યયન સાથે આ પ્રમાણેનો સબધ છે—પહેલાના અધ્યયનમા અવિરતિવાળાને હાનિ (નુકસાન) અને વિરતિવાળાને લાભની પ્રાપ્તિ થાય છે તેમ દર્શાવવામા આવ્યુ છે હવે આ અધ્યયનમા એ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવશે કે જે પ્રમાદી હોય છે તેના ગુણોને હાનિ પહોચે છે અને જે અપ્રમાદિ હોય છે તેના ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે આ રીને સૂત્રકાર આ અધ્યયનમા ગુણોની હાની અને ગુણોની વૃદ્ધિરૂપ અર્થ અનર્થનુ વર્ણન કરી રહ્યા છે જબૂ સ્વામી સુધર્માસ્વામીને એ જ વાત પૂછી રહ્યા છે—

सुखं चेमाप्तः सन् पश्चान्मोक्षपदगाम्यभवत्, तथा-अविरति कृतोपसर्गैरक्षुब्धः सुसंयमी-मुनिर्मोक्षस्थान शिवसुख च माप्स्यतीति ।

एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाता यनस्य अयमर्थः=भावः प्रज्ञप्त.=प्ररूपित ।'त्तिबेमि' इतिब्रवीमि पूर्ववत् ।सू० १९॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछ
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-
त्रतिविरचिताया ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतव-
र्षिण्याख्याया व्याख्याया नवममध्ययन सपूर्णम् ॥ ९ ॥

बनी जिन पालित अपने स्थान पर सकुशल लौट आया और वहा उस ने अपने जीवन का सुख भोगा-पश्चात् वही मोक्षपद गामी भी हुआ उसी तरह अविरति कृत उपसर्गों से अक्षुब्ध बना हुआ सुसयमी मुनि मोक्ष स्थान को प्राप्त कर शिव सुख को भोक्ता बनेगा । इस प्रकार हे जंबू ! श्रमण भगवान् महावीर ने इस नवम ज्ञाताध्ययन का यह-पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है । उसी के अनुसार यह मैंने तुम्हें समझाया है । सूत्र ॥ १० ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत " ज्ञाता-
धर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का नववा
अध्ययन समाप्त ॥ ९ ॥

પાછો આવ્યો, ત્યા તેણે સુખેથી પોતાના દિવસો પસાર કર્યા અને છેવટે મોક્ષ મેળવ્યો તેમજ અવિરતિકૃત ઉપસર્ગોથી નિર્ભીક થયેલો સુસયમી મુનિ મોક્ષ સ્થાનને મેળવીને શિવસુખનો ઉપભોગ કરશે આ રીતે હે જબૂ ! શ્રમણ-ભગવાન મહાવીરે નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તે મુજબ જ મે તને બધી વિગત સમજાવી છે ॥ સૂ૧૦ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાનુ નવમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૯ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथितः, स मया श्रुतः, किन्तु दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः=को भावः ? प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी माह—एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे 'सामी' स्वामी=श्रीमहावीरस्वामी 'समोसढे समवसृतः=समागतः, तदा गौतमस्वामी एवमवादीत्—कथं खलु=केन प्रकारेण हे भदन्त ! जीवाः 'वड्ढंति वा' वर्द्धन्ते=वृद्धिमाप्नुवन्ति वा, 'हायंति वा' हीयन्ते=हानिमाप्नुवन्ति वा ? जीवा द्रव्यतोऽनन्तत्वेन, प्रदेशतश्चापि प्रत्येकमसङ्ख्यात प्रदेशत्वेनावस्थितपरिमाणत्वाद् वृद्धिहानी प्राप्तुं नार्हन्ति, किन्तु क्षान्त्यादिगुणानां वृद्ध्या वर्द्धन्ते, हान्या तु हीयन्त इति० ।

'जइणं भंते ! समणेणं' इत्यादि ।

टीकार्थ-(जइणं भंते) यदि हे भदंत ! (समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त रूप से यह अर्थ प्ररूपित किया है तो (दसमस्स के अट्ठे)० ? दशवें ज्ञाताध्ययन का उन्हों ने क्या भाव अर्थ कहा है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मास्वामी उन्हें समझाने के अभिप्राय से कहते है कि (एवं खलु जंबू !) हे जंबू सुनों तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे सामी समोसढे-गोयमसामी एवं वयासी) उस काल मे और उस समय में राजगृह नाम के नगर मे श्री भगवान् महावीर स्वामी पधारे उस समय गौतम स्वामी ने उन से ऐसा पूछा (कहणं भंते ! जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा ? गो० से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिवया

"जइणं भंते ! समणेणं" इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(जइणं भंते !) જો હે ભદન્ત ! (समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો (दसमस्स के अट्ठे ?) દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો તેઓએ શો ભાવ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્માસ્વામી તેમને બધી વાતની સ્પષ્ટતા કરવાના હેતુથી કહે છે કે (एवं खलु जंबू !) હે જંબૂ સાભળો તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે (तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे सामी समोसढे गोयमसामी एवं वयासी) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગરમા શ્રી ભગવાન મહાવીર સ્વામીની પધરામણી થઇ તે સમયે ગૌતમ સ્વામીએ તેમને પ્રશ્ન કર્યો કે—

(कहणं भंते ! जीवा वड्ढंति, वा हायंतिवा ? गो० से जहानामए बहुल-

हीणे कंतीए एवं दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेण तयाणतर च णं चीयाचंदे पाडिवय चंद पणिहाय हीणतराय वण्णेण जाव मंडलेण तयाणतरं च ण तइआचंदे विइयाचंद पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मडलेणं, एवं खलु एएण कमेण परिहायमाणे२ जाव अमावस्साचदे चाउद्दसं-चंद पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मडलेण, एवामेव सम णाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खतीए एव मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेण मद्दवेणं लाघवेण सच्चेण तवेण चियाए अकिचयणयाए वभचेरवासेणं तयाणंतर च ण हीणतराए खतीए जाव हीणतराए बभचेर वासेणं, एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे२ णट्ठे खतीए जाव णट्ठे वभचेरवासेणं, जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचदे अमावासाए चद पणिहाय अहिए वण्णेण जाव अहिए मंडलेणं तयाणतर च णं विइयाचदे पडिवयाचद पणिहाय अहियतराए वण्णेणं जाव अहियतराए मडलेणं एव खलु एएण कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पुण्णिमाचदे चाउद्दसि चद पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेण जाव पडिपुण्णे मडलेण एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे अहिए खतीए जाव बभचेर वासेण, तयाणतर च णं अहियतराए खतीए जाव बभचेरवासेण, एव खलु एएण कमेणं परिवड्ढेमाणे२ जाव पडिपुन्ने बभचेरवासेण, एव खलु जीवा वड्ढति वा हायति वा, एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० १ ॥

॥ दसम णायज्झयण समत्त ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथितः, स मया श्रुतः, किन्तु दशमस्य ज्ञाता ययनस्य कोऽर्थः=को भावः ? प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी प्राह—एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे 'सामी' स्वामी=श्रीमहावीरस्वामी 'समोसढे समवसृतः=समागतः, तदा गौतमस्वामी एवमवादीत्—कथं खलु=केन प्रकारेण हे भदन्त ! जीवाः 'वड्ढंति वा' वर्द्धन्ते=वृद्धिमाप्नुवन्ति वा, 'हायंति वा' हीयन्ते=हानिं प्राप्नुवन्ति वा ? जीवा द्रव्यतोऽनन्तत्वेन, प्रदेशतश्चापि प्रत्येकमसङ्ख्यात प्रदेशत्वेनावस्थितपरिमाणत्वाद् वृद्धिहानी प्राप्तुं नार्हन्ति, किन्तु क्षान्त्यादिगुणानां वृद्ध्या वर्द्धन्ते, हान्या तु हीयन्त इति० ।

'जइणं भंते ! समणेणं' इत्यादि ।

टीकार्थ-(जइणं भंते) यदि हे भदंत ! (समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त रूप से यह अर्थ प्ररूपित किया है तो (दसमस्स के अट्ठे)० ? दशवें ज्ञाताध्ययन का उन्हों ने क्या भाव अर्थ कहा है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मास्वामी उन्हें समझाने के अभिप्राय से कहते हैं कि (एवं खलु जंबू !) हे जंबू सुनों तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है- (तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे सामी समोसढे-गोयमसामी एवं वयासी) उस काल मे और उस समय में राजगृह नाम के नगर में श्री भगवान् महावीर स्वामी पधारे उस समय गौतम स्वामी ने उन से ऐसा पूछा (कहणं भंते ! जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा ? गो० से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिवया

"जइणं भंते ! समणेणं" इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइणं भंते !) જો હે ભદન્ત ! (समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો (दसमस्स के अट्ठे ?) દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો તેઓએ શો ભાવ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્માસ્વામી તેમને બધી વાતની સ્પષ્ટતા કરવાના હેતુથી કહે છે કે (एवं खलु जंबू !) હે જંબૂ સાંભળો તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે (तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे सामी समोसढे गोयमसामी एवं वयासी) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગરમાં શ્રી ભગવાન મહાવીર સ્વામીની પધરામણી થઇ તે સમયે ગૌતમ સ્વામીએ તેમને પ્રશ્ન કર્યો કે—

(कहणं भंते ! जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा ? गो० से जहानामए बहुल-

अत्रार्थे भगवान् पूर्वोक्तनिदृष्टान्तमाह - हे गौतम ! 'से जहानामए' तद्यथा-नामक्रम्-यथा च बहुलपक्षस्य = कृष्णपक्षस्य 'पाडिवयाचंदे' प्रतिपच्चन्द्रः पूर्णिमाचन्द्र मणिधाय-अपेक्ष्य, 'मणिधाये' ति 'अपेक्ष्ये' त्यर्थकमव्ययम् ' पूर्णिमाचन्द्रापेक्ष्येत्यर्थः हीन' = न्यून', वर्णेन=शुक्लतारूपेण, हीनः

चंदे पुण्णिमा चंद पणिहाय हीणो वण्णेण हीणे सोम्मयाए हीणे कंतीए एव दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेण) हे भदंत ! जीव किस प्रकार से बढते हैं और किस प्रकार से घटते हैं ? जीव द्रव्य की अपेक्षा अनंत होने से और प्रदेश की अपेक्षा प्रत्येक जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेश वाला होने से सदा अवस्थित परिणाम वाला कहा गया है-अतः इस स्थिति में न तो उस की वृद्धि हो सकती है और न उस की हानी ही। किन्तु यहा जो इस प्रकार का प्रश्न किया गया है उस का मत इस प्रकार है, कि जब आत्मा में क्षात्यादि गुणो की वृद्धि हो जाती है तो उन की वृद्धि से " जीव बढ़ता है " ऐसा मान लिया जाता है और जब इन्ही आत्मिक गुणों की वृद्धि आत्मा मे नही होती है-किन्तु हानि रहती है तो इस से जीव में हानि हो रही है ऐसा मान लिया जाता है। इसी अपेक्षा को लेकर यह प्रश्न किया गया है। अब भगवान् हानि को स्पष्ट करने के लिये पहिले उसे ही दृष्टान्त द्वारा समझाते है-वे कहते हैं-हे गौतम ! जैसे

पक्खस्स पाडिवया चंदे पुण्णिमाचंद पाणिहाय हीणो वण्णेण हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एव दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेण)

હે ભદંત ! જીવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઓછા થાય છે ? જીવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનંત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક જીવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હમેશા અવસ્થિત પરિણામવાળો કહેવામા આવ્યો છે એથી આવી સ્થિતિમા તેની વૃદ્ધિ થઈ શકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે નહિ પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે તેનો મતલબ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે આત્મામા ક્ષાતિ વગેરે ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી " જીવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામા આવે છે અને જ્યારે એજ આત્મિક ગુણોની વૃદ્ધિ આત્મામા થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માડે છે ત્યારે " જીવમા હાનિ થઇ રહી છે " એવુ માનવામા આવે છે આ અપેક્ષાથી આ પ્રશ્ન પૂછવામા આવ્યો છે ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સૌ પહેલા દૃષ્ટાત વડે સમજાવતા કહે છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કૃષ્ણપક્ષની એકમનો ચદ્ર

'सोम्मयाए' सौम्यतया=नेत्राह्लादकतया, हीनः निद्धयाए' स्निग्धतया=स्नेहोत्पादकतया, हीन =न्यूनः 'कंतीए' कान्त्या-क्रमनीयतया। एवम्=अनेन प्रकारेण हीनशब्दः सर्वत्र बोध्यः, यथा-हीनो दीप्त्या=प्रकाशेन, हीन 'जुईए' द्युत्या=चाकचिक्येन, हीनः छायया= शोभया, हीनः प्रभया=ज्योतिषा, हीन 'ओयाए' ओजसा=दाहशमनरूपेण, हीनः लेश्यया=किरणरूपया, हीनो=न्यूनो मण्डलेन=वृत्ताऽऽकृतया, पूर्णिमाचन्द्राऽपेक्षया, प्रतिपच्चन्द्रः सर्वथा न्यूनो भवतीत्यर्थः। तदनन्तर च खलु द्वितीयाचन्द्र' प्रतिपद्=प्रतिपत्सम्बन्धिन चन्द्रं 'पणिहाय' प्रणिधाय=अपेक्ष्य हीनतरो=न्यूनतरो वर्णेन यावद् मण्डलेन भवति०। तदनन्तर च खलु तृतीयाचन्द्रो द्वितीयाचन्द्र पणिधाय हीनतरो वर्णेन यावद्

कृष्णपक्ष की प्रतिपदा का चन्द्रमा पूर्णिमा के चन्द्रमाकी अपेक्षा शुक्लता रूप वर्ण से हीन होता है, सौम्यता-नेत्राह्लादकता-से हीन होता है, स्निग्धता-स्नेहोत्पादकता-से हीन-न्यून-होता है, कातिक्रमनीयता से हीन होता है, इसी तरह दीप्ति से,-द्युति से-(चमक से)-छाया-शोभा से) प्रभा से-(ज्योति से) दाहशमन रूप ओजस से, किरण रूप लेश्या से, एव वृत्ताकाररूप अपने परिमडलसे हीन रहता है-(तयाणतर च ण बीयाचदे पाडिवय चद पणिहाय हीणतराय वण्णेणं जाव मडलेण-तयाणतर चण तइआचदे बिइया चद पणिहाय हीणतराए वण्णेण जाव मडले ण एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे २ जाव अमावस्सा चदे चाउद्दस पणिहाय नट्ठे वण्णेण जाव नट्ठे मडलेण) इसके बाद कृष्ण पक्ष के प्रतिपदा के चन्द्रमा की अपेक्षा द्वितीया चन्द्रमा वर्ण से लेकर यावत् परिमडल तक और अधिक न्यून बन जाता है-इसके बाद द्वितीया के चन्द्रमा की अपेक्षा तृतीया का चन्द्रमा वर्ण से लेकर परि-

---

પૂનમના ચદ્રની અપેક્ષા શુકલતા રૂપ વર્ણથી હીન હોય છે સૌમ્યતા-એટલે કે નેત્ર લ્હાદકતાના ગુણથી હીન હોય છે, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-થી હીન-ન્યૂન-હોય છે, કાતિક્રમનીયતા-થી હીન હોય છે, આ રીતે દીપ્તિથી-દ્યુતિથી-(પ્રકારાથી), છાયા (શોભા) પ્રભાથી (જ્યોતિથી) દાહશમનરૂ૫ ઓજથી કિરણ રૂપ લેશ્યાથી અને વૃત્તાકાર (ગોળાકાર) રૂપ પોતના પરિમડળથી હીન રહે છે

(तयाणतरच ण बीयाचदे पाडिवय चद पणिहाय हीणतराय वण्णे ण जाव मडले ण तयाणतर च ण तइआचदे बिइयाचद पणिहाय हीणतराए वण्णेण जाव मडलेण एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे२ जाव अमावस्सा चदे चाउद्दस पणिहाय नट्ठे वण्णेण जाव नट्ठे मडलेण)

ત્યાર પછી કૃષ્ણપક્ષની એકમના ચન્દ્ર કરતા બીજનો ચન્દ્ર વર્ણ પરિમડળ વગેરે બધી વિશેષતાઓમા વધારે ન્યૂન થઈ પડે છે એ પછી બીજના ચન્દ્ર

अत्रार्थे भगवान् पूर्वदृष्टान्तमाह - हे गौतम ! ' से जहानामए ' तद्यथा-नामकम्-यथा च बहुलपक्षस्य = कृष्णपक्षस्य ' पाडिवयाचंदे ' प्रतिपच्चन्द्रः पूर्णिमाचन्द्र प्रणिधाय-अपेक्ष्य, ' पणिधाये ' ति ' अपेक्ष्ये ' त्यर्थकमव्ययम् ' पूर्णिमाचन्द्रापेक्ष्येत्यर्थः हीन. = न्यूनः, वर्णेन=शुक्लतारूपेण, हीनः

चंदे पुण्णिमा चंद पणिहाय हीणो वण्णेण हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एव दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेण) हे भदंत ! जीव किस प्रकार से बढते हैं और किस प्रकार से घटते हैं ? जीव द्रव्य की अपेक्षा अनंत होने से और प्रदेश की अपेक्षा प्रत्येक जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेश वाला होने से सदा अवस्थित परिणाम वाला कहा गया है-अतः इस स्थिति में न तो उस की वृद्धि हो सकती है और न उस की हानी ही। किन्तु यहा जो इस प्रकार का प्रश्न किया गया है उस का मत इस प्रकार है, कि जब आत्मा में क्षात्यादि गुणो की वृद्धि हो जाती है तो उन की वृद्धि से " जीव बढ़ता है " ऐसा मान लिया जाता है और जब इन्ही आत्मिक गुणों की वृद्धि आत्मा मे नही होती है-किन्तु हानि रहती है तो इस से जीव में हानि हो रही है ऐसा मान लिया जाता है। इसी अपेक्षा को लेकर यह प्रश्न किया गया है। अब भगवान हानि को स्पष्ट करने के लिये पहिले उसे ही दृष्टान्त द्वारा समझाते है-वे कहते हैं-हे गौतम ! जैसे

पक्खस्स पाडिवया चंदे पुण्णिमाचंद पाणिहाय हीणो वण्णेण हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एव दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेण)

હે ભદંત ! જીવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઓછા થાય છે ? જીવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનંત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક જીવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હમેશા અવસ્થિત પરિણામવાળો કહેવામા આવ્યો છે એથી આવી સ્થિતિમા તેની વૃદ્ધિ થઈ શકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે નહિ પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે તેનો મતલબ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે આત્મામા ક્ષાતિ વગેરે ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી " જીવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામા આવે છે અને જ્યારે એજ આત્મિક ગુણોની વૃદ્ધિ આત્મામા થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માડે છે ત્યારે " જીવમા હાનિ થઇ રહી છે " એવુ માનવામા આવે છે આ અપેક્ષાથી આ પ્રશ્ન પૂછવામા આવ્યો છે ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સૌ પહેલા દૃષ્ટાત વડે સમજાવતા કહે છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કૃષ્ણપક્ષની એકમનો ચદ્ર

'सोम्मयाए' सौम्यतया=नेत्राह्लादकतया, हीनः निद्धयाए' स्निग्धतया=स्नेहोत्पादकतया, हीन =न्यूनः 'कतीए' कान्त्या-क्रमनीयतया। एवम्=अनेन प्रकारेण हीनशब्दः सर्वत्र बोध्यः, यथा-हीनो दीप्त्या=प्रकाशेन, हीन 'जुईए' द्युत्या=चाकचिक्येन, हीनः छायया= शोभया, हीन. प्रभया=ज्योतिषा, हीन 'ओयाए' ओजसा=दाहशमनरूपेण, हीनः लेश्यया=किरणरूपया, हीनो=न्यूनो मण्डलेन=वृत्ताऽऽकृतया, पूर्णिमाचन्द्राऽपेक्षया, प्रतिपच्चन्द्रः सर्वथा न्यूनो भवतीत्यर्थः। तदनन्तर च खलु द्वितीयाचन्द्र' प्रतिपद=प्रतिपत्सम्बन्धिन चन्द्रं 'पणिहाय' प्रणिधाय=अपेक्ष्य हीनतरो=न्यूनतरो वर्णेन यावद् मण्डलेन भवति०। तदनन्तर च खलु तृतीयाचन्द्रो द्वितीयाचन्द्र पणिधाय हीनतरो वर्णेन यावद्

कृष्णपक्ष की प्रतिपदा का चन्द्रमा पूर्णिमा के चन्द्रमाकी अपेक्षा शुक्लता रूप वर्ण से हीन होता है, सौम्यता-नेत्राह्लादकता-से हीन होता है, स्निग्धता-स्नेहोत्पादकता-से हीन-न्यून-होता है, कातिक्रमनीयता से हीन होता है, इसी तरह दीप्ति से,-द्युति से-(चमक से)-छाया-शोभा से) प्रभा से-(ज्योति से) दाहशमन रूप ओजस से, किरण रूप लेश्या से, एव वृत्ताकाररूप अपने परिमडलसे हीन रहता है-(तयाणतर च ण बीयाचदे पाडिवय चद पणिहाय हीणतराय वण्णेण जाव मडलेण-तयाणतर चण तइआचदे बिइया चद पणिहाय हीणतराए वण्णेण जाव मडले ण एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे २ जाव अमावस्सा चदे चाउद्दस पणिहाय नट्ठे वण्णेण जाव नट्ठे मडलेण) इसके बाद कृष्ण पक्ष के प्रतिपदा के चन्द्रमा की अपेक्षा द्वितीया चन्द्रमा वर्ण से लेकर यावत् परिमडल तक और अधिक न्यून बन जाता है-इसके बाद द्वितीया के चन्द्रमा की अपेक्षा तृतीया का चन्द्रमा वर्ण से लेकर परि-

પૂનમના ચદ્રની અપેક્ષા શુકલતા રૂપ વર્ણથી હીન હોય છે સૌમ્યતા-એટલે કે નેત્ર લ્હાદકતાના ગુણથી હીન હોય છે, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-થી હીન-ન્યૂન-હોય છે, કાતિક્રમનીયતા-થી હીન હોય છે, આ રીતે દીપ્તિથી-દ્યુતિથી-(પ્રકારાથી), છાયા (શોભા) પ્રભાથી (જ્યોતિથી) દાહશમનરૂપ ઓજથી કિરણ રૂપ લેશ્યાથી અને વૃત્તાકાર (ગોળાકાર) રૂપ પોતના પરિમડળથી હીન રહે છે

(तयाणतरच ण बीयाचदे पाडिवय चद पणिहाय हीणतराय वण्णे णं जाव मडले ण तयाणतर च ण तइआचदे बिइयाचद पणिहाय हीणतराए वण्णेण जाव मडलेण एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे२ जाव अमावस्सा चदे चाउद्दसं पणिहाय नट्ठे वण्णेण जाव नट्ठे मडलेण)

ત્યાર પછી કૃષ્ણપક્ષની એકમના ચન્દ્ર કરતા બીજનો ચન્દ્ર વર્ણ પરિમડળ વગેરે બધી વિશેષતાઓમા વધારે ન્યૂન થઈ પડે છે એ પછી બીજના ચન્દ્ર

अत्रार्थे भगवान् पूर्वज्ञानिदृष्टान्तमाह - हे गौतम ! ' से जहानामए ' तद्यथा-नामक्रम्-यथा च बहुलपक्षस्य = कृष्णपक्षस्य ' पाडिवयाचंदे ' प्रतिपच्चन्द्रः पूर्णिमाचन्द्र मणिधाय-अपेक्ष्य, ' मणिधाये ' ति ' अपेक्ष्ये ' त्यर्थकमव्ययम् ' पूर्णिमाचन्द्रापेक्ष्येत्यर्थः हीन. = न्यूनः, वर्णेन=शुक्लतारूपेण, हीनः

चंदे पुण्णिमा चंद पणिहाय हीणो वण्णेण हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कतीए एव दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेणं) हे भदत ! जीव किस प्रकार से बढते है और किस प्रकार से घटते हैं ? जीव द्रव्य की अपेक्षा अनत होने से और प्रदेश की अपेक्षा प्रत्येक जीव द्रव्य असख्यात प्रदेश वाला होने से सदा अवस्थित परिणाम वाला कहा गया है-अतः इस स्थिति में न तो उस की वृद्धि हो सकती है और न उस की हानी ही। किन्तु यहा जो इस प्रकार का प्रश्न किया गया है उस का मत इस प्रकार है, कि जब आत्मा में क्षात्यादि गुणो की वृद्धि हो जाती है तो उन की वृद्धि से " जीव बढ़ता है " ऐसा मान लिया जाता है और जब इन्ही आत्मिक गुणों की वृद्धि आत्मा मे नही होती है-किन्तु हानि रहती है तो इस से जीव में हानि हो रही है ऐसा मान लिया जाता है। इसी अपेक्षा को लेकर यह प्रश्न किया गया है। अब भगवान् हानि को स्पष्ट करने के लिये पहिले उसे ही दृष्टान्त द्वारा समझाते हैं-वे कहते हैं-हे गौतम ! जैसे

पक्खस्स पाडिवया चंदे पुण्णिमाचंद पाणिहाय हीणो वण्णेण हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कतीए एव दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मडलेणं)

હે ભદત ! જીવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઓછા થાય છે ? જીવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક જીવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હમેશા અવસ્થિત પરિણામવાળો કહેવામા આવ્યો છે એથી આવી સ્થિતિમા તેની વૃદ્ધિ થઈ શકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે નહિ પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે તેનો મતલબ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે આત્મામા ક્ષાતિ વગેરે ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી " જીવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામા આવે છે અને જ્યારે એ જ આત્મિક ગુણોની વૃદ્ધિ આત્મામા થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માડે છે ત્યારે " જીવમા હાનિ થઇ રહી છે " એવુ માનવામા આવે છે આ અપેક્ષાથી આ પ્રશ્ન પૂછવામા આવ્યો છે ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સૌ પહેલા દૃષ્ટાત વડે સમજાવતા કહે છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કૃષ્ણપક્ષની એકમનો ચદ્ર

द्वादशविधेन ' तियाए ' त्यागेन=मुनिवैयावृत्यकरणलक्षणेन ' अकिंचणयाए ' अकिञ्चनतया निष्परिग्रहतया बभचेरवासेण ' ब्रह्मचर्यवासेन-ब्रह्मणि=कामसेवन परित्यागरूपे चरण=विचरण चर्य ब्रह्मचर्यं, तत्र वासस्तेन नववाटिका विशुद्धमैथुन विरमणरूपेण ' हीनः ' इति सर्वत्र सम्बन्धः क्षान्त्यादिदशविधश्रमण धर्मरहितो भवती त्यर्थ ।

तदनन्तर च खलु स निर्ग्रन्थो वा० हीनतरः क्षान्त्या यावत् हीनतो ब्रह्म चर्यवासेन । एव खलु एतेन क्रमेण=क्रमश परिहीयमानः २ सन् नष्टः=सर्वथा रहितः क्षान्त्या, यावत् नष्टो ब्रह्मचर्यवासेनापि भवति । क्षान्त्यादि सर्वगुणरहितो भवतीत्यर्थः, यथा चन्द्रा नित्यराहुससर्गेण कृष्णप्रतिपदमारभ्य प्रतिदिवस कलाभिः क्षीयमाणः सन् कृष्णचतुर्दश्यपेक्षयाऽमावास्याया वर्णादिना यावन्मण्डलेन नष्टो

क्षमादि रूप १२ प्रकार के तप से, मुनिजनों की वैयावृत्ति करने रूप त्याग से निष्परिग्रह रूप अकिञ्चन्य धर्म से काम सेवन परित्याग रूप ब्रह्मचर्य मे वास कर ने से-नव कोटिसे विशुद्ध बने हुए ब्रह्मचर्य के पालन से-हीन है-अर्थात् क्षान्ति आदि रूप दश प्रकार के यति धर्म से रहित हैं-(तयाणतर च ण हीणतराए खतीए जाव हीणतराए बभचेरवासेण एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे २ णट्ठे खतीए जाव णट्ठे बभचेरवासेण) अथवा जो साधु या साध्वी क्षान्ति से लेकर ब्रह्मचर्य वे इस तरह क्रमशः हीन२ होते हुए क्षान्ति आदि धामसे हीनतर हैं । से लेकर ब्रह्मचर्यवास पर्यंतके समस्त गुणोंसे रहित हो जाते हैं । जिस प्रकार नित्य राहु के ससर्ग से कृष्णपक्षकी प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन कलाओं से परिक्षीण होता हुआ चन्द्र कृष्णचतुर्दशी की अपेक्षा अमा

ભાર્દવથી, અલ્પ ઉપધિ રૂપ દ્રવ્ય લઘુતાથી, રાગદ્વેષરહિત રૂપ ભાવલઘુતાથી અમૃષા ભાષણ રૂપ સત્યથી, અનશન વગેરે રૂપ ૧૨ પ્રકારના તપથી મુનિજનોની વૈયાવૃત્તિ કરવા રૂપ ત્યાગથી નિષ્પરીગ્રહ રૂપ અકિંચન ધર્મથી, કામસેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્યનુ રક્ષણ કરવાથી, નવ કોટિથી વિશુદ્ધ બનેલા બ્રહ્મચર્યના પાલનથી હીન છે, એટલે કે ક્ષાતિ વગેરે રૂપ દસ જાતના યતિધર્મથી હીન છે

(तयाणतर चण हीणतराए खतीए जाव हीणतराए बभचेरवासेण एव खलु एएणं कमेण परिहायमाणे २ णट्ठे खत्तीए जाव णट्ठे बभचेरवासेण)

અથવા જે સાધુ કે સાધ્વીઓ ક્ષાતિથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના ગુણોથી હીન છે તેઓ આ ચદ્રની પેઠે જ અનુક્રમે હીન થતા ક્ષાતિ વગેરેથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના સર્વે ગુણોથી રહિત થઈ જાય છે જેમ હમેશા રાહુના સસર્ગથી કૃષ્ણપક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ કળાઓની દૃષ્ટિએ ક્ષીણ થતો ચદ્ર કૃષ્ણપક્ષની ચૌદશની અપેક્ષા અમાસના દિવસે વર્ણ પરિમડળ વગેરે

मण्डलेन । एव खलु एतेन क्रमेण परिहीयमान २ यावद् अमावास्याचन्द्रः 'चाउद्दसिं' चातुर्दश=चतुर्दशीसम्बन्धिनं चन्द्रमाणिधाय=अपेक्ष्य 'नट्ठे' नष्टः=विलुप्तः वर्णेन यावत् नष्टो मण्डलेन=वृत्ताकारस्पेण ।

'एवामेव'-एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत् प्रव्रजित' सन् हीनः 'खतीए' क्षान्त्या=क्षमया, एव हीनः 'मुत्तीए' मुक्त्या=निर्लोभतया 'गुत्तीए' गुप्त्या=मनोयोगादीना कुशलप्रवृत्तिलक्षणया, योगनिरोधलक्षणया वा, 'अज्जवेण' आर्जवेन=स्फटिकवद् बाह्याभ्यन्तरसरलभावरूपेण, 'मद्दवेण' मार्दवेन=निरभिमानतालक्षणेन, 'लाघवेण' लाघवेन=द्रव्यभावलघुतासपन्नेन-तत्र-द्रव्यतोऽल्पोपधिकत्वेन भावतो राग-द्वेषरहितत्वेन, 'सच्चेण' सत्येन=अमृषाभाषणरूपेण, 'तवेण' तपसा=अशनादि

मडल तक और अधिक यून हो जाता है । इस तरह क्रमशः हीन ही होता हुआ अमावस्या का चन्द्रमा चतुर्दशी के चन्द्रमा की अपेक्षा बिलकुल वर्ण आदि से लगाकर अपने परिमडल तक विलुप्त बन जाता है । (एवामेव समणाउसो । जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खतिए एव मुत्तीए अज्जवेण, मद्दवेण, लाघवेण सच्चेण, तवेण, चियाए, अकिंचणयाए, बभचेरवासेण) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थीजन यावत् प्रव्रजित होता हुआ यदि क्षमा से हीन है, मुक्ति-निर्लोभता अथवा मनोयोगादिकों की कुशल प्रवृत्ति रूप अथवा योगनिरोध रूप गुप्ति से स्फटित की तरह बाह्य एव आभ्यन्तर में सरल परिणाम रूप आर्जव से, निरभिमानता रूप मार्दव से, अल्प उपधि रूप द्रव्यलघुता से राग द्वेषरहित रूप भाव लघुता से, अमृषाभाषण रूप सत्य से, अन-

---

કરતા ત્રીજનો ચન્દ્ર વર્ણ પરિમડળ બધી બાબતમા વધારે ન્યૂન થઈ જાય છે આ રીતે ધીમે ધીમે અનુક્રમે હીન થતા અમાસનો ચન્દ્ર ચૌદશના ચન્દ્ર કરતા વર્ણ પરિમડળ વગેરેની દૃષ્ટિએ તદ્દન વિલુપ્ત (અદૃશ્ય) થઈ જાય છે

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खतीए एव मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेण, मद्दवेण, लाघवे ण, सच्चेण तवेण, चियाए, अकिंचणयाए, बभचेरवासेण)

આ રીતે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ અથવા નિગ્રંથી જન યાવત્ પ્રવ્રજીત થઇને જે ક્ષમારહિત છે, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા મનોયોગ વગેરેની કુશળ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગ નિરોધ રૂપ ગુપ્તિથી, સ્ફટિકની જેમ બાહ્ય તેમજ આભ્યતરમા સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવથી નિ રૂપ

द्वादशविधेन ' चियाए ' त्यागेन=मुनिवैयावृत्यकरणलक्षणेन ' अकिंचणयाए ' अकिञ्चनतया निष्परिग्रहतया बभचेरवासेण ' ब्रह्मचार्यवासेन-ब्रह्मणि=कामसेवन परित्यागरूपे चरण=विचरण चर्य ब्रह्मचर्यं, तत्र वासस्तेन नवबाटिका विशुद्धमैथुन विरमणरूपेण ' हीनः ' इति सर्वत्र सम्बन्धः क्षान्त्यादिदशविधश्रमण धर्मरहितो भवती त्यर्थ ।

तदनन्तर च खलु स निर्ग्रन्थो वा० हीनतरः क्षान्त्या यावत् हीनतो ब्रह्मचर्यवासेन । एव खलु एतेन क्रमेण=क्रमश परिहीयमान' २ सन् नष्टः=सर्वथा रहित क्षान्त्या, यावत् नष्टो ब्रह्मचर्यवासेनापि भवति। क्षान्त्यादि सर्वगुणरहितो भवतीत्यर्थ., यथा चन्द्रा नित्यराहुससर्गेण कृष्णप्रतिपदमारभ्य प्रतिदिवस कलाभिः क्षीयमाणः सन् कृष्णचतुर्दश्यपेक्षयाऽमावास्याया वर्णादिना यावन्मण्डलेन नष्टो

ज्ञानादि रूप १२ प्रकार के तप से, मुनिजनों की वैयावृत्ति करने रूप त्याग से निष्परिग्रह रूप अकिञ्चन्य धर्म से काम सेवन परित्याग रूप ब्रह्मचर्य मे वास कर ने से-नव कोटिसे विशुद्ध बने हुए ब्रह्मचर्य के पालन से-हीन है-अर्थात् क्षान्ति आदि रूप दश प्रकार के यति धर्म से रहित हैं-(तयाणतर च ण हीणतराए खतीए जाव हीणतराए बभचेरवासेण एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे २ णट्ठे खतीए जाव णट्ठे बभचेरवासेण) अथवा जो साधु या साध्वी क्षान्ति से लेकर ब्रह्मचर्य वे इस तरह क्रमश' हीन२ होते हुए क्षान्ति आदि वाससे हीनतर हैं। से लेकर ब्रह्मचर्यवास पर्यंतके समस्त गुणोंसे रहित हो जाते हैं। जिस प्रकार नित्य राहु के ससर्ग से कृष्णपक्षकी प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन कलाओं से परिक्षीण होता हुआ चन्द्र कृष्णचतुर्दशी की अपेक्षा अमा

માર્દવથી, અલ્પ ઉપધિ રૂપ દ્રવ્ય લઘુતાથી, રાગદ્વેષરહિત રૂપ ભાવલઘુતાથી અમૃષા ભાષણ રૂપ સત્યથી, અનશન વગેરે રૂપ ૧૨ પ્રકારના તપથી મુનિજનોની વૈયાવૃત્તિ કરવા રૂપ ત્યાગથી નિષ્પરીગ્રહ રૂપ અકિંચન ધર્મથી, કામસેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્યનુ રક્ષણ કરવાથી, નવ કોટિથી વિશુદ્ધ બનેલા બ્રહ્મચર્યના પાલનથી હીન છે, એટલે ક્ષાતિ વગેરે રૂપ દશ જાતના યતિધર્મથી હીન છે

(तयाणतर च ण हीणतराए खतीए जाव हीणतराए बभचेरवासेण एव खलु एएणं कमेण परिहायमाणे २ णट्ठे खत्तीए जाव णट्ठे बभचेरवासेण)

અથવા જે સાધુ કે સાધ્વીઓ ક્ષાતિથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના ગુણોથી હીન છે તેઓ આ ચદ્રની પેઠે જ અનુક્રમે હીન થતા ક્ષાતિ વગેરેથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના સર્વે ગુણોથી રહિત થઈ જાય છે જેમ હમેશા રાહુના સસર્ગથી કૃષ્ણપક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ કળાઓની દૃષ્ટિએ ક્ષીણ થતો ચદ્ર કૃષ્ણપક્ષની ચૌદશની અપેક્ષા અમાસના દિવસે વર્ણ પરિમડળ વગેરે

मण्डलेन । एव खलु एतेन क्रमेण परिहीयमान २ यावद् अमावास्याचन्द्र 'चाउद्दसिं' चातुर्दश=चतुर्दशीसम्बन्धिन् चन्द्रपाणिधाय=अपेक्ष्य 'नट्ठे' नष्टः=विलुप्त. वर्णेन यावत् नष्टो मण्डलेन=वृत्ताकारेण ।

'एवामेव'-एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत् प्रव्रजितः सन् हीनः 'खतीए' क्षान्त्या=क्षमया, एव हीनः 'मुत्तीए' मुक्त्या=निर्लोभतया 'गुत्तीए' गुप्त्या=मनोयोगादीना कुशलप्रवृत्तिलक्षणया, योगनिरोधलक्षणया वा, 'अज्जवेण' आर्जवेन=स्फटिकवद् बाह्याभ्यन्तरसरलभावरूपेण, 'मद्दवेण' मार्दवेन=निरभिमानतालक्षणेन, 'लाघवेण' लाघवेन=द्रव्यभावलघुतासपन्नेन-तत्र-द्रव्यतोऽल्पोपधिकत्वेन भावतो राग-द्वेषरहितत्वेन, 'सच्चेण' सत्येन=अमृषाभाषणरूपेण, 'तवेण' तपसा=अशनादि

मडल तक और अधिक यून हो जाता है । इस तरह क्रमशः हीन ही होता हुआ अमावस्या का चन्द्रमा चतुर्दशी के चन्द्रमा की अपेक्षा बिलकुल वर्ण आदि से लगाकर अपने परिमडल तक बिलुप्त बन जाता है । (एवामेव समणाउसो। जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खतिए एव मुत्तीए अज्जवेण, मद्दवेण, लाघवेण सच्चेण, तवेण, चियाए, अकिंचणयाए, वभचेरवासेण) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थीजन यावत् प्रव्रजित होता हुआ यदि क्षमा से हीन है, मुक्ति-निर्लोभता अथवा मनोयोगदिकों की कुशल प्रवृत्ति रूप अथवा योगनिरोध रूप गुप्ति से स्फटित की तरह बाह्य एव आभ्यन्तर में सरल परिणाम रूप आर्जव से, निरभिमानता रूप मार्दव से, अल्प उपधि रूप द्रव्यलघुता से राग द्वेषरहित रूप भाव लघुता से, अमृषाभाषण रूप सत्य से, अन-

---

કરતા ત્રીજનો ચન્દ્ર વર્ણ પરિમડળ બધી બાબતમા વધારે ન્યૂન થઈ જાય છે આ રીતે ધીમે ધીમે અનુક્રમે હીન થતા અમાસનો ચન્દ્ર ચૌદશના ચન્દ્ર કરતા વર્ણ પરિમડળ વગેરેની દૃષ્ટિએ તદ્દન વિલુપ્ત (અદૃશ્ય) થઈ જાય છે

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खतीए एव मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेण, मद्दवेण, लाघवेण, सच्चेण तवेण, चियाए, अकिंचणयाए, बभचेरवासेण)

આ રીતે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ અથવા નિર્ગ્રંથી જન યાવત્ પ્રવ્રજીત થઇને જો ક્ષમારહિત છે, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા મનોયોગ વગેરેની કુશળ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગ નિરોધ રૂપ ગુપ્તિથી, સ્ફટિકની જેમ બાહ્ય તેમજ આભ્યતરમા સરલ પરિણામ રૂપ આજવથી [illegible] નતા રૂપ

मण्डलेन=वृत्ताकारतया भवति । तदनन्तर च खलु द्वितीयाचन्द्रः प्रतिपच्चन्द्रमणिधाय अधिकतरः पूर्वदिनापेक्षया वर्णनात्यधिको भवति यावद् अधिकतरो मण्डलेन भवति । क्रमशो वृद्धिं प्राप्नोति एव खलु एतेन क्रमेण ' परिवुड्ढेमाणे २ ' परिवर्धमान २ प्रतिदिन वृद्धिं लभमानो २ यावत् पूर्णिमाचन्द्र' ' चाउद्दसिं ' चातुर्दशं चतुर्दशी सम्बन्धिन चन्द्र प्रणिधाय ' पडिपुण्णे ' प्रतिपूर्ण'=सम्पूर्णो वर्णेन यावत् प्रतिपूर्णो मण्डलेन-वृत्ताकाररूपेण भवति , पूर्णिमाचन्द्र' सकलकलाकलापकलिततया परिपूर्ण मण्डलत्वान भवतीत्यर्थः ।

' एवामेव ' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयुष्मन्त' ! ' जाव ' यावत्-योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा २ आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् अधिकः=वृद्धि सम्पन्नः क्षान्त्या यावद् अधिको ब्रह्मचार्यवासेन । तदनन्तर च खलु

की प्रतिपदा का चन्द्रमा अमावास्या के चन्द्रमा की अपेक्षा वर्ण से लेकर मडल तक वर्द्धमान होता हुआ अधिक होता है, और उसके बाद द्वितीया का चन्द्रमा की अपेक्षा वर्ण से लेकर मडल तक अधिकतर हो जाता है-इस तरह के क्रम से जैसे प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त करता हुआ वह चन्द्रमा जब पूर्णिमा तिथि तक पहुँच जाता है तो चतुर्दशी तिथि के चन्द्रमा की अपेक्षा उस दिन वर्ण से लेकर अपने मडल से परिपूर्ण बन जाता है। उसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु अथवा निर्ग्रन्थी साध्वी आचार्य उपाध्याय से दीक्षित बनकर क्षान्ति गुण से लेकर ब्रह्मचर्यवास तक के गुणों से वृद्धिसपन्न होता है।

और इस तरह इन सब से धीरे धीरे वह पहिले की अपेक्षा और अधिकतर सम्पन्न बन जाता है। इस प्रकार क्रमशः सम्पन्न बनता हुआ

જેમ શુક્લ પક્ષની એકમનો ચદ્ર અમાસના ચદ્ર કરતા વર્ણ મડળ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે અને બીજનો ચદ્ર જેમ એકમના ચદ્ર કરતા વર્ણ પરિમડલ વિગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે આ રીતેજ અનુક્રમથી દરરોજ વૃદ્ધિ પામતો ચદ્ર જ્યારે પૂનમની તિથિ સુધી પહોચી જાય છે ત્યારે ચૌદશના ચદ્રની અપેક્ષાએ તે દિવસ વર્ણ પરિમડળ વગેરેથી પરિપૂર્ણતા મેળવે છે આમ જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિગ્રથ સાધુ કે નિર્ગ્રંથી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસેથી દીક્ષા મેળવીને ક્ષાતિ ગુણથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના બધા ગુણોથી વૃદ્ધિસપન્ન થઈ જાય છે

અને આ રીતે આ બધા ગુણોથી ધીમે ધીમે તે પહેલા કરતા વધુ સપન્ન થઈ જાય છે આ પ્રમાણે અનુક્રમે ગુણ સપન્ન બનતો તે ક્ષાતિ બ્રહ્મ

भवति, तथैव मुनिः कुगुरुसंसर्गात् अवसन्नपार्श्वस्थादि संसर्गात्, क्षान्तसम्यक्त्वस्य सम्बन्धात्, प्रमादस्थानसेवनात्, चारित्रावरणकर्मोदयाच्च क्रमशः क्षान्त्यादि गुणहानिं प्राप्तः सन् नष्टो भवतीति भावः ।

अथ वृद्धिदृष्टान्तमाह—

यथा वा शुक्लपक्षस्य प्रतिपच्चन्द्रोऽमावास्यायाश्चन्द्रं प्रणिधाय=अपेक्ष्य-अमावास्या चन्द्रापेक्षयेत्यर्थः 'अहिए' अधिको वर्णेन यावद् अधिको=वर्द्धमानो

वस्या के दिन वर्णादि से लेकर परिमडल तक के अपने समस्त गुणों से नष्ट हो जाता है। उसी तरह मुनि कुगुरुके संसर्ग से अथवा अवसन्न पार्श्वस्थादिकी संगति से सम्यक्त्व के छूट जाने के कारण और प्रमादस्थानों के सेवन करने के कारण उदित हुए चारित्र मोहनीय कर्म के प्रभाव से क्रमशः क्षान्त्यादिगुणो की हानि को प्राप्त करता हुआ नष्ट हो जाता है। अब सूत्रकार वृद्धि को स्पष्ट करने के लिये उसे दृष्टान्त से समझाते हैं-(जहावा सुक्कपक्खस्स पडिवयाचंदे अमावासाए चंद पणिहाय अहिए वण्णेण जाव अहिए मंडलेण तयाणंतर च ण बिइया चंदे पडिवयाचंद पणिहाय अहियतराए वण्णेणं जाव अहियतराए मंडलेणं-एव खलु एएण क्रमेण पडिवुड्ढेमाणे२ जाव पुण्णिमा चंदे चाउद्दसिं चंद पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेण जाव पडिपुण्णे मंडलेण, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे अहिए खंतीए जाव बंभचेरवासेण तयाणंतर च ण अहियतराए खंतिए जाव बंभचेरवासेण एव खलु एएण कमेण परिवड्ढे माणे २ बंभचेरवासेण) जैसे शुक्ल पक्ष

પોતાના બધા ગુણોથી રહિત બનની જાય છે તેમજ મુનિ પણ કુગુરૂના સંસર્ગથી અથવા અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ વગેરેની સંગતિથી સમ્યક્ત્વ રહિત થઈને પ્રમાદ સ્થાનોના સેવનથી ઉદય પામેલા ચારિત્ર મોહનીય કર્મના પ્રભાવથી અનુક્રમે ક્ષાંતિ વગેરે ગુણોથી રહિત થઈને નાશ પામે છે હવે સૂત્રકાર વૃદ્ધિને સ્પષ્ટ કરવાની ઈચ્છાથી દૃષ્ટાંત પૂર્વક સમજાવતા કહે છે—

(जाहावा सुक्कपक्खस्स पडिवयाचंदे अमावासाए चंद पणिहाय अहिए वण्णेण जाव अहिए मंडलेण तयाणंतर च ण बिइयाचंदे पडिवया चंद पणिहाय अहियय राए वण्णेण जाव अहियतराए मंडलेण एव खलु एएण क्रमेण पडिवुड्ढे माणे २ जाव पुण्णिमाचंदे चाउद्दसिं चंद पणिहाय पडिपुण्णेण वण्णेण जाव पडिपुण्णे मंडलेण, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे अहिए खंतीए जाव बंभचेरवासेण तयाणंतर च ण अहियतराए खंतिए जाव बंभचेरवासे ण एव खलु एएण कमेण परिवड्ढेमाणे २ बंभचेरवासेण)

मण्डलेन=वृत्ताकारतया भवति । तदनन्तर च खलु द्वितीयाचन्द्रः प्रतिपच्चन्द्रं प्रणिधाय अधिकतरः पूर्वदिनापेक्षया वर्णनात्यधिको भवति यावद् अधिकतरो मण्डलेन भवति । क्रमशो वृद्धिं प्राप्नोति एव खलु एतेन क्रमेण ' परिवुड्ढेमाणे २ ' परिवर्धमान २ प्रतिदिन वृद्धिं लभमानो २ यावत् पूर्णिमाचन्द्रः ' चाउद्दसिं ' चातुर्दशं चतुर्दशी सम्बन्धिन चन्द्र प्रणिधाय ' पडिपुण्णे ' प्रतिपूर्ण.=सम्पूर्णो वर्णेन यावत् प्रतिपूर्णो मण्डलेन-वृत्ताकाररूपेण भवति , पूर्णिमाचन्द्रः सकलकला-कलापकलिततया परिपूर्ण मण्डलवान भवतीत्यर्थः ।

' एवामेव ' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! ' जाव ' यावत्-योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा २ आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् अधिकः=वृद्धि सम्पन्न. क्षान्त्या यावद् अधिको ब्रह्मचार्यवासेन । तदनन्तर च खलु

की प्रतिपदा का चन्द्रमा अमावास्या के चन्द्रमा की अपेक्षा वर्ण से लेकर मडल तक वर्द्धमान होता हुआ अधिक होता है, और उसके बाद द्वितीया का चन्द्रमा की अपेक्षा वर्ण से लेकर मडल तक अधिकतर हो जाता है-इस तरह के क्रम से जैसे प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त करता हुआ वह चन्द्रमा जब पूर्णिमा तिथि तक पहुँच जाता है तो चतुर्दशी तिथि के चन्द्रमा की अपेक्षा उस दिन वर्ण से लेकर अपने मडल से परिपूर्ण बन जाता है। उसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु अथवा निर्ग्रन्थी साध्वी आचार्य उपाध्याय से दीक्षित बनकर क्षान्ति गुण से लेकर ब्रह्मचर्यवास तक के गुणों से वृद्धिसपन्न होता है।

और इस तरह इन सब से धीरे धीरे वह पहिले की अपेक्षा और अधिकतर सम्पन्न बन जाता है। इस प्रकार क्रमशः सम्पन्न बनता हुआ

જેમ શુક્લ પક્ષની એકમનો ચદ્ર અમાસના ચદ્ર કરતા વર્ણ મડળ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે અને બીજનો ચદ્ર જેમ એકમના ચદ્ર કરતા વર્ણ પરિમડલ વિગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે આ રીતેજ અનુક્રમથી દરરોજ વૃદ્ધિ પામતો ચદ્ર જ્યારે પૂનમની તિથિ સુધી પહોચી જાય છે ત્યારે ચૌદશના ચદ્રની અપેક્ષાએ તે દિવસ વર્ણ પરિમડળ વગેરેથી પરિપૂર્ણતા મેળવે છે આમ જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુ કે નિર્ગ્રંથી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસેથી દીક્ષા મેળવીને ક્ષાતિ ગુણથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના બધા ગુણોથી વૃદ્ધિસપન્ન થઈ જાય છે

અને આ રીતે આ બધા ગુણોથી ધીમે ધીમે તે પહેલા કરતા વધુ સપન્ન થઈ જાય છે આ પ્રમાણે અનુક્રમે ગુણ સપન્ન થતો તે ક્ષાનિ બ્રહ્મ

अधिकतरः=अत्यधिकः क्षान्त्या यावद् अधिकतरो ब्रह्मचर्यवासेन। एव खलु एतेन क्रमेण 'परिवड्ढमाणे २' परिवर्धमानः २ क्रमशो वृद्धिसम्पन्नो भूत्वा यावत् 'पडिपुन्ने' प्रतिपूर्ण =सम्पन्नो ब्रह्मचर्यवासेन, क्षान्त्यादिसर्वगुणसम्पन्नो भवतीत्यर्थः।

यथा चन्द्रो नित्यराहुससर्गापगमेन शुक्लप्रतिपदमारभ्य प्रतिदिवसे कलाभि र्वर्धमानः सन् क्रमेण शुक्लचतुर्दश्यपेक्षया पूर्णिमाया वर्णादिना यावन्मण्डलेन परि पूर्णो भवति तथैव मुनि कुगुरससर्गादिपरित्यागेन चरित्रावरणकर्मक्षयोपशमादिना क्रमशः क्षान्त्यादि गुणवृद्धिं प्राप्नुवन् केवलज्ञानकेवलदर्शनादिगुणैः परिपूर्णो भवतीति।

एव खलु=जीवा अनेन प्रकारेण क्षान्त्यादि गुणवृद्धया वर्द्धन्ते वा तेषां क्षान्त्या

यह क्षान्ति गुण से लेकर ब्रह्मचर्यवास तक के समस्त गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। जिस प्रकार राहु के ससर्ग के अपनयन से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन अपनी कलाओं से अभिवर्धमान होता हुआ चन्द्रमा क्रमशः शुक्लचतुर्दशी कि अपेक्षा पूर्णिमासी के दिन वर्णादि से लगाकर मण्डल तक की अपनी समस्त कलाओ से परिपूर्ण हो जाती है

इसी तरह मुनि भी कुगुरु आदि के ससर्ग आदि के परित्यागसे तथा चारित्रावरण कर्म के क्षयोपशम आदि से क्रमशः क्षान्त्यादि गुणों की वृद्धि करता हुआ केवलज्ञान, केवल दर्शन आदि गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। (एव खलु जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा, एव खलु जम्बू समणेण भगवता महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते

ચર્યવાસ વગેરે બધા ગુણોથી પરિપૂર્ણ થઇ જાય છે જેમ રાહુના સસર્ગરહિત થઇને શુકલ પક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ પોતાની કળાઓની વૃદ્ધિ કરતો ચદ્ર અનુક્રમે શુકલ પક્ષની ચૌદશ કરતા પૂનમના દિવસે વર્તુળ પરિમડળ વગેરેની પોતાની સપૂર્ણ કળાઓથી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે

તેમજ મુનિ પણ કુગુરુ વગેરેની સોબત વગેરેને ત્યજીને તેમજ ચારિત્ર વરણ કર્મના ક્ષયોપશમ વગેરેથી અનુક્રમે પોતાના ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની વૃદ્ધિ કરતો કેવળજ્ઞાન, કેવળ દર્શન વગેરે ગુણોથી પરિપૂર્ણ થઇ જાય છે

(एव खलु जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा एव खलु जम्बू! समणेण भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि'

हीयन्ते वा। एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अय=पूर्वोक्तः अर्थ =भाव प्रज्ञप्त । 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि पूर्ववत् ॥सू०१॥

इति श्री विश्वविख्यात - जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-
ललितकलापालापक - प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक
श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-
कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री
घासीलालव्रतिविरचिताया श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृ-
तवर्षिण्याख्याया व्याख्यायां दशममध्ययन समाप्त ॥ १० ॥

त्तिबेमि) इस प्रकार क्षान्त्यादि गुणों की वृद्धि से जीव बढ़ते हैं और उनकी हानि से जीव घटते हैं यह कथन बन जाता है इस तरह हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीरने दशवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्रज्ञप्त किया है। मैंने उन्हीं के मुख से जैसा सुना है उसी के अनुसार यह कहा है ॥ सू० १ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराजकृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र "की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका दशवा अध्ययन समाप्त ॥ १०॥

ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની વૃદ્ધિથી જીવો વૃદ્ધિ પામે છે અને ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની હાનિથી જીવો ઘટે છે આ કથનની સાર્થકતા સિદ્ધ થઈ જાય છે આ પ્રમાણે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરુપિત કર્યો છે આ અર્થ મે તેમના મુખેથી જે પ્રમાણે સાભળ્યો છે તે જ પ્રમાણે તમારી સામે રજૂ કર્યો છે ॥ સૂત્ર " ૧ " ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની
અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ દસમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૦॥

अधिकतरः=अत्यधिकः क्षान्त्या यावद् अधिकतरो ब्रह्मचर्यवासेन। एवं खलु एतेन क्रमेण 'परिवड्ढमाणे २' परिवर्धमानः २ क्रमशो वृद्धिसम्पन्नो भूत्वा यावत् 'पडिपुन्ने' प्रतिपूर्ण=सम्पन्नो ब्रह्मचर्यवासेन, क्षान्त्यादिसर्वगुणसम्पन्नो भवतीत्यर्थः।

यथा चन्द्रो नित्यराहुससर्गापगमेन शुक्लप्रतिपदमारभ्य प्रतिदिवसे कलाभिर्वर्धमानः सन् क्रमेण शुक्लचतुर्दश्यपेक्षया पूर्णिमायां तिथौ दिना यावन्मण्डलेन परिपूर्णो भवति तथैव मुनि कुगुरुससर्गादिपरित्यागेन चरित्रावरणकर्मक्षयोपशमादिना क्रमशः क्षान्त्यादि गुणवृद्धिं प्राप्नुवन् केवलज्ञानकेवलदर्शनादिगुणैः परिपूर्णो भवतीति।

एव खलु=जीवा अनेन प्रकारेण क्षान्त्यादि गुणवृद्धया वर्द्धन्ते वा तेषां हान्या

वह क्षान्ति गुण से लेकर ब्रह्मचर्यवास तक के समस्त गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। जिस प्रकार राहु के ससर्ग के अपनयन से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन अपनी कलाओं से अभिवर्धमान होता हुआ चन्द्रमा क्रमशः शुक्लचतुर्दशी कि अपेक्षा पूर्णिमामी के दिन वर्णादि से लगाकर मण्डल तक की अपनी समस्त कलाओ से परिपूर्ण हो जाती है

इसी तरह मुनि भी कुगुरु आदि के ससर्ग आदि के परित्यागसे तथा चारित्रावरण कर्म के क्षयोपशम आदि से क्रमशः क्षान्त्यादि गुणों की वृद्धि करता हुआ केवलज्ञान, केवल दर्शन आदि गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। (एव खलु जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा, एव खलु जबू समणेण भगवता महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते

ચર્યવાસ વગેરે બધા ગુણોથી પરિપૂર્ણ થઇ જાય છે જેમ રાહુના સંસર્ગરહિત થઇને શુકલ પક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ પોતાની કળાઓની વૃદ્ધિ કરતો ચદ્ર અનુક્રમે શુકલ પક્ષની ચૌદશ કરતા પૂનમના દિવસે વર્તુળ પરિમડળ વગેરેની પોતાની સપૂર્ણ કળાઓથી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે

તેમજ મુનિ પણ કુગુરુ વગેરેની સોબત વગેરેને ત્યજીને તેમજ ચારિત્રાવરણ કર્મના ક્ષયોપશમ વગેરેથી અનુક્રમે પોતાના ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની વૃદ્ધિ કરતો કેવળજ્ઞાન, કેવળ દર્શન વગેરે ગુણોથી પરિપૂર્ણ થઇ જાય છે

(एव खलु जीवा वड्ढंति, वा हायंति वा एव खलु जबू! समणेण भगवता महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि'

पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव२ उवसोभेमाणा चिट्ठति, जयाणं दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाणं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठति अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडियपंडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा२ चिट्ठंति; एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइये समाणे बहूणं समणाणं ४ सम्म सहति जाव अहियासे बहूण अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाण नो सम्मं सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस ण मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते । समणाउसो ! जया णं सामुद्दगा-ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायंति तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा२ चिट्ठति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हे निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाण बहूणं गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण समणाणं ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते । समणाउसो ! जयाण नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया वायंति तयाण सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा चिट्ठति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठति, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूण समणाणं ४ अन्नउत्थियगिहत्थाण नो सम्म सहइ एसणं मए

अथ एकादशमध्ययनं प्रारभ्यते—

गत दशममध्ययन, साम्प्रतमेकादशमारभ्यते । पूर्वस्मिन्नध्ययने कृष्णशुक्ल पक्षचन्द्रदृष्टान्तेन प्रमादाप्रमादवतो क्षान्त्यादिगुणहानिवृद्धिभ्यामनर्थार्थौ प्रतिपादितौ, इह तु मार्गाराधनविराधनाभ्यामर्थार्थौ प्रदर्श्येते, अथ जम्बूस्वामी पृच्छति—' जइण भते ' इत्यादि ।

मूलम्—जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण दसमस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स णं भते णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जबू ! तेण कालेणं२ रायगिहे गोयमे एवं वयासी—कहण भते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ?, गो० ! से जहा णामए एगसि समुद्दकुलसि दावद्दवा नाम रुक्खा पण्णत्ता किण्हा जाव निउरुबभूया पत्तिया

दावद्रव (वृक्ष) नामक ग्यारहवां अध्ययन प्रारभ

दशवा अध्ययन समाप्त हो चुका—अब ग्यारहवा अध्ययन प्रारभ होता है । इस अध्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस प्रकारसे सबन्ध है कि पूर्व अध्ययन में कृष्ण और शुक्ल पक्षके चन्द्रमा के दृष्टान्त से प्रमादी और अप्रमादी सयमी के क्षान्त्यादि गुणों की हानि एव वृद्धि रूप अनर्थ एव अर्थ की प्राप्ति होनी प्रतिपादित की गई है । अब इस अध्ययन द्वारा यह कहा जा रहा है कि जो सयम मार्ग की आराधना तथा विराधना करते है वे अर्थ और अनर्थ की प्राप्ति के पात्र होते हैं। जबू स्वामी श्री सुधर्मासे पूछते है कि 'जइण भते ! समणेण' इत्यादि ।

દાવદ્રવ (વૃક્ષ) નામે અગિયારમુ અધ્યયન પ્રારભ

દશમુ અધ્યયન પુરૂ થઈ ચૂકયુ છે અને હવે અગિયારમુ અધ્યયન આરભ થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલાના અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણેનો સબધ છે પહેલાના અધ્યયનમા કૃષ્ણ અને શુકલ પક્ષના ચન્દ્રમાના દષ્ટાતથી પ્રમાદી અને અપ્રમાદી સયમીને ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની પ્રાપ્તિ થવી, આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરવામા આવ્યુ છે હવે આ અધ્યયનમા જે સયમ માર્ગની આરાધના તેમજ વિરાધના કરે છે તેઓ અર્થ તેમજ અનર્થના પાત્ર ગણાય છે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવે છે જબૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(जइण भत्ते ! समणेण " इत्यादि ॥

पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव२ उवसोभेमाणा चिट्ठंति, जयाणं दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाण बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडियपंडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणोउसो ! जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइये समाणे बहूण समणाणं ४ सम्मं सहति जाव अहियासे बहूण अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस णं मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते । समणाउसो ! जया णं सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायंति तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा२ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हे निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाण बहूणं गिहत्थाणं सम्म सहइ बहूण समणाणं ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते । समणाउसो ! जयाणं नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया वायंति तयाण सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा चिट्ठंति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूण समणाणं ४ [illegible] अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्म सहइ एसणं मए

अथ एकादशमध्ययनं प्रारभ्यते–

गत दशममध्ययन, साम्पतमेकादशमारभ्यते । पूर्वस्मिन्नध्ययने कृष्णशुक्लपक्षचन्द्रदृष्टान्तेन प्रमादाप्रमादवतो क्षान्त्यादिगुणहानिवृद्धिप्रामनर्थार्थौ प्रतिपादितौ, इह तु मार्गाराधनविराधनाप्रामर्थार्थौ प्रदर्श्येते, अथ जम्बूस्वामी पृच्छति–' जइण भते ' इत्यादि ।

मूलम्–जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण दसमस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स ण भते णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जबू ! तेण कालेण२ रायगिहे गोयमे एवं वयासी–कहण भते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ?, गो० ! से जहा णामए एगंसि समुद्दकुलसि दावद्दवा नाम रुक्खा पण्णत्ता किण्हा जाव निउरुबभूया पत्तिया

दावद्रव (वृक्ष) नामक ग्यारहवाँ अध्ययन प्रारभ

दशवा अध्ययन समाप्त हो चुका–अब ग्यारहवा अध्ययन प्रारभ होता है । इस अध्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस प्रकारसे सबन्ध है कि पूर्व अध्ययन में कृष्ण और शुक्ल पक्षके चन्द्रमा के दृष्टान्त से प्रमादी और अप्रमादी सयमी के क्षान्त्यादि गुणो की हानि एव वृद्धि रूप अनर्थ एव अर्थ की प्राप्ति होनी प्रतिपादित की गई है । अब इस अध्ययन द्वारा यह कहा जा रहा है कि जो सयम मार्ग की आराधना तथा विराधना करते है वे अर्थ और अनर्थ की प्राप्ति के पात्र होते हैं। जबू स्वामी श्री सुधर्मासे पूछते है कि 'जइण भते ! समणेण' इत्यादि ।

દાવદ્રવ (વૃક્ષ) નામે અગિયારમુ અધ્યયન પ્રારભ

દશમુ અધ્યયન પુરૂ થઈ ચૂકયુ છે અને હવે અગિયારમુ અધ્યયન આરભ થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલાના અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણેનો સબધ છે પહેલાના અધ્યયનમા કૃષ્ણ અને શુકલ પક્ષના ચન્દ્રમાના દૃષ્ટાતથી પ્રમાદી અને અપ્રમાદી સયમીને ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની પ્રાપ્તિ થવી, આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરવામા આવ્યુ છે હવે આ અધ્યયનમા જે સયમ માર્ગની આરાધના તેમજ વિરાધના કરે છે તેઓ અર્થ તેમજ અનર્થના પાત્ર ગણાય છે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવે છે જબૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(जइण भते ! समणेण " इत्यादि ॥

पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव२ उवसोभेमाणा चिट्ठंति, जयाणं दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाणं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडियपंडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणोउसो ! जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइये समाणे बहूण समणाणं ४ सम्मं सहति जाव अहियासे बहूण अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस णं मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते । समणाउसो ! जया णं सामुद्दगा-ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायंति तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा२ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हे निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाण बहूणं गिहत्थाणं सम्म सहइ बहूणं समणाण ४ नो सम्म सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते । समणाउसो ! जयाणं नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया वायंति तयाणं सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा चिट्ठंति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं ४ बहूण अन्नउत्थियगिहत्थाण नो सम्म सहइ एसणं मए

सव्वविराहए पण्णत्ते । समणाउसो! जयाण दीविच्चगावि सामुद्दगावि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति तया ण सव्वे दावद्दव्वा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठति, एवामेव समणाउसो जो अम्ह जाव पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं४ बहूणं अज्जउत्थियगिहत्थाणं सम्मं सहइ एसण मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते। एव खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति, एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया० एक्कारसस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० १ ॥

॥ एक्कारसम नायज्झयणं समत्त ॥ ११ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिसम्प्राप्तेन दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयम्=पूर्वोक्त प्रकारो गुणहानिवृद्धिरूप अर्थः भावः प्रज्ञप्त =कथितः, अथ एकादशस्या ययमस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः= को भावः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी कथयति—एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले

टीकार्थ—(जइण भते !) यदि हे भदत ! (समणेण जाव सपत्तेण दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स ण भत्ते ! णायज्झयणस्सके अट्ठे पण्णत्ते) श्रमण भगवान् महावीर प्रभुने कि जो मुक्तिको प्राप्त हो चुके हैं, दशवे ज्ञाता ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है- तो श्रमण भगवान् महावीर प्रभु ने ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? इस प्रकार जबू स्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि (एव खलु जबू !) सुनो जो उन्हो ने ग्यारहवें

टीकार्थ—(जइण भते !) हे भदत !

(समणेण जाव सपत्तेण दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स ण भते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते)

મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તેઓશ્રીએ અગિયારમો જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ રીતે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને [illegible] સુધર્મા

तस्मिन् समये राजगृहे नगरे गौतम एवमवादीत्-एवमपृच्छत्-कथ खलु भदन्त! हे भगवान्! जीवा आराधका'=ज्ञानादिरत्नत्रयरूपमोक्षमार्गसाधका', विराधका'= तद्विपरीता भवन्ति?। एतमर्थं भगवान् दृष्टान्तेन वर्णयति-हे गौतम! तद्यथा नामक=यथा दृष्टान्तम्-एकस्मिन् समुद्रकूले=सागरतटे 'दावद्दवा' दावद्रवाः, नाम=एतन्नामधेया वृक्षाः प्रज्ञप्ताः। कीदृशा. ? इत्याह-'किण्हा' कृष्णाः= कृष्णवर्णा यावत् महामेघनिकुरम्बभूता'=जलभरितमेघवृन्दसदृशा 'पत्तिया'

ज्ञाताध्ययन का अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है-(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे गोयमे एव वयासी) उस काल और उस समय में राजगृहनगर मे श्रमण भगवान् महावीर प्रभु पधारे—उनसे गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा- (कहण्ण भते! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति?) हे भदत! जीव ज्ञानादि रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग के आराधक साधक-और विराधक कैसे-किस कारण से-होते है? (गोयमा! से जहानामए एगसि समुद्दकूलसि दावद्दवा नाम रुक्खा पण्णत्ता) प्रभु ने उनकी इस बात का उत्तर इस तरह के दृष्टान्त से दिया-हे गौतम! समुद्र के तटपर "दावद्रव" इस नामके बहुत से वृक्ष खडे हुए थे (किण्हा जाव निकुरम्बभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा चिट्ठति) ये सब जल से भरे हुए मेघों के समूह जैसे कृष्ण वर्ण के थे

સ્વામી તેને કહે છે કે (एव खलु जबू!) હે જબૂ! સાભળો, પ્રભુએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ આ પ્રમાણે નિરૂપિત કર્યો છે

(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे० गोयमे एव वयासी)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પધાર્યા ગૌતમ સ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો—(कहण्ण भते! जीवा आराहगावा विराहगावा भवति? હે ભદત! જીવ જ્ઞાન વગેરે રત્નત્રય રૂપ મોક્ષ માર્ગના આરાધક-સાધક અને વિરાધક કેવી રીતે-શા કારણથી થાય છે?

(गो० ! से जहानामए एगसि समुद्दकूलसि दावद्दवा नाम रुक्खा पण्णत्ता)

પ્રભુએ તેમના તે પ્રશ્નનો જવાબ દૃષ્ટાન્તના આધારે આપતા કહ્યુ-હે ગૌતમ! સમુદ્રને દવદ્રવ વૃક્ષોના ઘણાં વૃક્ષો હતા

(किण्हा जाव निकुरम्ब भूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरे रिज्जमाणा, सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा चिट्ठति)

એ બધા વૃક્ષો જળપૂર્ણ મેઘ સમૂહોની જેમ કાળા રંગના હતા બધા વૃક્ષો, પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ હતા લીલા રંગથી એ વૃક્ષો શોભતા

सव्वविराहए पण्णत्ते । समणाउसो! जयाण दीविच्चगावि सामुद्दगावि ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति तया णं सव्वे दावद्दव्वा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो जो अम्ह जाव पव्वइए समाणे बहूणं समणाण४ बहूणं अज्जउत्थियगिहत्थाणं सम्म सहइ एसण मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते। एव खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति, एव खलु जंबू ! समणेण भगवया० एक्कारसस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० १ ॥

॥ एक्कारसम नायज्झयणं समत्त ॥ ११ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिसम्माप्तेन दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयम्=पूर्वोक्त प्रकारो गुणहानिवृद्धिरूप' अर्थः भावः प्रज्ञप्त =कथित', अथ एकादशस्या ययमस्य श्रमणेन यावत्सम्माप्तेन कोऽर्थः= को भावः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी कथयति-एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले

टीकार्थ—(जइण भंते !) यदि हे भदत ! (समणेण जाव सपत्तेण दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्सके अट्ठे पण्णत्ते) श्रमण भगवान् महावीर प्रभुने कि जो मुक्तिको प्राप्त हो चुके हैं, दशवे ज्ञाता ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है- तो श्रमण भगवान् महावीर प्रभु ने ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? इस प्रकार जबू स्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि (एव खलु जबू !) सुनो जो उन्हो ने ग्यारहवें

ટીકાર્થ—(जइण भंते !) હે ભદંત !

(समणेण जाव सपत्तेण दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते)

મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તેઓશ્રીએ અગિયારમો જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ રીતે જબૂ સ્વામીના [illegible]

इत्यर्थः दावद्रवा वृक्षा ' जुन्ना ' जीर्णाः=चिरकालीना. ' झोडा ' झोडः=शटन, तद् योगाद् वृक्षा अपि झोडा =शटितमूलस्कन्धा इत्यर्थः, ' परिसडियपडुपत्तपुप्फफला ' परिशटितपाण्डु पत्रपुष्पफला'-परिशटितानि=शीर्णानि-अतएव पाण्डूनि= ईषत्पीतानि पत्राणि पुष्पाणि फलानि च येषा ते तथोक्ता, ' सुक्कारुक्खओविव निलायमाणा ' शुष्कवृक्षा इव म्लायन्तः ?=शोभारहितास्तिष्ठन्ति । भगवानाह- ' एवामेव ' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण ' समणाउसो ' हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत्प्रव्रजितः सन् बहूना श्रमणाना बहीनां श्रमणीना बहूनाश्रावकाणा बहीना श्राविकाना कर्कशकठोर वचनाद्युपसर्गान् 'सम्म' सम्यक्

पश्चिम दिशा सम्बन्धी मद सुगध शीतल समीर चलने लगता तो उस समय जो पत्र पुष्प आदि से युक्त हुए दावद्रव वृक्ष थे वे ज्यो के त्यो अधिक शोभा सपन्न बने रहकर हरे भरे ही दिखलाई देते रहते। परन्तु उनमे जो दाव द्रव वृक्ष जीर्ण थे पुराने थे, शीर्ण-सडे हुए थे जिनका मूल और स्कध दोनो खोखले हो गये थे और जिनके पीला सफेद होकर पत्र पुष्प एव फल परिशटित हो झड-चुके थे वे शुष्क वृक्षो के समान म्लान-शोभा रहित ही बने रहते (एवामेव समणाउसो ! जो अम्म निग्गथो वा निग्गथी वा पव्वाइए समाणे बहूण अण्णउत्तियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ बहूण-समणाण ४ नो सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ एसण मए पुरिसे देमाराहए पन्नत्ते) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु जन अथवा सा वी जन दीक्षित होता हुआ अनेक अन्य जनों के अनेक श्रमणियों के, श्रावको के और श्राविकाओं के कर्कश, कठोर वचनादि रूप उपसर्गों को मध्यस्थ भाव

થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા જ સવિશેષ શોભા યુક્ત થઈને લીલાછમ દેખાતા હતા પણ તેઓમા જે દાવદ્રવ વૃક્ષો જીર્ણ હતા-જૂના હતા-શીર્ણ-સડી ગયેલા હતા, જેના મૂળ અને થડનો ભાગ પોચલો થઈ ગયો હતો અને જેઓના પીળા અને સફેદ થઈને પાદડાઓ, પુષ્પો અને ફળો પરિશટિત થઈને ખરી પડ્યા હતા તે તો સુકાઈ ગયેલા વૃક્ષોની જેમ મ્લાન-શોભા રહિત થઈને ઊભા હતા

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा पव्वाइए समाणे बहूण अण्णउत्तियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ बहूण समणाण ४ नो सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ एसण मए पुरिसे देमाराहए पन्नत्ते)

આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુજન અથવા સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓ, ઘણા શ્રાવકો અને ઘણી શ્રાવિકાઓના કર્કશ કઠોર વચનો વગેરે ઉપસર્ગોને મધ્યસ્થ

पत्रिता=पत्रयुक्ता 'पुप्फिया' पुष्पिता=पुष्पयुक्ता, 'फलिया' फलिताः=फलसमृद्धाः, 'हरियगरेरिज्जमाणा' हरितकराराजयमानाः=हरितकेन=हरितवर्णेनातिशयशोभमाना. 'सिरीए' श्रिया=पत्रपुष्पादि शोभया अतीवातीव=अत्यन्तम् उपशोभमानाः शोभासमन्नः, तिष्ठन्ति। यदा खलु=यस्मिन् काले 'दीविच्चगा' द्वैप्याः=द्वीपसम्भवा 'ईसिंपुरेवाया' ईषत्पुरोवाताःस्वल्पा पूर्वदिग्वायवः, 'पच्छावाया' पश्चाद्वाता=पश्चिमदिग्वायवः 'मंदावाया' मन्दवाताः=शनैः शनैः सञ्चारिणो वायवः, 'महावाया' महावाता=प्रचण्डवायवः 'वायंति' वान्ति=चलन्ति तदा खलु बहवो दावद्रवा वृक्षा पत्रिता यावत् श्रिया. अतीवातीवोपशोभमानास्तिष्ठन्ति। 'अप्पेगइया' अप्येकका=कतिपया-स्तोका

પત્ર યુક્ત થે, પુષ્પ યુક્ત થે ફલોં સે સમૃદ્ધ થે। હરિત વર્ણ સે યે સબ અતિશય શોભાયમાન હો રહે થે। ઇસ તરહ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે ઇનકી શોભા અત્યત નિરાલી બની હુઈ થી। ઇસ કારણ યે વિશિષ્ટ શોભા સપન્ન બને હુએ થે। (जयाण दीविच्चगा ईसिं पुरेवया पच्छा वाया मदावाया महावाया वायति, तया ण बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडिय पडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खाओ विव मिलायमाणा २ चिट्ठति) જિસ સમય દ્વીપ સે ઉત્પન્ન હુઈ પૂર્વ દિશા સબન્ધી સ્વલ્પ હવાએઁ, પશ્ચિમ દિશા સબન્ધી સ્વલ્પ હવાએઁ, ધીરે ૨ ચલને વાલી વાયુએઁ તથા પ્રચણ્ડ વાયુએ ચલને લગતી તો ઉસ સમય અનેક દાવદ્રવ વૃક્ષ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે નિરાલે, બને હુએ જ્યો કે ત્યોં ખડે રહતે થે ઉનમેં કુછ ભી વિકાર નહી હોતા થા। તાત્પર્ય ઇસકા યહ હૈ કિ જબ દ્વીપ સે પૂર્વ દિશા

હતા પત્રો અને પુષ્પોથી એમની શોભા અનેરી થઈ પડી હતી એથી એઓ અવિશેષ શોભા-સ પન્ન લાગતા હતા

(जयाण दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मदावाया महावाया वायति तया ण बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडिय पडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खाओ विव मिलायमाणा २ चिट्ठति)

જ્યારે દ્વીપો ઉપર વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહેનારા પવનો તેમજ પ્રચડ પવનો ફૂંકાવા લાગતા ત્યારે પત્ર-પુષ્પ વગેરેની શોભાથી અનેરા લાગતા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા ઊભા હતા તે જ સ્થિતિમા વિકાર વગરના થઇને સ્થિર થઇને ઊભા જ રહેતા હતા કહેવાની મતલબ એ છે કે જ્યારે દ્વીપના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશાના મદ, સુગધ અને શીતળ પવનો વહેતા હતા ત્યારે પત્રો-પુષ્પો વગેરેથી સ પન્ન

इत्यर्थः दावद्रवा वृक्षा ' जुन्ना ' जीर्णाः=चिरकालीना. ' झोडा ' झोडः=शटन, तद् योगाद् वृक्षा अपि झोडाः=शटितमूलस्कन्धा इत्यर्थः, ' परिसडियपडुपत्तपुप्फफला ' परिशटितपाण्डु पत्रपुष्पफलाः-परिशटितानि=शीर्णानि-अतएव पाण्डूनि=ईषत्पीतानि पत्राणि पुष्पाणि फलानि च येषा ते तथोक्ता, ' सुक्काऽक्खओविव निलायमाणा ' शुष्कवृक्षा इव म्लायन्तः २=शोभारहितास्तिष्ठन्ति । भगवानाह- ' एवामेव ' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण ' समणाउसो ' हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत्प्रव्रजितः सन् बहूना श्रमणाना बहीनां श्रमणीना बहूनाश्रवकाणा बह्वीना श्राविकाना कर्कशकठोर वचनाद्युपसर्गान् 'सम्म' सम्यक्

પશ્ચિમ દિશા સબન્ધી મદ સુગધ શીતલ સમીર ચલને લગતા તો ઉસ સમય જો પત્ર પુષ્પ આદિ સે યુક્ત હુએ દાવદ્રવ વૃક્ષ યે વે જ્યો કે ત્યો અધિક શોભા સપન્ન બને રહકર હરે ભરે હી દિખલાઈ દેતે રહતે। પરન્તુ ઉનમે જો દાવ દ્રવ વૃક્ષ જીર્ણ થે પુરાને થે, શીર્ણ-સડે હુએ થે જિનકા મૂલ ઔર સ્કધ દોનો ખોખલે હો ગયે થે ઔર જિનકે પીલા સફેદ હોકર પત્ર પુષ્પ એવ ફલ પરિશટિત હો ઝડ-ચુકે થે વે શુષ્ક વૃક્ષો કે સમાન મ્લાન-શોભા રહિત હી બને રહતે (एवामेव समणाउसो ! जो अम्म निग्गथो वा निग्गथी वा पव्वाइए समाणे बहूण अण्ण उत्थियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण-समणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देमाराहए पन्नत्ते) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु जन अथवा साध्वी जन दीक्षित होता हुआ अनेक अन्य जनों के अनेक श्रमणियों के, श्रावको के और श्राविकाओं के कर्कश, कठोर वचनादि रूप उपसर्गों को मध्यस्थ भाव

થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા જ સવિશેષ શોભા યુક્ત થઈને લીલાછમ દેખાતા હતા પણ તેઓમા જે દાવદ્રવ વૃક્ષો જીણ હતા-જૂના હતા-શીર્ણ-સડી ગયેલા હતા, જેના મૂળ અને થડનો ભાગ ખોખલો થઈ ગયો હતો અને જેઓના પીળા અને સફેદ થઈને પાદડાઓ, પુષ્પો અને ફળો પરિશટિત થઈને ખરી પડયા હતા તે તો સુકાઈ ગયેલા વૃક્ષોની જેમ મ્લાન-શોભા રહિત થઈને ઊભા હતા

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा पव्वाइए समाणे बहूग अण्णउत्थियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण समणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देमाराहए पन्नत्ते)

આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુજન અથવા સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓ, ઘણા શ્રાવકો અને ઘણી શ્રાવિકાઓના કર્કશ કઠોર વચનો વગેરે ઉપસર્ગોને મધ્યસ્થ

पत्रिता=पत्रयुक्ता 'पुप्फिया' पुष्पिताः=पुष्पयुक्ता', 'फलिया' फलिताः=फल समृद्धाः, 'हरियगरेरिज्जमाणा' हरितकरराज्यमानाः = हरितकेन = हरितवर्णेनातिशयशोभमाना 'सिरीए' श्रिया = पत्रपुष्पादि शोभया अतीवातीव=अत्यन्तम् उपशोभमानाः शोभासमन्नः, तिष्ठन्ति । यदा खलु=यस्मिन् काले 'दीहिच्चगा' द्वैप्या'=द्वीपसम्भवाः 'ईसिंपुरेवाया' ईषत्पुरोवाताःस्वल्पा पूर्वदिग्वायवः, 'पच्छावाया' पश्चाद्वाताः=पश्चिमदिग्वायवः 'मंदावाया' मन्द वाता.=शनैः शनैः सञ्चारिणो वायवः, 'महावाया' महावाता.=प्रचण्डवायवः 'वायंति' वान्ति=चलन्ति तदा खलु बहवो दावद्रवा वृक्षा पत्रिता यावत् श्रिया ऽतीवातीवोपशोभमानास्तिष्ठन्ति । 'अप्पेगइया' अप्येकका'=कतिपया-स्तोका

पत्र युक्त थे, पुष्प युक्त थे फलों से समृद्ध थे। हरित वर्ण से ये सब अतिशय शोभायमान हो रहे थे। इस तरह पत्र पुष्पादि की शोभा से इनकी शोभा अत्यत निराली बनी हुई थी। इस कारण ये विशिष्ट शोभा सपन्न बने हुए थे। (जयाण दीहिच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तया णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडिय पंडुपत्तपुप्फफलासुक्कलुक्खाओ विव मिलायमाणा २ चिट्ठंति) जिस समय द्वीप से उत्पन्न हुई पूर्व दिशा सबन्धी स्वल्प हवाएँ, पश्चिम दिशा सबन्धी स्वल्प हवाएँ, धीरे २ चलने वाली वायुएँ तथा प्रचण्ड वायुए चलने लगती तो उस समय अनेक दावद्रव वृक्ष पत्र पुष्पादि की शोभा से निराले, बने हुए जैसे के त्यों खड़े रहते थे उनमें कुछ भी विकार नहीं होता था। तात्पर्य इसका यह है कि जब टापू से पूर्व दिशा

હતા પત્રો અને પુષ્પોથી એમની શોભા અનેરી થઈ પડી હતી એથી એઓ અવિશેષ શોભા-સ પન્ન લાગતા હતા

(जयाण दीहिच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तया णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडिय पंडुपत्तपुप्फफला सुक्कलुक्खाओ विव मिलायमाणा २ चिट्ठंति)

જ્યારે દ્વીપો ઉપર વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહેનારા પવનો તેમજ પ્રચડ પવનો ફૂંકાવા લાગતા ત્યારે પત્ર-પુષ્પ વગેરેની શોભાથી અનેરા લાગતા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા ઊભા હતા તે જ સ્થિતિમા વિકાર વગરના થઈને સ્થિર થઈને ઊભા જ રહેતા હતા કહેવાની મતલબ એ છે કે જ્યારે દ્વીપના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશાના મદ, સુગધ અને શીતળ પવનો વહેતા હતા ત્યારે પત્રો-પુષ્પો વગેરેથી સ પન્ન

दिक् समवा वायवः मन्दवाता महावाता वान्ति=प्रचलन्ति तदा खलु बहवे दावद्रवा वृक्षा जीर्णा झोडा शटितमूलस्कन्धा यावत् म्लायन्त स्तिष्ठन्ति । तत्र 'अप्पेगइया' अप्येकका:=कतिपयाः दावद्रवा वृक्षा पतिता यावत् उपशोभमाना २ स्तिष्ठन्ति। एवमेव हे श्रमणा आयुष्मन्तः योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा मव्रजितः सन् बहूनाम् अन्यतीर्थिकाना बहूना गृहस्थाना प्रतिकूलवचनानि सम्यक् सहते, बहूना श्रमणाना ४-श्रमणादीना=चतुर्विधसङ्घस्येत्यर्थः वचनानि नो सम्यक् सहते एष खलु पुरुषो 'मए' मया देशाराधकः प्रज्ञप्त. । हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ! यदा खलु नो 'दीविच्चगा' द्वैप्या.=द्वीपसम्बन्धिन नो 'सामुद्दगा' सामुद्रकाः=समुद्रसम्बन्धिन ईषत्पुरोवाता पश्चाद्वाता यावत् महावाता वान्ति तदा खलु सर्वे दावद्रववृक्षा जीर्णाः

ष्मत श्रमणों ! जिस समय समुद्र से उत्थित पूर्व दिशा सम्बन्धी वायु स्वल्प पश्चिम दिशा सम्बधी वायु मन्द वायु एव महा वायु चलती है उस समय कितनेक जीर्ण -पुराने-शीर्णदाव द्रव वृक्ष झोडा-पत्र पुष्पादि वर्जित वृक्ष तो म्लान के म्लान ही-शोभा रहित ही खडे रहते हैं और कितनेक दाव द्रव वृक्ष जो पत्र पुष्पों से युक्त होते है वे हरेभरे सुन्दर ही प्रतीत होते रहते हैं । इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु एव साध्वी जन प्रव्रजित होता हुआ अनेक अन्यतीर्थिको के अनेक गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को तो अच्छी तरह से सहन कर लेता है परन्तु अनेक श्रमण आदिको के चतुर्विध सघ के-वचनों को सहन नही करता है-वह मेरे द्वारा देशाराधक प्रज्ञप्त हुआ है । (समणाउसो ! जया ण नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छा

અને હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જ્યારે સમુદ્ર ઉપર થઈને વહેતો આગ્નેય પૂર્વ દિશાનો પવન, મદ પવન અને પ્રચડ પવન ફૂકાય છે ત્યારે કેટલાક જીર્ણ-જૂના, શીર્ણ પાદડા અને પુષ્પો રહિત થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો ગ્લાન થઈને શોભાહીન થઈને જ ઊભા રહે છે અને કેટલાક દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાદડાઓ પુષ્પોવાળા છે-લીલાછમ અને સુ૦ જ લાગે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુ અને સાધ્વીજન પ્રવ્રજીત થઈને ઘણા અન્યતીર્થિકોના ઘણા ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂળ વચનોને સારી રીતે સમજી લઈને સહન કરી લે છે પણ તેઓમાથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સઘના વચનોને જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે

(समणाउसो ! जायाण नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छावाया जाव मह वाया वायति तयाण सव्वे दादगा रुक्खा जुण्णा झाडा जाव

मध्यस्थभावेन 'सहइ' सहते=मुखादिविकारकरणेन मर्षति, 'खमइ' क्षमते क्रोधाभावेन, तितिक्खइ, तितिक्षते-अदीनभावेन, 'अहियासेइ' अध्यास्ते निर्जराभावनयाऽन्तःकरणेन सहते। अथ च बहूनाम् अन्यतीर्थिकानां बहूनां गृहस्थानाम् प्रतिकूलवचनानि नो सम्यक्=सम्यग्भावेन सहते यावत् नो अध्यास्ते, एष खलु=एवम्भूतः पुरुषः 'मए' मया 'देसविराहए' देशविराधकः प्रज्ञप्तः।

पुनश्च हे श्रमणाः-आयुष्मन्तः! यदा खलु 'सामुद्दगा' सामुद्रकाः=समुद्रसम्बन्धिनः ईषत्पुरोवाताः स्वल्पपूर्वदिग्वायवः 'पच्छावाया' पश्चाद्वाता=पश्चिम-

---

से सहन करता है उन वचनों को सुनकर जिनके मुख आदि में कोई विकार नहीं झलकता है क्रोध नहीं उत्पन्न होता है, अदीन भावसे जो उन्हें सहन करता है, निर्जरा की भावना से जो उन्हें अपने अन्तःकरण से सहलेता है-तथा कुतीर्थिकों के गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को जो सहन नहीं करता है-यावत् उन्हें अध्यासित नहीं करता है ऐसा व्यक्ति मैंने देश विराधक प्रज्ञप्त किया है। (समणाउसो! जया ण सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाण बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते) पुनश्च-हे आयु

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચનોને સાભળીને જેના મો વગેરે અગો ઉપર કોઇ પણ વિકાર સરખોએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી જે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે, નિર્જરાની ભાવનાથી જે તેઓને પોતાના અતરથી સહન કરી લે છે તેમજ કુતીર્થિકોના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ વચનોને જે સહન કરી શકતો નથી યાવત્ તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા માણસને મે દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે

(समणाउसो! जयाण सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाण बहवे दावद्दवा रूक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते)

दिक् समत्ता वायवः मन्दवाता महावाता वान्ति=प्रचलन्ति तदा खलु बहवे दावद्रवा वृक्षा जीर्णा झोडा शटितमूलस्कन्धा' यावत् म्लायन्त स्तिष्ठन्ति । तत्र 'अप्पेगइया' अप्येकका:=कतिपयाः दावद्रवा वृक्षा पत्रिता यावत् उपशोभमाना २ स्तिष्ठन्ति। एवमेव हे श्रमणा आयुष्मन्तः योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा प्रव्रजितः सन् बहूनाम् अन्यतीर्थिकाना बहूना गृहस्थाना प्रतिकूलवचनानि सम्यक् सहते, बहूनां श्रमणाना ४-श्रमणादीना=चतुर्विधसङ्घस्येत्यर्थः वचनानि नो सम्यक् सहते एष खलु पुरुषो 'मए' मया देशाराधकः प्रज्ञप्तः । हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ! यदा खलु नो 'दीविच्चगा' द्वैप्या:=द्वीपसम्बन्धिन' नो 'सामुद्दगा' सामुद्रका'=समुद्रसम्बन्धिन ईषत्पुरोवाता पश्चाद्वाता यावत् महावाता वान्ति तदा खलु सर्वे द्रोवद्रवृक्षा जीर्णाः

श्मत श्रमणों ! जिस समय समुद्र से उत्थित पूर्व दिशा सम्बन्धी वायु स्वल्प पश्चिम दिशा सम्बधी वायु मन्द वायु एव महा वायु चलती है उस समय कितनेक जीर्ण -पुराने-शीर्णदाव द्रव वृक्ष झोडा-पत्र पुष्पादि वर्जित वृक्ष तो म्लान के म्लान ही-शोभा रहित ही खडे रहते हैं और कितनेक दाव द्रव वृक्ष जो पत्र पुष्पो से युक्त होते है वे हरेभरे सुन्दर ही प्रतीत होते रहते हैं। इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु एव सा वी जन प्रव्रजित होता हुआ अनेक अन्यतीर्थिको के अनेक गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को तो अच्छी तरह से सहन कर लेता है परन्तु अनेक श्रमण आदिको के चतुर्विध सघ के-वचनों को सहन नही करता है-वह मेरे द्वारा देशाराधक प्रज्ञप्त हुआ है। (समणा उसो ! जया ण नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छा

અને હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જ્યારે સમુદ્ર ઉપર થઇને વહેતો આગ્નેય પૂર્વ દિશાનો પવન, મહ પવન અને પ્રચડ પવન ફૂકાય છે ત્યારે કેટલાક જીર્ણ-જૂના, શીર્ણ પાદડા અને પુષ્પો રહિત થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થઇને શોભાહીન થઇને જ ઊભા રહે છે અને કેટલાક દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાદડાઓ પુષ્પોવાળા છે-લીલાછમ અને સુદર જ લાગે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુ અને સાધ્વીજન પ્રવ્રજીત થઇને ઘણા અન્યતીર્થિકોના ઘણા ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂળ વચનોને સારી રીતે સમજી લઇને સહન કરી લે છે પણ તેઓમાથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સઘના વચનોને જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે

(समणाउसो ! जायाण नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छावाया जाव मह वाया वायति तयाण सव्वे दाहगा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव

मध्यस्थभावेन 'सहइ' सहते=मुखाद्यविकारकरणेन मर्षति, 'खमइ' क्षमते क्रोधाभावेन, तितिक्खइ, तितिक्षते-अदीनाभावेन, 'अहियासेइ' अध्यास्ते निर्जराभावनयाऽन्तःकरणेन सहते। अथ च बहूनाम् अन्यतीर्थिकानां बहूनां गृहस्थानाम् प्रतिकूलवचनानि नो सम्यक्=सम्यग्भावेन सहते यावत् नो अध्यास्ते, एष खलु=एवम्भूतः पुरुषः 'मए' मया 'देसविराहए' देशविराधकः प्रज्ञप्तः।

पुनश्च हे श्रमणाः-आयुष्मन्तः! यदा खलु 'सामुद्दगा' सामुद्रकाः=समुद्र सम्बन्धिनः ईषत्पुरोवाताः स्वल्पपूर्वदिग्वायवः 'पच्छावाया' पश्चाद्वाताः=पश्चिम-

---

से सहन करता है उन वचनों को सुनकर जिनके मुख आदि में कोई विकार नहीं झलकता है क्रोध नहीं उत्पन्न होता है, अदीन भावसे जो उन्हें सहन करता है, निर्जरा की भावना से जो उन्हें अपने अन्तः करण से सहलेता है-तथा कुतीर्थिकों के गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को जो सहन नहीं करता है-यावत् उन्हें अध्यासित नहीं करता है ऐसा व्यक्ति मने देश विराधक प्रज्ञप्त किया है। (समणाउसो! जयाण सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाण बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते) पुनश्च-हे आयु

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચનોને સાભળીને જેના મો વગેરે અગો ઉપર ક્રોધ પણ વિકાર સરખોએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી જે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે નિર્જરાની ભાવનાથી જે તેઓને પોતાના અતરથી સહન કરી લે છે તેમજ કુતીર્થિકોના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ વચનોને જે સહન કરી શકતો નથી યાવત તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા માણસને મે દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે

(समणाउसो! जयाण सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाण बहवे दावद्दवा रूक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रूक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते)

दिक् समया वायवः मन्दवाता महावाता वान्ति=प्रचलन्ति तदा खलु बहवे दावद्रवा वृक्षा जीर्णा झोडा शटितमूलस्कन्धा यावत् म्लायन्त स्तिष्ठन्ति । तत्र 'अप्पेगइया' अप्येकका:=कतिपयाः दावद्रवा वृक्षा पतिता यावत् उपशोभमाना २ स्तिष्ठन्ति । एवमेव हे श्रमणा आयुष्मन्तः योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा प्रव्रजितः सन् बहूनाम् अन्यतीर्थिकानां बहूना गृहस्थाना प्रतिकूलवचनानि सम्यक् सहते, बहूना श्रमणाना ४-श्रमणादीना=चतुर्विधसङ्घस्येत्यर्थः वचनानि नो सम्यक् सहते एष खलु पुरुषो 'मए' मया देशाराधकः प्रज्ञप्तः । हे आयुष्मन्त. श्रमणाः ! यदा खलु नो 'दीविच्चगा' द्वैप्या.=द्वीपसम्बन्धिन. नो 'सामुद्दगा' सामुद्रका:=समुद्रसम्बन्धिन ईषत्पुरोवाता पश्चाद्वाता यावत् महावाता वान्ति तदा खलु सर्वे दावद्रववृक्षा जीर्णाः

ष्मत श्रमणों ! जिस समय समुद्र से उत्थित पूर्व दिशा सम्बन्धी वायु स्वल्प पश्चिम दिशा सम्बधी वायु मन्द वायु एव महा वायु चलती है उस समय कितनेक जीर्ण-पुराने-शीर्णदाव द्रव वृक्ष झोडा-पत्र पुष्पादि वर्जित वृक्ष तो म्लान के म्लान श्री-शोभा रहित ही खडे रहते हैं और कितनेक दाव द्रव वृक्ष जो पत्र पुष्पो से युक्त होते है वे हरेभरे सुन्दर ही प्रतीत होते रहते हैं । इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु एव साध्वी जन प्रव्रजित होता हुआ अनेक अन्यतीर्थिको के अनेक गृहस्थों के प्रतिकूल वचनो को तो अच्छी तरह से सहन कर लेता है परन्तु अनेक श्रमण आदिको के चतुर्विध सघ के-वचनों को सहन नही करता है-वह मेरे द्वारा देशाराधक प्रज्ञप्त हुआ है । (समणा उसो ! जया ण नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छा

અને હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જ્યારે સમુદ્ર ઉપર થઈને વહેતો આછો પૂર્વ દિશાનો પવન, મદ પવન અને પ્રચડ પવન ફૂકાય છે ત્યારે કેટલાક જીર્ણ-જૂના, શીણ પાદડા અને પુષ્પો રહિત થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થઈને શોભાહીન થઈને જ ઊભા રહે છે અને કેટલાક દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાદડાઓ પુષ્પોવાળા છે-લીલાછમ અને સુદર જ લાગે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિગ્રથ સાધુ અને સાધ્વીજન પ્રવ્રજીત થઈને ઘણા અન્યતીર્થિકોના ઘણા ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂળ વચનોને સારી રીતે સમજી લઈને સહન કરી લે છે પણ તેઓમાથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સઘના વચનોને જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે

(समणाउसो ! जायाण नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छावाया जाव महावाया वायति तयाण सव्वे दादगा रुक्खा जुण्णा झाडा जाव

मध्यस्थभावेन 'सहइ' सहते=मुखाद्यविकारकरणेन मर्षति, 'खमइ' क्षमते क्रोधाभावेन, तितिक्खइ, तितिक्षते-अदीनभावेन, 'अहियासेइ' अध्यास्ते निर्जराभावनयाऽन्त करणेन सहत। अथ च बहूनाम् अन्यतीर्थिकानां बहूनां गृहस्थानाम् प्रतिकूलवचनानि नो सम्यक्=सम्यग्भावेन सहते यावत् नो अध्यास्ते, एष खलु=एवम्भूतः पुरुषः 'मए' मया 'देसविराहए' देशविराधकः प्रज्ञप्त।

पुनश्च हे श्रमणा'-आयुष्मन्त! यदा खलु 'सामुद्दगा' सामुद्रकाः=समुद्र सम्बन्धिनः ईषत्पुरोवाताः स्वल्पपूर्वदिग्वायवः 'पच्छावाया' पश्चाद्वाता'=पश्चिम-

---

से सहन करता है उन वचनो को सुनकर जिनके मुख आदि में कोई विकार नही झलकता है क्रोध नही उत्पन्न होता है, अदीन भावसे जो उन्हें सहन करता है, निर्जरा की भावना से जो उन्हें अपने अन्तः करण से सहलेता है-तथा कुतीर्थिकों के गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को जो सहन नही करता है-यावत् उन्हे अध्यासित नहीं करता है ऐसा व्यक्ति मैंने देश विराधक प्रज्ञप्त किया है। (समणाउसो! जयाण सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाण बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं मम्म सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्म सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते) पुनश्च-हे आयु

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચનોને સાભળીને જેના મો વગેરે અગો ઉપર કોઇ પણ વિકાર સરખોએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી જે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે, નિર્જરાની ભાવનાથી જે તેઓને પોતાના અતરથી સહન કરી લે છે તેમજ કુતીર્થિકોના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ વચનોને જે સહન કરી શકતો નથી યાવત્ તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા માણસને મે દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે

(समणाउसो! जयाण सामुद्दगा ईसिं पुरे वाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तयाण बहवे दावद्दवा रूक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते)

सम्यक् सहते एष खलु=एवम्भूतः पुरुष 'मए' मया सर्वाराधकः प्रज्ञप्तः, एव खलु=अनेन प्रकारेण हे गौतम ! जीवा आराधका वा विराधका भवन्ति । सुधर्मा

अन्यतीर्थिक गृहस्थों के वचनों को अच्छी तरह सहन आदि नहीं करता है ऐसा यह साध्वादिजन मेरे द्वारा सर्व विराधक प्रज्ञप्त किया गया है । (समणा उसो ! जयाण दीविच्चगावि सामुद्दगावि ईसिं पुरे वाया पच्छा वाया जाव वायंति, तया ण सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, एवामेव समणा उसो ! जो अम्ह जाव पव्वत्तिए समाणे बहूण समणाण ४ बहूण अन्नउत्थिय गिहत्थाण सम्म सहइ एसण मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते । एव खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति, एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरे ण एक्कारसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जिस समय द्वीपोत्थ भी तथा समुद्रोत्थ भी ईषत्पुरोवात पश्चाद्वात यावत् बहते हैं उस समय पुष्पित पत्रित आदि समस्त दावद्रव वृक्ष शोभा सपन्न ही बने रहते हैं । इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो ! जो हमारा साधु साध्वीजन दीक्षित होता हुआ अनेक श्रमणादिकों के चतुर्विध सघ के-तथा अन्यतीर्थिक गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को अच्छी तरह सहन कर लेता है ऐसा साधु आदि जन मेरे द्वारा सर्वाराधक

પણ ચતુર્વિધ સંઘના અને બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના વચનોને સારી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ વગેરે જનો મારા વડે સર્વ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત કરવામા આવ્યા છે

(समणाउसो ! जयाण दीविच्चगावि सामुद्दगा वि ईसिं पुरे वाया पच्छावाया जाव वायंति, तया ण सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह जाव पव्वत्तिए समाणे बहूण समणाणं ४ बहूण अन्नउत्थियगिहत्थाण सम्म सहइ एसण मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते ! एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति, एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण एक्कारसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જ્યારે દ્વીપ અને સમુદ્ર ઉપરના પૂર્વ પશ્ચિમના ધીમા અને પ્રચંડ પવનો ફૂંકાય છે ત્યારે પાદડા અને પુષ્પોવાળા બધા દ્રાવદ્રવ વૃક્ષો શોભા સંપન્ન થઈને જ ઊભા રહે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા સાધુ અને સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો વગેરેના, ચતુર્વિધ સંઘના તેમજ બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂળ વચનો સાંભળીને

झोडा यावद् म्लान्तस्तिष्ठन्ति, अप्येकका =कतिपयाः यावद् उपशोभमानास्ति ष्ठन्ति । एवमेव हे श्रमणा आयुष्मन्त' ! यावत् प्रव्रजित सन् बहूना श्रमणानां ४ चतुर्विधसङ्घस्य, बहूनाम् अन्यतीर्थिकगृहस्थाना वचनानि नो सम्यक् सहते, एष खलु पुरुषः ' मए ' मया सर्वविराधकः ' प्रज्ञप्त । श्रमणा आयुष्मन्त । यदा खलु ' दीविच्चगावि ' द्वैप्या अपि 'सामुद्दगावि ' सामुद्रका अपि ईषत्पुरोवाता पश्चाद्वाता यावद् वान्ति तदा खलु सर्वे द्रावद्रवा वृक्षा पत्रिता यावत् श्रिया उपशोभमानाः २ तिष्ठति । एवमेव हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं यावत् प्रव्रजित सन् बहूना श्रमणाना ४=चतुर्विधसङ्घस्य बहूनाम् अन्यतीर्थिकगृहस्थाना प्रतिकूल वचनानि

वाया जाव महावाया वायंति-तयाण सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा चिट्ठंति, अप्पेगइया जाव उवसोभे माणा चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूण समणाण ४ बहूण अन्नउत्थियगिहत्थाण नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे सव्व विराहिए पण्णत्ते) हे आयुष्मन् श्रमणो जिस समय न तो द्वीपोत्थ पूर्व दिशा सबधी स्वल्प वायुएँ, पश्चिम दिशा सबन्धी स्वल्प वायुएँ, धीरे २ चलने वाली वायुएँ एव प्रचण्ड वेग शाली वायुएँ चलते हैं और न समुद्रोत्थ पूर्व दिशा सबन्धी स्वल्प वायुएँ, पश्चिम दिशा सबन्धी स्वल्प वायुएँ धीरे २ चलने वाली वायुएँ एव प्रचड वेग शाली वायुएँ चलते हैं उस समय भी जीर्ण शीर्ण दावद्रव वृक्ष म्लान ही रहते है-और जो पत्र पुष्पादिको से युक्त होते हैं वे भी जैसे होते हैं वैसे ही बने रहते हैं इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन एव निर्ग्रन्थ साध्वी जन दीक्षित होता हुआ भी चतुर्विध सघ के और

मिलायमाणा चिट्ठंति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूण समणाण ४ बहूण अन्नउत्थियगिहत्थाण नो सम्म सहइ एस ण मए पुरिसे सव्व विराहिए पण्णत्ते)

હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જ્યારે દ્વીપોના પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના પવનો ધીમે, ધીમે વહેતા પવનો, અને પ્રચડ વેગથી ફૂકાતા પવનો વહેતા નથી અને સમુદ્ર પરથઈને વહેતા પૂર્વદિશાના આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહે નારા પવનો, અને પ્રચડ વેગે ફૂકાતા પવનો વહેતા નથી ત્યારે પણ જીર્ણ, શીર્ણ દાવદ્રવ વૃક્ષો તો મ્લાન (કરમાયેલા) રહે છે અને પત્રપુષ્પ વગેરેથી સપન્ન દાવદ્રવ વૃક્ષો પણ જેવા છે તેવા જ રહે છે, આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુઓ અને નિર્ગ્રંથ સાધ્વીઓ [illegible] થઈને

सम्यक् सहते एष खलु=एवम्भूतः पुरुष 'मए' मया सर्वाराधकः प्रज्ञप्तः, एव खलु=अनेन प्रकारेण हे गौतम ! जीवा आराधका वा विराधका भवन्ति । सुधर्मा

अन्यतीर्थिक गृहस्थों के वचनो को अच्छी तरह सहन आदि नहीं करता है ऐसा यह साध्वादिजन मेरे द्वारा सर्व विराधक प्रज्ञप्त किया गया है । (समणा उसो ! जयाण दीविच्चगावि सामुद्दगावि ईसि पुरे वाया पच्छा वाया जाव वायति, तया ण सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठति, एवामेव समणा उसो ! जो अम्ह जाव पव्वत्तिए समाणे बहूण समणाण ४ बहूण अन्नउत्थिय गिहत्थाण सम्म सहइ एसण मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते । एव खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति, एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरे ण एक्कारसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जिस समय द्वीपोत्थ भी तथा समुद्रोत्थ भी ईषत्पुरोवात पश्चाद्वात यावत् बहते हैं उस समय पुष्पित पत्रित आदि समस्त दावद्रव वृक्ष शोभा सपन्न ही बने रहते हैं । इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो ! जो हमारा साधु साध्वीजन दीक्षित होता हुआ अनेक श्रमणादिकों के चतुर्विध सघ के--तथा अन्यतीर्थिक गृहस्थों के प्रतिकूल वचनों को अच्छी तरह सहन कर लेता है ऐसा साधु आदि जन मेरे द्वारा सर्वाराधक

પણ ચતુર્વિધ સઘના અને બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના વચનોને સારી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ વગેરે જનો મારા વડે સર્વ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞપ્ત કરવામા આવ્યા છે

(समणाउसो ! जयाण दीविच्चगावि सामुद्दगा वि ईसिं पुरे वाया पच्छावाया जाव वायति, तया ण सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठ ति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह जाव पव्वत्तिए समाणे बहूण समगाणं ४ बहूण अन्नउत्थियगिहत्थाण सम्म सहइ एसण मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते ! एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति, एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण एक्कारसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જ્યારે દ્વીપ અને સમુદ્ર ઉપરના પૂર્વ પશ્ચિમના ધીમા અને પ્રચડ પવનો ફૂકાય છે ત્યારે પાદડા અને પુષ્પોવાળા બધા દાવ દ્રવ વૃક્ષો શોભા સપન્ન થઈને જ ઊભા રહે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા સાધુ અને સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો વગેરેના, ચતુર્વિધ સઘના તેમજ બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂળ વચનો સાભળીને

स्वामी माह-एव खलु=पूर्वोक्तप्रकारेण हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सिद्धिगतिं सम्प्राप्तेन एकादशस्य अयं=पूर्वोक्तप्रकार अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः। 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि, इति पूर्ववत् ॥ सू० १॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक
लापालापक-प्रतिष्ठद्गद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-व्रतिविरचितायां 'ज्ञाताधर्मकथाङ्ग' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां एकादशमं अध्ययनं समाप्तम् ॥११॥

रूप से प्रज्ञप्त हुआ है। इस प्रकार हे गौतम ! जीव आराधक और विराधक होते हैं। सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामी से कहते है कि हे जम्बू! इस पूर्वोक्त रूप से श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि सिद्धि गति को प्राप्त कर चुके हैं ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन का यह अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने तुम से जैसा सुना है वैसा यह कहा है। इस में निज की कुछ भी कल्पना नहीं है। सूत्र ॥ १ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता धर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगार धर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का ग्यारहवा अध्ययन समाप्त ॥ ११ ॥

સારી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ જન વગેરે મારા વડે સર્વોત્તમ રૂપે પ્રજ્ઞપ્ત થાય છે આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવો આરાધકો અને વિરાધકો હોય છે સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે કે હે જબૂ ! સિદ્ધિગતિ પામેલા ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર મુજબનો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે મે જે રીતે સાભળ્યો છે તે જ રીતે આ અર્થ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે એમા મે મારી તરફથી કઈ જ ઉમેર્યું નથી ॥ સૂત્ર "૧" ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ અગિયારમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૧॥

अथ द्वादशमध्ययनं प्रारभ्यते—

गतमेकादशमध्ययनम्, साम्प्रतं द्वादशमारभ्यते, पूर्वस्मिन्नध्ययने चारित्रस्याराधकत्वं तद्विराधकत्वं च प्रोक्तम् इह तु उदकदृष्टान्तेन मलीमसपरिणामपरिणमितान्तःकरणानामपि भव्यानां सुगुरुपरिकर्म तत्रानिराधकत्वं भवतीति प्रदर्श्यते-अत्रेदमादिसूत्रम्—'जइणं भंते' इत्यादि ।

मूलम्-जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बारसमस्स णं नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं चंपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए जितसत्तू राया धारिणीदेवी, अदीण-

---

बारहवां अध्ययन प्रारंभ

जितशत्रु राजा सुबुद्धि प्रधान का वर्णन

ग्यारहवां अध्ययन समाप्त हो चुका अब बारहवां अध्ययन प्रारंभ होता है। इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से सम्बन्ध है-पूर्व अध्ययन में जो जीव चारित्र का पालन करता है वह आराधक और जो इससे विपरीत भाव वाला होता है वह विराधक है यह प्रकट किया गया है। अब इस अध्ययन में उदक के दृष्टान्त से यह प्रकट किया जायगा कि जिन भव्य जीवों का अन्तः करण मलीन परिणामों से परिणत हो रहा है-परन्तु उनमें यदि सुगुरु परिकर्मता-गुण विशेष का ग्रहण करना है तो उससे वहां चारित्राराधकता आ जाती है 'जइणं भंते !' इत्यादि ।

શત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ પ્રધાનનુ બારમુ અધ્યયન

અગિયારમુ અધ્યયન સમાપ્ત થઈ ચૂકયું છે અને હવે બારમુ અધ્યયન પ્રારભ થાય છે આનો પહેલા અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણે સબધ છે કે પહેલાના અધ્યયનમા જે જીવ ચારિત્રનુ પાલન કરે છે તે આરાધક અને જે એના વિપરીત ભાવવાળો હોય છે તે વિરાધક છે એ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે આ અધ્યયનમા ઉદકના દૃષ્ટાતથી આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ થશે કે જે ભવ્ય જીવોનુ અન્ત કરણ (અતર) બરાબ પરિણામોથી પરિણત થઈ રહ્યુ છે, પણ તેમનામા જે સુગુરુ પરિકર્મતા ગુણ વિશેષનુ ગ્રહણ કરવુ છે તો ત્યા ચારિત્રા રાધકતા આવી જાય છે જ ઇ ણ મતે ઇત્યાદિ

स्वामी माह-एव खलु=पूर्वोक्तप्रकारेण हे जम्बू. ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सिद्धिगतिं सम्प्राप्तेन एकादशस्य अयं=पूर्वोक्तप्रकार अर्थः=भाव' प्रज्ञप्तः। 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि, इति पूर्ववत् ॥ सू० १॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-व्रतिविरचितायां 'ज्ञाताधर्मकथाङ्ग' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां एकादशमध्ययन समाप्तम् ॥११॥

रूप से प्रज्ञप्त हुआ है। इस प्रकार हे गौतम! जीव आराधक और विराधक होते हैं। सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामी से कहते है कि हे जम्बू! इस पूर्वोक्त रूप से श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि सिद्धि गति को प्राप्त कर चुके हैं ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन का यह अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने तुम से जैसा सुना है वैसा यह कहा है। इस में निज की कुछ भी कल्पना नहीं है। सूत्र ॥ १ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता धर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगार धर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का ग्यारहवां अध्ययन समाप्त ॥ ११ ॥

સારી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ જન વગેરે મારા વડે સર્વારાધક રૂપે પ્રજ્ઞપ્ત થાય છે આ પ્રમાણે હે ગૌતમ! જીવો આરાધકો અને વિરાધકો હોય છે સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે કે હે જબૂ! સિદ્ધિગતિ પામેલા ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર મુજબનો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે મે જે રીતે સાભળ્યો છે તે જ રીતે આ અર્થ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે એમા મે મારી તરફથી કઈ જ ઉમેર્યું નથી ॥ સૂત્ર "૧" ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગાર ધર્મા મૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ અગિયારમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૧॥

धारिणीदेवी, अदीनशत्रुर्नाम कुमार'=जितशत्रुराजपुत्र 'जुवराया' युवराजः= युवराजत्वेऽभिषिक्तश्चाप्यानीत् । सुबुद्धिर्नामाऽमात्य औत्पातिक्यादिबुद्धि चतुष्ट ययुक्त. यावद् 'रज्जधुराचिंतए' राज्यधुराचिन्तकः=राज्यभारचिन्तक 'समणो वासए' श्रमणोपासक=श्रावकोऽभिगतजीवाजीवआसीत् । तस्याश्चम्पाया नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये एक 'परिहोदए' परिखोदक परिखा=दुर्गस्य चतुर्दिक्षु रिपुप्र भृतीना प्रवेष्टुमशक्या गर्त्तरूपावेष्टनाकारभूमि., तत्र सम्भृतमुदक परिखोदक 'खाईजल' इतिभाषाप्रसिद्ध चाप्यासीत् । तत्कीदृशम् ? इत्याह—'मेयवसा'

प्ररूपित किया है ?। हे जबू ! सुनो-जो उन्होने १२वें अध्ययनका अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है- (तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था) उस काल और उस समय में चपा नाम की नगरी थी। उसमे पूर्णभद्र नाम का उद्यान था। उस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था। इस की धारिणी देवी नाम की रानी थी। अदीन शत्रु नाम का इस का पुत्र था। यह युवराज था। (सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुराचिंतए समणोवासए) सुबुद्धि नाम का इस का अमात्य था। यह औत्पत्तिकी आदि चारो प्रकार की बुद्धि से सपन्न था। यावत् यही राज्यभार का चिंतक था। जीव अजीव आदि तत्त्वो का यह ज्ञाता था और श्रमणोपासक था। (तीसे ण चपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था) उस चपा नगरी के बाहर उत्तरपौरस्त्यदिग्भाग मे-ईशानकोण मे-परि खोदक-खाईमें जल भरा था। दुर्ग (किल्ला)के चारो ओर बाहरकी तरफ

(तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी अदीणसत्त नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था)

તે કાળે અને તે સમયે ચપા નામે નગરી હતી તેમા પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતો તે નગરીના રાજાનુ નામ જીતશત્રુ હતુ ધારિણીદેવી નામે તેની પત્ની હતી તેના પુત્રનુ નામ અદીનશત્રુ હતુ અને તે યુવરાજ હતો (सुबुद्धि अमच्चे जाव रज्जधुरा चिंतए समणोवासए) સુબુદ્ધિ નામે તેનો અમાત્ય (મત્રી) હતો તે ઔત્પત્તિકી વગેરે ચારે પ્રકારની બુદ્ધિસપન્ન હતો અને રાજ્યનુ શાસન તેના હાથમા જ હતુ જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વોનુ તેને જ્ઞાન હતુ અને તે શ્રમણોપાસક હતો

(तीसेण चपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिखोदए यावि होत्था)

ચપા નગરીની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિશામા-ઇશાન કોણમા-પરિખોદક ખાઇમા પાણી ભર્યું હતુ દુર્ગની ચોમેર બહારની બાજુએ કોટની પાસે

सत्तू नाम कुमारं जुवराया यावि होत्था, सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुराचिंतए समणोवासए, तीसेणं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे परिहोदए यावि होत्था, मेय-वसामंसरुहिरपूयपडलपोच्चडे मयगकलेवरसंछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं जाव फासेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव मयकुहियविणट्ठकिमिणवावण्णदुरभिगंधे किमिजालाउले संसत्ते असुइविगयबीभत्थदरिसणिज्जे, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो अणिट्ठतराए चेव फासेणं पण्णत्ते ॥सू० १॥

टीका—जम्बूस्वामीप्राह-यदि खलु भदन्त ! हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्स-म्माप्तेन एकादशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः द्वादशस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थं प्रज्ञप्तः ? श्री सुधर्मास्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितशत्रूराजा,

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈ કિ (जइ ण भंते ! समणेणं जाव सपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयम० बारस मस्स ण णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ?) હે ભદન્ત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને કિ જો સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ગ્યારહવેં જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે ભાવ અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ-તો કહિયે ઉન્હો ને બારહવેં જ્ઞાતાધ્યયનકા ક્યા અર્થ

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી શ્રીસુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(जइणं भंते ! समणेणं जाव सपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयम० बारसमस्स ण णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू !)

હે ભદન્ત ! સિદ્ધગતિ પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તેઓશ્રીએ બારમા અધ્યયનનો શો ભાવ અર્થ નિરુપિત કર્યો છે હે જબૂ સાભળો તેઓ શ્રીએ બારમા અધ્યયનનો જે રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કર્યો છે તે આ પ્રમાણે છે—

धारिणीदेवी, अदीनशत्रुर्नाम कुमारः=जितशत्रुराजपुत्र 'जुवराया' युवराजः= युवराजत्वेऽभिषिक्तश्चाप्यासीत् । सुबुद्धिर्नामाऽमात्य औत्पातिक्यादिबुद्धि चतुष्टयसयुक्त. यावद् 'रज्जधुरावितए' राज्यधुराचिन्तक'=राज्यभारचिन्तक 'समणोवासए' श्रमणोपासक=श्रावकोऽभिगतजीवाजीवआसीत् । तस्याश्चम्पाया नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये एक 'परिहोदए' परिखोदक परिखा=दुर्गस्य चतुर्दिक्षु रिपुप्रभृतीना प्रवेष्टुमशक्या गर्त्तरूपावेष्टनाकारभूमि, तत्र सम्भृतमुदक परिखोदक 'खाईजल' इतिभाषाप्रसिद्ध चाप्यासीत् । तत्कीदृशम् ? इत्याह—'मेयवसा'

प्ररूपित किया है ?। हे जम्बू ! सुनो-जो उन्होने १२वें अध्ययनका अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है- (तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था) उस काल और उस समय में चपा नाम की नगरी थी। उसमे पूर्णभद्र नाम का उद्यान था। उस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था। इस की धारिणी देवी नाम की रानी थी। अदीन शत्रु नाम का इस का पुत्र था। यह युवराज था। (सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुरावितए समणोवासए) सुबुद्धि नाम का इस का अमात्य था। यह औत्पत्तिकी आदि चारो प्रकार की बुद्धि से सपन्न था। यावत् यही राज्यभार का चिन्तक था। जीव अजीव आदि तत्त्वो का यह ज्ञाता था और श्रमणोपासक था। (तीसे ण चपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था) उस चपा नगरी के बाहर उत्तरपौरस्त्यदिग्भाग मे-ईशानकोण में-परिखोदक-खाईमे जल भरा था। दुर्ग (किल्ला)के चारो ओर बाहरकी तरफ

(तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था)

તે કાળે અને તે સમયે ચપા નામે નગરી હતી તેમા પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતો તે નગરીના રાજાનુ નામ જીતશત્રુ હતુ ધારિણીદેવી નામે તેની પત્ની હતી તેના પુત્રનુ નામ અદીનશત્રુ હતુ અને તે યુવરાજ હતો (सुबुद्धि अमच्चे जाव रज्जधुरा चिंतए समणोवासए) સુબુદ્ધિ નામે તેનો અમાત્ય (મત્રી) હતો તે ઔત્પત્તિકી વગેરે ચારે પ્રકારની બુદ્ધિસપન્ન હતો અને રાજ્યનુ શાસન તેના હાથમા જ હતુ જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વોનુ તેને જ્ઞાન હતુ અને તે શ્રમણોપાસક હતો

(तीसेण चपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था)

ચપા નગરીની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિશામા-ઈશાન કોણમા-પરિખોદક ખાઇમા પાણી ભર્યું હતુ દુર્ગની ચોમેર બહારની બાજુએ કોટની પાસે

इत्यादि, ' मेयवसामसरुहिरपूयपडलपोच्चड ' मेदोवसामासरुधिरपूयपटलपोच्चड ' मेदः=शरीरस्थधातुविशेषः, वसा= अस्थिगतस्निग्धधातुविशेषः, ' चर्बी ' इति प्रसिद्धः मांस=मसिद्ध रुधिर=शोणित, पूय=विकृतरुधिरम् , तेषा पटलेन=समूहेन पोच्चड=मिश्रित सयुद्बुदमित्यर्थः। ' मयगकलेवरसछन्ने ' मृतकलेवर सछन्न=श्वमार्जारादिमृतकलेवरसभृतम् । ' असणुण्ण ' अमनोज्ञम्-अरुचिकरं वर्णेन ' जाव ' यावत्-गन्धेन रसेन स्पर्शेन च मनोविकृतिजनकमित्यर्थः। तदेव सदृष्टान्तं प्रश्नोत्तरेण वर्णयति-' से जहानामए ' तद् यथा नामकम्-यथा दृष्टान्तम्-यथा-' अहिमडेइवा ' अहिमृतकमिति वा=सर्पमृतकम् , ' गोमडेइ वा ' गोमृतकमिति वा ' जाव ' यावत्-पद यावच्छब्देन-श्वमृतक, मार्जारमृतक, मनुष्यमृतक, महिष

उस से लगा हुआ एक गोलाकार बडी भारी खाई थी। इस की वजह से शत्रु उस दुर्ग-किले में सहसा-एकाएक प्रविष्ट नही हो सकते। इस में पानी भरा रहता है। इस का नाम खातिकोदक भी है। (मेयवसामसरुहिर-पूय-पडल-पोच्चडे मयगकलेवरसछन्ने अमणुन्ने वण्णेण जाव फासेण-से जहा नामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मयकुहियविणट्ठकिमिणवावण्णदुरभिगंधे, किमिजालाउले ससत्ते असुइविगयबीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ? णोइणट्ठे समट्ठे एतो अणिट्ठत्तराए चेव जाव फासेण पण्णत्ते यह परिखा का पानी, मेदावसा-चर्बी-मास, रुधिर, पूय-पीव, के समूहसे मिश्रित था। कुत्ते, मार्जार आदि के मृत शरीरों से युक्त था! अरुचिकारक था गन्ध, रस एव स्पर्श से यह मनो विकृति जनक बना) हुआ था। इसी बात को दृष्टान्त द्वारा प्रकट किया जाता है-जिस प्रकार मर जाने के बाद श्वमृतक-मरे हुए कुत्ते का कलेवर बिल्ली का

ગોળાકારે એક મોટી ખાઈ હતી તેથી શત્રુ એકાએક સરળતાથી દુર્ગમા પ્રવેશવાની હિમ્મત કરી શકતા નહોતા, તેમા પાણી ભરેલુ હતું આનુ બીજુ નામ 'ખાતિકોદક' પણ છે

(मेयवसा मसरुहिरपूयपडलपोच्चडे मयगकलेवरसछन्ने अमणुन्ने वण्णेण जाव फासेणं से जहानामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मय कुहिय विणट्ठ किमिणवावण्णदुरभिगंधे, किमिजालाउले ससत्ते असुइविगयबीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, एतो अणिट्ठत्तराए चेव जाव फासेण पण्णत्ते)

આ પરિખા-ખાઇનુ પાણી પુષ્કળ પ્રમાણમા મેદા, વસા, ચરબી, માસ, રુધિર, લોહી, પૂય,-પરુથી મિશ્રીત હતુ કૃતરા, બિલાડા વગેરેના મરી ગયેલા શબોથી તે યુક્ત હતું તે અરુચિકારક હતું અને ગધ, રસ તથા સ્પર્શથી મનોવિકૃતિજનક હતુ એ જ વાત દૃષ્ટાત વડે અહીં રજુ કરવામા આવે છે જેમ મરી ગયા પછી શ્વમૃતક મરી ગયેલા કૃતરાનુ કલેવર (શરીર) બિલાડીનુ કલેવર,

मृतक, मूषकमृतकम्, अश्वमृतक, हस्तिमृतक, सिंहमृतक, व्याघ्रमृतक, वृकमृतक= वृकः 'भेडिया' इति प्रसिद्धः-श्वापदविशेषस्तस्य मृतकलेवरम्, द्वीपिकमृतक= द्वीपिकः=चित्रकः 'चीता' इतिप्रसिद्धः श्वापदविशेषस्तस्य मृतशरीरम्-, इति संग्राह्यम्, कीदृशावस्थापन्न तदहिमृतादिकम् ? इत्याह--'मयकुहियविणट्ठ किमिणवावण्णदुरभिगंधे' मृतकुथितविनिष्टकृमिमद् व्यापन्नदुरभिगन्धम्=मृत= जीवविमुक्तमात्रमेव कुथित शटित, विनष्ट=स्वाकारतो नष्ट वायुजलभरणेन इति-वत्स्थूलतामुपगतमित्यर्थः, कृमिवत्=चिरकालिकत्वात्कृमिसकुलम्, अतएव व्यापन्न= सर्वदिक् प्रसृत दुरभिगन्धम्=अतिशयदुर्गन्धयुक्तम्। 'किमिजालाउले' कृमिजाला-

---

कलेवर, मनुष्य का कलेवर महिष भैंसे का कलेवर, चुहा का कलेवर, घोडे का कलेवर, हाथी का कलेवर, सिंह का कलेवर, व्याघ्र का कलेवर, वृक का कलेवर, द्वीपिक का कलेवर कुथित, विनष्ट, कृमिमत, व्यापन्न एव दुरभिगध युक्त कृमिजालाकुल-कीडो से व्याप्त तन्मय, अशुचि, विकृत एव वीभत्स, दृश्य रूप हो जाते हैं-सो इन सब से भी अधिक अनिष्टतर-अत्यत घृणा जनक-वह खाई का जल था। मरने के बाद शरीर जो सड़ने लग जाता है इस का नाम कुथित है। वायु और जल के भर जाने से जिस प्रकार मशक फूल जाती है उसी प्रकार जीव रहित होने के बाद जो शरीर फूल जाता है इस का नाम विनष्ट है। इस स्थिति मे वह पदार्थ अपने पूर्वाकार से भिन्नाकार वाला हो जाता है। जो शरीर बहुत दिनो तक जीव रहित पडा रहता है उस मे सड़ जाने की वजह से कीडे पड जाते हैं-इस का नाम कृमिमत् है। जिस मे से

માણસનુ કલેવર, પાડાનુ કલેવર, ઉદરનુ કલેવર, ઘોડાનુ કલેવર, હાથીનુ કલેવર, સિંહનુ કલેવર, વાઘનુ કલેવર, વરુનુ કલેવર અને દીપડાનુ કલેવર, કુથિત, વિનષ્ટ, કીડાઓવાળુ, વ્યાપન્ન અને દુરભિ-ગધયુક્ત કૃમિઓથી આક્રાત કીડાઓથી વ્યાપ્ત-તન્મય, અશુચિ વિકૃત અને બીભત્સ દૃશ્યવાળુ થઈ જાય છે તેમ એના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટતર અત્યત ઘણાજનક તે ખાઈનુ પાણી હતું મરણ પછી શરીર સડવા માડે છે તેને 'કુથિત' કહે છે જેમ પવન અને પાણીથી ભરાએલી મશક ફૂલીને મોટી થઈ જાય છે તેમજ નિર્જીવ થયેલુ શરીર પણ ફુલાઈને મોટુ થઇ જાય છે તેનુ નામ 'વિનષ્ટ' છે પદાર્થની જ્યારે આવી સ્થિતિ થાય છે ત્યારે તે પહેલાના આકાર પ્રકારથી સાવ ભિન્ન આકાર વાળોથઈ જાયછે શરીર બહુ દિવસો નિર્જીવ થઈને મડદાના રૂપમા પડી રહે છે ત્યારે તે સડી જવાથી તેમા કીડાઓ પડી જાય છે, અને કૃમિમત્ કહે છે,

कुल=कृमिपुञ्जयुक्त यत्र तन्नावयवे पुञ्जीभूतकृमिव्याप्तम्, आत्र 'ससत्त' ससक्त तन्मयमित्यर्थः, 'असुइ विगयबीभत्थदरिसणिज्ज' अशुचिविकृतबीभत्स दर्शनीयम् अशुचि=अस्पृश्यत्वादपवित्र, विकृत=विकारयुक्त, बीभत्स=घृणित दर्शनीय=दृश्य यस्य तत्तथोक्तम् 'एयारूवेसिया' एतद्रूप स्यात्-किम् अहिमृतादि सदृश स्यात्-अस्ति ?, इति प्रश्नो भवेत् भगवानाह-'नो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थ समर्थः-नैतादृश किन्तु-' एत्तो ' एतस्मादपि अणिट्ठतराए चेव ' अनिष्टतरमेव अत्यन्तघृणाजनक यावत् स्पर्शेन प्राप्तम् ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तएण से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए कयवलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभिईहि सद्धि भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए विपुल असण४ जाव विहरति, जिमियभुत्तुत्तरागए आयते चोक्खे परमसुइभूये तंसि विपुलंसि असण ४ जाव जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पभिइए एव वयासी-अहो ण देवाणुप्पिया! इमे मणुण्णे असण४ वण्णेण उववेए जाव फासेण उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे, तएण ते बहवे ईसर जाव पभिइओ जियसत्तू एव वयासी-तहेव ण सामी ! जण्ण तुब्भे वयह अहो ण इमे मणुण्णे असण४ वण्णेण उववेए जाव पल्हायणिज्जे, तएणं

चारों ओर दुर्गंध फैल रही हो उस का नाम दुरभिगंध है। सड जाने के बाद जिस के अंग उपांग सब तरफ बिखरे हुए पडे हो उस का नाम व्यापन्न है। यहा मृतक शब्द से जीव रहित शरीर लिया गया है। सूत्र ॥१॥

'જેમાથી ગામેર દુર્ગંધ પ્રસરી રહે છે તેને 'દુરભિગંધ' કહે છે આખુ સડી જાય છે અને તેના બધા અંગો ઉપાંગો ચોમેર વિખેરાઈ જાય તેને 'વ્યાપન્ન' કહે છે અહીં મૃતક શબ્દથી નિર્જીવ શરીર સમજવુ જોઈએ - "૧" ॥

जितसत्तू सुबुद्धिअमच्च एव वयासी–जहा ण सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असण४ जाव पल्हायणिज्जे, तएण सुबुद्धी जितसत्तू-स्सेयमट्ठ नो आढाइ जाव तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण जिय-सत्तू सुबुद्धि दोच्चंपि तच्चपि एव वयासी–अहो ण सुबुद्धी ! इमे मणुन्ने त चेव जाव पल्हायणिज्जे, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि तच्चपि एववुत्ते समाणे जितसत्तू राय-एव वयासी–नो खलु सामी ! अम्ह एयसि मणुण्णसि असणं ४ केइ विम्हए, एव खलु सामी ! सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भि-सद्दत्ताए परिणमति दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परि-णमति, सुरूवावि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमति दुरूवावि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमति सुब्भिगधावि पोग्गला दुब्भि-गंधत्ताए परिणमति दुब्भिगधावि पोग्गला सुब्भिगधत्ताए परि-णमति सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमति सुहफासावि पोग्गला दुहफासत्ताए परि-णमति दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति पओग-वीससापरिणयावि य ण सामी ! पोग्गला पण्णत्ता, तएण से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ठ नो अटाइ नो परियाणई तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण से जिय-सत्तू अण्णया कयाई ण्हाए आसखधवरगए महया भडचरगर आसवाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसाम-तेण वीइवयइ । तएण जितसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण

गधेणं अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेणं आसगं पिहेइ, एगतं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता ते वहवे ईसर जाव पभिइओ एव वयासी–अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए। अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएणं ते वहवे राईसरपभिइओ जाव एवं वयासी–तहेव ण त सामी ! जं णं तुब्भे एव वयह, अहो ण इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा णामए अहिमडेइवा जाव अमणामतराए चेव, तएण ते वहवे राईसर पभिइओ जाव एव वयासी–तहेव ण त सामी ! ज ण तुब्भे एव वयह, अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एव वयासी – अहो णं सुबुद्धि ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए, चेव, तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी –अहो ण त चेव, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रन्ना दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे एव वयासी—नो खलु सामी ! अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए, एव खलु सामी ! सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति, त चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य ण सामी ! पोग्गला पण्णत्ता, तएण जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासी -सा ण तुमं

देवाणुप्पिया ! अप्पाण च परं च तदुभय वा वहूहि य असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि, तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए- अहो ण जियसत्तू सते तच्चे ताहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति, तं सेय खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो सताणं तच्चाण ताहियाण अवितहाण सब्भूताण जिणपण्णत्ताण भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणावेत्तए, एव सपेहेइ, संपेहित्ता पच्चतिएहि पुरिसेहि सद्धि अंतरावणाओ नवए घडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता सझाकालसमयसि पविरलमणुस्संसि णिसंतपडिनिसंतसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त फरिहोदग गेण्हावेइ गेण्हावित्ता नवएसु घडएसु गालावेइ गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ पक्खिवावित्ता लछियमुद्दिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ दोच्चपि नवएसु घडएसु, गालवेइ गालवित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ पक्खिवावित्ता सज्जक्खार पक्खिवावेइ लछियमुद्दिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ तच्चपि णवएसु घडएसु जाव सवसावेइ एव खलु एएण उवाएण अतरा गलावेमाणे अतरा पक्खिवावेमाणे अतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त२ राइंदिया विपरिवसावेइ, तएण से फरिहोदए सत्तमसत्तयसि परिणममाणसि उदगरयणे जाए यावि होत्था अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेण उववेए

गंधेणं अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जगेणं आसग पिहेइ, एगंत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता ते वहवे ईसर जाव पभिइओ एव वयासी–अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए ! अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएणं ते वहवे राईसरपभिइओ जाव एव वयासी–तहेव ण त सामी ! ज णं तुब्भे एव वयह, अहो ण इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा णामए अहिमडेइवा जाव अमणामतराए चेव, तएण ते वहवे राईसर पभिइओ जाव एव वयासी–तहेव णं त सामी ! ज ण तुब्भे एव वयह, अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जियसत्तू सुबुद्धि अमच्च एव वयासी – अहो णं सुबुद्धि ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए, चेव, तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी -अहो ण त चेव, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रन्ना दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे एव वयासी—नो खलु सामी ! अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए, एव खलु सामी ! सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति, त चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य ण सामी ! पोग्गला पण्णत्ता, तएण जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी -मा ण तुमं

भोयणवेलाए इम उदगरयण न उवट्ठवेसि ? त एसण तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणं कओ उवलद्धे ?, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-- एसण सामी ! से फरिहोदए, तएण से जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी--केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए ?, तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-एव खलु सामी! तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ठ नो सद्दहह तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था, अहोणं जियसत्त सते जाव भावे नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ त सेय खलु मम जियसत्तुस्स रन्नो सताण जाव सब्भूयाण जिणपन्नत्ताणं भावाण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणावेत्तए, एवं सपेहेमि२ त चेव जाव पाणियघरिय सद्दावेमि सद्दावित्ता एवं वयासी–तुम ण देवाणुप्पिया ! उदगरयण जियसत्तूस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेहि, त एएण कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए । तएण जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ठ नो सद्दहइ३ असद्दहमाणे३ अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ२ एव वयासी–गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया ! अतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदगसभारणिज्जेहि दव्वेहि सभारेह तेऽवि तहेव सभारेंति सभारित्ता जियमत्तुस्स उवणेति, उवणित्ता तएण जियसत्तू राया त उदगरयण करयलसि आसाएइ आसायणिज्ज जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धि अमच्च सद्दावेइ सद्दावित्ता एव

४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे, तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवा०२ करयलसि आसादेइ आसादित्ता त उदगरयण वण्णेण उववेयं४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिइज्ज जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहि उदगसभारणिज्जेहि सभारेइ सभारित्ता जितसत्तूस्स रण्णो पाणियघरिय सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी तुम च ण देवाणुप्पिया ! इम उदगरयणं गेण्हाहि२ जियसत्तूस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेज्जासि, तएण से पाणियघरिय सुबुद्धियस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता त उदगरयण गिण्हाइ गिण्हित्ता जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ, तएण से जियसत्तू राया त विपुल असणं४ आसाएमाणे जाव विहरइ, जिमियभुत्तुत्तरागए यावि य णं जाव परमसुइभूए तासि उदगरयणे जायविम्हए ते बहवे राईसर जाव एव वयासी—अहो ण देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे तएणं बहवे राईसर जाव एव वयासी—तहेव ण सामी ! जण्ण तुब्भे वदह जाव एव चेव पल्हाणिज्जे, तएण जियसत्तू राया पाणियघरिय सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—एस णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसादिते ?, तएण से पाणियघरिए जियसत्तू एव वयासी—एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अतियाओ आसाइए तएण जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्च सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—अहो ण सुबुद्धी केण कारणेण अह तव अणिट्ठं५ जेण तुम मम कल्लाकल्लिं

भोयणवेलाए इम उदगरयण न उवट्ठवेसि ? त एसण तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणं कओ उवलद्धे ?, तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-- एसण सामी ! से फरिहोदए, तएण से जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी--केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए?, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-एव खलु सामी! तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ठ नो सद्दहह तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था, अहोण जियसत्त संते जाव भावे नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ त सेय खलु मम जियसत्तूस्स रन्नो सताणं जाव सब्भूयाणं जिणपन्नत्ताणं भावाण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणावेत्तए, एव सपेहेमि२ त चेव जाव पाणियघरिय सद्दावेमि सद्दावित्ता एवं वयासी–तुम ण देवाणुप्पिया ! उदगरयण जियसत्तूस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेहि, त एएण कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए । तएण जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ठ नो सद्दहइ३ असद्दहमाणे३ अब्भितरट्ठणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ२ एव वयासी–गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया ! अतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदगसभारणिज्जेहि दव्वेहि सभारेह तेऽवि तहेव सभारेंति सभारित्ता जियसत्तूस्स उवणेति, उवणित्ता तएण जियसत्तू राया त उदगरयण करयलसि आसाएइ आसायणिज्ज जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धि अमच्च सद्दावेइ सद्दावित्ता एव

वयासी–सुबुद्धी ! एएणं तुमं सता जाव सब्भूया भावा कओ उवलद्धा ?, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं वयासी–एएण सामी! मए सता जाव सब्भूया भावा जिणवयणाओ उवलद्धा, तएणं जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी–त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तव अतिए जिणवयणं निसामेत्तए, तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्स विचित्तं केवलिपन्नत्त चाउज्जाम धम्म परिकहेइ, तमाइक्खइ जहा जीवा बज्झति जाव पच अणुव्वयाइ, तएण जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धिं अमच्चं एव वयासी –सद्दहामि ण देवाणुप्पिया ! निग्गंथ पावयणं३ जाव से जहेव जं तुब्भे वयह, त इच्छामि णं तव अंतिए पचाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइय जाव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध० तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए पचाणुव्वइय जाव दुवालसविह सावयधम्म पडिवज्जइ, तएण जियसत्तू समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमण जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ, सुबुद्धी धम्म सोच्चा ज नवर जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिया! तएणं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी–एवं खलु सामी ! मए थेराण अतिए धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएण अहं सामी संसारभउविग्गे भीए जाव इच्छामिण तुब्भेहि अब्भणुन्नाए स० जाव पव्वइत्तए, तएणं जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी–अच्छासु ताव देवाणु-

पिया ! कइवयाइति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो, तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, तएण तस्स जियसत्तूस्स सुबुद्धीणा सद्धि विपुलाइ माणुस्स० पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालसवासाइ वीइक्कताइ तेणं कालेणं२ थेरागमणं तएण जियसत्तू धम्म सोच्चा एव ज नवरं देवाणुप्पिया ! सुबुद्धि आमंतेमि, अहासुह, तएण जियसत्तू जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सुबुद्धि सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुम णं किं करेसि ?, तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि, त जइणं देवाणुप्पिया जाव पव्वयहि त गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्त च कुडुवे ठावेहि ठावित्ता सीय दुरुहित्ताण मम अतिए पाउब्भवइ, तएण जियसत्त कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी--गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेय उवट्ठवेह जाव अभिसिचति जाव पव्वइए। तएणं जियसत्तू एक्कारस अगाइ अहिज्जइ बहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे तएणं सुबुद्धी एक्कारसअगाइ अहिज्जइ बहूणि वासाणि जाव सिद्धे । एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण वारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ५ ॥

॥ वारसम नाअज्झयण समत्त ॥

टीका-'तएण से' इत्यादि। तत खलु स जितशत्रू राजा=चम्पाधिपति अन्यदा

कदाचित्=एकदा स्नात. ' कयबलिकम्मे ' कृतबलिकर्मा=कृत वायसाद्यर्थमन्नादि विभागः यावद् अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरः बहुभिः राजेश्वर यावत् सार्थवाह प्रभृतिभिः सार्द्धं भोजनवेलायां भोजनमण्डपे सुखासनवरगतो विपुलम् अशनम्= अन्नादिक, पान=पानीयमपानकादिक, खाद्य=द्राक्षाबादामादिक स्वाद्य=लवग पूगीफलादिक चतुर्विधमप्याहारमास्वादयन् ' जाव विहरइ ' यावत् विस्वादयन्, परिभोगयन्, परिभाज्यमान., परिभुञ्जानो विहरति । ' जियसत्तू राया ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से जियसत्तू राया) वे जितशत्रु राजा (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभिईहिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए विउलं असणं४ जाव विहरइ) स्नान करके तथा बलिकर्म-वायस आदि के लिये अन्नादि का विभाग-देन करके अल्प भारवाले बहुमूल्य अलंकारोंको पहिने हुए भोजन करने के समय में भोजन शाला में सुन्दर आसन पर आकर बैठ गये। उस समय उनके साथ में और भी अनेक राजेश्वर आदि सार्थवाह पर्यन्त समस्त जन थे। वहां इन सबके साथ वे वहां आशनपान आदि चारों प्रकार का आहार करने लगे। अन्नादिक अशन पीने योग्य पदार्थ पान, द्राक्षा बादाम आदि खाद्य एवं लवंग सुपारी आदि स्वाद्य है।

' तएणं से जियसत्तू राया ' इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (से जियसत्तू राया) ते જીતશત્રુ રાજા (अन्नया कयाइ) કોઈ વખતે

(ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभिईहिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए विउलं असणं ४ जाव विहरइ)

સ્નાન કરીને તેમજ બલિકર્મ એટલે કે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને માટે અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને વજનમા હલકા પણ કિંમતમા બહુ ભારે એવા અલંકારો ધારણ કરીને જમવાના સમયે રસોઈ ઘરમા આવીને સુંદર આસન ઉપર બેસી ગયા તે વખતે તેમની સાથે બીજા કેટલાક રાજેશ્વર અને સાર્થવાહો વગેરે હતા રાજા તેઓ બધાની સાથે બેસીને અશન પાન વગેરે ચાર જાતના આહારો જમવા લાગ્યા અન્ન વગેરે અશન, પીવા યોગ્ય પદાર્થ પાન, દ્રાક્ષ, બદામ વગેરે ખાદ્ય અને લવિંગ-સોપારી વગેરે સ્વાદ્ય છે

जिमितभुक्तोत्तरागत -जिमित.=भुक्तवान् , भुक्तोत्तर= भोजनानन्तरम् आगत = उपवेशनस्थान प्राप्त', किम्भूतः सन् ? इत्याह-' आयते ' आचान्त शुद्धोदकेन कृतचुलुक , ' चोक्खे ' चोक्ष'=सिक्थादिलेपरहित , अतएव ' परमसुइभूए ' परमशुचिभूतः = परमशुद्धः तस्मिन् विपुलेऽशनपानखाद्यस्वाद्ये यावद् ' जाय विम्हए ' जातविस्मयः=समुत्पन्नपरमाश्चर्यो जितशत्रू राजा तान् बहून् ईश्वर यावत्-प्रभृतीन्-ईश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिक-श्रेष्ठि सेनापति सार्थवाह प्रभृतीन् एवमवदत्-अहो ! खलु हे देवानुप्रिया ! इद ' मणुण्णे ' मनोज्ञ=सर्वथा

(जिमियभुत्तुत्तरागए आयते चोक्खे परमसुइभूए तंसि विउलंसि असण ४ जाव जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पभिइए एव वयासी) जब अच्छी तरह भोजन हो चुका-वे सबके सब बैठक में आये। बैठक में आने के पहिले ये हाथ मुँह धोकर बिलकुल साफ हो चुके थे। अन्नादिकके सीत जो इनके हाथ पैरों मे कहीं २ पड गये थे-उन्हें जल से इन्होने साफ कर दिया था-धो दिया था। इस तरह परम शुचीभूत होकर राजाने उस विपुल आशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में विस्मित आश्चर्ययुक्त बन कर उन ईश्वर, तलवर, माडविक, कौटुम्बिक,श्रेष्ठी, सेनापति एव सार्थवाह आदिको से इस प्रकार कहा- (अहोणं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असण४वण्णेण उववेए जाव फासेण उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे, दीवणिज्जे, दप्पणिज्जे मयणिज्जे, बिंहणिज्जे, सव्विंदियगाय परहायणिज्जे) देवानु

(जिमियभुत्तुत्तरागए आयते चोक्खे परमसुइभूए तंसि विउलंसि असण-४ जाव जायविम्हए ते बहवे ईसरजाव पभिइए एव वयासि)

જ્યારે તેઓ સરસ રીતે તૃપ્ત થઇને જમી રહ્યા ત્યારે તેઓ સર્વે બેઠકમા આવ્યા બેઠકમા આવતા પહેલા તેઓ હાથ મો ધોઈને સ્વચ્છ થઇ ચૂકયા હતા અન્ન વગેરેના દાણા તેમના શરીર ઉપર જમતી વખતે પડી ગયા હતા તેઓને પાણીથી ધોઇને સાફ કર્યા આ રીતે એકદમ પવિત્ર થઇને પુષ્કળ પ્રમાણમા તૈયાર કરવામા આવેલા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારોથી નવાઈ પામેલા રાજાએ બીજા સાથે રહેલા ઈશ્વર, તલવર, માડલિક કૌટુબિક, શ્રેષ્ઠ સેનાપતિ અને સાર્થવાહ વગેરેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-

(अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असण ४ वण्णेण उववेए जाव फासेण उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे, दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे विंहणिज्जे सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे)

कदाचित्=एकदा स्नात. ' कयबलिकम्मे ' कृतबलिकर्मा=कृत वायसाद्यर्थमन्नादि विभागः यावद् अल्पमहार्घाभरणालंकृतशरीरः बहुभि राजेश्वर यावत् सार्थवाह प्रभृतिभिः सार्द्धं भोजनवेलायां भोजनमण्डपे सुखासनवरगतो विपुलम् अशनम्= अन्नादिक, पान=पानीयमपाणकादिक, खाद्य=द्राक्षाबादामादिक स्वाद्य=लवंग पूगीफलादिक चतुर्विधमप्याहारमास्वादयन ' जाव विहरइ ' यावत् विस्वादयन, परिभोगयन्, परिभाज्यमानः, परिभुञ्जानो विहरति। ' जियसत्तू राया ' इत्यादि।

टीकार्थ-'तएणं) इसके बाद (से जियसत्तू राया) वे जितशत्रु राजा (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्प महग्घा भरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभिईहिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयण मंडवंसि सुहासणवरगए विउल असणं४ जाव विहरइ) स्नान करके तथा बलिकर्म-वायस आदि के लिये अन्नादि का विभाग-देन करके अल्प भारवाले बहुमूल्य अलंकारोंको पहिने हुए भोजन करने के समय में भोजन शाला में सुन्दर आसन पर आकर बैठ गये। उस समय उनके साथ में और भी अनेक राजेश्वर आदि सार्थवाह पर्यन्त समस्त जन थे। वहां इन सबके साथ वे वहां आशनपान आदि चारों प्रकार का आहार करने लगे। अन्नादिक अशन पीने योग्य पदार्थ पान, द्राक्षा बादाम आदि खाद्य एवं लवंग सुपारी आदि स्वाद्य है।

' तएणं से जियसत्तू राया ' इत्यादि

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારપછી (से जियसत्तू राया) તે જીતશત્રુ રાજા (अन्नया कयाइ) કોઈ વખતે

(ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभिईहिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए विउलं असणं ४ जाव विहरइ)

સ્નાન કરીને તેમજ બલિકર્મ એટલે કે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને માટે અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને વજનમાં હલકા પણ કિંમતમાં બહુ ભારે એવા અલંકારો ધારણ કરીને જમવાના સમયે રસોઈ ઘરમાં આવીને સુંદર આસન ઉપર બેસી ગયા તે વખતે તેમની સાથે બીજા કેટલાક રાજેશ્વર અને સાર્થવાહો વગેરે હતા રાજા તેઓ બધાની સાથે બેસીને અશન પાન વગેરે ચાર જાતના આહારો જમવા લાગ્યા અન્ન વગેરે અશન, પીવા યોગ્ય પદાર્થ પાન, દ્રાક્ષ, બદામ વગેરે ખાદ્ય અને લવિંગ-સોપારી વગેરે સ્વાદ્ય છે

यावत् सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयमस्ति । ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रोरेतमर्थं नो आद्रियते यावत् तूष्णीक =सन्मौनः सतिष्ठते । ततः खलु जितशत्रु· सुबुद्धिममात्य द्वितीयमपि तृतीयमपिवारमेवमवादीत्–अहो ! खलु हे सुबुद्धे ! इद मनोज्ञ तदेव यावत्सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयम् , ततः खलु स सुबुद्धिरमात्यः जित शत्रुणा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमुक्तः सन् जितशत्रु राजानमेवमवादीत्–नो उववेए जाव पल्हायणिज्जे) हा स्वामिन् ! जैसा आप कहते है आहार वैसा ही था। वह बडा ही मनोज्ञ एव शुभवर्ण से युक्त था। यावत् समस्त शरीर एव इन्द्रियों को आनन्द पहुँचाने वाला था ! (तएण जितसत्तू सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) अपनी बात का इश्वर आदि समस्त जनों द्वारा समर्थन प्राप्त कर राजा ने अपने अमात्य सुबुद्धि से भी यही बात कही कि (अहो ण सुबुद्धी–इमे मणुण्णे असण ४ जाव पल्हायणिज्जे) हे सुबुद्धे कहो, मनोज्ञ चतुर्विध अशनादि रूप यह आहार कितना अच्छा शुभ वर्णोपेत यावत् प्रह्लादनीय था । (तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाइ, जाव तुसिणीए सचिट्ठई) इस प्रकार राजा द्वारा आहार की प्रशसा सुनकर उस सुबुद्धि अमात्य ने राजा की इस बातकी अनुमोदना नही की–प्रत्युत वह सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा–(तएण जियसत्तू सुबुद्धिं दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी

उववेए जाव पल्हायाणिज्जे)

હા સ્વામિન્ ! બરોબર જેમ તમે કહો છો તેમ આહાર પણ એવો જ હતો તે શુભ જ મનોજ્ઞ અને શુભવર્ણ વાળો હતો યાવત્ સ પૂર્ણ શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનદ પમાડનાર હતો (तएण जितसत्तू सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) પોતાના કથન વિશે ઈશ્વર વગેરે બધાઓથી સમર્થન પ્રાપ્ત કરીને રાજાએ પોતાના અમાત્ય (મત્રી) સુબુદ્ધિને પણ એજ વાત કહી કે

(अहोण सुबुद्धी इमे मणुण्णे असण ४ जाव पल्हायणिज्जे)

હે સુબુદ્ધિ ! બતાવો, મનોજ્ઞ ચાર જાતનો અશન વગેરે રૂપ આ આહાર કેટલો બધો શુભવર્ણો યુક્ત યાવત્ આનદ આપનાર હતો

(तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाइ जाव तुसिणीए सचिट्ठइ)

આ રીતે રાજાના મુખેથી આહાર વિશેના વખાણ સાભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તો તેમની વાત ને ટેકો આપ્યો નહિ પણ તે માત્ર મૂગો થઇને બેસી જ રહ્યો

तएण जियसत्तू सुबुद्धिं दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी–अहो ण सुबुद्धी ! इमे

मनस्तृप्तिकरम् अशन पान खाद्य स्वाद्य वर्णेन=शुभवर्णेन उपपेत यावत् स्पर्शेनोपपेतम्, ' आसायणिज्जे ' आस्वादनीयम्=आस्वादनयोग्यम्, ' विस्सायणिज्जे ' विस्वादनीय=विशेषत आस्वादनयोग्यम्, ' पीणणिज्जे ' प्रीणनीय=समस्तेन्द्रिय प्रीतिजनकम्, ' दीवणिज्जे ' दीपनीय = जठराग्निदीपनक शरीरसौन्दर्यजनक वा, ' दप्पणिज्जे ' दर्पनीय=बलजनकम्, मयणिज्जे ' मदनीय=कामोद्दीपकम् ' बिंहणिज्जे ' बृंहणीय=सकलधातूपचयजनकम्, सर्वेन्द्रियगात्रमह्लादनीय=सकलेन्द्रिय-शरीरसुखजनक वर्त्तते। ततः खलु ते बहव. ईश्वर यावत् सार्थवाहप्रभृतयो जित शत्रु मत्येवमवदन् 'तहेव' तथैव तादृशमेव खलु हे स्वामिन्! यत्खलु यूयं वदथ, अहो! खलु इद मनोज्ञमशन पान खाद्य स्वाद्य चतुर्विधमप्याहार वर्णेन उपपेत

प्रियो! मनको तृप्ति करने वाला यह अशनादि रूप चतुर्विध आहार कितने अच्छे शुभवर्ण से युक्त था, कितने अच्छे शुभ स्पर्श से युक्त था कितना अच्छा आस्वादनीय एव विशेषरूप से स्वादनीय था इसे खाकर समस्त इन्द्रिया तृप्त हो गई है। यह जठराग्नि का दीपक है, अथवा शारीरिक सौन्दर्य का जनक है। बलवर्धक है। कामोद्दीपक है। इसे खाने वाले की समस्त धातुए उपचित हो जाती हैं। समस्त इन्द्रियो एव शरीर को इसके खाने से आनन्द पहुँच रहा है। तात्पर्य यह चतुर्विध आहार बड़ा ही आश्चर्यकारक है (तएण ते बहवे ईसर जाव पभिइओ जियसत्तू एव वयासी) और अधिक क्या कहूँ यह तो बहुत ही अधिक उत्तम था। राजा की इस प्रकार बात सुनकर उन ईश्वर आदि अनेक सार्थवाहोंने उन जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा (तहेव णं सामी! जण्ण तुब्भे वदह-अहो ण इमे मणुण्णे असण ४ वण्णेण

હે દેવાનુપ્રિયો! મનને તૃપ્ત કરનારો આ અશન વગેરેનો ચાર જાતનો આહાર કેટલો શુભ વર્ણવાળો હતો, કેટલો બધો શુભસ્પર્શવાળો હતો, કેટલો સરસ આસ્વાદનીય-અને સવિશેષરૂપથી સ્વાદનીય હતો આ આહારને જમીને ઇન્દ્રિયો બધી તૃપ્ત થઇ ગઈ છે આ જઠરાગ્નિનો ઉદ્દીપક છે તેમજ શારીરિક સૌદર્યમા વૃદ્ધિ કરનાર છે બળવર્ધક અને કામોદ્દીપક છે એને જમવાથી બધી ધાતુઓ ઉપચિત (વૃદ્ધિ પામવુ) થઇ જાય છે આ આહારથી બધી ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનદની પ્રાપ્તિ થાય છે મતલબ એ છે કે આ ચાર જાતના આહારો બહુ જ નવાઈ પમાડે તેવા છે (તએણ તે ઈસર જાવ પભિઇઓ જિયસત્તૂ એવ વયાસી) અને વધારે શુ કહી શકીએ તે બહુ જ ઉત્તમ હતો એમા તો જરાએ શકા નથી રાજાની આ વાત સાભળીને તે ઇશ્વર વગેરે ઘણા સાર્થવાહોએ તે જિતશત્રુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(तहेव णं सामी! जण्ण तुब्भे वदह-अहोण इमे मणुण्णे असण ४ वण्णेण

यावत् सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयमस्ति । ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रोरेतमर्थं नो आद्रियते यावत् तूष्णीक =सन्मौनः सतिष्ठते । ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धिममात्य द्वितीयमपि तृतीयमपिवारमेवमवादीत्–अहो ! खलु हे सुबुद्धे ! इदमनोज्ञ तदेव यावत्सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयम् , ततः खलु स सुबुद्धिरमात्यः जितशत्रुणा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमुक्तः सन् जितशत्रु राजानमेवमवादीत्–नो उववेए जाव पल्हायणिज्जे) हा स्वामिन् ! जैसा आप कहते हैं आहार वैसा ही था। वह बडा ही मनोज्ञ एव शुभवर्ण से युक्त था। यावत् समस्त शरीर एव इन्द्रियों को आनन्द पहुँचाने वाला था ! (तएण जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी) अपनी बात का इश्वर आदि समस्त जनों द्वारा समर्थन प्राप्त कर राजा ने अपने अमात्य सुबुद्धि से भी यही बात कही कि (अहो ण सुबुद्धी–इमे मणुण्णे असण ४ जाव पल्हायणिज्जे) हे सुबुद्धे कहो, मनोज्ञ चतुर्विध अशनादि रुप यह आहार कितना अच्छा शुभ वर्णोपेत यावत् प्रह्लादनीय था ! (तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाइ, जाव तुसिणीए सचिट्ठई) इस प्रकार राजा द्वारा आहार की प्रशसा सुनकर उस सुबुद्धि अमात्य ने राजा की इस बातकी अनुमोदना नही की–प्रत्युत वह सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा–(तएण जियसत्तू सुबुद्धिं दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी

उववेए जाव पल्हायाणिज्जे)

હા સ્વામિન્ ! ખરેખર જેમ તમે કહો છો તેમ આહાર પણ એવો જ હતો તે ખૂબ જ મનોજ્ઞ અને શુભવર્ણ વાળો હતો યાવત્ સ પૂર્ણ શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનદ પમાડનાર હતો (तएण जितसत्तू सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) પોતાના કથન વિશે ઈશ્વર વગેરે બધાઓથી સમર્થન પ્રાપ્ત કરીને રાજાએ પોતાના અમાત્ય (મત્રી) સુબુદ્ધિને પણ એજ વાત કહી કે

(अहोण सुबुद्धी इमे मणुण्णे असण ४ जाव पल्हायणिज्जे)

હે સુબુદ્ધિ ! બતાવો, મનોજ્ઞ ચાર જાતનો અશન વગેરે રૂપ આ આહાર કેટલો બધો શુભવર્ણો યુક્ત યાવત્ આનદ આપનાર હતો

(तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाइ जाव तुसिणीए सचिट्ठइ)

આ રીતે રાજાના મુખેથી આહાર વિશેના વખાણ સાભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તો તેમની વાતને ટેકો આપ્યો નહિ પણ તે માત્ર મૂગો થઇને બેસી જ રહ્યો

तएण जियसत्तू सुबुद्धिं दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी–अहो ण सुबुद्धी ! इमे

मनस्तृप्तिकरम् अशन पान खाद्य स्वाद्य वर्णेन=शुभवर्णेन उपपेत यावत् स्पर्शेनोपपेतम्, 'आसायणिज्जे' आस्वादनीयम्=आस्वादनयोग्यम्, 'विस्सायणिज्जे' विस्वादनीय=विशेषत आस्वादनयोग्यम्, 'पीणणिज्जे' प्रीणनीय=समस्तेन्द्रिय प्रीतिजनकम्, 'दीवणिज्जे' दीपनीय = जठराग्निदीपनक शरीरसौन्दर्यजनक वा, 'दप्पणिज्जे' दर्पनीय=बलजनकम्, मयणिज्जे' मदनीय=कामोद्दीपकम् 'बिंहणिज्जे' बृंहणीय=सकलधातूपचयजनकम्, सर्वेन्द्रियगात्रमह्लादनीय=सकलेन्द्रियशरीरसुखजनक वर्त्तते। ततः खलु ते बहव. ईश्वर यावत् सार्थवाहप्रभृतयो जितशत्रुं प्रत्येवमवदन् 'तहेव' तथैव तादृशमेव खलु हे स्वामिन! यत्खलु यूय वदथ, अहो! खलु इद मनोज्ञमशन पान खाद्य स्वाद्य चतुर्विधमप्याहार वर्णेन उपपेत

प्रियो! मनको तृप्ति करने वाला यह अशनादि रूप चतुर्विध आहार कितने अच्छे शुभवर्ण से युक्त था, कितने अच्छे शुभ स्पर्श से युक्त था कितना अच्छा आस्वादनीय एव विशेषरूप से स्वादनीय था इसे खाकर समस्त इन्द्रिया तृप्त हो गई हैं। यह जठराग्नि का दीपक है, अथवा शारीरिक सौन्दर्य का जनक है। बलवर्धक है। कामोद्दीपक है। इसे खाने वाले की समस्त धातुए उपचित हो जाती हैं। समस्त इन्द्रियो एव शरीर को इसके खाने से आनन्द पहुँच रहा है। तात्पर्य यह चतुर्विध आहार बड़ा ही आश्चर्यकारक है (तएण ते बहवे इसर जाव पभिइओ जियसत्तू एव वयासी) और अधिक क्या कहूँ यह तो बहुत ही अधिक उत्तम था। राजा की इस प्रकार बात सुनकर उन ईश्वर आदि अनेक सार्थवाहोंने उन जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा (तहेव ण सामी! जण्ण तुब्भे वदह-अहो ण इमे मणुण्णे असण ४ वण्णेण

હે દેવાનુપ્રિયો! મનને તૃપ્ત કરનારો આ અશન વગેરેનો ચાર જાતનો આહાર કેટલો શુભ વર્ણવાળો હતો, કેટલો બધો શુભસ્પર્શવાળો હતો, કેટલો સરસ આસ્વાદનીય-અને સવિશેષરૂપથી સ્વાદનીય હતો આ આહારને જમીને ઇન્દ્રિયો બધી તૃપ્ત થઇ ગઈ છે આ જઠરાગ્નિનો ઉદ્દીપક છે તેમજ શારીરિક સૌદર્યમા વૃદ્ધિ કરનાર છે બળવર્ધક અને કામોદ્દીપક છે એને જમવાથી બધી ધાતુઓ ઉપચિત (વૃદ્ધિ પામવુ) થઇ જાય છે આ આહારથી બધી ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનદની પ્રાપ્તિ થાય છે મતલબ એ છે કે આ ચાર જાતના આહારો બહુ જ નવાઈ પમાડે તેવા છે (तएण ते ईसर जाव पभिइओ नियसत्तू एव वयासी) અને વધારે શુ કહી શકીએ તે બહુ જ ઉત્તમ હતો એમા તો જરાએ શકા નથી રાજાની આ વાત સાભળીને તે ઇશ્વર વગેરે ઘણા સાર્થવાહોએ તે જિતશત્રુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(तहेव ण सामी! जण्ण तुब्भे वदह-अहोण इमे मणुण्णे असण ४ वण्णेण

सुरूपा अपि पुद्गलाः दूरूपतया=कुत्सितरूपतया परिणमन्ति दूरूपा अपि पुद्गलाः सुरूपतया परिणमन्ति । सुरभिगधा अपि पुद्गला शुभगन्धवन्तः पुद्गला अपि दुरभिगन्धतया परिणमन्ति दुरभिगन्धा अपि पुद्गलाः सुरभिगन्धतया=सुगन्धरूपेण परिणमन्ति। सुरसा अपि=शुभरसवन्तोऽपि पुद्गला दूरसतया=अशुभरसतया=परिणमन्ति, दूरसा अपि पुद्गला सुरसतया शुभरसरूपेण परिणमन्ति। शुभस्पर्शा अपि पुद्गलाः दुस्पर्शतया परिणमन्ति, दुस्पर्शा अपि पुद्गला शुभस्पर्शतया परिणमन्ति। 'पओग-

इसी तरह (सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमति परिणमति) जो अशुभ रूप वाले पुद्गल होते हैं वे शुभरूप से परिणम जाते हैं और जो शुभरूप से परिणमे हुए पुद्गल होते है वेअशुभ रूप से परिणम जाते है। (सुब्भिगधावि पोग्गला दुब्भिगधत्ताए परिणमति, सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमति, दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति, पओगवीससा परिणया वि य ण सामी पोग्गला पण्णत्ता) जो पुद्गल सुरभि गध रूप से परिणमे हुए होते है वे ही पुद्गल दुरभि गध रूप से परिणम जाते हैं। इसी तरह जो पुदल शुभरसरूप से परिणमे हुए होते है वे ही पुद्गल कुत्सितरूप से परिणम जाते है और जो कुत्सित रूप वाले पुद्गल होते हैं वे ही शुभरस रूपवाले पुद्गल बन जाते है। जो पुद्गल शुभ स्पर्श रूप से परिणमे हुए होते है वे ही पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणम

જાય છે આ પ્રમાણે (सुरूवा वि पोग्गला दुरुवत्ताए परिणमति परिणमति) જે અશુભ રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ શુભ રૂપમા પરિણુનિ ૧ થઈ જાય છે અને જે શુભ રૂપમા પરિણુત થયેલા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ અશુભ રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે

(सुब्भिगधा वि पोग्गला दुब्भिगधत्ताए परिणमति, सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसावि पोगला सुरसत्ताए परिणमति दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति, पओगवीससा परिणया वि य ण सामी पोग्गला पण्णत्ता)

જે પુદ્ગલો સુરભિગધ રૂપમા પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ દુરભિગધ રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે આ રીતે જે પુદ્ગલો સરસ રૂપમા પરિણુત થયેલા છે તે પુદ્ગલો જ કુત્સિત (બરાબ) રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે અને જે કુત્સિત રૂપવાળા પુદ્ગલો હોય છે તે પુદ્ગલો જ સરસ રૂપ વાળા પુદ્ગલો બની જાય છે જે પુદ્ગલો શુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ અશુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે અને જે

खलु हे स्वामिन् ! अस्माकमेतस्मिन मनोज्ञे-अशनपानखाद्यस्वाद्ये कोऽपि विस्मय, एव खलु हे स्वामिन् ! सुब्भिसद्दा सुरभिशब्दाः=प्रशस्तशब्दा अपि पुद्गला' शुभाः शब्दपुद्गला अपीत्यर्थः. ' दुब्भिसद्दत्ताए ' दुरभिशब्दतया परिणमन्ति, दुरभिशब्दा अपि पुद्गलाः=अशुभाः शब्दपुद्गला अपि सुरभिशब्दतया=शुभशब्दतया परिणमन्ति।

-अहो ण सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे तं चेव जाव परंपरायणिज्जे तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तू राय एवं वयासी) अमात्य सुबुद्धि को चुप चाप बैठा देखकर जितशत्रु राजाने दुबारा एवं तिबारा भी इसी तरह से कहा-हे सुबुद्धे ! यह मनोज्ञ चतुर्विध आहार कितना अच्छा शुभवर्णोपेत यावत् समस्त शरीर एवं इन्द्रियो को आनन्द पहुँचा ने वाला था। इस प्रकार दुबारा तिबारा जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये सुबुद्धि अमात्य ने उन जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा-(नो खलु सामी अम्ह एयंसि मणुण्णंसि असण ४ केइ विम्हए-एत्थ-खलु सामी सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति) स्वामिन् ! मुझे इस मनोज्ञ अशनादिरूप चतुर्विध आहार मे कोइ आश्चर्य नहीं हो रहा है। कारण कि जो जो शुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे अशुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं और जो अशुभ शब्द रूप पुद्गल होते है वे शुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं।

मणुण्णे तं चेव जाव परंपरायणिज्जे-तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तू राय एवं वयासी)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચૂપચાપ બેઠેલો જોઇને જિતશત્રુ રાજાએ બીજી ત્રીજી વાર પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું કે હે સુબુદ્ધે ! આ મનોજ્ઞ ચાર જાતનો આહાર કેટલો બધો સરસ શુભવર્ણોપેત યાવત્ આખા શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનંદ આપનાર છે આ રીતે બે ત્રણ વાર જિતશત્રુ રાજા વડે પૂછાયેલા સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાને કહ્યું કે

(नो खलु सामी अम्ह एयंसि मणुण्ण सि असणं ४ केइ विम्हए एत्थ खलु सामी सुब्भि सद्दा वि पुग्गला दुब्भि सद्दत्ताए परिणमंति दुब्भि सद्दावि पोग्गला सुब्भि सद्दत्ताए परिणमंति)

હે સ્વામિન ! આ મનોજ્ઞ અશન વગેરે ચાર જાતના આહાર વિશે મને કંઈ નવાઈ જેવી વાત જણાતી નથી કેમ કે જે શુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે અશુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમા પરિણમિત થઈ જાય છે અને જે અશુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે શુભ શબ્દ ?

सुरूपा अपि पुद्गला' दूरूपतया=कुत्सितरूपतया परिणमन्ति दूरूपा अपि पुद्गलाः सुरूपतया परिणमन्ति । सुरभिगधा अपि पुद्गला शुभगन्धवन्तः पुद्गला अपि दुरभिगन्धतया परिणमन्ति, दुरभिगन्धा अपि पुद्गलाः सुरभिगन्धतया=सुगन्धरूपेण परिणमन्ति। सुरसा अपि=शुभरसवन्तोऽपि पुद्गलाः दूरसतया=अशुभरसतया=परिणमन्ति, दूरसा अपि पुद्गला सुरसतया शुभरसरूपेण परिणमन्ति। शुभस्पर्शा अपि पुद्गलाः दुस्पर्शतया परिणमन्ति, दुस्पर्शा अपि पुद्गला शुभस्पर्शतया परिणमन्ति। 'पओग-

इसी तरह (सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमति परिणमति) जो अशुभ रूप वाले पुद्गल होते है वे शुभरूप से परिणम जाते हैं और जो शुभरूप से परिणमे हुए पुद्गल होते है वेअशुभ रूप से परिणम जाते है। (सुब्भिगधावि पोग्गला दुब्भिगधत्ताए परिणमति, सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमति, दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति, पओगवीससा परिणया वि य ण सामी पोग्गला पण्णत्ता) जो पुद्गल सुरभि गध रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल दुरभि गध रूप से परिणम जाते हैं। इसी तरह जो पुद्गल शुभरसरूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल कुत्सितरूप से परिणम जाते है और जो कुत्सित रूप वाले पुद्गल होते हैं वे ही शुभरस रूपवाले पुद्गल बन जाते है। जो पुद्गल शुभ स्पर्श रूप से परिणमे हुए होते है वे ही पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणम

જાય છે આ પ્રમાણે (सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमति परिणमति) જે અશુભ રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ શુભ રૂપમા પરિણુમિત થઈ જાય છે અને જે શુભ રૂપમા પરિણુત થયેલા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ અશુભ રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે

(सुब्भिगधा वि पोग्गला दुब्भिगधत्ताए परिणमति, सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसावि पोगला सुरसत्ताए परिणमति दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति, पओगवीससा परिणया वि य ण सामी पोग्गला पण्णत्ता)

જે પુદ્ગલો સુરભિગધ રૂપમા પરિણુત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ દુરભિગધ રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે આ રીતે જે પુદ્ગલો સરસ રૂપમા પરિણુત થયેલા છે તે પુદ્ગલો જ દુસ્સિત (બરાબ) રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે અને જે દુસ્સિત રૂપવાળા પુદ્ગલો હોય છે તે પુદ્ગલો જ સરસ રૂપ વાળા પુદ્ગલો બની જાય છે જે પુદ્ગલો શુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ અશુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે અને જે

खलु हे स्वामिन् ! अस्माकमेतस्मिन् मनोज्ञे-अशनपानखाद्यस्वाद्ये कोऽपि विस्मय, एव खलु हे स्वामिन ! सुब्भिसद्दा सुरभिशब्दाः=शुभशब्दा अपि पुद्गला' शुभाः शब्दपुद्गला अपीत्यर्थः ' दुब्भिसद्दत्ताए ' दुरभिशब्दतया परिणमन्ति, दुरभिशब्दा अपि पुद्गला.=अशुभाः शब्दपुद्गला अपि सुरभिशब्दतया=शुभशब्दतया परिणमन्ति।

-अहो ण सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे त चेव जाव पल्हायणिज्जे तएण से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे जितसत्तू राय एव वयासी) अमात्य सुबुद्धि को चुप चाप बैठा देखकर जितशत्रु राजाने दुबारा एव तिबारा भी इसी तरह से कहा-हे सुबुद्धे ! यह मनोज्ञ चतुर्विध आहार कितना अच्छा शुभवर्णोपेत यावत् समस्त शरीर एव इन्द्रियों को आनन्द पहुँचा ने वाला था। इस प्रकार दुबारा तिबारा जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये सुबुद्धि अमात्य ने उन जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा-(नो खलु सामी अम्ह एयसि मणुण्णसि असण ४ केइ विम्हए-एव-खलु सामी सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति, दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमति) स्वामि न ! मुझे इस मनोज्ञ अशनादिरूप चतुर्विध आहार मे कोइ आश्चर्य नहीं हो रहा है। कारण कि जो जो शुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे अशुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं और जो अशुभ शब्द रूप पुद्गल होते है वे शुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं।

मणुण्णे त चेव जाव पल्हायणिज्जे-तएण से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे जितसत्तू राय एव वयासी)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચૂપચ ા બેઠેલો જોઇને જિતશત્રુ રાજાએ બીજી ત્રીજી વાર પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યુ કે હે સુબુદ્ધે ! આ મનોજ્ઞ ચાર જાતનો આહાર કેટલો બધો સરસ શુભવર્ણોપેત યાવત્ આખા શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનદ આપનાર છે આ રીતે બે ત્રણ વાર જિતશત્રુ રાજા વડે પૂછાયેલા સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાને કહ્યુ કે

(नो खलु सामी अम्ह एयसि मणुण्ण सि असणं ४ केइ विम्हए एव खलु सामी सुब्भि सद्दा वि पुग्गला दुब्भि सद्दत्ताए परिणमति दुब्भि सद्दावि पोग्गला सुब्भि सद्दत्ताए परिणमति)

હે સ્વામિન્ ! આ મનોજ્ઞ અશન વગેરે ચાર જાતના આહાર વિશે મને કઈ નવાઈ જેવી વાત જણાતી નથી કેમ કે જે શુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે અશુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમા પરિણુનિત થઈ જાય છે અને જે અશુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે શુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમા [illegible] થઈ

नाति=नाङ्गीकरोति तूष्णीकः सतिष्ठते=मौनमालम्ब्यस्थित इत्यर्थः । ततः खलु सजितशत्रुरन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वरत्नवरगत.=जात्याश्वपृष्ठारूढ ' महया भडचडगर० ' महाभटचडकरपहकरवृन्दपरिक्षिप्तः ' आसवाहणियाए ' अश्ववाहनिकायाम्=अश्ववाहनक्रीडाया ' निज्जायमाणे ' निर्यान्=निर्गच्छन् तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजलस्य अदूर सामन्तेन=पार्श्वभागेन व्यतिव्रजति । तत तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्तविशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्धेन ' अभिभूए समाणे ' अभिभूत=व्याकुलित चित्त सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयवस्त्रेण ' दुपट्टा ' इतिप्रसिद्धेन आस्य-सामीप्यसयोगान्नासिका पिदधाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा गच्छति अपक्राम्य तान् बहून राजेश्वर यावत् मन्त्रीतीन्=राजेश्वर-तलवर-माटम्बिक

सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा । एकदिन जितशत्रु राजा स्नान से निश्चित होकर घोडे पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर निकला । उनके साथ२ महाभटों का समुदाय भी चल रहा था । चलते २ वे उसी परिखोदक (खाई)के पाससे होकर निकले । (तएण जियसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण आसग पिहई, एगत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, ते बहवे ईसर जाव पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते बहवे राईसर पभिइओ एव वयासी) इतने में उन जितशत्रु राजाने उस परिखोदक की अशुभ गध से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अपनी नासिका को ढक लिया । और फिर वे ढककर वहा से दूर होकर

જીતશત્રુ રાજા સ્નાન કરીને ઘોડા ઉપર સવાર થયા અને અશ્વક્રીડા કરવા માટે ઘરથી બહાર નીકળ્યા તેમની માથે સાથે મહાન ભટોનો સમુદાય પણ ચાલતો હતો ચાલતા ચાલતા તેઓ તે જ પરિખોદક-ખાઈ-ની પાસે થઇને નીકળ્યા

(तएण जितसत्तू तस्स फरिहोगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण आसग पिहई एगत अवक्कमइ अवक्कमित्ता ते बहवे ईसर जाव पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते बहवे राई सर पभिइओ एव वयासी)

જીતશત્રુ રાજાએ પરિખોદક-ખાઈ-ની અશુભ ગધથી વ્યાકુળ થઇને પોતાના ખેસથી નાકને ઢાકી લીધુ અને ત્યાર બાદ તેઓ ખાઇની પાસેથી

वीससापरिणयाए' प्रयोगविस्रसा परिणता अपि, प्रयोगेण=प्रयोगपरिणामेन जीव कृतव्यापारेण विस्रसया=विस्रसापरिणामेन स्वभावेनैव च परिणताः=एकावस्थाया अवस्थान्तर प्राप्ताः शुभशब्दादय पुद्गला' दृश्यशब्दादित्वेन दुःशब्दादयश्च सुरभ्यादिरूपेण परिणता इत्यर्थ पुद्गलाः खलु भवन्तीति हे स्वामिन् ! प्रज्ञप्ता=भगवता कथिता । तत' खलु स जितशत्रुः सुबुद्धेरमात्यस्य एतम्=उक्तरूपेण ' आइक्खमाणस्स ' आचक्षाणस्य=कथयत', एतम्=पूर्वोक्तम् अर्थम्=शब्दादिपुद्गलानां शुभाशुभपरिणामरूप भाव नो आद्रियते=तदाश्रयस्याऽऽदरं न करोति, नो परिजा

जाते हैं और जो पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल शुभस्पर्शरूप में परिणम जाते है। इस प्रकार का परिणमन पुद्गलों में जीवकृत व्यापाररूप परिणाम से और स्वाभाविक रूप से होता रहता है। एक अवस्था से अवस्थान्तर की प्राप्ति प्रत्येक समय प्रत्येक द्रव्य में होती रहती है। इस परिणमन से कोई भी द्रव्य अछूता नहीं है। इसी परिणाम का नाम स्वाभाविक परिणमन है। यह बात प्रभुने स्वय प्रतिपादित की है। (तएण से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणई, तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण से जियसत्तू अण्ण या कयाई पहाए आसखधवरगए महया भडचडगर आसवाहिणीयाए निज्जोयमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामते ण वीइवयइ) अमात्य सुबुद्धि की इस बात को सुनकर जितशत्रु राजा ने उसकी इस बात का आदर नहीं किया—उसकी बातको स्वीकार नहीं किया। केवल

પુદ્ગલો અશુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ શુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણત થઇ જાય છે આ જાતનુ પુદ્ગલોમા પરિણમન જીવકૃત વ્યાપાર રૂપ પરિણામથી અને સ્વાભાવિક રૂપમા થતુ રહે છે એક અવસ્થા માથી અવસ્થાન્તરની પ્રાપ્તિ દરેક સમયે દરેક દ્રવ્યમા થતી રહે છે આ પરિણમન એકે એક દ્રવ્ય માટે ચોક્કસ પણે સમજવુ જોઇએ દરેકે દરેક દ્રવ્યમા આ જાતનુ પરિણમન થતુ જ રહે છે પ્રભુએ સ્વય આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે

(तएण से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो आढाइ नो परियाणई, तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण से जियसत्तू अण्णया कयाई पहाए आसखधवरगए महया भडचडगरआसवाहिणीयाए निज्जोयमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामतेण वीइवयइ)

અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સાભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તેના કથનનો આદર કર્યો નહિ, ફક્ત સાભળીને તે ચૂપચાપ બેસી જ રહ્યો એક દિવસે

नाति=नाङ्गीकरोति तूष्णीकः सतिष्ठते=मौनमालम्ब्यस्थित इत्यर्थः । ततः खलु स-
जितशत्रुरन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वरत्नवरगतः
=जात्याश्वपृष्ठारूढ ' महया भडचडगर० ' महाभटचडकरपहकरवृन्दपरिक्षिप्तः
' आसवाहणियाए ' अश्ववाहनक्रीडाया ' निज्जायमाणे ' नि-
र्यान्=निर्गच्छन् तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजलस्य अदूर सामन्तेन=
पार्श्वभागेन व्यतिव्रजति । तत तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्त-
विशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्धेन ' अभिभूए समाणे ' अभिभूत =व्याकुलित
चित्त सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयवस्त्रेण ' दुपट्टा ' इतिप्रसिद्धेन
आस्य-सामीप्यसयोगान्नासिका पिदधाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा ग
च्छति अपक्राम्य तान् बहून राजेश्वर यावत् प्रभृतीन्=राजेश्वर-तलवर-माटम्बिक

सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा । एकदिन जितशत्रु राजा स्नान से निश्चित होकर घोडे पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर निकला । उनके साथ२ महाभटों का समुदाय भी चल रहा था । चलते २ वे उसी परिखोदक (खाई)के पाससे होकर निकले । (तएण जियसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण आसग पिहई, एगत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, ते बहवे ईसर जाव पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते बहवे राईसर पभिइओ एव वयासी) इतने में उन जितशत्रु राजाने उस परिखोदक की अशुभ गध से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अ पनी नासिका को ढक लिया । और फिर वे ढककर वहा से दूर होकर

જીતશત્રુ રાજા સ્નાન કરીને ઘોડા ઉપર સવાર થયા અને અશ્વક્રીડા કરવા માટે ઘરથી બહાર નીકળ્યા તેમની માથે સાથે મહાન ભટોનો સમુદાય પણ ચાલતો હતો ચાલતા ચાલતા તેઓ તે જ પરિખોદક-ખાઈ-ની પાસે થઇને નીકળ્યા

(तएण जितसत्तू तस्स फरिहोगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण आसग पिहई एगत अवक्कमइ अवक्कमित्ता ते बहवे ईसर जाव पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते बहवे राई सर पभिइओ एव वयासी)

જીતશત્રુ રાજાએ પરિખોદક-ખાઇ-ની ખરાબ ગધથી વ્યાકુળ થઇને પોતાના ખેસથી નાકને ઢાકી લીધુ અને ત્યાર બાદ તેઓ ખાઇની પાસેથી

वीससापरिणयाचि' प्रयोगविस्रसा परिगता अपि, प्रयोगेण=प्रयोगपरिणामेन जीव कृतव्यापारेण विस्रसया=विस्रसापरिणामेन स्वभावेनैव च परिणताः=एकावस्थाया अवस्थान्तर प्राप्ताः सुरभ्यादय पुद्गला' दुरभ्यादित्वेन दुःशब्दादयश्च सुरभ्यादिरूपेण परिणता इत्यर्थ पुद्गलाः खलु भवन्तीति हे स्वामिन् ! प्रज्ञप्ता=भगवता कथिता । ततः खलु स जितशत्रु. सुबुद्धेरमात्यस्य एवम्=उक्तरूपेण ' आइक्खमाणस्स ' आचक्षाणस्य=कथयत , एतम्=पूर्वोक्तम् अर्थम्=शब्दादिपुद्गलाना शुभाशुभपरिणामरूप भाव नो आद्रियते=तद्वाक्यस्याऽऽदर न करोति, नो परिजा

जाते हैं और जो पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल शुभस्पर्शरूप में परिणम जाते है । इस प्रकार का परिणमन पुद्गलों में जीवकृत व्यापाररूप परिणाम से और स्वाभाविक रूप से होता रहता है । एक अवस्था से अवस्थान्तर की प्राप्ति प्रत्येक समय प्रत्येक द्रव्य में होती रहती है । इस परिणमन से कोई भी द्रव्य अछूता नही है । इसी परिणाम का नाम स्वाभाविक परिणमन है । यह बात प्रभुने स्वय प्रतिपादित की है । (तएण से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणई, तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण से जियसत्तू अण्ण या कयाई ण्हाए आसखधवरगए महया भडचडगर आसवाहिणीयाए निज्जोयमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामते ण वीइवयइ) अमात्य सुबुद्धि की इस बात को सुनकर जितशत्रु राजा ने उसकी इस बात का आदर नही किया–उसकी बातको स्वीकार नही किया । केवल

પુદ્ગલો અશુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ શુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણત થઇ જાય છે આ જાતનુ પુદ્ગલોમા પરિણમન જીવકૃત વ્યાપાર રૂપ પરિણામથી અને સ્વાભાવિક રૂપમા થતુ રહે છે એક અવસ્થા માથી અવસ્થાન્તરની પ્રાપ્તિ દરેક સમયે દરેક દ્રવ્યમા થતી રહે છે આ પરિણમન એકે એક દ્રવ્ય માટે ચોક્કસ પણે સમજવુ જોઇએ દરેકે દરેક દ્રવ્યમા આ જાતનુ પરિણમન થતુ જ રહે છે પ્રભુએ સ્વય આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે

(तएण से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो आढाइ नो परियाणई, तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण से जियसत्तू अण्णया कयाई ण्हाए आसखधवरगए महया भडचडगरआसवाहिणीयाए निज्जोयमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामतेण वीइवयइ)

અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સાભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તેના કથનનો આદર કર્યો નહિ, ફક્ત સભળાને તે ચૂપચાપ બેસી જ રહ્યો એક દિવસે

नाति=नाङ्गीकरोति तूष्णीकः सतिष्ठते=मौनमालम्ब्यस्थित इत्यर्थः। ततः खलु सजितशत्रुरन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वरत्नवरगतः=जात्याश्वपृष्ठारूढ 'महया भडचडगर०' महाभटचडकरपहकरवृन्दपरिक्षिप्तः 'आसवाहणियाए' अश्ववाहनक्रीडाया 'निज्जायमाणे' निर्यान्=निर्गच्छन् तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजलस्य अदूर सामन्तेन=पार्श्वभागेन व्यतिव्रजति। ततः तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्तविशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्धेन 'अभिभूए समाणे' अभिभूत=व्याकुलितचित्त सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयवस्त्रेण 'दुपट्टा' इतिप्रसिद्धेन आस्य-सामीप्यसयोगान्नासिका पिदधाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा गच्छति अपक्राम्य तान् बहून राजेश्वर यावत् प्रभृतीन्=राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक

सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा। एकदिन जितशत्रु राजा स्नान से निश्चित होकर घोडे पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर निकला। उनके साथ२ महाभटों का समुदाय भी चल रहा था। चलते २ वे उसी परिखोदक (खाई)के पाससे होकर निकले। (तएण जियसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण आसग पिहई, एगत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, ते बहवे ईसर जाव पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते बहवे राईसर पभिइओ एव वयासी) इतने मे उन जितशत्रु राजाने उस परिखोदक की अशुभ गध से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अपनी नासिका को ढक लिया। और फिर वे ढककर वहा से दूर होकर

જીતશત્રુ રાજા સ્નાન કરીને ઘોડા ઉપર સવાર થયા અને અશ્વક્રીડા કરવા માટે ઘરથી બહાર નીકળ્યા તેમની સાથે સાથે મહાન ભટોનો સમુદાય પણ ચાલતો હતો ચાલતા ચાલતા તેઓ તે જ પરિખોદક-ખાઈ-ની પાસે થઇને નીકળ્યા

(तएण जितसत्तू तस्स फरिहोगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण आसग पिहई एगत अवक्कमइ अवक्कमित्ता ते बहवे ईसर जाव पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते बहवे राई सर पभिइओ एव वयासी)

જીતશત્રુ રાજાએ પરિખોદક-ખાઇ-ની અશુભ ગધથી વ્યાકુળ થઇને પોતાના ખેસથી નાકને ઢાકી લીધુ અને ત્યાર બાદ તેઓ ખાઇની પાસેથી

कौटुम्बिक-श्रेष्ठि-सेनापति सार्थवाहादीन एवमादीत्-अहो ! खलु हे देवानुप्रिया ! कीदृग् इद परिखोदकममनोज्ञ वर्णेन गन्धेन रसेन स्पर्शेन, तद् यथानामकम् । तथाहि-अहिमृतकमिति वा यावद् एतस्मादपि अनिष्टतरअमनोज्ञतरमनआमतरकमेवास्ति । ततः खलु ते बहवो राजेश्वरभृतयो यावदेवमवादिषुः-तथैव खलु तत् हे स्वामिन् ! यत्खलु यूयमेव वदथ-अहो ! खलु इद परिखोदकममनोज्ञ वर्णेन रसेन गन्धेन स्पर्शेन, तद् यथा नामकम्-तथाहि-अहिमृतकमिति वा यावद्

चलने लगे । चलते २ उन्होंने अपने साथ रहे हुए राजेश्वर २, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी, सेनापति, एव सार्थवाह आदिसे कहा हे देवानुप्रियो ! देखो-यह परिखोदक(खाईका जल)वर्णसे गधसे, रससे एव स्पर्शसे कितना अधिक अमनोज्ञ बन रहा है । जैसे मरे हुए सर्प आदिके सडे विनष्ट आदि अवस्थापन्न कलेवर की दुर्गंध आती है-उस से भी अधिक तर अनिष्ट दुर्गंध इस जल की आ रही है । राजा की इस प्रकार बात सुनकर उन राजेश्वर आदि समस्त जनों ने इस प्रकार कहा-(तहेव ण सामी ! ज ण तुब्भे एव वयह, अहो ण इमे फरिहोदए, अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी-तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सचिट्ठइ) हे स्वामिन् ! आप जैसा कहते हैं यह परिखोदक वैसा ही वर्ण, रस, गध, और स्पर्श से अम

દૂર બેસીને ચાલવા લાગ્યા ચાલતા ચાલતા તેમણે પોતાની સાથેના રાજેશ્વર, તલવર, માડંબિક, કૌટુંબિક, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાથવાહ વગેરેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ આ પરિખોદક-ખાઇ-વર્ણથી, ગંધથી, રસથી, અને સ્પર્શથી કેટલી બધી અમનોજ્ઞ-ખરાબ-લાગે છે મરેલા સાપ વગેરેના સડી ગયેલા વિનષ્ટ વગેરે અવસ્થાપન્ન કલેવર (શરીર) ની જેવી દુર્ગંધ હોય છે તેના કરતા પણ વધારે ખરાબ ગંધ આ પાણીમાથી આવી રહી છે રાજાની આ પ્રમાણે વાત સાભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધાઓએ આ પ્રમાણે કહ્યુ—

(तहेव, ण सामी ! ज ण तुब्भे एव वयह अहो ण इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी-तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सचिट्ठइ)

હે સ્વામિન્ ! તમે કહો છો તેવી જ વર્ણ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શથી અમનોજ્ઞ આ ખાઇ છે મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના જેવી

अमनआमतरकमेवास्ति। तत खलु स जितशत्रु' सुबुद्धिममात्यमेवमवादीत्–अहो! खलु हे सुबुद्धे! इद परिखोदकममनोज्ञ वर्णेन ४, कीदृशम्? इत्याह–'से जहा नामए' तद् यथा नामक=यथादृष्टान्त निरूप्यते–अहिमृतकमिति वा यावद् एत स्मादपि=अहिमृतकादिभ्योऽपि अनिष्टतरम् अमनोज्ञतरम् अमनआमतरमेव वर्त्तते। ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो यावत् तूष्णीक सतिष्ठते। तत खलु स जितशत्रू राजा सुबुद्धिरमात्य द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमवादीत्–अहो! खलु 'त चेव' तदेव पूर्वमदेव राजा वदति। ततः तदनन्तर खलु स सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रुणा

नोज्ञ है। जैसे मरे हुए सर्पादिक के सडे आदि अवस्थापन्न कलेवर से दुर्गंध आती है उसी तरह की इस से भी अधिक अनिष्टतर असह्य दुर्गंध इस से आ रही है! इस प्रकार अपनी बात का समर्थन प्राप्तकर जितशत्रु राजा ने अपने सुबुद्धि अमात्य प्रधान से कहा-हे सुबुद्धे! यह परिखोदक वर्ण, रस, गंध, और स्पर्श से बिलकुल अमनोज्ञ बन रहा है। जिस प्रकार मरे हुए सर्प आदि के सडे गले आदि अवस्था पन्न कलेवर से अधिक अनिष्ट तर दुर्गंध निकलती है उससे भी अधिक अनिष्टतर दुर्गंध इससे निकल रही है। इस प्रकार अपने राजाकी बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उसका आदर नही किया–उसे स्वीकार नही किया केवल चुपचाप ही रहा। (तएण से जियसत्तूराया सुबुद्धिं अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी-अहोण तचेव, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तू रण्णा दोच्चपि तच्च पि एववुत्ते समाणे एव वयासी नो खलु सामी! अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए, एव

અનિષ્ટતર, અસહ્ય દુર્ગંધ આવે છે તેના કરતા પણ વધારે ખરાબ આ દુર્ગંધ છે આ રીતે પોતાની વાતનુ સમર્થન પ્રાપ્ત કરીને જીતશત્રુ રાજાએ પોતાના સુબુદ્ધિ અમાત્ય પ્રધાનને કહ્યુ કે હે સુબુદ્ધે! આ પરિખોદક-ખાઈ-વણ, રસ ગંધ અને સ્પર્શમા એકદમ અમનોજ્ઞ-બરાબર-થઈ ગઇ છે મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના અવસ્થાપન્ન કલેવરો-શરીરો-થી જેવી અનિષ્ટતર દુર્ગંધ આવે છે તેના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટતર-બરાબ-દુર્ગંધ આ ખાઈ માથી આવી રહી છે આ રીતે રાજાની વાત સાભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેનો આદર કર્યો નહિ, તેનો સ્વીકાર કર્યો નહિ પણ ચૂપચાપ થઈને જ ચાલતો રહ્યો

(तएण से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी अहोण त चेव तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रण्णा दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे एव वयासी नो खलु सामी! अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए,

कौटुम्बिक-श्रेष्ठि-सेनापति सार्थवाहादीन एवमादीत्-अहो ! रक्तु हे देवानुप्रिया ! कीदृग् इद परिखोदकममनोज्ञ वर्णेन गन्धेन रसेन स्पर्शेन, तद् यथानामकम् । तथाहि-अहिमृतकमिति वा यावद् एतस्मादपि अनिष्टतरअमनोज्ञतरमनआमतरकमेवास्ति । ततः खलु ते बहवो राजेश्वरप्रभृतयो यावदेवमवादिषु'-तथैव खलु तत् हे स्वामिन् ! यत्खलु यूयमेव वदथ-अहो ! रक्तु इद परिखोदकममनोज्ञ वर्णेन रसेन गन्धेन स्पर्शेन, तद् यथा नामकम्-तथाहि-अहिमृतकमिति वा यावद्

चलने लगे । चलते २ उन्होने अपने साथ रहे हुए राजेश्वर २, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी, सेनापति, एव सार्थवाह आदिसे कहा हे देवानुप्रियो! देखो-यह परिखोदक(खाईका जल)वर्णसे गधसे, रससे एव स्पर्शसे कितना अधिक अमनोज्ञ बन रहा है । जैसे मरे हुए सर्प आदिके सडे विनष्ट आदि अवस्थापन्न कलेवर की दुर्गंध आती है-उस से भी अधिक तर अनिष्ट दुर्गंध इस जल की आ रही है । राजा की इस प्रकार बात सुनकर उन राजेश्वर आदि समस्त जनों ने इस प्रकार कहा-(तहेव ण सामी ! ज ण तुब्भे एव वयह, अहो ण इमे फरिहोदए, अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी-तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सचिट्ठइ) हे स्वामिन् ! आप जैसा कहते है यह परिखोदक वैसा ही वर्ण, रस, गध, और स्पर्श से अम

દૂર બેસીને ચાલવા લાગ્યા ચાલતા ચાલતા તેમણે પોતાની સાથેના રાજેશ્વર, તલવર, માડંબિક, કૌટુંબિક, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાથવાહ વગેરેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ આ પરિખોદક-ખાઇ-વર્ણથી, ગંધથી, રસથી, અને સ્પર્શથી કેટલી બધી અમનોજ્ઞ-ખરાબ-લાગે છે મરેલા સાપ વગેરેના સડી ગયેલા વિનષ્ટ વગેરે અવસ્થાપન્ન કલેવર (શરીર) ની જેવી દુર્ગંધ હોય છે તેના કરતા પણ વધારે ખરાબ ગંધ આ પાણીમાથી આવી રહી છે રાજાની આ પ્રમાણે વાત સાભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધાઓએ આ પ્રમાણે કહ્યુ—

(तहेव, ण सामी ! ज ण तुब्भे एव वयह अहो ण इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जिय सत्तू सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी-तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सचिट्ठइ)

હે સ્વામિન્ ! તમે કહો છો તેવી જ વર્ણ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શથી અમનોજ્ઞ આ ખાઇ છે મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના [illegible] જેવી

तत खलु जितशत्रु सुबुद्धिम् एवमवादीत्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय ! आत्मान= स्वक च परम्=अन्य च तदुभय=स्वपररूप समकमेव वा बहीभिश्च ' असब्भाबु-ब्भावणाहिं ' असद्भावोद्भावनाभि असताम्=अविद्यमानाना भावाना=वस्तुधर्माणा या उद्भावना:=प्रतिपादनास्ताभि'=वस्तुस्वरूपान्यथा प्रतिपादनरूपाभिः ' मिच्छ-त्ताभिणिवेसेण य ' मिथ्यात्वाभिनिवेशेन=विपर्यासाग्रहेण च अज्ञानावेशेनेत्यर्थः ' वुग्गाहेमाणे ' व्युद्ग्राहयन्=विविधप्रकारेणोत्कृष्टतया चान्य ग्राहयन् ' वुप्पाए-माणे' व्युत्पादयन्=व्युत्पत्ति जनयन् विहर=अशुद्धप्ररूपणा कुर्वन् मा तिष्ठेत्यर्थ ।

मन अपनी देशना द्वारा प्ररूपित किया है। (तएण जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण च पर च तदुभय वा बहूहि य असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाहेमाणे विहराहि, तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-अहो ण जियसत्तू सते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति) इस प्रकार सुनकर जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान से इस तरह कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस तरह की असद्भावनोद्भावक वचनो से-अविद्यमान वस्तु धर्मों की प्रतिपादनाओं से-वस्तु का जो स्वरूप विद्यमान नही है-उस स्वरूप को उस वस्तु मे विद्यमानता का प्रतिपादन करने वाली वाणियों से एव मिथ्यात्वाभिनिवेश आग्रह से इस तरह की प्ररूपणा मत करो, न स्वय को इस प्रकार की प्ररूपणा से वासित करो और न दूसरो को इस तरह की झूठी २ प्ररूपणाओं से अपने फदे में फसाओ और न अपने को और न दूसरों को एक ही

(तएण जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी-मा ण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण च पर च तदुभय वा बहूहिं य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो ण जियसत्तू सते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति)

જીતશત્રુ રાજાએ આ પ્રમાણે સાભળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ રીતે અસદ્‌ભાવના ભાવક વચનોથી-અવિ દ્યમાન વસ્તુધર્મોથી પ્રતિપાદનાઓથી વસ્તુનુ જે સ્વરૂપ વસ્તુમા હાજર નથી તે સ્વરૂપને વસ્તુમા બતાવનારી વાણીઓથી અને મિથ્યાત્વાભિનિવેશના આગ્ર હથી આ જાતનુ નિરૂપણ કરો નહિ આવી પ્રરૂપણાથી પોતાની જાતને બચાવતા રહો અને બીજાઓને પણ આવી ઝૂઠી પ્રરૂપણામા ફસાવવાની ચેષ્ટા કરો નહિ, તમે એકી સાથે પોતાની જાતને કે બીજા માણસને આવી પ્રરૂપણાની લપેટમા લેવાની કોશિશ કરો નહિ રાજાની આ પ્રમાણે વાત સાભળીને સુબુદ્ધિ પ્રધા

राज्ञा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारम् एवमुक्तः=सन एवमवदत्-नो खलु हे स्वामिन्! मम एतस्मिन् परिखोदके कोऽपि विस्मय, कथम्? इत्याह-एव खलु हे स्वामिन्! सुरभिशब्दाः=शुभशब्दा अपि पुद्गला. शुभा अपि शब्दपुद्गला इत्यर्थः 'दुब्भिसद्दत्ताए' दुरभिशब्दतया=अशुभशब्दतया परिणमन्ति एव 'त चेव' तदेव सर्वं रूपरसगन्धस्पर्शसम्बन्धिनः शुभाः अपि पुद्गला अशुभरूपादितया परिणमन्तीत्यर्थ यावत् प्रयोगविस्रसा परिणता जीवकृतप्रयोगेण स्वभावत एव वा परिवर्त्तनशीला. अपि च खलु हे स्वामिन्! पुद्गला प्रज्ञप्ताः भगवद्भि कथिता।

खलु सामी! सुब्भि सद्दाचि पोग्गला दुब्भि सद्दत्ताए परिणमति, तचेव जाव पओगवीससा परिणयाचि य ण सामी! पोग्गला पण्णत्ता) अमात्य को चुपचाप बैठा हुआ देखकर जितशत्रु राजा ने उस अमात्य सुबुद्धि से दुबारा और तिबारा भी पहिले ही जैसा कहा इस तरह दुबारा तिबारा जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये उस सुबुद्धि अमात्य ने ऐसा कहा कि स्वामिन्। हमे इस परिखा के उदक में कोई आश्चर्य नही हो रहा है कारण कि जो पुद्गल पहिले शुभ शब्द रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही कालान्तर में प्रयोग और विस्रसा परिणाम से अशुभ शब्द रूप परिणम जाते हैं। इस तरह जैसा उसने मनोज्ञ चतुर्विध आहार के विषय में पहिले प्रतिपादन किया है वैसा ही यहां पर भी उसने प्रतिपादित किया। पुद्गलों का यह इस तरह का परिणमन मैं अपनी निज कल्पना से नही कह रहा हूँ प्रत्युत इस में वीतराग प्रभु की आज्ञा है। उन्हो ने इसी तरह का पौद्गलिक परिण

एव खलु सामी! सुब्भि सद्दाचि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति त चेव जाव पओगवीससा परिणयाचि य ण सामी! पोग्गला पण्णत्ता)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચુપચાપ જોઇને રાજા જીતશત્રુએ બીજી અને ત્રીજી વાર પહેલાની જેમ જ કહ્યું પૂછાયેલા સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્! આ બાઇના પાણીમા મને કઇ નવાઈ જેવુ લાગતુ નથી કેમકે જે પુદ્ગલો પહેલા શુભ શબ્દ રૂપમા પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ કાલાન્તરમા પ્રયોગ અને વિસ્રસા (સ્વાભાવિક રીતના) પરિણામથી અશુદ્ધ શબ્દ રૂપમા પરિણત થઇ જાય છે આ રીતે અમાત્યે મનોજ્ઞ ચાર જાતના આહારો વિશે જે જાતના વિચારો રજૂ કર્યા હતા તે જ જાતના વિચારો આ અશુભ રૂપ બાઇ જોઈને પણ પ્રકટ કર્યા અમાત્યે રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે પુદ્ગલોના આ રીતે પરિણમનની વાત મારી પોતાની કલ્પનાથી પણ વીતરાગ પ્રભુની જ એ આજ્ઞા છે તેઓશ્રીએ પૌદ્ગલિક પરિણમન આ રીતે જ પોતાની દેશના વડે નિરૂપિત કર્યો છે

तत खलु जितशत्रु सुबुद्धिम् एवमवादीत्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय ! आत्मान= स्वक च परम्=अन्य च तदुभय=स्वपररूप समकमेव वा बहीभिश्च ' असब्भाबु-ब्भावणाहिं ' असद्भावोद्भावनाभि. असताम्=अविद्यमानाना भावाना=वस्तुधर्माणा या उद्भावना:=प्रतिपादनास्ताभि:=वस्तुस्वरूपान्यथा प्रतिपादनरूपाभि: ' मिच्छ-त्ताभिणिवेसेण य ' मिथ्यात्वाभिनिवेशेन=विपर्यासावशेन च अज्ञानावेशेनेत्यर्थ: ' वुग्गाहेमाणे ' व्युद्ग्राहयन्=विविधप्रकारेणोत्कृष्टतया चान्य ग्राहयन् ' वुप्पाए-माणे' व्युत्पादयन्=व्युत्पत्ति जनयन् विहर=अशुद्धप्ररूपणा कुर्वन् मा तिष्ठेत्यर्थ ।

मन अपनी देशना द्वारा प्ररूपित किया है । (तएण जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण च पर च तदुभय वा बहूहिं य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाहेमाणे विहराहि, तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-अहो ण जियसत्तू सते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति) इस प्रकार सुनकर जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान से इस तरह कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस तरह की असद्भावनोद्भावक वचनो से-अविद्यमान वस्तु धर्मों की प्रतिपादनाओं से-वस्तु का जो स्वरूप विद्यमान नही है-उस स्वरूप को उस वस्तु मे विद्यमानता का प्रतिपादन करने वाली वाणियों से एव मिथ्यात्वाभिनिवेश आग्रह से इस तरह की प्ररूपणा मत करो, न स्वय को इस प्रकार की प्ररूपणा से वासित करो और न दूसरो को इस तरह की झूठी २ प्ररूपणाओं से अपने फदे में फसाओ और न अपने को और न दूसरों को एक ही

(तएण जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी-मा ण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण च पर च तदुभय वा बहूहिं य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो ण जियसत्तू सते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति)

જીતશત્રુ રાજાએ આ પ્રમાણે સાભળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ રીતે અસદ્ભાવના ભાવક વચનોથી-અવિ ઘમાન વસ્તુધર્મોથી પ્રતિપાદનાઓથી વસ્તુનુ જે સ્વરૂપ વસ્તુમા હાજર નથી તે સ્વરૂપને વસ્તુમા બતાવનારી વાણીઓથી અને મિથ્યાત્વાભિનિવેશના આગ્ર હથી આ જાતનુ નિરૂપણ કરો નહિ આવી પ્રરૂપણાથી પોતાની જાતને બચાવતા રહો અને બીજાઓને પણ આવી ઝૂઠી પ્રરૂપણામા ફસાવવાની ચેષ્ટા કરો નહિ, તમે એકી સાથે પોતાની જાતને કે બીજા માણસને આવી પ્રરૂપણાની લપેટમા લેવાની કોશિશ કરો નહિ રાજાની આ પ્રમાણે વાત સાભળીને સુબુદ્ધિ પ્રધા

ततः=तदनन्तर राज्ञा सह वार्तालापानन्तर खलु सुबुद्धे =सुबुद्धिनामामात्यस्य अ यमेतद्रूप'=वक्ष्यमाणप्रकार आध्यात्मिक', चिन्तित', प्रार्थित', कल्पित , मनोग तमकल्पश्च नानारूपो विचारः समुदपद्यत अहो !=आश्चर्यमेतद् यत्खलु जितशत्रु राजा 'सते' सत = विद्यमानान् 'तच्चे' तत्त्वानि = तत्स्वरूपान् तत्त्व वतो वा स्वत्वपरत्वयुक्तान् 'तहिए' तथ्यान् = सत्यान् यद्वा—'तहिए' तथा च-इति क्रियया, तथेति चिनोतीति, अव्ययमिदम्-मात्रयाऽप्यन्यूनाधिकान् 'अवितहे' अवितथान् = अविद्यमानासत्यान् 'सब्भूए' सद्भूतान्=सत्तायुक्तान् 'जिणपण्णत्ते' जिनप्रज्ञप्तान् = जिनभाषितान् भावान् 'नो उवलभइ' नोप लभते, तत्=तस्मात् कारणात् श्रेय = समीचीन खलु मम यत्-जितशत्रो राज्ञ सता तत्त्वाना तथ्यानाम् अवितथाना सद्भूताना जिनप्रज्ञप्ताना भावनाम् 'अभिगमणट्ठयाए' अभिगमनार्थतायै=सम्यगवबोधाय एतमर्थम्=पुद्गलानामपरा-

---

साथ इस प्रकार की प्ररूपणा के जाल में न डालो। राजा की इस प्रकार वाणी सुनकर सुबुद्धि प्रधान के मन में ऐसा विविध प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-यहाँ विचार के इन और विशेषणों का ग्रहण कर लेना चाहिये-"चिन्तित प्रार्थित, कल्पित"। यह बडे आश्चर्य की बात है जो जितशत्रु राजा विद्यमान, तत्त्वरूप-अथवा विविध प्रकार की विवक्षा से स्वत्व परत्व रूप से युक्त, तथ्य-सत्य, न न्यून और न अधिक, अवितथ, सत्ता युक्त ऐसे जिन प्रज्ञप्त, भावो को नही समझ रहा है-अर्थात् जितशत्रु राजा के ध्यान में यह बात नही आ रही है कि जिन प्रज्ञप्त (प्ररूपित) भाव सत्य होते है, अवितथ होते हैं अन्यून अनतिरिक्त होते हैं, अनेक विवक्षाओं को लेकर उन में नाना धर्म विशिष्टता होती है-(त) इस लिये (सेय खलु मम, जियसत्तुस्स रण्णो सताण तच्चाण तहियाण अवितहाण सब्भूताण जिणपण्णत्ताण भावा

નના મનમા અનેક વિચારો ઉદ્ભવ્યા અહીં વિચાર સબધી આ વિશેષણોનુ ગ્રહણ પણ કરીલેવુ જોઇએ કે "चिन्तित प्रार्थित कल्पित" આ એકદમ નવાઇ જેવુ લાગે છે કે જીતશત્રુ રાજા વિદ્યમાન તત્ત્વ રૂપ-અથવા તો વિવિધ પ્રકા રની વિવક્ષાથી સ્વત્વ પરત્વ રૂપથી યુક્ત, તથ્ય-સત્ય, ઘણુ ઓછુ પણ નહિ અને ઘણુ વધારે પણ નહિ, અવિતથ સત્તા યુક્ત એવા જીનપ્રજ્ઞપ્તના ભાવોને સમજી રહ્યા નથી એટલે કે જીતશત્રુ રાજા આ વાતને સમજી શકયા નથી કે જીન પ્રજ્ઞપ્ત વડે નિરૂપિત થયેલા ભાવો સત્ય હોય છે, અવિતથ હોય છે, અન્યૂન અનતિરિક્ત હોય છે, અનેક વિવક્ષાઓને લઇને તેમનામા નાના ધર્મવિશિષ્ટતા હોય છે (त)માટે

(सेय खलु मम जियसत्तूस्स रण्णो सताण तच्चाण ... अवितहाण

परपरिणमनरूप भावम् ' उवाएणाविस्सए ' उपादापयितु=ग्राहयितु मम श्रेय, इति पूर्वेण सम्बन्ध. । स सुबुद्धिरमात्य. एवम्=अनेन प्रकारेण सप्रेक्षते=विचारयति, सप्रेक्ष्य ' पच्चतिएहिं ' प्रत्यन्तिकैः=समीपस्थै प्रतिक्षणनिदर्शवर्त्तिभि' पुरुषैः सार्द्धम् ' अंतरावणाओ ' अन्तरापणात्=हट्टमार्गात ' बाजार ' इति भाषा प्रसिद्धात्, यद्वा-ग्रामान्तराल्पवर्तिकुम्भकारहट्टात् नवकान्=नूतनान् घटाश्च गृह्णाति, गृहीत्वा सन्ध्याकालसमये सूर्यास्तकाले ' पविरलमणुस्संसि ' प्रविरलमनुष्ये प्रविरला = स्तोका. मनुष्या यस्मिन् समये स प्रविरलमनुष्यस्तस्मिन्=सन्ध्याकाले हि मनुष्याणा गमनागमन स्वल्प भवति तादृशे समय इत्यर्थ', पुन ' णिसतपडिणिसतंसि ' निशान्त प्रतिनिशा ते=मनुष्यसचारगमनसमये यत्रैव परिखोदक तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तत् परिखोदक ग्राहयति, ग्राहयित्वा नवकेषु=नूतनेषु घटेषु ' गालावेइ ' गालयति, वस्त्रादिपूत कारयति, गालयित्वा पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य तान् ' लंछियमुद्दिए ' लाञ्छितमुद्रितान्-लाञ्छितान् लाक्षादिलेपयुक्तान्

ण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणाविस्सए एव संपेहेइ) मुझे यह उचित है कि मैं जितशत्रु राजा को सत्स्वरूप, भाव युक्त तथ्यरूप, अवितथ, और सद्भूतरूप ऐसे जिन प्रज्ञप्त भावों का अच्छी तरह बोध कराने के लिये और इस पुद्गलो के-अपरापर परिणमन रूप भाव को ये ऐसे ही है, इस तरह मनवाने के लिये उन्हे समझाऊँ । इस प्रकार उस ने विचार किया- (संपेहित्ता पच्चतिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता सझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि निसतपडिनिसतंसि जेणेव परिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त परिहोदग गेण्हावेइ गेण्हावित्ता नवएसु घडएसु गालावेइ

सब्भूताण जिणपण्णत्ताण भावाण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणाविस्सए एव संपेहेइ)

હવે મારે જીતશત્રુ રાજાને સત સ્વરૂપ, ભાવયુક્ત તથ્ય રૂપ, અવિતથ અને સદ્ભૂત રૂપ એવા જીનપ્રજ્ઞપ્તના ભાવોને સારી પેઠે સમજાવવા જોઈએ તેમજ પુદ્ગલોના અપરાપર પરિણમન રૂપ ભાવ વિશે પણ "તેઓ તો એવા જ છે" આ રીતે સમજાવવાની કોશિશ કરવી જોઈએ આમાટે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો

(संपेहित्ता पच्चतिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता सझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि निसतपडिनिसतंसि जेणेव परिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त परिहोदग गेण्हावेइ गेण्हावित्ता नवएसु घडएसु गालावेइ. गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खवावेइ, पक्खवावित्ता

मुद्रितान्=मुद्राधङ्कितान कारयति, कारयित्वा 'सत्तरत्तं' सप्तरात्र=सप्तरात्रिन्दिव पर्यन्त परिवसावेइ' परिवासयति=स्थापयति, तदनु 'दोच्चपि' द्वितीयमपि वारपुनरपरेषु नवकेषु घटेषु गालयति, गालयित्वा पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य तेषु घटेषु 'सज्जखार सर्जक्षार=' गजीखार' इति प्रसिद्धम्, सघो भस्म वा प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य लाञ्छितमुद्रितान् कारयति, कारयित्वा सप्तरात्र यावत् परिवासयति, स्थापयति। एव 'तच्चपि' तृतीयमपि वार पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु यावत् सवासयति=सम्यक् स्थापयति। एव खलु एतेन उपायेन=अनेनैव क्रमेण अन्तरा=मध्येमध्ये गालयन, अन्तरा=मध्येम चे प्रक्षेपयन् अन्तरा च विपरिवसावेमाणे' विपरिवासयन्' स्थापयन् २ सप्त सप्त रात्रिन्दिवानि= अहोरात्रिणि विपरिवासयति। ततः खलु तत्परिखोदक 'सत्तमसत्तयंसि' सप्तम

वेइ, गलावित्ता, लञ्छियमुद्दिते करावेइ, करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ, दोच्चपि नवएसु घडएसु गालावेइ गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावित्ता लञ्छियमुद्दिते करावेइ, करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ दोच्चपि नवएसु घडएसु गालावेइ, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ) विचार करके फिर उसने अपने समीपस्थ रहे हुए पुरुषो से-सेवको से बाजार से अथवा ग्रामान्तरवर्ती कुभकार के हाट से नवीन घडों को मगवाया। उन्हें लेकर वह सूर्यास्त काल के समय जब कि मनुष्यों का आना जाना स्वल्प हो गया और धीरे २ वह जब बिलकुल बद हो गया जहा परिखोदक था वहा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने उन घडों में पानी छान कर भरवाया। भरवा कर फिर उसे और दूसरे घडों में भरवाया। भरवा कर फिर उन पर उसने लाक्षादिक की मुहर लगवाई। लगवा कर उन्हें सात दिनरात तक एक

लञ्छियमुद्दिते, करावेइ करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ, दोच्चपि नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावित्ता लञ्छियमुद्दिते करावेइ, करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ, दोच्चपि नवएसु घडएसु गालावेइ, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ)

વિચાર કરીને તેણે પોતાના સેવકો પાસેથી બજાર અથવા ગામના નજીક કુભારની દુકાનમાથી નવા માટલાઓ મગાવડાવ્યા માટલાઓને લઈને તે જ્યારે સૂર્ય અસ્ત પામ્યો અને માણસોની અવરજવર એકદમ બધ થઈ ગઇ ત્યારે તે આઈની પાસે પહોચ્યો ત્યા પહોચીને તેણે માટલાઓમા પાણી ગાળીને ભરાવ્યુ ભરાવીને તેણે બીજા ઘડાઓમા પણ પણી ગાળીને ભરાવ્યુ પાણી ભરાવ્યા પછી તેણે માટલાઓને બરાબર બધ કરાવડાવીને સાત દિવસ સુધી

सप्तके परिणम्यमानेसति एकोनपञ्चाशदहोरात्रेषु व्यतीतेषु सत्सु तत्परिखोद-
कम्-उदकरत्न जात चाप्यभवत्। कीदृश जातम् ? इत्याह-'अच्छे' अच्छ=स्वच्छ

जगह रखवा दिया। फिर दुबारा भी उसने और दूसरे नवीन घडों में पानी छान कर भरवाया। भरवा कर फिर उस जल को उसने और दूसरे घडो मे भरवाया। (पक्खिवावित्ता) भरवा कर (सज्जखार पक्खिवावेइ लञ्छिय मुद्दिते कारवेइ) उन में उसने सज्जीखार डलवा दिया। डलवा कर उन पर लाक्षादिक के लेप की मुहर लगवा दी। (कारवित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ) लगवा कर उन्हे एक ओर रखवा दिया (तच्चपि नवएसु घडएसु जाव सवसोवेइ, एव खलु एएण उवाएण अतरा गलावेमाणे अतरा पक्खिवावेमाणे अतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त २ राई दिया विपरिवसावेइ) तीसरी बार भी उसने उपर नवीन घडों में छानकर पानी भरवाया-भरवाकर पहिले की तरह ही उसने सब काम करवाया-फिर उन्हे अच्छी तरह एक ओर रखवा दिया। इस तरह के उपाय से उसने बीच २ मे उस जल को पुन. २ छानकर उनमें भरवाया और भरवा २ कर सात २ दिन तक उन घडों को एक २ ओर रखवा दिया। (तएण से फरिहोदए सत्तमसत्तयसि परिणमाणसि उदगरयणे जाये) इस प्रकार करते २ जब ४९ दिन समाप्त हो

એક જગ્યાએ માટલાઓને મૂકાવડાવ્યા બીજી વખત તેણે બીજા નવા ઘડાઓમા પાણી ગાળીને ભરાવડાવ્યુ ભરાવડાવીને તે પાણીને ગાળીને બીજા માટલાઓમા ભરાવડાવ્યુ (પક્ખિવાવિત्ता) ભરાવડાવીને

(सज्जखार पक्खिवावेइ लञ्छियमुद्दिते कारवेइ)

તેણે માટલાઓમા માજીખાર નખાવડાવ્યો માજી બાર નખાવડાવીને તેણે માટલાઓને બરાબર બધ કરાવડાવી (कारवित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ) સીલ કરાવડાવીને માટલાઓને એકબાજુ મૂકી દીધા

(तच्चपि नवएसु घडएसु जाव सवसावेइ, एव खलु एएण उवाएण अतरा पक्खिवावेमाणे अतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त २ राई दिया विपरिवसावेइ)

ત્રીજી વખત પણ તેણે બીજા નવા માટલાઓમા પાણી ભરાવડાવ્યુ ભરાવીને પહેલાની જેમજ બધી વિધિ કરી અને માટલાઓને એક તરફ મૂકાવી દીધા આ પ્રમાણે કરતા તેણે વચ્ચે વચ્ચે કેટલીએ વખત વાર વાર ગાળીને માટલાઓમા પાણી ભરાવ્યુ અને ત્યારપછી સાત દિવસ માટે માટલાઓને એક બાજુ મૂકાવી દીધા

(तएण से फरिहोदए सत्तमसत्तयसि परिणममाणसि उदगरयणे जाये)

मुद्रितान्=मुद्राङ्कितान् कारयति, कारयित्वा 'सत्तरत्त' सप्तरात्र=सप्तरात्रिन्दिव पर्यन्त परिवसावेइ' परिवासयति=स्थापयति, तदनु 'दोच्च पि' द्वितीयमपि वारपुनरपरेषु नवकेषु घटेषु गालयति, गालयित्वा पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य तेषु घटेषु 'सज्जखार' सर्जक्षार=' सज्जीखार ' इति प्रसिद्धम्, सद्यो भस्म वा प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य लाञ्छितमुद्रितान् कारयति, कारयित्वा सप्तरात्र यावत् परिवासयति, स्थापयति। एव 'तच्च पि' तृतीयमपि वार पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु यावत् सवासयति=सम्यक् स्थापयति। एव खलु एतेन उपायेन=अनेनैव क्रमेण अन्तरा=मध्येमध्ये गालयन, अन्तरा=मध्येमध्ये प्रक्षेपयन् अन्तरा च विपरिवसावेमाणे' विपरिवासयन् २ स्थापयन् २ सप्त सप्त रात्रिन्दिवानि= अहोरात्रिणि विपरिवासयति। ततः खलु तत्परिखोदक 'सत्तमसत्तयमि' सप्तम

वेइ, गलावित्ता, लञ्छियमुद्दिते करावेइ, करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ, दोच्चपि नवएसु घडएसु गालावेइ गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावित्ता लञ्छियमुद्दिते करावेइ, करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ दोच्चपि नवएसु घडएसु गालावेइ, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ) विचार करके फिर उसने अपने समीपस्थ रहे हुए पुरुषो से-सेवको से बाजार से अथवा ग्रामान्तरवर्ती कुभकार के हाट से नवीन घडों को मगवाया। उन्हें लेकर वह सूर्यास्त काल के समय जब कि मनुष्यों का आना जाना स्वल्प हो गया और धीरे २ वह जब बिलकुल बद हो गया जहा परिखोदक था वहां पहुँचा। वहां पहुँच कर उसने उन घडों में पानी छान कर भरवाया। भरवा कर फिर उसे और दूसरे घडों में भरवाया। भरवा कर फिर उन पर उसने लाक्षादिक की मुहर लगवाई। लगवा कर उन्हें सात दिनरात तक एक

लञ्छियमुद्दिते, करावेइ करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ, दोच्चपि नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावित्ता लञ्छियमुद्दिते करावेइ, करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ, दोच्चपि नवएसु घडएसु गालावेइ, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ)

વિચાર કરીને તેણે પોતાના સેવકો પાસેથી બજાર અથવા ગામના નજીક કુભારની દુકાનમાથી નવા માટલાઓ મગાવડાવ્યા માટલાઓને લઈને તે જ્યારે સૂર્ય અસ્ત પામ્યો અને માણસોની અવરજવર એકદમ બધ થઈ ગઇ ત્યારે તે ખાઈની પાસે પહોચ્યો ત્યા પહોચીને તેણે માટલાઓમા પાણી ગાળીને ભરાવ્યુ ભરાવીને તેણે બીજા ઘડાઓમા પણ પણી ગાળીને ભરાવ્યુ પાણી ભરાવ્યા પછી તેણે માટલાઓને બરાબર બધ કરાવડાવીને સાત દિવસ સુધી

प्रह्लादनीय ज्ञात्वा हृष्ट-तुष्टः बहुभिः ' उदगमभारणिज्जेहिं ' उदकसभारणीयै = जलसुगन्धकरणयोग्यै' केतकीपाटलादिद्रव्यैः ' सभारेइ ' सभारयति = सस्कारयति सभारयित्वा जितशत्रो राज्ञः ' पाणियघरय ' पानीयहारक यस्य हस्तादारा पानीय पिबति त शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-त्व च खलु हे देवानुप्रिय ! इदमुदकरत्न गृह्राण, गृहीत्वा जितशत्रो राज्ञो भोजनवेलायाम् उपनय । ततः खलु पानीयहारक. सुबुद्धिकस्य = सुबुद्धिनामकामात्यस्य एतमर्थं=राज्ञ. पानीय उदगसभारणिज्जेहि सभारेइ सभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणिय घरिय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी—तुमच ण देवाणुप्पिया इम उदगरयण गेण्हाहि २ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि)

इसके बाद वह सुबुद्धि अमात्य जहाँ वह उदक रत्न था वहा गया। वहा जाकर उसने उस उदकरत्न को हाथ में लेकर चखा। चख कर जब उसे यह ज्ञात हो चुका कि यह उदक रत्न वर्णादि से युक्त यावत् सर्वेन्द्रिय गात्र प्रल्हादनीय बन गया है तो वह बहुत ही आनन्दित एव सतुष्ट हुआ बाद में उसने उस जल को सुगधित करने वाले केतकी पाटल (गुलाब) आदि द्रव्य से सस्कारित किया-सस्कारित करके फिर उसने जितशत्रु राजा का जो पानी पिलाने वाला भृत्य था उसे बुलाया बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवाणुप्रिय ! तुम इस उदक रत्न को लो-और लेकर जब जितशत्रु राजा के भोजन करने का समय होवे तब इसे उनके पास ले जाना। (तएण से पणियघरिय सुबुद्धिय-सभारेइ सभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणियघरिय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुम च ण देवाणुप्पिया इम उदगरयण गेण्हाहि२ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि)

ત્યારપછી અમાત્ય સુબુદ્ધિ જ્યા ઉદકરત્ન (પાણી) હતુ ત્યા ગયેા ત્યા જઇને તેણે ઉદકરત્ન (પાણી) ને હથેળી ઉપર લઈને ચાખ્યુ ચાખ્યા બાદ તેને એમ લાગ્યુ કે ખરેખર આ ઉદકરત્ન (પાણી) વર્ણ વગેરે ગુણેાથી યુક્ત યાવત્ બધી ઇન્દ્રિયેા અને શરીરને આનદ પમાડે તેવુ થઈ ગયુ છે ત્યારે તે બહુ જ પ્રસન્ન અને સતુષ્ટ થયેા ત્યાર પછી તેણે પાણીને સુવાસિત કર નાર કેતકી પાટલ (ગુલાબ) વગેરે દ્રવ્યેાથી પાણીને સસ્કારિત કર્યું પાણીને સસ્કારિત કર્યા બાદ અમાત્યે જીતશત્રુ રાજાને પાણી પીવડાવનાર નેાકરને બેાલાવ્યેા અને બેાલાવીને તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજાને જમવાનેા વખત થાય ત્યારે તુ આ ઉદકરત્ન (પાણી) તેમની પાસે લઈ જજે

(तएण से पणियघरिय सुबुद्धियस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता त

निर्मलत्वात्, 'पत्थे' पथ्यम्=आरोग्यजनकत्वात्, 'जच्चे' जात्यम्=उत्तमगुणवत्त्वात्, 'तणुए' तनुक=भारेणलघुक पाचकत्वात्, 'फलिहवण्णाभे' स्फटिकवर्णाभ=स्फटिकमणिवर्णतुल्य वर्णन-उपपेतम् ४ = प्रशस्तवर्णगन्धरसस्पर्शैर्युक्तम् 'आसायणिज्जे' आस्वादनीयम्=आस्वादयोग्य यावत् सर्वेन्द्रिय गात्रप्रह्लादनीय जातम्। तत' खलु सुबुद्धिरमात्यो यत्रैव तद् उदकरत्न तत्रोपागच्छति, उपागत्य करतले=हस्ततले गृहीत्वा तद् 'आसाएइ' आस्वादयति आस्वाद्य तद् उदकरत्न वर्णेनोपपेतम् ४ वर्णादिपपेतम् - आस्वादनीय यावत् सर्वेन्द्रियगात्र

चुके तब वह परिखोदक उदकरत्न श्रेष्ठजल रूपमें परिणमित हो गया। (अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेण उववेय४आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे) वह उदकरत्न निर्मल होने से बिलकुल स्वच्छ हो गया आरोग्य जनक होने से पथ्य रूप बन गया उत्तम गुणवाला होने से श्रेष्ठ दिखनेलगा शीघ्र पचने के योग्य हो जाने के कारण भार मे वह बहुत हलका हो गया, और स्फटिकमणि के वर्ण समान वर्ण से युक्त हो गया। इसके वर्ण, गंध, रस और स्पर्श सब प्रशस्त-श्रेष्ठ बन गये। यह आस्वादनीय हो गया यावत् समस्त इन्द्रियों को एव शरीर को तृप्ति करने वाला बन गया। (तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलंसि आसादेइ, आसादित्ता तं उदगरयणं वण्णेण उववेय ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठ तुट्ठे बहूहिं

આ રીતે જ્યારે ૪૯ દિવસો પૂરા થયા ત્યારે તે બાકીનુ ઉદકરત્ન (પાણી) ઉત્તમ પાણીના રૂપમા પરિણત થઈ ગયુ

(अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेण उववेय४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे)

તે ઉદકરત્ન (પાણી) નિર્મળ હોવા બદલ એકદમ સ્વચ્છ થઈ ગયુ હતુ આરોગ્યજનક હોવાથી પથ્ય રૂપ થઈ ગયુ હતુ, ઉત્તમ ગુણ-સપન્ન હોવાથી શ્રેષ્ઠ દેખાતુ હતુ, શીઘ્ર પાચન થાય તેવુ હોવાથી વજનમા તે ખૂબ જ હલકુ થઈ ગયુ હતુ પાણીના વર્ણ ગધ, રસ અને સ્પર્શ આ બધા ગુણો પ્રશસ્ત શ્રેષ્ઠ રૂપમા પરિણત થઈ ગયા હતા તે આસ્વાદનીય થઈ ગયુ હતુ યાવત બધી ઇન્દ્રિયોને તેમજ શરીર તૃપ્ત કરનાર બની ગયુ હતુ

(तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलंसि आसादेइ, आसादित्ता तं उदगरयणं वण्णेण उववेय ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहिं

भूत.=परमपवित्र स राजा तस्मिन् उदकरत्नजातविस्मयः=सजातजलस्वादकौतुकः तान् बहून् राजेश्वर यावत्-राजेश्वर-तलवर - माडम्बिककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठि सेनापतिसार्थवाहप्रभृतीन् एवमवदत्-अहो ! आश्चर्यमेतत् खलु हे देवानुप्रियाः ! इदमुदकरत्नम् अच्छ यावत्-सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयमस्ति । तत, खलु बहवो राजेश्वर यावत्सार्थवह-प्रभृतय एवमवादिषुः-तथैव खलु हे स्वामिन् ! यत् खलु यूय वदथ यावद् एवमेव सर्वेन्द्रिगात्रप्रह्लादनीय वर्त्तते । तत. खलु जितशत्रु

लिये थे। इस परम शुचिभूत बनकर अपनी बैठक पर बैठे हुए उन जितशत्रु राजा को उस उदकरत्न के आस्वादन मे बडा ही आश्चर्य हो रहा था। उसी आश्चर्य मे डूबे हुए उन राजा ने अपने पास बैठे हुए राजेश्वर तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति और सार्थवाहक आदि जनो से इस प्रकार का (अहोण देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे तएण बहवे राईसर जाव एव वयासी-तहेव ण सामी ! जण्ण तुब्भे वदह जाव एव चेव पल्हायणिज्जे तएण जियसत्तूराया पाणियघरिय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एसण तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसाइए ?) देवानुप्रियो ! देखो यह उदकरत्न (श्रेष्ठ जल) कितना अच्छा निर्मल यावत् समस्त इन्द्रियो एव शरीर को आनन्द देनेवाला है। इस प्रकार राजा का कथन सुनकर उन राजेश्वर आदि समस्त जनों ने उस राजा से ऐसा कहा-स्वामिन् आप जैसा कहते है, यह जल

દીધા હતા આ પ્રમાણે એકદમ પવિત્ર થઈને પોતાની બેઠકમા બેઠેલા રાજા જીતશત્રુને જમતી વખતે પીધેલા ઉદકરત્નના આસ્વાદન વિશે ખૂબ જ નવાઇ જેવુ લાગતુ હતુ ઉદકરત્ન (પાણી) વિશેના નવાઈના વિચારો કરતા રાજાએ પોતાની પાસે બેઠેલા રાજેશ્વર, તલવર, માડલિક, કૌટુંબિક, ઈભ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ અને સાર્થવાહ વગેરે જનોને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(अहोण देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयण अच्छे जाव सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे तएण बहवे राईसर जाव एव वयासी तहेव ण सामी ! जण्ण तुब्भे वदह जाव एव चेव पल्हायणिज्जे तएण जियसत्तू राया पाणियघरिय सद्दावेइ,सद्दावित्ता एव वयासी एसण तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसाइए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જમતી વખતે પીધેલુ ઉદકરત્ન (પાણી) કેટલુ બધુ નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનદ પમાડનાર છે આ રીતે રાજાની વાત સાભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધા ઉપસ્થિત લોકોએ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-હે સ્વામિન્ ! તમારી વાત એકદમ યથાર્થ છે પાણી ખરેખર

पानरूप भाव मतिश्रृणोति=स्वीकरोति, मतिश्रुत्य तदुदकरत्न गृह्णाति, गृहीत्वा जितशत्रोः राज्ञो भोजनवेलायाम् उपस्थापयति । सत' खलु स जितश राजा तद् विपुलम् अशनपान-खाद्य-स्वाद्यम्-आस्वादयन् यावद् विहरति । 'जिमियभुत्तुत्तरागए वि' जिमितभुक्तोत्तरागतोऽपि च खलु-जिमितम्=आस्वादित भुक्तम् उदरपूरणपूर्वकम्, तदुत्तरम् आगत'=स्वोपवेशनस्थाने प्राप्त., कीदृश सन्? इत्याह-यावत्-आचान्तः=कृतचुलुक', अतएव चोक्षः=निर्लेप. परमशुचि

रस एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता त उदगरयण गिण्हइ, गिण्हित्ता जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ तएण से जियसत्तू राया त विपुल असण ४ आसाएमाणे जाव विहरइ) इस प्रकार उस पानीय हारक ने सुबुद्धि अमात्य की इस बातको मान लिया और मानकर उस उदकरत्न को-श्रेष्ठ निर्मलजल को-ले लिया-लेकर उसने उसे जितशत्रु राजा के भोजन करने के समय उपस्थापित कर दिया-ताकि वे इस जल को पीवें। इसके बाद जितशत्रु राजा का जब भोजन करने का समय आया तब उसने अशनादि रूप ४ चारो प्रकार का आहार खूब इच्छानुसार किया और उस उदकरत्न को पिया। (जिमिय भुत्तुत्तरागए आविय ण जाव परमसुइभूए तसि उदगरयणे जाव विम्हए ते बहवे राईसर जाव एव वयासी) जब जितशत्रु राजा अच्छी तरह खा पी चुके तब वे अपने उपवेशन के स्थान में बैठक मे-आये। बैठक में आने के पहिले उन्होंने कुल्ला आदि करके अपने मुख को अच्छी तरह धो लिया था और हाथ वगैरह भी अच्छी तरह प्रक्षालित कर (धोकर)

उदगरयण गिण्हइ गिण्हित्ता, जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ, तएण से जियसत्तू राया त विपुल असण ४ आसाएमाणे जाव विहरइ)

આ રીતે પાણીવાળા નોકરે સુબુદ્ધિ અમાત્યની વાત સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તે ઉદકરત્નને-શ્રેષ્ઠ નિર્મળ પાણીને-ત્યાંથી લઈને જમવાની વખતે જીતશત્રુ રાજાની સામે તેમને પીવા માટે પહોંચાડી દીધુ ત્યાર પછી જ્યારે જીતશત્રુ રાજાનો જમવાનો વખત થયો ત્યારે રાજા અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતના આહારે ખૂબ તૃપ્ત થઈને ઇચ્છા મુજબ જમ્યા અને તે ઉદકરત્ન (પાણી) ને પીધુ

(जिमियभुत्तुत्तरागए यावि य ण जाव परमसुइभूए तसि उदगरयणे जाव विम्हए ते बहवे राईसर जाव एव वयासी)

રાજા જીતશત્રુએ આમ સારી રીતે જમવાનુ પતાવી દીધુ ત્યારે તેઓ ત્યાંથી પોતાના ઉપવેશનના સ્થાનમા એટલે કે બેઠકમા આવ્યા' બેઠકના આવતા પહેલા તેઓએ કોગળા વગેરે કરીને મો અને હાથોને ધોઇને બનાવી

भूत.=परमपवित्र स राजा तस्मिन् उदकरत्नजातविस्मयः=सजातजलस्वादकौतुकः तान् बहून् राजेश्वर यावत्-राजेश्वर-तलवर - माडम्बिककौटुम्बिकेभ्य-श्रेष्ठि सेनापतिसार्थवाहप्रभृतीन् एवमवदत्-अहो ! आश्चर्यमेतत् खलु हे देवानुप्रियाः ! इदमुदकरत्नम् अच्छ यावत्-सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयमस्ति । तत, खलु बहवो राजेश्वर यावत्सार्थवह-प्रभृतय एवमवादिषुः-तथैव खलु हे स्वामिन् ! यत् खलु यूय वदथ यावद् एवमेव सर्वेन्द्रिगात्रप्रह्लादनीय वर्त्तते । तत. खलु जितशत्रु

लिये थे। इस परम शुचिभूत बनकर अपनी बैठक पर बैठे हुए उन जितशत्रु राजा को उस उदकरत्न के आस्वादन मे बडा ही आश्चर्य हो रहा था। उसी आश्चर्य मे डूबे हुए उन राजा ने अपने पास बैठे हुए राजेश्वर तलवर, माडविक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति और सार्थवाहक आदि जनो से इस प्रकार का (अहोण देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे तएण बहवे राईसर जाव एव वयासी-तहेव ण सामी ! जण्ण तुब्भे वदह जाव एव चेव पल्हायणिज्जे तएण जियसत्तूराया पाणियघरिय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एसण तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसाइए ?) देवानुप्रियो ! देखो यह उदकरत्न (श्रेष्ठ जल) कितना अच्छा निर्मल यावत् समस्त इन्द्रियो एव शरीर को आनन्द देनेवाला है। इस प्रकार राजा का कथन सुनकर उन राजेश्वर आदि समस्त जनों ने उस राजा से ऐसा कहा-स्वामिन् आप जैसा कहते है, यह जल

दीधा हता आ प्रमाणे एकदम पवित्र थईने पोतानी बेठकमा बेठेला राजा जीतशत्रुने जमती वखते पीधेला उदकरत्नना आस्वादन विशे खूब ज नवाइ जेवु लागतु हतु उदकरत्न (पाणी) विशेना नवाईना विचारो करता राजाए पोतानी पासे बेठेला राजेश्वर, तलवर, माडलिक, कौटुंबिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्थवाह वगेरे जनोने आ प्रमाणे कह्युं

(अहोण देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयण अच्छे जाव सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे तएण बहवे राईसर जाव एव वयासी तहेव ण सामी ! जण्ण तुब्भे वदह जाव एव चेव पल्हायणिज्जे तएण जियसत्तू राया पाणियघरिय सद्दावेइ,सद्दावित्ता एव वयासी एसण तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसाइए)

हे देवानुप्रियो ! जमती वखते पीधेलु उदकरत्न (पाणी) केटलु बधु निर्मळ अने बधी इन्द्रियो तेमज शरीरने आनद पमाडनार छे आ रीते राजानी वात साभळीने राजेश्वर वगेरे बधा उपस्थित लोकोओ राजाने आ प्रमाणे कह्युं के-हे स्वामिन् ! तमारी वात एकदम यथार्थ छे पाणी खरेखर

राजा पानीहारकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एतत् खलु त्वं हे देवानुप्रिय! उदकरत्नं प्रधानमुदकं कुतः कस्मात्स्थानात् 'आसाएए' आसादितं=प्राप्तम् ?। ततः खलु स पानीयहारकः जितशत्रुणा राज्ञा एवमुक्तः सन् हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः यावत् हृदयः करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा जितशत्रुं राजानं जयेन विजयेन वर्धयति, वर्धयित्वा एवमवादीत्-एतत् खलु स्वामिन्! मया उदकरत्नं सुबुद्धेरन्तिकादासादितम्। ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धिमामन्त्र्य शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-अहो! खलु हे सुबुद्धे! केन कारणेनाहं तवानिष्ट-

---

वैराग्य हो है-अतः अधिक स्वच्छ एवं समस्त इन्द्रियों को, शरीर को आनंद दायक है इसके बाद जितशत्रु राजाने पानीयहारक को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय! यह उदक रत्न (श्रेष्ठ जल)- तुमने कहां से प्राप्त किया है। (तएणं से पाणियघरए जियसत्तू एवं वयासी-एसणं सामी! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अनियाओ आसाइए तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी, अहोणं सुबुद्धी! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे पजेणं तुम मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि? तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया! उदगरयणे कओ उवलद्धे?) राजाकी इस बात को सुनकर उस पानीयहारक ने उनसे कहा-हे स्वामिन्! मैंने यह उदक रत्न सुबुद्धि प्रधान के पास से पाया है। इसके बाद जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान को बुलाया-बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-हे सुबुद्धे! मैं किस कारण से तुम्हारे लिये अनिष्ट, अकान्त,

---

તેવુ જ હતુ તે બહુ જ નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયોને તથા શરીરને આનદ આપનાર હતુ ત્યારપછી જીતશત્રુ રાજાએ પાણીવાળાને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યુ-કે હે દેવાનુપ્રિય! આ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ પાણી) તમે કયાથી મેળવ્યુ છે?

(तएणं से पाणियघरए जियसत्तू एवं सुबुद्धिस्स अंतियाओ असाइए तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, अहोणं सुबुद्धी! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे पजेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि! तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया! उदगरयणे कओ उवलद्धे?)

રાજાની આ વાત સાભળીને પાણીવાળાએ જવાબમા રાજાને કહ્યુ કે હે સ્વામિન્! આ ઉદકરત્ન (પાણી) હુ સુબુદ્ધિ અમાત્યની પાસેથી લાવ્યો હુ રાજાએ ત્યાર બાદ સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સુબુદ્ધિ! શા કારણથી હુ તમારા માટે અકાત,

अकान्त, अप्रियः, अमनोज्ञ', अमनआमोऽस्मि येन त्व मम 'कल्लाकल्लिं' कल्याकलिय=प्रतिदिन भोजनवेलायामिदमुदकरत्न नोपस्थापयसि, तदेतत् खलु त्वया हे देवानुप्रिय ! उदकरत्न कुत उपलब्धम् ? । तत' खलु सुबुद्धि र्जितशत्रुमेवमवादीत्-एतत्खलु हे स्वामिन् ! तत्=यद् भवद्भिः=पूर्वदृष्ट मेदोवसादिदुर्गन्धयुक्त तदेव परिखोदक=परिखाजल वर्त्तते । तत' खलु स जितशत्रुः सुबुद्धिमेवमवदत्-केन कारणेन हे सुबुद्धे ! एतत्तत् परिखोदकम् ? । तत खलु हे स्वामिन् ! यूय तदा मम एवमाचक्षाणस्य प्रज्ञापयतः, सज्ञापयतः विज्ञापयत'=वारवार प्रतिपादयत

अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमन आम बन रहा हूँ कि जिससे तुम प्रतिदिन मेरे लिये भोजन वेला मे इस उदक रत्न को उपस्थापित नही करते हो ? तो कहो हे देवानुप्रिय ! यह उदक रत्न तुमने कहा से पाया है ? (तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी एसण सामी ! से फरिहोदए, तएण से जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी-केण कारणेण सुबुद्धी ! एससे फरिहोदए? तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासीएव-खलु सामी ! तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो सद्दहह, तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) तब सुबुद्धि प्रधानने जितशत्रु रजा से कहा-हे स्वामिन् ! यह उदक रत्न वही परिखोदक है । जितशत्रु ने कहा यह परिखोदक किस कारण से ऐसा उदक रत्न बन गया है । सुबुद्धि अमात्य ने तब ऐसा कहा- हे स्वामिन् ! जब मैंने आपसे इस प्रकार कहा था इस प्रकार प्ररूपित किया था, इस प्रकार सज्ञापित किया था, विज्ञापित किया था- बार बार आपसे प्रतिपादित किया था

અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમન આમ થઈ પડયો છુ કેમ કે હ મેશા જમવાના વખતે મારા માટે આજના જેવુ ઉદક રત્ન (સાર પાણી) તમે ઉપસ્થાપિત કરતા નથી-મૂકાવડાવતા નથી ? હે દેવાનુપ્રિય ! બોલો, આવુ ઉદક રત્ન તમોએ કયાથી મેળવ્યુ છે ?

(तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी एसण सामी ! से फरिहोदए, तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी-केण कारणेण सुबुद्धी एस मे फरिहोदए ? तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-एव खलु सामी ! तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो सद्दहह, तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुपज्जित्था)

ત્યારે સુબુદ્ધિ પ્રધાને જીતશત્રુ રાજાને કહ્યુ કે હે સ્વામી ! આ ઉદકરત્ન (સાર પાણી) તે જ ખાઈનુ પાણી છે રાજાએ અમાત્યને ફરી પૂછયુ કે ખાઈનુ પાણી આવુ સરસ કેવી રીતે થઇ ગયુ ? જવાબમા સુબુદ્ધિ અમાત્યે કહ્યુ કે હે સ્વામિન્ ! પહેલા મે તમારી સામે આ પ્રમાણે પ્રરૂપિત કર્યું હતુ, આ પ્રમાણે સજ્ઞાપિત કયુ હતુ, વિજ્ઞાપિત કર્યું હતુ, વારવાર પ્રતિપાદિત

राजा पानीहारकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एतत् खलु त्वं हे देवानुप्रिय! उदकरत्नमुदकं कुतः खल्वाख्यानात् 'आभाहए' आभादितं=प्राप्तम्?। ततः खलु स पानीयहारकः जितशत्रुणैवमुक्तः सन्-एतत् खलु हे स्वामिन्! मया उदकरत्नं सुबुद्धेरन्तिकादासादितम्। ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धिमात्यं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-अहो! खलु हे सुबुद्धे! केनकारणेनाहं तवानिष्टः

वैसा ही है-बहुत अधिक स्वच्छ एवं समस्त इन्द्रियों को, शरीर को आनंद दायक है इसके बाद जितशत्रु राजाने पानीहारक को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय! यह उदक रत्न (श्रेष्ठ जल)- तुमने कहां से प्राप्त किया है। (तएणं से पाणियघरए जियसत्तू एवं वयासी-एसणं सामी! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आभाइए तएणं जियसत्तू सुबुद्धि अमच्चं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी, अहोणं सुबुद्धी! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे पजेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि? तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया! उदगरयणे कओ उवलद्धे?) राजाकी इस बात को सुनकर उस पानीयहारक ने उनसे कहा-हे स्वामिन्! मैंने यह उदक रत्न सुबुद्धि प्रधान के पास से पाया है। इसके बाद जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान को बुलाया-बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-हे सुबुद्धे! मैं किस कारण से तुम्हारे लिये अनिष्ट, अकान्त,

---

તેવુ જ હતુ તે બહુ જ નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયોને તથા શરીરને આનદ આપનાર હતુ ત્યારપછી જીતશત્રુ રાજાએ પાણીવાળાને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યુ-કે હે દેવાનુપ્રિય! આ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ પાણી) તમે કયાથી મેળવ્યુ છે?

(तएणं से पाणियघरए जियसत्तू एवं सुबुद्धिस्स अंतियाओ असाइए तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, अहोणं सुबुद्धी! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे पजेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि! तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया! उदगरयणे कओ उवलद्धे?)

રાજાની આ વાત સાભળીને પાણીવાળાએ જવાબમા રાજાને કહ્યુ કે હે स्वामिन्! આ ઉદક રત્ન (પાણી) હુ સુબુદ્ધિ અમાત્યની પાસેથી લાવ્યો છુ રાજાએ ત્યાર બાદ સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સુબુદ્ધિ! શા કારણથી હુ તમારા માટે અ[illegible] અકાત,

हारकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवं वदामि-त्वं खलु हे देवानुप्रिय ! उदकरत्नं जित शत्रो राज्ञो भोजनवेलायामुपनय तदेतेन कारणेन हे स्वामिन् ! एतत्तत्-तदेव यद्धं वद्भि दृष्टपूर्वं परिखोदकम् । ततः खलु जितशत्रू राजा सुबुद्धेरमात्यस्य एवमाचक्षाणस्य ४ एतमर्थम्-' इदमेतदेव परिखोदकम् ' इत्येवं रूप भाव नो श्रद्दधाति,

राजा को सद्भूत विद्यमान- यावत् जिन प्रज्ञप्त भावो का बोध कराने के लिये और उनसे इन्हे ये ऐसे ही है, इस रूप से मनवाने के लिये ऐसा प्रयत्न करूँ कि जिससे उनकी श्रद्धा आदि उन पर जम जावे और वे इस बात को मानने लग जावे । ' एव संपेहेमि २ तच्चेव जाव पाणिय घरिय सद्दावेमि सद्दावित्ता एव वयासी तुमण देवाणुप्पिया ! उदगरयण जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि, त एएण कारणेण सामी ! एस से फरिहोदए ! तएण जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो सद्दहइ ३) ऐसा मैने विचार किया विचार करके फिर मैंने पानीयहारक को बुलाया- बुलाकर उस से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस उदक रत्न को जितशत्रु राजा के भोजन के समय पर ले जाना । इस कारण से हे स्वामिन् । जो आपने पहिले परिखोदक देखा था-वही यह परिखोदक है—और इस रूप में परिणत हो गया है । जितशत्रु राजा ने इस प्रकार कहने वाले ४ सुबुद्धि अमात्य के इस अर्थ को कि यह वही परिखोदक है अपनी श्रद्धा का विषय नही बनाया प्रतीति का विषय नही बनाया, अपनी

ભાટે અને એ ભાવો ખરેખર એવા છે, એવુ ઠસાવવા માટે પ્રયત્નો કરવા જોઈએ જેથી તેઓને આ ભાવો ઉપર સ પૂર્ણપણે વિશ્વાસ બેસી જાય અને તેઓ આ વાતને સ્વીકાર પણ કરે

(एव संपेहेमि २ त चेव जाव पाणियघरिय सद्दावेमि सद्दावित्ता एव वयासी तुमण देवाणुप्पिया ! उदगरयण जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि त एएण कारणेण सामी ! एस से फरिहोदए । तएण जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एवमट्ठ नो सद्दहइ ३)

આ પ્રમાણે મે વિચાર કર્યો વિચાર કરીને મે પાણી લાવનારને બોલાવ્યો અને બોલાવીને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ ઉદકરત્ન (સારા પાણી) ને જીતશત્રુ રાજા જ્યારે જમવા માટે બેસે ત્યારે લઇ જજો એટલા માટે હે સ્વામી ! તમે પહેલા બાઈનુ જે પાણી જોયુ છે તે જ આ પાણી છે અને આ તો તે પાણીનુ જ રૂપાતર છે સુબુદ્ધિ અમાત્યની આ વાત પર-કે આ પાણી તે જ બાઇનુ છે રાજા જીતશત્રુને વિશ્વાસ થયો નહિ રાજાએ અમાત્યની વાત

इत्यर्थः एतम्=पुद्गलानां शुभाशुभरूपेण परिवर्त्तनलक्षणम् अर्थम्=भावं नो श्रद्दत्थस्म=श्रद्धाविषयीपरिश्रद्धां नो कृतवन्त, तत =तस्मात् खलु मम अयमेतद्रूपः= वक्ष्यमाणः-आध्यात्मिकः, चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः सकल्पः नानाविधो मानसिको विकल्पः इत्यर्थः समुदपद्यत-अहो ! खलु जितशत्रू राजा सतो यावद् भावान् नो श्रद्दधाति नो प्रत्येति नो रोचयति तत् श्रेय खलु मम जितशत्रोः राज्ञ सता यावत् सद्भूतानां जिनप्रज्ञप्तानां भावानाम् अभिगम नार्थाय=अवबोधाय एतमर्थम् ' उवाइणावेत्तए '-उपादापयितुम्=ग्राहयितुं श्रेयइति पूर्वेण सम्बन्धः, एव सम्प्रेक्षे=अहं पर्यालोचितवान्, सम्प्रेक्ष्य तदेव यावत् पानीय-

---

कि पुद्गलों का शुभाशुभ रूपसे परिणमन होता रहता है- नाना रूप से उनका परिवर्तन होता रहता है यह परिवर्तन होना उनका स्वाभाविक लक्षण है परन्तु जब आपने उस भाव को श्रद्धा में परिणत नहीं किया-मेरे वचनों पर आपको विश्वास नहीं जमा तब मुझे इस प्रकार का आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित, मनोगत नाना प्रकार को विचार उत्पन्न हुआ (अहोण जियसत्तू सते जाव भावे नो सद्दहइ, न पत्तियाइ, रोएइ, त से य खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो सताण जाव सब्भूयाण जिणपन्नत्ताण भावाण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणावेत्तए) देखो यह कितने आश्चर्य की बात है कि जो जितशत्रु राजा सद्भूत विद्यमान यावत् जिन प्रज्ञप्त भावो को अपनी श्रद्धा का विषय भूत नहीं बना रहे है उन पर प्रतीति नहीं कर रहे हैं, उन पर अपनी रुचि नहीं जमा रहे है। इसलिये मुझे यह उचित है कि मैं जितशत्रु

કર્યું હતુ કે શુભાશુભ રૂપમા પુદ્ગલોનુ પરિણમન થતુ જ રહે છે અનેક રૂપમા તેઓમા પરિવર્તન થતુ જ રહે છે આવુ પરિવર્તન તેઓનુ એક સ્વાભાવિક લક્ષણ છે પણ જ્યારે તમે મારી આ વાત શ્રદ્ધાપૂર્વક સાભળી નહિ, મારા કથન ઉપર વિશ્વાસ કર્યો નહિ, ત્યારે મારા મનમા આ જાતના આધ્યાત્મિક, ચિતિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત મનોગત ઘણા વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે—

(अहोण जियसत्तू सते जाव भावे नो सद्दहइ, नो पत्तियाइ, नो रोएइ, त सेय खलु मम जियसत्तूस्स रण्णो सताण जाव सब्भूयाण जिणपन्नत्ताण भावाण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणावेत्तए)

જુઓ આ કેવી આશ્ચર્યની વાત છે કે જીતશત્રુ રાજા સદ્ભૂત વિદ્યમાન યાવત્ જીનપ્રજ્ઞપ્તના ભાવો ઉપર શ્રદ્ધા ધરાવતા નથી, તેમના ઉપર વિશ્વાસ મૂકતા નથી અને પોતાની રુચિ પણ તેમના પ્રત્યે જમાવતા નથી એટલે મારે હવે જીતશત્રુ રાજાને સદ્ભૂત વિદ્યમાન યાવત જીનપ્રજ્ઞપ્તભાવોનો બોધ આપવા

संस्कुरुत । तेऽपि तथैव समारयति, समार्य जितशत्रो' 'उवणेंति' उपनयन्ति= समीपमानयन्ति । ततः खलु जितशत्रू राजा तदुदकरत्न करतले आस्वादयति, आस्वादनीय यावत् सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीय तदुदक ज्ञात्वा सुबुद्धिममात्य शब्द यति, शब्दयित्वा एवमवदत्-हे सुबुद्धे ! एते खलु त्वया सन्तः=विद्यमानाः 'जाव' यावत् सद्भूताः भावाः कुत उपलब्धाः ? । तत. खलु सुबुद्धिर्जितशत्रुमेवमवदत्- एते खलु हे स्वामिन् ! मया सन्त' यावत् सद्भूता भावा' जिनवचनत उपलब्धाः

फिर उसे सस्कारित करो । इस पाठ को समुचित रूप से संमन्वित करने के लिये जैसा पीछे लिखा गया है वैसा ही संबन्ध यहां जान लेना चाहिये । राजा की आज्ञानुसार उन लोगो ने वैसा ही किया । संस्कारित करके फिर वे लोग उसे जितशत्रु राजा के पास ले गये । जितशत्रु राजा ने उस सस्कारित उदक को अपनी हथेली पर रक्खा- और उसे चखा-जब चख कर उसे यह विश्वास हो गया कि यह जल आस्वादनीय एव सर्वेन्द्रिय-गात्र प्रह्लादनीय बन गया है तब उस ने सुबुद्धि अमात्य को बुलवाया। बुलवा कर उस से ऐसा कहा- (सुबुद्धी ! एएण तुमे सता जाव सब्भूया भावा कओ उवलद्धा तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-एएणं सामी मए सता जाव सब्भूया भावा जिणवयणाओ उवलद्धा, एएण जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी-त इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! तव अतिए जिणवयण निसामेत्तए) सुबुद्धे ! ये विद्यमान यावत् सद्भूत भाव तुमने कहा से उपलब्ध किये है ? तब सुबुद्धि ने

भाटेना બધા ઉપાયો. તેમજ દ્રવ્યોથી પાણીને નિર્મળ બનાવો પહેલાની જેમજ અહી પણ આગળની બધી વિગત જાણી લેવી જોઇએ તે લોકોએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ બધુ કામ પૂરૂ કર્યુ પાણી જ્યારે નિર્મળ થઈ ગયુ ત્યારે તે લોકો પાણીના માટલાઓને રાજાની સામે લઈ આવ્યા રાજાએ અનેક સસ્કારો વડે નિર્મળ બનાવેલા પાણીને હથેળી ઉપર લીધુ અને તેને ચાખ્યુ ચાખ્યા બાદ રાજાને આ પ્રમાણે વિશ્વાસ થઈ ગયો કે ખરેખર આ પાણી આસ્વાદનીય અને સર્વેન્દ્રિય ગાત્ર-પ્રલ્હાદનીય થઈ ગયુ છે ત્યારે તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ

सुबुद्धी ! एएण तुमे सता जाव सब्भूया भावा कओ उवलद्धा तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी एएण सामी मए सता जाव सब्भूया भावा जिणवयणाओ उवलद्धा एएण जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तव अतिए जिणवयण निसामेत्तए)

હે સુબુધ્ધે ! એ વિદ્યમાન યાવત્ અદ્ભૂત ભાવો તમે કયાથી મેળવ્યા

नो मंत्येति, नो रोचयति, अश्रद्दधान', अप्रतियन्, अरोचमान, 'अब्भंतरठाणिज्जे' अभ्यन्तर स्थानीयान्=स्वसमीपस्थितान् पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिय ! 'अंतरावणाओ' अन्तरापणात्=ग्राममध्यस्थित कुम्भकारहट्टात् नवघटकान् 'पडए य' पटकांश्च=जलगालनवस्त्र खण्डान् गृह्णीत यावद् उदकसंभारणीयैः उदकसंस्कारयोग्यैः द्रव्यैः संभारयत=

रूचिका विषय नहीं बनाया (असद्दहमाणे ३) इस प्रकार श्रद्धा रहित रुचि रहित, प्रतीति रहित बने हुए राजा जितशत्रु ने (अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ) अपने पास में सदा रहने वाले पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा--(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया। अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह, जाव उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह ते वि तहेव संभारेंति, संभारित्ता जियसत्तूस्स उवणेंति, उवणित्ता तएणं जियसत्तू राया त उदकरयण करयलंसि आसाएइ, आसायणिज्ज जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और बाजार से नवीन घडों को एवं जल छानने के लिये वस्त्रों के खंडों को छट्टो को-ले आओ। यहां अन्तरापण का अर्थ "ग्राम के मध्य में स्थित कुम्हारों का हाट या सामान्य बाजार है। ऐसा ही अर्थ इस शब्द का पहिले किया गया है। यावत् उदक संस्कार योग्य द्रव्यों से

ઉપર ન તો પ્રતીતિ પણ થઈ અને ન તે પ્રત્યે પોતાની અભિરુચિ બતાવી (असद्दहमाणे ३) આ રીતે શ્રદ્ધા, રુચિ અને પ્રતીતિ રહિત થયેલા રાજા જીતશત્રુએ (अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ) હંમેશા પોતાની પાસે રહેનારા માણસોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું

(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हइ जाव उदग संभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह ते वि तहेव संभारेंति, संभारित्ता जियसत्तूस्स उवणेंति, उवणित्ता तएणं जियसत्तू राया त उदकरयण करयलंसी आसाएइ आसायणिज्ज जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બજારમાં જાઓ અને ત્યાંથી નવા માટલાઓ તેમજ પાણી ગાળવા માટે વસ્ત્રોના ટુકડા ખરીદી લાવો 'अन्तरायण'નો અર્થ ગામની વચ્ચેનું કુંભારોનું બજાર કે સામાન્ય બજાર છે પહેલા પણ આ શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે જ કરવામાં આવ્યો છે ત્યારબાદ પાણીને

न्दितः हर्षवशविसर्पद् हृदय' सुबुद्धिममात्यमेवमवादीत्–श्रद्दधामि खलु हे देवानुप्रिय ! नैर्ग्रन्थ्य प्रवचन ' तथ्यमेतत् ' इत्यादि यावत् तद् यथैव यद् यूयं वदथ, तत्=तस्मात्कारणात् इच्छामि खलु तवान्तिके पञ्चाणुव्रतिक सप्तशिक्षाव्रतिक यावद् एव द्वादशविध श्रावकधर्मम् ' उपसम्पद्य=स्वीकृत्य विहर्तुम् । यथा सुख हे देवानुप्रिय ! हे राजन् ! यदि रोचते तदा एवमेव कुरु तत्र माम-

सुनकर और उसे हृदय मे अवधारित कर बहुत ही अधिक प्रसन्न एव तुष्ट हुए। हर्ष से गद्गद होकर उन्होंने सुबुद्धि अमात्य से इस प्रकार काहा-(सद्दहामि ण देवाणुप्पिया ! निग्गथ पावयण ३ जाव से जहेव ज तुब्भे वयह, त इच्छामि ण तव अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय जाव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध० तएण से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए पचाणुव्वइय जाव दुवालसविह सावयधम्म पडिवज्जइ, तएण जियसत्तू समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभे माणे विहरइ) हे देवानुप्रिय ! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ इस पर रुचि करता हूँ यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सर्वथा सत्य है इत्यादि यावत् जैसा तुम कहते हो वह वैसा ही है। इस लिये मैं तुम्हारे पास पञ्च अणुव्रत सात शिक्षाव्रत रूप द्वादश विध श्रावक धर्म को स्वीकार करना चाहताहूँ। इस प्रकार राजा की बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उससे कहा–हे देवानुप्रिय ! तुम्हे जिस प्रकार सुख हो–वैसा करो प्रमाद न करो शुभ कर्म में

સાભળીને એને તેને શરીરમા અવધારિત કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ તુષ્ટ થયેા હર્ષથી ગળગળેા થઇને તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે--

(सद्दहामिण देवाणुप्पिया ! निग्गथ पावयण ३ जाव से जहेव ज तुब्भे वयह त इच्छामि ण तव अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय जाव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध० तएण से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए पचाणुव्वइय जाव दुवालसविह सावयधम्म पडिवज्जइ तएण जियसत्त समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનમા હુ શ્રદ્ધા રાખુ છુ, આમા હુ રુચિ રાખુ છુ આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ખરેખર સત્ય છે વગેરે જેવુ તમે કહેા છેા તેવુ જ આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન છે એથી હુ તમારી પાસેથી પચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષા વ્રત રૂપ બાર (૧૨) પ્રકારનેા શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારવા ચાહુ છુ આ રીતે રાજાની વાત સાભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેને કહ્યુ–હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમ ગમે તેમ કરેા પ્રમાદ કરેા નહિ, સારા કામમા મેાડુ કરવુ યેાગ્ય

ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धिमेवमवदत्-तद इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय ! तवान्तिके जिनवचन ' निसामेत्तए ' निशामयितुम्=श्रोतुम् । तत' खलु सुबुद्धिर्जितशत्रोर्विचित्र=अद्भुत पूर्वमश्रुत केवलिप्रज्ञप्त=जिनभाषित धर्म=श्रुतचारित्रलक्षणं परिकथयति, ' तमाइक्खइ ' तमाख्याति=तदेव मतिपादयति-' जहा ' यथा=येन-कर्मसयोगेन जीवा बध्यन्ते येन च मुच्यन्ते यावत् पञ्चाणुव्रतानि । तत खलु जितशत्रु सुबुद्धेरन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य=हृदिसमवधार्य हृष्टतुष्टचित्तान-

जितशत्रु राजो से इस प्रकार कहा-हे स्वामिन् ! ये विद्यमान यावत् सद्भूत भाव मैंने जिन प्रवचन से उपलब्ध किये हैं । जितशत्रु ने तब सुबुद्धि अमात्य से कहा-हे देवानुप्रिय ! मै तुम्हारे पास जिन प्रवचन को सुनना चाहता हूँ। (तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्स विचित्त केवलीपन्नत्त चाउज्जाम धम्म परिकहेइ, तमाइक्खइ, जहा जीवा बज्झ ति जाव पच अणुव्वयाइ,तएण जियसत्तू सुबुद्धिस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) सुबुद्धि प्रधान ने तब जितशत्रु राजा को पूर्व में कभी नही सुना गया ऐसा केवलि प्रज्ञप्त-सर्वज्ञ जिनेन्द्रद्वारा प्रतिपादित चातुर्याम वाला श्रुतचारित्र रूप धर्म सुनाया । उसे ही विस्तार रूप से उन्हें समझाया । जीव जिस प्रकार कर्मों से बधते हैं, और जिस प्रकार कर्मो से मुक्त होते है-छूटते हैं यह सुनाया समझाया यावत् श्रावक धर्मरूप पचम अणुव्रतों को समझाया इस तरह जितशत्रु राजा सुबुद्धि अमात्य के मुख से धर्म का व्याख्यान

છે ? જવાબમા સુબુદ્ધિએ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સ્વામી ! એ વિદ્યમાન યાવત્ અદ્ભૂત ભાવ મે જિન પ્રવચન માથી મેળવ્યા છે ત્યારે જીતશત્રુએ સુબુદ્ધિ અમાત્યને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી પાસે હુ જીનપ્રવચન સાભળવાની ઈચ્છા રાખુ છુ

(तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्स विचित्त केवलिपन्नत्त चाउज्जाम धम्म परिकहेइ तमाइक्खइ, जहा जीवा बज्झति जाव पच अणुव्वयाइ, तएण जियसत्तू सुबुद्धिस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धि अमच्च एव वयासी)

સુબુદ્ધિ પ્રધાને જીતશત્રુ રાજાને પહેલા કોઇપણ વખતે સાભળેલો નહિ એવો કેવળી પ્રજ્ઞપ્ત-સર્વજ્ઞ જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ચતુર્યામવાળો શ્રુત-ચારિત્ર રૂપ ધર્મ સભળાવ્યો અને સવિસ્તર તેને સમજાવ્યો જે પ્રમાણે જીવ કર્મો વડે બધાય છે અને જે પ્રમાણે કર્મોથી મુક્ત થાય છે તે વિશેની બધી વિગત કહી સભળાવી અને સમજાવી યાવત્ શ્રાવક ધર્મ રૂપ પાચ અણુવ્રતોને સમજાવ્યા આ રીતે જીતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્યના મુખેથી

न्दितः हर्षवशविसर्पद् हृदयः सुबुद्धिममात्यमेवमवादीत्-श्रद्दधामि खलु हे देवानुप्रिय ! नैर्ग्रन्थ्य प्रवचन ' तथ्यमेतत् ' इत्यादि यावत् तद् यथैव यद् यूयं वदथ, तत्=तस्मात्कारणात् इच्छामि खलु तवान्तिके पञ्चाणुव्रतिक सप्तशिक्षाव्रतिक यावद् एव द्वादशविध श्रावकधर्मम् ' उपसपज्जित्ता ' उपसम्पद्य=स्वीकृत्य विहर्तुम् । यथा सुख हे देवानुप्रिय ! हे राजन् ! यदि रोचते तदा एवमेव कुरु तत्र माम

सुनकर और उसे हृदय में अवधारित कर बहुत ही अधिक प्रसन्न एव तुष्ट हुए। हर्ष से गद्गद होकर उन्होंने सुबुद्धि अमात्य से इस प्रकार काहा-(सद्दहामि ण देवाणुप्पिया ! निग्गथ पावयण ३ जाव से जहेव ज तुब्भे वयह, त इच्छामि ण तव अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय जाव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध० तएण से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए पचाणुव्वइय जाव दुवालसविह सावयधम्म पडिवज्जइ, तएण जियसत्तू समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभे माणे विहरइ) हे देवानुप्रिय ! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ इस पर रुचि करता हूँ यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सर्वथा सत्य है इत्यादि यावत् जैसा तुम कहते हो वह वैसा ही है। इस लिये मैं तुम्हारे पास पञ्च अणुव्रत सात शिक्षाव्रत रूप द्वादश विध श्रावक धर्म को स्वीकार करना चाहताहूँ। इस प्रकार राजा की बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हें जिस प्रकार सुख हो-वैसा करो प्रमाद न करो शुभ कर्म में

સાભળીને એને તેને શરીરમા અવધારિત કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ તુષ્ટ થયેા હર્ષથી ગળગળેા થઇને તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે--

(सद्दहामिण देवाणुप्पिया ! निग्गथ पावयण ३ जाव से जहेव ज तुब्भे वयह त इच्छामि ण तव अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय जाव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध० तएण से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए पचाणुव्वइय जाव दुवालसविह सावयधम्म पडिवज्जइ तएण जियसत्त समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનમા હુ શ્રદ્ધા રાખુ છુ, આમા હુ રુચિ રાખુ છુ આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ખરેખર સત્ય છે વગેરે જેવુ તમે કહેા છેા તેવુ જ આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન છે એથી હુ તમારી પાસેથી પચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષા વ્રત રૂપ બાર (૧૨) પ્રકારનેા શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારવા ચાહુ છુ આ રીતે રાજાની વાત સાભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેને કહ્યુ-હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમ ગમે તેમ કરેા પ્રમાદ કરેા નહિ, સારા કામમા મેાડુ કરવુ યેાગ્ય

ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धिमेवमवदत्-तद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय ! तवान्तिके जिनवचन ' निसामेत्तए ' निशामयितुम्=श्रोतुम् । ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रोर्विचित्रम्=अद्भुत पूर्वमश्रुत केवलिप्रज्ञप्त=जिनभाषित धर्म=श्रुतचारित्रलक्षणं परिकथयति, ' तमाइक्खइ ' तमाख्याति-तदेव प्रतिपादयति-' जहा ' यथा=येन-कर्मसयोगेन जीवा बध्यन्ते येन च मुच्यन्ते यावत् पञ्चाणुव्रतानि । तत खलु जितशत्रुः सुबुद्धेरन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य=हृदिसमवधार्य हृष्टतुष्टचित्तान-

जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा-हे स्वामिन् ! ये विद्यमान यावत् सद्भूत भाव मैंने जिन प्रवचन से उपलब्ध किये हैं । जितशत्रु ने तब सुबुद्धि अमात्य से कहा -हे देवानुप्रिय ! मैं तुम्हारे पास जिन प्रवचन को सुनना चाहता हूँ। (तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्स विचित्त केवलीपन्नत्त चाउज्जाम धम्म परिकहेइ, तमाइक्खइ, जहा जीवा वज्झ ति जाव पच अणुव्वयाइ,तएण जियसत्तू सुबुद्धिस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) सुबुद्धि प्रधान ने तब जितशत्रु राजा को पूर्व में कभी नहीं सुना गया ऐसा केवलि प्रज्ञप्त-सर्वज्ञ जिनेन्द्रद्वारा प्रतिपादित चातुर्याम वाला श्रुतचारित्र रूप धर्म सुनाया । उसे ही विस्तार रूप से उन्हें समझाया । जीव जिस प्रकार कर्मों से बधते हैं, और जिस प्रकार कर्मो से मुक्त होते हैं-छूटते हैं यह सुनाया समझाया यावत् श्रावक धर्मरूप पचम अणुव्रतों को समझाया इस तरह जितशत्रु राजा सुबुद्धि अमात्य के मुख से धर्म का व्याख्यान

છે ? જવાબમા સુબુદ્ધિએ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સ્વામી ! એ વિદ્યમાન યાવત્ અદ્‌ભૂત ભાવ મે જિન પ્રવચન માથી મેળવ્યા છે ત્યારે જીતશત્રુએ સુબુદ્ધિ અમાત્યને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી પાસે હુ જીનપ્રવચન સાભળવાની ઈચ્છા રાખુ છુ

(तएण सुबुद्धी जियसत्तुस्स विचित्त केवलिपन्नत्त चाउज्जाम धम्म परिकहेइ तमाइक्खइ, जहा जीवा वज्झति जाव पच अणुव्वयाइ, तएण जियसत्तू सुबुद्धिस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी)

સુબુદ્ધિ પ્રધાને જીતશત્રુ રાજાને પહેલા કોઇપણ વખતે સાભળેલો નહિ એવો કેવળી પ્રજ્ઞપ્ત-સર્વજ્ઞ જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ચતુર્યામવાળો શ્રુત-ચારિત્ર રૂપ ધર્મ સભળાવ્યો અને સવિસ્તર તેને સમજાવ્યો જે પ્રમાણે જીવ કર્મો વડે બધાય છે અને જે પ્રમાણે કર્મોથી મુક્ત થાય છે તે વિશેની બધી વિગત કહી સભળાવી અને સમજાવી યાવત્ શ્રાવક ધર્મ રૂપ પાચ અણુવ્રતોને સમ

જાવ્યા આ રીતે જીતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્યન

नीना समवसरण जातम्। जितशत्रू राजा सुबुद्धिरमात्यश्च निर्गच्छति=धर्मश्रवणार्थं ग्रामाद्बहिर्निस्सरति सुबुद्धिः धर्मंश्रुत्वा 'अन्यत्सर्वं पूर्ववत्, नवर=विशेषस्त्वयम्यत् जितशत्रु राजानमापृच्छामि यावत्-युष्माक समीपे प्रव्रजामि दीक्षा ग्रहिष्यामीत्यर्थ । स्थविराऽऽचु-यथासुख हे देवानुप्रिय ! मा प्रतिबन्ध कुरु । ततः खलु सुबुद्धि र्यत्रैव जितशत्रुस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन्! जितशत्रो ! मया स्थविराणामन्तिके धर्म निशान्त =श्रुतः सोऽपिच धर्मोमे 'इच्छिए' इष्ट'=वाञ्छितः, 'पडिच्छिए' प्रतीष्ट =विशेषतो वाञ्छित, 'अभिरुइए' अभिरुचित =आसेवनरूपेण सर्वथा वाञ्छित । तत. खलु तस्मात् कारणात् अह हे स्वामिन्! 'ससारभउव्विग्गे' ससारभयोद्विग्नः=ससारभयत्रस्तः

मय मे-और उनके श्रावक धर्म के पालन करने के समय में-स्थविर मुनियो का वहा आगमन हुआ। जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य धर्म श्रवण के लिये अपने अपने २ स्थान से निकल कर उनके समीप आये। सुबुद्धि ने धर्म का उपदेश सुनकर स्थविर मुनियो से निवेदन किया-भदन्त! मे जितशत्रु राजा से पूछकर यावत् आपके पास आकर मुनिदीक्षा धारण करना चाहता हूँ। स्थविरों ने सुबुद्धि अमात्य का अभिप्राय जानकर उससे कहा-हे देवानुप्रिय! तुम्हे जिससे सुख हो वैसा करो-श्रेयस्कर कार्य में विलम्ब करना हितावह नहीं है। इस तरह सुबुद्धि वहां से आकर जहा जितशत्रु राजा थे वहा आया वहां आकर कहा-स्वामिन्! मैने स्थविर मुनिजनों के मुख से धर्म का उपदेश सुना है। वह मुझे बहुत ही रुचा है, मेरी इच्छा का विषय भूत बन गया है, मेरी चाहना उस तरफ विशेष रूप से बढ गई है। मै चाहता कि मैं

હતા તે કાળે અને તેઓ જ્યારે શ્રાવક ધર્મનુ પાલન કરતા હતા તે સમયે-ત્યા સ્થવિર મુનિઓ આવ્યા જીતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ધર્મશ્રવણ માટે પોતપોતાને ત્યાથી નીકળીને તેમની પાસે પહોચ્યા ધર્મનો ઉપદેશ સાભળીને સુબુદ્ધિએ મુનિઓને વિનતી કરી કે હે ભદત! જીતશત્રુ રાજાની આજ્ઞા મેળવીને તેમજ બીજી પણ ઘણી વ્યવસ્થાઓ વગેરે કરીને તમારી પાસે આવીને મુનિ દીક્ષા ધારણ કરવા ચાહુ છુ સ્થવિરોએ સુબુદ્ધિ અમાત્યના વિચારો જાણીને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! તમને જેમા સુખ મળતું હોય તેમ કરો સારા કામોમા મોડુ કરવુ યોગ્ય કહેવાય નહિ આ રીતે આજ્ઞા મેળવીને સુબુદ્ધિ ત્યાથી આવીને જીતશત્રુ રાજાની પાસે પહોચ્યો અને તેણે રાજાને વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે સ્વામી! સ્થવિર મુનિઓના મોથી મે ધર્મનો ઉપદેશ સાભળ્યો છે તે મને ખૂબ જ ગમી ગયો છે મારી ઈચ્છા તે તરફ આકર્ષાઈ છે વિશેષ રૂપમા હુ તેને ચાહવા લાગ્યો છુ મારી ઈચ્છા છે કે સયમ ધારણ કરીને પોતાનુ જીવન

तिवन्य कुरु=शुभकार्ये विलम्बो न करणीयइत्यर्थः। ततःखलु स जितशत्रुः सुबुद्धेरमात्यस्यान्तिके पञ्चाणुव्रतिक यावद् द्वादशविध श्रावकधर्म प्रतिपद्यते। ततः खलु जितशत्रु श्रमणोपासक 'अभिगयजीवाजीवे' अभिगतजीवाजीव.=परिज्ञात जीवाजीवस्वरूप' यावत् प्रासुकैषणीयैरशनादिभिः श्रमणनिर्ग्रन्थान् प्रतिलाभयन् =आहारादि ददन् विहरति=तिष्ठतिस्म। तस्मिन् काले जितशत्रुराज्यशासनकाले तस्मिन् समये=श्रावकधर्मप्रतिपालनसमये 'थेरागमण' स्थविरागमन=स्थविरमु-

विलम्ब करना योग्य नही है-इस तरह सुबुद्धि अमात्य के मुख से सुनकर जितशत्रु राजा ने उस सुबुद्धि अमात्य से पाच अणुव्रत एव सात शिक्षाव्रत रूप द्वादश प्रकार का गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया। इस तरह वे जितशत्रु राजा श्रमणोपासक बन गये। और जीव एव अजीव तत्त्व के स्वरूप ज्ञाता भी हो गये। प्रासुक एषणीय आहारादि श्रमण निर्ग्रन्थ साधुओं के लिये प्रदान करने लगे। (तण कालेण तेण समएण थेरागमण जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ, सुबुद्धी धम्म सोच्चा ज नवर जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिया! तएण सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, एव वयासी-एव खलु सामी! मए थेराण अतिए धम्मे निसते, से वि य, धम्मे इच्छिए पडिच्छिए,अभिरुइए, तएण अह सामी! ससारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामिण तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए स० जाव पवइत्तए) उस काल जितशत्रु राजा के राज्यशासन काल में-उस स

લેખાય નહિ આ રીતે સુબુદ્ધિ અમાત્યના મુખેથી વાત સાભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્ય પાસેથી પાચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષાવ્રત રૂપ બાર પ્રકારનો ગૃહસ્થ ધર્મ સ્વીકારી લીધો આ પ્રમાણે તે જીતશત્રુ રાજા શ્રમણોપાસક થઈ ગયા અને જીવ તેમજ અજીવ તત્ત્વના સ્વરૂપને સમજનારા પણ થઇ ગયા પ્રાસુક એષણીય આહાર વગેરે શ્રમણ નિર્ગ્રંથ સાધુઓને આપવા લાગ્યા

(तेण कालेण तेण समएण थेरागमण जियसत्तूराया सुबुद्धी य निगच्छइ, सुबुद्धी धम्म सोच्चा ज नवर जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि अहासुह देवाणुप्पिया! तएण सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी एव खलु, सामी मए थेराण अतिए धम्मे निसते, से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छए, अभिरुइए, तएण अह सामी! ससारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामि ण अब्भणुन्नाए स० जाव पव्वइत्तए)

તે કાળે અને તે સમયે એટલે કે જીતશત્રુ રાજા જ્યારે શાસન કરતા

नीना समवसरण जातम्। जितशत्रू राजा सुबुद्धिरमात्यश्च निर्गच्छति=धर्मश्रवणार्थं ग्रामाद्बहिर्निस्सरति सुबुद्धि' धर्मंश्रुत्वा ' अन्यत्सर्वं पूर्ववत्, नवर=विशेषस्त्व यम् यत् जितशत्रु राजानमापृच्छामि यावत्-युष्माक समीपे प्रव्रजामि दीक्षा ग्रहिष्यामीत्यर्थ । स्थविराऽऽचु -यथासुख हे देवानुप्रिय ! मा प्रतिबन्ध कुरु । ततः खलु सुबुद्धि र्यत्रैव जितशत्रुस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन्! जितशत्रो ! मया स्थविराणामन्तिके धर्म निशान्त =श्रुतः सोऽपिच धर्मोमे ' इच्छिए ' इष्ट'=वाञ्छितः, ' पडिच्छिए ' प्रतीष्ट =विशेषतो वाञ्छित , ' अभिरुइए ' अभिरुचित'=आसेवनरूपेण सर्वथा वाञ्छित । तत. खलु तस्मात् कारणात् अह हे स्वामिन्! ससारभउव्विग्गे ' समारभयोद्विग्न'=ससारभयत्रस्तः

मय में-और उनके श्रावक धर्म के पालन करने के समय में-स्थविर मुनियों का वहा आगमन हुआ। जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य धर्म श्रवण के लिये अपने अपने २ स्थान से निकल कर उनके समीप आये। सुबुद्धि ने धर्म का उपदेश सुनकर स्थविर मुनियो से निवेदन किया-भदन! मैं जितशत्रु राजा से पूछकर यावत् आपके पास आकर मुनिदीक्षा धारण करना चाहता हूँ। स्थविरों ने सुबुद्धि अमात्य का अभिप्राय जानकर उससे कहा-हे देवानुप्रिय! तुम्हे जिससे सुख हो वैसा करो-श्रेयस्कर कार्य में विलम्ब करना हितावह नहीं है। इस तरह सुबुद्धि वहां से आकर जहा जितशत्रु राजा थे वहा आया वहां आकर कहा-स्वामिन्! मैंने स्थविर मुनिजनों के मुख से धर्म का उपदेश सुना है। वह मुझे बहुत ही रुचा है, मेरी इच्छा का विषय भूत बन गया है, मेरी चाहना उस तरफ विशेष रूप से बढ गई है। मै चाहता कि मैं

હતા તે કાળે અને તેઓ જ્યારે શ્રાવક ધર્મનુ પાલન કરતા હતા તે સમયે-ત્યા સ્થવિર મુનિઓ આવ્યા જીતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ધર્મશ્રવણ માટે પોતપોતાને ત્યાથી નીકળીને તેમની પાસે પહોચ્યા ધર્મનો ઉપદેશ સાભળીને સુબુદ્ધિએ મુનિઓને વિનતી કરી કે હે ભદન્ત! જીતશત્રુ રાજાની આજ્ઞા મેળવીને તેમજ બીજી પણ ઘણી વ્યવસ્થાઓ વગેરે કરીને તમારી પાસે આવીને મુનિ દીક્ષા ધારણ કરવા ચાહુ છુ સ્થવિરોએ સુબુદ્ધિ અમાત્યના વિચારો જાણીને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! તમને જેમા સુખ મળતુ હોય તેમ કરો સારા કામોમા મોડુ કરવુ યોગ્ય કરેવાય નહિ આ રીતે આજ્ઞા મેળવીને સુબુદ્ધિ ત્યાથી આવીને જીતશત્રુ રાજાની પાસે પહોચ્યો અને તેણે રાજાને વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે સ્વામી! સ્થવિર મુનિઓના મોથી મે ધર્મનો ઉપદેશ સાભળ્યો છે તે મને ખૂબ જ ગમી ગયો છે મારી ઈચ્છા તે તરફ આકર્ષાઈ છે વિશેષ રૂપમા હુ તેને ચાહવા લાગ્યો છુ મારી ઈચ્છા છે કે સયમ ધારણ કરીને પોતાનુ જીવન

'भीए'भीतः जन्ममरणादि दुःखेभ्यो भय प्राप्तः, अतएव यावद् इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् यावत् स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुम् । ततः खलु जितशत्रुः सुबुद्धिमेवमवादीत्-'अच्छामु' तिष्ठेम वयं तावद् गृहे हे देवानुप्रिय ! कतिपयानि वर्षाणि, उदारान् यावत्-मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानाः सन्तः, ततः पश्चात्=तदनन्तर शब्दादिविषयोपभोगानन्तरम् 'एगयओ' एकतः=सार्धम् स्थविराणामन्तिके मुण्डो भूत्वा यावत् प्रव्रजिष्यामः । ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रो-रेतमर्थं=पश्चादीक्षाग्रहणरूप मार्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तस्य जित शत्रोः सुबुद्धिना सार्द्धं विपुलान् मानुष्यकान् भोगभोगान् प्रत्यनुभवतो द्वादश

सयम धारण कर अपने जीवन को सफल बनाऊँ । इस लिये हे स्वामिन् । ससार भय से उद्विग्न बना हुआ म जन्म मरण के दुखो से भय भीत होकर चाहता हूँ कि आपसे आज्ञापित हो स्थविरो के पास दीक्षा धारण करलू । (तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी अच्छाहि ताव देवाणु कइवयाइति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराण अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो) अमात्य कि इस बात को सुनकर जितशत्रु राजाने उस सुबुद्धि अमात्य से इस प्रकार कहा । देवानुप्रिय ! हम लोग कुछ वर्षों तक मनुष्य भव सबन्धी प्रचुर काम भोगों को भोगते हुए अभी घर पर ही रहें । इस के बाद एक साथ स्थविरों के पास मुण्डित होकर यावत् फिर दीक्षित हो जायेगे । (तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्स, एयमट्ठ पडिसुणेइ, तएण तस्स जियसत्तू स्स, सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइ, माणुस्स० पच्चणुब्भुवमाणस्स दुवाल

સફળ બનાવવું માટે હે સ્વામી ! સ સાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન તેમજ જન્મ મરણના દુ ખોથી ભય પામેલો હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા મેળવવાની ઇચ્છા રાખુ છુ

(तएण जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी-अच्छाहि ताव, देवाणुप्पिया ! कइवया इति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराण अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो)

અમાત્યની એ વાત સાભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! મનુષ્યભવના કામસુખોની મજા માણવા માટે અમે થોડા વર્ષો હજી પણ ગૃહસ્થના જ રૂપમા રહીએ તો સારૂ ત્યારપછી એકી સાથે આપણે બને સ્થવિરોની પાસે મુડિત થઈને દીક્ષા ધારણ કરી લઇશુ

(तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, तएणं तस्स जियसत्तूस्स सुबु द्धीणा सद्धिं विपुलाइ माणुस्स०पच्चणुब्भुवमाणस्स ६-

वर्षाणि व्यतिक्रान्तानि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वादश वर्षव्यतिक्रान्ते सतीत्यर्थः स्थविरागमन सजात, तएण=तदा खलु परिषन्निर्गत । जितशत्रुरपि स्थविरान्तिके धर्म श्रुत्वा ' एव ' एवमेव पूर्वोक्त सुबुद्धि वदेव सर्वं नवर=विशेषस्त्व यम्-यत् हे देवानुप्रिया! । सुबुद्धिम् आमन्त्रयामि, ज्येष्ठपुत्र राज्ये स्थापयामि, ततः खलु=तत्पश्चात् युष्माकमन्तिके यावत्-मुण्डो भूत्वा आगारात्=अगारभावात् अनगारिता=साधुता प्रव्रजामि । स्थविरा ऊचु – हे देवानुप्रिय ! यथासुख=यथा

सवासाइ वीइक्कताइ ताइ तेण कालेण २ थेरागमण तएण जियसत्तू धम्मं सोच्चा एव ज नवर देवाणुप्पिया ! सुबुद्धि आमतेमि, जेट्ठपुत्त रज्जे ठावेमि, तएण तुब्भ अतिए जाव पव्वयासि) इस प्रकार सुबुद्धि अमात्य ने जितशत्रु राजा की इस बात को स्वीकार कर लिया । इस तरह सुबुद्धि अमात्य के साथ विपुल मनुष्य भव सबन्धी काम भोगो का अनुभव करते हुए जितशत्रू राजाके १२ वर्ष निकल गये । उसकाल और उस समय में-अर्थात् १२ वर्ष व्यतीत हो जाने के समय में स्थविरोका वहां आगमन हुआ । नगर की परिषद् स्थविरों का आगमन सुनकर धर्म सुनने की भावना से उन स्थविरों के पास आई । जितशत्रु राजा भी आये उनसे धर्म का उपदेश सुनकर जितशत्रु राजा सचेत हो गये । उन्हों ने कहा हे देवानुप्रियो ! मैं आपसे दीक्षा लेना चाहता हूँ अतः पहिले सुबुद्धि अपने अमात्य से पूछलूँ-और अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य में स्थापित करदूँ-बाद में आप के पास मुण्डित होकर अगार भाव से अनगार अवस्था स्वीकार करलूगो । (अहासुह,

तेणं कालेण २ थेरागमण तएण जियसत्तू धम्म सोच्चा एव ज नवर देवाणुप्पिया सुबुद्धिं आमतेमि जेट्ठपुत्त रज्जे ठावेमि तएणं तुब्भ अतिए जाव पव्वयामि)

આ રીતે સુબુદ્ધિ અમાત્યે જીતશત્રુ રાજાની વાતને માની લીધી સુબુદ્ધિ અમાત્યની સાથે કામભોગો ભોગવતા જીતશત્રુ રાજાને આમને આમ જ બાર વર્ષ પસાર થઈ ગયા તે કાળે અને તે સમયે એટલે કે કામસુખો ભોગવતા જીતશત્રુ રાજાને જ્યારે બાર વર્ષો પસાર થઇ ગયા ત્યારે ત્યા સ્થવિરો આવ્યા નગરની પરિષદો સ્થવિરોનુ આગમન સાભળીને ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા માટે સ્થવિરોની પાસે પહોચી જીતશત્રુ રાજા પણ ત્યા ગયા અને ધર્મનો ઉપદેશ સાભળીને રાજા સાવધાન થઇ ગયા તેઓએ સ્થવિરોને વિનતી કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! હુ તમારી પાસેથી દીક્ષા લેવા ચાહુ છુ હુ પહેલા સુબુદ્ધિ અમાત્યને પૂછી લઉ અને પછી મારા જ્યેષ્ઠ પુત્રને રાજ્યભાર સોપી દઉ ત્યારબ હ તમારી પાસે આવીને મુડિત થઈશ ને અગારભાવથી અનગાર અવસ્થા સ્વીકારીશ,

'भीए 'भीतः जन्ममरणादि दुःखेभ्यो भय प्राप्तः, अतएव यावद् इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञात' सन् यावत् स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुम् । ततः खलु जित शत्रुः सुबुद्धिमेवमवादीत्-' अच्छासु ' तिष्ठेम त्रय तावद् गृहे हे देवानुप्रिय ! कतिपयानि वर्षाणि, उदारान् यावत्-मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानाः सन्तः, ततः पश्चात्=तदनन्तर शब्दादिविषयोपभोगानन्तरम् ' एगयओ ' एकतः=सार्द्धम् स्थविराणामन्तिके मुण्डो भूत्वा यावत् प्रव्रजिष्यामः । ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रो-रेतमर्थम्=पश्चाद्दीक्षाग्रहणरूप भाव प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तस्य जित शत्रोः सुबुद्धिना सार्द्धं विपुलान् मानुष्यकान् भोगभोगान् प्रत्यनुभवतो द्वादश

सयम धारण कर अपने जीवन को सफल बनाऊँ । इस लिये हे स्वामिन् ! ससार भय से उद्विग्न बना हुआ म जन्म मरण के दुखो से भय भीत होकर चाहता हूँ कि आपसे आज्ञापित हो स्थविरो के पास दीक्षा धारण करलू ।(तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी अच्छासु ताव देवाणु कइवयाइति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराण अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो) अमात्य कि इस बात को सुनकर जितशत्रु राजाने उस सुबुद्धि अमात्य से इस प्रकार कहा। देवानुप्रिय ! हम लोग कुछ वर्षों तक मनुष्य भव सबन्धी प्रचुर काम भोगों को भोगते हुए अभी घर पर ही रहें। इस के बाद एक साथ स्थविरों के पास मुण्डित होकर यावत् फिर दीक्षित हो जायेगे। (तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्स, एयमट्ठ पडिसुणेइ, तएण तस्स जियसत्तूस्स, सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइ, माणुस्स० पच्चणुब्भुवमाणस्स दुवाल

સફળ બનાવવું માટે હે સ્વામી ! સ સાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન તેમજ જન્મ મરણના દુ ખોથી ભય પામેલો હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા મેળવવાની ઇચ્છા રાખુ છુ

(तएण जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी-अच्छासु ताव, देवाणुप्पिया ! कइवया इति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराण अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो)

અમાત્યની એ વાત સાભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! મનુષ્યભવના કામભોગોની મજા માણવા માટે અમે થોડા વર્ષો હજી પણ ગૃહસ્થના જ રૂપમા રહીએ તો સારૂ ત્યારપછી એકી સાથે આપણે બને સ્થવિરોની પાસે મુડિત થઈને દીક્ષા ધારણ કરી લઈશું

(तएण सुबुद्धी जियसत्तूरस एयमट्ठ पडिसुणेइ, तएणं तस्स जियसत्तूस्स सुबुद्धीणा सद्धिं विपुलाइ माणुस्स०पच्चणुब्भुवमाणस्स दुवालसवासाइ वीइक्कताइ,

यदि भवान् प्रव्रजति तदा मे कोऽन्य आधारो वा यावत्—अहमपि ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा भवता सार्द्धं प्रव्रजामि । जितशत्रु राह-तद् यदि खलु हे देवानुप्रिय! यावत् प्रव्रजेः तद् गच्छ खलु हे देवानुप्रिय ! ज्येष्ठपुत्रं च कुटुम्बे स्थापय, स्थापयित्वा शिविकां दूरुह्य ममान्तिके प्रादुर्भव, इति श्रुत्वा स सुबुद्धिरमात्यः राजाज्ञानुसारेण सर्वं कृत्वा यावत् प्रादुर्भवति । ततः खलु जितशत्रुः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्—गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! अदीनशत्रोः कुमारस्य राज्याभिषेकमुपस्थापयत यावत् ते राजाज्ञां प्राप्यादीनशत्रु

कर जिन दीक्षा धारण करना चाहता हूँ। कहो तुम्हारी क्या राय है ? जितशत्रु राजा की इस बात को सुनकर अमात्य सुबुद्धि ने उनसे कहा—यदि आप दीक्षा धारण करना चाहते हैं, तो अब मेरे लिये आपके सिवाय और कौन दूसरा आधार हो सकता है। अतः मैं भी अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुंब में अपने स्थान पर स्थापित कर आपके साथ ही दीक्षित होना चाहता हूँ। अमात्य सुबुद्धि की इस भावना को सुन कर जितशत्रु ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! यदि तुम मेरे साथ ही दीक्षित होना चाहते हो तो जाओ-और अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित करो-स्थापित कर फिर शिविका पर आरूढ हो मेरे पास आ जाओ। (जाव पाउब्भवइ, तएणं जियसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी – गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह, जाव अभिसिंचति, जाव पव्वइए, तएणं जियसत्तू एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ) सुबुद्धि अमात्य ने राजा

દીક્ષા ધારણ કરવા ઈચ્છું છું બોલો તમારો શો વિચાર છે ? જીતશત્રુ રાજાની આ વાત સાભળીને અમાત્ય સુબુધ્ધિએ તેને કહ્યું કે જો તમે દીક્ષિત થવા ઇચ્છો છો ત્યારે તમારા સિવાય બીજો મારો કોણ આધાર છે અથવા થઈ શકે છે ? એટલા માટે હુ પણ મોટા પુત્રને કુટુબના વડા તરીકે નીમીને તમારી સાથે જ દીક્ષા સ્વીકારી લઉ છુ અમાત્ય સુબુધ્ધિની આ વાત સાભળીને જીત શત્રુએ તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો મારી સાથે જ દીક્ષિત થવાની તમારી ઇચ્છા હોય તો તમે મોટા પુત્રને કુટુબના વડા તરીકે નીમો અને ત્યારપછી પાલખી ઉપર સવાર થઇને મારી પાસે આવી જાવ

(जाव पाउब्भवइ, तएणं जीवसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव अभिसिंचति जाव पव्वइए, तएणं जियसत्तू एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ)

ते मनसि सुख स्यात्तथा कुरुचेत्यर्थः। ततः खलु जितशत्रुर्यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुबुद्धिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! मया स्थविराणामन्तिके धर्मोनिशान्तः, सोऽपि च धर्म इष्टः, प्रतीष्टः, अभिरुचितः, तस्मादहं मुण्डो भूत्वा अगाराद् अनगारितां प्रव्रजामि, त्वं च खलु किं करोषि=तव का वाञ्छा वर्त्तते इत्यर्थः। ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रुमेवमवादीत्-

तएणं जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सुबुद्धिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुमं णं किं करेसि, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं वयासी-जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वज्जामि, तं जइणं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वयहिं तं गच्छहं णं देवाणुप्पिया ! जेट्ठं पुत्तं च कुडुंबे ठावेहि ठावित्ता सीयं दुरूहित्ता णं मम अंतिए पाउब्भवइ) स्थविरों ने कहा-हे देवानुप्रिय ! यथा सुख-तुम्हें जैसे सुख हो वैसा करो-हितावह कार्य मे विलय करना उचित नहीं है। इसके अनतर वे जितशत्रु राजा वहां से अपने घर पर आये। वहां आकर उन्होंने अपने अमात्य सुबुद्धि को बुलाया बुलाकर उससे इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! मैंने स्थविरों से श्रुतचारित्र रूप धर्म का उपदेश सुना है। वह धर्म मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रतीच्छित हुआ है। मेरे अन्तः करण में वह समा गया है। इस लिये मे अब मुण्डित होकर इस अगार अवस्था का परित्याग

(अहा सुहं, तएणं जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबुद्धिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं जाव पव्वज्जामि तुमं णं किं करेसि, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं वयासी, जाव के अन्ने आहारे वा जाव वज्जामि तं जइणं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वयहिं तं गच्छहणं देवाणुप्पिया ! जेट्ठं पुत्तं च कुडुंबे ठावेहि ठावित्ता सीयं दुरुहित्ता णं मम अंतिए पाउब्भवइ)

સ્થવિરોએ રાજાને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! 'યથા સુખ' એટલે કે તમને જેમા સુખ મળતુ હોય તેમ કરો. સારા કામોમા મોડુ કરવું યોગ્ય નથી ત્યારપછી જીતશત્રુ રાજા પોતાને ઘેર આવ્યા ત્યા આવીને તેઓએ પોતાના અમાત્ય સુબુદ્ધિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મે સ્થવિરોની પાસેથી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાભળ્યો છે તે ધર્મ મારા માટે ખૂબ જ ઈષ્ટ અને પ્રતિચ્છિત થઈ ગયો છે મારા અતરમા તે ખૂબ જ ઊડે પહોચી ગયો છે એટલે કે આત્માના પ્રતિ પ્રદેશમા તે વ્યાપ્ત થઇ ગયો છે માટે હુ હવે મુડિત થઇને આ અગાર અવસ્થાને ત્યજીને જીન

यदि भवान् प्रव्रजति तदा मे कोऽन्य आधारो वा यावत्-अहमपि ज्येष्ठपुत्र कुटुम्बे स्थापयित्वा भवता सार्द्धं प्रव्रजामि । जितशत्रु प्राह-तद् यदि खलु हे देवानुप्रिय! यावत् प्रव्रजेः तद् गच्छ खलु हे देवानुप्रिय ! ज्येष्ठपुत्र च कुटुम्बे स्थापय, स्थापयित्वा शिविका दूरुह्य ममान्तिके प्रादुर्भव, इति श्रुत्वा स सुबुद्धिरमात्यः राजाज्ञानुसारेण सर्वं कृत्वा यावत् प्रादुर्भवति । ततः खलु जितशत्रुः कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया ! अदीनशत्रोः कुमारस्य राज्याभिषेकमुपस्थापयत यावत् ते राजाज्ञा प्राप्यादीनशत्रु

कर जिन दीक्षा धारण करना चाहता हूँ। कहो तुम्हारी क्या राय है ? जितशत्रु राजा की इस बात को सुनकर अमात्य सुबुद्धि ने उनसे कहा—यदि आप दीक्षा धारण करना चाहते हैं, तो अब मेरे लिये आपके सिवाय और कौन दूसरा आधार हो सकता है। अतः मैं भी अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुंब मे अपने स्थान पर स्थापित कर आपके साथ ही दीक्षित होना चाहता हूँ। अमात्य सुबुद्धि की इस भावना को सुन कर जितशत्रु ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! यदि तुम मेरे साथ ही दीक्षित होना चाहते हो तो जाओ-और अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित करो-स्थापित कर फिर शिबिका पर आरूढ हो मेरे पास आ जाओ। (जाव पाउब्भवइ, तएण जियसत्तू कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दाविसा एव वयासी - गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेय उवट्ठवेह, जाव अभिसिंचति, जाव पव्वइए, तएणं जियसत्तू एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) सुबुद्धि अमात्य ने राजा

દીક્ષા ધારણ કરવા ઈચ્છુ છુ બોલો તમારો શો વિચાર છે ? જીતશત્રુ રાજાની આ વાત સાભળીને અમાત્ય સુબુધ્ધિએ તેને કહ્યુ કે જો તમે દીક્ષિત થવા ઇચ્છો છો ત્યારે તમારા સિવાય બીજો મારો કોણ આધાર છે અથવા થઈ શકે છે ? એટલા માટે હુ પણ મોટા પુત્રને કુટુબના વડા તરીકે નીમીને તમારી સાથે જ દીક્ષા સ્વીકારી લઉ છુ અમાત્ય સુબુધ્ધિની આ વાત સાભળીને જીત શત્રુએ તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો મારી સાથે જ દીક્ષિત થવાની તમારી ઇચ્છા હોય તો તમે મોટા પુત્રને કુટુબના વડા તરીકે નીમો અને ત્યારપછી પાલખી ઉપર સવાર થઇને મારી પાસે આવી જાવ

(जाव पाउब्भवइ, तएण जीवसत्तू कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेय उवट्ठवेह जाव अभिसिंचति जाव पव्वइए, तएण जियसत्तू एक्कारसअगाइ अहिज्जइ)

ते मनसि सुख स्यात्तथा कुरुवेत्यर्थः। ततः खलु जितशत्रुर्यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुबुद्धिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! मया स्थविराणामन्तिके धर्मो निशान्तः, सोऽपि च धर्म इष्टः, प्रतीष्टः, अभिरुचितः, तस्मादहं मुण्डो भूत्वा अगाराद् अनगारितां प्रव्रजामि, त्वं च खलु किं करोषि=तव का वाञ्छा वर्त्तते इत्यर्थः। तत खलु सुबुद्धिर्जितशत्रुमेवमवादीत्-

तएण जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सुबुद्धिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी- एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण जाव पव्वज्जामि, तुम णं किं करेसि, तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वज्जामि, त जइण देवाणुप्पिया ! जाव पव्वयहिं त गच्छह ण देवाणुप्पिया ! जेट्ठ पुत्त च कुडुंबे ठावेहि ठावित्ता सीय दुरुहित्ता ण मम अतिए पाउब्भवइ) स्थविरों ने कहा-हे देवानुप्रिय ! यथा सुख-तुम्हें जैसे सुख हो वैसा करो-हितावह कार्य में विलय करना उचित नहीं है। इसके अनतर वे जितशत्रु राजा वहां से अपने घर पर आये। वहां आकर उन्होंने अपने अमात्य सुबुद्धि को बुलाया बुलाकर उससे इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! मैंने स्थविरों से श्रुतचारित्र रूप धर्म का उपदेश सुना है। वह धर्म मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रतीच्छित हुआ है। मेरे अन्तः करण में वह समा गया है। इस लिये मे अब मुडित होकर इस अगार अवस्था का परित्याग

(अहा सुह, तएण जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबुद्धिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण जाव पव्वज्जामि तुम ण किं करेसि, तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी, जाव के अन्ने आहारे वा जाव वज्जामि त जइण देवाणुप्पिया ! जाव पव्वयहिं त गच्छहण देवाणुप्पिया ! जेट्ठ पुत्त च कुडुबे ठावेहि ठावित्ता सीय दुरुहित्ता ण मम अतिए पाउब्भवइ)

સ્થવિરોએ રાજાને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! 'યથા સુખ' એટલે કે તમને જેમા સુખ મળતુ હોય તેમ કરો સારા કામોમા મોડુ કરવું યોગ્ય નથી ત્યારપછી જીતશત્રુ રાજા પોતાને ઘેર આવ્યા ત્યા આવીને તેઓએ પોતાના અમાત્ય સુબુદ્ધિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મે સ્થવિરોની પાસેથી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાભળ્યો છે તે ધર્મ મારા માટે ખૂબ જ ઈષ્ટ અને પ્રતિચ્છિત થઈ ગયો છે મારા અતરમા તે ખૂબ જ ઊડે પહોચી ગયો છે એટલે કે આત્માના પ્રતિ પ્રદેશમા તે વ્યાપ્ત થઇ ગયો છે માટે હું હવે મુડિત થઇને આ અગાર અવસ્થાને ત્યજીને જીન

पूर्वोक्तप्रकारेण खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता श्रीमहावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेन द्वादशस्य उदकाख्यस्य ज्ञाताध्ययनस्य अय=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भाव प्रज्ञप्त 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि यथा भगवान्मुखाच्छुत तथैव तुभ्य प्रतिपादयामि ॥ सू० २ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचिताया 'ज्ञाताधर्मकथाङ्ग' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्याया व्याख्याया द्वादशमध्ययन सपूर्णम् ॥१२॥

को प्राप्त कर लिया। सुधर्मा स्वामी जबू स्वामी से कहते हैं-हे जबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस द्वादश उदकाख्य ज्ञाताध्ययन का इस प्रकार से यह पूर्वोक्त रूप अर्थ निरूपित किया है। सो जैसा मैंने उन भगवान् के मुख से सुना है वैसा ही यह तुम से कहा है। अपनी तरफ से इस में कुछ भी मिलावट नहीं की है। सूत्र ॥ २ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका बारहवां अध्ययन समाप्त ॥ १२ ॥

અને છેવટે સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી લીધી સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે કે હે જબૂ! સિદ્ધગતિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દ્વાદશ-ઉદકાખ્ય જ્ઞાતા-અધ્યયનનો ઉપર કહ્યા પ્રમાણે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે મે ભગવાનના શ્રીમુખથી જેવો અર્થ સાભળ્યો છે તેવો જ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે મે આમા પોતાની મેળે કોઈ પણ વાત ઉમરી નથી ॥ સૂત્ર "૨" ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ બારમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

राज्येऽभिषिञ्चति यावत्-जितशत्रू राजा सुबुद्धिनाऽमात्येन सह प्रव्रजितः । ततः खलु जितशत्रुरेकादशाङ्गानि अधीते । बहूनि वर्षाणि पर्याय.=श्रामण्यपर्यायः । मासिक्या सलेखनया सिद्धः । ततः खलु सुबुद्धि रेकादशाङ्गानि-अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा यावत्सिद्धः । सुधर्मास्वामी कथयति-एवम्=

के कहे अनुसार सब कार्य वैसा ही किया । बाद में वह जितशत्रु राजा के पास आ गया । जितशत्रु राजा ने इस के अनतर कौटुंबिक पुरुषो को बुलाया-बुलाकर उनसे ऐसा कहा-देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और युवराज अदीन शत्रु कुमारका राज्याभिषेक करो । राजाकी आज्ञानुसार उन लोगोने वैसा ही किया -अदीन शत्रु राजा सुबुद्धि अमात्य के साथ दीक्षित हो गये। राजर्षी जितशत्रुने ११ ग्यारह अगोंका अध्ययन किया । (बहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे,तएण सुबुद्धी एगारस अगाइ अहिज्जइ,बहूणि वासाइ जाव सिद्धे । एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण बारमस्स णायज्झयणस्स एयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि) अनेक वर्षों तक श्रामण्यपर्याय का पालन किया । बादमें एक मास की सलेखनासे ६०भक्तोका अनशन द्वाराछेदन कर वे सिद्धावस्थापन्न हो गये । सुबुद्धि मुनिराज ने ११ ग्यारह अंगों का अच्छी तरह अध्ययन किया-और बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर सिद्ध भवस्था

૧૪૨ સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાની આજ્ઞા સુજબ જ બધુ કામ પતાવી દીધુ ત્યાર પછી તે રાજાની પાસે આવ્યો જીતશત્રુ રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને યુવરાજ અદીનશત્રુ કુમારનો રાજ્યાભિષેક કરો ૨ જાની આજ્ઞા સાભળીને તે લોકોએ બધી વિધિ પૂરી કરી દીધી આ પ્રમાણે અદીનશત્રુકુમારને રાજ્યા સને બેસાડીને જીતશત્રુ રાજા સુબુધ્ધિ અમાત્યની સાથે દીક્ષિત થઈ ગયા રાજઋષિ જીતશત્રુએ અગિયાર અંગોનુ અધ્યયન કર્યું

(बहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे, तएण सुबुद्धी एगारसअगाइ अहिज्जइ, बहुणि वासाइ जाव सिद्धे ! एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरे ण बारमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

તેઓએ ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યુ ત્યારપછી એક માસની સલેખનાથી ૬૦ ભક્તોનુ અનશન દ્વારા છેદન કર્યું અને ત્યારબાદ તેઓ સિદ્ધ થઇ ગયા મુનિરાજ સુબુદ્ધિએ પણ સારી પેઠે અગિયાર અંગોનુ અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું

पूर्वोक्तप्रकारेण खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता श्रीमहावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेन द्वादशस्य उदकाख्यस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमेतद्रूपः अर्थः प्रज्ञप्त 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि यथा भगवान्मुखाच्छुत तथैव तुभ्य प्रतिपादयामि ॥ सू० २ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचिताया 'ज्ञाताधर्मकथाङ्ग' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्याया व्याख्याया द्वादशमध्ययन सपूर्णम् ॥१२॥

को प्राप्त कर लिया। सुधर्मा स्वामी जबू स्वामी से कहते हैं-हे जबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस द्वादश उदकाख्य ज्ञाताध्ययन का इस प्रकार से यह पूर्वोक्त रूप अर्थ निरूपित किया है। सो जैसा मैंने उन भगवान् के मुख से सुना है वैसा ही यह तुम से कहा है। अपनी तरफ से इस में कुछ भी मिलावट नहीं की है। सूत्र ॥ २ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका बारहवां अध्ययन समाप्त ॥ १२ ॥

અને છેવટે સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી લીધી સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે કે હે જબૂ! સિદ્ધગતિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દ્વાદશ-ઉદકાખ્ય જ્ઞાતા-અધ્યયનનો ઉપર કહ્યા પ્રમાણે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે મે ભગવાનના શ્રીમુખથી જેવો અર્થ સાભળ્યો છે તેવો જ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે મે આમા પોતાની મેળે કોઈ પણ વાત ઉમરી નથી ॥ સૂત્ર "૨" ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ બારમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

अथ त्रयोदशममध्ययनम् प्रारभ्यते ।

गत द्वादशमध्ययनम्, सम्प्रति त्रयोदशमारभ्यते-अस्याध्ययनस्य पूर्वेण सहाऽय सम्ब धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने ससर्गविशेषवशाद् गुणवृद्धिरुक्ता, इह तु त्रयोदशेऽध्ययने तदभावात् गुणहानिरुच्यते इत्येव पूर्वाध्ययनेन सह अयमेव सबद्ध तस्येदमादि सूत्रमाह-' जइ ण भते ' इत्यादि ।

मूलम्-जइण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, समोसरण, परिसा निग्गया । तेण कालेण तेणं समएण सोहम्मे कप्पे दद्दरवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए, दद्दु रसि सीहासणसि दद्दरे देवे, चउहि समाणियसाहस्सीहिं चउहि अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एव जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणो विहरइ ॥ सू० १ ॥

-. णद मणियार नाम का तेरहवा अध्ययन प्रारभः-

१२वारवा अध्ययन समाप्त हो चुका । अब तेरहवा अध्ययन प्रारभ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से सबन्ध है कि पूर्व अध्ययन में ससर्ग (सत्सग) विशेष के वश से० गुण वृद्धि कही गई है-यहा इस तेरहवें अध्ययन में उस के अभाव से गुण हानि कही जावेगी । ' जइण भते ! समणेण ' इत्यादि । सूत्र ॥ १ ॥

णुद्ध मणियार नामे तेरमु अध्ययन प्रारभ

બારમુ અધ્યયન પૂરૂ થઇ ચૂકયુ છે હવે તેરમુ અધ્યયન પ્રારભ થાય છે આ અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સબધ છે કે પહેલાના અધ્યયનમા સસર્ગ (સોબત) વિશેષથી ગુણ વૃદ્ધિ બતાવવામા આવી છે આ તેરમા અધ્યયનમા સસર્ગ વિશેષના અભાવથી ગુણ-હાનિ નિરૂપવામા આવશે

जइण भते ! समणेण इत्यादि

टीका—जम्बू स्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् समाप्तेन, सिद्धिगतिनामधेय स्थान गतेन, द्वादशस्य ज्ञाताध्ययनस्य 'अयमट्ठे' अयमर्थः = संसर्गविशेषवशाद् गुणवृद्धिरूपोऽर्थः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः= प्ररूपितः, तर्हि तदनन्तरम् त्रयोदशस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताऽध्ययनस्य, श्रमणेन भगवता महावीरेण कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। सुधर्मा स्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगरमासीत्।

टीकार्थ-(जइण भंते) हे भदंत ! यदि (समणेण भगवया महावीरेण) श्रमण भगवान महावीर ने (जाव सम्पत्तेण बारसस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तेरसस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते) कि जो सिद्धि गति नामक स्थान के भागी बन चुके है बारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ निर्दिष्ट किया है-तो हे भदंत उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने उस तेरहवें ज्ञाताध्ययन का क्या भाव-अर्थ प्ररूपित किया है ? (एवं खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, समोसरण, परिसा निग्गया) इस प्रकार जंबू स्वामी का प्रश्न सुनकर श्री सुधर्म स्वामी उन्हें समझाने के निमित्त कहते हैं कि जंबू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उस नगर के बहिर्भाग में गुणशिलक नाम का चैत्य था। उस में भगवान् महावीर प्रभु आये। प्रभु के

टीकार्थ-(जइण भंते !) હે ભદન્ત ! ને (समणेण भगवया महावीरेण) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—

(जाव सम्पत्तेण बारसस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तेरसमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते)

કે જેઓ સિદ્ધગતિ મેળવેલા છે-બારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર કહ્યા મુજબ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે હે ભદન્ત ! તેઓ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ નિરુપિત કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, समोसरण परिसा निग्गया)

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીનો પ્રશ્ન સાંભળીને સુધર્મા સ્વામી તેમને સમજાવવા માટે કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તે નગરની

अथ त्रयोदशममध्ययनम् प्रारभ्यते ।

गत द्वादशमध्ययनम्, सम्प्रति त्रयोदशमारभ्यते-अस्याध्ययनस्य पूर्वेण सहाऽय सम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने ससर्गविशेषवशाद् गुणवृद्धिरुक्ता, इह तु त्रयोदशेऽध्ययने तदभावात् गुणहानिरुच्यते इत्येव पूर्वाध्ययनेन सह अयमेव सबद्ध तस्येदमादि सूत्रमाह-' जइ ण भते ' इत्यादि ।

मूलम्-जइण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, समोसरण, परिसा निग्गया । तेण कालेण तेण समएण सोहम्मे कप्पे दद्दरवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए, दद्दुरंसि सीहासणसि दद्दरे देवे, चउहि समाणियसाहस्सीहिं चउहि अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एव जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणो विहरइ ॥ सू० १ ॥

-. णद मणियार नाम का तेरहवा अध्ययन प्रारभ'-

१२वारवा अध्ययन समाप्त हो चुका । अब तेरहवा अध्ययन प्रारभ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से सबन्ध है कि पूर्व अध्ययन में ससर्ग (सत्सग) विशेष के वश से० गुण वृद्धि कही गई है-यहा इस तेरहवें अध्ययन में उस के अभाव से गुण हानि कही जावेगी । ' जइण भते ! समणेण ' इत्यादि । सूत्र ॥ १ ॥

णुद्द मणियार नामे तेरभु अध्ययन प्रारभ

બારમુ અધ્યયન પૂરૂ થઇ ચૂકયુ છે હવે તેરમુ અધ્યયન પ્રારભ થાય છે આ અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સબધ છે કે પહેલાના અધ્યયનમા સસર્ગ (સોબત) વિશેષથી ગુણ વૃદ્ધિ બતાવવામા આવી છે આ તેરમા અધ્યયનમા સસર્ગ વિશેષના અભાવથી ગુણ-હાનિ નિરૂપવામા આવશે

जइण भते ! समणेण इत्यादि

मूलम्–इमं च ण केवलकप्प जबूदीव दीव विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे२ जाव नट्टविहि उवदसित्ता पडिगए। जहा सूरियाभे। भतेति भगव गोयमे समणे भगव महावीरं वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता एव वयासी–अहो णं भते। दद्दरे देवे महड्ढिए महज्जुइए महाबले महाजसे महासोक्खे महाणुभावे दद्दरस्स ण भते। देवस्स सा दिव्वा देवड्ढी देवज्जुई कहिगया कहि पविट्ठा गोयमा। सरीर गया सरीर अणुप्पविट्ठा, कूडागारदिट्ठतो। दद्दरेणं भते। देवेणं सा दिव्वा देवड्ढी देवज्जुई, किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमन्नागया? एव खलु गोयमा। इहेव जबूदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। तत्थ णं रायगिहे णयरे णंदे णाम मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते०। तेणं कालेणं तेण समएण अह गोयमा। समोसढे, परिसा णिग्गया। सेणिए राया णिग्गए तएण से णदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए० पायचारेण जाव पज्जुवासइ। णदे धम्म सोच्चा णिसम्म समणोवासए जाए। तएणं अह रायगिहाओ पडिनिक्खते बहिया जणवयविहार विहरामि, तए णं से णदे मणियारसेट्ठी अन्नया कयाइ असाहुदसणेण य अपज्जुवासणाए य अणणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहि परिहायमाणेहि २ मिच्छत्तपज्जवेहि परिवड्ढमाणेहि२ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था तएणं नदे

तस्य नगरस्य बहिर्भागे गुणशिलक नाम चैत्यमासीत्। तत्र भगवतो महावीरस्य समवसरण सजातम्। भगवद्दर्शनार्थं परिषन्निर्गता। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'सोहम्मेकप्पे' सौधर्मे कल्पे=सौधर्मनाम्नि देवलोके दर्दुरावतंसके विमाने, सभाया सुधर्माया दर्दुरे सिंहासने दर्दुरो दर्दुरनामको देव 'चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं' चतसृभि सामानिकसाहस्रीभि चतुस्सहस्रसख्यकैः-सामानिक देवै., तथा 'चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाहिं' चतसृभिरग्रमहिषीभि सपरिषद्भि = स्वस्व परिपत्सहिताभिश्चतुः सख्यकाभिः पट्टदेवीभि. सपरिवृत' 'एव जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ' भुजमाणो विहरइ' एव यथा सूर्याभो राजप्रश्नीयसूत्रे-सूर्याभदेवस्य वर्णन मोक्त तद्वदत्रापि बोद्धव्यम्, यावत्-दिव्यान् भोगभोगान् भुञ्जानो विहरति ॥ सू० १ ॥

वदना करने के लिये परिषद् आयी और देशना सुनकर वापिस चली आयी (तेण कालेण तेण समएण सोहम्मे कप्पे ददुरवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए, ददुरसि सीहासणसि, ददुरे देवे चउहिं सामाणिय साहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एव जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणो विहरइ) उसी काल और उसी समय में सौधर्म नाम के देव लोक में दर्दुरावतसक विमान में सुधर्मा सभा में दर्दुर सिंहासन पर दर्दुर नाम का देव चार हजार सामानिक देवो के एव अपनी २ परिषद सहित चार पट्ट देवियो के साथ सूर्याभदेव की तरह दिव्य काम भोगो का अनुभवन करता हुआ बैठा था। राज प्रश्नीय सूत्र मे सूर्याभ देव का वर्णन यहा पर भी जानना चाहिये। सूत्र ॥ १ ॥

બહાર ગુણશીલક નામે ચૈત્ય (જૈન દેરાસર) હતુ તેમા ભગવાન મહાવીર આવ્યા પ્રભુને વદન કરવા માટે નગરની પરિષદ આવી અને દેશના સાભળીને પાછી જતી રહી

(तेण कालेण तेण समएणं सोहम्मे कप्पे ददुरवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए, ददुरसि सीहासणसि, ददुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एव जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणो विहरइ)

તે કાળે અને તે સમયે સૌધર્મ નામના દેવલોકમા દદુર સિંહાસન ઉપર દદુર નામે દેવ ચાર હજાર સામાનિક દેવોની અને પોતપોતાની પરિષદા સહિત ચાર પટ્ટ દેવીઓ (પટરાણીઓ) ની સાથે સૂર્યાભ દેવની જેમ દિવ્ય કામ સુખોને અનુભવતો બેઠો હતો “ રાજ પ્રશ્નીય સૂત્ર ” મા સૂર્યાભ દેવનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે અહીં પણ તે પ્રમાણે જ વર્ણન જાણી લેવુ જોઇએ ॥ સૂ “૧”

चाउक्कोणा समतीरा अणुपुव्वसुजायवप्पगभीरसीयलजला संछण्णपत्तविसमुणाला बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसो गंधियपुडरिय महापुडरीय सयपत्तसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोव-वेया परिहत्थभमतमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविय-रियसदुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया ॥ सू० २ ॥

टीका—' इम च ण ' इत्यादि । स दर्दुरको देवः इम च खलु ' केवल-कप्प ' केवलकल्प = सम्पूर्ण जम्बूद्वीप द्वीप विपुलेन ' ओहिणा ' अवधिना —अवधिज्ञानेन ' आभोएमाणे २ ' आभोगयन आभोगयन् = वारवारमव लोकयन् ' जाव ' ' नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए ' यावन्नाटयविधिमुपदर्श्य प्रतिगत. ' जहा सुरियाभे ' यथा सूर्याभ, सूर्याभदेववत् । तद् गमना नन्तर भदन्त ! इति सबोध्य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर— वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमंस्यित्वा एवमवदत्-अहो ! खलु भदन्त ? दर्दुरो

' इम च ण केवलकप्प ' इत्यादि ।

टीकार्थ-वह दर्दुरकदेव (इम च ण केवलकप्प जबूदीव२) इस केवल कल्प-सपूर्ण-जबूद्वीप नाम के द्वीप को (विउलेणं ओहिणा) अपने विपुल अवधिज्ञान से (आभोए माणे २) बार २ देखता हुआ (जाव नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगए) यावत् नाट्य विधि को दिखला कर चला गया (जहा सूरियाभे) सूर्याभदेव की तरह (भतेति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) उस के चले जाने के बाद हे भदत ! इस प्रकार से सबोधित करके भगवति गौतम ने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु से इस प्रकार पूछा (अहो ण भते ! ददुरे देवे महड्ढिए महज्जुइए महायले, महाजसे

' इम चण केवलकप्प ' इत्यादि

તે દર્દુરક દેવ (इम च ण केवलकप्प जबूदीव २) આ કેવલ કલ્પ-સપૂર્ણ-જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને (विउलेण ओहिणा) પોતાના અવધિજ્ઞાનથી (आभोएमाण २) વાર વાર જોતો (जाव नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगए) યાવત્ નાટ્ય વિધિનુ પ્રદર્શન બતાવીને જતો રહ્યો (जहा सूरियाभे) સૂર્યાભ દેવની જેમ (भतेति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) તેના જવા પછી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુના ચરણોમા ભગવાન ગૌતમે ' હે ભદત ! ' એવી રીતે સબોધીને તેઓએ પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ परिगेण्हित्ता पोसहसालाए जाव विहरइ, तएणं णदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणसि तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था–धन्नाणं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभियओ जेसि णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपतियाओ जत्थ णं बहुजणो ण्हाइ य पियइ य पाणिय च संवहइ, त सेय खलु मम कल्ल पाउ० सेणिय आपुच्छित्ता रायगिहस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइयंसि भूमिभागंसि जाव णंद पोक्खरणि खणावेत्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ कल्ल पाउ० जाव पोसह पारेइ पारित्ता ण्हाए कयवलिकम्मे मित्तणाइ जाव सपरिवुडे महत्थ जाव रायारिह पाहुड गेण्हइ गेण्हित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्ठवेइ उवट्ठवित्ता एव वयासी–इच्छामि ण सामी! तुब्भेहि अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया !, तएण णदे सेणिएण रन्ना अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ० रायगिह मज्झ मज्झेणं निग्गच्छइ २ वत्थुपाढयरोइसि भूमिभागसि णद पोक्खरणिं खणाविउ पयत्ते यावि होत्था, तएण सा णंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि

एव खलु हे गौतम ! इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृह नगर, गुणशिलक चैत्य, श्रेणिको राजाऽऽसीत् । तत्र खलु राजगृहे नगरे नन्दनामा मणिकारश्रेष्ठी आढ्यो दीप्तोऽपरिभूतः परिवसति । तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम ! अह तत्र राजगृहे समवसृतः परिषन्निर्गता श्रेणिको राजा निर्गतः । ततः खलु स नन्दो मणिकार श्रेष्ठी अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् स्नात. पादचारेण= पादाभ्यामेव न तु रथाश्वादि यानेन ' जाव पज्जुवासइ ' मम वन्दनार्थमागतो वन्दित्वा नमस्यित्वा च यथास्थानमुपविश्य पर्युपास्तेरम । नन्दः नन्द-मणिकारश्रेष्ठी धर्म = श्रुतचारित्रलक्षण श्रुत्वा श्रमणोपासक = श्रावको जातः । तत' खलु अह (महावीरस्वामी) राजगृहात् प्रतिनिष्क्रान्तो बहिर्जनपद

पत्ता किण्णा अभिसमन्नागया ? एव खलु गोयमा ! इहेव जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया तत्थणं रायगिहे नयरे णदे णाम मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते०) गौतम स्वामी प्रभु से पूछते हैं भदत ! दर्दुर देव ने वह दिव्य देवर्द्धि और दिव्य देव द्युति किस प्रकार से उपार्जितकी, किस प्रकार से अपने आधीन की और किस प्रकार उसे अपने भोग के विषय भूत बनाई ? प्रभु ने कहा गौतम ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-इसी जबूद्वीप नाम के द्वीप मे, भरत क्षेत्र में, राजगृह नाम के नगर में गुण शिलक नाम का चैत्य था । नगर के राजा का नाम श्रेणिक था । उस राजगृह नगर मे नन्द नामका मणिकार श्रेष्ठी रहता था । यह बहुत ही आढ्य-धन सपन्न-एव अपरि भूत-जनमान्य-था (तेण कालेण तेण समएण अह गोयमा ! समोसढे, परिसा निग्गया, सेणिए, राया णिग्गए, तएण से णदे मणि

किण्णा अभिसमन्नागया ? एव खलु गोयमा ! इहेव जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया तत्थण रायगिहे नयरे णदे णाम मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते०)

ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભદત ! દર્દુર દેવે તે દિવ્ય દેવર્ધિ અને દિવ્યદ્યુતિ કેવી રીતે મેળવી, કેવી રીતે પોતાને આધીન બનાવી અને કેવા રીતે તેને પોતાના ઉપભોગ યોગ્ય બનાવી ? પ્રભુએ કહ્યુ કે હે ગૌતમ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે એ જ જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભરત ક્ષેત્રમા રાજગૃહ નામના નગરમા ગુણશીલક નામે ચૈત્ય હતુ તે નગરના રાજાનુ નામ શ્રેણિક હતુ તે રાજગૃહ નગરમા નન્દ નામે મણિકાર શ્રેષ્ઠિ રહેતો. તે બહુ જ આઢય-ધનવાન-અપરિભૂત-જનમાન્ય (નગરમા પૂજાતો) હતો.

तेण कालेण तेण समएण अह गोयमा ! समोसढे, परिसा निग्गया, सेणिए

देवो महर्द्धिको महाद्युतिकः, आश्चर्यकारि महद्धर्यादियुक्तोऽय वर्त्तते दर्दुरस्य खलु भदन्त ! देवस्य सा दिव्या देवर्द्धिर्देवद्युतिः कुग गता कुत्र मविष्टा ? या पूर्वं दृष्टेति भावः । भगवानाह-हे गातम ! सा दिव्या देवर्द्धिः देवद्युतिश्च तस्य शरीर गता शरीरमनुप्रविष्टा । अत्र 'कूडागारदिट्ठतो' कूटागारदृष्टान्तो बोध्यः । कूटागारदृष्टान्तसमन्वयाय गौतमस्य भगवतो महावीरस्य च उक्तिःप्रयुक्तिरधोनिर्दिष्टप्रकारेण ज्ञेया-गौतमस्वामी पृच्छति हे भदन्त !=हे भगवन् ! दर्दुरेण देवेन सा दिव्या देवर्द्धिः देवद्युतिः कथ=केन प्रकारेण लब्धा=समुपार्जिता प्राप्ता= आयत्तीभूता अभिसमन्वागता=सम्यक्स्वमोगविषयीकृता ? भगवानाह—

महासोक्खे, महाणुभावे, ददुरस्स ण भते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी देवज्जुई कहिं गया, कहिं पविट्ठा) हे भदत ! अभी२यह दर्दुर देव आश्चर्यकारी महद्धर्यादि से युक्त था, सो इस समय उस दर्दुर देव की हे भदत ! वह पूर्वदृष्ट दिव्य देवर्द्धि, देवद्युति कहा गई, कहां प्रविष्ट हो गई ? (गोयमा ! सरीर गया, सरीर अणुप्पविट्ठा) इस प्रकार गौतम का प्रश्न सुनकर प्रभु ने उन से कहा-हे गौतम ! वह दिव्यदेवर्द्धि और दिव्य देवद्युति उस दर्दुर देव के शरीर में चली गई है, शरीर में प्रविष्ट हो गई है । (कूडागार दिट्ठतो) इस विषय में कूटागार दृष्टान्त प्रयुक्त हुआ है । इसी कूटागारदृष्टान्त के समन्वय के लिये भगवान् गौतम और महावीर प्रभु की यह उक्ति प्रयुक्ति अधोनिर्दिष्ट प्रकार से जाननी चाहिये (दर्दुरे णं भते देवेण सा दिव्वा देविड्ढी देवज्जुई किण्णा लद्धा किण्णा

(अहोण भते ! ददुरे देवे महड्ढिए महज्जुइए, महाबले, महाजसे, महा सोक्खे, महाणुभावे ददुरस्स ण भते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी देवज्जुई कहिं गया, कहिं पविट्ठा)

હે ભદત ! હમણા તો આ દર્દુર દેવ આશ્ચર્યકારી મહર્દ્ધિ વગેરેથી સપન્ન હતો આ સમયે દર્દુરક દેવની હે ભદત ! તે પૂર્વ દૃષ્ટ દિવ્ય દેવર્દ્ધિ, દેવદ્યુતિ કયા જતી રહી છે ? કયા પ્રવિષ્ટ થઇ ગઈ છે ? (गोयमा ! सरीर गया, सरीर अणुप्पविट्ठा) આ રીતે ગૌતમનો પ્રશ્ન સાભળીને પ્રભુએ તેમને કહ્યુ કે હે ગૌતમ ! તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ અને દિવ્ય દેવદ્યુતિ તે દેવ દર્દુરકના શરીરમા પ્રવિષ્ટ થઇ ગઇ છે શરીરમા જતી રહી છે (कूडागारदिट्ठतो) આ વિશેષ કૂટાગાર દષ્ટાન્ત આપવામા આવ્યુ છે આ કૂટાગાર દષ્ટાન્તના સમન્વય માટે ભગવાન ગૌતમ અને મહાવીર પ્રભુની ચર્ચા નીચે લખ્યા મુજબ જાણવી

(ददुरेण भते ! देवेण सा दिव्वा देविड्ढी देवज्जुई किण्णा लद्धा ।

अन्यदा=एकस्मिन् काले ग्रीष्मकालसमये=ग्रीष्मऋतौ 'जेट्ठामूलंमि मासंसि' ज्येष्ठामूले मासे-ज्येष्ठायामूलस्य या च द्रेण सह योगो भवति पौर्णमास्या यस्मिन् मासे स ज्येष्ठामूलस्तस्मिन्=ज्येष्ठामूले मासे ज्येष्ठमासे इत्यर्थः, 'अट्ठमभत्त' अष्टमभक्तम्-उपवासत्रयरूप तप परिगृह्णाति=स्वीकरोति, परिगृह्य पौषधशालाया 'जाव विहरइ' यावत् पौषधिक=समाश्रितपौषध विहरति। तत' ख नन्दस्य= नन्दाभिधमणिकारश्रेष्ठिनः अष्टमभक्ते परिणम्यमाने=सम्पूर्णप्राये सति तृष्णया क्षुधया च अभिभूतस्य=व्याकुलस्य सत अयम्=वक्ष्यमाणप्रकारः आध्यात्मिक=

लगा (तएणं से णदे मणियारसेट्ठी, अन्नया कयाइ असाहु दसणेण य अपज्जुवासणाए य, अणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था) मेरे वहा से विहार करने के बाद वह मणिकार श्रेष्ठी नद किसी एक समय असाधु के दर्शन से कुगुरु के ससर्ग से-सद्गुरुओ की अनासेवना से, सुगुरु के उपदेश की प्राप्ति नही होने से सुगुरु के पास धर्म के श्रवण का अभाव होने से, तथा सम्यक्त्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः क्षीयमाण होने से एव मिथ्यात्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमश' वृद्धिगत होते रहने से मिथ्यात्व दशापन्न बन गया= मिथ्यात्वी हो गया। (तएणं णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि, जेट्ठामूलंसि, मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ, २ पोसहसालाए जाव विहरइ, तएण नदस्स अट्ठमभत्तंसि, परिणममाणंसि, तण्हाए छुहाए, य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) किसी एकदिन ग्रीष्म काल के समय में

(तएण से णदे मणियार सेट्ठी अन्नया कयाइ असाहुदसणेण य अपज्जुवासणाए य अणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था)

ત્યાથી મારા વિહાર કર્યા પછી કોઇ વખતે અસાધુના દર્શન થી, કુગુરુના સસર્ગ (સાગત) થી સદ્ગુરુઓની અનાસેવનાથી, સુગુરુના ઉપદેશને સાભળવાની તક નહિ મળવાથી સુગુરુની પાસેથી ધર્મ નહિ સાભલવાથી તેમજ સમ્યકત્વ રૂપ પર્યવ-પરિણામ અનુક્રમે ક્ષીયમાણ (નષ્ટ) હોવાથી અને મિથ્યાત્વરૂપ પર્યવ પરિણામ અનુક્રમે વૃદ્ધિ પામવાથી મિથ્યાત્વ દશાપન્ન થઇ ગયો-મિથ્યાત્વી બની ગયો (तएण णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि, जेट्ठामूलंसि, मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ २ पोसहसालाए जाव विहरइ तएण नदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि, तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) કોઈ એક દિવસે ઉનાળાના જેઠ મહિનામા

विहार विहरामि। ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी अन्यदा कदाचित् 'असाहु दसणेणय' असाधुदर्शनेन=कुगुरुसंसर्गेण 'अपज्जुवासणाए' अपर्युपासनया च= सुगुरोरनासेवनेन 'अणणुसासणाए य' अननुशासनया च=सुगुरोरुपदेशाभावेन 'असुस्सूसणाए य' अशुश्रूषणया च=गुरोरन्तिके धर्मश्रवणाभावेन च, तथा 'सम्मत्तपज्जवेहिं' सम्यक्त्वपर्यवैः 'परिहायमाणेहिं' परिहीयमानैः २ क्रमशः क्षीयमाणैः 'मिच्छत्तपज्जवेहिं मिथ्यात्वपर्यवैः 'परिवड्ढमाणेहिं' परिवर्द्धमानैः= पुनः पुनः क्रमशो वृद्धिमुपगतैः सः नन्दमणिकारश्रेष्ठी मिथ्यात्व मिथ्यात्वभाव मतिपन्न'=प्राप्त=मिथ्यात्वी जातश्चाप्यभूत्। ततः खलु नन्दोमाणिकारश्रेष्ठी

यारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए० पायचारेणं जाव पज्जुवासइ, णं दे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासए जाए) उसी काल में और उसी समय में हे गौतम! मैं उस राजगृह नगर में विहार करता हुआ पहुँचा। वहाँ का समस्त परिषदा वन्दना नमस्कार करने के लिये गुणशिलक चैत्य में आई। श्रेणिक राजा भी आया। जब उस मणिकार श्रेष्ठी नन्द को मेरे आने का समाचार मिला तो वह भी स्नान आदि से निश्चिन्त होकर पैदल ही मेरी वन्दना करने के लिये आया। वहा आकर वह वन्दना, नमस्कार कर यथा स्थान पर बैठ गया। उसने श्रुत चारित्र रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर गृहस्थ धर्म धारण कर लिया अर्थात् वह श्रमणोपासक बन गया। (तएण अहं रायगिहाओ पडिनिक्खते बहिया जणवयविहार विहरामि) इसके बाद मैं वहा से राजगृह से निकला और निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने

राया णिग्गए, तएण से णंद मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए० पायचारेणं जाव पज्जुवासइ, णंदे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासए जाए)

તે કાળે અને તે સમયે હે ગૌતમ! હું વિહાર કરતો કરતો રાજગૃહ નગરમા પહોચ્યો નગરની પરિષદા ગુણશીલક ચૈત્યમા વદના અને નમસ્કાર કરવા માટે આવી શ્રેણિક રાજા પણ વદન તેમજ નમન કરવા માટે આવ્યા હતા મણિયાર શ્રેષ્ઠિ નદને જ્યારે મારા આવવાના સમાચારો મળ્યા ત્યારે તે સ્નાન વગેરેથી પરવારીને પગપાળા જ મને વદન કરવા માટે આવ્યો ત્યા આવીને વદન તેમજ નમન કરીને તે ઉચિત સ્થાને બેસી ગયો શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનુ વ્યાખ્યાન સાભળીને તેણે ગૃહસ્થ ધર્મ ધારણ કરી લીધો એટલે કે તે શ્રમણોપાસક થઈ ગયો (तएण अहं रायगिहाओ पडिनिक्खते बहिया जणवयविहार विहरामि) ત્યારપછી હુ ત્યાથી-રાજગૃહ નગરથી નીકળ્યો અને નીકળીને બહાર જનપદોમા વિહાર કરવા લાગ્યો

अन्यदा=एकस्मिन् काले ग्रीष्मकालसमये=ग्रीष्मऋतौ 'जेट्ठामूलंमि मासंसि' ज्येष्ठामूले मासे-ज्येष्ठायामूलस्य या च द्रेण सह योगो भवति पौर्णमास्या यस्मिन् मासे स ज्येष्ठामूलस्तस्मिन्=ज्येष्ठामूले मासे ज्येष्ठमासे इत्यर्थः, 'अट्ठमभत्तं' अष्टमभक्तम्-उपवासत्रयरूप तप परिगृह्णाति=स्वीकरोति, परिगृह्य पौषधशालाया 'जाव विहरइ' यावत् पौषधिक =समाश्रितपौषधः विहरति। ततः ख नन्दस्य= नन्दाभिधमणिकारश्रेष्ठिनः अष्टमभक्ते परिणम्यमाने=सम्पूर्णप्राये सति तृष्णया क्षुधया च अभिभूतस्य=व्याकुलस्य सत. अयम्=वक्ष्यमाणप्रकारः आध्यात्मिक =

लगा (तएण से णदे मणियारसेट्ठी, अन्नया कयाइ असाहु दसणेण य अपज्जुवासणाए य, अणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था) मेरे वहा से विहार करने के बाद वह मणिकार श्रेष्ठी नद किसी एक समय असाधु के दर्शन से कुगुरु के ससर्ग से-सद्गुरुओ की अनासेवना से, सुगुरु के उपदेश की प्राप्ति नही होने से सुगुरु के पास धर्म के श्रवण का अभाव होने से, तथा सम्यक्त्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः क्षीयमाण होने से एव मिथ्यात्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः वृद्धिंगत होते रहने से मिथ्यात्व दशापन्न बन गया= मिथ्यात्वी हो गया। (तएण णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि, जेट्ठा मूलंसि, मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ, २ पोसहसालाए जाव विहरइ, तएण नदस्स अट्ठमभत्तंसि, परिणममाणंसि, तण्हाए छुहाए, य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) किसी एकदिन ग्रीष्म काल के समय में

(तएण से णदे मणियार सेट्ठी अन्नया कयाइ असाहुदसणेण य अपज्जुवासणाए य अणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था)

ત્યાથી મારા વિહાર કર્યા પછી કોઇ વખતે અસાધુના દર્શનથી, કુગુરુના સસર્ગ (સોબત) થી સદ્ગુરુઓની અનાસેવનાથી, સુગુરુના ઉપદેશને સાભળવાની તક નહિ મળવાથી, સુગુરુની પાસેથી ધર્મ નહિ સાભલવાથી તેમજ સમ્યક્ત્વ રૂપ પર્યવ-પરિણામ અનુક્રમે ક્ષીયમાણ (નષ્ટ) હોવાથી અને મિથ્યાત્વરૂપ પર્યવ પરિણામ અનુક્રમે વૃદ્ધિ પામવાથી મિથ્યાત્વ દશાપન્ન થઇ ગયો-મિથ્યાત્વી બની ગયો (तएण णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि, जेट्ठामूलंसि, मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ २ पोसहसालाए जाव विहरइ तएण नदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि, तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) કોઈ એક દિવસે ઉનાળાના જેઠ મહિનામા

विहारं विहरामि। ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी अन्यदा कदाचित् 'असाहु दसणेणय' असाधुदर्शनेन=कुगुरुसंसर्गेण 'अपज्जुवासणाए' अपर्युपासनया च= सुगुरोरनासेवनेन 'अणणुसासणाए य' अननुशासनया च=सुगुरोरुपदेशाभावेन 'असुस्सूसणाए य' अशुश्रूषणया च=सुगुरोरन्तिके धर्मश्रवणाभावेन च, तथा 'सम्मत्तपज्जवेहिं' सम्यक्त्वपर्यवैः 'परिहायमाणेहिं' परिहीयमानैः २ क्रमशः क्षीयमाणैः 'मिच्छत्तपज्जवेहिं मिथ्यात्वपर्यवैः 'परिवड्ढमाणेहिं' परिवर्द्धमानैः= पुनः पुनः क्रमशो वृद्धिमुपगतैः सः नन्दमणिकारश्रेष्ठी मिथ्यात्व मिथ्यात्वभाव मतिपन्न'=प्राप्त=मिथ्यात्वी जातश्चाप्यभूत्। ततः खलु नन्दोमणिकारश्रेष्ठी

यारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एहाए० पायचारेणं जाव पज्जुवासइ, णंदे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासए जाए) उसी काल में और उसी समय मे हे गौतम। मैं उस राजगृह नगर में विहार करता हुआ पहुँचा। वहां का समस्त परिषदा वदना नमस्कार करने के लिये गुणशिलक चैत्य मे आई। श्रेणिक राजा भी आया। जब उस मणिकार श्रेष्ठी नद को मेरे आने का समाचार मिला तो वह भी स्नान आदि से निश्चिन्त होकर पैदल ही मेरी वदना करने के लिये आया। वहा आकर वह वदना, नमस्कार कर यथा स्थान पर बैठ गया। उसने श्रुत चारित्र रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर गृहस्थ धर्म धारण कर लिया अर्थात् वह श्रमणोपासक बन गया। (तएणं अह रायगिहाओ पडिनिक्खते बहिया जणवयविहार विहरामि) इसके बाद मैं वहा से राजगृह से निकला और निकल कर बाहर जनपदो में विहार करने

राया णिग्गए, तएण से णद मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए० पायचारेणं जाव पज्जुवासइ, णदे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासए जाए)

તે કાળે અને તે સમયે હે ગૌતમ! હું વિહાર કરતો કરતો રાજગૃહ નગરમા પહોચ્યો નગરની પરિષદા ગુણશીલક ચૈત્યમા વદના અને નમસ્કાર કરવા માટે આવી શ્રેણિક રાજા પણ વદન તેમજ નમન કરવા માટે આવ્યા હતા મણિયાર શ્રેષ્ઠિ નદને જ્યારે મારા આવવાના સમાચારો મળ્યા ત્યારે તે સ્નાન વગેરેથી પરવારીને પગપાળા જ મને વદન કરવા માટે આવ્યો ત્યા આવીને વદન તેમજ નમન કરીને તે ઉચિત સ્થાને બેસી ગયો શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનુ વ્યાખ્યાન સાભળીને તેણે ગૃહસ્થ ધર્મ ધારણ કરી લીધો એટલે કે તે શ્રમણોપાસક થઈ ગયો (तएण अह रायगिहाओ पडिनिक्खते बहिया जणवयविहार विहरामि) ત્યારપછી હુ ત્યથી-રાજગૃહ નગરથી નીકળ્યો અને નીકળીને બહાર જનપદોમા વિહાર કરવા લાગ્યો

बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे पार्श्व भागे इत्यर्थः. ' वत्थुपाढगरोइयंसि ' वस्तुपाठकरुचिते=वस्तुपाठकाना=गृहादि-निर्माणशास्त्रनिपुणाना=भूगर्भविद्याविशारदाना रुचित'=रुचिविषयीभूतस्तस्मिन् तादृशे भूमिभागे=भूप्रदेशे यावत् नन्दा=नन्दाभिधा पुष्करिणी=वापी खनयितुम् । इति कृत्वा=इति मनसिनिधाय एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण सम्प्रेक्षते,=विचारयति, सम्प्रेक्ष्य कल्पे प्रादुष्प्रभाताया यावत्-रजन्या तेजसा ज्वलतिसूर्ये=सूर्योदये सति पौषधं पारयति, पारयित्वा स्नातः कृतबलिकर्मा मित्रज्ञाति यावत्सपरिवृतः महार्थं ' जाव रायारिहं ' महार्घं महार्हं विपुल राजार्हंप्राभृत गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव श्रेणिको

अब यही उचित है कि मै भी दूसरे दिन प्रातः काल होते ही श्रेणिक राजा से पूछकर राजगृह नगर के बाहिर ईशान कोण की ओर वैभार पर्वत की तलहटी- पार्श्वभाग- में जिस स्थान को वास्तुशास्त्र के वेत्ता पास करे उस स्थान पर एक नदा नामको बावडी को खुदवाऊ । इस प्रकार उस ने अपने मन मे विचार किया । (संपेहित्ता कल्ल पा० जाव पोसह पारेइ पारेत्ता पहाए कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव सपरिवुडे महत्थ जाव रायारिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्ठवेइ, उवट्ठवेत्ता एव वयासी- इच्छामिण सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया !) विचार करके उसने प्रात. काल सूर्योदय होने पर पौषध को पारा (पाला) । (पार कर) पाल कर पौषध को समाप्त कर-फिर उसने स्नान किया । स्नान से निवट कर काक आदि पक्षियों को अन्नादि का भाग रूप बलिकर्म किया । बाद में

મને એમ યોગ્ય લાગે છે કે હુ પણ આવતી કાલે સવાર થતા જ ' ણિક રાજાની આજ્ઞા મેળવીને રાજગૃહ નગરની બહાર ઇશાન કોણમા વૈભાર પર્વતની તળેટીમા વાસ્તુશાસ્ત્રને જાણનારા જે સ્થાનને પસદ કરે તે સ્થાન ઉપર એક નદા નામે વાવ ખોદાવુ આ રીતે તેણે મનમા વિચાર કર્યો (સંપેહિત્તા કલ્લ પા० જાવ પોસહ પારેઇ પારેત્તા પ્હાએ કયબલિકમ્મે મિત્તણાઇ જાવ સપરિવુડે મહત્થ જાવ રાયરિહ પાહુડ ગણ્હઇ ગેણ્હિત્તા, જેણેવ સેણિએ રાયા તેણેવ ઉવા० उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्ठवेइ उवट्ठवेत्ता एव वयासी इच्छामि ण सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया !) વિચાર કરીને તેણે બીજા દિવસે સવારે સૂર્યોદય થતા પૌષધ પાળ્યો અને પૌષધ પાળીને તેણે સ્નાન કર્યું અને ત્યારપછી કાગડા વગેરે

आत्मगतोविचार समुदपद्यत । तदेवाह-' धन्नाणत ' इत्यादि-धन्याः खलु ते राजेश्वरयावत्सार्थवाहप्रभृतय, येषा खलु राजगृहस्य बहि. बह्वयो वाप्यः= सामान्यः पुष्करिण्यः=कमलयुक्ता' यावत्-सरः_सर पङ्क्तिका'=यत्रैकस्मात्सरसो ऽस्मिन् सरसि जल प्रवहति, एव सरसा जलाशयाना पङ्क्तयः पङ्क्तिभूता जलाशया इत्यर्थः विद्यन्ते, यत्र खलु बहुजनः=जनसमुदायः स्नाति च पिबति च तथा-पानीय च सवहति=ततो जल नयति । तत्=तस्मात्श्रेय =उचित खलु मम कल्ये= प्रादुष्प्रभाताया रजन्या सूर्योदये सतीत्यर्थ, श्रेणिक राजानमापृच्छ्य राजगृहस्य

जेठ मास मे मणिकार श्रेष्ठी नद ने अष्टम भक्त किया तीन उपवास किये— और पौषध शाला में रहा- । जब उसकी यह तपस्या पूर्णप्राय हो रही थी तब उसे तृष्णा पिपासा और क्षुधा ने व्याकुल कर दिया। उस समय उसे इस प्रकार का विचार आया- (धन्नाण ते राईसर जाव सत्थवाहपभियओ जेसिर्ण रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपतियाओ जत्थण बहुजणो ण्हाइ य, पियइ य, पाणिय च सवहइ त सेय मम कल्ल पाउ० सेणिय आपुच्छित्ता राय गिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए वेभारपव्वयस्स अदूर सामते वत्थुपाढगरोइयसि भूमिभागसि जाव णद पोक्खरणिं खणावेत्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ) राजेश्वर से लेकर सार्थवाह प्रभृति वे जन धन्यवाद के पात्र है कि जिनकी राजगृह नगर के बाहर अनेक वावडिया है,-पक्ति भूत जलाशय हैं कि जिन में अनेक मनुष्य स्नान करते हैं, अनेक जन पानी पीते है अनेक उन में से पानी ले जाते हैं । तो मुझे भी

મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નદે અષ્ટન ભક્ત કર્યો–ત્રણ ઉપવાસ કર્યા–અને પૌષધશાળામા રહ્યો જ્યારે તેની આ તપસ્યા પૂરી થવાની અણી ઉપર જ હતી ત્યારે તેને તરસ અને ભૂખે વ્યાકુળ બનાવી દીધો તે સમયે તેણે વિચાર કર્યો કે—

(धन्ना ण ते राई सर जाव सत्थवाहपभियओ जेसिण रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपतियाओ जत्थ ण बहुजणो ण्हाइ य, पियइ य, पाणिय च सवहइ त सेय कल्ल पाउ० सेणिय आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामते वत्थुपाढगरोईयसि भूमिभाग सि जाव ण्द पोक्खरणिं खणावेत्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ) રાજેશ્વરથી માંડીને સાર્થવાહ વગેરે તે લોકોને ધન્ય છે કે રાજગૃહ નગરની બહાર જેમની ઘણી વાવો છે, પંક્તિભૂત જળાશયો છે–કે જેમા ઘણા માણસો સ્નાન કરે છે, ઘણા માણસો પાણી પીએ છે, ઘણા તેઓમાથી પાણી લઇ જાય છે તો હવે

बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे पार्श्व भागे इत्यर्थः. ' वत्थुपाढगरोइयंसि ' वस्तुपाठकरुचिते=वस्तुपाठकाना=गृहादि-निर्माणशास्त्रनिपुणाना=भूगर्भविद्याविशारदाना रुचितः=रुचिविषयीभूतस्तस्मिन् तादृशे भूमिभागे=भूमदेशे यावत् नन्दा=नन्दाभिधा पुष्करिणी=वापीं खनयितुम् । इति कृत्वा=इति मनसिनिधाय एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण समेक्षते,=विचारयति, समेक्ष्य कल्पे प्रादुष्प्रभातायां यावत्-रजन्यां तेजसा ज्वलितसूर्ये=सूर्योदये सति पौषधं पारयति, पारयित्वा स्नातः कृतबलिकर्मा मित्रज्ञाति यावत्परिवृतः महार्थं ' जाव-रायारिह ' महार्घं महार्हं विपुलं राजार्हंप्राभृतं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव श्रेणिको

अब यही उचित है कि मै भी दूसरे दिन प्रातः काल होते ही श्रेणिक राजा से पूछकर राजगृह नगर के बाहिर ईशान कोण की ओर वैभार पर्वत की तलहटी- पार्श्वभाग- में जिस स्थान को वास्तुशास्त्र के वेत्ता पास करे उस स्थान पर एक नदा नामकी बावडी को खुदवाऊ । इस प्रकार उस ने अपने मन मे विचार किया । (सपेहित्ता कल्ल पा० जाव पोसह पारेइ पारेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव सपरिवुडे महत्थ जाव रायारिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्ठवेइ, उवट्ठवेत्ता एव वयासी-इच्छामिण सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया !) विचार करके उसने प्रात. काल सूर्योदय होने पर पौषध को पारा (पाला) । (पार कर) पाल कर पौषध को समाप्त कर-फिर उसने स्नान किया । स्नान से निवट कर काक आदि पक्षियों को अन्नादि का भाग रूप बलिकर्म किया । बाद में

મને એમ યોગ્ય લાગે છે કે હુ પણ આવતી કાલે સવાર થતા જ શ્રેણિક રાજાની આજ્ઞા મેળવીને રાજગૃહ નગરની બહાર ઈશાન કોણમા વભાર પર્વતની તળેટીમા વાસ્તુશાસ્ત્રને જાણનારા જે સ્થાનને પસદ કરે તે સ્થાન ઉપર એક નદા નામે વાવ ખોદાવુ આ રીતે તેણે મનમા વિચાર કર્યો (सपेहित्ता कल्ल पा० जाव पोसह पारेइ पारेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव सपरिवुडे महत्थ जाव रायारिह पाहुड गण्हइ गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्ठवेइ उवट्ठवेत्ता एव वयासी इच्छामि ण सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया !) વિચાર કરીને તેણે બીજા દિવસે સવારે સૂર્યોદય થતા પૌષધ પાળ્યો અને પૌષધ પાળાને તેણે સ્નાન કર્યું અને ત્યારપછી કાગડા વગેરે

आत्मगतोविचार समुदपद्यत । तदेवाह-' धन्नाणत ' इत्यादि-धन्याः खलु ते राजेश्वरयावत्सार्थवाहप्रभृतय, येषा खलु राजगृहस्य बहिः बहवो वाप्यः= सामान्यः पुष्करिण्य'=पद्मयुक्ताः यावत्-सरः सर पङ्क्तिकाः=यत्रैकस्मात्सरसो ऽस्मिन् सरसि जल प्रवहति, एव सरसा जलाशयाना पङ्क्तय: पङ्क्तिभूता जला शया इत्यर्थः विद्यन्ते, यत्र खलु बहुजनः=जनसमुदायः स्नाति च पिबति च तथा-पानीय च सवहति=ततो जल नयति । तत्=तस्मात्श्रेय =उचित खलु मम कल्ये= मादुष्प्रभाताया रजन्या सूर्योदये सतीत्यर्थ , श्रेणिक राजानमापृच्छ्य राजगृहस्य

जेठ मास मे मणिकार श्रेष्ठी नद ने अष्टम भक्त किया तीन उपवास किये— और पौषध शाला में रहा- । जब उसकी यह तपस्या पूर्णप्राय हो रही थी तब उसे तृष्णा पिपासा और क्षुधा ने व्याकुल कर दिया। उस समय उसे इस प्रकार का विचार आया- (धन्नाण ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभियओ जेसिणं रायगिहस्स बहिया बहूओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपतियाओ जत्थण बहुजणो ण्हाइ य, पियइ य, पाणिय च सवहइ त सेय मम कल्ल पाउ० सेणिय आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए वेभारपव्वयस्स अदूर सामते वत्थुपाढगरोइयसि भूमिभागसि जाव णद पोक्खरणिं खणावेत्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ) राजेश्वर से लेकर सार्थवाह प्रभृति वे जन धन्यवाद के पात्र है कि जिनकी राजगृह नगर के बाहर अनेक बावडिया है,-पक्ति भूत जलाशय हैं कि जिन में अनेक मनुष्य स्नान करते हैं, अनेक जन पानी पीते है अनेक उन में से पानी ले जाते हैं । तो मुझे भी

મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નદે અષ્ટમ ભક્ત કર્યો-ત્રણ ઉપવાસ કર્યા-અને પૌષધશાળામા રહ્યો જ્યારે તેની આ તપસ્યા પૂરી થવાની અણી ઉપર જ હતી ત્યારે તેને તરસ અને ભૂખે વ્યાકુળ બનાવી દીધો તે સમયે તેણે વિચાર કર્યો કે— (धन्ना ण ते राई सर जाव सत्थवाहप्पभियओ जेसिण रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपतियाओ जत्थ ण बहुजणो ण्हाइ य, पियइ य, पाणिय च सवहइ त सेय कल्ल पाउ० सेणिय आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामते वत्थुपाढगरोईयसि भूमिभाग सि जाव ण्द पोक्खरणिं खणावेत्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ) રાજેશ્વરથી માડીને સાર્થવાહ વગેરે તે લોકોને ધન્ય છે કે રાજગૃહ નગરની બહાર જેમની ઘણી વાવો છે, પક્તિભૂત જળાશયો છે—કે જેમા ઘણા માણસો સ્નાન કરે છે, ઘણા માણસો પાણી પીએ છે, ઘણા તેઓમાથી પાણી લઇ જાય છે તો હવે

नन्दा पुष्करिणी अनुपूर्वेण=क्रमेण खन्यमाना खन्यमाना पुष्करिणी जाता चाप्यासीत्, सा कीदृशी जाता ? इत्याह-' चाउक्कोणा ' इत्यादि-' चाउक्कोणा ' चतुष्कोणा= समतीरा समम् = उन्नतत्वावनतत्वरहित तीर=तटप्रदेशो यस्या' सा तथोक्ता, ' अणुपुव्वसुजायवप्पगभीरसीयलजला ' अनुपूर्वे सुजातवप्रगम्भीरशीतलजला- अनुपूर्वेण=क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरादिभावरूपेण सु=सुष्ठु अतिशयेन यो जातः वप्र = केदाराकार जलस्थान तत्र गम्भीरम्=अगाध शीतल च जल यस्या सा तथा, ' सछण्णपत्तविसमुणाला ' संछन्नपत्रविसमृणाला=सछन्नानि=जलेनातरितानि जलमग्नानीत्यर्थः पत्राणि=कमलदलानि विसानि=कमलकन्दा मृणालानि=कमल

होकर निकला। निकलकर फिर वह वास्तु शास्त्र के वेत्ताओं द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा-वहां पहुँचकर उसने नदा नाम की वावडी खुदवानी प्रारभ कर दी। (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुव्वेण खणमाणी २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्व सुजायावप्पगभिरसीयलजला, सछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपउमकुमुय नलिणसुभगसोगधियपुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमन्तमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) क्रमशः खुदती २ वह नदा पुष्करिणी एक दिन वास्तविक पुष्करिणी के रूप में तैयार हो गई। इसके चारकोने थे। तट प्रदेश इसका समान था। ऊँचाई नीचाई से रहित था। इस वावडी का अगाध शीतल जल से भरा हुआ नीचेका जल स्थान बहुत नीचा बहुत गहरा था और क्रम क्रम से निष्पन्न करने मे आया था। इस में

આવીને તે રાજગૃહ નગરની વચ્ચે થઇને નીકળ્યો નીકળીને તે વાસ્તુશાસ્ત્રના નિષ્ણાતો વડે બતાવવામા આવેલા સ્થાન ઉપર પહોચ્યો અને ત્યા જઇને તેણે નદા નામની વાવ ખોદવવી શરૂ કરી દીધી (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुव्वेण खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावी होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्पग भीरसीयलजला सछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोग धियपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमतमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविचरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) આમ દરરોજ ખોદતા ખોદતા છેવટે એક દિવસે નદા પુષ્કરિણી વાવ) સ પૂર્ણપણે ખોદાઇ ગઇ તેને ચાર ખુણા હતા કિનારાનો ભાગ તેનો એક સરખો હતો એટલે કે ઉચો નીચો નહોતો આ વાવનુ અગાધઠંડા પાણીથી ભરેલુ નીચેનુ જળ સ્થાન ખૂબ જ ઊંડુ

राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावत्माभृतम् उपस्थापयति उपस्थाप्य एवमवादीत्-इच्छामि खलु हे स्वामिन्! युष्माभिरभ्यनुज्ञात सन् राजगृहस्य बहिः 'जाव खणावेत्तए' यावत्-उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्याद्रसामन्ते वास्तु पाठकरुचिते भूमिभागे यावत् नन्दा पुष्करिणीं खनयितुम्। श्रेणिको राह-यथासुख हे देवानुप्रिय! इच्छानुसार कुरु। ततः खलु नन्द श्रेष्ठी श्रेणिकेन राज्ञाऽभ्यनुज्ञात. सन् हृष्टतुष्टः राजगृहस्य म ध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य वस्तु पाठकरुचिते भूमिभागे नन्दा पुष्करिणीं खनयितु मारब्धश्चाप्यभवत्। ततः खलु सा

मित्रादिजनो से परिवृत होकर उसने महार्थ साधक यावत् बहुत कीमती राजा को भेंट करने योग्य पदार्थ लिया। लेकर वह जहां श्रेणिक राजा था वहा गया। वहा जाकर उसने राजा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया और फिर वह भेंट उनके समक्ष रखी। बाद में राजा से उसने इस प्रकार कहा हे स्वामिन् म आपसे आज्ञा प्राप्तकर राजगृह नगर के बाहर ईशान कोण में वैभार गिरि के पार्श्वभाग में एक पुष्करिणी बन वाना चाहताहूँ। राजा ने उस की बात सुनकर उससे कहा हे देवानु प्रिय! यथासुखम्- तुम्हारी जैसी इच्छा हो उस के अनुसार वैसा ही करो। (तएण णदे सेणिएण रन्ना अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठ० रायगिह मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ २ वत्थुपाढयरोइसि भूमिभागसि णद पोक्खरणिं खणाविउ पयत्ते यावि होत्था) इस प्रकार श्रेणिक राजा से आज्ञा प्राप्त कर वह मणिकार श्रेष्ठी नद बहुत ही अधिक आनदित एव सतुष्ट हुआ। बाद में वहा से आकर वह राजगृह नगर के बीच से

પક્ષીઓને અન્નભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું ત્યારબાદ પોતાની મિત્ર-મંડળીને સાથે લઈને બહુમૂલ્ય સાધક યાવત બહુ કિંમતી રાજાને ભેટ કરવા યોગ્ય પદાર્થો લીધા લઇને તે જ્યા શ્રેણિક રાજા હતા ત્યા ગયો ત્યા પહોચીને તેણે બંને હાથ જોડીને રાજાને નમસ્કાર કર્યા અને પછી ભેટ તેમની સામે અર્પણ કરી ત્યારબાદ રાજાને વિનતી કરતા તેણે કહ્યુ કે હે સ્વામી! તમારી આજ્ઞા મેળવીને હુ રાજગૃહ નગરની બહાર ઈશાન કોણમા વૈભાર પર્વતની તળેટીમા એક પુષ્કરિણી (વાવ) બોદાવવાની મારે ઈચ્છા છે રાજાએ તેની વાત સાભળીને તેને કહ્યુ-કે હે દેવાનુપ્રિય! "यथा सुखम्" તમારી જેવી ઇચ્છા હોય ખુશીથી તમે તે પ્રમાણે કરો (तएण ण दे सेणिएण रन्ना अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठ० रायगिह मज्झ मज्झेण निगच्छइ २ वत्थुपाढयरोइसि भूमिभाग सि णद पोक्खरणिं खणाविउ पयत्ते यावि होत्था) આ રીતે શ્રેણિક રાજા પાસેથી આજ્ઞા મેળવીને તે મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નદ બહુજ આનદિત તેમજ સતુષ્ટ થયો ત્યાર

नन्दा पुष्करिणी अनुपूर्वेण=क्रमेण खन्यमाना खन्यमाना पुष्करिणी जाता चाप्यासीत्, सा कीदृशी जाता ? इत्याह-' चाउक्कोणा ' इत्यादि-' चाउक्कोणा ' चतुष्कोणा= समतीरा समम् = उन्नतत्वानतत्वरहित तीर=तटप्रदेशो यस्या' सा तथोक्ता, ' अणुपुव्वसुजायवप्पगभीरसीयलजला ' अनुपूर्वे सुजातवप्रगम्भीरशीतलजला- अनुपूर्वेण=क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरादिभावरूपेण सु=सुष्ठु अतिशयेन यो जातः वप्र = केदाराकार जलस्थान तत्र गम्भीरम्=अगाध शीतल च जल यस्या सा तथा, ' सछण्णपत्तविसमुणाला ' संछन्नपत्रविसमृणाला=सछन्नानि=जलेनान्तरितानि जलमग्नानीत्यर्थः पत्राणि=कमलदलानि विसानि=कमलकन्दा मृणालानि=कमल-

---

होकर निकला। निकलकर फिर वह वास्तु शास्त्र के वेत्ताओं द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा-वहाँ पहुँचकर उसने नदा नाम की वावडी खुदवानी प्रारभ कर दी। (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुव्वेण खणमाणी २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्व सुजायावप्पगभिरसीयलजला, सछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगधियपुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमन्तमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) क्रमशः खुदती २ वह नदा पुष्करिणी एक दिन वास्तविक पुष्करिणी के रूप में तैयार हो गई। इसके चारकोने थे। तट प्रदेश इसका समान था। ऊँचाई नीचाई से रहित था। इस वावडी का अगाध शीतल जल से भरा हुआ नीचेका जल स्थान बहुत नीचा बहुत गहरा था और क्रम क्रम से निष्पन्न करने मे आया था। इस में

આવીને તે રાજગૃહ નગરની વચ્ચે થઇને નીકળ્યો નીકળીને તે વાસ્તુશાસ્ત્રના નિષ્ણાતો વડે બતાવવામા આવેલા સ્થાન ઉપર પહોચ્યો અને ત્યા જઈને તેણે નદા નામની વાવ ખોદવવી શરૂ કરી દીધી (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुव्वेण खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावी होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्पग भीरसीयलजला सछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोग धियपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थयम तमत्त छप्पयअणेगसउणगणमिहुणविचरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) આમ દરરોજ ખોદતા ખોદતા છેવટે એક દિવસે નદા પુષ્કરિણી વાવ) સ પૂર્ણપણે ખોદાઇ ગઇ તેને ચાર ખુણા હતા કિનારાનો ભાગ તેનો એક સરખો હતો એટલે કે ઉચા નીચા નહોતો આ વાવનુ અગાધઠડા પાણીથી ભરેલુ નીચેનુ જળ સ્થાન ખૂબ જ ઊડુ

नालानि यस्या सा तथा । ' बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीय महापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तपप्फुल्लकेसरोववेया ' बहूत्पलपद्मकुमुदनलिनसुभगसौगन्धिकपुण्डरीकमहापुण्डरीकशतपत्रसहस्रपत्रप्रफुल्लकेशरोपपेता-बहूनि = बहूविधानी उत्पलानि पद्मानि च=सामान्यकमलानि कुमुदानि=चन्द्रविकासिकमलानि नलिनानि=विशिष्टगन्धयुक्तकमलानि सुभगानि=सुन्दराणि सौगन्धिकानि=सन्ध्याविकासिकमलानि, पुण्डरीकाणि=श्वेतकमलानि, महापुण्डरीकाणि=महाश्वेतकमलानि, शतपत्राणि=शतदलकमलानि सहस्रदलकमलानि, कीदृशानि एतानि ? इत्याह-प्रफुल्लकेशराणि=विकसितकेशराणि, तैरुपपेता=व्याप्ता । ' परिहत्थभमंतमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणयरियसद्दुन्नइय महुरसरनाइया ' परिहत्थभ्रमन्मत्तषट्पदानेकशकुनगणमिथुनशब्दोन्नतिकमधुरस्वरनादिता- ' परिहत्थ ' इतिदेशीशब्दोऽयम्, परिहत्था '=प्रचुराः, भ्रमन्तः=इतस्ततो विचरन्तः मत्ताः=मकरन्दपानोन्मत्ताः षट्पदा =भ्रमरास्तेषाम्, तथा-अनेकेषा=नानाविधानां शकुनगणानां=हससारसादिपक्षिसमूहानां मिथुनाना=युगलरूपाणां शब्दोन्नतिकाः=उत्कृष्टयुक्ता ये मधुरस्वरः तै नादिता=शब्दायमानेत्यर्थ प्रासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा-प्रतिरूपा-अत्यन्तरमणीयेत्यर्थः ॥ सू० २ ॥

कमल दल कमल कद और कमल नाल सदा जल से अन्तरित हो रहे थे। यह अनेक प्रकार के विकसित केशरों वाले उत्पलों से, कमलों से, चन्द्रविकाशी कुमुदो से, विशिष्ट गध वाले कमलों से सन्ध्या विकाशी सुन्दर सौगधिको से श्वेतकमलो से, महा पुण्डरीको से, शतपत्र वाले कमलों से और सहस्र पत्र वाले कमलो से आच्छादित हो रही थी। इधर भ्रमण करते हुए अनेक भ्रमरो के कि जो मकरद पान से उन्मत्त बन रहे थे, तथा नाना प्रकार के पक्षिगणों के-हस, सारस आदि पक्षि समूह के-युगलो के उत्कृष्ट शब्द युक्त मधुर स्वरों से वाचालित

હતુ, ગભીરહતુ અને અનુક્રમે નિષ્પન્ન કરવામા આવ્યુ હતુ આમા કમળદલ, કમળ કદ, અને કમળનાળ હમેશા પાણીથી ઢકાયેલા (અતરિત) રહેતા હતા આ વાવ ઘણી જાતના વિકસિત કેશરોવાળા ઉત્પલોથી, કમળોથી, ચદ્રવિકાસી કુમુદોથી વિશિષ્ટ સુગધવાળા કમળોથી, સધ્યા વિકાસી સુદર સૌગધિકોથી સફેદ કમળોથી, મહા પુડરીકોથી, શતપત્રવાળા કમળોથી અને સહસ્ર (હજાર) પત્રવાળા કમળોથી ઢકાયેલી હતી આ વાત મકરદ (પુષ્પરસ) નો સ્વાદ લઈને ઉન્મત્ત થઈ ગયેલા આમતેમ ઉડતા ઘણા ભમરાઓના તેમજ ઘણી જાતના પક્ષીઓના હસ, સારસ વગેરે પક્ષી સમૂહોના પક્ષીયુગલોના ઉ

मूलम्–तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी णदाए पोक्खरणीए चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडे रोवावेइ । तएणं ते वणसंडा अणुपुव्वेण सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा सवड्ढिज्जमाणा य वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरंबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठति । तएणं नंदे मणियासेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं करावेइ अणेगखंभसयसन्निविट्ठं पासाइयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि चित्तकम्माणि लेप्पकम्माणि गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमाइं उवदंसिज्जमाणाइ२ चिट्ठंसि, तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुयपच्चत्थुयाइं चिट्ठंति, तत्थणं बहवे णडा य णट्टा य जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायरकम्मं करेमाणा विहरंति, रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहूजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु सन्निसन्नो य संतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य साहमाणो य सुहसुहेण विहरइ ॥ सू० ३ ॥

टीका—' तएण ' इत्यादि । तत खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी नन्दाया पुष्करिण्याश्चतुर्दिक्षु चतुरो वनषण्डान् रोपयति कारयतीत्यर्थः । ततः खलु

पनी हुई थी । यह बहुत प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एव प्रतिरूप थी–तात्पर्य अत्यत रमणीय थी ॥ सूत्र २ ॥

' तएण से णदे मणियार सेट्ठी '–इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण)इसके बाद(से णदे मणियारसेट्ठी) उस मणिकार श्रेष्ठी

સ્વરોથી મુખરિત (શબ્દયુક્ત) થઈ રહી હતી આ વાવ ખૂબ જ પ્રાસાદીય, દર્શનીય, અભિરૂપ અને પ્રતિરૂપ હતી એટલે કે તે અત્યત રમણીય હતી સૂત્ર ૨

(तएण से णदे मणियार सेट्ठी–इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારબાદ (से ण दे मणियारसेट्ठी) તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદે

ते वनषण्डाः 'अणुपुव्वेण' अनुपूर्वेण = अनुक्रमेण 'सारक्खिज्जमाणा' सरक्ष्यमाणाः = पशुपक्ष्याद्युपद्रवतः 'संगोविज्जमाणा' संगोप्यमानाः हिमवनदवादिभ्य, 'संवड्ढिज्जमाणा य' संवर्ध्यमानाश्च=जलसेकादिना वृद्धिं प्राप्ता सन्तः वनषण्डाः पूर्णरूपेण परिणता जाताः। कीदृशास्ते जाताः? इत्याह -'किण्हा' इत्यादि 'किण्हा' कृष्णा'=हरितत्वातिशयेन कृष्णवर्णा 'जाव' यावत्-'निकुरुम्बभूया' महामेघनिकुरम्बभूताः सजलजलधरनिकरसदृशाः पत्रिताः पुष्पिताः 'जाव उवसोभेमाणा २' यावत्-श्रिया=वनषण्डश्रिया अतीव उपशोभमानाः २ तिष्ठन्ति। ततः खलु नन्दः मणिकार श्रेष्ठी पौरस्त्ये वनषण्डे एकां महतीं चित्रसभां कारयति। कीदृशाम्? इत्याह-'अणेगे' त्यादि-'अणेगखंभ

नदने (णदाए पोक्खरणीए चउद्दिसिं) नदा पुष्करिणी की चारों दिशाओं में (चत्तारिवणसंडे रोवावेइ) चार वनषंड आरोपित करवाये (तएणं ते वणसंडा अणुपुव्वेण सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा य वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरंबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति) आरोपित किये गये वे चारो वनषंड क्रमशः सरक्षित होते हुए-पशु पक्षी आदि के उपद्रव से बचते हुए-एवं हिम वर्षा—दवाग्नि आदि से रहित होते हुए खूब वृद्धिंगत हो गये। इन में चारों ओर हरियाली २ छा गई-इस से ये काले काले दिखलाई देने लगे-ऐसे मालूम देते थे मानो जल से भरे हुए मेघहों। पत्र और पुष्पों से युक्त होने के कारण इन की शोभा कुछ निराली ही बन गई थी। (तएणं णंदे मणियार सेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्त

(णंदाए पोक्खरणीए चउद्दिसिं) નંદા પુષ્કરિણી (વાવ) ની ચારે બાજુ (चत्तारि वणसंडे रोवावेइ) ચાર વનખંડો રોપાવડાવ્યા (तएणं ते वनसंडा अणुपुव्वेण सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा य वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरंब-भूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति) રોપાયેલા તે ચારેચાર વનખંડો અનુક્રમે સંરક્ષિત થતા-પશુપક્ષી વગેરેના ઉપદ્રવોથી સંરક્ષાયેલા અને હિમ વનનો અગ્નિ (દાવાનલ) વગેરેથી સંરક્ષિત થઈને ખૂબ જ વૃદ્ધિ પામ્યા તેઓમા ચોમેર હરીયાળી પ્રસરી ગઈ તેથી તેઓ શ્યામ દેખાવા લાગ્યા હતા જાણે કે પાણીથી ભરેલા મેઘ હોય પાદડા અને પુષ્પોથી યુક્ત હોવા બદલ તેઓની શોભા એકદમ નિરાળી થઈ ગઇ હતી (तएणं णंदे मणियारसेट्ठी पुरच्छिमि डे एगं महं चित्तसभं करावेइ, म

सयसन्निविट्ठ ' अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा=नानाविधमणिमाणिक्यादि निर्मितस्तम्भशतसन्निबद्धा प्रासादीया दर्शनीयाम्, अभिरूपा, प्रतिरूपाम्। तत्र खलु चित्रसभाया बहूनि=बहुविधानि कृष्णानि च ' जाव ' यावत्-नीलानि च, पीतानि च, रक्तानि च, शुक्लानि च, ' कट्ठकम्माणिय ' काष्ठकर्माणि च=काष्ठशिल्पानि ' पोत्थकम्माणि ' पुस्तकर्माणि=पुस्तेषु वस्त्र ताडपत्रकर्गलादिषु कर्माणि=लेखन कर्माणि, चित्रकर्माणि=भित्त्यादिषु चित्ररूपाणि, लेप्यकर्माणि=मृत्तिकासेटिकादिना वल्ल्याद्याकाररचनाविशेषरूपाणि ' गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमाइं ' ग्रन्थिम-वेष्टिमपूरिम-संघातिमानि, तत्र ग्रन्थिमानि-कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानि, वेष्टिमानि=यानि लतादिवेष्टनतो निष्पादितानि तानि पूरिमाणि यानि छिद्रादिपूरणेन निष्पाद्यन्ते कनकादि पुतलिकावत् तानि, संघातिमानि=यानि

सभं करावेइ, अणेगखंभसयसन्निविट्ठं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवपडिरूवं तत्थणं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि चित्तकम्माणि, लेप्पकम्माणि गंथिमवेढिम पूरिम संघाइमाइं उवदंसिज्जमाणाइं २ चिट्ठंति) उस मणिकार श्रेष्ठी नंद ने पूर्व दिशा संबन्धी वनषंड में एक बडी भारी चित्रसभा बनवाई। यह चित्रसभा नाना प्रकार के मणिक्यादि निर्मित हुए सैकडो स्तंभों से युक्त थी। प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एवं प्रतिरूप थी। उस चित्र सभा में उसने अनेकविध कृष्ण, नील, पीत, श्वेत और लाल रंगों से काष्ठ के ऊपर शिल्प कार्य करवाये, वस्त्र कर्म करवाये-वस्त्र, ताड पत्र, कागज आदिकों में लेख लिखवाये, चित्र कर्म करवाये-भित्ति आदिकों के ऊपर नाना प्रकार के चित्र अंकित करवाये, लेप्य कर्म करवाये-

---

સયસન્નિવિટ્ઠ પાસાઇયં દરિસણિજ્જં અભિરૂવં પડિરૂવં તત્થણં બહૂણિ કિણ્હાણિ ય જાવ સુક્કિલ્લાણિ ય કટ્ઠકમ્માણિય પોત્થકમ્માણિ ચિત્તકમ્માણિ લેપ્પકમ્માણિ ગંથિમ-વેઢિમ-પૂરિમસંઘાઇમાઇં ઉવદંસિજ્જમાણાઇં ૨ ચિટ્ઠંતિ) ભણિક૨ શ્રેષ્ઠિ નંદે તે પૂર્વ દિશા તરફના વનષંડમાં એક મહુ ભારે ચિત્રસભા બનાવડાવી તે ચિત્રસભા ઘણી જાતના મણિઓ માણિકો વગેરેથી બનાવવામાં આવેલા એવા સેંકડો થાંભલાઓવાળી હતી તે પ્રાસાદીય દર્શનીય અભિરૂપ અને પ્રતિરૂપ હતી તે ચિત્રસભામાં તેણે ઘણી જાતના કૃષ્ણ નીલ પીત (પીળા), શ્વેત (સફેદ) અને લાલ રંગોથી કાષ્ઠ (લાકડા) ના ઉપર શિલ્પ નામ કરાવડાવ્યા પુસ્તકર્મ કરાવડાવ્યા, વસ્ત્ર, તાડપત્ર કાગળ વગેરે ઉપર લેખો લખાવડાવ્યા-ચિત્રો દોરાવડાવ્યા, ભીંતો વગેરે ઉપર અનેક જાતના ચિત્રો દોરાવડાવ્યા, લેપ્ય કર્મ કરાવડાવ્યા, માટી લાલ માટી વડે વટ્ટી વગેરેની તેમાં

वस्तुसमूहेन निष्पाद्यन्ते लोहकाष्ठादिभीदृश्यादिवत्, तानि, एतानि पशुपक्ष्यादिरूपाणि 'उवदंसिज्जमाणाइ २' उपदर्श्यमानानि २ लोकैरन्योन्य पुनः पुनर्दर्श्यमानानि तिष्ठन्ति=सन्ति। तत्र खलु बहूनि 'आसणाणिय' आसनानि=बेत्रकाष्ठादिनिर्मितानि चतुष्कोणादिरूपाणि शयनानि=शयनयोग्यानि सार्द्धतृतीयहस्तपरिमितानि फलकादीनि, कीदृशानीत्याह-'अत्थुय' इत्यादि-'अत्थुयपच्चत्थुयाइ' आस्तृतप्रत्यास्तृतानि, आस्तृतानि मृदुलवस्त्रादिनाऽऽच्छादितानि, प्रत्यास्तृतानि = तदुपरि पुनःपुनर्दुकूलादिनाऽऽच्छादितानि तिष्ठन्ति=वर्त्तन्ते। पुनश्च-तत्र खलु बहवो नटाश्च=गानन्त्यकर्त्तारः 'णट्टा य' नृत्ता:. केवलमङ्गविक्षेपमात्रेण नर्त्तनशीलाश्च यावत् 'दिन्नभइभत्तवेयणा' दत्तभृतिभक्तवेतना.-दत्ता

मिट्टी, खरियामिट्टी से बहुत आदि की उसमें रचना करवाई। ग्रन्थिम, वेष्टिम, पूरिम, एव सघातिम आदि अनेक खेल भी उस में दिखलाए (तत्थेण बहूणि आसणाणि य, सयणाणि य, अत्थुय पच्चत्थुयाइ चिट्ठति तत्थण बहवे णडाय णट्टा य, जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायकम्मं करेमाणा विहरति) अनेक आसन, शयन, जो आस्तृत प्रत्यास्तृत थे वे भी उसमें रखवाये, वेत्र अथवा काष्ठ आदि से निर्मित चतुष्किकादि रूप-कुर्सी आदिरूप जो होते हैं वे आसन हैं एव साढे तीन हाथ के जो काष्ठ फलक-तख्ता आदिरूप होते हैं कि जिन पर अच्छी तरह सोया जा सकता है वे शयन हैं। इन आसन शयनो के ऊपर मृदुल वस्त्रादि, बिछा हुआ था इसलिये ये आस्तृत थे, और उन मृदुल वस्त्रादिको के ऊपर और भी दूसरा पलग पोस बिछा हुआ था इस लिये वे प्रत्यस्तृत थे। नद सेठ ने उस चित्र सभा में नटो को नर्त्तो को-नृत्य

રચના કરાવડાવી અથિમ, વેષ્ટિમ, પૂરિમ અને સઘાતિમ વગેરે ઘણી જાતની રમતો પણ તેમા દેારાવડાવી (तत्थण बहूणि आसणाणि य, सयणाणि, य, अत्थुय पच्चत्थुयाइ चिट्ठति, तत्थण बहवे णडाय णट्टा य, जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायकम्म करेमाणा बिहरति) ઘણા આસનો, ઘણી પથારીઓ કે જે આસ્તૃત પ્રત્યાસ્તૃત હતા-પણ તેમા મૂકાવડાવી વેત્ર કે લાકડા વગેરેથી બનાવવામાં આવેલી ચતુષ્કિકા વગેરે રૂપ ખુરશી રૂપ જે હોય છે તે આસન છે અને સાડા ત્રણ હાથના જે લાકડાના તખ્તા વગેરે હોય છે કે જેના ઉપર સારી રીતે સૂઇ શકાય-તે શયન છે આ આસનો તેમજ શયનોની ઉપર કોમળ વસ્ત્રો વગેરે પાથરેલા [illegible] યા માટે જ તેઓ આસ્તૃત હતા તે કોમળ વસ્ત્રો વગેરે ઉપર [illegible] પાથરેલુ હતુ એટલા માટે જેઓ પ્રત્યા સ્તૃત હતા નટો, નૃત્ત-નાચનારા માણસો-ભૃતિ,

भृतिः=धान्यादिरूप पारिश्रमिकम्, भक्तम्=ओदनादिरूप वेतन=रूप्यकादिरूप परिश्रमिकम्, एतेषा द्वन्द्वे भृतिभक्तवेतनानि, दत्तानि भृतिभक्तवेतनानि येभ्यस्ते तथोक्ता पुरुषाः 'तालायरकम्म' तालाचरकर्म=नटादि सम्बन्धिक गीतवादित्रादिकर्म कुर्वाणा विहरन्ति=तिष्ठन्ति स्म। अत्र च-राजगृहनिर्गतः=वायुसेवनार्थं राजगृहनगराद् बहिर्निस्सृतः बहुजनो=जनसमुदायः 'जत्थ' यत्र चित्रसभायामागत्य तेषु पूर्वन्यस्तेषु=पूर्वस्थापितेषु आसनशयनेषु कश्चित् 'सन्निसन्नाय' सन्निषण्णः=उपविष्टः, कश्चित् 'सतुयट्टो य' सत्वग्वृत्तश्च शयितः, कश्चित्

कारकों को यावत् भृति, भक्त एव वेतन देकर तालचर कर्म करने वालों को भी नियुक्त कर रखा था। जो गान नृत्य कर्म करते हैं वे नट हैं। जो केवल अग विक्षेप मात्र से ही नृत्य क्रिया प्रदर्शित करते हैं वे नृत्त हैं। धान्यादि रूप पारिश्रमिकका नाम भृति, ओदनादिरूप पारिश्रमिक का नाम भक्त एव नगदी पैसा रूप्य आदि रूप परिश्रमिक का नाम वेतन हैं। नटादि सम्बन्धी गीतनृत्य वादित्र आदि कर्म को जो करते हैं उनका नाम तालचर है। तबले आदि बजाने वाले व्यक्ति तालचरो में हैं। (रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु सन्निसन्नो य सतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहं सुहेण विहरइ) राजगृह नगर से वायु सेवन-घूमने-के लिये निकले हुए अनेक जन उस चित्र सभा में आते उनमें कितनेक जन वहा पूर्वन्यस्त उन आसन शयनों पर बैठ जाते, और कितनेक जन सो जाते, कितनेक जन गीतवादित्रों को सुनते, कितनेक

ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને તેમજ બીજા પણ તાલચર કર્મ કરનારાઓની નીમણુંક કરી હતી જેઓ ગાન-નૃત્ય કર્મ કરે છે તેઓ નટ છે જેઓ ફક્ત અંગ વિક્ષેપ માત્રથી જ નૃત્ય કરે છે તેઓ નૃત્ત છે મહેનતાણાના રૂપમા ધાન્ય વગેરે આપે તે ભૃતિ મહેનતાણાના રૂપમા ઓદન (રાધેલા ચોખા) વગેરે આપે તે ભક્ત અને રોકડા નાણા ચાદી વગેરેના સિક્કા મહેનતાણા બદલ આપે તેને વેતન કહે છે નટ વગેરેની ગીત, નૃત્ય, વાજીત્ર વગેર કર્મ કરનારાઓ 'તાલચર' છે તબલા (નરઘા) વગેરે વગાડનારા માણસો તાલચરો છે (रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु सन्निसन्नो य सतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहं सुहेण विहरइ) રાજગૃહ નગરના હરવા ફરવા માટે નીકળેલા ઘણા માણસો ચિત્રસભામા આવતા અને તેઓમાથી કેટલાક માણસો તો પૂર્વે મૂકાવડાવેલા આસનો શયનો ઉપર બેસી જતા અને કેટલાક સૂઈ જતા, કેટલાક ગીત,

वस्तुसमूहेन निष्पाद्यन्ते लोहकाष्ठादिभीदयादिवत्, तानि, एतानि पशुपक्ष्यादिरूपाणि 'उवदंसिज्जमाणाइं २' उपदर्श्यमानानि २ लोकैरन्योन्यं पुनः पुनरुपदर्श्यमानानि तिष्ठन्ति=सन्ति । तत्थ खलु बहूनि 'आसणाणिय' आसनानि=वेत्रकाष्ठादिनिर्मितानि चतुष्किकादिरूपाणि शयनानि=शयनयोग्यानि सार्द्धतृतीयहस्तपरिमितानि फलकादीनि, कीदृशानीत्याह-'अत्थुय' इत्यादि-'अत्थुयपच्चत्थुयाइं' आस्तृतप्रत्यास्तृतानि, आस्तृतानि मृदुलवस्त्रादिनाऽऽच्छादितानि, पुनस्तदुपरि पुनः पुनर्मृदुलवस्त्रादिनाऽऽच्छादितानि तिष्ठन्ति=वर्त्तन्ते । पुनश्च-तत्र खलु बहवो नटाश्च=गानन्तृत्यकर्त्तारः 'णट्टा य' नृत्ता. केवलमङ्गविक्षेपमात्रेण नर्त्तनशीलाश्च यावत् 'दिन्नभइभत्तवेयणा' दत्तभृतिभक्तवेतना'-दत्ताः

मिट्टी, खरियामिट्टी से चट्टी आदि की उसमें रचना करवाई। ग्रन्थिम, वेष्टिम, पूरिम, एव सघातिम आदि अनेक खेल भी उस में दिखलाए (तत्थणं बहूणि आसणाणि य, सयणाणि य, अत्थुय पच्चत्थुयाइं चिट्ठंति तत्थणं बहवे णडा य णट्टा य, जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायकम्मं करेमाणा विहरंति) अनेक आसन, शयन, जो आस्तृत प्रत्यास्तृत थे वे भी उसमें रखवाये, वेत्र अथवा काष्ठ आदि से निर्मित चतुष्किकादि रूप-कुर्सी आदिरूप जो होते हैं वे आसन हैं एव साढे तीन हाथ के जो काष्ठ फलक-तखता आदिरूप होते हैं कि जिन पर अच्छी तरह सोया जा सकता है वे शयन हैं। इन आसन शयनों के ऊपर मृदुल वस्त्रादि, बिछा हुआ था इसलिये ये आस्तृत थे, और उन मृदुल वस्त्रादिको के ऊपर और भी दूसरा पलग पोस बिछा हुआ था इस लिये वे प्रत्यस्तृत थे। नद सेठ ने उस चित्र सभा में नटो को नर्त्तो को-नृत्य

રચના કરાવડાવી અથિમ, વેષ્ટિમ, પૂરિમ અને સાઘાતિમ વગેરે ઘણી જાતની રમતો પણ તેમા દેારાવડાવી (तत्थणं बहूणि आसणाणि य, सयणाणि, य, अत्थुय पच्चत्थुयाइं चिट्ठंति, तत्थणं बहवे णडाय णट्टा य, जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायकम्म करेमाणा विहरंति) ઘણા આસનો, ઘણી પથારીઓ કે જે આસ્તૃત પ્રત્યાસ્તૃત હતા-પણ તેમા મૂકાવડાવી વેત્ર કે લાકડા વગેરેથી બનાવવામા આવેલી ચતુષ્કિકા વગેરે રૂપ કુરશી રૂપ જે હોય છે તે આસન છે અને સાડા ત્રણ હાથના જે લાંબડાના તખતા વગેરે હોય છે કે જેના ઉપર સારી રીતે સૂઇ શકાય-તે શયન છે આ આસનો તેમજ શયનોની ઉપર કોમળ વસ્ત્રો વગેરે પાથરેલા હતા એટલા માટે જ તેઓ આસ્તૃત હતા તે કોમળ વસ્ત્રો વગેરે ઉપર એક બીજુ વસ્ત્ર પાથરેલુ હતુ એટલા માટે એઓ પ્રત્યાસ્તૃત હતા નદ શેઠે તે ચિત્રસભામા નટો, નૃત્ત-નાચનારા માણસો-નૃતિ,

भृति.=धान्यादिरूप पारिश्रमिकम्, भक्तम्=ओदनादिरूप वेतन=रूप्यकादिरूप परिश्रमिकम्, एतेषा द्वन्द्वे भृतिभक्तवेतनानि, दत्तानि भृतिभक्तवेतनानि येभ्यस्ते तथोक्ता पुरुषाः ' तालायरकम्म ' तालाचरकर्म=नटादि सम्बन्धिक गीतवादित्रादिकर्म कुर्वाणा विहरन्ति=तिष्ठन्ति स्म । अथ च-राजगृहनिर्गतः=वायुसेवनार्थं राजगृहनगराद् बहिर्निस्सृतश्च बहुजनो=जनसमुदाय. ' जत्थ ' यत्र चित्रसभायामागत्य तेषु पूर्वन्यस्तेषु=पूर्वस्थापितेषु आसनशयनेषु कश्चित् ' सनिसण्णः=उपविष्टः, कश्चित् ' सतुयट्टो य ' सत्वग्वृत्तश्च शयितः, कश्चित्

कारकों को यावत् भृति, भक्त एव वेतन देकर तालचर कर्म करने वालों को भी नियुक्त कर रखा था। जो गान नृत्य कर्म करते है वे नट हैं। जो केवल अग विक्षेप मात्र से ही नृत्य क्रिया प्रदर्शित करते हैं वे नृत्त हैं। धान्यादि रूप पारिश्रमिकका नाम भृति, ओदनादिरूप पारिश्रमिक का नाम भक्त एव नगदी पैसा रूप्प आदि रूप परिश्रमिक का नाम वेतन हैं। नटादि सम्बन्धी गीतनृत्य वादित्र आदि कर्म को जो करते ह उनका नाम तालचर है। तबले आदि बजाने वाले व्यक्ति तालाचरो में है। (रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु सनिसन्नो य सतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) राजगृह नगर से वायु सेवन-घूमने-के लिये निकले हुए अनेक जन उस चित्र सभा में आते उनमें कितनेक जन वहा पूर्व-न्यस्त उन आसन शयनों पर बैठ जाते, और कितनेक जन सो जाते, कितनेक जन गीतवादित्रों को सुनते, कितनेक

ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને તેમજ બીજા પણ તાલચર કર્મ કર નારાઓની નીમણુક કરી હતી જેઓ ગાન-નૃત્ય કર્મ કરે છે તેઓ નટ છે જેઓ ફક્ત અંગ વિક્ષેપ માત્રથી જ નૃત્ય કરે છે તેઓ નૃત્ત છે મહેનતાણાના રૂપમા ધાન્ય વગેરે આપે તે ભૃતિ મહેનતાણાના રૂપમા ઓદન (રાધેવા ચોખા) વગેરે આપે તે ભક્ત અને રોકડા નાણા ચાદી વગેરેના સિક્કા મહેનતાણા બદલ આપે તેને વેતન કહે છે નટ વગેરેની ગીત, નૃત્ય, વાજીત્ર વગેર કર્મ કરનારાઓ 'તાલચર' છે તબલા (નરધા) વગેર વગાડનારા માણસો તાલચરો છે (रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु सनिसन्नो य सतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) રાજગૃહ નગરના હરવા ફરવા માટે નીકળેલા ઘણા માણસો ચિત્રસભામા આવતા અને તેઓમાથી કેટલાક માણસો તો પૂર્વે મૂકાવડાવેલા આસનો શયનો ઉપર બેસી જતા અને કેટલાક સૂઇ જતા, કેટલાક ગીત,

'सुणमाणो य' शृण्वतश्च गीतवादित्रादिकं कर्णविषयी कुर्वन् कश्चित् 'पेच्छमाणो य' प्रेक्षमाणश्च=नृत्यादिकं पश्यन् 'साहेमाणो य' कथयश्च=परस्पर कथा कुर्वन्-श्लाघयन् वा सुखसुखेन=सुखपूर्वक सानन्द विहरति=क्रीडतिस्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्–तएणं णंदे दाहिणिल्लेवणसंडे एगं महं महाणससालं करावेइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं४ उवक्खडेंति बहूणं समणमाहणअतिहि किवणवणीमगाणं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति, तएणं णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेगिच्छियसालं करावेइ, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं बाहियाणं य गिलाणाणं य रोगियाणं य दुब्बलाणं य तेइच्छं करेमाणा २ विहरंति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूणं वाहियाणं य रोगियाणय गिलाणाणय दुब्बलाणय ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा२ विहरंति, तएणं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करावेइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाणं य माहणाणय अणाहाणं य गिलाणाणं य रोगियाणय दुब्बलाणय अलंकारियकम्मं करेमाणा२ विहरंति । तएणं तीए णंदाए पोक्ख-

---

जन नृत्यादिकों को देखते और कितनेक जन परस्पर, बैठकर बातचीत करते हुए बडे आनद के साथ अपना समय व्यतीत किया करते ॥सू३॥

વાજીત્રોને સાભળતા, કેટલાક નૃત્યો વગેરે જોતા અને કેટલાક પાસે પાસે બેસીને ગપસપ કરતા સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરતા હતા.

रिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पथिया य करोडिया य कप्पडिया य तणहारा य पत्तहारा य कट्ठहाराय अप्पेगइया पहायंति अप्पेगइया पाणिय पियति, अप्पेगइया पाणिय सव-हति अप्पेगइया विसज्जियसेय जल्लमलपरिस्समनिद्दखुप्पिवासा सुह सुहेणं विहरति । रायगिहविणिग्गओ वि जत्थ बहुजणो किं ते जलरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरय अणेग सउणगणरुयरिभियसकुलेसु सुहसुहेणं अभिरममाणो २ विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—'तएण णदे' इत्यादि । तत खलु नन्दः श्रेष्ठी दाक्षिणात्ये वनषण्डे एका महतीं महानसशाला=पाकशाला कारयति । कीदृशीम् ? इत्याह—'अणेग' इत्यादि—अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा यावत्प्रतिरूपाम् । तत्र खलु बहवः पुरुषा दत्तभृतिभक्तवेतना'=पारिश्रमिकदानेन नियुक्ता पाकर्मकराः विपुलम्

'तएण णदे दाहिणिल्ले'-इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (णदे) नद श्रेष्ठी ने (दाहिणिल्ले) दक्षिणदिशा सबन्धी (वणसंडे) वनषड मे (एग महं) एक बडा भोरी (महाणससाल) रसोइघर-भोजन शाला (करावेइ) बनवाया । (अणेग खभसयसन्निविट्ठ जाव पडिरूव,तत्थ ण बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्त वेयणा विपुल असण४ उवक्खडेंति बहूण समण-माहण-अतिहि-किवणवणीपगाण परिभाएमाणा परिवेसेमाणाविहरति) यह रसोडघर सैकडों खभो के ऊपर खडा किया गया था। बडा ही रमणीय था । इस में अनेक पुरुष रसोई बनाने का काम करने के लिये नियुक्त किये गये थे। उन्हें

'तएण णदे दाहिणिल्ले' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) त्यार पछी (णदे) नद शेठे (दाहिणिल्ले) दक्षिण दिशाना (वणसंडे) वनषडमा (एग महं) એક બહુ વિશાળ (महाणससाल) रसोडघर-भोजनशाળા-(करावेइ) બનાવડાવી (अणेगखभसयसन्निविट्ठ जाव पडिरूव तत्थण बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असणं ४ उवक्खडेंति बहूण समण-माहण-अतिहि-किवणवणिपगाण परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरति) આ ભોજનશાળા સેકડો થાભલાઓની હતી તે ખૂબ જ રમણીય હતી તેમા રસોઈ તૈયાર કરવા માટે ઘણા માણસો નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓને

'सुणमाणो य' शृण्वतश्च गीतवादित्रादिकं कर्णविषयी कुर्वन् कश्चित् 'पेच्छमाणो य' प्रेक्षमाणश्च=नृत्यादिकं पश्यन् 'साहेमाणो य' कथयश्च=परस्पर कथां कुर्वन्-श्लाघयन् वा सुखसुखेन=सुखपूर्वकं सानन्दं विहरति=क्रीडतिस्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं णंदे दाहिणिल्लेवणसंडे एगं महं महाणसंसालं करावेइ अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव पडिरूवं तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं४ उवक्खडेंति बहूणं समणमाहणअतिहि किवणवणीमगाणं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति, तएणं णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेगिच्छियसालं करावेइ, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं बाहियाणं य गिलाणाणं य रोगियाणं य दुब्बलाणं य तेइच्छं करेमाणा २ विहरंति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूणं वाहियाणं य रोगियाणय गिलाणाणय दुब्बलाणय ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा२ विहरंति, तएणं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करावेइ अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाणं य माहणाणय अणाहाणं य गिलाणाणं य रोगियाणय दुब्बलाणय अलंकारियकम्मं करेमाणा२ विहरंति । तएणं तीए णंदाए पोक्ख-

---

जन नृत्यादिकों को देखते और कितनेक जन परस्पर, बैठकर बातचीत करते हुए बडे आनंद के साथ अपना समय व्यतीत किया करते ॥सू३॥

વાજીત્રોને સાભળતા, કેટલાક નૃત્યો વગેરે જોતા અને કેટલાક પાસે પાસે બેસીને ગપસપ કરતા સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરતા હતા.

चिकित्साशालाया, खलु बहवो चिकित्सकाश्च वैद्याः=वैद्यपुत्राश्च, ' जाणुया य ' ज्ञायकाः =चिकित्साशास्त्रमनधीत्यापि वैद्यप्रवृत्तिदर्शनेन व्याधिवारणविधिज्ञाश्च, ज्ञायकपुत्राश्च= चिकित्सावेदिनो सुताश्च, तथाकुशल -स्वकीयतर्कतश्चिकित्सादौ प्रवीणाश्च, कुशलपुत्राः=तेषां पुत्राश्च दत्तभृतिभक्तवेतनाः बहूना ' वाहियाण ' व्याधितानां विशिष्टदुःखजनककुष्ठादिरोगवताम्, 'गिलाणाण य ' ग्लानानां ' रोगिं याण य ' रोगिणां दुर्बलानां=शक्तिहीनानां च ' तेइच्छकरेमाणा ' चिकित्सा= व्याधिप्रतीकारं, कुर्वन्त , विहरन्ति । तस्यां शालायां अन्ये चात्र बहवः पुरुषाः दत्तभृतिभक्तवेतनास्तेषां बहूना व्याधितानां च ग्लानानां च रोगिणां च दुर्ब-

---

न्दर थी। इस में अनेक वैद्य, वैद्यपुत्र ज्ञायक ज्ञायकपुत्र, कुशल, कुशल पुत्र, भृति, भक्त और वेतन देकर नियुक्त किये हुए थे। ये वहा अनेक व्यधियुक्त मनुष्यो की ग्लान मनुष्यो की, रोगी मनुष्यो की, दुर्बल मनुष्यों की, चिकित्सा करते थे। वहा और भी परिचारक मनुष्य भृति भक्त और वेतन देकर नियुक्त किये हुए थे-जो इन व्याधित ग्लान, रोगी और दुर्बल मनुष्यों की औषध, भैषज्य, भक्त और पान से सेवा किया करते थे। चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किये विना ही जो वैद्यों की प्रवृत्ति देख २ कर व्याधि को दूर करने का अनुभव प्राप्त कर लेते हैं ऐसे व्यक्ति यहा " ज्ञायक " शब्द से गृहीत हुए है। जो अपनी तर्कणा के बलपर चिकित्सा आदि मे निपुण होते हैं वे यहा " कुशल " शब्द से गृहीत हुए हैं। विशिष्ट दुःखोत्पादक कुष्ठादिरोग से जो पीडित हो रहेहैं ऐसे मनुष्य यहा व्याधित शब्द के वाच्य हुए है। एक

હતી તેમા ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ કુશલ પુત્રો, ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તે બધા ત્યા ઘણા માદા માણસોની, ગ્લાન માણસોની, રોગીઓની, કમજોર માણસોની ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરતા હતા ત્યા બીજા પણ ઘણા પરિચારકજનો ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ માદા, ગ્લાન, રોગી અને કમજોર માણસોની ઔષધ ભૈષજ્ય, ભક્ત અને પાનથી સેવા કરતા હતા ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ કર્યા વગર જ જે વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્ય કની રીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે ?-આ બધુ જોઇને બીમા રોને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે છે તે માણસ અહીં ' જ્ઞાયક ' ના રૂપમા પ્રયુક્ત થયો છે જે પોતાની તર્કણાશક્તિના આધારે ઈલાજ વગેરેમા નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં ' કુશળ ' શબ્દના રૂપમા ગૃહીત થયા છે વિશિષ્ટ દુઃખો-ત્પાદક કુષ્ઠ વગેરે રોગથી જે પીડાતા રહે છે એવા માણસો અહીં વ્યાધિત

अशनम् ४ चतुर्विधमाहारम् उपस्कुर्वन्ति । बहूना श्रमणब्राह्मणातिथिकृपणवनीपकाना-परिभाजयन्तः २=विभाग कुर्वन्तः, परिवेषयन्तश्च विहरन्ति ।

ततः खलु नन्दो मणिकारश्रेष्ठी 'पच्चत्थिमिल्ले' पाश्चात्य=पश्चिमदिग्भागस्थे वनषण्डे एका महती 'तेगिच्छियसाल' चिकित्साशाला=रोगापनयनशालां ' करावेइ ' कारयति, किंभूताम्-अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा यावत्-प्रतिरूपा, तत्र=तस्या

पारिश्रमिक रूप में भृति, भक्त और वेतन दिया जाता था। ये ४ चारों प्रकार का आशनादि रूप आहार उसमें बनाया करते थे। अनेक श्रमण ब्राह्मण, अतिथि एव वनीपकोंको-याचकोंको यहांसे भोजन दिया जाता था। कोई २ वहीं खाते थे और कोई कोई अपने विभाग को लेजाते थे। (तएण णदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एग महं तेणिच्छियसाल करावेइ, अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं दिवाणं य गिलाणाणं य रोगियाणं य दुब्बलाणं य तेइच्छं करेमाणा २ विहरंति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूणं वाहियाणं य गिलाणाणं य रोगियाणं य दुब्बलाणं य तेइच्छं करेमाणा २ विहरंति, तएणं से मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेणिच्छियसालं करावेइत्ता जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं वाहियाणं य गिलाणाणं य रोगियाणं य दुब्बलाणं य तेइच्छं करेमाणा २ विहरंति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूणं वाहियाणं य गिलाणाणं य रोगियाणं य दुब्बलाणं य ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा २ विहरंति) इस के बाद उस नंद माणिकार श्रेष्ठी ने पश्चिम दिशा सम्बन्धी वनषंड में एक बडी भारी चिकित्साशाला-औषधालय-बन वाई। यह भी सैकडों खंभों के ऊपर खडी की गई थी। बहुत ही सुं

પોતાના મહેનતાણા બદલ ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપવામા આવતું હતુ ચારે જાતના અશન વગેરે આહારો તેમા બનાવતા હતા ઘણા શ્રમણો બ્રાહ્મણો, અતિથિઓ અને વનીપકો-યાચનારાઓ-ને ત્યાથી ભોજન આપવામાં આવતુ હતુ તેઓમાથી કેટલાક તો ત્યા જ જમી લેતા હતા અને કેટલાક પોતાનુ ભાણુ લઈ જતા હતા (तएण णदे मणियार सेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एग महं तेणिच्छियसाल करावेइ, अणेगखंभसयस निविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थण बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ताय जाणुयाय जाणुयपुत्ताय कुसुलाय कुसलपुत्ताय दिन्न भइ भत्तवेयणा बहूण वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छं करे माणा २ विहरति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूण व्वाहियाण य रोगियाण य गिलणाणा य दुब्बलण य ओसहभेसज्जभत्तपाणेण पडियार कम्म करेमाणा२ विहरति) त्यारबाद ते मणिकार शेठे पश्चिम दिशाना वनषंडमा એક બહુ વિશાળ પાયા ઉપર ચિકિત્સા શાળા (દવાખાનુ) બનાવડાવી એ પણ સેકડો થાભલાઓથી ઊભી કરવામા આવી હતી તેમજ મ

चिकित्साशालाया, खलु बहवो चिकित्सकाश्च वैद्याः=वैद्यपुत्राश्च, 'जाणुया य' ज्ञायका =चिकित्साशास्त्रमनधीत्यापि वैद्यप्रदर्शनेन व्याधिवारणविधिज्ञाश्च, ज्ञायकपुत्राश्च= चिकित्सावेदिना सुताश्च, तथाकुशलः-स्वकीयतर्कतश्चिकित्सादौ प्रवीणाश्च, कुशलपुत्राः=तेषां पुत्राश्च दत्तभृतिभक्तवेतना. बहूना 'वाहियाण' व्याधितानां विशिष्टदुःखजनककुष्ठादिरोगवताम्, 'गिलाणाण य' ग्लानानां 'रोगि याण य' रोगिणाणां दुर्बलानां=शक्तिहीनानां च 'तेइच्छकरेमाणा' चिकित्सा= व्याधिप्रतीकार, कुर्वन्त , विहरन्ति । तस्यां शालायां अन्ये चात्र बहव' पुरुषाः दत्तभृतिभक्तवेतनास्तेषां बहूना व्याधितानां च ग्लानानां च रोगिणां च दुर्ब-

---

न्दर थी। इस में अनेक वैद्य, वैद्यपुत्र ज्ञायक ज्ञायकपुत्र, कुशल, कुशल पुत्र, भृति, भक्त और वेतन देकर नियुक्त किये हुए थे। ये वहां अनेक व्याधियुक्त मनुष्यों की ग्लान मनुष्यों की, रोगी मनुष्यों की, दुर्बल मनुष्यों की, चिकित्सा करते थे। वहां और भी परिचारक मनुष्य भृति भक्त और वेतन देकर नियुक्त किये हुए थे-जो इन व्याधित ग्लान, रोगी और दुर्बल मनुष्यों की औषध, भैषज्य, भक्त और पान से सेवा किया करते थे। चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किये विना ही जो वैद्यों की प्रवृत्ति देख २ कर व्याधि को दूर करने का अनुभव प्राप्त कर लेते हैं ऐसे व्यक्ति यहां "ज्ञायक" शब्द से गृहीत हुए है। जो अपनी तर्कणा के बलपर चिकित्सा आदि में निपुण होते हैं वे यहां "कुशल" शब्द से गृहीत हुए हैं। विशिष्ट दुःखोत्पादक कुष्ठादिरोग से जो पीडित हो रहेहैं ऐसे मनुष्य यहां व्याधित शब्द के वाच्य हुए है। एक

હતી તેમાં ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ, કુશલ પુત્રો, ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તે બધા ત્યા ઘણા માદા માણસોની, ગ્લાન માણસોની, રોગીઓની, કમજોર માણસોની ચિકિત્સા (ઉલાજ) કરતા હતા ત્યા બીજા પણ ઘણા પરિચારકજનો ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ માદા, ગ્લાન, રોગી અને કમજોર માણસોની ઔષધ ભૈષજ્ય, ભક્ત અને પાનથી સેવા કરતા હતા ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ કર્યા વગર જ જે વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્યો કેવી રીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે?-આ બધુ જોઇને બીમારોને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે છે તે માણસ અહીં 'જ્ઞાયક' ના રૂપમા પ્રયુક્ત થયેા છે જે પોતાની તર્કણાશક્તિના આધારે ઉલાજ વગેરેમા નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશળ' શબ્દના રૂપમા ગૃહીત થયા છે વિશિષ્ટ દુઃખોત્પાદક કુષ્ઠ વગેરે રોગથી જે પીડાતા રહે છે એવા માણસો અહીં વ્યાધિત

अशनम् ४ चतुर्विधमाहारम् उपस्कुर्वन्ति । बहूना श्रमणब्राह्मणातिथिकृपणवनीपकाना-परिभाजयन्तः २=विभाग कुर्वन्तः, परिवेषयन्तश्च विहरन्ति ।

ततः खलु नन्दो मणिकारश्रेष्ठी 'पच्चत्थिमिल्ले' पाश्चात्ये=पश्चिमदिग्भागस्थे, वनषण्डे एका महती 'तेगिच्छियसाल' चिकित्साशाला=रोगापनयनशाला ' करावेइ ' कारयति, किंभूताम्-अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा यावत्-प्रतिरूपा, तत्र=तस्या

पारिश्रमिक रूप में भृति, भक्त और वेतन दिया जाता था। ये ४ चारों प्रकार का आशनादि रूप आहार उसमें बनाया करते थे। अनेक श्रमण ब्राह्मण, अतिथि एव वनीपकोंको-याचकोको यहासे भोजन दिया जाता था। कोई २ वही खाते थे और कोई कोई अपने विभाग को लेजाते थे। (तएण णदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एग महं तेणिच्छियसाल करावेइ, अणेगखभसयसन्निविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थ ण बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणु य पुत्ता य कुसला य कुसल पुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूण हियाण य गिलाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छ करेमाणा २ विहरति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूण वाहियाण य रोगियाण य गिलाणाण य दुब्बलाण य ओसहभेसज्जभत्तपाणेण पडियारकम्म करेमाणा २ विहरति) इस के बाद उस नद माणिकार श्रेष्ठी ने पश्चिम दिशा सम्बन्धी वनपड मे एक बडी भारी चिकित्साशाला-औषधालय-बनवाई। यह भी सैकडो खभों के ऊपर खडी की गई थी। बहुत ही सु

પોતાના મહેનતાણા બદલ ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપવામા આવતુ હતુ ચારે જાતના અશન વગેરે આહારો તેમા બનાવતા હતા ઘણા શ્રમણો બ્રાહ્મણો, અતિથિઓ અને વનીપકો-યાચનારાઓ-ને ત્યાથી ભોજન આપવામા આવતુ હતુ તેઓમાથી કેટલાક તો ત્યા જ જમી લેતા હતા અને કેટલાક પોતાનુ ભાણુ લઈ જતા હતા (तएण णदे मणियार सेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एग महं तेणिच्छियसाल करावेइ, अणेगखभसयस निविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थण बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ताय जाणुयाय जाणुयपुत्ताय कुसुलाय कुसलपुत्ताय दिन्न भइ भत्तवेयणा बहूण बाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छ करे माणा २ विहरति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवयणा तेसिं बहूण ब्याहियाण य रोगियाण य गिलणाणा च दुब्बलण य ओसहभेसज्जभत्तपाणेण पडियार कम्म करेमाणा२ विहरति) त्यारબાદ તે મણિકાર શેઠે પશ્ચિમ દિશાના વનષડમા એક બહુ વિશાળ પાયા ઉપર ચિકિત્સા શાળા (દવાખાનુ) બનાવડાવી એ પણ સેકડો થાભલાઓથી ઊભી કરવામા આવી હતી તેમજ ખૂબ

चिकित्साशालाया, सन्तु बहवो चिकित्सकाश्च वैद्याः=वैद्यपुत्राश्च, 'जाणुया य' ज्ञायकाः=चिकित्साशास्त्रमनधीत्यापि वैद्यप्रदर्शनेन व्याधिप्रशमनविधिज्ञाश्च, ज्ञायकपुत्राश्च= चिकित्सावेदिना सुताश्च, तथाकुशलाः-स्वकीयतर्कणाचिकित्सादौ प्रवीणाश्च, कुशलपुत्राः=तेषां पुत्राश्च दत्तभृतिभक्तवेतनाः बहूना 'वाहियाण' व्याधितानां विशिष्टदुःखजनककुष्ठादिरोगवतां 'गिलाणाग य' ग्लानानां 'रोगि याण य' रोगिणां दुर्बलानां=शक्तिहीनानां च 'तेइच्छकरेमाणा' चिकित्सा= व्याधिप्रतीकारं, कुर्वन्त , विहरन्ति । तस्यां शालायां अन्ये चात्र बहवः पुरुषाः दत्तभृतिभक्तवेतनास्तेषां बहूना व्याधितानां च ग्लानानां च रोगिणां च दुर्ब-

---

न्दर थी। इस मे अनेक वैद्य, वैद्यपुत्र ज्ञायक ज्ञायकपुत्र, कुशल, कुशल पुत्र, भृति, भक्त और वेतन देकर नियुक्त किये हुए थे। ये वहा अनेक व्याधियुक्त मनुष्यो की ग्लान मनुष्यो की, रोगी मनुष्यो की, दुर्बल मनुष्यों की, चिकित्सा करते थे। वहा और भी परिचारक मनुष्य भृति भक्त और वेतन देकर नियुक्त किये हुए थे-जो इन व्याधित ग्लान, रोगी और दुर्बल मनुष्यों की औषध, भैषज्य, भक्त और पान से सेवा किया करते थे। चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किये विना ही जो वैद्यों की प्रवृत्ति देख २ कर व्याधि को दूर करने का अनुभव प्राप्त कर लेते हैं ऐसे व्यक्ति यहा "ज्ञायक" शब्द से गृहीत हुए है। जो अपनी तर्कणा के बलपर चिकित्सा आदि मे निपुण होते है वे यहा "कुशल" शब्द से गृहीत हुए हैं। विशिष्ट दुःखोत्पादक कुष्ठादिरोग से जो पीडित हो रहे हैं ऐसे मनुष्य यहा व्याधित शब्द के वाच्य हुए है। एक

હતી તેમા ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ, કુશલ પુત્રો, ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તે બધા ત્યા ઘણા માદા માણસોની, ગ્લાન માણસોની, રોગીઓની, કમજોર માણસોની ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરતા હતા ત્યા બીજા પણ ઘણા પરિચારકજનો ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ માદા, ગ્લાન, રોગી અને કમજોર માણસોની ઔષધ ભૈષજ્ય, ભક્ત અને પાનથી સેવા કરતા હતા ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ કર્યા વગર જ જે વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્ય કેવી રીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે?-આ બધુ જોઇને બીમારને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે છે તે માણસ અહી 'જ્ઞાયક' ના રૂપમા પ્રયુક્ત થયો છે જે પોતાની તર્કણાશક્તિના આધારે ચિકિત્સા વગેરેમા નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશળ' શબ્દના રૂપમા ગૃહીત થયા છે વિશિષ્ટ દુઃખોત્પાદક કુષ્ઠ વગેરે રોગથી જે પીડાતા રહે છે એવા માણસો અહીં વ્યાધિત

लाना च 'ओसहभेसज्जभत्तपाणेण' औषध भैषज्यभक्तपानेन=औषधमेकद्रव्य साध्य, भेषज=अनेकद्रव्यसयोगनिष्पन्न भक्तपानम्-आहारः, पानम्=पानीय, तेन, 'पडियारकम्मं' प्रतिचारकर्म=सेवारूप कर्म कुर्वन्तो विहरन्ति।

ततस्तदनन्तर खलु नन्दः नन्दनामामणिकारश्रेष्ठी, 'उत्तरिल्ले' उत्तरीये वनषण्डे एकां महतीं 'अलकारियसभं' अलकारिकसभा=नापितकर्मशाला कारयति, कीदृशीम् ? अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा यावत्-प्रतिरूपाम्, तत्र तस्या नापितकर्मशालाया बहवोऽलङ्कारिक पुरुषा'=नापिताः, दत्तभृतिभक्तवेतनाः बहूनां

द्रव्य साध्य द्वाका नाम औषध है और जो अनेक दवाओंके सयोगसे दवाई तैयार की जाती है वह भैषज्य है (तएण णदे उत्तरिल्ले वणसडे एग महं अलकारियसभं करावेइ अणेगखभसय सन्निविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थ बहवे अलकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूण समणाण य माहणाण य अगाहाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य अलकारिय कम्म करेमाणा२ विहरति तएण तीए नदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पथिया य पहियाय करोडिया य कप्पडिया य तणहारा य पत्तहारा य कट्ठहारा य अप्पेगइया ण्हायति, अप्पेगइया पाणिय पियति, अप्पेगइया पाणिय सवहति, अप्पेगइया विसज्जिय से य जल्लमल परिस्समनिद्द खुप्पिवासा सुह सुहेण विहरति) इस के बाद उस मणिकार श्रेष्ठी नद ने उत्तर दिशा सबन्धी वनषड मे एक बड़ी भारी नापित कर्म शाला बनवाई। यह भी सैकडों खभो से निर्मित्त की गई

શબ્દથી ગૃહીત થયેલા છે એક દ્રવ્ય-સાધ્ય દવાનુ નામ ઔષધ' છે અને જે અનેક (ઘણી) દવાઓના મિશ્રણથી તૈયાર કરવામા આવે છે તે ભૈષજ્ય છે (तएण णंदे उत्तरिल्ले वणसडे एग महं अलकारियसभं करावेइ अणेगखभसय सन्निविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थण बहवे अलकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूण समणाण य, माहणाण य, अणाहाण य, गिलाणाण य, रोगियाण य, दुब्बलाण य, अलकारियकम्म करेमाणा २ विहरति तएण तीए नदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पथिया य, वहिया य करोडीया य कप्पडिया य तणहारा य, पत्तहारा य कट्ठहारा य अप्पेगइया ण्हायति, अप्पेगइया पाणिय पियति अप्पेगइया पाणिय सवहति, अप्पेगइया विसज्जिय से य जल्लमलपरिसमनिद्द खुप्पिवासा सुह सुहेण विहरति) ત્યારપછી તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદે ઉત્તર દિશાના વનષડમા એક વિશાળ નાપિત કર્મશાળા (હજામ શાળા) બનાવડાવી તે પણ સેકડો થાભલાઓ ઉપર બાધવામા આવી હતી જોવામા તે ખૂબ જ

श्रमणाना च ब्राह्मणाना च सनाथाना च ग्लानाना च रोगिणाना च दुर्बलाना चालङ्कारिककर्म कुर्वन्त. २ विहरन्ति ।

ततस्तदनन्तर खलु तस्या नन्दाया पुष्करिण्या बहवः सनाथाश्च अनाथाश्च पान्थिकाश्च पथिकाश्च करोटिकाश्च कार्पटिकाश्च तृणहारकाश्च पत्रहारकाश्च काष्ठहारकाश्च 'अप्पेगइया' अप्येकके-केचन, 'ण्हायंति' स्नान्ति=स्नान कुर्वन्ति, अप्येकका:-पानीय पिबन्ति, अप्येककाः-पानीय संवहन्ति, भरन्ति, अप्येककाः= केचन 'विसज्जियसेयजल्लमलपरिस्समनिद्दखुप्पिवासा' विर्जितस्वेदजल्लमल्लपरिश्रमनिद्राक्षुत्पिपासा विसर्जिता अपनीता दूरीकृता स्वेदजल्लमलरूपा शरीर मलास्तथापरिश्रमनिद्राबुभुक्षापिपासाश्च यैस्ते तथाविधा मनुष्याः 'सुह सुहेण' सुख सुखेन अतिसुखेन विहरन्ति । 'किंते' किमिति तद्वर्ण्यते-राजगृहविनि

थी। देखने मे बडी सुहावनी थी। इस मे अनेक नापित (नाई) भृति भक्त एव वेतन देकर नियुक्त किये गये थे। ये वहा अनेक श्रमणों के ब्राह्मणों के, सनाथ अनाथ जनो के, ग्लानो के, रोगियों के एव दुर्बलों के बाल बनाया करते थे। उस नदा पुष्करिणी में कितनेक सनाथ कितनेक पान्थिक, कितनेक पथिक, कितनेक करोटिक, कितनेक कार्पटिक, कितनेक तृण हारक-घास ढोने वाले कितनेक पत्र हारक कितनेक कष्ठ हारक-लकडहारे-स्नान करते पानी पिया करते और कितनेक उस में से पानी भरा करते। कितनेक स्वेद, जल मल रूप शरीर के मैल को उस के जल से दूर करते और कितनेक परिश्रम, निद्रा बुभुक्षा एव पिपासा को उस वापिका के सहारे से शात किया करते। इस तरह अनेक जन उस पुष्करिणी से बहुत आनदित रहते। (रायगिह विणि

મનોજ્ઞ લાગતી હતી તેમા ઘણા નાપતો (હજામો) ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ ત્યા ઘણા શ્રમણોના, બ્રાહ્મણોના, સનાથ તેમજ અનાથજનોના, ગ્લાનોના, રોગીઓના અને દુર્બળ માણસોના વાળ કાપતા હતા તે નદા પુષ્કિરિણી (વાવ) મા કેટલાક સનાથ, કેટલાક પાથિક, કેટલાક પથિક, કેટલાક કરોટિક, કેટલાક કાર્પટિક, કેટલાક તૃણહારક (ચારના ભારાઓ ઉચકનારા) કેટલાક પત્રહારક કેટલાક કાષ્ઠહારક, (લાકડા વગેરે વેચવાનો ધધો કરનારા) સ્નાન કરતા હતા, પાણી પીતા હતા અને કેટલાક તો તેમાથી પાણી ભરતા રહેતા હતા કેટલાક માણસો તો સ્વેદ, જળમા ઉપર તરી આવત શરીરના મેલ ને પાણીમાથી બહાર કાઢતા હતા અને બીજા કેટલાક માણસો પરિશ્રમ, નિદ્રા ભૂખ અને તરસ તે પાણી પીને મટાડતા હતા આ રીતે ઘણા માણસો તે પુષ્કરિણીમા આનદ-

लाना च 'ओसहभेसज्जभत्तपाणेण' औषध भैषज्यभक्तपानेन=औषधमेकद्रव्य साध्य, भेषज=अनेकद्रव्यसंयोगनिष्पन्न भक्तपानम्-आहारः, पानम्=पानीय, तेन, 'पडियारकम्मं' प्रतिचारकर्म=सेवारूप कर्म कुर्वन्तो विहरन्ति।

ततस्तदनन्तर खलु नन्दः नन्दनामामणिकारश्रेष्ठी, 'उत्तरिल्ले' उत्तरीये वनषण्डे एका महतीं 'अलंकारियसभं' अलंकारिकसभा=नापितकर्मशाला कारयति, कीदृशीम् ? अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टां यावत्-प्रतिरूपाम्, तत्र तस्यां नापितकर्मशालायां बहवोऽलङ्कारिकपुरुषाः=नापिताः, दत्तभृतिभक्तवेतनाः बहूनां

द्रव्य साध्य दवाका नाम औषध है और जो अनेक दवाओंके संयोगसे दवाई तैयार की जाती है वह भैषज्य है (तएणं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करावेइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाणं य माहणाणं य अणाहाणं य गिलाणाणं य रोगियाणं य दुब्बलाणं य अलंकारियकम्मं करेमाणा२ विहरंति तएणं तीए नंदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पथिया य पहियाय करोडिया य कप्पडिया य तणहारा य पत्तहारा य कट्ठहारा य अप्पेगइया ण्हायंति, अप्पेगइया पाणियं पियंति, अप्पेगइया पाणियं संवहंति, अप्पेगइया विसज्जियं से य जल्लमलपरिस्समनिद्दखुप्पिवासा सुहं सुहेणं विहरंति) इस के बाद उस मणिकार श्रेष्ठी नंद ने उत्तर दिशा संबन्धी वनषंड में एक बडी भारी नापित कर्म शाला बनवाई। यह भी सैकडों खंभो से निर्मित्त की गई

શબ્દથી ગૃહીત થયેલા છે એવું દ્રવ્ય-સાધ્ય દવાનું નામ 'ઔષધ' છે અને જે અનેક (ઘણી) દવાઓના મિશ્રણથી તૈયાર કરવામાં આવે છે તે ભૈષજ્ય છે (तएणं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करावेइ अणेगखंभसय सन्निविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थणं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाणं य, माहणाणं य, अणाहाणं य, गिलाणाणं य, रोगियाणं य, दुब्बलाणं य, अलंकारियकम्मं करेमाणा २ विहरंति तएणं तीए नंदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य, वहिया य करोडीया य कप्पडिया य तणहारा य, पत्तहारा य कट्ठहारा य अप्पेगइया ण्हायंति, अप्पेगइया पाणियं पियंति अप्पेगइया पाणियं संवहंति, अप्पेगइया विसज्जियं से य जल्लमलपरिसमनिद्दखुप्पिवासा सुहं सुहेणं विहरंति) ત્યારપછી તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નંદે ઉત્તર દિશાના વનષંડમાં એક વિશાળ નાપિત કર્મશાળા (હજામ શાળા) બનાવડાવી તે પણ સેંકડો થાંભલાઓ ઉપર બાંધવામાં આવી હતી જોવામાં તે ખૂબ જ

य सयणेसु य सन्निसन्नो य सतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहसुहेणं विहरइ, त धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे लोए। सुलद्धे माणुस्सए जम्म-जीवियफले नदस्स मणियारस्स, तएणं रायगिहे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया। णदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहसुहेणं विहरइ। तएण से णंदे मणियारे बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहयकलयगंपिव समूसियरोमकूवे पर सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—' तएण णदाए ' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु नन्दाया पुष्करिण्या बहुजनः ' ण्हायमाणो य ' स्नान कुर्वन् ' पीयमाणोय ' पिबन् पानीय च संवहन्

' तएण णदाए पोक्खरिणीए ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (णदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणा य पियमाणो य पाणियच संवहमाणो य बहुजणो अण्णमण्ण एव वयासी-धण्णे ण देवाणुप्पिया। णदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले जस्सण इमेयारूव णदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जिस्साणं पुरत्थिमिल्ले त चेव सव्व चउसु वि वणसडेसु जाव रायगिह विणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य सतुयट्टो य पेच्छमाणा य सोहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) उस नदा पुष्करिणी में स्नान करने वाला पानी पीनेवाला और उस मे से पानी

' तएणं णदाए पोक्खरिणीए ' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यार्णाह (णदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणो य, पियमाणो य पाणिय च सवहमाणो य बहुजणो अण्णमण्ण एव वयासी धण्णे ण देवानुप्पिया! णदे मणियारसेट्ठी कयत्थ जाव जम्मजीविफले जस्सण इमेयारूव णदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जिस्साण पुरत्थिमिल्ले त चेव सव्व चउसु वि वणसडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य सतुयट्टो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) ते नद्दा पुष्करिणी (वाव) मा स्नान करनार, पाणी पीनार, अने तेमाथी पाणी भरनार, दरेक दरेक माणस परस्पर आ प्रमाणे वातो करवा लाग्या के हे भाइ! मणियार

गतोऽपि यत्र बहुजनः ' जलरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरयअणेग सउणगणरुयरिभितसकलेसु ' जलरमणविविधमज्जन कदलीलतागृहकृतकुसुमशस्तरजोऽनेकशकुनगणरुतरिभितसकुलेषु=तत्र जलरमणैः=जलक्रीडादिभिः, विविधमज्जनैः=बहुविधैः स्नानैः, कदलीना लताना च गृहैः कुसुमशस्तरजोभिः=कुसुमाना पुष्पाणा, शस्तै =सुगन्धयुक्तैः, रजोभिः=परागैश्च, अनेकशकुनगणरुतै.= बहुविधपक्षिगणाना रुतै =शब्दैश्च, रुतै कीदृशैरित्याह=रिभितै स्वरयुक्तै =मधुरैरित्यर्थः, सकुलेषु=युक्तेषु वनषण्डेषु, सुख सुखेनाभिरममाण २ विहरति । सू०४॥

मूलम्-तएणं पांदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणिय च संवहमाणो य अन्नमन्न एव वयासी-धण्णे ण देवाणुप्पिया ! णदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले जस्सणं इमेयारूवा णंदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जिस्सा णं पुरत्थिमिल्ले त चेव सव्व चउसु वि वणसडेसु जाव रायगिहे विणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु

गओ वि जत्थ बहुजणो किं ते जलरमण विविहमज्जणकयलिलया घरय कुसुम सत्थरय अणेगअभिरममाणो २ विहरइ) और अधिक क्या कहें-राजगृह नगर से बाहिर निकले हुए प्राय सभी जन विविध प्रकार की जल क्रीडाओं से नाना प्रकार के मज्जनो से, कदली और लताओं के घरों से, पुष्पो की सुगधित रज से, और अनेक विधपक्षी गणों के मधुर शब्दो से युक्त इन वनषडों मे आनद से इठलाते हुए विचरण किया करते थे । सूत्र ॥ ४ ॥

પૂર્વે પોતાનો વખત ગાળતા હતા (रायगिहविणिग्गओ वि जत्थ बहुजणो किं ते जलरमणविविहमज्जणकयलिलया घरय कुसुम सत्थरय अणेगसउणगणरुयरिभिय सकुलेसु सुह सुहेण अभिरममाणो२ विहरइ) અને બીજુ તો વધારે શુ કહીએ રાજગૃહ નગરની બહાર આવનારા ઘણા માણસો ઘણી જાતની જળ-ક્રીડાઓ અને ઘણી જાતના મજ્જનો (સ્નાન) કરીને તેમજ કદલી અને લતાગૃહોથી, પુષ્પોની સુગધિત રજથી અને ઘણા પક્ષીઓના મધુર કલરવથી યુક્ત આ વનષડોમા આનદથી મસ્ત થઈને લહેર કરતા હતા-વિચરણ કરતા હતા "५"

य सयणेसु य सन्निसन्नो य सतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहसुहेण विहरइ, त धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे लोए। सुलद्धे माणुस्सए जम्म-जीवियफले नदस्स मणियारस्स, तएणं रायगिहे सिघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया ! णदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहसुहेणं विहरइ । तएण से णंदे मणियारे बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहय-कलवगंपिव समूसियरोमकूवे पर सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—' तएण णदाए ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु नन्दाया पुष्करिण्यां बहुजनः ' ण्हायमाणो य ' स्नान कुर्वन् ' पीयमाणोय ' पिबन् पानीय च संवह

' तएण णदाए पोक्खरिणीए ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (णदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणा य पियमाणो य पाणियच सवहमाणो य बहुजणो अण्णमण्ण एव वयासी-धण्णे ण देवाणुप्पिया ! णदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले जस्सण इमेयारूवा णदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जिस्साण पुरत्थिमिल्ले त चेव सव्व चउसु वि वणसडेसु जाव रायगिह विणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य सतुयट्टो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) उस नदा पुष्करिणी में स्नान करने वाला पानी पीनेवाला और उस मे से पानी

' तएणं णदाए पोक्खरिणीए ' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारबाद (णदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणो य, पियमाणो य पाणिय च सवहमाणो य बहुजणो अण्णमण्ण एव वयासी धण्णे ण देवानुप्रिया ! णदे मणियारसेट्ठी कयत्थ जाव जम्मजीवि फले जस्सण इमेयारूव णदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जिस्साण पुरत्थिमिल्ले त चेव सव्व चउसु वि वणसडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य सतुयट्टो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) ते नही पुष्करिणी (वाव) मा स्नान કરનાર, પાણી પીનાર, અને તેમાથી પાણી ભરનાર, દરેક દરેક માણસ પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા કે હે લાઇ ! મણિયાર

मानः=घटादिभिर्नयन् चान्योन्यमेवमवादीत्-धन्यः खलु हे देवानुप्रियाः नन्दो मणिकारश्रेष्ठी कृतार्थो यावत्-सुलब्धजन्मजीवितफल, यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दा=नन्दानाम्नी, पुष्करिणी चतुष्कोणा यावत् प्रतिरूपा वर्तते 'जिस्साण' यस्या खलु पुष्करिण्याः पौरस्त्ये तदेव सर्वं चतुर्ष्वपि वनषण्डेषु यावत्-राजगृह-विनिर्गतो यत्र बहुजन आसनेषु च शयनेषु च सन्निषण्णः=सम्यक्प्रकारेणोपविष्टश्च 'सन्नियट्टो' सत्वग्वृत्त.=शयित' कृतपार्श्वपरिवर्तनश्च, 'पेच्छमाण' प्रेक्षमाणः वनषण्डश्रिय पश्यन् 'साहेमाणो' कथयन्=तद्विषयककथा कुर्वन् श्लाघयन् वा सुख सुखेन=अतिसुखेन विहरति। तत्-तस्माद् धन्यः कृतार्थ कृतपुण्यः कृतानन्दो नन्दमणिकारश्रेष्ठीलोके सुलब्ध मानुष्यकजन्मजीवितफल यस्य नन्दस्य मणिका

भरने वाला प्रत्येक जन आपस में इस प्रकार से बात चीत किया करता कि हे भाई! मणिकार श्रेष्ठी नद को धन्यवाद है। वह कृतार्थ हो गया। उसने अपने जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह से पा लिया कि जिसमे यह चारकोनों वाली यावत् प्रतिरूप नदा नाम की सुन्दर वापिका बनवाई है। और उसके चारों ओर चार वनखड बनवाये हैं। पूर्व दिशा सबन्धी वनषड मे एक विशाल चित्रसभा बनवाई है इत्यादि रूप से पहिले का कहा गया सब सबन्ध यहाँ समझ लेना चाहिये। इन चार वनषडोमें यावत् राजगृह नगरसे निर्गत प्रत्येक जन बिछे हुए आसनो पर शयनो पर बैठ कर, लेट कर, वनषड की शोभा का निरीक्षण करता हुआ, तद्विषयक कथा-वार्ता-करता हुआ बड़े आनद के साथ विचरण करता है। (त धन्ने कयत्थेकयपुन्ने कयाणंदे लोए! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नदस्स मणियारस्स तएण

શ્રેષ્ઠી નદને ધન્યવાદ છે તે કૃતાર્થ થઈ ગયેા છે તેણે પેાતાના જન્મ જીવ નનુ ફળ સારી રીતે મેળવી લીધુ છે કેમકે તેણે આ ચાર ખૂણાઓવાળી પ્રતિરૂપ વગેરે ગુણેાથી યુક્ત એવી નદા નામે રમ્ય વાવ બનાવડાવી છે અને વાવને ચારે બાજુએ ચાર વનષડેા બનાવડાવ્યા છે પૂર્વ દિશા તરફના વન ષડમા એક વિશાળ ચિત્રસભા બનાવડાવી છે, વગેરે પહેલાની જેમજ અહીં સમજી લેવુ જોઈએ એ ચારે વનષડેામા રાજગૃહ નગરથી આવીને માણુસેા આસનેા તેમજ શયનેા ઉપર બેસીને, સૂઈને અને વનષડની શેાભાને જોતાં, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-(વનષડ સબધી વખાણેા) એટલે કે ચર્ચાઓ કરતા સુખેથી વિચરણ કરતા રહે છે (त धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे लोए! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नदस्स मणियारस्स तएण रायगिहे सिंघा ङग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ धन्नेणं देवाणुप्पिया! जे

रस्य श्रेष्ठिनः, अत्र सम्बन्धसामान्ये षष्ठी । एव राजगृहनिर्गतोबहुजनस्तत्रस्थितो वदतीत्यर्थ । ततस्तदनन्तर खलु राजगृहे नगरे ' सिंघाडग जाव बहुजणो ' शृङ्गाटकादियावन्महापथपथेषु बहुजन', अन्योन्यस्य=परस्पर, एवमाख्याति, भाषते, प्रज्ञापयति, प्ररूपयति । किमाख्यातीत्याह-हे देवानुप्रिय ! धन्य. खलु नन्दो मणिकारः 'सो चेव गमओ' स एव गमक =अत्र पूर्वोक्त एव पाठो वाच्य , कृतार्थ कृतपुण्य , यावत्-सुलब्ध जन्मजीवितफल, यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दा पुष्करिणी चतुष्कोणा यावत् प्रतिरूपा वर्तते, यावत्-बहुजन.-सुखसुखेन विहरति । ततः

रायगिहे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ धन्ने ण देवाणुप्पिया ! णदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुह सुहेणं विहरइ, तएण से णदे मणियारे बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहयकलंब पिव समूसिय रोमकूवे पर साया सोक्खमणुभवमाणे विहरइ) इस लिये नद मणिकार श्रेष्ठी विशेष रूप से धन्य वादार्ह है । विशिष्ट पुण्यशाली है । और विशिष्ट आनद का भोक्ता है । इस लोक में मनुष्य जन्म और जीवन का फल इस ने प्राप्त कर लिया है । इसी तरह की राजगृह नगर के शृगाटक आदि महा मार्गों पर खड़े होकर अनेक जन परस्पर में बात चीत किया करते, परस्पर में सभाषण करते, प्रज्ञापना करते और प्ररूपणा करते रहते-वे कहते-हे भाई! नद मणिकार श्रेष्ठी को धन्यवाद हैं, वह कृतार्थ है, कृत पुण्य है । उसी ने अपने मनुष्य भव सबधी जन्म और जीवन को पा लिया है-जिस ने यह इतनी सुन्दर चार कोन वाली नदा पुष्करिणी बनवाई है । जहा अनेक जन सुख पूर्वक विचरण करता है । इत्यादि पहिले का

मणियारे सोचेव गमओ जाव सुह सुहेण विहरइ, तएण से णदे मणियारे बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहयकलंब पिव समूसिय रोमकूवे पर साया सोक्खमणुभवमाणे विहरइ) એથી નદ મણિયાર ખરેખર વિશેષ ધન્યવાદને યોગ્ય છે તે વિશિષ્ટ પુણ્યશાળી છે અને વિશિષ્ટ આનદનો ઉપભોગ કરનાર છે આ લોકમા મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનુ ફળ તેણે સપૂર્ણપણે મેળવી લીધુ છે આ રીતે જ રાજગૃહ નગરના શૃગાટક વગેરે રાજમાર્ગો ઉપર ઊભા રહીને ઘણા માણસો પરસ્પર વતો કરતા હતા સભાષણ કરતા હતા, પ્રજ્ઞાપના કરતા હતા અને પ્રરૂપણા કર્યા કરતા હતા તેઓ કહેતા કે હે ભાઇ ! નદ મણિકાર શેઠને ધન્ય છે, તે ખરેખર કૃતાર્થ મનુષ્યભવ સબધી જન્મ અને જીવનને સફળ બનાવ્યા છે તેણે કેટલી સરસ નદા નામે ચાર ખૂણાવાળી વાવ બધાવી છે ત્યા ઘણા માણસો સુખેથી

मानः=घटादिभिर्नयन् चान्योन्यमेवमवादीत्-धन्यः खलु हे देवानुप्रियाः नन्दो मणिकारश्रेष्ठी कृतार्थो यावत्-सुलब्धजन्मजीवितफल, यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दा=नन्दानाम्नी, पुष्करिणी चतुष्कोणा यावत् प्रतिरूपा वर्तते 'निस्साण' यस्या खलु पुष्करिण्याः पौरस्त्ये तदेव सर्वं चतुर्ष्वपि वनषण्डेषु यावत्-राजगृह विनिर्गतो यत्र बहुजन आसनेषु च शयनेषु च सन्निषण्णः=सम्यक्प्रकारेणोपविष्टश्च 'सतुयट्टो' सत्वग्वृत्तः=शयितः कृतपार्श्वपरिवर्तनश्च, 'पेच्छमाण' प्रेक्षमाणः वनषण्डश्रिय पश्यन् 'साहेमाणो' कथयन्=तद्विषयकथा कुर्वन् श्लाघयन् वा सुख सुखेन=अतिसुखेन विहरति। तत्-तस्माद् धन्य' कृतार्थ कृतपुण्यः कृतानन्दो नन्दमणिकारश्रेष्ठीलोके सुलब्ध मानुष्यकजन्मजीवितफल यस्य नन्दस्य मणिका

भरने वाला प्रत्येक जन आपस में इस प्रकार से बात चीत किया करता कि हे भाई! मणिकार श्रेष्ठी नद को धन्यवाद है। वह कृतार्थ हो गया। उसने अपने जन्म और जीवनका फल अच्छी तहर से पा लिया कि जिसमे यह चारकोनों वाली यावत् प्रतिरूप नदा नाम की सुन्दर वापिका बनवाई है। और उसके चारों ओर चार वनखड बनवाये हैं। पूर्व दिशा सबन्धी वनषड मे एक विशाल चित्रसभा बनवाई है इत्यादि रूप से पहिले का कहा गया सब सबन्ध यहां समझ लेना चाहिये। इन चार वनषडोमें यावत् राजगृह नगरसे निर्गत प्रत्येक जन बिछे हुए आसनो पर शयनो पर बैठ कर, लेट कर, वनषड की शोभा का निरीक्षण करता हुआ, तद्विषयक कथा-वार्ता-करता हुआ बड़े आनद के साथ विचरण करता है। (त धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे लोए! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नदस्स मणियारस्स तएण

શ્રેષ્ઠી નદને ધન્યવાદ છે તે કૃતાર્થ થઈ ગયેા છે તેણે પેાતાના જન્મ જીવ નનુ ફળ સારી રીતે મેળવી લીધુ છે કેમકે તેણે આ ચાર ખૂણાઓવાળી પ્રતિરૂપ વગેરે ગુણેાથી યુક્ત એવી નદા નામે રમ્ય વાવ બનાવડાવી છે અને વાવને ચારે બાજુએ ચાર વનષડેા બનાવડાવ્યા છે પૂર્વ દિશા તરફના વન ષડમા એક વિશાળ ચિત્રસભા બનાવડાવી છે, વગેરે પહેલાની જેમજ અહીં સમજી લેવુ જોઈએ એ ચારે વનષડેામા રાજગૃહ નગરથી આવીને માણસેા આસનેા તેમજ શયનેા ઉપર બેસીને, સૂઈને અને વનષડની શેાભાને જોતાં, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-(વનષડ સબધી વખાણેા) એટલે કે ચર્ચાઓ કરતા સુખેથી વિચરણ કરતા રહે છે (त धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे लोए। सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नदस्स मणियारस्स तएण रायगिहे सिंघा ङग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ धन्नेण देवाणु ! णंदे

रस्य श्रेष्ठिन., अत्र सम्बन्धसामान्ये षष्ठी । एव राजगृहविनिर्गतोबहुजनस्तत्रस्थितो वदतीत्यर्थ । ततस्तदनन्तर खलु राजगृहे नगरे ' सिंघाडग जाव बहुजणो ' शृङ्गाटकादियावन्महापथपथेषु बहुजन', अन्योन्यस्य=परस्पर, एवमाख्याति, भाषते, प्रज्ञापयति, प्ररूपयति । किमाख्यातीत्याह-हे देवानुप्रिय ! धन्य. खलु नन्दी मणिकार. 'सो चेव गमओ' स एव गमक =अत्र पूर्वोक्त एव पाठो वाच्य , कृतार्थ कृतपुण्यः, यावत्-सुलब्ध जन्मजीवितफल, यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दा पुष्करिणी चतुष्कोणा यावत् प्रतिरूपा वर्तते, यावत्-बहुजन -सुखसुखेन विहरति । ततः

रायगिहे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ धन्ने ण देवाणुप्पिया ! णदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुह सुहेणं विहरइ, तएण से णदे मणियारे बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहयकलंबग पिव समूसिय रोमकूवे पर साया सोक्खमणुभवमाणे विहरइ) इस लिये नद मणिकार श्रेष्ठी विशेष रूप से धन्य वादार्ह है । विशिष्ट पुण्यशाली है । और विशिष्ट आनद का भोक्ता है । इस लोक मे मनुष्य जन्म और जीवन का फल इस ने प्राप्त कर लिया है । इसी तरह की राजगृह नगर के शृगाटक आदि महा मार्गों पर खड़े होकर अनेक जन परस्पर मे बात चीत किया करते, परस्पर में सभाषण करते, प्रज्ञापना करते और प्ररूपणा करते रहते-वे कहते-हे भाई! नद मणिकार श्रेष्ठी को धन्यवाद हैं, वह कृतार्थ है, कृत पुण्य है । उसी ने अपने मनुष्य भव सबधी जन्म और जीवन को पा लिया है-जिस ने यह इतनी सुन्दर चार कोन वाली नदा पुष्करिणी बनवाई है । जहा अनेक जन सुख पूर्वक विचरण करता है । इत्यादि पहिले का

मणियारे सोचेव गमओ जाव सुह सुहेण विहरइ, तएण से णदे मणियारे बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहयकलंबग पिव समूसिय रोमकूवे पर साया सोक्खमणुभवमाणे विहरइ) એથી નદ મણિયાર બરોબર સવિશેષ ધન્યવાદને યોગ્ય છે તે વિશિષ્ટ પુણ્યશાળી છે અને વિશિષ્ટ આનદનો ઉપભોગ કરનાર છે આ લોકમા મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનુ ફળ તેણે સપૂર્ણપણે મેળવી લીધુ છે આ રીતે જ રાજગૃહ નગરના શૃગાટક વગેરે રાજમાર્ગો ઉપર ઊભા રહીને ઘણા માણસો પરસ્પર વતો કરતા હતા સભાષણ કરતા હતા, પ્રજ્ઞાપના કરતા હતા અને પ્રરૂપણા કર્યા કરતા હતા તેઓ કહેતા કે હે ભાઇ ! નદ મણિકાર શેઠને ધન્ય છે, તે બરોબર કૃતાર્થ મનુષ્યભવ સબધી જન્મ અને જીવનને સફળ બનાવ્યા છે તેણે કેટલી સરસ નદા નામે ચાર ખૂણાવાળી વાવ બધાવી છે ત્યા ઘણા માણસો સુખેથી

खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी बहुजनस्यान्तिके एतमर्थंश्रुत्वा हृष्टतुष्टः ' धाराहय-कलयगपिव ' धाराहतकदम्बकमिव=मेघधाराभिराहत यत्कदम्बकुसुम तद्वत्-' समूसियरोमकूवे ' समुच्छ्रितरोमकूपः समुल्लसितरोमवन्त्रः सजातरोमाञ्च इत्यर्थः, परम=उत्कृष्ट ' सायासोक्खमणुभवमाणे ' शातसौख्यमनुभवन्=बहुजनकृत-स्वात्मप्रशसाश्रवणजनित शातगौरवोदयेनानन्दमानानन्दोल्लसितचित्तः, सन् विह रति=आस्तेस्म ॥, सू० ५ ॥

मूलम्—तएणं तस्स नदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नयाकयाई सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया त जहा—" सासे १, कासे २, जरे३, दाहे४, कुच्छिसूले५, भगदरे ६। अरिसा ७, अजीरए८, दिट्ठिमुद्धसूले ९-१० अरोअए ११" ॥१॥ अच्छिवेयणा १२, कन्नवेयणा १३, कडू १४, दउदरे१५, कोढे १६। तएणं से णदे मणियारसेट्ठी सोलसहि रोगायकेहि अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे सिघाडग जाव पहेसु महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एव वदह—एव खलु देवाणुप्पिया ! णंदस्स

सब वक्तव्य यहा लगा लेना चाहिये। मणिकार श्रेष्ठी नद अनेक जनों के मुख से इस अपनी प्रशसा रूप अर्थ को सुनता तो सुन कर बहुत अधिक आनदित एव सतुष्ट बन जाता। मेघ की धारा से आहत कदम्ब पुष्प के समान उस के शरीर भर में रोमांच हो आते। इस तरह अनेक जन कृत अपनी प्रशसा के श्रवण से जनित शातगौरवोदय से अनन्द आनद उल्लसित बना रहता। सूत्र ॥ ५ ॥

વિચરણ કરે છે-વગેરે અહીં પણ પૂર્વવત્ વર્ણન સમજી લેવુ જોઈએ મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નદ ઘણા માણસોના મોથી પોતાના વખાણ સાભળતો ત્યારે બહુ જ આનદિત અને સતુષ્ટ થઈ જતો હતો. મેઘની ધારાઓથી આહત કદમ્બ પુષ્પની જેમ તેનુ શરીર રોમાચિત થઇ જતુ હતુ આ રીતે ઘણા માણસોના મુખેથી પોતાના વખાણ સાભળીને તે શત ગૌરવોદયથી ખૂબ જ આનદમા મગ્ન રહેતો હતો ॥ સૂત્ર " ૫ " ॥

मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलसरोगायका पाउब्भूया तं जहा-
'सासे जाव कोढे' त जो णइच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज-
पुत्तो वा जाणओ वा२ कुसलो वा२ नदस्स मणियारस्स तेसि
च णं सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायंक उवसामेत्तए
तस्स णं देवाणुप्पिया ! मणियारे विउल अत्थसपयणं दलयइ
त्तिकट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसणं घोसेह घोसित्ता एयमाणत्तिय
पच्चप्पिणह, तेहि तहेव पच्चप्पिणति, तएण रायगिहे इमेयारूव
घोसण सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुस-
लपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य कोसगपायहत्थगया य सिलि-
याहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसहभेसज्जहत्थगया य
सएहि२ गिहेहिंतो निक्खमति निक्खमित्ता रायगिहं नयरं
मज्झ मज्झेण जेणेव णदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवा-
गच्छति उवागच्छित्ता णदस्स सरीर पासति, तेसि रोगायकाण
णियाणं पुच्छति णदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहि उव्वलणेहि य
उवट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहिय विरेयणेहि य सेयणेहिय
अवदहणेहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि
य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य
सिरावेढेहि य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य वल्लीहि य
मूलेहि य कदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य
सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छति तेसिं
सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, नो चेव णं
सचाएति उवसामेत्तए, तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो
संचाएंति तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एवमवि रोगायक उव-

सामित्तए ताहे सता तता जाव पडिगया। तएण नदे तेहिं सोलसेहि रोगायंकेहि अभिभूए समाणे णदा पोक्खरणीए मुच्छीए गिद्धे गढिए अज्जोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्धपएसिए अट्टदुहट्टवसट्टे कालमासे काल किच्चा नदाए पोक्खरिणीए दद्दरीए कुच्छिसि दद्दरत्ताए उववन्ने ॥सू०६॥

टीका—'तएण तस्स' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनः, अन्यदा कदाचित्-प्रबलतरशातगौरवजनितकर्मोदयेन शरीरे षोडश रोगातङ्का. तत्र रोगा.=स्वल्पकालस्थायिनो ज्वरादय, आतङ्काः=चिरस्थायिनः कुष्ठादय., प्रादुर्भूताः, तद् यथा—

सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४ कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६।
अरिसा ७ अजीरए ८ दिट्ठिमुद्ध ९-१० सूले अरोअए ११ ॥ १०॥
अच्छिवेयणा १२ कन्नवेयणा १३ कडू १४ दउदरे १५ कोढे १६ ?॥

(१) श्वास =ऊर्ध्वश्वास', (२ कास =श्लेष्मविकार', (३) ज्वरस्ताप, (४)

'तएण तस्स नदस्स' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तस्स नदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया तंजहा-उस मणिकार श्रेष्ठी के शरीर में किसी एक समय ये प्रबलतर शात गौरव जनित कर्म के उदय से १६ रोग और आतङ्क प्रकट हुए-स्वरूप कालतक जो बिमारी शरीर में रहती है-जैसे ज्वर आदि-वे रोग, और जो बीमारी शरीर में चिरस्थायी होकर रहती है जैसे कुष्टादि-वे आतक कहलाते है। वे सोलह ये हैं-१ श्वास -उर्ध्वश्वास, २ कास-खासी, ३ ज्वर-ताप, ४ दाह-दाहज्वर, ५ कुक्षि-

'तएण तस्स नदस्स' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण)त्यारपछी(तस्स नदस्स मणियार सेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया-तं जहा તે મણિકાર શ્રેષ્ઠિના શરીરમા કોઈ એક સમયે પ્રબળતર શાત ગૌ વ જનિત કર્મના ઉદયથી ૧૬રોગો અને આતકો પ્રગટયા થોડા વખત સુધી શરીરમા જે માદગી રહે છે જેમ કે તાવ વગેરે તે રોગ અને જે માદગી શરીરમા કાયમ માટે રહે છે જેમકે કોઢ વગેરે તે આતક કહેવાય છે તે સોળ ના નામ આ પ્રમાણે છે-(૧)શ્વાસ-ઉર્ધ્વ શ્વાસ,(૨)કાસ-ઉધરસ (૩)જવર-

दाहः,=दाहज्वरः, (५) कुक्षिशूल, (६) भगदर', (७) अर्श =गुदाङ्कुररोग, (८) अजीर्ण =आहारस्यापरिणति', (९) दृष्टिमूर्धशूलम्, दृष्टिशूल-नेत्रशूलम् (१०) मूर्धशूल=मस्तकशूलम्, (११) "अरोअए" अरोचक =भोजनादावरुचिः, (१२) अक्षिवेदना(१३)कर्णवेदना (१४)कण्डू =खर्जू', (१५) दकोदर-जलोदर (१६)कुष्ठ।

ततः खलु स नन्दो मणिकार षोडशभीरोगातङ्कैरभिभूतः सन् कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवानुप्रियः! गच्छत खलु यूय राजगृहे शृङ्गाटक यावद्-महापथपथेषु महता महता शब्देनोद्घोषयन्त. २ एव -हे देवानुप्रिया! एव खलु नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिन. शरीरके षोडशरोगा तङ्काः प्रादुर्भूता, तद् यथा श्वासो यावत् कुष्ठ। तत्=तस्माद् य खलु इच्छति हे देवाणुप्रियाः! वैद्यो वा, वैद्यपुत्रो वा, ज्ञायको वा, ज्ञायकपुत्रो वा कुशलो वा, कुशपुत्रो वा, नन्दस्य मणिकारस्य तेषा च खलु षोडशाना रोगातङ्कानामेकमपि

शूल, ६ भगंदर, ७ अर्श-बवासीर ८ अजीर्ण, ९ दृष्टिशूल, १० मस्तक शूल ११ अरोचक-भोजनादि मे रुचि का अभाव, १२ अक्षिवेदना १३ कर्णवेदना १४ खाज १५ जलोदर १६ कुष्ठ (तएण मणियारसेट्ठी णदे सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूए समाणे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एवं वयह-एव खलु देवाणुप्पिया! णदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलसरोगायका पाउब्भूया-त जहा-सासे जाव कोढे' त जो ण इच्छइ देवाणुप्पिया! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणओ वा २ कुसलो वा २ नदस्स मणियारस्स तेसिं च ण सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामेत्तए

તાવ, (૪) દાહ-દાહજ્વર (૫) કુક્ષિશૂલ, (૬) ભગદર, (૭) અર્શ-હરસ, (૮) અજીર્ણ-અપચો (૯) દૃષ્ટિશૂલ (૧૦) મસ્તકશૂલ (૧૧) અરોચક ભોજન વગેરે તરફ અણગમો થવુ, (૧૨) અક્ષિવેદના (૧૩) કર્ણવેદના, (૧૪) ખાજ-ખરજવું, (૧૫) જલોદર (૧૬) કોઢ (तएण मणियारसेट्ठी से णदे सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूए समाणे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एव वयासी, गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एव वयह एव खलु देवाणुप्पिया! णदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलस रोगायका पाउब्भूया-त जहा-सासे जाव कोढे त जो ण इच्छइ देवाणुप्पिया! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणओ वा २ कुसलो वा २ नदस्स मणियारस्स तेसिं च ण सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामेत्तए तस्स ण देवाणुप्पिया!

सामित्तए ताहे सता तता जाव पडिगया। तएण नदे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूए समाणे णदा पोक्खरणीए मुच्छीए गिद्धे गढिए अज्जोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्धपएसिए अट्टदुहट्टवसट्टे कालमासे काल किच्चा नदाए पोक्खरिणीए दद्दरीए कुच्छिसि दद्दरत्ताए उववन्ने ॥सू०६॥

टीका—'तएण तस्स' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनः, अन्यदा कदाचित्-प्रबलतरगातगौरवजनितकर्मोदये। शरीरे षोडश रोगातङ्काः तत्र रोगा=स्वल्पकालस्थायिनो ज्वरादय, आतङ्का=चिरस्थायिनः कुष्ठादय., प्रादुर्भूताः, तद् यथा—

सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४ कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६।
अरिसा ७ अजीरए ८ दिट्ठिमुद्ध ९-१० सूले अरोअए ११ ॥ १०॥
अच्छिवेयणा १२ कन्नवेयणा १३ कडू १४ दउदरे १५ कोढे १६ ?॥

(१) श्वास=ऊर्ध्वश्वासः, (२) कास=श्लेष्मविकारः, (३) ज्वरस्ताप, (४)

'तएण तस्स नदस्स' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तस्स नदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोगायका पाउब्भूया तंजहा-उस मणिकार श्रेष्ठी के शरीर में किसी एक समय ये प्रबलतर शात गौरव जनित कर्म के उदय से १६ रोग और आतङ्क प्रकट हुए-स्वल्प कालतक जो बिमारी शरीर में रहती है-जैसे ज्वर आदि-वे रोग, और जो बीमारी शरीर में चिरस्थायी होकर रहती है जैसे कुष्टादि-वे आतक कहलाते है। वे सोलह ये हैं-१ श्वास -उर्ध्वश्वास, २ कास-खासी, ३ ज्वर-ताप, ४ दाह-दाहज्वर, ५ कुक्षि-

'तएण तस्स नदस्स' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) त्यारपछी(तस्स नन्दस्स मणियार सेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोगायका पाउब्भूया-तं जहा ते मणिकार श्रेष्ठिना शरीरमा कोई એક વખતે પ્રબળતર शात गौ व જનિત કર્મના उदयथी १६रोगो अने आतको प्रगट्या थोडा वખત सुधी शरीरमा જે भादगी रहे छे જેम કે ताप वगेरे ते रोग अने જે भ दगी शरीरमा કાયમ માટે रहे छे જेमके કોઢ वगेरे ते आतक કહેવાય छे ते સોળ ના નામ આ પ્રમાણે छे-(१)श्वास-ઉર્ધ્વ શ્વાસ,(२)કાસ-ઉધરસ (३)જ્વર-

ततस्तदनन्तर खलु राजगृहे नगरे इमामेतद्रूपा घोषणा श्रुत्वा निशम्य बहवो वैद्या यावत् कुशलपुत्रा ' सत्थकोसहत्थगया य ' शस्त्रकोशहस्तगताश्च हस्ते क्षुरादि-शस्त्रभाजनधारकाः, ' कोसगपायहत्थगया य ' कोशकपात्रहस्तगताः चर्ममयोप-करणधारिणः, ' सिलियाहत्थगया य ' शिलिकाहस्तगताः=किराततिक्ताद्यौषध-धारिण ' गुलियाहत्थगया य' गुलिकाहस्तगताश्च हस्ते द्रव्यसयोगनिर्मितवटिका धारिणः, औषधभैषज्यहस्तगताश्च स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो निष्क्रामन्ति=निर्गच्छन्ति, निष्क्रम्य राजगृह मध्यम-ध्येन यत्रैव नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनो गृह तत्रैवोपागच्छन्ति,

कौटुम्बिक लोगो ने उसी के अनुसार वैसी ही घोषणा कर दी-और बाद में आकर नद को इसकी खबर दे दी। (तएण रायगिहे इमेयारूव घोसण सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थको सहत्थ गया य कोसगपायहत्थ गया थि सत्थियाहत्थ गया य गुलिया हत्थ गया य ओसह भेसज्ज हत्थ गया य सएहिं २गिहेहिं तो निक्ख-मति, निक्खमित्ता रायगिह नयर मज्झ मज्झे ण जेणेव नदस्स मणि-यारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति) इस प्रकार की घोषणा सुन कर और उसको विचार कर राजगृह नगर मे अनेक वैद्य, वैद्य पुत्र यावत् कुशल कुशल पुत्र, अपने २ हाथो मे क्षुरादिशस्त्र एव भाजनो को, चर्ममय उपकरणो को किरात तिक्त औषध को गोलियों को, औषध भैषज्य को ले लेकर अपने २ घरो से निकले। और निकल कर राजगृह नगर के बीच से चल कर जहां मणिकार श्रेष्ठी नद का घर था वहा

કૌટુમ્બિક લોકોએ શેઠની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા (ઢંઢેરો) કરી અને ત્યાર પછી નદને તેની ખબર આપી (तएण रायगिहे इमेयारूव घोसण सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जाय, वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थ गया य कोसगपायहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह भेसज्जहत्थगया य सएहिं २ गिहेहिंतो निक्खमति, निक्खमित्ता रायगिह नयर मज्झ मज्झेण जेणेव नदस्स मणियार सेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति) આ રીતે ઘોષણા સાભળીને અને તેના વિશે વિચાર કરીને રાજગૃહ નગરમાથી ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્યપુત્રો, યાવત્ કુશલો અને કુશલપુત્રો પોતપોતાના હાથોમા ક્ષુરા વગેરે શસ્ત્રો અને ભાજનો, ચર્મમય ઉપકરણો એટલે કે ચામડાના સાધનો, કિરાતક (કરિયાતુ) ઔષધોને, ગોળીઓને, ઔષધ ભૈષજ્યને લઇને પોતપોતાના ઘરોથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને રાજગૃહ નગરની વચ્ચે થઇને જ્યા મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નદનુ ઘર હતુ ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता नदस्स

रोगातङ्कमुपसम्पादयितुम् इच्छतीतिपूर्वेण सम्बन्धः, तस्य खलु हे देवानुप्रियाः ! नन्दो मणिकारश्रेष्ठी विपुलम्=बहुलाम्, " अत्थसपय " अर्थसपदं खलु ददाति= दास्यति, इतिकृत्वा=एवमुक्त्वा द्वितीयवारमपि तृतीयवारमपि घोषणां घोषयत। घोषयित्वा एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत, तथैव प्रत्यर्पयन्ति=यथा नन्दमणिकार श्रेष्ठिना कौटुम्बिकपुरुषा आदिष्टास्तथैव ते कृत्वा निवेदयन्ति स्मेत्यर्थः ।

तएणं देवाणुप्पिया ! मणियारे सिट्ठे अत्थसपय दलयइ त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसणं घोसेह) इन १६ प्रकार के रोगातंकों से व्यथित हुए उस मणिकार श्रेष्ठी नंद ने कौटुंबिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उसने उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ-और राजगृह नगर के शृंगाटक आदि बडे २ मार्गों में जोड़ जोड़ से इस प्रकार की घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रियों ! मणिकार श्रेष्ठी नंद के शरीर मे सोलह रोगातंक उत्पन्न हुए हैं-वे श्वास से लगा कर कुष्ठ तक हैं-इस लिये हे देवानुप्रियो ! सुनो-चाहे वैद्य हो या वैद्य पुत्र हो ज्ञायक हो या ज्ञायक पुत्र हो कुशल हो चाहे कुशल पुत्र हो कोई भी क्यों न हो-जो इन १६ प्रकार के रोगातको में से एक भी रोगातंक उपशमित कर देगा-हे देवानुप्रियों उसके लिये मणिकार श्रेष्ठी नंद विपुल मात्रा मे अर्थ सपदा प्रदान करेगा। इस प्रकार की घोषणा को तुम लोग २-३ बार घोषित करना। (घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तें वि तहेव पच्चप्पिणंति) घोषित कर फिर हमें इस की खबर देना। इस प्रकार नंद की आज्ञा प्राप्त कर उन

मणियारे सिट्ठे अत्थसपय दलयइ त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसणं घोसेह) એવા જાતના રોગ અને આતંકોથી પીડાએલા મણિકાર શ્રેષ્ઠી નંદે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેણે તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને રાજગૃહ નગરના શૃંગાટક વગેરે રાજમાર્ગો ઉપર આ પ્રમાણે મોટેથી ઘોષણા કરીને કહો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નંદના શરીરમા સોળ રોગાતંકો ઉત્પન્ન થાય છે તેઓ શ્વાસથી માંડીને કુષ્ઠ સુધી સોળ રોગ અને આતંકોપર્યન્તછે માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો, વૈદ્ય હોય કે વૈદ્યપુત્ર હોય, જ્ઞાયક હોય કે જ્ઞાયકપુત્ર હોય, કુશલ હોય કે કુશલપુત્ર હોય, ગમે તે હોય, જે આ મણિકાર શ્રેષ્ઠિના સોળ રોગ અને આતંકોમાથી એક રોગ અથવા તો એક આતંક પણ મટાડી શકશે હે દેવાનુપ્રિયો ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નંદ તેને પુષ્કળ પ્રમાણમા ધન સંપત્તિ આપશે આ પ્રમાણેની ઘોષણા તમે વાર વાર બે ત્રણ વખત ઘોષિત કરો (घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, ते हि तहेव पच्चपिणंति) ઘોષણા કરીને તમે અમને ખબર આપો આ રીતે નંદની આજ્ઞા તે

ततस्तदनन्तर खलु राजगृहे नगरे इमामेतद्रूपा घोषणा श्रुत्वा निशम्य बहवो वैद्या यावत् कुशलपुत्रा 'सत्थकोसहत्थगया य' शस्त्रकोशहस्तगताश्च हस्ते क्षुरादि-शस्त्रभाजनधारकाः, 'कोसगपायहत्थगया य' कोशकपात्रहस्तगताः चर्ममयोप-करणधारिणः, 'सिलियाहत्थगया य' गिलिकाहस्तगताः=किरातत्तिक्तादौषध-धारिण 'गुलियाहत्थगया य' गुलिकाहस्तगताश्च हस्ते द्रव्यसंयोगनिर्मितवटिका धारिण', औषधभैषज्यहस्तगताश्च स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो निष्क्रामन्ति=निर्गच्छन्ति, निष्क्रम्य राजगृह मध्यमध्येन यत्रैव नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनो गृह तत्रैवोपागच्छन्ति,

कौटुम्बिक लोगो ने उसी के अनुसार वैसी ही घोषणा कर दी-और बाद में आकर नद को इसकी खबर दे दी। (तएण रायगिहे इमेयारूव घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थ गया य कोसगपायहत्थ गया यि सत्थियाहत्थ गया य गुलिया हत्थ गया य ओसह भेसज्ज हत्थ गया य सएहिं २गिहेहिं तो निक्ख-मंति, निक्खमित्ता रायगिह नयर मज्झं मज्झेणं जेणेव नदस्स मणि-यारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति) इस प्रकार की घोषणा सुनकर और उसको विचार कर राजगृह नगर में अनेक वैद्य, वैद्य पुत्र यावत् कुशल कुशल पुत्र, अपने २ हाथों में क्षुरादिशस्त्र एवं भाजनों को, चर्ममय उपकरणों को किरात तिक्त औषध को गोलियों को, औषध भैषज्य को ले लेकर अपने २ घरों से निकले। और निकल कर राजगृह नगर के बीच से चल कर जहाँ मणिकार श्रेष्ठी नद का घर था वहा

કૌટુમ્બિક લોકોએ શેઠની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા (ઢંઢેરો) કરી અને ત્યાર પછી નદને તેની ખબર આપી (तएण रायगिहे इमेयारूव घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जाय, वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थ गया य कोसगपायहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह भेसज्जहत्थगया य सएहिं २ गिहेहिंतो निक्खमंति, निक्खमित्ता रायगिह नयर मज्झ मज्झेण जेणेव नदस्स मणियार सेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति) આ રીતે ઘોષણા સાભળીને અને તેના વિશે વિચાર કરીને રાજગૃહ નગરમાથી ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્યપુત્રો, યાવત્ કુશલો અને કુશલપુત્રો પોતપોતાના હાથોમા ક્ષુરા વગેરે શસ્ત્રો અને ભાજનો, ચર્મમય ઉપકરણો એટલે કે ચામડાના સાધનો, કિરાતક (કરિયાતુ) ઔષધોને, ગોળીઓને, ઔષધ ભષજ્યને લઈને પોતપોતાના ઘરોથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને રાજગૃહ નગરની વચ્ચે થઈને જ્યા મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નદનુ ઘર હતુ ત્યા પહોચ્યા (उवागच्छित्ता नदस्स

उपागत्य नन्दस्य शरीरं पश्यन्ति, दृष्ट्वा ते तेषां रोगातङ्काना 'णियाण' निदानम्-उत्पत्तिकारणं पृच्छन्ति, नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनस्ते वैद्या बहुभि=बहुविधै 'उव्वलणेहि य' उद्वलनैश्च=देहोपलेपनविशेषैश्च, 'उव्वट्टणेहि य' उद्वर्तनैश्च=मलापकर्षकद्रव्यसंयोगविशेषेण शरीरोपमर्दनैश्च, 'सिणेहपाणेहि य' स्नेहपानैश्च=औषधपरिपक्वघृतादिपानैश्च, वमनैश्च, विरेचनैश्च सेचनैश्च=उष्णजलाभिषेकैः 'अव

पहुँचे। (उवागच्छित्ता नदस्स सरीरं पासंति, तेसिं रोयायंकाणं णियाणं पुच्छंति णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं "उव्वलणेहिं य उव्वट्टणेहिं य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य, विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहिं य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहिं य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य, पच्छणाहि य, सिरावेढेहि य तप्पणाहि य, पुढपागेहि य, छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य, कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य, फलेहि य, बीएहि य, सिलियाहि य, गुलियाहि य, ओसहेहि य, भेसज्जेहि य, इच्छंति तेसिं सोलसण्ह रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए) वहां पहुँच कर उन्हों ने नंद सेठ के शरीर को देखा देख कर उन रोगातंकों के निदान को-मूल कारण को-पूछा। बाद में उस मणिकार श्रेष्ठी नंद का उन वैद्यों ने अनेकविध उद्वलनों से देहोपलेपन विशेष से, स्नेहपानों से-औषधियों में पकाये गये घृतादिके पिलाने से, वमन कराने से,

---

सरीरं वासंति तेसिं रोयायंकाणं णियाणं पुच्छंति, णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं उव्वलणेहि य, वमणेहि य, विरेयणेहि य, सेयणेहि य, अवदहणेहि य, अवण्हाणेहि य, अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य, सिरावेहेहि य, तच्छणाहि य, पच्छणाहि य, सिरावेढेहि य, तप्पणाहि य, पुढपागेहि य, छल्लीहि य, वल्लीहि य, मूलेहि य, कंदेहि य, पत्तेहि य, पुप्फेहि य, फलेहिय, बीएहि य, सिलिमाहि य, गुलियाहि य, ओसहेहि य, भेसज्जेहि य, इच्छंति तेसिं सोलसण्ह रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए) ત્યાં જઈને તેઓએ નંદ શ્રેષ્ઠિના શરીરને તપાસ્યું, તપાસીને તે રોગ અને આતંકોના નિદાન (રોગનું મૂળ કારણ) વિશે પૂછપરછ કરી ત્યારબાદ વૈદ્યોએ મણિકાર શ્રેષ્ઠિની ઘણી જાતના ઉદ્વલનોથી-શરીરના લેપ વિશેષોથી, ઉદ્વર્તનોથી-મલાપકર્ષક દ્રવ્ય સંયોગ વિશેષને શરીર ઉપર ચોળવાથી, સ્નેહપાનોથી-ઔષધીઓમા પરિપક્વ થયેલા ઘી વગેરે તે પીવડાવવાથી, વમન (ઊલટી) કરાવવાથી વિરેચન

दहणेहि य ' अनदहनैः दम्भनैः-तप्तलोहकोशादिना शरीरावयवविशेषे दाहकरणैश्च ' अवण्हाणेहि य' अवस्नानैः=शरीरे कण्डूयनादिवारणार्थं तदनुकूलद्रव्यमिश्रितजलस्नानैश्च, ' अणुवासणेहि य ' अनुवासनैः=विरेचनविशेषैः-यन्त्रद्वारेणापानमार्गेण तैलादीनामुदरे प्रवेशनरूपैश्च ' वत्थिकम्मेहि य ' वस्तिकर्मभिः=मलनिर्गमार्थं गुदे वर्त्यादिप्रक्षेपैः, ' निरूहेहि य' 'निरूह '=द्रव्यपक्वतैलप्रयोगेण विरेचनविशेषैश्च ' सिरावेहिहेहि य ' शिरावेधैः=विकृतरुधिरनिस्सारणार्थं नाड़ीवेधैश्च, ' तच्छणाहि य ' तक्षणैः=क्षुरप्रादिना त्वक् छेदनैश्च, ' पच्छणाहि य ' प्रतक्षणैः=क्षुरप्रादिनाहस्तलाघवेन त्वचः प्रतनूकरणैश्च, ' सिरावेढेहि य ' शिरावेष्टैः=नाड़ीवेष्टनैश्च, तप्पणाहि य ' तर्पणैश्च=स्निग्धद्रव्येण शरीरसंवाहनैश्च, ' पुडपागेहि य ' पुटपाकैः=पाकविशेषनिष्पन्नौषधविशेषैश्च,'छल्लीहि य' छल्लीभिश्च=निंबादित्वग्भिः,

---

विरेचन कराने से, उष्णजल से स्नान कराने से तकुआ आदि को अग्नि मे तपा कर उसका शरीर के किसी अवयव विशेष मे डाम देने से अवस्नानों से-खाज-आदि मिटाने के लिये शरीर पर तदनु कूल द्रव्य मिश्रित जल से बार २ स्नान कराने से अनुवासनो से-यन्त्र द्वारा अपान मार्ग से उदर में तैलादिकों के पहुँचाने से, वस्ति कर्मो से-मल को निकालने के लिये गुदा मे वर्त्यादि के प्रवेश कराने से, निरूहों से द्रव्यपक्वतैल के प्रयोग से विरेचन करवाने से, शिरावेध से-विकृत खून को निकालने के लिये शिरा-नस के काट देने से-नाडीवेध से-तक्षण से क्षुरा आदि द्वारा चमड़ी के काट देने से, प्रतक्षण से क्षुरा आदि द्वारा हस्तलाघव पूर्वक चमड़ी के छील देने से, शिरावेष्ट-नाडी वेष्टन से, स्निग्ध द्वारा शरीर की मालिश कराने से, पुटपाक से-पाक विशेष से तैयार की गई औषधियों से, छालो से-निम्ब आदि की

ગરમ પાણીએ સ્નાન કરાવવાથી, લોખંડ વગેરેને અગ્નિમા તપાવીને શરીરના કોઈ વિશેષ અવયવને ડામવાથી અવસ્નાનોથી-ખરજવુ વગેરે મટાડવા માટે શરીર ઉપર તદનુકૂલ દ્રવ્યમિશ્રિત પાણીમા વારવાર સ્નાન કરાવવાથી, અનુવાસનોથી-યત્ર વડે ગુદા-માગથી પેટમા તેલ વગેરે પહોચાડવાથી, વસ્તિકર્મોથી-મળને બહાર કાઢવા માટે ગુદામા વર્ત્યાદિને પ્રવિષ્ટ કરાવવાથી નિરૂહોથી-દ્રવ્યમા પરિપક્વ થયેલા તેલના પ્રયોગથી, વિરેચન કરાવવાથી, શિરાવેધથી ખરાબ લોહીને બહાર કાઢવા માટે શિરા-નસને કાપવાથી-નાડીવેધથી, પ્રતક્ષણથી છરા વગેરેથી બહુ જ કુશળતાથી ચામડીને છોલવાથી, શિરાવેષ્ટથી-નાડી વેષ્ટનથી, સ્નિગ્ધ પદાર્થ વડે શરીરના ઉપર માલીશ કરવાથી, પુટપાકથી-પાક વિશેષથી તૈયાર કરવામા આવેલી ઔષધીઓથી, છાલો (છોડા) થી-નિમ

'वल्लीहि य' वल्लीभीश्च=गडूच्यादि-लताभिश्च, तथा-मूलैश्च, कन्दैश्च पत्रैश्च, पुष्पैश्च फलैश्च, बीजैश्च, शिलिकाभिश्च=चिरायतादिभिः चिरायता इतिप्रसिद्धैरोषधि विशेषैः गुलिकाभिश्च औषधैश्च भैषज्यैश्च इच्छन्ति तेषां षोडशानां रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुम्, किन्तु नो चैव शक्नुवन्त्युपशमयितुम्। ततः खलु ते बहवो वैद्याश्च 'जाहे' यदा नो शक्नुवन्ति तेषां षोडशानां रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुम्, तदा श्रान्ता=श्रमातुराः, तान्ता'=खिन्ना.= परितान्ताः=सर्वथाखिन्नाः रोगातङ्कमपनेतुमसमर्थाः इत्यर्थः यावत्-प्रतिगता.= स्वस्व स्थान गतवन्तः।

ततः खलु नन्दस्तैः षोडशभीरोगातङ्कैश्चाभिभूतः सन् नन्दा पुष्करिण्यां 'मुच्छिए' मूर्च्छितः=मूर्छा प्राप्तः आसक्तः ग्रथित.=बद्धात्मपरिणाम, 'अज्झोववन्ने' अध्युपपन्न.=सर्वथा निरन्तर तद्भावतया तन्मयात्मपरिणामवान् तिर्यग्

अन्त २ छाल से, गुडुच्यादि-गिलोय आदि लताओं से, तथा मूल, कन्द, पत्र, पुष्प, फल, बीज, शिलिका-चिरायता, गोलियों, औषध, भैषज्य से उन सोलह रोगातकों में से एक भी रोग को शात करने की चिकित्सा की। परन्तु वे उसके एक भी रोगातकको उपशमित नहीं कर सके। (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएंति ते सिं सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, ताहे सता तता जाव पडिगया) जब वे समस्त वैद्यादिजन ६, उन १६ सोलह रोगातको में से एक भी रोगातक को शमित कर ने में (शक्य नहीं) समर्थ नही हो सके तब श्रान्त एव तान्त होकर अपने २ घर चले आये। (तएण नंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूए समाणे नदा पोक्खरणिए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्ध

વગેરેની છાલોથી, ગુડુ ન્યાદિ-ગળો વગેરે લતાઓથી તેમજ મૂળ, કંદો, પત્ર, પુષ્પ, ફળ, બી, શિલિકા-ચિરાયતા, ગોળીઓ, ઔષધ, ભૈષજ્યથી તે સોળ રોગ અને આતકોમાથી એક રોગ અને એક આતકને મટાડવા માટે ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરી પણ તે લોકો તેના એકે ય રોગ અને એક ય આતકને પણ મટાડવામા શક્તિમાન થઈ શકયા નહિ, (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएंति तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, ताहे सता जाव पडिगया) જ્યારે બધા વૈદ્યો ૬, તે સોળ રોગાતકોમાથી એકેય રોગ અને આતકને પણ મટાડવામા સમર્થ થઇ શકયા નહિ ત્યારે શ્રાત અને તાત થઇને પોતપોતાને ઘેર પાછાજતા રહ્યા (तएण नं दे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूए समाणे नदा पोक्खरणिए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणि

योनिषु निबद्धायुष्क, बद्धप्रदेशिक' प्रदेशबन्धापेक्षया, अट्टदुहट्टवसट्टे ' आर्त-दुःखार्तिवशार्त्त =आर्त =मनसा दुःखित', दु.खार्त्त =देहेन, वशार्त्त=पुष्करिणीसमासक्तेन्द्रियवशेन तत्सुखवियोगसम्भावनया पीडित.=एतेषा कर्मधारये आर्त्तदुःखार्तिवशार्त्तः=आर्त्त यानोपगतस्त्यर्थ' कालमासे काल कृत्वा नन्दाया पुष्करिण्यां 'ददुरीए कुच्छिंसि' दर्दुर्याः कुक्षौ=मण्डूकीगर्भे 'ददुरत्ताए' दर्दुरतया मण्डूकतया, उपपन्न' सजातः ॥ सू० ६ ॥

मूलम्–तएणं णंदे दद्दुरे गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे२ विहरइ, तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहूजणे पहायमाणो य पियइय पाणिय च सवहमाणो अन्न-

---

पएसिए अट्टदुहट्ट वसट्टे काल मासे काल किच्चा नदाए पोक्खरिणीए ददुरीए कुच्छिंसि ददुरत्ताए उववन्ने) उन सोलह रोगातकोसे अत्यन्त व्यथित हुआ वह नद नदा पुष्करिणी मे मूर्च्छितमति एव अत्यन्त आसक्त मन होता हुआ तन्मय आत्मपरिणामवाला बन गया-सो इस कारण उसने प्रदेश बध की अपेक्षा से तिर्यञ्च आयु का ब ध कर लिया। मन से दु.खित देह से, व्यथित एव पुष्करिणी में समा सक्त अन्त. करण से उसके सुखके वियोग की सभावना करके अत्यन्त पीडित बने हुए अर्थात आर्तध्यान के वशवर्ती हुए उसने मृत्यु के समय देह का परित्याग किया सो मर कर वह उस नदा पुष्करिणी में एक मेंढकी के गर्भ में मेढक की पर्याय से उत्पन्न हो गया। सूत्र ॥ ६ ॥

णहिं, निबद्धाउए बद्धपएसिए अट्टदुट्ठ हट्टवसट्टे कालमासे काल किच्चा नदाए पोक्खरिणीए ददुरीए कुच्छसि ददुरत्ताए उववन्ने) ने।ळ रेाग अने आत-ठेाथी भूम ज કટાળેલેા તે નદ શ્રેષ્ઠિ ના વાવમા મૂર્છિત મતિ એટલે કે અત્યત આસક્ત મનવી તન્મય આત્મપરિણામ યુક્ત થઈ ગયેા એથી તેનું પ્રદેશબ ધની અપેક્ષાએ તિર્યચ આયુનેા બ ધ કરી લીધેા મનથી દુ ખી, શરીરથી વ્યથિત અને પુષ્કરિણી (વાવ) મા આસક્ત અન્ત કરણથી એટલે કે તેના સુખના વિયેાગની સભાવના કરીને ભૂમ જ પીડિત થઈને–આર્તધ્યાન કરતા તેણે મૃત્યુના સમયે દેહ છેાડયેા દેહ છેાડીને નદ શ્રેષ્ઠિ તે નદા પુ ક રિણીમા જ એક દેડકીના ગર્ભમા દેડકાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ ગયેા. સૂત્ર ૬

'वल्लीहि य' वल्लीभीश्च=गडूच्यादि-गुडूच्यादिलताभिश्च, तथा-मूलैश्च, कन्दैश्च पत्रैश्च, पुष्पैश्च फलैश्च, बीजैश्च, शिलिकाभिश्च=चिरायतेतिप्रसिद्धैरोषधि विशेषैः गुलिकाभिश्च औषधैश्च भैषज्यैश्च इच्छन्ति तेषा षोडशाना रोगातङ्काना मेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुं, किन्तु नो चैव शक्नुवन्त्युपशमयितुम्। ततः खलु ते बहवो वैद्याश्च 'जाहे' यदा नो शक्नुवन्ति तेषा षोडशाना रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुम्, तदा श्रान्ता=श्रमातुरा, तान्ता=खिन्ना= परितान्ता:=सर्वथाखिन्नाः रोगातङ्कमपनेतुमसमर्थो इत्यर्थं यावत्-प्रतिगताः= स्वस्व स्थान गतवन्तः।

ततः खलु नन्दस्तैः षोडशभीरोगतङ्कैश्चाभिभूत सन् नन्दा पुष्करिण्या 'मुच्छिए' मूर्च्छितः=मूर्छा प्राप्त. आसक्त ग्रथित.=बद्धात्मपरिणाम, 'अज्झोव वन्ने' अध्युपपन्न.=सर्वथा निरन्तर तद्भावतया तन्मयात्मपरिणामवान् तिर्यग्

अन्त २ छाल से, गुडूच्यादि-गिलोय आदि लताओं से, तथा मूल, कन्द, पत्र, पुष्प, फल, बीज, शिलिका-चिरायता, गोलियों, औषध, भैषज्य से उन सोलह रोगातकों में से एक भी रोग को शात करने की चिकित्सा की। परन्तु वे उसके एक भी रोगातकको उपशमित नहीं कर सके। (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएंति ते सि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, ताहे सता लता जाव पडिगया) जब वे समस्त वैद्यादिजन ६, उन १६ सोलह रोगातको में से एक भी रोगातक को शमित कर ने में (शक्य नहीं) समर्थ नहीं हो सके तब श्रान्त एव तान्त होकर अपने २ घर चले आये। (तएण नंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूए समाणे नदा पोक्खरणिए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे तिरिक्ख जोणिएहिं निबद्धाउए बद्ध

વગેરેની છાલોથી, ગુડુ જ્યાદિ-ગળો વગેરે લતાઓથી તેમજ મૂળ, કંદો, પત્ર, પુષ્પ, ફળ, બી, શિલિકા-ચિરાયતા, ગોળીઓ, ઔષધ, ભૈષજ્યથી તે સોળ રોગ અને આતકોમાથી એક રોગ અને એક આતકને મટાડવા માટે ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરી પણ તે લોકો તેના એકે ય રોગ અને એક ય આતકને પણ મટાડવામા શક્તિમાન થઈ શકયા નહિ, (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएंति तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, ताहे सता जाव पडिगया) જ્યારે બધા વૈદ્યો ૬, તે સોળ રોગાતકોમાથી એકેય રોગ અને આતકને પણ મટાડવામા સમર્થ થઈ શકયા નહિ ત્યારે શ્રાત અને તાત થઇને પોતપોતાને ઘેર પાછાજતા રહ્યા (तएण नं दे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूए समाणे नदा पोक्खरणिए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणि

अभिगिण्हइ-कप्पइ मे जावजीव छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्दणगपीढियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेणं जाव विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—' तएणं नंदे ' इत्यादि, ततः खलु नन्दो दर्दुरो गर्भाद्=गर्भवासाद् विनिर्मुक्तः=निर्गतः सन् उन्मुक्तबालभावः=व्यतीतबालवयस्कः, ' विन्नाय परिणयमित्ते ' विज्ञातपरिणतमात्र दर्दुरजातीयक्रूर्दनादिविज्ञानसमन्वितः, नन्दायाः पुष्करिण्याम् अभिरममाणः २=क्रीडन् २ सुखमुखेन विहरति=कालं यापयतिस्म ।

ततस्तदनन्तरं खलु नन्दायाः पुष्करिण्याः राजगृहविनिर्गतो बहुजनः स्नानं कुर्वन्, जलं पिबन्, पानीयं च संवहमानः, अन्योन्यं=परस्परम् आख्याति-

---

' तएणं णंदे दद्दुरे गब्भाओ ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (णंदे दद्दुरे) वह नंद सेठका जीव दर्दुर (गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भवास से बाहिर निकल कर जब बालभाव से रहित हो गया और उसे दर्दुर जाति का कूदना आदि आ गया-तब वह यौवन अवस्था संपन्न होकर नंदा पुष्करिणी में बार २ क्रीडा करता हुआ सुख पूर्वक अपने समय को व्यतीत करने लगा । (तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवहइ

' तएणं णंदे दद्दुर गब्भाओ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (णंदे दद्दुरे) નંદ શેઠનો જીવ દેડકાના (गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) ગર્ભમાંથી બહાર આવીને જ્યારે મોટો થઈ ગયો એટલે કે બાલ્યપણું વટાવીને જુવાન થઈ ગયો અને બીજા દેડકાની જેમ કૂદવાનું, વગેરે આવડી ગયું ત્યારે તે જુવાન થઈને નંદા પુષ્કરિણીમાં જ વારવાર ક્રીડા કરતા સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરવા લાગ્યો. (तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवहइ

मन्नस्स एवमाइक्खइ४ धन्नेणं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे जस्स णंदे मणियारे जस्स ण इमेयारूवे णंदा पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा । जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले, तएणं तस्स दद्दुरस्स त अभिक्खणं अभिक्खणं बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए५–से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसंतपुव्वे त्तिकट्टु सुभेणं परिणामेणं जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइ सम्मं समागच्छइ, तएणं तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५–एव खलु अहं इहेव रायगिहे नयरे णंदे णाम मणियारे अड्ढ० जाव अपरिभूए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय जाव पडिवन्ने, तएणं अहं अन्नया कयाइ असाहुदंसणेण य जाव मिच्छत्त विपडिवन्ने, तएणं अहं अन्नया कयाई गिम्हकालसमयंसि जाव उपसपज्जित्ताणं विहरामि, एव जहेव चिंता आपुच्छणा नंदा पुक्खरिणी वणसंडा सहाओ त चेव सव्व जाव नंदाए पुक्खरिणीए दद्दुरत्ताए उववन्ने, त अहो णं अहं अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे त सेयं खलु मम सयमेव पुव्वपडिवन्नाइं पचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए, एव संपेहेइ संपेहित्ता पुव्वपडिवन्नाइं पचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं आरुहेइ आरुहित्ता इमेयारूवं अभिग्गह

अभिगिण्हइ-कप्पइ मे जावजीवं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्दणोल्लोलियाहिं य विइं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं जाव विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—' तएणं नंदे ' इत्यादि, ततः खलु नन्दो दर्दुरो गर्भाद्=गर्भवासाद् विनिर्मुक्तः=निर्गतः सन् उन्मुक्तबालभावः=व्यतीतबालत्वयस्कः, ' विन्नायपरिणयमित्ते ' विज्ञातपरिणतमात्रः दर्दुरजातीयकूर्दनादिविज्ञानसमन्वितः, नन्दायाः पुष्करिण्याम् अभिरममाणः २=क्रीडन् २ सुखसुखेन विहरति=कालं यापयतिस्म।

ततस्तदनन्तरं खलु नन्दायाः पुष्करिण्याः राजगृहविनिर्गतो बहुजनः स्नानं कुर्वन्, जलं पिबन्, पानीयं च संवहमानः, अन्योन्यम्=परस्परम् आख्याति-

---

' तएणं णंदे दद्दुरे गब्भाओ ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (णंदे दद्दुरे) वह नंद सेठका जीव दर्दुर (गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भवास से बाहिर निकल कर जब बालभाव से रहित हो गया और उसे दर्दुर जाति को कूदना आदि आ गया-तब वह यौवन अवस्था संपन्न होकर नंदा पुष्करिणी में बार २ क्रीडा करता हुआ सुख पूर्वक अपने समय को व्यतीत करने लगा। (तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवह

' तएणं णंदे दद्दुरे गब्भाओ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (णंदे दद्दुरे) નંદ શેઠનો જીવ દેડકાના (गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) ગર્ભમાંથી બહાર આવીને જ્યારે મોટો થઈ ગયો એટલે કે બચપણ વટાવીને જુવાન થઈ ગયો અને બીજા દેડકાની જેમ કૂદવાનું, વગેરે આવડી ગયું ત્યારે તે જુવાન થઈને નંદા પુષ્કરિણીમાં જ વારવાર ક્રીડા કરતા સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરવા લાગ્યો। (तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवह

आपते भाषते प्रज्ञापयति प्ररूपयति-धन्यः खलु हे देवानुप्रिय ! नन्दो मणिकारश्रेष्ठी यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दापुष्करिणी चतुःकोणा समतीरा यावत् प्रतिरूपा वर्तते, यस्याः खलु नन्दायाः पुष्करिण्या पौरस्त्ये वनषण्डे चित्रसभाऽनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा तथैव चतुर्षु वनषण्डेषु चतस्रः सभा अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टाः सन्ति, यावत् तस्य नन्दमणिकारश्रेष्ठिनः सुलब्धं मानुष्यकं जन्मजीवितफलम् ।

व्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवहमाणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४) उस नदा पुष्करिणी में जब राजगृह नगर के लोग आकर स्नान करते, पानी पीते, उसमें से पानी भरते तो उस समय वे परस्पर में इस प्रकार से बात चीत करते, भाषण करते प्रज्ञापना एव प्ररूपणा करते कि (धन्नेण देवाणुप्पिया ! णदे मणियारे जस्स ण इमेयारूवा णदा पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा) हे देवानुप्रिय ! मणिकार श्रेष्ठी नद को धन्यवाद है कि जिस की यह चतुष्कोण वाली तथा समतीर वाली नदा पुष्करिणी बहुत ही सुरम्य बनी है । (जस्स ण पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीविय फले-तएण तस्स ददुरस्स त अभिक्खण २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए ६) जिस के पूर्व दिशा सबन्धी वनषड मे अनेक सैकडों खभो से विराजित चित्र सभा बनी हुई है । उसी तरह की चारों वनषडों में चारों सभाएँ है । यावत् उस मणिकार नद श्रेष्ठी के मनुष्य

माणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४) નદા વાવમા જ્યારે રાજગૃહ નગરના લોકો આવીને સ્નાન કરતા, પાણી પીતા, તેમાથી પાણી ભરતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરવા માડતા, સભાષણો કરવા માડતા, પ્રજ્ઞાપના અને પ્રરૂપણા કરવા માડતા કે (धन्नेणं देवाणुप्पिया ! णदे मणियारे जस्सण इमेयारूवा णदी पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा) હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નદને ધન્યવાદ છે કારણ કે આ ચાર ખૂણાવાળી તેમજ સરખા કિનારા વાળી નદા વાવ બહુ જ રમ્ય બધાવી છે (जस्सण पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभाअणेग खभ० तहेव चित्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले-तएण तस्स ददुरस्स त अभिक्खण २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए ६) વાવના પૂર્વ દિશાના વનષડમા સે ડો થાભલાઓથી શોભતી ચિત્રસભા બનાવી છે આ પ્રમાણે ચારે ચાર વનષંડોમા ચાર સભાઓ તૈયાર કરાવડાવી છે બરેબર તે મણિકાર નદ શેઠનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવન

ततः खलु तस्य दर्दुरस्य तदभीक्ष्ण=पौनः पुन्येन, बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य, अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूप. आध्यात्मिक आत्मगतोविचारः, यावन्मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत । किं स्वरूप ? इत्याह-' से कहिंमन्ने ' इत्यादि । ननूह मन्ये-कुत्रापि मया अयमेतद्रूप शब्द. 'णिसतपुव्वे ' निशान्तपूर्व. श्रुतपूर्व पूर्वकाले श्रुतआसीत्, इति कृत्वा शुभेन परिणामेन=विशुद्धा-यवसायेन यावत्-जातिस्मरण समुत्पन्नम्, स दर्दुर' ' पूव्वजाइ '=पूर्वजन्मवृत्तान्त सम्यक् समागच्छति = स्मरति । तत खलु तस्य दर्दुरस्यायमेतद्रूप'=वक्ष्यमाणस्वरूप. 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प = स्मरणरूप. 'समुप्प ज्जित्था' समुदपद्यत-सजात., तद् यथा-एव खलु अह इहैव राजगृहे नगरे नन्दो

जन्म और जीवन दोनों ही सफल है । उस ने अपने मनुष्य जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह पा लिया है । इस प्रकार अनेक जनों के मुख से वार २ अपनी प्रशसा सूचक शब्दो को सुनकर और उन्हें हृदय में अवधृत कर उस दर्दुर को यह इस प्रकार का आध्यात्मिक विचार यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(से कहिं मन्ने मए इमे यारूवे सद्दे णिसतपुव्वे त्ति कट्टु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ तएण तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५) मैं मानता हूँ कि मैंने इस प्रकार का यह शब्द पहिले सुना है-इस प्रकार के विचार से उसे विशुद्ध अध्यवसाय के वश से जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । इससे उसने अपने पूर्व जन्म के वृत्तान्त को अच्छी तरह जान लिया । इस के बाद उस दर्दुर को इस प्रकार-वक्ष्यमाण रूप सकल्प उत्पन्न हुआ । (एव खलु अह इहेव

અને સફળ થઈ ગયા છે તેણે પોતાના મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનુ ફળ સારી પેઠે મેળવી લીધુ છે આ રીતે ઘણા માણસોના મુખેથી વારવાર પોતાના વખાણ સાભળીને અને હૃદયમા અવધૃત કરીને દેડકાને આ પ્રમાણેનો આધ્યાત્મિક વિચાર યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે-(से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसतपुव्वे त्तिकट्टु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ तएण तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए) મને એમ થાય છે કે આ શબ્દો પહેલા મે સાભળ્યા છે આ જાતના વિચારોથી તેને વિશુદ્ધ અધ્યવસાયને લીધે જાતિસ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયુ એથી તેણે પોતાના પૂર્વ જન્મની બધી વિગત જાણી લીધી ત્યારબાદ તે દેડકાને આ રીતે વક્ષ્યમાણ રૂપથી આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ્મરણરૂપ સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે (एव खलु अह इहेव रायगिहे नयरे नंदे णाम मणियारे अड्ढे जाव अपरि-

आपते प्रज्ञापयति प्ररूपयति-धन्य. खलु हे देवानुप्रिय ! नन्दो मणिकारश्रेष्ठी यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दापुष्करिणी चतुःकोणा समतीरा यावत् प्रतिरूपा वर्तते, यस्याः खलु नन्दाया. पुष्करिण्या पौरस्त्ये वनषण्डे चित्रसभाऽनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा तथैव चतुर्षु वनषण्डेषु चतस्रः सभा अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा. सन्ति, यावत् तस्य नन्दमणिकारश्रेष्ठिनः सुलब्धं मानुष्यकं जन्मजीवितफलम् ।

व्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवहमाणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४) उस नदा पुष्करिणी में जब राजगृह नगर के लोग आकर स्नान करते, पानी पीते, उसमे से पानी भरते तो उस समय वे परस्पर में इस प्रकार से बात चीत करते, भाषण करते प्रज्ञापना एव प्ररूपणा करते कि (धन्नेणं देवाणुप्पिया ! णंदे मणिआरे जस्स ण इमेयारूवा णंदा पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा) हे देवानुप्रिय ! मणिकार श्रेष्ठी नद को धन्यवाद है कि जिस की यह चतुष्कोण वाली तथा समतीर वाली नदा पुष्करिणी बहुत ही सुरम्य बनी है । (जस्स ण पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले-तएणं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए ६) जिस के पूर्व दिशा सबन्धी वनषड मे अनेक सैकडों खभो से विराजित चित्र सभा बनी हुई है । इसी तरह की चारों वनषडों में चारों सभाएँ है । यावत् उस मणिकार नद श्रेष्टी के मनुष्य

माणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४) નદા વાવમા જ્યારે રાજગૃહ નગરના લોકો આવીને સ્નાન કરતા, પાણી પીતા, તેમાથી પાણી ભરતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરવા માડતા, સભાષણો કરવા માડતા, પ્રજ્ઞાપના અને પ્રરૂપણા કરવા માડતા કે (धन्नेणं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे जस्सणं इमेयारूवा णंदी पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा) હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નદને ધન્યવાદ છે કારણ કે આ ચાર ખૂણાવાળી તેમજ સરખા કિનારા વાળી નદા વાવ બહુ જ રમ્ય બધાવી છે (जस्सणं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभाअणेग खंभ० तहेव चित्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले-तएणं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए ६) વાવના પૂર્વ દિશાના વનષડમા સે ડો થાભલાઓથી શોભતી ચિત્રસભા બનાવી છે આ પ્રમાણે ચારે ચાર વનષડોમા ચાર સભાઓ તૈયાર કરાવડાવી છે ખરેખર તે મણિકાર નદ શેઠનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવન

ततः तलु तस्य दर्दुरस्य तदभीक्ष्ण=पौन. पुन्येन, बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य, अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्यात्मिकः आत्मगतोविचारः, यावन्मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत। किं स्वरूप ? इत्याह-' से कहिमन्ने ' इत्यादि। ननूह मन्ये-कुत्रापि मया अयमेतद्रूप शब्द. 'णिसतपुव्वे ' निशान्तपूर्व. श्रुतपूर्व पूर्वकाले श्रुतआसीत्, इति कृत्वा शुभेन परिणामेन=विशुद्धाध्यवसायेन यावत्-जातिस्मरण समुत्पन्नम्, स दर्दुरः ' पूव्वजाइ '=पूर्वजन्मवृत्तान्त सम्यक् समागच्छति = स्मरति। तत खलु तस्य दर्दुरस्यायमेतद्रूप =वक्ष्यमाणस्वरूप. 'अज्झत्थिए ' आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प = स्मरणरूप' ' समुप्प ज्जित्था' समुदपद्यत-सजात', तद् यथा-एव खलु अह इहैव राजगृहे नगरे नन्दो

जन्म और जीवन दोनो ही सफल है। उस ने अपने मनुष्य जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह पा लिया है। इस प्रकार अनेक जनो के मुख से बार २ अपनी प्रशसा सूचक शब्दो को सुनकर और उन्हें हृदय में अवधृत कर उस दर्दुर को यह इस प्रकार का आध्यात्मिक विचार यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(से कहिं मन्ने मए इमे यारूवे सद्दे णिसत पुव्वे त्ति कट्टु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ तएण तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५) मैं मानता हूँ कि मैंने इस प्रकार का यह शब्द पहिले सुना है-इस प्रकार के विचार से उसे विशुद्ध अध्यवसाय के वश से जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। इससे उसने अपने पूर्व जन्म के वृत्तान्त को अच्छी तरह जान लिया। इस के बाद उस दर्दुर को इस प्रकार-वक्ष्यमाण रूप सकल्प उत्पन्न हुआ। (एव खलु अह इहेव

બને સફળ થઈ ગયા છે તેણે પોતાના મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનુ ફળ સારી પેઠે મેળવી લીધુ છે આ રીતે ઘણા માણસોના મુખેથી વારવાર પોતાના વખાણ સાભળીને અને હૃદયમા અવધૃત કરીને દેડકાને આ પ્રમાણેનો આધ્યાત્મિક વિચાર યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે-(से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसतपुव्वे त्तिकट्टु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ तएण तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए) મને એમ થાય છે કે આ શબ્દો પહેલા મે સાભળ્યા છે આ જાતના વિચારોથી તેને વિશુદ્ધ અધ્યવસાયને લીધે જાતિસ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયુ એથી તેણે પોતાના પૂર્વ જન્મની બધી વિગત જાણી લીધી ત્યારબાદ તે દેડકાને આ રીતે વક્ષ્યમાણ રૂપથી આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ્મરણરૂપ સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે (एवं खलु अह इहेव रायगिहे नयरे णंदे णाम मणियारे अड्ढे जाव अपरि

नाम मणिकार. आढ्यो यावद्परिभूत आसम् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीर' समवसृत, ततः खलु श्रमणस्यभगवतो महावीरस्यान्तिके पञ्चाणुव्रतिक सप्तशिक्षाव्रतिक द्वादशविध गृहिधर्म प्रतिपन्न', तत' खल्वहमन्यदा कदाचिद् असाधुदर्शनेन च यावत्-मिथ्यात्व मिपतिपन्नः,ततः खल्वहमन्यदा कदाचिद् ग्रीष्मकालसमये यावत्-पौषधशालाया पौषधमुपसंपद्य खलु विहरामि, 'एव यथैवचिन्ता, आपृच्छना, नन्दापुष्करिणी, वनषण्टा, सभाः तदेव सर्वम्' तथैव चिन्तादिक दर्दुरेण पूर्वभूवे कृत तथैव तत् सर्वं स्मृत, तद् यथा-मम तत्राष्टमभक्ते

रायगिहे नयरे णदे णाम मणियारे अड्ढे जाव अपरिभूए । तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसढे, तएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय जाव पडिवन्ने) मैं इसी राजगृह नगरमें नद नाम का मणिकार श्रेष्ठी था । विशेष रूपसे धन धान्यादि सपत्ति शाली एव जन मान्य था। उस काल और उस समय में श्रमण भगवान् महावीर वहा आये-सो मैंने उनसे पाच अणुव्रत एवं सात शिक्षाव्रत रूप श्रावक धर्म अगीकार करलिया था । (तएण अह अन्नया कयाई असाहुदसणेणय जाव मिच्छत्त विपडिवन्ने) किसी एक समय असाधु के दर्शन से तथा और भी कई निमित्तो से मैं मिथ्यात्व भाव रूप से परिणत हो गया-(तएण अह अन्नयाकयाई गिम्ह कालसमयसि जाव उवसपज्जित्ताण विहरामि, एव जहेव चिंता आपुच्छणा नदापुक्खरिणी वनसडा, सहाओ त चेव सव्व जाव नदाए पुक्खरिणीए ददुरत्ताए उववन्ने, त अहोण अह अहन्ने, अपुन्ने, अक-

भूए । तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसढे, तएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय जाव पडिवन्ने) હું પહેલા આ રાજગૃહ નગરમા જ નદ નામે મણિકાર શ્રેષ્ઠિ હતો હુ વિશેષ રૂપથી ધન-ધાન્ય વગેરેથી સમૃદ્ધ તેમજ જનમાન્ય (લોકોમા પૂછાતો) હતો તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ત્યા પધાર્યા હતા મે તેઓશ્રી પાસેથી પાચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતો રૂપ શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારી લીધો હતો (तएण अह अन्नया कयाई असाहु दसणेण य जाव मिच्छत्त विपडिवन्ने) કોઈ એક વખતે અસાધુના દર્શનથી તેમજ બીજા પણ ઘણા કારણોથી હુ મિથ્યાત્વભાવ રૂપમા પરિણત થઇ ગયો (तएण अह अन्नया कयाई गिम्हकालसमयसि जाव उवसपज्जित्ता ण विहरामि, एव जहेव चिंता आपुच्छणा नदा पुक्खरिणी वनसडा, सहाओ त चेव सव्व जाव नदाए पुक्खरिणीए ददुरत्ताए उववन्ने, त अहोण, अह अहन्ने,

परिणम्यमाने पिपासया क्षुधया चाभिभूतस्येत्थ चिन्ता सजाता "धन्याः खलु ते लोका येषा जलाशया विद्यन्ते, तस्मात् कल्ये श्रेणिक राजानमापृच्छ्य राजगृहस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे नन्दानाम्नी पुष्करिणी खनयितु श्रेय इति"। अथैव विचिन्त्य श्रेणिक मत्यापृच्छना कृत्वा तदाऽज्ञया मया नन्दापुष्करिणी कारिता,

यपुन्ने निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे त सेय खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ उवसपज्जित्ताण विहरित्तए) किसी समय में ग्रीष्मकाल में यावत् पौषधशाला में पौषध धारण कर बैठा हुआ था-इस प्रकार मुझे वहा ऐसी चिन्ता हुई आपृच्छना हुई, नदा पुष्करिणी कराने का विचार हुआ, बनपडों, सभाओ के बनाने का विचार हुआ-यह सब विषय पूर्वभव का उसे स्मृत हो आया-अर्थात् उसे यह बात याद आई-कि जब मैं अष्टम-भक्त की तपस्या का नियम धारण कर पौषध शाला में बैठा हुआ था तब मेरी वह तपस्या पूर्णप्राय हो रही थी-उस समय मुझे पिपासा और क्षुधा की बाधा ने आकुलित परिणाम वाला बना दिया। सो मुझे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-कि वे लोग धन्यवाद के पात्र हैं कि जिन्हों के बनवाये हुए जलाशय विद्यमान हैं। इसलिये मे भी प्रात काल होते ही श्रेणिक राजा से पूछकर राजगृह के बाहिर ईशान कोण में नदा नाम की एक बावडी खुदवाऊँगा। इस प्रकार विचार कर फिर मैंने श्रेणिक राजा से पूछा तो उन्हों ने मुझे इस की आज्ञा देदी मैंने

निग्गथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे त सेय खलु मम सयमेव पुव्व पडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ उवसपज्जित्ताण विहरत्तिए) કોઇ એક વખતે Cનાળામા યાવત્ પૌષધશાળામા પૌષધ ધારણ કરીને બેઠો હતો ત્યારે મારા મનમા એવો વિચાર ઉદ્ભવ્યો એવી આપૃચ્છના થઇ, નદા પુષ્કરિણી તૈયાર કરાવવાનો વિચાર થયો, વનખડો તેમજ સભાઓને બનાવવ નો વિચાર થયો, એ રીતે પહેલાના જન્મની બધી વાત યાદ આવી એટલે કે તેને આ જાતનુ સ્મરણ થયુ કે જ્યારે હુ અષ્ટમ ભક્તની તપસ્યાનુ વ્રત લઈને પૌષધશાળામા બેઠો હતો મારી અષ્ટમ ભક્તની તપસ્યા પૂરી થવાની હતી તે વખતે તરસ અને ભૂખની પીડ એ મને વ્યાકુળ બનવી દીધો ત્યારે મને વિચાર આવ્યો કે તે લોકો ધન્યવાદને લાયક છે કે જેમના વડે બધાયેલા જળાશયો અત્યારે પણ હયાત છે એથી હુ પણ સવાર થતા જ શ્રેણિક રાજાની આજ્ઞા મેળવીને રાજગૃહ નગરની બહાર ઇશાન કોણમા નદા નામે વાવ બધાવડાવુ આ રીતે વિચાર કરીને મે શ્રેણિક રાજાને જ્યારે પૂછ્યુ ત્યારે તેમણે મને તેની આજ્ઞા

नाम मणिकार. आढ्यो यावदपरिभूत आसम् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृत, ततः खलु श्रमणस्यभगवतो महावीरस्यान्तिके पञ्चाणुव्रतिक सप्तशिक्षाव्रतिक द्वादशविध गृहिधर्म प्रतिपन्नः, ततः खल्वहमन्यदा कदाचिद् असाधुदर्शनेन च यावत्-मिथ्यात्व प्रतिपन्नः,ततः खल्वहमन्यदा कदाचिद् ग्रीष्मकालसमये यावत्-पौषधशालाया पौषधमुपसंपद्य खलु विहरामि, 'एव यथैवचिन्ता, आपृच्छना, नन्दापुष्करिणी, वनषण्डा, सभाः तदेव सर्वम्' तथैवचिन्तादिक दर्दुरेण पूर्वभूवे कृत तथैव तत् सर्वं स्मृत, तद् यथा-मम तत्राष्टमभक्ते

रायगिहे नयरे णदे णाम मणियारे अड्ढे जाव अपरिभूए । तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसढे, तएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय जाव पडिवन्ने) मैं इसी राजगृह नगरमें नद नाम का मणिकार श्रेष्ठी था । विशेष रूपसे धन धान्यादि सपत्ति शाली एव जन मान्य था। उस काल और उस समय में श्रमण भगवान् महावीर वहा आये-सो मैंने उनसे पाच अणुव्रत एवं सात शिक्षाव्रत रूप श्रावक धर्म अगीकार करलिया था । (तएण अह अन्नया कयाई असाहुदसणेणय जाव मिच्छत्त विपडिवन्ने) किसी एक समय असाधु के दर्शन से तथा और भी कई निमित्तो से मैं मिथ्यात्व भाव रूप से परिणत हो गया-(तएण अह अन्नयाकयाई गिम्ह कालसमयसि जाव उवसपज्जित्ताण विहरामि, एव जहेव चिंता आपुच्छणा नदापुक्खरिणी वनसडा, सहाओ त चेव सव्व जाव नदाए पुक्खरिणीए दद्दुरत्ताए उववन्ने, त अहोण अह अहन्ने, अपुन्ने, अक-

भूए । तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसढे, तएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय जाव पडिवन्ने) હું પહેલા આ રાજગૃહ નગરમા જ નદ નામે મણિકાર શ્રેષ્ઠિ હતો હું વિશેષ રૂપથી ધન-ધાન્ય વગેરેથી સમૃદ્ધ તેમજ જનમાન્ય (લોકોમા પૂછાતો) હતો તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ત્યા પધાર્યા હતા મે તેઓશ્રી પાસેથી પાચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતો રૂપ શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારી લીધો હતો (तएण अह अन्नया कयाई असाहु दसणेण य जाव मिच्छत्त विपडिवन्ने) કોઈ એક વખતે અસાધુના દર્શનથી તેમજ બીજા પણ ઘણા કારણોથી હું મિથ્યાત્વભાવ રૂપમા પરિણત થઇ ગયો (तएण अह अन्नया कयाई गिम्हकालसमयसि जाव उवसपज्जित्ता ण विहरामि, एव जहेव चिंता आपुच्छण नदा पुक्खरिणा वनसडा, सहाओ त चेव सव्व जाव नदाए पुक्खरिणीए दद्दुरत्ताए उववन्ने, त अहोण, अह अहन्ने, अपुन्ने, अकयपुन्ने

न्यदा कदाचित्-षोडशरोगातङ्का' प्रादुर्भूताः। बहवो वैद्यास्तत्रागता' परन्त्वेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुमसमर्था सन्त प्रतिगता. । ततस्तैरोगातङ्कैरभिभूत' खलु नन्दापुष्करिण्या मूर्च्छितोऽह तत्सुखवियोगसभावनयाऽऽर्त्तध्यानोपगतः सन् काल मासे काल कृत्वा अत्रैव नन्दापुष्करिण्या दर्दुरतया समातोऽस्मि । इत्थ जातिस्मरण प्राप्य स दर्दुर स्वात्मनि विचारयति-' त अहोण जह अहन्ने ' इत्यादि, तत्=तस्माद् अहो ! इति खेदे खलु अहमधन्य', अपुण्यः, अकृतपुण्यः, नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनाद् नष्टो भ्रष्टश्चास्मि, तत्=तस्मात्-श्रेयः खलु मम स्वयमेव पूर्वप्रतिपन्नानि=पूर्व भवाङ्गीकृतानि, पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतान्युपसपद्य विहर्तुम् इत्येव सम्प्रेक्षते=

उदय से अतिशय आनद का अनुभव करने लग जाता । किसी एक समय मुझे मणिकार श्रेष्ठी के भव में उस प्रबलतर शात गौरवजनित कर्म के उदय से १६ रोगातक शरीर में प्रकट हुए । अनेक वैद्य आये, परन्तु वे मेरे एक भी रोगातक को शमित करने मे समर्थ नही हो सके। सो वापिस चले गये। इस तरह उन रोगातकों से अभिभूत हुआ मै नदा पुष्करिणी में मूर्च्छित होकर उसके सुख के वियोग की सभावना से आर्तध्यान में पडकर मृत्यु के अवसर मे मरा सो इसी नदा पुष्करिणी में इस दर्दुर की पर्याय से उत्पन्न हुआ हूँ । इस तरह जातिस्मरण ज्ञान को प्राप्त कर उस दर्दुर ने अपने मन में विचार किया देखो यह कितने खेद की बात है-मै कितना अधन्य हूँ कितना पापी हू कितना अकृत पुण्य हूँ जो मै निर्ग्रन्थ प्रवचन से नष्ट भ्रष्ट हुआ इसलिये मुझे यही कल्याणास्पद है कि मै स्वय अब पूर्व भव में अगीकृत किये गये पाच अणुव्रतोको सात शिक्षाव्रतोंको स्वीकार-धारण-कर लू ।

આનદમા મગ્ન થઈ જતો હતો કોઈ એક સમયે મણિકાર શેઠના ભવમા મારા શરીરમા પ્રબળતર શાત ગૌરવ જનિત કર્મના ઉદયથી સોળ રોગ અને આતક પ્રકટ થયા ઘણા વેદ્યો આવ્યા પણ તેઓ મારો એક રોગ પણ મટાડી શકયા નહિ વૈદ્યો પણ નિરાશ થઈને પાછા જતા રહ્યા હતા આ રીતે રોગ અને આતકોથી પીડિત થઈને હુ નદા વાવમા બેભાન થઈને સુખના વિયોગની સભાવનાથી જ આર્તધ્યાન કરતો છેવટે મૃત્યુના સમયે મરણ પામ્યો મૃત્યુ બાદ હુ એ નદા વાવમા જ દેડકાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો છુ આ રીતે જાતિસ્મરણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતા તે દેડકાએ પોતાના મનમા વિચાર કર્યો કે-અરે ! અરે ! હુ કેટલો બધો અધન્ય છુ પાપી છુ અને અકૃતપુણ્ય છુ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનથી ભ્રષ્ટ થઈને જ મારી આવી દશા થઈ છે, એથી હવે હુ પૂર્વભવમા સ્વીકારેલા પાચ અણુવ્રતો, અને શિક્ષાવ્રતોને સ્વીકારી લઉ (एव सपेक्षेइ सपे

ततस्तस्याः पुष्करिण्याश्चतुर्दिक्षु चत्वारो वनषण्डा आरोपिताः संरक्षिता संवर्धिताः, तत स्तेषु वनषण्डेषु पौरस्त्ये चित्रसभा, दाक्षिणात्ये महानसशाला, पाश्चात्ये चिकित्सा शाला, औदीच्ये वनषण्डेऽलङ्कारिकसभा मया कारिता, इति । ' यावत्-नन्दायां पुष्करिण्यां दर्दुरतयोपपन्नः' ततो राजगृहनिर्गतो बहुजनस्तत्र पुष्करिण्यां स्नानं कुर्वन् जलं पिबन् पानीय घटादिभिर्नयन् परस्परमेवमवादीत्-भो देवानुप्रियाः ! धन्यः कृतार्थः खलु नन्दो मणिकारश्रेष्ठी यस्य खलु इयमेतद्रूपा नन्दापुष्करिणी त्यादि, तत् प्रशंसावचनमहं बहुजनस्यान्तिके श्रुत्वा हृष्टतुष्टः सातगौरवसुखमनुभवन् आसम् । तत खलु मम मणिकारश्रेष्ठिभवे प्रबलतरशातगौरवजनितकर्मोदयेना-

---

नंदा नाम की पुष्करिणी उन्हीं की आज्ञा से बन वाई। उस की चारों दिशाओं में चार वनषड लगवाये वे सरक्षित होकर खूब अच्छी वृद्धि गत हुए उन वनषंडो में से जो पूर्व दिशा सबन्धी वनषड था उसमें मैंने एक चित्र सभा बनवाई दक्षिण दिशा सबन्धी वनषड मे एक महा नस शाला, पश्चिमदिशा सबन्धी वनषड मे चिकित्सा शाला और उत्तर दिशा सबन्धी वनषड में अलंकारिक सभा बनवाई। राजगृहनगर से निर्गत अनेक जन उस पुष्करिणी में स्नान करते-पानी पीते और उस में से पानी भी भरते-तब परस्पर मिलकर वे इस प्रकार से बात चीत करते कि भो देवानुप्रिय ! मणिकार नंद श्रेष्ठी धन्यवाद का पात्र है, कृतार्थ है-जिसने इतनी अच्छी इस नदा पुष्करिणी को बन वाया है। इस तरह के प्रशंसात्मक वचन सुनकर मैं हर्षोत्फुल्ल गात्र हो जाता, मेरा चित्त संतुष्ट हो जाता। मै उस समय ज्ञात गौरव के

આપી દીધી તેમની આજ્ઞાથી જ મે નદા નામે પુષ્કરિણી બધાવી છે તેની ચારે દિશાઓમા ચાર વનષડો રોપાવ્યા સુરક્ષિત થયેલા વનષડો ખૂબ જ વૃદ્ધિ પામ્યા પૂર્વ દિશા તરફના વનષડમા મે એક ચિત્રસભા બનાવડાવી હતી દક્ષિણ દિશાના વનષડમા એક વિશાળ મહાનસ શાળા (રસોઇ ઘર), પશ્ચિમ દિશાના વનષડમા ચિકિત્સાલય (દવાખાનુ) અને ઉત્તર દિશાના વનષડમા અલકારિક સભા બનાવડાવી રાજગૃહ નગરના ઘણા માણસો પુષ્કરિણીમા સ્નાન કરતા, પાણી પીતા અને તેમાથી પાણી ભરતા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાત ચીત શરૂ કરવા માડતા કે હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ ધન્યવાદને લાયક છે કૃતાર્થ છે, કેમકે તેણે કેવી સરસ નદા પુષ્કરિણી બનાવડાવી છે આ રીતે પોતાના જ વખાણ સાભળીને હુ ખુશ ખુશ (હર્ષોત્ફુલ્લ) થઈ જતો અને મારૂ હૈયુ સંતુષ્ટ થઈ જતુ હતુ હુ તે વખતે શાત ગૌરવના ઉદયથી ખૂબ જ

न्यदा कदाचित्–षोडशरोगातङ्का' प्रादुर्भूता। बहवो वैद्यास्तत्रागता' परन्त्वेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुमसमर्थां सन्त मतिगताः। ततस्तैरोगातङ्कैरभिभूतः खलु नन्दापुष्करिण्या मूर्च्छितोऽहं तत्सुखवियोगसभावनयाऽऽर्त्तं यानोपगतः सन् कालमासे काल कृत्वा अत्रैव नन्दापुष्करिण्या दर्दुरतया समुत्पन्नोऽस्मि। इत्थं जातिस्मरणं प्राप्य स दर्दुर स्वात्मनि विचारयति–'त अहोणं अहं अहन्ने' इत्यादि, तत्=तस्माद् अहो! इति खेदे खलु अहमधन्य, अपुण्य., अकृतपुण्यः, नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनाद् नष्टो भ्रष्टश्चास्मि, तत्=तस्मात्–श्रेयः खलु मम स्वयमेव पूर्वप्रतिपन्नानि=पूर्वं भवाङ्गीकृतानि, पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतान्युपसपद्य विहर्तुम् इत्येव सम्प्रेक्षते=

उदय से अतिशय आनद का अनुभव करने लग जाता। किसी एक समय मुझे मणिकार श्रेष्ठी के भव में उस प्रबलतर शात गौरवजनित कर्म के उदय से १६ रोगातक शरीर में प्रकट हुए। अनेक वैद्य आये परन्तु वे मेरे एक भी रोगातक को शमित करने मे समर्थ नहीं हो सके। सो वापिस चले गये। इस तरह उन रोगातकों से अभिभूत हुआ मैं नदा पुष्करिणी में मूर्च्छित होकर उसके सुख के वियोग की सभावना से आर्त ध्यान में पडकर मृत्यु के अवसर मे मरा सो इसी नदा पुष्करिणी में इस दर्दुर की पर्याय से उत्पन्न हुआ हूँ। इस तरह जातिस्मरण ज्ञान को प्राप्त कर उस दर्दुर ने अपने मन में विचार किया देखो यह कितने खेद की बात है–मैं कितना अधन्य हूँ कितना पापी हूँ कितना अकृत पुण्य हूँ जो म निर्ग्रन्थ प्रवचन से नष्ट भ्रष्ट हुआ इसलिये मुझे यही कल्याणास्पद है कि मे स्वय अब पूर्व भव में अगीकृत किये गये पाच अणुव्रतोको सात शिक्षाव्रतोंको स्वीकार–धारण–कर लूं।

આનદમા મગ્ન થઈ જતો હતો કોઈ એક સમયે મણિકાર શેઠના ભવમા મારા શરીરમા પ્રબળતર શાત ગૌરવ જનિત કર્મના ઉદયથી સોળ રોગ અને આતક પ્રકટ થયા ઘણા વદ્યો આવ્યા પણ તેઓ મારો એક રોગ પણ મટાડી શકયા નહિ વૈદ્યો પણ નિરાશ થઈને પાછા જતા રહ્યા હતા આ રીતે રોગ અને આતકોથી પીડિત થઈને હું નદા વાવમા બેભાન થઇને સુખના વિયોગની સભાવનાથી જ આર્તધ્યાન કરતો છેવટે મૃત્યુના સમયે મરણ પામ્યો મૃત્યુ બાદ હું એ નદા વાવમા જ દેડકાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો છુ આ રીતે જાતિસ્મરણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતા તે દેડકાએ પોતાના મનમા વિચાર કર્યો કે–અરે! અરે! હું કેટલો બધો અધન્ય છુ પાપી છુ અને અકૃતપુણ્ય છુ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનથી ભ્રષ્ટ થઈને જ મારી આવી દશા થઈ છે, એથી હવે હું પૂર્વભવમા સ્વીકારેલા પાચ અણુવ્રતો, અને શિક્ષાવ્રતોને સ્વીકારી લઉં (एव सपेहेइ सपे

विचारयति, सम्प्रेक्ष्य पूर्वप्रतिपन्नानि पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि आरोहति= धारयति स्वीकरोतीत्यर्थः। आरुह्य=द्वादशव्रतान्यङ्गीकृत्य, इममेतद्रूप=वक्ष्यमाण स्वरूपम्, अभिग्रहमभिगृह्णाति-कल्पते मे यावज्जीव 'छट्ठछट्ठेण' षष्ठषष्ठभक्तेन, 'अणिक्खित्तेण' अनिक्षिप्तेन-अन्तररहितेन अविश्रान्तेनेत्यर्थ तपः कर्मणाऽऽ त्मान भावयत.=आत्मनः शुभपरिणाम वर्धयतः, विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः। अपिच-षष्ठस्यापि--षष्ठभक्तस्यापि च पारणके कल्पते मे नन्दाया. पुष्करिण्या' 'परिपेरतेसु' परिपर्यन्तेषु=तटेषु=प्रासुकेन=अचित्तेन, स्नानोदकेन 'उम्मद्दणो-ल्लोलियाहि य' उन्मर्दनोल्लोलिताभिः=उद्वर्तनादुर्वरिताभिः लोकैर्दोहोद्वर्तने कृते सति शेषभूता इतस्ततः पतिता या यत्तचूर्णादिनिर्मितपिष्टिकास्ताभिरित्यर्थ, वृत्तिं कल्पयत शरीरयात्रानिर्वाह कुर्वत. विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेणान्वय.। इममेत

(एव सपेवेइ, सपेहित्ता पुव्वपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्त सिक्खावयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ-कप्प मे जाव जीव छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण तवो कम्मेण अप्पाण भावेमा णस्स विहरित्तए) इस प्रकार उसने विचार किया। विचार करके पूर्व प्रतिपन्न पच अणुव्रतों को सात शिक्षाव्रतों को उसने स्वय धारण कर लिया। धारण करके फिर उसने इस प्रकार का नियम ले लिया कि मैं अब जीवन पर्यंत अन्तर रहित षष्ठ षष्ठ भक्त की तपस्या से अपने आत्मपरिणामोंको बढाता रहूँगा। (छट्ठस्स वि य ण पारणगसि कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फासुएण ण्हाणोदएण उम्मद्दणो-ल्लोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) और छट्ठ भक्त की

हित्ता पुव्व पडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्प मे जाव जीव छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए) આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કરીને પૂર્વ ભવમા સ્વીકારેલા પાચ અણુવ્રતોને અને સાત શિક્ષાવ્રતોને તેણે પોતે જ ધારણ કરી લીધા ધારણ કરીને તેણે એ જાતનો નિયમ લીધો કે હવે જીવનની છેલ્લી પળ સુધી અન્તર રહિત ષષ્ઠ ષષ્ઠ ભક્તની તપસ્યા વડે મારા આત્મ પરિણામોની વૃદ્ધિ કરતો જ રહીશ (छट्ठस्स वि य ण पारणगसि कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए, परिपेरतेसु फासुएण ण्हाणोदएण उम्मद्दणोल्लो लियाहिय वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ, जाव जीवाए छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) અને છઠ્ઠ ભક્તની પારણાના [illegible] ના

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्य यावज्जीवं षष्ठषष्ठेन=षष्ठषष्ठभक्तेन यावत्-स दर्दुरोऽभिग्रहग्रहणपूर्वकं स्वीकृतेन तपःकर्मणाऽऽत्मानं भावयन् विहरति=आस्तेस्म। सू०७॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्नं एवं वयासी-देवाणुप्पिया ! समणे३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो एयं मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ तएणं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था-एवं खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामि णं समणं३ वंदामि जाव पज्जुवासामि एवं संपेहेइ संपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ सणिय २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ

उक्खित्ताए दद्दुरगईए वीइवयमाणे जेणेव समं

रेत्थ गमणाए, इमं च णं सेणिए राया

पारणाके दिन में नंदा पुष्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से तथा लोको के द्वारा दोहोद्वर्तन करने पर शेषभूत इधर उधर पतित यव चूर्णादि निर्मित पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह करूँगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया।। इस करह अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह दर्दुर घृत षष्ठ षष्ठ भक्त की तपस्या से आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ सूत्र ७ ॥

વાવના કિનારાની ચારે બાજુના અચિત્ત સ્નાનોદકથી તેમજ લોકો વડે દોહોદ્વર્તન કર્યા પછી વધેલા અને અહિતેમ વેરાઈને પડેલા જવના લોટ વગેરેથી પોતાના પિંડનો શરીરનો નિર્વાહ કરીશ આ રીતે તેણે અભિગ્રહ લઈ લીધો આમ અભિગ્રહ ધારણ કરીને દેડકો ષષ્ઠ ભક્તની તપસ્યા રૂપે આત્મશુદ્ધિ કરવામા તલ્લીન થઈ ગયો સૂત્ર " ૭ "

विचारयति, सम्प्रेक्ष्य पूर्वमतिपन्नानि पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि आरोहति= धारयति स्वीकरोतीत्यर्थः। आरुह्य=द्वादशव्रतान्यङ्गीकृत्य, इममेतद्रूप=वक्ष्यमाण स्वरूपम्, अभिग्रहमभिगृह्णाति-कल्पते मे यावज्जीव 'छट्ठछट्ठेण' षष्ठषष्ठभक्तेन, 'अणिक्खित्तेण' अनिक्षिप्तेन-अन्तररहितेन अविश्रान्तेनेत्यर्थं तपः कर्मणाऽऽत्मान भावयत'=आत्मनः शुभपरिणाम वर्धयतः, विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः। अपिच-पष्ठस्यापि--षष्ठभक्तस्यापि च पारणके कल्पते मे नन्दायाः पुष्करिण्याः 'परिपेरतेसु' परिपर्यन्तेषु=तटेषु=प्रासुकेन=अचित्तेन, स्नानोदकेन 'उम्मद्दणो ल्लोलियाहि य' उन्मर्दनोल्लोलिताभिः=उद्वर्तनादुर्वरिताभिः लोकैर्देहोद्वर्तने कृते सति शेषभूता इतस्ततः पतिता या यच्चूर्णादिनिर्मितपिष्टिकास्ताभिरित्यर्थः, वृत्तिं कल्पयत शरीरयात्रानिर्वाहं कुर्वत विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेणान्वयः। इममेत

(एव सपेवेइ, सपेहित्ता पुव्वपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्त सिक्खावयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ-कप्प मे जाव जीव छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण तवो कम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए) इस प्रकार उसने विचार किया। विचार करके पूर्व प्रतिपन्न पच अणुव्रतों को सात शिक्षाव्रतों को उसने स्वय धारण कर लिया। धारण करके फिर उसने इस प्रकार का नियम ले लिया कि मैं अब जीवन पर्यंत अन्तर रहित षष्ठ षष्ठ भक्त की तपस्या से अपने आत्मपरिणामोंको बढाता रहूँगा। (छट्ठस्स वि य ण पारणगसि कप्पइ मे ण्हाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फासुएण ण्हाणोदएण उम्मद्दणो-ल्लोलियाहि य वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) और छट्ठ भक्त की

हित्ता पुव्व पडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्प मे जाव जीव छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए) આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કરીને પૂર્વ ભવમા સ્વીકારેલા પાચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતોને તેણે પોતે જ ધારણ કરી લીધા ધારણ કરીને તેણે એ જાતનો નિયમ લીધો કે હવે જીવનની છેલ્લી પળ સુધી અન્તર રહિત ષષ્ઠ ષષ્ઠ ભક્તની તપસ્યા વડે મારા આત્મ પરિણામોની વૃદ્ધિ કરતો જ રહીશ (छट्ठस्स वि य ण पारणगसि कप्पइ मे ण्हाए पोक्खरणीए, परिपेरतेसु फासुएण ण्हाणोदएण उम्मद्दणोल्लो लियाहिय वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ, जाव ज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) અને છઠ્ઠ ભક્તની પારણાના [illegible]

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्य यावज्जीवं षष्ठषष्ठेन=षष्ठषष्ठभक्तेन यावत्-स दर्दुरोऽभिग्रहग्रहणपूर्वकं स्वीकृतेन तपः कर्मणाऽऽत्मानं भावयन् विहरति=आस्तेस्म। सू० ७॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो पहायमाणो य ३ अन्नमन्नं एवं वयासी-देवाणुप्पिया ! समणेइ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो एयं मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ तएणं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था-एवं खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामि णं समणं३ वंदामि जाव पज्जुवासामि एवं संपेहेइ संपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ सणिय २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ

[illegible] उक्किट्ठाए दद्दुरगईए वीइवयमाणे जेणेव समण [illegible] रेत्थ गमणाए, इमं च णं सेणिए राया

पारणाके दिन में नंदा पुष्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से तथा लोकों के द्वारा दोहोद्वर्तन करने पर शोषभूत इधर उधर पतित यव चूर्णादि निर्मित पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह करूँगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया।। इस करह अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह दर्दुर घृत षष्ठ षष्ठ भक्त की तपस्या से आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ सूत्र ७ ॥

વાવના કિનારાની ચારે બાજુના અચિત્ત સ્નાનોદકથી તેમજ લોકો વડે દેહોદ્વર્તન કર્યા પછી વધેલા અને અમતેમ વેરાઈને પડેલા જવના લોટ વગેરેથી પોતાના બિડનો શરીરનો નિર્વાહ કરીશ આ રીતે તેણે અભિગ્રહ લઈ લીધો આમ અભિગ્રહ ધારણ કરીને દેડકો ષષ્ઠ ભક્તની તપસ્યા કરવા તલ્લીન થઈ ગયો સૂત્ર " ૭ "

विचारयति, सम्प्रेक्ष्य पूर्वमतिपन्नानि पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि आरोहति= धारयति स्वीकरोतीत्यर्थः। आरुह्य=द्वादशव्रतान्यङ्गीकृत्य, इममेतद्रूप=वक्ष्यमाण स्वरूपम्, अभिग्रहमभिगृह्णाति-कल्पते मे यावज्जीव ' छट्ठछट्ठेण ' षष्ठषष्ठभक्तेन, ' अणिक्खित्तेण ' अनिक्षिप्तेन-अन्तररहितेन अविश्रान्तेनेत्यर्थ तप' कर्मणाऽऽ त्मान भावयत =आत्मनः शुभपरिणाम वर्धयतः, विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्ध'। अपिच-षष्ठम्यापि--षष्ठभक्तस्यापि च पारणके कल्पते मे नन्दायाः पुष्करिण्या' ' परिपेरतेसु ' परिपर्यन्तेषु=तटेषु=प्रासुकेन=अचित्तेन, स्नानोदकेन ' उम्मद्दणो ल्लोलियाहि य ' उन्मर्दनोल्लोलिताभिः=उद्वर्तनादुर्वरिताभिः लोकैर्दोहोद्वर्तने कृते सति क्षेपभूता इतस्ततः पतिता या यवचूर्णादिनिर्मितपिष्टिकास्ताभिरित्यर्थ, वृत्तिं कल्पयत शरीरयात्रानिर्वाह कुर्वत. विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेणान्वयः। इममेत

(एव सपेचेइ, सपेहित्ता पुव्वपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्त सिक्खावयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ-कप्प मे जाव जीव छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण तवो कम्मेण अप्पाण भावेमा णस्स विहरित्तए) इस प्रकार उसने विचार किया। विचार करके पूर्व प्रतिपन्न पच अणुव्रतों को सात शिक्षाव्रतो को उसने स्वय धारण कर लिया। धारण करके फिर उसने इस प्रकार का नियम ले लिया कि मैं अब जीवन पर्यंत अन्तर रहित षष्ठ षष्ठ भक्त की तपस्या से अपने आत्मपरिणामोंको बढाता रहूँगा। (छट्ठस्स वि य ण पारणगंसि कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फासुएण पहाणोदएण उम्मद्दणो-ल्लोलियाहि य वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूव अभिग्गह अ भिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) और छट्ठ भक्त की

हित्ता पुव्व पडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्प मे जाव जीव छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए) આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કરીને પૂર્વ ભવમા સ્વીકારેલા પાચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતોને તેણે પોતે જ ધારણ કરી લીધા ધારણ કરીને તેણે એ જાતનો નિયમ લીધો કે હવે જીવનની છેલ્લી પળ સુધી અન્તર રહિત ષષ્ઠ ષષ્ઠ ભક્તની તપસ્યા વડે મારા આત્મ પરિણામોની વૃદ્ધિ કરતો જ રહીશ (छट्ठस्स वि य ण पारणगंसि कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए, परिपेरतेसु फासुएण पहाणोदएण उम्मद्दणोल्लो लियाहिय वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ, जाव जीवाए छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) અને છઠ્ઠ ભક્તની પારણાના [illegible]

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्य यावज्जीवं षष्ठषष्ठेन=षष्ठषष्ठभक्तेन यावत्-स दर्दुरोऽभिग्रहग्रहणपूर्वकं स्वीकृतेन तपःकर्मणाऽऽत्मानं भावयन् विहरति=आस्तेस्म। सू० ७॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो पहायमाणो य ३ अन्नमन्नं एवं वयासी-देवाणुप्पिया ! समणे३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो एयं मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ तएणं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था-एवं खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामि णं समणं३ वंदामि जाव पज्जुवासामि एवं संपेहेइ संपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ संणिय २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ

उक्किट्ठाए दद्दुरगईए वीइवयमाणे जेणेव समवसरणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, इमं च णं सेणिए राया

पारणाके दिन में नंदा पुष्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से तथा लोकों के द्वारा दोहोद्वर्तन करने पर शेषभूत इधर उधर पतित यव चूर्णादि निर्मित पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह करूँगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया।। इस प्रकार अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह दर्दुर धृत षष्ठ षष्ठ भक्त की तपस्या से आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ सूत्र ७ ॥

વાવના કિનારાની ચારે બાજુના અચિત્ત સ્નાનોદકથી તેમજ લોકો વડે દોહોદ્વર્તન કર્યા પછી વધેલા અને આમતેમ વેરાઈને પડેલા જવના લોટ વગેરેથી પોતાના પિંડનો શરીરનો નિર્વાહ કરીશ આ રીતે તેણે અભિગ્રહ લઈ લીધો આમ અભિગ્રહ ધારણ કરીને દેડકો ષષ્ઠ ભક્તની તપસ્યા કરવા આત્મશુદ્ધિ કરવામા તલ્લીન થઈ ગયો સૂત્ર " ૭ "

भभसारे पहाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सव्वालकारविभू-
सिए हत्थिखंधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेणं
सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणाहि हयगयरहमहया भडचडगर-
कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवदए
हव्वमागच्छइ, तएणं दद्दुरे सेणियस्स रन्नो एगेणं आसकिसो-
रएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्घाइए कए यावि होत्था,
तएणं से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे
अधारणिज्जमित्तिकट्टु एगंतमवक्कमइ अवक्कमित्ता करयल-
परिग्गहिय मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—नमोऽत्थु णं
मम धम्मायरियस्स जाव सपाविउकामस्स पुव्वि पि य णं मए
समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइवाए पच्च-
क्खाए, जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, त इयाणि पि तस्सेव
अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गहं पच्च-
क्खामि जावजीवं, सव्व असणं ४ पच्चक्खामि जावजीव
जंपि य णं इम सरीर इट्ठ कत जाव मा फुसतु एयपि णं चरि-
मेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु, वोसिरइ तएणं दद्दुरे कालमासे
काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिसए विमाणे उववा-
यसभाए दद्दुरदेवत्ताए उववन्ने, एव खलु गोयमा ! दद्दुरेणं सा
दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया। दद्दुरस्स णं भते !
देवस्स केवइयकाल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलि
ओवमाइ ठिई पण्णत्ता, से ण भंते ! दद्दुरे देवे ता[illegible]

गाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ कहि उववज्जिहिइ गोयमा ! महाविदेहेवासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण 'अंत करेहिइ य। एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि॥ सू०८ ॥

॥ तेरसम णायज्झयणं समत्तं॥ १३ ॥

टीका—भगवान् महावीरः स्वामी कथयति–' तेण कालेण ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये=यदा म दर्दुरः षष्ठभक्त तपः कर्मणाऽऽत्मान भावयन् विहरतिस्म, तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम ! अहगुणशिलके चैत्ये= गुणशिलकनामकोद्याने समवसृतः=प्राप्त. । परिषद्=राजगृहनगरनिवासिना जनानां समूहः, निर्गता=मा द्रष्टु वन्दितु नगराद्बहिर्निःसृता। ततः खलु नन्दाया पुष्करिण्या बहुजन' स्नान कुर्वन् जल पिबन् पनीय च सवहन् अन्योन्यमेवमवादीत्–भो देवानुप्रियाः ! श्रमणो भगवान् महावीर स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये समवसृत , तत्=तस्माद् गच्छाम खलु हे देवानुप्रियाः ! श्रमण भगवन्त महावीरस्वामिन वन्दामहे नमस्यामः वन्दित्वा नत्वा यावत्–पर्युपास्महे=सेवा कुर्म , अस्माकमेतद् इहभवे परभवे च हिताय यावत्–सुखाय, क्षेमाय, निःश्रेयसे, 'अणु-

---

' तेण काले ण तेण समएण ' इत्यादि।

टीकार्थ–(तेण काले ण तेण समएण) उस काल और उस समयमें (अह गोयमा! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएण नदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी–देवाणुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो जाव पज्जुवासामो, एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ) हे

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि—

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) ते કાળે અને તે સમયે (अह गोयमा ! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएण नदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी–देवाणुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो जाव पज्जुवासामो, एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगमियत्ताए भविस्सइ)

भंभसारे पहाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सव्वालकारविभू-
सिए हत्थिखधवरगए सकोरंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेणं
सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणाहि हयगयरहमहया भडचडगर-
कलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवदए
हव्वमागच्छइ, तएण दद्दरे सेणियस्स रन्नो एगेणं आसकिसो-
रएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अतनिग्घाइए कए यावि होत्था,
तएणं से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे
अधारणिज्जमित्तिकट्टु एगंतमवक्कमइ अवक्कमित्ता करयल-
परिग्गहिय मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—नमोऽत्थु णं
मम धम्मायरियस्स जाव सपाविउकामस्स पुव्वि पि य णं मए
समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइवाए पच्च-
क्खाए, जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, त इयाणि पि तस्सेव
अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गहं पच्च-
क्खामि जावजीवं, सव्वं असणं ४ पच्चक्खामि जावजीव
जपि य णं इम सरीर इट्ठ कत जाव मा फुसतु एयपि णं चरि-
मेहि ऊसासेहि वोसिरामि त्तिकट्टु, वोसिरइ तएणं दद्दुरे कालमासे
काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिसए विमाणे उववा-
यसभाए दद्दुरदेवत्ताए उववन्ने, एव खलु गोयमा ! दद्दुरेणंसा
दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया। दद्दुरस्स ण भते !
देवस्स केवइयकाल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलि
ओवमाइ ठिई पण्णत्ता, से णं भते ! दद्दुरे देवे ता[illegible]

गाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ कहि उववज्जिहिइ गोयमा ! महाविदेहेवासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंत करेहिइ य। एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि॥ सू०८ ॥

॥ तेरसम णायज्झयण समत्तं॥ १३ ॥

टीका—भगवान् महावीर. स्वामी कथयति-' तेण कालेण ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये=यदा म दर्दुरः षष्ठभक्त तपः कर्मणाऽऽत्मान भावयन् विहरतिस्म, तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम ! अहगुणशिलके चैत्ये=गुणशिलकनामकोद्याने समवसृतः=प्राप्त. । परिषद्=राजगृहनगरनिवासिना जनाना समूहः, निर्गता=मा द्रष्टु वन्दितु नगराद्बहिर्निःसृता। ततः खलु नन्दाया पुष्करिण्या बहुजन' स्नान कुर्वन् जल पिबन् पनीय च सवहन् अन्योन्यमेवमवादीत्-भो देवानुप्रियाः ! श्रमणो भगवान् महावीर स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये समवसृत , तत्=तस्माद् गच्छाम खलु हे देवानुप्रियाः ! श्रमण भगवन्त महावीरस्वामिन वन्दामहे नमस्याम' वन्दित्वा नत्वा यावत्-पर्युपास्महे=सेवा कुर्म , अस्माकमेतद् इहभवे परभवे च हिताय यावत्-सुखाय, क्षेमाय, निःश्रेयसे, 'अणु-

---

' तेण काले ण तेण समएण ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेण काले ण तेण समएण) उस काल और उस समयमें (अह गोयमा! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएण नदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी-देवाणुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो जाव पज्जुवासामो, एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ) हे

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि—

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) ते કાળે અને તે સમયે (अह गोयमा ! गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएण नदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी-देवाणुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो जाव पज्जुवासामो, एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगमियत्ताए भविस्सइ)

गामियत्ताए ' अनुगामिकतायै परभवेऽनुगमनार्थं भविष्यति, इति परस्परमवदत् ।

ततः खलु तस्य दर्दुरस्य बहुजनस्यान्तिकाद् एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य अयमेतद्रूप आध्यात्मिको विचारः समुदपद्यत-एवं खलु श्रमणो भगवान् महावीर.

गौतम ! में मे विहार करता हुआ गुणशिलक नाम के उद्यान आया । राजगृह नगर निवासी मनुष्यों का समूह मेरी वदना करने के लिये तथा मेरे दर्शन के लिये अपने २ स्थान से आये-उस समय नदा पुष्करिणी में अनेक मनुष्य स्नान करते हुए जल पीते हुए और पानी भरते हुए परस्पर में इस प्रकार से बात-चीत कर रहे थे-भो देवानु प्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर यहीं पर गुण शिलक चैत्य में पधारे हुए हैं-इसलिये हे देवानुप्रियो ! चलो-आओ चलें श्रमण भगवान महावीर को वदना करें नमस्कार करें । वदनो नमस्कार कर फिर उन की पर्युपासना-सेवा करें । यही बात इस भव में, परभव में हमारे लिये हितकारक होगी, यावत् सुखविधायक होगी, क्षेमकारक, निश्रेय-सकारक एव अन्य भव में साथ जाने वाली होगी । (तएण तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा, निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) तो इस प्रकार की बात चीत जब उस दर्दुर ने उन अनेक मनुष्यों के मुख से सुनी-तो सुनकर और उसे हृदय में धारण कर उसके मन मे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-(एव खलु समणे

હે ગૌતમ ! ગુણશિલક નામના ઉદ્યાનમા હુ વિહાર કરતો કરતો આવ્યો રાજગૃહ નગરના નાગરિકોના સમૂહો મને વદન કરવા તેમજ દર્શન કરવા માટે પોતપોતાને ઘેરથી મારી પાસે આવ્યા તે સમયે નદા વાવમા ઘણા માણસો સ્નાન કરતા, પાણી પીતા અને પાણી ભરતા આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અહીં ગુણશિલક ચૈત્યમા જ ભગવાન મહાવીર સ્વામી પધારેલા છે, એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! ચાલો આપણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પર્યુપાસના-સેવા-કરીએ આ ભવ તેમજ પરભવમા એ વાત જ અમારા માટે શ્રેયરૂપ થશે યાવત સુખ વિધાયક થશે ખરેખર એ વાત જ ક્ષેમકારક નિશ્રેયસકર અને બીજા ભવમા પણ સાથે રહેશે (तएण तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा, निसम्म, अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) તે માણસોની એ વાતો દેડકાએ પણ સાંભળી અને તેને ધારણ કરી લીધી ત્યારપછી તેના મનમા આ જાતનો વિચાર થયો કે (एव खलु समणे भगव महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त गच्छामि ण समणं ३ वदामि, जाव पज्जुवासामि

स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये समवसृतोऽस्ति । तत्=तस्माद् अहमपि गच्छामि खलु श्रमण भगवन्त महावीर वन्दे नमस्यामि एव संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य नन्दायाः पुष्करिणीत शनै शनैरुत्तरति=बहिर्निः सरती, उत्तीर्य यत्रैव राजमार्गस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तया (१) 'उक्किट्ठाए' उत्कृष्टया, अत्रेद बोध्यम्– (२) "तुरियाए (३) चवलाए, (४) चडाए, (५) सिग्घाए, (६) उद्धुयाए, (७) जयणाए, (८) छेयाए, " इति । तत्र–उत्कृष्टया–दर्दुराणा गतौ य उत्कर्षस्तेन-युक्तागतिरुत्कृष्टा तयेत्यर्थ' । त्वरितया–मनस औत्सुक्येन युक्ता त्वरिता तया,

भगव महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त गच्छामि णं संम ण ३ वंदामि जाव पज्जुवासामि एव सपेहेइ, सपेहित्ता णदाओ पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ) श्रमण भगवान् महावीर प्रभु यहा गुण शिलक उद्यान में आये हुए है तो चलूँ श्रमण भगवान् महावीर को वंदना करूँ यावत् उनकी पर्युपासना करूँ । ऐसा उसने विचार किया– विचार कर के फिर वह उस नंदा पुष्करिणी से धीरे २ बाहिर निकला– (उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए दद्दुर गइए वीइवयमाणे जेणेव मम अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) बाहिर निकल कर फिर वह जहा राजमार्ग था, उस ओर चल दिया । वहा पहुँच कर फिर वह उस उत्कृष्ट दर्दुर गति से चलता हुआ मेरी ओर बढा । यहा " तुरियाए, चवलाए, चडाए, सिग्घाए, उद्धुंयाए, जयणाए, छेयाए " इन पदों का भी संग्रह कर लेना चाहिये उस दर्दुर की गति को उत्कृष्ट इसलिये कहा है कि दर्दुरो की गति में

सपेहित्ता णदाओ पुक्खरणीओ सणिय २ उत्तरइ) श्रमणु भगवान महावीर प्रभु अहीं गुणशिलक उद्यानमा पधारेला छे त्यारे हु पणु श्रमणु भगवान महावीरने वदन यावत् तेमनी पर्युपासना–सेवा करु आ जतनो तेणे विचार कर्यो, विचार कर्या पछी ते नदा वावभायी धीमे धीमे बहार नीकळ्यो (उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए दद्दुर गइए वीइवयमाणे जेणेव मम अतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) बहार नीकळीने ते जे तरफ राजमार्ग हतो ते तरफ चालवा माडयो त्यारपछी ते पोतानी उत्कृष्ट (शीघ्र) देडकानी गतिथी चालतो चालतो मारी तरफ आव्यो अहीं (तुरियाए, चवलाए, चडाए, सिग्घाए, उध्धुयाए, जयणाए छेयाए) आ पदोने पणु सग्रह करवो जोईअे ते देडकानी गति उत्कृष्ट एटला माटे वर्णववामा आवी छे के देडकाओनी गतिमा जे उत्कर्ष होय छे ते गति तेनाथी युक्त

गामियत्ताए ' अनुगामिकतायै परभवेऽनुगमनार्थं भविष्यति, इति परस्परमवदत् ।

ततः खलु तस्य दर्दुरस्य बहुजनस्यान्तिकाद् एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य अयमेतद्रूप आध्यात्मिको विचारः समुदपद्यत-एवं खलु श्रमणो भगवान् महावीर'

गौतम ! मैं मे विहार करता हुआ गुणशिलक नाम के उद्यान आया । राजगृह नगर निवासी मनुष्यो का समूह मेरी वदना करने के लिये तथा मेरे दर्शन के लिये अपने २ स्थान से आये-उस समय नदा पुष्करिणी में अनेक मनुष्य स्नान करते हुए जल पीते हुए और पानी भरते हुए परस्पर में इस प्रकार से बात-चीत कर रहे थे-मो देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर यहीं पर गुण शिलक चैत्य में पधारे हुए हैं-इसलिये हे देवानुप्रियो ! चलो-आओ चलें श्रमण भगवान महावीर को वदना करें नमस्कार करे । वदनो नमस्कार कर फिर उन की पर्युपासना-सेवा करें । यही बात इस भव में, परभव में हमारे लिये हितकारक होगी, यावत् सुखविधायक होगी, क्षेमकारक, निश्रेयसकारक एव अन्यभव में साथ जाने वाली होगी । (तएणं तस्स ददुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) तो इस प्रकार की बात चीत जब उस दर्दुर ने उन अनेक मनुष्यों के मुख से सुनी-तो सुनकर और उसे हृदय में धारण कर उसके मन मे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-(एव खलु समणे

હે-ગૌતમ ! ગુણશિલક નામના ઉદ્યાનમા હુ વિહાર કરતો કરતો આવ્યો રાજગૃહ નગરના નાગરિકોના સમૂહો મને વદન કરવા તેમજ દર્શન કરવા માટે પોતપોતાને ઘેરથી મારી પાસે આવ્યા તે સમયે નદા વાવમા ઘણા માણસો સ્નાન કરતા, પાણી પીતા અને પાણી ભરતા આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અહી ગુણશિલક ચૈત્યમા જ ભગવાન મહાવીર સ્વામી પધારેલા છે, એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! ચાલો આપણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પર્યુપાસના-સેવા-કરીએ આ ભવ તેમજ પરભવમા એ વાત જ અમારા માટે શ્રેયરૂપ થશે યાવત સુખ વિધાયક થશે ખરેખર એ વાત જ ક્ષેમકારક નિશ્રેયસકર અને બીજા ભવમા પણ સાથે રહેશે (तएणं तस्स ददुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म, अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) તે માણસોની એ વાતો દેડકાએ પણ સાંભળી અને તેને ધારણ કરી લીધી ત્યારપછી તેના મનમા આ જાતનો વિચાર સ્ફુર્યો કે (एव खलु समणे भगव महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त गच्छामि ण समणं ३ वदामि, जाव पज्जुवासामि

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिसमारूढः, सकोरण्टमाल्यदाम्ना-कोरण्टकुसुममालया, छत्रेण ध्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितैः, हयगजरथमहाभटचटकरकलितया=अश्वगजरथमहाभटानां चटकर समूहस्तेन कलितया-युक्तया, चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृतो मम पादवन्दको हव्य-शीघ्रम्, आगच्छति, ततः खलु स दर्दुरः श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसकिसोरएण' अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अक्कते समाणे' आक्रान्तः=अभिभूतः देहोपरिपाद-निपाताऽऽघात प्राप्तः सन् 'अतनिग्घाडए' अन्त्रनिर्घातितः=अन्त्रस्य 'ऑत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवट कर और कौतुक, मगल एव प्रायश्चित विधि समाप्त कर गज पर चढे हुए जल्दी २ आ रहे थे। उस समय वे समस्त अलकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर ढोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज, रथ, एव महाभटों के समूह से युक्त चतुरगिणी सेना से वे घिरे हुए थे। (तएण से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आस किसोरएण वाम पाएण अक्कते समाणे अतनिग्गाइएकए यावि होत्था तएण से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधारणिज्ज मित्ति कट्टु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक श्रेणिक राजा के किसी एक घोडे के बच्चे के वाम पैर से आक्रान्त हो गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड गया। सो उसी

શ્રેણિક રાજા મને વદન કરવા માટે તૈયાર થયા તેઓ સ્નાનથી પરવારીને કૌતુક, મગળ અને પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિ પૂરી કરી અને હાથી ઉપર સવાર થઈને ઝડપથી આવી રહ્યા હતા તે વખતે તેઓ બધી જાતના અલકારોથી વિભૂષિત હતા તેમના ઉપર કોરટ પુષ્પોની માળાથી શોભતુ છત્ર છત્રધારીઓએ તાણેલુ હતુ ચમર ઢોળનાર નોકરો તેમના ઉપર શુભ્ર ઉત્તમ ચમરો ઢોળી રહ્યા હતા હય (ઘોડા) ગજ, રથ અને મહાભટોના સમૂહથી યુક્ત ચતુરગિણી સેનાથી તેઓ વીંટળાયેલા હતા (तएण से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसकिसोरएण वामपाएण अक्कते समाणे अतनिग्गाइएकए यावि होत्था तएण से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमित्ति कट्टु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी) ફૂદકા મારતો તે દેડકો શ્રેણિક રાજાના કોઈ એક ઘોડાના બચ્ચાના ડાબા પગથી આક્રાત થઈ ગયો એટલે કે તેનો ડાબો પગ તેના ઉપર પડી ગયો તેથી

चपलया-शरीरचापल्येन युक्तया, चण्डया-तीव्रया, अतएव शीघ्रया, उद्धुतया-अशेष शरीरावयवकम्पनत्या, जयिन्या अन्यदर्दुरगतिजेत्र्या, छेकया-अपायपरिहारे निपुणया, दर्दुरगत्या-मण्डूकगत्या 'वीइवयमाणे' व्यतिव्रजन् २-महावेगेन गच्छन् २, यत्रैव ममान्तिकं तत्रैव माधारयद् गमनाय=गन्तु मवृत्त । अस्मिन्नेव समये उद्यानरक्षकमुखान्ममागमन श्रुत्वा श्रेणिको राजा भभसारः = भभसारापरनामक, स्नातः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित. सर्वालंकारविभूषित',

જો ઉત્કર્ષ હોતા હૈ વહ ઉસ ઉત્કર્ષ સે યુક્ત થી। ઉસ મેંઢક કે મન મેં બડી ભારી ઉત્સુકતા થી-સો ઉસ ઉત્સુકતા સે વહ ગતિ ભરી હુઈ થી-ઇસ કારણ વહ ઉસ કી ગતિ ત્વરિત થી। શરીર કી ચપલતા સે યુક્ત હોને કે કારણ, તીવ્ર હોને કે કારણ, શીઘ્રતા સે યુક્ત હોને કે કારણ, સમસ્ત શારીરિક અવયવોં કે કપન સે યુક્ત હોને કે કારણ અન્ય સાધારણ દર્દુરોં કી ગતિ કી અપેક્ષા વિશિષ્ટ હોને કે કારણ, ઔર અપાયોં કો બચા ૨ કર ચલને કે કારણ વહ ગતિ ક્રમશઃ ચપલ ચણ્ડ, શીઘ્ર ઉદ્ધુત, જયની, ઔર છેક ઇન વિશેષણોં વાલી થી। ઇમ ચ ણ સેણિએ રાયા ભભસારે ણ્હાએ કયકોઉયમગલપાયચ્છિત્તે સવ્વાલકારવિભૂસિએ, હત્થિ ખધવરગએ સકોરટમલ્લદામેણ છત્તેણ ધરિજ્જમાણેણ સેયવરચામરાહિં ઉદ્ધુવ્વમાણાહિં હયગયરહમહયા ભડચડગરકલિયાએ ચાઉરગિણીએ સેણાએ સદ્ધિં સપરિવુડે મમ પાયવદ્દએ હવ્વમાગચ્છઇ) ઇસી સમય ઉદ્યાન રક્ષક કે મુખ સે મેરા આગમન સુનકર " ભભસાર " ઇસ અપર નામ વાલે શ્રેણિક રાજા મેરી વદના

હતી તે દેડકાના મનમા ભારે ઉત્સુકતા હતી તેની ગતિમા ઉત્સુકતાને લીધેજ ત્વરા આવી ગઈ હતી શરીરની ચપળતાથી યુક્ત હોવા બદલ, તીવ્ર હોવા બદલ, શીઘ્રતા યુક્ત હોવા બદલ, શરીરના બધા અવયવોના કપનથી યુક્ત હોવા બદલ, બીજા સાધારણ દેડકાઓ ગતિ કરતા વિશિષ્ટતા યુક્ત હોવા બદલ અને અપાયો (આફતો) થી સાવધ થઈને ચાલવા બદલ તે ગતિ ક્રમશ ચપળ, ચડ, શીઘ્ર, ઉદ્ધુત, જયની અને છેક આ વિશેષણોવાળી હતી (इम चण सेणिएराया भभसारे ण्हाए कयकौउयमगलपायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए, हत्थिखधवरगए सकोरटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवर चामराहिं उद्धुव्वमाणाहि हयगयरहमहया भडचडगरकालियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवदए हव्वमागच्छइ) તે વખતે ઉદ્યાન રક્ષકના મુખથી મારા આગમનની વાત સાભળીને ' ભભસાર ' એ બીજા નામવાળા

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिसमारूढः, सकोरण्टमाल्यदाम्ना-कोरण्टकुसुममालया, छत्रेण ध्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितै, हयगजरथमहाभटचटकरकलितया=अश्वगजरथमहाभटाना चटकर समूहस्तेन कलितया-युक्तया, चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृतो मम पादवन्दको हव्य-शीघ्रम्, आगच्छति, तत' खलु स दर्दुर' श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसकिसोरएण' अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अक्कते समाणे' आक्रान्त'=अभिभूत. देहोपरिपाद-निपाताऽऽघात प्राप्तः सन् 'अतनिग्घाडए' अन्त्रनिर्घातित =अन्त्रस्य 'ऑत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवट कर और कौतुक, मगल एव प्रायश्चित विधि सम्पन्न कर गज पर चढे हुए जल्दी २ आ रहे थे। उस समय वे समस्त अलकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर ढोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज, रथ, एव महाभटो के समूह से युक्त चतुरगिणी सेना से वे घिरे हुए थे। (तएण से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आस किसोरएण वाम पाएण अक्कते समाणे अत निग्गाइएकए यावि होत्था तएण से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधारणिज्ज मित्ति कट्टु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक श्रेणिक राजा के किसी एक घोडे के बच्चे के वाम पैर से आक्रान्त हो गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड गया। सो उसी

શ્રેણિક રાજા ભને વદન કરવા માટે તૈયાર થયા તેઓ સ્નાનથી પરવારીને કૌતુક, મગળ અને પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિ પૂરી કરી અને હાથી ઉપર સવાર થઈને ઝડપથી આવી રહ્યા હતા તે વખતે તેઓ બધી જાતના અલકારોથી વિભૂષિત હતા તેમના ઉપર કોરટ પુષ્પોની માળાથી શોભતુ છત્ર છત્રધારીઓએ તાણેલુ હતુ ચમર ઢોળનાર નોકરો તેમના ઉપર શુભ્ર ઉત્તમ ચમરો ઢોળી રહ્યા હતા હય (ઘોડા) ગજ, રથ અને મહાભટોના સમૂહથી યુક્ત ચતુરગિણી સેનાથી તેઓ વીંટળાયેલા હતા (तएण से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसकिसो रएण वामपाएण अक्कते समाणे अत निग्घाइएकए यावि होत्था तएण से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमित्ति कट्टु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी) કૂદકા મારતો તે દેડકો શ્રેણિક રાજાના કોઈ એક ઘોડાના બચ્ચાના ડાબા પગથી આક્રાત થઈ ગયો એટલે કે તેનો ડાબો પગ તેના ઉપર પડી ગયો તેથી

चपलया-शरीरचापल्येन युक्तया, चण्डया-तीव्रया, अतएव शीघ्रया, उद्धुतया-अशेष शरीरावयवकम्पनत्या, जयिन्या अन्यदर्दुरगतिजेत्र्या, छेकया-अपायपरिहारे निपुणया, दर्दुरगत्या-मण्डूकगत्या 'वीइवयमाणे' व्यतिव्रजन् २-महावेगेन गच्छन् २, यत्रैव ममान्तिकं तत्रैव माधारयद् गमनाय=गन्तु प्रवृत्त । अस्मिन्नेव समये उद्यानरक्षकमुखान्ममागमन श्रुत्वा श्रेणिको राजा भभसारः = भभसारापरनामक, स्नातः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चितः सर्वालंकारविभूषितः,

જો ઉત્કર્ષ હોતા હૈ વહ ઉસ ઉત્કર્ષ સે યુક્ત થી । ઉસ મેંઢક કે મન મેં બડી ભારી ઉત્સુકતા થી-સો ઉસ ઉત્સુકતા સે વહ ગતિ ભરી હુઈ થી-ઇસ કારણ વહ ઉસ કી ગતિ ત્વરિત થી । શરીર કી ચપલતા સે યુક્ત હોને કે કારણ, તીવ્ર હોને કે કારણ, શીઘ્રતા સે યુક્ત હોને કે કારણ, સમસ્ત શારીરિક અવયવોં કે કપન સે યુક્ત હોને કે કારણ અન્ય સાધારણ દર્દુરોં કી ગતિ કી અપેક્ષા વિશિષ્ટ હોને કે કારણ, ઔર અપાયોં કો બચા ૨ કર ચલને કે કારણ વહ ગતિ ક્રમશઃ ચપલ ચણ્ડ, શીઘ્ર ઉદ્ધુત, જયની, ઔર છેક ઇન વિશેષણોં વાલી થી । इम च ण सेणिए राया भभसारे ण्हाए कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए, हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणाहिं हयगयरहमहया भडचडगरकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ) ઇસી સમય ઉદ્યાન રક્ષક કે મુખ સે મેરા આગમન સુનકર " भभसार " ઇસ અપર નામ વાલે શ્રેણિક રાજા મેરી વંદના

હતી તે દેડકાના મનમા ભારે ઉત્સુકતા હતી તેની ગતિમા ઉત્સુકતાને લીધેજ ત્વરા આવી ગઈ હતી શરીરની ચપળતાથી યુક્ત હોવા બદલ, તીવ્ર હોવા બદલ, શીઘ્રતા યુક્ત હોવા બદલ, શરીરના બધા અવયવોના કંપનથી યુક્ત હોવા બદલ, બીજા સાધારણ દેડકાઓ ગતિ કરતા વિશિષ્ટતા યુક્ત હોવા બદલ અને અપાયો (આફતો) થી સાવધ થઈને ચાલવા બદલ તે ગતિ ક્રમશ ચપળ, ચડ, શીઘ્ર, ઉદ્ધુત, જયની અને છેક આ વિશેષણોવાળી હતી (इम चण सेणिएराया भभसारे ण्हाए कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए, हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणाहिं हयगयरहमहया भडचडगरकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ) તે વખતે ઉદ્યાન રક્ષકના મુખથી મારા આગમનની વાત સાભળીને ' भभसार ' એ બીજા નામવાળા

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिसमारूढः, सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कोरण्टकुसुममालया, छत्रेण ध्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितैः, हयगजरथमहाभटचटकरकलितया=अश्वगजरथमहाभटानां चटकर समूहस्तेन कलितया=युक्तया, चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृतो मम पादवन्दको हव्य=शीघ्रम्, आगच्छति, तत' खलु स दर्दुर' श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसकिसोरएण' अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अक्कते समाणे' आक्रान्त'=अभिभूत. देहोपरिपाद-निपाताऽऽघात प्राप्तः सन् 'अतनिग्गाइए' अन्त्रनिर्गातित'=अन्त्रस्य 'आँत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवट कर और कौतुक, मगल एव प्रायश्चित विधि समाप्त कर गज पर चढे हुए जल्दी २ आ रहे थे। उस समय वे समस्त अलकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर ढोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज, रथ, एव महाभटो के समूह से युक्त चतुरगिणी सेना से वे घिरे हुए थे। (तएण से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आस किसोरएण वाम पाएण अक्कते समाणे अतनिग्गाइएकए यावि होत्था तएण से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधारणिज्ज मित्ति कट्टु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक श्रेणिक राजा के किसी एक घोडे के बच्चे के वाम पैर से आक्रान्त हो गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड गया। सो उसी

શ્રેણિક રાજા ને વદન કરવા માટે તૈયાર થયા તેઓ સ્નાનથી પરવારીને કૌતુક, મગળ અને પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિ પૂરી કરી અને હાથી ઉપર સવાર થઈને ઝડપથી આવી રહ્યા હતા તે વખતે તેઓ બધી જાતના અલકારોથી વિભૂષિત હતા તેમના ઉપર કોરટ પુષ્પોની માળાથી શોભતુ છત્ર છત્રધારીઓએ તાણેલુ હતુ ચમર ઢોળનાર નોકરો તેમના ઉપર શુભ ઉત્તમ ચમરો ઢોળી રહ્યા હતા હય (ઘોડા) ગજ, રથ અને મહાભટોના સમૂહથી યુક્ત ચતુરગિણી સેનાથી તેઓ વીંટળાયેલા હતા (तएण से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसकिसोरएण वामपाएण अक्कते समाणे अतनिग्गाइएकए यावि होत्था तएण से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमित्ति कट्टु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी) કૂદકા મારતો તે દેડકો શ્રેણિક રાજાના કોઈ એક ઘોડાના બચ્ચાના ડાબા પગથી આક્રાત થઈ ગયો એટલે કે તેનો ડાબો પગ તેના ઉપર પડી ગયો તેથી

चपलया-शरीरचापल्येन युक्तया, चण्डया-तीव्रया, अतएव शीघ्रया, उद्धुतया-अशेष शरीरावयवकम्पवत्या, जयिन्या अन्यदर्दुरगतिजेत्र्या, छेकया-अपायपरिहारे निपुणया, दर्दुरगत्या-मण्डूकगत्या 'वीइवयमाणे' व्यतिव्रजन् २-महावेगेन गच्छन् २, यत्रैव ममान्तिकं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्त । अस्मिन्नेव समये उद्यानरक्षकमुखान्ममागमनं श्रुत्वा श्रेणिको राजा भभसारः = भभसारापरनामकः, स्नातः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्त सर्वालंकारविभूषितः,

जो उत्कर्ष होता है वह उस उत्कर्ष से युक्त थी। उस मेंढक के मन में बड़ी भारी उत्सुकता थी-सो उस उत्सुकता से वह गति भरी हुई थी-इस कारण वह उस की गति त्वरित थी। शरीर की चपलता से युक्त होने के कारण, तीव्र होने के कारण, शीघ्रता से युक्त होने के कारण, समस्त शारीरिक अवयवों के कपन से युक्त होने के कारण अन्य साधारण दर्दुरों की गति की अपेक्षा विशिष्ट होने के कारण, और अपायों को बचा २ कर चलने के कारण वह गति क्रमशः चपल चण्ड, शीघ्र उद्धुत, जयनी, और छेक इन विशेषणों वाली थी। इस च ण सेणिए राया भभसारे ण्हाए कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए, हत्थि खंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणाहिं हयगयरहमहया भडचडगरकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ) इसी समय उद्यान रक्षक के मुख से मेरा आगमन सुनकर " भभसार " इस अपर नाम वाले श्रेणिक राजा मेरी वंदना

હતી તે દેડકાના મનમા ભારે ઉત્સુકતા હતી તેની ગતિમા ઉત્સુકતાને લીધેજ ત્વરા આવી ગઈ હતી શરીરની ચપળતાથી યુક્ત હોવા બદલ, તીવ્ર હોવા બદલ, શીઘ્રતા યુક્ત હોવા બદલ, શરીરના બધા અવયવોના કંપનથી યુક્ત હોવા બદલ, બીજા સાધારણ દેડકાઓ ગતિ કરતા વિશિષ્ટતા યુક્ત હોવા બદલ અને અપાયો (આફતો) થી સાવધ થઈને ચાલવા બદલ તે ગતિ ક્રમશ ચપળ, ચડ, શીઘ્ર, ઉધ્ધુત, જયની અને છેક આ વિશેષણોવાળી હતી (इम चण सेणिएराया भभसारे ण्हाए कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए, हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणाहिं हयगयरहमहया भडचडगरकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ) તે વખતે ઉદ્યાન રક્ષકના મુખથી મારા આગમનની વાત સાભળીને ' ભભસાર ' એ બીજા નામવાળા

खलु मम धर्माचार्याय श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थानं समाप्तुकामाय, पूर्वमपि=पूर्वभवेऽपि च खलु मया श्रमणस्य भगवतो महावीर स्यान्तिके स्थूलः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः, यावत्-स्थूलः परिग्रहः प्रत्याख्यातः; यावत्करणात्-स्थूलः मृषावादस्थूलादत्तादान-स्थूल-मैथुन-प्रत्याख्यान बोध्यम्, तदिदानीमपि=अस्मिन् भवेऽपि तस्यैवान्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् सर्वं परिग्रह प्रत्याख्यामि यावज्जीवम्, यदपि च खलु इद शरीरमिष्ट कान्त यावत् मा स्पृशन्तु रोगातङ्का, एतदपि शरीर खलु 'चरिमेहिं' चरमैः= अन्तिमैः 'ऊसासेहिं' ऊच्छ्वासैः=प्राणनिर्गमै' 'वोसिरामितिकट्टु' व्युत्सृजामिति

पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गह पच्चक्खामि जाव जीवं सव्वं असण ४ पच्चक्खामि जाव जीव ज पि य ण इम सरीरं इट्ठ कत जाव मा फुसतु एय पि ण चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु वोसिरइ) यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए अर्हत भगवतों को मेरा नमस्कार हो, यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त करने की कामना वाले मेरे धर्माचार्य, श्रमण भगवान् महावीर को मेरा नमस्कार हो। पूर्वभव में भी मैंने स्थूल रूप से प्राणातिपात का परित्याग श्रमण भगवान् महावीर के समीप किया था। इसी तरह स्थूल मृषावाद का स्थूल अदत्तादान का स्थूल मैथुन को, एव स्थूल परिग्रह का भी प्रत्याख्यान किया था। ये स्थूल मृषावाद आदि यावत् शब्द से यहां गृहीत हुए हैं तो अब इस भव में भी उन्ही के समीप सर्व प्राणितिपात यावत् सर्व परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता हूँ। तथा अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्य रूप से चतुर्विध आहार का भी जीवन पर्यन्त परित्याग करता हूँ। तथा जो इष्ट, कान्त यह मेरा शरीर

पच्चक्खामि जावजीव ज पि य ण इमसरीर इट्ठं कत जाव मा फुसतु एयपि णं चरिमेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु वोसिरइ) યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા અર્હંત ભગવંતને મારા નમસ્કાર છે, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાનને મેળવવાની ઇચ્છા કરનારા મારા ધર્માચાર્ય શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને મારા નમસ્કાર છે પહેલાના ભવમા પણ મે સ્થૂલ રૂપથી શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની નજીક પ્રાણાતિપાતનો પરિત્યાગ કર્યો હતો આ રીતે જ સ્થૂળ મૃષાવાદનુ, સ્થૂલ અદત્તાદાનનુ, સ્થૂલ મૈથુનનુ, અને સ્થૂલ પરિગ્રહનુ પણ મે પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતુ સ્થૂલ મૃષાવાદ વગેરે અહીં 'યાવત્' શબ્દ વડે સગૃહીત થયા છે ત્યારે હવે હુ આ ભવમા પણ તેમની નજીક સર્વ પ્રાણાતિપાત યાવત સર્વ પરિગ્રહનુ મૃત્યુ સુધી પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ તેમજ જે ઈષ્ટ, કાત આ મારૂ શરીર છે-કે જેના માટે મારા મનમા આ જાતના વિચારો હતા કે એને કોઇ પણ

इति प्रसिद्धस्य, निर्यात-मन्त्रनिर्यात., स सनाओऽस्येति अन्त्रनिर्यातित:-त्रुटितान्त्र: कृतश्चाप्यभवत् ।

ततः खलु स दर्दुरः 'अत्थामे' अस्थामा=हीनपराक्रमः गमनशक्तिरहित इत्यर्थः अबल'=मनोबलरहितः-खिन्न इत्यर्थ. अवीर्यः-हतोत्साहः, 'अपुरिसक्कार-परक्कमे' अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषकारः पराक्रमश्च न विद्येते यस्य सोऽपुरुषकार पराक्रमः । पुरुषार्थहीनइत्यर्थ ।'अधारणिज्जमिणिकट्टु' अधारणीयमिति कृत्वा= अधारणीयमिद शरीरमिति विचार्य, एकान्तमवक्कामति=एकान्त-जनसञ्चाररहित स्थान मार्गस्य प्रान्तभाग कथचिद् गच्छति, अवक्रम्य करतलपरिगृहीत मस्तकेऽ-ञ्जलिकृत्वा, एवमवादीत्-एव वक्ष्यमाणस्वरूपेण स्वमनस्युक्तवान् 'नमोऽत्थुण जाव सपत्ताण' नमोऽस्तु खलु अर्हद्भयो भगवद्भयो यावत्-सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेभ्य:, "नमोऽत्थुण मम धम्मायरियस्स जाव सपाविउकामस्स' नमोऽस्तु

समग्र उम की आते टूट गई । आंतों के टूटते ही वह दर्दुर गमन शक्ति से रहित हो गया, मानसिक घल उस का जाता रहा-उत्साह उस का इकदम छिन्न भिन्न हो गया, पुरुषार्थ और पराक्रम मानों उस में हैं ही नहीं ऐसा वह हो गया । जब उसने यह देखा कि यह शरीर अब टिक नहीं सकना तब वह बड़ी कठिनताइसे जन सञ्चार रहित एकान्त स्थान में चला गया । वहा जाकर उसने अपने दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर इस प्रकार मन ही मन में कहा (नमो-त्थुण जाव सपत्ताण णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स जाव सपाविउ-कामस्स पुव्विं पि य ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सव्वं

દેડકાના આતરડા તૂટી ગયા આતરડા તૂટતા જ તે દેડકો હાલવા ચાલવામા અસમર્થ થઈ ગયેા તેનુ આત્મબળ નષ્ટ થઈ ગયુ તેનેા ઉત્સાહ મદ થઈ ગયેા તે પુરૂષાર્થ તેમજ પરાક્રમ રહિત થઈ ગયેા જ્યારે તેને એમ લાગ્યુ કે હવે એ શરીર ટકવુ મુશ્કેલ છે, ત્યારે તે બહુ જ પ્રયત્નથી એક તરફ જ્યા માણસેાની અવર જવર હતી નહિ ત્યા જતેા રહ્યો ત્યા જઈને તેણે પેાતાના બને હાથેાની અજલિ બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને મનમા જ તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ—' नमोत्थुण जाव सपत्ताण णमोत्थुण मम धम्मायरियस्स जाव सपा विउकामस्स पुव्वि पियण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेए इहगय पाणा इवाय पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गह पच्चक्खामि जाव जीव, ४

खलु मम धर्माचार्याय श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थानं समाप्तुकामाय, पूर्वमपि=पूर्वभवेऽपि च खलु मया श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके स्थूलः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः, यावत्-स्थूलः परिग्रहः प्रत्याख्यातः; यावत्करणात्-स्थूल' मृषावादस्थूलादत्तादान-स्थूल-मैथुन-प्रत्याख्यान बोध्यम्, तदिदानीमपि=अस्मिन् भवेऽपि तस्यैवान्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् सर्वं परिग्रह प्रत्याख्यामि यावज्जीवम्, यदपि च खलु इद शरीरमिष्टं कान्त यावत् मा स्पृशन्तु रोगातङ्का, एतदपि शरीर खलु 'चरिमेहिं' चरमैः= अन्तिमैः 'ऊसासेहिं' ऊच्छ्वासैः=प्राणनिर्गमै' 'वोसिरामितिकट्टु' व्युत्सृजामिति

पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गह पच्चक्खामि जाव जीवं सव्व असण ४ पच्चक्खामि जाव जीव ज पि य ण इम सरीर इट्ठ कत जाव मा फुसतु एय पि ण चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु वोसिरइ) यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए अर्हत भगवतों को मेरा नमस्कार हो, यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त करने की कामना वाले मेरे धर्माचार्य, श्रमण भगवान् महावीर को मेरा नमस्कार हो। पूर्वभव में भी मैंने स्थूल रूप से प्राणातिपात का परित्याग श्रमण भगवान् महावीर के समीप किया था। इसी तरह स्थूल मृषावाद का स्थूल अदत्तादान का स्थूल मैथुन को, एव स्थूल परिग्रह का भी प्रत्याख्यान किया था। ये स्थूल मृषावाद आदि यावत् शब्द से यहा गृहीत हुए हैं तो अब इस भव में भी उन्ही के समीप सर्व प्राणितिपात यावत् सर्व परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता हूँ। तथा अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्य रूप से चतुर्विध आहार का भी जीवन पर्यन्त परित्याग करता हूँ। तथा जो इष्ट, कान्त यह मेरा शरीर

पच्चक्खामि जावजीव ज पि य ण इमसरीर इट्ठं कत जाव मा फुसतु एयपि णं चरिमेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु वोसिरइ) યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા અર્હંત ભગવંતને મારા નમસ્કાર છે, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાનને મેળવવાની ઇચ્છા કરનાર મારા ધર્માચાર્ય શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને મારા નમસ્કાર છે પહેલાના ભવમા પણ મે સ્થૂલ રૂપથી શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની નજીક પ્રાણાતિપાતનો પરિત્યાગ કર્યો હતો આ રીતે જ સ્થૂળ મૃષાવાદનુ, સ્થૂલ અદત્તાદાનનુ, સ્થૂલ મૈથુનનુ, અને સ્થૂલ પરિગ્રહનુ પણ મે પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતુ સ્થૂલ મૃષાવાદ વગેરે અહી 'યાવત્' શબ્દ વડે સગૃહીત થયા છે ત્યારે હવે હુ આ ભવમાં પણ તેમની નજીક સર્વ પ્રાણાતિપાત યાવત સર્વ પરિગ્રહનુ મૃત્યુ સુધી પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ તેમજ જે ઈષ્ટ, કાત આ મારૂ શરીર છે-કે જેના માટે મારા મનમા આ જાતના વિચારો હતા કે એને કોઇ પણ

कृत्वा=शरीरं व्युत्सृजति-परित्यजति, भगवानाह-हे गौतम ! ततस्तदनन्तरं खलु स दर्दुरः=कालमासे काल कृत्वा यावत्-सौधर्मे कल्पे 'ददुर वडिंसए विमाणे' दर्दुरा यतसके विमाने=दर्दुरदेवतया 'उववन्ने' उपपन्नः-उपपात-जन्म प्राप्त इत्यर्थः ।

दर्दुरचरितमुक्त्वा-भगवान् महावीरः स्वामी प्राह-'एव खलु गोयमा !' इत्यादि । हे गौतम ! एव खलु दर्दुरेण सा दिव्या देवर्द्धिर्लब्धा उपार्जिता प्राप्ता स्वयत्तीकृताऽभिसमन्वागता-सम्यक् सेविता । गौतमः पृच्छति-'दद्दुरस्स' इत्यादि । दर्दुरस्य खलु देवस्य हे भदन्त ! कियत्कालपर्यन्तं स्थितिः प्रज्ञप्ता ?

है कि जिस के प्रति मेरी यह धारणा रहती थी, कि इसे कोई भी रोगा तक स्पर्श न करें उसको भी मैं अन्तिम श्वासों तक ममत्व भावसे रहित होकर छोडता हूँ । इस प्रकार करके उसने सब का परित्याग कर दिया । (तएण से ददुरे कालमासे काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे ददुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए ददुरदेवत्ताए उववन्ने-एव खलु गोयमा ! ददुरेण सा दिव्वा, देविड्ढी, लद्धा, पत्ताअभिसमन्नागया) इसके बाद वह दर्दुर काल अवसर काल करके यावत् सौधर्म कल्प में दर्दुरावतसक विमान में उपपात सभा में दर्दुर देवता की पर्याय से उत्पन्न हो गया । इस प्रकार दर्दुर का चरित्र कहकर भगवान् महावीर स्वामी ने गौतम से कहा-कि हे गौतम ! इस प्रकार से उस दर्दुर देव ने वह दिव्य देवर्द्धि उपार्जित की है, अपने आधीन की है और उसे अपने भोगके योग्य बनाई है। अब गौतम श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से पुनः पूछते हैं कि-(ददुरस्स णं भंते ! देवस्स केवइयकाल ठिईपण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई

રોગ અને આતંક સ્પર્શ કરે નહિ-તેને પણ હું મમત્વ વગર થઇને છેલ્લી પળ સુધી ત્યજુ છુ આ રીતે વિચાર કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ત્યજી દીધી (तएण से ददुरे कालमासे काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे ददुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए ददुरदेवत्ताए, उववन्ने एव खलु गोयमा ! ददुरेण सा दिव्वा, देविड्ढी, लद्धा, पत्ता अभिसमन्नागया) ત્યારબાદ તે દેડકો કાળના સમયે કાળ કરીને યાવત્ સૌધર્મકલ્પમા દર્દુરાવતસક વિમાનમા ઉપપાત સભામા દર્દુર દેવતાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો આ રીતે દેડકાના ચરિત્ર વિશે વર્ણન કરીને ભગવન મહાવીર સ્વામીએ ગૌતમને કહ્યુ કે હે ગૌતમ ! આ રીતે તે દર્દુર દેવે તે દિવ્યદેવર્ધિ મેળવી છે, તેને સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતે ભોગવવાને લાયક બનાવી છે હવે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગોતમ ફરી પૂછે છે કે (ददुरस्स णं भंते ! देवस्स केवइयकाल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि

भगवानाह-हे गौतम ! दर्दुरस्य खलु देवस्य चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता। पुनर्गौतमःपृच्छति-' सेण ' इत्यादि स खलु हे भदन्त ! दर्दुरो देवस्तस्माद् देवलोकाद् आयु' क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण चय त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्र उत्पत्स्यते=उपपात-जन्म प्राप्स्यति ? । भगवान् कथयति-' गोयमा ! ' इत्यादि। हे गौमत ! स खलु दर्दुरोदेवः आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण देवलोकाच्च्युतः सन् महाविदेहे वर्षे जन्म प्राप्य सेत्स्यति भोत्स्यति मोक्ष्यति परिनिर्वास्यति सर्वदु'खानामन्त करिष्यति च ।

पण्णत्ता, से ण भते ! ददुरे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदत ! दर्दुरदेव की वहा कितनी स्थिति हुई है ? प्रभु कहते हैं कि हे गौतम। चार पल्योपम की स्थिति उसकी वहा हुई है। पुनः गौतम उनसे पूछते हैं कि हे भदन्त ! वह दर्दुर देव वहा से-उस देवलोक से-आयु के क्षय भवके क्षय एव स्थिति के क्षय हो जाने पर शरीर का-देव सबन्धी शरीर का-परित्याग कर कहा जावेगा (कहिं उववज्जिहिइ) कहा पर जन्म धारण करेगा ? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् ने उन्हें इस प्रकार दिया-(गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण अत करेहिइय) गौतम ! वह दर्दुर देव आयु के क्षय से, भव के क्षय से एव स्थिति के क्षय से देवलोक से चवकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म प्राप्तकर वहाँ से सिद्ध होगा, विमल केवल लोक से सकल लोकालोक का ज्ञान होगा, समस्त कर्मों से मुक्त

पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता से ण भते ! ददुरे देवे ताओ देव लोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ?) હે ભદન્ત ! ત્યા દર્દુર દેવની કેટલી સ્થિતિ થઇ છે ? પ્રભુ કહે છે કે હે ગૌતમ ! તેની ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિ થઇ છે ગૌતમ ફરી તેઓશ્રીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! તે દર્દુર દેવ ત્યાથી-તે દેવલોકમાથી-આયુષ્યના ક્ષય, ભવના ક્ષય, તેમજ સ્થિતિનો ક્ષય થયા બાદ શરીરને-દેવસબધી શરીરને ત્યજીને કયા જશે ? (कहिं उववज्जिहिइ) કયા જન્મ પ્રાપ્ત કરશે ? ભગવાને આ પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે આપ્યો કે (गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्व दुक्खाण अत करेहिइ य) હે ગૌતમ ! તે દર્દુર દેવ આયુષ્યનો ક્ષય થયા બાદ, ભવનો ક્ષય થયા બાદ, અને સ્થિતિનો ક્ષય થયા બાદ દેવલોકથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ પ્રાપ્ત કરીને ત્યાથી જ સિદ્ધ થશે વિમલ-કેવલ લોકથી

कृत्वा=शरीरं व्युत्सृजति-परित्यजति, भगवानाह-हे गौतम ! ततस्तदनन्तरं खलु स दर्दुरः कालमासे काल कृत्वा यावत्-सौधर्मे कल्पे 'ददुर वडिंसए विमाणे' दर्दुरावतंसके विमाने=दर्दुरदेवतया 'उववन्ने' उपपन्नः-उपपात-जन्म प्राप्त इत्यर्थः ।

दर्दुरचरितमुक्त्वा-भगवान् महावीरः स्वामी माह-' एव खलु गोयमा ! ' इत्यादि । हे गौतम ! एव खलु दर्दुरेण सा दिव्या देवर्द्धिर्लब्धा उपार्जिता प्राप्ता स्वयत्तीकृताऽभिसमन्वागता-सम्यक् सेविता । गौतमः पृच्छति-' दद्दुरस्स ' इत्यादि । दर्दुरस्य खलु देवस्य हे भदन्त ! कियत्कालपर्यन्त स्थितिः प्रज्ञप्ता ?

है कि जिस के प्रति मेरी यह धारणा रहती थी, कि इसे कोई भी रोगा तक स्पर्श न करें उसको भी मैं अन्तिम श्वासों तक ममत्व भावसे रहित होकर छोडता हूँ। इस प्रकार करके उसने सब का परित्याग कर दिया। (तएण से ददुरे कालमासे काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे ददुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए ददुरदेवत्ताए उववन्ने-एव खलु गोयमा ! ददुरेण सा दिव्वा, देविड्ढी, लद्धा, पत्ताअभिसमन्नागया) इसके बाद वह दर्दुर काल अवसर काल करके यावत् सौधर्म कल्प मे दर्दुरावतसक विमान मे उपपात सभा में दर्दुर देवता की पर्याय से उत्पन्न हो गया। इस प्रकार दर्दुर का चरित्र कहकर भगवान् महावीर स्वामी ने गौतम से कहा-कि हे गौतम ! इस प्रकार से उस दर्दुर देव ने वह दिव्य देवर्द्धि उपार्जित की है, अपने आधीन की है और उसे अपने भोगके योग्य बनाई है। अब गौतम श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से पुनः पूछते हैं कि-(ददुरस्स ण भंते ! देवस्स केवइयकाल ठिईपण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइ ठिई

રોગ અને આતંક સ્પર્શ કરે નહિ-તેને પણ હું મમત્વ વગર બધાને છોડી પળ સુધી ત્યજુ છુ આ રીતે વિચાર કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ત્યજી દીધી (तएण से ददुरे कालमासे काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे ददुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए ददुरदेवत्ताए, उववन्ने एव खलु गोयमा ! ददुरेण सा दिव्वा, देविड्ढी, लद्धा, पत्ता अभिसमन्नागया) ત્યારબાદ તે દેડકો કાળના સમયે કાળ કરીને યાવત્ સૌધર્મકલ્પમા દર્દુરાવતંસક વિમાનમા ઉપપાત સભામા દર્દુર દેવતાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો આ રીતે દેડકાના ચરિત્ર વિશે વર્ણન કરીને ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ ગૌતમને કહ્યુ કે હે ગૌતમ ! આ રીતે તે દર્દુર દેવે તે દિવ્યદેવર્ધિ મેળવી છે, તેને સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતે ભોગવવાને લાયક બનાવી છે હવે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગોતમ ફરી પૂછે છે કે (ददुरस्स ण भंते ! देवस्स केवइयकाल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि

भगवानाह-हे गौतम ! दर्दुरस्य खलु देवस्य चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता। पुनर्गौतमःपृच्छति-' सेण ' इत्यादि स खलु हे भदन्त ! दर्दुरो देवस्तस्माद् देवलोकाद् आयु' क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण चय त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्र उत्पत्स्यते=उपपात-जन्म प्राप्स्यति ? । भगवान् कथयति-' गोयमा ! ' इत्यादि। हे गौमत ! स खलु दर्दुरोदेवः आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण देवलोकाच्च्युतः सन् महाविदेहे वर्षे जन्म प्राप्य सेत्स्यति भोत्स्यति मोक्ष्यति परिनिर्वास्यति सर्वदुःखानामन्त करिष्यति च ।

पण्णत्ता, से ण भते ! ददुरे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदत ! दर्दुरदेव की वहा कितनी स्थिति हुई है ? प्रभु कहते हैं कि हे गौतम। चार पल्योपम की स्थिति उसकी वहा हुई है। पुनः गौतम उनसे पूछते हैं कि हे भदन्त ! वह दर्दुर देव वहा से-उस देवलोक से-आयु के क्षय भवके क्षय एव स्थिति के क्षय हो जाने पर शरीर का-देव सबन्धी शरीर का-परित्याग कर कहा जावेगा (कहिं उववज्जिहिइ) कहां पर जन्म धारण करेगा ? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् ने उन्हें इस प्रकार दिया-(गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण अत करेहिइय) गौतम ! वह दर्दुर देव आयु के क्षय से, भव के क्षय से एव स्थिति के क्षय से देवलोक से चवकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म प्राप्तकर वहो से सिद्ध होगा, विमल केवल लोक से सकल लोकालोक का ज्ञान होगा, समस्त कर्मों से मुक्त

पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता से ण भते ! ददुरे देवे ताओ देव लोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ?) હે ભદન્ત ! ત્યા દર્દુર દેવની કેટલી સ્થિતિ થઇ છે ? પ્રભુ કહે છે કે હે ગૌતમ ! તેની ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિ થઇ છે ગૌતમ ફરી તેઓશ્રીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! તે દદુર દેવ ત્યાથી-તે દેવલોકમાથી-આયુષ્યના ક્ષય, ભવના ક્ષય, તેમજ સ્થિતિનો ક્ષય થયા બાદ શરીરને-દેવસબધી શરીરને ત્યજીને કયા જશે ? (કહિં ઉવવજ્જિહિઇ) કયા જન્મ પ્રાપ્ત કરશે ? ભગવાને આ પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે આપ્યો કે (गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्व दुक्खाण अत करेहिइ य) હે ગૌતમ ! તે દર્દુર દેવ આયુષ્યનો ક્ષય થયા બાદ, ભવનો ક્ષય થયા બાદ, અને સ્થિતિનો ક્ષય થયા બાદ દેવલોકથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ પ્રાપ્ત કરીને ત્યાથી જ સિદ્ધ થશે વિમલ-કેવલ લોકની

सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामीन माह-' एव खलु समणेणं ' इत्यादि, हे जम्बूः ! एवं खलु श्रमणेन भगवता महावीरेण त्रयोदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य, अयम्=उक्त स्वरूपः, अर्थ प्रज्ञप्तः, ' इति ब्रवीमि '-अस्य व्याख्या पूर्ववत् ॥सू० ॥ ८ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां त्रयोदशमं ययन सपूर्णम् ॥१३॥

होगा, समस्त कर्मकृत विकार से रहित होने के कारण स्वस्थ होगा और इस प्रकार समस्त दुःखों का वह अन्त करने वाला हो जावेगा। (एवं खलु जंबू! समणेण भगवया महावीरेण तेरसमस्स नायज्झयण स्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) इस प्रकार जंबू स्वामी को समझाकर अब गौतम उन से कहते हैं हे जंबू! श्रमण भगवान् महावीरने इस तेरहवें ज्ञाताध्ययन का उक्त रूप मे अर्थ प्ररूपित किया है। मैंने जैसा उनके मुख से इसे सुना वैसा ही यह तुमसे कहा है। अपनी ओरसे मिलाकर इसमे कुछ नहीं कहा है॥ सूत्र ८ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत

"ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका

तेरहवा अध्ययन समाप्त ॥ १२ ॥

તે સકલ લોકાલોકને જાણનાર થશે, સમસ્ત (બધા) કર્મોથી મુક્ત થશે, સમસ્ત કર્મકૃત વિકાર વગર થયા બદલ તે સ્વસ્થ થશે અને આ રીતે બધા દુ ખોનો તે અન્તકરનાર થઈ જશે (एव खलु जंबू! समणेण भगवया महावीरेण तेरसस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि) આ રીતે જબૂ સ્વામીને સમજાવીને ગૌતમ તેમને કહે છે કે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે મે જેવો તેમના મુખથી સાભળ્યો છે તેવો જ તમને કહ્યો છે મે આમા પોતાની મેળે ઉમેરીને કઈજ કહ્યુ નથી ॥ સૂત્ર "८" ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી